CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दजा

श्री १०८ चारित्रचक्रवर्त्याचार्य शान्तिसागर दि. जैन. जिनवाणी जीर्णोद्धारकसंस्था.

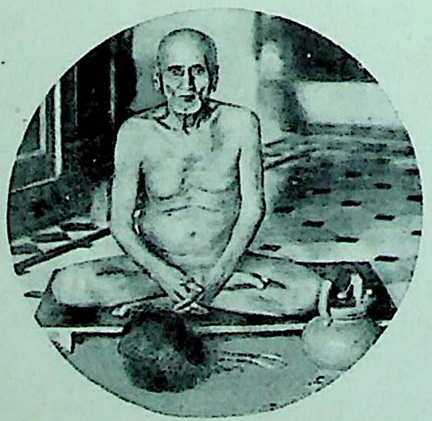

षट्खण्डागमः

(धवलाटीकासमन्वितः)

प्रथमोद्धारः

प्रकाशकः—मंत्री बालचन्द देवचन्द शहा. बी. ए.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आद्यपरिचय.

श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरिपर आचार्यप्रवर चारित्रचक्रवर्ती श्री १०८ परम पूज्य शान्तिसागर महाराजके दर्शनार्थ मैं करीब ५ वर्ष हुए आया था. लगभग १५ दिन रहकर मैं जब जानेलगा तब महाराजने अपना अभिप्राय व्यक्त किया कि हमारी इच्छा है कि धवलादि सिद्धान्त शास्त्रोंके मूलभाग को ताम्रपत्र पर खुदवा कर कहीं विराजमान करदिया जाय. साथही मुझे आज्ञा दी कि इन्दौर से जयधवलके मूलभागको लिखकर हमारे पास भेजदेना । मैंने आचार्य महाराजकी आज्ञा शिरोधार्य की, और वापिस इन्दौर चलागया। किन्तु इन्दौर पहुंचनेके कुछ ही दिन बाद मुझे मालुम हुआ कि महाराजके विचारमें कुछ परिवर्तन हुआ है– अब वे केवल मूलभागका ही नहीं किन्तु टीका सहित सम्पूर्ण ग्रन्थोंका ज्योंका त्यों ताम्रपत्र कराना चाहते हैं। कारण यह हुआ कि पं. सुमेरुचन्दजी दिवाकरके पत्र द्वारा महाराजको मालुम हुआ कि महाधवलका कितनाही भाग सर्वथा नष्ट हो चुका है। इस समाचारने महाराजके हृदयको व्यथित कर दिया, और वे बहुत बड़े विचारमें पड़गये। वे सोचने लगे कि श्री १००८ भगवान् महावीरस्वामीके उपदेश और उनके साक्षात् प्रधानशिष्य गणधर द्वारा रचित द्वादशाङ्गसे जिनका सीधा सम्बन्ध पाया जाता है, फिर चाहे ये आगम ग्रन्थ द्वादशाङ्ग–समुद्रकी एक छोटीसी ऊर्मिके बराबर ही क्यों न हों, यदि इनकी रक्षाका कोई समुचित प्रयत्न नहीं किया जायगा तो संभव है कि जिस तरह महाधवलका कुछ भाग नष्ट होगया है उसीतरह यह शेष भाग भी कुछ ही दिनमें विनष्ट होजाय। अतएव इन सम्पूर्ण ग्रन्थोंको ही सुरक्षित करने का कोई न कोई ऐसा उपाय करना उचित होगा जिससे कि ये अधिकसे अधिक कालतक टिके रह सकें। यदि ऐसा नहीं किया गया तो निःसन्देह हमारे कर्तव्यकी एक त्रुटि होगी। अधिकसे अधिक कालतक ताम्रपत्र टिका रह सकता है। अत एव यदि तीनों ही आगम ग्रन्थोंको ताम्रपत्रोंपर खुदवाकर रखदिया जाय तो अवश्य ही ये ग्रन्थराज चिरकाल तक स्थिर रह सकेंगे।

आचार्यश्रीने सरस्वती माताके शरीरको चिरस्थायी रखनेकी यह पवित्र सद्भावना सर्वप्रथम संघपति सेठ गेंदमलजी, और बादमें भट्टारक श्री जिनसेन स्वामी संस्थान नांदणी मठ, सेठ चंदूलालजी सराफ वारामती आदि जो २ वहां उपस्थित थे उन सभी खास २ व्यक्तियों के सम्मुख व्यक्त की। महाराजकी मनीषाको सभीने पसंद किया और उसको पूरा करने में पूर्ण सहयोग देने का भाव भी व्यक्त किया. संघभक्त शिरोमणि सेठ पूनमचन्द घासीलाल जव्हेरी बम्बई फर्मके मालिक सेठ गेंदमलजी सा. ने सम्पूर्ण भार अपने ऊपर ही लेलेनेकी और इस कार्यको पूरा करा देनेकी इच्छा प्रकट की; परन्तु महाराजने यह स्वीकार नहीं किया. और कहा कि यह कार्य समाज के द्वारा ही होना चाहिये। फलतः उसी दिन रात्रिको सब लोगोंने मिलकर इसकी व्यवस्थापर विचार किया और फंडके लिये रकमकी स्वीकारताएं भी प्रदान कीं। प्रातःकाल रात्रिकी कार्यवाही से महाराजको अवगत कराया गया। महाराजकी सम्मतिसे इस कार्यको आगे व्यवस्थित करनेके लिये तात्कालिक एक कमेटीकी भी रचना उसी समय कर दी गई। इस तरह इस कार्यको वि. सं. २००० के भाद्रपद शु. ३ गुरुवारके शुभ मुहूर्तपर आचार्य श्रीके ३१ वें वर्षायोगके समय और श्री सिद्धक्षेत्र कुंथल गिरिपर उपस्थित समाजके द्वारा महाराजकी मनीषा और उद्देश्यके अनुसार पूरा करनेका यह मंगलमय संकल्प निश्चित करदिया गया।

उक्त अस्थायी कमेटीके द्वारा वि. सं. २००१ फाल्गुन वदि २ (गुजराती) को वारामतीमें इस कार्य के लिये रकम देनेवाले सभी सज्जनोंको आमंत्रित करके सेठ चन्दूलालजी सराफके बगीचेमें स्थायी कमेटीके निर्माणका कार्य किया गया। उपस्थित सभी सज्जनों की सम्मतिसे आचार्य महाराजके नामको जोड़कर संस्थाका "श्री १०८ चारित्र चक्रवर्ति आचार्य शान्तिसागर दि. जैन जिनवाणी जीर्णोद्धारक संस्था" यह नाम निश्चित किया गया। इसके सिवाय ट्रष्ट कमेटीका निर्माण, प्रबन्ध-कारिणी तथा साधारण कमेटीकी रचना की गई, उद्देश्य निश्चित किया गया, नियमावली पास की गई, और कार्यकर्त्ताओंका चुनाव कियागया। इसके बाद ही यह कार्य भी शुरू करदिया गया। कमेटीकी नियमावली सरकार द्वारा रजिष्टर्ड हो चुकी है। इसका मुख्य कार्यालय बम्बईमें रखागया है. कोईभी सज्जन किसीभी प्रकारकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जानकारी प्राप्त करना चाहें तो वे संस्थाके मंत्री सेठ बालचन्द्र देवचन्द शहा बी. ए. ठि. शान्तिलाल भगवान् सर विठ्ठलदास गली, मूलजी जेठा मार्केट, कालबादेवी बम्बई; अथवा ठि. सेठ देवचंद रामचंद फलटणगली सोलापूर को पत्र लिखकर या उनसे प्रत्यक्ष मिलकर प्राप्त कर सकते हैं।

संस्थाका मुख्य एवं प्रथम उद्देश्य धवलादि तीनोंही आगमग्रन्थोंका ताम्रपट तयार कराना था. किंतु यह कार्य किसतरह संपन्न कियाजाय जिससे कि अधिकसे अधिक शुद्ध, सुंदर शीघ्रतया और व्यवस्थितरूपसे पूर्ण हो सके। कार्यकी कठिनाइयोंको देखते हुए यह बहुत बड़ा प्रश्न सामने था। किन्तु यह कठिनाई आचार्य-महाराजके पुण्योदयसे सहजही हल होगई. मंत्रिमहोदय सेठ बालचन्दजी द्वारा एन्ग्रेविंग पद्धतिसे ताम्रपट खुदवानेकी तजवीज सबको पसंद आई जिसमें कि ट्रांसपर्ट पेपर पर छपा हुआ विषय वैज्ञानिकपद्धतिसे ताम्रपटपर ज्योंका त्यों खोद दिया जा सकता है। हमने सोचा कि जब ताम्रपट पर खुदाई के लिये ट्रांसपर्ट पेपर पर छपाना ही है तो अधिक प्रतियां भी क्यों न निकाल ली जांय। इसकेलिये कमसे कम ५०० प्रतियां पृथक् निकालनेकी सूचना हमने रक्खी, परन्तु उस समय २५० प्रति पृथक् निकालना स्वीकृत हुआ. और जब ग्रन्थके ३४ फार्म छप चुके तब ५०० प्रति छपाने की आज्ञा प्राप्त हुई। अत एव प्रारम्भके ३४ फार्मकी २५० प्रति फिरसे निकालीगई और आगे को ५०० प्रति निकालने का क्रम चालू हुआ।

प्रस्तुत प्रतिका संशोधन कार्य मुख्यतया स्व. धर्मवीर सेठ रावजी सखाराम दोशीके यहांकी हस्तलिखित प्रतिको मूडबिद्रीसे संशोधन मिलान कराकर उसके आधार परही किया गया है। कतिपय विद्वानोंसे इसकी प्रेसकापी तयार कराई गई थी। हमारे लिये इन ग्रन्थोंके संशोधनादि कार्य को पूर्ण कर सकना अशक्य ही नहीं, असंभव था। अपनी अयोग्यता असामर्थ्य आदिके कारण हम चिन्तित थे कि हमसे यह कार्य होसकेगा या नहीं। निःसन्देह हम इसकेलिये अपनेको न तो योग्य समझते ही थे और न अब समझते हैं। किन्तु आचार्य महाराजके पुण्योदय आदिके कारण कार्य निर्विघ्न होने वाला था अतएव यह एक बहुत ही अच्छी बात हुई कि इस कार्य के लिये पं. पन्नालालजी सोनी मिलगये और उनकी नियुक्ति हुई तथा उन्होंनेभी इस कार्य के लिये आना सहर्ष स्वीकार करलिया। पं. जीने इस कार्य में जो परिश्रम किया है उसका मूल्य मर्मज्ञ विद्वान् ही समझ सकते हैं। पाठक इसका अंदाज इसपरसे ही लगा सकेंगे कि बम्बईमें जो धवलाके प्रारम्भिक जीवट्ठाणादि तीन भाग छपे हैं उनके संशोधनमें हमारे सामने सोलापुर की मुद्रित प्रतिका थोड़ासा भाग जो छप चुका था वह भी रहा है और अमरावतीकी मुद्रित प्रतिसे तो हमने बहुत कुछ सहायता भी ली है। किन्तु इन तीन भागों से आगेका सम्पूर्ण भाग जो कि पं. जीके द्वारा संशोधित होकर सोलापुरमें मुद्रित हुआ है वह तो केवल हस्तलिखित प्रेस कापी के आधारपर ही प्रस्तुत हुआ है। अवश्य ही पं. जीने रुग्ण और अशक्त रहते हुए भी इसके सम्पादन–संशोधनमें लगनके साथ एवं पर्याप्त परिश्रम उठाया है.

ऊपर जैसा कि हम लिख चुके हैं, हमने अपने को इस कार्य के लिये सर्वथा अयोग्य समझते हुए भी कतिपय सज्जनोंके आग्रहसे और यह सोचकरके कि जब तक कोई दूसरी समुचित व्यवस्था नहीं होजाती आचार्य महाराजकी आज्ञाका पालन किसी भी तरहसे क्यों न हो मुझे करना ही चाहिये; मैंने यह कार्य किया है। आचार्य महाराजकी आज्ञाका यथाशक्ति पालन करना ही हमारा हेतु रहा है. यद्यपि जानबूझकर हमने इसमें कोई प्रमाद या असावधानी नहीं की है फिर भी अज्ञान या प्रमाद वश इसमें त्रुटियां या अशुद्धियां जो कुछभी रही हों उनके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं.

पाठक महानुभावोंके समक्ष यहांपर अनेक विषय उल्लेख्य हैं, किंतु उन सबके विषयमें हम यहां लिखने में असमर्थ हैं। हम यहां केवल संक्षेपमें इतना ही बता देना चाहते हैं कि इस परमागमके उद्धारकी कितनी अधिक आवश्यकता थी।

पाठक महानुभावोंने श्रुतोत्पत्तिकी कथा सुनी होगी. इस ग्रंथराज के प्रारम्भ में भी इसकी उत्पत्तिका कारण बताया है जिसमें लिखा है कि श्रीधरसेनाचार्यको

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जिनको कि सम्पूर्ण आंगों तथा पूर्वोंके एक देश का ज्ञान था और जो अष्टांग महानिमित्त के भी ज्ञाता थे अपने ज्ञानको अपने बाद भी सुरक्षित रखने की भावना उत्पन्न हुई. फलतः उन्होने दक्षिणापथ आन्ध्रदेशके वेणातटपर होनेवाले पूजामहोत्सव के समय एकत्रित मुनि—संघको पत्र लिखा। संघनायकने श्रीधरसेनाचार्यका आशय समझकर उनके पास दो योग्य शिष्य भेजदिये। दोनों ही शिष्योंने आकर आचार्यको नमस्कार किया और दो दिन बाद अपने आगमनका कारण बताया। श्रीधरसेनाचार्यने उन की परीक्षा ली. और योग्य पाकर उन्हे अपने ज्ञानका दान दिया। इस दान के अन्तमें देवों द्वारा किये गये पूजा एवं अतिशयके कारण ज्ञानदाता श्रीधरसेनाचार्यके द्वारा दोनों शिष्योंका नाम क्रमसे भूतबली और पुष्पदन्त रखागया। दोनोंही शिष्योंने गुरुकी आज्ञानुसार वहांसे विहारकर अंकलेश्वरमें चातुर्मास किया और वहांसे भूतबली द्रमिलदेश और पुष्पदन्त वनवासको विहार करगये। पुष्पदन्तने जिनपालितको दीक्षा देकर आद्यभागके सूत्रोंको बनाकर और पढाकर भूतबली के पास भेजा जिसको कि सुनकर महाकर्म प्रकृति प्राभृत श्रुतके विच्छेद के भयसे ग्रंथ रचनाका आशय जानकर द्रव्यप्रमाणानुगम आदि भागोंकी उन्होंने रचना की। पहला भाग षट्खण्डागम कहा जाता है, क्यों कि यह छह भागोंमें विभक्त है। टीका के नाम परसे यह धवला नामसे प्रसिद्ध है।

मूल सूत्रोंकी रचना या असद्भाव स्थापनाका काल लगभग दो हजार वर्ष पूर्वका है। जैनागममें हम समझते हैं, इनसे पूर्व जिसकी रचना हुई हो और द्वादशाङ्गसे जिसका सीधा सम्बन्ध भी पाया जाता हो ऐसा इस समय कोई भी अन्य आगम ग्रन्थ नहीं पाया जाता। यह कितने दुःखकी बात है कि इनकी भी केवल मूड़विद्रीमें ही और दो पूर्ण और एक अपूर्ण इसतरह तीन ही प्रतियां इस समय पाई जाती हैं। अब तक जो ये सुरक्षित रही हैं इसके लिये उस क्षेत्रके व्यवस्थापक श्री भट्टारकजी महाराज, ट्रूष्टी या पंचमहानुभाव सम्पूर्ण समाजकी तरफसे धन्यवाद के पात्र हैं. और अवश्यही उनकी इस कृतिकेलिये वह कृतज्ञ रहेगी। उक्त भट्टारकजी महाराज एवं पंचोंका इस संशोधन एवं ताड़पत्रकी प्रतियोंके फोटो आदि लेनेमें जो संपूर्ण सहयोग रहा है उसका आचार्यमहाराजके हृदयमें भी बहुत अधिक स्थान है तथा यह संस्था भी उनकी अत्यन्त कृतज्ञ है।

यह बालबोध लिपिमें तयार हुए ताम्रपत्रों वाली एक तरह की प्रति है. इसके सिवाय ताड़पत्रों की मूलप्रति के फोटो लेकर उसकी भी ताम्रपत्र की प्रति तयार हो रही है। जो कि संभवतः अब बहुत जल्दी ही तयार होजायगी।

यद्यपि यह कार्य पूर्ण सावधानीके साथ किया गया है फिरभी इसमें जो कुछ अशुद्धियां रहगई हों उनके लिये इसके साथ शुद्धाशुद्धि पत्र रहनेकी आवश्यकता है. किन्तु इस समय ग्रन्थ तयार हो चुका है और जहांतक हो जल्दी ही नियमानुसार जहां २ भी भेजना आवश्यक है वहां २ भेजनेकी जरूरत है. अतएव यह भेजा जा रहा है, इसके साथ शुद्धाशुद्धि पत्र नहीं है। किन्तु जहांतक होगा वहभी जल्दीही बादमें भेज दिया जायगा।

हम अपने सभी पाठकों एवं कमेटीके सदस्योंसे अंतमें अपनी त्रुटियोंके लिये पुनः क्षमा प्रार्थना कर अपने निवेदनको समाप्त करते समय उन श्री १०८ चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यप्रवर शान्तिसागर महाराजका स्मरण करते हैं जो कि वर्तमानमें असाधारण मंगलमय पवित्रमूर्ति प्रशान्ततपस्वी जगद्वन्द्य जिनधर्मप्रभावक प्रत्यक्ष-रत्नत्रय धर्मोपदेष्टा देशनाधिपति धर्मप्रसारक श्रेयोमार्गप्रवर्तक बालब्रह्मचारी ब्रह्मवेत्ता कल्याणरूप परमदयालु लोकहितैषी आदि अनेक गुणोंके पिंड होनेके सिवाय इस परमागमरूपिणी भगवती शारदा माताके शरीरके अनुपम जीर्णोद्धारकर्ता तथा अपने सेनवंशके महान् पूर्वज आचार्य श्री १०८ वीरसेन भगवान् की इस कृतिको चिरस्थायी बनानेके कारण आर्षवंशके प्रकाशक एवं समुद्योतक भी हैं।

निवेदक—खूबचन्द जैन

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमः सिद्धेभ्यः

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं। णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ इदि ॥

ॐ १ वृषभः, २ अजितः, ३ शंभवः, ४ अभिनन्दनः, ५ सुमतिः, ६ पद्मप्रभः, ७ सुपार्श्वः, ८ चन्द्रप्रभः, ९ पुष्पदन्तः, १० शीतलः, ११ श्रेयान्, १२ वासुपूज्यः, १३ विमलः, १४ अनन्तः, १५ धर्मः, १६ शान्तिः, १७ कुन्थुः, १८ अरः, १९ मल्लिः, २० मुनिसुव्रतः, २१ नमिः, २२ नेमिः, २३ पार्श्वः, २४ वर्धमानश्चेति जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रवर्तमानकालसम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

ॐ १ निर्वाणः, २ सागरः, ३ महासाधुः, ४ विमलप्रभः, ५ श्रीधरः, ६ सुदत्तः, ७ अमलप्रभः, ८ उद्धरः, ९ अंगिरः, १० सन्मतिः, ११ सिंधुः, १२ कुसुमांजलिः, १३ शिवगणः, १४ उत्साहः, १५ ज्ञानेश्वरः, १६ परमेश्वरः, १७ विमलेश्वरः, १८ यशोधरः, १९ कृष्णः, २० ज्ञानमतिः २१ शुद्धमतिः, २२ श्रीभद्रः, २३ अतिक्रान्तः, २४ शान्तश्चेति जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रभूतकालसम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

ॐ १ महापद्मः, २ सुरदेवः, ३ सुपार्श्वः, ४ स्वयंप्रभः, ५ सर्वात्मभूतः, ६ देवपुत्रः, ७ कुलपुत्रः, ८ उदंकः, ९ प्रौष्ठिलः, १० जयकीर्तिः, ११ मुनिसुव्रतः, १२ अरः, १३ निष्पापः, १४ निष्कषायः, १५ विपुलः, १६ निर्मलः, १७ चित्रगुप्तः, १८ समाधिगुप्तः, १९ स्वयंभूः, २० अनिवर्तकः, २१ जयः २२ विमलः, २३ देवपालः, २४ अनन्तवीर्यश्चेति जम्बूद्वीपभरतक्षेत्रभविष्यत्कालसम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

श्रीवर्धमानाय नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः, श्रीवृषभसेनादिगौतमान्त्यगणधरेभ्यो नमः, श्रीधरसेनाचार्यभूतवलिपुष्पदन्तेभ्यो नमः, श्रीचारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागरसूरिभ्यो नमः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीधरसेनाचार्यवर्योपदिष्टः, श्रीभगवत्पुष्पदन्तभूतवलिप्रणीतः, श्रीवीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकासमन्वितः—

षट्खण्डागमः ।

(तत्रादौ प्रथमः खण्डः)

जीवस्थानम्

सिद्धमणंतमणिंदियमणुवममप्पुत्थसोक्खमणवज्जं । केवलपहोहणिज्जियदुण्णयतिमिरं जिणं णमह ॥ १ ॥ बारहअङ्गंगिज्जा (अंगांगी जा) वियलियमलमूढदंसणुत्तिलया । विविहवरचरणभूसा पसियउ सुयदेवया सुइरं ॥ २ ॥ सयलगणपउमरविणो विविहड्ढिविराइया वि णिस्संगा । णीराया वि कुराया गणहरदेवा पसीयंतु ॥ ३ ॥ पसियउ महु धरसेणो परवाइगओहदाणवरसीहो । सिद्धंतामियसायरतरंगसंघायधोयमणो ॥ ४ ॥ पणमामि पुप्फयंतं दुकयंतं दुण्णयंधयाररविं । भग्गसिवमग्गकंटयमिसिसमिइवइस्सयादंतं (वइंतरोद्दंतं) ॥ ५ ॥ पणमह कयभूयबलिं । भूयबलिं केसवास परिभूयवलिं । विणिहयवम्महपसरं वड्ढाविय-विमल-णाण-बम्मह पसरं ॥ ६ ॥ मंगल-णिमित्त-हेऊ परिमाणं णाम तह य कत्तारं । वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्थमाइरियो ॥ १ ॥ इदि णायमाइरियपरंपरागयं मणेणावहारिय पुव्वाइरियायाराणुसरणं तिरयणहेउ त्ति पुप्फदंताइरियो मंगलादीणं छण्णं सकारणाणं परूवणट्ठं सुत्तमाह—

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं । णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ इदि ॥

कधमिदं सुत्तं मंगल-णिमित्त-हेउ-परिमाण-णाम-कत्ताराणं सकारणाणं परूवयं ? ण, तालफलं व सुत्तस्स देसामासियत्तादो । तत्थ धाउ-णिक्खेव-णय-एयत्थ-णिरुत्ति-अणियोगद्दारेहिं मंगलं परूविज्जदि । तत्थ धाउ 'भू सत्तायां' इच्चेवमाइओ सयलत्थवक्खाणं सद्दाणं मूलकारणभूदो । तत्थ 'मगि' इदि अणेण धाउणा णिप्पण्णो-मंगल-सद्दो । धाउ परूवणा किमट्ठं कीरदे ? ण, अणवगयधाउस्स सिस्सस्स अत्थावगमाणुववत्तीदो । उक्तं च—शब्दात्पदप्रसिद्धिः पदसिद्धेरर्थनिर्णयो भवति । अर्थात्तत्त्वज्ञानं तत्त्वज्ञानात्परं श्रेयः ॥ २ ॥ इति । णिच्छये णिण्णए खिवदि त्ति णिक्खेवो । सो वि छव्विहो, णाम-ट्ठवणा-दव्व-खेत्त-काल-भाव मंगलमिदि । उच्चारियमत्थपदं णिक्खेवं वा कयं तु दट्ठूण । अत्थं णयंति तच्चं तमिदि तदो ते णया भणिया ॥ ३ ॥ इदि वयणादो कय-णिक्खेवं दट्ठूण णयाणमवदारो भवदि । को णयो णाम ? णयदि त्ति णयो भणिदो बहूहि गुण-पज्जएहिं जं दव्वं । परिणाम-खेत्त-कालंतरेसु अविणट्ठसब्भावं ॥ ४ ॥ तित्थयर-वयण ॥ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संगह-विसेस-पत्थार-मूल-वायरणो । दव्वट्ठिओ य पज्जय-णयो य सेसा वियप्पा सिं ॥ ५ ॥ दव्वट्ठिय-णय-पयई सुद्धा संगह-परूवणा-विसयो । पडिरूवं पुण वयणत्थ-णिच्छयो तस्स ववहारो ॥ ६ ॥ मूलमिमेणं पज्जव-णयस्स उजुसुद-वयणविच्छेदो । तस्स दु सद्दादीया साहु-वसाहा सुहुम-भेया ॥ ७ ॥ उप्पज्जंति वियंति य भावा णियमेण पज्जव-णयस्स । दव्वट्ठियस्स सव्वं सदा अणुप्पण्णमविणट्ठं ॥ ८ ॥ तत्थ णेगम-संगह-ववहार-णएसु सव्वे एदे णिक्खेवा हवंति तव्विसयम्मि तब्भव-सारिच्छ-सामण्णम्हि सव्व-णिक्खेव-संभवादो । कधं दव्वट्ठिय-णये भाव-णिक्खेवस्स संभवो ? ण, वट्टमाण-पज्जायोवलक्खियं दव्वं भावो इदि दव्वट्ठिय-णयस्स वट्टमाणमवि आरंभप्पहुडि आ उवरमादो । संगहे सुद्ध-दव्वट्ठिए वि भाव-णिक्खेवस्स अत्थित्तं ण विरुज्झदे सुकुक्खिणिक्खित्तासेस-विसेस-सत्ताए सव्व-कालमवट्ठिदाए भावत्तब्भुवगमादो त्ति ॥ णामं ठवणा दविए त्ति एस दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो । भावो दु पज्जवट्ठिय-परूवणा एस परमट्ठो ॥ ९ ॥ अणेण सम्मइ-सुत्तेण सह कधमिदं वक्खाणं ण विरुज्झदे ? इदि ण, तत्थ पज्जायस्स खणक्खइणोभावत्तब्भुवगमादो । उज्जुसुदे ट्ठवण-णिक्खेवं वज्जिऊण सव्वे णिक्खेवा हवंति तत्थ सारिच्छसामण्णाभावादो । कधमुज्जुसुदे पज्जवट्ठिए दव्वणिक्खेवो त्ति ? ण, तत्थ वट्टमाण-समयाणंत-गुणण्णिद-एग-दव्व-संभवादो । ण तत्थ णाम-णिक्खेवाभावो वि सद्दोवलद्धि-काले णियत-वाचयत्तुवलंभादो । सद्द-समभिरूढ-एवंभूद-णएसु वि णाम-भाव-णिक्खेवा हवंति तेसिं चेय तत्थ संभवादो । एत्थ किमट्ठं णय-परूवणमिदि ? प्रमाण-नय-निक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते । युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १० ॥ ज्ञानं प्रमाणमित्याहुरुपायो न्यास उच्यते । नयो ज्ञातुरभिप्रायो युक्तितोऽर्थ-परिग्रहः ॥ ११ ॥ इति । ततः कर्तव्यं नयनिरूपणम् ॥ इदाणिं णिक्खेवत्थं भणिस्सामो । तत्थ णाम-मंगलं णाम णिमित्तंतर-णिरवेक्खा मंगल-सण्णा । तत्थ णिमित्तं चउव्विहं, जाइ-दव्व-गुण-किरिया चेदि । तत्थ जाई तब्भव-सारिच्छ-लक्खण-सामण्णं । दव्वं दुविहं, संजोय-दव्वं समवाय-दव्वं चेदि । तत्थ संजोय-दव्वं णाम पुध पुध पसिद्धाणं दव्वाणं संजोगेण णिप्पण्णं । समवायदव्वं णाम जं दव्वम्मि समवेदं । गुणो णाम पज्जायादि, परोप्पर-विरुद्धो अविरुद्धो वा । किरिया णाम परिप्फंदणरूवा । तत्थ जाइ-णिमित्तं णाम गो-मणुस्स-घड-पड-त्थंभ-वेत्तादि । संजोग-दव्व-णिमित्तं णाम दंडी छत्ती मौली इच्चेवमादि । समवाय-णिमित्तं णाम गल-गंडो काणो कुंडो इच्चेवमाइ । गुण-णिमित्तं णाम किण्हो रुहिरो इच्चेवमाइ । किरिया-णिमित्तं णाम गायणो णच्चणो इच्चेवमाइ । ण च एदे चत्तारि णिमित्ते मोत्तूण णाम-पउत्तीए अण्णं-णिमित्तंतरमत्थि । वच्चत्थ-णिरवेक्खो मंगल-सद्दो णाम-मंगलं । तस्स मंगलस्स आधारो अट्ठविहो । तं जहा, जीवो वा, जीवा वा, अजीवो वा, अजीवा वा, जीवो य अजीवो य, जीवा य अजीवो य, जीवो य अजीवा य, जीवा य अजीवा य । ॥ ३ ॥ तत्थ ट्ठवण-मंगलं णाम आहिद-णामस्स अण्णस्स सोयमिदि ट्ठवणं ट्ठवणा णाम । सा दुविहा, सब्भावासब्भाव-ट्ठवणा चेदि । तत्थ आगारवंतए वत्थुम्मि सब्भाव-ट्ठवणा । तव्विवरीया असब्भाव-ट्ठवणा । मंगल-पज्जय-परिणद-जीव-रूवं लिहण-खणण-बंधण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

क्खेवणादिएण ठ्ठविदं बुद्धीए आरोविद-गुण-समूहं सब्भाव-ट्ठवणा-मंगलं। बुद्धीए समारोविद-मंगल-पज्जय-परिणद-जीव-गुण-सरूवक्ख-वराडयादयो असब्भाव-ट्ठवणा-मंगलं। दव्व-मंगलं णाम अणागय-पज्जाय-विसेसं पडुच्च गहियाहिमुयं दव्वं, अतब्भावं वा। तं दुविहं, आगम-णो-आगम-दव्वं चेदि। आगमो सिद्धंतो पवयणमिदि एयट्ठो। आगमादो अण्णो णो-आगमो। तत्थ आगमदो दव्व-मंगलं णाम मंगल-पाहुड-जाणओ अणुवजुत्तो, मंगल-पाहुड-सद्दरयणा वा, तस्सत्थ-ट्ठवणक्खर-रयणा वा। णो-आगमदो दव्व-मंगलं तिविहं, जाणुग-सरीरं भवियं तव्वदिरित्तमिदि। जं तं जाणुग-सरीरं णो-आगम-दव्व-मंगलं तं तिविहं, मंगलपाहुडस्स केवलणाणादि-मंगलपज्जायस्स वा आधारत्तणेण भविय-वट्टमाणादीदसरीरमिदि। आहारस्साहेयोवयारादो भवदु धरिद-मंगल-पज्जाय-परिणद-जीव-सरीरस्स मंगल-ववएसो ण अण्णेसिं, तेसु ट्ठिद-मंगल-पज्जायाभावा। ण, राय-पज्जायाहारत्तणेण अणागदादीद-जीवे वि राय-ववहारोवलंभा। तत्थ अदीदसरीरं तिविहं, चुदं चइदं चत्तमिदि। तत्थ चुदं णाम कयलीघादेण विणा पक्कं पि फलं व कम्मोदएण ज्झीयमाणायु-क्खय-पदिदं। चइदं णाम कयलीघादेण छिण्णायु-क्खय-पदिद-सरीरं। उत्तं च—विस-वेयण-रत्तक्खय-भय-सत्थग्गहण-संकिलिस्सेहि। आहारुस्सासाणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ॥ इदि। चत्तसरीरं तिविहं, पायोवगमण-विहाणेण, इंगिणि-विहाणेण, भत्त-पच्चक्खाण-विहाणेण चत्तमिदि। तत्रात्मपरोपकारनिरपेक्षं प्रायोपगमनम्। आत्मोपकारसव्यपेक्षं परोपकारनिरपेक्षं इंगिणिमरणम्। आत्मपरोपकारसव्यपेक्षं भक्तप्रत्याख्यानमिति। तत्र भक्तप्रत्याख्यानं त्रिविधं जघन्योत्कृष्टमध्यमभेदात्। जघन्यमन्तर्मुहूर्तप्रमाणम्। उत्कृष्टभक्तप्रत्याख्यानं द्वादशवर्षप्रमाणम्। मध्यममेतयोरन्तरालमिति। संजम-विणास-भएण उस्सास-णिरोहं काऊण मुद-साहु-सरीरं कत्थ णिवददि ? ण कत्थ वि तहा-मुद-देहस्स मंगलत्ताभावादो। मंगल-पाहुड-धारयस्स धरिद-महव्वयस्स चत्त-देहस्स अचत्त-देहस्स वा देहो कधममंगलं ? साहूणमजुत्तकारिस्स देहत्तादो अमंगलमिदि ण वोत्तुं जुत्तं, पुव्वं तिरयणाहारत्तेण मंगलत्तमुवगयस्स पच्छा भूद-पुव्व-णाएण मंगल-भावं पडि विरोहाभावादो। तदो मंगलभावेण कत्थ वि णिवदेयव्वमेदेण सरीरेणेति। ण चइदम्हि पददि चत्तस्स वि आहार-णिरोहेण पदिदस्स चइदत्तावत्तीदो। तो क्खहिं एदं घेत्तव्वं ? कयली-घादेण मरण-कंखाए जीवियासाए जीविय-मरणासाहि विणा वा पदिद-सरीरं चइदं। जीवियासाए मरणासाए जीविय-मरणासाहि वा विणा कयलीघादेण अचत्त-भावेण पदिद-सरीरं चुदं णाम। जीविद-मरणासाहि विणा सरूवोवलद्धिणिमित्तं व चत्त-बज्झंतरंग-परिग्गहस्स कयली-घादेणियरेण वा पदिद-सरीरं चत्त-देहमिदि। भव्यनोआगमद्रव्यं भविष्यत्काले मङ्गलप्राभृतज्ञायको जीवः मङ्गल-पर्यायं परिणंस्यतीति वा। तद्व्यतिरिक्तं द्विविधं कर्मनोकर्ममङ्गलभेदात्। तत्र कर्ममङ्गलं दर्शन-विशुद्ध्यादिषोडशधा-प्रविभक्त-तीर्थंकर-नामकर्म-कारणैर्जीव-प्रदेश-निबद्ध-तीर्थंकर-नामकर्म, माङ्गल्य-निबन्धनत्वान्मङ्गलम्। यत्तन्नोकर्ममङ्गलं तद् द्विविधम्, लौकिकं लोकोत्तरमिति। तत्र लौकिकं त्रिविधम्, सचित्तमचित्तं मिश्रमिति। तत्राचित्तमङ्गलम्—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धत्थ-पुण्ण-कुंभो वंदणमाला य मंगलं छत्तं । सेदो वण्णो आदंसणो य, कण्णा य जच्चस्सो ॥ १३ ॥—सचित्तमङ्गलम् । मिश्रमङ्गलं सालङ्कारकन्यादिः । लोकोत्तरमङ्गलमपि त्रिविधम्, सचित्तमचित्तं मिश्रमिति । सचित्तमर्हदादीनामनाद्यनिधनजीवद्रव्यम् । न केवलज्ञानादिमङ्गलपर्यायविशिष्टार्हदादीनाम् जीवद्रव्यस्यैव ग्रहणं तस्य वर्तमानपर्यायोपलक्षितं द्रव्यं भाव इति भावनिक्षेपान्तर्भावात्, न केवलज्ञानादिपर्यायाणां ग्रहणं तेषामपि भावरूपत्वात् । अचित्तमङ्गलं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयादिः, न तत्स्थप्रतिमास्तासां स्थापनान्तर्भावात् । अकृत्रिमाणां कथं स्थापनाव्यपदेशः ? इति चेन्न, तत्रापि बुद्ध्या प्रतिनिधौ स्थापितमुख्योपलम्भात् । यथा अग्निरिव माणवकोऽग्निः तथा स्थापनेव स्थापनेति तासां तद्व्यपदेशोपपत्तेर्वा । तदुभयमपि मिश्रमङ्गलम् । तत्र क्षेत्रमङ्गलं गुणपरिणतासन-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणक्षेत्रादिः । तस्योदाहरणम्, ऊर्जयन्त-चम्पा-पावा-नगरादिः । अर्धाष्टारत्न्यादि-पंचविंशत्युत्तर-पंचधनुः-शत-प्रमाण-शरीर-स्थित-कैवल्याद्यवष्टब्धाकाशदेशा वा, लोकमात्रात्मप्रदेशैर्लोकपूरणापूरित-विश्व-लोकप्रदेशा वा । तत्थ काल-मंगलं णाम, जम्हि काले केवल-णाणादि-पज्जएहि-परिणदो कालो पाव-मल-गालणत्तादो मंगलं । तस्योदाहरणम्, परिनिष्क्रमण-केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणदिवसादयः । जिन-महिम-सम्बद्ध-कालोऽपि मङ्गलम् । यथा, नन्दीश्वरदिवसादिः । तत्थ भाव-मंगलं णाम, वर्तमानपर्यायोपलक्षितं द्रव्यं भावः । स द्विविधः आगमनोआगमभेदात् । आगमः सिद्धान्तः । आगमदो मंगल-पाहुड-जाणओ उवजुत्तो । णो-आगमदो भाव-मंगलं दुविहं, उपयुक्तस्तत्परिणत इति । आगममन्तरेण अर्थोपयुक्त उपयुक्तः । मङ्गलपर्याय-परिणतस्तत्परिणत इति । एदेसु णिक्खेवेसु केण णिक्खेवेण पयोजणं ? णो-आगमदो भाव-णिक्खेवेण तप्परिणएण पयोजणं । जदि णो आगमदो भाव-णिक्खेवेण तप्परिणदेण पयोजणमियरेहि णिक्खेवेहि इह किं पयोजणं ? जत्थ बहुं जाणिज्जो अवरिमिदं तत्थ णिक्खिवे णियमा । जत्थ बहुवं ण जाणदि चउट्ठयं णिक्खिवे तत्थ ॥ १४ ॥ इदि वयणादो णिक्खेवो कदो । अथ स्यात्, किमिति निक्षेपः क्रियत इति ? उच्यते, त्रिविधाः श्रोतारः, अव्युत्पन्नः अवगताशेषविवक्षितपदार्थः एकदेशतोऽवगतविवक्षितपदार्थ इति । तत्र प्रथमोऽव्युत्पन्नत्वान्नाध्यवस्यतीति विवक्षितपदस्यार्थं । द्वितीयः संशेते कोऽर्थोऽस्य पदस्याधिकृत इति प्रकृतार्थादन्यमर्थमादाय विपर्यस्यति वा । द्वितीयवत्तृतीयोऽपि संशेते विपर्यस्यति वा । तत्र यद्यव्युत्पन्नः पर्यायार्थिको भवेन्निक्षेपः क्रियते अव्युत्पन्नव्युत्पादनमुखेन अप्रकृतनिराकरणाय । अथ द्रव्यार्थिकः तद्द्वारेण प्रकृतप्ररूपणायाशेषनिक्षेपा उच्यन्ते, व्यतिरेकधर्मनिर्णयमन्तरेण विधिनिर्णयानुपपत्तेः । द्वितीयतृतीययोः संशयितयोः संशयविनाशायाशेषनिक्षेपकथनम् । तयोरेव विपर्यस्यतोः प्रकृतार्थावधारणार्थं निक्षेपः क्रियते । उत्तं च—अवगय-णिवारणट्ठं पयदस्स परूवणा-णिमित्तं-च । संसय-विणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १५ ॥ निक्षेपविसृष्टः सिद्धान्तो वर्ण्यमानो वक्तुः श्रोतुश्चोत्पथोत्थानं कुर्यादिति वा । मङ्गलस्यैकार्थ उच्यते, मङ्गलं पुण्यं पूतं पवित्रं प्रशस्तं शिवं शुभं कल्याणं भद्रं सौख्यमित्येवमादीनि मङ्गलपर्यायवचनानि । एकार्थप्ररूपणं किमर्थमिति चेत्, यतो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मङ्गलार्थोऽनेकशब्दाभिधेयस्ततोऽनेकेषु शास्त्रेष्वनेकाभिधानैर्मङ्गलार्थः प्रयुक्तश्चिरंतनाचार्यैः । सोऽव्यामोहेन शिष्यैः सुखेनावगम्यत इत्येकार्थ उच्यते, 'यद्येकशब्देन न जानाति ततोऽन्येनापि शब्देन ज्ञापयितव्यः' इति वचनाद्वा । मङ्गलस्य निरुक्तिरुच्यते, मलं गालयति विनाशयति घातयति दहति हन्ति विशोधयति विध्वंसयतीति मङ्गलम् । तन्मलं द्विविधं द्रव्यभावमलभेदात् । द्रव्यमलं द्विविधम्, बाह्यमाभ्यन्तरं च । तत्र स्वेदरजोमलादि बाह्यम् । घनकठिनजीवप्रदेशनिबद्ध-प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशविभक्त-ज्ञानावरणाद्यष्टविध-कर्माभ्यन्तरं द्रव्यमलम् । अज्ञानादर्शनादिपरिणामो भावमलम् । अथवा अर्थाभिधानप्रत्ययभेदात्त्रिविधं मलम् । उक्तमर्थमलम् । अभिधानमलं तद्वाचकः शब्दः । तयोरुत्पन्नबुद्धिः प्रत्ययमलम् । अथवा चतुर्विधं मलं नामस्थापनाद्रव्यभावमलभेदात् । अनेकविधं वा । तन्मलं गालयति विनाशयति विध्वंसयतीति मङ्गलम् । अथवा मङ्गं सुखं तल्लाति आदत्त इति वा मङ्गलम् । उक्तं च—मङ्गशब्दोऽयमुद्दिष्टः पुण्यार्थस्याभिधायकः । तल्लातीत्युच्यते सद्भिर्मङ्गलं मङ्गलार्थिभिः ॥ १६ ॥ पापं मलमिति प्रोक्तमुपचारसमाश्रयात् । तद्धि गालयतीत्युक्तं मङ्गलं पण्डितैर्जैनैः ॥ १७ ॥ अथवा मङ्गति गच्छति कर्ता कार्यसिद्धिमनेनास्मिन् वेति मङ्गलम् । मङ्गलशब्दस्यार्थविषयनिश्चयोत्पादनार्थं निरुक्तिरुक्ता । मङ्गलस्यानुयोग उच्यते—किं कस्स केण कत्थ व केवचिरं कदिविधो य भावो त्ति । छहि अणिओग-द्दारेहि सव्व भावाणुगंतव्वा ॥ १८ ॥ इदि वयणादो । किं मङ्गलम्? जीवो मङ्गलम् । न सर्वजीवानां मङ्गलत्वप्राप्तिः द्रव्यार्थिकनयापेक्षया मङ्गलपर्यायपरिणतजीवस्य पर्यायार्थिकनयापेक्षया केवलज्ञानादिपर्यायाणां च मङ्गलत्वाभ्युपगमात् । कस्य मङ्गलम्? जीवस्य द्रव्यार्थिकनयार्पणया नित्यतामादधानस्य पर्यायार्थिकनयार्पणयोत्पादविगमात्मकस्य । देवदत्तात्कम्बलस्येव न जीवान्मङ्गलपर्यायस्य भेदः सुवर्णस्याङ्गुलीयकमित्यत्राभेदेऽपि षष्ठ्युपलम्भतोऽनेकान्तात् । केन मङ्गलम् । औदयिकादिभावैः । क्व मङ्गलम्? जीवे । कुण्डाद्बदराणामिव न जीवान्मङ्गलपर्यायस्य भेदः सारे स्तम्भ इत्यत्राभेदेऽपि सप्तम्युपलभ्यतेऽनेकान्तात् । कियच्चिरं मङ्गलम्? नानाजीवापेक्षया सर्वाद्धम् (सार्वद्यम्) । एकजीवापेक्षया अनाद्यपर्यवसितं साद्यपर्यवसितं सादिसपर्यवसितमिति त्रिविधम् । कथमनाद्यपर्यवसितता मङ्गलस्य? द्रव्यार्थिकनयार्पणया । तथा च मिथ्यादृष्ट्यवस्थायामपि मङ्गलत्वं जीवस्य प्राप्नोतीति चेन्नैष दोषः इष्टत्वात् । न मिथ्यात्वाविरतिप्रमादानां मङ्गलत्वं तेषां जीवत्वाभावात् । जीवो हि मङ्गलम् स च केवलज्ञानाद्यनन्तधर्मात्मकः । नावृतावस्थायां मङ्गलीभूतकेवलज्ञानाद्यभावः आव्रियमाणकेवलाद्यभावे तदावरणानुपपत्तेः, जीवलक्षणयोर्ज्ञानदर्शनयोरभावे लक्ष्यस्याप्यभावापत्तेश्च । न चैवं तथाऽनुपलम्भात् । न भस्मच्छन्नाग्निना व्यभिचारः तापप्रकाशयोस्तत्राप्युपलम्भात् । पर्यायत्वात्केवलादीनां न स्थितिरिति चेन्न, अत्रुट्यज्ज्ञानसंतानापेक्षया तत्स्थैर्यस्य विरोधाभावात् । न छद्मस्थज्ञानदर्शनयोरल्पत्वादमङ्गलत्वमेकदेशस्य माङ्गल्याभावे तद्विश्वावयवानामप्यमङ्गलत्वप्राप्तेः । रजोजुषां ज्ञानदर्शने न मङ्गलीभूतकेवलज्ञानदर्शनयोरवयवाविति चेन्न, ताभ्यां व्यतिरिक्तयोस्तयोरसत्वात् । मत्यादयोऽपि सन्तीति चेन्न, तदवस्थानां मत्यादिव्यपदेशात् । तयोः केवलज्ञानदर्शनाङ्कुरयोर्मङ्गलत्वे मिथ्यादृष्टिरपि मङ्गलं तत्रापि तौ स्त इति चेद्भवतु

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तद्रूपतया मङ्गलम्, न मिथ्यात्वादीनां मङ्गलत्वम् । तन्न मिथ्यादृष्टयः सुगतिभाजः सम्यग्दर्शनमन्तरेण तज्ज्ञानस्य सम्यक्त्वाभावतस्तदभावात् । कथं पुनस्तज्ज्ञानदर्शनयोर्मङ्गलत्वमिति चेन्न, सम्यग्दृष्टीनामवगताप्तस्वरूपाणां केवलज्ञानदर्शनावयवत्वेनाध्यवसितरजोजुड्ज्ञानदर्शनानामावरणविविक्तानन्तज्ञानदर्शनशक्तिखचितात्मस्मर्तॄणां वा पापक्षयकारित्वतस्तयोस्तदुपपत्तेः । नोआगमभव्यद्रव्यमङ्गलापेक्षया वा मङ्गलमनाद्यपर्यवसानमिति । रत्नत्रयमुपादायाविनष्टेनैवाप्तसिद्धस्वरूपापेक्षया नैगमनयेन साद्यपर्यवसितं मङ्गलम् । सादिसपर्यवसितं सम्यग्दर्शनापेक्षया जघन्येनान्तर्मुहूर्तकालमुत्कर्षेण षट्षष्टिसागरा देशोनाः । कतिविधं मङ्गलम् ? मङ्गलसामान्यात्तदेकविधम्, मुख्यामुख्यभेदतो द्विविधम्, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रभेदात्रिविधं मङ्गलम्, धर्मसिद्धसाध्वर्हद्भेदाच्चतुर्विधम्, ज्ञानदर्शनत्रिगुप्तिभेदात् पञ्चविधम्, 'णमो जिणाणं' इत्यादिनानेकविधं वा । अथवा मंगलम्हि छ अहियाराए दंडा वत्तव्वा भवंति । तं जहा, मंगलं मंगल-कत्ता मंगल-करणीयं मंगलोवायो मंगल-विहाणं मंगल-फलमिदि । एदेसिं छण्हं पि अत्थो उच्चदे । मंगलत्थो पुव्वत्तो । मंगल-कत्ता चोद्दस-विज्जा-ट्ठाण-पारओ आइरियो । मंगल-करणीयं भव्व-जणो । मंगलोवायो ति-रयण-साहणाणि । मंगल-विहाणं एय-विहादि पुव्वुत्तं । मंगल-फलं देहिंतो कय-अब्भुदय-णिस्सेयस-सुहाइत्तं । मंगलं सुत्तस्स आदीए मज्झे अवसाणे च वत्तव्वं । उत्तं च— आदिअवसाण-मज्झे पण्णत्तं मंगलं जिणिंदेहिं । तो कय-मंगल-विणयो वि णमो-सुत्तं पवक्खामि ॥ १९ ॥ तिसु ट्ठाणेसु मंगलं किमट्ठं वुच्चदे ? कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विणयोवगया सिस्सा अज्झेदारो सोदारो वत्तारो आरोग्गमविग्घेण विज्जं विज्जा-फलं हि पावेंतु त्ति । उत्तं च— आदिम्हि भद्द वयणं सिस्सा लहु-पारया हवंतु त्ति । मज्झे अव्वोच्छित्ति य विज्जा विज्जा-फलं चरिमे ॥ २० ॥ विघ्नाः प्रणश्यन्ति भयं न जातु न दुष्टदेवाः परिलङ्घयन्ति । अर्थान्यथेष्टांश्च सदा लभन्ते जिनोत्तमानां परिकीर्तनेन ॥ २१ ॥ आदौ मध्येऽवसाने च मङ्गलं भाषितं बुधैः । तज्जिनेन्द्रगुणस्तोत्रं तदविघ्नप्रसिद्धये ॥ २२ ॥ तच्च मंगलं दुविहं णिबद्धमणिबद्धमिदि । तत्थ णिबद्धं णाम, जो सुत्तस्सादीए सुत्त-कत्तारेण कय-देवदा-णमोक्कारो तं णिबद्ध-मंगलं । जो सुत्तस्सादीए सुत्त-कत्तारेण णिबद्धो-देवदा-णमोक्कारो तमणिबद्ध-मंगलं । इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्ध-मंगलं । यत्तो 'इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इदि एदस्स सुत्तस्सादीए णिबद्ध- 'णमो अरिहंताणं' इच्चादिदेवदा-णमोक्कार-दंसणादो । सुत्तं किं मंगलमुद अमंगलमिदि ? जदि ण मंगलं, ण तं सुत्तं पावकारणस्स सुत्तत्त-विरोहादो । अह मंगलं, किं तत्थ मंगलेण ? एगदो चेय कज्ज-णिप्पत्तीदो इदि । ण ताव सुत्तं ण मंगलमिदि तारिस-पइज्जाभावादो परिसेसादो मंगलं से सुत्तस्सादीए मंगलं पढिज्जदि । ण पुव्वुत्तदोसो वि दोण्हं पि पुध पुध विणासिज्जमाण-पाव-दंसणादो । पढण-विग्घ-विद्दावणं मंगलं । सुत्तं पुण समयं पडि असंखेज्ज-गुण-सेढीए पावं गालिय पच्छा सव्व-कम्म-क्खय-कारणमिदि । देवतानमस्कारोऽपि चरमावस्थायां कृत्स्नकर्मक्षयकारीति द्वयोरप्येककार्यकर्तृत्वमिति चेन्न, सूत्रविषयपरिज्ञानमन्तरेण तस्य तथाविधसामर्थ्याभावात् । शुक्लध्यानान्मोक्षः, न च देवतानमस्कारः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

शुक्लध्यानमिति। इदाणिं देवदा-णमोक्कार-सुत्तस्सत्थो उच्चदे। 'णमो अरिहंताणं' अरिहननादरिहन्तः। नरकतिर्यक्कुमानुष्यप्रेतावासगताशेषदुःखप्राप्तिनिमित्तत्वादरिर्मोहः। तथा च शेषकर्मव्यापारो वैफल्यमुपेयादिति चेन्न, शेषकर्मणां मोहतन्त्रत्वात्। न हि मोहमन्तरेण शेषकर्माणि स्वकार्यनिष्पत्तौ व्यापृतान्युपलभ्यन्ते येन तेषां स्वातन्त्र्यं जायेत। मोहे विनष्टेऽपि कियन्तमपि कालं शेषकर्मणां सत्त्वोपलम्भान्न तेषां तत्तन्त्रत्वमिति चेन्न, विनष्टेऽरौ जन्ममरणप्रबन्धलक्षणसंसारोत्पादनसामर्थ्यमन्तरेण तत्सत्त्वस्यासत्त्वसमानत्वात् केवलज्ञानाद्यशेषात्मगुणाविर्भावप्रतिबन्धनप्रत्ययसमर्थत्वाच्च। तस्यारेर्हननादरिहन्तः। रजोहननाद्वा अरिहन्तः। ज्ञानदृगावरणानि रजांसीव बहिरङ्गान्तरङ्गाशेषत्रिकालगोचरानन्तार्थव्यञ्जनपरिणामात्मकवस्तुविषयबोधानुभवप्रतिबन्धकत्वाद्रजांसि। मोहोऽपि रजः भस्मरजसा पूरितानननामिव भूयो मोहावरुद्धात्मनां जिह्मभावोपलम्भात्। किमिति त्रितयस्यैव विनाश उपदिश्यत इति चेन्न, एतद्विनाशस्य शेषकर्मविनाशाविनाभावित्वात्। तेषां हननादरिहन्तः। रहस्याभावाद्वा अरिहन्तः। रहस्यमन्तरायः, तस्य शेषघातित्रितयविनाशाविनाभाविनो भ्रष्टबीजवन्निःशक्तीकृताघातिकर्मणो हननादरिहन्तः। अतिशयपूजार्हत्वाद्वार्हन्तः। स्वर्गावतरणजन्माभिषेकपरिनिष्क्रमणकेवलज्ञानोत्पत्तिपरिनिर्वाणेषु देवकृतानां पूजानां देवासुरमानवप्राप्तपूजाभ्योऽधिकत्वादतिशयानामर्हत्वाद्योग्यत्वादर्हन्तः। आविर्भूतानन्तज्ञानदर्शनसुखवीर्यविरतिक्षायिकसम्यक्त्वदानलाभभोगोपभोगाद्यनन्तगुणत्वादिहैवात्मसात्कृतसिद्धस्वरूपाः स्फटिकमणिमहीधरगर्भोद्भूतादित्यबिम्बवद्देदीप्यमानाः स्वशरीरपरिमाणा अपि ज्ञानेन व्याप्तविश्वरूपाः स्वस्थिताशेषप्रमेयत्वत प्राप्तविश्वरूपाः निर्गताशेषामयत्वतो निरामया विगताशेषपापाञ्जनपुञ्जत्वेन निरञ्जना दोषकलातीतत्वतो निष्कलाः। तेभ्योऽर्हद्भ्यो नमः, इति यावत्। णिद्दड्ढ-मोह-तरुणो वित्थिण्णाणाण-सायरुत्तिण्णा। णिहय-णिय-विग्घ-वग्गा बहु-बाह-विणिग्गया अयला॥ २३॥ दलिय-मयण-प्पयावा तिकाल-विसएहि तीहि णयणेहि। दिट्ठ-सयलट्ठ-सारा सुदद्ध-तिउरा-मुणि-व्वइणो॥ २४॥ ति रयण-तिसूल-धारिय मोहंधासुर-कबंध-विंद-हरा। सिद्ध-सयलप्प-रूवा अरहंता दुण्णय-कयंता॥ २५॥ 'णमो सिद्धाणं' सिद्धा निष्ठिताः कृतकृत्याः सिद्धसाध्याः नष्टाष्टकर्माणः। सिद्धानामर्हतां च को भेद इति चेत्, नष्टाष्टकर्माणः सिद्धाः नष्टघातिकर्माणोऽर्हन्त इति तयोर्भेदः। नष्टेषु घातिकर्मस्वाविर्भूताशेषात्मगुणत्वान्न गुणकृतस्तयोर्भेद इति चेन्न, अघातिकर्मोदयसत्त्वोपलम्भात्। तानि शुक्लध्यानाग्निनार्धदग्धत्वात्सन्त्यपि न स्वकार्यकर्तॄणीति चेन्न, पिण्डनिपाताभावान्यथानुपपत्तितः आयुष्यादिशेषकर्मोदयास्तित्वसिद्धेः। तत्कार्यस्य चतुरशीतिलक्षयोन्यात्मकस्य जातिजरामरणोपलक्षितस्य संसारस्यासत्त्वात्तेषामात्मगुणघातनसामर्थ्याभावाच्च न तयोर्गुणकृतो भेद इति चेन्न, आयुष्यवेदनीयोदययोर्जीवोर्ध्वगमनसुखप्रतिबन्धकयोः सत्त्वात्। नोर्ध्वगमनमात्मगुणस्तदभावे चात्मनो विनाशप्रसङ्गात्। सुखमपि न गुणस्तत एव। न वेदनीयोदयो दुःखजनकः केवलिनि केवलित्वान्यथानुपपत्तेरिति चेदस्त्वेवमेव न्यायप्राप्तत्वात्। किंतु सलेपनिर्लेपत्वाभ्यां देशभेदाच्च

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तयोर्भेद इति सिद्धम् । तेभ्यः सिद्धेभ्यो नम इति यावत् । णिहय-विविहट्ठ-कम्मा तिहुवण-सिर-सेहरा-विहुव दुक्खा । सुह-सायर-मज्झ-गया णिरंजणा णिच्च अट्ठ-गुणा ॥ २६ ॥ अणवज्जा कय-कज्जा सव्वावयवेहि दिट्ठ-सव्वट्ठा । वज्ज-सिलत्थब्भग्गयपडिमं वाऽभेज्ज-संठाणा ॥ २७ ॥ माणुस-संठाणा वि हु सव्वावयवेहि णो गुणेहि समा । सव्विंदियाण विसयं जमेगदेसे वि जाणंति ॥ २८ ॥ 'णमो आइरीयाणं' पञ्चविधमाचारं चरन्ति चारयन्तीत्याचार्याश्चतुर्दशविद्यास्थानपारगा एकादशाङ्गधराः । आचाराङ्गधरो वा तात्कालिकस्वसमयपरसमयपारगो वा मेरुरिव निश्चलः क्षितिरिव सहिष्णुः सागर इव बहिः क्षिप्तमलः सप्तभयविप्रमुक्त आचार्यः । पवयण-जलहि-जलोयर-ण्हायामल-बुद्धि, सुद्ध-छावासो । मेरुव्व णिप्पकंपो सूरो पंचाणणो वज्जो ॥२९ ॥ देस-कुल-जाइ-सुद्धो सोमंगो संग-भंग-उम्मुक्को । गयणव्व णिरुवलेवो आइरियो एरिसो होई ॥ ३० ॥ संगह-णिग्गह-कुसलो सुत्तत्थ-विसारओ पहिय-कित्ती । सारण-वारण-साहण-किरियुज्जुत्तो हु आइरियो ॥ ३१ ॥ एवंविधेभ्य आचार्येभ्यो नम इति यावत् । 'णमो उवज्झायाणं' चतुर्दशविद्यास्थानव्याख्यातार उपाध्यायास्तात्कालिकप्रवचनव्याख्यातारो वा आचार्यस्योक्ताशेषलक्षणसमन्विताः संग्रहनिग्रहादिगुणहीनाः । चोद्दस-पुव्व-महोयहिमहिगम्म सिव-त्थिओ सिवत्थीणं । सीलंधराण वत्ता होइ मुणीसो उवज्झायो ॥ ३२ ॥ एतेभ्य उपाध्यायेभ्यो नम इति यावत् । 'णमो लोए सव्वसाहूणं' अनन्तज्ञानादिशुद्धात्मस्वरूपं साधयन्तीति साधवः । पञ्चमहाव्रतधरास्त्रिगुप्तिगुप्ता अष्टादशशीलसहस्रधराश्चतुरशीतिशतसहस्रगुणधराश्च साधवः । सीह-गय-वसय-मिय-पसु-मारुद-सूरुवहि-मंदरिंदु-मणी । खिदि-उरगंबर-सरिसा परम-पय-विमग्गया साहू ॥ ३३ ॥ सकलकर्मभूमिषूत्पन्नेभ्यस्त्रिकालगोचरेभ्यः साधुभ्यो नमः । सर्वनमस्कारेष्वत्रतन-सर्वलोकशब्दावन्तदीपकत्वादध्याहर्तव्यौ सकलक्षेत्रगतत्रिकालगोचरार्हदादिदेवताप्रणमनार्थम् । युक्तःप्राप्तात्मस्वरूपाणामर्हतां सिद्धानां च नमस्कारः, नाचार्यादीनामप्राप्तात्मस्वरूपत्वतस्तेषां देवत्वाभावादिति न, देवो हि नाम त्रीणि रत्नानि स्वभेदतोऽनन्तभेदभिन्नानि, तद्विशिष्टो जीवोऽपि देवः, अन्यथाशेषजीवानामपि देवत्वापत्तेः । तत आचार्यादयोऽपि देवाः, रत्नत्रयास्तित्वं प्रत्यविशेषात् । नाचार्यादिस्थितरत्नानां सिद्धस्थरत्नेभ्यो भेदः, रत्नानामाचार्यादिस्थितानामभावापत्तेः, । न कारणकार्यत्वाद्भेदः, सत्स्वेवाचार्यादिस्थरत्नावयवेष्वन्यस्य तिरोहितस्य रत्नभागस्य स्वावरणविगमत आविर्भावोपलम्भात् । न परोक्षापरोक्षकृतो भेदो वस्तुपरिच्छित्तिं प्रत्येकत्वात् । नैकस्य ज्ञानस्यावस्थाभेदतो भेदो निर्मलानिर्मलावस्थावस्थितदर्पणस्यापि भेदापत्तेः । नावयवावयविकृतो भेदः, अवयवस्यावयविनोऽव्यतिरेकात् । सम्पूर्णरत्नानि देवो न तदेकदेश इति चेन्न, रत्नैकदेशस्य देवत्वाभावे समस्तस्यापि तदसत्त्वापत्तेः । न चाचार्यादिस्थितरत्नानि कृत्स्नकर्मक्षयकर्तॄणि रत्नैकदेशत्वादिति चेन्न, अग्निसमूहकार्यस्य पलालराशिदाहस्य तत्कणादप्युपलम्भात् । तस्मादाचार्यादयोऽपि देवा इति स्थितम् । विगताशेषलेपेषु सिद्धेषु सत्स्वर्हतां सलेपानामादौ किमिति नमस्कारः क्रियत इति चेन्नैष दोषः, गुणाधिकसिद्धेषु श्रद्धाधिक्य-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निबन्धनत्वात् । असत्यर्हत्याप्तागमपदार्थावगमो न भवेदस्मदादीनाम्, संजातश्चैतत्प्रसादादित्युपकारापेक्षया वादावर्हन्नमस्क्रियते । न पक्षपातो दोषाय शुभपक्षवृत्तेः श्रेयोहेतुत्वात् । अद्वैतप्रधाने गुणीभूतद्वैते द्वैतनिबन्धनस्य पक्षपातस्यानुपपत्तेश्च । आप्तश्रद्धाया आप्तागमपदार्थविषयश्रद्धाधिक्यनिबन्धनत्वख्यापनार्थं वार्हतामादौ नमस्कारः । उत्तं च— जस्संतियं धम्मवहं णिगच्छे तस्संतियं वेणइयं पउंजे । सक्कारए तं सिर-पंचएण काएण वाया मणसा वि णिच्चं ॥ ३४ ॥ मंगलस्स कारणं गयं । संपहि णिमित्तमुच्चदे- कस्स णिमित्तं ? सुत्तावदारस्स । तं कथं जाणिज्जदि सुत्तावदारस्स ण यण्णस्सेति ? पयरणादो । भोयण-वेलाए सेंधवमाणित्ति वयणादो लोण इव । बद्ध-बंध-बंधकारण-मुक्क-मोक्ख-मोक्खकारणाणि णिक्खेव-णय-प्पमाणाणियोग-द्दारेहि अहिगम्म भविय-जणो जाणदु त्ति सुत्तमोइण्णं अत्थदो तित्थयरादो, गंथदो गणहर-देवादो त्ति । द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमत्वतः सदा स्थितस्य श्रुतस्य कथमवतार इति चेदेतत्सर्वमभविष्यद्यदि द्रव्यार्थिकनयोऽविवक्षिष्यत । पर्यायार्थिकनयापेक्षायामवतारस्तु पुनर्घटत एव । छद्दव्व-णव-पयत्थे सुय-णाणाइच्च-दिप्प-तेएण । पस्संतु भव्व-जीवा इय सुय-रविणो हवे उदयो ॥ ३५ ॥ साम्प्रतं हेतुरुच्यते— तत्र हेतुर्द्विविधः प्रत्यक्षहेतुः परोक्षहेतुरिति । कस्य हेतुः ? सिद्धान्ताध्ययनस्य । तत्र प्रत्यक्षहेतुर्द्विविधः साक्षात्प्रत्यक्षपरम्पराप्रत्यक्षभेदात् । तत्र साक्षात्प्रत्यक्षमज्ञानविनाशः सज्ज्ञानोत्पत्तिर्देवमनुष्यादिभिः सततमभ्यर्चनं प्रतिसमयमसंख्यातगुणश्रेण्या कर्मनिर्जरा च । कर्मणामसंख्यातगुणश्रेणिनिर्जरा केषां प्रत्यक्षेति चेन्न, अवधिमनःपर्ययज्ञानिनां सूत्रमधीयानानां तत्प्रत्यक्षतायाः समुपलम्भात् । तत्र परम्पराप्रत्यक्षं शिष्यप्रशिष्यादिभिः सततमभ्यर्चनम् । परोक्षं द्विविधम्, अभ्युदयनैःश्रेयसमिति । तत्राभ्युदयसुखं नाम सातादि-प्रशस्त-कर्म-तीव्रानुभागोदय-जनितेन्द्र-प्रतीन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंशदादि-देव-चक्रवर्ति-बलदेव-नारायणार्धमण्डलीक-मण्डलीक-महामण्डलीक-राजाधिराज-महाराजाधिराज-परमेश्वरादि-दिव्य-मानुष्य-सुखम् । अष्टादशसंख्यानां श्रेणीनामधिपतिर्विनम्राणाम् । राजा स्यान्मुकुटधरः कल्पतरुः सेवमानानाम् ॥ ३६ ॥ एत्थुवउज्जंतीओ गाहाओ— हय-हत्थि-रहाणहिवा सेणावइ मंति-सेट्ठि-दंडवई । सुद्द-क्खत्तिय-बम्हण-वइसा तह महयरा चेव ॥ ३७ ॥ गणरायमच्च-तलवर-पुरोहिया दप्पिया महामत्ता । अट्ठारह सेणीओ पयाइणा मेलिया होंति ॥ ३८ ॥ पृतनाङ्ग-दण्डनायक-वर्ण-वणिग्भुग्-गणेड्-महामात्राश्च । मन्त्रि-पुरोहित-सेनान्यमात्य-तलवर-महत्तराः स्युः श्रेण्यः ॥ ३९ ॥ पञ्चशतनरपतीनामधिराजोऽधीश्वरो भवति लोके । राजसहस्राधिपतिः प्रतीयतेऽसौ महाराजः ॥ ४० ॥ द्विसहस्रराजनाथो मनीषिभिर्वर्ण्यतेऽर्धमण्डलिकः । मण्डलिकश्च तथा स्याच्चतुःसहस्रावनीशपतिः ॥ ४१ ॥ अष्टसहस्रमहीपतिनायकमाहुर्बुधाः महामण्डलिकम् । षोडशराजसहस्रैर्विनम्यमानस्त्रिखण्डधरणीशः ॥ ४२ ॥ षट्खण्डभरतनाथं द्वात्रिंशद्धरणिपतिसहस्राणाम् । दिव्यमनुष्यं विदुरिह भोगागारं सुचक्रधरम् ॥ ४३ ॥ सकलभुवनैकनाथस्तीर्थकरो वर्ण्यते मुनिवरिष्ठैः । विधुधवलचामराणां तस्य स्याद्वै चतुःषष्टिः ॥ ४४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तित्थयर-गणहरत्तं तहेव देविंद-चक्कवट्टित्तं । अण्णरिहमेवमाई अब्भुदय-फलं वियाणाहि ॥ ४५ ॥ तत्र नैःश्रेयसं नाम सिद्धानामर्हतां
चातीन्द्रियसुखम् । उत्तं च— अदिसयमाद-समुत्थं विसयादीदं अणोवममणंतं । अव्वुच्छिण्णं च सुहं सुद्धुवजोगो य सिद्धाणं ॥ ४६ ॥
भाविय-सिद्धंताणं दिणयर-कर-णिम्मलं हवइ णाणं । सिसिर-यर-कर-सरिच्छं हवइ चरित्तं सवसचित्तं ॥ ४७ ॥ मेरु व्व णिप्प-
कंपं णट्टट्ठ-मलं ति-मूढ-उम्मुक्कं । सम्मद्दंसणमणुवममुप्पज्जइ पवयणब्भासा ॥ ४८ ॥ तत्तो चेव सुहाइं सयलाइं देव-मणुय-खयराणं ।
उम्मूलियट्ठ-कम्मं फुड सिद्ध-सुहं पि पवयणादो ॥ ४९ ॥ जिय-मोहिंधण-जलणो अण्णाण-तमंधयार-दिणयरओ । कम्म-मल-
कलुस-पुसओ जिण-वयणमिवोवही सुहयो ॥ ५० ॥ अण्णाण-तिमिर-हरणं सुभविय-हिययारविंद-जोहणयं । उज्जोइय-सयल-वहं
सिद्धंत-दिवायरं भजह ॥ ५१ ॥ अथवा जिनपालितो निमित्तम्; हेतुर्मोक्षः । शिक्षकाणां हर्षोत्पादनं निमित्तहेतुकथने प्रयोजनम् ।
परिमाणमुच्चदे । अक्खर-पय-संघाय-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जं, अत्थदो अणंतं । पदं पडुच्च अट्ठारह-पद-सहस्सं । शिक्ष-
काणां हर्षोत्पादनार्थं मतिव्याकुलताविनाशनार्थं च परिमाणमुच्यते । णामं जीवट्ठाणमिदि । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । तत्थ कत्ता
दुविहो, अत्थ-कत्ता गंथ-कत्ता चेदि । तत्थ-अत्थ-कत्ता दव्वादीहि चउहि परूविज्जदि । तत्र तस्य तावद् द्रव्यनिरूपणं क्रियते ।
स्वेद-रजोमल-रक्तनयनकटाक्षशरमोक्षादि-शरीरगताशेषदोषादूषित-समचतुरस्रसंस्थान-वज्रवृषभसंहनन— दिव्यगन्धप्रमाणस्थितनखरोम-
निर्भूषणायुधाम्बरभय-सौम्यवदनादि-विशिष्टदेहधरश्चतुर्विधोपसर्गक्षुधादिपरिषह-रागद्वेषकषायेन्द्रियादिसकलदोषगोचरातिक्रान्तो योज-
नान्तरदूरसमीपस्थाष्टादशभाषा-सप्तशतकुभाषायुत-तिर्यग्देवमनुष्यभाषाकारन्यूनाधिक— भावातीतमधुरमनोहरगम्भीरविशदवागति-
शयसम्पन्नो भवनवासिवाणव्यन्तर-ज्योतिष्क-कल्पवासीन्द्र-विद्याधर-चक्रवर्ति-बल-नारायण-राजाधिराज-महाराजार्धमहामण्डली-
केन्द्राग्नि-वायु-भूति-सिंह-व्यालादि-देव-विद्याधर-मनुष्यर्षि-तिर्यगिन्द्रेभ्यः प्राप्तपूजातिशयो महावीरोऽर्थकर्त्ता । तत्थ खेत्तवि-
सिट्ठोत्थ-कत्ता परूविज्जदि— पंच-सेल पुरे रम्मे विउले पव्वदुत्तमे । णाणा-दुम-समाइण्णे देव-दाणव-वंदिदे ॥ ५२ ॥ महावीरेणत्थो
कहिओ भविय-लोयस्स । अत्रोपयोगिनौ श्लोकौ— ऋषिगिरिरैन्द्राशायां चतुरस्रो याम्यदिशि च वैभारः । विपुलगिरिर्नैर्ऋत्यामुभौ
त्रिकोणौ स्थितौ तत्र ॥ ५३ ॥ धनुराकारश्छिन्नो वारुणवायव्यसौम्यदिक्षु ततः । वृत्ताकृतिरैशान्यां पाण्डुः सर्वे कुशाग्रवृताः ॥ ५४ ॥
एसो खेत्त-परिच्छेदो । तत्थ कालदो अत्थ-कत्ता परूविज्जदि— इम्मिस्सेऽवसप्पिणीए चउत्थ-समयस्स पच्छिमे भाए । चोत्तीस-वास-
सेसे किंचि विसेसूणए संते ॥ ५५ ॥ वासस्स पढम-मासे पढमे पक्खम्हि सावणे बहुले । पाडिवद-पुव्व-दिवसे तित्थुप्पत्ती दु अभि-
जिम्हि ॥ ५६ ॥ सावण-बहुल-पडिवदे रुद्द-मुहुत्ते सुहोदए रविणो । अभिजिस्स पढम-जोए जत्थ जुगादी मुणेयव्वो ॥ ५७ ॥
एसो कालपरिच्छेदो । भावतोऽर्थकर्ता निरूप्यते— ज्ञानावरणादि-निश्चय-व्यवहारापायातिशयजातानन्तज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्य-क्षायिक-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्यक्त्व-दान-लाभ-भोगोपभोग-निश्चय-व्यवहार-प्राप्तातिशयभूत-नव-केवल-लब्धिपरिणतः। उत्तं च-दाणे लाभे भोगे परिभोगे वीरिए य सम्मत्ते। णव केवल-लद्धीयो दंसण-णाणं-चरित्ते य ॥ ५८ ॥ खीणे दंसण-मोहे चरित्त-मोहे-तहेव घाइ-तिए। सम्मत्त विरिय-णाणं खइयाइं होंति केवलिणो ॥ ५९ ॥ उप्पण्णम्हि अणंते णट्ठम्मि य छादुमत्थिए णाणे। णव-विह-पयत्थ-गब्भा दिव्वज्झुणी कहइ सुत्तट्ठं ॥ ६९ ॥ एवंविधो महावीरोऽर्थकर्ता। तेण महावीरेण केवलणाणिणा कहिदत्थो तम्हि चेव काले तत्थेव खेत्ते खयोवसम-जणिद-चउरमल-बुद्धि-संपण्णेण बम्हणेण गोदम-गोत्तेण सयलदुस्सुदि-पारएण जीवाजीव-विसय-संदेह-विणासणट्ठमुवगय-वड्ढमाण-पाद-मूलेण इंदभूदिणावहारिदो। उत्तं च—गोत्तेण गोदमो विप्पो चाउव्वेय-सडंगवी। णामेण इंदभूदि त्ति सीलवं बम्हणुत्तमो ॥ ६१ ॥ पुणो तेणिंदभूदिणा भाव-सुद-पज्जय-परिणदेण बारहंगाणं चोद्दस-पुव्वाणं च गंथाणमेक्केण चेव मुहुत्तेण कमेण रयणा कदा। तदो भाव-सुदस्स अत्थ-पदाणं च तित्थयरो कत्ता। तित्थयरादो सुद-पज्जाएण गोदमो परिणदो त्ति दव्व-सुदस्स गोदमो कत्ता। तत्तो गंथ-रयणा जादेत्ति। तेण वि गोदमेण दुविहमवि सुदणाणं लोहज्जस्स संचारिदं। तेण वि जंबूसामिस्स संचारिदं। परिवाडिमस्सिदूण एदे तिण्णि वि सयल-सुद-धारया भणिया। अपरिवाडीए पुण सयल-सुद-पारगा संखेज्ज-सहस्सा। गोदमदेवो लोहज्जाइरियो जंबूसामी च एदे तिण्णि वि सत्त-विह-लद्धि-संपण्णा सयल-सुय-सायर-पारया होऊण केवलणाणमुप्पाइय णिव्वुइं पत्ता। तदो विण्हू णंदिमित्तो अवराइदो गोवद्धणो भद्दबाहु त्ति एदे पुरिसोली-कमेण पंच वि चोद्दस-पुव्व-हरा। तदो विसाहाइरियो पोट्ठिलो खत्तियो जयाइरियो नागाइरिणो सिद्धत्थथेरो धिदिसेणो विजयाइरिओ बुद्धिलो गंगदेवो धम्मसेणो त्ति एदे पुरिसोली-कमेण एक्कारस वि आइरिया एक्कारसण्हमंगाणं उप्पायपुव्वादि-दसण्हं पुव्वाणं च पारया जादा, सेसुवरिम-चदुण्हं पुव्वाणमेग-देस-धरा य। तदो णक्खत्ताइरियो जयपालो पांडुसामी दुमसेणो कंसाइरिणो त्ति एदे पुरिसोली-कमेण पंच वि आइरिया एक्कारसंग-धारया जादा, चोद्दसण्हं पुव्वाणमेग-देस-धारया। तदो सुभद्दो जसभद्दो जसबाहू लोहज्जो त्ति एदे चत्तारि वि आइरिया आयारंग-धरा सेसंग-पुव्वाणमेग-देस-धारया। तदो सव्वेसिमंग-पुव्वाणमेग-देसो आइरिय-परंपराए आगच्छमाणो धरसेणाइरियं संपत्तो। तेण वि सोरट्ठ-विसय-गिरिणयर-पट्टण-चंदगुहा-ठिएण अट्ठंग-महाणिमित्तपारएण गंथ-वोच्छेदो होहिदि त्ति जादभएण पवयण-वच्छलेण दक्खिणावहाइरियाणं महिमाए मिलियाणं लेहो पेसिदो। लेह-ट्ठिय-धरसेण-वयणमवधारिय तेहि वि आइरिएहि वे साहू गहण-धारण-समत्था धवलामल-बहु-विह-विणय-विहूसियंगा सील-माला-हरा गुरु-पेसणासण-तित्ता देस-कुल-जाइ-सुद्धा सयल-कला-पारया तिक्खुत्ताबुच्छियाइरिया अंधविसय-वेण्णायडादो पेसिदा। तेसु आगच्छमाणेसु रयणीए पच्छिमे भाए कुंदेंदु-संख-वण्णा सव्व-लक्खण-संपुण्णा अप्पणो कय-तिप्पयाहिणा पाएसु णिसुढिय-पदियंगा वे वसहा सुमिणंतरेण धरसेण-भडा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रएण दिट्ठा । एवंविह-सुमिणं दट्ठूण तुट्ठेण धरसेणाइरिएण 'जयउ सुय-देवदा' त्ति संलवियं । तद्दिवसे चेय ते दो वि जणा संपत्ता धरसेणाइरियं । तदो धरसेण-भयवदो किदियम्मं काऊण दोण्णि दिवसे वोलाविय तदिय-दिवसे विणएण धरसेण-भडारओ तेहिं विण्णत्तो-'अणेण कज्जेणम्हा दो वि जणा तुम्हं पादमूलमुवगया' त्ति । 'सुट्ठु भद्दं' ति भणिऊण धरसेण-भडारएण दो वि आसासिदा । तदो चिंतिदं भयवदा—सेल-घण-भग्गघड-अहि-चालणि-महिसाऽवि-जाहय-सुएहि । मट्टिय-मसय-समाणं वक्खाणइ जो सुदं मोहा ॥ ६२ ॥ धद-गारव-पडिबद्धो विसयामिस-विस-वसेण घुम्मंतो । सो भट्ट-बोहि-लाहो भमइ चिरं भव-वणे मूढो ॥ ६३ ॥ इदि वयणादो 'जहाछंदाईणं विज्जा-दाणं संसार-भय-वद्धणमिदि' चिंतिऊण सुहसुमिण-दंसणेणेव अवगय-पुरिसंतरेण धरसेण-भयवदा पुणरवि ताणं परिक्खा काउमाढत्ता, सुपरिक्खा हियय-णिव्वुइकरेत्ति । तदो ताणं तेण दो विज्जाओ दिण्णाओ । तत्थ एया अहियक्खरा, अवरा विहीणक्खरा । एदाओ छट्ठोववासेण साहेहु त्ति । तदो ते सिद्धविज्जा विज्जा-देवदाओ पेच्छंति, एया उद्दंतुरिया, अवरेया काणिया । एसो देवदाणं सहावो ण होदि त्ति चिंतिऊण मंत-व्वायरण-सत्थ-कुसलेहिं हीणाहियक्खराणं छुहणावणयण विहाणं काऊण पढंतेहि दो वि देवदाओ सहाव-रूव-ट्ठियाओ दिट्ठाओ । पुणो तेहि धरसेण-भयवंतस्स जहावित्तेण विणएण णिवेदिदे सुट्ठु तुट्ठेण धरसेण-भडारएण सोम-तिहि-णक्खत्तवारे गंथो पारद्धो । पुणो कमेण वक्खाणंतेण आसाढ-मास-सुक्क-पक्ख-एक्कारसीए पुव्वण्हे गंथो समाणिदो । विणएण गंथो समाणिदो त्ति तुट्ठेहि भूदेहि तत्थेयस्स महदी पूजा पुप्फ-बलि-संख-तूर-रव-संकुला कदा । तं दट्ठूण तस्स 'भूदबलि' त्ति भडारएण णामं कयं । अवरस्स वि भूदेहि पूजिदस्स अत्थ-वियत्थ-ट्ठिय-दंत-पंतिमोसारिय भूदेहि समीकयदंतस्स 'पुप्फयंतो' त्ति णामं कयं । पुणो तद्दिवसे चेव पेसिदा संतो 'गुरु-वयणमलंघणिज्जं' इदि चिंतिऊणागदेहि अंकुलेसरे वरिसाकालो कओ । जोगं समाणीय जिणपालियं दट्ठूण पुप्फयंताइरियो वणवास-विसयं गदो । भूदबलि-भडारओ वि दमिल-देसं गदो । तदो पुप्फयंताइरिएण जिणपालिदस्स दिक्खं दाऊण वीसदि-सुत्ताणि करिय पढाविय पुणो सो भूदबलि-भयवंतस्स पासं पेसिदो । भूदबलि-भयवदा जिणपालिद-पासे दिट्ठ-वीसदि-सुत्तेण अप्पाउवो त्ति अवगय-जिणवालिदेण महाकम्म-पयडि-पाहुडस्स वोच्छेदो होहदि त्ति समुप्पण्ण-बुद्धिणा पुणो दव्व-पमाणाणुगममादिं काऊण गंथ-रचणा कदा । तदो एगं खंड-सिद्धंतं पडुच्च भूदबलि-पुप्फयंताइरिया वि कत्तारो उच्चंति । तदो मूल-तंत-कत्ता वड्ढमाण-भडारओ, अणुतंत-कत्ता गोदम-सामी, उवतंतकत्तारा भूदबलि-पुप्फयंतादयो वीय-राय-दोस-मोहा मुणिवरा । किमर्थं कर्ता प्ररूप्यते? शास्त्रस्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, 'वक्तृप्रामाण्याद् वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् । संपहि जीवट्ठाणस्स अवयारो उच्चदे । तं जहा-सो वि चउव्विहो, उवक्कमो णिक्खेवो णयो अणुगमो चेदि । तत्थ उवक्कमं भणिस्सामो । उपक्रम इत्यर्थमात्मन उप समीपं क्राम्यति करोतीत्युपक्रमः । सो वि उवक्कमो पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वत्तव्वदा अत्थाहियारा चेदि। उत्तं च—तिविहा य आणुपुव्वी दसहा णामं च छव्विहं माणं। वत्तव्वदा य तिविहा तिविहो अत्थाहियारो वि ॥ ६४ ॥ इदि। पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—'उसहमजियं च वंदे' इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—एस करेमि य पणमं जिणवर-वसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिव-सुह-कंखा विलोमेण ॥ ६५ ॥ इदि। जमणुलोम-विलोमेहि विणा जहा तहा उच्चदि सा जत्थतत्थाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—गय-गवल-सजल-जलहर-परहुव-सिहि-गलय-भमर-संकासो। हरिउल-वंस-पईवो सिव-माउव-वच्छओ जयऊ ॥ ६६ ॥ इच्चेवमादि। इदं पुण जीवट्ठाणं खंड-सिद्धंतं पडुच्च पुव्वाणुपुव्वीए ट्ठिदं छण्हं खंडाणं पढम-खंडं जीवट्ठाणमिदि। वेदणा-कसिण-पाहुड-मज्झादो अणुलोम-विलोम-कमेहि विणा जीवट्ठाणस्स संतादि-अहियारा अहिणिग्गया त्ति जीवट्ठाणं जत्थतत्थाणुपुव्वीए वि संठिदं। जीवट्ठाणे ण पच्छाणुपुव्वी संभवइ। णामस्स दस ट्ठाणाणि भवंति। तं जहा, गोण्णपदे णोगोण्णपदे आदाणपदे पडिवक्खपदे अणादियसिद्धंतपदे पाधण्णपदे णामपदे पमाणपदे अवयवपदे संजोगपदे चेदि। गुणानां भावो गौण्यम्। तद् गौण्यं पदं स्थानमाश्रयो येषां नाम्नां तानि गौण्यपदानि। यथा, आदित्यस्य तपनो भास्कर इत्यादीनि नामानि। नोगौण्यपदं नाम गुणनिरपेक्षमनन्वर्थमिति यावत्। तद्यथा, चन्द्रस्वामी सूर्यस्वामी इन्द्रगोप इत्यादीनि नामानि। आदानपदं नाम आत्तद्रव्यनिबन्धनम्। नैतद्गुणनाम्नोऽन्तर्भवति तत्रादानादेयत्वविवक्षाभावात्। भावे वा न तद्गुणाश्रितमादानपदनाम्नोऽन्तर्भावात्। पूर्णकलश इत्येतदादानपदम्। नादानपदम्। तद्यथा, घटस्य कलश इति संज्ञा नात्तद्रव्यादिमाश्रिता तस्यास्तथाविधविवक्षामन्तरेण प्रवृत्तायाः समुपलम्भात्। न पूर्णशब्दोऽपि तस्य पर्याप्तवाचकत्वेन गुणनाम्नोऽन्तर्भावात्। नोभयसमासोऽपि तस्य भावसंयोगेऽन्तर्भावादिति न, जलादिद्रव्याधारत्वविवक्षायां पूर्णकलशशब्दस्यादानपदत्वाभ्युपगमात्। एवमविधवेत्यपि चालयित्वा व्यवस्थापनीयम्। अक्लिष्टानि कानि पुनरादानपदनामानि ? वधूरन्तर्वत्नीत्यादीनि आत्तभर्तृधृतापत्यसम्बन्धसत्वात्। प्रतिपक्षपदानि कुमारी वन्ध्येत्येवमादीनि आदानपदप्रतिपक्षनिबन्धनत्वात्। अनादिसिद्धान्तपदानि धर्मास्तिरधर्मास्तिरित्येवमादीनि। अपौरुषेयत्वतोऽनादिसिद्धान्तः स पदं स्थानं यस्य तदनादिसिद्धान्तपदम्। प्राधान्यपदानि आम्रवनं निम्बवनमित्यादीनि, वनान्तः सत्स्वप्यन्येष्वविवक्षितवृक्षेषु विवक्षाकृतप्राधान्यभूतपिचुमन्दनिबन्धनत्वात्। नामपदं नाम गौडोऽन्ध्रो द्रमिल इति गौडान्ध्रद्रमिलभाषानामधामत्वात्। प्रमाणपदानि शतं सहस्रं द्रोणः खारी पलं तुला कर्षादीनि प्रमाणनाम्नां प्रमेयेषूपलम्भात्। अवयवपदानि यथा, सोऽवयवो द्विविधः, उपचितोऽपचित इति। तत्रोपचितावयवनिबन्धनानि यथा, गलगण्डः शिलीपदः लम्बकर्ण इत्यादीनि नामानि। अवयवापचयनिबन्धनानि यथा, छिन्नकर्णः छिन्ननासिक इत्यादीनि नामानि। संयोगपदानि यथा,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स संयोगश्चतुर्विधो द्रव्यक्षेत्रकालभावसंयोगभेदात् । द्रव्यसंयोगपदानि यथा, इभ्यः गौथः दण्डी छत्री गर्भिणी इत्यादीनि द्रव्यसंयो-
गनिबन्धनत्वात् तेषां । नासिपरश्वादयस्तेषामादानपदेऽन्तर्भावात् । सहचरितत्वविवक्षायां भवन्तीति चेन्न, सहचरितत्वविवक्षायां तेषां
नामपदनाम्नोऽन्तर्भावात् । क्षेत्रसंयोगपदानि, माथुरः वालभः दाक्षिणात्यः औदीच्य इत्यादीनि, यदि नामत्वेनाविवक्षितानि भवन्ति ।
कालसंयोगपदानि यथा, शारदः वासन्तक इत्यादीनि । न वसन्तशरद्धेमन्तादीनि । तेषां नामपदेऽन्तर्भावात् । भावसंयोगपदानि,
क्रोधी मानी मायावी लोभीत्यादीनि । न शीलसादृश्यनिबन्धनयमसिंहाग्निरावणादीनि नामानि तेषां नामपदेऽन्तर्भावात् । न चैतेभ्यो
व्यतिरिक्तं नामास्त्यनुपलम्भात् । तत्थेदस्स जीवट्ठाणस्स णामं किं पदं ? जीवाणं ट्ठाण-वण्णणादो जीवट्ठाणमिदि गोण्णपदं । मंगलादिसु
छसु अहियारेसु वक्खाणिज्जमाणेसु णामं वुत्तमेव । पुणो किमट्ठं गंथावदारे णामं उच्चदि त्ति ? न, पूर्वोद्दिष्टस्य नाम्नोऽनेन पदान्वेषणात् ।
पमाणं पंचविहं दव्व-खेत्त-काल-भाव-णय-प्पमाण-भेदेहि । तत्थ दव्व-पमाणं संखेज्जमसंखेज्जमणंतयं चेदि । खेत्त-पमाणं एय-पदेसादि ।
काल-पमाणं समयावलियादि । भाव-पमाणं पंचविहं, आभिणिबोहियणाणं सुदणाणं ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलणाणं चेदि ।
णय-प्पमाणं सत्तविहं, णेगम-संगह-ववहारुज्जुसुद-सद्द-समभिरूढ-एवंभूद-भेदेहि । अहवा णय-प्पमाणमणेयविहं—जावदिया वयण-
वहा तावदिया चेव होंति णय-वादा । जावदिया णय-वादा तावदिया चेव होंति पर-समया ॥ ६७ ॥ इदि वयणादो । कथं नयानां
प्रामाण्यं ? न, प्रमाणकार्याणां नयानामुपचारतः प्रामाण्याविरोधात् । एत्थ जीवट्ठाणं एदेसु पंचसु पमाणेसु कदमं पमाणं ? भावपमाणं ।
तं पि पंचविहं, तत्थ पंचविहेसु भाव-पमाणेसु सुद-भाव-पमाणं । कर्तृनिरूपणया एवास्य प्रामाण्यं निरूपितमिति पुनरस्य प्रामाण्यनि-
रूपणमनर्थकमिति चेन्न, सामान्येन जिनोक्तत्वान्यथानुपपत्तितोऽवगतजीवस्थानप्रामाण्यस्य शिष्यस्य बहुषु भावप्रमाणेष्विदं जीवस्थानं
श्रुतभावप्रमाणमिति ज्ञापनार्थत्वात् । अहवा पमाणं छव्विहं, नामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालभावप्रमाणभेदात् । तत्थ णाम-पमाणं पमाण-
सण्णा । ट्ठवणा-पमाणं दुविहं, सब्भाव-ट्ठवणा-पमाणमसब्भाव-ट्ठवणा-पमाणमिदि । आकृतिमति सद्भावस्थापना । अनाकृतिमत्य-
सद्भावस्थापना । दव्वपमाणं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमदो पमाण-पाहुड-जाणओ अणुवजुत्तो, संखेज्जासंखेज्जाणंत-
भेद-भिण्ण-सद्दागमो वा । णोआगमो तिविहो, जाणुगसरीरं भवियं तव्वदिरित्तमिदि । जाणुगसरीरं भवियं च गयं । तव्वदिरित्त-
दव्व-पमाणं तिविहं, संखेज्जमसंखेज्जमणंतमिदि । खेत्त-काल-पमाणाणि पुव्वं व वत्तव्वाणि । भाव-पमाणं पंचविहं, मदि-भाव-पमाणं
सुद-भाव-पमाणं ओहि-भाव-पमाणं मणपज्जव-भाव-पमाणं केवल-भाव-पमाणं चेदि । एत्थेदं जीवट्ठाणं भावदो सुद-भाव-पमाणं ।
दव्वदो संखेज्जासंखेज्जाणंतसरूव-सद्द-पमाणं । वत्तव्वदा तिविहा, ससमयवत्तव्वदा परसमयवत्तव्वदा तदुभयवत्तव्वदा चेदि । जम्हि
सत्थम्हि स-समयो चेव वण्णिज्जदि परूविज्जदि पण्णाविज्जदि तं सत्थं ससमयवत्तव्वं, तस्स भावो ससमयवत्तव्वदा । पर-समयो मिच्छत्तं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्हि पाहुडे अणियोगे वा वण्णिज्जदि परूविज्जदि पण्णाविज्जदि तं पाहुडमणियोगो वा परसमयवत्तव्वं, तस्स भावो परसमयवत्तव्वदा णाम। जत्थ दो वि परूवेऊण पर-समयो दूसिज्जदि स-समयो थाविज्जदि तत्थ तदुभयवत्तव्वदा णाम भवदि। एत्थ पुण जीवट्ठाणे ससमयवत्तव्वदा ससमयस्सेव परूवणादो। अत्थाधियारो तिविहो, पमाणं पमेयं तदुभयं चेदि। एत्थ जीवट्ठाणे एक्को चेय अत्थाहियारो पमेय-परूवणादो। उवक्कमो गदो। णिक्खेवो चउव्विहो णाम-ट्ठवणा-दव्व-भाव-जीवट्ठाण-भेएण। णाम-जीवट्ठाणं जीवट्ठाण-सद्दो। ट्ठवण-जीवट्ठाणं बुद्धीए समारोविय-जीवट्ठाण-दव्वं। दव्व-जीवट्ठाणं दुविहं आगम-णोआगम-भेएण। तत्थ जीवट्ठाण-जाणओ अणुवजुत्तो आगम-दव्व-जीवट्ठाणं। णोआगम-दव्व-जीवट्ठाणं तिविहं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-णोआगम-दव्व-जीवट्ठाण-भेएण। आदिल्ल-दुगं सुगमं। तव्वदिरित्तं जीवट्ठाणाहारभूदागास-दव्वं। भाव-जीवट्ठाणं दुविहं आगम-णोआगम-भेएण। आगम-भाव-जीवट्ठाणं जीवट्ठाण-जाणओ उवजुत्तो। णोआगम-भाव-जीवट्ठाणं मिच्छाइट्ठियादि-चोद्दस-जीव-समासा। एत्थ णो-आगम-भाव-जीवट्ठाणं पयदं। णिक्खेवो गदो। नयैर्विना लोकव्यवहारानुपपत्तेर्नया उच्यन्ते। तद्यथा, प्रमाणपरिगृहीतार्थैकदेशे वस्त्वध्यवसायो नयः। स द्विविधः, द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकश्चेति। द्रवति दोष्यत्यदुद्रुवत्तांस्तान्पर्यायानिति द्रव्यम्, द्रव्यमेवार्थः प्रयोजनमस्येति द्रव्यार्थिकः। परि भेदमेति गच्छतीति पर्यायः, पर्याय एवार्थः प्रयोजनमस्येति पर्यायार्थिकः। तत्र द्रव्यार्थिकस्त्रिविधः, नैगमः संग्रहो व्यवहारश्चेति। विधिव्यतिरिक्तप्रतिषेधानुपलम्भाद्विधिमात्रमेव तत्त्वमित्यध्यवसायः समस्तस्य ग्रहणात्संग्रहः। द्रव्यव्यतिरिक्तपर्यायानुपलम्भाद् द्रव्यमेव तत्त्वमित्यध्यवसायो वा संग्रहः। संग्रहनयाक्षिप्तानामर्थानां विधिपूर्वकमवहरणं भेदनं व्यवहारः व्यवहारपरतन्त्रो व्यवहारनय इत्यर्थः। यदस्ति न तद् द्वयमतिलङ्घ्य वर्तत इति नैकं गमो नैगमः, संग्रहासंग्रहस्वरूपद्रव्यार्थिको नैगम इति यावत्। एते त्रयोऽपि नया नित्यवादिनः स्वविषये पर्यायाभावतः सामान्यविशेषकालयोरभावात्। पर्यायार्थिको द्विविधः, अर्थनयो व्यञ्जननयश्चेति। द्रव्यपर्यायार्थिकनययोः किंकृतो भेदश्चेदुच्यते, ऋजुसूत्रवचनविच्छेदो मूलाधारो येषां नयानां ते पर्यायार्थिकाः। विच्छिद्यतेऽस्मिन् काल इति विच्छेदः। ऋजुसूत्रवचनं नाम वर्तमानवचनं, तस्य विच्छेदः ऋजुसूत्रवचनविच्छेदः। स कालो मूल आधारो येषां नयानां ते पर्यायार्थिकाः। ऋजुसूत्रवचनविच्छेदादारभ्य आ एकसमयाद्वस्तुस्थित्यध्यवसायिनः पर्यायार्थिका इति यावत्। अपरे शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकाः। तत्रार्थव्यञ्जनपर्यायैर्विभिन्नलिङ्गसंख्याकालकारकपुरुषोपग्रहभेदैरभिन्नं वर्तमानमात्रं वस्त्वध्यवस्यन्तोऽर्थनयाः, न शब्दभेदेनार्थभेद इत्यर्थः। व्यञ्जनभेदेन वस्तुभेदाध्यवसायिनो व्यञ्जननयाः। तत्रार्थनय ऋजुसूत्रः। कुतः? ऋजु प्रगुणं सूत्रयति सूचयतीति तत्सिद्धेः। नैगमसंग्रहव्यवहाराश्चार्थनया इति चेत्, सन्त्वेतेऽर्थनयाः अर्थव्यापृतत्वात्, किंतु न ते पर्यायार्थिका द्रव्यार्थिकत्वात्। व्यञ्जननयस्त्रिविधः, शब्दः समभिरूढ एवंभूत इति। शब्दपृष्ठतोऽर्थग्रहणप्रवणः शब्दनयः लिङ्गसंख्याकालकारकपुरुषोप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रहव्यभिचारनिवृत्तिपरतन्त्रत्वात्। लिङ्गव्यभिचारस्तावदुच्यते। स्त्रीलिङ्गे पुल्लिङ्गाभिधानं तारका स्वातिरिति। पुल्लिङ्गे स्त्र्यभिधानं अवगमो विद्येति। स्त्रीत्वे नपुंसकाभिधानं वीणा आतोद्यमिति। नपुंसके स्त्र्यभिधानं आयुधं शक्तिरिति। पुल्लिङ्गे नपुंसकाभिधानं पटो वस्त्रमिति। नपुंसके पुल्लिङ्गाभिधानं आयुधं परशुरिति। संख्याव्यभिचार एकत्वे द्वित्वं नक्षत्रं पुनर्वसू इति। एकत्वे बहुत्वं नक्षत्रं शतभिषज इति। द्वित्वे एकत्वं गोधौ ग्राम इति। द्वित्वे बहुत्वं पुनर्वसू पञ्चतारका इति। बहुत्वे एकत्वं आम्राः वनमिति। बहुत्वे द्वित्वं देवमनुष्या उभौ राशी इति। कालव्यभिचारः, विश्वदृश्वास्य पुत्रो जनिता, भविष्यदर्थे भूतप्रयोगः। भावि कृत्यमासीदिति, भूते भविष्यत्प्रयोग इत्यर्थः। साधनव्यभिचारः, ग्राममधिशेते इति। पुरुषव्यभिचारः, एहि मन्ये रथेन यास्यसि न हि यास्यसि यातस्ते पितेति। उपग्रहव्यभिचारः, रमते विरमति, तिष्ठति संतिष्ठते, विशति निविशते इति। एवमादयो व्यभिचारा न युक्ताः, अन्यार्थस्यान्यार्थेन सम्बन्धाभावात्। ततो यथालिङ्गं यथासंख्यं यथासाधनादि च न्याय्यमभिधानमिति। नानार्थसमभिरोहणात्समभिरूढः। इन्दनादिन्द्रः पूर्दारणात्पुरन्दरः शकनाच्छक्र इति, भिन्नार्थवाचकत्वान्नैते एकार्थवर्तिनः। न पर्यायशब्दाः सन्ति भिन्नपदानामेकार्थवृत्तिविरोधात्। नाविरोधः पदानामेकत्वापत्तेरिति। नानार्थस्य भावो नानार्थता तां समभिरूढत्वात्समभिरूढः। एवं भेदे भवनादेवम्भूतः। न पदानां समासोऽस्ति भिन्नकालवर्तिनां भिन्नार्थवर्तिनां चैकत्वविरोधात्। न परस्परव्यपेक्षाप्यस्ति वर्णार्थसंख्याकालादिभिर्भिन्नानां पदानां भिन्नपदापेक्षायोगात्। ततो न वाक्यमप्यस्तीति सिद्धम्। ततः पदमेकमेकार्थस्य वाचकमित्यध्यवसाय एवंभूतनयः। एतस्मिन्नये एको गोशब्दो नानार्थे न वर्तते, एकस्यैकस्वभावस्य बहुषु वृत्तिविरोधात्। पदगतवर्णभेदाद्वाच्यभेदस्याध्यवसायकोऽप्येवम्भूतः, एवम्भूते समुत्पन्नत्वात्। एवमेते संक्षेपेण नयाः सप्तविधाः, अवान्तरभेदेन पुनरसंख्येयाः। एते च पुनर्व्यवहर्तृभिरवश्यमनुगन्तव्याः, अन्यथार्थप्रतिपादनावगमानुपपत्तेः। उक्तं च—णत्थि णएहि विहूणं सुत्तं अत्थोत्थ जिणवरमदम्हि। तो णय-वादे णिउणा मुणिणो सिद्धंतिया होंति ॥ ६८ ॥ तम्हा अहिगय-सुत्तेण अत्थ-संपायणम्हि जइयव्वं। अत्थ-गई वि य णय-वाद-गहण-लीणा दुरहियम्मा ॥ ६९ ॥ एवं णय-परूवणा गदा। अणुगमं वत्तइस्सामो—

एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीव-समासाणं मग्गणट्ठदाए तत्थ इमाणि चोद्दस चेव ट्ठाणाणि णायव्वाणि भवंति ॥ २ ॥

'एत्तो' एतस्मादित्यर्थः। कस्मात्? प्रमाणात्। कुत एतदवगम्यते? प्रमाणस्य जीवस्थानस्याप्रमाणादवतारविरोधात्। नाजलात्मकहिमवतो निपतज्जलात्मकगङ्गया व्यभिचारः, अवयविनोऽवयवस्यात्र वियोगापायस्य विवक्षितत्वात्। नावयविनोऽवयवो भिन्नो विरोधात्। तदपि प्रमाणं द्विविधं द्रव्यभावप्रमाणभेदात्। द्रव्यप्रमाणात् संख्येयासंख्येयानन्तात्मकद्रव्यजीवस्थानस्यावतारः। भावप्रमाणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चविधम्, आभिणिबोहियभावपमाणं सुदभावपमाणं ओहिभावपमाणं मणपज्जवभावपमाणं केवलभावपमाणं चेदि। तत्थ आभिणिबोहियणाणं णाम पंचिंदिय-णोइंदिएहि मदिणाणावरण-खयोवसमेण जणिदोवग्गहेहावायधारणाओ सद्द-परिस-रस-रूव-गंध-दिट्ठ-सुदाणुभूद-विसयाओ बहु-बहुविह-खिप्पाणिस्सिदाणुत्त-धुवेदर-भेदेण ति-सय-छत्तीसाओ। सुदणाणं णाम मदि-पुव्वं मदिणाण-पडिगहियमत्थं मोत्तूणण्णत्थम्हि वावदं सुदणाणावरणीय-क्खयोवसम-जणिदं। ओहिणाणं णाम दव्व-क्खेत्त-काल-भाव-वियप्पियं पोग्गल-दव्वं पच्चक्खं जाणदि। दव्वदो जहण्णेण जाणंतो एय-जीवस्स ओरालिय-सरीर-संचयं लोगागास-पदेस-मेत्ते खंडे कदे तत्थेय-खंडं जाणदि। उक्कस्सेणेग-परमाणुं जाणदि। दोण्हमंतरालमजहण्णमणुक्कस्सोही जाणदि। खेत्तदो जहण्णेणंगुलस्स असंखेज्जदि-भागं जाणदि। उक्कस्सेण असंखेज्ज-लोगमेत्त-खेत्तं जाणदि। दोण्हमंतरालमजहण्णमणुक्कस्सोही जाणदि। कालदो जहण्णेण आवलियाए असंखेज्जदि-भागे भूदं भविस्सं च जाणदि। उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्त-समएसु अदीदमणागयं च जाणदि। दोण्हं पि विचालमजहण्ण-अणुक्कस्सोही जाणदि। भावदो पुव्वणिरूविद-दव्वस्स सत्तिं जाणदि। मणपज्जवणाणं णाम पर-मणो-गयाइं मुत्ति-दव्वाइं तेण मणेण सह पच्चक्खं जाणदि। दव्वदो जहण्णेण एग-समय-ओरालिय-सरीर-णिज्जरं जाणदि। उक्कस्सेण एग-समयपडिबद्धस्स कम्मइय-दव्वस्स अणंतिम-भागं जाणदि। खेत्तदो जहण्णेण गाउव-पुधत्तं उक्कस्सेण माणुस-खेत्तस्संतो जाणदि, णो बहिद्धा। कालदो जहण्णेण दो तिण्णि भवग्गहणाणि उक्कस्सेण असंखेज्जाणि भव-ग्गहणाणि जाणदि। केवलणाणं णाम सव्वदव्वाणि अदीदाणागद-वट्टमाणाणि सपज्जयाणि पच्चक्खं जाणदि। एत्थ किमाभिणिबोहिय-पमाणादो, किं सुद-पमाणादो, किमोहि-पमाणादो, किं मणपज्जव-पमाणादो, किं केवल-पमाणादो? एवं पुच्छा सव्वेसिं। एवं पुच्छिदे णो आभिणिबोहिय-पमाणादो, णो ओहि-पमाणादो, णो मणपज्जव-पमाणादो। गंथं पडुच्च सुद-पमाणादो, अत्थदो केवल-पमाणादो। एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे दव्व-भाव-सुदं पडुच्च विदियादो, अत्थं पडुच्च पंचमादो केवलणाणादो। पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे दव्व-भाव-सुदं पडुच्च चउत्थादो सुद-पमाणादो, अत्थं पडुच्च पढमादो केवलादो। जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे सुदणाणादो केवलणाणादो य। सुदणाणमिदि गुणणामं, अक्खर-पद-संघाद-पडिवत्तियादीहि संखेज्जमत्थदो अणंतं। एदस्स तदुभयवत्तव्वदा। अत्थाहियारो दुविहो, अंगबाहिरो अंगपइट्ठो चेदि। तत्थ अंगबाहिरस्स चोद्दस अत्थाहियारा। तं जहा, सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणा पडिक्कमणं वेणइयं किदियम्मं दसवेयालियं उत्तरज्झयणं कप्पववहारो कप्पाकप्पियं महाकप्पियं पुंडरीयं महापुंडरीयं णिसिहियं चेदि। तत्थ जं सामाइयं तं णाम-ट्ठवणा-दव्व-क्खेत्त-काल-भावेसु समत्तविहाणं वण्णेदि। चउवीसत्थओ चउवीसण्हं तित्थयराणं वंदण-विहाणं तण्णाम-संठाणुस्सेह-पंच-महाकल्लाण-चोत्तीस-अइसय-सरूवं तित्थयर-वंदणाए सहलत्तं च वण्णेदि। वंदणा एग-जिण-जिणालय-विसय-वंदणाए णिर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वज्ज-भावं वण्णेइ । पडिक्कमणं कालं पुरिसे च अस्सिऊण सत्तविह-पडिक्कमणाणि वण्णेइ । वेणइयं णाण-दंसण-चरित्त-तवोवयारवि-
णए वण्णेइ । किदियम्मं अरहंत-सिद्ध-आइरिय-बहुसुद-साहूणं पूजादिविहाणं वण्णेइ । दसवेयालियं आयार-गोयर-विहिं वण्णेइ ।
उत्तरज्झयणं उत्तर-पदाणि वण्णेइ । कप्पववहारो साहूणं जोग्गमाचरणं अकप्प-सेवणाए पायच्छित्तं च वण्णेइ । कप्पाकप्पियं साहूणं
जं कप्पदि जं च ण कप्पदि तं सव्वं वण्णेदि । महाकप्पियं काल-संघडणाणि अस्सिऊण साहु-पाओग्ग-दव्व-खेत्तादीणं वण्णणं
कुणइ । पुंडरीयं चउव्विह-देवेसुववादकारण-अणुट्ठाणाणि वण्णेइ । महापुंडरीयं सयलिंद-पदिइंदे उप्पत्ति-कारणं वण्णेइ ।
णिसिहियं बहुविह-पायच्छित्त-विहाण-वण्णणं कुणइ । अंगपविट्ठस्स अत्थाहियारो बारसविहो । तं जहा, आयारो सूदयदं ठाणं
समवायो वियाहपण्णत्ती णाहधम्मकहा उवासयज्झयणं अंतयडदसा अणुत्तरोववादियदसा पण्हवायरणं विवागसुत्तं दिट्ठिवादो चेदि ।
एत्थायारंगमट्ठारह-पद-सहस्सेहि १८०००—कथं चरे कथं चिट्ठे कथमासे कथं सए । कथं भुंजेज्ज भासेज्ज कथं पावं ण
बज्झइ ॥ ७० ॥ जदं चरे जदं चिट्ठे जदमासे जदं सए । जदं भुंजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्झइ ॥ ७१ ॥ एवमादियं मुणीणमायारं
वण्णेदि । सूदयदं णाम अंगं छत्तीस-पय-सहस्सेहि ३६००० णाणविणय-पण्णावणा-कप्पाकप्प-च्छेदोवट्ठावण-ववहारधम्मकिरियाओ
परूवेइ ससमय-परसमय-सरूवं च परूवेइ । ठाणं णाम अंगं वायालीस-पद-सहस्सेहि ४२००० एगादि-एगुत्तर-ट्ठाणाणि वण्णेदि ।
तस्सोदाहरणं—एक्को चेव महप्पो सो दुवियप्पो ति-लक्खणो भणिओ । चदु-संकमणा-जुत्तो पंचग्ग-गुण-प्पहाणो य ॥ ७२ ॥
छक्कावक्कम-जुत्तो कमसो सो सत्त-भंगि-सब्भावो । अट्ठासवो णवट्ठो जीवो दस-ठाणियो भणियो ॥ ७३ ॥ समवायो णाम अंगं
चउसट्ठि-सहस्सब्भहिय-एग-लक्ख-पेदहि १६४००० सव्वपयत्थाणं समवायं वण्णेदि । सो वि समवायो चउव्विहो, दव्व-खेत्त-काल-
भावसमवायो चेदि । तत्थ दव्वसमवायो धम्मत्थिय-अधम्मत्थिय-लोगागास-एगजीवपदेसा च समा । खेत्तदो सीमंतणिरय-माणु-
सखेत्त-उडुविमाण-सिद्धिखेत्तं च समा । कालदो समयो समएण मुहुत्तो मुहुत्तेण समो । भावदो केवलणाणं केवलदंसणेण समं
णेयप्पमाणणाणमेत्त-चेयणोवलंभादो । वियाहपण्णत्ती णाम अंगं दोहि लक्खेहि अट्ठावीस-सहस्सेहि पदेहि २२८००० किमत्थि जीवो,
किं णत्थि जीवो इच्चेवमाइयाइं सट्ठि-वायरण-सहस्साणि परूवेदि । णाहधम्मकहा णाम अंगं पंच-लक्ख-छप्पण्ण-सहस्स-पदेहि
५५६००० सुत्त-पोरिसीसु तित्थयराणं धम्मुवदेसणं गणहरदेवस्स जाद-संसयस्स संदेह-छिंदण-विहाणं, बहुविह-कहाओ उवकहाओ
च वण्णेदि । उवासयज्झयणं णाम अंगं एक्कारस-लक्ख-सत्तरि-सहस्स-पदेहि ११७००००—दंसण-वद-सामाइय-पोसह-सचित्त-
राइभत्ते य । बम्हारंभ-परिग्गह-अणुमण-उद्दिट्ठ-देसविरदी य ॥ ७४ ॥ इदि एक्कारस-विह-उवासगाणं लक्खणं तेसिं चेव वदा-
रोवण-विहाणं तेसिमाचरणं च वण्णेदि । अंतयडदसा णाम अंगं तेवीस-लक्ख-अट्ठावीस-सहस्स-पदेहि २३२८००० एक्केक्कम्हि य

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तित्थे दारुणे बहुविहोवसग्गे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण णिव्वाणं गदे दस दस वण्णेदि । उक्तं च तत्त्वार्थभाष्ये—संसारस्यान्तः कृतो यैस्तेऽन्तकृतो नमि-मतङ्ग-सोमिल-रामपुत्र-सुदर्शन-यमलीक-वलीक-किष्किंविल-पालम्बाष्टपुत्रा इति एते दश वर्द्धमानतीर्थकर-तीर्थे । एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये, एवं दश दशानगारा दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृतो दशास्यां वर्ण्यन्त इति अन्तकृद्दशा । अणुत्तरोववादियदसा णाम अंगं वाणउदि-लक्ख-चोयाल-सहस्स-पदेहि ९२४४००० एक्केकम्हि य तित्थे दारुणे बहुविहोवसग्गे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण अणुत्तर-विमाणं गदे दस दस वण्णेदि । उक्तं च तत्त्वार्थभाष्ये—उपपादो जन्म प्रयोजनमेषां त इमे औपपादिकाः, विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजित-सर्वार्थसिद्धाख्यानि पंचानुत्तराणि । अनुत्तरेष्वौपपादिका अनुत्तरौपपादिकाः, ऋषिदास-धन्य-सुनक्षत्र-कार्तिकेयानन्द-नन्दन-शालिभद्राभय-वारिषेणचिलातपुत्रा इत्येते दश वर्द्धमानतीर्थकरतीर्थे । एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये, एवं दश दशानगारा दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिका दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा । पण्हवायरणं णाम अंगं तेणउदिलक्ख-सोलह-सहस्स-पदेहि ९३१६००० अक्खेवणी णिक्खेवणी संवेयणी णिव्वेयणी चेदि चउव्विहाओ कहाओ वण्णेदि । तत्थ अक्खेवणी णाम छद्दव्व-णव-पयत्थाणं सरूवं दिगंतर-समयांतर-णिराकरणं सुद्धिं करेंती परूवेदि । विक्खेवणी णाम पर-समएण स-समयं दूसंती पच्छा दिगंतर-सुद्धिं करेंती स-समयं थावंती छद्दव्व-णव-पयत्थे परूवेदि । संवेयणी णाम पुण्ण-फल-संकहा । काणि पुण्ण-फलाणि ? तित्थयर-गणहर-रिसि-चक्कवट्टि-बलदेव-वासुदेव-सुर-विज्जाहररिद्धीओ । णिव्वेयणी णाम पाव-फल-संकहा । काणि पावफलाणि ? णिरय-कुमाणुस-जोणीसु जाइ-जरा-मरण-वाहि-वेयणा-दालिद्दादीणि । संसार-सरीर-भोगेसु वेरग्गुप्पाइणी णिव्वेयणी णाम । उक्तं च—आक्षेपणीं तत्त्वविधानभूतां विक्षेपणीं तत्त्वदिगन्तशुद्धिम् । संवेगिनीं धर्मफलप्रपञ्चां निर्वेगिनीं चाह कथां विरागाम् ॥ ७५ ॥ एत्थ विक्खेवणी णाम कहा जिण-वयण-मयाणंतस्स ण कहेयव्वा, अगहिद-स-समय-सब्भावो पर-समय-संकहाहि वाउलिद-चित्तो मा मिच्छत्तं गच्छेज्ज त्ति तेण तस्स विक्खेवणीं मोत्तूण सेसाओ तिण्णि वि कहाओ कहेयव्वाओ । तदो गहिदससमयस्स उवलद्ध-पुण्ण-पावस्स जिण-सासणे अट्ठि-मज्जाणुरत्तस्स जिण-वयण-णिव्विदिगिंछस्स भोगरइ-विरदस्स तव-सील-णियम-जुत्तस्स पच्छा विक्खेवणी कहा कहेयव्वा । एसा अकहा वि पण्णवयंतस्स परूवयंतस्स तदा कहा होदि । तम्हा पुरिसंतरं पप्प समणेण कहा कहेयव्वा । पण्हादो हद-णट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुह-दुक्ख-जीविय-मरण-जय-पराजय-णाम-दव्वायुसंखं च परूवेदि । विवागसुत्तं णाम अंगं एक-कोडि-चउरासीदि-लक्ख-पदेहि १८४००००० पुण्ण-पाव-कम्माणं विवायं वण्णेदि । एक्कारसंगाणं सव्व-पद-समासो चत्तारि कोडीओ पण्णारह-लक्खा-वे-सहस्सं च ४१५०२००० । दिट्ठिवादो णाम अंगं बारसमं । तस्य दृष्टिवादस्य स्वरूपं निरूप्यते । कौत्कल-काणेविद्धि-कौशिक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हरिश्मश्रु-मान्दपिक-रोमश-हारित-मुण्ड-अश्वलायनादीनां क्रियावाददृष्टीनामशीतिशतम्, मरीचि-कपिलोलूक-गार्ग्य-व्याघ्रभूति-
वाद्वलि-माठर-मौद्गल्यायनादीनामक्रियावाददृष्टीनां चतुरशीतिः, शाकल्य-वल्कल-कुथुमि-सात्यमुग्रि-नारायण-कण्व-माध्यंदिन-मोद-
पैप्पलाद-बादरायण-स्वेष्टकृदैतिकायन-वसु-जैमिन्यादीनामज्ञानिकदृष्टीनां सप्तषष्टिः, वशिष्ठ-पाराशर-जतुकर्ण-वाल्मीकि-रोमहर्षणी-
सत्यदत्त-व्यासैलापुत्रौपमन्यवैन्द्रदत्तायस्थूणादीनां वैनयिकदृष्टीनां द्वात्रिंशत् । एषां दृष्टिशतानां त्रयाणां त्रिषष्ठ्युत्तराणां प्ररूपणं
निग्रहश्च दृष्टिवादे क्रियते । एत्थ किमायारादो, एवं पुच्छा सव्वेसिं । णो आयारादो, एवं वारणा सव्वेसिं, दिट्ठिवादादो । तस्स उवक्कमो
पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि । तत्थ आणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी
चेदि । एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे बारसमादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे पढमादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे दिट्ठिवायादो ।
णामं, दिट्ठीओ वददीदि दिट्ठिवादं ति गुणणामं । पमाणं, अक्खर-पद-संघाद-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जं अत्थदो अणंतं ।
वत्तव्वदा, तदुभयवत्तव्वदा । तस्स पंच अत्थाहियारा हवंति, परियम्म-सुत्त-पढमाणियोग-पुव्वगय-चूलिया चेदि । जं तं परियम्मं तं
पंचविहं । तं जहा, चंदपण्णत्ती सूरपण्णत्ती जंबूदीवपण्णत्ती दीवसायरपण्णत्ती वियाहपण्णत्ती चेदि । तत्थ चंदपण्णत्ती णाम छत्तीस-
लक्ख-पंच-पद-सहस्सेहि ३६०५००० चंदायु-परिवारिद्धि-गइ-बिंबुस्सेह-वण्णणं कुणइ । सूरपण्णत्ती पंच-लक्ख-तिण्णि-पद-सहस्सेहि
५०३००० सूरस्सायु-भोगोवभोग-परिवारिद्धि-गइ-बिंबुस्सेह-दिण-किरणुज्जोव-वण्णणं कुणइ । जंबूदीवपण्णत्ती तिण्णि-लक्ख-पंचवीस-
पद-सहस्सेहि ३२५००० जंबूदीवे णाणाविह-मणुयाणं भोग-कम्म-भूमियाणं अण्णेसिं च पव्वद-दह-णइ-वेइयाणं वस्सावासाकट्टिम-
जिणहरादीणं वण्णणं कुणइ । दीवसायरपण्णत्ती बावण्ण-लक्ख-छत्तीस-पद-सहस्सेहि ५२३६००० उद्धार-पल्ल-पमाणेण दीव-सायर-
पमाणं अण्णं पि दीव-सायरंतब्भूदत्थं बहु-भेयं वण्णेदि । वियाहपण्णत्ती णाम चउरासीदि-लक्ख-छत्तीस-पद-सहस्सेहि ८४३६०००
रूवि-अजीव-दव्वं अरूवि-अजीव-दव्वं भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-रासिं च वण्णेदि । सुत्तं अट्ठासीदि-लक्ख-पदेहि ८८००००० अबंधओ
अवलेवओ अकत्ता अभोत्ता णिग्गुणो सव्वगओ अणुमेत्तो णत्थि जीवो जीवो चेव अत्थि पुढवियादीणं समुदएण जीवो उप्पज्जइ
णिच्चेयणो णाणेण विणा सचेयणो णिच्चो अणिच्चो अप्पेत्ति वण्णेदि । तेरासियं णियदिवादं विण्णाणवादं सद्दवादं पहाणवादं दव्ववादं
पुरिसवादं च वण्णेदि । उत्तं च— अट्ठासी-अहियारेसुं चउण्हमहियाराणमत्थि णिद्देसो । पढमो अबंधयाणं विदियो तेरासियाण
बोद्धव्वो ॥ ७६ ॥ तदियो य णियइ-पक्खे हवइ चउत्थो ससमयम्मि ॥ पढमाणियोगो पंच-सहस्स-पदेहि ५००० पुराणं वण्णेदि ।
उत्तं च— बारसविहं पुराणं जगदिट्ठं जिणवरेहि सव्वेहिं । तं सव्वं वण्णेदि हु जिणवंसे रायवंसे य ॥ ७७ ॥ पढमो अरहंताणं विदियो
पुण चक्कवट्टि-वंसो दु । विज्जाहराण तदियो चउत्थयो वासुदेवाणं ॥ ७८ ॥ चारण-वंसो तह पंचमो दु छट्ठो य पण्ण-समणाणं । सत्तमओ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुरुवंसो अट्ठमओ तह य हरिवंसो ॥ ७९ ॥ णवमो य इक्खयाणं दसमो वि य कासियाण बोद्धव्वो । वाईणेक्कारसमो बारसमो णाहवंसो दु ॥ ८० ॥ पुव्वगयं पंचाणउदि-कोडि-पण्णास-लक्ख-पंच-पदेहि ९५५००००००५ उप्पाद-वय-धुवत्तादीणं वण्णणं कुणइ । चूलिया पंचविहा, जलगया थलगया मायागया रूवगया आगासगया चेदि । तत्थ जलगया दो-कोडि-णव-लक्ख-एऊण-णवुइ-सहस्स वेसद पदेहि २०९८९२०० जलगमण-जलत्थंभण-कारण-मंत-तंत-तवच्छरणाणि वण्णेदि । थलगया णाम तेत्तिएहि चेव पदेहि २०९८९२०० भूमि-गमण-कारण-मंत-तंत-तवच्छरणाणि वत्थु-विज्जं भूमि-संबंधमण्णं पि सुहासुह-कारणं वण्णेदि । मायागया तेत्तिएहि चेय पदेहि २०९८९२०० इंद-जालं वण्णेदि । रूवगया तेत्तिएहि चेय पदेहि २०९८९२०० सीह-हय-हरिणादि-रूवायारेण परिणमण-हेदु-मंत-तंत-तवच्छरणाणि चित्त-कट्ठ-लेप्प-लेणकम्मादि-लक्खणं च वण्णेदि । आयासगया णाम तेत्तिएहि चेय पदेहि २०९८९२०० आगास-गमण-णिमित्त-मंत-तंत-तवच्छरणाणि वण्णेदि । चूलिया-सव्व-पद-समासो-दसकोडिओ एगूण-पंचास-लक्ख-छायाल-सहस्स-पदाणि १०४९४६०००। एत्थ किं परियम्मादो, किं सुत्तादो ? एवं पुच्छा सव्वेसिं । णो परियम्मादो, णो सुत्तादो, एवं वारणा सव्वेसिं । पुव्वगयादो । तस्स उवक्कमो पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि । तत्थाणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि । एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे चउत्थादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे विदियादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे पुव्वगयादो । पुव्वाणं गयं पत्तपुव्वसरूवं वा पुव्वगयमिदि गुणणामं । अक्खर-पद-संघाद-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जं, अत्थदो पुण अणंतं । वत्तव्वदा ससमयवत्तव्वदा । अत्थाधियारो चोद्दसविहो । तं जहा, उत्पादपूर्वं अग्रायणीयं वीर्यानुप्रवादं अस्तिनास्तिप्रवादं ज्ञानप्रवादं सत्यप्रवादं आत्मप्रवादं कर्मप्रवादं प्रत्याख्याननामधेयं विद्यानुप्रवादं कल्याणनामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं लोकबिन्दुसारमिति । तत्थ उप्पादपुव्वं दसण्हं वत्थूणं १० वे-सद-पाहुडाणं २०० कोडि-पदेहि १०००००००० जीव-काल-पोग्गलाणमुप्पाद-वय-धुवत्तं वण्णेइ । अग्गेणियं णाम पुव्वं चोद्दसण्हं-वत्थूणं १४ वे-सयासीदि-पाहुडाणं २८० छण्णउइ-लक्ख-पदेहि ९६००००० अंगाणमग्गं वण्णेइ । वीरियाणुपवादं णाम पुव्वं अट्ठण्णं वत्थूणं ८ सट्ठि-सय-पाहुडाणं १६० सत्तरि-लक्ख-पदेहि ७०००००० अप्पविरियं पर-विरियं उभय-विरियं खेत्त-विरियं भव-विरियं तव-विरियं वण्णेइ । अत्थिणत्थिपवादं णाम पुव्वं अट्ठारसण्हं वत्थूणं १८ सट्ठि-ति-सद-पाहुडाणं ३६० सट्ठि-लक्ख-पदेहि ६०००००० जीवाजीवाणं अत्थि-णत्थित्तं वण्णेदि । तं जहा, जीवः स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावैः स्यादस्ति, परद्रव्यक्षेत्रकालभावैः स्यान्नास्ति, ताभ्यामक्रमेणादिष्टः स्यादवक्तव्यः, प्रथमद्वितीयधर्माभ्यां क्रमेणादिष्टःस्यादस्ति च नास्ति च, प्रथमतृतीयधर्माभ्यां क्रमेणादिष्टः स्यादस्ति चावक्तव्यश्च, द्वितीयतृतीयधर्माभ्यां क्रमेणादिष्टः स्यान्नास्ति चावक्तव्यश्च, प्रथमद्वितीयतृतीयधर्मैः क्रमेणादिष्टः स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्यश्च जीव इति । एवमजीवादयोऽपि वक्तव्याः । णाणपवादं णाम पुव्वं बारसण्हं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत्थूणं १२ वि-सद-चालीस-पाहुडाणं २४० एगूणकोडि-पदेहि ९९९९९९ पंच णाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि वण्णेदि । दव्वट्ठिय-
पज्जवट्ठिय-णयं पडुच्च अणादिअणिहण-अणादिसणिहण-सादिअणिहण-सादिसणिहणाणि वण्णेदि, णाणं णाणसरूवं च वण्णेदि ।
सच्चपवादं पुव्वं बारसण्हं वत्थूणं १२ दु-सय-चालीस-पाहुडाणं २४० छअहिय-एग-कोडि-पदेहि १०००००६ वाग्गुप्तिः वाक्संस्कार-
कारणं प्रयोगो द्वादशधा भाषा वक्तारश्चानेकप्रकारं मृषाभिधानं दशप्रकारश्च सत्यसद्भावो यत्र निरूपितस्तत्सत्यप्रवादम् । व्यलीकनि-
वृत्तिर्वाचां संयमत्वं वा वाग्गुप्तिः । वाक्संस्कारकारणानि शिरःकण्ठादीन्यष्टौ स्थानानि । वाक्प्रयोगः शुभेतरलक्षणः सुगमः । अभ्या-
ख्यानकलहपैशुन्याबद्धप्रलापरत्यरत्युपधिनिकृत्यप्रणतिमोषसम्यग्मिथ्यादर्शनात्मिका भाषा द्वादशधा । अयमस्य कर्तेत्यनिष्टकथनमभ्या-
ख्यानम् । कलहः प्रतीतः । पृष्ठतो दोषाविष्करणं पैशुन्यम् । धर्मार्थकाममोक्षासम्बद्धा वागबद्धप्रलापः । शब्दादिविषयेषु रत्युत्पादिका
रतिवाक् । तेष्वेवारत्युत्पादिकारतिवाक् । यां वाचं श्रुत्वा परिग्रहार्जनरक्षणादिष्वासज्यते सोपधिवाक् । वणिग्व्यवहारे यामवधार्य निकृति-
प्रवण आत्मा भवति सा निकृतिवाक् । यां वाचं श्रुत्वा तपोविज्ञानाभ्यां केष्वपि न प्रणमति साप्रणतिवाक् । यां श्रुत्वा स्तेये प्रवर्तते सा मोष-
वाक् । सम्यग्मार्गस्योपदेष्ट्री सम्यग्दर्शनवाक् । तद्विपरीता मिथ्यादर्शनवाक् । वक्तारश्चाविष्कृतवक्तृपर्याया द्वीन्द्रियादयः । द्रव्यक्षेत्रकाल-
भावाश्रयमनेकप्रकारमनृतम् । दशविधः सत्यसद्भावो नाम-रूप-स्थापना-प्रतीत्य-संवृति-संयोजना-जनपद-देश-भाव-समय-सत्यभेदेन ।
तत्र सचेतनेतरद्रव्यस्यासत्यप्यर्थे संव्यवहारार्थं संज्ञाकरणं तन्नामसत्यम्, यथेन्द्र इत्यादि । यदर्थासन्निधानेऽपि रूपमात्रेणोच्यते तद्रूपसत्यम्,
यथा चित्रपुरुषादिष्वसत्यपि चैतन्योपयोगादावर्थेपुरुष इत्यादि । असत्यप्यर्थे यत्कार्यार्थं स्थापितं द्यूताक्षादिषु तत् स्थापनासत्यम् । साद्य-
नादीनौपशमिकादीन् भावान् प्रतीत्य यद्वचस्तत्प्रतीत्यसत्यम् । यल्लोके संवृत्याश्रितं वचस्तत्संवृतिसत्यम् यथा पृथिव्याद्यनेककारणत्वेऽपि
सति पङ्के जातं पङ्कजमित्यादि । धूपचूर्णवासानुलेपनप्रघर्षादिषु पद्ममकरहंससर्वतोभद्रक्रौञ्चव्यूहादिषु इतरेतरद्रव्याणां यथाविभागविधि-
सन्निवेशाविर्भावकं यद्वचस्तत्संयोजनासत्यम् । द्वात्रिंशज्जनपदेष्वार्यानार्यभेदेषु धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रापकं यद्वचस्तज्जनपदसत्यम् । ग्राम-
नगरराजगणपाखण्डजातिकुलादिधर्माणां व्यपदेष्टृ यद्वचस्तद्देशसत्यम् । छद्मस्थज्ञानस्य द्रव्ययाथात्म्यादर्शनेऽपि संयतस्य संयतासंयतस्य
वा स्वगुणपरिपालनार्थं प्रासुकमिदमप्रासुकमिदमित्यादि यद्वचस्तद्भावसत्यम् । प्रतिनियतषट्तयद्रव्यपर्यायाणामागमगम्यानां याथात्म्या-
विष्करणं यद्वचस्तत्समयसत्यम् । आदपवादं सोलसण्हं वत्थूणं १६ वीसुत्तर-ति-सय-पाहुडाणं ३२० छव्वीस-कोडि-पदेहि २६०००००००
आदं वण्णेदि वेदि त्ति वा विण्हु त्ति वा भोत्ते त्ति वा बुद्धे त्ति वा इच्चादि-सरूवेण । उत्तं च — जीवो कत्ता य वत्ता य पाणी भोत्ता
य पोग्गलो । वेदो विण्हू सयंभू य सरीरी तह माणवो ॥ ८१ ॥ सत्ता जंतू य माणी य माई जोगी य संकडो । असंकडो य खेत्तण्हू
अंतरप्पा तहेव य ॥ ८२ ॥ एदेसिमत्थो वुच्चदे । तं जहा, जीवदि जीविस्सदि पुव्वं जीविदो त्ति जीवो । सुहमसुहं करेदि त्ति कत्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सच्चमसच्चं संतमसंतं वददीदि वत्ता। पाणा एयस्स संति त्ति पाणी। अमर-णर-तिरिय-णारय-भेएण चउव्विहे संसारे कुसलमकुसलं भुंजदि त्ति भोत्ता। छव्विहसंठाण-बहुविह-देहेहि पूरदि गलदि त्ति पोग्गलो। सुख-दुक्खं वेदेदि त्ति वेदो, वेत्ति जानातीति वा वेदः। उपात्तदेहं व्याप्नोतीति विष्णुः। स्वयमेव भूतवानिति स्वयम्भूः। सरीरमेयस्स अत्थि सरीरी। मनुः ज्ञानं, तत्र भव इति मानवः। सजणसंबंध-मित्त-वग्गादिसु संजदि त्ति सत्ता। चउग्गइ-संसारे जायदि जणयति त्ति जंतू। माणो एयस्स अत्थि त्ति माणी। माया अत्थि त्ति मायी। जोगो अत्थि त्ति जोगी। अइसण्ह-देह-पमाणेण संकुडदि त्ति संकुडो। सव्वं लोगागासं वियापदि त्ति असंकुडो। क्षेत्रं स्वस्वरूपं जानातीति क्षेत्रज्ञः। अट्ठ-कम्मब्भंतरो त्ति अंतरप्पा। कम्मपवादं णाम पुव्वं वीसण्हं वत्थूणं २० चत्तारि-सय-पाहुडाणं ४०० एगकोडि-असीदि-लक्ख-पदेहि १८०००००० अट्ठविहं कम्मं वण्णेदि। पच्चक्खाण-णामधेयं तीसण्हं वत्थूणं ३० छस्सय-पाहुडाणं ६०० चउरासीदि-लक्ख-पदेहि ८४००००० दव्वभाव-परिमियापरिमिय-पच्चक्खाणं उववासविहिं पंच समिदीओ तिण्णि गुत्तीओ च परूवेदि। विज्जाणुवादं णाम पुव्वं पण्हारसण्हं वत्थूणं १५ तिण्णि-सय-पाहुडाणं ३०० एग-कोडि-दस-लक्ख-पदेहि ११०००००० अंगुष्ठप्रसेनादीनामल्पविद्यानां सप्तशतानि रोहिण्यादीनां महाविद्यानां पञ्चशतानि अन्तरिक्षभौमाङ्गस्वरस्वप्नलक्षणव्यञ्जनछिन्नान्यष्टौ महानिमित्तानि च कथयति। कल्लाण-णामधेयं णाम पुव्वं दसण्हं वत्थूणं १० वि-सद-पाहुडाणं २०० छव्वीस-कोडि-पदेहि २६०००००००० रविशशिनक्षत्रतारागणानां चारोपपादगतिविपर्ययफलानि शकुनव्याहृतमर्हद्बलदेववासुदेवचक्रधरादीनां गर्भावतरणादि-महाकल्याणानि च कथयति। पाणावायं णाम पुव्वं दसण्हं वत्थूणं १० वि-सद-पाहुडाणं २०० तेरस-कोडि-पदेहि १३००००००० कायचिकित्साद्यष्टाङ्गमायुर्वेदं भूतिकर्म जाङ्गुलिप्रक्रमं प्राणापानविभागं च विस्तरेण कथयति। किरियाविसालं णाम पुव्वं दसण्हं वत्थूणं १० वि-सदपाहुडाणं २०० णव-कोडि-पदेहि ९०००००००० लेखादिका द्वासप्ततिकलाः स्त्रैणाँश्चतुःषष्टिगुणान् शिल्पानि काव्यगुणदोष-क्रियां छन्दोविचितिक्रियां च कथयति। लोकबिंदुसारं णाम पुव्वं दसण्हं वत्थूणं १० वि-सयपाहुडाणं २०० बारह-कोडि-पण्णास-लक्ख-पदेहि १२५०००००० अष्टौ व्यवहारांश्चत्वारि बीजानि मोक्षगमनक्रिया मोक्षसुखं च कथयति। सयल-वत्थु-समासो पंचाणउदि-सदं १९५, सयल-पाहुड-समासो तिण्णि-सहस्सा णवय-सया ३९००। एत्थ किमुप्पायपुव्वादो, किमग्गेणियादो? एवं पुच्छा सव्वेसिं। णो उप्पायपुव्वादो, एवं वारणा सव्वेसिं। अग्गेणियादो। तस्स अग्गेणियस्स पंचविहो उवक्कमो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि। आणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि। एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे विदियादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे तेरसमादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे अग्गेणियादो। अंगाणमग्ग-पदं वण्णेदि त्ति अग्गेणियं गुणणामं। अक्खर-पद-संघाद-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जं, अत्थदो अणंतं। वत्तव्वदा ससमयवत्तव्वदा। अत्थाधि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

यारो चोद्दसविहो । तं जहा, पुव्वंते अवरंते धुवे अद्धुवे चयणलद्धी अद्धुवमं पणिधिकप्पे अट्ठे भोम्मावयादीए सव्वट्ठे कप्पणिज्जाणे तीदे अणागय-काले सिज्झए बज्झए त्ति चोद्दस वत्थूणि । एत्थ किं पुव्वंतादो, किं अवरंतादो ? एवं पुच्छा सव्वेसिं कायव्वा । णो पुव्वंतादो णो अवरंतादो, एवं वारणा सव्वेसिं कायव्वा । चयणलद्धीदो । तस्स उवक्कमो पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि । तत्थ आणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि । एत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे पंचमादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे दसमादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे चयणलद्धीदो । णामं चयण-विहिं लद्धि-विहिं च वण्णेदि तेण चयणलद्धि त्ति गुणणामं । पमाणमक्खर-पद-संघाद-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जमत्थदो अणंतं । वत्तव्वदा ससमयवत्तव्वदा । अत्थाधियारो वीसदिविहो । एत्थ किं पढम-पाहुडादो, किं विदिय-पाहुडादो ? एवं पुच्छा सव्वेसिं णेयव्वा । णो पढमपाहुडादो णो विदिय-पाहुडादो, एवं वारणा सव्वेसिं णेयव्वा । चउत्थ-पाहुडादो । तस्स उवक्कमो पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि । तत्थ आणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि । पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे चउत्थादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे सत्तारसमादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे कम्मपयडिपाहुडादो । णामं कम्माणं पयडि-सरूवं वण्णेदि तेण कम्मपयडिपाहुडे त्ति गुणणामं । वेयणकसिणपाहुडे त्ति वि तस्स विदियं णाममत्थि । वेयणा कम्माणमुदयो तं कसिणं णिरवसेसं वण्णेदि, अदो वेयणकसिणपाहुडमिदि, एदमवि गुणणाममेव । पमाणमक्खर-पय-संघाय-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जमत्थदो अणंतं । वत्तव्वं ससमयो । अत्थाहियारो चउवीसदिविहो । तं जहा, कदी वेदणाए फासे कम्मे पयडीसु बंधणे णिबंधणे पक्कमे उवक्कमे उदए मोक्खे संकमे लेस्सा लेस्सायम्मे लेस्सापरिणामे सादमसादे दीहे रहस्से भवधारणीए पोग्गलत्ता णिधत्तमणिधत्तं णिकाचिदमणिकाचिदं कम्मट्ठिदी पच्छिमक्खंधे त्ति, अप्पाबहुगं च सव्वत्थ, जेण चउवीसण्हमणियोगद्दाराणं साहारणो तेण पुह अहियारो ण होदि त्ति । एत्थ किं कदीदो, किं वेयणादो ? एवं पुच्छा सव्वत्थ कायव्वा । णो कदीदो णो वेयणादो, एवं वारणा सव्वेसिं णेयव्वा । बंधणादो । तस्स उवक्कमो पंचविहो, आणुपुव्वी णामं पमाणं वत्तव्वदा अत्थाहियारो चेदि । तत्थ आणुपुव्वी तिविहा, पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि । तत्थ पुव्वाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे छट्ठादो, पच्छाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे एगूणवीसदिमादो, जत्थतत्थाणुपुव्वीए गणिज्जमाणे बंधणादो । णामं बंध-वण्णणादो बंधणो त्ति गुणणामं । पमाणमक्खर-पय-संघाद-पडिवत्ति-अणियोगद्दारेहि संखेज्जमत्थदो अणंतं । वत्तव्वदा ससमयवत्तव्वदा । अत्थाधियारो चउव्विहो । तं जहा, बंधो बंधगो बंधणिज्जं बंधविहाणं चेदि । एत्थ किं बंधादो ? एवं पुच्छा सव्वेसिं कायव्वा । णो बंधादो णो बंधणिज्जादो । बंधगादो बंधविधाणादो च । एत्थ बंधगे त्ति अहियारस्स एक्कारस-अणियोगद्दाराणि । तं जहा, एगजीवेण सामित्तं एगजीवेण कालो एगजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचयो दव्वपमाणा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णुगमो खेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो णाणाजीवेहि कालाणुगमो णाणांजीवेहि अंतराणुगमो भागाभागाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि। एत्थ किं एगजीवेण सामित्तादो? एवं पुच्छा सव्वेसिं। णो एगजीवेण सामित्तादो, एवं वारणा सव्वेसिं। पंचमादो दव्वपमाणादो दव्वपमाणाणुगमो णिग्गदो। बंधविहाणं चउव्विहं। तं जहा, पयडिबंधो ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि। तत्थ जो सो पयडिबंधो सो दुविहो, मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो मूलपयडिबंधो सो थप्पो। जो सो उत्तरपयडिबंधो सो दुविहो, एगेगुत्तरपयडिबंधो अव्वोगाढउत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो एगेगुत्तरपयडिबंधो तस्स चउवीस-अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तं जहा, समुक्कित्तणा सव्वबंधो णोसव्वबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहण्णबंधो अजहण्णबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धुवबंधो बंधसामित्तविचयो बंधकालो बंधंतरं बंधसण्णियासो णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागाणुगमो परिमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि। एदेसु समुक्कित्तणादो पयडिसमुक्कित्तणा ट्ठाणसमुक्कित्तणा तिण्णि महादंडया णिग्गया। तेवीसदिमादो भावादो भावो णिग्गदो। जो सो अव्वोगाढुत्तरपयडिबंधो सो दुविहो, भुजगारबंधो पयडिट्ठाणबंधो चेदि। जो सो भुजगारबंधो तस्स अट्ठ-अणियोगद्दाराणि सो थप्पो। जो सो पयडिट्ठाणबंधो तत्थ इमाणि अट्ठ-अणियोगद्दाराणि। तं जहा, संतपरूवणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि। एदेसु अट्ठसु अणियोगद्दारेसु छ-अणियोगद्दाराणि णिग्गयाणि। तं जहा, संतपरूवणा खेत्तपरूवणा पोसणपरूवणा कालपरूवणा अंतरपरूवणा अप्पाबहुगपरूवणा चेदि। एदाणि छ पुव्विल्लाणि दोण्णि एक्कदो मेलिदे जीवट्ठाणस्स अट्ठ-अणियोगद्दाराणि हवंति। पयडिट्ठाणबंधे वुत्त-संतादि-छ-अणियोगद्दाराणि पयडिट्ठाणबंधस्स वुत्ताणि। पुणो जीवट्ठाणस्स संतादि-छ-अणियोगद्दाराणि चोद्दसण्हं गुणट्ठाणाणं वुत्ताणि। कधं तेहिंतो एदाणमवदारो त्ति? ण एस दोसो, एदस्स पयडिट्ठाणस्स बंधया मिच्छाइट्ठी अत्थि। एदस्स पयडिट्ठाणस्स बंधया मिच्छाइट्ठी एवडि खेत्ते। एदस्स पयडिट्ठाणस्स बंधएहि मिच्छाइट्ठीहि एवडियं खेत्तं पोसिदं। एदस्स पयडिट्ठाणस्स बंधया मिच्छाइट्ठी तं मिच्छत्त-गुणमच्छंडंता जहण्णेण एत्तियं कालमुक्कस्सेण एत्तियं कालमच्छंति। ताणमंतर-कालो जहण्णुक्कस्सेण एत्तिओ होदि। एवं सेसगुणट्ठाणं च भणिऊण पुणो ताणमप्पाबहुगं उत्तं। तेण तेहि पयडिट्ठाणम्हि उत्त-छहि अणियोगद्दारेहि सह एगत्तं ण विरुज्झदे। एत्थतण-दव्वाणियोगस्स वि किं ण गहणं कीरदि त्ति उत्ते ण, मिच्छाइट्ठिआदि-गुणट्ठाणेहि विणा एयस्स बंधट्ठाणस्स बंधया जीवा एत्तिया इदि सामण्णेण वुत्तत्तादो। बंधगे उत्त-दव्वाणियोगस्स गहणं कीरदि, तत्थ बंधगा मिच्छाइट्ठी एत्तिया सासणादिया एत्तिया इदि उत्तत्तादो। कधमजोगि-गुणट्ठाणस्स अबंधगस्स दव्व-संखा परूविज्जदि त्ति ण एस दोसो, भूद-पुव्व-गइमस्सिऊण तस्स भणण-संभवादो। जीवपयडि-संत-बंधमस्सिऊण उत्तमिदि वा। एवं भावस्स वि वत्तव्वं। एवं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवट्ठाणस्स अट्ठ-अणियोगद्दार-परूवणं कदं। तदो ट्ठिदिबंधो दुविहो, मूलपयडिट्ठिदिबंधो उत्तरपयडिट्ठिदिबंधो चेदि। तत्थ जो सो मूलपयडिट्ठिदिबंधो सो थप्पो। जो सो उत्तरपयडिट्ठिदिबंधो तस्स चउवीस-अणियोगद्दाराणि। तं जहा, अद्धाछेदो सव्वबंधो णोसव्वबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहण्णबंधो अजहण्णबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धुवबंधो बंधसामित्तविचयो बंधकालो बंधंतरं बंधसण्णियासो णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागाणुगमो परिमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि। तत्थ अद्धाछेदो दुविहो, जहण्णट्ठिदिअद्धाछेदो उक्कस्सट्ठिदिअद्धाछेदो चेदि। जहण्णट्ठिदिअद्धाछेदादो जहण्णट्ठिदी णिग्गदा। उक्कस्सट्ठिदि-अद्धाछेदादो उक्कस्सट्ठिदी णिग्गदा। पुणो सुत्तादो सम्मत्तुप्पत्ती णिग्गया। वियाहपण्णत्तीदो गदिरागदी णिग्गदा। संपहि पुव्वं उत्तपयडिसमुक्कित्तणा ट्ठाणसमुक्कित्तणा तिण्णि महादंडया एदाणं पंचण्हमुवरि संपहि पुव्वुत्त–जहण्णट्ठिदिअद्धाछेदं उक्कस्सट्ठिदिअद्धाछेदं सम्मत्तुप्पत्तिं गदिरागदिं च पक्खित्ते चूलियाए णव अहियारा भवंति। एदं सव्वमवि मणेण अवहारिय 'एत्तो' इदि उत्तं भयवदा पुप्फयंतेण। 'इमेसिं' एतेषाम्। न च प्रत्यक्षनिर्देशोऽनुपपन्नः, आगमाहितसंस्कारस्याचार्यस्यापरोक्ष-चतुर्दशभावजीवसमासस्य तदविरोधात्। जीवाः समस्यन्ते एष्विति जीवसमासाः। चतुर्दश च ते जीवसमासाश्च चतुर्दशजीवसमासाः। तेषां चतुर्दशानां जीवसमासानां चतुर्दशगुणस्थानानामित्यर्थः। तेषां मार्गणा गवेषणमन्वेषणमित्यर्थः। मार्गणा एवार्थः प्रयोजनं मार्गणार्थस्तस्य भावो मार्गणार्थता तस्यां मार्गणार्थतायाम्। तस्यामिति तत्र। 'इमाणि' इत्यनेन भावमार्गणास्थानानि प्रत्यक्षीभूतानि निर्दिश्यन्ते। नार्थमार्गणस्थानानि तेषां देशकालस्वभावविप्रकृष्टानां प्रत्यक्षतानुपपत्तेः। तानि च मार्गणस्थानानि चतुर्दशैव भवन्ति, मार्गणस्थानसंख्याया न्यूनाधिकभावप्रतिषेधफल एवकारः। किं मार्गणं नाम? चतुर्दश जीवसमासाः सदादिविशिष्टा मार्ग्यन्तेऽस्मिन्ननेन वेति मार्गणम्। उक्तं च—जाहि व जासु व जीवा मग्गिज्जंते जहा तहा दिट्ठा। ताओ चोद्दस जाणे सुदणाणे मग्गणा होंति ॥ ८३ ॥

तं जहा ॥ ३ ॥

'तच्छब्दः पूर्वप्रक्रान्तपरामर्शी' इति न्यायात् 'तत्' मार्गणविधानं। 'जहा' यथेति यावत्। एवं पृष्टवतः शिष्यस्य सन्देहापोहनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

गइ इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि आहारए चेदि ॥ ४ ॥

गताविन्द्रिये काये योगे वेदे कषाये ज्ञाने संयमे दर्शने लेश्यायां भव्ये सम्यक्त्वे संज्ञिनि आहारे च जीवसमासा मृग्यन्ते। 'च'-शब्दः प्रत्येकं परिसमाप्यते समुच्चयार्थः। 'इति' शब्दः समाप्तौ वर्तते। सप्तमीनिर्देशः किमर्थः? तेषामधिकरणत्वप्रतिपादनार्थः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीयानिर्देशोऽप्यविरुद्धः । स कथं लभ्यते ? न, देशामर्शकत्वान्निर्देशस्य । यत्र च गत्यादौ विभक्तिन श्रूयते तत्रापि 'आइ-मज्झंत-वण्ण-सर-लोवो' इति लुप्ता विभक्तिरित्यभ्यूह्यम् । अहवा 'लेस्सा-भविय-सम्मत्त-सण्णि-आहारए' चेदि एकपदत्वान्नावयवविभक्तयः श्रूयन्ते । अथ स्याज्जगति चतुर्भिर्मार्गणा निष्पाद्यमानोपलभ्यते । तद्यथा, मृगयिता मृग्यं मार्गणं मार्गणोपाय इति । नात्र ते सन्ति, ततो मार्गणमनुपपन्नमिति । नैष दोषः, तेषामप्यत्रोपलम्भात् । तद्यथा, मृगयिता भव्यपुण्डरीकस्तत्त्वार्थश्रद्धालुर्जीवः, चतुर्दशगुण-विशिष्टजीवा मृग्यं, मृग्यस्याधारतामास्कन्दन्ति मृगयितुः करणतामादधानानि वा गत्यादीनि मार्गणम्, विनयोपाध्यायादयो मार्गणोपाय इति । सूत्रे शेषत्रितयं परिहृतमिति मार्गणमेवोक्तमिति चेन्न, तस्य देशामर्शकत्वात्, तन्नान्तरीयकत्वाद्वा । गम्यत इति गतिः । नातिव्याप्तिदोषः सिद्धैः प्राप्यगुणाभावात् । न केवलज्ञानादयः प्राप्यास्तथात्मकैकस्मिन् प्राप्यप्रापकभावविरोधात् । कषायादयो हि प्राप्या औपाधिकत्वात् । गम्यत इति गतिरित्युच्यमाने गमनक्रियापरिणतजीवप्राप्यद्रव्यादीनामपि गतिव्यपदेशः स्यादिति चेन्न, गतिकर्मणः समुत्पन्नस्यात्मपर्यायस्य ततः कथञ्चिद्भेदादविरुद्धप्राप्तितः प्राप्तकर्मभावस्य गतित्वाभ्युपगमे पूर्वोक्तदोषानुपपत्तेः । भवाद्भवसंक्रान्तिर्वा गतिः । सिद्धगतिस्तद्विपर्यासात् । उक्तं च—गइ-कम्म-विणिव्वत्ता जा चेट्ठा सा गई मुणेयव्वा । जीवा हु चाउरंगं गच्छंति त्ति य गई होइ ॥ ८४ ॥ प्रत्यक्षनिरतानीन्द्रियाणि । अक्षाणीन्द्रियाणि । अक्षमक्षं प्रति वर्तत इति प्रत्यक्षं विषयोऽक्षजो बोधो वा । तत्र निरतानि व्यापृतानीन्द्रियाणि । शब्दस्पर्शरसरूपगन्धज्ञानावरणकर्मणां क्षयोपशमाद् द्रव्येन्द्रियनिबन्धनादिन्द्रियाणीति यावत् । भावेन्द्रियकार्यत्वात् द्रव्यस्येन्द्रियव्यपदेशः । नेयमदृष्टपरिकल्पना कार्यकारणोपचारस्य जगति सुप्रसिद्धस्योपलम्भात् । इन्द्रियवैकल्यमनोऽनवस्थानानध्यवसायालोकाद्यभावावस्थायां क्षयोपशमस्य प्रत्यक्षविषयव्यापाराभावात्तत्रात्मनोऽनिन्द्रियत्वं स्यादिति चेन्न, गच्छतीति गौरिति व्युत्पादितस्य गोशब्दस्यागच्छद्गोपदार्थेऽपि प्रवृत्त्युपलम्भात् । भवतु तत्र रूढिबललाभादिति चेदत्रापि तल्लाभादेवास्तु, न कश्चिद्दोषः । विशेषाभावतस्तेषां सङ्करव्यतिकररूपेण व्यापृतिर्व्याप्नोतीति चेन्न, प्रत्यक्षे नीतिनियमिते रतानीति प्रतिपादनात् । सङ्करव्यतिकराभ्यां व्यापृतिनिराकरणाय स्वविषयनिरतानीन्द्रियाणि इति वा वक्तव्यम् । स्वेषां विषयः स्वविषयस्तत्र निश्चयेन निर्णयेन रतानीन्द्रियाणि । संशयविपर्ययावस्थायां निर्णयात्मकरतेरभावात्तत्रात्मनोऽनिन्द्रियत्वं स्यादिति चेन्न, रूढिबललाभादुभयत्र प्रवृत्त्यविरोधात् । अथवा स्ववृत्तिरतानीन्द्रियाणि । संशयविपर्ययनिर्णयादौ वर्तनं वृत्तिः, तस्यां स्ववृत्तौ रतानीन्द्रियाणि । निर्व्यापारावस्थायां नेन्द्रियव्यपदेशः स्यादिति चेन्न, उक्तोत्तरत्वात् । अथवा स्वार्थनिरतानीन्द्रियाणि । अर्यत इत्यर्थः, स्वेऽर्थे च निरतानीन्द्रियाणि, निरवद्यत्वान्नात्र वक्तव्यमस्ति । अथवा इन्दनादाधिपत्यादिन्द्रियाणि । उक्तं च—अहमिंदा जह देवा अविसेसं अहमहं ति मण्णंता । ईसंति एक्कमेक्कं इंदा इव इंदिए जाण ॥ ८५ ॥ चीयत इति कायः । नेष्टकादिचयेन व्यभिचारः पृथिव्यादिकर्मभिरिति विशेषणात् । औदारिकादिकर्मभिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुद्गलविपाकिभिश्रीयत इति चेन्न, पृथिव्यादिकर्मणां सहकारिणामभावे ततश्चयनानुपपत्तेः। कार्मणशरीरस्थानां जीवानां पृथिव्यादिकर्म-
भिश्चितनोकर्मपुद्गलाभावादकायत्वं स्यादिति चेन्न, तच्चयनहेतुकर्मणस्तत्रापि सत्त्वतस्तद्व्यपदेशस्य न्याय्यत्वात्। अथवा आत्मप्रवृत्त्यु-
पचितपुद्गलपिण्डः कायः। अत्रापि स दोषो न निवार्यत इति चेन्न, आत्मप्रवृत्त्युपचितकर्मपुद्गलपिण्डस्य तत्र सत्त्वात्। आत्मप्रवृत्त्युप-
चितनोकर्मपुद्गलपिण्डस्य तत्रासत्त्वान्न तस्य कायव्यपदेश इति चेन्न, तच्चयनहेतुकर्मणस्तत्रास्तित्वतस्तस्य तद्व्यपदेशसिद्धेः। उक्तं च—
अप्पप्पवुत्ति-संचिद-पोग्गल-पिंडं वियाण कायो त्ति। सो जिणमदम्हि भणिओ पुढविक्कायादयो सो दो ॥ ८६ ॥ जह भारवहो पुरिसो
वहइ भरं गेण्हिऊण कायोलिं। एमेव वहइ जीवो कम्म-भरं काय-कायोलिं ॥ ८७ ॥ युज्यत इति योगः। न युज्यमानपटादिना
व्यभिचारस्तस्यानात्मधर्मत्वात्। न कषायेण व्यभिचारस्तस्य कर्मादानहेतुत्वाभावात्। अथवात्मप्रवृत्तेः कर्मादाननिबन्धनवीर्योत्पादो
योगः। अथवात्मप्रदेशानां सङ्कोचविकोचो योगः। उक्तं च—मणसा वचसा काएण चावि जुत्तस्स विरिय-परिणामो। जीवस्स प्पणि-
योओ जोगो त्ति जिणेहि णिद्दिट्ठो ॥ ८८ ॥ वेद्यत इति वेदः। अष्टकर्मोदयस्य वेदव्यपदेशः प्राप्नोति वेद्यत्वं प्रत्यविशेषादिति चेन्न,
'सामान्यचोदनाश्च विशेषेष्ववतिष्ठन्ते' इति विशेषावगतेः, 'रूढितन्त्रा व्युत्पत्तिः' इति वा। अथवात्मप्रवृत्तेः सम्मोहोत्पादो वेदः।
अत्रापि मोहोदयस्य सकलस्य वेदव्यपदेशः स्यादिति चेन्न, अत्रापि रूढिवशाद्वेदनाम्नां कर्मणामुदयस्यैव वेदव्यपदेशात्। अथवात्म-
प्रवृत्तेर्मैथुनसम्मोहोत्पादो वेदः। उक्तं च—वेदस्सुदीरणाए बालत्तं पुण णियच्छदे बहुसो। थी-पुं-णवुंसए वि य वेए त्ति तओ हवइ
वेओ ॥ ८९ ॥ सुखदुःखबहुशस्यकर्मक्षेत्रं कृषन्तीति कषायाः। 'कषन्तीति कषायाः' इति किमिति न व्युत्पादितः कषायशब्दश्चेन्न,
ततः संशयोत्पत्तेः प्रतिपत्तिगौरवभयाच्च। उक्तं च—सुह-दुक्ख-सुबहु-सस्सं कम्म-क्खेत्तं कसेदि जीवस्स। संसार-दूर-मेरं तेण
कसायो त्ति णं बेंति ॥ ९० ॥ भूतार्थप्रकाशकं ज्ञानम्। मिथ्यादृष्टीनां कथं भूतार्थप्रकाशकमिति चेन्न, सम्यग्मिथ्यादृष्टीनां प्रकाशस्य
समानतोपलम्भात्। कथं पुनस्तेऽज्ञानिन इति चेन्न, मिथ्यात्वोदयात्प्रतिभासितेऽपि वस्तुनि संशयविपर्ययानध्यवसायानिवृत्तितस्तेषामज्ञा-
नितोक्तेः। एवं सति दर्शनावस्थायां ज्ञानाभावः स्यादिति चेन्नैष दोषः, इष्टत्वात्। कालसूत्रेण सह विरोधः किन्न भवेदिति चेन्न, तत्र
क्षयोपशमस्य प्राधान्यात्। विपर्ययः कथं भूतार्थप्रकाशक इति चेन्न, चन्द्रमस्युपलभ्यमानद्वित्वस्यान्यत्र सत्त्वतस्तस्य भूतत्वोपपत्तेः।
अथवा सद्भावविनिश्चयोपलम्भकं ज्ञानम्। एतेन संशयविपर्ययानध्यवसायावस्थासु ज्ञानाभावः प्रतिपादितः स्यात्, शुद्धनयविवक्षायां
तत्त्वार्थोपलम्भकं ज्ञानम्। ततो मिथ्यादृष्टयो न ज्ञानिन इति सिद्धं। द्रव्यगुणपर्यायाननेन जानातीति ज्ञानम्। अभिन्नस्य कथं करण-
त्वमिति चेन्न, सर्वथा भेदाभेदे च स्वरूपहानिप्रसङ्गादनेकान्ते स्वरूपोपलब्धेर्न तस्य करणत्वविरोध इति। उक्तं च—जाणइ तिकाल-सहिए
दव्व-गुणे पजए य बहु-भेए। पच्चक्खं च परोक्खं अणेण णाणे त्ति णं बेंति ॥ ९१ ॥ संयमनं संयमः। न द्रव्ययमः संयमस्तस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सं'शब्देनापादितत्वात् । यमेन समितयः सन्ति, तास्वसतीषु संयमोऽनुपपन्न इति चेन्न, 'सं'शब्देनात्मसात्कृताशेषसमितित्वात् । अथवा व्रतसमितिकषायदण्डेन्द्रियाणां धारणानुपालननिग्रहत्यागजयाः संयमः । उक्तं च— वय-समिइ-कसायाणं दंडाण तहिंदियाण पंचण्हं । धारण-पालण-णिग्गह-चाग-जया संजमो भणिओ ॥ ९२ ॥ दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम् । नाक्ष्णालोकेन चातिप्रसङ्गस्तयोरनात्मधर्मत्वात् । दृश्यते ज्ञायतेऽनेनेति दर्शनमित्युच्यमाने ज्ञानदर्शनयोरविशेषः स्यादिति चेन्न, अन्तर्बहिर्मुखयोश्चित्प्रकाशयोर्दर्शनज्ञानव्यपदेशभाजोरेकत्वविरोधात् । किं तच्चैतन्यमिति चेत्रिकालगोचरानन्तपर्यायात्मकस्य जीवस्वरूपस्य स्वक्षयोपशमवशेन संवेदनं चैतन्यम् । स्वतो व्यतिरिक्तबाह्यार्थावगतिः प्रकाश इत्यन्तर्बहिर्मुखयोश्चित्प्रकाशयोर्जानात्यनेनात्मानं बाह्यमर्थमिति च ज्ञानमिति सिद्धत्वादेकत्वम्, ततो न ज्ञानदर्शनयोर्भेद इति चेन्न, ज्ञानादिव दर्शनात् प्रतिकर्मव्यवस्थाभावात् । तर्ह्यस्त्वन्तर्बाह्यसामान्यग्रहणं दर्शनम्, विशेषग्रहणं ज्ञानमिति चेन्न, सामान्यविशेषात्मकस्य वस्तुनोऽक्रमेणोपलम्भात् । सोऽप्यस्तु न कश्चिद्विरोध इति चेन्न, 'हंदि दुवे णत्थि उवजोगा' इत्यनेन सह विरोधात् । अपि च न ज्ञानं प्रमाणं सामान्यव्यतिरिक्तविशेषस्यार्थक्रियाकर्तृत्वं प्रत्यसमर्थत्वतोऽवस्तुनो ग्रहणात् । न तस्य ग्रहणमपि सामान्यव्यतिरिक्ते विशेषे ह्यवस्तुनि कर्तृकर्मरूपाभावात् । तत एव न दर्शनमपि प्रमाणम् । अस्तु प्रमाणाभाव इति चेन्न, प्रमाणाभावे सर्वस्याभावप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, तथानुपलम्भात् । ततः सामान्यविशेषात्मकबाह्यार्थग्रहणं ज्ञानं, तदात्मकस्वरूपग्रहणं दर्शनमिति सिद्धम् । तथा च 'जं सामण्णं गहणं तं दंसणं' इति वचनेन विरोधः स्यादिति चेन्न, तत्रात्मनः सकलबाह्यार्थसाधारणत्वतः सामान्यव्यपदेशभाजो ग्रहणात् । तदपि कथमवसीयत इति चेन्न, तदा 'भावाणं णेव कट्टु आयारं' इति वचनात् । तद्यथा, भावानां बाह्यार्थानामाकारं प्रतिकर्मव्यवस्थामकृत्वा यद् ग्रहणं तद्दर्शनम् । अस्यैवार्थस्य पुनरपि दृढीकरणार्थमाह, 'अविसेसिऊण अट्ठे' इति, अर्थानविशेष्य यद् ग्रहणं तद्दर्शनमिति । न बाह्यार्थगतसामान्यग्रहणं दर्शनमित्याशङ्कनीयं, तस्यावस्तुनः कर्मत्वाभावात् । न च तदन्तरेण विशेषो ग्राह्यत्वमास्कन्दतीत्यतिप्रसङ्गात् । सत्येवमनध्यवसायो दर्शनं स्यादिति चेन्न, स्वाध्यवसायस्यानध्यवसितबाह्यार्थस्य दर्शनत्वात् । दर्शनं प्रमाणमेव, अविसंवादित्वात्, प्रतिभासः प्रमाणञ्चाप्रमाणञ्च विसंवादाविसंवादोभयरूपस्य तत्रोपलम्भात् । आलोकनवृत्तिर्वा दर्शनम् । अस्य गमनिका, आलोकत इत्यालोकनमात्मा, वर्तनं वृत्तिः, आलोकनस्य वृत्तिरालोकनवृत्तिः स्वसंवेदनं, तद्दर्शनमिति लक्ष्यनिर्देशः । प्रकाशवृत्तिर्वा दर्शनम् । अस्य गमनिका, प्रकाशो ज्ञानम्, तदर्थमात्मनो वृत्तिः प्रकाशवृत्तिस्तद्दर्शनम् । विषयविषयिसंपातात् पूर्वावस्था दर्शनमित्यर्थः । उक्तं च— जं सामण्णं गहणं भावाणं णेव कट्टु आयारं । अविसेसिऊण अत्थे दंसणमिदि भण्णदे समए ॥ ९३ ॥ लिम्पतीति लेश्या । न भूमिलेपिकयाऽतिव्याप्तिदोषः, कर्मभिरात्मानमित्यध्याहारापेक्षित्वात् । अथवात्मप्रवृत्तिसंश्लेषणकरी लेश्या । नात्रातिप्रसङ्गदोषः, प्रवृत्तिशब्दस्य कर्मपर्यायत्वात् । अथवा कषायानुरञ्जिता कायवाङ्मनोयोग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवृत्तिर्लेश्या। ततो न केवलः कषायो लेश्या, नापि योगः, अपि तु कषायानुविद्धा योगप्रवृत्तिर्लेश्येति सिद्धम्। ततो न वीतरागाणां योगो लेश्येति न प्रत्यवस्थेयं तन्त्रत्वाद्योगस्य, न कषायस्तन्त्रं विशेषणत्वतस्तस्य प्राधान्याभावात्। उत्तं च—लिंपदि अप्पीकीरदि एदाए णियय-पुण्ण-पावं च। जीवो त्ति होइ लेस्सा लेस्सा-गुण-जाणय-क्खादा ॥ ९४ ॥ निर्वाणपुरस्कृतो भव्यः। उत्तं च—सिद्धत्तणस्स जोग्गा जे जीवा ते हवंति भवसिद्धा। ण उ मल विगमे णियमो ताणं कणगोवलाणमिव ॥ ९५ ॥ तद्विपरीतोऽभव्यः। सुगममेतत्। प्रशमसंवेगानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं सम्यक्त्वम्। सत्येवमसंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्याभावः स्यादिति चेत्सत्यमेतत् शुद्धनये समाश्रीयमाणे। अथवा तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्। अस्य गमनिकोच्यते, आप्तागमपदार्थस्तत्त्वार्थस्तेषु श्रद्धानमनुरक्तता सम्यग्दर्शनमिति लक्ष्यनिर्देशः। कथं पौरस्त्येन लक्षणेनास्य लक्षणस्य न विरोधश्चेन्नैष दोषः, शुद्धाशुद्धनयसमाश्रयणात्। अथवा तत्त्वरुचिः सम्यक्त्वं, अशुद्धतरनयसमाश्रयणात्। उत्तं च—छ-प्पंच-णव-विहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं। आणाए अहिगमणे व सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥ ९६ ॥ सम्यक् जानातीति संज्ञं मनः, तदस्यास्तीति संज्ञी। नैकेन्द्रियादिनातिप्रसङ्गः, तस्य मनसोऽभावात्। अथवा शिक्षाक्रियोपदेशालापग्राही संज्ञी। उत्तं च—सिक्खा-किरियुवदेसालावग्गाही मणोवलंबेण। जो जीवो सो सण्णी तव्विवरीदो असण्णी दु ॥ ९७ ॥ शरीरप्रायोग्यपुद्गलपिण्डग्रहणमाहारः। सुगममेतत्। उत्तं च—आहरदि सरीराणं तिण्हं एगदर-वग्गणाओ जं। भासा-मणस्स णियदं तम्हा आहारओ भणिओ ॥ ९८ ॥ तद्विपरीतोऽनाहारः। उत्तं च—विग्गह-गइमावण्णा केवलिणो समुहदा अजोगी य। सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥ ९९ ॥ अन्विष्यमाणगुणस्थानानामनुयोगद्वारप्ररूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

एदेसिं चेव चोद्दसण्हं जीवसमासाणं परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ-अणियोगद्दाराणि णायव्वाणि भवंति ॥ ५ ॥

'तत्थ इमाणि' एतदेवालं शेषस्य नान्तरीयकत्वादिति चेन्नैष दोषः, मन्दबुद्धिसत्त्वानुग्रहार्थत्वात्। अनुयोगो नियोगो भाषा विभाषा वार्त्तिकेत्यर्थः। उत्तं च—अणियोगो य णियोगो भास-विभासा य वट्टिया चेय। एदे अणिओअस्स दु णामा एयट्ठआ पंच ॥ १०० ॥ सूई मुद्दा पडिहो संभवदल-वट्टिया चेय। अणियोग-णिरुत्तीए दिट्ठंता होंति पंचेय ॥ १०१ ॥ एते अष्टावधिकारा अवश्यं ज्ञातव्या भवन्त्यन्यथा जीवसमासावगमानुपपत्तेरिति श्रुतवतः शिष्यस्य तन्निर्देशविषयसंशयः समुत्पद्यत इति जातनिश्चयः पृच्छा-सूत्रमाह—

तं जहा ॥ ६ ॥

अव्यक्तत्वात्तदिति नपुंसकलिङ्गनिर्देशः। 'तद्' अष्टानामनुयोगद्वाराणां निर्देशः। यथेति पृच्छा। एवं पृष्टवतः शिष्यस्य संदेहापोहनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संतपरूवणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥ ७ ॥

अट्ठण्णमणियोगद्दाराणमाइम्मि किमिदि संतपरूवणा चेय उच्चदे ? ण, संताणियोगो सेसाणियोगद्दाराणं जेण जोणीभूदो तेण पढमं संताणियोगो चेव भण्णदे । संतपरूवणाणंतरं किमिदि दव्वपमाणाणुगमो उच्चदे ? ण, णिय-संखा-गुणिदोगाहणं खेत्तं उच्चदे दि । एदं चेव अदीद-फुससेण सह फोसणं उच्चदे । तदो दो वि अहियारा संखा-जोणिणो । णाणेग-जीवे अस्सिऊण उच्चमाण-कालंतर-परूवणा वि संखा-जोणी । इदं थोवमिदं च बहुवमिदि भण्णमाण-अप्पाबहुगं पि संखा-जोणी । तेण एदाणमाइम्हि दव्वपमाणाणुगमो भणण-जोग्गो । एत्थ भावो किमिदि ण उच्चदे ? ण, तस्स बहुवण्णणादो । कधं भावो बहु-वण्णणीयो ? ण, कम्म-कम्मोदय-परूवणाहि विणा तस्स परूवणाभावादो । छ-वड्ढि-हाणि-ट्ठिय-भाव-संखमंतरेण भाव-वण्णणाणुववत्तीदो वा । वट्टमाण-फासं वण्णेदि खेत्तं । फोसणं पुण अदीदं वट्टमाणं च वण्णेदि । अवगय-वट्टमाणफासो सुहेण दो वि पच्छा जाणदु त्ति पोसणपरूवणादो होदु णाम पुव्वं खेत्तस्स परूवणा, ण पुण कालंतरेहिंतो ? इदि ण, अणवगय-खेत्त-फोसणस्स तक्कालंतर-जाणणुवायाभावादो । ण च संतमत्थ-मागमो ण परूवेइ तस्स अत्थावयत्तप्पसंगादो । णेदाणिं तक्कालंतरं पडिज्जदीदि चेण्ण, तप्पढणे विरोहाभावादो । तहा भावप्पाबहुगाणं पि परूवणा खेत्त-फोसणाणुगममंतरेण ण तव्विसया होंति त्ति पुव्वमेव खेत्त-फोसण-परूवणा कायव्वा । सेसाहियारेसु संतेसु ते मोत्तूण किमट्ठं कालो पुव्वमेव उच्चदे ? ण ताव अंतरपरूवणा एत्थ भणण-जोग्गा काल-जोणित्तादो । ण भावो वि तस्स तदो हेट्ठिम-अहियार-जोणित्तादो । ण अप्पाबहुगं पि तस्स वि सेसाणियोग-जोणित्तादो । परिसेसादो कालो चेव तत्थ परूवणा-जोगो त्ति । भावप्पाबहुगाणं जोणित्तादो पुव्वमेवंतरपरूवणा उत्ता । अप्पाबहुगजोणित्तादो पुव्वमेव भावपरूवणा उच्चदे । सुत्ते तहा परूवणा किमिदि ण दिस्सदे ? ण, सुत्तस्सत्थसूयणमेत्तवावारादो । तहाइरिया किमिदि ण वक्खाणेंति ? ण, अवधारणसमत्थाणं सिस्साणं संपहि अभावादो तहोवएसाभावादो वा । अत्थित्तं भणदि संताणियोगो । संताणियोगम्हि जमत्थित्तं उत्तं तस्स पमाणं परूवेदि दव्वाणियोगो । तेहिंतो अवगय-संत-पमाणाणं वट्टमाणोगाहणं परूवेदि खेत्ताणियोगो । पुणो तेहिंतोवलद्ध-संत-पमाण-खेत्ताणं अदीद-काल-विसिट्ठ-फासं परूदेदि फोसणाणुगमो । तेहिंतो अवगय-संत-पमाण-खेत्त-फोसणाणं ट्ठिदिं परूवेदि कालाणियोगो । तेसिं चेव विरहं परूवेदि अंतराणियोगो । तेसिं चेव भावं परूवेदि भावाणियोगो । तेसिं चेव थोव-बहुत्तं वण्णेदि अप्पाबहुगमिदि । उत्तं च— अत्थित्तं पुण संतं अत्थित्तस्स य तहेव परिमाणं । पच्चुप्पण्णं खेत्तं अदीद-पदुप्पण्णणं फुसणं ॥ १०२ ॥ कालो ट्ठिदि-अवधरणं अंतर विरहो य सुण्ण-कालो य । भावो खलु परिणामो स-णाम-सिद्धं खु अप्पबहुं ॥ १०३ ॥ प्रथमानुयोगस्वरूपनिरूपणार्थं सूत्रमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतपरूवणदाए दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥ ८ ॥

चतुर्दशजीवसमासानामित्यनुवर्तते, तेनैवमभिसम्बन्धः क्रियते चतुर्दशजीवसमासानां सत्प्ररूपणायामिति । सत्सत्त्वमित्यर्थः । कथम् ? अन्तर्भावितभावत्वात् । प्ररूपणा निरूपणा प्रज्ञापनेति यावत् । चतुर्दशजीवसमाससत्त्वप्ररूपणायामित्यर्थः । सच्छब्दोऽस्ति शोभनवाचकः, यथा सदभिधानं सत्यमित्यादि । अस्ति अस्तित्ववाचकः, सति सत्ये व्रतीत्यादि । अत्रास्तित्ववाचको ग्राह्यः । निर्देशः प्ररूपणं विवरणं व्याख्यानमिति यावत् । स द्विविधो द्विप्रकारः, ओघेन आदेशेन च । ओघेन सामान्येनाभेदेन प्ररूपणमेकः । अपर आदेशेन भेदेन विशेषेण प्ररूपणमिति । न च प्ररूपणायास्तृतीयः प्रकारोऽस्ति, सामान्यविशेषव्यतिरिक्तस्यानुपलम्भात् । विशेषव्यतिरिक्तसामान्याभावादादेशप्ररूपणाया एव ओघावगतिः स्यादिति न द्विविधं व्याख्यानमिति चेन्न, संक्षेपविस्तररुचिद्रव्यपर्यायार्थिकसत्त्वानुग्रहार्थत्वात् । जीवसमास इति किम् ? जीवाः सम्यगासतेऽस्मिन्निति जीवसमासः । क्वासते ? गुणेषु । के गुणाः ? औदयिकौपशमिकक्षायिकक्षायोपशमिकपारिणामिका इति गुणाः । अस्य गमनिका, कर्मणामुदयादुत्पन्नो गुण औदयिकः, तेषामुपशमादौपशमिकः, क्षयात्क्षायिकः, तत्क्षयादुपशमाच्चोत्पन्नो गुणः क्षायोपशमिकः । कर्मोदयोपशमक्षयक्षयोपशममन्तरेणोत्पन्नः पारिणामिकः । गुणसहचरितत्वादात्मापि गुणसंज्ञां प्रतिलभते । उत्तं च—जेहि दु लक्खिज्जंते उदयादिसु संभवेहि भावेहि । जीवा ते गुण-सण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरिसीहि ॥ १०४ ॥ ओघनिर्देशार्थमुत्तरसूत्रमाह—

ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी ॥ ९ ॥

यथोद्देशस्तथा निर्देश इति न्यायात् ओघाभिधानमन्तरेणापि ओघोऽवगम्यते तस्येह पुनरुच्चारणमनर्थकमिति न, तस्य दुर्मेधोजनानुग्रहार्थत्वात् । सर्वसत्त्वानुग्रहकारिणो हि जिनाः, नीरागत्वात् । सन्ति मिथ्यादृष्टयः । मिथ्या वितथा व्यलीका असत्या दृष्टिर्दर्शनं विपरीतैकान्तविनयसंशयाज्ञानरूपमिथ्यात्वकर्मोदयजनिता येषां ते मिथ्यादृष्टयः । जावदिया वयण-वहा तावदिया चेव होंति णय-वादा । जावदिया णय-वादा तावदिया चेव पर-समया ॥ १०५ ॥ इति वचनान्न मिथ्यात्वपञ्चकनियमोऽस्ति किन्तूपलक्षणमात्रमेतदभिहितं पञ्चविधं मिथ्यात्वमिति । अथवा मिथ्या वितथं, तत्र दृष्टिः रुचिः श्रद्धा प्रत्ययो येषां ते मिथ्यादृष्टयः । उत्तं च—मिच्छत्तं वेयंतो जीवो विवरीय-दंसणो होइ । ण य धम्मं रोचेदि हु महुरं खु रसं जहा जरिदो ॥ १०६ ॥ तं मिच्छत्तं जमसद्दहणं तच्चाण होइ अत्थाणं । संसइदमभिग्गहियं अणभिग्गहिदं ति तं तिविहं ॥ १०७ ॥ इदानीं द्वितीयगुणस्थाननिरूपणार्थं सूत्रमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्माइट्ठी ॥ १० ॥

आसादनं सम्यक्त्वविराधनम्, सह आसादनेन वर्तत इति सासादनो विनाशितसम्यग्दर्शनोऽप्राप्तमिथ्यात्वकर्मोदयजनितपरिणामो मिथ्यात्वाभिमुखः सासादन इति भण्यते। अथ स्यान्न मिथ्यादृष्टिरयं मिथ्यात्वकर्मण उदयाभावात्, न सम्यग्दृष्टिः, सम्यग्रुचेरभावात्, न सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुभयविषयरुचेरभावात्। न च चतुर्थी दृष्टिरस्ति, सम्यगसम्यगुभयदृष्ट्यालम्बनवस्तुव्यतिरिक्तवस्त्वनुपलम्भात्। ततोऽसन् एष गुण इति न, विपरीताभिनिवेशतोऽसद्दृष्टित्वात्। तर्हि मिथ्यादृष्टिर्भवत्वयं नास्य सासादनव्यपदेश इति चेन्न, सम्यग्दर्शनचारित्रप्रतिबन्ध्यनन्तानुबन्ध्युदयोत्पादितविपरीताभिनिवेशस्य तत्र सत्त्वाद्भवति मिथ्यादृष्टिरपि तु मिथ्यात्वकर्मोदयजनितविपरीताभिनिवेशाभावात् न तस्य मिथ्यादृष्टिव्यपदेशः, किन्तु सासादन इति व्यपदिश्यते। किमिति मिथ्यादृष्टिरिति न व्यपदिश्यते चेन्न, अनन्तानुबन्धिनां द्विस्वभावत्वप्रतिपादनफलत्वात्। न च दर्शनमोहनीयस्योदयादुपशमात्क्षयात्क्षयोपशमाद्वा सासादनपरिणामः प्राणिनामुपजायते येन मिथ्यादृष्टिः सम्यग्दृष्टिः सम्यग्मिथ्यादृष्टिरिति चोच्येत। यस्माच्च विपरीताभिनिवेशोऽभूदनन्तानुबन्धिनो, न तद्दर्शनमोहनीयं तस्य चारित्रावरणत्वात्। तस्योभयप्रतिबन्धकत्वादुभयव्यपदेशो न्याय्य इति चेन्न, इष्टत्वात्। सूत्रे तथाऽनुपदेशोऽप्यर्पितनयापेक्षः। विवक्षितदर्शनमोहोदयोपशमक्षयक्षयोपशममन्तरेणोत्पन्नत्वात्पारिणामिकः सासादनगुणः। सासादनश्चासौ सम्यग्दृष्टिश्च सासादनसम्यग्दृष्टिः। विपरीताभिनिवेशदूषितस्य तस्य कथं सम्यग्दृष्टित्वमिति चेन्न, भूतपूर्वगत्या तस्य तद्व्यपदेशोपपत्तेरिति। उक्तं च— सम्मत्त-रयण-पव्वय सिहरादो मिच्छ-भूमि-समभिमुहो। णासिय-सम्मत्तो सो सासण-णामो मुणेयव्वो ॥ १०८ ॥

व्यामिश्ररुचिगुणप्रतिपादनार्थं सूत्रमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठी ॥ ११ ॥

दृष्टिः श्रद्धा रुचिः प्रत्यय इति यावत्। समीचीना च मिथ्या च दृष्टिर्यस्यासौ सम्यग्मिथ्यादृष्टिः। अथ स्यादेकस्मिन् जीवे नाक्रमेण समीचीनासमीचीनदृष्ट्योरस्ति संभवो विरोधात्। न क्रमेणापि सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणयोरेवान्तर्भावादिति। अक्रमेण सम्यग्मिथ्यारुच्यात्मको जीवः सम्यग्मिथ्यादृष्टिरिति प्रतिजानीमहे। न विरोधोऽप्यनेकान्त आत्मनि भूयसां धर्माणां सहानवस्थानलक्षणविरोधासिद्धेः। नात्मनोऽनेकान्तत्वमसिद्धमनेकान्तमन्तरेण तस्यार्थक्रियाकर्तृत्वानुपपत्तेः। अस्त्वेकस्मिन्नात्मनि भूयसां सहावस्थानं प्रत्यविरुद्धानां संभवो नाशेषाणामिति चेत्क एवमाह समस्तानामप्यवस्थितिरिति चैतन्याचैतन्यभाव्याभाव्यादिधर्माणामप्यक्रमेणैकात्मन्यवस्थितिप्रसङ्गात्। किन्तु येषां धर्माणां नात्यन्ताभावो यस्मिन्नात्मनि तत्र कदाचित्कचिदक्रमेण तेषामस्तित्वं प्रतिजानीमहे। अस्ति चानयोः ॥ ३४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्रद्धयोः क्रमेणैकस्मिन्नात्मनि संभवस्ततोऽक्रमेण तत्र कदाचित्तयोः संभवेन भवितव्यमिति । न चैतत्काल्पनिकं पूर्वस्वीकृतदेवतापरित्यागेनार्हन्नपि देव इत्यभिप्रायवतः पुरुषस्योपलम्भात् । पंचसु गुणेषु कोऽयं गुण इति चेत्क्षायोपशमिकः । कथं मिथ्यादृष्टेः सम्यग्मिथ्यात्वगुणं प्रतिपद्यमानस्य तावदुच्यते । तद्यथा, मिथ्यात्वकर्मणः सर्वघातिस्पर्द्धकानामुदयक्षयात्तस्यैव सत उदयाभावलक्षणोपशमात्सम्यग्मिथ्यात्वकर्मणः सर्वघातिस्पर्धकोदयाचोत्पद्यत इति सम्यग्मिथ्यात्वगुणः क्षायोपशमिकः । सतापि सम्यग्मिथ्यात्वोदयेन औदयिक इति किमिति न व्यपदिश्यत इति चेन्न, मिथ्यात्वोदयादिवातः सम्यक्त्वस्य निरन्वयविनाशानुपलम्भात् । सम्यग्दृष्टेर्निरन्वयविनाशाकारिणः सम्यग्मिथ्यात्वस्य कथं सर्वघातित्वमिति चेन्न, सम्यग्दृष्टेः साकल्यप्रतिबन्धितामपेक्ष्य तस्य तथोपदेशात् । मिथ्यात्वक्षयोपशमादिवानन्तानुबन्धिनामपि सर्वघातिस्पर्धकक्षयोपशमाज्जातमिति सम्यग्मिथ्यात्वं किमिति नोच्यत इति चेन्न, तस्य चारित्रप्रतिबन्धकत्वात् । ये त्वनन्तानुबन्धिक्षयोपशमादुत्पत्तिं प्रतिजानते तेषां सासादनगुण औदयिकः स्यात्, न चैवमनभ्युपगमात् । अथवा, सम्यक्त्वकर्मणो देशघातिस्पर्धकानामुदयक्षयेण तेषामेव सतामुदयाभावलक्षणोपशमेन च सम्यग्मिथ्यात्वकर्मणः सर्वघातिस्पर्धकोदयेन च सम्यग्मिथ्यात्वगुण उत्पद्यत इति क्षायोपशमिकः । सम्यग्मिथ्यात्वस्य क्षायोपशमिकत्वमेवमुच्यते बालजनव्युत्पादनार्थम् । वस्तुतस्तु सम्यग्मिथ्यात्वकर्मणो निरन्वयेनाप्तागमपदार्थविषयरुचिहननं प्रत्यसमर्थस्योदयात्सदसद्विषयश्रद्धोत्पद्यत इति क्षायोपशमिकः सम्यग्मिथ्यात्वगुणः । अन्यथोपशमसम्यग्दृष्टौ सम्यग्मिथ्यात्वगुणं प्रतिपन्ने सति सम्यग्मिथ्यात्वस्य क्षायोपशमिकत्वमनुपपन्नं, तत्र सम्यक्त्वमिथ्यात्वानन्तानुबन्धिनामुदयक्षयाभावात् । तत्रोदयाभावलक्षण उपशमोऽस्तीति चेन्न, तस्यौपशमिकत्वप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, तथाप्रतिपादकस्यार्षस्याभावात् । अपि च यद्येवं क्षयोपशम इष्येत, मिथ्यात्वमपि क्षायोपशमिकं सम्यक्त्वसम्यग्मिथ्यात्वयोरुदयप्राप्तस्पर्धकानां क्षयात्सतामुदयाभावलक्षणोपशमान्मिथ्यात्वकर्मणः सर्वघातिस्पर्धकोदयाच मिथ्यात्वगुणस्य प्रादुर्भावोपलम्भादिति । उत्तं च—दहि-गुडमिव वामिस्सं पुहभावं णेव कारिदुं सक्कं । एवं मिस्सयभावो सम्मामिच्छो त्ति णायव्वो ॥ १०९ ॥ सम्यग्दृष्टिगुणनिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

असंजदसम्माइट्ठी ॥ १२ ॥

समीची दृष्टिः श्रद्धा यस्यासौ सम्यग्दृष्टिः, असंयतश्चासौ सम्यग्दृष्टिश्च, असंयतसम्यग्दृष्टिः । सो वि सम्माइट्ठी तिविहो, खइयसम्माइट्ठी वेदयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी चेदि । दंसण-चरण-गुण-घाइ चत्तारि अणंताणुबंधि-पयडीओ, मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तमिदि तिण्णि दंसणमोह-पयडीओ च, एदासिं सत्तण्हं णिरवसेस-क्खएण खइयसम्माइट्ठी उच्चइ । एदासिं सत्तण्हं पयडीणमुवसमेण उवसमसम्माइट्ठी होइ । सम्मत्त-सण्णिद-दंसणमोहणीय-भेय-कम्मस्स उदएण वेदयसम्माइट्ठी णाम । तत्थ खइयसम्माइट्ठी

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण कयाइ वि मिच्छत्तं गच्छइ, ण कुणइ संदेहं पि, मिच्छत्तुब्भवं दट्ठूण णो विम्हयं जादि। एरिसो चेय उवसमसम्माइट्ठी, किंतु परिणाम-पच्चएण मिच्छत्तं गच्छइ, सासणगुणं पि पडिवज्जइ, सम्मामिच्छत्तगुणं पि ढुक्कइ, वेदगसम्मत्तं पि समेल्लियइ। जो पुण वेदयसम्माइट्ठी सो सिथिल-सद्दहणो थेरस्स लट्ठि-ग्गहणं व सिथिलग्गाहो कुहेउ-कुदिट्ठंतेहि झडिदि विराहओ। पंचसु गुणेसु के गुणे अस्सिऊण असंजदसम्माइट्ठिगुणस्सुप्पत्ती जादेत्ती पुच्छिदे उच्चदे, सत्त-पयडि-क्खएणुप्पण्ण-सम्मत्तं खइयं। तेसिं चेव सत्तण्हं पयडीणुवसमेणुप्पण्ण-सम्मत्तमुवसमियं। सम्मत्त-देसघाइ-वेदयसम्मत्तुदएणुप्पण्ण-वेदयसम्मत्तं खओवसमियं। मिच्छत्ताणंताणुबंधीणं सव्वघाइ-फद्दयाणं उदय-क्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अहवा सम्मामिच्छत्त-सव्वघाइ-फद्दयाणं उदय-क्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण उहयत्थ सम्मत्त-देसघाइ-फद्दयाणमुदएणुप्पज्जइ जदो तदो वेदयसम्मत्तं खओवसमियमिदि केसिंचि आइरियाणं वक्खाणं तं किमिदि णेच्छिज्जदि, इदि चेत्तण्ण, पुव्वं उत्तुत्तरादो। 'असंजद' इदि जं सम्मादिट्ठिस्स विसेसण-वयणं तमंतदीवयत्तादो हेट्ठिल्लाणं सयलगुणट्ठाणाणमसंजदत्तं परूवेदि। उवरि असंजमभावं किण्ण परूवेदि त्ति उत्ते ण परूवेदि, उवरि सव्वत्थ संजमासंजम-संजम-विसेसणोवलंभादो त्ति। उत्तं च—सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि। सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरु-णियोगा ॥ ११० ॥ णो इंदिएसु विरदो णो जीवे थावरे तसे चावि। जो सद्दहदि जिणुत्तं सम्माइट्ठी अविरदो सो ॥ १११ ॥ एदं सम्माइट्ठि-वयणं उवरिम-सव्वगुणट्ठाणेसु अणुवट्टइ गंगा-णई-पवाहो व्व। देसविरइ-गुणट्ठाण-परूवणट्ठमुत्तर-सुत्तमाह—

संजदासंजदा ॥ १३ ॥

संयताश्च ते असंयताश्च संयतासंयताः। यदि संयतः, नासावसंयतः। अथासंयतः, नासौ संयत इति विरोधान्नायं गुणो घटत इति चेदस्तु गुणानां परस्परपरिहारलक्षणो विरोध इष्टत्वात्, अन्यथा तेषां स्वरूपहानिप्रसङ्गात्। न गुणानां सहानवस्थानलक्षणो विरोधः सम्भवति, सम्भवेद्वा न वस्त्वस्ति तस्यानेकान्तनिबन्धनत्वात्। यदर्थक्रियाकारि तद्वस्तु। सा च नैकान्ते, एकानेकाभ्यां प्राप्तनिरूपितानवस्थाभ्यामर्थक्रियाविरोधात्। न चैतन्याचैतन्याभ्यामनेकान्तस्तयोर्गुणत्वाभावात्। सहभुवो हि गुणाः, न चानयोः सहभूतिरस्ति, असति विबन्धर्यनुपलम्भात्, भवति च विरोधः समाननिबन्धनत्वे सति। न चात्र विरोधः संयमासंयमयोरेकद्रव्यवर्तिनोस्त्रसस्थावरनिबन्धनत्वात्। औदयिकादिषु पंचसु गुणेषु कं गुणमाश्रित्य संयमासंयमगुणः समुत्पन्न इति चेत्क्षायोपशमिकोऽयं गुणः, ॥ ३६ ॥
अप्रत्याख्यानावरणीयस्य सर्वघातिस्पर्द्धकानामुदयक्षयात् सतां चोपशमात् प्रत्याख्यानावरणीयोदयादप्रत्याख्यानोत्पत्तेः। संयमासंयमधराधिकृतसम्यक्त्वानि कियन्तीति चेत्क्षायिकक्षायोपशमिकौपशमिकानि त्रीण्यपि भवन्ति पर्यायेण तान्यन्तरेणाप्रत्याख्यानस्योत्पत्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरोधात् । सम्यक्त्वमन्तरेणापि देशयतयो दृश्यन्त इति चेन्न, निर्गतमुक्तिकाङ्क्षस्यानिवृत्तविषयपिपासस्याप्रत्याख्यानानुपपत्तेः । उत्तं च—जो तस-वहाउ विरओ अविरओ तह य थावर-वहाओ । एक्क-समयम्हि जीवो विरयाविरओ जिणेक्कमई ॥ ११२ ॥ संयतानामादिगुणस्थाननिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

पमत्तसंजदा ॥ १४ ॥

प्रकर्षेण मत्ताः प्रमत्ताः, सं सम्यग् यता विरताः संयताः । प्रमत्ताश्च ते संयताश्च प्रमत्तसंयताः । यदि प्रमत्ताः, न संयताः स्वरूपासंवेदनात् । अथ संयताः, न प्रमत्ताः संयमस्य प्रमादपरिहाररूपत्वादिति नैष दोषः, संयमो नाम हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्गुप्तिसमित्यनुरक्षितः, नासौ प्रमादेन विनाश्यते तत्र तस्मान्मलोत्पत्तेः । संयमस्य मलोत्पादक एवात्र प्रमादो विवक्षितो न तद्विनाशक इति कुतोऽवसीयत इति चेत् संयमाविनाशान्यथानुपपत्तेः । न हि मन्दतमः प्रमादः क्षणक्षयी संयमविनाशकोऽसति विबन्धर्यनुपलब्धेः । प्रमत्तवचनमन्तदीपकत्वाच्छेषातीतसर्वगुणेषु प्रमादास्तित्वं सूचयति । पञ्चसु गुणेषु कं गुणमाश्रित्यायं प्रमत्तसंयतगुण उत्पन्नश्चेत्संयममपेक्षया क्षायोपशमिकः । कथम् ? प्रत्याख्यानावरणसर्वघातिस्पर्धकोदयक्षयात्तेषामेव सतामुदयाभावलक्षणोपशमात् संज्वलनोदयाच्च प्रत्याख्यानसमुत्पत्तेः । संज्वलनोदयात्संयमो भवतीत्यौदयिकव्यपदेशोऽस्य किं न स्यादिति चेन्न, ततः संयमस्योत्पत्तेरभावात् । क्व तद् व्याप्रियत इति चेत्प्रत्याख्यानावरणसर्वघातिस्पर्द्धकोदयक्षयसमुत्पन्नसंयममलोत्पादने तस्य व्यापारः । संयमनिबन्धनसम्यक्त्वापेक्षया क्षायिकक्षायोपशमिकौपशमिकगुणनिबन्धनः । सम्यक्त्वमन्तरेणापि संयमोपलम्भान्नार्थः सम्यक्त्वानुवर्तनेनेति चेन्न, आप्तागमपदार्थेष्वनुत्पन्नश्रद्धस्य त्रिमूढालीढचेतसः संयमानुपपत्तेः । द्रव्यसंयमस्य नात्रोपादानमिति कुतोऽवगम्यत इति चेत्सम्यग् ज्ञात्वा श्रद्धाय यतः संयत इति व्युत्पत्तितस्तदवगतेः । उत्तं च—वत्तावत्त-पमाए जो वसइ पमत्तसंजदो होइ । सयल-गुण-सील-कलिओ महव्वई चित्तलायरणो ॥ ११३ ॥ विकहा तहा कसाया इंदिय-णिद्दा तहेव पणयो य । चदु-चदु-पणमेगेगं होंति पमादा य पण्णरसा ॥ ११४ ॥ क्षायोपशमिकसंयमेषु शुद्धसंयमोपलक्षितगुणस्थाननिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

अप्पमत्तसंजदा ॥ १५ ॥

प्रमत्तसंयताः पूर्वोक्तलक्षणाः, न प्रमत्तसंयता अप्रमत्तसंयता पञ्चदशप्रमादरहितसंयता इति यावत् । शेषाशेषसंयतानामत्रैवान्तर्भावाच्छेषसंयतगुणस्थानानामभावः स्यादिति चेन्न, संयतानामुपरिष्टात्प्रतिपद्यमानविशेषणाविशिष्टानामस्तप्रमादानामिह ग्रहणात् । तत्कथमवगम्यत इति चेन्न, उपरिष्टात्तनसंयतगुणस्थाननिरूपणान्यथानुपपत्तितस्तदवगतेः । एषोऽपि गुणः क्षायोपशमिकः प्रत्याख्या- ॥ ३७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नावरणीयकर्मणः सर्वघातिस्पर्द्धकोदयक्षयात्तेषामेव सतां पूर्ववदुपशमात् संज्वलनोदयाच्च प्रत्याख्यानोत्पत्तेः। संयमनिबन्धनसम्यक्त्वापेक्षया सम्यक्त्वप्रतिबन्धककर्मणां क्षयक्षयोपशमोपशमजगुणनिबन्धनः। उत्तं च— णट्ठासेस-पमाओ वय-गुण-सीलोलि-मंडिओ णाणी। अणुवसमओ अखवओ झाण-णिलीणो हु अपमत्तो ॥ ११५ ॥ चारित्रमोहोपशमकक्षपकेषु प्रथमगुणस्थाननिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

अपुव्वकरण-पविट्ठ-सुद्धि-संजदेसु अत्थि उवसमा खवा ॥ १६ ॥

करणाः परिणामाः, न पूर्वाः अपूर्वाः। नानाजीवापेक्षया प्रतिसमयमादितः क्रमप्रवृद्धासंख्येयलोकपरिणामस्यास्य गुणस्यान्तर्विवक्षितसमयवर्तिप्राणिनो व्यतिरिच्यान्यसमयवर्तिप्राणिभिरप्राप्या अपूर्वा अत्रतनपरिणामैरसमाना इति यावत्। अपूर्वाश्च ते करणाश्चापूर्वकरणाः। एतेनापूर्वविशेषणेनाधःप्रवृत्तपरिणामव्युदासः कृत इति द्रष्टव्यः, तत्रतनपरिणामानामपूर्वत्वाभावात्। अपूर्वशब्दः प्रागप्रतिपन्नार्थवाचको नासमानार्थवाचक इति चेन्न, पूर्वसमानशब्दयोरेकार्थत्वात्। तेषु प्रविष्टा शुद्धिर्येषां त अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धयः। के ते? संयताः। तेषु संयतेषु 'अत्थि' सन्ति। नदीस्रोतोन्यायेन सन्तीत्यनुवर्तमाने पुनरिह तदुच्चारणमनर्थकमिति चेन्न, अस्यान्यार्थत्वात्। कथम्? स गुणस्थानसत्त्वप्रतिपादकः, अयं तु संयतेषु क्षपकोपशमकभावयोर्वैयधिकरण्यप्रतिपादनार्थं इति। अपूर्वकरणानामन्तःप्रविष्टशुद्धयः क्षपकोपशमकसंयताः, सर्वे संभूय एको गुणः 'अपूर्वकरण' इति। किमिति नामनिर्देशो न कृतश्चेन्न, सामर्थ्यलभ्यत्वात्। अक्षपकानुपशमकानां कथं तद्व्यपदेशश्चेन्न, भाविनि भूतवदुपचारतस्तत्सिद्धेः। सत्येवमतिप्रसङ्गः स्यादिति चेन्न, असति प्रतिबन्धरि मरणे नियमेन चारित्रमोहक्षपणोपशमकारिणां तदुन्मुखानामुपचारभाजामुपलम्भात्। क्षपणोपशमननिबन्धनत्वाद् भिन्नपरिणामानां कथमेकत्वमिति चेन्न, क्षपकोपशमकपरिणामानामपूर्वत्वं प्रति साम्यात्तदेकत्वोपपत्तेः। पञ्चसु गुणेषु कोऽत्रतनगुणश्चेत्क्षपकस्य क्षायिकः, उपशमकस्यौपशमिकः। कर्मणां क्षयोपशमाभ्यामभावे कथं तयोस्तत्र सत्त्वमिति चेन्नैष दोषः, तयोस्तत्र सत्त्वस्योपचारनिबन्धनत्वात्। सम्यक्त्वापेक्षया तु क्षपकस्य क्षायिको भावः, दर्शनमोहनीयक्षयमविधाय क्षपकश्रेण्यारोहणानुपपत्तेः। उपशमकस्यौपशमिकः क्षायिको वा भावः, दर्शनमोहोपशमक्षयाभ्यां विनोपशमश्रेण्यारोहणानुपलम्भात्। उत्तं च— भिण्ण-समय-ट्ठिएहि दु जीवेहि ण होइ सव्वदा सरिसो। करणेहि एक्क-समय-ट्ठिएहि सरिसो विसरिसो य ॥ ११६ ॥ एदम्हि गुणट्ठाणे विसरिस-समय-ट्ठिएहि जीवेहि। पुव्वमपत्ता जम्हा होंति अपुव्वा हु परिणामा ॥ ११७ ॥ तारिस-परिणाम-ट्ठिय-जीवा हु जिणेहि गलिय-तिमिरेहि। मोहस्स पुव्वकरणा खवणुवसमणुज्जया भणिया ॥ ११८ ॥ इदानीं बादरकषायेषु चरमगुणस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणियट्टि-बादर-सांपराइय-पविट्ठ-सुद्धि संजदेसु अत्थि उवसमा खवा ॥ १७ ॥

॥ ३९ ॥ समानसमयावस्थितजीवपरिणामानां निर्भेदेन वृत्तिर्निवृत्तिः। अथवा निवृत्तिर्व्यावृत्तिः, न विद्यते निवृत्तिर्येषां तेऽनिवृत्तयः। अपूर्वकरणाश्च तादृक्षाः केचित्सन्तीति तेषामप्ययं व्यपदेशः प्राप्नोतीति चेन्न, तेषां नियमाभावात्। समानसमयस्थितजीवपरिणामानामिति कथमधिगम्यत इति चेन्न, 'अपूर्वकरण' इत्यनुवर्तनादेव द्वितीयादिसमयवर्तिजीवैः सह परिणामापेक्षया भेदसिद्धेः। साम्परायाः कषायाः, बादराः स्थूलाः, बादराश्च ते साम्परायाश्च बादरसाम्परायाः। अनिवृत्तयश्च ते बादरसाम्परायाश्च अनिवृत्तिबादरसाम्परायाः। तेषु प्रविष्टा शुद्धिर्येषां संयतानां तेऽनिवृत्तिबादरसाम्परायप्रविष्टशुद्धिसंयताः तेषु सन्त्युपशमकाः क्षपकाश्च। ते सर्वे एको गुणोऽनिवृत्तिरिति। यावन्तः परिणामास्तावन्त एव गुणाः किन्न भवन्तीति चेन्न, तथा व्यवहारानुपपत्तितो द्रव्यार्थिकनयसमाश्रयणात्। बादर-ग्रहणमन्तदीपकत्वाद् गताशेषगुणस्थानानि बादरकषायाणीति प्रज्ञापनार्थम्, 'सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति' इति न्यायात्। संयतग्रहणमनर्थकमिति चेन्नैष दोषः, संयमस्य पञ्चस्वपि गुणेषु सम्भव एव न व्यभिचार इत्यस्यान्यस्याधिगमोपायस्याभावतस्तदुक्तेः। आद्यं संयतग्रहणमनुवर्तते, ततस्तदवसीयत इति चेत्तर्ह्यस्तु जडजनानुग्रहार्थमिति। यद्येवमुपशान्तकषायादिष्वपि संयतग्रहणमस्त्विति चेन्न, सकषायत्वेन संयतानामसंयतैः साधर्म्यमस्तीति मन्दधियामधः संशयोत्पत्तिसम्भवात्। नोपशान्तकषायादिषु मन्दधियामप्यारेकोत्पद्यते। क्षीणोपशान्तकषायाः संयताः, भावतोऽसंयतैस्संयतानां साधर्म्याभावात्। काश्चित्प्रकृतीरुपशमयति, काश्चिदुपरिष्टादुपशमयिष्यतीति औपशमिकोऽयं गुणः। काश्चित् प्रकृतीः क्षपयति काश्चिदुपरिष्टात् क्षपयिष्यतीति क्षायिकश्च। सम्यक्त्वापेक्षया चारित्रमोहक्षपकस्य क्षायिक एव गुणस्तत्रान्यस्यासम्भवात्। उपशमकस्यौपशमिकः क्षायिकश्चोभयोरपि तत्राविरोधात्। क्षपकोपशमकयोर्द्वित्वं किमिति नेष्यत इति चेन्न, गुणनिबन्धनानिवृत्तिपरिणामानां साम्यप्रदर्शनार्थं तदेकत्वोक्तेः। उक्तं च— एक्कम्मि काल-समए संठाणादीहि जह णिवट्टंति। ण णिवट्टंति तहच्चिय परिणामेहिं मिहो जे हु ॥ ११९ ॥ होंति अणियट्टिणो ते पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा। विमलयर-झाण-हुयवह-सिहाहि णिद्दद्ध-कम्म-वणा ॥ १२० ॥ इदानीं कुशीलेषु पाश्चात्यगुणप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

सुहुम-सांपराइय-पविट्ठ-सुद्धि-संजदेसु अत्थि उवसमा खवा ॥ १८ ॥ ॥ ३९ ॥

सूक्ष्मश्चासौ साम्परायश्च सूक्ष्मसाम्परायः। तं प्रविष्टा शुद्धिर्येषां संयतानां ते सूक्ष्मसाम्परायप्रविष्टशुद्धिसंयताः। तेषु सन्ति उपशमकाः क्षपकाश्च। सर्वे त एको गुणः सूक्ष्मसाम्परायत्वं प्रत्यभेदात्। अपूर्व इत्यनुवर्तत अनिवृत्तिरिति च। ततस्ताभ्यां सूक्ष्म-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्परायो विशेषयितव्यः। अन्यथातीतगुणेभ्यस्तस्याधिक्यानुपपत्तेः। प्रकृतीः काश्चित्क्षपयति क्षपयिष्यति क्षपिताश्चेति क्षायिकगुणः। काश्चिदुपशमयति उपशमयिष्यति उपशमिताश्चेत्यौपशमिकगुणः। सम्यग्दर्शनापेक्षया क्षपकः क्षायिकगुणः, उपशमक औपशमिकगुणः क्षायिकगुणो वा द्वाभ्यामपि सम्यक्त्वाभ्यामुपशमश्रेण्यारोहणसम्भवात्। संयतग्रहणस्य पूर्ववत्साफल्यमुपदेष्टव्यम्। उत्तं च— पुव्वापुव्वय-फद्दय-अणुभागादो अणंत-गुण-हीणे। लोहाणुम्हि ट्ठियओ हंद सुहुम-सांपराओ सो ॥ १२१ ॥ साम्प्रतमुपशमश्रेण्यन्तगुणप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

उवसंत-कसाय-वीयराय-छदुमत्था ॥ १९ ॥

उपशान्तः कषायो येषां त उपशान्तकषायाः। वीतो विनष्टो रागो येषां ते वीतरागाः। छद्म ज्ञानदृगावरणे, तत्र तिष्ठन्तीति छद्मस्थाः। वीतरागाश्च ते छद्मस्थाश्च वीतरागछद्मस्थाः। एतेन सरागछद्मस्थनिराकृतिरवगन्तव्या। उपशान्तकषायाश्च ते वीतरागछद्मस्थाश्च उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थाः। एतेनोपरितनगुणव्युदासोऽवगन्तव्यः। एतस्योपशमिताशेषकषायत्वादौपशमिकः, सम्यक्त्वापेक्षया क्षायिक औपशमिको वा गुणः। उत्तं च— सकदकफलं जलं वा सरए सरवाणियं व णिम्मलयं। सयलोवसंतमोहो उवसंतकसायओ होई ॥ १२२ ॥ निर्ग्रन्थगुणप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

खीण-कसाय-वीयराय-छदुमत्था ॥ २० ॥

क्षीणः कषायो येषां ते क्षीणकषायाः। क्षीणकषायाश्च ते वीतरागाश्च क्षीणकषायवीतरागाः। छद्मनि आवरणे तिष्ठन्तीति छद्मस्थाः। क्षीणकषायवीतरागाश्च ते छद्मस्थाश्च क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थाः। छद्मस्थग्रहणमन्तदीपकत्वादतीताशेषगुणानां सावरणत्वस्य सूचकमित्यवगन्तव्यम्। क्षीणकषाया हि वीतरागा एव व्यभिचाराभावाद्वीतरागग्रहणमनर्थकमिति चेन्न, नामादिक्षीणकषायविनिवृत्तिफलत्वात्। पञ्चसु गुणेषु कस्मादस्य प्रादुर्भाव इति चेद् द्रव्यभावद्वैविध्यादुभयात्मकमोहनीयस्य निरन्वयविनाशात्क्षायिकगुणनिबन्धनः। उत्तं च— णिस्सेस-खीण-मोहो फलियामल-भायणुदय-समचित्तो। खीण-कसायो भण्णइ णिग्गंथो वीयराएहिं ॥ १२३ ॥ स्नातकगुणप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

सजोगकेवली ॥ २१ ॥

केवलं केवलज्ञानम्। कथं नामैकदेशात्सकलनाम्ना प्रतिपद्यमानस्यार्थस्यावगम इति चेन्न, बलदेवशब्दवाच्यस्यार्थस्य तदेकदेशदेव-

शब्दादपि प्रतीयमानस्योपलम्भात्। न च दृष्टेऽनुपपन्नता, अव्यवस्थापत्तेः। केवलमसहायमिन्द्रियालोकमनस्कारनिरपेक्षम्, तदेषामस्तीति केवलिनः। मनोवाक्कायप्रवृत्तिर्योगः, योगेन सह वर्तन्त इति सयोगाः। सयोगाश्च ते केवलिनश्च सयोगकेवलिनः। सयोगग्रहणमधस्तनसकलगुणानां सयोगत्वप्रतिपादकमन्तदीपकत्वात्। क्षपिताशेषघातिकर्मत्वान्निःशक्तीकृतवेदनीयत्वान्नष्टाष्टकर्मावयवषष्टिकर्मत्वाद्वा क्षायिकगुणः। उत्तं च—केवलणाण-दिवायर-किरण-कलाव-प्पणासि-अण्णाणो। णव-केवल-लद्धुग्गम-सुजणिय-परमप्प-ववएसो ॥ १२४ ॥ असहाय-णाण-दंसण-सहिओ इदि केवली हु जोएण। जुत्तो त्ति सजोगो इदि अणाइणिहणारिसे उत्तो ॥ १२५ ॥

साम्प्रतमन्त्यस्य गुणस्य स्वरूपनिरूपणार्थमर्हन्मुखोद्गतार्थं गणधरदेवग्रथितशब्दसन्दर्भं प्रवाहरूपतयाऽनिधनतामापन्नमशेषदोषव्यतिरिक्तत्वादकलङ्कमुत्तरसूत्रं पुष्पदन्तभट्टारकः प्राह—

अजोगकेवली ॥ २२ ॥

न विद्यते योगो यस्य स भवत्ययोगः। केवलमस्यास्तीति केवली। अयोगश्चासौ केवली चायोगकेवली। केवलीत्यनुवर्तमाने पुनः केवलिग्रहणं न कर्तव्यमिति चेन्नैष दोषः, समनस्केषु ज्ञानं सर्वत्र सर्वदा मनोनिबन्धनत्वेन प्रतिपन्नं, प्रतीयते च। सति चैवं नायोगिनां केवलज्ञानमस्ति तत्र मनसोऽसत्त्वादिति विप्रतिपन्नस्य शिष्यस्य तदस्तित्वप्रतिपादनफलत्वात्। कथं वचनात्तदस्तित्वमवगम्यत इति चेच्चक्षुषा स्तम्भादेरस्तित्वं कथमवगम्यते? तत्प्रमाणत्वान्यथानुपपत्तेश्चक्षुषा समुपलब्धमस्तीति चेत्तर्ह्यत्रापि वचनस्य प्रामाण्यान्यथानुपपत्तेः, समस्ति वचने वाच्यमिति समानमेतत्। वचनस्य प्रामाण्यमसिद्धं तस्य क्वचिद् विसंवाददर्शनादिति चेन्न, चक्षुषोऽपि प्रामाण्यमसिद्धं, तस्य क्वचिद्विसंवाददर्शनत्वं प्रति ततोऽविशेषात्। यदविसंवादि चक्षुस्तत्प्रमाणमिति चेन्न, सर्वेषामपि चक्षुषां सर्वत्र सर्वदाऽविसंवादस्यानुपलम्भात्। यत्र यदाऽविसंवादः समुपलभ्यते चक्षुषस्तत्र तदा तस्य प्रामाण्यमिति चेद्यदि क्वचित्कदाचिदविसंवादिनश्चक्षुषोऽपि प्रामाण्यमिष्यते दृष्टादृष्टविषये सर्वत्र सर्वदाविसंवादिनो वचनस्य प्रामाण्यं किमिति नेष्यते? अदृष्टविषये क्वचिद्विसंवादोपलम्भान्न तस्य सर्वत्र सर्वदा प्रामाण्यमिति चेन्न, तत्र वचनस्यापराधाभावात्तत्स्वरूपानवगन्तुः पुरुषस्य तत्रापराधोपलम्भात्। न ह्यन्यदोषैरन्यः परिगृह्यते, अव्यवस्थापत्तेः। वक्तुरेव तत्रापराधो न वचनस्येति कथमवगम्यत इति चेन्न, तस्यान्यस्य वा तत एव प्रवृत्तस्य पश्चादर्थप्राप्त्युपलम्भात्। अप्रतिपन्नविसंवादाविसंवादस्यास्य वचनस्य प्रामाण्यं कथमवसीयत इति चेन्नैष दोषः, आर्षावयवेन प्रतिपन्नाविसंवादेन सहास्यार्षावयवस्यावयविद्वारेणापन्नैकत्वतस्तत्सत्यत्वावगतेरिक्षुदण्डवत्। नानारसः किन्न स्यादिति चेन्न, वाच्यवाचकभेदेन तस्य नानात्वाभ्युपगमात्। तद्वत्सत्यासत्यकृतभेदोऽपि तस्यास्त्विति चेन्न, अवयविद्वारेणैकस्य प्रवाहरूपेणापौरुषेयस्यागमस्यासत्यत्वविरोधात्। अथवा न

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तावदयं वेदः स्वस्यार्थं स्वयमाचष्टे सर्वेषामपि तदवगमप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न चैवं, तथानुपलम्भात् । अथान्ये व्याचक्षते, तेषां तदर्थविषयपरिज्ञानमस्ति वा नेति विकल्पद्वयावतारः ? न द्वितीयविकल्पस्तदर्थावगमरहितस्य व्याख्यातृत्वविरोधात् । अविरोधे वा सर्वः सर्वस्य व्याख्याताऽस्त्वज्ञत्वं प्रत्यविशेषात् । प्रथमविकल्पेऽसौ सर्वज्ञो वा स्यादसर्वज्ञो वा ? न द्वितीयविकल्पः, ज्ञानविज्ञानविरहादप्राप्तप्रामाण्यस्य व्याख्यातुर्वचनस्य प्रामाण्याभावात् । भवतु तस्य तद्वचनस्य चाप्रामाण्यम्, नागमस्य पुरुषव्यापारनिरपेक्षत्वादिति चेन्न, व्याख्यातारमन्तरेण स्वार्थाप्रतिपादकस्य तस्य व्याख्यात्रधीनवाच्यवाचकभावस्य पुरुषव्यापारनिरपेक्षत्वविरोधात् । तस्मादागमः पुरुषेच्छातोऽर्थप्रतिपादक इति प्रतिपत्तव्यम् । तथा च 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायादप्रमाणपुरुषव्याख्यातार्थ आगमोऽप्रमाणतां कथं नास्कन्देत् ? तस्माद् विगताशेषदोषावरणत्वात् प्राप्ताशेषवस्तुविषयबोधस्तस्य व्याख्यातेति प्रतिपत्तव्यम्, अन्यथास्यापौरुषेयत्वस्यापि पौरुषेयवदप्रामाण्यप्रसङ्गात् । असर्वज्ञानां व्याख्यातृत्वाभाव आर्षसन्ततेर्विच्छेदः स्यादर्थशून्याया वचनपद्धतेरार्षत्वाभावादिति चेन्न, इष्टत्वात् । नाप्यार्षसन्ततेर्विच्छेदो विगतदोषावरणार्हद्व्याख्यातार्थस्यार्षस्य चतुरमलबुद्ध्यतिशयोपेतनिर्दोषगणभृदवधारितस्य ज्ञानविज्ञानसम्पन्नगुरुपर्वक्रमेणायातस्याविनष्टप्राक्तनवाच्यवाचकभावस्य विगतदोषावरणनिष्प्रतिपक्षसत्यस्वभावपुरुषव्याख्यातत्वेन श्रद्धाप्यमानस्योपलम्भात् । अप्रमाणमिदानीन्तन आगम आरातीयपुरुषव्याख्यातार्थत्वादिति चेन्न, ऐदंयुगीनज्ञानविज्ञानसम्पन्नतया प्राप्तप्रामाण्यैराचार्यैर्व्याख्यातार्थत्वात् । कथं छद्मस्थानां सत्यवादित्वमिति चेन्न, यथाश्रुतव्याख्यातॄणां तदविरोधात् । प्रमाणीभूतगुरुपर्वक्रमेणायातोऽयमर्थ इति कथमवसीयत इति चेन्न, दृष्टविषये सर्वत्राविसंवादात्, अदृष्टविषयेऽप्यविसंवादिनागमभावेनैकत्वे सति सुनिश्चितासम्भवद्बाधकप्रमाणत्वात्, ऐदंयुगीनज्ञानविज्ञानसम्पन्नभूयसामाचार्याणामुपदेशाद्वा तदवगतेः । न च भूयांसः साधवो विसंवदन्ते, तथान्यत्रानुपलम्भात । प्रमाणपुरुषव्याख्यातार्थत्वात् स्थितं वचनस्य प्रामाण्यम् । ततो मनसोऽभावेऽप्यस्ति केवलज्ञानमिति सिद्धम् । अथवा न केवलज्ञानं मनसः समुत्पद्यमानमुपलब्धं श्रुतं वा, येनैषारेकोत्पद्येत । क्षायोपशमिको हि बोधः क्वचिन्मनस उत्पद्यते । मनसोऽभावाद्भवतु तस्यैवाभावः, न केवलस्य, तस्मात्तस्योत्पत्तेरभावात् । सयोगस्य केवलिनः केवलं मनसः समुत्पद्यमानं समुपलभ्यत इति चेन्न, स्वावरणक्षयादुत्पन्नस्याक्रमस्य पुनरुत्पत्तेर्विरोधात् । ज्ञानत्वान्मत्यादिज्ञानवत्कारकमपेक्षते केवलमिति चेन्न, क्षायिकक्षायोपशमिकयोः साधर्म्याभावात् । प्रतिक्षणं विवर्तमानानर्थानपरिणामि केवलं कथं परिच्छिनत्तीति चेन्न, ज्ञेयसमविपरिवर्तिनः केवलस्य तदविरोधात् । ज्ञेयपरतन्त्रतया विपरिवर्तमानस्य केवलस्य कथं पुनर्नैवोत्पत्तिरिति चेन्न, केवलोपयोगसामान्यापेक्षया तस्योत्पत्तेरभावात् । विशेषापेक्षया च नेन्द्रियालोकमनोभ्यस्तदुत्पत्तिर्विगतावरणस्य तद्विरोधात् । केवलमसहायत्वान्न तत्सहायमपेक्षते स्वरूपहानिप्रसङ्गात् । प्रमेयमपि मैवमाक्षिष्टासहायत्वादिति चेन्न, तस्य तत्स्वभावत्वात् । न हि स्वभावाः परपर्यनुयोगार्हा अव्यवस्थापत्तेरिति । पञ्चसु गुणेषु कोऽत्र गुण इति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेत्क्षीणाशेषघातिकर्मत्वान्निरस्यमानाघातिकर्मत्वाच्च क्षायिको गुणः । उत्तं च—सेलेसिं संपत्तो णिरुद्ध-णिस्सेस-आसवो जीवो । कम्म-रय-विप्पमुक्को गय-जोगो केवली होई ॥ १२६ ॥ मोक्षस्य सोपानीभूतानि चतुर्दश गुणस्थानानि प्रतिपाद्य संसारातीतगुणप्रतिपादनार्थमाह—

सिद्धा चेदि ॥ २३ ॥

सिद्धा निष्ठिता निष्पन्नाः कृतकृत्याः सिद्धसाध्या इति यावत् । निराकृताशेषकर्माणो बाह्यार्थनिरपेक्षानन्तानुपमसहजाप्रतिपक्षसुखा निरुपलेपा अविचलितस्वरूपाः सकलावगुणातीता निःशेषगुणनिधानाश्चरमदेहात्किञ्चिन्न्यूनस्वदेहाः कोशविनिर्गतसायकोपमा लोकशिखरनिवासिनः सिद्धाः । उत्तं च—अट्ठविह-कम्म-विजुदा सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा । अट्ठ-गुणा किदकिच्चा लोयग्ग-णिवासिणो सिद्धा ॥ १२७ ॥ सव्वत्थ अत्थि त्ति संबंधो कायव्वो । 'च' सद्दो समुच्चयट्ठो । 'इदि' सद्दो एत्तियाणि चेव गुणट्ठाणाणि त्ति गुणट्ठाणाणं समत्तिवाचओ । चोद्दसण्हं गुणट्ठाणाणं ओघ-परूवणं काऊण आदेश-परूवणट्ठं सुत्तमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण अत्थि णिरयगदी तिरिक्खगदी मणुस्सगदी देवगदी सिद्धगदी चेदि ॥ २४ ॥

आदेशग्रहणं सामर्थ्यलभ्यमिति न वाच्यमिति चेन्न, स्पष्टीकरणार्थत्वात् । गतिरुक्तलक्षणा, तस्या वदनं वादः । प्रसिद्धस्याचार्यपरम्परागतस्यार्थस्यानु पश्चाद् वादोऽनुवादः । गतेरनुवादो गत्यनुवादः, तेन गत्यनुवादेन । हिंसादिष्वसदनुष्ठानेषु व्यापृता निरतास्तेषां गतिर्निरतगतिः । अथवा नरान् प्राणिनः कायति यातयति खलीकरोतीति नरकः कर्म, तस्य नरकस्यापत्यानि नारकास्तेषां गतिर्नारकगतिः । अथवा यस्या उदयः सकलाशुभकर्मणामुदयस्य सहकारिकारणं भवति सा नरकगतिः । अथवा द्रव्यक्षेत्रकालभावेष्वन्योन्येषु च विरता नरताः, तेषां गतिर्नरतगतिः । उत्तं च —ण रमंति जदो णिच्चं दव्वे खेत्ते य काल-भावे य । अण्णोण्णेहि य जम्हा तम्हा ते णारया भणिया ॥ १२८ ॥ सकलतिर्यक्पर्यायोत्पत्तिनिमित्ता तिर्यग्गतिः । अथवा तिर्यग्गतिकर्मोदयापादिततिर्यक्पर्यायकलापस्तिर्यग्गतिः । अथवा तिरो वक्रं कुटिलमित्यर्थः, तदञ्चन्ति व्रजन्तीति तिर्यञ्चः । तिरश्चां गतिस्तिर्यग्गतिः । उत्तं च—तिरियंति कुडिल-भावं सुवियड-सण्णा णिगिट्ठमण्णाणा । अच्चंत-पाव-बहुला तम्हा तेरिच्छया णाम ॥ १२९ ॥ अशेषमनुष्यपर्यायनिष्पादिका मनुष्यगतिः । अथवा मनुष्यगतिकर्मोदयापादितमनुष्यपर्यायकलापः कार्ये कारणोपचारान्मनुष्यगतिः । अथवा मनसा निपुणा मनसा उत्कटा इति वा मनुष्याः, तेषां गतिर्मनुष्यगतिः । उत्तं च—मण्णंति जदो णिच्चं मणेण णिउणा मणुक्कडा जम्हा । मणु-उब्भवा य सव्वे तम्हा ते माणुसा भणिया ॥ १३० ॥ अणिमाद्यष्टगुणावष्टम्भबलेन दीव्यन्ति क्रीडन्तीति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवाः । देवानां गतिर्देवगतिः । अथवा देवगतिनामकर्मोदयोऽणिमादिदेवाभिधानप्रत्ययव्यवहारनिबन्धनपर्यायोत्पादको देवगतिः । देवगतिनामकर्मोदयजनितपर्यायो वा देवगतिः, कार्ये कारणोपचारात् । उत्तं च— दिव्वंति जदो णिच्चं गुणेहि अट्ठेहि दिव्व-भावेहि । भासंत-दिव्व-काया तम्हा ते वण्णिया देवा ॥ १३१ ॥ सिद्धिः स्वरूपोपलब्धिः सकलगुणैः स्वरूपनिष्ठा सा एव गतिः सिद्धिगतिः । उत्तं च— जाइ-जरा-मरण-भया संजोय-वियोय-दुक्ख-सण्णाओ । रोगादिया य जिस्से ण संति सा होइ सिद्धगई ॥ १३२ ॥ सर्वत्रास्तीत्यभिसम्बन्धः कर्तव्यः । प्रतिज्ञावाक्यत्वाद्धेतुप्रयोगः कर्तव्यः, प्रतिज्ञामात्रतः साध्यसिद्ध्यनुपपत्तेरिति चेन्नेदं प्रतिज्ञावाक्यं प्रमाणत्वात्, न हि प्रमाणं प्रमाणान्तरमपेक्षतेऽनवस्थापत्तेः । नास्य प्रामाण्यमसिद्धमुक्तोत्तरत्वात् । साम्प्रतं मार्गणैकदेशगतेरस्तित्वम-भिधाय तत्र जीवसमासान्वेषणाय सूत्रमाह—

णेरइया चउट्ठाणेसु अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ २५ ॥

नारकग्रहणं मनुष्यादिनिराकरणार्थम् । चतुर्ग्रहणं पञ्चादिसंख्यापोहनार्थम् । अस्तिग्रहणं प्रतिपत्तिगौरवनिरासार्थम् । नारकाश्चतुर्षु स्थानेषु सन्तीत्यस्मात्सामान्यवचनात्संशयो मा जनीति तदुत्पत्तिनिराकरणार्थं मिथ्यादृष्ट्यादिगुणानां नामनिर्देशः । अस्तु मिथ्यादृष्टिगुणे तेषां सत्त्वं मिथ्यादृष्टिषु तत्रोत्पत्तिनिमित्तमिथ्यात्वस्य सत्त्वात् । नेतरेषु गुणेषु तेषां सत्त्वं तत्रोत्पत्तिनिमित्तस्य मिथ्यात्वस्यासत्त्वादिति चेन्न, आयुषो बन्धमन्तरेण मिथ्यात्वाविरतिकषायाणां तत्रोत्पादनसामर्थ्याभावात् । न च बद्धस्यायुषः सम्यक्त्वान्निरन्वयविनाश आर्षविरोधात् । न हि बद्धायुषः सम्यक्त्वं संयममिव न प्रतिपद्यन्ते सूत्रविरोधात् । सम्यग्दृष्टीनां बद्धायुषां तत्रोत्पत्तिरस्तीति सन्ति तत्रासंयतसम्यग्दृष्टयः, न सासादनगुणवतां तत्रोत्पत्तिस्तद्गुणस्य तत्रोत्पत्त्या सह विरोधात् । तर्हि कथं तद्वतां तत्र सत्त्वमिति चेन्न, पर्याप्तनरकगत्या सहापर्याप्तया इव तस्य विरोधाभावात् । किमित्यपर्याप्तया विरोधश्चेत्स्वभावोऽयं, न हि स्वभावाः परपर्यनुयोगार्हाः । तर्ह्यन्यास्वपि गतिष्वपर्याप्तकालेऽस्य सत्त्वं मा भूत्तेन तस्य विरोधादिति चेन्न, नारकापर्याप्तकालेनेव शेषापर्याप्तपर्यायैः सह विरोधासिद्धेः । सम्यग्मिथ्यात्वगुणस्य पुनः सर्वदा सर्वत्रापर्याप्ताद्धाभिर्विरोधस्तत्र तस्य सत्त्वप्रतिपादकार्षाभावात् । किमित्यागमे तत्र तस्य सत्त्वं नोक्तमिति चेन्न, आगमस्यातर्कगोचरत्वात् । कथं पुनस्तयोस्तत्र सत्त्वमिति चेन्न, परिणामप्रत्ययेन तदुत्पत्तिसिद्धेः । तर्हि सम्यग्दृष्टयोऽपि तथैव सन्तीति चेन्न, इष्टत्वात् । सासादनस्येव सम्यग्दृष्टेरपि तत्रोत्पत्तिर्मा भूदिति चेन्न, प्रथमपृथिव्युत्पत्तिं प्रति निषेधाभावात् । प्रथमपृथिव्यामिव द्वितीयादिषु पृथिवीषु सम्यग्दृष्टयः किन्नोत्पद्यन्त इति चेन्न, सम्यक्त्वस्य तत्रतन्यापर्याप्ताद्धया सह विरोधात् । नोपरिमगुणानां तत्र सम्भवस्तेषां संयमासंयमसंयमपर्यायेण सहात्र विरोधात् । तिर्यग्गतौ गुणस्थानान्वेषणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खा पंचसु ट्ठाणेसु अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा त्ति ॥ २६ ॥

तिर्यग्ग्रहणं शेषगतिनिराकरणार्थम् । पञ्चसु गुणस्थानेषु सन्तीति वचनं षडादिसंख्याप्रतिषेधफलम् । मिथ्यादृष्ट्यादिगुणानां नामनिर्देशः सामान्यवचनतः समुत्पद्यमानसंशयनिरोधार्थः । बद्धायुरसंयतसम्यग्दृष्टिसासादनानामिव न सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंयतासंयतानां च तत्रापर्याप्तकाले सम्भवः समस्ति, तत्र तेन तयोर्विरोधात् । अथ स्यात्तिर्यञ्चः पञ्चविधाः, तिर्यञ्चः पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चः पञ्चेन्द्रियपर्याप्त-तिर्यञ्चः पञ्चेन्द्रियपर्याप्ततिरश्च्यः पञ्चेन्द्रियापर्याप्ततिर्यञ्च इति । तत्र न ज्ञायते केमानि पञ्च गुणस्थानानि सन्तीति ? उच्यते, न तावद-पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यक्षु पञ्च गुणाः सन्ति, लब्ध्यपर्याप्तेषु मिथ्यादृष्टिव्यतिरिक्तशेषगुणासम्भवात् । तत्कुतोऽवगम्यत इति चेत् 'पंचिंदिय-तिरिक्ख-अपज्जत्त-मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा इदि', तत्रैकस्यैव मिथ्यादृष्टिगुणस्य संख्यायाः प्रतिपादकार्षात् । शेषेषु पञ्चापि गुणस्थानानि सन्ति, अन्यथा तत्र पञ्चानां गुणस्थानानां संख्यादिप्रतिपादकद्रव्याद्यार्षस्याप्रामाण्यप्रसङ्गात् । अत्र पञ्चविधास्तिर्यञ्चः किन्न निरूपिता इति चेन्न, 'आकृष्टाशेषविशेषविषयं सामान्यम्' इति द्रव्यार्थिकनयावलम्बनात् । तिरश्चीष्वपर्याप्ताद्धायां मिथ्यादृष्टि-सासादना एव सन्ति, न शेषास्तत्र तन्निरूपकार्षाभावात् । भवतु नाम सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंयतासंयतानां तत्रासत्त्वं पर्याप्ताद्धायामेवेति नियमोपलम्भात् । कथं पुनरसंयतसम्यग्दृष्टीनामसत्त्वमिति न, तत्रासंयतसम्यग्दृष्टीनामुत्पत्तेरभावात् । तत्कुतोऽवगम्यत इति चेत्— छसु हेट्ठिमासु पुढवीसु जोइस-वण-भवण-सव्व-इत्थीसु । णेदेसु समुप्पज्जइ सम्माइट्ठी दु जो जीवो ॥ १३३ ॥ इत्यार्षात् ।

मनुष्यगतौ गुणस्थानान्वेषणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

मणुस्सा चोद्दसगुणट्ठाणेसु अत्थि मिच्छाइट्ठी, सासणसम्माइट्ठी, सम्मामिच्छाइट्ठी, असंजदसम्माइट्ठी, संजदासंजदा, पमत्तसंजदा, अप्पमत्तसंजदा, अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु अत्थि उवसमा खवा, अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठसुद्धिसंजदेसु अत्थि उवसमा खवा, सुहुमसांपराइयपविट्ठसुद्धिसंजदेसु अत्थि उवसमा खवा, उवसंतकसायवीयरायछदुमत्था, खीणकसायवीयरायछदुमत्था, सजोगिकेवली, अजोगिकेवलि त्ति ॥ २७ ॥

एयस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं उत्तो त्ति णेदाणिं वुच्चदे जाणिद-जाणावणे फलाभावादो । पुव्वमवुत्तमुवसामण-खवण-विहिं एत्थ

संवद्धमुवसामग-क्खवग-सरूव-जाणावणट्ठं संखेवदो भणिस्सामो । तं जहा, तत्थ ताव उवसामणविहिं वत्तइस्सामो । अणंताणुबंधि-कोध-माण-माया-लोभ-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-मिच्छत्तमिदि एदाओ सत्तपयडीओ असंजदसम्माइट्ठि-प्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव एदेसु जो वा सो वा उवसामेदि । सरूवं छडिय अण्ण-पयडि-सरूवेणच्छणमणंताणुबंधीणमुवसमो । दंसणतियस्स उदयाभावो उवसमो तेसिमुवसंताणं पि ओकट्टुकट्टण-पर-पयडि-संकमाणमत्थित्तादो । अपुव्वकरणे ण एक्कं पि कम्ममुवसमदि । किंतु अपुव्वकरणो पडिसमयमणंतगुण-विसोहीए वड्ढंतो अंतोमुहुत्तेणंतोमुहुत्तेण एक्केक्कं ट्ठिदि-खंडयं घादेंतो संखेज्जसहस्साणि ट्ठिदि-खंडयाणि घादेदि, तत्तियमेत्ताणि ट्ठिदि-बंधोसरणाणि करेदि । एक्केक्क-ट्ठिदि-खंडय-कालब्भंतरे संखेज्ज-सहस्साणि अणुभाग-खंडयाणि घादेदि । पडिसमयमसंखेज्जगुणाए सेढीए पदेस-णिज्जरं करेदि । जे अप्पसत्थ-कम्मंसे ण बंधदि तेसिं पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणाए सेढीए अण्ण-पयडीसु बज्झमाणियासु संकामेदि । पुणो अपुव्वकरणं वोलेऊण अणियट्टि-गुणट्ठाणं पविसिऊणंतोमुहुत्तमणेणेव विहाणेणच्छिय बारस-कसाय णव-णोकसायाणमंतरं अंतोमुहुत्तेण करेदि । अंतरे कदे पढम-समयादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण असंखेज्ज-गुणाए सेढीए णउंसयवेदमुवसामेदि । उवसमो णाम किं ? उदयउदीरण-ओकट्टुकट्टण-परपयडिसंकम-ट्ठिदि-अणुभाग-कंडयघादेहि विणा अच्छणमुवसमो । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण णवुंसयवेदमुवसामिदविहाणेणित्थिवेदमुवसामेदि । तदो अंतोमहुत्तं गंतूण तेणेव विहिणा छण्णोकसाए पुरिसवेद-चिराण-संत कम्मेण सह जुगवं उवसामेदि । तत्तो उवरि समऊण-दो-आवलियाओ गंतूण पुरिसवेद-णवक-बंधमुवसामेदि । तत्तो अंतोमुहुत्तमुवरिं गंतूण पडिसमयमसंखेज्जाए गुणसेढीए अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणावरणसण्णिदे दोण्णि वि कोधे कोध-संजलण-चिराण-संतकम्मेण सह जुगवमुवसामेदि । तत्तो उवरि दो आवलियाओ समऊणाओ गंतूण कोध-संजलण-णवक-बंधमुवसामेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तेसिं चेव दुविहं माणमसंखेज्जाए गुणसेढीए माणसंजलण-चिराणसंत-कम्मेण सह जुगवं उवसामेदि । तदो समऊण-दो-आवलियाओ गंतूण माणसंजलणमुवसामेदि । तदो पडिसमयमसंखेज्जगुणाए सेढीए उवसामेंतो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुविहं मायं माया-संजलण-चिराण-संत-कम्मेण सह जुगवं उवसामेदि । तदो दो आवलियाओ समऊणाओ गंतूण माया-संजलणमुवसामेदि । तदो समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेढीए पदेसमुवसामेंतो अंतोमुहुत्तं गंतूण लोभ-संजलण-चिराण-संत-कम्मेण सह पच्चक्खाणापच्चक्खाणावरण-दुविहं लोभं लोभ-वेदगद्धाए विदिय-ति-भागे सुहुमकिट्टीओ करेंतो उवसामेदि । सुहुमकिट्टिं मोत्तूण अवसेसो बादरलोभो फद्दयं गदो सव्वो णवकबंधुच्छिट्ठावलिय-वज्जो अणियट्टि-चरिम-समए उवसंतो । णवुंसयवेदप्पहुडि जाव बादरलोभ-संजलणो त्ति ताव एदासिं पयडीणमणियट्टी उवसामगो होदि । तदो णंतर-समए सुहुमकिट्टि-सरूवं लोभं वेदंतो णट्ठ-अणियट्टि-सण्णो सुहुमसांपराइओ होदि । तदो सो अप्पणो चरिम-समए लोह-संजलणं सुहुमकिट्टि-सरूवं णिस्सेसमुवसामिय उवसंत-कसायवीदराग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छदुमत्थो होदि । एसा मोहणीयस्स उवसामण-विही । खवण-विहिं वत्तइस्सामो । खवणं णाम किं? अट्ठण्हं कम्माणं मूलुत्तर-भेय-भिण्ण-पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणं जीवादो जो णिस्सेस-विणासो तं खवणं णाम । अणंताणुबंधि-कोध-माण-माया-लोभ-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-सम्मत्तमिदि एदाओ सत्तपयडीओ असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदो वा पमत्तसंजदो वा अप्पमत्तसंजदो वा खवेदि । किमक्कमेण किं कमेण खवेदि? ण, पुव्वमणंताणुबंधि-चउक्कं तिण्णि वि करणाणि काऊण अणियट्टि-करण-चरिम-समए अक्कमेण खवेदि । पच्छा पुणो वि तिण्णि करणाणि काऊण अधापवत्त-अपुव्वकरणाणि दो वि वोलाविय अणियट्टिकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण मिच्छत्तं खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मामिच्छत्तं खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मत्तं खवेदि । तदो अधापवत्तकरणं कमेण काऊणंतोमुहुत्तेण अपुव्वकरणो होदि । सो ण एक्कं पि कम्मं क्खवेदि, किंतु समयं पडि असंखेज्ज-गुणसरूवेण पदेस-णिज्जरं करेदि । अंतोमुहुत्तेण एक्केक्कं ट्ठिदि-कंडयं घादेंतो अप्पणो कालब्भंतरे संखेज्ज-सहस्साणि ट्ठिदि-कंडयाणि घादेदि । तेत्तियाणि चेव ट्ठिदि-बंधोसरणाणि वि करेदि । तेहिंतो संखेज्ज-सहस्स-गुणे अणुभाग-कंडय-घादे करेदि, 'एकाणुभाग-कंडय-उक्कीरण-कालादो एकं ट्ठिदि-कंडय-उक्कीरण-कालो संखेज्ज-गुणो' त्ति सुत्तादो । एवं काऊण अणियट्टि-गुणट्ठाणं पविसिय तत्थ वि अणियट्टि-अद्धाए संखेज्जे भागे अपुव्वकरण-विहाणेण गमिय अणियट्टि-अद्धाए संखेज्जदि-भागे सेसे थीणगिद्धि-तियं णिरयगइ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि—णिरयगइ—तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणा त्ति एदाओ सोलस पयडीओ खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पच्चक्खाणापच्चक्खाणावरण-कोध-माण-माया-लोभे अक्कमेण खवेदि । एसो संत-कम्म-पाहुड-उवएसो । कसाय-पाहुड-उवएसो पुण अट्ठ-कसाएसु खीणेसु पच्छा अंतोमुहुत्तं गंतूण सोलस-कम्माणि खविज्जंति त्ति । एदे दो वि उवएसा सच्चमिदि के वि भण्णंति, तण्ण घडदे, विरुद्धसुत्तत्तादो । दो वि पमाणाइं ति वयणमवि ण घडदे, 'पमाणेण पमाणाविरोहिणा होदव्वं' इदि णायादो । णाणा-जीवाणं णाणाविह-सत्ति-संभवाविरोहादो, केसिं चि जीवाणं णट्ठेसु अट्ठसु कसाएसु पच्छा सोलस-कम्म-क्खवण-सत्ती समुप्पज्जदि त्ति तेण पच्छा सोलस-कम्म-क्खयो होदि, 'कारणकम्माणुसारी कज्ज-कमो' त्ति णायादो । केसिं चि जीवाणं पुव्वं सोलस-कम्म-क्खवण-सत्ती समुप्पज्जदि, पच्छा अट्ठ-कसाय-क्खवण-सत्ती उप्पज्जदि त्ति णट्ठेसु सोलस-कम्मेसु पच्छा अंतोमुहुत्ते अदिक्कंते अट्ठ कसाया णस्संति । तदो ण दोण्हं उवएसाणं विरोहो त्ति के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे । किं कारणं? जेण अणियट्टिणो णाम जे के वि एग-समए वट्टमाणा ते सव्वे वि अदीदाणागद-वट्टमाण-कालेसु समाण-परिणामा, तदो चेय ते समाण-गुणसेढि-णिज्जरा वि । अह भिण्ण-परिणामा वुच्चंति तो क्खहि ण ते अणियट्टिणो, भिण्ण-परिणामत्तादो अपुव्वकरणा इव । ण च कम्म-क्खंधाणं असंखेज्ज-गुणसेढीए खवण-हेदु-परिणामे उज्झिऊणण्णे परिणामा ट्ठिदि-अणुभागकंडय-घादस्स कारणभूदा अत्थि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेसिं णिरूवय-सुत्ताभावादो । 'कज्ज-णाणत्तादो कारण-णाणत्तमणुमाणिज्जदि' इदि एदमवि ण घडदे, एयादो मोग्गरादो बहु-कोडि-कवालोवलंभा । तत्थ वि होदु णाम मोग्गरो एओ, ण तस्स सत्तीणमेयत्तं, तदो एयक्खप्परुप्पत्ति-प्पसंगादो इदि चे तो क्खहि एत्थ वि भवदु णाम ट्ठिदिकंडयघाद-अणुभागकंडयघाद-ट्ठिदिबंधोसरण-गुणसंकम-गुणसेढी-ट्ठिदि-अणुभागबंध-परिणामाणं णाणत्तं तो वि एग-समय-संठिय-णाणा-जीवाणं सरिसा चेव, अण्णहा अणियट्टि-विसेसणाणुववत्तीदो । जइ एवं, तो सव्वेसिमणियट्टीणमेय-समयम्हि वट्टमाणाणं ट्ठिदि-अणुभागघादाणं सरिसत्तं पावेदि त्ति चे ण एस दोसो, इट्ठत्तादो । पढम-ट्ठिदि-अणुभाग-खंडयाणं सरिसत्त-णियमो णत्थि, तदो णेदं घडदि त्ति चे स दोसो ण दोसो, हद-सेस-ट्ठिदि-अणुभागाणं एव पमाण-णियम-दंसणादो । ण च थोव-ट्ठिदि-अणुभाग-विरोहि-परिणामो तदो अब्भहिय-ट्ठिदि-अणुभागाणमविरोहित्तमल्लियइ अण्णत्थ तह अदंसणादो । ण च अणिय-ट्टिम्हि पदेस-बंधो एय-समयम्हि वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरिसो तस्स जोग-कारणत्तादो । ण च तेसिं सव्वेसिं जोगस्स सरिसत्तणे णियमो अत्थि लोगपूरणम्हि ट्ठिय-केवलीणं व तहा पडिवायय-सुत्ताभावादो । तदो सरिस-परिणामादो सव्वेसिमणियट्टीणं समाण-समय-संट्ठियाणं ट्ठिदि-अणुभागघादत्त-बंधोसरण-गुणसेढिणिज्जरा-संकमाणं सरिसत्तणं सिद्धं । समाण-समय-संठिय-सव्वाणियट्टीणं ट्ठिदि-अणुभागखंडएसु सरिसं णिवदंतेसु घादिदावसेस-ट्ठिदि-अणुभागेसु सरिसत्तणेण चिट्ठमाणेसु अप्पणो पसत्थापसत्थत्तणं पयडीसु अच्छिदमाणेसु कथं पयडि-विणासस्स विवज्जासो ? तम्हा दोण्हं वयणाणं मज्झे एक्कमेव सुत्तं होदि । जदो 'जिणा ण अण्णहा-वाइणो' तदो ण तव्वयणाणं विप्पडिसेहो इदि चे सच्चमेयं, किंतु ण तव्वयणाणि एयाइं आइल्लुआइरिय-वयणाइं, तदो एयाणं विरोहस्सत्थि संभवो इदि । आइरिय-कहियाणं संतकम्मकसायपाहुडाणं कथं सुत्तत्तणमिदि चे ण, तित्थयर-कहियत्थाणं गणहरदेव-कय-गंथरयणाणं बारहंगाणं आइरिय-परंपराए णिरंतरमागयाणं जुग-सहावेण बुद्धीसु ओहट्टंतीसु भायणाभावेण पुणो ओहट्टिय आगयाणं पुणो सुट्ठु-बुद्धीणं खयं दट्ठूण तित्थ-वोच्छेदभएण वज्ज-भीरूहि गहिदत्थेहि आइरिएहि पोत्थएसु चडावियाणं असुत्तत्तण-विरोहादो । जदि एवं, तो एयाणं पि वयणाणं तदवयवत्तादो सुत्तत्तणं पावदि त्ति चे भवदु दोण्हं मज्झे एक्कस्स सुत्तत्तणं, ण दोण्हं पि परोप्पर-विरोहादो । उस्सुत्तं लिहंता आइरिया कथं वज्ज-भीरुणो ? इदि चे ण एस दोसो, दोण्हं मज्झे एक्कस्सेव संगहे कीरमाणे वज्ज-भीरुत्तं णिव्वुदित्ति । दोण्हं पि संगहं करेंताणमाइरियाणं वज्ज-भीरुत्ताविणासादो । दोण्हं वयणाणं मज्झे कं वयणं सच्चमिदि चे सुदकेवली केवली वा जाणदि, ण अण्णो, तहा णिण्णयाभावादो । वट्टमाण-कालाइरिएहि वज्ज-भीरूहि दोण्हं पि संगहो कायव्वो, अण्णहा वज्जभीरुत्त-विणासादो त्ति । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण चउसंजलण-णवणोकसायाणमंतरं करेदि । सोदयाणमंतोमुहुत्त-मेत्तिं पढम-ट्ठिदिं अणुदयाणं समऊणाव-लिय-मेत्तिं पढम-ट्ठिदिं करेदि । तदो अंतरकरणं काऊण पुणो अंतोमुहुत्ते गदे णवुंसय-वेदं खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणित्थिवेदं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण छण्णोकसाए पुरिसवेद-चिराण-संत-कम्मेण सह सवेद-दुचरिम-समए जुगवं खवेदि। तदो दो आवलिय-मेत्त-कालं गंतूण पुरिसवेदं खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण कोध-संजलणं खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण माण-संजलणं खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण माया-संजलणं खवेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम-सांपराइय-गुणट्ठाणं पडिवज्जदि। सो वि सुहुम-सांपराइओ अप्पणो चरिमसमए लोभ-संजलणं खवेदि। तदो से काले खीण-कसाओ होदूण अंतोमुहुत्तं गमिय अप्पणो अद्धाए दु-चरिम-समए णिद्दा-पयलाओ दो वि अक्कमेण खवेदि। तदो से काले पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-पंच-अंतराइयमिदि चोद्दसपयडीओ अप्पणो चरिमसमए खवेदि। एदेसु सट्ठि-कम्मेसु खीणेसु सजोगिजिणो होदि। सजोगिकेवली ण किंचि कम्मं खवेदि। तदो कमेण विहरिय जोग-णिरोहं-काऊण अजोगिकेवली होदि। सो वि अप्पणो दु-चरिम-समए अणुदयवेदणीय-देवगदि-पंचसरीर-पंचसरीरसंघाद-पंचसरीरबंधण-छस्संठाण-तिण्णिअंगोवंग-छस्संघडण-पंचवण्ण-दोगंध-पंचरस-अट्ठफास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-दोविहायगदी-अपज्जत्त-पत्तेय-थिर-अथिर-सुभ-असुभ-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिण-णीचगोदाणि-त्ति एदाओ बाहत्तरि पयडीओ खवेदि। तदो से काले सोदयवेदणीय-मणुसाउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसगित्ति-तित्थयर-उच्चगोदाणि त्ति एदाओ तेरह पयडीओ खवेदि, अहवा मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए सह अजोगि-दुचरिम-समए तेहत्तरि पयडीओ बारह चरिम समए। उप्पायाणुच्छेदादो तदो उवरिम-समए णीरयो णिम्मलो सिद्धो होदि। तत्थ जे कम्म-क्खवणम्हि वावदा ते जीवा खवगा उच्चंति। जे पुण तेसिं चेव उवसामणम्हि वावदा ते उवसामगा। गदि-मग्गणावयव-देवगदिम्हि गुण-मग्गणट्ठं सुत्तमाह—

देवा चदुसु ट्ठाणेसु अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ २८ ॥

देवाश्चतुर्षु स्थानेषु सन्ति। कानि तानीति चेन्मिथ्यादृष्टिः सासादनसम्यग्दृष्टिः सम्यग्मिथ्यादृष्टिः असंयतसम्यग्दृष्टिश्चेति। प्रागुक्तार्थत्वान्नैतेषां गुणस्थानानामिह स्वरूपमुच्यते। अथ स्याद्यासु याभिर्वा जीवा मृग्यन्ते ता मार्गणा इति प्राग्मार्गणाशब्दस्य निरुक्तिरुक्ता, आर्षे चेयत्सु गुणस्थानेषु नारकाः सन्ति, तिर्यञ्चः सन्ति, मनुष्याः सन्ति, देवाः सन्तीति गुणस्थानेषु मार्गणा अन्विष्यन्ते, अतस्तद्व्याख्यानमार्षविरुद्धमिति नैष दोषः, 'णिरय-गईए णेरईएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया' इत्यादिभगवद्-भूतबलिभट्टारकमुखकमलविनिर्गतगुणसंख्यादिप्रतिपादकसूत्राश्रयेण तन्निरुक्तेरवतारात्। कथमनयोर्भूतबलिपुष्पदन्तवाक्ययोर्न विरोध इति चेन्न विरोधः। कथमिदं तावत् ? निरूप्यते। न तावदसिद्धेनासिद्धे वाऽसिद्धस्यान्वेषणं सम्भवति विरोधात्। नापि सिद्धे सिद्धस्यान्वे-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

षणं तत्र तस्यान्वेषणे फलाभावात् । ततः सामान्याकारेण सिद्धानां जीवानां गुणसत्त्वद्रव्यसंख्यादिविशेषरूपेणासिद्धानां त्रिकोटिपरिणामात्मकानादिबन्धनबद्धज्ञानदर्शनलक्षणात्मास्तित्वान्यथानुपपत्तितः सामान्याकारेणावगतानां गत्यादीनां मार्गणानां च विशेषतोऽनवगतानामिच्छात आधाराधेयभावो भवतीति नोभयवाक्ययोर्विरोधः । अतीतसूत्रोक्तार्थविशेषप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रचतुष्टयमाह—

तिरिक्खा सुद्धा एइंदियप्पहुडि जाव असण्णि-पंचिंदिया त्ति ॥ २९ ॥

एकमिन्द्रियं येषां त एकेन्द्रियाः । प्रभृतिरादिः, एकेन्द्रियान् प्रभृति कृत्वा, अध्याहृतेन कृत्वेत्यनेनाभिसम्बन्धादस्य नपुंसकता । असंज्ञिनश्च ते पञ्चेन्द्रियाश्च असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः । यत्परिमाणमस्येति यावत् । यावदसंज्ञिपञ्चेन्द्रियाः शुद्धास्तिर्यञ्चः । किमित्येतदुच्यत इति चेन्न, अन्यथामुष्यां गतावेकेन्द्रियादयोऽसंज्ञिपञ्चेन्द्रियपर्यन्ता वर्तन्त इत्यवगमोपायाभावतस्तद्वजिगमयिषायायेतत्प्रतिपादनात् । असाधारणतिरश्चः प्रतिपाद्य साधारणतिरश्चां प्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

तिरिक्खा मिस्सा सण्णि-मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदात्ति ॥ ३० ॥

संज्ञिमिथ्यादृष्टिप्रभृति यावत्संयतासंयतास्तावत्तिर्यञ्चो मिश्राः । न तिरश्चामन्यैः सह मिश्रणमवगम्यते, कथं ? न तावत्संयोगोऽस्यार्थस्तस्योपरितनगुणेष्वपि सत्त्वात् । नैकत्वापत्तिरर्थः, द्वयोरेकस्याभावतो द्वित्वादिनिबन्धनमिश्रतानुपपत्तेरिति । न प्रथमविकल्पोऽनभ्युपगमात् । न द्वितीयविकल्पोक्तदोषोऽपि गुणकृतसादृश्यमाश्रित्य तिरश्चां मनुष्यगतिजीवैर्मिश्रभावाभ्युपगमात् । तद्यथा, मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टिगुणैर्गतित्रयगतजीवसाम्यात्तैस्ते मिश्राः, संयमासंयमगुणेन मनुष्यैः सह साम्यात्तिर्यञ्चो मनुष्यैः सहैकत्वमापन्ना इति ततो न दोषः । स्यान्मतं, गतिनिरूपणायामियन्तो गुणा अस्यां गतौ सन्ति न सन्तीति निरूपणयैवमवसीयतेऽस्या गत्या अनया गत्या सह गुणद्वारेण योगोऽस्ति नास्तीति, ततः पुनरिदं निरूपणमनर्थकमिति न, तस्य दुर्मेधसामपि स्पष्टीकरणार्थत्वात् । 'प्रतिपाद्यस्य बुभुत्सितार्थविषयनिर्णयोत्पादनं वक्तृवचसः फलम्' इति न्यायात् । अथवा न तिरश्चां मिथ्यात्वादिर्मनुष्यादिमिथ्यात्वादिभिः समानः, तिर्यङ्मनुष्यादिव्यतिरिक्तमिथ्यात्वादेरभावात् । नापि तिर्यगादीनामेकत्वं चतुर्गतेरभावप्रसङ्गात् । न चाभावो मनुष्येभ्यो व्यतिरिक्ततिरश्चामुपलम्भादिति पर्यायनयैकान्तावष्टम्भबलेन केचिद् विप्रतिपन्नाः । न मिथ्यात्वादयः पर्याया जीवद्रव्याद्भिन्नाः कोषादसेरिव तेषां तस्मात्पृथगनुपलम्भादस्येमे इति सम्बन्धानुपपत्तेश्च । ततस्तस्मात्तेषामभेदः । तथा च न गतिभेदो नापि गुणभेद इति द्रव्यनयैकान्तावष्टम्भबलेन केचिद्विप्रतिपन्नास्तदभिप्रायकदर्थनार्थं वास्य सूत्रस्यावतारः । नाभिप्रायद्वयं घटते तथाऽप्रतिभासनात् । न च प्रमाणाननुसार्यभिप्रायः साधुरव्यवस्थापत्तेः । न च जीवाद्वैते द्वैते वा प्रमाणमस्ति कृत्स्नस्यैकत्वाद्देशादेरिव सत्ता-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तोऽप्यन्यतो भेदात् । न प्रमेयस्यापि सत्त्वमपेक्षितप्रमाणव्यापारस्य तस्य प्रमाणाभावे सत्त्वायोगात् । प्रमाणं वस्तुनो न कारकमतो न तद्विनाशाद्वस्तुविनाश इति चेन्न, प्रमाणाभावे वचनाभावतः सकलव्यवहारोच्छित्तिप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, वस्तुविषयविधिप्रतिषेधयोरप्यभावासञ्जनात् । अस्तु चेन्न, तथानुपलम्भात् । ततो विधिप्रतिषेधात्मकं वस्त्वित्यङ्गीकर्तव्यम्, अन्यथोक्तदोषानुषङ्गात् । ततः सिद्धं गुणद्वारेण जीवानां सादृश्यं विशेषरूपेणासादृश्यमिति । गुणस्थानमार्गणासु जीवसमासान्वेषणार्थं वा । इदानीं मनुष्याणां गुणद्वारेण सादृश्यासादृश्यप्रतिपादनार्थमाह—

मणुस्सा मिस्सा मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ॥ ३१ ॥

आदितश्चतुर्षु गुणस्थानेषु ये मनुष्यास्ते मिथ्यात्वादिभिश्चतुर्भिर्गुणैस्त्रिगतिजीवैः समानाः संयमासंयमेन तिर्यग्भिः ।

तेण परं सुद्धा मणुस्सा ॥ ३२ ॥

शेषगुणानां मनुष्यगतिव्यतिरिक्तगतिष्वसम्भवाच्छेषगुणा मनुष्येष्वेव सम्भवन्ति, उपरितनगुणैर्मनुष्याः न कैश्चित्समाना इति यावत् । देवनरकगत्योः सादृश्यमसादृश्यं वा किमिति नोक्तमिति चेन्न, आभ्यामेव प्ररूपणाभ्यां मन्दमेधसामपि तदवगमोत्पत्तेरिति ।

इन्द्रियमार्गणायां गुणस्थानान्वेषणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

इंदियाणुवादेण अत्थि एइंदिया बीइंदिया तीइंदिया चदुरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया चेदि ॥ ३३ ॥

इन्दनादिन्द्र आत्मा, तस्येन्द्रस्य लिङ्गमिन्द्रियम् । इन्द्रेण सृष्टमिति वा इन्द्रियम् । तद् द्विविधं, द्रव्येन्द्रियं भावेन्द्रियं चेति । निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्, निर्वर्त्यत इति निर्वृत्तिः, कर्मणा या निर्वर्त्यते निष्पाद्यते सा निर्वृत्तिरित्युपदिश्यते । सा निर्वृत्तिर्द्विविधा बाह्याभ्यन्तरभेदात् । तत्र लोकप्रमितानां विशुद्धानामात्मप्रदेशानां प्रतिनियतचक्षुरादीन्द्रियसंस्थानेनावस्थितानामुत्सेधाङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमितानां वा वृत्तिरभ्यन्तरा निर्वृत्तिः । आह, चक्षुरादीनामिन्द्रियाणां क्षयोपशमो हि नाम स्पर्शनेन्द्रियस्येव किमु सर्वात्मप्रदेशेषूपजायते, उत प्रतिनियतेष्विति ? किं चातः, न सर्वात्मप्रदेशेषु स्वसर्वावयवैः रूपाद्युपलब्धिप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, तथानुपलम्भात् । न प्रतिनियतात्मावयवेषु, वृत्तेः 'सिया ट्ठिया, सिया अट्ठिया, सिया ट्ठियाट्ठिया' इति वेदनासूत्रतोऽवगतभ्रमणेषु जीवप्रदेशेषु प्रचलत्सु सर्वजीवानामान्ध्यप्रसङ्गादिति नैष दोषः, सर्वजीवावयवेषु क्षयोपशमस्योत्पत्त्यभ्युपगमात् । न सर्वावयवैः रूपाद्युपलब्धिरपि तत्सहकारिकारणबाह्यनिर्वृत्तेरशेषजीवावयवव्यापित्वाभावात् । कर्मस्कन्धैः सह सर्वजीवावयवेषु भ्रमत्सु तत्समवेतशरीरस्यापि तद्भ्रमो भवेदिति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चेन्न, तद्भ्रमणावस्थायां तत्समवायाभावात्। शरीरेण समवायाभावे मरणमाढौकत इति चेन्न, आयुषः क्षयस्य मरणहेतुत्वात्। पुनः कथं संघटत इति चेन्नानाभेदोपसंहृतजीवप्रदेशानां पुनः संघटनोपलम्भात्, द्वयोर्मूर्तयोः संघटने विरोधाभावाच्च, तत्संघटनहेतुकर्मोदयस्य कार्यवैचित्र्यादवगतवैचित्र्यस्य सत्त्वाच्च। द्रव्येन्द्रियप्रमितजीवप्रदेशानां न भ्रमणमिति किन्नेष्यत इति चेन्न, तद्भ्रमणमन्तरेणाशुभ्रमज्जीवानां भ्रमद्भूम्यादिदर्शनानुपपत्तेरिति। तेष्वात्मप्रदेशेषु इन्द्रियव्यपदेशभाक्षु यः प्रतिनियतसंस्थानो नामकर्मोदयापादितावस्थाविशेषः पुद्गलप्रचयः स बाह्या निर्वृत्तिः। मसूरिकाकारा अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमिता चक्षुरिन्द्रियस्य बाह्यनिर्वृत्तिः। यवनालिकाकारा अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमिता श्रोत्रस्य बाह्या निर्वृत्तिः। अतिमुक्तकपुष्पसंस्थाना अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमिता घ्राणनिर्वृत्तिः। अर्धचन्द्राकारा क्षुरप्राकारा वाङ्गुलस्य संख्येयभागप्रमिता रसननिर्वृत्तिः। स्पर्शनेन्द्रियनिर्वृत्तिरनियतसंस्थाना। सा जघन्येन अङ्गुलस्यासंख्येयभागप्रमिता सूक्ष्मशरीरेषु, उत्कर्षेण संख्येयघनाङ्गुलप्रमिता महामत्स्यादित्रसजीवेषु। सर्वतः स्तोकाश्चक्षुषः, प्रदेशाः, श्रोत्रेन्द्रियप्रदेशाः संख्येयगुणाः, घ्राणेन्द्रियप्रदेशा विशेषाधिकाः, जिह्वायामसंख्येयगुणाः, स्पर्शने संख्येयगुणाः। उक्तं च—जव-णालिया मसूरी चंदद्धइमुत्तपुल्ल-तुल्लाइं। इंदिय-संठाणाइं पस्सं पुण णेय-संठाणं ॥ १३४ ॥ उपक्रियतेऽनेनेत्युपकरणम्, येन निर्वृत्तेरुपकारः क्रियते तदुपकरणम्। तद् द्विविधं बाह्याभ्यन्तरभेदात्। तत्राभ्यन्तरं कृष्णशुक्लमण्डलम्। बाह्यमक्षिपत्रपक्ष्मद्वयादि। एवं शेषेन्द्रियेषु ज्ञेयम्। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्। इन्द्रियनिर्वृत्तिहेतुः क्षयोपशमविशेषो लब्धिः। यत्सन्निधानादात्मा द्रव्येन्द्रियनिर्वृत्तिं प्रति व्याप्रियते स ज्ञानावरणक्षयोपशमविशेषो लब्धिरिति विज्ञायते। तदुक्तनिमित्तं प्रतीत्योत्पद्यमान आत्मनः परिणाम उपयोग इत्युपदिश्यते। तदेतदुभयं भावेन्द्रियम्। उपयोगस्य तत्फलत्वादिन्द्रियव्यपदेशानुपपत्तिरिति चेन्न, कारणधर्मस्य कार्यानुवृत्तेः कार्यं हि लोके कारणमनुवर्तमानं दृष्टं, यथा घटाकारपरिणतं विज्ञानं घट इति। तथेन्द्रियनिर्वृत्त उपयोगोऽपीन्द्रियमित्युपदिश्यते। इन्द्रस्य लिङ्गमिन्द्रेण सृष्टमिति वा य इन्द्रियशब्दार्थः स क्षयोपशमे प्राधान्येन विद्यत इति तस्येन्द्रियव्यपदेशो न्याय्य इति। तेनेन्द्रियेणानुवाद इन्द्रियानुवादः, तेन सन्त्येकेन्द्रियाः। एकमिन्द्रियं येषां त एकेन्द्रियाः। किं तदेकमिन्द्रियम्? स्पर्शनम्। वीर्यान्तरायस्पर्शनेन्द्रियावरणक्षयोपशमाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भात्स्पृशत्यनेनेति स्पर्शनं करणकारके। इन्द्रियस्य स्वातन्त्र्यविवक्षायां कर्तृत्वं च भवति। यथा पूर्वोक्तहेतुसन्निधाने सति स्पृशतीति स्पर्शनम्। कोऽस्य विषयः? स्पर्शः। कोऽस्यार्थः? उच्यते, यदा वस्तुप्राधान्येन विवक्षितं तदेन्द्रियेण वस्त्वेव विषयीकृतं भवेद् वस्तुव्यतिरिक्तस्पर्शाद्यभावात्। एतस्यां विवक्षायां स्पृश्यत इति स्पर्शो वस्तु। यदा तु पर्यायः प्राधान्येन विवक्षितस्तदा तस्य ततो भेदोपपत्तेरौदासीन्यावस्थितभावकथनाद्भावसाधनत्वमप्यविरुद्धम्, यथा स्पर्शनं स्पर्श इति। यद्येवम्, सूक्ष्मेषु परमाण्वादिषु स्पर्शव्यवहारो न प्राप्नोति तत्र तदभावात्। नैष दोषः, सूक्ष्मेष्वपि परमाण्वादिष्वस्ति स्पर्शः स्थूलेषु तत्कार्येषु तद्दर्शनान्यथानुपपत्तेः। नह्यत्यन्तासतां प्रादुर्भावोऽस्त्यतिप्रसङ्गात्। किन्तु

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रियग्रहणयोग्या न भवन्ति । ग्रहणायोग्यानां कथं स व्यपदेश इति चेन्न, तस्य सर्वदायोग्यत्वाभावात् । परमाणुगतः सर्वदा न ग्रहणयोग्यश्चेन्न, तस्यैव स्थूलकार्याकारेण परिणतौ योग्यत्वोपलम्भात् । के त एकेन्द्रियाः ? पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः । एतेषां स्पर्शनमेकमेवेन्द्रियमस्ति, न शेषाणीति कथमवगम्यत इति चेन्न, स्पर्शनेन्द्रियवन्त एत इति प्रतिपादकार्षोपलम्भात् । क्व तत्सूत्रमिति चेत्कथ्यते— जाणदि पस्सदि भुंजदि सेवदि पस्सिंदिएण एक्केण । कुणदि य तस्सामित्तं थावरु एइंदिओ तेण ॥ १३५ ॥ 'वनस्पत्यन्तानामेकम्' इति तत्त्वार्थसूत्राद्वा । अस्यार्थः, अयमन्तशब्दोऽनेकार्थवाचकः, क्वचिदवयवे, यथा वस्त्रान्तो वसनान्त इति । क्वचित्सामीप्ये, यथा उदकान्तं गत, उदकसमीपं गत इति । क्वचिदवसाने वर्तते, यथा संसारान्तं गतः, संसारावसानं गत इति । तत्रेह विवक्षातोऽवसानार्थो वेदितव्यः । वनस्पत्यन्तानां वनस्पत्यवसानानामिति । सामीप्यार्थः किन्न गृह्यते ? वनस्पत्यन्तानां वनस्पतिसमीपानामित्यर्थे गृह्यमाणे वायुकायानां त्रसकायानां च सम्प्रत्ययः प्रसज्येत 'पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसाः' इत्यत्र तयोरेव सामीप्यदर्शनात् । अयमन्तशब्दः सम्बन्धिशब्दत्वात् कांश्चित्पूर्वानपेक्ष्य वर्तते । ततोऽर्थादादिसम्प्रत्ययो भवति तस्मादयमर्थोऽवगम्यते पृथिव्यादीनां वनस्पत्यन्तानामेकमिन्द्रियमिति । एवमपि पृथिव्यादीनां वनस्पत्यन्तानां स्पर्शनादिष्वन्यतममेकमिन्द्रियं प्राप्नोत्यविशेषादिति चेन्नैष दोषः, अयमेकशब्दः प्राथम्यवचनः 'स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि' इत्यत्रतनप्राथम्यमाश्रित इति । वीर्यान्तरायस्पर्शनेन्द्रियावरणक्षयोपशमे सति शेषेन्द्रियसर्वघातिस्पर्धकोदये चैकेन्द्रियजातिनामकर्मोदयवशवर्तितायां च सत्यां स्पर्शनमेकमिन्द्रियमाविर्भवति । द्वे इन्द्रिये येषां ते द्वीन्द्रियाः । के ते ? शंखशुक्तिकृम्यादयः । उक्तं च— कुक्खिकिमि-सिप्पि-संखा गंडोलारिट्ठ-अक्ख-खुल्ला य । तह य वराडय जीवा णेया बीइंदिया एदे ॥ १३६ ॥ के ते द्वे इन्द्रिय इति चेत्स्पर्शनरसने । स्पर्शनमुक्तलक्षणम् । भेदविवक्षायां वीर्यान्तरायरसनेन्द्रियावरणक्षयोपशमाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भाद्रसयत्यनेनेति रसनं करणकारके । इन्द्रियाणां स्वातन्त्र्यविवक्षायां पूर्वोक्तहेतुसन्निधाने सति रसयतीति रसनं कर्तृकारके भवति । कोऽस्य विषयः ? रसः । कोऽस्यार्थः ? यदा वस्तु प्राधान्येन विवक्षितं तदा वस्तुव्यतिरिक्तपर्यायाभावाद्वस्त्वेव रसः । एतस्यां विवक्षायां कर्मसाधनत्वं रसस्य, यथा रस्यत इति रसः । यदा तु पर्यायः प्राधान्येन विवक्षितस्तदा भेदोपपत्तेरौदासीन्यावस्थितभावकथनाद्भावसाधनत्वं रसस्य, रसनं रस इति । न सूक्ष्मेषु परमाण्वादिषु रसाभाव उक्तोत्तरत्वात् । कुत एतयोरुत्पत्तिरिति चेद्वीर्यान्तरायस्पर्शनरसनेन्द्रियावरणक्षयोपशमे सति शेषेन्द्रियसर्वघातिस्पर्धकोदये चाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भे द्वीन्द्रियजातिकर्मोदयवशवर्तितायां च सत्यां स्पर्शनरसनेन्द्रिय आविर्भवतः । त्रीणीन्द्रियाणि येषां ते त्रीन्द्रियाः । के ते ? कुन्थुमत्कुणादयः । उक्तं च— कुंथु-पिपीलिक-मक्कुण-विच्छिअ-जू-इंदगोव-गोम्ही य । उत्तिंगणट्टियादी णेया तीइंदिया जीवा ॥ १३७ ॥ कानि तानि त्रीणीन्द्रियाणीति चेत्स्पर्शनरसनघ्राणानि । स्पर्शनरसने उक्तलक्षणे । किं घ्राणमिति ? करणसाधनं घ्राणम् । कुतः ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पारतन्त्र्यादिन्द्रियाणाम् ततो वीर्यान्तरायघ्राणेन्द्रियावरणक्षयोपशमाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भाज्जिघ्रत्यनेनात्मेति घ्राणम् । कर्तृसाधनं च भवति स्वातन्त्र्यविवक्षायामिन्द्रियाणाम् । दृश्यते चेन्द्रियाणां लोके स्वातन्त्र्यविवक्षा, यथेदं मेऽक्षि सुष्ठु पश्यति, अयं मे कर्णः सुष्ठु शृणोतीति । ततः पूर्वोक्तहेतुसन्निधाने सति जिघ्रतीति घ्राणम् । कोऽस्य विषयः ? गन्धः । अयं गन्धशब्दः कर्मसाधनः । कुतः ? यदा द्रव्यं प्राधान्येन विवक्षितं तदा न ततो व्यतिरिक्ताः स्पर्शादयः केचन सन्तीति । एतस्यां विवक्षायां कर्मसाधनत्वं स्पर्शादीनामवसीयते, गन्ध्यत इति गन्धो वस्तु । यदा तु पर्यायः प्राधान्येन विवक्षितस्तदा भेदोपपत्तेरौदासीन्यावस्थितभावकथनाद्भावसाधनत्वं स्पर्शादीनां युज्यते, गन्धनं गन्ध इति । कुत एतेषामुत्पत्तिरिति चेद्वीर्यान्तरायस्पर्शनरसनघ्राणेन्द्रियावरणक्षयोपशमे सति शेषेन्द्रियसर्वघातिस्पर्धकोदये चाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भे त्रीन्द्रियजातिकर्मोदयवशवर्तितायां च सत्यां स्पर्शनरसनघ्राणेन्द्रियाण्याविर्भवन्ति । चत्वारीन्द्रियाणि येषां ते चतुरिन्द्रियाः । के ते ? मशकमक्षिकादयः । उक्तं च—मक्कडय-भमर-महुवर-मसय-पयंगा य सलह-गोमच्छी । मच्छी सदंस-कीडा णेया चउरिंदिया जीवा ॥ १३८ ॥ कानि तानि चत्वारीन्द्रियाणीति चेत्स्पर्शनरसनघ्राणचक्षूंषि । स्पर्शनरसनघ्राणान्युक्तलक्षणानि । चक्षुषः स्वरूपमुच्यते । तद्यथा, करणसाधनं चक्षुः । कुतः ? चक्षुषः पारतन्त्र्यात् । इन्द्रियाणां हि लोके पारतन्त्र्यविवक्षा दृश्यत आत्मनः स्वातन्त्र्यविवक्षायाम् । यथानेनाक्ष्णा सुष्ठु पश्यामि, अनेन कर्णेन सुष्ठु शृणोमीति । ततो वीर्यान्तरायचक्षुरिन्द्रियावरणक्षयोपशमाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भाचक्षेरनेकार्थत्वाद्दर्शनार्थविवक्षायां चष्टेऽर्थान् पश्यत्यनेनेति चक्षुः । चक्षुषः कर्तृसाधनं च भवति स्वातन्त्र्यविवक्षायाम् । इन्द्रियाणां हि लोके स्वातन्त्र्यविवक्षा च दृश्यते, यथेदं मेऽक्षि सुष्ठु पश्यति, अयं मे कर्णः सुष्ठु शृणोतीति । ततः पूर्वोक्तहेतुसन्निधाने सति चष्ट इति चक्षुः । कोऽस्य विषयश्चेद्वर्णः । अयं वर्णशब्दः कर्मसाधनः । यथा यदा द्रव्यं प्राधान्येन विवक्षितं तदेन्द्रियेण द्रव्यमेव सन्निकृष्यते, न ततो व्यतिरिक्ताः स्पर्शादयः सन्तीत्येतस्यां विवक्षायां कर्मसाधनत्वं स्पर्शादीनामवसीयते, वर्ण्यत इति वर्णः । यदा तु पर्यायः प्राधान्येन विवक्षितस्तदा भेदोपपत्तेरौदासीन्यावस्थितभावकथनाद्भावसाधनत्वं स्पर्शादीनां युज्यते वर्णनं वर्णः । कुत एतेषामुत्पत्तिश्चेद्वीर्यान्तरायस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुरावरणक्षयोपशमे सति शेषेन्द्रियसर्वघातिस्पर्धकोदये चाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भे चतुरिन्द्रियजातिकर्मोदयवशवर्तितायां च सत्यां चतुर्णामिन्द्रियाणामाविर्भावो भवेत् । पञ्च इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रियाः । के ते ? जरायुजाण्डजादयः । उक्तं च—सरसेदिम-सम्मुच्छिम उब्भेदिम-ओववादिया चेव । रस-पोदंड-जरायुज णेया पंचिंदिया जीवा ॥ १३९ ॥ कानि तानि पञ्चेन्द्रियाणीति चेत्स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि । इमानि स्पर्शनादीनि करणसाधनानि । कुतः ? पारतन्त्र्यात् । इन्द्रियाणां हि लोके दृश्यते च पारतन्त्र्यविवक्षा आत्मनः स्वातन्त्र्यविवक्षायाम्, अनेनाक्ष्णा सुष्ठु पश्यामि, अनेन कर्णेन सुष्ठु शृणोमीति । ततो वीर्यान्तरायश्रोत्रेन्द्रियावरणक्षयोपशमाङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भाच्छृणोत्यनेनेति श्रोत्रम् । कर्तृसाधनं च भवति स्वातन्त्र्यविवक्षायाम् । दृश्यते चेन्द्रियाणां लोके

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स्वातन्त्र्यविवक्षा, इदं मेऽक्षि सुष्ठु पश्यति, अयं मे कर्णः सुष्ठु शृणोतीति। ततः पूर्वोक्तहेतुसन्निधाने सति शृणोतीति श्रोत्रम्। कोऽस्य विषयः ? शब्दः। यदा द्रव्यं प्राधान्येन विवक्षितं तदेन्द्रियेण द्रव्यमेव सन्निकृष्यते, न ततो व्यतिरिक्ताः स्पर्शादयः केचन सन्तीति, एतस्यां विवक्षायां कर्मसाधनत्वं शब्दस्य युज्यत इति, शब्द्यत इति शब्दः। यदा तु पर्यायः प्राधान्येन विवक्षितस्तदा भेदोपपत्तेरौदासीन्यावस्थितभावकथनाद्भावसाधनः शब्दः, शब्दनं शब्द इति। कुत एतेषामाविर्भाव इति चेद्वीर्यान्तरायस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रेन्द्रियावरणक्षयोपशमे सत्यङ्गोपाङ्गनामलाभावष्टम्भे पञ्चेन्द्रियजातिकर्मोदयवशवर्तितायां च सत्यां पञ्चानामिन्द्रियाणामाविर्भावो भवति। नेदं व्याख्यानमत्र प्रधानम्, 'एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मोदयादेकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रिया भवन्ति' इति भावसूत्रेण सह विरोधात्। तत एकेन्द्रियजातिनामकर्मोदयादेकेन्द्रियः, द्वीन्द्रियजातिनामकर्मोदयाद् द्वीन्द्रियः, त्रीन्द्रियजातिनामकर्मोदयात्त्रीन्द्रियः, चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मोदयाच्चतुरिन्द्रियः, पञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मोदयात्पञ्चेन्द्रियः, एषोऽर्थोऽत्र प्रधानं निरवद्यत्वात्। न सन्तीन्द्रियाणि येषां तेऽनिन्द्रियाः। के ते ? अशरीराः सिद्धाः। उक्तं च— ण वि इंदिय-करण-जुदा अवग्गहादीहि गाहया अत्थे। णेव य इंदिय-सोक्खा अणिंदियाणंत-णाण-सुहा ॥ १४० ॥ तेषु सिद्धेषु भावेन्द्रियस्योपयोगस्य सत्त्वात्सेन्द्रियास्त इति चेन्न, क्षयोपशमजनितस्योपयोगस्येन्द्रियत्वात्। न च क्षीणाशेषकर्मसु सिद्धेषु क्षयोपशमोऽस्ति तस्य क्षायिकभावेनापसारितत्वात्। एकेन्द्रियविकल्पप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

एइंदिया दुविहा, बादरा सुहुमा। बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता। सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता ॥ ३४ ॥

एकेन्द्रिया द्विविधाः, बादराः सूक्ष्मा इति। बादरशब्दः स्थूलपर्यायः, स्थूलत्वं चानियतम्, ततो न ज्ञायते के स्थूला इति। चक्षुर्ग्राह्याश्चेन्न, अचक्षुर्ग्राह्याणां स्थूलानां सूक्ष्मतोपपत्तेः। अचक्षुर्ग्राह्याणामपि बादरत्वे सूक्ष्मबादराणामविशेषः स्यादिति चेन्न, आर्षस्वरूपानवगमात्। न बादरशब्दोऽयं स्थूलपर्यायः, अपि तु बादरनाम्नः कर्मणो वाचकः। तदुदयसहचरितत्वाज्जीवोऽपि बादरः। शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं कर्म बादरमुच्यते। सौक्ष्म्यनिर्वर्तकं कर्म सूक्ष्मम्। तथाच चक्षुषोऽग्राह्यं सूक्ष्मशरीरम्, तद्ग्राह्यं बादरमिति तद्वतां तद्व्यपदेशो हठादास्कन्देत्। ततश्चक्षुर्ग्राह्या बादराः, अचक्षुर्ग्राह्याः सूक्ष्मा इति तेषामेताभ्यामेव भेदः समापतदन्यथा तेषामविशेषतापत्तेरिति चेन्न, स्थूलाश्च भवन्ति चक्षुर्ग्राह्याश्च न भवन्ति, को विरोधः स्यात् ? सूक्ष्मजीवशरीरादसंख्येयगुणं शरीरं बादरम्, तद्वन्तो जीवाश्च बादराः। ततोऽसंख्येयगुणहीनं शरीरं सूक्ष्मम्, तद्वन्तो जीवाश्च सूक्ष्मा। उपचारादित्यपि कल्पना न साध्वी, सर्वज-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

घन्यबादराज्ञात्सूक्ष्मकर्मनिर्वर्तितस्य सूक्ष्मशरीरस्यासंख्येयगुणत्वतोऽनेकान्तात्। ततो बादरकर्मोदयवन्तो बादराः, सूक्ष्मकर्मोदयवन्तः सूक्ष्मा इति सिद्धम्। कोऽनयोः कर्मणोरुदययोर्भेदश्चेन्मूर्तैरन्यैः प्रतिहन्यमानशरीरनिर्वर्तको बादरकर्मोदयः, अप्रतिहन्यमानशरीरनिर्वर्तकः सूक्ष्मकर्मोदय इति तयोर्भेदः। सूक्ष्मत्वात्सूक्ष्मजीवानां शरीरमन्यैर्न मूर्तद्रव्यैरभिहन्यते ततो न तत्प्रतिघातः सूक्ष्मकर्मणो विपाकादिति चेन्न, अन्यैरप्रतिहन्यमानत्वेन प्रतिलब्धसूक्ष्मव्यपदेशभाजः सूक्ष्मशरीरादसंख्येयगुणहीनस्य बादरकर्मोदयतः प्राप्तबादरव्यपदेशस्य सूक्ष्मत्वं प्रत्यविशेषतोऽप्रतिघातततापत्तेः। अस्तु चेन्न, सूक्ष्मबादरकर्मोदययोरविशेषतापत्तेः। सूक्ष्मशरीरोपादायकः सूक्ष्मकर्मोदयश्चेन्न, तस्मादप्यसंख्येयगुणहीनस्य बादरकर्मनिर्वर्तितस्य शरीरस्योपलम्भात्। तत्कुतोऽवसीयत इति चेद्वेदनाक्षेत्रविधानसूत्रात्। तद्यथा—'सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा। सुहुमवाउ-सुहुमतेउ-सुहुमआउ-सुहुमपुढवि-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरवाउ-बादरतेउ-बादरआउ-बादरपुढवि-बादरणिगोदजीव-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-अपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुम-णिगोदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। सुहुमवाउकाइय-सुहुमतेउकाइय-सुहुमआउकाइय-सुहुमपुढविकाइय-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। बादरवाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरआउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरणिगोदजीव-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बेइंदिय-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-पज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। तेइंदिय-चउरिंदिय-बेइंदिय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-पंचिंदिय-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा। तस्सेव पज्जत्तयस्स वि संखेज्जगुणा त्ति। परैर्मूर्तद्रव्यैरप्रतिहन्यमानशरीरनिर्वर्तकं सूक्ष्मकर्म। तद्विपरीतशरीरनिर्वर्तकं बादरकर्मेति स्थितम्। तत्र बादराः सूक्ष्माश्च द्विविधाः, पर्याप्ता अपर्याप्ता इति। पर्याप्तकर्मोदयवन्तः पर्याप्ताः। तदुदयवतामनिष्पन्नशरीराणां कथं पर्याप्तव्यपदेशो घटत इति चेन्न, नियमेन शरीरनिष्पादकानां भाविनि भूतवदुपचारतस्तदविरोधात् पर्याप्तनामकर्मोदयसहचाराद्वा। यदि पर्याप्तशब्दो निष्पत्तिवाचकः कैस्ते निष्पन्ना इति चेत्पर्याप्तिभिः। कियत्यस्ता इति चेत्सामान्येन षड् भवन्ति, आहारपर्याप्तिः, शरीरपर्याप्तिः, इन्द्रियपर्याप्तिः, आनापानपर्याप्तिः, भाषापर्याप्तिः, मनःपर्याप्तिरिति। तत्राहारपर्याप्तेरर्थ उच्यते। शरीरनामकर्मोदयात् पुद्गलविपाकिन आहारवर्गणागतपुद्गलस्कन्धाः समवेतानन्त-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

परमाणुनिष्पादिता आत्मावष्टब्धक्षेत्रस्थाः कर्मस्कन्धसम्बन्धतो मूर्तीभूतमात्मानं समवेतत्वेन समाश्रयन्ति । तेषामुपगतानां पुद्गलस्कन्धानां खलरसपर्यायैः परिणमनशक्तेर्निमित्तानामाप्तिराहारपर्याप्तिः । सा च नान्तर्मुहूर्तमन्तरेण समयेनैकेनैवोपजायते, आत्मनोऽक्रमेण तथाविधपरिणामाभावाच्छरीरोपादानप्रथमसमयादारभ्यान्तर्मुहूर्तेनाहारपर्याप्तिर्निष्पद्यत इति यावत् । तं खलभागं तिलखलोपममस्थ्यादिस्थिरावयवैस्तिलतैलसमानं रसभागं रसरुधिरवसाशुक्रादिद्रवावयवैरौदारिकादिशरीरत्रयपरिणामशक्त्युपेतानां स्कन्धानामवाप्तिः शरीरपर्याप्तिः । साहारपर्याप्तेः पश्चादन्तर्मुहूर्तेन निष्पद्यते । योग्यदेशस्थितरूपादिविशिष्टार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गलप्रचयावाप्तिरिन्द्रियपर्याप्तिः । सापि ततः पश्चादन्तर्मुहूर्तादुपजायते । न चेन्द्रियनिष्पत्तौ सत्यामपि तस्मिन् क्षणे बाह्यार्थविषयविज्ञानमुत्पद्यते तदा तदुपकरणाभावात् । उच्छ्वासनिस्सरणशक्तेर्निष्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयावाप्तिरानापानपर्याप्तिः । एषापि तस्मादन्तर्मुहूर्तकाले समतीते भवेत् । भाषावर्गणायाः स्कन्धांश्चतुर्विधभाषाकारेण परिणमनशक्तेर्निमित्तनोकर्मपुद्गलप्रचयावाप्तिर्भाषापर्याप्तिः । एषापि पश्चादन्तर्मुहूर्तादुपजायते । मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयोऽनुभूतार्थस्मरणशक्तिनिमित्तो मनःपर्याप्तिः, वा द्रव्यमनोऽवष्टम्भेनानुभूतार्थस्मरणशक्तेरुत्पत्तिर्मनःपर्याप्तिः । एतासां प्रारम्भोऽक्रमेण जन्मसमयादारभ्य तासां सत्त्वाभ्युपगमात् । निष्पत्तिस्तु पुनः क्रमेण । एतासामनिष्पत्तिरपर्याप्तिः । पर्याप्तिप्राणयोः को भेद इति चेन्न, अनयोर्हिमवद्विन्ध्ययोरिव भेदोपलम्भात् । यत आहारशरीरेन्द्रियानापानभाषामनःशक्तीनां निष्पत्तेः कारणं पर्याप्तिः । प्राणित्येभिरात्मेति प्राणाः पञ्चेन्द्रियमनोवाक्कायानापानायूंषीति । भवन्त्विन्द्रियायुष्कायाः प्राणव्यपदेशभाजस्तेषामाजन्मन आमरणाद्भवधारणत्वेनोपलम्भात्, तत्रैकस्याप्यभावतोऽसुमतां मरणसंदर्शनाच्च । अपि तूच्छ्वासमनोवचसां न प्राणव्यपदेशो युज्यते तान्यन्तरेणाप्यपर्याप्तावस्थायां जीवनोपलम्भादिति चेन्न, तैर्विना पश्चाज्जीवतामनुपलम्भतस्तेषामपि प्राणत्वाविरोधात् । उक्तं च—बाहिर-पाणेहि जहा तहेव अब्भंतरेहि पाणेहि । जीवंति जेहि जीवा पाणा ते होंति बोद्धव्वा ॥ १४१ ॥ पर्याप्तिप्राणानां नाम्नि विप्रतिपत्तिर्न वस्तुनीति चेन्न, कार्यकारणयोर्भेदात्, पर्याप्तिष्वायुषोऽसत्त्वान्मनोवागुच्छ्वासप्राणानामपर्याप्तकालेऽसत्त्वाच्च तयोर्भेदात् । तत्पर्याप्तयोऽप्यपर्याप्तकाले न सन्तीति तत्र तदसत्त्वमिति चेन्न, अपर्याप्तरूपेण तत्र तासां सत्त्वात् । किमपर्याप्तरूपमिति चेन्न, पर्याप्तीनामर्धनिष्पन्नावस्था अपर्याप्तिः, ततोऽस्ति तेषां भेद इति । अथवा जीवनहेतुत्वं तत्स्थमनपेक्ष्य शक्तिनिष्पत्तिमात्रं पर्याप्तिरुच्यते, जीवनहेतवः पुनः प्राणा इति तयोर्भेदः । एकेन्द्रियाणां भेदमभिधाय साम्प्रतं द्वीन्द्रियादीनां भेदमभिधातुकाम उत्तरसूत्रमाह—

बीइंदिया दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । तीइंदिया दुविहा, पज्जत्ता अपज्जता । चउरिंदिया दुविहा, पज्जत्ता अपज्जता । पंचिंदिया दुविहा, सण्णी असण्णी । सण्णी दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । असण्णी दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि ॥ ३५ ॥

द्वीन्द्रियादय उक्तार्था इति पुनरुक्तभयात्पुनस्तेषां नेहार्थ उच्यते। अथ स्यादेतस्यैतावन्त्येवेन्द्रियाणीति कथमवगम्यत इति चेन्न, आर्षात्तदवगतेः। किं तदार्षमिति चेदुच्यते—एइंदियस्स फुसणं एकं चि य होइ सेस-जीवाणं। होंति कम-वड्डियाइं जिब्भा-घाणक्खि-सोत्ताइं ॥ १४२ ॥ अस्य सूत्रस्यार्थ उच्यते। स्पर्शनमेकमेवैकेन्द्रियस्य भवति, स्पर्शनरसने द्वीन्द्रियस्य, स्पर्शनरसनघ्राणेन्द्रियाणि त्रीन्द्रियाणाम्, तानि सचक्षूंषि चतुरिन्द्रियाणाम्, स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रेन्द्रियाणि पञ्चेन्द्रियाणामिति। अथवा 'कृमि-पिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि' इत्यस्मात्तत्त्वार्थसूत्रादवसीयते। अस्यार्थ उच्यते। एकैकं वृद्धं येषां तानीमान्येकैकवृद्धानि। 'वनस्पत्यन्तानामेकम्' इत्येतस्मात्सूत्रात्स्पर्शनमित्यनुवर्तते। तत एवमभिसम्बध्यते, स्पर्शनं रसनवृद्धं कृम्यादीनाम्, स्पर्शनरसने घ्राणवृद्धे पिपीलिकादीनाम्, स्पर्शनरसनघ्राणानि चक्षुर्वृद्धानि भ्रमरादीनाम्, तानि श्रोत्रवृद्धानि मनुष्यादीनामिति। समनस्काः संज्ञिन इति। मनो द्विविधम्, द्रव्यमनो भावमन इति। तत्र पुद्गलविपाकिकर्मोदयापेक्षं द्रव्यमनः। वीर्यान्तरायनोइन्द्रियावरणक्षयोपशमापेक्षयात्मनो विशुद्धिर्भावमनः। तत्र भावेन्द्रियाणामिव भावमनस उत्पत्तिकाल एव सत्त्वादपर्याप्तकालेऽपि भावमनसः सत्त्वमिन्द्रियाणामिव किमिति नोक्तमिति चेन्न, बाह्येन्द्रियैरग्राह्यद्रव्यस्य मनसोऽपर्याप्त्यवस्थायामस्तित्वेऽङ्गीक्रियमाणे द्रव्यमनसो विद्यमाननिरूपणस्यासत्त्वप्रसङ्गात्। पर्याप्तिनिरूपणात्तदस्तित्वं सिद्ध्येदिति चेन्न, बाह्यार्थस्मरणशक्तिनिष्पत्तौ पर्याप्तिव्यपदेशतो द्रव्यमनसोऽभावेऽपि पर्याप्तिनिरूपणोपपत्तेः। न बाह्यार्थस्मरणशक्तेः प्रागस्तित्वं योग्यस्य द्रव्यस्योत्पत्तेः प्राक् सत्त्वविरोधात्। ततो द्रव्यमनसोऽस्तित्वस्य ज्ञापकं भवति तस्यापर्याप्त्य-वस्थायामस्तित्वानिरूपणमिति सिद्धम्। मनस इन्द्रियव्यपदेशः किन्न कृत इति चेन्न, इन्द्रस्य लिङ्गमिन्द्रियम्। उपभोक्तुरात्मनोऽनिवृत्त-कर्मसम्बन्धस्य परमेश्वरशक्तियोगादिन्द्रव्यपदेशमर्हतः स्वयमर्थान् गृहीतुमसमर्थस्योपयोगोपकरणं लिङ्गमिति कथ्यते। न च मनस उपयोगोपकरणमस्ति। द्रव्यमन उपयोगोपकरणमस्तीति चेन्न, शेषेन्द्रियाणामिव बाह्येन्द्रियग्राह्यत्वाभावतस्तस्येन्द्रलिङ्गत्वानुपपत्तेः। अथ स्यादर्थालोकमनस्कारचक्षुर्भ्यः सम्प्रवर्तमानं रूपज्ञानं समनस्केषूपलभ्यते तस्य कथममनस्केष्वाविर्भाव इति नैष दोषः, भिन्नजातित्वात्। इन्द्रियेषु गुणस्थानानामियत्ताप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

एइंदिया बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया असण्णिपंचिंदिया एक्कम्मि चेव मिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे ॥ ३६ ॥

एकस्मिन्नेवेति विशेषणं द्व्यादिसंख्यानिराकरणार्थम्। शेषगुणस्थाननिरसनार्थं मिथ्यादृष्ट्युपादानम्। एइंदिएसु सासणगुणट्ठाणं पि सुणिज्जदि तं कधं घडदे? ण, एदम्हि सुत्ते तस्स णिसिद्धत्तादो। विरुद्धत्थाणं कधं दोण्हं पि सुत्तत्तणमिदि ण, दोण्हं एक्कदरस्स सुत्तत्तादो। दोण्हं मज्झे इदं सुत्तमिदं च ण भवदीदि कधं णव्वदि? उवदेसमंतरेण तदवगमाभावा दोण्हं पि संगहो कायव्वो। दोण्हं

संगहं करेंतो संसयमिच्छाइट्ठी होदि त्ति तण्ण, सुत्तुद्दिट्ठमेव अत्थि त्ति सद्दहंतस्स संदेहाभावादो। उत्तं च—सुत्तादो तं सम्मं दरिसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि। सो चेय हवदि मिच्छाइट्ठी हु तदो पहुडि जीवो॥ १४३॥ इदि। पञ्चेन्द्रियप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

पंचिंदिया असण्णिपंचिंदिय-प्पहुडि जाव अजोगिकेवली त्ति॥ ३७॥

पञ्चेन्द्रियेषु गुणस्थानसंख्यामप्रतिपाद्य किमिति 'असंज्ञिप्रभृतयः पञ्चेन्द्रिया' इति प्रतिपादितमिति चेन्नैष दोषः, असंज्ञ्यादयोऽयोगिकेवलिपर्यन्ताः पञ्चेन्द्रिया इत्यभिहिते पञ्चेन्द्रियेषु गुणस्थानानामियत्तावगतेः। अथ स्यादसंज्ञ्यादयोऽयोगिकेवलिपर्यन्ताः किमु पञ्चद्रव्येन्द्रियवन्त उत भावेन्द्रियवन्त इति? न तावदादिविकल्पोऽपर्याप्तजीवैर्व्यभिचारात्। न द्वितीयविकल्पः केवलिभिर्व्यभिचारादिति नैष दोषः, भावेन्द्रियतः पञ्चेन्द्रियत्वाभ्युपगमात्। न पूर्वोक्तदोषोऽपि केवलिनां निर्मूलतो विनष्टान्तरङ्गेन्द्रियाणां प्रहतबाह्येन्द्रियव्यापाराणां भावेन्द्रियजनितद्रव्येन्द्रियसत्त्वापेक्षया पञ्चेन्द्रियत्वप्रतिपादनात्, भूतपूर्वगतिन्यायसमाश्रयणाद्वा। सर्वत्र निश्चयनयमाश्रित्य प्रतिपाद्य अत्र व्यवहारनयः किमित्यवलम्ब्यते इति चेन्नैष दोषः, मन्दमेधसामनुग्रहार्थत्वात्। अथवा नेदं व्याख्यानं समीचीनं दुरधिगमत्वात्, इन्द्रियप्राणैरस्य पौनरुक्त्यप्रसङ्गात्। किमपरं व्याख्यानमिति चेदुच्यते। एकेन्द्रियजातिनामकर्मोदयादेकेन्द्रियः, द्वीन्द्रियजातिनामकर्मोदयाद् द्वीन्द्रियः, त्रीन्द्रियजातिनामकर्मोदयात्त्रीन्द्रियः, चतुरिन्द्रियजातिनामकर्मोदयाच्चतुरिन्द्रियः, पञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मोदयात्पञ्चेन्द्रियः। समस्ति च केवलिनामपर्याप्तजीवानां च पञ्चेन्द्रियजातिनामकर्मोदयः। निरवद्यत्वाद् व्याख्यानमिदं समाश्रयणीयम्। पञ्चेन्द्रियजातिरिति किं? यस्याः पारावतादयो जातिविशेषाः समानप्रत्ययग्राह्याः सा पञ्चेन्द्रियजातिः पञ्चेन्द्रियक्षयोपशमस्य सहकारित्वमादधाना। अतीन्द्रियजीवास्तित्वप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

तेण परमणिंदिया इदि॥ ३८॥

तेनेत्येकवचनं जातिनिबन्धनम्। परमूर्ध्वमनिन्द्रिया एकेन्द्रियादिजात्यतीताः सकलकर्मकलङ्कातीतत्वात्। कायमार्गणाप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

कायाणुवादेण अत्थि पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फइकाइया तसकाइया अकाइया चेदि॥ ३९॥

अनुवदनमनुवादः। कायानामनुवादः कायानुवादस्तेन कायानुवादेन। पृथिव्येव कायः पृथिवीकायः स एषामस्तीति पृथिवी-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायिकाः । न कार्मणशरीरमात्रस्थितजीवानां पृथिवीकायत्वाभावः, भाविनि भूतवदुपचारतस्तेषामपि तद्व्यपदेशोपपत्तेः । अथवा पृथिवीकायिकनामकर्मोदयवशीकृताः पृथिवीकायिकाः । एवमप्कायिकादीनामपि वाच्यम् । पृथिव्यादीनि कर्माण्यसिद्धानीति चेन्न, पृथिवीकायिकादिकार्यान्यथानुपपत्तितस्तदस्तित्वसिद्धेः । एते पञ्चापि स्थावराः स्थावरनामकर्मोदयजनितविशेषत्वात् । स्थानशीलाः स्थावरा इति चेन्न, वायुतेजोऽम्भसां देशान्तरप्राप्तिदर्शनादस्थावरत्वप्रसङ्गात् । स्थानशीलाः स्थावरा इति व्युत्पत्तिमात्रमेव, नार्थः-प्राधान्येनाश्रीयते गोशब्दस्येव । त्रसनामकर्मोदयापादितवृत्तयस्त्रसाः । त्रसेरुद्वेजनक्रियस्य त्रस्यन्तीति त्रसा इति चेन्न, गर्भाण्डज-मूर्च्छितसुषुप्तेषु तदभावादत्रसत्त्वप्रसङ्गात् । ततो न चलनाचलनापेक्षं त्रसस्थावरत्वम् । आत्मप्रवृत्त्युपचितपुद्गलपिण्डः कायः इत्यनेनेदं व्याख्यानं विरुध्यत इति चेन्न, जीवविपाकित्रसपृथिवीकायिकादिकर्मोदयसहकार्यौदारिकशरीरोदयजनितशरीरस्याप्युपचारतस्तद्व्यपदेशा-र्हत्वाविरोधात् । त्रसस्थावरकायिकनामकर्मबन्धातीता अकायिकाः सिद्धाः । उक्तं च—जह कंचणमग्गिगयं मुंचइ किट्टेण कालियाए य । तह काय-बंध-मुक्का अकाइया ज्झाण-जोएण ॥ १४४ ॥ पुढवि-काइयादीणं भेद-पदुप्पायणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणइ—

पुढविकाइया दुविहा, बादरा सुहुमा । बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । आउकाइया दुविहा, बादरा सुहुमा । बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । तेउकाइया दुविहा, बादरा सुहुमा । बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । वाउकाइया दुविहा, बादरा सुहुमा । बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि ॥ ४० ॥

बादरनामकर्मोदयोपजनितविशेषा बादराः, सूक्ष्मनामकर्मोदयोपजनितविशेषाः सूक्ष्माः । को विशेषश्चेत् ? सप्रतिघाताप्रतिघातरूपाः । पर्याप्तनामकर्मोदयजनितशक्त्याविर्भावितवृत्तयः पर्याप्ताः । अपर्याप्तनामकर्मोदयजनितशक्त्याविर्भावितवृत्तयोऽपर्याप्ताः । वनस्पतिकायिकभेदप्रतिपादनार्थमाह—

वणप्फइकाइया दुविहा, पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा । पत्तेय-सरीरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । साधारणसरीरा दुविहा, बादरा सुहुमा । बादरा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता । सुहुमा दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि ॥ ४१ ॥ ॥ ६० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्येकं पृथक् शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः खदिरादयो वनस्पतयः । पृथिवीकायादिपञ्चानामपि प्रत्येकशरीरव्यपदेशस्तथा सति स्यादिति चेन्न, इष्टत्वात् । तर्हि तेषामपि प्रत्येकशरीरविशेषणं विधातव्यमिति चेन्न, तत्र वनस्पतिष्विव व्यवच्छेद्याभावात् । बादर-सूक्ष्मोभयविशेषणाभावादनुभयत्वमनुभयस्य चाभावात्प्रत्येकशरीरवनस्पतीनामभावः समापतेदिति चेन्न, बादरत्वेन सतामभावानुपपत्तेः । अनुक्तं कथमवगम्यत इति चेन्न, सत्त्वान्यथानुपपत्तितस्तत्सिद्धेः । सौक्ष्म्यविशिष्टस्यापि जीवसत्त्वस्यासंभवः समस्तीति नैकान्तिको हेतुरिति चेन्न, बादरा इति लक्षणमुत्सर्गरूपत्वादशेषप्राणिव्यापि । ततः प्रत्येकशरीरवनस्पतयो बादरा एव न सूक्ष्माः साधारणशरीरेष्विवोत्सर्गविधिबाधकापवादविधेरभावात् । तदुत्सर्गत्वं कथमवगम्यत इति चेन्न, प्रत्येकवनस्पतित्रसेषूभयविशेषणानुपादानान्न सूक्ष्मत्वमुत्सर्गः, आर्षमन्तरेण प्रत्यक्षादिनानवगतेरप्रसिद्धस्य बादरत्वस्यैवोत्सर्गत्वविरोधात् । साधारणं सामान्यं शरीरं येषां ते साधारणशरीराः । प्रतिनियतजीवप्रतिबद्धैः पुद्गलविपाकित्वादाहारवर्गणास्कन्धानां कायाकारपरिणमनहेतुभिरौदारिककर्मस्कन्धैः कथं भिन्नजीवफलदातृभिरेकं शरीरं निष्पाद्यते विरोधादिति चेन्न, पुद्गलानामेकदेशावस्थितानामेकदेशावस्थितमिथःसमवेतजीवसमवेतानां तत्स्थाशेषप्राणिसम्बन्ध्येकशरीरनिष्पादनं न विरुद्धं साधारणकारणतः समुत्पन्नकार्यस्य साधारणत्वाविरोधात् । कारणानुरूपं कार्यमिति न निषेद्धुं पार्यते सकलनैयायिकलोकप्रसिद्धत्वात् । उक्तं च—साहारणमाहारो-साहारणमाणपाण-गहणं च । साहारण-जीवाणं साहारण-लक्खणं भणियं ॥ १४५ ॥ जत्थेक्कु मरइ जीवो तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं । वक्कमदि जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थ णंताणं ॥ १४६ ॥ एय-णिगोद-सरीरे जीवा दव्व-प्पमाणदो दिट्ठा । सिद्धेहि अणंत-गुणा सव्वेण वितीद-कालेण ॥ १४७ ॥ अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो । भाव-कलंकइपउरा णिगोद-वासं ण मुंचंति ॥ १४८ ॥ ते तादृक्षाः सन्तीति कथमवगम्यत इति चेन्न, आगमस्यातर्कगोचरत्वात् । न हि प्रमाणप्रकाशितार्थावगतिः प्रमाणान्तरप्रकाशमपेक्षते स्वरूपविलोपप्रसङ्गात् । न चैतत्प्रामाण्यमसिद्धं सुनिश्चितासम्भवद्बाधकप्रमाणस्यासिद्धत्वविरोधात् । बादरनिगोदप्रतिष्ठिताश्चार्षान्तरेषु श्रूयन्ते, क्व तेषामन्तर्भावश्चेत् प्रत्येकशरीरवनस्पतिष्विति ब्रूमः । के ते ? स्नुगार्द्रकमूलकादयः । त्रसकायानां भेदप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

तसकाइया दुविहा, पज्जत्ता अपज्जत्ता ॥ ४२ ॥

गतार्थत्वान्नास्यार्थ उच्यते । किं त्रसाः सूक्ष्मा उत बादरा इति ? बादरा एव न सूक्ष्माः । कुतः ? तत्सौक्ष्म्यविधायकार्षाभावात् । बादरत्वविधायकार्षाभावे कथं तदवगम्यत इति चेन्न, उत्तरसूत्रतस्तेषां बादरत्वसिद्धेः । के ते पृथिवीकायादय ? इति चेदुच्यते—पुढवी य सकरा वालुवा य उवले सिलादि छत्तीसा । पुढवीमया हु जीवा णिद्दिट्ठा जिणवरिंदेहि ॥ १४९ ॥ ओसा य हिमो ॥ ६१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

घूमरि हरधणु सुद्धोदवो घणोदो य । एदे हु आउकाया जीवा जिण-सासणुद्दिट्ठा ॥ १५० ॥ इंगाल-जाल-अच्ची मुम्मुर-सुद्धागणी तहा अगणी । अण्णे वि एवमाई तेउकाया समुद्दिट्ठा ॥ १५१ ॥ वाउब्भामो उक्कलि-मंडलि-गुंजा महा घणा य तणा । एदे उ वाउकाया जीवा जिण-इंद-णिद्दिट्ठा ॥ १५२ ॥ मूलग्ग-पोर-बीया कंदा तह खंध बीय-बीयरुहा । सम्मुच्छिमा य भणिया पत्तेयाणंतकाया य ॥ १५३ ॥ विहि तीहि चउहि पंचहि सहिया जे इंदिएहि लोयम्मि । ते तसकाया जीवा णेया वीरोवएसेण ॥ १५४ ॥

पृथिवीकायिकादीनां स्वरूपमभिधाय साम्प्रतं तेषु गुणस्थाननिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फइकाइया एक्कम्मि चेय मिच्छाइट्ठिट्ठाणे ॥ ४३ ॥

आह, आप्तागमविषयश्रद्धारहिता मिथ्यादृष्टयो भण्यन्ते । श्रद्धाभावश्चाश्रद्धेयवस्तुपरिज्ञानपूर्वकः । तथा च पृथिवीकायादीनामाप्तागमविषयपरिज्ञानोज्झितानां कथं मिथ्यादृष्टित्वमिति नैष दोषः, परिज्ञाननिरपेक्षमूढमिथ्यात्वसत्त्वस्य तत्राविरोधात् । अथवा ऐकान्तिकसांशयिकमूढव्युद्ग्राहितवैनयिकस्वाभाविकविपरीतमिथ्यात्वानां सप्तानामपि तत्र सम्भवः समस्ति । अत्रतनजीवानां सप्तविधमिथ्यात्वकलङ्काङ्कितहृदयानामविनष्टमिथ्यात्वपर्यायेण सह स्थावरत्वमुपगतानां तत्सत्त्वाविरोधात् । इन्द्रियानुवादेन एकेन्द्रिया विकलेन्द्रियाश्च सर्वे मिथ्यादृष्टय इत्यभाणि, ततस्तेनैव गतार्थत्वान्नारम्भणीयमिदं सूत्रमिति नैष दोषः, पृथिवीकायादीनामियन्तीन्द्रियाणि भवन्ति न भवन्तीत्यनवगतस्य विस्मृतस्य वा शिष्यस्य प्रश्नवशादस्य सूत्रस्यावतारात् । त्रसजीवप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

तसकाइया बीइंदियप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ॥ ४४ ॥

एते त्रसनामकर्मोदयवशवर्तिनः । के पुनः स्थावरा इति चेदेकेन्द्रियाः । कथमनुक्तमवगम्यते चेत्पारिशेषात् । स्थावरकर्मणः किं कार्यमिति चेदेकस्थानावस्थापकत्वम् । तेजोवाय्वप्कायानां चलनात्मकानां तथा सत्यस्थावरत्वं स्यादिति चेन्न, स्थास्नूनां त्रयोगतश्लच्छिन्नपर्णानामिव गतिपर्यायपरिणतसमीरणाव्यतिरिक्तशरीरत्वतस्तेषां गमनाविरोधात् । बादरजीवप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

बादरकाइया बादरेइंदियप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ॥ ४५ ॥ ॥ ६२ ॥

बादरः स्थूलः सप्रतिघातः कायो येषां ते बादरकायाः । पृथिवीकायिकादिषु वनस्पतिपर्यन्तेषु पूर्वमेव बादराणां सूक्ष्माणां च सत्त्वमुक्तं ततोऽत्र बादरैकेन्द्रियग्रहणमनर्थकमिति चेन्नानर्थकम्, प्रत्येकशरीरवनस्पत्युपादानार्थम् तदुपादानात्प्रत्येकशरीरवनस्पति-

प्रभृतयो बादरा इति यावत् । न विधातव्यमेतेषां बादरत्वं प्रत्यक्षसिद्धत्वादिति चेन्न, सौक्ष्म्याभावप्रतिपादनफलत्वात् । द्विविधकायातीतजीवास्तित्वप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

तेण परमकाइया चेदि ॥ ४६ ॥

तेन द्विविधकायात्मकजीवराशेः परं बादरसूक्ष्मशरीरनिबन्धनकर्मातीतत्वतोऽशरीराः सिद्धा अकायिकाः । जीवप्रदेशप्रचयात्मकत्वात्सिद्धा अपि सकाया इति चेन्न, तेषामनादिबन्धनबद्धजीवप्रदेशात्मकत्वात् । अनादिप्रचयोऽपि कायः किन्न स्यादिति चेन्न, मूर्तानां पुद्गलानां कर्मनोकर्मपर्यायपरिणतानां सादिसान्तप्रचयस्य कायत्वाभ्युपगमात् । 'इति' शब्द एक एवास्तु सूत्रपरिसमाप्त्यर्थत्वात्, न 'च' शब्दस्तस्य फलाभावादिति चेन्न, तस्य कायमार्गणपरिसमाप्तिप्रतिपादनफलत्वात् । योगद्वारेण जीवद्रव्यप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

जोगाणुवादेण अत्थि मणजोगी वचिजोगी कायजोगी चेदि ॥ ४७ ॥

अत्र 'इति' शब्दः सूत्रसमाप्तिप्रतिपादनफलः । 'च' शब्दश्च त्रय एव योगाः सन्ति नान्य इति योगसंख्यानियमप्रतिपादनफलः समुच्चयार्थो वा । योगस्य लक्षणं प्रागुक्तमिति नेदानीमुच्यते । मनसा योगो मनोयोगः । अथ स्यान्न द्रव्यमनसा सम्बन्धो मनोयोगः, मनोयोगस्य देशोनत्रयस्त्रिंशत्सागरकालस्थितिप्रसङ्गात् । न सक्रियावस्था योगः, योगस्याहोरात्रमात्रकालप्रसङ्गात् । न भावमनसा सम्बन्धो मनोयोगः तस्य ज्ञानरूपत्वत उपयोगान्तर्भावादिति न त्रितयविकल्पोक्तदोषः, तेषामनभ्युपगमात् । कः पुनर्मनोयोग इति चेद्भावमनसः समुत्पत्त्यर्थः प्रयत्नो मनोयोगः । तथा वचसः समुत्पत्त्यर्थः प्रयत्नो वाग्योगः । कायक्रियासमुत्पत्त्यर्थः प्रयत्नः काययोगः । त्रयाणां योगानां प्रवृत्तिरक्रमेण उत नेति ? नाक्रमेण, त्रिष्वक्रमेणैकस्यात्मनो योगनिरोधात् । मनोवाक्कायप्रवृत्तयोऽक्रमेण क्वचिद् दृश्यन्त इति चेद्भवतु तासां तथा प्रवृत्तिर्दृष्टत्वात्, न तत्प्रयत्नानामक्रमेण वृत्तिस्तथोपदेशाभावादिति । अथ स्यात्प्रयत्नो हि नाम बुद्धिपूर्वकः, बुद्धिश्च मनोयोगपूर्विका, तथा च सिद्धो मनोयोगः शेषयोगाविनाभावीति न, कार्यकारणयोरेककाले समुत्पत्तिविरोधात् । तदस्यास्त्यस्मिन्निति इनि सति सिद्धं मनोयोगी वाग्योगी काययोगीति । योगातीतजीवप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

अजोगी चेदि ॥ ४८ ॥

न योगी अयोगी । उत्तं च—जेसिं ण संति जोगा सुहासुहा पुण्ण-पाव संजणया । ते होंति अजोइजिणा अणोवमाणंत-बल-कलिया ॥ १५५ ॥ मनोयोगस्य सामान्यत एकविधस्य भेदप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणजोगो चउव्विहो, सच्चमणजोगो मोसमणजोगो सच्चमोसमणजोगो असच्चमोसमणजोगो चेदि ॥ ४९ ॥

सत्यमवितथममोघमित्यनर्थान्तरम्। सत्ये मनः सत्यमनः, तेन योगः सत्यमनोयोगः। तद्विपरीतो मोषमनोयोगः। तदुभययोगात्सत्यमोषमनोयोगः। उक्तं च—सब्भावो सच्चमणो जो जोगो तेण सच्चमणजोगो। तव्विवरीदो मोसो जाणुभयं सच्चमोसंति ॥ १५६॥ ताभ्यां सत्यमोषाभ्यां व्यतिरिक्तोऽसत्यमोषमनोयोगः। तद्द्विभयसंयोगजोऽस्तु? न, तस्य तृतीयभङ्गेऽन्तर्भावात्। कोऽपरश्चतुर्थो मनोयोग इति चेदुच्यते। समनस्केषु मनःपूर्विका वचसः प्रवृत्तिः, अन्यथानुपलम्भात। तत्र सत्यवचननिबन्धनमनसा योगः सत्यमनोयोगः। तथा मोषवचननिबन्धनमनसा योगो मोषमनोयोगः। उभयात्मकवचननिबन्धनमनसा योगः सत्यमोषमनोयोगः। त्रिविधवचनव्यतिरिक्तामन्त्रणादिवचननिबन्धनमनसा योगोऽसत्यमोषमनोयोगः। नायमर्थो मुख्यः सकलमनसामव्यापकत्वात्। कः पुनर्निरवद्योऽर्थश्चेद्यथावस्तु प्रवृत्तं मनः सत्यमनः। विपरीतमसत्यमनः। द्व्यात्मकमुभयमनः। संशयानध्यवसायज्ञाननिबन्धनमसत्यमोषमन इति अथवा तद्वचनजननयोग्यतामपेक्ष्य चिरन्तनोऽप्यर्थः समीचीन एव। उक्तं च—ण य सच्च-मोस-जुत्तो जो दु मणो सो असच्चमोसमणो। जो जोगो तेण हवे असच्चमोसो दु मणजोगो ॥ १५७ ॥ मनसो भेदमभिधाय साम्प्रतं गुणस्थानेषु तत्स्वरूपनिरूपणार्थमुत्तरसूत्रद्वयमाह—

मणजोगो सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ५० ॥

मनोयोग इति पञ्चमो मनोयोगः क्व लब्धश्चेन्नैष दोषः, चतसृणां मनोव्यक्तीनां सामान्यस्य पञ्चमत्वोपपत्तेः। किं तत्सामान्यमिति चेन्मनसः सादृश्यम्। मनसः समुत्पत्तये प्रयत्नो मनोयोगः। पूर्वप्रयोगात् प्रयत्नमन्तरेणापि मनसः प्रवृत्तिर्दृश्यते इति चेद्भवतु, न तेन मनसा योगोऽत्र मनोयोग इति विवक्षितः, तन्निमित्तप्रयत्नसम्बन्धस्य परिस्पन्दरूपस्य विवक्षितत्वात्। भवतु केवलिनः सत्यमनोयोगस्य सत्त्वं तत्र वस्तुयाथात्म्यावगतेः सत्त्वात्। नासत्यमोषमनोयोगस्य सत्त्वं तत्र संशयानध्यवसाययोरभावादिति न, संशयानध्यवसायनिबन्धनवचनहेतुमनसोऽप्यसत्यमोषमनस्त्वमस्तीति तत्र तस्य सत्वाविरोधात्। किमिति केवलिनो वचनं संशयानध्यवसायजनकमिति चेत्स्वार्थानन्त्याच्छ्रोतुरावरणक्षयोपशमातिशयाभावात्। तीर्थकरवचनमनक्षरत्वाद् ध्वनिरूपं तत एव तदेकम्। एकत्वान्न तस्य द्वैविध्यं घटत इति चेन्न, तत्र स्यादित्याद्यसत्यमोषवचनसत्त्वतस्तस्य ध्वनेरनक्षरत्वासिद्धेः। साक्षरत्वे च प्रतिनियतैकभाषात्मकमेव तद्वचनं नाशेषभाषारूपं भवेदिति चेन्न, क्रमविशिष्टवर्णात्मकभूयःपङ्क्तिकदम्बकस्य प्रतिप्राणिप्रवृत्तस्य ध्वनेरशेषभाषारूपत्वाविरोधात्। तथा च कथं तस्य ध्वनित्वमिति चेन्न, एतद्भाषारूपमेवेति निर्देष्टुमशक्यत्वतस्तस्य ध्वनित्वसिद्धेः। अतीन्द्रियज्ञानत्वान्न केवलिनो मन इति चेन्न, द्रव्यमनसः सत्त्वात्। भवतु द्रव्यमनसः सत्त्वं न तत्कार्यमिति चेद्भवतु तत्कार्यस्य क्षायोपशमिकज्ञानस्याभावः, अपि तु तदुत्पा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दने प्रयत्नोऽस्त्येव तस्य प्रतिबन्धकत्वाभावात् । तेनात्मनो योगो-मनोयोगः । विद्यमानोऽपि तदुत्पादने प्रयत्नः किमिति स्वकार्यं न विदध्यादिति चेन्न, तत्सहकारिकारणक्षयोपशमाभावात् । असतो मनसः कथं वचनद्वितयसमुत्पत्तिरिति चेन्न, उपचारतस्तयोस्ततः समुत्पत्तिविधानात् । शेषमनसोर्गुणस्थानप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

मोसमणजोगो सच्चमोसमणजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीयराय-छदुमत्था त्ति ॥ ५१ ॥

भवतु नाम क्षपकोपशमकानां सत्यस्यासत्यमोषस्य च सत्वं नेतरयोरप्रमादस्य प्रमादविरोधित्वादिति न, रजोजुषां विपर्ययानध्यवसायाज्ञानकारणमनसः सत्त्वाविरोधात् । न च तद्योगात्प्रमादिनस्ते प्रमादस्य मोहपर्यायत्वात् । वाग्योगभेदप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

वचिजोगो चउव्विहो सच्चवचिजोगो मोसवचिजोगो सच्चमोसवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो चेदि ॥ ५२ ॥

चतुर्विधमनोभ्यः समुत्पन्नवचनानि चतुर्विधान्यपि तद्व्यपदेशं प्रतिलभन्ते तथा प्रतीयते च उत्तं च— दसविह-सच्चे वयणे जो जोगो सो दु सच्चवचिजोगो । तव्विवरीदो मोसो जाणुभयं सच्चमोसं ति ॥ १५८ ॥ जो णेव सच्च-मोसो तं जाण असच्चमोसवचिजोगो । अमणाणं जा भासा सण्णीणामंतणीयादी ॥ १५९ ॥ वचसो भेदमभिधाय गुणस्थानेषु तत्सत्त्वप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

वचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो बीइंदियप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ५३ ॥

असत्यमोषमनोनिबन्धनवचनमसत्यमोषवचनमिति प्रागुक्तम्, तद् द्वीन्द्रियादीनां मनोरहितानां कथं भवेदिति नायमेकान्तोऽस्ति सकलवचनानि मनस एव समुत्पद्यन्त इति मनोरहितकेवलिनां वचनाभावसंजननात् । विकलेन्द्रियाणां मनसा विना न ज्ञानसमुत्पत्तिः, ज्ञानेन विना न वचनप्रवृत्तिरिति चेन्न, मनस एव ज्ञानमुत्पद्यत इत्येकान्ताभावात् । भावे वा नाशेषेन्द्रियेभ्यो ज्ञानसमुत्पत्तिर्मनसः समुत्पन्नत्वात् । नैतदपि दृष्टश्रुतानुभूतविषयस्य मानसप्रत्ययस्यान्यत्र वृत्तिविरोधात् । न चक्षुरादीनां सहकार्यपि सप्रयत्नात्मसहकारिभ्य इन्द्रियेभ्यस्तदुत्पत्त्युपलम्भात् । समनस्केषु ज्ञानस्य प्रादुर्भावो मनोयोगादेवेति चेन्न, केवलज्ञानेन व्यभिचारात् । समनस्कानां यत्क्षायोपशमिकं ज्ञानं तन्मनोयोगात्स्यादिति चेन्न, इष्टत्वात् । मनोयोगाद्वचनमुत्पद्यत इति प्रागुक्तं तत्कथं घटत इति चेन्न, उपचारेण तत्र मानसस्य ज्ञानस्य मन इति संज्ञां विधायोक्तत्वात् । कथं विकलेन्द्रियवचसोऽसत्यमोषत्वमिति चेदनध्यवसायहेतुत्वात् । ध्वनिविषयोऽध्यवसायः समुपलभ्यत इति चेन्न, वक्तुरभिप्रायविषयाध्यवसायाभावस्य विवक्षितत्वात् । सत्यवचसो गुणनिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सच्चवचिजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ५४ ॥

दशविधानामपि सत्यानामेतेषु गुणस्थानेषु सत्त्वस्य विरोधासिद्धेस्तत्र भवन्ति दशापि सत्यानीति । शेषवचसोः गुणस्थाननिरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

मोसवचिजोगो सच्चमोसवचिजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीण-कसाय वीयराय-छदुमत्था-त्ति ॥ ५५ ॥

क्षीणकषायस्य वचनं कथमसत्यमिति चेन्न, असत्यनिबन्धनाज्ञानसत्त्वापेक्षया तत्र तत्सत्त्वप्रतिपादनात् । तत एव नोभयसंयोगोऽपि विरुद्ध इति । वाचंयमस्य क्षीणकषायस्य कथं वाग्योगश्चेन्न, तत्रान्तर्जल्पस्य सत्त्वाविरोधात् । काययोगसंख्याप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

कायजोगो सत्तविहो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो वेउव्वियकायजोगो वेउव्वियमिस्सकायजोगो आहारकायजोगो आहारमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो चेदि ॥ ५६ ॥

औदारिकशरीरजनितवीर्याज्जीवप्रदेशपरिस्पन्दनिबन्धनप्रयत्न औदारिककाययोगः । कार्मणौदारिकस्कन्धाभ्यां जनितवीर्यात्तत्परिस्पन्दनार्थः प्रयत्न औदारिकमिश्रकाययोगः । उदारः पुरुर्महानित्यर्थः, तत्र भवं शरीरमौदारिकम् । अथ स्यान्न महत्त्वमौदारिकशरीरस्य । कथमेतदवगम्यते ? वर्गणासूत्रात् । किं तद्वर्गणासूत्रमिति चेदुच्यते 'सव्वत्थोवा ओरालिय-सरीर-दव्व-वग्गणा-पदेसा, वेउव्विय-सरीर-दव्व-वग्गणा-पदेसा असंखेज्जगुणा, आहार-सरीर-दव्व-वग्गणा-पदेसा असंखेज्जगुणा, तेया-सरीर-दव्व-वग्गणा-पदेसा अणंतगुणा, भासा-दव्व-वग्गणा-पदेसा अणंतगुणा, मण-दव्व-वग्गणा-पदेसा अणंतगुणा, कम्मइय-सरीर-दव्व-वग्गणा-पदेसा अणंतगुणा त्ति ।' न, अवगाहनापेक्षयौदारिकशरीरस्य महत्त्वोपपत्तेः । यथा 'सव्वत्थोवा कम्मइय-सरीर-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा, मण-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा, भासा-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा, तेया-सरीर-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहार-सरीर-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा, वेउव्विय-सरीर-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा, ओरालिय-सरीर-दव्व-वग्गणाए ओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति ।', उत्तं च— पुरु महदुदारुरालं एयट्ठो तं वियाण तम्हि भवं । ओरालियं ति वुत्तं ओरालियकायजोगो सो ॥ १६० ॥ ओरालियमुत्तत्थं विजाण मिस्सं च अपरिपुण्णं ति ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो तेण संपजोगो ओरालियमिस्सको जोगो ॥ १६१ ॥ अणिमादिर्विक्रिया, तद्योगात्पुद्गलाश्च विक्रियेति भण्यन्ते । तत्र भवं शरीरं वैक्रियिकम् । तदवष्टम्भतः समुत्पन्नपरिस्पन्देन योगो वैक्रियिककाययोगः । कार्मणवैक्रियिकस्कन्धतः समुत्पन्नवीर्येण योगो वैक्रियिकमिश्रकाययोगः । उत्तं च— विविह-गुण-इड्ढि-जुत्तं वेउव्वियमहव विकिरिया चेव । तिस्से भवं च णेयं वेउव्वियकायजोगो सो ॥ १६२ ॥ वेउव्वियमुत्तत्थं विजाण मिस्सं च अपरिपुण्णं ति । जो तेण संपजोगो वेउव्वियमिस्सजोगो सो ॥ १६३ ॥ आहरत्यात्मसात्करोति सूक्ष्मानर्थाननेनेत्याहारः । तेन आहारकायेन योग आहारकाययोगः । कथमौदारिकस्कन्धसम्बद्धानां जीवावयवानामन्यशरीरेण हस्तमात्रेण शङ्खधवलेन शुभसंस्थानेन योग इति चेन्नैष दोषः, अनादिबन्धनबद्धत्वतो मूर्तानां जीवावयवानां मूर्तेन शरीरेण सम्बन्धं प्रति विरोधासिद्धेः । तत एव न पुनः सङ्घटनमपि विरोधमास्कन्देत् । अथ स्याज्जीवस्य शरीरेण सम्बन्धकृदायुस्तयोर्वियोगो मरणम् । न च गलितायुषस्तस्मिन् शरीरे पुनरुत्पत्तिर्विरोधात् । ततो न तस्यौदारिकशरीरेण पुनः सङ्घटनमिति । अत्र प्रतिविधीयते, न तावज्जीवशरीरयोर्वियोगो मरणं तयोः संयोगस्योत्पत्तिप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, पूर्वायुषामुदयप्राप्तोत्तरभवसम्बन्ध्यायुःकर्मणां तत्परित्यक्तानुपात्तपूर्वोत्तरशरीराणामपि जीवानामुत्पत्त्युपलम्भात् । भवतु तथोत्पत्तिर्मरणं पुनर्जीवशरीरवियोग एवेति चेदस्तु सर्वात्मना तयोर्वियोगो मरणं नैकदेशेन, आगलादप्युपसंहृतजीवावयवानां मरणानुपलम्भात् जीविताच्छिन्नहस्तेन व्यभिचाराच्च । न पुनरस्यार्थः सर्वावयवैः पूर्वशरीरपरित्यागः समस्ति येनास्य मरणं जायेत । न चैतच्छरीरं गच्छत्पर्वतादिना प्रतिहन्यते शस्त्रैश्छिद्यतेऽग्निना दह्यते वा सूक्ष्मत्वाद्वैक्रियिकशरीरवत् । आहारकार्मणस्कन्धतः समुत्पन्नवीर्येण योग आहारमिश्रकाययोगः । उत्तं च—आहरदि अणेण मुणी सुहुमे अट्ठे सयस्स संदेहे । गत्ता केवलि-पासं तम्हा आहारगो जोगो ॥ १६४ ॥ आहारयमुत्तत्थं वियाण मिस्सं च अपरिपुण्णं ति । जो तेण संपजोगो आहारयमिस्सको जोगो ॥ १६५ ॥ कर्मैव कार्मणं शरीरम्, अष्टकर्मस्कन्ध इति यावत् । अथवा कर्मणि भवं कार्मणं शरीरं नामकर्मावयवस्य कर्मणो ग्रहणम् । तेन योगः कार्मणकाययोगः । केवलेन कर्मणा जनितवीर्येण सह योग इति यावत् । उत्तं च— कम्मेव च कम्म-भवं कम्मइयं तेण जो दु संजोगो । कम्मइयकायजोगो एग-विग-तिगेसु समएसु ॥ १६६ ॥ केषां ह्यौदारिककाययोगो भवतीत्येतत्प्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो तिरिक्ख-मणुस्साणं ॥ ५७ ॥

देवनारकाणां किमित्यौदारिकशरीरोदयो न भवेत् ? न, स्वाभाव्याद्देवनरकगतिकर्मोदयेन सहौदारिककर्मोदयस्य विरोधाद्वा । न च तिरश्चां मनुष्याणां चौदारिककाययोग एवेति नियमोऽस्ति तत्र कार्मणकाययोगादीनामभावापत्तेः । किं तु औदारिककाययोगस्तिर्यङ्मनुष्याणामेव । केषु वैक्रियिककाययोगो भवतीत्येतत्प्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेउव्वियकायजोगो वेउव्वियमिस्सकायजोगो देवणेरइयाणं ॥ ५८ ॥

तिरश्चां मनुष्याणां च किमिति तदुदयो न भवेत् ? न, तिर्यङ्मनुष्यगतिकर्मोदयेन सह वैक्रियिकोदयस्य विरोधात्स्वभावाद्वा । न हि स्वभावाः परपर्यनुयोगार्हा अतिप्रसङ्गात् । तिर्यञ्चो मनुष्याश्च वैक्रियिकशरीराः श्रूयन्ते तत्कथं घटत इति चेन्न, औदारिकशरीरं द्विविधं विक्रियात्मकमविक्रियात्मकमिति । तत्र यद्विक्रियात्मकं तद्वैक्रियिकमिति तत्रोक्तं न तदत्र परिगृह्यते विविधगुणर्द्ध्यभावात् । अत्र विविधगुणर्द्ध्यात्मकं परिगृह्यते, तच्च देवनारकाणामेव । आहारशरीरस्वामिप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

आहारकायजोगो आहारमिस्सकायजोगो संजदाणमिड्डिपत्ताणं ॥ ५९ ॥

आहारर्द्धिप्राप्तेः किमु संयता ऋद्धिप्राप्ता उत वैक्रियिकर्द्धिप्राप्तास्त ऋद्धिप्राप्ता इति । किं चातो नाद्यः पक्ष आश्रयणयोग्यः, इतरेतराश्रयदोषासंजनात् । कथम् ? यावन्नाहारर्द्धिरुत्पद्यते न तावत्तेषामृद्धिप्राप्तत्वम्, यावन्नर्द्धिप्राप्तत्वं न तावत्तेषामाहारर्द्धिरिति । न द्वितीयविकल्पोऽपि, ऋद्धेरुपर्यभावात् । भावे वा आहारशरीरवतां मनःपर्ययज्ञानमपि जायेत विशेषाभावात् । न चैवमार्षेण सह विरोधादिति नादिपक्षोक्तदोषः समाढौकते यतो नाहारर्द्धिरात्मानमपेक्ष्योत्पद्यते स्वात्मनि क्रियाविरोधात् । अपि तु संयमातिशयापेक्षया तस्याः समुत्पत्तिरिति । ऋद्धिप्राप्तसंयतानामिति विशेषणमपि घटते तदुत्पत्तावपि ऋद्धिहेतुसंयम ऋद्धिः कारणे कार्योपचारात् । ततश्चर्द्धिहेतुसंयमप्राप्ता यतय ऋद्धिप्राप्तास्तेषामाहारर्द्धिरिति सिद्धम् । संयमविशेषजनिताहारशरीरोत्पादनशक्तिराहारर्द्धिरिति वा नेतरेतराश्रयदोषः । न द्वितीयविकल्पोक्तदोषोऽप्यनभ्युपगमात् । नैष नियमोऽप्यस्त्येकस्मिन्नक्रमेण नर्द्धयो भूयस्यो भवन्तीति गणभृत्सु सप्तानामपि ऋद्धीनामक्रमेण सत्त्वोपलम्भात् । आहारर्द्ध्या सह मनःपर्ययस्य विरोधो दृश्यत इति चेद्भवतु नाम दृष्टत्वात् । न चानेन विरोध इति सर्वाभिर्विरोधो वक्तुं पार्यतेऽव्यवस्थापत्तेरिति । कार्मणशरीरस्वामिप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

कम्मइयकायजोगो विग्गहगइ-समावण्णाणं केवलीणं वा समुग्घाद-गदाणं ॥ ६० ॥

विग्रहो देहस्तदर्था गतिर्विग्रहगतिः । औदारिकादिशरीरनामोदयात्स्वनिर्वर्तनसमर्थान् विविधान् पुद्गलान् गृह्णाति विगृह्यतेऽसौ संसारिणा इति वा विग्रहो देहः । विग्रहाय गतिर्विग्रहगतिः । अथवा विरुद्धो ग्रहो विग्रहो व्याघातः पुद्गलादाननिरोध इत्यर्थः । विग्रहेण पुद्गलादाननिरोधेन गतिर्विग्रहगतिः । अथवा विग्रहो व्याघातः कौटिल्यमित्यनर्थान्तरम् । विग्रहेण कौटिल्येन गतिर्विग्रहगतिः । तां सम्यगापन्नाः प्राप्ता विग्रहगतिसमापन्नाः, तेषां विग्रहगतिसमापन्नानाम् । सर्वाणि शरीराणि यतः प्ररोहन्ति तद्बीजभूतं

कार्मणशरीरं कार्मणकाय इति भण्यते। वाङ्मनःकायवर्गणानिमित्त आत्मप्रदेशपरिस्पन्दो योगो भवति। कार्मणकायकृतो योगः कार्मणकाययोगः। स विग्रहगतौ वक्रगतौ वर्तमानजीवानां भवति। एतदुक्तम्, गतेर्गत्यन्तरं व्रजतां प्राणिनां चतस्रो गतयो भवन्ति, इषुगतिः पाणिमुक्ता लाङ्गलिका गोमूत्रिका चेति। तत्राविग्रहा प्राथमिकी, शेषा विग्रहवत्यः। ऋज्वी गतिरिषुगतिरेकसमयिकी। यथा पाणिना तिर्यक्प्रक्षिप्तस्य द्रव्यस्य गतिरेकविग्रहा गतिः, तथा संसारिणामेकविग्रहा गतिः पाणिमुक्ता द्वैसमयिकी। यथा लाङ्गलं द्विवक्रं तथा द्विविग्रहा गतिर्लाङ्गलिका त्रैसमयिकी। यथा गोमूत्रिका बहुवक्रा तथा त्रिविग्रहा गतिर्गोमूत्रिका चातुःसमयिकी। तत्र कार्मणकाययोगः स्यादिति। स्वस्थितप्रदेशादारभ्योर्ध्वाधस्तिर्यक्काकाशप्रदेशानां क्रमसन्निविष्टानां पङ्क्तिः श्रेणिरित्युच्यते। तयैव जीवानां गमनं नोच्छ्रेणिरूपेण। ततस्त्रिविग्रहा गतिर्न विरुद्धा जीवस्येति। घातनं घातः स्थित्यनुभवयोर्विनाश इति यावत्। कथमनुक्तमनधिकृतं चावगम्यत इति चेन्न, प्रकरणवशात्तदवगतेः। उपरि घात उद्घातः, समीचीन उद्घातः समुद्घातः। कथमस्य घातस्य समीचीनत्वमिति चेन्न, भूयः कालनिष्पाद्यमानघातेभ्योऽस्यैकसमयिकस्य समीचीनत्वाविरोधात्। समुद्घातं गताः समुद्घातगताः। कथमेकस्मिन् गम्यगमकभावश्चेन्न, पर्यायपर्यायिणां कथंचिद् भेदविवक्षायां तदविरोधात्। तेषां समुद्घातगतानां केवलिनां कार्मणकाययोगो भवेत्। 'वा' शब्दः समुच्चयप्रतिपादकः। अथ स्यात्केवलिनां समुद्घातः सहेतुको निर्हेतुको वा? न द्वितीयविकल्पः, सर्वेषां समुद्घातगमनपूर्वकं मुक्तिप्रसङ्गात्। अस्तु चेन्न, लोकव्यापिनां केवलिनां विंशतिसंख्यावर्षपृथक्त्वानन्तरनियमानुपपत्तेः। न प्रथमपक्षोऽपि तद्धेत्वनुपलम्भात्। न तावदघातिकर्मणां स्थित्या आयुष्यस्थितेरसमानता हेतुः, क्षीणकषायचरमावस्थायां सर्वकर्मणां समानत्वाभावात् सर्वेषामपि तत्प्रसङ्गादिति। अत्र प्रतिविधीयते। यतिवृषभोपदेशात्सर्वाघातिकर्मणां क्षीणकषायचरमसमये स्थितेः साम्याभावात्सर्वेऽपि कृतसमुद्घाताः सन्तो निर्वृतिमुपढौकन्ते। येषामाचार्याणां लोकव्यापिकेवलिषु विंशतिसंख्यानियमस्तेषां मतेन केचित्समुद्घातयन्ति, केचिन्न समुद्घातयन्ति। के न समुद्घातयन्ति? येषां संसृतिव्यक्तिः कर्मस्थित्याः समाना, ते न समुद्घातयन्ति, शेषाः समुद्घातयन्ति। अनिवृत्त्यादिपरिणामेषु समानेषु सत्सु किमिति स्थित्योर्वैषम्यम्? न, व्यक्तिस्थितिघातहेतुष्वनिवृत्तपरिणामेषु समानेषु सत्सु संसृतेस्तत्समानत्वविरोधात्। संसारविच्छित्तेः किं कारणम्? द्वादशाङ्गावगमः, तत्तीव्रभक्तिः, केवलिसमुद्घातोऽनिवृत्तिपरिणामाश्च। न चैते सर्वेषु सम्भवन्ति दशनवपूर्वधारिणामपि क्षपकश्रेण्यारोहणदर्शनात्। न तत्र संसारसमानकर्मस्थितयः समुद्घातेन विना स्थितिकाण्डकान्यन्तर्मुहूर्तेन निपतनस्वभावानि पल्योपमस्यासंख्येयभागायतानि संख्येयावलिकायतानि च निपातयन्त आयुःसमानि कर्माणि कुर्वन्ति। अपरे समुद्घातेन समानयन्ति। न चैषः संसारघातः केवलिनि प्राक् सम्भवति स्थितिकाण्डघातवत्समानपरिणामत्वात्। परिणामातिशयाभावे पश्चादपि मा भूत्तद्घात इति चेन्न, वीतरागपरिणामेषु समानेषु सत्स्वप्यन्येभ्योऽन्तर्मुहूर्तायुरपेक्ष्यात्मनः समुत्पन्नेभ्यस्तद्घातोपपत्तेः। अन्यैराचार्यै-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रव्याख्यातमिममर्थं भणन्तः कथं न सूत्रप्रत्यनीकाः ? न, वर्षपृथक्त्वान्तरसूत्रवशवर्तिनां तद्विरोधात् । छम्मासाउवसेसे उप्पण्णं जस्स केवलं णाणं । स-समुग्घाओ सिज्झइ सेसा भज्जा समुग्घाए ॥ १६७ ॥ एदिस्से गाहाए उवएसो किण्ण गहिओ ? ण, भज्जत्ते कारणाणुवलंभादो । जेसिं आउ-समाइं णामा गोदाणि वेयणीयं च । ते अकय-समुग्घाया वच्चंतियरे समुग्घाए ॥ १६८ ॥ णेदं भज्जत्ते कारणं सव्व-जीवेसु समेहि अणियट्टि-परिणामेहि पत्त-घादाणं ट्ठिदीणमाउ-समाणत्त-विरोहादो, अघाइ-तियस्स खीण-कसाय-चरिम-समए जहण्ण-ट्ठिदिसंतस्स वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-पमाणत्तुवलंभादो । नागमस्तर्कगोचर इति चेन्न, एतयोर्गाथयोरागमत्वेन निर्णयाभावाद् । भावे वास्तु गाथयोरेवोपादानम् । इदानीं काययोगस्याध्वानज्ञापनार्थमुत्तरसूत्रचतुष्टयमाह—

कायजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो एइंदियप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ६१ ॥

काययोग एवेत्यवधारणाभावान्न वाङ्मनसयोरभावः । एवं शेषाणामपि वाच्यमिति । एकेन्द्रियप्रभृत्यासयोगकेवलिन औदारिकमिश्रकाययोगिन इति प्रतिपाद्यमाने देशविरतादिक्षीणकषायान्तानामपि तदस्तित्वं प्राप्नुयादिति चेन्न, प्रभृतिशब्दोऽयं व्यवस्थायां प्रकारे च वर्तते । अत्र प्रभृतिशब्दः प्रकारे परिगृह्यते, यथा सिंहप्रभृतयो मृगा इति । ततो न तेषां ग्रहणम् । व्यवस्थावाचिनोऽपि ग्रहणे न दोषः 'ओरालिय-मिस्स-कायजोगो अपज्जत्ताणं' ति बाधकसूत्रसम्भवाद्वा । वैक्रियिककाययोगाधिपतिप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

वेउव्वियकायजोगो वेउव्वियमिस्सकायजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ ६२ ॥

अत्र 'च'शब्दः कर्तव्योऽन्यथा समुच्चयावगमानुपपत्तेरिति न, च-शब्दमन्तरेणापि समुच्चयार्थावगतेः, यथा पृथिव्यप्तेजोवायुरित्यत्र । सम्यङ्मिथ्यादृष्टेरपि वैक्रियिकमिश्रकाययोगः प्राप्नुयादिति चेन्न, उक्तोत्तरत्वात् । 'सम्मामिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता, वेउव्विय-मिस्स-कायजोगो अपज्जत्ताणं' इत्याभ्यां वा सूत्राभ्यामवसीयते यथा न सम्यङ्मिथ्यादृष्टेर्वैक्रियिकमिश्रकाययोगः समस्तीति । आहारकाययोगस्वामिप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

आहारकायजोगो आहारमिस्सकायजोगो एक्कम्हि चेव पमत्तसंजदट्ठाणे ॥ ६३ ॥

अप्रमादिनां संयतानां किमित्याहारकाययोगो न भवेदिति चेन्न, तत्र तदुत्थापने निमित्ताभावात् । तदुत्थापने किं निमित्तमिति चेदाज्ञाकनिष्ठतायाः समुत्पन्नप्रमादः, असंयमबहुलतोत्पन्नप्रमादश्च । न च प्रमादनिबन्धनोऽप्रमादिनि भवेदतिप्रसङ्गात् । अथवा स्वभावोऽयं यदाहारकाययोगः प्रमादिनामेवोपजायते, नाप्रमादिनामिति । कार्मणकाययोगाधारजीवप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कम्मइयकायजोगो एइंदियप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ६४ ॥

देशविरतादिक्षीणकषायान्तानामपि कार्मणकाययोगस्यास्तित्वं प्राप्नोत्यस्मात्सूत्रादिति चेन्न, 'संजदासंजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' इत्येतस्मात्सूत्रात्तत्र तदभावावगतेः । न च समुद्धातादृते पर्याप्तानां कार्मणकाययोगोऽस्ति । किमिति स तत्र नास्तीति चेद्विग्रहगतेरभावात् । देवविद्याधरादीनां पर्याप्तानामपि वक्रा गतिरुपलभ्यते चेन्न, पूर्वशरीरं परित्यज्योत्तरशरीरमादातुं व्रजतो वक्रगतेर्विवक्षितत्वात् । योगत्रयस्य स्वामिप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

मणजोगो वचिजोगो कायजोगो सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ ६५ ॥

चतुर्णां मनसां सामान्यं मनः, तज्जनितवीर्येण परिस्पन्दलक्षणेन योगो मनोयोगः । चतुर्णां वचसां सामान्यं वचः, तज्जनितवीर्येणात्मप्रदेशपरिस्पन्दलक्षणेन योगो वाग्योगः । सप्तानां कायानां सामान्यं कायः, तेन जनितेन वीर्येण जीवप्रदेशपरिस्पन्दलक्षणेन योगः काययोगः । एते त्रयोऽपि योगाः क्षयोपशमापेक्षया त्र्यात्मकैकरूपमापन्नाः संज्ञिमिथ्यादृष्टेरारभ्यासयोगकेवलिन इति क्रमेण सम्भवापेक्षया वा स्वामित्वमुक्तम् । काययोग एकेन्द्रियेष्वप्यस्तीति चेन्न, वाङ्मनसाभ्यामविनाभाविनः काययोगस्य विवक्षितत्वात् । तथा वचसोऽप्यभिधातव्यम् । द्विसंयोगप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

वचिजोगो कायजोगो बीइंदियप्पहुडि जाव असण्णिपंचिंदिया त्ति ॥ ६६ ॥

अत्र सामान्यवाक्काययोर्विवक्षितत्वात् द्वीन्द्रिय आदिर्भवत्यसंज्ञिनश्च पर्यवसानम् । विशेषे तु पुनरवलम्ब्यमाने तुरीयस्यैव वचसः सत्त्वमिति । तदाद्यन्तव्यवहारो न घटामटेत्, उपरिष्टादपि वाक्काययोगौ विद्येते ततो नासंज्ञिनः पर्यवसानमिति चेन्न, उपरि त्रयाणामपि सत्त्वात् । अस्तु चेन्न, निरुद्धद्विसंयोगस्य त्रिसंयोगेन सह विरोधात् । एकसंयोगप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

कायजोगो एइंदियाणं ॥ ६७ ॥

एकेन्द्रियाणामेकः काययोग एव, द्वीन्द्रियादीनामसंज्ञिपर्यन्तानां वाक्काययोगौ द्वावेव, शेषास्त्रियोगाः । प्राक् सामान्येन योगस्य सत्त्वमभिधायेदानीं व्यवच्छेद्येऽमुष्मिन् कालेऽस्य सत्त्वममुष्मिंश्च न सत्त्वमिति प्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

मणजोगो वचिजोगो पज्जत्ताणं अत्थि, अपज्जत्ताणं णत्थि ॥ ६८ ॥

क्षयोपशमापेक्षयाऽपर्याप्तकालेऽपि तयोः सत्त्वं न विरोधमास्कन्देदिति चेन्न, वाङ्मनसाभ्यामनिष्पन्नस्य तद्योगानुपपत्तेः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पर्याप्तानामपि विरुद्धयोगमध्यासितावस्थायां नास्त्येवेति चेन्न, सम्भवापेक्षया तत्र तत्सत्त्वप्रतिपादनात्, तच्छक्तिसत्त्वापेक्षया वा । सर्वत्र समुच्चयार्थावद्योतक-च-शब्दाभावेऽपि समुच्चयार्थः पदैरेवावद्योत्यत इत्यवसेयः । काययोगसामान्यस्य सत्त्वप्रदेशप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

कायजोगो पज्जत्ताण वि अत्थि, अपज्जत्ताण वि अत्थि ॥ ६९ ॥

'अपि' शब्दः समुच्चयार्थे द्रष्टव्यः । कः समुच्चयः ? एकस्य निर्दिष्टप्रदशद्धिप्रभृतेरुपनिपातः समुच्चयः । द्विरस्ति-शब्दोपादानमनर्थकमिति चेन्न, विस्तररुचिसत्त्वानुग्रहार्थत्वात् । संक्षेपरुचयो नानुग्रहीताश्चेन्न, विस्तररुचिसत्त्वानुग्रहस्य संक्षेपरुचिसत्त्वानुग्रहाविनाभावित्वात् । पर्याप्तस्यैवैते योगा भवन्ति, एते चोभयोरिति वचनमाकर्ण्य पर्याप्तिविषयजातसंशयस्य शिष्यस्य सन्देहापोहनार्थमुत्तरसूत्राण्यभाणीत्—

छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ ॥ ७० ॥

पर्याप्तिनिःशेषलक्षणोपलक्षणार्थं तत्संख्यामेव प्रागाह । आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिःश्वासभाषामनसां निष्पत्तिः पर्याप्तिः । ताश्च षट् भवन्ति, आहारपर्याप्तिः, शरीरपर्याप्तिः, इन्द्रियपर्याप्तिः, आनापानपर्याप्तिः, भाषापर्याप्तिः, मनःपर्याप्तिरिति । एतासामेवानिष्पत्तिरपर्याप्तिः । ताश्च षट् भवन्ति, आहारापर्याप्तिः, शरीरापर्याप्तिः, इन्द्रियापर्याप्तिः, आनापानापर्याप्तिः, भाषापर्याप्तिः, मनोऽपर्याप्तिरिति । एतासां द्वादशानामपि पर्याप्तीनां स्वरूपं प्रागुक्तमिति पौनरुक्तिभयादिह नोच्यते । इदानीं तासामाधारप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमवोचत्—

सण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ ७१ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टीनामपि षट् पर्याप्तयो भवन्तीति चेन्न, तत्र गुणेऽपर्याप्तकालाभावात् । देशविरताद्युपरितनगुणानां किमिति षट् पर्याप्तयो न सन्तीति चेन्न, पर्याप्तिर्नाम षण्णां पर्याप्तीनां समाप्तिः न सोपरितनगुणेष्वस्ति अपर्याप्तिचरमावस्थायामेकसमयिक्या उपरि सत्त्वविरोधात् । षट्पर्याप्तिश्रवणात् षडेव पर्याप्तयः सन्तीति समुत्पन्नप्रत्ययस्य शिष्यस्यावधारणात्मकप्रत्ययनिराकरणार्थमुत्तरसूत्रमवोचत्—

पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ ॥ ७२ ॥

पर्याप्तीनामपर्याप्तीनां च लक्षणमभाणीति नेदानीं भण्यते । षण्णां पर्याप्तीनामन्तः पञ्चापि सन्तीति पृथक् पर्याप्तिपञ्चकोपदेशोऽनर्थक इति चेन्न, क्वचिज्जीवविशेषे षडेव पर्याप्तयो भवन्ति, क्वचित्पञ्चैव भवन्तीति प्रतिपादनफलत्वात् । काः पञ्च पर्याप्तय इति चेन्मनोवर्जाः शेषाः पञ्च । ताः केषां भवन्तीति संशयानस्य शिष्यस्यारेकानिराकरणार्थमुत्तरसूत्रं वक्ष्यति— ॥ ७२ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीइंदियप्पहुडि जाव असण्णिपंचिंदिया त्ति ॥ ७३ ॥

विकलेन्द्रियेष्वस्ति मनः, तत्कार्यस्य विज्ञानस्य तत्र सत्त्वान्मनुष्येष्विवेति न प्रत्यवस्थातुं युक्तं तत्रतनस्य विज्ञानस्य तत्कार्यत्वासिद्धेः । मनुष्येषु विज्ञानस्य तत्कार्यत्वं दृश्यत इति चेदस्तु, क्वचिद् दृष्टत्वात् । मनसः कार्यत्वेन प्रतिपन्नविज्ञानेन सह तत्रतनविज्ञानस्य ज्ञानत्वं प्रत्यविशेषान्मनोनिबन्धनत्वमनुमीयत इति चेन्न, भिन्नजातिस्थितविज्ञानेन सहाविशेषानुपपत्तेः । न प्रत्यक्षेणाप्येष आगमो बाध्यते तत्र प्रत्यक्षस्य वृत्त्यभावात् । विकलेन्द्रियेषु मनसोऽभावः कुतोऽवसीयत इति चेदार्षात् । कथमार्षस्य प्रामाण्यमिति चेत्स्वाभाव्यात्प्रत्यक्षस्येव । पुनरपि पर्याप्तिसंख्यासत्त्वभेदप्रदर्शनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ ॥ ७४ ॥

केषुचित्प्राणिषु चतस्र एव पर्याप्तयोऽपर्याप्तयो वा भवन्ति । कास्ताश्चतस्र इति चेदाहारशरीरेन्द्रियानापानपर्याप्तय इति । शेषं सुगमम् । चतुर्णामपि पर्याप्तीनामधिपतिजीवप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

एइंदियाणं ॥ ७५ ॥

ताश्चतस्रोऽपि पर्याप्तय एकेन्द्रियाणामेव नान्येषाम् । एकेन्द्रियाणां नोच्छ्वासमुपलभ्यते चेन्न, आर्षात्तदुपलम्भात् । प्रत्यक्षेणागमो बाध्यत इति चेद्भवत्वस्य बाधा प्रत्यक्षात्प्रत्यक्षीकृताशेषप्रमेयात् । न चेन्द्रियजं प्रत्यक्षं समस्तवस्तुविषयं येन तदविषयीकृतस्य वस्तुनो भावो भेदीयते । एवं पर्याप्त्यपर्याप्तीरभिधाय साम्प्रतममुष्मिन्नयं योगो भवत्यमुष्मिंश्च न भवतीति प्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं ॥ ७६ ॥

षड्भिः पञ्चभिश्चतसृभिर्वा पर्याप्तिभिर्निष्पन्नाः परिनिष्ठितास्तिर्यञ्चो मनुष्याश्च पर्याप्ताः । किमेकया पर्याप्त्या निष्पन्नः पर्याप्त उत साकल्येन निष्पन्न इति ? शरीरपर्याप्त्या निष्पन्नः पर्याप्त इति भण्यते । तत्रौदारिककाययोगो निष्पन्नशरीरावष्टम्भबलेनोत्पन्नजीवप्रदेशपरिस्पन्देन योग औदारिककाययोगः । अपर्याप्तावस्थायामौदारिकमिश्रकाययोगः । कार्मणौदारिकस्कन्धनिबन्धनजीवप्रदेशपरिस्पन्देन योग औदारिकमिश्रकाययोग इति यावत् । पर्याप्तावस्थायां कार्मणशरीरस्य सत्त्वात्तत्राप्युभयनिबन्धनात्मप्रदेशपरिस्पन्द इति औदारिकमिश्रकाययोगः किमु न स्यादिति चेन्न, तत्र तस्य सतोऽपि जीवप्रदेशपरिस्पन्दस्याहेतुत्वात् । न पारम्पर्यकृतं तद्धेतुत्वं तस्यौपचारिकत्वात् । न तदप्यविवक्षितत्वात् । अथ स्यात्परिस्पन्दस्य बन्धहेतुत्वे संचरदभ्राणामपि कर्मबन्धः प्रसजतीति न, कर्मजनितस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैतन्यपरिस्पन्दस्यास्रवहेतुत्वेन विवक्षितत्वात् । न चाभ्रपरिस्पन्दः कर्मजनितो येन तद्धेतुतामास्कन्देत् । वैक्रियिककाययोगस्य सत्त्वोद्देशप्रतिपादनार्थमाह—

वेउव्वियकायजोगो पज्जत्ताणं वेउव्वियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं ॥ ७७ ॥

पर्याप्तावस्थायां वैक्रियिककाययोगे सति तत्र शेषयोगाभावः स्यादिति चेन्न, तत्र वैक्रियिककाययोग एवास्तीत्यवधारणाभावात् । अवधारणाभावेऽपर्याप्तावस्थायां शेषयोगानामपि सत्त्वमापतेदिति चेत्सत्यम्, कार्मणकाययोगस्य सत्त्वोपलम्भात् । न तद्वत्तत्र वाङ्मनसयोरपि सत्त्वमपर्याप्तानां तयोरभावस्योक्तत्वात् । आहारकाययोगसत्त्वप्रदेशप्रतिपादनायाह—

आहारकायजोगो पज्जत्ताणं आहारमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं ॥ ७८ ॥

आहारशरीरोत्थापकः पर्याप्तः संयतत्वान्यथानुपपत्तेः । तथा चाहारमिश्रकाययोगोऽपर्याप्तकस्येति न घटामटेदिति चेन्न, अनवगतसूत्राभिप्रायत्वात् । तद्यथा, भवत्वसौ पर्याप्तक औदारिकशरीरगतषट्पर्याप्त्यपेक्षया, आहारशरीरगतपर्याप्तिनिष्पत्त्यभावापेक्षया त्वपर्याप्तकोऽसौ । पर्याप्तापर्याप्तत्वयोर्नैकत्राक्रमेण संभवो विरोधादिति चेन्न, पर्याप्तापर्याप्तयोगयोरक्रमेणैकत्र न सम्भव इतीष्टत्वात् । कथं न पूर्वोऽभ्युपगम इति विरोध इति चेन्न, भूतपूर्वगतिन्यायापेक्षया विरोधासिद्धेः । विनष्टौदारिकशरीरसम्बन्धषट्पर्याप्तेरपरिनिष्ठिताहारशरीरगतपर्याप्तेरपर्याप्तस्य कथं संयम इति चेन्न, संयमस्यास्रवनिरोधलक्षणस्य मन्दयोगेन सह विरोधासिद्धेः । विरोधे वा न केवलिनोऽपि समुद्घातगतस्य संयमः, तत्राप्यपर्याप्तकयोगास्तित्वं प्रत्यविशेषात् । 'संजदासंजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' इत्यनेनार्षेण सह कथं न विरोधः स्यादिति चेन्न, द्रव्यार्थिकनयापेक्षया प्रवृत्तसूत्रस्याभिप्रायेणाहारशरीरानिष्पत्त्यवस्थायामपि षट्पर्याप्तीनां सत्त्वाविरोधात् । कार्मणकाययोगः पर्याप्तेष्वपर्याप्तेषूभयत्र वा भवतीति नोक्तम्, तन्निश्चयः कुतो भवेत्? 'कम्मइयकायजोगो विग्गहगइ-समावण्णाणं केवलीणं वा समुग्घाद-गदाणं' इत्येतस्मात्सूत्रादपर्याप्तेष्वेव कार्मणकाययोग इति निश्चीयते । पर्याप्तिष्वपर्याप्तिषु च योगानां सत्त्वमसत्त्वं चाभिधायेदानीं गतिषु तत्र गुणस्थानानां सत्त्वासत्त्वप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

णेरइया मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ ७९ ॥

नारका इत्यनेन बहुवचनेन स्यादित्येतस्यैकवचनस्य न सामानाधिकरण्यमिति चेन्न, एकस्य नानात्मकस्य नानात्वाविरोधात् । विरुद्धयोः कथमेकमधिकरणमिति चेन्न, दृष्टत्वात् । न हि दृष्टेऽनुपपन्नता । नारका मिथ्यादृष्ट्योऽसंयतसम्यग्दृष्टयश्च पर्याप्ताश्चापर्याप्ताश्च भवन्ति । समुच्चयावगतये 'च'शब्दोऽत्र वक्तव्यः? न, सामर्थ्यलभ्यत्वात् । तत्रतनशेषगुणद्वयप्रदेशप्रतिपादनार्थमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ८० ॥

नारका निष्पन्नषट्पर्याप्तयः सन्त एताभ्यां गुणाभ्यां परिणमन्ते नापर्याप्तावस्थायाम्। किमिति तत्र तौ नोत्पद्येते? इति चेत्तयोस्तत्रोत्पत्तिनिमित्तपरिणामाभावात्। सोऽपि किमिति तयोर्न स्यादिति चेत्स्वाभाव्यात्। नारकाणामग्निसम्बन्धाद्भस्मसाद्भावमुपगतानां पुनर्भस्मनि समुत्पद्यमानानामपर्याप्ताद्धायां गुणद्वयस्य सत्त्वाविरोधान्नियमेन पर्याप्ता इति न घटत इति चेन्न, तेषां मरणाभावात्। भावे वा न ते तत्रोत्पद्यन्ते, 'णिरयादो णेरइया उवट्टिदसमाणा णो णिरयगदिं जांति णो देवगदिं जांति, तिरिक्खगदिं मणुसगदिं च जांति' इत्यनेनार्षेण निषिद्धत्वात्। आयुषोऽवसाने म्रियमाणानामेष नियमश्चेन्न, तेषामपमृत्योरसत्त्वात्। भस्मसाद्भावमुपगतदेहानां तेषां कथं पुनर्मरणमिति चेन्न, देहविकारस्यायुर्विच्छित्त्यनिमित्तत्वात्। अन्यथा बालावस्थातः प्राप्तयौवनस्यापि मरणप्रसङ्गात्। नारकाणामोघमभिधायादेशप्रतिपादनार्थमाह—

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ ८१ ॥

प्रथमायां पृथिव्यां ये नारकास्तेषां नारकाणां सामान्योक्तरूपेण भवन्ति। कुतो? विशेषाभावात्। यदि सामान्यप्ररूपणया प्रथमपृथिवीगतनारका एव निरूपिता भवेयुरलं तया, विशेषनिरूपणतयैव तदवगतेरिति? न, द्रव्यार्थिकनयात् सत्त्वानुग्रहार्थं तत्प्रवृत्तेः। विशेषप्ररूपणमन्तरेण न सामान्यप्ररूपणतोऽर्थावगतिर्भवतीति तथा निरूपणमनर्थकमिति चेन्न, बुद्धीनां वैचित्र्यात्। तथाविधबुद्धयो नेदानीमुपलभ्यन्त इति चेन्न, अस्यार्षस्य त्रिकालगोचरानन्तप्राण्यपेक्षया प्रवृत्तत्वात्। शेषपृथिवीनारकाणां प्रतिपादनार्थमाह—

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया मिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ ८२ ॥

अधस्तनीषु षट्सु पृथिवीषु मिथ्यादृष्टीनामुत्पत्तेः सत्त्वात्। पृथिवीशब्दः प्रत्येकमभिसम्बन्धनीयः। सुगममन्यत्। शेषगुणस्थानानां तत्र क सत्त्वं क च न भवेदिति जातारेकस्य भव्यस्यारेकानिरसनार्थमाह—

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ८३ ॥

भवतु नाम सम्यग्मिथ्यादृष्टेस्तत्रानुत्पत्तिः। सम्यग्मिथ्यात्वपरिणाममधिष्ठितस्य मरणाभावात्। भवति च तस्य मरणं गुणान्तरमुपादाय। न च तत्र स गुणोऽस्तीति। किन्त्वेतन्न युज्यते शेषगुणस्थानप्राणिनस्तत्र नोत्पद्यन्त इति? न तावत् सासादनस्तत्रोत्पद्यते तस्य नरकायुषो बन्धाभावात्। नापि बद्धनरकायुष्कः सासादनं प्रतिपद्य नारकेषूत्पद्यते तस्य तस्मिन् गुणे मरणाभावात्। नासं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

यतसम्यग्दृष्टयोऽपि तत्रोत्पद्यन्ते तत्रोत्पत्तिनिमित्ताभावात् । न तावत्कर्मस्कन्धबहुत्वं तस्य तत्रोत्पत्तेः कारणं क्षपितकर्मांशानामपि जीवानां तत्रोत्पत्तिदर्शनात् । नापि कर्मस्कन्धाणुत्वं तत्रोत्पत्तेः कारणं गुणितकर्मांशानामपि तत्रोत्पत्तिदर्शनात् । नापि नरकगतिकर्मणः सत्त्वं तस्य तत्रोत्पत्तेः कारणं तत्सत्त्वं प्रत्यविशेषतः सकलपञ्चेन्द्रियाणामपि नरकप्राप्तिप्रसङ्गात् । नित्यनिगोदानामपि विद्यमानत्रसकर्मणां त्रसेषूत्पत्तिप्रसङ्गात् । नाशुभलेश्यानां सत्त्वं तत्रोत्पत्तेः कारणं मरणावस्थायामसंयतसम्यग्दृष्टेः षट्सु पृथिवीषूत्पत्तिनिमित्ताशुभलेश्याभावात् । न नरकायुषः सत्त्वं तस्य तत्रोत्पत्तेः कारणं सम्यग्दर्शनासिना छिन्नषट्पृथिव्यायुष्कत्वात् । न च तच्छेदोऽसिद्ध आर्षात्तत्सिद्ध्युपलम्भात् । ततः स्थितमेतत् न सम्यग्दृष्टिः षट्सु पृथिवीषूत्पद्यत इति । तिर्यग्गतौ गुणस्थानानां सत्त्वावस्थाप्रतिपादनार्थमाह—

तिरिक्खा मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्ता, सिया अपज्जत्ता ॥ ८४ ॥

भवतु नाम मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टीनां तिर्यक्षु पर्याप्तापर्याप्तद्वयोः सत्त्वं तयोस्तत्रोत्पत्त्यविरोधात् । सम्यग्दृष्टयस्तु पुनर्नोत्पद्यन्ते तिर्यगपर्याप्तपर्यायेण सम्यग्दर्शनस्य विरोधादिति? न विरोधः, अस्यार्षस्याप्रामाण्यप्रसङ्गात् । क्षायिकसम्यग्दृष्टिः सेविततीर्थकरः क्षपितसप्तप्रकृतिः कथं तिर्यक्षु दुःखभूयस्सूत्पद्यत इति चेन्न, तिरश्चां नारकेभ्यो दुःखाधिक्याभावात् । नारकेष्वपि सम्यग्दृष्टयो नोत्पत्स्यन्त इति चेन्न, तेषां तत्रोत्पत्तिप्रतिपादकार्षोपलम्भात् । किमिति ते तत्रोत्पद्यन्त इति चेन्न, सम्यग्दर्शनोपादानात् प्राङ्मिथ्यादृष्ट्यवस्थायां बद्धतिर्यङ्नरकायुष्कत्वात् । सम्यग्दर्शनेन तत् किमिति न छिद्यते? इति चेत् किमिति तन्न छिद्यते? अपि तु न तस्य निर्मूलच्छेदः । तदपि कुतः? स्वाभाव्यात् । तत्र सम्यग्मिथ्यादृष्ट्यादिस्वरूपनिरूपणार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ८५ ॥

मनुष्या मिथ्यादृष्ट्यवस्थायां बद्धतिर्यगायुषः पश्चात्सम्यग्दर्शनेन सहात्ताप्रत्याख्यानाः क्षपितसप्तप्रकृतयस्तिर्यक्षु किन्नोत्पद्यन्ते? इति चेत् किंचातोऽप्रत्याख्यानगुणस्य तिर्यगपर्याप्तेषु सत्त्वापत्तिः? न, देवगतिव्यतिरिक्तगतित्रयसम्बद्धायुषोपलक्षितानामणुव्रतोपादानबुद्ध्यनुत्पत्तेः । उक्तं च—चत्तारि वि खेत्ताइं आउग-बंधे वि होइ सम्मत्तं । अणुवद-महव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तुं ॥ १६९ ॥
न तिर्यक्षूत्पन्ना अपि क्षायिकसम्यग्दृष्टयोऽणुव्रतान्यादधते भोगभूमावुत्पन्नानां तदुपादानानुपपत्तेः । ये निर्दानास्ते कथं तत्रोत्पद्यन्त? इति चेन्न, सम्यग्दर्शनस्य तत्रोत्पत्तिकारणस्य सत्त्वात् । न च पात्रदानेऽननुमोदिनः सम्यग्दृष्टयो भवन्ति तत्र तदनुपपत्तेः । तिरश्चामोघमभिधायादेशस्वरूपनिरूपणार्थं वक्ष्यति—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं पंचिंदिय - तिरिक्खा पंचिंदिय - तिरिक्ख - पज्जत्ता ॥ ८६ ॥

एतेषामोघप्ररूपणमेव भवेद्विवक्षितं प्रति विशेषाभावात्। स्त्रीवेदविशिष्टतिरश्चां विशेषप्रतिपादनार्थमाह—

पंचिंदिय- तिरिक्ख- जोणिणीसु मिच्छाइट्ठि- सासणसम्माइट्ठि- ट्ठाणे सिया पज्जत्तियाओ सिया अपज्जत्तियाओ ८७

सासादनो नारकेष्विव तिर्यक्ष्वपि नोत्पादीति चेन्न, द्वयोः साधर्म्याभावतो दृष्टान्तानुपपत्तेः। तत्र शेषगुणानां स्वरूपमभिधातुमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि - असंजदसम्माइट्ठि संजदासंजद - ट्ठाणे णियमा पज्जत्तियाओ ॥ ८८ ॥

कुतः ? तत्रैतेषामुत्पत्तेरभावात्। बद्धायुष्कः क्षायिकसम्यग्दृष्टिर्नारकेषु नपुंसकवेद इवात्र स्त्रीवेदे किन्नोत्पद्यत इति चेन्न, तत्र तस्यैवैकस्य सत्त्वात्। यत्र क्वचन समुत्पद्यमानः सम्यग्दृष्टिस्तत्र विशिष्टवेदादिषु समुत्पद्यत इति गृह्यताम्। तिर्यगपर्याप्तेषु किन्न निरूपितमिति नाशङ्कनीयम्, तत्र प्रतिपक्षाभावतो गतार्थत्वात्। मनुष्यगतिप्रतिपादनार्थमाह—

मणुस्सा मिच्छाइट्ठि - सासणसम्माइट्ठि - असंजदसम्माइट्ठि - ट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ ८९ ॥

सुगममेतत्। तत्र शेषगुणस्थानसत्त्वावस्थाप्रतिपादनार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि - संजदासंजद - संजद - ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ९० ॥

भवतु सर्वेषामेतेषां पर्याप्तत्वं नाहारशरीरमुत्थापयतां प्रमत्तानामनिष्पन्नाहारगतषट्पर्याप्तीनाम्। न पर्याप्तकर्मोदयापेक्षया पर्याप्तोपदेशः, तदुदयसत्त्वाविशेषतोऽसंयतसम्यग्दृष्टीनामप्यपर्याप्तत्वस्याभावापत्तेः। न च संयमोत्पत्त्यवस्थापेक्षया तदवस्थायां प्रमत्तस्य पर्याप्तत्वं घटत असंयतसम्यग्दृष्टावपि तत्प्रसङ्गादिति नैष दोषः, अवलम्बितद्रव्यार्थिकनयत्वात्। सोऽन्यत्र किमिति नावलम्ब्यत इति चेन्न तत्र निमित्ताभावात्। किमर्थमत्रावलम्ब्यत इति चेत्पर्याप्तेरस्य साम्यदर्शनं तदवलम्बनकारणम्। केन साम्यमिति चेद् दुःखाभावेन। उपपातगर्भसम्मूर्च्छजशरीराण्याददानानामिवाहारशरीरमाददानानां न दुःखमस्तीति पर्याप्तत्वं प्रमत्तस्योपचर्यत इति यावत्। पूर्वाभ्यस्तवस्तुविस्मरणमन्तरेण शरीरोपादानाद्वा दुःखमन्तरेण पूर्वशरीरपरित्यागाद्वा प्रमत्तस्तदवस्थायां पर्याप्त इत्युपचर्यते। निश्चयनयाश्रयणे तु पुनरपर्याप्तः। एवं समुद्घातगतकेवलिनामपि वक्तव्यम्। मनुष्यविशेषस्य निरूपणार्थमाह—

एवं मणुस्स - पज्जत्ता ॥ ९१ ॥

पर्याप्तेषु नापर्याप्तत्वमस्ति विरोधात्। तत 'एवं पज्जत्ता' इति कथमेतद्घटत इति नैष दोषः, शरीरानिष्पत्त्यपेक्षया तदुपपत्तेः। कथं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्य पर्याप्तत्वं ? न, द्रव्यार्थिकनयाश्रयणात्। ओदनः पच्यत इत्यत्र यथा तन्दुलानामेवौदनव्यपदेशस्तथाऽपर्याप्तावस्थायामप्यत्र पर्याप्त-व्यवहारो न विरुध्यत इति। पर्याप्तनामकर्मोदयापेक्षया वा पर्याप्तता। एवं तिर्यक्ष्वपि वक्तव्यम्। सुगममन्यत्। मानुषीषु निरूपणार्थमाह—

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्तियाओ सिया अपज्जत्तियाओ ॥ ९२ ॥

अत्रापि पूर्ववदपर्याप्तानां पर्याप्तव्यवहारः प्रवर्तयितव्यः। अथवा स्यादित्ययं निपातः कथञ्चिदित्यस्मिन्नर्थे वर्तते, तेन स्यात्पर्याप्ताः पर्याप्तनामकर्मोदयाच्छरीरनिष्पत्त्यपेक्षया वा। स्यादपर्याप्ताः शरीरानिष्पत्त्यपेक्षयेति वक्तव्यम्। सुगममन्यत्। तत्रैव शेषगुणविषया-रेकापोहनार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्तियाओ ॥ ९३ ॥

हुण्डावसर्पिण्यां स्त्रीषु सम्यग्दृष्टयः किन्नोत्पद्यन्ते इति चेन्नोत्पद्यन्ते। कुतोऽवसीयते ? अस्मादेवार्षात्। अस्मादेवार्षाद् द्रव्यस्त्रीणां निर्वृत्तिः सिद्ध्येदिति चेन्न, सवासस्त्वादप्रत्याख्यानगुणस्थितानां संयमानुपपत्तेः। भावसंयमस्तासां सवाससामप्यविरुद्ध इति चेत्, न तासां भावसंयमोऽस्ति भावासंयमाविनाभाविवस्त्राद्युपादानान्यथानुपपत्तेः। कथं पुनस्तासु चतुर्दश गुणस्थानानीति चेन्न, भावस्त्रीविशिष्ट-मनुष्यगतौ तत्सत्त्वाविरोधात्। भाववेदो बादरकषायान्नोपर्यस्तीति न तत्र चतुर्दशगुणस्थानानां सम्भव इति चेन्न, अत्र वेदस्य प्राधा-न्याभावात्। गतिस्तु प्रधाना न साराद्विनश्यति। वेदविशेषणायां गतौ न तानि सम्भवन्तीति चेन्न, विनष्टेऽपि विशेषण उपचारेण तद्व्यपदेशमादधानमनुष्यगतौ तत्सत्त्वाविरोधात्। मनुष्यापर्याप्तेष्वपर्याप्तिप्रतिपक्षाभावतः सुगमत्वान्न तत्र वक्तव्यमस्ति। देवगतौ निरूपणार्थमुत्तरसूत्रमाह—

देवा मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ ९४ ॥

अथ स्याद्विग्रहगतौ कार्मणशरीराणां न पर्याप्तिस्तदा पर्याप्तीनां षण्णां निष्पत्तेरभावात्। नापर्याप्तास्त आरम्भात्प्रभृति आ उपरमादन्तरालावस्थायामपर्याप्तिव्यपदेशात्। न चानारम्भकस्य स व्यपदेशः, अतिप्रसङ्गात्। ततस्तृतीयमप्यवस्थान्तरं वक्तव्यमिति नैष दोषः, तेषामपर्याप्तेष्वन्तर्भावात्। नातिप्रसङ्गोऽपि कार्मणशरीरस्थितप्राणिनामिवापर्याप्तकैः सह सामर्थ्याभावोपपादैकान्तानुवृद्धियो-गैर्गत्यायुःप्रथमद्वित्रिसमयवर्तनेन च शेषप्राणिनां प्रत्यासत्तेरभावात्। ततोऽशेषसंसारिणामवस्थाद्वयमेव नापरमिति स्थितम्। शेषगुणस्य सत्त्वावस्थाप्रतिपादनार्थमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ९५ ॥

कथं ? तेन गुणेन सह तेषां मरणाभावात् । अपर्याप्तकालेऽपि सम्यग्मिथ्यात्वगुणस्योत्पत्तेरभावाच्च । नियमेऽभ्युपगम्यमान एकान्तवादः प्रसजतीति चेन्न, अनेकान्तगर्भैकान्तस्य सत्त्वाविरोधात् । देवादेशप्रतिपादनार्थमाह—

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-देवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्पवासिय-देवीओ च मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता, सिया पज्जत्तियाओ सिया अपज्जत्तियाओ ॥ ९६ ॥

उभयगुणोपलक्षितजीवानां तत्रोत्पत्तेरुभयत्रापि तदस्तित्वं सिद्धम् । अन्यत्सुगमम् । तत्रानुत्पद्यमानगुणस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता णियमा पज्जत्तियाओ ॥ ९७ ॥

भवतु सम्यग्मिथ्यादृष्टेस्तत्रानुत्पत्तिस्तस्य तद्गुणेन मरणाभावात्, किंत्वेतन्न घटते यदसंयतसम्यग्दृष्टिर्मरणवांस्तत्र नोत्पद्यत इति, न; जघन्येषु तस्योत्पत्तेरभावात् । नारकेषु तिर्यक्षु च कनिष्ठेषूत्पद्यमानास्तत्र तेभ्योऽधिकेषु किमिति नोत्पद्यन्त इति चेन्न, मिथ्यादृष्टीनां प्राग्बद्धायुष्काणां पश्चादात्तसम्यग्दर्शनानां नारकाद्युत्पत्तिप्रतिबन्धनं प्रति सम्यग्दर्शनस्यासामर्थ्यात् । तद्वद्देवेष्वपि किन्न स्यादिति चेत्सत्यमिष्टत्वात् । तथा च भवनवास्यादिष्वप्यसंयतसम्यग्दृष्टेरुत्पत्तिरास्कन्देदिति चेन्न, सम्यग्दर्शनस्य बद्धायुषां प्राणिनां तत्तद्गत्यायुःसामान्येनाविरोधिनस्तत्तद्गतिविशेषोत्पत्तिविरोधित्वोपलम्भात् । तथा च भवनवासिव्यन्तरज्योतिष्कप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्बिषिकपृथ्वीषट्कस्त्रीनपुंसकविकलेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्तककर्मभूमिजतिर्यक्षु चोत्पत्त्या विरोधोऽसंयतसम्यग्दृष्टेः सिद्धेदिति तत्र ते नोत्पद्यन्ते । सुगममन्यत् । शेषदेवेषु गुणावस्थाप्रतिपादनार्थं वक्ष्यति—

सोधम्मीसाण-प्पहुडि जाव उवरिम-उवरिम-गेवज्जं ति विमाणवासिय-देवेसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ ९८ ॥

भवत्वत्रोभयावस्थासु गुणत्रयास्तित्वं तस्य तेषूत्पत्तिं प्रति विरोधासिद्धेः । सनत्कुमारादुपरि न स्त्रियः समुत्पद्यन्ते सौधर्मादाविव तदुत्पत्त्यप्रतिपादनात् । तत्र स्त्रीणामभावे कथं तेषां देवानामनुपशान्तसन्तापानां सुखमिति चेन्न, तत्स्त्रीणां सौधर्मकल्पोपपत्तेः । तर्हि तत्रापि स्त्रीणामस्तित्वमभिधातव्यमिति चेन्न, अन्यत्रोत्पन्नानामन्यलेश्यायुर्बलानां स्त्रीणां तत्र सत्त्वविरोधात् । तत्र भवनवासिनो व्यन्तरज्योतिष्काः सौधर्मैशानदेवाश्च मनुष्या इव कायप्रवीचाराः । प्रवीचारो मैथुनसेवनम्, काये प्रवीचारो येषां ते कायप्रवीचाराः ।

सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः स्पर्शप्रवीचाराः, तत्रतनदेवा देवाङ्गनास्पर्शनमात्रादेव परां प्रीतिमुपलभन्त इति यावत् । तथा देव्योऽपि । यतो ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टेषु देवा दिव्याङ्गनाशृङ्गाराकारविलासचतुरमनोज्ञवेषरूपालोकमात्रादेव परं सुखमवाप्नुवन्ति ततस्ते रूपप्रवीचाराः । यतः शुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेषु देवा देवाङ्गनानां मधुरसङ्गीतमृदुहसितललितकथितभूषणरवश्रवणमात्रादेव परां प्रीतिमास्कन्दन्ति ततस्ते शब्दप्रवीचाराः । आनतप्राणतारणाच्युतकल्पेषु देवा यतः स्वाङ्गनामनःसङ्कल्पमात्रादेव परं सुखमवाप्नुवन्ति ततस्ते मनःप्रवीचाराः । प्रवीचारो वेदनाप्रतीकारः । वेदनाभावाच्छेषा देवा अप्रवीचारा अनवरतसुखा इति यावत् । सम्यग्मिथ्यादृष्टिस्वरूपनिरूपणार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ॥ ९९ ॥

सुगमत्वान्नात्र वक्तव्यमस्ति । शेषदेवेषु गुणस्थानस्वरूपनिरूपणार्थमाह—

अणुदिस-अणुत्तर विजय-वइजयंत-जयंतावराजितसव्वट्ठसिद्धिविमाणवासिय-देवा असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे-सिया पज्जत्ता सिया अपज्जत्ता ॥ १०० ॥

पञ्चानामेव नामान्यभ्यधादन्तदीपकार्थम् । ततः शेषस्वर्गनामान्यपि वक्तव्यानि । तानि च यथावसरं वक्ष्यामः । एवं योगनिरूपणावसर एव चतसृषु गतिषु पर्याप्तापर्याप्तकालविशिष्टासु सकलगुणस्थानानामभिहितमस्तित्वम् । शेषमार्गणास्वयमर्थः किमिति नाभिधीयत इति चेत्, नोच्यते; अनेनैव गतार्थत्वाद्गतिचतुष्टयव्यतिरिक्तमार्गणाभावात् । वेदविशिष्टगुणस्थाननिरूपणार्थमाह—

वेदाणुवादेण अत्थि इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदा चेदि ॥ १०१ ॥

दोषैरात्मानं परं च स्तृणाति छादयतीति स्त्री, स्त्री चासौ वेदश्च स्त्रीवेदः । अथवा पुरुषं स्तृणात्याकाङ्क्षतीति स्त्री पुरुषाकाङ्क्षेत्यर्थः । स्त्रियं विन्दतीति स्त्रीवेदः । अथवा वेदनं वेदः, स्त्रियो वेदः स्त्रीवेदः । उक्तं च—छादेदि सयं दोसे णयदो छादइ परं हि दोसेण । छादणसीला जम्हा तम्हा सा वण्णिया इत्थी ॥ १७० ॥ पुरुगुणेषु पुरुभोगेषु च शेते स्वपितीति पुरुषः । सुषुप्तपुरुषवदनुगतगुणोऽप्राप्तभोगश्च यदुदयाज्जीवो भवति स पुरुषः । अङ्गनाभिलाष इति यावत् । पुरुगुणं कर्म शेते करोतीति वा पुरुषः । कथं स्त्र्यभिलाषः पुरुगुणं कर्म कुर्यादिति चेन्न, तथाभूतसामर्थ्यानुविद्धजीवसहचरितत्वादुपचारेण जीवस्य तत्कर्तृत्वाभिधानात् । तस्य वेदः पुंवेदः । उक्तं च—पुरु-गुण-भोगे सेदे करेदि लोगम्हि पुरुगुणं कम्मं । पुरु उत्तमो य जम्हा तम्हा सो वण्णिदो पुरिसो ॥ १७१ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

न स्त्री न पुमान्नपुंसक उभयाभिलाष इति यावत् । उक्तं च—णेवित्थी णेव पुमं णवुंसओ उभय-लिंग-वदिरित्तो । इट्टावाग-समाणग-वेयणगरुओ कलुसचित्तो ॥ १७२ ॥ अपगतास्त्रयोऽपि वेदसंतापा येषां तेऽपगतवेदाः । प्रक्षीणान्तर्दाहा इति यावत् । सर्वत्र सन्तीत्यभिसम्बन्धः कर्तव्यः । उक्तं च—कारिस-तणिट्ठिवागग्गि-सरिस-परिणाम-वेयणुम्मुक्का । अवगय-वेदा जीवा सग-संभवणंत-वर-सोक्खा ॥ १७३ ॥ वेदवतां जीवानां गुणस्थानादिषु सत्त्वप्रतिपादनार्थमुत्तरसूत्रमाह—

इत्थिवेदा पुरिसवेदा असण्णिमिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ॥ १०२ ॥

उभयोर्वेदयोरक्रमेणैकस्मिन् प्राणिनि सत्त्वं प्राप्नोतीति चेन्न, विरुद्धयोरक्रमेणैकस्मिन् सत्त्वविरोधात् । कथं पुनस्तयोस्तत्र सत्त्वमिति चेद्भिन्नजीवद्रव्याधारतया पर्यायेणैकद्रव्याधारतया च । तत्र न नपुंसकवेदस्याभावः, तत्र द्वावेव वेदौ भवत इत्यवधारणाभावात् । तत्कुतोऽवसीयत इति चेत् 'तिरिक्खा ति-वेदा असण्णिपंचिंदियप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति । मणुस्सा ति-वेदा मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति' एतस्मादार्षात् । सुगममन्यत् । नपुंसकवेदसत्त्वप्रतिपादनार्थमाह—

णवुंसयवेदा एइंदियप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ॥ १०३ ॥

एकेन्द्रियाणां न द्रव्यवेद उपलभ्यते, तदनुपलब्धौ कथं तस्य तत्र सत्त्वमिति चेन्मा भूत्तत्र द्रव्यवेदः, तस्यात्र प्राधान्याभावात् । अथवा नानुपलब्ध्या तदभावः सिद्ध्येत्, सकलप्रमेयव्याप्युपलम्भबलेन तत्सिद्धिः । न स छद्मस्थेष्वस्ति । एकेन्द्रियाणामप्रतिपन्नस्त्रीपुरुषाणां कथं स्त्रीपुरुषविषयाभिलाषो घटत इति चेन्न, अप्रतिपन्नस्त्रीवेदेन भूमिगृहान्तर्वृद्धिमुपगतेन यूना पुरुषेण व्यभिचारात् । सुगममन्यत् । अपगतवेदजीवप्रतिपादनार्थमाह—

तेण परमवगदवेदा चेदि ॥ १०४ ॥

शेषगुणमधिष्ठिताः सर्वेऽपि प्राणिनोऽपगतवेदाः । न द्रव्यवेदस्याभावस्तेन विकाराभावात् । अधिकृतोऽत्र भाववेदस्ततस्तदभावादपगतवेदो नान्यथेति । वेदादेशप्रतिपादनार्थमाह—

णेरइया चदुसु ट्ठाणेसु सुद्धा णवुंसयवेदा ॥ १०५ ॥

नारकेषु शेषवेदाभावः कथमवसीयत इति चेत् 'सुद्धा णवुंसयवेदा' इत्यार्षात् । शेषवेदौ तत्र किमिति न स्यातामिति चेन्न, अनवरतदुःखेषु तत्सत्त्वविरोधात् । स्त्रीपुरुषवेदादपि दुःखमेवेति चेन्न, इष्टकापाकाग्निसमानसन्तापन्यूनतया तार्णकारीषाग्निसमानपुरुषस्त्रीवेदयोः सुखरूपत्वात् । तिर्यग्गतौ वेदनिरूपणार्थमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिरिक्खा सुद्धा णवुंसगवेदा एइंदियप्पहुडि जाव चउरिंदिया त्ति ॥ १०६ ॥

अत्र शेषवेदाभावः कुतोऽवसीयत इति चेत् 'सुद्धा णवुंसगवेदा' इत्यार्षात् । पिपीलिकानामण्डदर्शनान्न ते नपुंसका इति चेन्न, अण्डानां गर्भ एवोत्पत्तिरिति नियमाभावात् । विग्रहगतौ न वेदाभावस्तत्राप्यव्यक्तवेदस्य सत्त्वात् । शेषतिरश्चां कियन्तो वेदा इति शङ्कितशिष्याशङ्कानिराकरणार्थमाह—

तिरिक्खा तिवेदा असण्णिपंचिंदियप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ॥ १०७ ॥

त्रयाणां वेदानां क्रमेणैव प्रवृत्तिर्नाक्रमेण पर्यायत्वात् । कषायवन्नान्तर्मुहूर्तस्थायिनो वेदा आजन्मन आमरणात्तदुदयस्य सत्त्वात् । सुगममन्यत् । मनुष्यादेशप्रतिपादनार्थमाह—

मणुस्सा तिवेदा मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ॥ १०८ ॥

संयतानां कथं त्रिवेदसत्त्वमिति चेन्न, अव्यक्तवेदसत्त्वापेक्षया तत्र तथोक्तम् । सुगममन्यत् । वेदत्रयातीतजीवप्रतिपादनार्थमाह—

तेण परमवगदवेदा चेदि ॥ १०९ ॥

सर्वत्र 'च'शब्दः समुच्चये द्रष्टव्यः, एते च पूर्वोक्ताश्च सन्तीति । 'इति'शब्दः सर्वत्र समाप्तौ परिगृहीतव्यः । सुगममन्यत् । देवादेशप्रतिपादनार्थमाह—

देवा चदुसु ट्ठाणेसु दुवेदा, इत्थिवेदा पुरिसवेदा ॥ ११० ॥

सानत्कुमारमाहेन्द्रादुपरि पुरुषवेदा एव । यत्नमन्तरेण तत्कथं लभ्यत इति चेत् 'तेण परमवगदवेदा चेदि' अत्रतन 'च'शब्दो यतोऽनुक्तसमुच्चयार्थश्च तस्मात्सानत्कुमारादीनां पुंवेदत्वमवसीयते । तिर्यङ्मनुष्यलब्ध्यपर्याप्ताः सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियाश्च नपुंसका एव । असंख्येयवर्षायुषस्तिर्यञ्चो मनुष्याश्च द्विवेदा एव, न नपुंसकवेदा इत्यादयोऽनुक्तास्तत एवावसेयाः । वेदद्वारेण जीवपदार्थमभिधाय कषायमुखेन जीवसमासस्थाननिरूपणार्थमाह—

कसायाणुवादेण अत्थि कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई चेदि ॥ १११ ॥

कषायिसामान्येनैकत्वाद्बहूनामप्येकवचनं घटते-क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी, अकषायीति । अथवा नेदमेकवचनं, 'एए सोहंति सिही णच्चंता गिरिवरस्स सिहरम्मि' इत्येवमादिबहुत्वेऽप्येवंविधरूपोपलम्भादनेकान्तात् । अथवा स्यात्क्रोधकषायः,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानकषायः, मायाकषायः, लोभकषायः, अकषाय इति वक्तव्यं, कषायेभ्यस्तद्वतां भेदादिति, न, जीवेभ्यः पृथक् क्रोधाद्यनुपलम्भात्। तयोर्भेदाभावे कथं भिन्नस्तन्निर्देशो घटत इति चेन्न, अनेकान्ते तदविरोधात्। शब्दनयाश्रयणे क्रोधकषाय इति भवति तस्य शब्दपृष्ठतोऽर्थप्रतिपत्तिप्रवणत्वात्। अर्थनयाश्रयणे क्रोधकषायीति स्याच्छब्दतोऽर्थस्य भेदाभावात्। कषायिचातुर्विध्यात्कषायस्य चातुर्विध्यमवगम्यत इति वा। तथोपदिष्टमेवानुवदनमनुवादः, कषायस्यानुवादः कषायानुवादः, तेन कषायानुवादेन। प्रसिद्धस्यानुकथनमनुवादः। सिद्धासिद्धाश्रया हि कथामार्गा इति न्यायादनुवादोऽनर्थकोऽनधिगतार्थाधिगन्तृत्वाभावाद्वेति न, प्रवाहरूपेणापौरुषेयत्वतस्तीर्थकृदादयोऽस्य व्याख्यातार एव न कर्तार इति ज्ञापनार्थत्वात्। कः क्रोधकषायः? रोष आमर्षः संरम्भः। को मानकषायः? रोषेण विद्यातपोजात्यादिमदेन वान्यस्यानवनतिः। निकृतिर्वञ्चना मायाकषायः। गृद्धिः काङ्क्षा लोभः। उक्तं च— सिल-पुढविभेद-धूली-जल-राइ-समाणओ हवे कोहो। णारय-तिरिय-णरामर-गईसु उप्पायओ कमसो ॥ १७४ ॥ सेलट्ठि-कट्ठ-वेत्तं णियभेएणणुहरंतओ माणो। णारय-तिरिय-णरामर-गइ-विसयुप्पायओ कमसो ॥ १७५ ॥ वेणुवमूलोरब्भय-सिंगे गोमुत्तएण खोरप्पे। सरिसी माया णारय-तिरय-णरामरेसु जणइ जिअं ॥ १७६ ॥ किमिराय-चक्क-तणु-मल-हरिद्द-राएण सरिसओ लोहो। णारय-तिरिक्ख-माणुस-देवेसुप्पायओ कमसो ॥ १७७ ॥ सकलकषायाभावोऽकषायः। उक्तं च—अप्प-परोभय-बाधण-बंधासंजम-णिमित्त-कोधादी। जेसिं णत्थि कसाया अमला अकसाइणो जीवा ॥ १७८ ॥ कषायाध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

कोधकसाई माणकसाई मायकसाई एइंदियप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ॥ ११२ ॥

यतीनामपूर्वकरणादीनां कथं कषायास्तित्वमिति चेन्न, अव्यक्तकषायापेक्षया तथोपदेशात्। सुगममन्यत्। लोभस्याध्वाननिरूपणार्थमाह—

लोभकसाई एइंदियप्पहुडि जाव सुहुम-सांपराइय-सुद्धि-संजदा त्ति ॥ ११३ ॥

शेषकषायोदयविनाशे लोभकषायस्य विनाशानुपपत्तेर्लोभकषायस्य सूक्ष्मसाम्परायोऽवधिः। अकषायोपलक्षितगुणप्रतिपादनार्थमाह—

अकसाई चदुसु ट्ठाणेसु अत्थि उवसंतकसाय-वीयराय-छदुमत्था खीणकसाय-वीयराय-छदुमत्था सजोगिकेवली-अजोगिकेवलि त्ति ॥ ११४ ॥

उपशान्तकषायस्य कथमकषायत्वमिति चेत्, कथं च न भवति? द्रव्यकषायस्यानन्तस्य सत्त्वात्; न, कषायोदयाभावापेक्षया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तस्याकषायत्वोपपत्तेः । सुगममन्यत् । कषायस्यादेशः किमिति नोक्त इति चेन्न, विशेषाभावतोऽनेनैव गतार्थत्वात् । ज्ञानद्वारेण जीवपदार्थनिरूपणार्थमाह—

णाणाणुवादेण अत्थि मदि-अण्णाणी सुद-अण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहियणाणी सुदणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी चेदि ॥ ११५ ॥

अत्रापि पूर्ववत्पर्यायपर्यायिणोः कथञ्चिदभेदात्पर्यायिग्रहणेऽपि पर्यायस्य ज्ञानस्यैव ग्रहणं भवति । ज्ञानिनां भेदाद् ज्ञानभेदोऽवगम्यत इति वा पर्यायिद्वारेणोपदेशः । ज्ञानानुवादे कथमज्ञानस्य ज्ञानप्रतिपक्षस्य सम्भव इति चेन्न, मिथ्यात्वसमवेतज्ञानस्यैव ज्ञानकार्याकरणादज्ञानव्यपदेशात् पुत्रस्यैव पुत्रकार्याकरणादपुत्रव्यपदेशवत् । किं तद्ज्ञानकार्यमिति चेत्तत्त्वार्थे रुचिः प्रत्ययः श्रद्धा चारित्रस्पर्शनं च । अथवा प्रधानपदमाश्रित्याज्ञानानामपि ज्ञानव्यपदेश आम्रवणमिति यथा । जानातीति ज्ञानं साकारोपयोगः । अथवा जानात्यज्ञासीज्ज्ञास्यत्यनेनेति वा ज्ञानं ज्ञानावरणीयकर्मण एकदेशप्रक्षयात् समुत्पन्नात्मपरिणामः क्षायिको वा । तदपि ज्ञानं द्विविधम्, प्रत्यक्षं परोक्षमिति । परोक्षं द्विविधम्, मतिः श्रुतमिति । तत्र पञ्चभिरिन्द्रियैर्मनसा च यदर्थग्रहणं तन्मतिज्ञानम् । तदपि चतुर्विधम्, अवग्रह ईहा अवायो धारणा चेति । विषयविषयिसन्निपातसमनन्तरमाद्यग्रहणमवग्रहः । अवग्रहीतस्यार्थस्य विशेषाकाङ्क्षणमीहा । ईहितस्यार्थस्य निश्चयोऽवायः । कालान्तरेऽप्यविस्मरणसंस्कारजनकं ज्ञानं धारणा । अथवा चतुर्विंशतिविधं मतिज्ञानम् । तद्यथा, चाक्षुषं च चतुर्विधं मतिज्ञानमवग्रह ईहावायो धारणा चेति । एवं शेषाणामपीन्द्रियाणां मनसश्च वाच्यम् । अथवा अष्टाविंशतिविधम् । तद्यथा, अवग्रहो द्विविधोऽर्थावग्रहो व्यञ्जनावग्रहश्चेति । कोऽर्थावग्रहश्चेदप्राप्तार्थग्रहणमर्थावग्रहः । को व्यञ्जनावग्रहः ? प्राप्तार्थग्रहणं व्यञ्जनावग्रहः । तत्र चक्षुर्मनसोरर्थावग्रह एव तयोः प्राप्तार्थग्रहणानुपलम्भात् । शेषाणामिन्द्रियाणां द्वावप्यवग्रहौ भवतः । शेषेन्द्रियेष्वप्राप्तार्थग्रहणं नोपलभ्यत इति चेन्न, एकेन्द्रियेषु योग्यदेशस्थितनिधिषु निधिस्थितप्रदेश एव प्ररोहमुक्त्यन्यथानुपपत्तितः स्पर्शनस्याप्राप्तार्थग्रहणसिद्धेः । शेषेन्द्रियाणामप्राप्तार्थग्रहणं नोपलभ्यत इति चेन्मा भूदुपलम्भस्तथापि तदस्त्येव । यद्युपलम्भस्त्रिकालगोचरमशेषं पर्यच्छेत्स्यदनुपलब्धस्याभावोऽभविष्यत् । न चैवमनुपलम्भात् । न कार्त्स्न्येनाप्राप्तमर्थस्यानिःसृतत्वमनुक्तत्वं वा ब्रूमहे यतस्तदवग्रहादिनिदानमिन्द्रियाणामप्राप्यकारित्वमिति । किं तर्हि ? कथं च चक्षुरनिन्द्रियाभ्यामनिःसृतानुक्तावग्रहादिः, तयोरपि प्राप्यकारित्वप्रसङ्गादिति चेन्न, योग्यदेशावस्थितेरेव प्राप्तेरभिधानात् । तथा च रसगन्धस्पर्शानां स्वग्राहिभिरिन्द्रियैः स्पृष्टस्वयोग्यदेशावस्थितिः शब्दस्य च, रूपस्य चक्षुषाभिमुखतया, न तत्परिच्छेदिना

चक्षुषा प्राप्यकारित्वमनिःसृतानुक्तावग्रहादिसिद्धेः। किं च तेनाभिहितेनानुक्तावग्रहः, यथा दध्नो गन्धग्रहणकाल एव तद्रसोपलम्भः। नियमितधर्मविशिष्टवस्तुनो वस्त्वेकदेशस्य वा ग्रहणमुक्तावग्रहः। सोऽयमित्यादि ध्रुवावग्रहः। न सोऽयमित्याद्यध्रुवावग्रहः। एवमीहादीनामपि योज्यम्। सर्वाण्येतानि मतिज्ञानम्। शब्दधूमादिभ्योऽर्थान्तरावगमः श्रुतज्ञानम्। तत्र शब्दलिङ्गजं द्विविधमङ्गमङ्गबाह्यमिति। अङ्गं श्रुतं द्वादशविधम्। अङ्गबाह्यं चतुर्दशविधम्। प्रत्यक्षं त्रिविधम्, अवधिज्ञानं मनःपर्ययज्ञानं केवलज्ञानमिति। साक्षान्मूर्ताशेषपदार्थपरिच्छेदकमवधिज्ञानम्। साक्षान्मनः समादाय मानसार्थानां साक्षात्करणं मनःपर्ययज्ञानम्। साक्षात्त्रिकालगोचराशेषपदार्थपरिच्छेदकं केवलज्ञानम्। मिथ्यात्वसमवेतमिन्द्रियजज्ञानं मत्यज्ञानम्। तेनैव समवेतः शाब्दः प्रत्ययः श्रुताज्ञानम्। तत्समवेतमवधिज्ञानं विभङ्गज्ञानम्। उक्तं च— विस-जंत-कूड-पंजर-बंधादिसु विणुवदेस-करणेण। जा खलु पवत्तइ मदी मदि-अण्णाणे त्ति तं बेंति॥ १७९॥ आभीयमासुरक्खा भारह रामायणादि-उवएसा। तुच्छा असाहणीया सुद-अण्णाणे त्ति तं बेंति॥ १८०॥ विवरीयमोहिणाणं खइयुवसमियं च कम्म-बीजं च। वेभंगो त्ति पउच्चइ समत्त-णाणीहि समयम्हि॥ १८१॥ अभिमुह-णियमिय-बोहणमाभिणिबोहियमणिंदि-इंदियजं। बहु-ओग्गहाइणा खलु कय-छत्तीस-ति-सय-भेयं॥ १८२॥ अत्थादो अत्थंतर-उवलंभो तं भणंति सुदणाणं। आभिणिबोहिय-पुव्वं णियमेणिह सद्दजं पमुहं॥ १८३॥ अवहीयदि त्ति ओही सीमाणाणे त्ति वण्णिदं समए। भव-गुण-पच्चय-विहियं तमोहिणाणे त्ति णं बेंति॥ १८४॥ चिंतियमचिंतियं वा अद्धं चिंतियमणेय-भेयं च। मणपज्जवं ति उच्चइ जं जाणइ तं खु णर-लोए॥ १८५॥ संपुण्णं तु समग्गं केवलमसवत्त-सव्व-भाव-विदं। लोगालोग-वितिमिरं केवलणाणं मुणेयव्वं॥ १८६॥

इदानीं गतीन्द्रियकायगुणस्थानेषु मतिश्रुतज्ञानयोरध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

मदि-अण्णाणी सुद-अण्णाणी एइंदिय-प्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति॥ ११६॥

मिथ्यादृष्टेर्द्वेऽप्यज्ञाने भवतां नाम तत्र मिथ्यात्वोदयस्य सत्त्वात्। मिथ्यात्वोदयस्यासत्त्वान्न सासादने तयोः सत्त्वमिति न, मिथ्यात्वं नाम विपरीताभिनिवेशः स च मिथ्यात्वादनन्तानुबन्धिनश्चोत्पद्यते। समस्ति च सासादनस्यानन्तानुबन्ध्युदय इति। कथमेकेन्द्रियाणां श्रुतज्ञानमिति चेत्कथं च न भवति? श्रोत्राभावान्न शब्दावगतिस्तदभावान्न शब्दार्थावगम इति नैष दोषः, यतो नायमेकान्तोऽस्ति शब्दार्थावबोध एव श्रुतमिति। अपि तु अशब्दरूपादपि लिङ्गालिङ्गिज्ञानमपि श्रुतमिति। अमनसां तदपि कथमिति चेन्न, मनोऽन्तरेण वनस्पतिषु हिताहितप्रवृत्तिनिवृत्त्युपलम्भतोऽनेकान्तात्। विभङ्गज्ञानाध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

विभंगणाणं सण्णि-मिच्छाइट्ठीणं वा सासणसम्माइट्ठीणं वा ॥ ११७ ॥

विकलेन्द्रियाणां किमिति तत्र भवतीति चेन्न, तत्र तन्निबन्धनक्षयोपशमाभावात्। सोऽपि तत्र किमिति न सम्भवतीति चेन्न, तद्धेतुभवगुणानामभावात्। विभङ्गज्ञाने भवप्रत्यये सति पर्याप्तापर्याप्तावस्थयोरपि तस्य सत्त्वं स्यादित्याशङ्कितशिष्याशङ्कापोहनार्थमाह—

पज्जत्ताणं अत्थि, अपज्जत्ताणं णत्थि ॥ ११८ ॥

अथ स्याद्यदि देवनारकाणां विभङ्गज्ञानं भवनिबन्धनं भवेदपर्याप्तकालेऽपि तेन भवितव्यं तद्धेतोर्भवस्य सत्त्वादिति न, 'सामान्यबोधनाश्च विशेषेष्ववतिष्ठन्ते' इति न्यायात् नापर्याप्तिविशिष्टं देवनारकत्वं विभङ्गनिबन्धनमपि तु पर्याप्तिविशिष्टमिति। ततो नापर्याप्तकाले तदस्तीति सिद्धम्। इदानीं सम्यग्मिथ्यादृष्टिज्ञानप्रतिपादनार्थमाह—

सम्मामिच्छाइट्ठि-ट्ठाणे तिण्णि वि णाणाणि अण्णाणेण मिस्साणि। अभिणिबोहियणाणं मदि-अण्णाणेण मिस्सयं सुदणाणं सुद-अण्णाणेण मिस्सयं ओहिणाणं विभंगणाणेण मिस्सयं। तिण्णि वि णाणाणि अण्णाणेण मिस्साणि वा इदि ॥ ११९ ॥

अत्रैकवचननिर्देशः किमिति क्रियत इति चेत् कथं च न क्रियते, यतस्त्रीण्यज्ञानानि ततो नैकवचनं घटत इति न, अज्ञाननिबन्धनमिथ्यात्वस्यैकत्वतोऽज्ञानस्याप्येकत्वाविरोधात्। यथार्थश्रद्धानुविद्धावगमो ज्ञानम्, अयथार्थश्रद्धानुविद्धावगमोऽज्ञानम्। एवं च सति ज्ञानाज्ञानयोर्भिन्नजीवाधिकरणयोर्न मिश्रणं घटत इति चेत्सत्यमेतदिष्टत्वात्। किन्त्वत्र सम्यग्मिथ्यादृष्टावेवं मा ग्रहीः, यतः सम्यग्मिथ्यात्वं नाम कर्म न तन्मिथ्यात्वं तस्मादनन्तगुणहीनशक्तेस्तस्य विपरीताभिनिवेशोत्पादसामर्थ्याभावात्। नापि सम्यक्त्वं तस्मादनन्तगुणशक्तेस्तस्य यथार्थश्रद्धया साहचर्याविरोधात्। ततो जात्यन्तरत्वात् सम्यग्मिथ्यात्वं जात्यन्तरीभूतपरिणामस्योत्पादकम्। ततस्तदुदयजनितपरिणामसमवेतबोधो न ज्ञानं यथार्थश्रद्धयाननुविद्धत्वात्। नाप्यज्ञानमयथार्थश्रद्धयासङ्गतत्वात्। ततस्तज्ज्ञानं सम्यग्मिथ्यात्वपरिणामवज्जात्यन्तरापन्नमित्येकमपि मिश्रमित्युच्यते। यथायथं प्रतिभासितार्थप्रत्ययानुविद्धावगमो ज्ञानम्। यथायथमप्रतिभासितार्थप्रत्ययानुविद्धावगमोऽज्ञानम्। जात्यन्तरीभूतप्रत्ययानुविद्धावगमो जात्यन्तरं ज्ञानम्, तदेव मिश्रज्ञानमिति राद्धान्तविदो व्याचक्षते। साम्प्रतं ज्ञानानां गुणस्थानाध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभिणिबोहियणाणं सुदणाणं ओहिणाणमसंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाय-वीदराग-छदुमत्था त्ति ॥ १२० ॥

भवतु नाम देवनारकासंयतसम्यग्दृष्टिष्ववधिज्ञानस्य सत्त्वं तस्य तद्भवनिबन्धनत्वात्। देशविरताद्युपरितनानामपि भवतु तत्सत्त्वं तन्निमित्तगुणस्य तत्र सत्त्वात्, न तिर्यङ्मनुष्यासंयतसम्यग्दृष्टिषु तस्य सत्त्वं तन्निबन्धनभवगुणानां तत्रासत्त्वादिति चेन्न, अवधिज्ञाननिबन्धनसम्यक्त्वगुणस्य तत्र सत्त्वात्। सर्वसम्यग्दृष्टिषु तदनुत्पत्त्यन्यथानुपपत्तेर्नावधिज्ञानं सम्यग्दर्शननिबन्धनमिति चेत्सर्वसंयतेषु तदनुत्पत्त्यन्यथानुपपत्तेरवधिज्ञानं संयमहेतुकमपि न भवतीति किन्न भवेत्। विशिष्टः संयमस्तद्धेतुरिति न सर्वसंयतानामवधिर्भवतीति चेदत्रापि विशिष्टसम्यक्त्वं तद्धेतुरिति न सर्वेषां तद्भवति को विरोधः स्यात्? औपशमिकक्षायिकक्षायोपशमिकभेदभिन्नेषु त्रिष्वपि सम्यक्त्वविशेषेष्ववधिज्ञानोत्पत्तेर्व्यभिचारदर्शनान्न तत्तद्विशेषनिबन्धनमपीति चेत्तर्ह्यत्रापि सामायिक-च्छेदोपस्थापनपरिहारसूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यात-भेदभिन्नैः पञ्चभिरपि संयमैः देशविरत्या च तस्य व्यभिचारदर्शनान्नावधिज्ञानं संयमविशेषनिबन्धनमपीति समानमेतत्। असंख्यातलोकमात्रसंयमपरिणामेषु केचिद्विशिष्टाः परिणामास्तद्धेतव इति नायं दोषश्चेत्तर्हि सम्यग्दर्शनपरिणामेष्वप्यसंख्येयलोकपरिणामेषु केचिद्विशिष्टाः सम्यक्त्वपरिणामाः सहकारिकारणव्यपेक्षास्तद्धेतव इति स्थितम्। मनःपर्ययज्ञानस्वामिप्रतिपादनार्थमाह—

मणपज्जवणाणी पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाय-वीदराग छदुमत्था त्ति ॥ १२१ ॥

पर्यायपर्यायिणोरभेदापेक्षया मनःपर्ययज्ञानस्यैव मनःपर्ययज्ञानिव्यपदेशः। देशविरताद्यधस्तनगुणभूमिस्थितानां किमिति मनःपर्ययज्ञानं न भवेदिति चेन्न, संयमासंयमासंयमत उत्पत्तिविरोधात्। संयममात्रकारणत्वे सर्वसंयतानां किन्न तद्भवेदिति चेदभविष्यद्यदि संयम एक एव तदुत्पत्तेः कारणमभविष्यत्। अप्यन्येऽपि तु तद्धेतवः सन्ति तद्वैकल्यान्न सर्वसंयतानां तदुत्पद्यते। केऽन्ये तद्धेतव इति चेद्विशिष्टद्रव्यक्षेत्रकालादयः। केवलज्ञानाधिपतिगुणभूमिप्रतिपादनार्थमाह—

केवलणाणी तिसु ट्ठाणेसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली सिद्धा चेदि ॥ १२२ ॥

अथ स्यान्नार्हतः केवलज्ञानमस्ति तत्र नोइन्द्रियावरणक्षयोपशमजनितमनसः सत्त्वात्, न, प्रक्षीणसमस्तावरणे भगवत्यर्हति ज्ञानावरणक्षयोपशमाभावात्तत्कार्यस्य मनसोऽसत्त्वात्। न वीर्यान्तरायक्षयोपशमजनितशक्त्यस्तित्वद्वारेण तत्सत्त्वं प्रक्षीणवीर्यान्तरायस्य वीर्यान्तरायजनितशक्त्यस्तित्वविरोधात्। कथं पुनः सयोग इति चेन्न, प्रथमचतुर्थभाषोत्पत्तिनिमित्तात्मप्रदेशपरिस्पन्दस्य सत्त्वापेक्षया तस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सयोगत्वाविरोधात् । तत्र मनसोऽभावे तत्कार्यस्य वचसोऽपि न सत्त्वमिति चेन्न, तस्य ज्ञानकार्यत्वात् । अक्रमज्ञानात्कथं क्रमवतां वचनानामुत्पत्तिरिति चेन्न, घटविषयाक्रमज्ञानसमवेतकुम्भकाराद्घटस्य क्रमेणोत्पत्त्युपलम्भात् । मनोयोगाभावे सूत्रेण सह विरोधः स्यादिति चेन्न, मनःकार्यप्रथमचतुर्थवचसोः सत्त्वापेक्षयोपचारेण तत्सत्त्वोपदेशात् । जीवप्रदेशपरिस्पन्दहेतुनोकर्मजनितशक्त्यस्तित्वापेक्षया वा तत्सत्त्वान्न विरोधः । संयममार्गणाप्रतिपादनार्थमाह—

संजमाणुवादेण अत्थि संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावण-सुद्धि-संजदा परिहार-सुद्धि-संजदा सुहुम-सांपराइय-सुद्धि संजदा जहाक्खाद-विहार-सुद्धि-संजदा संजदासंजदा असंजदा चेदि ॥ १२३ ॥

अत्राप्यभेदापेक्षया पर्यायस्य पर्यायिव्यपदेशः । सम् सम्यक् सम्यग्दर्शनज्ञानानुसारेण यता बहिरङ्गान्तरङ्गास्रवेभ्यो विरताः संयताः । सर्वसावद्ययोगाद् विरतोऽस्मीति सकलसावद्ययोगविरतिः सामायिकशुद्धिसंयमो द्रव्यार्थिकत्वात् । एवंविधैकव्रतो मिथ्यादृष्टिः किन्न स्यादिति चेन्न, आक्षिप्ताशेषविशेषसामान्यार्थिनो नयस्य सम्यग्दृष्टित्वाविरोधात् । आक्षिप्ताशेषरूपमिदं सामान्यमिति कुतोऽवसीयत इति चेत्सर्वसावद्ययोगोपादानात् । नह्येकस्मिन्-सर्वशब्दः प्रवर्तते विरोधात् । स्वान्तर्भाविताशेषसंयमविशेषैकयमः सामायिकशुद्धिसंयम इति यावत् । तस्यैकस्य व्रतस्य छेदेन द्वित्र्यादिभेदेनोपस्थापनं व्रतसमारोपणं छेदोपस्थापनशुद्धिसंयमः । सकलव्रतानामेकत्वमापाद्यैकयमोपादानाद् द्रव्यार्थिकनयः सामायिकशुद्धिसंयमः । तदेवैकं व्रतं पञ्चधा बहुधा वा विपाट्य धारणात् पर्यायार्थिकनयश्छेदोपस्थापनशुद्धिसंयमः । निशितबुद्धिजनानुग्रहार्थं द्रव्यार्थिकनयादेशना, मन्दधियामनुग्रहार्थं पर्यायार्थिकनयादेशना । ततो नानयोः संयमयोरनुष्ठानकृतो विशेषोऽस्तीति द्वितयदेशेनानुगृहीत एक एव संयम इति चेन्नैष दोषः, इष्टत्वात् । अनेनैवाभिप्रायेण सूत्रे पृथक् न शुद्धिसंयतग्रहणं कृतम् । परिहारप्रधानः शुद्धिसंयतः परिहारशुद्धिसंयतः । त्रिंशद्वर्षाणि यथेच्छया भोगमनुभूय सामान्यरूपेण विशेषरूपेण वा संयममादाय द्रव्यक्षेत्रकालभावगतपरिमितापरिमितप्रत्याख्यानप्रतिपादकप्रत्याख्यानपूर्वमहार्णवं सम्यगधिगम्य व्यपगतसकलसंशयस्तपोविशेषात्समुत्पन्नपरिहारर्द्धिस्तीर्थंकरपादमूले परिहारशुद्धिसंयममादत्ते । एवमादाय स्थानगमनचङ्क्रमणाशनपानासनादिषु व्यापारेष्वशेषप्राणिपरिहरणदक्षः परिहारशुद्धिसंयतो नाम । साम्परायः कषायः, सूक्ष्मः साम्परायो येषां ते सूक्ष्मसांपरायाः । शुद्धाश्च ते संयताश्च शुद्धसंयताः । सूक्ष्मसाम्परायाश्च ते शुद्धसंयताश्च सूक्ष्मसाम्परायशुद्धसंयताः । त एव द्विधोपात्तसंयमा यदा सूक्ष्मीकृतकषायाः भवन्ति तदा ते सूक्ष्मसाम्परायशुद्धसंयता इत्युच्यन्त इति यावत् । यथाख्यातो यथाप्रतिपादितो विहारः कषायाभावरूपमनुष्ठानम् । यथाख्यातो विहारो येषां ते यथाख्यातविहाराः । यथाख्यातविहाराश्च ते शुद्धिसंयताश्च यथाख्यातविहारशुद्धिसंयताः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुगममन्यत् । संयमानुवादेनासंयतानां संयतासंयतानां च न ग्रहणं प्राप्नुयादिति चेन्न, आम्रतरुप्रधानवनान्तस्थनिम्बानामपि आम्रवण-व्यपदेशदर्शनतोऽनेकान्तात् । उत्तं च—संगहिय-सयल-संजममेय-जममणुत्तरं दुरवगम्मं । जीवो समुव्वहंतो सामाइय-संजदो होई ॥ १८७ ॥ छेत्तूण य परियायं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं । पंचजमे धम्मे सो छेदोवट्ठावओ जीवो ॥ १८८ ॥ पंच-समिदो ति-गुत्तो परिहरइ सदा वि जो हु सावज्जं । पंच-जमेय-जमो वा परिहारो संजदो सो हु ॥ १८९ ॥ अणुलोभं वेदंतो जीवो उवसामगो व खवओ वा । सो सुहुम-सांपराओ जहक्खादेणूणओ किं पि ॥ १९० ॥ उवसंते खीणे वा असुहे कम्मम्हि मोहणीयम्हि । छदुमत्थो व जिणो वा जहक्खादो संजदो सो हु ॥ १९१ ॥ पंच-ति-चउव्विहेहिं अणु-गुण-सिक्खा-वएहिं संजुत्ता । वुचंति देस-विरया सम्मा-इट्ठी ज्झरिय-कम्मा ॥ १९२ ॥ दंसण-वय-सामाइय-पोसह-सचित्त-राइभत्ते य । बम्हारंभ-परिग्गह-अणुमण-उद्दिट्ठ देस-विरदेदे ॥ १९३ ॥ जीवा चोद्दस-भेया इंदिय-विसया तहट्ठवीसं तु । जे तेसु णेव विरदा असंजदा ते मुणेयव्वा ॥ १९४ ॥ संयतानां गुण-स्थानानां संख्यानिरूपणार्थमाह—

संजदा पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ॥ १२४ ॥

अथ स्याद् बुद्धिपूर्विका सावद्यविरतिः संयमः, अन्यथा काष्ठादिष्वपि संयमप्रसङ्गात् । न च केवलिषु तथाभूता निवृत्तिरस्ति ततस्तत्र संयमो दुर्घट इति नैष दोषः, अघातिचतुष्टयविनाशापेक्षया समयं प्रत्यसंख्यातगुणश्रेणिकर्मनिर्जरापेक्षया च सकलपापक्रिया-निरोधलक्षणपारिणामिकगुणाविर्भावापेक्षया च तत्र संयमोपचारात् । अथवा प्रवृत्त्यभावापेक्षया मुख्यसंयमोऽस्ति । न काष्ठेन व्यभि-चारस्तत्र प्रवृत्त्यभावतस्तन्निवृत्त्यनुपपत्तेः । सुगममन्यत् । द्रव्यपर्यायार्थिकनयद्वयनिबन्धनसंयमगुणप्रतिपादनार्थमाह—

सामाइय-च्छेदोवट्ठावण-सुद्धि-संजदा पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ॥ १२५ ॥

सुगमत्वादत्र न किञ्चिद्वक्तव्यमस्ति । द्वितीयसंयमस्याध्वाननिरूपणार्थमाह—

परिहार-सुद्धि-संजदा दोसु ट्ठाणेसु पमत्तसंजद-ट्ठाणे अप्पमत्तसंजद-ट्ठाणे ॥ १२६ ॥

उपरिष्टात्किमित्ययं संयमो न भवेदिति चेन्न, ध्यानामृतसागरान्तर्निमग्नात्मनां वाचंयमानामुपसंहृतगमनागमनादिकायव्यापाराणां परिहारानुपपत्तेः । प्रवृत्तः परिहरति नाप्रवृत्तस्ततो नोपरिष्टात्संयमोऽस्ति । परिहारशुद्धिसंयतः किमु एकयम उत पंचयम इति ? किंचातो यद्येकयमः सामायिकेऽन्तर्भवति । अथ यदि पंचयमः छेदोपस्थापनेऽन्तर्भवति ? न च संयममादधानस्य पुरुषस्य द्रव्यपर्याया-

र्थिकाभ्यां व्यतिरिक्तस्यास्ति सम्भवस्ततो न परिहारसंयमोऽस्तीति न, परिहारर्द्ध्यतिशयोत्पत्त्यपेक्षया ताभ्यामस्य कथञ्चिद्भेदात्। तद्रूपापरित्यागेनैव परिहारर्द्धिपर्यायेण परिणतत्वान्न ताभ्यामन्योऽयं संयम इति चेन्न, प्रागविद्यमानपरिहारर्द्ध्यपेक्षया ताभ्यामस्य भेदात्। ततः स्थितमेतत्ताभ्यामन्यः परिहारसंयम इति। परिहारर्द्धेरुपरिष्टादपि सत्त्वात्तत्रास्यास्तु सत्त्वमिति चेन्न, तत्कार्यस्य परिहरणस्यासत्त्वात्तत्र तदभावात्। तृतीयसंयमस्याध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

सुहुम-सांपराइय-सुद्धि-संजदा एक्कम्मि चेव सुहुम-सांपराइय सुद्धि-संजद-ट्ठाणे ॥ १२७ ॥

सूक्ष्मसाम्परायः किमु एकयम उत पञ्चयम इति? किं चातो यद्येकयमः पञ्चयमान्न मुक्तिरुपशमश्रेण्यारोहणं वा सूक्ष्मसाम्परायगुणप्राप्तिमन्तरेण तदुभयाभावात्। अथ पञ्चयम एकयमानां पूर्वोक्तदोषौ समाढौकेते। अथोभययम एकयमपञ्चयमभेदेन सूक्ष्मसाम्परायाणां द्वैविध्यमापतेदिति। नाद्यौ विकल्पावनभ्युपगमात्। न तृतीयविकल्पोक्तदोषः सम्भवति पञ्चैकयमभेदेन संयमभेदाभावात्। यद्येकयमपञ्चयमौ संयमस्य न्यूनाधिकभावस्य निबन्धनावेवाभविष्यतां संयमभेदोऽप्यभविष्यत्। न चैवं संयमं प्रति द्वयोरविशेषात्। ततो न सूक्ष्मसाम्परायसंयमस्य तद्द्वारेण द्वैविध्यमिति। तद्द्वारेण संयमस्य द्वैविध्याभावे पञ्चविधसंयमोपदेशः कथं घटत इति चेन्मा घटिष्ट। तर्हि कतिविधः संयमः? चतुर्विधः, पञ्चमस्य संयमस्यानुपलम्भात्। सुगममन्यत्। चतुर्थसंयमस्याध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

जहाक्खाद-विहार-सुद्धि-संजदा चदुसु ट्ठाणेसु उवसंत-कसाय वीयराय-छदुमत्था खीण-कसाय-वीयराय-छदुमत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवलि त्ति ॥ १२८ ॥

सुगमत्वान्नात्र वक्तव्यमति। देशविरतगुणस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

संजदासंजदा एक्कम्मि चेय संजदासंजद-ट्ठाणे ॥ १२९ ॥

सुगममेतत्। असंयतगुणस्य गुणस्थानप्रमाणनिरूपणार्थमाह—

असंजदा एइंदियप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ १३० ॥

मिथ्यादृष्टयोऽपि केचित्संयता दृश्यन्त इति चेन्न, सम्यक्त्वमन्तरेण संयमानुपपत्तेः। सिद्धानां कः संयमो भवतीति चेन्नैकोऽपि। यथा बुद्धिपूर्वकनिवृत्तेरभावान्न संयतास्तत एव न संयतासंयता नाप्यसंयताः प्रणष्टाशेषपापक्रियत्वात्। संयमद्वारेण जीवपदार्थमभिधाय साम्प्रतं दर्शनमुखेन जीवसत्तानिरूपणार्थमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणाणुवादेण अत्थि चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओधिदंसणी केवलदंसणी चेदि ॥ १३१ ॥

चक्षुषा सामान्यस्यार्थस्य ग्रहणं चक्षुर्दर्शनम्। अथ स्याद्विषयविषयिसम्पातसमनन्तरमाद्यग्रहणमवग्रहः। न तेन बाह्यार्थगतविधिसामान्यं परिच्छिद्यते तस्यावस्तुनः कर्मत्वाभावात्। अविषयीकृतप्रतिषेधस्य ज्ञानस्य विधौ प्रवृत्तिविरोधात्। विधिः प्रतिषेधाद् व्यावृत्तो गृह्यतेऽव्यावृत्तो वा? आद्ये न विधिसामान्यग्रहणं प्रतिषेधेन सह विध्युपादानात्। द्वितीये न तद्धि ग्रहणं विधिप्रतिषेधोभयग्रहणे तस्यान्तर्भावात्। न बाह्यार्थगतप्रतिषेधसामान्यमपि परिच्छिद्यते विधिपक्षोक्तदोषदूषितत्वात्। तस्माद्विधिनिषेधात्मकबाह्यार्थग्रहणमवग्रहः। न स दर्शनं सामान्यग्रहणस्य दर्शनव्यपदेशात्। ततो न चक्षुर्दर्शनमिति। अत्र प्रतिविधीयते, नैते दोषा दर्शनमाढौकन्ते तस्यान्तरङ्गार्थविषयत्वात्। अन्तरङ्गार्थोऽपि सामान्यविशेषात्मक इति। तद्विधिप्रतिषेधसामान्ययोरुपयोगस्य क्रमेण प्रवृत्त्यनुपपत्तेरक्रमेण तत्रोपयोगस्य प्रवृत्तिरङ्गीकर्तव्या। तथा च न सोऽन्तरङ्गोपयोगोऽपि दर्शनं तस्य सामान्यविशेषविषयत्वादिति चेन्न, सामान्यविशेषात्मकस्यात्मनः सामान्यशब्दवाच्यत्वेनोपादानात्। तस्य कथं सामान्यतेति चेदुच्यते। चक्षुरिन्द्रियक्षयोपशमो हि नाम रूप एव नियमितस्ततो रूपविशिष्टस्यैवार्थग्रहणस्योपलम्भात्। तत्रापि रूपसामान्य एव नियमितस्ततो नीलादिष्वेकरूपेणैव विशिष्टवस्त्वनुपलम्भात्। तस्माच्चक्षुरिन्द्रियक्षयोपशमो रूपविशिष्टार्थं प्रति समान आत्मव्यतिरिक्तक्षयोपशमाभावादात्मापि तद् द्वारेण समानः, तस्य भावः सामान्यं तद्दर्शनस्य विषय इति स्थितम्। अथ स्याच्चक्षुषा यत्प्रकाशते तद्दर्शनम्। न चात्मा चक्षुषा प्रकाशते तथानुपलम्भात्। प्रकाशते च रूपसामान्यविशेषविशिष्टार्थः। न स दर्शनमर्थस्योपयोगरूपत्वविरोधात्। न तस्योपयोगोऽपि दर्शनं तस्य ज्ञानरूपत्वात्। ततो न चक्षुर्दर्शनमिति न, चक्षुर्दर्शनावरणीयस्य कर्मणोऽस्तित्वान्यथानुपपत्तेराधार्याभाव आधारकस्याप्यभावात्। तस्माच्चक्षुर्दर्शनमन्तरङ्गविषयमित्यङ्गीकर्तव्यम्। किं च निद्रानिद्रादीनि कर्माणि न ज्ञानप्रतिबन्धकानि ज्ञानावरणाभ्यन्तरे तेषामपाठात्। नान्तरङ्गबहिरङ्गार्थविषयोपयोगसामान्यप्रतिबन्धकानि नान्तरङ्गबहिरङ्गार्थविषयोपयोगद्वयप्रतिबन्धकानि, एवमपि ज्ञानावरणस्यैवान्तर्भावात्। नान्तरङ्गबहिरङ्गार्थविषयोपयोगसामान्यप्रतिबन्धकानि जाग्रदवस्थायां छद्मस्थज्ञानदर्शनोपयोगयोरक्रमेण वृत्तिप्रसङ्गात्। ततो दर्शनावरणीयकर्मणोऽस्तित्वान्यथानुपपत्तेरन्तरङ्गार्थविषयोपयोगप्रतिबन्धकं दर्शनावरणीयम्, बहिरङ्गार्थविषयोपयोगप्रतिबन्धकं ज्ञानावरणमिति प्रतिपत्तव्यम्। आत्मविषयोपयोगस्य दर्शनत्वेऽङ्गीक्रियमाण आत्मनो विशेषाभावाच्चतुर्णामपि दर्शनानामविशेषः स्यादिति चेन्नैष दोषः, यद्यस्य ज्ञानस्योत्पादकं स्वरूपसंवेदनं तस्य तद्दर्शनव्यपदेशान्न दर्शनस्य चातुर्विध्यनियमः। यावन्तश्चक्षुरिन्द्रियक्षयोपशमजनितज्ञानस्य विषयभावमापन्नाः पदार्थास्तावन्त एवात्मस्थक्षयोपशमास्तत्तन्नामानस्तद्द्वारेणात्मापि तावानेव तच्छक्तिखचितात्मपरिच्छित्तिर्दर्शनम्। न चैतत्काल्पनिकं परमार्थत एव परोपदेशमन्तरेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

शक्त्या सहात्मन उपलम्भात्। न दर्शनानामक्रमेण प्रवृत्तिर्ज्ञानानामक्रमेणोत्पत्त्यभावतस्तदभावात्। एवं शेषदर्शनानामपि वक्तव्यम्। ततो न दर्शनानामेकत्वमिति। उत्तं च—चक्खूण जं पयासदि दिस्सदि तचक्खु-दंसणं बेंति। सेसिंदिय-प्पयासो णादव्वो सो अचक्खु त्ति॥ १९५॥ परमाणु-आदियाइं अंतिम-खंधं ति मुत्ति-दव्वाइं। तं ओधि-दंसणं पुण जं पस्सइ ताइ पचक्खं॥ १९६॥ बहुविह-बहुप्पयारा उज्जोवा परिमियम्हि खेत्तम्हि। लोगालोग-अतिमिरो जो केवलदंसणुज्जोवो॥ १९७॥ चक्षुर्दर्शनाध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

चक्खु-दंसणी चउरिंदियप्पहुडि जाव खीण-कसाय-वीयराय-छदुमत्था त्ति॥ १३२॥

सुगममेतत्। अचक्षुर्दर्शनस्याधिपतिप्रतिपादनार्थमाह—

अचक्खु-दंसणी एइंदियप्पहुडि जाव खीण-कसाय-वीयराय-छदुमत्था त्ति॥ १३३॥

दृष्टान्तस्मरणमचक्षुर्दर्शनमिति केचिदाचक्षते तन्न घटते, एकेन्द्रियेषु चक्षुरभावतोऽचक्षुर्दर्शनस्याभावासञ्जननात्। दृष्टशब्द उपलम्भवाचक इति चेन्न, उपलब्धार्थविषयस्मृतेर्दर्शनत्वेऽङ्गीक्रियमाणे मनसो निर्विषयतापत्तेः। ततः स्वरूपसंवेदनं दर्शनमित्यङ्गीकर्तव्यम्। ज्ञानमेव द्विस्वभावं किन्न स्यादिति चेन्न, स्वस्माद्भिन्नवस्तुपरिच्छेदकं ज्ञानम्, स्वतोऽभिन्नवस्तुपरिच्छेदकं दर्शनम्, ततो नानयोरेकत्वमिति। ज्ञानदर्शनयोरक्रमेण प्रवृत्तिः किन्न स्यादिति चेत् किमिति न भवति? भवत्येव, क्षीणावरणे द्वयोरक्रमेण प्रवृत्त्युपलम्भात्। भवतु छद्मस्थावस्थायामप्यक्रमेण क्षीणावरण इव तयोः प्रवृत्तिरिति चेन्न, आवरणनिरुद्धाक्रमयोरक्रमवृत्तिविरोधात्। अस्वसंविद्रूपो न कदाचिदप्यात्मोपलभ्यत इति चेन्न, बहिरङ्गोपयोगावस्थायामन्तरङ्गोपयोगानुपलम्भात्। श्रुतदर्शनं किमिति नोच्यत इति चेन्न, तस्य मतिपूर्वकस्य दर्शनपूर्वकत्वविरोधात्। यदि बहिरङ्गार्थसामान्यविषयं दर्शनमभविष्यत्तदा श्रुतज्ञानदर्शनमपि समभविष्यत्। अवधिदर्शनप्रदेशप्रतिपादनार्थमाह—

ओधि-दंसणी असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीण-कसाय-वीयराय-छदुमत्था त्ति॥ १३४॥

सुगममेतत्। विभङ्गदर्शनं किमिति पृथग् नोपदिष्टमिति चेन्न, तस्यावधिदर्शनेऽन्तर्भावात्। मनःपर्ययदर्शनं तर्हि वक्तव्यमिति चेन्न, मतिपूर्वकत्वात्तस्य दर्शनाभावात्। केवलदर्शनस्वामित्वप्रतिपादनार्थमाह—

केवलदंसणी तिसु ट्ठाणेसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली सिद्धा चेदि॥ १३५॥

अनन्तत्रिकालगोचरबाह्येऽर्थे प्रवृत्तं केवलज्ञानं स्वतोऽभिन्नवस्तुपरिच्छेदकं च दर्शनमिति कथमनयोः समानतेति चेत्कथ्यते।

ज्ञानप्रमाणमात्मा ज्ञानं च त्रिकालगोचरानन्तद्रव्यपर्यायपरिमाणं ततो ज्ञानदर्शनयोः समानत्वमिति । स्वजीवस्थपर्यायैर्ज्ञानाद्दर्शनमधिकमिति चेन्न, इष्टत्वात् । कथं पुनस्तेन तस्य समानत्वम् ? न, अन्योन्यात्मकयोस्तदविरोधात् । उत्तं च—आदा णाण-पमाणं णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं । णेयं लोआलोअं तम्हा णाणं तु सव्व-गयं ॥ १९८ ॥ एय-दवियम्मि जे अत्थ-पज्जया वयण-पज्जया वावि । तीदाणागय-भूदा तावदियं तं हवइ दव्वं ॥ १९९ ॥ इदि । लेश्याद्वारेण जीवपदार्थसत्त्वान्वेषणायाह—

लेस्साणुवादेण अत्थि किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया अलेस्सिया चेदि ॥ १३६ ॥

लेश्या इति किमुक्तं भवति ? कर्मस्कन्धैरात्मानं लिम्पतीति लेश्या । कषायानुरञ्जितैव योगप्रवृत्तिर्लेश्येति नात्र परिगृह्यते सयोगकेवलिनोऽलेश्यत्वापत्तेः । अस्तु चेन्न, 'शुक्ललेश्यः सयोगकेवली' इति वचनव्याघातात् । लेश्या नाम योगः कषायस्तावुभौ वा ? किं चातो नाद्यौ विकल्पौ योगकषायमार्गणयोरेव तस्या अन्तर्भावात् । न तृतीयविकल्पस्तस्यापि तथाविधत्वात् । न प्रथमद्वितीयविकल्पोक्तदोषावनभ्युपगमात् । न तृतीयविकल्पोक्तदोषो द्वयोरेकस्मिन्नन्तर्भावविरोधात् । न द्वित्वमपि कर्मलेपैककार्यकर्तृत्वेनैकत्वमापन्नयोर्योगकषाययोर्लेश्यात्वाभ्युपगमात् । नैकत्वात्तयोरन्तर्भवति द्वयात्मकैकस्य जात्यन्तरमापन्नस्य केवलेनैकेन सहैकत्वसमानत्वयोर्विरोधात् । योगकषायकार्याद्व्यतिरिक्तलेश्याकार्यानुपलम्भान्न ताभ्यां पृथग्लेश्यास्तीति चेन्न, योगकषायाभ्यां प्रत्यनीकत्वाद्यालम्बनाचार्यादिबाह्यार्थसन्निधानेनापन्नलेश्याभावाभ्यां संसारवृद्धिकार्यस्य तत्केवलकार्याद्व्यतिरिक्तस्योपलम्भात् । संसारवृद्धिहेतुर्लेश्येति प्रतिज्ञायमाने लिम्पतीति लेश्येत्यनेन विरोधश्चेन्न, लेपाविनाभावित्वेन तद्वृद्धेरपि तद्व्यपदेशाविरोधात् । ततस्ताभ्यां पृथग्भूता लेश्येति स्थितम् । षड्विधः कषायोदयः । तद्यथा,—तीव्रतमः, तीव्रतरः, तीव्रः, मन्दः, मन्दतरः, मन्दतम इति । एतेभ्यः षड्भ्यः कषायोदयेभ्यः परिपाट्या षड् लेश्या भवन्ति । कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या पीतलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या चेति । उत्तं च—चंडो ण मुयदि वेरं भंडण-सीलो य धम्म दय-रहिओ । दुट्ठो ण य एदि वसं लक्खणमेदं तु किण्हस्स ॥ २०० ॥ मंदो बुद्धि-विहीणो णिव्विण्णाणी य विसय-लोलो य । माणी मायी य तहा आलस्सो चेय भेज्जो य ॥ २०१ ॥ णिद्दा-वंचण-बहुलो धण-धण्णे होइ तिव्व-सण्णो य । लक्खणमेदं भणियं समासदो णील-लेस्सस्स ॥ २०२ ॥ रूसदि णिंददि अण्णे दूसदि बहुसो य सोय-भय-बहुलो । असुयदि परिभवदि परं पसंसदि य अप्पयं बहुसो ॥ २०३ ॥ ण य पत्तियइ परं सो अप्पाणमिव परं पि मण्णंतो । तूसदि अभित्थुवंतो ण य जाणइ हाणि-वड्ढीओ ॥ २०४ ॥ मरणं पत्थेइ रणे देदि सुबहुअं हि थुव्वमाणो दु । ण गणइ अकज्ज-कज्जं लक्खणमेदं तु काउस्स ॥ २०५ ॥ जाणइ कज्जमकज्जं सेय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मसेयं च सव्व-सम-पासी। दय-दाण-रदो य मिदू लक्खणमेदं तु तेउस्स ॥ २०६ ॥ चागी भद्दो चोक्खो उज्जुव-कम्मो य खमइ बहुअं हि। साहु-गुरु-पूज-णिरदो लक्खणमेदं तु पम्मस्स ॥ २०७ ॥ ण उ कुणइ पक्खवायं ण वि य णिदाणं समो य सव्वेसु। णत्थि य राय-द्दोसो णेहो वि य सुक्क-लेस्सस्स ॥ २०८ ॥ षड्लेश्यातीता अलेश्याः। उत्तं च—किण्हादि-लेस्स-रहिदा संसार-विणिग्गया अणंत-सुहा। सिद्धि-पुरं संपत्ता अलेसिया ते मुणेयव्वा ॥ २०९ ॥ लेश्यानां गुणस्थाननिरूपणार्थमाह—

किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया एइंदियप्पहुडि जाव असंजद-सम्माइट्ठि त्ति ॥ १३७ ॥

कथम् ? तीव्रादिकषायोदयवृत्तेः सत्त्वात्। सुगममन्यत्। तेजःपद्मलेश्याध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सण्णि-मिच्छाइट्ठिप्पहुडि-जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ॥ १३८ ॥

कथम् ? एतेषां तीव्रादिकषायोदयाभावात्। सुगममन्यत्।

सुक्कलेस्सिया सण्णि-मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ १३९ ॥

कथं क्षीणोपशान्तकषायाणां शुक्ललेश्येति चेन्न, कर्मलेपनिमित्तयोगस्य तत्र सत्त्वापेक्षया तेषां शुक्ललेश्यास्तित्वाविरोधात्।

तेण परमलेस्सिया ॥ १४० ॥

कथम् ? बन्धहेतुयोगकषायाभावात्। सुगममन्यत्। लेश्यामुखेन जीवपदार्थमभिधाय भव्याभव्यद्वारेण जीवास्तित्वप्रतिपादनार्थमाह—

भवियाणुवादेण अत्थि भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ॥ १४१ ॥

भव्या भविष्यन्तीति सिद्धिर्येषां ते भव्यसिद्धयः। तथा च भव्यसन्ततिच्छेदः स्यादिति चेन्न, तेषामानन्त्यात्। न हि सान्तस्यानन्त्यं विरोधात्। सव्ययस्य निरायस्य राशेः कथमानन्त्यमिति चेन्न, अन्यथैकस्याप्यानन्त्यप्रसङ्गात्। न सव्ययस्यानन्तस्य न क्षयोऽस्तीत्येकान्तोऽस्ति स्वसंख्येयासंख्येयभागव्ययस्य राशेरनन्तस्यापेक्षया तद्द्वित्र्यादिसंख्येयराशिव्ययतो न क्षयोऽपीत्यभ्युपगमात्। अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनकालस्यानन्तस्यापि क्षयदर्शनादनैकान्तिक आनन्त्यहेतुरिति चेन्न, उभयोर्भिन्ननिबन्धनतः प्राप्तानन्त्ययोः साम्याभावतोऽर्द्धपुद्गलपरिवर्तनस्य वास्तवानन्त्याभावात्। तद्यथा,—अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनकालः सक्षयोऽप्यनन्तः, छद्मस्थैरनुपलब्धपर्यन्तत्वात्।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलमनन्तस्तद्विषयत्वाद्वा । जीवराशिस्तु पुनः संख्येयराशिक्षयोऽपि निर्मूलप्रलयाभावादनन्त इति । अथवा छद्मस्थानुपलभ्यपेक्षामन्तरेणानन्त्यादिति विशेषणाद्वा नानैकान्तिक इति । किं च सव्ययस्य निरवशेषक्षयेऽभ्युपगम्यमाने कालस्यापि निरवशेषक्षयो जायेत सव्ययत्वं प्रत्यविशेषात् । अस्तु चेन्न, सकलपर्यायप्रक्षयतोऽशेषस्य वस्तुनः प्रक्षीणस्वलक्षणस्याभावापत्तेः । मुक्तिमनुपगच्छतां कथं पुनर्भव्यत्वमिति चेन्न, मुक्तिगमनयोग्यतापेक्षया तेषां भव्यव्यपदेशात् । न च योग्याः सर्वेऽपि नियमेन निष्कलङ्का भवन्ति सुवर्णपाषाणेन व्यभिचारात् । उत्तं च—एय-णिगोद-सरीरे जीवा दव्व-प्पमाणदो दिट्ठा । सिद्धेहि अणंत-गुणा सव्वेण वितीद-कालेण ॥ २१० ॥ तद्विपरीता अभव्याः । उत्तं च—भविया सिद्धी जेसिं जीवाणं ते भवंति भव-सिद्धा । तव्विवरीदाभव्वा संसारादो ण सिज्झंति ॥ २११ ॥ भव्यगुणस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

भवसिद्धिया एइंदियप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ॥ १४२ ॥

सुगममेतत् । अभव्यानां गुणस्थाननिरूपणायाह—

अभवसिद्धिया एइंदियप्पहुडि जाव सण्णि-मिच्छाइट्ठि त्ति ॥ १४३ ॥

एतदपि सुगमम् ।

सम्मत्ताणुवादेण अत्थि सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी मिच्छाइट्ठी चेदि ॥ १४४ ॥

आम्रवणान्तस्थनिम्बानामाम्रवणव्यपदेशवन्मिथ्यात्वादीनां सम्यक्त्वव्यपदेशो न्याय्यः । सुगममन्यत् । उत्तं च—छप्पंच-णवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं । आणाए अहिगमेण व सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥ २१२ ॥ खीणे दंसण-मोहे जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई । तं खाइय-सम्मत्तं णिच्चं कम्म-क्खवण-हेऊ ॥ २१३ ॥ वयणेहि वि हेऊहि वि इंदिय-भय-आणएहि रूवेहि । वीहच्छ-दुगुंछाहि ण सो ते-लोक्केण चालेज्ज ॥ २१४ ॥ दंसणमोहुदयादो उप्पज्जइ जं पयत्थ-सद्दहणं । चल-मलिनमगाढं तं वेदग-सम्मत्तमिह मुणसु ॥ २१५ ॥ दंसणमोहुवसमदो उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं । उवसम-सम्मत्तमिणं पसण्ण-मल-पंक-तोय-समं ॥ २१६ ॥ सम्यग्दर्शनस्य सामान्यस्य क्षायिकसम्यग्दर्शनस्य च गुणनिरूपणार्थमाह—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ॥ १४५ ॥

किं तत्सम्यक्त्वगतसामान्यमिति चेत्त्रिष्वपि सम्यग्दर्शनेषु यः साधारणोंऽशस्तत्सामान्यम् । क्षायिकक्षायोपशमिकौपशमिकेषु परस्परतो भिन्नेषु किं सादृश्यमिति चेन्न, तत्र यथार्थश्रद्धानं प्रति साम्योपलम्भात् । क्षयक्षयोपशमोपशमविशिष्टानां यथार्थश्रद्धानानां कथं समानतेति चेद्भवतु विशेषणानां भेदो न विशेष्यस्य यथार्थश्रद्धानस्य । सुगममन्यत् । वेदकसम्यग्दर्शनगुणसंख्याप्रतिपादनार्थमाह—

वेदगसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ॥ १४६ ॥

उपरितनगुणेषु किमिति वेदकसम्यक्त्वं नास्तीति चेन्न, अगाढसमलश्रद्धानेन सह क्षपकोपशमश्रेण्यारोहणानुपपत्तेः । वेदकसम्यक्त्वादौपशमिकसम्यक्त्वस्य कथमाधिक्यमिति चेन्न, दर्शनमोहोदयजनितशैथिल्यादेस्तत्रासत्त्वतस्तदाधिक्योपलम्भात् । कथमस्य वेदकसम्यग्दर्शनव्यपदेश इति चेदुच्यते । दर्शनमोहवेदको वेदकः, तस्य सम्यग्दर्शनं वेदकसम्यग्दर्शनम् । कथं दर्शनमोहोदयवतां सम्यग्दर्शनस्य सम्भव इति चेन्न, दर्शनमोहनीयस्य देशघातिन उदये सत्यपि जीवस्वभावश्रद्धानस्यैकदेशोत्पत्त्यविरोधात् । देशघातिनो दर्शनमोहनीयस्य कथं सम्यग्दर्शनव्यपदेश इति चेन्न, सम्यग्दर्शनसाहचर्यात्तस्य तद्व्यपदेशाविरोधात् । औपशमिकसम्यग्दर्शनगुणस्थानप्रतिपादनार्थमाह—

उवसमसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसाय-वीयराय-छदुमत्था त्ति ॥ १४७ ॥

सुगममेतत् ।

सासणसम्माइट्ठी एक्कम्मि चेय सासणसम्माइट्ठि-ट्ठाणे ॥ १४८ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठी एक्कम्मि चेय सम्मामिच्छाइट्ठिट्ठाणे ॥ १४९ ॥

मिच्छाइट्ठी एइंदियप्पहुडि जाव सण्णि-मिच्छाइट्ठि त्ति ॥ १५० ॥

सुगमत्वात्त्रिष्वप्येतेषु सूत्रेषु न वक्तव्यमस्ति । सम्यग्दर्शनादेशप्रतिपादनार्थमाह—

णेरइया अत्थि मिच्छाइट्ठी सासण-सम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ १५१ ॥

अथ स्याद्गतिनिरूपणायामस्यां गतौ इयन्ति गुणस्थानानि सन्ति, इयन्ति न सन्तीति निरूपितत्वान्न वक्तव्यमिदं सूत्रम्, सम्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्त्वनिरूपणायां गुणस्थाननिरूपणावसराभावाच्चेति न, विस्मृतपूर्वोक्तार्थस्य प्रतिपाद्यस्य तमर्थं संस्मार्य तत्र तत्र गतौ सम्यग्दर्शनभेदप्रतिपादनप्रवणत्वात् । सुगममन्यत् ।

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ॥ १५२ ॥

कथं सामान्यवद्विशेषः स्यादिति चेन्न, विशेषव्यतिरिक्तसामान्यस्यासत्त्वात् । नाव्यतिरेकोऽपि द्वयोरभावासञ्जननात् । नोभयपक्षोऽपि पक्षद्वयोक्तदोषासञ्जननात् । नानुभयपक्षोऽपि निःस्वभावप्रसङ्गात् । न च सामान्यविशेषयोरभाव एव प्राप्तजात्यन्तरत्वेनोपलम्भात् । ततः सूक्तमेतदिति स्थितम् । सम्यग्दर्शनविशेषप्रतिपादनार्थमाह—

णेरइया असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी चेदि ॥ १५३ ॥

सुगममेतत् ।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइआ ॥ १५४ ॥

एतदपि सुबोध्यम् ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंजदसम्माइट्ठिट्ठाणे खइयसम्माइट्ठी णत्थि, अवसेसा अत्थि ॥ १५५ ॥

सप्तप्रकृतीषु क्षीणासु किमिति तत्र नोत्पद्यन्त इति चेत्स्वाभाव्यात् । तत्रस्थाः सन्तः किमिति सप्तप्रकृतीर्न क्षपयन्तीति चेन्न, तत्र जिनानामभावात् । तिर्यगादेशप्रतिपादनार्थमाह—

तिरिक्खा अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा त्ति ॥१५६॥ ॥ ९७ ॥

संन्यस्तशरीरत्वात्त्यक्ताहाराणां तिरश्चां किमिति संयमो न भवेदिति चेन्न, अन्तरङ्गायाः सकलनिवृत्तेरभावात् । किमिति तदभावश्चेज्जातिविशेषात् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं जाव सव्व-दीव-समुद्देसु ॥ १५७ ॥

स्वयम्प्रभादारान्मानुषोत्तरात्परतो भोगभूमिसमानत्वान्न तत्र देशव्रतिनः सन्ति तत एतत्सूत्रं न घटत इति न, वैरसम्बन्धेन देवैर्दानवैर्वोत्क्षिप्य क्षिप्तानां सर्वत्र सत्त्वाविरोधात् । सम्यग्दर्शनविशेषप्रतिपादनार्थमाह—

तिरिक्खा असंजदसम्माइट्ठिट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी ॥ १५८ ॥

तिरिक्खा संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्माइट्ठी णत्थि अवसेसा अत्थि ॥ १५९ ॥

तिर्यक्षु क्षायिकसम्यग्दृष्टयः संयतासंयताः किमिति न सन्तीति चेन्न, क्षायिकसम्यग्दृष्टीनां भोगभूमिमन्तरेणोत्पत्तेरभावात् । न च भोगभूमावुत्पन्नानामणुव्रतोपादानं सम्भवति तत्र तद्विरोधात् । सुगममन्यत् ।

एवं पंचिंदिय-तिरिक्खा पंचिंदिय-तिरिक्ख-पज्जत्ता ॥ १६० ॥

एतदपि सुबोध्यम् ।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणीसु असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्माइट्ठी णत्थि, अवसेसा अत्थि ॥ १६१ ॥

तत्र क्षायिकसम्यग्दृष्टीनामुत्पत्तेरभावात्तत्र दर्शनमोहनीयस्य क्षपणाभावाच्च । मनुष्यादेशप्रतिपादनार्थमाह—

मणुस्सा अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा संजदा त्ति ॥ १६२ ॥

सुगममेतत् ।

एवमड्ढाइज्ज-दीव-समुद्देसु ॥ १६३ ॥

वैरसम्बन्धेन क्षिप्तानां संयतानां संयतासंयतानां च सर्वद्वीपसमुद्रेषु संभवो भवत्विति चेन्न, मानुषोत्तरात्परतो देवस्य प्रयोगतोऽपि मानुषाणां गमनाभावात् । न हि स्वतोऽसमर्थमन्यतः समर्थं भवत्यतिप्रसङ्गात् । अथ स्यादर्धतृतीयशब्देन किमु द्वीपो विशिष्यते उत समुद्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उत द्वावपीति ? नान्त्योपान्त्यविकल्पौ मानुषोत्तरात्परतोऽपि मनुष्याणामस्तित्वप्रसङ्गात् । अस्तु चेन्न, द्वीपत्रये मनुष्याणां सत्त्वप्रसङ्गात् । न तदपि, सूत्रविरोधात् । नादिविकल्पोऽपि समुद्राणां संख्यानियमाभावतः सर्वसमुद्रेषु तत्सत्त्वप्रसङ्गादिति । अत्र प्रतिविधीयते । नान्त्योपान्त्यविकल्पोक्तदोषाः समाढौकन्ते, तयोरनभ्युपगमात् । न प्रथमविकल्पोक्तदोषोऽपि द्वीपेष्वर्धतृतीयसंख्येषु मनुष्याणामस्तित्व-नियमे सति शेषद्वीपेषु मनुष्याभावसिद्धिवन्मानुषोत्तरत्वं प्रत्यविशेषतः शेषसमुद्रेषु तदभावसिद्धेः । नाशेषसमुद्राणां मानुषोत्तरत्वमसिद्ध-माराात्तनद्वीपभागस्याप्यन्यथा मानुषोत्तरत्वानुपपत्तेः । ततः सामर्थ्याद् द्वयोः समुद्रयोः सन्तीत्यनुक्तमप्यवगम्यते । सम्यग्दर्शन-विशेषप्रतिपादनार्थमाह—

मणुसा असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी ॥ १६४ ॥

सुगमत्वान्नात्र वक्तव्यमस्ति ।

एवं मणुस-पज्जत्त-मणुसिणीसु ॥ १६५ ॥

एतदपि सुगमम् । देवादेशप्रतिपादनार्थमाह—

देवा अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठि त्ति ॥ १६६ ॥

एवं जाव उवरिम-उवरिम-गेवेज्ज-विमाण-वासिय-देवा त्ति ॥ १६७ ॥

देवा असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठि त्ति ॥ १६८ ॥

सुगमत्वात्सूत्रत्रितये न किञ्चिद्वक्तव्यमस्ति ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-देवा देवीओ च सोधम्मीसाणकप्पवासिय-देवीओ च असंजदसम्मा-इट्ठि-ट्ठाणे खइयसम्माइट्ठी णत्थि अवसेसा अत्थि अवसेसियाओ अत्थि ॥ १६९ ॥

किमिति क्षायिकसम्यग्दृष्टयस्तत्र न सन्तीति चेन्न, देवेषु दर्शनमोहक्षपणाभावात्क्षपितदर्शनमोहकर्मणामपि प्राणिनां भवनवास्या-दिष्वधमदेवेषु सर्वदेवीषु चोत्पत्तेरभावाच्च । शेषसम्यक्त्वद्वयस्य तत्र कथं सम्भव इति चेन्न, तत्रोत्पन्नजीवानां पश्चात्तत्पर्यायपरिणतेः सत्त्वात् ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सोधम्मीसाणप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिम-गेवज्ज-विमाणवासिय-देवा असंजदसम्माइट्ठि-ट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी ॥ १७० ॥

त्रिविधेन सम्यक्त्वेन सह तत्रोत्पत्तेर्दर्शनात् । तत्रोत्पद्य द्विविधसम्यग्दर्शनोपादानात्तत्र तेषां सत्त्वं सुघटमिति । शेषदेवानां सम्यग्दर्शनभेदप्रतिपादनार्थमाह—

अणुदिस-अणुत्तर-विजयवइजयंतजयंतावराजिदसव्वट्ठसिद्धिविमाण-वासिय-देवा असंजदसम्माइट्ठिट्ठाणे अत्थि खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी ॥ १७१ ॥

कथं तत्रोपशमसम्यक्त्वस्य सत्त्वमिति चेत्कथं च तत्र तस्यासत्त्वं ? तत्रोत्पन्नेभ्यः क्षायिकक्षायोपशमिकसम्यग्दर्शनेभ्यस्तदनुत्पत्तेः । नापि मिथ्यादृष्टय उपात्तौपशमिकसम्यग्दर्शनाः सन्तस्तत्रोत्पद्यन्ते तेषां तेन सह मरणाभावात् । न, उपशमश्रेण्यारूढानामारुह्यावतीर्णानां च तत्रोत्पत्तितस्तत्र तत्सत्त्वाविरोधात् । उपशमश्रेण्यारूढा उपशमसम्यग्दृष्टयो न म्रियन्त औपशमिकसम्यग्दर्शनोपलक्षितत्वाच्छेषौपशमिकसम्यग्दृष्टय इवेति चेन्न, पश्चात्कृतमिथ्यात्वसम्यक्त्वाभ्यामनुपशमितोपशमितचारित्रमोहाभ्यां च तयोर्वैधर्म्यात् । सम्यग्दर्शनमुखेन जीवपदार्थमभिधाय समनस्कामनस्कभेदेन जीवपदार्थप्रतिपादनार्थमाह—

सण्णियाणुवादेण अत्थि सण्णी असण्णी ॥ १७२ ॥

सुगममेतत्सूत्रम् । संज्ञिनां गुणस्थानाध्वानप्रतिपादनार्थमाह—

सण्णी मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाय-वीयराय-छदुमत्था त्ति ॥ १७३ ॥

समनस्कत्वात्सयोगिकेवलिनोऽपि संज्ञिन इति चेन्न, तेषां क्षीणावरणानां मनोऽवष्टंभबलेन बाह्यार्थग्रहणाभावतस्तदसत्त्वात् । तर्हि भवन्तु केवलिनोऽसंज्ञिन इति चेन्न, साक्षात्कृताशेषपदार्थनामसंज्ञित्वविरोधात् । असंज्ञिनः केवलिनो मनोऽनपेक्ष्य बाह्यार्थग्रहणाद्विकलेन्द्रियवदिति चेद्भवत्वेवं यदि मनोऽनपेक्ष्य ज्ञानोत्पत्तिमात्रमाश्रित्यासंज्ञित्वस्य निबन्धनमिति चेन्मनसोऽभावाद् बुद्ध्यतिशयाभावः, ततो नानन्तरोक्तदोष इति सुगममेतत् ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असण्णी एइंदियप्पहुडि जाव असण्णि-पंचिंदिया त्ति ॥ १७४ ॥

एतदपि सुगमं सूत्रम् । आहारमुखेन जीवप्रतिपादनार्थमाह—

आहाराणुवादेण अत्थि आहारा अणाहारा ॥ १७५ ॥

एतदपि सुगमम् । आहारगुणप्रतिपादनार्थमाह—

आहारा एइंदियप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ॥ १७६ ॥

अत्र कवललेपोष्ममनःकर्माहारान् परित्यज्य नोकर्माहारो ग्राह्यः, अन्यथाहारकालविरहाभ्यां सह विरोधात् ।

अणाहारा चदुसु ट्ठाणेसु विग्गहगइ-समावण्णाणं केवलीणं वा समुग्घाद-गदाणं अजोगिकेवली सिद्धा चेदि ॥ १७७ ॥

एते शरीरप्रायोग्यपुद्गलोपादानरहितत्वादनाहारिण उच्यन्ते ।

इति संत-सुत्त-विवरणं समत्तं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने सत्सूत्रविवरणं समाप्तम्

इति भद्रम् ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति संत-सुत्त-विवरणं समत्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवीतरागाय नमः

अथ सत्प्ररूपणा—

संपहि संत-सुत-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो । परूवणा णाम किं उत्तं होदि ? ओघादेसेहि गुणेसु जीवसमासेसु
पज्जत्तीसु पाणेसु सण्णासु गदीसु इंदिएसु काएसु जोगेसु वेदेसु कसाएसु णाणेसु संजमेसु दंसणेसु लेस्सासु भविएसु अभविएसु
सम्मत्तेसु सण्णि-असण्णीसु आहारि-अणाहारीसु उवजोगेसु च पज्जत्तापज्जत्तविसेसणेहि विसेसिऊण जा जीव-परिक्खा सा परूवणा
णाम । उत्तं च—गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य । उवजोगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिया ॥ २१७ ॥
सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि
मनोबलं, वाग्बलं, कायबलं, उच्छ्वासनिःश्वासौ, आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः; चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनाना-
मिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात् । नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः; चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमा-
पेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात् । न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति; मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्न-
पुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात् । नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति; आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य
तस्मादुत्पन्नाया भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात् । नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति;
वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्य-
कारणयोरात्मपुद्गलोपादानयोर्भेदोऽभिधातव्य इति । सण्णा चउव्विहा आहार-भय-मेहुण-परिग्गह-सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदं-
स्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनै-
कत्वमास्कन्दति; लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, ॥ १०३ ॥
अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयो-
रन्तर्भवति; ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् । अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उत नोक्तेति ? किं चातः, यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति; सूत्रानुक्तप्रतिपादनात्। अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्याप्त्युपयोगसंज्ञानां मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति। न द्वितीयपक्षोक्तदोषोऽनभ्युपगमात्। प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्चेदुच्यते। पर्याप्ति-जीवसमासाः कायेन्द्रियमार्गणयोर्निलीनाः; एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदानां तत्र प्रतिपादितत्वात्। उच्छ्वासभाषा-मनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीनाः; तेषां पर्याप्तिकार्यत्वात्। कायबलप्राणोऽपि योगमार्गणातो निर्गतः; बललक्षणत्वाद्योगस्य। आयुःप्राणो गतौ निलीनः; द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात्। इन्द्रियप्राणा ज्ञानमार्गणायां निलीनाः, भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात्। आहारे या तृष्णा काङ्क्षा साहारसंज्ञा। सा च रतिरूपत्वान्मोहपर्यायः। रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति। ततः कषाय-मार्गणायामाहारसंज्ञा द्रष्टव्या। भयसंज्ञा भयात्मिका। भयञ्च क्रोधमानयोरन्तर्लीनम्; द्वेषरूपत्वात्। ततो भयसंज्ञापि कषायमार्गणा-प्रभवा। मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाप्रभेदा; स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां तीव्रोदयरूपत्वात्। परिग्रहसंज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता; बाह्यार्थालीढलोभ-रूपत्वात्। साकारोपयोगो ज्ञानमार्गणायामनाकारोपयोगो दर्शनमार्गणायां (अन्तर्भवति) तयोर्ज्ञानदर्शनरूपत्वात्। न पौनरुक्त्यमपि; कथञ्चित्तेभ्यो भेदात्। प्ररूपणायां किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते, सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते। तत्थ 'ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी सिद्धा चेदि' एदस्स ओघ-सुत्तस्स ताव परूवणा वुच्चदे। तं जहा–अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि चोद्दस-गुणट्ठाणादीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि। अत्थि चोद्दस जीवसमासा। के ते ? एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा। बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। बीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। तीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि। एदे चोद्दस जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि। अत्थि छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, अदीद-पज्जत्ती वि अत्थि। आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदिय-पज्जत्ती आणपाणपज्जत्ती भासापज्जत्ती मणपज्जत्ती चेदि। एदाओ छ पज्जत्तीओ सण्णिपज्जत्ताणं। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असमत्ताओ छ अपज्जत्तीओ भवंति। मणपज्जत्तीए विणा एदाओ चेव पंच पज्जत्तीओ असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं एदाओ चेव अणिप्पण्णाओ पंच अपज्जत्तीओ वुच्चंति। एदाओ चेव भासा-मण-पज्जत्तीहि विणा चत्तारि पज्जत्तीओ एइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असंपुण्णाओ चत्तारि अपज्जत्तीओ भवंति। एदासिं छण्हमभावो अदीद-पज्जत्ती णाम। उत्तं च—आहार-सरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाण-भास-मणो। चत्तारि पंच छव्वि य एइंदिय-विगल-सण्णीणं ॥ २१८ ॥ जह पुण्णापुण्णाइं गिह-घड-वत्थाइयाइ दव्वाइं। तह पुण्णापुण्णाओ पज्जत्तियरा मुणेयव्वा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ २१९ ॥ अत्थि दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छप्पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि
पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दोण्णि पाण एक्क पाण अदीद-पाणो वि अत्थि । चक्खु-सोद-घाण-जिब्भ-फासमिदि पंचिंदियाणि,
मणबल वचिबल कायबल इदि तिण्णि बला, आणापाणो आऊ चेदि एदे दस पाणा । उत्तं च—पंच वि इंदिय-पाणा मण-वचि-
काएण तिण्णि बलपाणा । आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा ॥ २२० ॥ एदे दस पाणा पंचिंदिय-सण्णिपज्जत्ताणं ।
आणापाण-भासा-मणेहि विणा सण्णि-पंचिंदिय अपज्जत्ताणं सत्त पाणा भवंति । दसण्हं पाणाणं मज्झे मणेण विणा णव पाणा
असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं भासा-आणापाणपाणेहि विणा सत्त पाणा भवंति । पुव्विल्ल-णव-पाणेसु
सोदिंदिय-पाणे अवणिदे चदुरिंदिय-पज्जत्तस्स अट्ठ पाणा भवंति । एदेसिं चेव चदुरिंदिय-अपज्जत्ताणं आणावाण-भासाहि विणा
छप्पाणा भवंति । पुव्विल्ल-अट्ठण्हं पाणाणं मज्झे चक्खिदिए अवणिदे तीइंदिय-पज्जत्तयस्स सत्त पाणा भवंति । तेसु सत्तसु आणावाण-
भासापाणे अवणिदे तीइंदिय-अपज्जत्तयस्स पंच पाणा भवंति । तीइंदियस्स वुत्त-सत्तण्हं पाणाणं मज्झे घाणिंदिए अवणिदे बीइंदिय
पज्जत्तयस्स छप्पाणा भवंति । तेसु छसु आणावाण-भासाहि विणा बीइंदिय-अपज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । बीइंदिय-पज्जत्तयस्स वुत्त-
छण्हं पाणाणं मज्झे जिब्भिंदियपाणे भासापाणे अवणिदे एइंदिय-पज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । तेसु आणावाणपाणे अवणिदे एइंदिय-
अपज्जत्तयस्स तिण्णि पाणा भवंति । उत्तं च—दस सण्णीणं पाणा सेसेगूणंतिमस्स वे ऊणा । पज्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेगूणा ॥२२१॥
दसण्हं पाणाणमभावो अदीदपाणो णाम । अत्थि चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि । काओ चत्तारि सण्णाओ इदि चे ? वुच्चदे
आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा चेदि । एदासिं चउण्हं सण्णाणं अभावो खीणसण्णा णाम । अत्थि चत्तारि
गदीओ, सिद्धगदी वि अत्थि । एइंदियादी पंच जादीओ, अदीदजादी वि अत्थि । अत्थि पुढविकायादी छक्काया, अदीदकाओ वि-
अत्थि । अत्थि पण्णरह जोगा, अजोगो वि अत्थि । अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि । अत्थि चत्तारि कसाया, अकसाओ
वि अत्थि । अत्थि अट्ठ णाणाणि । अत्थि सत्त संजमा, णेव संजमो णेव संजमासंजमो णेव असंजमो वि अत्थि । अत्थि चत्तारि दंस-
णाणि । दव्वभावेहि छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि । भवसिद्धिया वि अत्थि, अभवसिद्धिया वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभ-
वसिद्धिया वि अत्थि । छ सम्मत्ताणि अत्थि । सण्णिणो वि अत्थि, असण्णिणो वि अत्थि, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि ।
आहारिणो वि अत्थि, अणाहारिणो वि अत्थि । सागारुवजुत्ता वि अत्थि, अणागारुवजुत्ता वि अत्थि, सागार-अणागारेहि जुगवदुव-
जुत्ता वि अत्थि । पज्जत्त-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, अदीदगुणट्ठाणं णत्थि; पज्जत्तेसु तस्स संभवाभावादो ।
सत्त जीवसमासा, अदीदजीवसमासो णत्थि; छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ; अदीदपज्जत्ती णत्थि, दस पाण णव पाण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, अदीदपाणो णत्थि; चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी णत्थि; एइंदियादी पंच जादीओ अत्थि, अदीदजादी णत्थि; पुढवीकायादी छकाया अत्थि, अकाओ णत्थि; ओरालियवेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेहि विणा एक्कारह जोग, अजोगो वि अत्थि; तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि; अट्ठ णाण, सत्त संजम, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो णत्थि; चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि; दव्वेण छ लेस्सेत्ति भणिदे सरीरस्स छव्वण्णा घेत्तव्वा । भावेण छ लेस्सा त्ति भणिदे जोग-कसाया छब्भेदट्ठिदा घेत्तव्वा । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया णत्थि; छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि; आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा, सागारणगारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि । संपहि अपज्जत्ति-पज्जाय-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी पमत्तसंजदा सजोगिकेवलि त्ति पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, अदीदसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेत्ति चत्तारि जोगा, तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि; मणपज्जवविभंगणाणेहि विणा छण्णाण, चत्तारि संजम सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादासंजमेहि, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; जम्हा सव्व-कम्मस्स विस्ससोवचओ सुक्किलो भवदि तम्हा विग्गहगदीए वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरीरस्स सुक्कलेस्सा भवदि । पुणो सरीरं घेत्तूण जाव पज्जत्तीओ समाणेदि ताव छव्वण्ण-परमाणुपुंज-णिप्पज्जमाण-सरीरत्तादो तस्स सरीरस्स लेस्सा काउलेस्सेत्ति भण्णदे, एवं दो सरीरलेस्साओ भवंति । भावेण छ लेस्सेत्ति वुत्ते णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतरजोइसियदेवाणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ भवंति । सोधम्मादि-उवरिमदेवाणमपज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि । संपहि मिच्छाइट्ठीणं ओघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया, आहार-दुगेण विणा तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा अत्थि । तेसिं चेव मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छलेस्साओ भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सण्णिओ असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति । तेसिं चेव अपज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति । सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्ण अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि । तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठिपज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि होंति । तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा होंति । सम्मामिच्छाइट्ठीणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, अण्णाण-मिस्साणि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंजदसम्माइट्ठीणमोघ-परूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा । असंजदसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघपरूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; णिरयादो आगंतूण मणुस्सेसुप्पण-असंजद-सम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले किण्ण-णील-काउ-लेस्साओ लब्भंति । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, अणादिय-मिच्छाइट्ठी वा सादिय-मिच्छाइट्ठी वा चदुसु वि गदीसु उवसमसम्मत्तं घेत्तूण ट्ठिदजीवा ण कालं करेंति । तं कथं णव्वदि त्ति वुत्ते आइरिय-वयणादो वक्खाणदो य णव्वदि । चारित्तमोह-उवसामगा मदा देवेसु उववज्जंति ते अस्सिदूण अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि । वेदगसम्मत्तं पुण देव-मणुस्सेसु अपज्जत्तकाले लब्भदि, वेदगसम्मत्तेण सह गद-देव-मणुस्साणमण्णोण्णगमणागमण-विरोहाभावादो । कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं तिरिक्ख-णेरइयाणमपज्जत्तकाले लब्भदि । खइयसम्मत्तं पि चदुसु वि गदीसु पुव्वायुग-बंधं पडुच्च अपज्जत्तकाले लब्भदि तेण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तकाले भवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संजदा-संजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; केइ सरीर-णिव्वत्तणट्ठमागदपरमाणु-वण्णं घेत्तूण संजदासंजदादीण भावलेस्सं परूवयंति । तण्ण घडदे, कुदो ? दव्व-भावलेस्साणं भेदाभावादो 'लिम्पतीति लेश्या' इति वचनव्याघाताच्च । कम्म-लेवहेदूदो जोग-कसाया चेव भाव-लेस्सा त्ति गेण्हिदव्वं । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा । पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एक्कारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा। अप्पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, आसादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहारसण्णा अप्पमत्तसंजदस्स णत्थि। कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उवयारेण भय-मेहुण-परिग्गहसण्णा अत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। अपुव्वकरणाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, ज्झाणीणमपुव्वकरणाणं भवदु णाम वचिबलस्स अत्थित्तं भासापज्जत्ति-सण्णिदपोग्गलखंध-जणिद-सत्ति-सम्भावादो। ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि ? न, अन्तर्जल्पप्रयत्नस्य कायगतसूक्ष्मप्रयत्नस्य च तत्र सत्त्वात्। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, अपुव्वकरणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदयो णट्ठो तेण भयसण्णा णत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। विदिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, अंतरकरणं काऊण पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण वेदोदओ णट्ठो तेण मेहुणसण्णा णत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तदिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, तिण्णि कसाय, वेदेसु खीणेसु पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण कोधोदयो णस्सदि तेण कोधकसाओ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। चउ-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, कोधोदए विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माणोदओ वि णस्सदि

तेण माणकसाओ तत्थ णत्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचम-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माओदओ वि णस्सदि तेण मायाकसाओ तत्थ णत्थि । चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सुहुमसांपराइयाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण शुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । उवसंतकसायाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं; एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; केण कारणेण सुक्कलेस्सा ? कम्म-णोकम्मलेव-णिमित्त-जोगो अत्थि त्ति । भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, खीणकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, केवली कवाड-पदर-लोगपूरण-गओ पज्जत्तो अपज्जत्तो वा ? ण ताव पज्जत्तो, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं' इच्चेदेण सुत्तेण तस्स अपज्जत्तसिद्धीदो । सजोगिं मोत्तूण अण्णे ओरालियमिस्सकायजोगिणो अपज्जत्ता 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदा-संजद-संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति सुत्त-णिद्देसादो । ण, आहारमिस्सकायजोगपमत्तसंजदाणं पि पज्जत्तयत्त-प्पसंगादो । ण च एवं, 'आहारमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं' त्ति सुत्तेण तस्स अपज्जत्तभाव-सिद्धीदो । अणवगासत्तादो एदेण सुत्तेण 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'त्ति एदेण ण बाहिज्जदि सावगासत्तेण बलाभावादो । ण, 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता त्ति एदस्स वि सुत्तस्स सावगासत्तदंसणादो । सजोगिट्ठाणं दोसु वि सुत्तेसु सावगासेसु जुगवं ढुक्केसु 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदेण सुत्तेण 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं' त्ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि परत्तादो । ण, परसद्दो इट्ठवाचओ त्ति घेप्पमाणे पुव्वेण बाहिज्जदि त्ति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणेयंतियादो। णियम-सद्दो सप्पओजणो णिप्पओजणो वा? ण विदिय-पक्खो, पुप्फयंत-वयण-विणिग्गयस्स णिप्फलत्तविरोहादो। ण चेदस्स सुत्तस्स णिच्चत्त-पयासण-फलं, णियम-सद्द-वदिरित्त-सुत्ताणमणिच्चत्तप्पसंगादो। ण च एवं, 'ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं' त्ति सुत्ते णियमाभावेण अपज्जत्तेसु वि ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-प्पसंगादो। तदो णियम-सद्दो णावओ। अण्णहा अणत्थयत्त-प्पसंगादो। किमेदेण जाणाविज्जदि? 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तमणिच्चमिदि। तेण उत्तर-सरीरमुट्ठाविदसम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदाणं-कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीणं च सिद्धमपज्जत्तत्तं। अद्धारद्ध-सरीरी अपज्जत्तो णाम। ण च सजोगम्मि सरीरारंभणमत्थि तदो ण तस्स अपज्जत्तत्तमिदि; ण, छ-पज्जत्ति-सत्ति-वज्जियस्स अपज्जत्त ववएसादो। छहि इंदिएहि विणा चत्तारि पाणा दो वा। दव्वेंदियाणं णिप्पत्तिं पडुच्च के वि दस पाणे भणंति। तण्ण घडदे। कुदो? भाविंदियाभावादो। भाविंदियं णाम पंचण्हमिंदियाणं खओवसमो। ण सो खीणावरणे अत्थि। अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपज्जत्तकाले सत्त पाणा छंडिदूण दो चेव पाणा भवंति, पंचण्हं दव्वेंदियाणमभावादो। तम्हा सजोगिकेवलिस्स चत्तारि पाणा दो पाणा वा। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ सत्त जोगा, सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो कवाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोगपूरणेसु कम्मइयकायजोगो, एवं सजोगिकेवलिस्स सत्त जोगा भवंति। अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति। अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, पुव्विल्ल-पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छ पज्जत्तीओ भणिदाओ। ण पुण पज्जत्ती-जणिद-कज्जमत्थि। आउअ-पाणो एक्को चेव। केण कारणेण? ण ताव णाणावरण-खओवसम-लक्खण-पंचिंदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमाभावादो। आणावाण-भासा-मणपाणा वि णत्थि, पज्जत्ति-जणिद-पाण-सण्णिद-सत्ति-अभावादो। ण सरीरबलपाणो वि अत्थि, सरीरोदय-जणिद-कम्म-णोकम्मागमाभावादो। तदो एक्को चेव पाणो। उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति। एस पाणो पुण अप्पपाणो। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; लेव-कारण-जोग-कसायाभावादो। भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति। सिद्धाणं ति भण्णमाणे अत्थि अदीद-गुणट्ठाणं, अदीद-जीवसमासो, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीद-पाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अणिंदिया, अकाया, अजोगिणो, अवगदवेदा, खीणकसाया, केवलणाणिणो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा केवलदंसण, दव्व-भावेहिं अलेस्सिया, णेव भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति । एवं मूलोघालावा समत्ता ।

1 आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-आहार-आहारमिस्सेहिं विणा एगारह जोग, णवुंसयवेदो, णेरइया दव्व-भावेहिं णवुंसयवेदा चेव भवंति त्ति । चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकाला-भास-काउ-सुक्कलेस्साओ, दव्वलेस्सा कालाकालाभासा सुहुकण्हेत्ति जं वुत्तं होदि । एसा णेरइयाणं पज्जत्तकाले सरीरलेस्सा भवदि । विग्गहगदीए पुण णेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेस्सा सुक्का चेव भवदि, कम्म-विस्ससोवचयस्स धवलवण्णं मोत्तूण अण्ण-वण्णा भावादो । सरीर-गहिद-पढम-समय-प्पहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सरीरस्स काउलेस्सा चेव, संवलिद-सयल-वण्णादो । भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्त मिच्छत्तं च । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दोण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण, काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पढमादि-सत्तण्हं पुढवीणं, लेस्साओ जाणावेई एसा गाहा—काऊ काऊ काऊ णीला णीला य णील-किण्हा य । किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं ॥ २२२ ॥ पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि

चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संपदि पढम-पुढवि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं

गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। विदियाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमकाउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वा। मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइय-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एवं तदिय-पुढवि-आदि जाव सत्तम-पुढवि त्ति चदुण्हं गुणट्ठाणाणमालावो वत्तव्वो। णवरि विसेसो तदियाए णवण्हं इंदयाणं मज्झे उवरिम-अट्ठसु इंदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि। हेट्ठिमए णवमे इंदए केसिंचि जीवाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिंचि जहण्णिया णीललेस्सा। कुदो? जह-ण्णुक्कस्स-णील-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवमकाल णिद्देसादो। तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहण्णिया णीललेस्सा च

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत्तव्वा। चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीललेस्सा। पंचमीए पुढवीए चउण्हमुवरिम-इंदियाणं उक्कस्सिया णीललेस्सा चेव भवदि। पंचए उक्कस्सिया णीललेस्सा जहण्णा किण्हलेस्सा च भवदि। कुदो? जहण्णुक्कस्स-किण्ह-णीललेस्साणं सत्तारस-सागरोवम-काल-णिद्देसादो। एदाओ दो लेस्साओ पंचम-पुढवी-णेरइयाणं भवंति। छट्टीए पुढवीए णेरइयाणं मज्झिम-किण्हलेस्सा भवदि। सत्तमीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कस्सिया किण्हलेस्सा भवदि। तिरिक्खगईए तिरिक्खाणं भण्णमाणे तिरिक्खा पंचविधा भवंति, तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता चेदि। तत्थ तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगई, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काया, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ। किं कारणं? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया विदेवा तिरिक्खेसुप्पज्जमा णियमेण णट्ठ-लेस्सा भवंति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं एवं चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

संपहि तिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

छकाया, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि-पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । मणुस्सा पुव्वबद्ध-तिरिक्खाउगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्साउगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजदसम्माइट्ठि-अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि । तत्थ उप्पज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि । एवं तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्ण णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण ? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसणमोहणीयं कम्मं ण खवेंति, तत्थ जिणाणमभावादो । मणुस्सा पुव्वं बद्ध-तिरिक्खायुगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु । भोगभूमीसुप्पण्णा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख-संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तं णत्थि । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदिय-तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं उवसमसम्मत्तं णत्थि, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्तारि सम्मत्तं । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि, तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो । णवरि विसेसो पुरिस-णवुंसयवेदा दो चेव भवंति, इत्थिवेदो णत्थि । अथवा तिण्णि वेदा भवंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,

दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तासिं चेव पज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति

अणागारुवजुत्ताओ वा । तासिं चेव पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । पंचिंदिय तिरिक्ख-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं तिरिक्खगदी समत्ता । मणुसा चउव्विहा हवंति मणुस्सा मणुस-पज्जत्ता मणुसिणीओ मणुस-अपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद

अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग ओरालिय-आहार-मिस्स-कम्मइएहि विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगिभयवंतस्स सरीर-णिमित्तमागच्छमाण-परमाणूणमभावं पेक्खिऊण पज्जत्ताणमणाहारित्तं लब्भदि । सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सेण सह तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, पंच णाण केवलणाणेण छ णाण, असंजम सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादेहि चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तउवसमसम्मत्तेण विणा चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुभओ वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा । मणुस-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणागारुवजुत्ता वा। मणुस्स-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा। मणुस-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद। देव-णेरइअ मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठिणो जदि मणुस्सेसु उप्पज्जंति तो णियमा पुरिसवेदेसु चेव उप्पज्जंति ण अण्णवेदेसु, तेण पुरिसवेदो चेव भणिदो। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ। तं जहा—णेरइया असंजदसम्माइट्ठिणो पढम-पुढवि-आदि जाव छट्ठी-पुढविपज्जवसाणासु पुढवीसु ट्ठिदा कालं काऊण मणुस्सेसु चेव अप्पप्पणो पुढवि-पाओग्गलेस्साहि सह उप्पज्जंति त्ति किण्ह-णील-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काउलेस्सा लब्भंति। देवा वि असंजदसम्माइट्ठिणो कालं काऊण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सह मणुस्सेसु उववज्जंति, तेण मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ हवंति। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। मणुस्स-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। संपहि पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघालावो अणूणो अणधिओ वत्तव्वो। मणुस्स-पज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मणुस्सोघभंगो। अथवा इत्थिवेदेण विणा दो वेदा वत्तव्वा एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, एत्थ आहारआहारमिस्सकायजोगा णत्थि। किं कारणं? जेसिं भावो इत्थिवेदो दव्वं पुण पुरिसवेदो, ते वि जीवा संजमं पडिवज्जंति। दव्वित्थिवेदा संजमं ण पडिवज्जंति, सचेलत्तादो। भावित्थिवेदाणं दव्वेण पुंवेदाणं पि संजदाणं णाहाररिद्धी समुप्पज्जदि, दव्व-भावेहि पुरिसवेदाणमेव समुप्पज्जदि, तेणित्थिवेदे पि णिरुद्धे आहारदुगं णत्थि, तेण एगारह जोगा भणिया। इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, एत्थ भाववेदेण पयदं ण दव्ववेदेण। किं कारणं? 'अवगदवेदो वि अत्थि' त्ति वयणादो। चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणेण विणा सत्त णाण, परिहार संजमेण विणा छ संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी वि अत्थि, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, छ संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तासिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, दो अण्णाण केवलणाणेण तिण्णि णाण, असंजमो जहाक्खादेण दोण्णि संजम, केवलदंसणेण तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा सुक्कलेस्साए चत्तारि वा; भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तेण तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणीओ अणुभयाओ वा, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा। मणुसिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा। मिच्छाइट्ठि-पज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा। मिच्छाइट्ठि-अपज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा। मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा। अपज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता

होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद-णवुंसयवेदाणमुदए आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो च णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहारसण्णाए विणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण तेउ-पम्मसुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणी-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति

अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणी-विदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-तदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय विणा तिण्णि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि-दद्ध-बीए अंकुरो व्व इत्थिणवुंसयवेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि । दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-सुहुम-सांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणीसु उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा । मणुसिणीसु खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, खीणकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, सण्णिणीओ; आहारिणीओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणुसिणी-सजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो वा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति । मणुसिणी-अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगव-दुवजुत्ताओ वा होंति । लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं मणुसगदी समत्ता । देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुण-ट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, एत्थ सिस्सो भणदि— देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवंति त्ति एदं ण घडदे, तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ-लेस्साभावादो । मा भवंतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ दव्वदो पुण छ लेस्सा भवंति चेव, दव्व-भावाणमेगत्ताभावादो । इदि एदमवि वयणं ण घडदे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चेव ओरालिय-वेउव्विय आहारसरीरणोकम्म-परमाणवो आगच्छंति । तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे सोधम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरूव-दव्वलेस्सापरूवणादो णव्वदि । ण च देवाणं पज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ मोत्तूणण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि होदव्वमिदि । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ— किण्हा भमरसमण्णा णीला पुण णीलगुलियसंकासा । काओ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जवण्णा य ॥ २२३ ॥ पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसंकासा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किण्हादि-दव्वलेस्सा-वण्णविसेसो मुणेयव्वो ॥ २२४ ॥ भावलेस्सा-लिंगं थोरुच्चएण एसा गाहा जाणावेई— णिम्मूलखंधसाहुवसाहं वुच्चितु वाउ-पडिदाइं । अब्भंतरलेस्साणं भिंदइ एदाइं वयणाइं ॥ १२५ ॥ तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्म-सुक्का य । सुक्का य परमसुक्का लेस्ससमासो मुणेयव्वो ॥ २२६ ॥ तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च । एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्साभेदो मुणेयव्वो ॥ २२७ ॥ एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं साहेंति, उभय-पक्ख-साधारणादो । ण तो उत्त-जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्वलेस्सा, उत्तमभोगभूमि-मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो । ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त-दव्वलेस्सा, छव्विह-भावलेस्सासु परियट्टंत-तिरिक्ख-मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमप्पसंगादो । धवलवण्ण-वलायाए भावदो सुक्कलेस्सप्पसंगादो । आहारसरीराणं धवलवण्णाणं विग्गहगदि-ट्ठियसव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भावदो सुक्कलेस्सावत्तीदो चेव । किं च, दव्वलेस्सा णाम वण्णणामकम्मोदयादो भवदि, ण भावलेस्सादो । ण च दोण्हमेगत्तं, णाम-मोहणीयाणं अघादि-घादीणं पोग्गल-जीवविवागीणं एगत्त-विरोहादो । विस्ससोवचयवण्णो भावलेस्सादो भवदि, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं वण्णा वण्णणामकम्मादो भवंति, अदो ण एस दोसो । इदि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चादि-बाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदिबंधे पदेसबंधे च भावलेस्सा-वावार-दंसणादो । अदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा त्ति सिद्धं । तदो वण्णणामकम्मोदयदो भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवंति, उवरिमदेवाणं तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । पंच-वण्ण-रस-कागस्स कसणववएसो व्व एगवण्ण-ववहार विरोहाभावादो । भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं, गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं च्चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। देव सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। देव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। देव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nariá, Varanasi

काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउ-लेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एसो इत्थि-पुरिसवेदाणमोघालावो। एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्वं। णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव ठवेदव्वो। एवं चेव इत्थिवेदणिरुंभणं काऊण वत्तव्वं। णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ इत्थिवेदो चेव ठवेदव्वो। सोधम्मीसाणदेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्तं। उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेढिम्हि मद-संजदे पडुच्च सोधम्मादि-उवरिमदेवाणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सोधम्मीसाणदेवमिच्छाइट्ठीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भणमाणे अत्थि एयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सोधम्मीसाण-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सोधम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं । देवासंजदसम्माइट्ठीणं कधमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि ? वुच्चदे—वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढिमारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठिट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणमिय कालं काऊण सोधम्मीसाण-देवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि । अध ते चेव उक्कस्स-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति । अध ते चेव उवसम-सम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणमिय कालं करेंति तो बम्ह-बम्होत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति । अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणमिय जदि ते कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सारदेवेसु उप्पज्जंति । अध उवसमसेढिं चढिय पुणोदिण्णा चेव मज्झिम-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणद-पाणद-आरणच्चुद-णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसुप्पज्जंति । पुणो ते चेव उक्कस्स-सुक्कलेस्सं परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह णवाणुदिस-पंचाणुत्तरविमाणदेवेसुप्पज्जंति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेण सोधम्मादि-उवरिम-सव्व-देवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि त्ति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवमित्थिपुरिसवेदाणमोघालावो समत्तो । एवं चेव पुरिसवेद-देवाणमालावो वत्तव्वो । णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो । एवं सोधम्मीसाणदेवीणं पि वत्तव्वं । णवरि जत्थ पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो । असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ती णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो । पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो । एत्तिओ चेव विसेसो । सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउजहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिस वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संपहि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्म-भंगो । णवरि उवरि सव्वत्थ इत्थिवेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो । ओघालावे भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ । भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ । पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउजहण्णपम्मलेस्साओ । तेसिं चेव अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ एत्तिओ चेव विसेसो । बम्ह-बम्हुत्तर-लांतव-कापिट्ठ-सुक्क-महासुक्ककप्पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमपम्मलेस्साओ, भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा । पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा । अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा । एत्तियमेत्तो चेव विसेसो । सदारसहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ,। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुबुद्ध-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च–विजय–वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं। केण कारणेण उवसमसम्मत्तं णत्थि? वुच्चदे—तत्थ ट्ठिदा देवा ण ताव उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो। भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, उवसमसम्मत्तं पि तत्थ ट्ठिदा देवा पडिवज्जंति; को तत्थ विरोधो? इदि ण, 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो। ण तत्थ ट्ठिद-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, मणुसगदि-वदिरित्तण्णगदीसु वेदगसम्माइट्ठिजीवाणं दंसणमोहुवसमणहेदुपरिणामाभावादो। ण य वेदगसम्माइट्ठित्तं पडि मणुस्सेहिंतो विसेसा-भावादो मणुस्साणं च दंसणमोहुवसमणजोगपरिणामेहि तत्थ णियमेण होदव्वं, मणुस्स-संजम-उवसमसेढिसमारुहणजोगत्तणेहि भेददंसणादो। उवसमसेढिम्हि कालं काऊणुवसमसम्मत्तेण सह देवेसुप्पण्णजीवा वि ण उवसमसम्मत्तेण सह छ पज्जत्तीओ समाणेंति, तत्थतणुवसमसम्मत्तकालादो छ-पज्जत्तीणं समाणकालस्स बहुत्तुवलंभादो। तम्हा पज्जत्तकाले ण एदेसु देवेसु उवसमसम्मत्तमत्थि त्ति सिद्धं। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एवं देवगदी समत्ता। सिद्धगदीए सिद्ध-भंगो। एवं गइमग्गणा समत्ता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi
CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोघो । णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, सिद्धगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, अकाया वि अत्थि, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अत्थि । एदे आलावा ण वत्तव्वा, सिद्धाणमेइंदियादिजादिणामकम्मस्सुदयाभावादो । सामण्णेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, पुढविवणप्फई अस्सिदूण सरीरस्स छ लेस्साओ हवंति । भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । बादरेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। अपज्जत्तणामकम्मोदयाणं बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे बादरेइंदियअपज्जत्तालाव-भंगो। सुहुमेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एवं पज्जत्त-णामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एओ अपज्जत्तालावो। वेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि, एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ; छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा इदि चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं वीइंदिय-पज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं वीइंदियपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । बेइंदिय-लद्धिअपज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो । तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धि-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एगो आलावो वत्तव्वो । चउरिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठ पाण छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा; भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-

सिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं चउरिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । चउरिंदियाणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तव्वो । पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण एय पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वे-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ, वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा । पंचिंदिय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो । एवं सण्णिपंचिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जाणिऊण सकलालावा वत्तव्वा । असण्णि-पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदि, पंचिंदियजादि, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि केद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संपहि पंचिंदियलद्धिअपज्जत्ताणं अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदि-तिरिक्खगदिओ त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । असण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्तावा । अणिंदियाणं सिद्ध-भंगो । एवं इंदियमग्गणा समत्ता । कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छव्वा, छव्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारह वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा सोलस वा, चउवीस वा, अट्ठारह वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बायालीस वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठतालीस वा, चउतीस वा एकपंचास वा, छत्तीस वा चउपंचास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तपंचास वा जीवसमासा । दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्वे जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता,णिव्वत्ति-अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा हवंति । चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता, अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा । छव्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीव-समासा दो णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा । अधवा थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीवसमासा । तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीव-समासा हवंति । थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया वियलिंदिया त्ति, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ठ जीव-समासा । चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं बारस जीव-समासा हवंति । थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवंति । पंच णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्त-जीवसमासा पंच लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवंति । छ णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा छ णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोद्दस जीवसमासा हवंति । सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण एक्कवीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवं सोलस जीवसमासा हवंति । णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा अट्ठ, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठ, अट्ठण्हमपज्जत्तजीवसमासाणं मज्झे अट्ठ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा हवंति एवं चउवीस जीवसमासा । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदपडिट्ठिदा बादरणिगोदअपडिट्ठिदा चेदि, बादरणिगोदपडिट्ठिदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बादरणिगोदपडिट्ठिदवदिरित्त-पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा वियलिंदिया सयलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे सव्वे वि घेत्तूण सत्तावीस जीवसमासा हवंति । पुव्विल्ल-अट्ठारस-जीवसमासाब्भंतरे साधारण-वणप्फइपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवणप्फइकाइया दुविहा णिच्चणिगोदा चदुगदिणिगोदा चेदि । णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीवसमासा हवंति । दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फइकाइया एदे सव्वे दुविहा बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चउव्विहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा । णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति । बावीस-जीवसमासाणमब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। वारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा वारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा वारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छव्वीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तेरस लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे घेत्तूण एगूणचालीस जीवसमासा हवंति। छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति। चोद्दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बायालिस जीवसमासा। अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोयजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्ति-पज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस एवमेदे सव्वे वि पंचेदालीस जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणसरीरवणप्फइकाइया पत्तेयं पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवंति, पत्तेयसरीरा वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियसण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता अपज्जत्ता दुविहा हवंति एदे सव्वे मिलिदे वत्तीस जीवसमासा हवंति। सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्त-जीवसमासा च मेलिदे अट्ठातालीस जीवसमासा हवंति। वत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्त भेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवंति। सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्त भेएण दुविहा हवंति, पत्तेयवणप्फदि-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदिय-पज्जत्तापज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेयं दुविहा हवंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवंति। अट्ठारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्तिअप-ज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारह सव्वेदे एगट्ठे कदे चउपण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेयसरीरबादरणिगोद-पदिट्ठिदापदिट्ठिद-पज्जत्तापज्जत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पक्खित्तेसु अट्ठत्तीस जीवसमासा हवंति। एत्थ एगुणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवंति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया चेव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवंति। एदे जीवसमासभेया सव्व-ओघेसु वत्तव्वा। छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारह वा बारह वा तेरह वा चउद्दस वा पण्णारह वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारह वा एगुणवीस वा जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एगो वा दो वा, दो वा चत्तारि वा, तिण्णि वा छव्वा, चत्तारि वा अट्ठ वा, पंच वा दस वा, छव्वा बारस वा, सत्त वा चोद्दस वा, अट्ठ वा सोलस वा, णव वा अट्ठारह वा, दस वा वीस वा, एक्कारस वा बावीस वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोद्दस वा अट्ठावीस वा, पण्णारस वा तीस वा, सोलस वा बत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्ठारस वा छत्तीस वा, एगुणवीस वा अट्ठत्तीस वा जीवसमासा; छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा;

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाया त्ति मूलोघ-भंगो । णवरि मिच्छाइट्ठिस्स तिविहस्स वि कायाणुवाद-मूलोघब्भुत्तजीवसमासा वत्तव्वा । णत्थि अणत्थ विसेसो । पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं बादरपुढविणिव्वत्ति-पज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा । बादरपुढविलद्धिअपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो । णवरि सुहुमपुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं । आउकाइयाणं पुढवि-भंगो । णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ । तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण सुहुमआऊणं काउलेस्सा वा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा । कुदो ? घणोदधि-घणवलयागासपदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो । धवल-किसण-णील-पीयल-रत्ताअंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? आधारभूमिमट्टियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणादो । आऊणं सहाववण्णो पुण धवलो चेव । एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव । णत्थि अण्णत्थ विसेसो । बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा । बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्तिअपज्जत्त-भंगो । सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढविकाइय-भंगो । सुहुमआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो । तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं च पज्जत्त-णामकम्मोदयतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो । णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ । तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ । एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तव्वं । बादरकाइयाणं तेउ-भंगो । एवं चेव तेसिं पज्जत्ताणं । णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा । एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्वलेस्सा वत्तव्वा । सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम-भंगो । वाउकाइयाणं तेउ-भंगो । णवरि दव्वेण काउ-सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ । तेसिं पज्जत्ताणं काउ-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ । एवं बादरवाऊणं तेसिं पज्जत्ताणं च दव्वलेस्साओ हवंति । जदि वि मुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रूढिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो त्ति घेप्पदि । सुहुमवाऊणं सुहुमतेउ-भंगो । वणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पत्तेयसरीरवणप्फईणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फइकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धिअपज्जत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणप्फइ-अपज्जत्ताणं जहा तहा वत्तव्वो । जहा पत्तेयसरीराणं, तहा बादरणिगोद-पडिट्ठिदाणं पि वत्तव्वं । साधारणवणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

साधारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया; मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारण-वणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोदवणप्फइकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं साधारणसरीरबादरवणप्फईणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धि-अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो । सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुमपुढवि-भंगो । णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाहारणसरीरवणप्फइकाओ त्ति वत्तव्वो । चउगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फइकाइय-भंगो । तेसिं चेव बादराणं बादरसाधारणसरीरवणप्फइ-भंगो । तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फइकाइय-भंगो । णवरि चउगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं । एवं णिच्चणिगोदाणं पि, णवरि एत्थ णिच्चणिगोदो त्ति वत्तव्वं । तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदी, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा। तसकाइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। अकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, चदुगदिमदीदो, अणिंदिओ, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसण, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति। एवं तसकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। तसकाइय-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउसुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। एवं कायमग्गणा समत्ता। जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ-भंगो। णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगिगुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिऊण मूलोघालावा वत्तव्वा। मणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण। केई वचि-कायपाणे अवणेंति, तण्ण घडदे; तेसिं सत्ति-संभवादो। वचि-काय-बलणिमित्त-पुग्गल-खंधस्स अत्थित्तं पेक्खिऊण पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचि-पज्जत्तीओ अत्थि। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणजोगिपमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा । सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो चेव मणजोगा वत्तव्वा । सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणसण्णाओ त्ति ताव मणजोगि-भंगो । णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो । एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं । वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरहगुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, मण-सरीरपज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर-

मणवलपाणा उच्चंति। ताओ वि उप्पण्णसमयदो जाव जीविदचरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्संति। जेण मण-वचि-कायजोगा पाणेसु ण गहिदा तेण वचिजोग-णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ तं अवणेऊण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो। मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अक-साओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चेव वा, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा। कायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, पंच कायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा । कायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कायजोगि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। अपुव्वयरणप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव कायजोगीणं मूलोघ-भंगो। णवरि ओरालियकायजोगो चेव सव्वत्थ वत्तव्वो। कायजोगि-केवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगो इदि तिण्णि जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति। ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोथो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणगारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। ओरालियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। ओरालियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । ओरालियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संजदासंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव कायजोगि-भंगो । णवरि सव्वत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । सजोगिकेवली च पज्जत्ता आहारि त्ति भणिदव्वा । ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो त्ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होदव्वं ? ण, दव्वमणस्स अत्थित्तं भूद-पुव्वगइं च अस्सिऊण तस्स सण्णित्तब्भुवगमादो । पुढवी-आउ-तेउ-वाउ-पत्तेय-साहारणसरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोद्दस-जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगि-सत्तब्भुवगमादो वा । एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो । छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, विभंग-मणपज्जवणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा । कि कारणं ? मिच्छाइट्ठि-सासण-असंजद-सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टंताणं सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि; छव्वण्णोरालियपरमाणूणं धवल-विस्सोपचय-सहिद-छव्वण्णकम्मपरमाणूहि सह मिलिदाणं कावोदवण्णुप्पत्तीदो । कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स वि सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि । एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । सजोगिकेवलिस्स पुव्विल्ल-सरीरं छव्वण्णं जदि वि हवदि तो वि तण्ण घेप्पदि; कवाडगद-केवलिस्स अपज्जत्तजोगे वट्टमाणस्स पुव्विल्ल-सरीरेण सह संबंधाभावादो । अहवा पुव्विल्ल-छव्वण्ण-सरीरमस्सिऊण उवयारेण दव्वदो सजोगिकेवलिस्स छ लेस्साओ हवंति । भावेण छ लेस्साओ । किं कारणं ? मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं किण्ह-णील-काउलेस्सा चेव हवंति, कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स सुक्कलेस्सा चेव भवदि, किंतु देव-णेरइयसम्माइट्ठीणं मणुसगदीए उप्पण्णाणं ओरालियमिस्सकायजोगे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वट्टमाणाणं अविणट्ठ-पुव्विल्ल-भाव-लेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त सम्मामिच्छत्तेहि विणा चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। ओरालियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। ओरालियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ। जहा देव-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सासु वट्टमाणा णट्ठ-लेस्सा होऊण तिरिक्खमणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण्ण-पढम-समए चेव किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइट्ठिणो तहा ण परिणमंति, अंतोमुहुत्तं पुव्विल्ल-लेस्साहि सह अच्छिय अण्णलेस्सं गच्छंति। किं कारणं? सम्माइट्ठीणं बुद्धि-ट्ठिय-परमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीणं व्व मरणकाले संकिलेसाभावादो। णेरइय-सम्माइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति। कारणं, जादिविसेसेण संकिलेसाहियादो। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। ओरालियमिस्सकायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, आयु-कायबलपाणा दो चेव होंति, पंचिंदियपाणा णत्थि; खीणावरणे खओवसमाभावादो खओवसम-लक्खण-भाविंदियाभावादो। ण च दव्विंदिएण इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाण-मत्थित्त-पदुप्पायण-संतसुत्त-दंसणादो। मण-वचि-उस्सासपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सासपज्जत्ती-सण्णिद-पोग्गलखंध-णिव्वत्तिद-सपाणसण्णा-संजुत्तसत्तीणं कवाडगद-केवलिम्हि अभावादो। अहवा तेसिं कारणभूद-पज्जत्तीओ अत्थि त्ति पुणो उवरिम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छट्ठसमयप्पहुडिं वचि-उस्सासपाणाणं संभवो भवदि चत्तारि वि पाणा हवंति । खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धि-संजमो, केवलदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा, मूलसरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किण्ण उच्चंति त्ति भणिदे ण, चोद्दस-रज्जु-आयामेण सत्त-रज्जु-वित्थारेण एक-रज्जुमादिं कादूण वड्डिद वित्थारेण वावरिद-जीव-पदेसाणं पुव्वसरीरेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबंधाभावादो । भावे वा जीवपदेस-परिमाणं सरीरं होज्ज । ण च एवं, बंधहरस्स सरीरस्स तेत्तियमेत्तद्धाणपसरण-सत्ति-अभावादो, ओरालियमिस्सकायजोगण्णहाणुववत्तीदो वा । ण चिराण-सरीरेण कवाडगद-केवलिस्स संबंधो अत्थि । भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा । वेउव्वियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेउव्वियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ताहोंति अणागारुवजुत्ता वा । वेउव्वियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेउव्वियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि, मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागा-रुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेउव्वियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। वेउव्वियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासण-सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। वेउव्वियमिस्सकाय-जोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, पुरिस-णवुंसयवेदा त्ति दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। आहारकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारकायजोगो, पुरिसवेदो, इत्थि-णउंसयवेदा णत्थि। किं कारणं? अप्पसत्थवेदेहि सहाहारिद्धी ण उप्पज्जदि त्ति। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, मणपज्जवणाणं णत्थि। कारणं, आहार-मणपज्जवणाणाणं सहाणवट्ठाणलक्खणविरोहादो। दो संजम, परिहारसुद्धि संजमो णत्थि; एदेण वि सह आहारसरीरस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण, सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, उवसमसम्मत्तं णत्थि; एदेण वि सह विरोधादो। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। आहारमिस्सकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजमा, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कम्मइयकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सजोगिकेवलिं पडुच्च दो पाण, सेसाणं सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चत्तारि पाण तिण्णि पाण; चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-पुव्वसरीरं पेक्खिऊणुवयारेण दव्वेण छ लेस्साओ हवंति । भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो । कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति भणिदे ण उच्चदि; आहरस्स तिण्णि-समय-विरहकालोवलद्धीदो । सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा । कम्मइयकायजोग-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कम्मइयकायजोग-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मतं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कम्मइयकायजोग-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, दो वेद, इत्थिवेदो णत्थि; चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कम्मइयकायजोग-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दो पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण सुक्कलेसा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चेव; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा । सुगममजोगीणं । एवं जोगमग्गणा समत्ता । वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वो । णवरि णव गुणट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं; वेदे णिरुद्धे उवरिमगुणट्ठाणाभावादो । अत्थि खीणसण्णा, अवगदजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाणं केवलदंसणं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदव्वो। अणिंदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा। इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपज्जव-केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहुमसांपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमेहि विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि वे गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहारदुगं णत्थि। इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-अप्पमत्त-संजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-अवुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ; मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। इत्थिवेद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पुरिसवेद-मिच्छा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri .

इट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो । सासण-सम्मामिच्छा-असंजदसम्माइट्ठीणं तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ । णवुंसयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाया, तेरह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छकाय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणिं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। णवुंसयवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ; दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छह पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया तेरह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादी-आदि पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। णवुंसगवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, सासणगुणेण जीवा णिरयगदीए ण उप्पज्जंति तेण वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव-णिरयगदी णत्थि । पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, वेउव्वियमिस्स-कायजोगो णत्थि । णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । णवुंसयवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । णवुंसयवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लद्धं । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । णवुंसयवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म-सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । णवुंसयवेद-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो । णवरि सव्वत्थ णवुंसयवेदो वत्तव्वो । अवगदवेदाणं भण्णमाणे अत्थि छ गुणट्ठाणाणि अदीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, परिग्गहसण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, चत्तारि संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागारअणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा। विदिय-अणियट्टिप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ताव मूलोघ-भंगो। एवं वेदमग्गणा समत्ता। कसायाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा। णवरि दस गुणट्ठाणाणि वत्तव्वाणि। अदीदगुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अणिंदियत्तं, अकायत्तं, अजोगो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्साओ, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया; णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा त्ति णत्थि। कोधकसायाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाय, सत्त णाण, पंच संजम सुहुम-जहाक्खादसंजमा णत्थि, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाओ, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कोधकसाय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कोधकसाय-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउसुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कोधकसाय-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कोधकसाय-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि, जोग, दो वेद इत्थिवेदो णत्थि; कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कोधकसाय-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्मसुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। कोधकसाय-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो; छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कोधकसाय-पढमअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । कोधकसाय-विदियअणियट्टीणं भण्णपाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एवं माण-मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं । णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण-मायाकसाया वत्तव्वा । लोभकसायस्स कोधकसायभंगो । णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजम, लोभकसाओ च वत्तव्वो । अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस चत्तारि दो एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । उवसंतकसायप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ओघ-भंगो । एवं कसायमग्गणा समत्ता । णाणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा । मदि-अण्णणिसुदअण्णाणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। मदि सुदअण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति, अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। विभंगणाणाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। विभंगणाणि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। विभंगणाणि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसायं, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। आभिणिबोहिय-सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आभिणिबोहिय-सुदणाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि आभिणिबोहिय-सुदणाणाणि वत्तव्वाणि । एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं । णवरि ओहिणाणं एक्कं चेव भाणिदव्वं । णाण-दंसणमग्गणाओ जेण खओवसममस्सिऊण ट्ठिआओ तेण मदिसुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु तीहि चउहि वा णाणेहि होदव्वमिदि सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-णाण-वदिरित्त-णाणाणमवणयणं कयं । मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, वेदगसम्मत्तपच्छायद-उवसमसम्मत्तसम्माइट्ठिस्स पढमसमए वि मणपज्जवणाणुवलंभादो । मिच्छत्तपच्छायद-उवसमसम्माइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे; मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुवसमसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायणसंजमकालस्स वहुत्तुवलंभादो । सण्णिणो,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मणपज्जवणाण-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि मणपज्जवणाणं एक्कं चेव वत्तव्वं । परिहारसुद्धिसंजमो वि णत्थि त्ति भाणिदव्वं । केवलणाणं भण्णमाणे अत्थि वे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्तीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसण्णाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियो वि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खाद-सुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा । एवं णाणमग्गणा समत्ता । संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, पंच संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति । पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अपुव्वयरणप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। एवं छेदोवट्ठावणसंजमस्स वि वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहाराहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण मणपज्जवणाणं णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो एदे जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पमत्त-अप्पमत्त-परिहार सुद्धि-संजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघ-भंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमा च णत्थि। परिहारसुद्धिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो। जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खाद-सुद्धिसंजमो, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो। संजदासंजदाणमोघ-भंगो। असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति मूलोघ-भंगा । एवं संजममग्गणा समत्ता । दंसणाणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो । चक्खुदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । चक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादिआदी वे जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, दस

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । चक्खुदंसण-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति मूलोघ-भंगो, णवरि चक्खुदंसणं त्ति भाणिदव्वं । अचक्खुदंसणाणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि, गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि अचक्खुदंसणोत्ति भाणिदव्वं । ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव ओहिणाण-भंगो । णवरि ओहिदंसणोत्ति भाणिदव्वं । केवलदंसणस्स केवलणाण भंगो । एवं दंसणमग्गणा समत्ता । लेस्साणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो । णवरि अजोगिगुणट्ठाणेण विणा तेरह गुणट्ठाणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिणं सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदव्वा । किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि; देवाणं पज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं च भवदि; छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सासम्माइट्ठिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि त्ति । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । किण्हलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । किण्हलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । किण्हलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । किण्हलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेस्स विणा बारह जोग, तिण्णि वेद,

चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। णीललेस्साए भण्णमाणे ओघादेसालावा किण्हलेस्सा-भंगा। णवरि सव्वत्थ णीललेस्सा वत्तवा। काउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाग, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त दाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण काउ-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। काउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण, सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। काउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगई णत्थि। पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। काउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। काउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, णिरयगदी णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, णवुंसयवेदो णत्थि; चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

वजुत्ता वा । तेउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेउलेस्सा;-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेउलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेउलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पम्मलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो,

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पम्मलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । पम्मलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पम्मलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पम्मलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पम्मलेस्सा संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; उत्तं च पिंडियाए—लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्म मिस्सयं दव्वं। जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २२८ ॥ भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। पम्मलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पम्मलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सुक्कलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि अजोगिणा विणा तेरह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । सुक्कलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सुक्कलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि। कारणं, देवमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं असुणिय-परमत्थाणं तिव्वलोहाणं संकिलेसेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील-काउलेस्साणं एगदरा भवदि। सम्माइट्ठीणं पुण देवाणं मणुस्सेसु चेव उप्पज्जमाणाणं मंदलोहाणं सुमुणिदपरमत्थाणं अरहंतभयवंतम्हि छिण्ण-जाइ-जरा-मरणम्हि दिण्णबुद्धीणं तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ चिरंतणाओ जाव अंतोमुहुत्तं ताव ण णस्संति। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुक्कलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुक्कलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी; तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सुक्कलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सुक्कलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सुक्कलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अपुव्वयरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो; तेसु सुक्कलेस्सा-वदिरित्तण्णलेस्साभावादो । अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चेव । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता । भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो । णवरि भवसिद्धिया त्ति वत्तव्वं । अभवसिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। णेव-भवसिद्धिय-णेव-अभवसिद्धियाणमोघ-भंगो। एवं भविय-मग्गणा समत्ता। सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, वे जीवसमासा अदीद-जीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीद-पाणा वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा चोद्दस जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणजुत्ता वा । उवरि असंजदसम्माइट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो; तेसिं सव्वेसिं सम्मत्तसंभवादो । खइयसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ सिद्धगई वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस चत्तारि एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णियकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा । खइय-सम्माइट्ठीणं असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । खइयसम्माइट्ठीणं संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । खइयसम्माइट्ठीणं पमत्तसंजदप्पहुडि सिद्धावसाणाणं मूलोघ-भंगो । णवरि सव्वत्थ खइयसम्मत्तं चेव वत्तव्वं । वेदगसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ; देवगदि-मणुसगदी; कदकरणिज्जं वेदगसम्माइट्ठिं पडुच्च णिरय-तिरिक्खगईओ लब्भंति । पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेदगसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेदगसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेदगसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । वेदगसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । उवसमसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्स-आहार-आहार-मिस्सेहि विणा बारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, परिहारसंजमेण विणा छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । उवसमसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । उवसमसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जवणाणेण सह उवसमसेढीदो ओयरिय पमत्तगुणं पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणं लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदस्स; तत्थुप्पत्ति-संभवाभावादो । दो संजम, परिहारसंजमो णत्थि । कारणं, ण ताव मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-संजदा परिहारसंजमं पडिवज्जंति; ओइट्ठ-उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे तदुप्पत्तिणिमित्तगुणाणं संभवाभावादो । णो उवसमसेढिं चढमाणा; तत्थ पुव्वमेव अंतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिदविहारादो । ण तत्तो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णट्ठे उवसमसम्मत्ते विहारस्स संभवादो । तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणागारुवजुत्ता वा । उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो णत्थि । उत्तं च— मणपज्जव-परिहारा उवसमसम्मत्त दोण्णि आहारा । एदेसु एक्कपयदे णत्थि त्ति य सेसयं जाणे ॥ २२९ ॥ तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अपुव्वयरणप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति ताव ओघ-भंगो । णवरि सव्वत्थ उवसमसम्मत्तं भाणियव्वं । मिच्छत्त-सासणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ओघ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-भंगो । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता । पाधण्णपदे अवलंबिज्जमाणे सव्वाणुवादाणं मूलोघ-भंगो होदि; तत्थ सव्ववियप्प-संभवादो । गुणणामे अवलंबिज्जमाणे ण होदि । पाधण्णपदे अणवलंबिज्जमाणे असंजमादीणं कधं गहणं ? ण; वदिरेगमुहेण संजमादि-परूवणट्ठं तप्परूवणादो । तेण दोण्णि वि वक्खाणाणि अविरुद्धाणि । एसत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो । सण्णियाणुवादेण सण्णीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त पाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सण्णि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ भवसिद्धिया सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । असण्णीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं बारह जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काय, चत्तारि जोग असच्चमोसवचिजोगो ओरालिय-ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो चेदि, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, पंचिंदियजादी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । णेव-सण्णि-णेव-असण्णीणं सजोगि-अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता । आहाराणुवादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, चोद्दस जोग कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वभावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, एगारह जोग; ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा उभओ वा। आहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, बारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा। आहारि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । तेसिं चेव, अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रुवजुत्ता वा । आहारि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । एत्थ पज्जत्तापज्जत्ता आलावा वत्तव्वा । एवं सव्वत्थ । आहारि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । सेस-चदुण्हमणियट्टीणं ओघ-भंगो । आहारि-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोहकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतलोहकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । आहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ,

चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, छ जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि; अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । एवं पज्जत्तापज्जत्तालावा वत्तव्वा । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । अणाहारीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, अट्ठ जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाण वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगई वि अत्थि, पंच जादीओ अदीदजादी वि अत्थि, छ काय अकाओ वि अत्थि, कम्मइयकायजोगो अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, दो संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । अणाहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अणाहारि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगदी णत्थि; पंचिंदियचादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अणाहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा । अणाहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाण, मण-वचि-उस्सासपाणा णत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो,

॥२०५॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सरीरणिप्पायणट्ठं णोकम्मपोग्गलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति । अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा । अणाहारि-सिद्धाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादी, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसण, दव्व-भावेहिं अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति । एवं आहारमग्गणा समत्ता । तहेव च—

संत-परूवणा समत्ता ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने सत्प्ररूपणा समाप्ता ।

॥ प्रथमभागः समाप्तः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

अथ द्रव्यप्रमाणानुगमः ।

(द्वितीयो भागः)

केवलणाणुज्जोइयछद्दव्वमणिज्जियं पवाईहिं । णमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसारं ॥ १ ॥

संपहि चोद्दसण्हं जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाणं सिस्साणं तेसिं चेव परिमाणपडिबोहणट्ठं भूदबलियाइरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रूयते द्रोष्यते अद्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च दव्वं दुविहं, जीवदव्वं अजीवदव्वं चेदि । तत्थ जीवदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे । तं जहा, ववगदपंचवण्णो ववगदपंचरसो ववगदद्दुगंधो ववगदअट्ठफासो सुहुमो अमुत्ती अगुरुगलहुओ असंखेज्जपदेसिओ अणिदिट्ठसंठाणो त्ति एदं जीवस्स साहारणलक्खणं । उड्ढगई भोत्ता सपरप्पगासओ त्ति जीवदव्वस्स असाहारणलक्खणं । उत्तं च—अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं । जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिदिट्ठसंठाणं ॥ १ ॥ जं तं अजीवदव्वं तं दुविहं, रूवि-अजीवदव्वं अरूवि-अजीवदव्वं चेदि । तत्थ जं तं रूवि-अजीवदव्वं तस्स लक्खणं वुच्चदे—रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुद्गला रूपि अजीवद्रव्यं शब्दादि । तं च रूवि-अजीवदव्वं छव्विहं, पुढवि-जल-छाया-चउरिंदियविसय-कम्मक्खंध-परमाणू चेदि । वुत्तं च—पुढवी जलं च छाया चउरिंदियविसय-कम्म-परमाणू । छव्विहभेयं भणियं पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं ॥ २ ॥ जं तं अरूवि-अजीवदव्वं तं चउव्विहं, धम्मदव्वं अधम्मदव्वं आगासदव्वं कालदव्वं चेदि । तत्थ धम्मदव्वस्स लक्खणं वुच्चदे-ववगदपंचवण्णं ववगदपंचरसं ववगदद्दुगंधं ववगदअट्ठपासं जीव-पोग्गलाणं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमाणं धम्मदव्वं। एवं चेव अधम्मदव्वं पि, णवरि जीव-पोग्गलाणं एदं ट्ठिदिहेदू। एवमागासदव्वं पि, णवरि आगासदव्वमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं। एवं चेव कालदव्वं पि, णवरि स-परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं। एदाणि छ दव्वाणि। एदेसु छसु दव्वेसु केण दव्वेण पगदं ? जस्स संताणिओगद्दारे चोद्दसमग्गणट्ठाणेहि चोद्दसजीवसमासाणमत्थित्तं परूविदं जीवदव्वस्स तेण पगदं। तं कथं णव्वदि त्ति भणिदे 'मिच्छादिट्ठी केवडिया' इदि सेसदव्वाणं परिमाणमुज्झिदूण जीवदव्वपरिमाणपरूवयसुत्तादो जाणिज्जदि जीवदव्वेणेक्केण चेव पगदं, ण अण्णदव्वेहिं त्ति। प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम्। दव्वस्स पमाणं दव्वपमाणं। एवं तप्पुरिससमासे कीरमाणे दव्वादो पमाणस्स भेदो ढुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कंबलो त्ति। एत्थ देवदत्तादो कंबलस्सेव भेदो ? ण, अभेदे वि उप्पलगंधो इच्चेवमादिसु तप्पुरिससमासदंसणादो। अथवा दव्वादो पमाणं केण वि सरूवेण भिण्णं चेव, अण्णहा विसेसिय-विसेसणभावाणुववत्तीदो। अथवा कम्मधारयसमासो कादव्वो दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणमिदि। एत्थ वि ण दव्वपमाणाणमेयंतेण एगत्तं, एकत्थ समासाभावादो। अथवा दुंदसमासो कादव्वो। तं जधा, दव्वं च पमाणं च दव्वपमाणमिदि। दुंदसमासो अवयवपहाणो त्ति दव्वपमाणाणं पुध पुध परूवणं पावेदि। ण च सुत्ते पुध पुध दव्व-पमाणाणं परूवणा कदा। जदि वि समुदयपहाणो दुंदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायाभावादो अवयवाणं चेव परूवणा पावेदि। ण च सुत्ते अवयवाणं समूहस्स वा परूवणा कदा। तदो ण दुंदसमासो कीरदि त्ति ? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि परूविदमेव। कुदो ? दव्ववदिरित्तपमाणाभावादो। तिकालगोयराणंतपज्जयाणमण्णोण्णाजहवुत्ती दव्वं। वुत्तं च— नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुचयः। अविभ्राड्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा ॥ ३ ॥ संखाणं दव्वस्सेको पज्जाओ, तदो ण दोण्हमेगत्तमिदि। वुत्तं च— एयदवियम्मि जे अत्थपज्जया वयणपज्जया चावि। तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं ॥ ४ ॥ एवं ताणं भेदो भवदु णाम, किंतु दव्वगुणपरूवणादारेणेव दव्वस्स परूवणा भवदि, अण्णहा दव्वपरूवणोवायाभावादो। उत्तं च— नानात्मतामप्रजहत्तदेकमेकात्मतामप्रजहच्च नाना। अंगांगिभावात्तव वस्तु यत्तत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम् ॥ ५ ॥ तदो दव्वगुणे पमाणे परूविदे दव्वं परूविदं चेव। एवं सुत्ते दव्वपमाणं परूवणा अत्थि त्ति दुंदसमासो वि ण विरुज्झदे। सेससमासाणमेत्थ संभवो णत्थि। ते सव्वे पि समासा केत्तिया ? छच्चेव भवंति। उत्तं च— बहुव्रीह्यव्ययीभावौ द्वन्द्वस्तत्पुरुषो द्विगुः। कर्मधारय इत्येते समासाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ किमिदि इदरेसिं संभवो णत्थि ? एत्थ तदत्थाभावादो। को तेसिमत्थो ? बहिरर्थो बहुव्रीहिः परं तत्पुरुषस्य च। पूर्वमव्ययिभावस्य द्वन्द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥ संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि। एकाधिकरणस्तत्पुरुषः कर्मधारय इति। एत्थ चोदगो भणदि–संखा एक्का चेव, एगवदिरित्तदुवादीणमभावादो। सा च एक्कसंखा सव्वपदत्थाणमत्थि त्ति जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थित्ताणुववत्तीदो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तदो किं तीए संखापरूवणाए इदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे–सयलपयत्थाणं जदि एक्का चेव संखा णियमेण भवदि तो सव्वपदत्थाणं एक्कादो अव्वदिरित्ताणं एगत्तं पसज्जेज्ज । तथा च एगट्ठदंसणे सयलट्ठदंसणं, एगट्ठविणासे सयलट्ठविणासो, एयट्ठुप्पत्तीए सयलट्ठुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एवं, तहा अदंसणादो । तम्हा पदत्थभेदो इच्छिदव्वो । संते तब्भेदे तत्थ ट्ठियसंखाए भेदो भवदि चेव, भिण्णट्ठट्ठिय-संखाणाणमेगत्तविरोधादो । होदु एक्कसंखा चेव बहुवा, ण तदो अण्णा संखा चे ण, एक्किस्से बहुत्त-विरोधादो । एगत्तं पडि समाणत्तणेण एगत्तमावण्णाए दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेण णाणत्तमुवगदाए एक्कसंखाए ण बहुत्तं विरुज्झदे चेज्जदि एवं तो एगसंखादो कथंचि भेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिज्जदे । कहं भेदो चे, दव्वादिभेदं पडुच्च; तदो चेव दुब्भावो समाणत्त-दंसणादो । दोण्हमेगत्तं दव्वट्ठियणयविवक्खादो । पज्जवट्ठियणये विवक्खिदे एक्कसंखादो सेसेक्कसंखा वदिरित्तेत्ति णाणत्तं । णेगमणए विवक्खिदे दुवादिभावो । एत्थ पुण णेगमणयविवक्खादो संखाभेदो गहेदव्वो । यथावस्त्ववबोधः अनुगमः, केवलि-श्रुतकेवलि-भिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्यप्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया । दुविहो णिद्देसो, सोदाराणं जहा णिच्छयो होदि तहा देसो णिद्देसो । कुतीर्थपाखण्डिनः अतिशय्य कथनं वा निर्देशः । स द्विविधः द्विप्रकारः शरीरस्वभावरूपप्रकृतिशीलधर्माणां निर्देश इव । ओघेण, ओघं वृन्दं समूहः संपातः समुदयः पिण्डः अविशेषः अभिन्नः सामान्यमिति पर्यायशब्दाः । गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देशः । क्व चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेशः किन्न स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात् । क्व प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, 'एत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीव-समासाणं' इत्यादिसूत्रादवसीयते । सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितस्स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्याविवक्षितत्वात् । आदेसेण, आदेशः पृथग्भावः पृथक्करणं विभजनं विभक्तीकरणमित्यादयः पर्यायशब्दाः । गत्या-दिविभिन्नचतुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेशः । 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' इदि कट्टु आदेसं थप्पं कादूण ओघपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ २ ॥

ओघसद्दुच्चारणाभावे ओघादेसपरूवणासु कदमेसा परूवणेत्ति सोदारस्स चित्तं मा घुलिस्सदि त्ति तच्चित्तस्स थिरत्तुप्पायणट्ठं ओघेणेत्ति भणिदं । मिच्छादिट्ठिग्गहणाभावे कदमस्स जीवसमासस्स इमा परूवणा इदि सोदारस्स संदेहो होज्ज, तस्स संदेहुप्पत्ति-णिवारणट्ठं मिच्छादिट्ठिग्गहणं कदं । दव्वपमाणेणेत्ति अभणिय केवडिया इदि सामण्णेण पुच्छिदे इमा पुच्छा किं दव्वविसया, किं खेत्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसया, किं कालविसया, किं वा भावविसया, इदि संदेहो होज्ज; तण्णिवारणट्ठं दव्वपमाणग्गहणं कदं । केवडिया इदि पुच्छा । पुच्छामंतरेण 'ओघेण मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण अणंता' इदि किण्ण वुच्चदे ? न, अस्य स्वकर्तृत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् । भूतबल्यादीनामाचार्याणां क्व व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात् । अणंता इति पमाणं वुत्तं, एवं वुत्ते संखेज्जासंखेज्जाणं पडिणियत्ती । तं च अणंतमणेयविधं । तं जहा— णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमणंतं । एगो उभयादेसो वित्थारो सव्व भावो य ॥ ८ ॥ तत्थ णामाणंतं जीवाजीवमिस्सदव्वस्स कारणणिरवेक्खा सण्णा अणंता इदि । जं तं ठवणाणंतं णाम तं कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा अक्खो वा वराडयो वा जे च अण्णे ठवणाए ठविदा अणंतमिदि तं सव्वं ठवणाणंतं णाम । जं तं दव्वाणंतं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंथो सुदणाणं सिद्धंतो पवयणमिदि एगट्ठो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः— पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः । द्योतकः सर्व-भावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ९ ॥ आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षयं विदुः । त्यक्तदोषोऽनृतं वाक्यं न ब्रूयाद्धेत्वसंभवात् ॥ १० ॥ रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतम् । यस्य तु नैते दोषास्तस्यानृतकारणं नास्ति ॥ ११ ॥ तत्थ आगमदो दव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो । अवगम्य विस्मृतावगमानां अवगमिष्यतां वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपोपयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्रासत्त्वात् । आगमादण्णो णोआगमो । जं तं णोआगमदो दव्वाणंतं तं तिविहं, जाणुगसरीरदव्वाणंतं भवियदव्वाणंतं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं चेदि । तत्थ जाणुगसरीरदव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं । कधं अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरित्तस्स सरीरस्स अणंतववएसो ? ण, असिसदं धावदि परसुसदं धावदि इच्चेवमादिसु तदो वदिरित्तस्स वि आधारपुरुसस्स आधेयववदेसदंसणादो । भवदु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति ? ण एस दोसो, णट्ठ-भविस्सरज्जम्हि वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो । पज्जयपज्जइणो भेदाभावादो ण तत्थ आधाराधेयभावो । अह जइ एत्थ वि आधाराधेयभावो होज्ज, जाणुगसरीरभवियाणं पुणरुत्तदा ढुक्केज्जेत्ति । जदि एवं, तो एदं परिहरिय धणुसदं भुंजदीदि एदं गहेयव्वं । न धनुर्धृतावस्थायामेवायं व्यवहारः, धनूंष्यपसार्य भुंजानेष्वपि धनुःशतं भुंक्त इति व्यवहारदर्शनात् । न घृतकुम्भदृष्टान्तो घटते, घटस्य घृतव्यपदेशानुपलम्भतो दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोः साधर्म्याभावात् । जं तं भवियाणंतं तं अणंतपाहुडजाणुगभावी जीवो । जं तं तव्वदिरित्तदव्वाणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्माणंतमिदि । जं तं कम्माणंतं तं कम्मस्स पदेसा । जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजगदीवसमुद्दादि एयपदेसादि पोग्गलदव्वं वा । आगममधिगम्य विस्मृतः क्वान्तर्भवतीति चेत्तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्ते । जं तं सस्सदाणंतं तं धम्मादिदव्वगयं । कुदो ? सासयत्तेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दव्वाणं विणासाभावादो । जं तं गणणाणंतं तं बहुवण्णणीयं सुगमं च । जं तं अपदेसियाणंतं तं परमाणू । नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयोः शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते– न तावच्छाश्वतानन्तं नोकर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति, तयोर्भेदात् । अन्तो विनाशः, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम् द्रव्यं शाश्वतमनन्तं शाश्वतानन्तम् । नोकर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कटकादीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया च अनन्तम्, ततो नानयोरेकत्वमिति । एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभाक् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्तः । तथा च कथमयं नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यगतानन्तसंख्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत् । द्रव्यं प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति चेत् ? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्यं प्रति । जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेढिं पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं । ण दव्वाणंते दव्वभेदमस्सिऊण ट्ठिदे एदमणंतं पददि, एगदव्वस्सागासस्स पज्जवसाणदंसणाभावमस्सिदूण ट्ठिदत्तादो । जहा अपारो सागरो, अथाहं जलमिदि । जं तं उभयाणंतं तं तथा चेव उभयदिसाए पेक्खमाणे अंताभावादो उभयादेसाणंतं । जं तं वित्थाराणंतं तं पदरागारेण आगासं पेक्खमाणे अंताभावादो भवदि । जं तं सव्वाणंतं तं घणागारेण आगासं पेक्खमाणे अंताभावादो सव्वाणंतं भवदि । जं तं भावाणंतं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमदो भावाणंतं अणंतपाहुडजाणगो उवजुत्तो । जं तं णोआगमदो भावाणंतं तं तिकालजादं अणंतपज्जयपरिणदजीवादिदव्वं । एदेसु अणंतेसु केण अणंतेण पयदं ? गणणाणंतेण पयदं । तं कधं जाणिज्जदि ? 'मिच्छादिट्ठी केवडिया' इदि सिस्सेण पुच्छिदे 'अणंता' इदि पमाणपरूवणादो जाणिज्जदि । ण च सेस-अणंताणि पमाणपरूवयाणि तत्थ तथाऽदंसणादो । जदि गणणाणंतेण पगदं सेस-दसविध-अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? वुच्चदे— अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च । संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १२ ॥

उत्तं च पुव्वाइरिएहि— जत्थ बहू जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खिवे सूरी । जत्थ बहुअं ण जाणइ चउत्थवो तत्थ णिक्खेवो ॥ १३ ॥

अथवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पथो ण कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरदे । तथा चोक्तम्— प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते । युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥ ज्ञानं प्रमाणमित्याहुरुपायो न्यास उच्यते । नयो ज्ञातुरभिप्रायो युक्तितोऽर्थपरिग्रहः ॥१५॥ जं तं गणणाणंतं तं पि तिविहं, परित्ताणंतं जुत्ताणंतं अणंताणंतमिदि । अणंता इदि सामण्णेण वुत्ते एदम्हि चेवाणंते मिच्छाइट्ठि-जीवा होंति इदरेसु अणंतेसु ण होंति त्ति ण जाणिज्जदे, अणंता इदि बहुवयणणिद्देसादो । जत्थ तिण्णि वि अणंताणि अत्थि तस्स चेव अणंताणंतस्स गहणं होदि इदि चे ण, मिच्छाइट्ठीणं बहुत्तमवेक्खिय बहुवयणुप्पत्तीदो । अहवा तिण्णि वि अणंताणि सभेदे अस्सिऊण अणंतवियप्पाणि । तत्थ एदस्स बहुत्तविवक्खाए बहुवयणं अण्णभेदस्स णेदि ण जाणिज्जदे ? एत्थ परिहारो वुच्चदे— 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' त्ति ज्ञापकादवसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

नतो विशेषप्रतिपत्तिरिति न्यायाद्वा । जं तं अणंताणंतं तं पि तिविहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि । तत्थ इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च भवदि ? 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं' इदि परियम्मवयणादो जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं होदि त्ति । तं पि अणंताणंतवियप्पमत्थि त्ति इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि ? जहण्णअणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिऊण उक्कस्स-अणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण अंतरे जिणदिट्ठभावो रासी घेत्तव्वो । अहवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणो छद्दव्वपक्खित्तरासीदो अणंतगुणहीणो मिच्छाइट्ठिरासी होदि । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी ? उच्चदे— जहण्णमणंताणंतं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जहण्णमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरं महारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणोवि उट्ठिदमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी णाम । एसो सव्वजीवरासीदो किंचूणमिच्छादिट्ठिरासीदो य अणंतगुणहीणो त्ति कधं जाणिज्जदि ? वुच्चदे— जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवहियाओ पक्खित्ते जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति । जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहि दुगुणिदाहि जहण्णपरित्ताणंते गुणिदे जहण्णमणंताणंतस्स अद्धछेदणयसलागा हवंति । एदाओ च जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्जगुणहीणाओ । एदाणमुवरि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति । जहण्ण-अणंताणंतस्स अद्धछेदणाओ जहण्ण-अणंताणंतेण गुणिदे पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा भवंति । एदाओ जहण्ण-अणंताणंतादो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा हवंति । पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिं गुणिदे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धछेदणयसलागाओ भवंति । एदाओ पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गणादो अणंतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति । एसो वग्गसलागरासी पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो उवरि एगमवि वग्गट्ठाणं ण च वड्ढिदो, तेणेदेसिं दोण्हं रासीणं वग्गसलागाओ सरिसाओ । एदाणं च वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ । जदि एसो रासी सव्वजीववग्गसलागरासिणा सरिसो हवदि तो तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिणा सव्वजीवरासी वि सरिसो होज्ज; ण च एवं । तं कधं ? 'जहण्ण-अणंताणंतं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वग्गिज्जमाणे जहण्ण-अणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गट्ठाणाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागा उप्पज्जदि' त्ति परियम्मे वुत्तं। गुणगारो पि जम्हि जम्हि अणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-अणुक्कस्साणंताणंतयं घेत्तव्वं। ण च तदियवारवग्गिद-संवग्गिदरासिवग्गसलागाओ हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त-अणंतगुणवग्गणट्ठाणाणि गंतूणुप्पण्णाओ, किंतु हेट्ठिमवग्गट्ठाणादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परित्ताणंतगुणमद्धाणं गंतूणुप्पण्णाओ। केण कारणेण? जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाहि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलाहि तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसलागाणं वग्गसलागाओ हेट्ठिमअद्धाणेणूणाओ अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरित्ताणंतमागच्छदि त्ति। ण च जहण्ण-अणंताणंतादो हेट्ठिम-अद्धाणं पडुच्च सादिरेयजहण्णपरित्ताणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ उप्पण्णाओ, किंतु अणंताणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ। कुदो? 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतेणेव गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो। ण च एदस्स जहण्णपरित्ताणंतादो विसेसाहियस्स असंखेज्जत्तमसिद्धं, संते वए णिट्ठंतस्स अणंतत्तविरोहादो। ण च अद्धपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, उवयारेण तस्स आणंतियादो। को वा छद्दव्वपक्खित्तरासी? वुच्चदे– तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिम्हि— सिद्धा णिगोदजीवा वणप्फदि कालो य पोग्गला चेय। सव्वमलोगागासं छप्पेदे णंतपक्खेवा ॥ १६ ॥ एदे छप्पक्खेवे पक्खित्ते छद्दव्वपक्खित्तरासी होदि। एदस्स अजहण्ण-मणुक्कस्सअणंताणंतयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो मिच्छाइट्ठिरासी। एदं कधं णव्वदि त्ति भणिदे अणंता इदि वयणादो। एदं वयणमसच्चत्तणं किं ण अल्लियदि त्ति भणिदे असच्चकारणुम्मुक्कजिणवयणकमलविणिग्गयत्तादो। ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो पमाणंतरेण परिक्खिज्जदि, अव्ववट्ठाणादो।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

किमट्ठं खेत्तपमाणमइकम्म कालपमाणं वुच्चदे? 'जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भणियव्वं' इदि णायादो। कधं कालपमाणादो खेत्तपमाणं बहुवण्णणिज्जं? वुच्चदे– खेत्तपमाणे लोगो परूवेदव्वो। सो वि सेढिपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेढी परूवेदव्वा। सा वि रज्जुपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परूवेदव्वा। रज्जू वि सगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परूवेदव्वा। ताओ वि दीवसागारपरूवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परूवेदव्वा त्ति। ण च कालपमाणे एवं महंती परूवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे। के वि आइरिया एवं भणंति बहुवेहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि। उत्तं च— सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेत्तं। अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ॥ १७ ॥ इदि ॥ एदं वक्खाणं ण घडदे।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुदो ? खेत्तादो दव्वस्स परूवणपसंगादो । तं कधं ? एक्कम्हि दव्वंगुले अणंतपरमाणुपदेसेहि णिप्पण्णे एगं खेत्तंगुलमोगाहे, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि होंति त्ति । सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो य सुहुमदरं हवदि दव्वं । खेत्तंगुला अणंता एगे दव्वंगुले होंति ॥ १८ ॥ इदि ॥ कधं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठी जीवा ? अणंताणंताणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिं च ठवेऊण कालम्हि एगो समयो मिच्छाइट्ठिरासिम्हि एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि । एत्थ चोदगो भणदि– मिच्छाइट्ठिरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंति त्ति । केण कारणेण ? कालमाहप्पपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं ? उच्चदे– धम्माधम्मागासा तिण्णि वि तुल्लाणि होंति थोवाणि । वड्ढीदु जीवपोग्गलकालागासा अणंतगुणा ॥ १९ ॥ ण एस दोसो, अदीदकालगहणादो जहा लोए तहा सव्वे । लोए पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्पण्णो अणागदो णाम । घडिज्जमाणो वट्टमाणो । णिप्पण्णो ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्वबीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य । एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्वबीजं तु ॥ २० ॥ तथा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य । एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ॥ २१ ॥ तेण कारणेण मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि, सव्वे समया अवहिरिज्जंति । अदीदकालो थोवो मिच्छाइट्ठिरासी बहुगो त्ति कधं णव्वदे ? सोलस-पडिय-अप्पाबहुगादो । कधं सोलसपडिय-अप्पाबहुगं ? सव्वत्थोवा वट्टमाणद्धा, अभवसिद्धिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? जहण्णजुत्ताणंतं । सिद्धकालो अणंतगुणो । को गुणगारो ? छम्मासट्ठमभागेण रूवाहिएण छिण्ण-अदीदकालस्स अणंतिमभागो । अणाइस्स अदीदकालस्स कधं पमाणं ठविज्जदि ? ण, अण्णहा तस्साभावपसंगादो । ण च अणादि त्ति जाणिदे सादित्तं पावेदि, विरोहा । सिद्धा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? रूवसदपुधत्तं, असिद्धकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जावलियाओ । अदीदकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धकालमेत्तेण । भवसिद्धिया मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? भवसिद्धियमिच्छाइट्ठीणमणंतिमभागो । भवसिद्धिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण । मिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तपमाणेणूण-अभवसिद्धियमेत्तेण । संसारत्था विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण । सव्वे जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धजीवमेत्तेण । पोग्गलदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वपोग्गलदव्वादो अणंतगुणो । सव्वद्धा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वट्टमाणातीदकालमेत्तेण । अलोगागासमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वकालादो अणंतगुणो । सव्वागासं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? लोगागासपदेसमेत्तेण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जेण अदीदकालादो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा तेण सव्वे समया अवहिरिज्जंति मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं । किमट्ठं कालपमाणं वुच्चदे ? मिच्छाइट्ठिरासिस्स मोक्खं गच्छमाणजीवे पडुच्च संते वि चए ण वोच्छेदो होदि त्ति जाणावणट्ठं ।

खेत्तेण अणंता लोगा ॥ ४ ॥

खेत्तपमाणमुलंघिय अप्पवण्णणिज्जं भावपमाणं किमिदि ण परूविज्जदि ? खेत्तपरूवणदो भावपरूवणं महदरमिदि ण परूविज्जदे । तं जहा, भावपमाणं णाम णाणं । तं पि पंचविहं । तत्थ वि एक्केक्कमणेयवियप्पं । तत्थ वि अणेगाओ विप्पडिवत्तीओ त्ति । खेत्तेण कथं मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदे ? वुच्चदे—जथा पत्थेण जव-गोधूमादिरासी मिणिज्जदि तथा लोएण मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदि । एवं मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि त्ति । एत्थुवउज्जंती गाहा— पत्थेण कोदवेण व जह कोइ मिणेज्ज सव्वबीजाइं । एवं मिणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २२ ॥ पत्थेण ताव पत्थबाहिरत्थो पुरिसो पत्थबाहिरत्थाणि बीयाणि मिणेदि । कथं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थं मिच्छाइट्ठिरासिं मिणेदि त्ति ? जदो लोगेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा तदो ण एस दोसो । कधं पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा ? वुच्चदे—एक्केक्कम्मि लोगागासपदेसे एक्केक्कं मिच्छाइट्ठिजीवं णिक्खेविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो । एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि । एत्थुवसंहारगाहा— लोगागासपदेसे एक्केक्के णिक्खिवेवि तह दिट्ठं । एवं गणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २३ ॥ को लोगो णाम ? सेढिघणो । का सेढी ? सत्तरज्जुमेत्तायामो । का रज्जु णाम ? तिरियलोगस्स मज्झिमवित्थारो । कथं तिरियलोगस्स रुंदत्तणमाणिज्जदे ? जेत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवच्छेदणाओ च रूवाहियाओ केसिं च आइरियाणमुवएसेण संखेज्जरूवाहियाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा छिण्णाविसिट्ठं गुणिदे रज्जु णिप्पज्जदि । एसा रासी सेढीए सत्तमभागो । कम्मि तिरियलोगस्स पज्जवसाणं ? तिण्हं वादवलयाणं बाहिरभागे । तं कथं जाणिज्जदि ? 'लोगो वादपदिट्ठो' त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो । सयंभुरमणसमुद्दबाहिरवेदियाए परदो केत्तियमद्धाणं गंतूण तिरियलोगसमत्ती होदि त्ति भणिदे असंखेज्जदीवसमुद्दरुंदरुद्धजोयणेहिंतो संखेज्जगुणाणि गंतूण होदि । एदं कुदो णव्वदे ? जोइसियाणं वेछप्पण्णंगुलसदवग्गमेत्तभागहारपरूवयसुत्तादो, 'दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे' त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे । ण च एदं वक्खाणं जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबुदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि त्ति परियम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ, रूवेहि अहियाणि रूवाहियाणि त्ति गहणादो । अण्णाइरियवक्खाणेण सह विरुज्झदि त्ति णेदस्स वक्खाणस्स अभद्दत्तं, तेण वक्खाणाभासेण विरुद्धदाए एदस्स वक्खाणस्स समवट्ठाणादो । तं वक्खाणाभासमिदि कुदो णव्वदे ? जोइसियभागहारसुत्तादो चंदाइच्चबिंबपमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो च । ण च सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होइ, अइप्पसं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गादो। किं च ण तं वक्खाणं घडदे, तम्हि वक्खाणे अवलंबिज्जमाणे सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णदंसणादो। ण च सेढीए सत्तमभागम्हि अट्ठसुण्णाओ अत्थि, तदत्थित्तविहाययसुत्ताणुवलंभादो। तदो तत्थ अट्ठसुण्णविणासणट्ठं केत्तिएण वि रासिणा अहिएण होदव्वं। होंतो वि असंखेज्जभागब्भहिओ संखेज्जभागब्भहिओ वा ण होदि, तदणुग्गहकारिसुत्ताणुवलंभादो। तदो दीवसमुद्दरुद्धखेत्तायामादो संखेज्जगुणेण बाहिरखेत्तेण होदव्वमण्णहा पुव्वुत्तसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो। जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घाएण समुहदो काउलेस्सियाए लग्गो त्ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण, सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरवेदियादो परभागट्ठिदपुढवीए बाहिरिल्लतडत्तणेण गहणादो। तो वि काउलेस्सियाए महामच्छो ण लग्गदि त्ति णासंकणिज्जं, पुढविट्ठिदपदेसम्हि चेव हेट्ठा वादवलयाणमवट्ठाणादो। एसो अत्थो जइवि पुव्वाइरियसंपदायविरुद्धो तो वि तंतजुत्तिबलेण अम्हेहिं परूविदो। तदो इदमेवेत्थं वेत्ति णेहासंगहो कायव्वो, अइंदियत्थविसए छदुमत्थवियप्पिदजुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो। तम्हा उवएसं लद्धूण विसेसणिण्णयो एत्थ कायव्वो त्ति। खेत्तपमाणपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? असंखेज्जपदेसे लोगागासे अणंतलोगमेत्तो वि जीवरासी सम्माइ त्ति जाणावणट्ठं। अट्ठसु माणेसु लोगपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्तियलोगा होंति त्ति जाणावणट्ठं वा। तो वि ते केत्तिया होंति त्ति भणिदे एगलोगेण मिच्छाइट्ठिरासिम्हि भागे हिदे लद्धरूवमेत्ता लोगा होंति।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ॥ ५ ॥

अधिगमो णाणं पमाणमिदि एगट्ठो। सो वि अधिगमो पंचविधो मदि-सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणभेदेण। एक्केक्कं तिविहं दव्व-खेत्त-कालभेएण। दव्वविसयणाणं दव्वभावपमाणं। खेत्तविसिट्ठदव्वस्स णाणं खेत्तभावपमाणं। तहा कालस्स वि वत्तव्वं। किमट्ठं सुत्ते भावपमाणं ण वुत्तं ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदो। ण च भावपमाणमंतरेण तिण्हं पमाणाणं सिद्धी भवदि, सुहियपमाणाभावे गउणपमाणस्सासंभवादो, भावपमाणं बहुवण्णणीयमिदि वा हेदुवादाहेदुवादाणं अवधारणसमत्थसिस्साणमभावादो वा। अथवा एवं भावपमाणं वत्तव्वं। तं जहा— मिच्छाइट्ठिरासिणा सव्वपज्जए भागे हिदे जं भागलद्धं तं भागहारमिदि कट्टु सव्वपज्जयस्सुवरि खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि वत्तव्वाणि। तं जहा— सव्वपज्जए भागहारमेत्ते खंडे कदे तत्थ एगखंडपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि। खंडिदं गदं। तेणेव भागहारेण सव्वपज्जए भागे हिदे भागलद्धपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि। भाजिदं गदं। तं चेव भागहारं विरलेदूण सव्वपज्जयं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ बहुखंडाणि छोड्डिय एगखंडं गहिदे मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। विरलिदं गदं। तं चेव भागहारं सलागभूदं ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वपज्जए अवहिरिज्जदि, सलागादो एगं रूवं अवणिज्जदि। पुणो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वपज्जयम्मि अवहिरिज्जदि, सलागादो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वपज्जओ व सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । मिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणविसए सोदाराणं णिच्छयुप्पायणट्ठं मिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । सुत्ताभावे कथमेदं वुच्चदे ? सुत्तेण सूचिदत्तादो । तं जहा— सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिभाजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणवग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स धुवरासि त्ति णामं कादूण ठवेदव्वो $\frac{256}{13}$ । सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे २५६ धुवरासिपमाणमेत्तखंडे कदे तत्थ एगखंडं १३ मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । खंडिदं गदं । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तं मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । धुवरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे समखंडं कादूण दिण्णे एगखंडपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । विरलिदं गदं । तं चेव धुवरासिं सलागभूदं ठवेऊण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिउवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गम्हि अवणीय धुवरासीदो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो च धुवरासी च जुगवं णिट्ठिदा । तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं केत्तियं ? सव्वजीवरासिस्स अणंता भागा अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि त्ति । तं जहा— सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं काऊण दिण्णे रूवं पडि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलपमाणं पावदि । पुणो सिद्धतेरसगुणट्ठाणेहि भजिदसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरिमविरलणाए एगपढमवग्गमूलं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं पावेदि । तत्थुवरिमविरलणपरूवूणमेत्तसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणाणि च घेत्तूण मिच्छाइट्ठिरासी होदि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सव्वजीवरासी चेव आगच्छदि । दुभागब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? तिभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिवग्गक्खेत्तं पुव्वावरायामेण तिण्णि खंडाणि करिय तत्थेगखंडं घेत्तूण दो खंडं करिय संधिदे सव्वजीवरासिदुभागवित्थारं वेंति । भागायामखेत्तं होदि । एदं अधियविरलणाए दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स तिभागहीणसव्वजीवरासी पावेदि । तिभागब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? चउब्भागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं संखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? संखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्ससंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्तासंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च्छदि । असंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? असंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्ताणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । अणंतभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । सव्वत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ— अवहारवड्डिरूवाणवहारादो हु लद्धअवहारो । रूवहिणो हाणीए होदि हु वड्डीए विवरीदो ॥ २४ ॥ अवहारविसेसेण य छिण्णवहारादु लद्धरूवा जे । रूवहियाऊणा वि य अवहारो हाणिवड्डीणं ॥ २५ ॥ लद्धविसेसच्छिण्णं लद्धं रूवाहिऊणयं चावि । अवहारहाणिवड्डीणवहारो सो मुणेयव्वो ॥ २६ ॥ लद्धंतरसंगुणिदे अवहारे भज्जमाणरासिम्हि । पक्खित्ते उप्पज्जइ लद्धस्सहियस्स जो रासी ॥ २७ ॥ हारान्तरहृतहाराल्लब्धेन हतस्य पूर्वलब्धस्य । हारहृतभाज्यशेषः स चान्तरं हानिवृद्धी स्तः ॥ २८ ॥ अवणयणरासिगुणिदो अवणयणेणूणएण लद्धेण । भजिदो हु भागहारो पक्खेवो होदि अवहारे ॥ २९ ॥ पक्खेवरासिगुणिदो पक्खेवेणाहिएण लद्धेण । भजिओ हु भागहारो अवणेज्जो होइ अवहारे ॥ ३० ॥ जे अहिया अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं । अहियवहारेण हिए लद्धं पुव्वप्फलं ऊणं ॥ ३१ ॥ जे ऊणा अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं । ऊणवहारेण हिए लद्धं पुव्वप्फलं अहियं ॥ ३२ ॥ एदाहि गाहाहि पडिबोहियस्स सिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वत्तव्वो । तं जहा, सिद्धतेरसगुणट्ठाणोवट्टिदमिच्छाइट्ठिभागब्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणभजिदसव्वजीवरासिभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि त्ति ण संदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणेण सव्वजीवरासिं भागे हिदे जं भागलद्धं तं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं पावदि । तत्थ बहुखंडा मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । एयं खंडं सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं हवदि । णिरुत्ती गदा । जो सो वियप्पो सो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि । कारणं सव्वजीवरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो त्ति । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जदि सव्वजीवरासिणा तस्स घणो अवहिरिज्जदि तो सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं मिच्छाइट्ठिरासिमागमणं मणेणावहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा, सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि । अणेण विहाणेण गुणगारो वड्ढावेदव्वो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जाव धुवरासिपमाणं पत्तो त्ति। पुणो धुवरासिगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिभागो आगच्छदि सो चेव मिच्छाइट्ठिरासी। एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। घणाघणे वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण? घणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे सव्वजीवरासिस्स घणो आगच्छदि। पुणो वि सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं। एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि। उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो। धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि? मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। केण कारणेण? जेण धुवरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा जदि सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागाहि सरिसा त्ति घेप्पंति तो धुवरासिं अद्धद्धेण छिदिऊणुव्वट्ठाविदरासिपमाणं सव्वजीवरासिं मिच्छाइट्ठिरासिणा खंडिदपमाणं होदि। एवं होदि त्ति काऊण सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयं सलागभूदं ट्ठवेऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धच्छेदेण छिण्णे सव्वजीवरासी आगच्छदि। पुणो मिच्छाइट्ठिरासिणोवट्टिदसव्वजीवरासिणा उवरिमसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। अथवा धुवरासिअद्धच्छेदणया जदि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्धच्छेदणयसरिसा हवंति तो अद्धद्धेण छिण्णावसिट्ठरासिपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिणा एगरूवं खंडिदेगखंडपमाणं होदि। पुणो धुवरासिअद्धच्छेदणए सलागा काऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धद्धेण छिण्णे एगरूवमागच्छदि। पुणो तमेगरूवं मिच्छाइट्ठिरासिभजिदेगरूवेण भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। अथवा धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। केण कारणेण? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गो आगच्छदि। पुणो धुवरासिणा उवरिमसव्वजीवरासिवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि त्ति। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया? सव्वजीवरासीदो उवरि दोण्णि वग्गट्ठाणाणि चडिदाणि त्ति दो रूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता होऊण अंतिमभागहारेण अधिया भवंति। एवं भागहारस्स तिगच्छेदणए सलागा काऊण तीहि तीहि रूवेहि रासिम्हि भागे हिदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवं चउक्कादिछेदणयसलागाहि वि रासिम्हि छिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आगच्छदि त्ति परूवेयव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु उवरि वत्तव्वं । णवरि भागहारच्छेदणाओ संकलिज्जमाणे एवं संकलेदव्वाओ । तं जहा, सव्वजीवरासीदो चडिदद्धाणमेत्तवग्गसलागाओ विरलिय विगं करियण्णोण्णब्भत्थरासिरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदे भागहारछेदणया भवंति । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि वत्तव्वं । तदो वेरूवधारापरूवणा समत्ता भवदि । अट्ठरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । उवरि सव्वत्थ दोरूवादीणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं कदे अट्ठपरूवणा समत्ता भवदि । घणाघणे गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे घणउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदमेत्ता । उवरि सव्वत्थ चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता भवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायव्वं । एवं कदे घणाघणपरूवणा समत्ता भवदि । गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण मिच्छाइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे । तस्सद्धच्छेदणया केत्तिया ? मिच्छाइट्ठिरासिअद्धच्छेदणएणूणतब्भजिदरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिघणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। एवमट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। (एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं)। एवं घणाघणपरूवणा गदा। गहिदगहिदं गदं। गहिदगुणागारं वत्तइस्सामो। वेरूवे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठदे। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। घणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी चेव आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। घणाघणपरूवणा गदा।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि पलिदोवममवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ६ ॥

एत्थ ताव सासणसम्माइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणं वत्तइस्सामो। सासणसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। खेत्तकालपमाणेहि किमिदि सासणसम्माइट्ठिपरूवणा ण परूविदा? ण, एत्थ मिच्छाइट्ठिम्मि व तेहि परूवेदव्वस्स कारणाभावा। किं तत्थ कारणं? वुच्चदे— असंखेज्जपदेसीए लोए कथमणंतो जीवरासी सम्मादि त्ति जादसंदेहणिराकरणट्ठं खेत्तपमाणं वुच्चदे। आयविरहिदस्स सिज्झंतजीवे अवेक्खिय सव्वयस्स सव्वजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि त्ति जादसंदेहणिराकरणट्ठं कालपमाणं परूविज्जदि। ण च एदेसु कारणेसु एक्कं पि कारणमेत्थ संभवइ, अणुवलंभादो। तम्हा खेत्तकालपरूवणा सासणादीणं गंथे ण परूविदा। एत्थ भागहारपमाणमंतोमुहुत्तमिदि सासणसम्माइट्ठिआदिरासिपमाणविसयणिण्णयुप्पायणट्ठं परूविदं। तं च अंतोमुहुत्तमणेयवियप्पं, तदो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एत्तियमिदि ण जाणिज्जदि । तत्थ णिच्छयजणणणिमित्तं किंचि अत्थपरूवणं कस्सामो । तं कथं ? असंखेज्जे समए घेत्तूण एया आवलिया हवदि । तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाओ घेत्तूण एगो उस्सासो हवदि । सत्त उस्सासे घेत्तूण एगो थोवो हवदि । सत्त थोवे घेत्तूण एगो लवो हवदि । अट्ठत्तीस लवे अद्धलवं च घेत्तूण एगा णालिया हवदि । उत्तं च—आवलि असंखसमया संखेज्जावलिसमूह उस्सासो । सत्तुस्सासो थोवो सत्तत्थोवा लवो एक्को ॥ ३३ ॥ अट्ठत्तीसद्धलवा णाली वे णालिया मुहुत्तो दु । एगसमएण हीणो भिण्णमुहुत्तो भवे सेसं ॥ ३४ ॥ अड्ढस्स अणलसस्स य णिरुवहदस्स य जिणेहि जंतुस्स । उस्सासो णिस्सासो एगो पाणो त्ति आहिदो एसो ॥ ३५ ॥ तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाणि तेहत्तरिं च उस्सासा । एगो होदि मुहुत्तो सव्वेसिं चेव मणुयाणं ॥ ३६ ॥ सत्तसएहि वीसुत्तरेहि पाणेहि एगो मुहुत्तो होदि त्ति केवि भणंति, पाइयपुरिसुस्सासे दट्ठूण तण्ण घडदे । कुदो ? केवलिभासिदत्थादो पमाणभूदेण अण्णेण सुत्तेण सह विरोहादो । कथं विरोहो ? जेणेदं चउहि गुणिय सत्तूण-णवसदं पक्खित्ते सुत्तुत्तुस्सासपमाणं पावदि । एक्कवीससहस्स-छस्सयमेत्तपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलक्ख-तेरहसहस्स-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पडिवण्णाणं संवच्छरियाणं कालववहारो कथं घडदे ? ण, केवलिभासिददिवसमुहुत्तेहि समाणदिवसमुहुत्तब्भुवगमादो । एवं परूविदमुहुत्तुस्सासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो घेत्तव्वो । संखेज्जावलियाहि एगो उस्सासो णिप्फज्जदि त्ति सो उस्सासो संखेज्जावलियाओ कयाओ । तत्थ एगमावलियं घेत्तूण असंखेज्जेहि समएहि एगावलिया होदि त्ति असंखेज्जा समया कायव्वा । एत्थ एगसमए अवणिदे सेसकालपमाणं भिण्णमुहुत्तो उच्चदि । पुणो वि अवरेगे समए अवणिदे सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं होदि । एवं पुणो पुणो समया अवणेयव्वा जावेगुस्सासो णिट्ठिदो त्ति । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं चेव होइ । एवं सेसुस्सासे वि अवणेयव्वा जावेगावलिया सेसा त्ति । सा आवलिया वि अंतोमुहुत्तमिदि भण्णदि । तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि आवलियम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तं असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अंतोमुहुत्तमेव । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघसासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-संजदासंजदाणं अवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदव्वं । तं कुदो णव्वदे ? 'उवसमसम्माइट्ठी थोवा । खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा' त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । तं जहा, खइयसम्माइट्ठीणमवहारकालेण ताव संखेज्जावलियमेत्तेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेण वा होदव्वं, अण्णहा मणुस्सेसु असंखेज्जखइयसम्माइट्ठीणं संभवप्पसंगादो । संखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं वुच्चदे । तं जहा, वासपुधत्तमंतरिय जइ सोहम्मदेवेसु संखेज्जाणं खइयसम्माइट्ठीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेसु किं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइट्ठी होंति । उवसमसम्माइट्ठीणमवहारकालो पुण असंखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइट्ठीहिंतो तेसिं असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । सासणसम्माइट्ठिसम्मामिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइट्ठीहिंतो तेसिमसंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण' इति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्थे वर्तमानान्तःशब्दग्रहणात् । मुहूर्तस्यान्तः अन्तर्मुहूर्तः । कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादित्वात् । कुतः ओत्वम् ? 'एए छच्च समाणा' इत्येतस्मात् । एदेण सणक्कुमारादिगुणपडिवण्णाणमवहारकालाणं पि असंखेज्जावलियत्तं पसाहियं । एत्थ चोदगो भणदि । एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ ण होंति, हाणिवड्ढिसंजुदत्तादो । ण च हाणिवड्ढीओ णत्थि त्ति वोत्तुं सक्किज्जदे, आयव्वयाभावे मोक्खाभावादो अणादिअपज्जवसिदसासणादिगुणकालाणुवलद्धीदो च । जदि एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ तो एदे भागहारा घडंति, अण्णहा पुण ण घडंति । अणवट्ठिदरासिभागहारेणापि अणवट्ठिदसरूवेणेव अवट्ठाणा होंति । एत्थ परिहारो वुच्चदे—सासणरासीणमुक्कस्ससंचयं तिकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवणं कदं तम्हा वड्ढिहाणीओ णत्थि त्ति भागहारपरूवणं घडदि त्ति । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइट्ठीणं पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तं जहा— पलिदोवमे असंखेज्जावलियमेत्तखंडे कए तत्थ एगखंडं सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । खंडिदं गदं । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे जं भागलद्धं तं सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । असंखेज्जावलियाओ विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण पलिदोवमम्हि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि । पुणो वि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं पलिदोवमम्हि अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोवमो अवहारकालो च जुगवं णिट्ठिदो । तत्थ एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि त्ति । पमाणं गदं । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे पलिदोवमपढमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पलिदोवमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णब्भत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण ट्ठिदअसंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढम-वग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरिमउवरिमवग्गट्ठाणाणि विदियवग्गमूलंताणि णिरंतरं सव्वाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति त्ति । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अहवा अवहारकालेण पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अथवा अवहारकालेण पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण पुणो वि तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूलं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरिमवग्गट्ठाणाणि पढमवग्गमूलंताणि सव्वाणि णिरंतरं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । जदि वि णिरुत्तिं भण्णमाणे एसो अत्थो पुव्वं परूविदो तो वि ण पुणरुत्तो होदि, तिण्णि वि वग्गधाराओ अस्सिऊण ट्ठिदहेट्ठिमवियप्पसंबंधत्तादो । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो भवदु णाम, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो ण घडदे । केण कारणेण ? अवहारकालेण पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी ण उप्पज्जदि त्ति । ण एस दोसो, पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारकालेणोवट्टिय तप्पाओग्गवग्गट्ठाणाणि गुणिदे केवलमोवट्टिदे च जत्थ रासी आगच्छदि सो हेट्ठिमवियप्पो त्ति अब्भुवगमादो । मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणाए वि एदम्हि णए अवलंबिज्जमाणे वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति वत्तव्वो ? एसा परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पलिदोपमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारेणोवट्टिय जदि सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाइदुं सक्किज्जदि तो हेट्ठिमवियप्पस्स वि संभवो होज्ज । ण च एवं वेरूवधाराए संभवइ ।

एदं णयमस्सिऊण मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणाए हेट्ठिमवियप्पो णत्थि त्ति भणिदं । एसो णओ एत्थ पहाणो । एवमट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लविदियवग्गमूलेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे घणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं तिय-चउक्क-पंचादिछेदणाणि वि अवलंबिय सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पादेयव्वो । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण पदरपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? असंखेज्जावलियद्धच्छेदणयाहियपलिदोवमद्धच्छेदणयमेत्ता । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा पदरपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? पलिदोवमादो उवरि चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिरूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं छेदणापक्खित्तमेत्ता । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । वेरूवपरूणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण घणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? दुगुणिदपलिदोवमद्धच्छेदणएसु

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अथवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणपल्लं गुणेऊण घणपल्लउवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्सच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासितिगुण-रूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवमुवरि वि अद्धच्छेदणयाणं संकलण-विहाणं वत्तव्वं । एत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लउवरिमवग्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? रूवूणणवहि रूवेहि पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अथवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणाघणेण उवरिमवग्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि । पुणो वि घण-पल्लुवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगघणाघणवग्गसलागं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थकदणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवं दोण्णि-चत्तारि-आदि-वग्गट्ठाणाणि विरलिय विगुणिदण्णोण्णब्भत्थणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्ध-च्छेदणए गुणिय सादिरेगा करिय भागहारद्धच्छेदणया उप्पाएदव्वा । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कादव्वं । गहिदपरूवणा गदा । गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । तं जहा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण वेरूवधाराए उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगच्छदि । एवमुवरि सव्वत्थ कायव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । एवं सव्वत्थ परूवेदव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपल्लविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । गहिदगहिदो गदो । गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि उच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइट्ठिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्ठिरासी अवचिट्ठदे । एवं सव्वत्थ घणाघणधाराए वत्तव्वं । गहिदगुणगारो गदो । एवं सासणसम्माइट्ठिपरूवणा समत्ता । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च वत्तव्वं । णवरि विसेसो अप्पप्पणो अवहारकालेहि खंडिदादओ वत्तव्वा । एत्थ एदेसिं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो— वत्तिस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमट्ठवीसं च । एदे अवहारत्था हवंति संदिट्ठिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥ पण्णट्ठी च सहस्सा पंचसया खलु छउत्तरा तीसं । पलिदोवमं तु एवं वियाण संदिट्ठिणा दिट्ठं ॥ ३८ ॥ विसहस्सं अडयालं छण्णउदी चेय चदुसहस्साणि । सोलसहस्साणि पुणो तिण्णिसया चउरसीदीया ॥ ३९ ॥ पंचसय वारसुत्तरमुद्दिट्ठाइं तु लद्धदव्वाइं । सासण-मिस्सासंजद-विरदाविरदाण णु कमेण ॥ ४० ॥ सासणसम्माइट्ठी ३२; सम्मामिच्छाइट्ठी १६; असंजदसम्माइट्ठी ४; संजदासंजद १२८; एदे अवहारकाला । सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं २०४८ सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं ४०९६ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं १६३८४ संजदासंजददव्वपमाणं ५१२ । पलिदोवमपमाणं ६५५३६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं ॥ ७ ॥

पमत्तसंजदग्गहणं सेसगुणट्ठाणाणं पडिसेहट्ठं। कोडिपुधत्तग्गहणं सेससंखाणिराकरणट्ठं। पुधत्तमिदि तिण्हं कोडीणमुवरि णवण्हं कोडीणं हेट्ठदो जा संखा सा घेत्तव्वा। सा अणेगवियप्पादो इमा होदि त्ति ण जाणिज्जदे? ण, परमगुरूवदेसादो जाणिज्जदे। तत्थ पमत्तसंजदाणं पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्ठाणउदिसहस्सा छउत्तरं विसदं च ५९३९८२०६। एदमेत्तियं होदि त्ति कधं णव्वदे? आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो।

अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ८ ॥

जदि वि एदं संखेज्जा इदि वयणं सव्वसंखेज्जवियप्पाणं साहारणं हवदि तो वि कोडिपुधत्तं ण पूरेदि त्ति णव्वदे। तं कथं? पुध सुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो, 'पमत्तद्धादो अप्पमत्तद्धा संखेज्जगुणहीणो' त्ति सुत्तादो वा। अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरूवदेसादो वुच्चदे। दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसदं च। अंकदो वि एत्तिया हवंति २९६९९१०३। वुत्तं च– तिगहिय-सद णवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी। पंचेव य तेणउदी णवट्ठ विसया छउत्तरा चेय ॥ ४१ ॥ अप्पमत्तदव्वादो पमत्तदव्वं केण कारणेण दुगुणं? अपमत्तद्धादो पमत्तद्धाए दुगुणत्तादो।

चदुण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥

एगेगगुणट्ठाणम्हि एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुवसामेंतो जहण्णेण एगो जीवो पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा पविसंति। एदं सामण्णदो भवदि। विसेसदो पुण अट्ठ-समयाहिय-वासपुधत्तब्भंतरे उवसमसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति। तत्थ पढमसमए एगजीवमाइं कादूण जा उक्कस्सेण सोलस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउवीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। तदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कसेण तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छत्तीस जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वायाल जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। छट्ठसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदाल जीवा त्ति उवसमसेढिमारुहंति। सत्तमट्ठमदोसु समएसु एकजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा त्ति उवसमसेढिं चडंति। उत्तं च— सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तह य वायालं। अडयालं चउवण्णं चउवण्णं होइ अंतिमए ॥ ४२ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १० ॥

पुव्वुत्तेसु अट्ठसु समएसु एगेगगुणट्ठाणम्हि उक्कस्सेण संचिदसव्वजीवे एगट्ठं कदे चउरुत्तरतिसयमेत्ता हवंति । तेसिं संखेवेण मेलावणविहाणं उच्चदे । अट्ठं गच्छं ट्ठविय सत्तारसमाइं काऊण छउत्तरं करिय संकलणसुत्तेण मेलाविदे एगेगगुणट्ठाणम्हि संचिदउवसामगाणं पमाणं हवदि । सउक्कस्सपमाणजीवसहिदा सव्वे समया जुगवं ण लहंति त्ति के वि पुव्वुत्तपमाणं पंचूणं करेंति । एदं पंचूणं वक्खाणं पवाइज्जमाणं दक्खिणमाइरियपरंपरागयमिदि जं वुत्तं होइ । पुव्वुत्तवक्खाणमपवाइज्जमाणं वाउं आइरियपरंपराए अणागदमिदि णायव्वं ।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अट्ठसमयाहिय-छ-मासब्भंतरे खवगसेढिपाओग्गा अट्ठ समया हवंति । तेसिं समयाणं विसेसविवक्खमकाऊण सामण्णपरूवणं कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जदि । उक्कस्सेण अट्ठोत्तरसयमेत्तजीवा खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जंति । विसेसमस्सिदूण परूविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वत्तीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । विदीयसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदालीस जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । तदियसमए वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वाहत्तरि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । छट्ठमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छण्णउदि जीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयजीवा त्ति खवगसेढिं चडंति । उत्तं च— वत्तीसमट्ठदालं सट्ठी वाहत्तरी य चुलसीई । छण्णउदी अट्ठुत्तरसदमट्ठुत्तरसयं च वेदव्वं ॥ ४३ ॥

अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसंचिदसव्वजीवे उक्कस्सेण एगट्ठे कदे अट्ठुत्तरछस्सयमेत्तजीवा हवंति । तिस्से मेलावणविहाणं वुच्चदे । तं जहा— अट्ठं गच्छं ट्ठविय चोत्तीसमाइं काऊण वारसुत्तरं करिय संकलणसुत्तेण मेलाविदे खवगरासी मिलदि । एत्थ करणगाहा— उत्तरदलहयगच्छे पचयदलूणे सगादिवेत्त पुणो । पक्खिविय गच्छगुणिदे उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४४ ॥ एसा उत्तरपडिवत्ती । एत्थ दस अवणिदे दक्खिण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिवत्ती हवदि । एसा उवसम-खवगपरूवणगाहा—तिसदिं वदंति केई चउरुत्तरमत्थपंचयं केई । उवसामगेसु एदं खवगाणं जाण तद्दुगुणं ॥ ४५ ॥ चउरुत्तरतिण्णिसयं पमाणमुवसामगाण केई तु । तं चेव य पंचूणं भणंति केई तु परिमाणं ॥ ४६ ॥ एगेगगुणट्ठाणम्हि उवसामग-खवगाणं पमाणपरूवणा गाहा—एक्केक्कगुणट्ठाणे अट्ठसु समएसु संचिदाणं तु । अट्ठसय-सत्तणउदी उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसणेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसयं ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं व परूवेदव्वो ।

अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ॥ १४ ॥

अद्धमस्सिऊण सदसहस्सपुधत्ताणयणविहाणं वुच्चदे—अट्ठसमयाहियछम्मासाणमब्भंतरे जदि अट्ठ सिद्धसमया लब्भंति तो चालीस-सहस्स-अट्ठसय-एकेतालीसमेत्त-अट्ठसमयाहियछम्मासब्भंतरे केत्तिया सिद्धसमया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे तिण्णिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्ठावीसमेत्त-सिद्धसमया लब्भंति । पुणो एदम्हि सिद्धकालम्हि संचिदसजोगिजीवाणं पमाणाणयणं वुच्चदे । तं जहा—छसु सिद्धसमएसु तिण्णि तिण्णि जीवा केवलणाणं उप्पाएंति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाणं उप्पाएंति, तो अट्ठसमयसंचिदसजोगिजिणा वावीस भवंति । अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि वावीस सजोगिजिणा लब्भंति तो तिण्णिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्ठवीसमेत्त सिद्धसमएसु केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए अट्ठलक्ख-अट्ठाणउदिसहस्स-दुरहिय-पंचसदमेत्ता सजोगिजिणा लद्धा हवंति । वुत्तं च—अट्ठेव सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साइं । संखा जोगिजिणाणं पंचसद विउत्तरं जाण ॥ ४८ ॥ एदीए दिसाए बहुएहि पयारेहि सजोइरासिस्स पमाणमाणेयव्वं । तं जहा—जम्हि पुव्विल्लसिद्धकालस्स अद्धमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि तेरासियमेवमाणेयव्वं । तं जहा—अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि चउत्तालीसमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो एक्कलक्ख-तिसट्ठिसहस्स-तिण्णिसय-चउसट्ठिमेत्त-सिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तइरासिए कदे पुव्विल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि । जम्हि आउवे पुव्विल्लसिद्धकालस्स चउब्भागमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि एवं तइरासिअं कायव्वं । अट्ठसु सिद्धसमएसु जदि अट्ठासीदी सजोगिजिणा लब्भंति तो एगासीदिसहस्स-छस्सयवासीदिमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए सो चेव रासी लब्भदि । एवमण्णत्थ वि जाणिऊण वत्तव्वं । जहाक्खादसंजदाणं पमाणवण्णणा गाहा—अट्ठेवसयसहस्सा णवणउदिसहस्स चेव णवयसया । सत्ताणउदी य तहा जहक्खादा होंति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओघेण ॥ ४९ ॥ एवं परूविदसव्वसंजदरासिमेगट्ठे कदे अट्ठकोडीओ णवणउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसद सत्ताणउदिमेत्तो होदि ८९९९९९९७। एदम्हादो रासीदो उवसामग-खवगपमाणमवणेयव्वं। तेसिं पमाणपरूवणगाहा— णव चेव सयसहस्सा छव्वीससया य होंति अडसीया। परिमाणं णायव्वं उवसम-खवगाणमेदं तु ॥ ५० ॥ एदमवणिय तीहि भागो हायव्वो। लद्धमप्पमत्तरासी हवदि। दुगुणिदे पमत्तरासी हवदि। उत्तं च— सत्तादी अट्ठंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे। तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥५१॥ एसा दक्खिणपडिवत्ती। एसा गाहा ण भद्दिया त्ति के वि आइरिया जुत्तिबलेण भणंति। का जुत्ती ? वुच्चदे— सव्वतित्थयरेहिंतो पउमप्पहभडारओ बहुसीस-परिवारो तीससहस्साहिय-तिण्णिलक्खमेत्तमुणिगणपरिवुदत्तादो। तेसु सत्तर-सएण गुणिदेसु एक्कसट्ठिलक्खाहियपंचकोडिमेत्ता संजदा होंति। एदे च पुव्विल्लगाहाए वुत्तसंजदाणं पमाणं ण पावेंति। तदो गाहा ण भद्दिएत्ति। एत्थ परिहारो वुच्चदे— सव्वोसप्पिणीहिंतो अहमा हुंडोसप्पिणी। तत्थतणतित्थयरसिस्सपरिवारं जुगमाहप्पेण ओहट्टिय डहरभावमापण्णं घेत्तूण ण गाहासुत्तं दूसिदुं सक्किज्जदि, सेसोसप्पिणीतित्थयरेसु बहुसीसपरिवारुवलंभादो। ण च भरहेरावयवासेसु मणुसाण बहुत्तमत्थि, जेणेत्थतणेक्कतित्थयरगणपमाणेण विदेहेक्कतित्थयरगणो सरिसो होज्ज। किं तु एत्थतणमणुवेहिंतो विदेहमणुस्सा संखेज्जगुणा। तं जहा— सव्वत्थोवा अंतरदीवमणुस्सा। उत्तरकुरुदेवकुरुमणुवा संखेज्जगुणा। हरिरम्मयवासेसु मणुआ संखेज्जगुणा। हेमवदहेरण्णवदमणुआ संखेज्जगुणा। भरहेरावदमणुआ संखे-ज्जगुणा। विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा त्ति। बहुवमणुस्सेसु जेण संजदा बहुआ चेव तेणेत्थतणसंजदाणं पमाणं पहाणं कादूण जं दूसणं भणिदं तण्ण दूसणं, बुद्धिविहूणाइरियमुहविणिग्गयत्तादो। एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो। एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ छासट्ठिलक्खा छासट्ठिसहस्सा छसद चउसट्ठिमेत्तं भवदि। वुत्तं च— चउसट्ठी छच्च सया छासट्ठिसहस्स चेव परिमाणं। छासट्ठिसयसहस्सा कोडिचउक्कं पमत्ताणं ॥ ५२ ॥ ४६६६६६६४। वे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउदिसहस्सा चत्तारिसद अट्ठाणउदिमेत्ता अप्पमत्तसंजदा हवंति। उत्तं च— वे कोडि सत्तवीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी। चउसद अट्ठाणउदी परिसंखा होदि विदियगुणा ॥५३॥ अंकदो वि २२७९९४९८। उवसामग-खवगपमाणपरूवणा पुव्वं व भाणिदव्वा। णवरि 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स सुत्तस्स परूवणा अण्णहा हवदि। तं जहा— अट्ठ-समयाहियछम्मासाणं जदि अट्ठसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि-सहस्स-सत्तसद-एगूणतीसमेत्त-अट्ठसमयाहिय-छम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि त्ति तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स-अट्ठसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति। एदम्हि कालम्हि संचिदसजोगिजिणपमा-णमाणिज्जदे। तं जहा— अट्ठसु समएसु चोद्दस चोद्दस सजोगिजिणा होंति त्ति कट्टु जदि अट्ठण्हं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो सत्ततीससहस्स-अट्ठसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स-छस्सय-अट्ठे-दालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति। वुत्तं च— पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा। छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥५४॥ ५२९६४८। एदेण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयव्वो। उवसामग-खवगपमाणपरूवणगाहा— पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव तेत्तीसा। अट्ठसया चोत्तीसा उवसम-खवगाण केवलिणो ॥ ५५ ॥ एदे सव्वसंजदे एयट्ठे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगद-सव्वरिसओ भवंति। तेसिं पमाणं छक्कोडीओ णवणउइलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसय-छण्णउदिमेत्तं हवदि। एदस्स वेतिभागा पमत्त-संजदा हवंति। तिभागो अप्पमत्तादिसेससंजदा हवंति। वुत्तं च– छक्कादी छक्कंता छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे। तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥ ६९९९९९९६। दव्वपमाणेण अवगदचोद्दसगुणट्ठाणाणं अप्पणो इच्छिद-इच्छिद-रासिस्स एत्तियो एत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागभागपरूवणा कीरदे। तं जहा– भागादो भागो भागभागो। तं भागभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुणट्ठाणभजिदसव्वजीवरासिमेत्ते भागे कदे तत्थ बहुभागो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। सेसं तेरसगुणट्ठाणोवट्टिदसिद्धरासिणा रूवाहिएण खंडिदे बहुखंडा सिद्धा हवंति। सेसाणं भागभागपरूवणट्ठं सेसरासीओ एगभागहारेणाणिज्जंते। तं जहा– संजदासंजददव्वं तप्पमाणेण कीरमाणे एगं भवदि। सासणसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि। सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संजदासंजददव्वमाणेण कीरमाणे सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं भवदि। असंजदसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं भवदि। णवसंजददव्वं संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागं भवदि। एवमुप्पाइयसव्वसलागाओ एयट्ठं काऊण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण पलिदोवमे भागे हिदे तेरसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि। एवं जेसिं जेसिं गुणट्ठाणाणं दव्वाणमेगभागहारेणागमणमिच्छदि तेसिं तेसिं सलागाहि संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय पलिदोवमे भागे हिदे ते ते रासीओ आगच्छंति। अहवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण तं चेवोवट्टिदे सासण-संजदासंजदाणं अवहारकालो होदि। पुणो तं दो-गुणट्ठाण-अवहारकालं सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण पुव्वं गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे तिण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि। पुणो तमवहारकालं असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्टिय लद्धेण असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगाररासिणा रूवाहिएण पुव्विल्लगुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे चउण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो हवदि। पुणो णव-संजददव्वेण चउण्हं गुणट्ठाणाणं दव्वमोवट्टिय लद्धेण चउण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिएण तं चेव गुणिद-अवहारकालमोवट्टिदे तेरसण्हं गुणट्ठाणाणमवहारकालो होदि। अथवा संजदासंजदाणं-अवहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पडि संजदासंजददव्वपमाणं पावदि । तमेगरूवस्सुवरि ट्ठिद-संजदासंजददव्वं णवसंजदरासिणोवट्टिय लद्धं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजददव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि णवसंजदरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए विदियादि-रूवाणमुवरि ट्ठिदसंजदासंजददव्वाणमुवरि पक्खिविदव्वं जाव हेट्ठिम-विरलणोवरि ट्ठिद-णवसंजदरासी सरिसच्छेदं काऊण पविट्ठो त्ति । जदि हेट्ठिम-विरलणादो उवरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूवपरिहाणी हवदि । अथवा रूवाहियदुगुणमेत्ता हवदि तो दोण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । अथवा तिरूवाहियतिउणमेत्ता हवदि तो तिण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उवरिमविरलणादो हेट्ठिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति एगरूव-असंखेज्जदिभागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासिए कदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तमुवरिमविरलणाए अवणिदे णवसंजदसहियसंजदासंजदाणमवहारकालो होदि । पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावदि । पुणो उवरिमविरलणपढमरूवधरिदसासणसम्माइट्ठिदव्वं णवसंजदसहिदसंजदासंजददव्वेणोवट्टिय तत्थ लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवस्सुवरि ट्ठिदसासणसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासीओ पावेंति । एत्थ एगरूवधरिददसगुणट्ठाणरासिपमाणं घेत्तूण उवरिमविरलणम्हि सुण्णं मोत्तूण तदणंतररूवस्सुवरि ट्ठिदसासणदव्वम्हि पक्खित्ते एक्कारसगुणट्ठाणरासीओ सव्वे मिलिदा हवंति । एवं हेट्ठिमविरलणमेत्तदसगुणट्ठाणदव्वं उवरिमविरलणाए ट्ठिदसासणदव्वम्हि णिरंतरं दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तदसगुणट्ठाणरासी समप्पदि । एत्थ एगरूवस्स परिहाणी लब्भदि । पुणो उवरिमविरलणाए तदणंतररूवोवरि ट्ठिदसासणदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि । एदं पि घेत्तूण पुव्वं व समकरणे कदे पुणो वि उवरि एगरूवपरिहाणी लब्भदि । एवं पुणो पुणो कादव्वं जा उवरिमविरलणा सव्वा एक्कारसगुणट्ठाणअवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । एवं समकरणं करिय परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणमुवरिमविरलणाए गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तसव्वरूवेसु केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणमोवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अवणिज्जमाणरूवाणि लब्भंति । ताणि उवरिमविरलणाए सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे एक्कारसगुणट्ठाणाणमवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे एक्कारसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि । पुणो सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि । पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिदव्वमोवट्टिय तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलेऊण उवरिमविरलणपढमरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडि एक्कारसगुणट्ठाणदव्वपमाणं पावेदि । तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि परिवाडीए दिण्णे रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण हेट्ठिमविरलणमेत्तरासी समप्पदि, उवरिमविरलणाए एगरूवपरिहाणी च हवदि । तत्थेगरूवं पडि वारसगुणट्ठाणमेत्तरासी च भवदि । पुणो उवरिमतदणंतरएगरूवधरिदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणमेत्तरासी पावदि । तमेक्कारसगुणट्ठाणरासिं सुण्णट्ठाणं मोत्तूण उवरि णिरंतरं दिण्णे रूवं पडि वारसगुणट्ठाणरासी हवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहियं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च हवदि । एवं पुणो पुणो ताव कायव्वं जाव खयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा वारसगुणट्ठाणदव्वस्स अवहारकालं पत्ता त्ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति तेरासियं काऊण रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे वारसगुणट्ठाणाणं दव्वस्स अवहारकालो हवदि । पुणो तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे वारसगुणट्ठाणाणं दव्वमागच्छदि । पुणो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि । पुणो वारसगुणट्ठाणरासिणा असंजद-सम्माइट्ठिदव्वमोवट्टिय लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं हेट्ठा विरलेऊण असंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि । पुणो उवरिमसुण्णट्ठाणं मोत्तूण सेसुवरिमरूवधरिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि हेट्ठिमविरलणाए रूवं पडि ट्ठिदवारसगुणट्ठाणरासिं पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि, हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । पुणो वितदणंतरएगरूवधरिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे वारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि ट्ठिद-असंजदसम्माइट्ठिदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं वोलिय पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जा उवरिमविरलणा खयपरिसुद्धा तेरसगुणट्ठाण-अवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । पुणो एत्थ अवणयणरूवपमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकाले ओवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि परिहाणिरूवाणि लब्भंति । कुदो णव्वदे ? सव्वगुणट्ठाणेसु पविट्ठसव्वगुणगारसंवग्गादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरूवदेसादो । पुणो सम्मामिच्छाइट्ठिपमुहरासिणा असंजदसम्माइट्ठिरासिमोवट्टिय रूवाहियकदरासिस्स असंजदसम्माइट्ठिपमुहरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि । तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि । पुणो एक्कारसगुणट्ठाणरासिणा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विरलेऊण वारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणट्ठाणरासिणा सासणसम्माइट्ठि-दव्वमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण एक्कारसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासिपमाणं पावेदि। तत्थ बहुभागा सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं होदि। पुणो णवगुणट्ठाणरासिणा संजदासंजदरासिमोवट्टिय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणट्ठाणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणट्ठाणरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि। सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच-खवगपमाणं होदि। सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि। एवं भागभागो समत्तो। संपहि अवगदसव्वपमाणस्स सिस्सस्स एत्थेव रासीणमप्पबहुत्तं भणिस्सामो—अट्ठमे अणियोगद्दारे एदं सुत्तगारो भणिस्सदि त्ति पुणरुत्तदोसो भवदि त्ति णासंकणिज्जं, तस्स पडिबुद्धसिस्सविसयत्तादो। अप्पडिबुद्धसिस्से अस्सिऊण सदवारपरूवणं पि ण दोसकारणं भवदि। तत्थ अप्पाबहुगं दुविहं, सत्थाणप्पाबहुगं सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं चेदि। एत्थ मिच्छाइट्ठिस्स सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि। किं कारणं? जेण मिच्छाइट्ठिरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो। तत्थ ताव सासणसम्माइट्ठिस्स सत्थाणप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा, सव्वत्थोवो अवहारकालो तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सग-अवहारकालो। अथवा गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सग-अवहारकालवग्गो। एत्थ पडिभागणिमित्तं दुगुणादिकरणं कादव्वं। तं जहा, वत्तइस्सामो—सग-अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी आगच्छदि। विगुणिद-अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स दुभागो आगच्छदि। तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि। एवं ताव दुगुणादिकरणं कादव्वं जाव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति। तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो। सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भासे कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि। तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि। सासणसम्माइट्ठिदव्वादो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सग-अवहारकालो। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं। पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि; तेसिमवहारकालाभावादो। सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा—सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? अट्ठाइज्जरूवाणि। सजोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो? संखेज्जसमया वा। अप्पमत्तसंजदा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । सव्वत्थ हेट्ठिमरासिणो-वरिमरासिम्हि भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो । पमत्तसंजददव्वादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पमत्तसंजददव्वं । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो । सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालो । संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारस्स असंखेज्जदिभागो ? को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो । तदो संजदासंजददव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अवहारकालो । अथवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सग-अवहारकालवग्गो । संजदासंजददव्वस्सुवरि सासणसम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? संजदासंजददव्वमवहारकालो । अहवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण संजदासंजद-अवहारकाले भागे हिदे गुणगारो रासी आगच्छदि । अहवा उवरिमरासिअवहारकालेण हेट्ठिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । एत्थ विगुणादिकरणं कादव्वं । तं जहा– संजदासंजदरासिपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालो आगच्छदि । विउणिदसंजदासंजददव्वपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसंजदासंजदरासिणा पलिदोवमे भागे हिदे तस्सेव अवहारकालस्स तिभागो आगच्छदि । एदेण कमेण णेदव्वं जाव संजदासंजदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालमेत्तं पत्तो त्ति । तदा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो संजदासंजद-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदेण पुव्वुत्तगुणगारो साहेयव्वो । संजदासंजदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जाणि वस्साणि । सासणसम्माइट्ठिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आवलियाओ । एदेसिमुवक्कमणकालादी अप्पप्पणो गुणकालपडिरूवा हवंति त्ति सासणसम्माइट्ठिदव्वादो संजदासंजददव्वेण संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, जदि वि सासणसम्माइट्ठि-उवक्कमणकालादो संजदासंजद-उवक्कमणकालो संखेज्जगुणो हवदि तो वि संजदासंजद-दव्वादो सासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्त-चारित्तविरोहिसासणगुणपरिणामेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणसेढीए कम्मणिज्जरणहेदुभूदसंजमासंजमपरिणामो अइदुलहो त्ति काऊण समयं पडि संजमासंजमं पडिवज्जमाणरासीदो समयं पडि सासणगुणं पडिवज्जमाणो रासी असंखेज्जगुणो हवदि त्ति । सासणसम्माइट्ठिरासीदो सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं, सासणसम्मादिट्ठि-छ-आवलियब्भंतर-उवक्कमणकालादो अंतोमुहुत्तमेत्त-सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । एत्थ वि रासिणा रासिं भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि ।

अवहारकालेण अवहारकाले भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासि-अवहारकालेण हेट्ठिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । कुदो ? सम्मामिच्छाइट्ठि-उवक्कमणकालादो असंखेज्जावलियब्भंतर-असंजदसम्माइट्ठि-उवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणत्तादो । अथवा दोण्हं पि गुणट्ठाणाणमुवक्कमणकालमणवेक्खिय असंखेज्जगुणत्तस्स कारणमण्णहा वुच्चदे । तं जहा, समयं पडि सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासीदो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो । जेण वेदगसम्माइट्ठीणमसंखेज्जदिभागो मिच्छत्तं गच्छदि । तस्स वि असंखेज्जदिभागो सम्मामिच्छत्तं गच्छदि । 'सव्वकालमवट्ठिदरासीणं वयाणुसारिणा आएण होदव्वं इदि णायादो असंजदसम्माइट्ठिरासीदो णिप्फिडिदमेत्ता चेव अट्ठवीससंतकम्मिया मिच्छाइट्ठिणो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति । तम्हा सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वादो असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणमिदि सिद्धं । एदं वक्खाणमेत्थ पधाणमिदि गेण्हिदव्वं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ वि तीहि पयारेहि गुणगारो साहेयव्वो । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहारकालो । तस्सुवरि सिद्धाणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो । एवमोघे चोद्दसगुणट्ठाणपरूवणा समत्ता । दव्वट्ठियमवलंबिय ट्ठिदसिस्साणमणुग्गहणट्ठं सामण्णेण चोद्दसगुणट्ठाणपमाणपरूवणं करिय पज्जवट्ठियणयमवलंबिय ट्ठियसिस्साणमणुग्गहणट्ठमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १५ ॥

आदेसेण पज्जवणयावलंबणेण गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणं कीरदे । एत्थ इत्थंभावलक्खणो तदियाणिद्देसो त्ति दट्ठव्वो । गदियाणुवादेण । सा च भेदपरूवणा चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि अस्सिऊण ट्ठिदा । तेहि अक्कमेण परूवणा ण संभवदीदि अवगदमग्गणट्ठाणाणि अवणिय पयदमग्गणट्ठाणजाणावणट्ठं गदिग्गहणं । आदेसमस्सिऊण जा गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा सा आइरियपरंपराए अणाइणिहणत्तणेण आगदा त्ति जाणावणट्ठं अणुवादग्गहणं । सेसगदिणिवारणट्ठं णिरयगदिग्गहणं कदं । सेसगदीओ मोत्तूण पुव्वं णिरयगदी चेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण, णेरइयदंसणेण समुप्पण्णसज्झसस्स भवियस्स दसलक्खणे धम्मे णिचलसरूवेण बुद्धी चिट्ठदि त्ति काऊण पुव्वं तप्परूवणादो । णेरइएसु त्ति किमट्ठं ? ण, तत्थतणखेत्तकालपडिसेहफलत्तादो । मिच्छाइट्ठिग्गहणं किमट्ठं ? सेसगुणट्ठाणणियत्तणट्ठं । दव्वपमाणेणेत्ति किमट्ठं ? खेत्तकालणिवारणट्ठं । केवडिया इदि पुच्छा किंफला ? जिणाणमत्थकत्तारत्तपदुप्पायणमुहेण अप्पणो कत्तारत्तपडिसेहफला । एवं गोदमसामिणा पुच्छिदे महावीरभयवंतेण केवलणाणेणावगदतिकालगोयरासेसपयत्थेण असंखेज्जा इदि तेसिं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमाणं परूविदं । एवमुत्ते संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती । तं पुण असंखेज्जमणेयवियप्पं । तं जहा–णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमसंखं । एयं उभयादेसो वित्थारो सव्व-भावा य ॥ ५७ ॥ तत्थ णामासंखेज्जयं णाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण ट्ठिदअट्ठभंगासंखेज्जाणं कारणणिरवेक्खा सण्णा । जं तं ठवणासंखेज्जयं तं कट्ठकम्मादिसु सब्भावासब्भावट्ठवणाए ठविदं असंखेज्जमिदि । जं तं दव्वासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंथो सिद्धंतो सुदणाणं पवयणमिदि एयट्ठो । पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः । द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ५८ ॥ आगमादण्णो णोआगमो । तत्थ असंखेज्जपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदो दव्वासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिट्ठजीवदव्वस्स कथंचि खवोवसमादो अव्वदिरित्तस्स आगमववदेसाविरोहादो । जं तं णोआगमदो दव्वासंखेज्जयं तं तिविहं, जाणुगसरीरदव्वासंखेज्जयं भवियदव्वासंखेज्जयं जाणुगसरीरभवियवदिरित्तदव्वासंखेज्जयं चेदि । तत्थ जं तं जाणुगसरीरदव्वासंखेज्जयं तं असंखेज्जपाहुडजाणुगस्स सरीरं भवियवट्टमाणसमुज्झादत्तणेण तिभेदमावण्णं । कथमणागमस्स सरीरस्स असंखेज्जववएसो ? ण एस दोसो, आधारे आहेयोवयारदंसणादो । जहा असिसदं धावदि इदि । एत्थ ण घदकुंभदिट्ठंतो जुज्जदे, कुंभस्स घदववएसादंसणादो । घदमिदं चिट्ठदि त्ति वट्टमाणकाले घदववएसो कुंभस्स उवलब्भदे ? चे ण, अदीदाणागदकालेसु कुंभस्स घदववएसदंसणादो । जं तं भवियासंखेज्जयं तं भविस्सकाले असंखेज्जपाहुडजाणुगो जीवो । ण च एस आगमदो दव्वासंखेज्जयम्हि णिवददि, संपहि एत्थ खवोवसमलक्खणदव्वोवओगाभावादो । जं तं तव्वदिरित्तदव्वासंखेज्जयं तं दुविहं, कम्मासंखेज्जयं णोकम्मासंखेज्जयं चेदि । तत्थ अट्ठ कम्माणि ट्ठिदिं पडुच्च कम्मासंखेज्जयं । दीवसमुद्दादि णोकम्मासंखेज्जयं । धम्मत्थियं अधम्मत्थियं दव्वपदेसगणणं पडुच्च एगसरूवेण अवट्ठिदमिदि कट्टु सस्सदासंखेज्जयं । जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं । जं तं अपदेसासंखेज्जयं तं जोगविभागे पडिच्छेदे पडुच्च एगो जीवपदेसो । अथवा सुण्णोयं भंगो, असंखेज्जपज्जायाणमाहारभूद-अप्पएसएगदव्वाभावादो । ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो । पज्जवणए पुण अवलंबिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्वं तत्तो वदिरित्तसमुदायाभावादो । जं तं एयासंखेज्जयं तं लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेढिआगारेण लोयस्स एगदिसं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखादीदत्तादो । जं तं उभयासंखेज्जयं तं लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं सव्वासंखेज्जयं तं घणलोगो । कुदो ? घणागारेण लोगं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं वित्थारासंखेज्जयं तं लोगागासपदरं, लोगपदरागारपदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं भावासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमदो भावासंखेज्जयं असंखेज्जपाहुडजाणगो उवजुत्तो । णोआगमदो भावासंखेज्जयं ओहिणाणपरिणदो जीवो । एदेसु असंखेज्जेसु गणणासंखेज्जेण पयदं । जदि गणणासंखेज्जेण पयदं तो सेसदसविह-असंखेज्जपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? अवगदमवणिय पयदपरूवणट्ठं । वुत्तं च— अवगयणिवारणट्ठं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पयदस्स परूवणाणिमित्तं च । संसयविणासणट्ठं तच्चट्ठवहारणट्ठं च ॥ ५९ ॥ वुत्तं ज पुव्वाइरिएहि—जत्थ जहा जाणेज्जो अवरिमिदं तत्थ णिक्खिवे णियमा । जत्थ बहुवं ण जाणदि चउत्थओ तत्थ णिक्खेवो ॥ ६० ॥ इदि । अहवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं भणिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पत्थोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरदे । तथा चोक्तम्—प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते । युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ ६१ ॥ जं तं गणणासंखेज्जयं तं तिविहं, परित्तासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयं असंखेज्जासंखेज्जयं चेदि वियप्पदो एक्केक्कं तिविहं । तत्थ इमं होदि त्ति णिच्छओ उप्पाइज्जदे । परित्तासंखेज्जयं ण भवदि, जुत्तासंखेज्जयं पि ण भवदि, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं, असंखेज्जा इदि बहुवयणणिद्देसादो । पाइए दोसु वि बहुवयणोवलंभादो वत्तिमुहेण सव्वेसु असंखेज्जबहुत्तविरोहाभावादो वा अणेयंतिओ हेदुरिदि चेत्तर्हि 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण' त्ति पुरदो भण्णमाणसुत्तादो असंखेज्जासंखेज्जस्स उवलद्धी हवदि । तं पि तिविहं जहण्णमुक्कस्सं अजहण्णमुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयं चेदि । तत्थ वि जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं ण भवदि उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं । कुदो ? 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो । तं पि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयमसंखेज्जवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि वग्गट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिऊण जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जलोगमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण दोण्हमंतरे जिणदिट्ठभावरासी घेत्तव्वो । अथवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो असंखेज्जगुणो छदव्वपक्खित्तरासीदो असंखेज्जगुणहीणो । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी को वा छदव्वपक्खित्तरासि त्ति वुच्चदे—जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी हवदि । एसा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जेणेदस्स वग्गसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स उवरिमवग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पलिदोवमवग्गसलागाणं पुण वग्गसलागाओ पदरावलियादो उवरि गंतूणुप्पण्णाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी असंखेज्जगुणो । को छदव्वपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर-एगजीवपदेसा । बादरपदिट्ठिदा वि य छप्पेदेऽसंखपक्खेवा ॥ ३२ ॥ एदाणि छ दव्वाणि पुव्वुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छदव्वपक्खित्तरासी होदि । एवं विहाणेण भणिदअजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयस्स जात्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं दव्वपमाणं समत्तं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १६ ॥

किमट्ठं मिच्छाइट्ठिरासी कालेण परूविज्जदे ? ण, असंखेज्जरासी सव्वा णिट्ठदि-त्ति पण्णवणट्ठत्तादो। किमट्ठं खेत्तपमाणमइकम्म कालपमाणं वुच्चदे ? ण एस दोसो, 'जदप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं' इदि वयणादो। कथं कालादो खेत्तं बहुवण्णणिज्जं ? ण, तम्हि सेढि-जगपदर-विक्खंभसूचिपरूवणाणमत्थित्तादो। के वि आइरिया जं बहुवं तं सुहुममिदि भणंति—सुहुमो य हवदि कालो तत्तो सुहुमं खु जायदे खेत्तं। अंगुलअसंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ॥ ६३ ॥ इदि एदं ण घडदे। कुदो ? दव्वादो थूलं खेत्तं छंडिय दव्वस्स परूवणाणहाणुववत्तीदो। कथं दव्वादो खेत्तं थूलं ? वुच्चदे—सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो सुहुमं खु जायदे दव्वं। दव्वंगुलम्हि एक्के हवंति खेत्तंगुलाणंता ॥ ६४ ॥ दव्व-खेत्तंगुले परमाणुपदेसा आगासपदेसा च सरिसा त्ति णेदं घडदे ? चे ण, एकम्हि खेत्तंगुले ओगाहे अणंतदव्वंगुलदंसणादो। असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणिउस्सप्पिणीणं समए सलागभूदे ठवेऊण णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी च ठवेऊण सलागादो एगो समओ अवहिरिज्जदि, णेरयमिच्छाइट्ठिरासीदो एगो जीवो अवहीरिज्जदि। एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे सलागरासी णेरइयमिच्छाइट्ठी च जुगवं णिट्ठंति। अथवा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ दो वि मिलिदाओ कप्पो हवदि, तेण कप्पेण णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तत्तियमेत्ता कप्पा हवंति। एवं कालपमाणं समत्तं।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ। तासिं सेढीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ १७ ॥

संखेज्जाणंताणं णिवारणट्ठमसंखेज्जवयणं। असंखेज्जाओ सेढीओ इदि सामण्णवयणेण सव्वागाससेढीए गहणं किण्ण पावदे ? ण, तस्स—पल्लो सायर-सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी। लोगपदरो य लोगो अट्ठ दु माणा मुणेयव्वा ॥ ६५ ॥ इदि पमाणट्ठगब्भंतरे अप्पिदत्तादो। ण च पमाणे परूविज्जमाणे अप्पमाणस्स पवेसो अत्थि, अइप्पसंगादो। अथवा 'मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण असंखेज्जा' इदि पुव्विल्लवयणादो जाणिज्जदे जहा अणंताए सव्वागाससेढीए गहणं णत्थि त्ति। जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि किमट्ठं ? ण, जगपदरस्स संखेज्जदिभागप्पहुडि उवरिमसव्वसंखापडिसेहफलत्तादो। किमट्ठं विक्खंभसूई परूविज्जदे ? ण, पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण वुत्ते तस्स पमाणं किं संखेज्जा सेढीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेढीओ भवदि इदि जादसंदेहस्स सिस्सस्स णिच्छयजणणट्ठं सेढीणं विक्खंभसूईए पमाणं वुत्तं। दव्व-खेत्त-कालपमाणाणं सव्वेसिं विक्खंभसूईदो चेव णिच्छओ होदि त्ति काऊण ताव विक्खंभ-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूचिपमाणपरूवणं कस्सामो । अंगुलवग्गमूले विक्खंभसूई हवदि । तं किंभूदमिदि वुत्ते विदियवग्गमूलगुणणेण उवलक्खियं । तं कथं जाणिज्जदे ? इत्थंभावलक्खणतइयाणिद्देसादो । जहा जो जडाहि सो भुंजदि त्ति । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते पदरंगुलस्स घणंगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहणं कथं ण पावदे ? ण, 'अट्ठरूवं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविक्खंभसूई उप्पज्जदि । सा सइं वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूई हवदि । सा सइं वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूई हवदि । सा सइं वग्गिदा घणंगुलो हवदि' त्ति परियम्मवयणादो णव्वदे घण-पदरंगुलाणं वग्गमूलस्स गहणं ण हवदि किंतु सूचिअंगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि त्ति, अण्णहा घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो । संपहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं भागहारं काऊण सूचिअंगुलं हि विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खंभसूचिपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तत्थ खंडिदादिचउक्कं सुगमं । तस्स पमाणं केत्तियं ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे दोण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । पुणो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तिण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एवं पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागभूदसूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण सूचिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो । कारणं गदं । णिरुत्तिं वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे भागलद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि घेत्तूण विक्खंभसूई हवदि । अथवा विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तिएहि पढमवग्गमूलेहि विक्खंभसूची होदि त्ति वत्तव्वं । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धेण पढमवग्गमूले गुणिदे विक्खंभसूई हवदि । अथवा विदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले गुणिदे विक्खंभसूई हवदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एत्थ विउणादिकरणं वत्तइस्सामो । अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । विगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि । एदेण कमेण णेदव्वं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स गुणगारो विदियवग्गमूलमेत्तं पत्तो त्ति । पुणो तेण सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण गुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भागे हिदे विदियवग्गमूलोवट्टियसूचिअंगुलो आगच्छदि । सो चेव विक्खंभसूची । घणाघणे वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूई आगच्छदि । केण कारणेण ? घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची-आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एवं हेट्ठिमवियप्पो समत्तो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । अथवा विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलं गुणेऊण पदरंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेदव्वं । एत्थ अद्धच्छेदणयमेत्त-मेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण घणंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणे भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? घण-उवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणंगुलो आगच्छदि । पुणो वि पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । गहिदो गदो । सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण च विक्खंभसूचिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुव्वं व वत्तव्वो । संपहि णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स भागहारुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । सुत्ते अवुत्तो भागहारो कथमुप्पाइज्जदे ? ण, सुत्तवुत्तविक्खंभसूईदो तदुप्पत्तिसिद्धीदो । तं जहा–जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे एगा सेढी आगच्छदि । जगसेढिदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेढीओ आगच्छंति । जगसेढितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेढीओ आगच्छंति । एवमेगादि-एगुत्तरकमेण सेढीए भागहारो वड्ढावेयव्वो जाव णेरइयविक्खंभसूचिमेत्तं पत्तो त्ति । पुणो ताए विक्खंभसूचीए जगसेढिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे विक्खंभसूचीमेत्तसेढीओ आगच्छंति । एवमण्णत्थ वि विक्खंभसूईदो अवहारकालो साहेयव्वो । एदेण भागहारेण सेढीए उवरि खंडिदादिवियप्पा वत्तव्वा । तत्थ ताव वग्गट्ठाणे पमाण-कारण-णिरुत्ति वियप्पेहि अवहारकालं वत्तइस्सामो । तस्स पमाणं केत्तियं ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेढिपढमवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे सेढिपढमवग्गमूलो आगच्छदि । सेढिविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । सेढितदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे सेढिविदिय-तदियवग्गमूलाणं अण्णोण्णभागे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहं कायव्वं । कारणं गदं । णिरुत्तिं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अथवा तेणेव भागहारेण सेढिविदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । अथवा तेणेव भागहारेण सेढितदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणेऊण तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । अणेण विहाणेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण तस्सुवरिमवग्गमवहारिय लद्धेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणिय तेण च गुणियरासिणा घणंगुलो गुणेयव्वो । एदेण कमेण उवरि उवरि अवट्ठिदवग्गट्ठाणाणि सेढिविदियवग्गमूलंताणि सव्वाणि गुणेयव्वाणि । तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति । एवं णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, जगसेढिसमाणवेरूववग्गस्स पढमवग्गमूलं केण वि भागहारेण अवहिरिज्जदे अवहारकालस्स अणुप्पत्तीदो । ण च जगसेढिसमाणवेरूववग्गं अस्सिऊण अवहारकालुप्पत्ती वोत्तुं सक्किज्जदे, हेट्ठिम-उवरिमवियप्पेसु णिरुद्धेसु मज्झिमवियप्पस्स असंभवादो । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणसेढिपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो । अहवा अवहारकालागमणणिमित्तभागहारेण णिरुद्धरासीदो हेट्ठा जं वा तं वा वग्गमूलमोवट्टिय णिरुद्धरासिस्स हेट्ठिमवग्गमूलाणि एक्कवारं गुणिदे जत्थ इच्छिदरासी उप्पज्जदि तत्थ वि हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदलद्धेण सेढिपढमवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अथवा तेणेव भागहारेण सेढिविदियवग्गमूलमवहारिय तत्थागदेण लद्धेण तं चेव विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण पढमव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूलमवहारिय तत्थ लद्धेण तं चेव तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणमसंखेज्जदिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणं पुध णिरुंभणं करिय अवहारगुणणकिरियं काऊण अवहारकालो साधेयव्वो । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुलं गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवट्ठिदाणि वग्गट्ठाणाणि सेढिपढमवग्गमूलपच्छिमाणि णिरंतरं गुणेयव्वाणि । एवं गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुव्वं परूविदो तो वि हेट्ठिमवियप्पसंबंधेण मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं पुणरवि परूविदो । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेढिपढमवग्गमूलेण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अवहारकालो साहेयव्वो । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि । एवं हेट्ठा वि जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेढिसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहारकालो विगुणादिकमेण वड्ढावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयसहियसेढिसमाणवेरूववग्गस्स अद्धच्छेदणयमेत्ता । उवरि सव्वत्थ चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विगंकरिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिरूवूणेण सेढिसमाणवेरूववग्गस्स अद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति ? एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेढीए जगपदरे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहारकालो विउणादिकरणेण वड्ढावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

यमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ चडिदद्धाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थ-रासिणा रूवूणेण जगसेढिअद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेसु णेयव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्धच्छेदणयसला-गाणमाणयणविही वुच्चदे— चडिदद्धाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण सेढिअद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्धच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिद-परूवणा गदा । सेढिसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण सेढीए असंखेज्जदिभागेण घणलोगपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवमवहारकालपरूवणा समत्ता । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदपरूवणाओ पुव्वं व परूवेदव्वाओ । तत्थ पमाणं वत्तइस्सामो । तं जहा— जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेढीओ । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेढीए जगपदरे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । सेढिदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेढीओ आगच्छंति । सेढितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेढीओ आगच्छंति । एवं गंतूण विक्खंभसूचीभजिदसेढीए जगपदरे भागे हिदे असंखेज्जाओ सेढीओ आगच्छंति त्ति वुत्तं । कारणं गदं । णिरुत्तिं वत्तइस्सामो । सेढीए असंखेज्जदिभागेण सेढिम्हि भागे हिदे तत्थागदाणि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ सेढीओ । अहवा विक्खंभ-सूईरूवमेत्ताओ । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । वेरूवे हेट्ठि-मवियप्पो णत्थि । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सेढीए असंखेज्जदिभागभूदअवहारकालेण सेढिम्हि भागे हिदे तत्थागदेण सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अथवा विक्खंभसूचीरूवेहि सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अहवा अवहारकालेण सेढिविदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिय तेण सेढिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण सेढिम्हि गुणिदे वि मिच्छाइट्ठि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रासी आगच्छदि। अहवा अवहारकालेण सेढितदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिय तेण सेढिविदियवग्गमूलं गुणिय तेण पढमवग्गमूलं गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेढिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि। एवं हेट्ठा वि जाणिऊण वत्तव्वं। घणाघणे वत्तइस्सामो। सेढीए असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तं कथं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। अहवा अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूलमवहरिय तेण तं चेव गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि। एवं हेट्ठा जाणिऊण वत्तव्वं। हेट्ठिमवियप्पो गदो। उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि। तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो। णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तं कथं ? जगपदरसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धछेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? अवहारद्धच्छेदणयसहिदजगपदरसमाणवेरूववग्गच्छेदणयमेत्ता। उवरिं अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं। वेरूवपरूवणा गदा। अट्ठरूवे वत्तइस्सामो। अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। घणंगुलविदियवग्गमूलद्धच्छेदणएहि ऊणसेढिअद्धच्छेदणयमेत्ते जगपदरस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। अहवा अवहारकालेण जगपदरं गुणेऊण तेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तं जहा—जगपदरेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एदस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। अट्ठरूवपरूवणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। अवहारकालगुणिदजगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। केण कारणेण ? जगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि। पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि। एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं। गहिदपरूवणा गदा। जगपदरसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण घणलोगस्स असंखेज्जदिभागेण च णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो। मिच्छाइट्ठिरासिपरूवणा समत्ता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १८ ॥

ओघम्मि वुत्ततिण्णिगुणट्ठाणरासी सव्वा वि णेरइयाणं तिण्णिगुणट्ठाणरासिमेत्तो चेव होदि त्ति वुत्ते सेसगदीसु तिण्हं गुणट्ठाणाणमभावो पसज्जदे ? ण एस दोसो, णेरइयाणं तिण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणस्स ओघतिगुणट्ठाणपमाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो एयत्ताविरोहा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे भेदो दोण्हमत्थि चेव, सेसतिगदितिण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणाणमुवरि उच्चमाणसुत्ताणं सफलत्तण्णहाणुववत्तीदो । तस्स भेदस्स परूवणट्ठं सासणसम्माइट्ठिआदिगुणपडिवण्णाणं अवहाकाले वत्तइस्सामो । तं जहा— ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । देयगइं मोत्तूण सेसतिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासी सामण्णअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जा भागा देवाणमसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । कुदो ? देवेसु बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमुवलंभादो । देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे ? जिणबिंबिद्धिमहिमादंसण-जाइस्सरण-महद्धिदादिदंसण-जिणपायमूलधम्मसवणादीणि । तिरिक्खणेरइया पुण गरुवपावभारेण णत्थद्धत्तादो संकिलिट्ठदरत्तादो मंदबुद्धित्तादो बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमभावादो च सम्माइट्ठिणो थोवा हवंति । तदो तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिणा उवरिमेगरूवधरिदं ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वमवहरिय तत्थागदमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण ओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे हेट्ठिमविरलणरूवं पडि सेसतिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं पावदि । तप्पमाणं उवरिमविरलणाए उवरिमरूवं पडि ट्ठिदओघासंजदसम्माइट्ठिदव्वम्हि अवणेयव्वं । एवमवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता चेव देवअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासीओ च भवंति । पुणो उवरिमविरलणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिरासिं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणेण कस्सामो । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि ट्ठिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसंजदसम्माइट्ठिरासिपमाणं लब्भदि, अवहारकालम्हि एगा च पक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेव उवरिमविरलणम्हि तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु समुदिदेसु देवअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं लब्भदि, अवहारकालम्हि विदिया च पक्खेवसलागा । एवं पुणो पुणो कीरमाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति, हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणाए असंखेज्जगुणत्तादो । एदासिमवहारकालपक्खेवसलागाणमेगवारेण आगमणविहिं वत्तइस्सामो । हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वेसु केत्तियाओ पक्खेवसलागाओ लभामो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरि विरलिदओघअसंजदसम्माइट्ठिस्स अवहारकाले भागे हिदे अवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । ताओ ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि, असंजदसम्माइट्ठिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छाइट्ठिउवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि, तदो संखेज्जगुणहीण-उवक्कमणकालत्तादो । सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता उवसमसम्माइट्ठिणो सासणगुणं पडिवज्जंति त्ति वा । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि, अपच्चक्खाणावरणाणमुदयाभावस्स अइदुलहत्तादो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे णेरइयसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वमागच्छदि ।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ १९ ॥

णं पुव्वं सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिआदिरासिस्स पमाणपरूवणा परूविदा, पढमविदियपुढविआदिविसेसाभावादो । पुणो जदि पुव्वपरूविदसव्वरासी पढमाए पुढवीए भवदि तो विदियादिपुढवीसु जीवाभावो पसज्जदे । ण च एवं, 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया' इच्चादिसुत्तेहि सह विरोहादो, तम्हा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पढमपुढविमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूई ण हवदि । तदो सामण्णपरूविदअवहारकालो वि पढमपुढविणेरइयाणं ण भवदि । एवं सेसगुणपडिवण्णाणं पि अवहारकालवड्ढी वत्तव्वा । तम्हा एवं पढमाए पुढवीए णेयव्वमिदि णेदं घडदे ? ण एस दोसो, असंखेज्जसेढित्तणेण पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण विदियवग्गमूलगुणिदअंगुलवग्गमूलमेत्तविक्खंभसूचित्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण च पढमपुढविपरूवणाए सामण्णणेरइयपरूवणादो विसेसाभावादो । पुणो पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा विदियादिपुढवीसु जीवाभावप्पसंगादो । तं विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा—पढमपुढविणेरइयाणं दव्व-कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व-कालपमाणाणि चेव असंखेज्जदिभागहीणाणि हवंति । तहा खेत्तपमाणं पि ओघखेत्तपमाणादो असंखेज्जदिभागूणं भवदि । तं कधं जाणिज्जदे ? 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो' इदि पुरदो वुच्चमाणसुत्तादो णव्वदे जहा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वादो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढीए असंखेज्जदिभागेण हीणमिदि । एदं सुत्तमवलंबिय पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूई उप्पादइस्सामो । तं जहा— ओघणेरइयमिच्छाइट्ठिरासीदो एगसेढिअवणयणं पडि जदि विक्खंभसूचिम्हि एगसलागाए अवणयणं लब्भदि तो किंचूणवारसवग्गमूलभजिदसेढिम्हि किं लभामो त्ति सेढिए फलगुणिदिच्छामोवट्टिदे किंचूणवारसवग्गमूलभजिदेगरूपमागच्छदि । एदं सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिस्स विक्खंभसूई होदि । एदीए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा अवरेण पयारेण अवहारकालो उप्पाइज्जदे । तं जहा— सामण्णअवहारकालं विरलेऊण रूवं पडि जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि छपुढविमिच्छाइट्ठिरासिणा भागे हिदे किंचूणवारसवग्गमूलगुणिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची आगच्छदि । एदं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरि एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि । तं उवरिमविरलणाए ट्ठिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि पुध पुध अवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ भवंति । छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ वि तावदिया चेव । पुणो उवरिमविरलणमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वेसु उवरिमविरलणम्हि समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । तत्थ एगा अवहारकालसलागा लब्भइ । पुणो वि उवरिमविरलणम्हि तत्तिएसु चेव छप्पुढविदव्वेसु समुदिदेसु अवरेगं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भइ । एवं पुणो पुणो कीरमाणे रूवूणहेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति कट्टु सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । तासिमेगवारेणाणयणविही वुच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तछप्पुढविदव्वस्स जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि, तो सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स केत्तियाओ लभामो त्ति सरिसमवणिय रूवूणहेट्ठिमविरलणाए सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ सरिसच्छेदं काऊण सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालम्हि पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालमेत्तछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमस्सिऊण उप्पण्णाओ । पुणो एदाओ चेव अवहारकालपक्खेवसलागाओ विक्खंभसूचिम्हि अवणयणरूवपमाणं च पुढविं पुढविं पडि एत्तियं एत्तियं होदि त्ति परूविज्जदे । तत्थ ताव विक्खंभसूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा— एगसेढिअवणयणं पडि जदि सामण्णणेरइयविक्खंभसूचिम्हि एगरूवस्स अवणयणं लब्भदि तो विदियपुढविदव्वस्स अवणयणं पडि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सेढिवारसवग्गमूलेण एगरूवं खंडिदे

विदियपुढविमस्सिऊण विक्खंभसूचिम्हि अवणयणपमाणमागच्छदि । तं च एदं $\frac{१}{१२}$ । एवं सेसपुढवीणं पि तेरासियकमेण विक्खंभसूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवपमाणमाणेयव्वं । तेसिं पमाणं सेढिदसम-अट्ठ-छट्ठ-तदिय-विदियवग्गमूलेहि पुध पुध एगरूवं खंडिदे तत्थ एगभागं होदि । विदियादिपुढवीणं एदे अवहारकाला होंति त्ति कथं णव्वदे ? वारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं च णिरएसु । एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६६ ॥ एदम्हादो आरिसादो णव्वदे । तेसिमंकट्ठवणा एसा $\frac{१}{१२}\ \frac{१}{१०}\ \frac{१}{८}\ \frac{१}{६}\ \frac{१}{३}\ \frac{१}{२}$ सेढिवारसवग्गमूलभजिद-एगरूवं विक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेढिं गुणिदे विदियपुढविदव्वेण विणा सेसछप्पुढविदव्वमागच्छदि । पुणो ताए चेव ऊणविक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे विदियपुढविवदिरित्तछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव छप्पुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिदसमवग्गमूलेण खंडिय तत्थ एगखंडमवणीए विदिय-तदियपुढविवदिरित्तसेसपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि । पुणो ताए चेव विक्खंभसूचीए जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव पंचपुढविविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिअट्ठमवग्गमूलेण खंडिय एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थपुढविवदिरित्तचत्तारिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव चउपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेढिछट्ठवग्गमूलेण खंडिऊण तत्थ एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम-पुढविवदिरित्तसेसतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे तिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो सेढितदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगं खंडं तिण्हं पुढवीणं विक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूई आगच्छदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि । पुणो दोपुढविविक्खंभसूचिम्हि सेढिविदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडमवणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेढिम्हि भागे हिदे वि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि । पुणो संपहि सामण्णअवहारकालमेत्तछप्पुढविदव्वमस्सिऊण पुढविं पडि अवहारकालपक्खेवसलागाओ आणिज्जंति । तत्थ ताव विदियपुढविमस्सिऊण उप्पण्णअवहारकालपक्खेवसलागा भणिस्सामो । तं जहा— विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेण पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमवहरिय लद्धमेत्तेसु विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढविदव्वम्मि समुदिदेसु एगं पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, एगा अवहारकालपक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, विदिया अवहारकालपक्खेवसलागा च । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सेढीए असंखेज्जभाग-मेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । तं जहा— सेढिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूचिमेत्तद्धाणं गतूंण जदि एगा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भदि तो सामण्णअवहारकालम्हि केत्तियाओ लभामो त्ति पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिवारसवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे विदियपुढविदव्वमस्सिऊणुप्पण्णपक्खेवसलागाओ सव्वाओ आगच्छंति। एदाओ पुध सामण्णअवहारकालस्स पक्खे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढविदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होऊण पावदि। एवं चेव सामण्णअवहारकालमेत्ततदियादिपंचपुढविदव्वाणि अस्सिऊण तासिं तासिं पुढवीणं पक्खेवअवहारकालसलागाओ आणेयव्वाओ। णवरि विसेसो सेढिदसमवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूईए सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे तदियपुढविअवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति। एदाओ पुव्विल्लदोण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्ततदियपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविदव्वपमाणं पावदि। पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिअट्ठमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे चउत्थपुढविअवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति। ताओ वि पुव्विल्लतिण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तचउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पढमपुढविदव्वपमाणं होदि। पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिछट्ठमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे पंचमपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं पुव्विल्लचउण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तपंचमपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि। पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढितदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे छट्ठपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। एदं पि पुव्विल्लपंचण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तछट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिगुणिदसेढिविदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं पुव्विल्लछण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तसत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण पावदि। एदाओ सत्त वि विरलणाओ घेत्तूण पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। तेसिं सत्तण्हं पि अवहारकालाणं मेलावणविहाणं वुच्चदे। तं जहा— सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालो सगपमाणेण एक्को हवदि। सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण छट्ठपुढविपक्खेवअवहारकालो सेढितदियवग्गमूलमेत्तो हवदि। पंचमपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण सेढितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव छट्ठवग्गमूलो त्ति चउण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि। चउत्थपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेढितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव अट्ठमवग्गमूलो त्ति ताव छण्णं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि। तदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेढितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव दसमवग्गमूलो त्ति ताव अट्ठण्हं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । विदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेढितदियवग्गमूलप्पहुडि दसण्हं वग्गाणमण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिविदियवग्गमूलमेत्तो हवदि । पुणो एदाओ सव्वसलागाओ एगट्ठं करिय सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालं गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा ताहि चेव सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढविसामण्णविक्खंभसूचीहि अण्णोण्णब्भत्थाहि गुणिदसेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय सेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । अहवा छण्हं पुढवीणं सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण कयसव्वसलागाहि सेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय अण्णोण्णब्भत्थपढमपुढविसामण्णणेरइयविक्खंभसूईहि गुणिय जगसेढिम्हि भागे हिदे सव्वत्थुप्पण्णपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । तेण सव्वत्थुप्पण्णअवहारकालेण सामण्णणेरइयअवहारकालम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तेण सामण्णणेरइयविक्खंभसूइं गुणिदे पुणो तं रासिं तेणेव गुणगारेण रूवाहिएणोवट्टिय जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि । अहवा पढमपुढविविक्खंभसूईए सामण्णणेरइयविक्खंभसूइमोवट्टिदे एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तस्स एगरूवासंखेज्जदिभागस्स को पडिभागो ? किंचूणसेढिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविविक्खंभसूची पडिभागो । पुणो एदाओ दो रासीओ पुध मज्झे ट्ठविय तेरासियं कायव्वं । तं जहा– सामण्णणेरइयरासिम्हि जदि एगरूवं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो लब्भदि तो सामण्णणेरइयअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागं च गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जदे । तं जहा– छट्ठमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदछट्ठपुढविदव्वं सत्तमपुढविदव्वेण भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलमागच्छदि । तं विरलेऊण छट्ठपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वं पावदि । तं कमेण उवरिमविरलणछट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । पुणो उवरिमअणंतरछट्ठपुढविदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविदव्वपमाणं पावदि । तं घेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्ठमपुढविदव्वस्सुवरि दिण्णे हेट्ठिमविरलणमेत्तरूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि । हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ पुण हेट्ठिम-उवरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमवि रूवं ण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्तियं परिहायदि त्ति वुच्चदे । तं जहा– हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो उवरिमविरलणम्हि किं परिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण सेढितदियवग्गमूले भागे हिदे एगरूवस्स असंखेज्जभागा आगच्छंति त्ति किंचूणेगरूवं सरिसच्छेदं काऊण तदियवग्गमूलम्हि अवणिदे सेढिविदियवग्गमूलं रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण भजिदएगभागो छट्ठ-सत्तमपुढवीमिच्छाइट्ठिदव्वाणं भागहारो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । पुणो सेढिछट्ठमवग्गमूलं विरलिय जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेहि पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे सेढितदियवग्गमूलादीणं हेट्ठा चउण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिं रूवाहियसेढितदियवग्गमूलेण खंडिदेयखंडमागच्छदि । पुणो वि तं विरलेऊण उवरिमविरलणेगरूवधरिदपंचमपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणम्हि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि परिवाडीए पक्खित्ते हेट्ठिमविरलणमेत्तउवरिमविरलणरूवेसु पंचमछट्ठसत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि एगरूवपरिहारिणी च लब्भदि । पुणो तदणंतरउवरिमरूवोवरिट्ठिदपंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणाए सुण्णट्ठाणं मोत्तूण हेट्ठिमविरलणमेत्तपंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि पक्खित्ते रूवं पडि पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि विदियरूवपरिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ परिहीणरूवपमाणमाणिज्जदे । तं जहा— हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जगसेढिछट्ठवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे सेढिविदियवग्गमूलं तदियादिचउण्हं वग्गाणमण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिम्हि रूवाहियसेढितदियवग्गमूलं पक्खिविय अवहिदएगभागो तिण्हं पुढवीणं अवहारकालो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचमादितिण्हं हेट्ठिमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । पुणो जगसेढिम्हि अट्ठमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । पुणो चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पंचमादिहेट्ठिमतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेहि ओवट्टिय लद्धं हेट्ठा विरलिय चउत्थपुढविदव्वं उवरिमविरलणाए पढमरूवोवरि ट्ठिदं समखंडं करिय दिण्णे पंचमादिहेट्ठिमतिपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । एत्थ पुव्वं व समकरणं कादव्वं । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि उवरिमविरलणम्हि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जगसेढिअट्ठमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिसलागाहि जगसेढिविदियवग्गमूलमोवट्टिय चउत्थपुढविआदिहेट्ठिममिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो होदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । पुणो जगसेढिदसमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं पावेदि । पुणो तं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं हेट्ठिमचउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वेण ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण तदियपुढविदव्वमुवरिमविरलणपढमरूवोवरि ट्ठिदं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं रूवं पडि पावेदि । पुणो एदं उवरिमविरलणट्ठिदतदियपुढविदव्वम्हि दाऊण पुव्वं व समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तं जहा— हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सेढिदसमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? तदियादिपंचपुढवीणं सत्तपुढविदव्वस्स सलागाहि सेढिविदियवग्गमूलम्हि ओवट्टिदे जं लद्धं तत्तियमेत्तं । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । पुणो सेढिवारसवग्गमूलं विरलेऊण जगसेढिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । हेट्ठिमपंचपुढविदव्वेण तमोवट्टिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलणपढमरूवोवरि ट्ठिदविदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि ट्ठिदविदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तेसिं पमाणमेगवारेणाणिज्जदे । तं जहा— रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए सेढिवारसवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे विदियादिछप्पुडविअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? विदियादिछप्पुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिसलागाहि जगसेढिविदियवग्गमूलमवहिदएगभागो हवदि । तेण जगसेढिम्हि भागे हिदे छप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । तं जगसेढिणा खंडेऊणेगखंडं सामण्णणेरइयविक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेसेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि । अहवा पुव्वमाणिदछप्पुढविदव्वेण सामण्णणेरइयअवहारकालं गुणेऊण तम्हि पढमपुढविदव्वेण भागे हिदे सव्वत्थुप्पण्णपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । तं सरिसच्छेदं काऊण सामण्णअवहारकालम्हि पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ परिहाणिपक्खेवाणं सुहावगमणट्ठं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो । तं जहा— सोलस रूवाणि विरलिय वेसदछप्पण्णं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सोलस सोलस रूवाणि पावेंति । एत्थ तिण्हं रूवाणं वड्ढिमिच्छामो त्ति वड्ढिरूवेहि एगरूवधरिदमोवट्टिदे पंचरूवाणि सतिभागाणि आगच्छंति । ताणि हेट्ठा विरलिय एगरूवधरिदसोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्हे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । एगरूवतिभागस्स एगरूवं पावेदि । तं कथं ? सकलेगरूवस्स जदि तिण्णि रूवाणि लब्भंति तो एगरूवतिभागस्स किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे एगमेव रूवं लब्भदि त्ति ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुणो ताणि तिण्णि रूवाणि घेत्तूण उवरिमविरलणपंचरूवोवरि ट्ठिदपंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्ते रूवं पडि एगूणवीसरूवाणि हवंति । पुणो सत्तमरूवं तिण्णि भागे करिय तेसिं तिभागाणं सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स तिभागस्स सतिभागपंचरूवाणि पावेंति । पुणो एगरूवतिभागधरिदसतिभागं पंचरूवं तत्थेव ट्ठविय सेस-वे तिभागे अप्पणो धरिदरासिसहिदं पुध ट्ठविय पुणो सट्ठाणट्ठिदएगरूवतिभागेण धरिदसतिभागपंचरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए तिभागरूवोवरि ट्ठिद-एगरूवं पक्खित्ते तत्थ सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, एत्थ एगरूवपरिहाणी लद्धा । पुणो तदणंतररूवधरिद-सोलसरूवाणि हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे पुव्वं व रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । पुणो तत्थ सकलपंचरूवोवरि ट्ठिद-तिण्णि रूवाणि घेत्तूण सुण्णट्ठाणं वंचिय उवरिमविरलण-पंचरूवोवरि ट्ठिद-पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्तेसु रूवं पडि एगूणवीसरूवाणि हवंति । पुणो पुव्वमाणेऊण पुध ट्ठविद-वे-तिभागेसु एगतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण तदणंतरखेत्तं ट्ठविय एगरूवतिभागधरिदएगरूवं तत्थ पक्खित्ते एत्थ वि सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, विदियरूवपरिहाणी च लब्भदि । पुणो तदणंतररूवोवरि ट्ठिद-सोलसरूवाणि घेत्तूण हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । तत्थ वेरूवधरिदतिण्णि रूवाणि घेत्तूण तदणंतरवेरूवधरिदसोलसरूवेसु पक्खित्तेसु एगूणवीसरूवाणि हवंति । ताणं दोण्हं रूवाणमंते पुव्वमवणिदएगरूवतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण ट्ठविय तत्थ हेट्ठिमविरलणाए एगरूवतिभागोवरिट्ठिदएगरूवं पक्खित्ते सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति । सेसाणि तिण्णिरूवधरिदणवरूवाणि तहा चेव अवचिट्ठंते । तेसिं विरलणरूवमुप्पाइज्जदे । तं जहा—एगूणवीसरूवाणं जदि एगं विरलणरूवं लब्भदे तो णवण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति एगूणवीसेहि फलगुणिदिच्छाए भागे हिदे एगरूवं एगूणवीस खंडाणि काऊण तत्थ णव खंडाणि आगच्छंति । अवणिदसेसाणि रूवाणि एगट्ठे कदे तेरहरूवाणि एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे णव खंडाणि च हवंति । संपहि परिहाणिरूवाणि आणिज्जंते । तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सतिभागतिण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति फलगुणिदइच्छम्हि पमाणेण भागे हिदे एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे तत्थ दस खंडाणि लब्भंति । पुव्वलद्ध-दो-रूवाणि तत्थ पक्खित्ते परिहाणिरूवाणि हवंति । अहवा सव्वहीणरूवाणि एगवारेणाणिज्जंते । तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि किं लभामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए भागे हिदाए सव्वपरिहीणरूवाणि आगच्छंति । ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकालो होदि । एवं सव्वत्थ समकरणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं । संपहि रासिपरिहाणिविहाणं वत्तइस्सामो । तं जहा—तत्थ ताव तिण्हं रूवाणं परिहाणिं उच्चदे—उवरिमविरलणरूवधरिदसोलसरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए सगलेगरूवधरिदतिण्णि रूवाणि रूवं पडि अवणिय पुध ट्ठवेयव्वाणि । संपहि उवरिमविरलणमेत्ततिण्णि रूवाणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो । तं जहा–उवरिमविरलणचउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगट्ठं करिय पुणो पंचमरूवधरिदतिण्हं रूवाणं तिभागं घेत्तूण तत्थ पक्खित्ते अवणिदसेसपमाणं होदि । हेट्ठिमविरलणाए अंते एगरूवं विरलिय अणंतरुप्पण्णरूवाणं अवणिदसेसरूवपमाणं दादव्वं । पुणो उवरिमविरलणम्हि चउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि एगट्ठं करिय पुव्वट्ठविदवेतिभागम्हि एगं तिभागं घेत्तूण पक्खित्ते एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुव्वविरलिदएगरूवस्स पासे अवरमेगरूवं विरलिय तस्सुवरि सो संपहि वुप्पण्णअवणिदसेसरासी दादव्वो । पुणो वि उवरिमविरलणचउरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि मेलाविय पुध ट्ठविय तिभागं तत्थ पक्खित्ते एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुव्वविरलिददोण्हं रूवाणं पासे अण्णेगं रूवं विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयव्वो । पुणो अवसेसाणि तिरूवधरिदतिण्णि तिण्णि रूवाणि णव भवंति । एदाणं विरलणरूवाणं पमाणमुप्पाइज्जदे । रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगअवहारपक्खेवरूवं लब्भदि तो तिण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए तिण्णि रूवाणि ओवट्टिदे एगरूवं तेरहखंडाणि कदे तत्थ णव खंडाणि हवंति । एदं पुव्विल्लतिण्हं रूवाणं पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूवाणि दादव्वाणि । अहवा सव्वपक्खेवरूवाणि एगवारेण आणिज्जंते । तं जहा— रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केत्तियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सव्वाओ पक्खेवसलागाओ लब्भंति । एदाओ उवरिमविरलणम्हि पक्खित्ते इच्छिदअवहारकालो होदि । एवं सव्वत्थ रासिपरिहाणिम्हि जाणिऊण समकरणं कायव्वं । अहवा सामण्णअवहारकालं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं पावेदि । तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा–सेढिविदियवग्गमूलभजिदजगसेढीए जदि एक्कं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भदि तो सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि केत्तियं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे विक्खंभसूचिगुणिदसेढिविदियवग्गमूलमेत्ताणि सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वखंडाणि आगच्छंति । एवं सामण्णणेरइयअवहारकालरूवाणमुवरि ट्ठिदसामण्णणेरइयरासी पत्तेयं पत्तेयं सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणेण कायव्वो । पुणो तत्थ एगरूवधरिदखंडेसु सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं एगखंडपमाणं होदि । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलमेत्तखंडाणि घेत्तूण भवदि । पुणो पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलादिचउवग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलादिछव्वग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं सेढितदियवग्गमूलादिअट्ठवग्गमूलाणि अण्णोण्णं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि

अण्णोण्णब्भत्थाणि कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । पुणो एदाओ छपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाओ विक्खंभसूचीगुणिदसेढिविदियवग्गमूलादो सोधिदे पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडपमाणसलागा हवंति । एवं सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि खंडसलागाओ पुध पुध करिय दरिसेदव्वाओ । पुणो एवं ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जदे । तं जहा— पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाहिंतो जदि एगा अवहारकालसलागा लब्भदि तो सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्णणेरइयखंडसलागाणं किं लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिखंडसलागाहि सामण्णअवहारकालमोवट्टिय लद्धेण छपुढविखंडसलागा गुणिदे पक्खेवअवहारकालो होदि । अहवा लद्धं छप्पडिरासिं काऊण छण्हं पुढवीणं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्खेवअवहारकालो होदि । एवं विहाणेणुप्पण्णपक्खेवअवहारकालं सामण्णअवहारकालम्हि पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदमत्थपदमवहारिय अण्णत्थवि डहररासिपमाणेण महल्लरासीओ काऊण पक्खेवअवहारकालो साहेयव्वो । एत्थ णिरयगईए संदिट्ठी— ६५५३६ एदं जगसेढिपमाणं । एदं पि जगपदरपमाणं ४२९४९६७२९६ । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई एसा २ । सामण्णअवहारकालो ३२७६८ । दव्वं १३१०७२ । पक्खेवअवहारकालो २०६४३८४/१९३ । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ८३८८६०८/१९३ । लद्धपमाणं ९८८१६ । विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ४, दव्वं १६३८४ । तदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ८, दव्वं ८१९२ । चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो १६, दव्वं ४०९६ । पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ३२, दव्वं २०४८ । छट्ठमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ६४, दव्वं १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो १२८, दव्वं ५१२ । विदियादिछप्पुढविमिच्छाइट्ठिदव्वसमूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स आदेसोघदव्वपरूवणसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स आदेसोघकालपमाणपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एदाओ दव्वकालपरूवणाओ थूलाओ । कुदो ? सोदाराणं णिण्णयाणुप्पायणादो । दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा, असंखेज्जासंखेज्जसंखाविसेसिददव्वणिरूवणादो । इदाणिं दव्वकालपरूवणाहिंतो सुहुमखेत्तपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं संखेज्जाणं अण्णोण्णब्भासेण ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा– दव्वकालपमाणसुत्तेहि विदियादिछप्पुढविमिच्छाइट्ठिजीवाणं पमाणं परूविदमसंखेज्जमिदि। तं च असंखेज्जं पल्ल-सायरंगुलजगसेढि-पदर-लोगादिभेदेण अणेयवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो सेढिजगपदरादिउवरिमसंखाणियत्तावणट्ठमिदमाह 'सेढीए असंखेज्जदिभागो' त्ति। सेढीए असंखेज्जदिभागो वि पल्ल-सायर-कप्पंगुलादिभेएण अणेयवियप्पो त्ति सूइअंगुलादिहेट्ठिमवियप्पपडिसेहट्ठं 'तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ' त्ति वुत्तं। सेढीए असंखेज्जदिभागो त्ति पुरिसलिंगणिद्देसो तिस्से त्ति त्थीलिंगणिद्देसो, तदो दोण्हं समाणमहियरणं णत्थि त्ति सुत्तमिदमसंबद्धमिदि ? ण एस दोसो, तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए वा आयामो त्ति णेवं वत्तव्वं, भिण्णाहियरणत्ता विसेसणस्स फलाभावादो च। किंतु सेढीए असंखेज्जदिभागस्स जा सेढी पंती तिस्से सेढीए आयामो त्ति वत्तव्वमिदि। असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ वि पदरंगुलघणंगुलादिभेदेण असंखेज्जवियप्पाओ त्ति सेढिपढमवग्गमूलादिहेट्ठिमसंखापडिसेहट्ठं 'पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं संखेज्जाणं अण्णोण्णब्भासेण' त्ति वुत्तं। तत्थ सेढिपढमवग्गमूलमादिं काऊण हेट्ठा वारसण्हं वग्गमूलाणं अण्णोण्णब्भासो विदियपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि। तं चेव आदिं करिय हेट्ठा दसण्हं वग्गमूलाणं अण्णोण्णब्भासे कदे तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं हवदि। तं चेव आदिं करिय अट्ठण्हं वग्गमूलाणं संवग्गो चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं हवदि। छण्हं सेढिवग्गमूलाणं संवग्गो पंचमपुढविदव्वं होदि। तिण्हं संवग्गो छट्ठमपुढविदव्वं होदि। दोण्हं संवग्गो सत्तमपुढविदव्वं होदि। एत्तियाणं वग्गमूलाणं संवग्गं कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्ठीणं दव्वपमाणं होदि त्ति कथं जाणिज्जदे ? आइरियपरंपरागय-अविरुद्धोवदेसादो जाणिज्जदि। वारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं च णिरएसु। एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६७ ॥ एदासिं अवहारकालपरूवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे। एदासिं पुढवीणं दव्वमाहप्पजाणावणट्ठं किंचि अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा– विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो ताव उप्पाइज्जदे। वारसवग्गमूलेण एक्कारसवग्गमूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि। तस्स गुणगारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं दुगुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि। अहवा गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि। जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदव्वादो विदियपुढविदव्वं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुप्पाइदं तथा सेसचउपुढविदव्वेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदव्वमुप्पादेदव्वं । एवमुप्पादिदे पण्णारस भंगा लद्धा हवंति । संपहि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वादो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स उप्पादणविहाणं वुच्चदे– पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिवारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते पढमपुढविदव्वस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । सेढिवारसवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणाओ पढमपुढविविक्खंभसूचीअद्धच्छेदणयसहिदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । एदे तिण्णि भंगा पुव्विल्लपण्णारसभंगेसु पक्खित्ते विदियपुढवीए अट्ठारस भंगा हवंति । एवं सव्वासिं पुढवीणं पत्तेगं पत्तेगं अट्ठारस भंगा उप्पाएदव्वा । सव्वभंगसमासो सदं छव्वीसुत्तरं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ॥ २३ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो विदियादिपुढविगुणपडिवण्णाणं परूवणा ओघमिदि वुत्ता दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेव, अण्णहा एगपुढविगुणपडिवण्णाणं सत्तपमाणाणवत्था च दुप्पडिसेज्झा पसज्जदे । तं गुणपडिवण्णजीवविसेसं पुव्वाइरियाणमविरुद्धोवएसेण आइरियपरंपरागदेण वत्तइस्सामो । तं जहा– पुव्वमुप्पाइयसामण्णणेरइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तम्हि चेव सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति अवहारकाला परिवाडीए उप्पाएदव्वा । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमस्सुवरि खंडिदादीणं ओघभंगो । भागाभागं दव्वपमाणविसयणिण्णयजणणट्ठं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा होंति । सेसस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सिद्धा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा देवा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा णेरइया होंति । सेसेगभागो मणुसा हवंति । पुणो णेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं अव्वामोहेण भागभागो कायव्वो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुणो सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमाए पुढवीए असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति। सेसस्सअसंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढविसासणसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिणो हवंति। सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुखंडा तत्थतणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति। सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तत्थतणसासणसम्माइट्ठिणो हवंति। एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपडिवण्णाणं भागाभागो कायव्वो। एवं भागाभागो समत्तो। अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वत्थोवा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची। अवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगविक्खंभसूची। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगविक्खंभसूचीवग्गो घणंगुलपढमवग्गमूलं वा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूई। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो। एवं चेव पढमाए पुढवीए। विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो सेढिएक्कारसवग्गमूलं वा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सेढिवारसवग्गमूलं। पदरो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढी। सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणमोघसत्थाणभंगो। तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति एवं चेव सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। णवरि अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण भाणिदव्वं। परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वं। पलिदोवमादो उवरि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमं। अहवा सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? पलिदोवमगुणिदसूइअंगुलस्स विदियवग्गमूलं। उवरि सत्थाणभंगो। एवं चेव पढमाए पुढवीए। विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वो। तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमं। उवरि सत्थाणभंगो। एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। णवरि अप्पप्पणो अवहारकालो जाणिऊण वत्तव्वं। सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जा समया। तदो विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं जाव सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति णेयव्वो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तमिदि। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। समण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि। तस्स को पडिभागो? घणंगुलविदियवग्गमूलं। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो सेढिवारसवग्गमूलं। चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? दसमवग्गमूलं। पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि। तस्स को पडिभागो? अट्ठमवग्गमूलं। छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि चउत्थवग्गमूलाणि। को पडिभागो? छट्ठवग्गमूलं। सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो को गुणगारो? तदियवग्गमूलं। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढिपढमवग्गमूलं। छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? तदियवग्गमूलं। पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो? चउत्थ-पंचम-छट्ठवग्गाणि अण्णोण्णगुणिदाणि। अहवा सेढितदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिचउत्थवग्गमूलाणि। को पडिभागो? छट्ठमवग्गमूलं। चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिसत्तम-अट्ठमवग्गमूलाणि। अहवा छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? अट्ठमवग्गमूलं। तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णगुणिदसेढिणवम-दसमवग्गमूलाणि। अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? दसमवग्गमूलं। विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? अण्णोण्णब्भत्थेक्कारस्स-वारसवग्गमूलाणि। अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? वारसवग्गमूलं। सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो

असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागभूदपक्खेवअवहारकालमेत्तेण । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जभागभूदविदियादिछपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं णिरयगई समत्ता ।

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा—अणंतत्तणेण तिरिक्खगदिमिच्छाइट्ठीणं ओघमिच्छाइट्ठिजीवेहिंतो विसेसाभावादो तिरिक्खगइमिच्छाइट्ठीणं दव्व-खेत्त-काले अस्सिऊण जा ओघमिच्छाइट्ठिपरूवणा सा सव्वा संभवदि । गुणपडिवण्णाणं पि असंखेज्जत्तणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणाणं जा ओघगुणपडिवण्णपरूवणा सा सव्वा संभवदि । तम्हा दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघस्स परूवणा ओघववदेसं लब्भदे । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे पुण ओघपरूवणा ण भवदि, तिरिक्खगइवदिरित्ततिगदीणमत्थित्तस्सण्णहाणुववत्तीदो । तदो पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे ओघपरूवणादो तिरिक्खगदिपरूवणाए णाणत्तं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिस्सुवरि सगुणपडिवण्णसिद्धतिगदिरासिं पक्खिविय पुणो तेसिं चेव वग्गं तिरिक्खमिच्छाइट्ठिरासिभजिदं च पक्खित्ते तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं धुवरासी होदि । एसो मिच्छाइट्ठिपरूवणम्हि विसेसो । गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा—देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । सो संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिवण्णाणं रासीओ हवंति । एसो गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसो, णत्थि अण्णम्हि कम्हि वि । संपहि अणंतरासीसु दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा भवदु णाम, तत्थ अणंताणंतस्स पुव्वमणुवलद्धस्स उवलद्धीदो अदीदकालादो अणंतगुणत्तुवलंभादो च । ण कालपरूवणादो खेत्तपरूवणा सुहुमा, अधिगोवलद्धीए अणिमित्तत्तादो । तदो परूवणपरिवाडी ण घडदे इदि ? ण, अणंतलोगमेत्ताणं एगलोगम्मि अवगासो अत्थि त्ति विसेसुवलंभादो कालादो खेत्तस्स सुहुमत्तं पडि विरोहाभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २५ ॥

एदस्स सुत्तस्स णिरओघदव्वपरूवणासुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एवं कए दव्वपरूवणा गदा भवदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अवदारं परूविय णिरओघकालपरूवणासुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एत्थ मिच्छाइट्ठिणिद्देसो किमट्ठं ण कदो ? ण, अणंतरादीदसुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टमाणत्तादो । अथ सिया असंखेज्जासंखेज्जासु ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीसु अदिक्कंतासु तिरिक्खगईए पंचिंदियतिरिक्खाणं वोच्छेदो हवदि, पंचिंदियतिरिक्खट्ठिदीए उवरि तत्थ अवट्ठाणाभावादो त्ति ? ण एस दोसो, एइंदिय-विगलिंदिएहिंतो देव-णेरइय-मणुस्सेहिंतो च पंचिंदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणजीवसंभवादो । आयविरहिय-सव्वयरासीए वोच्छेदो हवदि । एसा पुण सव्वया आयसहिया चेदि ण वोच्छिज्जदे । सम्मामिच्छाइट्ठिरासीव किं ण भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदि-कालादो अंतरकालस्स बहुत्तुवलंभादो । ण च एत्थ पंचिंदियतिरिक्खेसु भवट्ठिदिकालादो विरहकालस्स बहुत्तत्तमत्थि, अंतरकालस्स अंतोमुहुत्तुवएसादो । भवट्ठिदिकालस्स सादिरेयतिण्णिपलिदोवमोवदेसादो । 'णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा' त्ति सुत्तादो वा विरहाभावो णव्वदे । एवं कालपरूवणा गदा ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥

असिद्धेण देवअवहारकालेण कथं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो साहिज्जदे ? ण एस दोसो, अणाइणिहणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुववत्तीदो । अणवगमो असिद्धत्तणमिदि चे ण, वक्खाणादो तदवगमसिद्धीदो । संपहि वेसय-छप्पण्णंगुलवग्ग-मावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण वेसय-छप्पण्णमेत्तसूचिअंगुलेसु भागे हिदेसु तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा पुव्विल्ल-मावलियाए असंखेज्जदिभागं वग्गेऊण पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसमेत्तपदरंगुलेसु भागे हिदेसु पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहार-कालो आगच्छदि । अहवा पण्णट्ठिसहस्स-पंच-सय-छत्तीसरूवोवट्टिदआवलियाए असंखेज्जदिभागस्स वग्गेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो । तं जहा– पदरंगुले असंखेज्जे खंडे कए एयं खंडं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । खंडिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदिय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । तमवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणेण पदरंगुलादो अवहिरिज्जदि सलागाहिंतो एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो अवणिज्जमाणे सलागाओ पदरंगुलं च जुगवं णिट्ठिदं । तत्थ आदीए वा अंते वा मज्झे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलपढमवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि लब्भंति । एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि आगच्छंति । कारणं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमवहरिय लद्धेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए लद्धेण आवलियं गुणिय तदो पदरावलियं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं ति णिरंतरं सयलवग्गाणं अण्णोण्णब्भत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि हवंति । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणेऊण तेण सूचिअंगुले गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए जं लद्धं तेण तं चेव गुणिय तस्सुवरिमवग्गं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलेत्ति णिरंतरं सव्ववग्गाणं अण्णोण्णब्भासे कए पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । देरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा– सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । घणाघणे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा– घणंगुलपढमवग्गमूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुणो सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं हेट्ठिमवियप्पो गदो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स छेदणए कदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्ठिम-उवरिमववएससंभवादो । एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो त्ति वुच्चदे । संपहि अणुवयारेण उवरिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा— आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपदरंगुलेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं चिंतिय वत्तव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा—पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा—घणंगुलस्सुवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । पदरंगुलस्स घणंगुलस्स घणाघणंगुलपढमवग्गमूलस्स चासंखेज्जदिभागेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वत्तव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स खंडिदादिपरूवणा कदा तहा एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादिपरूवणा कायव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि । एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपरूवणाए परूविदा तहा परूवेयव्वा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरिक्खोघं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोघगुणपडिवण्णपमाणपरूवणसुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं। तिरिक्खेसु पंचिंदिए मोत्तूण अण्णत्थ गुणपडिवण्णजीवाणं संभवाभावादो। एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता। संपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्ख-पमाणपरूवणं हवदि—

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिंदियगहणं एइंदिय-विगलिंदियवुदासट्ठं। तिरिक्खणिद्देसो देव-णेरइय-मणुसवुदासट्ठो। पज्जत्तणिद्देसो अपज्जत्तवुदासट्ठो। मिच्छाइट्ठिणिद्देसेण सेसगुणट्ठाणवुदासो कदो हवदि। दव्वपमाणेणेत्ति णिद्देसेण खेत्त-कालवुदासो कदो हवदि। केवडिया इदि पुच्छासुत्तणिद्देसेण छदुमत्थाणं कत्तारत्तमवणिदं हवदि। असंखेज्जा इदि णिद्देसेण संखेज्जाणंताणं वुदासो कदो। किमट्ठं दव्वपमाणमेव पढमं परूविज्जदि? ण एस दोसो, अदीवथूलत्तादो दव्वपरूवणा पढमं परूविज्जदे। कथमेदिस्से थूलत्तणं? असंखेज्जमेत्तविसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो। खेत्त-कालेहिंतो दव्वं थोवेत्ति वा पुव्वं परूविज्जदे। दव्वथोवत्तणं कथं जाणिज्जदे? 'वड्ढीदु जीव-पोग्गल-कालागासा अणंतगुणा' एदम्हादो गाहासुत्तादो णव्वदे। सेसपरूवणा जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणपरूवणसुत्तस्स उत्ता तहा वत्तव्वा।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३० ॥

एत्थ असंखेज्जासंखेज्जणिद्देसो सेस-असंखेज्जाणं वुदासट्ठो। ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणिद्देसो कप्पपमाणपरूवणट्ठो। कालेणेत्ति णिद्देसो खेत्तादिणियत्तणट्ठो। कथं दव्वपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा? असंखेज्जासंखेज्जोवलंभणिमित्तादो पल्ल-सायर-कप्पाणमुवरिमसंखाविसेसिदजीवोवलंभणिमित्तत्तादो च। संपहि सुहुमदरपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३१ ॥

एत्थ पदरगहणेण जगपदरस्स गहणं, ण पदरंगुलस्स, 'देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण' इदि वयणण्णहाणुववत्तीदो। देवाणमवहारकाले संखेज्जरूवेहि भागे हिदे जो भागलद्धो सो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो होदि। तं कथं जाणिज्जदे? संविग्गगीदत्थ-आइरियाणमविरुद्धवयणादो णव्वदे। एसो पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि। अहवा संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागे हिदे लद्धे वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ जाणिय भाणियव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदव्वपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्खाणं कदं तहा कायव्वं, विसेसाभावादो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ३३ ॥

एत्थ पंचिंदियणिद्देसो सेसिंदियवुदासट्ठो । तिरिक्खणिद्देसो सेसगदिवुदासट्ठो । जोणिणीणिद्देसो पुरिस-णवुंसयलिंगवुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणपडिवण्णवुदासट्ठो । केवडिया इदि पुच्छाणिद्देसो सुत्तस्स पमाणपडिवायणट्ठो । असंखेज्जा इदि णिद्देसो संखेज्जाणंताणं पडिसेहफलो । सेसं पुव्वं व परूवेदव्वं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुव्वसुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टावेयव्वं, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो । सेसं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिकालपरूवणसुत्तम्हि वुत्तविहाणेण वत्तव्वं ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं कीरदे । तं जहा—तिण्णिसयसहस्स-चउवीससहस्सकोडिरूवेहि देवअवहारकालं गुणिदे तदो संखेज्जगुणो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा छज्जोयणसदमंगुलं काऊण वग्गिदे इगवीसकोडाकोडिसयाणि तेवीसकोडाकोडीओ छत्तीसकोडिसयसहस्साणि चउसट्ठिकोडिसहस्साणि पदरंगुलाणि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

होदि । अहवा इगवीसकोडाकोडिसद-तेवीसकोडाकोडि-छत्तीसकोडिलक्ख-चउसट्ठिकोडिसहस्सरूवेहि पदरंगुलमोवट्टेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदं केसिंचि आइरियवक्खाणं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिजोणिणीअवहारकालपडिबद्धं ण घडदे । कुदो ? पुरदो वाणवेंतरदेवाणं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तअवहारकालो होदि त्ति वक्खाणदंसणादो । इदं वक्खाणं असच्चं वाणवेंतरअवहारकालपमाणवक्खाणं सच्चमिदि कथं जाणिज्जदे ? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयंतो, किंतु दोण्हं वक्खाणाणं मज्झे एक्केण वक्खाणेण असच्चेण होदव्वं । अहवा दोण्णि वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाणं पइज्जा । कथमेदं जाणिज्जदे ? 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा, तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे । ण च सुत्तमप्पमाणं काऊण वक्खाणं पमाणमिदि वोत्तुं सक्किज्जदे, अइप्पसंगादो । ण च एक्केक्कस्स देवस्स एक्का चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियाणं देवाणं भूओदेवीणमागमेणोवलंभादो, देवेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणाओ त्ति वक्खाणदंसणादो च । तम्हा जदि वाणवेंतरदेवअवहारकालो तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिच्छओ अत्थि तो जोणिणीअवहारकालमुप्पायणट्ठं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गम्हि वत्तीसोत्तरसदपहुडि जिणदिट्ठभावो गुणगारो पवेसेयव्वो । अथ जोणिणिअवहारकालो छज्जोयणसदंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिण्णओ अत्थि तो वाणवेंतरअवहारकालमुप्पायणट्ठं छज्जोयणसदंगुलवग्गो तेत्तीसपहुडि जिणदिट्ठभावसंखेज्जरूवेहि ओवट्टेयव्वं । अहवा उभयत्थ वि पदरंगुलस्स तप्पाओग्गो गुणगारो दादव्वो । एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो । तं जहा— पदरंगुलउवरिमवग्गे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तखंडे कए तत्थेयखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । खंडिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणमवणिय सलागादो एगरूवमवणेयव्वं । एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ आदीए अंते मज्झे वा एयवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि पदरंगुलाणि । तं जहा— पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पदरंगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे दोण्णि पदरंगुलाणि आगच्छंति । पदरंगुलस्स तिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे तिण्णि पदरंगुलाणि आगच्छंति । एवं कमेण गंतूण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे संखेज्जाणि पदरंगुलाणि आगच्छंति । पमाण-कारणाणि गदाणि । तस्स का णिरुत्ती ? पदरंगुलस्स

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पदरंगुलाणि हवंति । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्ठिमपदरंगुलं पेक्खिय पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो । ण च थोवरासिमवहरिय तत्तो बहुवरासी उप्पादेदुं सक्किज्जदे, विरोहा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा– पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । अट्ठपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलं गुणेऊण तेण पदरंगुलघणस्स पढमवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– घणंगुलेण घणाघणंगुले भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । हेट्ठिमवियप्पो गदो । गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिण्णयजणणट्ठं संभाविदो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण वत्तव्वं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेग घणंगुलउवरिमवग्गस्स तव्वग्गवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा– घणंगुलउवरिमवग्गस्स तव्वग्ग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलुवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण णेयव्वं । पदरंगुलउवरिमवग्गस्स घणंगुलउवरिमवग्गस्स घणाघणंगुलस्स च असंखेज्जदिभाएण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेढिम्हि भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । तेणेव जगपदरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३६ ॥

दव्वट्ठियणयमस्सिऊण ओघपरूवणा हवदि । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघपरूवणाए पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तोघपरूवणाए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णपरूवणा समाणा ण हवदि, तिवेदरासीदो इत्थिवेदेगरासिस्स सामाणत्ताणुववत्तीए, तम्हा विसेसेण होदव्वं । तं विसेसं पुव्वाइरियाविरुद्धोवएसेण वत्तइस्सामो । तं जहा–पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे तत्थेव सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि खंडिदादओ ओघभंगो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तेसु पुरिसवेदासंजदसम्माइट्ठिरासीदो तत्थेव इत्थिवेदासंजदसम्माइट्ठिरासी किमट्ठमसंखेज्जगुणहीणा ? पुरिसवेदादो सुट्ठु अप्पसत्थित्थिवेदोदएण पउरं दंसणमोहणीयखओवसमाभावादो । जदि एवं तो तत्थतणइत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिरासीदो तत्तो अप्पसत्थतणणवुंसगवेदअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जगुणहीणत्तं पसज्जदे ? भवदु णाम अविरुद्धत्तादो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ततिवेदसम्मामिच्छाइट्ठिरासीदो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिरासी किं समो किं संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसाहिओ विसेसहीणो वा त्ति णत्थि संपहियकाले उवएसो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा घेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्तो वि पज्जत्तो चेव, णोकम्मणिव्वत्तिअवेक्खाभावादो ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्णट्ठिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंडिदादिवियप्पा पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं व भाणेदव्वा । भागाभागं वत्तइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतखंडे कदे तत्थ बहुखंडा एइंदियवियलिंदिया होंति । सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खलद्धिअपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छादिट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसेगखंडा संजदासंजदा होंति । अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे भण्णमाणे तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो धुवरासिस्स बहुत्तुवलंभादो । सासणादीणं सत्थाणमोघं । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे । सव्वत्थोवो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं पि । णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं । एवं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं हि । णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जसूचिअंगुल-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेत्ताणि त्ति वत्तव्वं । पंचिंदियतिरिक्खापज्जत्तसत्थाणप्पाबहुगं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णाणं सत्थाणं तिरिक्खगुणपडिवण्णसत्थाणभंगो । परत्थाणे पयदं । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति ओघपरत्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? तिरिक्खमिच्छाइट्ठिणवुंसगसंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खेसु असंजदस्स अवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति ओघपरत्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि । उवरि सत्थाणभंगो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि जम्हि असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वत्तव्वं । एवं जोणिणीणं पि । णवरि जम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपरत्थाणं सगसत्थाणतुल्लं । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो एवं जाव पलिदोवमेत्ति णेयव्वं । तदो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वभणिदो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वभणिदो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जभागो । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिदसेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो । खेत्त-कालपमाणवुदासट्ठं दव्वगहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियगहणं । संखेज्जाणंताणं वुदासट्ठं असंखेज्जगहणं । अइथूलपरूवणं परूविय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४१ ॥

दव्वपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महत्तोवलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओसप्पिणि-उस्सप्पिणिविसेससंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तणं वत्तव्वं । सेसपरूवणा पुव्वं व परूवेयव्वा ।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ४२ ॥

सेढीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखावियप्पाणं सव्वेसिं गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं । तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स सेढीए पंतीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं । असंखेज्जदिजोयणकोडीओ त्ति वयणे पदरंगुल-घणंगुलादीणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठं अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति वयणं । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं गहेयव्वं । तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलतदियवग्गमूलस्स गहणं । कुदो ? सूचिअंगुलसहचारादो अणुवट्टणादो वा । सूचिअंगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेव पढमवग्गमूलं गुणिदे मणुसमिच्छाइट्ठीण अवहारकालो होदि । अहवा सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिय सूचिअंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि । तस्स पमाणं सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । तं जहा—सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेव लभामहे । विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लब्भंति । विदिय-तदियवग्गमूलमण्णोण्णब्भत्थं करिय सूचिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि लब्भंति त्ति ण संदेहो । तस्स णिरुत्ती तदियवग्गमूलेण विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूले अण्णोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, सूचिअंगुलपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । तं जहा—सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं जहा—घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो अण्णोण्णगुणिदविदिय-तदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेणेव भागहारेण सूचिअंगुलं गुणिय पदरंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा—सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो पुव्वभागहारेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-तदियवग्गमूलं अण्णोण्णं गुणिय तेण पदरंगुलं गुणिय घणंगुले भागे हिदे मणुस्सअवहारकालो आगच्छदि । एसो मज्झिमवियप्पे किण्ण पददि त्ति वुत्ते ण, सूचिअंगुलादो अहियरासिमवलंबिय उप्पाइज्जमाणे उवरिमवियप्पत्तं पडि विरोहाभावादो । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूलेहि पदरंगुलं गुणिय तेण घणंगुलउवरिमवग्गं गुणिय घणाघणंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते घणाघणंगुलस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । सूचिअंगुल-घणंगुलपढमवग्गमूल-घणाघणंगुल-विदियवग्गमूलाणं असंखेज्जदिभाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण भागहारेण जगसेढिम्हि भागे हिदे रूवाहिओ मणुसरासी आगच्छदि । तं कथं जाणिज्जदि त्ति वुत्ते 'मणुसगईए मणुसेहि रूवं पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्दाबंधसुत्तादो । एत्थ रासी दुविहा भवदि, ओजं जुम्मं चेदि । ओजं दुविहं, तेजोजं कलिओजं चेदि । तं जहा—जम्हि रासिम्हि चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिण्णि ट्ठांति सो तेजोजं । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि एगं ठादि तं कलिओजं । जुम्मं दुविहं, कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि । तं जहा—चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि रासिम्हि चत्तारि ट्ठांति तं कदजुम्मं । जम्हि रासिम्हि दोण्णि ट्ठांति तं बादरजुम्मं । जम्हा मणुस्सरासी तेजोजं तम्हा लद्धम्हि कदजुम्मम्हि एगरूवमवणेयव्वं । अवसेसिद-मणुसरासिपरूवणादो जुत्तं खुद्दाबंधम्हि भागलद्धादो एयरूवस्स अवणयणं, एत्थ पुण जीवट्ठाणम्हि मिच्छत्तविसेसिदजीव-

पमाणपरूवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगुणट्ठाणमेत्तेण अवणयणरासिणा होदव्वमिदि । तं कथं जाणिज्जदे ? 'मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेढी अवहिरिज्जदि' त्ति सुत्तम्हि रूवा इदि बहुवयणणिद्देसादो । अहवा रूवपक्खित्तएहिं त्ति बहुव्वीहिसमासेण लक्खण-विसेसेण कयपुव्वणिवाएण अवणिदबहुवयणादो बहुत्तोवलद्धी होज्ज । रूवं पक्खित्तएहि त्ति एगवयणमपि कहिं दिस्सदे तो वि ण दोसो, बहूणं जीवाणं जादिदुवारेण एयत्तदंसणादो । का एत्थ जाई णाम ? चेदणादिसमाणपरिणामो । तदो भागलद्धादो रूवाहियतेरसगुण-ट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुसमिच्छाइट्ठिरासी होदि त्ति सिद्धं । एदस्स खंडिदादओ विदियपुढविमिच्छाइट्ठीणं जहा वुत्ता तहा वत्तव्वा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । सव्वत्थ रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणमवणेयव्वं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४३ ॥

एत्थ पहुडिसद्दो आदिसद्दत्थे वट्टदे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा एदेसु गुणट्ठाणेसु मणुसरासी संखेज्जा चेव होदि त्ति जं वुत्तं होदि । संखेज्जा इदि सामण्णेण वुत्ते बावण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हवंति । तत्तो दुगुणा सम्मामिच्छा-इट्ठिणो हवंति । सत्तसयकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । संजदासंजदाणं पमाणं तेरहकोडीओ । के वि आइरिया सासणसम्मा-इट्ठीणं पमाणं पण्णारस कोडीओ हवंति सम्मामिच्छाइट्ठिपमाणं तत्तो दुगुणमिदि भणंति । पुव्विल्लपमाणमेत्थ घेत्तव्वं । किं कारणं ? आइरियपरंपरागदादो । वुत्तं च—तेरह कोडी देसे बावण्णं सासणे तु णेयव्वा । मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया ॥६८॥
अहवा—तेरह कोडी देसे पण्णासं सासणे मुणेयव्वा । मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ६९ ॥

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति इह ण वुच्चदे । कुदो ? मणुसगदिवदिरित्तसेसगईसु पमत्तादिगुणट्ठाणाणमसंभवादो । मणुसेसु पमत्तादीणं ओघपरूवणा चेव ।

मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो, छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४५ ॥

छट्ठवग्गस्स उवरि सत्तमवग्गस्स हेट्ठदो त्ति वुत्ते अत्थवत्ती ण जादेत्ति अत्थवत्ती करणट्ठं कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडा-कोडाकोडीए हेट्ठदो त्ति वुत्तं । एदस्स मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणमाइरियोवएसेण वुच्चदे । वेरूवस्स पंचमवग्गेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

छट्ठमवग्गं गुणिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि । सत्तमवग्गे संखेज्जखंडे कए एगखंडं मणुसपज्जत्तरासी होदि । खंडिदं गदं । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि । भाजिदं गदं । विरलिदं अवहिदं च चिंतिय वत्तव्वं । पमाणं सत्तमवग्गस्स संखेज्जदि-भागो संखेज्जाणि छट्ठवग्गाणि । तं जहा— छट्ठमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे छट्ठवग्गो आगच्छदि । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे संखेज्जा छट्ठवग्गा आगच्छंति । कारणं गदं । णिरुत्ती वियप्पो य चिंतिय वत्तव्वो । एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो— तेरस कोडी देसे वावण्णं सासणे मुणेयव्वा । मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसा ॥ ७० ॥ एदीए गाहाए वुत्तगुणपडिवण्णरासीओ एयत्तं करिय पमत्तादि-णव-संजदरासिं च तत्थेव पक्खिविय अवणिदे मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासी होदि । पंचमवग्गं चदुहि रूवेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तअवहारकालो होदि । तेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तदुवेदरासी आगच्छदि । मणुसपज्जत्ता वायालवग्गस्स घणमेत्ता त्ति जं वक्खाणे भणिदं जुत्तीए जोइज्जमाणे तं ण घडदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो' त्ति सुत्तेण सह विरोधत्तादो । तं कथं जाणिज्जदे ? एगुणतीसट्ठाणेसु ट्ठिदवायालवग्गघणस्स एगुणत्तीसट्ठाणेहिंतो ऊणत्तविरोहादो । किं च जदि वायालवग्गघणमेत्तो मणुसपज्जत्तरासी होज्ज तो माणुसखेत्ते ६१९७०८४६६६८१६४१६२००००००० । गयणट्ठ-णय-कसाया चउसट्ठि-मियंक-वसु-खरा-दव्वा । छायाल-वसु-णभाचल-पयत्थ-चंदो रिदू कमसो ॥ ७१ ॥ एत्तियमेत्तपदरंगुलेण सम्माएज्ज । मणुसखेत्तपदरंगुले आणिज्जमाणे— सत्त णव सुण्ण पंच छ णव चदु एक्कं च पंच सुण्णं च । जंबूदीवस्सेदं गणिदफलं होदि णादव्वा ॥ ७२ ॥ ७९०५६९४१५० एदम्हि तेरसंगुलं च किंचूणअद्धंगुलं च पक्खिविय आणेयव्वं । किंचूणपमाणं— सत्तसहस्सडसीदेहि खंडिदे पंचवग्गखंडाणि । अद्धंगुलस्स हीणं करेह अद्धंगुलं णियदं ॥ ७३ ॥ $\frac{१}{२}$ ७ $\frac{५}{०}$ $\frac{५}{८}$ $\frac{}{८}$ एदाणि जंबूदीवपदरजोयणाणि माणुसखेत्तजंबूदीवसलागाहि दो-समुद्दसलागूणाहि गुणिय पदरंगुलाणि कायव्वाणि । ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ एत्तियमेत्तमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे माणुसखेत्तादो संखेज्जगुणत्तप्पसंगा । माणुसलोगखेत्तफलपमाणपदरंगुलेसु संखेज्जुस्सेहंगुलमेत्तोगाहणो मणुसपज्जत्तरासी सम्मादि त्ति णासंकणिज्जं, सव्वुक्कस्सोगाहणमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जपमाणपदरंगुलमेत्तोगाहणगुणगारमुहवित्थारुवलंभादो । सव्वट्ठसिद्धिदेवाणं पि मणुसपज्जत्तरासीदो संखेज्जगुणाणं ण सव्वट्ठसिद्धिविमाणे जंबूदीवपमाणे ओगाहो अत्थि, तत्तो संखेज्जगुणोगाहणाणं तत्थावट्ठाणविरोहादो । तम्हा मणुसपज्जत्तरासी एयकोडाकोडाकोडीओ सादिरेया त्ति घेत्तव्वा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४६ ॥

एदम्हि सुत्तम्हि मणुसोघे जं चउण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणं वुत्तं तं चेव पमाणं वत्तव्वं, संगहिदतिवेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्हं विसेसाभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि त्ति ओघं ॥ ४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति ण वुच्चदे ।

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं मणुसपज्जत्तसुत्तवक्खाणेण तुल्लं । णवरि पंचमवग्गस्स तिभागे पंचमवग्गम्हि चेव पक्खित्ते मणुसिणीणमवहारकालो होदि । तेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसिणीणं दव्वमागच्छदि । लद्धादो सगतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणुसिणीमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुस्सोघे वुत्तसासणादीणं संखेज्जदिभागो सासणादीणं गुणपडिवण्णाणं पमाणं मणुसिणीसु हवदि । कुदो ? अप्पसत्थवेदोदएण सह पउरं सम्मद्दंसणलंभाभावादो । तं कथं जाणिज्जदे ? 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्मादिट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुअसुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जदे । तदो सासणसम्माइट्ठिआदीणं पि थोवत्तणं सिद्धं हवदि । णवरि एत्तियं तेसिं पमाणमिदि ण णव्वदे, संपहि उवएसाभावादो ।

मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ५० ॥

एत्थ णिव्वत्ति-अपज्जत्ते मोत्तूण लद्धि-अपज्जत्ताणं गहणं कायव्वं । कुदो ? एत्थ गुणपडिवण्णपमाणपरूवणाभावण्णहाणुववत्तीदो । सामण्णेण अवगद-असंखेज्जसविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं बहुसो परूविदो त्ति पुणो ण वुच्चदे पुणरुत्तभएण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो। तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ। मणुस-अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तेहि सेढिमवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि—

एदं वयणं ण घडदे, फलाभावा। संते संभवे वियहिचारे च विसेसणमत्थवंतं भवदि एत्थ पुण संभवो णेव इदि। परिहारो वुच्चदे। सुत्तेण विणा सेढी असंखेज्जजोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढिपमाणमिदि जाणावणट्ठमिदं वयणं। परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढीए पमाणमवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो वि सेढी वुच्चदे, अवयविणामस्स अवयवे पवुत्तिदंसणादो। जहा गामेगदेसे दद्धे गामो दद्ध इदि। अहवा एवं संबंधो कायव्वो। तिस्से सेढीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो दीहत्तणं असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति। अपज्जत्तएहि रूवपक्खित्तएहि रूवा पक्खित्तएहि रूवं पक्खित्तएहिं ति तिसु वि पादेसु रूवाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो। पुणो लद्धम्हि रूवाहियमणुसपज्जत्तरासिमवणिदे मणुस्सापज्जत्ता होंति। अंगुलवग्गमूलं च तं तदियवग्गमूलगुणिदं च अंगुलवग्गमूलतदियवग्गमूलगुणिदं तेण सलागभूदेण सेढी अवहिरिज्जदि त्ति जं वुत्तं होदि। भागाभागं वत्तइस्सामो। मणुसरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपज्जत्ता होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा संजदासंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति। उवरि ओघं। अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो। सव्वत्थोवो मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? सगअवहारकालवग्गो। अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? विदियवग्गमूलमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। एवं मणुसअपज्जत्ताणं पि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं। सासणादीणं सत्थाणं णत्थि। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं पि णत्थि सत्थाणप्पाबहुगं। परत्थाणे पयदं—सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। पंच खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदासंजदा संखेज्जगुणा। सासणसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा। सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narią, Varanasi

असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठिणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पुव्वभणिदो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । मणुसपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । पंच खवगा संखेज्जगुणा । एवं जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति । तदो मिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं चेव मणुसिणीसु वि परत्थाणं वत्तव्वं । सव्वपरत्थाणे पयदं– सव्वत्थोवा अजोगिकेवलिणो । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि जाव लोगो त्ति ताव जाणिऊण वत्तव्वं । मणुसिणीगुणपडिवण्णाणं पमाणमेत्तियमिदि णावहारिदं, तम्हा सव्वपरत्थाणप्पाबहुए तेसिं परूवणा ण कदा । एवं मणुसगई समत्ता ।

देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ५३ ॥

एत्थ देवगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि । देवेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्ठिददव्वपडिसेहो कदो हवदि । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो हवदि । दव्वपमाणेणेत्ति वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि । केवडिया इदि वयणेण सुत्तस्स पमाणत्तं सूचिदं हवदि । असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती कदा हवदि । किमसंखेज्जं णाम ? जो रासी एगेगरूवे अवणिज्जमाणे णिट्ठादि सो असंखेज्जो । जो पुण ण समप्पइ सो रासी अणंतो । जदि एवं तो वयसहिदसक्खयअद्धपोग्गलपरियट्टकालो वि असंखेज्जो जायदे ? होदु णाम । कथं पुणो तस्स अद्धपोग्गलपरियट्टस्स अणंतववएसो ? इदि चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । तं जहा–अणंतस्स केवलणाणस्स विसयत्तादो अद्धपोग्गलपरियट्टकालो वि अणंतो होदि । केवलणाणविसयत्तं पडि विसेसाभावा सव्वसंखाणाणमणंतत्तणं जायदे ? चे ण, ओहिणाणविसयवदिरित्तसंखाणे अणण्णविसयत्तणेण तदुवयारपवुत्तीदो । अहवा जं संखाणं पंचिंदियविसओ तं संखेज्जं णाम । तदो उवरि जमोहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम । तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम । संपहि सुहुमदरपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह–

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५४ ॥

णादत्थमिदं सुत्तं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खेत्तेण पदरस्स वेछप्पण्णंगुलसयवग्गपडिभागेण ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्टदे । अंगुलमिदि वुत्ते एत्थ सूचिअंगुलं घेत्तव्वं । सदसद्दो वेण्हं विसेसणं हवदि, ण छप्पण्णस्स । वेहि विसेसिदछप्पण्णसदस्स गहणं पसज्जदि त्ति ण च एवं, अणिट्टत्तादो । पडिभागो भागहारो । तदो वेसयछप्पण्णंगुलवग्गेण जगपदरे खंडिदे तत्थ एगखंडेण तुल्ला देवमिच्छाइट्ठी होंति त्ति जं वुत्तं होदि । पण्णट्ठिसहस्स पंचसय-छत्तीसपदरंगुलाणि भागहारं कट्टु जगपदरस्सुवरि खंडिदादओ पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं वत्तव्वा ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं ॥ ५६ ॥

एदेसिं देवगुणपडिवण्णाणं परूवणा सामण्णेण ओघगुणपडिवण्णदव्वपमाणपरूवणमणुहरदि त्ति ओघेणेत्ति भणिदं । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो, अण्णहा सेसगइगुणपडिवण्णाणमभावप्पसंगा । तं विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिभाएण ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं खंडेऊण लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमस्सुवरि खंडिदादओ पुव्वं व वत्तव्वा ।

भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो चेव ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तेसिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठसुत्तस्स विवरणं वुच्चदे । असंखेज्जासंखेज्जमणेयवियप्पं । तत्थ संखेज्जसेढीहिंतो हेट्ठिमवियप्पपडिसेहट्ठं असंखेज्जाओ सेढीओ इदि वुत्तं, जगपदरमाइं काऊण उवरिम-असंखेज्जासंखेज्जवियप्पपडिसेहट्ठं पदरस्स असंखेज्जदिभागो त्ति उत्तं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते मिच्छाइट्ठी होंति । पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो इदि कट्टु तं णिण्णयट्ठं सेढीणं विक्खंभसूई उत्ता । तिस्से पमाणं वुच्चदे । अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदं भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई हवदि त्ति संबंधेयव्वं । घणंगुलपढमवग्गमूलमिदि जं वुत्तं होदि । अंगुलवग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिद्देसो कथं घडदे ? पढमाविहत्तीए अट्ठे एसो तइयाणिद्देसो दट्ठव्वो । अण्णत्थ ण एवं दिस्सदीदि चे ण, 'वेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागेण' इच्चादिसु सुत्तेसुवलंभा । अहवा णिमित्ते एसा तइयाविहत्ती दट्ठव्वा । अंगुलवग्गमूलगुणणकारणेण जमुप्पण्णंगुलं सा विक्खंभसूई होदि त्ति जं वुत्तं होदि । एदाए विक्खंभसूईए जगसेढिं गुणिदे भवणवासियमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिपरूवणा ओघं ॥ ६० ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे ओघेण सह एगत्तदंसणादो । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो तं पुरदो भणिस्सामो ।

वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ६१ ॥

एदस्स थूलत्थस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुहुमत्थसुत्तस्स अत्थो णव्वदे ।

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ६३ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठपरूवणट्ठमागदसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । पदरस्सेदि विहज्जमाणरासिणिद्देसो । संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेत्ति लद्धणिद्देसो । पदरस्स संखेज्जजोयणसयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि । पडिभागो इदि किं वुत्तं हवदि ? संखेज्ज-जोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्स भागेसु एगभागो पडिभागो णाम । पडिभागसद्दो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोवयारेण लद्धम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्ठे तदिया दट्ठव्वा । अहवा एस णिद्देसो पढमाविहत्ती चेव जहा हवदि तहा साहेयव्वो । संखेज्जजोयणेत्ति वुत्ते तिण्णिजोयणसयमंगुलं काऊण वग्गिदे जो उप्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो । तस्स पमाणं पंच कोडाकोडिसयाणि तीस कोडाकोडीओ चउरासीदिकोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसंखे-ज्जरूवगुणिदछज्जोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठीणं पि अवहारकालो एत्तियपदरंगुलमेत्तो हवदि । अथ जदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो छज्जोयणसयअंगुलवग्गमेत्तो चेव तो वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण तिण्णिजोयणसयंगुलवग्गस्स संखेज्जदिभाएण होदव्वं, अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ६४ ॥

दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे केण वि अंसेण विसेसाभावादो ओघत्तमिदि वुच्चदे । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो भणिस्सामो । किमट्ठं सव्वत्थ दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयद्दयमवलंबिय परूवणा कीरदे ? ण एस दोसो, संगह-वित्थररुचिसत्ताणुग्गहवावदत्तादो । अण्णहा असमाणदापसंगादो ।

जोइसियदेवा देवगईणं भंगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि बहुवयणणिद्देसो ण घडदे, एक्काए देवगईए बहुत्ताभावादो इदि । ण एस दोसो, संगहिदाणेयत्ते एयत्ते बहुत्ताविरोहादो । जोइसियदेवा इदि गुणाविसिट्ठदेवग्गहणादो जोइसियदेवेसु चदुण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा देवोघपरूवणाए तुल्ला । एसो दव्वट्ठियणयमवलंबिय णिद्देसो कओ । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं जहा—तत्थ ताव मिच्छाइट्ठीसु विसेसो वुच्चदे । वाणवेंतरादिसेससव्वे देवा जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । तेहि सामण्णदेवरासिमोवट्टिदे संखेज्जरूवाणि आगच्छंति । ताणि विरलिय देवमिच्छाइट्ठिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वाणवेंतरप्पमुहमिच्छाइट्ठिरासी पावेदि । तमुवरिमरूवधरिदसामण्णदेवमिच्छाइट्ठिरासिम्हि अवणिदे जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं समकरणं करिय रूवूणहेट्ठिमविरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि । तं देवअवहारकालम्हि पक्खित्ते जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । सेसं देवमिच्छाइट्ठिभंगो । सासणादिगुणट्ठाणगदविसेसं पुरदो वत्तइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अवगदो त्ति पुणो ण वुच्चदे ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुगमो चेय । सव्वत्थ सुहुम-सुहुमदर-सुहुमतमभेएण तिविहा परूवणा किमट्ठं परूविज्जदे ? ण एस दोसो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिव्व-मंद-मज्झिमसत्ताणुग्गहट्ठत्तादो। अण्णहा जिणाणं सव्वसत्तसमाणत्तविरोहो। ण पुणरुत्तदोसो वि जिणवयणे संभवइ, मंदबुद्धिसत्ताणुग्गहट्ठदा एदस्स साफल्लादो।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि णिद्देसो जगपदरादिउवरिमवियप्पणियत्तावणट्ठो। असंखेज्जाओ सेढीओ इदि णिद्देसो जगसेढीदो हेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जवियप्पणियत्तावणट्ठो। तासिं सेढीणं पमाणपरिच्छेदं काउं अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि विक्खंभसूई वुत्ता। गुणिदेणेत्ति पढमाणिद्देसो दट्ठव्वो। सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलेण गुणिदं सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होइ। अहवा सूचिअंगुलतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे वि सोहम्मीसाणदेवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होदि। एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादओ जहा णेरइयविक्खंभसूईए तहा वत्तव्वा। संपहि खुद्दाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरूवएण जाओ विक्खंभसूईओ णेरइय-सोहम्मीसाण-भवणवासियदेवाणं वुत्ताओ ताओ चेव विक्खंभसूईओ एत्थ वि जीवट्ठाणे मिच्छाइट्ठिपरूवणाए अणूणाहियाओ वुत्ताओ। तं जहा—अंगुलस्स वग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा खुद्दाबंधे णेरइयविक्खंभसूई उत्ता। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा भवणवासियविक्खंभसूई खुद्दाबंधे उत्ता। तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सोहम्मीसाणदेवविक्खंभसूई खुद्दाबंधे वुत्ता। एत्थ वि णेरइय-भवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठीणं विक्खंभसूईओ एदाओ चेव वुत्ताओ। एदं च ण घडदे, सामण्णविसेसपरूवणाणमेगत्तविरोहादो। तम्हा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईहि ऊणियाहि खुद्दाबंधवुत्तविक्खंभसूईहि वा अधियाहि होदव्वमिदि चोदगो भणदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे। जीवट्ठाणवुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ साधियाओ। तं कधं जाणिज्जदे ? अण्णहा वग्गट्ठाणे हेट्ठिम-उवरिमवियप्पाणुववत्तीदो। खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ किण्ह होंति त्ति चे ण, तहाविधगुरूवदेसाभावा। अहवा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईओ देसूणाओ खुद्दाबंधम्हि वुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ। कुदो ? अट्ठरूवे वग्गिज्जमाणे सोहम्मीसाणविक्खंभसूचिं पावदि, सा सइं वग्गिदा णेरइयविक्खंभसूइं पावदि, सा सइं वग्गिदा भवणवासियविक्खंभसूचिं पावदि त्ति परियम्मे वग्गसमुट्ठिदसामण्णविक्खंभसूचिपादादो खुद्दाबंधे वि घणधारुप्पण्णविक्खंभसूईणं पादोवलंभादो वा। जीवट्ठाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिपादो वि खुद्दाबंधसामण्णविक्खंभसूचिपादेण समाणो उवलंभदे चे ण, दव्वट्ठियणयदो समाणत्तुवलंभा। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे णियमेण तत्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अत्थि विसेसो । खुद्दाबंधुवसंहारजीवट्ठाणस्स मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूईए सामण्णविक्खंभसूचिसमाणत्तविरोहा । एवं खुद्दाबंधम्हि वुत्तसव्व-अवहारकाला जीवट्ठाणे सादिरेया वत्तव्वा । एदं वक्खाणमेत्थ पधाणमिदि गेण्हिदव्वं ण पुव्विल्लं ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवट्टदे । एसा दव्वट्ठियणयमस्सिऊण परूवणा उत्ता । पज्जवट्ठियणयमस्सिऊण एदेसिं परूवणं पुरदो भणिस्सामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि वुत्ते तं जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तव्वो किं तु उवमत्थे जहा सद्दो घेत्तव्वो । जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं पमाणं परूविदं तहा सणक्कुमारादिदेवाणं पमाणं परूवेदव्वं । णवरि आइरियपरंपरागदोवदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो । तं जहा— सणक्कुमार-माहिंदे जगसेढीए भागहारो सेढीए हेट्ठा एक्कारसवग्गमूलं । बम्ह-बम्होत्तरकप्पे णवमवग्गमूलं । लांतव-कापिट्ठकप्पे सत्तमवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्ककप्पे पंचमवग्गमूलं । सदार-सहस्सारकप्पे चउत्थवग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणादीणं पमाणपरूवणा वि सत्तमपुढविपरूवणाए समाणा । विसेसपरूवणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसद्दो कालवाची चेव, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । दव्वपमाणपरूवणाए चेव अत्थणिच्छओ जादो त्ति एत्थ खेत्त-कालेहि परूवणा ण कदा । 'पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो' इदि सामण्णेण वुत्ते दव्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो त्ति तत्थ णिच्छयउप्पायणट्ठं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' त्ति भागहारपरूवणा विहज्जमाणपरूवणा च कदा । एत्थ आइरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खाणं पुरदो भण्णिस्सामो ।

अणुद्दिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

एत्थ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपरूवणं सेसगुणट्ठाणाणं तत्थाभावं सूचेदि । ण च संतं ण परूवेंति जिणा, तेसिमजिणत्तप्पसंगादो । एत्थ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आइरिओवएसेण सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं विसेसपरूवणं भणिस्सामो । तं जहा– देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुणं पडिवज्जमाणरासिविसेसदो वा । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सणक्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माहियजीवबहुत्ताभावादो । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तस्स सासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे जोइसियदेवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? तत्थ वोग्गाहिदादिमिच्छत्तेण सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिकूलेसु बहूणं सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंभवादो । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं वाणवेंतर-भवणवासियदेवेसु णेयव्वं । कुदो ? मिच्छत्तोच्छाइददिट्ठीसु भूओसम्मद्दंसणुप्पत्तिसंभवाभावादो । भवणवासियसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माणं दीहाऊणं बहूणमसंभवा । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कारणं उवरिमउवरिमकप्पेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउवजीवेहिंतो हेट्ठिमहेट्ठिमकप्पेसु थोवपुण्णेण डहरभवट्ठिदीसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तोवलंभादो । होंता वि असंखेज्जगुणा चेय । कारणं सव्वीजीभूदमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जत्तुवलंभादो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? जिणलिंगं घेत्तूण दव्वसंजमेण ट्ठिदसंजदाणं बहूणं मणुसेसु अणुवलंभादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे णवाणुद्दिस-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे अणुत्तरविजय-वइजयंत-जंयतावराजिदविमाणवासियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणजीवाणं थोवत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? थोवुवक्कमणकालत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । एदेहि अवहारकालेहि खंडिदादओ जाणिय वत्तव्वा । सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो इदि भणिय

आणदादिउवरिमगुणपडिवण्णाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' इदि विसेसिय किमट्ठं वुच्चदे ? एवं भणंतस्स अहिप्पाओ परूविज्जदे । तं जहा—ओघभंगो इच्चेदेण आणदत्तादो सुत्तमिदमणत्थयं । अणत्थयं च जाणावयं होदि । किमेदेण जाणाविज्जदि ? सोहम्मअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तत्थतणखइयसम्माइट्ठीण-मवहारकालो संखेज्जावलियमेत्तो । एदे दो वि अवहारकाले मोत्तूण अवसेसगुणपडिवण्णाणं सव्वे अवहारकाला असंखेज्जावलिमेत्ता विउलत्तवाइणो अंतोमुहुत्तसद्देण वुच्चंति त्ति जाणाविदं, तदो णाणत्थयमिदं सुत्तं ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणिरासीदो तिउणमेत्ता हवंति । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वदेवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा जोइसियदेवमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा वाणवेंतरमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठि होंति । एवं जाव सदार सहस्सारमिच्छाइट्ठि त्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्ज-खंडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं सणक्कुमार-माहिंदप्पहुडि जाव सहस्सारो त्ति णेयव्वं । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिएत्ति णेयव्वं । पुणो सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्ज-खंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुद-सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिममज्झिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठि त्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एयखंडं सव्वट्ठसिद्धिअसंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं भागाभागं समत्तं । अप्पाबहुअं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? पण्णट्ठि-सहस्स-पंचसयछत्तीसवग्गसूचिअंगुलमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोघभंगो । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाणभंगो । एवं जोइसियवाणवेंतराणं पि णेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठिविक्खंभ सूई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभसूई । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगविक्खंभसूचिवग्गो । अहवा घणंगुलं । सेढी असंखे-ज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहार-कालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोघभंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि सगसत्थाणभंगो । सोहम्मादि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जो त्ति सत्थाणप्पाबहुगं जाणिय णेयव्वं । उवरि परत्थाणं णत्थि; तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो । सव्वट्ठे सत्थाणं पि णत्थि एक-पदत्तादो । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवसम्मादिट्ठि त्ति । तत्थेव सम्मामिच्छा-इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो सणक्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारेति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियाणं पि कमेण णेयव्वं । भवणवासिय-सासणाणमवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो अणुदिसअसंजद-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तदो अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तदो आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति। तदो उवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तं ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो उवरि सोहम्मीसाणविक्खंभसूची असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? पलिदोवमपडिभागो। अहवा सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि। केत्तियमेत्ताणि? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। को पडिभागो? पलिदोवमपडिभागो। भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि। केत्तियमेत्ताणि? तदियवग्गमूलमेत्ताणि। को पडिभागो? सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई व। देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो? भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पडिभागो। जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। केवडिओ विसेसो? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढिएक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वारसवग्गमूलाणि। को पडिभागो? वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो पडिभागो। तस्सुवरि बम्ह-बम्होत्तर-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढिणवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि। लांतव-काविट्ठमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सत्तमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि अट्ठमवग्गमूलाणि। सुक्क-महासुक्कमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पंचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि छट्ठमवग्गमूलाणि। सदार-सहस्सारमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पंचमवग्गमूलं। तदो सदार-सहस्सारदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो को। पडिभागो? सगअवहारकालपडिभागो। एवं णेयव्वं पडिलोमेण जाव सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिदव्वमिदि। तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? तस्सेव विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो एक्कारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वारसवग्गमूलाणि वा। को पडिभागो? सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठिदव्वपडिभागो। जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासिविक्खंभसूचिगुणिदसगअवहारकालपडिभागो । जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेढी । चउग्गइभागाभागं वत्तइस्सामो । तं जहा—सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा एइंदिय-विगलिंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जोइसियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा भवणवासियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदियपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतवकाविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठपुढवि—सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि त्ति णेयव्वं । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तस्सेव सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिय-तिरिक्ख-पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति णेयव्वं । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणद-मिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जवसम्मामिच्छाइट्ठि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बहुखंडा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिममज्झिमगेवेज्जसासणेत्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवरिमउवरिमसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सजोगित्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्णं खवगा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हमुवसामगा । सेसेगखंडं अजोगिकेवलिणो होंति । एवं चउग्गइभागाभागं समत्तं । एत्तो चउग्गइअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा । सव्वत्थोवो अजोगिकेवलिरासी । चउण्हमुवसामगा संखेज्जगुणा । चउण्हं खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मणुससंजदासंजदा संखेज्जगुणा । मणुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसिणिमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा तिउणा सत्तगुणा वा । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियदेवे त्ति णेयव्वं । तदो तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठि अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं विदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति । तदो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जो त्ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । अणुत्तरविजय-वइजयंत-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयंत-अवराइद-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जो त्ति । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति । तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । सोहम्मीसाणविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुल तदियवग्गमूलं । भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जोइसियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंडमेत्तेण । वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? बारहवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? जोणिणीअवहारकालपडिभागो । तदो सणक्कुमारमाहिंद-तदियपुढवि-बम्हबम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतवकाविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठसत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्ठिअवहारकालो कमेण असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढिबारसमेक्कारसम-दसम-णवम-अट्ठम-सत्तम-छट्ठम-पंचम-चउत्थ-तदियवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा । तदो सत्तमपुढविअवहारकालस्सुवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमवग्गमूलं । तदो छट्ठपुढवि-सदारसहस्सार-सुक्कमहासुक्क-पंचमपुढवि-लांतवकाविट्ठ-चउत्थपुढवि-बम्हबम्होत्तर-तइयपुढवि-सणक्कुमारमाहिंद-विदियपुढवीणं मिच्छाइट्ठिदव्वं कमेण असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढितदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठम-णवम-दसम-एक्का-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रसम-वारसमवग्गमूलाणि जहाकमेण गुणगारा ? तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वस्सुवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? वारसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। जोइसियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसमयखंडिदएयखंडमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण। भवणवासियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? णेरइयविक्खंभसूई। मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं। सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? विक्खंभसूई। सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? विक्खंभसूई। पढमपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सोहम्मीसाणविक्खंभसूई। भवणवासियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो ? असंखेज्जाणि घणंगुलाणि पडिभागो। केत्तियमेत्ताणि ? संखेज्जसूईपढमवग्गमूलमेत्ताणि। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। जोइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदमेत्तेण। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदमेत्तेण। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सगअवहारकालो। लोगमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सेढी। सिद्धा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? लोगपडिभागो। एइंदिय-विगलिंदिया अणंत-गुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहिं वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो। को पडिभागो ? सिद्धपडिभागो। एवं चदुगदिअप्पाबहुगं समत्तं। एवं गइमग्गणा समत्ता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता ॥ ७४ ॥

एत्थ एइंदियगहणेण सेसिंदियाणं पडिसेहो कदो भवदि। सुहुमपडिसेहट्ठं बादरग्गहणं। बादरपडिसेहफलो सुहुमणिद्देसो। अपज्जत्तपडिसेहफलो पज्जत्तणिद्देसो। पज्जत्तपडिसेहफलो अपज्जत्तणिद्देसो। एइंदिया बादरेइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च एदे णव वि रासीओ दव्वपमाणेण केवडिया इदि पुच्छिदं होदि। किमट्ठं सव्वत्थ पण्हपुव्वं परिमाणं वुच्चदे ? ण एस दोसो, मंदबुद्धि-सिस्साणुग्गहणट्ठत्तादो। अणंता इदि परिमाणणिद्देसो संखेज्जासंखेज्जपरिमाणपडिसेहफलो। सेसं जहा मूलोघसुत्ते वुत्तं तहा वत्तव्वं।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ७५ ॥

अदीदकालो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिपमाणेण कीरमाणो अणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणिपमाणं होदि। तेण तारिसेण वि अदीद-कालेण एदे णव वि रासीओ ण अवहिरिज्जंति। एइंदिएहिंतो एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा तसकाइएसुप्पज्जंति। तसकाइया वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता एइंदिएसुप्पज्जंति। बादरेइंदिया विसयं पडि अणंता सुहुमेइंदिएसुप्पज्जंति। सुहुमेइंदिया वि तत्तिया चेव बादरेइंदिएसुप्पज्जंति। एवं चेव सव्वेसिं पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च वत्तव्वं। तदो सरिसायव्वयत्तादो एदेसिं णवण्हं रासीणं वोच्छेदो तिसु वि कालेसु णत्थि त्ति अणुत्तसिद्धीदो एदं सुत्तं णादरेदव्व-मिदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा—एदेसिं णवण्हं रासीणं जदि आयव्वया सरिसा हवंति तो एदं सुत्तं णादरेदव्वं भवदि। किंतु आयादो वओ अब्भहिओ। कुदो ? तत्तो णिप्फडिऊण तसेसुप्पज्जिय सम्मत्तं घेत्तूण विणासिदएइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिय-णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-इत्थि-णवुंसय-हय-गय-गंधव्वाणीगादि-संसारिजीवाणं पुणो तेसु पवेसाभावादो। तदो एदे णव वि रासीओ वयसहिया णिच्छएण हवंति। एवं हि वए संते वि एदे णव वि रासीओ ण वोच्छेज्जंति सरागसरूवेण ट्ठिदअदीदकालत्तादो। सव्वजीवरासीदो अदीदकाले अणंतगुणे संते अदीदकालेण सव्वे जीवा अवहिरिज्जंति। ण च एवं, तधा अणुवलंभादो। जं तेण कालेण सव्वजीवाणं वोच्छेदो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण, अभव्वपडिवक्खवोच्छेदे अभव्वत्तस्स विधिणासप्पसंगादो। सेसं वक्खाणं जहा ओघकालसुत्तम्हि भणिदं तहा वत्तव्वं।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणे भण्णमाणे जहा मूलोघखेत्तसुत्तस्स भणिदं तहा भाणिदव्वं। णवरि एत्थ धुवरासी एवमुप्पाएदव्वो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तं जहा—बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-अणिंदियाणं रासिं सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स चेव वग्गं एइंदियभाजिदं तत्थेव पक्खित्ते एइंदियधुवरासी होदि। तं संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते एइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि। एइंदिय-धुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे एइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि। पुणो एइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण गुणिदे बादरेइंदियधुवरासी होदि। तमसंखेज्ज-लोएण गुणिदे बादरेइंदियपज्जत्ताणं धुवरासी होदि। तमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरेइंदियअपज्जत्ताणं धुवरासी होदि। सामण्णेइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियधुवरासी होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमेइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि। सामण्णसुहुमेइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्त-धुवरासी होदि। सगसगधुवरासीहि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे खंडिदादओ ओघमिच्छाइट्ठिणं व वत्तव्वा। णवरि पमाणं भण्णमाणे एइंदियाणं ओघभंगो। एइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो। बादरेइंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो। सुहुमेइंदिया सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा। सुहुमेइंदियापज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो। कारणमेइंदियाणं ताव वुच्चदे। सेसिंदियाणिंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेयखंडं सेसिंदियाणिंदिया च होंति। सेसबहुखंडा एइंदिया हवंति। सेसिंदियाणिंदिय-एइंदियापज्जत्तेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा एइंदियपज्जत्ता होंति। एइंदियअपज्जत्तेहि चेव सव्वजीवरा-सिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं एइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसिंदिय-अणिंदिय-बादरेइंदिएहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जदिलोगरासिं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया होंति। बि-ति-चदु-पंचाणिंदिय-बादरेइंदियसहिदसुहुमेइंदिअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि आगच्छंति। ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सुहुमेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। बादरेइंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदिया होंति। बादरेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। एसा चेव णिरुत्ती हवदि। कुदो? एत्थ कारणादो णिरुत्तीए भेदाणुवलंभादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ७७ ॥

बहूणं वीइंदियाणं तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कधं घडदे ? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एगत्तविरोहाभावादो । एत्थ अपज्जत्तवयणेण अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तवयणेण गहणप्पसंगादो । एवं पज्जत्ता इदि वुत्ते पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं गहणाणुववत्तीदो । वि-ति-चउरिंदिए त्ति वुत्ते वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामकम्मोदयसहिदजीवाणं गहणं । वेण्णि इंदियाणि जेसिं ते वेइंदिया इदि घेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले वट्टमाणजीवाणमिंदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । खओवसमो इंदियं ण दव्विंदियमिंदियमिदि चे ण, सजोगिकेवलिस्स पणट्ठखओवसमस्स अणिंदियत्तप्पसंगादो । होदु ? चे ण, सुत्तस्स पंचिंदियत्तपदुप्पायणादो । कम्हि तं सुत्तमिदि चे एत्थेव । तं जहा—पंचिंदिया सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघमिदि । सुहुमट्ठपरूवणट्ठं सुत्तमाह—

असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ७८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे । एदाओ रासीओ सव्वकालमायाणुरूववयसहिदाओ त्ति ण वोच्छेदमुवढुक्कंते तदो असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति त्ति कधमेदं णव्वदे ? सच्चं, ण वोच्छिज्जंति चेव किं तु एदासिमाएण विणा जदि वओ चेव भवदि तो मिच्छेएण वोच्छिज्जंति । अण्णहा असंखेज्जत्ताणुववत्तीदो । एदस्सत्थस्स अवबोहणट्ठं अवहिरंति त्ति वुत्तं ।

खेत्तेण वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ७९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पुव्वुद्दिट्ठवि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुद्दिट्ठमेव भवदि । मज्झिल्लं मज्झम्हि समुद्दिट्ठपज्जत्ताणं भवदि । अंतिल्लं पि अंतुद्दिट्ठं तेसिमपज्जत्ताणं हवदि । एदेहि सामण्णविगलिंदिएहि तेसिं चेव पज्जत्तेहि विगलिंदियअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमावलियाए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयभागो । तस्स वग्गो तारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो । एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि विवरेयव्वं । एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खाणेयव्वं णवरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए वग्गिदे पज्जत्ताणमवहारकालो होदि तेण पडिभाएण । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियअपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उसप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे ।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८२ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिंदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि । सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिंदियपज्जत्ताणं । पडिभागो भागहारो त्ति एयट्ठो । विगलिंदियसुत्तेण सह पंचिंदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं ? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिंदियत्ताणुवट्टावणत्तादो पुध पंचिंदियसुत्तं वुच्चदे । तत्थ ट्ठियपंचिंदियणिद्देसो किमिदि णाणुवट्टाविज्जदे ? ण, एगजोगणिद्दिट्ठाणमेगदेसस्स अणुवट्टणाभावादो । संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगअणियोगद्दारसुत्तबलेण पुव्वाइरिओवएसबलेण च एदेण सुत्तेण सूचिदविगल-सयलिंदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो । तं जहा– आवलियाए असंखेज्जदिभाएण सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे वेइंदियाणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेइंदियअपज्जत्तअवहारकालो होदि । तं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । एवं चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आवलियाए असंखेज्जदियभाएण खंडिदेयखंडेण अवहारकालो अब्भहिया कायव्वा । तदो पंचिंदियअपज्जत्तअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेइंदियपज्जत्ताणं अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेइंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते चउरिंदियपज्जत्त-अवहारकालो होदि । एत्थ सव्वत्थ रासिविसेसेण रासिमोवट्टाविय लद्धं रूवूणं करिय भागहारभूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाए-दव्वो । एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वपमाणाणि भवंति । एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तव्वा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ८३ ॥

पहुडिसद्दो किरियाविसेसणं । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि आइं करिएत्ति । एत्थ पुव्वसुत्तादो पंचिंदिय इदि अणुवट्टदे । तेण सव्वे गुणपडिवण्णा पंचिंदिया चेव । सजोगिअजोगिकेवलीणं पणट्ठासेसिंदियाणं पंचिंदियववएसो कथं घडदे ? ण, पंचिंदियजादिणाम-कम्मोदयमवेक्खिय तेसिं पंचिंदियववएसादो । एदेसिं पमाणपरूवणा मूलोघपरूवणाए तुल्ला । कुदो ? पंचिंदियवदिरित्तजादिसु गुण-पडिवण्णाभावादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो ।

खेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव । एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडिबद्धाणि विगलिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाइट्ठि-सुत्तम्हि चेव किण्ण वुत्ताणि त्ति वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणट्ठत्तादो पुध सुत्तारंभस्स । अपज्जत्तकाले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो । इदि चे, होदु णाम

णिव्वत्तिं पडि अपज्जत्तएसु गुणपडिवण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्ठाणविरोहा। भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जलोगमेत्तखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणिंदिया होंति। सेसरासीदो पलिदोवमअसंखेज्जदिभागमवणेऊण सेसरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण ऊणेगखंडं पि पुणो पुध ट्ठविय सेसबहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ठवेयव्वा। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते वेइंदिया होंति। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण दिण्णसेसेगखंडं समखंडं करिय दाऊण तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खित्ते तेइंदिया होंति। पुव्वविरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो। पुणो वि तप्पाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते चउरिंदिया होंति। सेसेगखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते पंचिंदियमिच्छाइट्ठी होंति। वे दियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसेगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति। तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा असंजदसम्माइट्ठी होंति। एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति। अहवा एइंदियाणं भागाभागो एवं वा वत्तव्वो। सव्वेइंदियरासी अद्धद्धेण छेत्तव्वो जाव बादरेइंदियरासी अवचिट्ठिदो त्ति। तत्थ लद्धअद्धच्छेदणयसलागा विरलेऊण विगं काऊण अण्णोण्णब्भासे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि। एस रासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बादरेइंदियाणं पमाणं पावेदि। तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया एयखंडं बादरेइंदिया। पुणो सुहुमेइंदियरासी अद्धद्धेण छिंदिदव्वो जाव सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी अवचिट्ठिदो त्ति। तत्थ अद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भासकरणेणुप्पण्णसंखेज्जरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी पावुणदि। तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता एयखंडं तेसिमपज्जत्ता होंति। एवं बादरेइंदियाणं पि वत्तव्वं। एत्थ संदिट्ठी। तं जहा— एइंदियरासी वेछप्पण्णसदमेत्तो २५६। सुहुमेइंदियरासी चालीसब्भहियवेसदमेत्तो २४०। बादरेइंदियरासी सोलसमेत्तो १६। सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिसयमेत्तो १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति। बादरेइंदियअपज्जत्ता वारस १२ हवंति। तेसिं पज्जत्ता चत्तारि ४। संपहि वेइंदिय पज्जत्तरासीदो वेइंदिय-तेइंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि वुत्ते असंखेज्जगुणो। हवदि। तं जहा—वुच्चदे—तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कथं जाणिज्जदे? आइरिओवदेसादो भागाभागम्हि परूविदवक्खाणादो य जाणिज्जदे। तेइंदिय-चउरिंदियरासि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुगो। तं कथं णव्वदे ? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो त्ति वुत्तअप्पाबहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण वेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणो। तं कथं णव्वदे ? एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। तदो जाणिज्जदे जहा वीइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतीइंदियपज्जत्तरासीदो बहुदरतीइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसादो असंखेज्जगुणो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो वेइंदियपज्जत्तेहिंतो असंखेज्जगुणो त्ति। अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाण-परत्थाण सव्वपरत्थाणभेएण। एत्थ ताव सत्थाणप्पाबहुअं वुच्चदे। सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता। तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जा समया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? सगअपज्जत्तमेत्तेण। सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? सगअवहारकालो। अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो। सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? अवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? विक्खंभसूई। पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? अवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेढी। एवं वेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। एवं पज्जत्ताणं पि। णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। तिचदु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि जहाकमेण वेइंदिय-वेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं भंगो। सासणादीणं मूलोघसत्थाणभंगो। परत्थाणे पयदं। तत्थ ताव एइंदियपरत्थाणं वुच्चदे—सव्वत्थोवा बादरेइंदिया। सुहुमेइंदिया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। तेसिं छेदणा वि असंखेज्जा लोगा। एवं चेव विदियवियप्पो। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। तेसिं छेयणा वि असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जा समया। चउत्थो वियप्पो एवं चेव। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियसहिदसुहुमेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण। सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो ? पुव्वं भणिदो। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जा समया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। को विसेसो ? पुव्वं भणिदो। छट्ठो वियप्पो एवं चेव। णवरि एइंदिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियमेत्तेण। अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियपज्जत्तविरहिदसुहुमेइंदियपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । वेइंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । वेइंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । वेइंदियपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो । सगविक्खंभसूई । तस्सेव अपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेइंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं तीइंदिय-चउरिंदियाणं । एवं पंचिंदियाणं पि । णवरि अजोगिभगवंतमाइं काऊण वत्तव्वं । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवमजोगिकेवलिदव्वं । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि पलिदोवमं त्ति ओघं । तदो वीइंदियअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवमं । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं अवहारकाला कमेण विसेसाहिया । तदो तीइंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतीइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो । पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसो । चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो ।

पंचिंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया। वेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिआ। तेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया। पंचिंदिय-अपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। पंचिंदियविक्खंभसूई विसे-साहिया। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूचिमेत्तेण। एवं णेयव्वं जाव चउरिंदिय-अपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं विक्खंभसूईओ त्ति। सेढि असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? वीइंदियअवहारकालो। चउरिंदियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? विक्खंभसूई। पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। वेइंदिय-पज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं। पंचिंदियअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदि-भागो। पंचिंदियदव्वं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तदव्वमेत्तेण। एवं चउरिंदिय-अपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं दव्वाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि। तदो पदरमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो। लोगो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेढी। अणिंदिया अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? लोगो। बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अणंतिमभागो। को पडि-भागो ? अणिंदिया। तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। बादरेइंदिया विसेसाहिया। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया। सुहुमेइंदिया विसेसाहिया। एइंदिया विसेसाहिया। एवं इंदियमग्गणा समत्ता।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा लोगा ॥ ८७ ॥

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया त्ति ण वत्तव्वं, विग्गहगईए वट्टमाणाणं जीवाणमकाइत्तप्पसंगादो। पुणो कधं वुच्चदे ? पुढविकाइयणामकम्मोदयवंतो जीवा पुढविकाइया त्ति वुच्चंति। पुढविकाइयणामकम्मं ण कहिं म्हि वुत्तमिदि चे ण, तस्स एइंदियजादिणा-मकम्मंतब्भूदत्तादो। एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे। ण सुत्ते कम्माणि अट्ठेव अट्ठेदालसयमेवेत्ति,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संखंतरपडिसेहविधाययएवकाराभावादो । पुणो केत्तियाणि कम्माणि होंति ? हय-गय-विय-फुलंधुव-सलह-मक्कुणुदेहि-गोमिंदादीणि ज्योत्तियाणि कम्मफलाणि लोगे उवलब्भंते कम्माणि वि तत्तियाणि चेव । एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं । बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ बादरा । थूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण वुच्चदे ? ण, बादरेइंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभादो । तदो पडिहण्णमाणसरीरो बादरो । अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहण्णमाणसरीरो जीवो सुहुमो त्ति घेत्तव्वं । एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एत्थ पत्तेयसरीरणिद्देसो साहारणसरीरवणप्फइकाइयपडिसेहफलो । पुढविकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चेव । तेसिं पत्तेयववएसो सुत्ते किण्ण कदो ? तत्थ पत्तेयसरीरस्स संभवो चेव असंभवो णत्थि त्ति ण तेण ते विसेसिज्जंते 'सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति' इति न्यायात् । सुहुमणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ जीवा सुहुमा हवंति । थोवसरीरोगाहणाए वट्टमाणा जीवा सुहुमा त्ति ण घेप्पंति, सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणाखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा । अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ अपज्जत्ता त्ति घेत्तव्वा णाणिप्पण्णसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पण्णसरीराणं पि गहणप्पसंगादो । तहा पज्जत्तणामकम्मोदयवंतो जीवा पज्जत्ता । अण्णहा णिप्पण्णसरीरजीवाणमेव गहणप्पसंगा । बादर-सुहुमजीवेसु पंच-चउब्भेएसु तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कथं घडदे ? ण, तेसिं जादीए एगत्तसंभवादो । एत्थ चोदगो भणदि । विग्गहगईए वट्टमाणवणप्फइकाइया किं पत्तेयसरीरा आहो साहारणसरीरा इदि ? किं चातः । ण पत्तेयसरीरा, कम्मइयकायजोगे वट्टमाणवणप्फइकाइया अणंता त्ति कट्टु वणप्फइकाइयपत्तेयसरीराणमणंतत्तप्पसंगा । ण च एवं सुत्ते तेसिमसंखेज्जलोगमेत्तपमाणपदुप्पायणादो । ण ते साहारणसरीरा वि, तत्थ— साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ ७४ ॥ इच्चादिगाहाहि वुत्तसाहारणलक्खणाणुवलंभादो । ण च पत्तेय-साहारणसरीरवदिरित्ता वणप्फइकाइया अत्थि, तहाविहोवएसाभावादो । तस्मात्प्रत्येकं शरीरं देहो येषां ते प्रत्येकशरीरा इत्येतन्न घटत इति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । जेण जीवेण एक्केण चेव एक्कसरीरट्ठिएण सुह-दुःखमणुभवेदव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो जीवो पत्तेयसरीरो । जेण जीवेण एगसरीरट्ठियबहूहि जीवेहि सह कम्मफलमणुभवेयव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो साहारणसरीरो । णं च अच्छिण्णाउअस्स तव्ववएसो, तत्र प्रत्यासत्तेरभावात् । विग्गहगईए पुण पच्चासत्ती अत्थि त्ति हवदि एसो ववएसो तम्हा ण पुव्वुत्तदोसस्स संभवो । अहवा पत्तेयसरीरणामकम्मोदयवंतो वणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा । साहारणणामकम्मोदयवंतो साहारणसरीरा त्ति वत्तव्वं । सरीरगहिदपढमसमए दोण्हं सरीराणमेगदरस्स उदओ हवदीदि विग्गहगईए वट्टमाणजीवाणं पत्तेयसाहारणसरीरववएसो ण पावदि त्ति वुत्ते, ण एस दोसो, तत्थ वि पच्चासत्ती अत्थि त्ति उवयारेण तेसिं पत्तेय-साहारणसरीरववएससंभवादो । विग्गहगईए वट्टमाणाणंतजीवाणं साहारणकम्मो-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दयपरवसाणमण्णोण्णगुणगयत्तणेण एयत्तमुवगयएयसरीरम्मि वट्टमाणत्तादो वा ण ते पत्तेयसरीरा। एदे छव्वीसरासीओ दव्वपमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ता हवंति। एत्थ विसेसपदुप्पायणोवायाभावादो काल-खेत्तेहि परूवणा ण कदा। संपहि सुत्ताविरुद्धेणाइरियपरंपरागदोवएसेण तेउक्काइयरासिउप्पायणविहाणं वत्तइस्सामो। तं जहा—एगं घणलोगं सलागभूदं ठविय अवरेगं घणलोगं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स एक्केक्कं घणलोगं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। ताधे एक्का अण्णोण्णगुणगारसलागा लद्धा हवदि। तस्सुप्पण्णरासिस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गसलागा हवंति। तस्सद्धच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा। रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादो। पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूवस्स उट्ठिदमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अवरेगं रूवमवणेयव्वं। ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि। वग्गसलागा अद्धच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव लोगमेत्तसलागरासी समत्तो त्ति। ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं लोगो। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेऊण तं चेव सलागभूदं ठविय विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोगो रूवाहिओ। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। पुणो उप्पण्णमहारासिं विरलिय रूवं पडि उप्पण्णरासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अण्णेगरूवमवणेयव्वं। तदो अण्णोण्णगुणगारसलागाओ लोगो दुरूवाहिओ। सेसतिगमसंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण दुरूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तलोगसलागासु दुरूवाहियलोगम्हि पविट्ठासु चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा हवंति एवं णेयव्वं जाव विदियवारट्ठविदसलागरासी समत्तो त्ति। ताधे वि चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा। पुणो उट्ठिदरासिं सलागभूदं ठविय अवरेगमुट्ठिदमहारासिपमाणं विरलेऊण उट्ठिदमहारासिपमाणमेव रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगं रूवमवणेयव्वं। ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा। एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव तदियवारं ठवियसलागरासी समत्तो त्ति। ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा। पुणो उट्ठिदमहारासिं तिप्पडिरासिं काऊण तत्थेगं सलागभूदं ट्ठविय अण्णेगरासिं विरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रूवस्स एगरासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं। एवं पुणो पुणो करिय णेयव्वं जाव अदिक्कंतअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊणचउत्थवारट्ठिदअण्णोण्णगुणगारसलागरासी समत्तो त्ति। ताधे तेउक्काइयरासी उट्ठिदो हवदि। तस्स गुणगारसलागा चउत्थवारं ट्ठविदसलागरासिपमाणं होदि। के वि आइरिया सलागरासिस्स अद्धे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि त्ति भणंति। के वि तं णेच्छंति। कुदो? अद्धुट्ठरासिसमुदयस्स वग्गसमुट्ठिदत्ताभावादो। तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा त्ति कधं जाणिज्जदे? परियम्मवयणादो। के वि आइरिया एवं भणंति। जहा—एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाणं ण भवदि। पुणो को होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे—गुणेज्जमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूवेण

पवेसमाणलोगाणं जाओ सलागाओ ताओ तेउकाइयअण्णोण्णगुणगारसलागा वुच्चंति । एदाओ वग्गसमुट्ठिदाओ ण पुव्विल्लाओ त्ति । तम्हा अद्धुट्ठगुणगारसलागोवएसो विरुज्झदे, एसो ण विरुज्झदे इदि । एदं हि ण घडदे । कुदो ? लोगद्धछेयणएहिं तेउकाइयरासिस्स अद्धच्छेदणए भागे हिदे जं लद्धं तं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊणण्णोण्णब्भत्थे कदे तेउकाइयरासी उप्पज्जदि । हेट्ठिल्लविरलिदरासी वि तेउकाइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं भवदि । णवरि अण्णोण्णगुणगारसलागा तेउकाइयरासिवग्गसलागाहिंतो असंखेज्जगुणत्तं पत्ताओ । कुदो ? तेउकाइयरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणत्तादो । ण च एदमिच्छिज्जदे । कुदो ? तेउकाइयरासिवग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो । तं कधं णव्वदे ? परियम्मवयणादो । तं जहा—तेउकाइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गिज्जमाणा वग्गिज्जमाणा असंखेज्जे लोगे वग्गे हेट्ठादो उवरिमसंखेज्जगुणं गंतूण तेउकाइयरासिस्स वग्गसलागं पावदि त्ति । एस विरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो वि । कुदो ? लोगद्धछेदणयच्छिण्णतेउकाइयरासिस्स अद्धच्छेदणयमेत्तत्तादो । विरलिद–दिण्णमाणरासीणं समाणत्तणेण तेउकाइयरासिस्स घणाघणधारासमुप्पण्णत्तणेण च तेउकाइयरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्ठिदाओ त्ति ? ण एदं, इट्ठत्तादो । ण च परियम्मेण सह विरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो । एत्थ पुण अद्धुट्ठवारमेत्ताओ चेव तेउकाइयरासिअण्णोण्णगुणगारसलागाओ त्ति घेत्तव्वं, आइरियपरंपरागयउवएसत्तादो । ण च वग्गसमुट्ठिदत्तं गुणगारसलागाणं णत्थि त्ति अद्धुट्ठुवएसो ण भद्दओ, अद्धुट्ठुवएसण्णहाणुववत्तीदो चेव तदवग्गसमुट्ठिदत्तस्स अवगमादो । ण परियम्मदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउकाइयअद्धच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो । अहवा तेउकाइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ ठविऊण तदुप्पत्तिणिमित्तरासीणं वग्गिदसंवग्गिदे काऊण तेउकाइयरासी उप्पाएदव्वा । तेउकाइयरासिं भागहारं काऊण तस्सुवरिमवग्गं विहज्जमाणरासिं करिय खंडिद-भाजिद-विरलिद अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि । तस्स पमाणमुवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं, तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी चेव आगच्छदि त्ति । एत्थ संदेहाभावा णिरुत्ती ण वत्तव्वा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । एत्थ हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, तेउकाइयरासिस्स विहज्जमाणरासिपढमवग्गमूलमेत्तत्तादो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणये कदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । अहवा तेउकाइयरासिणा तस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणये कदे वि तेउकाइयरासी आगच्छदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । तेउकाइयरासिणा तेउकाइयउवरिमवग्गसमाणअट्ठरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउकाइयरासी

आगच्छदि। घणाघणे वत्तइस्सामो। तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउवरिमवग्गसमाणअट्ठरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अवचिट्ठदे। विहज्जमाणवग्गाणं असंखेज्जदिभाएण गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो। एवं तेउक्काइयपरूवणा समत्ता। तेउक्काइयरासिमसंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुढविकाइयरासी होदि। तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आउकाइयरासी होदि। तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वाउकाइयरासी होदि। एदेसिं तिण्णं रासीणं अवहारकालस्सुप्पायणविहाणं उच्चदे। तं जहा– तेउक्काइयरासिं पुढविकाइयरासिम्हि सोहिय सेसेण तेउक्काइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण तेउक्काइयरासिमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे पुढविकाइयअवहारकालो होदि। पुणो पुढविकाइयरासिं आउकाइयरासिम्हि सोहिय सेसेण पुढविकाइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवाहिएण पुढविकाइयअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे आउकाइयअवहारकालो होदि। पुणो आउकाइयरासिं वाउकाइयरासिम्हि सोहिय तत्थावसिट्ठरासिणा आउकाइयरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी लब्भदि। तेण रूवाहिएण आउकाइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे वाउकाइय-अवहारकालो होदि। एत्थुवउज्जंती गाहा– रासिविसेसेणवहिदरासिम्हि य जं हिए समुवलद्धं। रूवूणहिएणवहिदहारो ऊणाहिओ तेण ॥ ७५ ॥ एसा किरिया इंदिय-कसाय-जोगमग्गणासु विसेसाहियरासीणं विसेसहीणरासीणं च णिरवयवा कायव्वा। एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अवहारकाले विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं चउण्हं विरलणाणं पुध पुध समखंडं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाणं पावदि। पुणो सगसगबादरजीवेहिं सगसगविरलणाए एगरूवोवरि ट्ठिदसगसगरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि। तेण रूवूणेण सगसगअवहारकालेसु ओवट्टिदेसु लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमाणं अवहारकाला भवंति। पुणो एदे चत्तारि वि सुहुमजीवअवहारकाले पुध पुध विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सगसगसुहुमपमाणं पावेदि। पुणो सगसगविरलणाए एगरूवोवरि ट्ठिदसुहुमरासिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सगसगसुहुम-अवहारकाले ओवट्टिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते सगसगसुहुमपज्जत्ताणमवहारकाला भवंति। पुव्वं भागलद्धसंखेज्जरूवेहिं सगसगसुहुम-जीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगसुहुमअपज्जत्तअवहारकाला भवंति। चउण्हं बादराणं पुव्वुप्पादिदेहिं असंखेज्जलोगमेत्तगुणगारेहिं सगसगसामण्णअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगबादराणमवहारकाला भवंति। पुणो सुत्ताविरुद्धेण आइरिओवएसेण सुत्तं व पमाणभूदेण बादराणमद्धच्छेदणए वत्तइस्सामो। तं जहा– एगसागरोवमादो एगं पलिदोवमं घेत्तूण तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थेग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खंडं पुध ट्ठविय सेसबहुभागे तम्हि चेव पक्खित्ते बादरतेउकाइयअद्धच्छेदणयसलागा हवंति । जं पुध ट्ठविदेयखंडं तं पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे पुव्वरासिं दुप्पडिरासिं काऊण पक्खित्ते बादरवणप्फइपत्तेयसरीराणं अद्धच्छेदणयसलागा हवंति । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढवि-बादरआऊणं च वत्तव्वं । अंते अवणिदएगखंडं बादरआउकाइयअद्धच्छेदणयसलागासु पक्खित्ते बादरवाउकाइयअद्धच्छेदणयसलागा सायरोवममेत्ता जादा । बादरतेउकाइयअद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोयछेयणएहिं बादरतेउकाइयअद्धच्छेदणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊग अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा बादरतेउअद्धच्छेदणए बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरद्धछेदणएहिंतो सोहिय अवसेसरासिं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिस्स अहियद्धच्छेयणयमेत्ते अद्धच्छेयणए कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगछेदणएहि अहियद्धछेदणएसु ओवट्टिदेसु तत्थ लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए जो रासी तेण बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी होदि । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवाउकाइयाणं अप्पप्पणो अद्धच्छेदणएहिंतो बादरतेउकाइयरासी उप्पादेदव्वा । एवं बादरतेउकाइयरासिस्स सत्तारसविहा परूवणा कदा । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीररासिस्स अद्धछेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगछेदणएहिं बादरवणप्फइपत्तेगसरीरअद्धछेयणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । बादरतेउकाइयरासीदो बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे अहियद्धच्छेयणमेत्ते बादरतेउकाइयरासिस्स दुउणगुणगारे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा अब्भहियच्छेयणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा अहियच्छेयणए घणलोगछेयणएहि ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णब्भत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी होदि । बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवाउकाइएहिंतो बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे जहा तेउकाइयरासी उप्पाइदो तहा उप्पादेदव्वा । बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवाउकाइयाणं च एवं चेव सत्तारसविहा परूवणा परूवेदव्वा । पत्तेगसाधारणसरीरवदिरित्तो बादरणिगोदपदिट्ठिदरासी ण जाणिज्जदि त्ति वुत्ते सच्चं, तेहिं वदिरित्तो वणप्फइकाएसु जीवरासी णत्थि चेव, किं तु पत्तेयसरीरा दुविहा भवंति बादरणिगोदजीवाणं जोणीभूदसरीरा तव्विवरीदसरीरा चेदि । तत्थ जे बादरणिगोदाणं जोणीभूदसरीरपत्तेगसरीरजीवा ते बादरणिगोदपदिट्ठिदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भणंति। के ते ? मूलयद्दु-भल्लय-सूरण-गलोइ-लोगेसरपभादओ । उत्तं च—बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा। जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए॥ ७६॥ सुत्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमेव गहणं कथं ? ण, बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरजीवेसु चेव तेसिमंतब्भावादो । एदेसिं बादरपज्जत्ताणं परूवमाणाणं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ८८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुचदे । असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण णवण्हमसंखेज्जाणं गहणं पत्ते अणिच्छिदासंखेज्ज-पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद-असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण तल्लद्धिणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं घेत्तव्वं । तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो तेण पडिभागेण भागहारेण । एत्थ णिमित्ते तइया दट्ठवा । एदेण अवहारकालेण बादरपुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि त्ति जं वुत्तं होदि । एत्थ सुत्तसूचिदमाइरिओवएसेण भागहाराणं विसेसं भणिस्सामो । तं जहा—पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलमवहरिय लद्धं वग्गिदे बादरआउकाइयपज्जत्त-अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादरपुढविकाइयपज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे बादरवणप्फ-दिपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो होदि । कारणं, सगरासिबहुत्तणिबंधणत्ता । एदेसिमवहारकालाणं खंडिदादीणं पंचिंदियतिरिक्खभंगो । णवरि पदरंगुलभागहारो एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एदेहि अवहारकालेहि जगपदरे भागे हिदे सगसगदव्वपमाणमागच्छदि ।

बादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । असंखेज्जावलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ॥ ९१ ॥

असंखेज्जा इदि सामण्णेण उत्ते णवविहस्स असंखेज्जस्स गहणं पसत्तं तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जावलियवग्गो त्ति णिद्देसो कदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जावलियवग्गो त्ति वयणेण घणावलियादीणमुवरिमाणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमावलियघणस्स अंतो इदि णिद्देसो कदो । घणावलियाए अब्भंतरे चेव बादरतेउपज्जत्तरासी होदि त्ति उत्तं भवदि । आइरियपरंपरागओवएसेण बादरतेउपज्जत्तरासिस्स अवहारकालं भणिस्सामो । तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमवहारिय लद्धेण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी होदि । एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण भाणिदव्वाणि । तस्स पमाणं उच्चदे । पदरावलियउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ पदरावलियाओ । तं जहा—पदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियं आगच्छदि । तिस्से दुभागेण भागे हिदे दोण्णि, तिण्णिभागेण भागे हिदे तिण्णि, एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे असंखेज्जाओ पदरावलियाओ लब्भंति । कारणं गदं । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियाए ओवट्टिदाए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ पदरावलियाओ हवंति । णिरुत्ती गदा । वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वेरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमोवट्टिय लद्धेण तं चेव पदरावलियं गुणिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय पदरावलियघणे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा—पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय तेण पदरावलियघणपढमवग्गमूलं गुणिय पदरावलियघणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा—पदरावलियघणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे पदरावलियघणो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदं । उवरिमवियप्पो तिविहो गहिदादिभेएण । वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अहवा पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा—पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । तं जहा–पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण तम्हि भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । पदरावलियउवरिमवग्गस्स घणावलियउवरिमवग्गस्स घणाघणावलियउवरिमवग्गस्स च असंखेज्जदिभाएण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एत्थ सुत्तगाहा–आवलियाए वग्गो आवलियासंखभागगुणिदो दु । तम्हा घणस्स अंतो बादरपज्जत्ततेऊणं ॥ ७७ ॥

बादरवाउकाइयपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ९२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण णवविहासंखेज्जस्स गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो णिक्खेवादीहि पुव्वं व परूवेदव्वो । एदम्हादो सुत्तादो सेसअट्ठविहअसंखेज्जस्स पडिसेहे जादे वि अजहण्णाणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणेयवियप्पाओ तदो तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

असंखेज्जाणि त्ति णिद्देसो जगपदरादिहेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो । घणलोगादिउवरिमसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठं लोगस्स संखेज्जदिभागवयणं । खेत्तेण इदि वयणे तइया दट्ठव्वा । सेसं सुगमं । संखेज्जरूवेहि घणलोगे भागे हिदे बादरवाउपज्जत्तदव्वमागच्छदि त्ति वुत्तं होदि । एत्थ गाहा—जगसेढीए वग्गो जगसेढीसंखभागगुणिदो दु । तम्हा घणलोगंतो बादरपज्जत्तवाऊणं ॥ ७८ ॥ ॥ ३०९ ॥

वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पतिः कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, वनस्पतिकाया एव वनस्पतिकायिकाः । एवं सदि विग्गहगईए वट्टमाणाणं

वणप्फइकाइयत्तं ण पावेदि ? चे, ण एस दोसो, वणप्फइकाइयसंबंधेण सुह-दुक्खाणुहवणणिमित्तकम्मेणेयत्तमुवगयजीवाणमुवयारेण वणप्फइकाइयत्ताविरोहा । वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्गहगईए वट्टमाणा वि वणप्फइकाइया भवंति । जेसिमणंताणंतजीवाणमेक्कं चेव सरीरं भवदि साधारणरूवेण ते णिगोदजीवा भणंति । संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो अणंतणिद्देसो । सेसं सुगमं । अणंता इदि सामण्णवयणेण णवविहस्स अणंतस्स गहणे पत्ते अविवक्खिदस्स अट्ठविहाणंतस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ९६ ॥

जदि पुव्वरासीणमणंताणंतत्तावबोहणट्ठमागदमिदं सुत्तं, तो ण अवहिरंति कालेणेत्ति वयणं णिरत्थयमिदि चे, ण एस दोसो उभयकज्जसाहणट्ठत्तादो । पुव्वरासीणमणंताणंतत्तं च संते वि वए अणंतेण वि अदीदकालेण असमत्तिं च पदुप्पादेदि त्ति । अवसेसं सुगमं ।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसप्पिणि-उस्सपिणीपमाणेण कीरमाणे ण अणंताणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ भवंति । एदाहि अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि पुव्वुत्तचोद्दसजीवरासीओ ण अवहिरंति त्ति भणंतेण पुव्विल्लसुत्तेण एदाणं रासीणमणंताणंतत्तमदीदकालादो बहुत्तं च जाणाविदं । संपहि इमेण सुत्तेण को अपुव्वो अत्थो जाणाविदो जेणेदस्स सुत्तस्स पारंभो सफलो होज्ज ? वुच्चदे—एदाणं रासीणमदीदकालादो बहुत्तमेत्तं पुव्विल्लसुत्तेण जाणाविदं, ण तस्स विसेसो । एदेण पुण सुत्तेण तेसिं रासीणमदीदकालादो अणंतगुणत्तं जाणाविज्जदे । तं जहा—पुव्विल्लसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तदो असंखेज्जगुणो लोगो त्ति वुत्तो । कप्पस्स गुणगाररासीदो घणलोगगुणगारो अणंतगुणो । कुदो ? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसोलसवडियअप्पाबहुगवयणादो जाणिज्जदे । तम्हा सफलो एस सुत्तारंभो त्ति घेत्तव्वं । संपहि एत्थ धुवरासी उप्पाइज्जदे । तं जहा—पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चेव पमाणं वग्गं वणप्फइयकाइयभाजिदं च सव्वजीवरासिम्हि पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि त्ति वुत्तं होदि । वणप्फइकाइयवदिरित्तसेसरासिणा सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धरूवूणेण भजिदसव्वजीवरासिं तम्हि चेव पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि त्ति वुत्तं भवदि । एदेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फइकाइयरासी आगच्छदि । वणप्फइकाइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासी होदि । एदेण पुव्वुत्तअसंखेज्जलोग-वणप्फदिकाइयधुवरासिभागहारेण रूवाहिएण वणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयधुवरासी होदि । पुणो सुहुमवणप्फइ-अपज्जत्तरासिणा सुहुमवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो पुधट्ठवियपुव्विल्लसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सुहुमवणप्फदिकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेय-खंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्तधुवरासी होदि । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तएहि बादरवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे लद्धं असंखेज्जलोगं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तधुवरासी होदि । पुध ट्ठवियरासिणा रूवूणेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । एवं चेव णिगोदाणं पि धुवरासी उप्पादेदव्वो । णवरि पत्तेयसरीरेहि सह सत्त पक्खेवरासीओ भवंति । सेसविहीणं वणप्फइकाइयभंगो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ९८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो असइं परूविदो त्ति ण वुचदे । असंखेज्जा इदि सामण्णवयणेण णवण्हमसंखेज्जाणं गहणे संपत्ते अविवक्खिदे अवणिय विवक्खियपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उत्तो त्ति ण उच्चदे । तं च असंखेज्जासंखेज्जयमणेयवियप्पमिदि तस्स विसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदेण सुत्तेण जगपदरादो जगसेढीदो च उवरिम-हेट्ठिमसव्वे वियप्पा अवणिदा भवंति । 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' इमेण वयणेण जगपदरस्स अंतब्भूदसेसवियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्ठव्वा । जगपदरं कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं पदरंगुलं पि कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं चेव । तेसिं ट्ठविदसव्वभागहारा वि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्मं चेदि जाणावणट्ठमंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गवयणं । अण्णहा तस्स फलाणुवलंभादो । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलस्स संखेजदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता च भवंति त्ति वुत्तं भवदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १०१ ॥

एत्थ तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता इदि पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे । कुदो ? उवरि पुध अपज्जत्तसुत्तारंभणण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ १०२ ॥

वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तजीवे एगट्ठे कदे तसकाइयअपज्जत्ता हवंति । कथं तेसिं परूवणा पंचिंदियअपज्जत्त-परूवणाए समाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं पेक्खिऊण तहोवएसादो । अत्थदो पुणो तेसिं विसेसो गणहरेहि वि ण वारिज्जदे । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकाइया होंति । सेसरासीदो असंखेज्जलोगपमाणमवणेऊण पुध ठविय पुणो सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय एयखंडमवणेऊण तं पि पुध ठविय पुणो सेसरासिं चत्तारि समपुंजे काऊण अवणिदएयखंडं असंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते सुहुमवाउकाइया होंति । सेसेगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडा विदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमआउकाइया होंति । सेसेयखंडमसंखेज्जलोएण खंडिय बहुखंडा तदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमपुढविकाइया होंति । सेसेयखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते सुहुमतेउकाइया होंति । सग-सगरासिं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा अप्पप्पणो पज्जत्ता होंति । एयखंडं तेसिमपज्जत्ता । पुव्वमवणिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरआउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरपुढविअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउकाइयपज्जत्ता होंति । बादरआउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फइपत्तेगसरीरपज्जत्ताणमेवं चेव णेयव्वं । तदो सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तसकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव संजदासंजदा त्ति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति । सेसे संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति । अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयाणं च सत्थाणं वत्तव्वं । सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवो तसकाइयअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं बादरवप्फइपज्जत्त-पत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरपुढविपज्जत्त-बादरआउपज्जत्त-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-तसकाइयअपज्जत्ताणं च वत्तव्वं । सासणादीणमोघसत्थाणभंगो । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया । सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया । सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविपज्जत्ता । तस्सेव अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेव छट्ठो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइय-अपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तपरिहीणसुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । एगुत्तरवड्ढिकमेण एत्तिया चेव अप्पाबहुगवियप्पा । अवहार-काल-विक्खंभसूई-सेढि-पदर-लोगे कमेण पवेसिय अप्पाबहुगे कीरमाणे वि वियप्पा लब्भंति त्ति ? ण, ताणं कमप्पवेसस्स कारणा-भावा । पुढविकाइयरासिस्स संगहभेयपदुप्पायणट्ठं पुढविकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अवहारकालादिसु कमेण पवेसिज्ज-माणेसु पुढविकाइयरासी भिज्जदे । तदो एत्तिया चेव एगुत्तरवड्ढिवियप्पा होंति त्ति ट्ठिदं । अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो बादरपुढविकाइयपज्जत्तअवहारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । अवहारकालवग्गो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाउ-तेउ-वाऊणं परत्थाणं जाणिऊण वत्तव्वं । संपहि वणप्फइपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइया । सुहुमवणप्फइकाइया असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं चउत्थं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं छट्ठं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तविरहिदसुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवमट्ठमं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । संपहि एदेसु णवपदेसु णिगोदछपदाणि पविसिय पण्णारसपदअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । उवरि अट्ठपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तअसंखेज्जलोगमेत्तेण । उवरि सत्तपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरव-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि छप्पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि चत्तारि पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरवणप्फइकाइयमेत्तेण । संपहि बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर–बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्त बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुव्विल्लपण्णारसपदेसु पक्खेविय एक्कावीसपदअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा—सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपज्जत्तदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं पडिभागो । उवरि चोद्दसपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वपडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो । असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरदव्वपडिभागो । उवरि चोद्दस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । उवरि पण्णारस पदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुव्वं व । संपहि बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो तस्सेव विक्खंभसूई बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई सेढी जगपदर-लोगा इदि सत्त पदाणि एक्कावीसपदेसु पक्खिविय अट्ठावीसपदप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । एदाणि सत्त वि पदाणि एक्कवारेण पविसिदव्वाणि । कुदो ? कमप्पवेसकारणाभावा । रासिसंगहभेदपदुप्पायणट्ठं कमेण पवेसो कीरदे । ण च एत्थ रासिभेदो अत्थि, पत्तभिज्जमाणभेदपज्जंतत्तादो । सव्वत्थोवो बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेढी असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तस्सेव बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदा पडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तमेत्तेण । बादर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरअपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदअपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपज्जत्तेणूणसुहुमवणप्फदिअपज्जत्तमेत्तेण । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । एवं वणप्फइकाइयपरत्थाणप्पाबहुगं समत्तं । तसकाइयपरत्थाणस्स पंचिंदियपरत्थाणभंगो । एवं परत्थाणप्पाबहुगं समत्तं । सव्वपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तरासीहिंतो बादरवाउपज्जत्तअवहारकालो किमहिओ ऊणोवेत्ति ण जाणिज्जदे । कुदो ? संपहि उवएसाभावादो । तदो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव संजदासंजदअवहारकालो त्ति । तदो बादरतेउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । तदो संजदासंजददव्वमसंखेज्जगुणं । एवं जाणिऊण णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो बादरआउपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । बादरपुढविपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तसकाइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तसकाइयअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेगखंडेण । तसकाइयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । तदो तसकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइयअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइयविक्खंभसूई विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइयपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी संखेज्जगुणा । तसकाइयपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयदव्वं विसेसाहियं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं बादर-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुढविकाइयपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरआउपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । बादरवाउपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । लोगो संखेज्जगुणो । तदो बादरतेउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरतेउदव्वं विसेसाहियं । बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइपत्तेयसरीरदव्वं विसेसाहियं । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिददव्वं विसेसाहियं । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरपुढविकाइयदव्वं विसेसाहियं । बादरआउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरआउकाइयदव्वं विसेसाहियं । बादरवाउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवाउकाइयदव्वं विसेसाहियं । सुहुमतेउअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । तेउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमपुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमआउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । आउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमवाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । वाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमतेउपज्जत्ता संखेज्जगुणा । तेउपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमपुढविपज्जत्ता विसेसाहिया । पुढविपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमआउपज्जत्ता विसेसाहिया । आउपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया । वाउपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमतेउकाइया विसेसाहिया । तेउकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । आउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । अकाइया अणंतगुणा । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । बादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एत्थ तिण्हं चेव वचिजोगाणं संगहो किमट्ठो कदो ? ण एस दोसो । कुदो ? वचिजोग-असच्चमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगाणं दव्वालावं पडि समाणत्ताभावादो । समाणालावाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालावाणं । देवाणं जाणि दव्व-काल-खेत्त-पमाणाणि पुव्वं परूविदाणि तेसिं संखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठण्हं रासीणं पमाणं होदि । कुदो ? जदो एदे अट्ठ वि जोगा सण्णीणं चेव भवंति, णो असण्णीणं, तत्थ पडिसिद्धत्तादो । सण्णीसु वि पहाणा देवा चेव, सेसगदिसण्णीणं देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ वि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवेसु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कथं जाणिज्जदे ? जोगद्धप्पाबहुगादो । तं जहा— 'सव्वत्थोवा मणजोगद्धा । वचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा त्ति ।' पुणो एदेसिमद्धाणं समासं काऊण तेण तिण्हं जोगाणं सण्णिरासिमोवट्टिय अप्पप्पणो अद्धाहि पुध पुध गुणिदे मण-वचि-कायजोगरासीओ हवंति । तदो ट्ठिदमेदं एदे अट्ठ वि मिच्छाइट्ठिरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो त्ति ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि उत्तं । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तेहिंतो एदेसिं अत्थि महंतो भेदो । कुदो ? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं पि कधं णव्वदे ? पुव्वुत्तद्धप्पाबहुगादो । सेसं सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १०५ ॥

एत्थ ओघरासिणा संखेज्जत्तं पडि एदेसिं रासीणं समाणत्ते संते किमट्ठमोघमिदि ण परूविदं सुत्ते ? ण, एत्थ अवलंबिदपज्जवट्ठियणयत्तादो । सो वि एत्थ किमट्ठमवलंबिज्जदे ? जोगद्धप्पाबहुगमस्सिऊण रासिविसेसपदुप्पायणट्ठं । कथं जोगद्धप्पाबहुगमिदि वुत्ते वुच्चदे– 'सव्वत्थोवा सच्चमणजोगद्धा । मोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । सच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । मणजोगद्धा विसेसाहिया । सच्चवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । मोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । सच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । असच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । वचिजोगद्धा विसेसाहिया । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा त्ति'

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

एत्थ मिच्छाइट्ठी इदि एगवयणणिद्देसो, केवडिया इदि बहुवयणणिद्देसो; कथमेदाणं भिण्णाहियरणाणमेयट्ठपउत्ती ? ण, एयाणेयाणमण्णोण्णाजहवुत्तीणमेयट्ठत्ताविरोहा । सेसं सुगमं । असंखेज्जा इदि सामण्णेण णवविहस्सासंखेज्जस्स गहणे पसत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुत्तमइसुगमं । अणिच्छिदासंखेज्जासंखेज्जवियप्पपडिसेहणिमित्तमुत्तरसुत्तावदारो भवदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खेत्तेण वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदि-भागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च वीइंदियप्पहुडीणसुवरिमाणं जीवसमासाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयाणं भवदि, तेण वि-ति-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तरासीओ एगट्ठं करिय वचिजोग-कायजोगद्धासमासेण खंडिय एगखंडं वचिजोगद्धाए गुणिय पंचिंदिय-असच्चमोसवचिजोगरासिं पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगरासी होदि । एत्थ सच्चादिसेसवचिजोगरासिं पक्खित्ते वचिजोगरासी होदि । अद्धासमासस्स आवलियाए गुणगारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवेहिंतो पदरंगुलस्स हेट्ठा भागहारत्तेण ट्ठविदसंखेज्जरूवाणि जेण संखेज्जगुणाणि तेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो भागहारो भवदि ।

सेसाणं मणिजोगिभंगो ॥ १०९ ॥

जथा मणजोगरासी ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो, तहा वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु सासणादओ ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं । संपहि अप्पाबहुगबलेण पुव्विल्लसुत्तेसु वुत्तरासीणमवहारकाला परूविज्जंते । तं जहा– संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धं वग्गिदे वचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियकायजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियमिस्सअवहारकालो होदि । किं कारणं ? जेण अंतोमुहुत्तमेत्तवेउव्वियमिस्सुवक्कमणकालादो संखेज्जवस्साउवदेवाणमुवक्कमणकालो संखेज्जगुणो तेण देवाणं संखेज्जदिभागो वेउव्वियमिस्सरासी होदि । होंतो वि सच्चमणरासिस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? सच्चमणजोगद्धोवट्टिदसयलद्धासमासअंतोमुहुत्तमेत्तद्धाए आवलियगुणगारसंखेज्जरूवेहिंतो वेउव्वियमिस्सद्धोवट्टिदसंखेज्जवस्सेसु संखेज्जगुणरूवोवलंभादो । संपहि ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियअसंजदसम्माइट्ठि-

अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स । णवरि वेउव्वियमिस्सं कम्मइयं च छोड्डिय वत्तव्वं । ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तं हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मोसवचिजोगिसच्चवचिजोगिअवहारकालाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तदो सच्चमोसमणजोगि-मोसमणजोगि-सच्चमणाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहिं गुणिज्जदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं संजदासंजदाणं । णवरि ओघावहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिसंजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे वचिजोगिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सेसं पुव्वं व वत्तव्वं । पमत्तादीणं वुच्चदे । मणजोग-वचिजोग-कायजोगद्धाणं समासेण अप्पप्पणो रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण पुणो अप्पप्पणो अद्धाहि

गुणिदे एक्केक्कम्हि गुणट्ठाणे मण-वचि-कायजोगरासीओ हवंति। पुणो सच्चमोस-असच्चमोसमणजोगद्धाणं समासेण मणजोगरासिं खंडिय लद्धं च दुप्पडिरासिं काऊण अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे सच्चमोसअसच्चमोसमणजोगरासीओ हवंति। एवं वचिजोगरासिस्स वि वत्तव्वं।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अणंता। अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण। खेत्तेण अणंताणंता लोगा इदि वुत्तं होदि। सेसं सुगमं।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति जहा मणजोगिभंगो ॥ १११ ॥

एदं सुत्तं सुगमं। एत्थ धुवरासिविहाणं वुच्चदे। तं जहा—सगुणपडिवण्णमणजोगि-वचिजोगिरासिं सिद्ध-अजोगिरासिं च कायजोगिभजिदं एदेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिम्हि पक्खित्ते कायजोगिधुवरासी होदि। तं पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि। सासणादीणं सग-सगअवहारकाले संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणादिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाला भवंति। एदे अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणादीणमवहारकाला भवंति। कुदो? तिरिक्ख-मणुस्सगुणपडिवण्णरासीणं देवगुणपडिवण्णरासिस्स असंखेज्जदि-भागत्तादो। संजदासंजदाणं पुण कायजोगिअवहारकालो चेव ओरालियकायजोगिअवहारकालो होदि, तत्थ तव्वदिरित्तकायजोगाभावादो।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ॥ ११२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं। एत्थ धुवरासी उच्चदे। ओरालियकायजोगिधुवरासिं पुव्वं परूविदं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे ओरालियमिस्स-कायजोगिधुवरासी होदि। कुदो? सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो। तं जहा—तिरिक्ख-मणुस-अपज्जत्त-द्धादो पज्जत्तद्धा संखेज्जगुणा। ताणमद्धाणं समासेण तिरिक्खरासिं खंडिय लद्धमपज्जत्तद्धाए गुणिदे ओरालियमिस्सरासी हवदि। तमद्धाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि। तेण ओरालियकायजोगरासीदो ओरालियमिस्सकायजोगरासी संखेज्जगुणहीणो। ॥ ३२२॥

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्ठिणो देव-णेरइया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेण एदेसिं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमाणपरूवणाए ओगभंगो हवदि । एदेसिमवहारकालो वुच्चदे । तं जहा–ओरालियकायजोगिसासणअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? देव-णेरइएहिंतो तिरिक्ख-मणुस्सेसु उप्पज्जमाणरासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ११४ ॥

देव-णेरइयसम्माइट्ठिणो मणुसेसु उववज्जमाणा संखेज्जा चेव लब्भंति, मणुसपज्जत्तरासिस्स अण्णहा असंखेज्जत्तप्पसंगा । ओरालियमिस्सकायजोगम्हि सुत्ताविरुद्धेण आइरिओवएसेण सजोगिकेवलिणो चत्तालीसं हवंति । तं जहा–कवाडे आरुहंता वीस २०, ओदरंता वीसेत्ति २० ।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागूणो ॥ ११५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । देवाणं जो रासी सो अप्पप्पणो संखेज्जदिभाएण परिहीणो वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठीणं पमाणं होदि । कुदो ? देव-णेरइयरासिमेगट्ठं करिय मण-वचिकायजोगद्धासमासेण खंडिय लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण अप्पप्पणो अद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ हवंति । जेण मण-वचिजोगरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागा हवंति, तेण वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिरासिपमाणं संखेज्जदिभागपरिहीणदेवरासिणा समाणं भवदि । एत्थ अवहारकालो उच्चदे । देव-णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिसमासम्मि मण-वचि-वेउव्वियमिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिदेव-णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिसमासेण भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति । तेहि रूवूणेहि संखेज्जपदरंगुलमेत्तं देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ ११६ ॥

देवगुणपडिवण्णाणं रासिपमाणं अप्पप्पणो संखेज्जदिभाएण ऊणं वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णरासिपमाणं होदि । तं जहा–देव-णेरइयगुणपडिवण्णरासिम्हि अप्पप्पणो मण-वचि-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयरासीहि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णाणमवहारकाला भवंति ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं वुच्चदे । संखेज्जवस्साउअब्भंतरआवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवक्कमणकालेण जदि देवरासिसंचओ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लब्भदि, तो एदम्हादो संखेज्जगुणहीणवेउव्वियमिस्सउवक्कमणकालम्हि केत्तियमेत्तरासिसंचयं लभामो त्ति इच्छारासिणा पमाणरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि देवरासिम्हि भागे हिदे तत्थेगभागो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । सेसं सुगमं ।

सासणसम्माइट्ठि असंजदसम्माइट्ठि दव्वपमाणेण केवडिया? ओघं ॥ ११८॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेणेदेसिं पमाणपरूवणा ओघं, ओघेण समाणा त्ति वुत्तं होदि । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा—ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । ओरालियकायजोगिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । किं कारणं? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदो । केण कारणेण वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणेहिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा? ण एस दोसो, कुदो? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणत्तादो ।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया? चदुवण्णं ॥ ११९ ॥

आहारसरीरमण्णगुणट्ठाणेसु णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तगहणं कदं । सेसं सुट्ठु सुगमं ।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा ॥ १२० ॥

एत्थ आइरियपरंपरागदोवएसेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवंति । अहवा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठभावा संखेज्जजीवा हवंति, ण सत्तावीसं, सुत्ते संखेज्जणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं संखेज्जगुणत्तादो च । ण च दोण्हमेत्थ गहणं, अजहण्णअणुक्कस्ससंखेज्जस्स सव्वगहणादो सव्वअपज्जत्तद्धाहिंतो पज्जत्तद्धाणं जहण्णाणं पि संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया? मूलोघं ॥ १२१ ॥

जदो सव्वजीवरासी गंगापवाहो व्व णिरंतरं विग्गहं काऊणुप्पज्जदि, तेण कम्मइयरासिस्स मूलोघपरूवणा ण विरुद्धा । एदस्स सुत्तस्स धुवरासी वुच्चदे । कायजोगिधुवरासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । तं जहा—संखेज्जावलियमेत्तअंतोमुहुत्तकालेण जदि सव्वजीवरासिस्स संचओ होदि, तो तिण्हं समयाणं केत्तियं संचयं लभामो त्ति पमाणेण इच्छागुणिदफलमोवट्टिय अंतोमुहुत्तोवट्टियसव्वजीवरासी आगच्छदि । ॥ ३२४॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १२२ ॥

जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गहं काऊण देवेसुप्पज्जमाणा लब्भंति, देव-तिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठिणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्ख-देवेसु विग्गहं करिय उववज्जमाणा लब्भंति, तेण एदेसिं पमाणपरूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । असंजदसम्मादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिवेउव्वियमिस्सअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्मादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिअवहारकाला भवंति । कुदो ? विग्गहं करिय मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १२३ ॥

एत्थ पुव्वाइरिओवएसेण सट्ठी जीवा हवंति । कुदो ? पदरे वीस, लोगपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमाणा पदरे वीस चेव भवंति त्ति । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

होदि । सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कदे बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे एक बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । ओघसासणरासीदो ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासी संखेज्जगुणो त्ति सुत्तसिद्धो । संपहि ओघसम्मामिच्छाइट्ठिरासिस्स संखेज्जदिभागो सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी कथं ओघसासणरासीदो संखेज्जगुणो होदि त्ति उत्ते वुच्चदे– जोगद्धागुणगारादो सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिरासिस्स गुणगारो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी सेसस्स संखेज्जभागो । तं कथं णव्वदे सुत्तेण विणा ? णत्थि सुत्तं वक्खाणं वा, किंतु आइरियवयणमेव केवलमत्थि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्विय-कायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसव[चि]जोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सच्चमणजोगिसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियकायजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सुत्तेण विणा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि तीहिं वि रासीहिंतो असंखेज्जगुणहीणो त्ति कथं णव्वदे ? आइरियवयणादो । आइरियवयणमणेयंतमिदि चे, होदु णाम, णत्थि मज्झेत्थ अग्गहो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्मा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । सेसं जाणिऊण णेयव्वं । अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं सत्थाणस्स देवगइभंगो । वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीणं सत्थाणस्स पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं सत्थाणस्स ओघभंगो । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उवसामगा । असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । एवं चत्तारिमण-पंचवचिजोगीणं परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । वेउव्वियकायजोगीसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । उवरि मणजोगपरत्थाणभंगो । वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि मणजोगिपरत्थाणभंगो । सव्वत्थोवा कायजोगिणो उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । एवं ओरालियकायजोगीणं पि वत्तव्वं । ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु णत्थि सत्थाणं वा परत्थाणं वा । कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिणो । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । कम्मइयकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगिजीवा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सव्वेसिमसंजदसम्मादिट्ठीणं अवहारकालो असंखे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute; Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं त्ति। किमट्ठमेवं जाणिज्जदे ? वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिरासीणं माहप्पं ण जाणिज्जदि त्ति। पुव्वं किमिदं परूविदं ? ण, आइरियाणं तस्स अभिप्पायंतरदरिसणट्ठत्तादो। पलिदोवमादो उवरि वचिजोगिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो विसेसाहिओ। वेउव्वियकायजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं सच्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि-मणजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा। असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो विसेसाहिओ। सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो। एवं मोसमणजोगि-सच्चमणजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सच्चमणजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगीणं। तदो मणजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया। सच्चवचिजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। एवं मोसवचिजोगि-सच्चमोसवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचिजोगिविक्खंभसूचीओ संखेज्जगुणाओ। वचिजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया। सेढी असंखेज्जगुणा। तदो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। सच्चमणजोगिदव्वं संखेज्जगुणं। एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगि-दव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि। मणजोगिदव्वं विसेसाहियं। सच्चवचिजोगिदव्वं संखेज्जगुणं। एवं मोसवचिजोगि-सच्चमोसवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचिजोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि। तदो वचिजोगिदव्वं विसेसाहियं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। तदो अजोइणो अणंतगुणा। कम्मइयकायजोगिणो अणंतगुणा। ओरालियमिस्सकायजोगिणो असंखेज्जगुणा। ओरालियकायजोगिणो मिच्छाइट्ठि संखेज्जगुणा। एवं जोगमग्गणा समत्ता।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवीहि सादिरेयं ॥ १२४ ॥

देवगइमग्गणाए देवीणं पमाणमेत्तियं होदि त्ति सुत्तम्हि ण वुत्तं, तो कथं जाणिज्जदे इत्थिवेदरासी देवीहिंतो सादिरेगो इदि ? जदि वि एत्थ ण वुत्तो तो वि 'ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ। पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा। भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ। वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ। जोइसियदेवा संखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ त्ति' एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे जहा देवाणं संखेज्जा भागा देवीओ होंति त्ति। तिरिक्खजोणिणीओ देवीणं संखेज्जदिभागो ताओ देवीसु पक्खित्ते इत्थिवेदरासी होदि त्ति कट्टु देवीहि सादिरेयमिदि तासिं पमाणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुत्ते वुत्तं । तासिमवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो । देवअवहारकालम्हि वत्तीसरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिविय तिरिक्ख-मणुसित्थिवेदागमणणिमित्तं तत्तो एक्कस्स पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाए अवणिदे इत्थिवेदअवहारकालो होदि । वत्तीसरूवाणि देवअवहारकालस्स भागहारो होंति त्ति कथं णव्वदे ? तेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणा हवंति त्ति आइरियपरंपरागयुवदेसादो णव्वदे । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे इत्थिवेदरासी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १२५ ॥

जेणेदे चदुगुणट्ठाणिणो जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तेणदेसिं परूवणा ओघं होदि । ओघपमाणादो ऊणइत्थिवेद-गुणपडिवण्णाणं कथमोघत्तं जुज्जदे ? ण, ओघमिव ओघमिदि उवयारेण तिस्से ओघत्तसिद्धीदो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? कारिसग्गिसमाणइत्थिवेदेण दज्झंतहिय-याणमित्थीणं सणिदाणाणं पउरं सम्मत्तपरिणामासंभवादो । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहार-कालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदा-संजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ हवंति ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया ?
संखेज्जा ॥ १२६ ॥

पमत्तादीणं ओघरासिं संखेज्जखंडे कए एयखंडमित्थिवेदपमत्तादओ भवंति । इत्थिवेदउवसामगा दस १०, खवगा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवेहि सादिरेयं ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीणं संखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवंति । तेसु देवेसु पक्खित्तेसु देवेहि सादिरेयं पुरिसवेदरासिपमाणं होदि । एत्थ अवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो । देवअवहारकालं तेत्तीसरूवेहि गुणिय तत्तो एक्कपदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं काऊण तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे तत्थेव पक्खित्ते पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १२८ ॥

इत्थिवेद-णवुंसयवेदरासिपरिहीणो ओघरासी पुरिसवेदस्स भवदि । कथं तस्स ओघत्तं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओघमिव ओघमिदि तस्स ओघत्तसिद्धीदो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघपमत्तादिसु अप्पणो संखेज्जभागभूदइत्थि-णवुंसयवेदरासिपमाणमवणिदे पुरिसवेदपमत्तादओ भवंति ।

णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १२९ ॥

णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिणो अणंतत्तणेण ओघमिच्छाइट्ठीहि समाणा । सासणादओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति ओघत्तमेदेसिं जुज्जदे । एत्थ अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा—इत्थि-पुरिसवेदसगुणपडिवण्णे अवगदवेदजीवे च णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासिभजिदमेदेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते धुवरासी होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १३० ॥

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तो णवुंसयवेदपमत्तादिरासी होदि । कुदो ? इट्ठपागग्गिसमाणेण णवुंसयवेदोदयेण सणिदाणेण पउरं सम्मत्त-संजमादीणमुवलंभाभावादो । ओघपमाणं ण पावेंति त्ति जाणावणट्ठं सुत्ते संखेज्जणिद्देसो कओ । णवुंसयवेदउवसामगा पंच ५, खवगा दस १० । इत्थिवेद-णवुंसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिया चेव होंति त्ति संपहि उवएसो णत्थि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया ? पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअवगदवेदजीवसंचयपदुप्पायणसुत्तेणेव पज्जत्तं किमणेण अवगदवेदपवेसपरूवणासुत्तेणेत्ति ? ण एस दोसो, उवसमसेढिपवेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जायपवेसो त्ति जाणावणफलत्तादो । तिण्हमिदि णेदं छट्ठीबहुवयणं किंतु पढमाबहुवयणमिदि घेत्तव्वं, छट्ठिविहत्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावादो । कथमुवसंतकसायस्स उवसामगववएसो ? ण, दव्वट्ठियणयं पडुच्च उवसंतकसायस्स वि उवसामगववएसं पडि विरोहाभावादो । एत्थ पवेसविधी उवसमसेढिपवेसणेण तुल्ला । एदेण खवगअवगदवेदपवेसो वि खवगसेढिपवेसेण तुल्लो त्ति जाणाविदं । कुदो ? खवगअवगदवेदपवेसं पडि पुध सुत्तारंभाभावादो ।

अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १३२ ॥

एत्थ संखेज्जा त्ति ण भणिय ओघमिदि वत्तव्वं ? ण, अवलंबियपज्जयत्तादो । सेसं सुगमं ।

तिण्णि खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥

ओघादो एदेसिं पमाणं पडि विसेसाभावा ओघत्तं जुज्जदे ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुत्तं । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिणो भवंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अवगदवेदा हवंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वेसिमसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमोघं । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं सत्थाणं देवमिच्छाइट्ठीणं भंगो । सासणादि जाव संजदासंजदाणं सत्थाणमोघं । णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठिसत्थाणं णत्थि । सासणादीणं सत्थाणमोघं । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा इत्थिवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव असंजदसम्माइट्ठिदव्वं त्ति। तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं। तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं। एवं चेव णवुंसयवेदस्स। णवरि पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा त्ति वत्तव्वं। सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा णवुंसयवेदुवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदुवसामगा तत्तिया चेव। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। पुरिसवेदुवसामगा संखेज्जगुणा। तेसिं खवगा संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। इत्थिवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। पुरिसवेदअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। अवगतवेदा अणंतगुणा। णवुंसयवेदमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। वेदगुणपडिवण्णगुणगारो ण णव्वदि त्ति के वि आइरिया भणंति। तेसिमभिप्पाएण सव्वपरत्थाणं वुच्चदे। सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा तिवेदगदा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। संजदा तिवेदा विसेसाहिया। तिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। उवरि इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तदुवरि पुव्वं व वत्तव्वं। एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १३५ ॥ ॥ ३३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण च मिच्छाइट्ठी गुणपडिवण्णा च

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओघमिच्छाइट्ठि-गुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति कट्टु सुत्ते एदेसिं परूवणा ओघमिदि वुत्ता। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो। तं कथं? चदुकसायमिच्छाइट्ठीसु तिरिक्खरासी पहाणो, सेसगदिरासिस्स तदणंतभागत्तादो। तत्थ वि चदुकसायमिच्छाइट्ठिरासी ण अण्णोण्णेण समाणो। कुदो? तदद्धाणं सारिच्छाभावा। तं जहा— तिरिक्ख-मणुसेसु सव्वत्थोवा माणद्धा। कोधद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण। मायद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? पुव्वं परूविदो। लोभद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो। ण च अद्धासु असरिसासु तत्थ ट्ठिदरासीणं समाणणिग्गम-पवेसाणं संताणं पडि गंगापवाहो व्व अवट्ठिदाणं सरिसत्तं जुज्जदे। तदो चउण्हमद्धाणं समासं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिरासिम्हि भागे हिदे लद्धं चउप्पडिरासिं करिय माणादीणमद्धाहि पडिवाडीए गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति। एदमट्ठपदं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिस्स रासिस्स अवहारकालो वुच्चदे— चउकसाइगुणपडिवण्णपमाणमकसाइपमाणं च चदुकसाइमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते चदुकसाइधुवरासी होदि। तं चदुहि गुणिदे कसायरासिचदुब्भागस्स भागहारो होदि। पुणो तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइधुवरासी होदि। पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण कसायचउब्भागधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइधुवरासी होदि। पुणो कोधकसाइभागहारमब्भहियं काऊण पुव्विल्लधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइधुवरासी होदि। कसायचउब्भागधुवरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइधुवरासी होदि। एदेहि अवहारकालेहि सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति। तिण्हं कसायमिच्छाइट्ठीणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स चउब्भागो देसूणो। लोभकसाइमिच्छाइट्ठिपमाणं चदुब्भागो सादिरेगो। गुणपडिवण्णेसु देवरासी पहाणो। कुदो? सेसगदिरासिस्स तदसंखेज्जदिभागत्तादो। देवेसु चउक्कसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तदद्धाणं समाणत्ताभावादो। तं जहा— देवेसु सव्वत्थोवा कोधद्धा। माणद्धा संखेज्जगुणा। मायद्धा संखेज्जगुणा। लोभद्धा संखेज्जगुणा। णेरईएसु सव्वत्थोवा लोभद्धा। मायद्धा संखेज्जगुणा। माणद्धा संखेज्जगुणा। कोधद्धा संखेज्जगुणा। एत्थ देवगदिकसाइअद्धाणं समासं काऊण ओघअसंजदरासिं खंडिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवाडीए कोधादि अद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति। एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं पि कायव्वं। संजदासंजदाणं पुण तिरिक्खगइअद्धासमासं काऊण ओघसंजदासंजदरासिं खंडिय चदुप्पडिरासिं करिय कमेण कोधादिअद्धाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति। एदेण वीयपदेण एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे। तं जहा— ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते लोभकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मायकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तम्हि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संखेज्जरूवेहिं गुणिदे माणकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे कोधकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं पि वत्तव्वं । ओघसंजदासंजदअवहारकालं चदुहि गुणिय चदुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगरासिमसंखेज्जेहि रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणियभागहारं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण चदुगुणिदअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि । चदुगुणभागहारमसंखेज्जरूवेहिं खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अभणिय संखेज्जा इदि किमट्ठं वुच्चदे ? ण एस दोसो, कुदो ? ओघपमत्तादिरासिं चदुण्हं कसायाणं पडिभागेण चउविहा विहत्ते तत्थ ओघरासिपमाणाणुवलंभादो । कथमेत्थ विहज्जदे ? वुच्चदे– चउण्हं कसायाणमद्धासमासं करिय चदुप्पडिरासिं अप्पप्पणो अद्धाहि ओवट्टिय लद्धसंखेज्जरूवेहि इच्छिदरासिम्हि भागे हिदे सग-सगरासीओ भवंति । एत्थ चोदगो भणदि– पमत्तादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाविसेसाओ त्ति । आवलियअसंखेज्जदिभागमेत्तद्धाविसेसत्ते वि ण रासीणं विसेसाहियत्तं विरुज्झदे, पवेसांतराणं संखाणियमाभावादो । तेणेत्थ तेरासियं ण कीरदे ? ण, पमत्तादिसु माणकसायरासी थोवो । कोधकसायरासी विसेसाहिओ । मायकसायरासी विसेसाहिओ । लोभकसायरासी विसेसाहिओ ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा मूलोघं ॥ १३७ ॥

खवगोवसामगसुहुमसांपराइएसु सुहुमलोभकसायवदिरित्तसांपरायाभावादो ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १३८ ॥

एत्थ भावकसायाभावं पेक्खिऊण उवसंतकसाया अकसाइणो ण दव्वकसायाभावं पडि, उदओदीरणोकट्टणुक्कट्टण-परपयडिसंकमादिविरहिददव्वकम्मस्स तत्थुवलंभादो । चउव्विहदव्वकम्मभेएण चउव्विहत्तो मूलोघुवसंतकसायरासी कथं पादेक्कं मूलोघपमाणं पावदे ? ण एस दोसो, कुदो ? वुच्चदे– ण ताव दव्वकसायविसेसणमेत्थ संभवइ, तेण अहियाराभावा । ण भावकसायविसेसणं पि संभवइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसंतकसायरासी ण चदुविहा विहज्जदे तो चेव मूलोघत्तं पि तस्स ण विरुज्झदि त्ति ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ १३९ ॥

एत्थ समुच्चयट्ठं 'च'-सद्दोवादाणं कायव्वं ? ण, च-सद्देण विणा वि तदट्ठोवलद्धीदो। एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणमेगजोगकरणं किमट्ठमिदि चे, ण एस दोसो, दव्वपमाणं पडि एदेसिं गुणट्ठाणाणं पच्चासत्तिं पेक्खिय एगत्तविरोहाभावादो। ण च ओघत्तं विरुज्झदे, णिव्विसेसणत्तादो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि-अजोगिकेवलीणमेगमेव सुत्तं किण्ण कीरदे, केवलित्तं पडि पच्चासत्तिसंभवादो ? ण, दोण्हं पमाणगदपहाणपच्चासत्तीए अभावादो। कथं पमाणस्स पधाणत्तं ? तेणेत्थ अहियारादो। सेसं सुगमं। भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा चउकसायमिच्छाइट्ठिणो भवंति। एगखंडमकसाइणो गुणपडिवण्णा च। पुणो चदुकसायमिच्छाइट्ठिरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं पुध ट्ठविय सेसबहुखंडे चत्तारि समपुंजे करिय ट्ठवेदव्वं। पुणो अवणिदएयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोधकसाइमिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसायमिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकसाया होंति। एत्तो उवरि कसायगुणगारेहिंतो सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिगुणगारो संखेज्जगुणो त्ति उवएसमवलंबिय भागाभागो वुच्चदे। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमखंखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमखंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसासणसम्माइट्ठिरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउकसायसंजदासंजदरासी होदि। तदो संजदासंजदरासिस्स असंखेज्जदिभागमवणिय सेसं चत्तारि समपुंजे करिय ट्ठवेदव्वं। पुणो पुव्वमवणिदएयखंडमसंखेज्जखंडं करिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडे करिय बहुखंडे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसमसंखेज्जखंडं करिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदरासी होदि। सेसं जाणिऊण णेयव्वं। अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो। मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो मिच्छाइट्ठिधुवरासिस्स अधिगत्तादो। असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति सत्थाणस्स मूलोघभंगो। परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा कोधकसाइउवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो कोधकसाइमिच्छाइट्ठिरासी अणंतगुणो। एवं माण-माया-लोभाणं पि परत्थाणं वत्तव्वं। अकसाईसु सव्वत्थोवा उवसंतकसाया। खीणकसाया संखेज्जगुणा। अजोगिकेवली तत्तिया चेव। सजोगिकेवली संखेज्जगुणा। सिद्धा अणंतगुणा। सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा माणकसायउवसामगा। कोधकसायउवसामगा विसेसाहिया। मायकसायउवसामगा विसेसाहिया। लोभकसायउवसामगा विसेसाहिया। माणकसाइखवगा विसेसाहिया। कोधकसाइखवगा विसेसाहिया। मायकसाइखवगा विसेसाहिया। लोभकसाइखवगा विसेसाहिया। एवं जम्हि गुणट्ठाणे चत्तारि कसाया संभवंति तमस्सिऊण भणिदं। अण्णत्थुवसामएहिंतो खवगा दुगुणा चेव। संसारत्था अकसाया संखेज्जगुणा। माणकसायअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। कोधकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। मायकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया। माणकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। कोधकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। मायकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया। लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। मायकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। (माणकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो।) कोधकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। लोभकसायसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। मायकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। कोधकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। माणकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं अवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। अकसाई अणंतगुणा। माणकसाइमिच्छाइट्ठि अणंतगुणा। कोधकसाइमिच्छाइट्ठि विसेसाहिया। मायकसाइमिच्छाइट्ठि विसेसाहिया। लोभकसाइमिच्छाइट्ठिविसेसाहिया। एवं कसायमग्गणा समत्ता।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा–ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासीहिंतो मदिसुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासिणो ण एक्केण वि जीवेण ऊणा भवंति, दुविहण्णाणविरहिय-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमभावादो । विभंगणाणिणो मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो अत्थि त्ति ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहिंतो मदि-सुदअण्णाणमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो ऊणा होंति त्ति ओघपमाणमेदेसिं णत्थि त्ति चे ण, मदिसुदअण्णाणिविरहिदविभंगणाणीणमणुवलंभादो तदो ओघमिदि सुट्ठु घडदे । एत्थ मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिस्स धुवरासी वुच्चदे । तं जहा–सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव मदि-सुदअण्णाणि-सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

विभंगणाणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? देवेहि सादिरेयं ॥ १४२ ॥

देवमिच्छाइट्ठिणो णेरइयमिच्छाइट्ठिणो च सव्वे विहंगणाणिणो, विहंगणाणभवपच्चयसमण्णिदत्तादो । तिरिक्खविहंगणाणिणो वि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंता वि असंखेज्जसेढिमेत्ता भवंति । तासिं सेढीणं विक्खंभसूई असंखेज्जघणंगुलमेत्ता । केत्तियमेत्ताणि घणंगुलाणि ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तदो देवमिच्छाइट्ठिरासीदो विहंगणाणमिच्छाइट्ठिरासी विसेसाहिओ भवदि । विहंगणाणविरहिददेवापज्जत्तरासिं णेरइय-तिरिक्खविहंगणाणीहिंतो असंखेज्जगुणं देवेहिंतो अवणिदे देवेहिं सादिरेयत्तं ण घडदि त्ति णासंकणिज्जं, विहंगणाणिसद्दस्साविवित्तिकरणेण विहंगणाणिदेवाणं गहणादो । वेउव्वियमिस्सरासिस्स सांतरत्तेण, देवापज्जत्ताणं सव्वकालमसंभवा च । एदस्स अवहारकालो वुच्चदे । तं जहा–देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालम्हि एगपदरंगुलं घेत्तूण असंखेज्जखंडं करिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पक्खित्ते विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइट्ठिरासीदो जदि वि एसो सासणसम्माइट्ठिरासी अप्पणो असंखेज्जदिभाएण तिरिक्ख-मणुसदुणाणिपमाणेण हीणो, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तणेण दोण्हं पि रासीणं पच्चासत्ती अत्थि त्ति ओघमिदि वुच्चदे ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४४ ॥

आभिणिबोहिय-सुदणाणीणं पमाणस्स ओघत्तं जुज्जदे, तेहि विरहिद-असंजदसम्माइट्ठिआदीणमणुवलंभादो । ण पुण ओहिणाणीणं ओघत्तं जुज्जदे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख-मणुस्ससम्माइट्ठीणमुवलंभा ? ण एस दोसो, बहुसो दत्तुत्तरादो । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव भवदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे मिस्समदि-सुदअण्णाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते विहंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । अहवा ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ हवंति । पमत्तादीणं पमाणं ओघमेव भवदि, विसेसाभावादो । ओहिणाणिपमत्तादीणं पि ओघत्तं पत्ते तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता भवंति । किंतु एत्तिया इदि परिप्फुडं ण णव्वंति, संपहियकाले गुरूवएसाभावादो । णवरि ओहिणाणिणो उवसामगा चोद्दस १४, खवगा अट्ठावीस २८ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणट्ठाणेसु मणपज्जवणाणिणो तत्थट्ठियदुणाणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता भवंति, लद्धि संपण्णरासीणं बहूणमसंभवादो। ते च एत्तिया इदि सम्मं ण णव्वंति, संपहियकाले उवएसाभावादो। णवरि मणपज्जवणाणिणो उवसामगा दस १०, खवगा २०।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७ ॥

सुगममिदं सुत्तं। भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो भवंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो भवंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे ओहिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठी होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्ज-दिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिसंजदासंजदा होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंजदासंजदा होंति। सेसं जाणिय वत्तव्वं। अहवा सव्वजी-वरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति। सेसमसंखे-ज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति। सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणि सासणसम्माइट्ठिणो होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसंजदासंजदा होंति। सेसमसंखे-ज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसंजदासंजदा होंति। सेसं जाणिय वत्तव्वं। अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण। मदि-सुदअण्णाणि-मिच्छाइट्ठीसु सत्थाणं णत्थि। कारणं पुव्वभणिदं। सासणसम्माइट्ठिसत्थाणप्पाबहुगे ओघभंगो। विभंगणाणिमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणभंगो। तिणाणीसु मदि-सुदणाणीसु च असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदेसु सत्थाणमोघं। सत्थाणप्पाबहुगं गदं। परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। मिच्छाइट्ठिदव्वमणंतगुणं। सव्वत्थोवो विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। सव्वत्थोवा मदि-सुदणाणिणो चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं। पलिदोवममसंखेज्जगुणं। एवं चेव ओहिणाणिपरत्थाणं पि वत्तव्वं। मणपज्जवणाणिणो सव्वत्थोवा उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। केवलणाणीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली। अजोगिकेवली अणंतगुणा। परत्थाणं गदं। सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १०। ओहिणाणिउवसामगा विसेसाहिया १४। मणपज्जवणाणिखवगा विसेसाहिया २०। ओहिणाणिखवगा विसेसाहिया २८। आभिणिबोहियसुदणाणि उवसामगा संखेज्जगुणा। खवगा संखेज्जगुणा। मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया। मणपज्जवणाणिणो पमत्ता विसेसाहिया। तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया। कुदो एदमवगम्मदे ? उवसम-खवगसेढिम्हि एदेसिं दोण्हं णाणाणं एदेणेव कमेण पमाणपरूवणादो। कज्जं कारणाणुरूवं सव्वहा ण होदि त्ति ण वत्तव्वं, कत्थ वि कारणाणुरूवकज्जदंसणादो। ण जिणंतरेण वभिचारो, तस्स पडिणियदतित्थपडिबद्धत्तादो। आभिणिणाणिसुदणाणि अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। तत्थेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ। दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। केवलणाणिणो अणंतगुणा। मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। एवं णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघदव्वादो ण किंचि ऊणमधियं वा अत्थि, भेदणिबंधणविसेसाभावादो। तदो एत्थ ओघत्तं जुज्जदे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघं ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघत्तं ण विरुज्झदे । कुदो ? दव्वट्ठियणयावलंबणेण पडिगहिदेगजमा सामाइयसुद्धिसंजदा वुच्चंति, ते चेय पज्जवट्ठियणयावलंबणेण ति-चदु-पंचादिभेएण पुविल्लजमं फालिय पडिवण्णा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा णाम । तदो दो वि रासीओ ओघरासिपमाणादो ण भिज्जंति त्ति ओघत्तं जुज्जदे । एत्थ चोदगो भणदि— उभयणयावलंबणं किं कमेण भवदि, आहो अक्कमेणेत्ति ? ण ताव अक्कमेण, विरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगवं ववहाराणुववत्तीदो । अह कमेण, ण सामाइयसुद्धिसंजदा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा भवंति, एगत्तज्झवसायाणं भेदज्झवसाइत्तविरोहादो । छेदोवट्ठावणासुद्धिसंजदा वि ण सामाइयसुद्धिसंजदा तक्काले भवंति, भेदज्झवसायाणमभेदज्झवसाइत्तविरोहादो । तदो अक्कमेण दोहि णएहि पादिदोघसंजदरासी तत्थेगेण भागेण ओघपमाणं ण पावेदि त्ति ओघत्तं ण जुज्जदे । अथ कदाइ सव्वो संजदरासी अक्कमेण एक्कं चिय णयमवलंबिऊण जदि चिट्ठदि त्ति इच्छिज्जदि, तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ हवंति । ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरत्तुवलंभादो । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा— दव्वट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं एक्केक्को चेव जमो होदि त्ति सामाइय-सुद्धिसंजदाणं ओघसंजदपमाणं होदि । पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं पादेक्कं पंच पंच जमा हवंति त्ति छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ओघसंजदरासिपमाणं पावेंति तेणेदेसिमोघत्तं जुज्जदे । ण च एगं चेवज्झवसाया एयंतेण अप्पप्पणो पडिवक्खणिरवेक्खा, तेसिं दुण्णयत्तावत्तीदो । तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेय छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति । जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसंजदा होंति त्ति । तदो दोण्हं रासीणमोघत्तं जुज्जदे ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १५० ॥

ओघसंजदपमाणं ण पावेंति त्ति भणिदं होदि । तो वि ते केत्तिया त्ति भणिदे उच्चदे, तिरूवूण-सत्तसहस्समेत्ता हवंति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारपदुप्पायणट्ठं, अवरेगं गुणट्ठाणणिद्देसो । तेसिं पमाणं तिरूवूण-णवसदमेत्तं । वुत्तं च—

सत्तादि छक्कंता दोणवमज्झा य होंति परिहारा । सत्तादी अट्ठंता णवमज्झा सुहुमरागा दु ॥ ७९ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चउट्ठाणं ओघं ॥ १५२ ॥

चउट्ठाणमिदि कथमेगवयणणिद्देसो ? ण, चउण्हं पि जादीए एगत्तमवलंबिय तधोवदेसादो । सेसं सुगमं ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुत्तं ।

असंजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? ओघं ॥ १५४ ॥

चदुण्हमसंजदगुणट्ठाणाणं ओघचदुगुणट्ठाणेहिंतो अविसिट्ठाणमोघत्तं जुज्जदे । एत्थ अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं चसव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । सासणादीणमवहारकालुप्पत्ती ओघसमाणा । एवं संजदासंजदाणं पि । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जहाक्खादसुद्धिसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा परिहारया होंति । सेसेगखंडं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा होंति । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणे पयदं । संजदाणं सत्थाणं णत्थि, अवहाराभावादो । मिच्छाइट्ठीणं पि सत्थाणं णत्थि, रासीदो भागहारस्स बहुत्तादो । सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा त्ति एदेसिं सत्थाणस्स ओघभंगो । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदउवसामगा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । संजदासंजदेसु परत्थाणं णत्थि । असंजदेसु सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा । परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वि तुला संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । एवं संजममग्गणा गदा ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो वक्खाणिदत्तादो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १५६ ॥

अइथूल-थूल-सुहुमपरूवणाओ तिण्णि वि परिवाडीए किमट्ठं वुच्चंति, सुहुमपरूवणमेव किण्ण वुच्चदे ? ण, मेहावि-मंदाइमंद-मेहाविजणाणुग्गहकारणेण तहोवएसा । सेसं सुगमं ।

खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १५७ ॥

संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीणं पडिभागो होदि । एदेण पडिभागेण चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवहिरदि । एत्थ किं चक्खुदंसणावरणकम्मक्खओवसमा जीवा चक्खुदंसणिणो वुच्चंति, आहो चक्खुदंसणोवओगसहिदजीवा त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण होदव्वं, चदु-पंचिंदियापज्जत्तरासीणं पाहण्णादो । ण विदियपक्खो वि, चक्खुदंसणट्ठिदीए अंतोमुहुत्तप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । असंते चक्खिंदियपडिघादे चक्खुदंसणुवजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओवसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण वुच्चंति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहणं ण भवदि, तेसु चक्खिंदियणिप्पत्तिविरहिदेसु चक्खुदंसणोवओगसहिदतक्खओवसमाभावादो । संखेज्जसागरोवममेत्ता चक्खुदंसणिट्ठिदी वि ण विरुज्झदे, खओवसमस्स पहाणत्तब्भुवगमादो । तदो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि त्ति सिद्धं, चदु-पंचिंदियपज्जत्तरासीणं पहाणत्तब्भुवगमादो ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५८ ॥

कुदो ? चक्खुदंसणक्खओवसमरहिदगुणपडिवण्णाभावादो । ॥ ३४३॥

अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं ? अचक्खुदंसणखओवसमविरहिदछदुमत्थजीवाभावादो । संपहि अचक्खुदंसणीणं धुवरासी वुच्चदे । तं जहा– सिद्ध-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरसगुणपडिवण्णरासिमचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सासणादीणमोघम्हि भणिदअवहारो चेव वत्तव्वो, विसेसाभावादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १६० ॥

ओहिदंसणविरहिदओहिणाणीणमभावादो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । जो ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो सो चेव अचक्खुदंसणि-चक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओहिदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १६१ ॥

केवलणाणविरहिदकेवलदंसणाभावादो । सुद-मणपज्जवणाणाणं किमिदि ण दंसणं ? वुच्चदे—ण ताव सुदणाणस्स दंसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुव्वत्तादो । ण मणपज्जवणाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तथाविधत्तादो । जदि सरूवसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थित्तं पसज्जदे चेन्न, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात । ण च केवलिम्हि एसो कमो, तत्थ अक्कमेण णाण-दंसणपउत्तीदो । ण च छदुमत्थेसु दोण्हमक्कमेण वुत्ती अत्थि, 'हंदि दुवे णत्थि उवजोगा' त्ति पडिसिद्धत्तादो । ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुव्वं णाणं, ण णाणपुव्वं तु दंसणं अत्थि' इदि वयणादो । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा अचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणिअचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । तत्थ तस्सेव असंखेज्जदिभागमवणिदे ओहिदंसणिदव्वं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसं जाणिय वत्तव्वं । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्थाणे पयदं । चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिसत्थाणस्स तसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो । सासणादीणं सत्थाणस्स ओघसत्थाणभंगो । परत्थाणे पयदं । अचक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि ओघपंचिंदियं व वत्तव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । एवं चेव चक्खुदंसणिपरत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । णवरि पलिदोवमादो उवरि चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणिभंगो । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा ओहिदंसणउवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिउवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । ओहिदंसण-अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुदंसणसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । दुदंसणसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । दुदंसणसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण वत्तव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । केवलदंसणी अणंतगुणा । अचक्खुदंसणी अणंतगुणा । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ॥ १६२ ॥

अणंतत्तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण च ओघेण साधम्ममत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं । विसेसे अवलंबिज्जमाणे पुण णत्थि समाणत्तं, सेसलेस्सोवलक्खियजीवाणं पयदगुणट्ठाणेसु असंभवादो । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । तं जहा– सिद्ध-तेरसगुणपडिवण्ण-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्समिच्छाइट्ठिरासिं किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिरासिभजिदमेदेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते हि किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । तं तीहि रूवेहि गुणेऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काउलेस्सियधुवरासी होदि । पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण तिगुणधुवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सियधुवरासी होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे किण्हलेस्सियधुवरासी होदि । काउ-णीललेस्सरासीओ सव्वजीवरासिस्स तिभागो देसूणो । किण्हलेस्सियरासी तिभागो सादिरेओ । गुणपडिवण्णाणमवहारकालं पुरदो भणिस्सामो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? जोइसियदेवेहि सादिरेयं ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे। जोइसियदेवा पज्जत्तकाले सव्वे तेउलेस्सिया भवंति। अपज्जत्तकाले पुण ते चेय किण्ह-णील-काउ-लेस्सिया होंति। ते च पज्जत्तरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता। वाणवेंतरदेवा वि पज्जत्तकाले तेउलेस्सिया चेव होंति। ते च जोइसिय-देवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता होंति। एदेसिमपज्जत्ता किण्ह-णील-काउलेस्सिया भवंति। ते च सगपज्जत्ताणं संखेज्जदिभागमेत्ता। मणुस-तिरिक्खेसु वि तेउलेस्सिय-मिच्छाइट्ठिरासी पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो तिरिक्खपम्मलेस्सियरासीदो संखेज्जगुणो अत्थि। एदे तिण्णि वि रासीओ भवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठीहि सह गदाओ जोइसियदेवेहि सादिरेया हवंति। एदेसिमवहारकालो वुच्चदे। तं जहा— जोइसियअवहारकालादो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागे अवणिदे देवतेउलेस्सियअवहारकालो होदि। तदो एक्कपदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं करिय एगखंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पक्खित्ते तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। सेसं जोइसियभंगो।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेस्सासु ट्ठिदओघअसंजदसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सरिसो एक्काए तेउलेस्साए ट्ठिदरासी कथं होदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण सरिसत्तमवेक्खिय ओघोवएसादो।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १६५ ॥

ओघरासिपमाणं ण पूरेदि त्ति जं वुत्तं होदि।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुत्तं। एदस्स अवहारकालो वुच्चदे। पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिंदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि। तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सियाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । कुदो ? पम्मलेस्सासहगदजीवाणं पउरं संभवाभावादो ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६९ ॥

एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागवयणं सावहारपरूवणं ओघपमाणपडिसेहफलं । कुदोवगम्मदे ? संगहपरिहारेण पज्जवणयावलंबणादो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णीललेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सग-सगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सग-सगसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । ते संखेज्जरूवेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । णवरि सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सग-सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासिणो हवंति ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १७० ॥

एदे दो वि रासिणो ओघपमाणं ण पावेंति, तेउ-पम्मसुक्कलेस्सासु अक्कमेण विहज्जिय ट्ठिदत्तादो । सेसं सुगेज्झं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १७१ ॥

कुदो ? अण्णलेस्साभावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेवणिमित्तजोगकसायाभावा । जोगस्स कथं लेस्साववएसो ?

ण, लिंपदि त्ति जोणस्स वि लेस्सावएससिद्धीदो। भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा तिलेस्सिया होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिया होंति। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तेउलेस्सिया होंति। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पम्मलेस्सिया। सेसेगभागो सुक्कलेस्सिया। तिलेस्सियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थेगखंडं तदो पुध ट्ठविय सेसे बहुभागे घेत्तूण तिण्णि समपुंजे करिय अवणिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते किण्हलेस्सिया। सेसेगखंडमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते णीललेस्सिया। सेसेगखंडं तदियपुंजे पक्खित्ते काउलेस्सिया। तदो काउलेस्सियरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसेगखंडं सासणसम्माइट्ठिणो। एवं णील-किण्हलेस्साणं पि भागाभागं कायव्वं। तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा। सुक्कलेस्सियरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो। सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा। सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ। अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा। सासणादीणमोघभंगो। सव्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो। विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। सासणादीणमोघं। एवं चेव पम्म-सुक्कलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं। सत्थाणं गदं। परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। एवं णील-किण्हाणं। सव्वत्थोवा तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवरि सत्थाणभंगो। एवं पम्मलेस्साए।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुक्कलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । परत्थाणं गदं । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुक्कलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । काउलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । किण्हलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । णीललेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । तेउलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुक्कलेस्सियसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुक्कलेस्सियसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अलेस्सिया अणंतगुणा । काउलेस्सिया अणंतगुणा । णीललेस्सिया विसेसाहिया । किण्हलेस्सिया विसेसाहिया । एसो सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरूवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तजुत्ती वक्खाणं वा । एवं लेस्साणुवादो गदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १७२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिभजिदं तेसिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता ॥ १७३ ॥

एत्थ अणंतवयणं संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं । एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण वुत्तं ? ण एस दोसो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा । वयाभावो वि तेसिं मोक्खाभावादो अवगम्मदे । खेत्तपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडीकरणट्ठं खेत्तपमाणं वुच्चदे । एसो पुण अभवसिद्धियरासिपमाणं सुट्ठु परिप्फुडो । कुदो ? अभवसिद्धियरासिपमाणं जहण्णजुत्ताणंतमिदि सयलाइरियजयप्पसिद्धादो । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिणो । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अभवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमोघभंगो । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । भवसिद्धियसत्थाणं परत्थाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं । अभवसिद्धियसत्थाणं णत्थि । सव्वपरत्थाणे सव्वत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं जाव पलिदोवमं ति णेयव्वं । तदो अभवसिद्धिया अणंतगुणा । णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अणंतगुणा । भवसिद्धियमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १७४ ॥

केण कारणेण ? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादो । ण हि सामण्णवदिरित्तो तव्विसेसो अत्थि । तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तव्वा ।

खइयसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ १७५ ॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्ठिरासी ओघअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो, तो वि ओघपरूवणं लभदे; पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तं पडि विसेसाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १७६ ॥

पुव्वसुत्तादो खइयसम्माइट्ठि त्ति अणुवट्टदे । ओघपमाणं ण पूरेदि त्ति जाणावणट्ठं संखेज्जवयणं । संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो कथं संखेज्जा ? ण, तेसिं मणुसगइवदिरित्तसेसगईसु अभावादो । पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय तिरिक्खेसु उववज्जंता लब्भंति तेण संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो असंखेज्जा लब्भंति त्ति चे ण, पुव्वं बद्धाउअखइयसम्माइट्ठीणं तिरिक्खेसुप्पण्णाणं संजमासंजमगुणाभावादो । कुदो ? भोगभूमिमंतरेण तेसिमुप्पत्तीए अण्णत्थ संभवाभावादो । ण च तिरिक्खेसु दंसणमोहणीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसगईए' इदि वयणादो ।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १७७ ॥

एत्थ चउण्हं कम्माणं घाइसण्णियाणं खवगा इदि अज्झाहारो कायव्वो । चउसद्दो गुणट्ठाणाणं विसेसणं किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण, तत्थ छट्ठीणिद्देसाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

कुदो ? खइयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा ।

वेदगसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चेव त्थोवूणो वेदगरासी होदि तेणोघत्तं ण विरुज्झदे ।

उवसमसम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा ओघं ॥ १८० ॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता जदि वि होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं । सेसं सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ १८१ ॥

एत्थ संखेज्जवयणं ओघपमाणपडिसेहफलं । ओघदव्वपमाणं ण पावेदि त्ति कथमवगम्मदे ? ओघपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागो तम्हि तम्हि उवसमसम्माइट्ठिरासी होदि त्ति अप्पाबहुगवयणादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १८२ ॥ सम्मामिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८३ ॥ मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८४ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि ओघम्मि परूविदाणि त्ति णेह परूविज्जंति । एत्थ अवहारकालुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे असंजदउवसमसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । सिद्धतेरसगुणट्ठाणरासिं मिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरिं पक्खित्ते मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगअसंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअसंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमअसंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसंजदा । सेसं जाणिय वत्तव्वं । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सव्वेसिं सत्थाणमोघं । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । उवसमसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि वेदगपरत्थाणभंगो । खइयसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । केवलणाणिणो अणंतगुणा । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा उवसमसम्माइट्ठिणो चत्तारि उवसामगा । तत्थेव खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदउवसमसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । कारणं, चारित्तमोहणीयखवणकालादो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवसमसम्मत्तकालस्स संखेज्जगुणत्ता। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्ता संखेज्जगुणा। खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदाणं संखेज्जभागमेत्तपमत्तसंजदवेदगसम्माइट्ठीहिंतो कथं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदाणं संखेज्जगुणत्तं? ण, सव्वसम्मत्तेसु संजदेहिंतो देससंजदाणं देससंजदेहिंतो असंजदाणं बहुत्तुवलंभादो। तं पि कुदो? चरित्तावरणखओवसमस्स सव्वसम्मत्तेसु पाएण संभवाभावादो। 'तेरसकोडी देसे' एदीए गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो? होउ णाम। कथं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भद्दत्तं? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागयस्स एदीए गाहाए णाभद्दत्तं काऊण सक्किज्जदि, अइप्पसंगादो। वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो खइयसम्माइट्ठिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा। मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा। एवं सम्मत्तमग्गणा गदा।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया? देवेहिं सादिरेयं ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय। तेसिं संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति। तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि सादिरेया। एत्थ अवहारकालो वुच्चदे। तं जहा—देवअवहारकालादो पदरंगुलमेगं घेत्तूण संखेज्जखंडे करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसबहुखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि। एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १८६ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता ॥ १८७ ॥ अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १८८ ॥ खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि सुत्ताणि अवगदत्थाणि त्ति एदेसिं ण वक्खाणं वुच्चदे। एत्थ धुवरासिं वत्तइस्सामो। सण्णिरासिं णेव-सण्णि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णेव असण्णिरासिं च असण्णिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुवरासी होदि । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असण्णिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति । सेसमसंखेज्ज-खंडे कए बहुखंडा सण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमोघभागाभागभंगो । तिविहमवि अप्पाबहुगं जाणिऊण भाणिदव्वं । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १९० ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । णवरि सगुणपडिवण्णअणाहाररासिं आहारमिच्छाइट्ठिरासिभजिदतव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते आहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १९१ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । ओघमिच्छाइट्ठिधुवरासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आहारिअसंजदसम्मा-इट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारि-सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

अजोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥

सुगममेदं । भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासण-सम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसेग-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खंडं अप्पमत्तसंजदा होंति । अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणं मूलोघभंगो । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली आहारिणो संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो आहारिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा अणंतगुणा । बंधगा अणंतगुणा । सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा अणाहारिसजोगिकेवली । अजोगिकेवली संखेज्जगुणा । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । आहारिसजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा अणंतगुणा । अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । एवं—

दव्वाणिओगद्दारं समत्तं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने द्रव्यानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति द्वितीयो भागः समाप्तः ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute,, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ इति दव्वाणिओगद्दारं समत्तं ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्रीवीतरागाय नमः

अथ क्षेत्रानुगमः ।

(तृतीयो भागः)

लोयालोयपयासं गोदमथेरं पुणो जिणं वीरं । णमिऊण खेत्तसुत्तं जहोवएसं पयासेमो ॥

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किंफलो खेत्ताणिओगद्दारस्स अवयारो ? उच्चदे । तं जहा—संताणिओगद्दारादो अत्थित्तेणावगयाणं दव्वाणिओगद्दारे अवगयपमाणाणं चोद्दसजीवसमासाणं खेत्तपमाणावगमणफलो । अथवा अणंतो जीवरासी असंखेज्जपएसिए लोगागासे किं सम्मादि, ण सम्मादि त्ति संदेहेण घुलंतस्स सिस्सस्स संदेहविणासणट्ठो वा खेत्ताणिओगद्दारस्स अवयारो । एत्थ खेत्तं णिक्खिविदव्वं । णिक्खेवो त्ति किं ? संशये विपर्यये अनध्यवसाये वा स्थितं तेभ्योऽपसार्य निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः । अथवा बाह्यार्थविकल्पो निक्षेपः । अप्रकृतनिराकरणद्वारेण प्रकृतप्ररूपको वा । उत्तं च—अपगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च । संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १ ॥ सो च एत्थ चउव्विहो णिक्खेवो णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावखेत्तभेएण । कधं णिक्खेवस्स चउव्विहत्तं ? दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयावलंबिवयणवावारादो । उत्तं च—णामं ठवणा दवियं ति एस दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो । भावो दु पज्जवट्ठियपरूवणा एस परमत्थो ॥ २ ॥ जीवाजीवुभयकारणणिरवेक्खो अप्पाणम्हि पयट्टो खेत्तसद्दो णामखेत्तं । सो च णामणिक्खेवो वयण-वत्तव्वणिच्चज्झवसायमंतरेण ण होदि त्ति, तब्भव-सरिससामण्णणिबंधणो त्ति वा, वाच्य-वाचकशक्तिद्वयात्मकैकशब्दस्य पर्यायार्थिकनये असंभवाद्वा दव्वट्ठियणयस्सेत्ति वुच्चदे । कट्ठ-दंत-सिलादीणि सब्भावासब्भावसरूवाणि बुद्धीए इच्छिदखेत्तेणेयत्तमुवगयाणि ट्ठवणा णाम । सब्भावासब्भावसरूवेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वदव्ववावि त्ति वा, पधाणापधाणदव्वाणमेगत्तणिबंधणेत्ति वा ट्ठवणाणिक्खेवो दव्वट्ठियणयवुलीणो । दव्वखेत्तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । तत्थ आगमदो खेत्तपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो । कथमेदस्स जीवदवियस्स सुदणाणावरणीयक्खओवसमविसिट्ठस्स दव्वभावखेत्तागमवदिरित्तस्स आगमदव्वखेत्तववएसो ? ण एस दोसो, आधारे आधेयोवयारेण कारणे कज्जुवयारेण लद्धागमववएसखओवसमविसिट्ठजीवदव्वावलंबणेण वा तस्स तदविरोहा । णोआगमदो दव्वक्खेत्तं तिविहं, जाणुगसरीरं भवियं तव्वदिरित्तं चेदि । तत्थ जाणुगसरीरं तिविहं, भवियं वट्टमाणं समुज्झादमिदि । समुज्झादं पि तिविहं चुदं चइदं चत्तदेहमिदि । भवदु पुव्विल्लस्स दव्वखेत्तागमत्तादो खेत्तववएसो, एदस्स पुण सरीरस्स अणागमस्स खेत्तववएसो ण घडदि त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जधा– क्षियत्यक्षैषीत्क्षेष्यत्यस्मिन् द्रव्यागमो भावागमो वेति त्रिविधमपि शरीरं क्षेत्रम्, आधारे आधेयोपचाराद्वा । तत्थ भवियं खेत्तपाहुडजाणगभावी जीवो णिद्दिस्सदे । कथं जीवस्स खेत्तागमखओवसमरहिदत्तादो अणागमस्स खेत्तववएसो ? न, क्षेष्यत्यस्मिन् भावक्षेत्रागम इति जीवद्रव्यस्य पुरैव क्षेत्रत्वसिद्धेः । जाणुगसरीर-भवियवदिरित्तदव्वखेत्तं दुविहं, कम्मदव्वखेत्तं णोकम्मदव्वखेत्तं चेदि । तत्थ कम्मदव्वक्खेत्तं णाणावरणादिअट्ठविहकम्मदव्वं । कथं कम्मस्स खेत्तववएसो ? न, क्षियन्ति निवसन्त्यस्मिन् जीवा इति कर्मणां क्षेत्रत्वसिद्धेः । जं णोकम्मदव्वखेत्तं तं दुविहं, ओवयारियं पारमत्थियं चेदि । तत्थ ओवयारियं णोकम्मदव्वखेत्तं लोगपसिद्धं सालिखेत्तं वीहिखेत्तमेवमादि । पारमत्थियं णोकम्मदव्वखेत्तं आगासदव्वं । उत्तं च—खेत्तं खलु आगासं तव्वदिरित्तं च होदि णोखेत्तं । जीवा य पोग्गला वि य धम्माधम्मत्थिया कालो ॥ ३ ॥ आगासं सपदेसं तु उड्ढाधो तिरिओ वि य । खेत्तलोगं वियाणाहि अणंतं जिण-देसिदं ॥ ४ ॥ एसो वि णिक्खेवो दव्वट्ठियस्स, दव्वेण विणा एदस्स संभवाभावादो । जं तं भावखेत्तं तं दुविहं, आगमदो णोआगमदो भावखेत्तं चेदि । आगमदो भावखेत्तं खेत्तपाहुडजाणुगो उवजुत्तो । णोआगमदो भावखेत्तं आगमेण विणा अत्थोवजुत्तो ओदइयादिपंचविधभावो वा । एदेसु खेत्तेसु केण खेत्तेण पयदं ? णोआगमदो दव्वखेत्तेण पयदं । णोआगमदो दव्वखेत्तं णाम किं ? आगासं गगणं देवपथं गोज्झगाचरिदं अवगाहणलक्खणं आधेयं वियापगमाधारो भूमि त्ति एयट्ठो । कस्स खेत्तं ? सुण्णोयं भंगो । केण खेत्तं ? पारिणामिएण भावेण । कम्हि खेत्तं ? अप्पाणम्हि चेव । कथमेगत्थ आधाराधेयभावो ? ण, सारे त्थंभं इदि एगत्थ वि आधाराधेयभावदंसणादो । केवचिरं खेत्तं ? अणादियमपज्जवसिदं । कदिविधं खेत्तं ? दव्वट्ठियणयं पडुच्च एगविधं । अथवा पओजणमभिसमिच्च दुविहं, लोगागासमलोगागासं चेदि । लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन् जीवादिद्रव्याणि स लोकः । तद्विपरीतोऽलोकः । अथवा देसभेएण तिविहो, मंदरचूलियादो उवरिमुड्ढलोगो, मंदरमूलादो हेट्ठा अधोलोगो, मंदरपरिच्छिण्णो मज्झलोगो त्ति । जधा दव्वाणि ट्ठिदाणि तधावबोधो अणुगमो । खेत्तस्स अणुगमो खेत्ताणुगमो, तेण खेत्ताणुगमेण सरीरस्सेव दुविहो णिद्देसो । णिद्देसो पदुप्पायणं कहणमिदि एयट्ठो । ओघेण द्रव्यार्थिकनयावलम्बनेन, आदेसेण पर्यायार्थि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कनयावलम्बनेन चेति द्विविधो निर्देशः। किमट्ठमुभयथा णिद्देसो कीरदे ? न, उभयनयावस्थितसत्त्वानुग्रहार्थत्वात्। ण तइओ णिद्देसो अत्थि, णयद्दयसंट्ठियजीववदिरित्तसोदाराणं असंभवादो। 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति कट्टु ओघणिद्देसट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओघेण मिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ॥ २ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—ओघणिद्देसो आदेसवुदासट्ठो। मिच्छाइट्ठिणिद्देसो सेसगुणट्ठाणपडिसेहट्ठो। केवडि खेत्ते इदि पुच्छा सुत्तस्स पमाणत्तप्पदुप्पायणफला। सव्वलोगे इदि खेत्तपमाणणिद्देसो। एत्थ लोगे त्ति वुत्ते सत्तरज्जूणं घणो घेतव्वो। कुदो ? एत्थ खेत्तपमाणाधियारे—पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी। लोयपदरो य लोगो अट्ठ दु माणा मुणेयव्वा ॥ ५ ॥ इदि एत्थ वुत्तलोगग्गहणादो। जदि एसो लोगो घेप्पदि, तो पंचदव्वाहारआगासस्स गहणं ण पावदि। कुदो ? तम्हि सत्तरज्जुघणपमाणमेत्तखेत्तस्साभावा। भावे वा—हेट्ठा मज्झे उवरिं वेत्तासण-झल्लरी-मुइंगणिहो। मज्झिमवित्थारेण य चोद्दसगुणमायदो लोगो॥ ६ ॥ लोगो अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो। जीवाजीवेहि फुडो णिच्चो तलरुक्खसंठाणो ॥ ७ ॥ लोयस्स य विक्खंभो चउप्पयारो य होइ णायव्वो। सत्तेक्कगो य पंचेक्कगो य रज्जू मुणेयव्वा ॥ ८ ॥ एदाओ सुत्तगाहाओ अप्पमाणत्तं पावेंति त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे। एत्थ लोगे त्ति वुत्ते पंचदव्वाहारआगासस्सेव गहणं, ण अण्णस्स। 'लोगपूरणगदो केवली केवडि खेत्ते, सव्वलोगे' इदि वयणादो। जदि लोगो सत्तरज्जुघणपमाणो ण होदि तो 'लोगपूरणगदो केवली लोगस्स संखेज्जदि भागे' इदि भणेज्ज। ण च अण्णाइरियपरूविदमुदिंगायारलोगस्स पमाणगं पेक्खिऊण संखेज्जदिभागत्तमसिद्धं, गणिज्जमाणे तहोवलंभादो। तं जहा—मुदिंगायारलोयस्स सूइं चोद्दसरज्जुआयदं एगरज्जुविक्खंभं वट्टं लोगादो अवणिय पुध ट्ठवेदव्वं। एवं ठविय तस्स फलाणयणविहाणं भणिस्सामो। तं जहा—एदस्स मुहतिरियवट्टस्स एगागासपदेसबाहल्लस्स परिठओ एत्तिओ होदि $\frac{३}{१}\frac{७}{१}\frac{१}{३}$। इममद्धेऊण विक्खंभद्धेण गुणिदे एत्तियं होदि $\frac{३}{४}\frac{७}{५}\frac{१}{२}$। अधोलोगभागमिच्छामो त्ति सत्तहि रज्जूहि गुणिदे खायफलमेत्तियं होदि $५\frac{३}{४}\frac{३}{५}\frac{७}{२}$। पुणो णिस्सूईखेत्तं चोद्दसरज्जुआयदं दो खंडाणि करिय तत्थ हेट्ठिमखंडं घेत्तूण उड्ढं पाटिय पसारिदे सुप्पखेत्तं होऊण चेट्ठदि। तस्स मुहवित्थारो एत्तिओ होदि $\frac{३}{१}\frac{७}{१}\frac{१}{३}$। तलवित्थारो एत्तिओ होदि $२२\frac{}{१}\frac{१}{१}\frac{५}{३}$। एत्थ मुहवित्थारेण सत्तरज्जुआयामेण छिंदिदे दो तिकोणखेत्ताणि एयमायदचउरस्सखेत्तं च होइ। तत्थ ताव मज्झिमखेत्तफलमाणिज्जदे। एदस्स उस्सेहो सत्त रज्जूओ। विक्खंभो पुण एत्तिओ होदि $\frac{३}{१}\frac{७}{१}\frac{१}{३}$। मुहम्मि एगागासपदेसबाहल्लं, तलम्मि तिण्णि रज्जुबाहल्लो त्ति सत्तहि रज्जूहि मुहवित्थारं गुणिय तलबाहल्लद्धेण गुणिदे मज्झिमखेत्तफलमेत्तियं होइ $३४\frac{१}{२}\frac{०}{२}\frac{७}{६}$। संपहि सेसदोखेत्ताणि सत्तरज्जुअवलंबयाणि तेरसुत्तरसदेण एगरज्जुं खंडिय तत्थ अट्ठेतालीसखंडब्भहिय-णवरज्जुभुजाणि भुजकोडिपाओग्गकण्णाणि कण्ण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भूमीए आबिहिय दोसु विदिसासु मज्झम्मि फालिदे तिण्णि तिण्णि खेत्ताणि होंति । तत्थ दो खेत्ताणि अद्धुट्ठरज्जुस्सेहाणि छव्वीसुत्तरवेसदेहि एगरज्जुं खंडिय तत्थ एगट्ठिखंडब्भहियखंडसदेण सादिरेयचत्तारिरज्जुविक्खंभाणि दक्खिण-वामहेट्ठिमकोणे तिण्णि रज्जुबाहल्लाणि, दक्खिण-वामकोणेसु जहाकमेण उवरिम-हेट्ठिमेसु दिवड्ढरज्जुबाहल्लाणि, अवसेसदोकोणेसु एगागासबाहल्लाणि, अण्णत्थ कम-वड्ढिगदबाहल्लाणि घेत्तूण तत्थ एगखेत्तस्सुवरि विदियखेत्ते विवज्जासं काऊण ट्ठविदे सव्वत्थ तिण्णि रज्जुबाहल्लखेत्तं होइ । एदस्स वित्थारमुस्सेहेण गुणिय वेहेण गुणिदे खायफलमेत्तियं होइ $४९\frac{२}{४}\frac{१}{५}\frac{७}{२}$ । अवसेसचत्तारि खेत्ताणि अद्धुट्ठरज्जुस्सेहाणि छव्वीसुत्तरवेसदेहि एगरज्जुं खंडिय तत्थ एगट्ठिसदखंडेहि सादिरेयचत्तारिरज्जुभुजाणि कण्णक्खेत्ते आलिहिय दोसु वि पासेसु मज्झम्मि छिण्णेसु चत्तारि आयदचउरंसखेत्ताणि अट्ठ तिकोणखेत्ताणि च होंति । एत्थ चदुण्हमायदचउरंसखेत्ताणं फलं पुव्विल्लदोखेत्तफलस्स चउब्भागमेत्तं होदि । चदुसु वि खेत्तेसु बाहल्लाविरोहेण एगट्ठं कदेसु तिण्णिरज्जुबाहल्लं, पुव्विल्लखेत्तविक्खंभायामेहिंतो अद्धमेत्तविक्खंभायामपमाणखेत्तुवलंभादो । किमट्ठं चदुण्हं पि मिलिदाणं तिण्णि रज्जुबाहल्लत्तं ? पुव्विल्लखेत्तबाहल्लादो संपहियखेत्ताणमद्धमेत्तबाहल्लं होदूण तदुस्सेहं पेक्खिदूण अद्धमेत्तुस्सेहदंसणादो । संपहि सेसअट्ठखेत्ताणि पुव्वं व खंडिय तत्थ सोलस तिकोणखेत्ताणि अणंतरादीदखेत्ताणमुस्सेहादो विक्खंभादो बाहल्लादो च अद्धमेत्ताणि अवणिय अट्ठण्हमायदचउरंसखेत्ताणं फलमणंतराइक्कंतचदुखेत्तफलस्स चउभागमेत्तं होदि । एवं सोलस-बत्तीस-चउसट्ठिआदिकमेण आयदचउरंसखेत्ताणि पुव्विल्लखेत्तफलादो चउब्भागमेत्तफलाणि होदूण गच्छंति जाव अविभागपलिच्छेदं पत्तं ति । एवमुप्पण्णासेसखेत्तफलमेलावणविहाणं वुच्चदे । तं जहा—सव्वखेत्तफलाणि चउगुणकमेण अवट्ठिदाणि त्ति कादूण तत्थ अंतिमखेत्तफलं चउहि गुणिय रूवूणं काऊण तिगुणिदछेदेण ओवट्टिदे एत्तियं होइ $६५\frac{१}{१}\frac{३}{३}\frac{२}{५}\frac{०}{६}$ । अधोलोगस्स सव्वखेत्तफलसमासो $१०६\frac{२}{१}\frac{६}{३}\frac{१}{५}\frac{}{६}$ । संपहि उड्ढलोगखेत्तफलमाणेमो । तत्थ सूईखेत्तफलं पुव्वविहाणेण आणिदे एत्तियं होइ $५\frac{३}{४}\frac{३}{५}\frac{७}{२}$ । संपहि उवरिममद्धं पंचरज्जुविक्खंभुद्देसे खंडिय तत्थ एगखंडं पुध ट्ठविय मज्झम्मि सेसखंडं उड्ढं फालिय पसारिदे सुप्पखेत्तं होदि । तस्स मुहवित्थारो एत्तिओ होदि $\frac{३}{१}\frac{७}{१}\frac{१}{३}$ । तलवित्थारो एत्तिओ होदि $१५\frac{}{१}\frac{९}{१}\frac{६}{६}$ । मुहम्मि एगागासबाहल्लं, तलम्मि मुहप्पमाणमज्झम्मि वेरज्जुबाहल्लं, पुणो कमहाणीए गंतूण हेट्ठिमदोकोणेसु एगागासस्स बाहल्लं होदि । एदम्मि खेत्ते मुहवित्थारविक्खंभेण खंडिदे दोण्णि तिकोणखेत्ताणि एगमायदचउरंसखेत्तं च होई । तत्थ आयदचउरंसखेत्तस्स अद्धुट्ठरज्जुदीहस्स सादिरेयतिण्णिरज्जुविक्खंभस्स तलम्मि वे रज्जु मुहम्मि एगागासबाहल्लस्स फलमाणेमो । तं जहा—विक्खंभेणुस्सेहं गुणेऊण ओवेहेणेगरज्जुणा गुणिदे मज्झिल्लखेत्तफलं होइ । तस्स पमाणमेदं $११\frac{१}{२}\frac{१}{२}\frac{१}{६}$ । सेसदो तिकोणखेत्ताणि अद्धुट्ठरज्जुस्सेहाणि एगरज्जुं तेरसुत्तरसदेण खंडिय तत्थ बत्तीसखंडब्भहियछरज्जुविक्खंभाणि पुव्वं व मज्झम्मि खंडिय तत्थुप्पण्णाणि चत्तारि तिकोणखेत्ताणि ओसारिय दोण्णमायदचउरंसखेत्ताणं पाऊणदोरज्जुस्सेहाणं तेरसुत्तरसदेण एगरज्जुं खंडिय तत्थ सोलसखंडब्भहिय तिण्णिरज्जुविक्खंभाणं

॥ ३६० ॥

दो-एक्क-सुण्णेक्करज्जुबाहल्लाणं फलमाणेमो । तं जहा—एगखेत्तस्सुवरि विदियखेत्तं विवज्जासं काऊण ट्ठविदे वेरज्जुबाहल्लमेगं खेत्तं होइ । पुणो विक्खंभुस्सेहाणं संवग्गं काऊण ओवेहेण गुणिदे खेत्तफलं होदि । तस्स पमाणमेदं $१०\frac{२२५}{२२६}$ । पुणो सेसचउण्हं खेत्ताणं फलमेदस्स चउब्भागमेत्तं होदि । कारणं सुगमं, अधोलोगपरूवणाए परूविदत्तादो । जेणेवं सव्वखेत्तफलाणि अणंतराइक्कंतखेत्तफलादो चउब्भाग-क्कमेणावट्ठिदाणि, तेण तेसिं फले एत्थ मेलाविदे एत्तियं होदि $१४\frac{४४८}{६७८}$ । उड्ढलोगखेत्तस्स सव्वफलसमासो एत्तिओ होइ $५८\frac{६७}{१३५६}$ । उड्ढाधोलोगखेत्तफलसमासो एत्तिओ होदि $१६४\frac{३२८}{१३५६}$ । तदो सिद्धं घणलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं । ण च एदव्वदिरित्तमण्णं सत्तरज्जुघण-पमाणं लोगसण्णिदं खेत्तमत्थि, जेण पमाणलोगो छदव्वसमुदयलोगादो अण्णो होज्ज ? ण च लोगालोगेसु दोसु वि ट्ठिदसत्तरज्जुघण-मेत्तागासपदेसाणं पमाणघणलोगववएसो, लोगसण्णाए जादिच्छियत्तप्पसंगा । होदु चे ण, सव्वागास-सेढि-पदर-घणाणं पि जादि-च्छियसण्णापसंगादो । किं च 'पदरगदो केवली केवडि खेत्ते, लोगे असंखेज्जदिभागूणे । उड्ढलोगेण दुवे उड्ढलोगा उड्ढलोगस्स तिभागेण देसूणेण सादिरेगा, इच्चेदस्स सादिरेयदुगुणत्तस्स उड्ढलोगादो कहणण्णहाणुववत्तीदो सिद्धं दोण्हं लोगाणमेगत्तमिदि । तम्हा पमाणलोगो छदव्वसमुदयलोगादो आगासपदेसगणणाए समाणो त्ति घेत्तव्वो । कथं लोगो पिंडिज्जमाणो सत्तरज्जुघणपमाणो होज्ज ? वुच्चदे—लोगो णाम सव्वागासमज्झत्थो चोद्दसरज्जुआयामो दोसु वि दिसासु मूलद्ध-तिण्णि-चउब्भाग-चरिमेसु सत्तेक्कपंचेक्करज्जुरुंदो सव्वत्थ सत्तरज्जु-बाहल्लो वड्ढि-हाणीहि ट्ठिददोपेरंतो, चोद्दसरज्जुआयदरज्जुवग्गमुहलोगणालिगब्भो । एसो पिंडिज्जमाणो सत्तरज्जुघणपमाणो होदि । जदि लोगो एरिसो ण घेप्पदि तो पदरगदकेवलिखेत्तसाहणट्ठं वुत्त-दो गाहाओ णिरत्थियाओ होज्ज, तत्थ वुत्तफलस्स अण्णहा संभवाभावा । काओ ताओ दो गाहाओ त्ति वुत्ते वुच्चदे— मुह-तलसमास-अद्धं वुस्सेधगुणं गुणं च वेधेण । घणगणिदं जाणेज्जो वेत्तासणसंठिये खेत्ते ॥ ९ ॥ मूलं मज्झेण गुणं मुहसहिदद्धमुस्सेधकदिगुणिदं । घणगणिदं जाणेज्जो मुइंगसंठाणखेत्तम्हि ॥ १० ॥ ण च एदस्स लोगस्स पढमगाहाए सह विरोहो, एगदिसाए वेत्तासण-मुदिंगसंठाणदंसणादो । ण च एत्थ झल्लरीसंठाणं णत्थि, मज्झम्हि सयंभुरमणोदहिपरिक्खित्तदेसेण चंदमंडलमिव समंतदो असंखेज्जजोयणरुंदेण जोयणलक्खबाहल्लेण झल्लरीसमाणत्तादो । ण च दिट्ठंतो दारिट्ठंतिएण सव्वहा समाणो, दोण्हं पि अभावप्पसंगादो । ण च तालरुक्खसंठाणमेत्थ ण संभवइ, एगदिसाए तालरुक्खसंठाणदंसणादो । ण च तइयाए गाहाए सह विरोहो, एत्थ वि दोसु दिसासु चउव्विहविक्खंभदंसणादो । ण च सत्तरज्जुबाहल्लं करणाणिओगसुत्तविरुद्धं, तस्स तत्थ विधिप्पडि-सेधाभावादो । तम्हा एरिसो चेव लोगो त्ति घेत्तव्वो । एत्थ चोदगो भणदि—कथमणंता जीवा असंखेज्जपदेसिए लोए अच्छंति । जदि एक्कम्हि आगासपदेसे एक्को चेव जीवो अच्छदि तो असंखेज्जजीवाणं थत्ती होदूण अवरेसिं जीवाणमलोगे अच्छणं पावेदि, तेसिमभावो वा । ण च तेसिमभावो अत्थि, 'अणंता जीवा' त्ति अणेण सुत्तेण सह विरोहा । ण च अलोगागासे वि सेसाणमच्छणमत्थि, लोगालोग-

विहायस्स अभावावत्तीदो। ण च एगागासपदेसे एगो जीवो अच्छदि, 'एगजीवस्स जहण्णोगाहणा वि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता' त्ति वेदणाखेत्तविधाणे परूविदत्तादो। तम्हा लोगमज्झम्हि जदि होंति, तो लोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि चेव जीवेहि होदव्वमिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—णेदं घडदे, पोग्गलाणं पि असंखेज्जत्तप्पसंगादो। कथं ? एगेगलोगागासपदेसे एक्केक्को जदि परमाणू अच्छदि, तो लोगमेत्ता परमाणू भवंति, सेसपोग्गलाणमभावो चेव, अणवगासाणमत्थित्तविरोधा। ण च तेहि लोगमेत्तपरमाणूहि कम्म-सरीर-घड-पड-त्थंभादिसु एगो वि णिप्पज्जदे, अणंताणंतपरमाणुसमुदयसमागमेण विणा एक्किस्से ओसण्णासण्णियाए वि संभवाभावा। होदु चे ण, सयलपोग्गलदव्वस्स अणुवलद्धिप्पसंगादो, सव्वजीवाणमक्कमेण केवलणाणुप्पत्तिप्पसंगादो च। एवमइप्पसंगो मा होदि त्ति अवगेज्झमाणजीवाजीवसत्तण्णहाणुववत्तीदो अवगाहणधम्मिओ लोगागासो त्ति इच्छिदव्वो खीरकुम्भस्स मधुकुंभो व्व। तम्हा ओगाहणलक्खणेण सिद्धलोगागासस्स ओगाहणमाहप्पमाइरियपरंपरागदोवदेसेण भणिस्सामो। तं जहा—उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते खेत्ते सुहुमणिगोदजीवस्स जहण्णोगाहणा भवदि। तम्हि ट्ठिदघणलोगमेत्तजीवपदेसेसु पडिपदेसमभवसिद्धिएहि अणंतगुणा, सिद्धाणमणंतभागमेत्ता होदूण ट्ठिदओरालियसरीरपरमाणूणं तं चेव खेत्तमोगासं जादि। पुणो ओरालियसरीरपरमाणूहिंतो अणंतगुणाणं तेजइयसरीरपरमाणूणं पि तम्हि चेव पक्खित्ते खेत्ते ओगाहणा भवदि। पुव्वभणिदतेजइयपरमाणूहिंतो अणंतगुणा कम्मइयपरमाणू तेणेव जीवेण मिच्छत्तादिकारणेहि संचिदा पडिपदेसमभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तत्थ भवंति, तेसिं पि तम्हि चेव खेत्ते ओगाहणा भवदि। पुणो ओरालिय-तेजा-कम्मइयविस्ससोवचयाणं पादेक्कं सव्वजीवेहि अणंतगुणाणं पडिपरमाणुम्हि तत्तियमेत्ताणं तम्हि चेव खेत्ते ओगाहणा भवदि। एवमेगजीवेणच्छिदअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते जहण्णखेत्तम्हि समाणोगाहणो होदूण विदिओ जीवो तत्थेव अच्छदि। एवमणंताणंताणं समाणोगाहणाणं जीवाणं तम्हि चेव खेत्ते ओगाहणा भवदि। तदो अवरो जीवो तम्हि चेव मज्झिमपदेसमंतिमं काऊण उववण्णो। एदस्स वि ओगाहणाए अणंताणंतजीवा समाणोगाहणा अच्छंति त्ति पुव्वं व परूवेदव्वं। एवमेगेगपदेसा सव्वदिसासु वड्ढावेदव्वा जाव लोगो आवुण्णो त्ति। एत्थ एक्केक्कोगाहणाए ठिदजीवाणमप्पाबहुगं भणिस्सामो। तं जहा—तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा लोगा। तत्तो पुढविकाइया विसेसाहिया। आउकाइया जीवा विसेसाहिया। वाउक्काइया जीवा विसेसाहिया। तत्तो वणप्फदिकाइया अणंतगुणा त्ति। अणेण पयारेण सव्वजीवरासिणा लोगो आवुण्णो त्ति सद्दहेदव्वं, अण्णहा पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो। सव्वजीवाणमवत्था तिविहा भवदि, सत्थाण-समुग्घादुववादभेदेण। तत्थ सत्थाणं दुविहं, सत्थाणसत्थाणं विहारवदिसत्थाणं चेदि। तत्थ सत्थाणसत्थाणं णाम अप्पणो उप्पण्णगामे णयरे रण्णे वा सयण-णिसीयण-चंकमणादिवावारजुत्तेणच्छणं। विहारवदिसत्थाणं णाम अप्पणो उप्पण्णगाम-णयर-रण्णादीणि छंड्डिय अण्णत्थ सयण-णिसीयण-चंकमणादिवावारेणच्छणं। समुग्घादो सत्तविधो, वेदणसमुग्घादो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कसायसमुग्घादो वेउव्वियसमुग्घादो मारणंतियसमुग्घादो तेजासरीरसमुग्घादो आहारसमुग्घादो केवलिसमुग्घादो चेदि । तत्थ वेदणसमुग्घादो णाम अक्खि-सिरो-वेदणादीहि जीवाणमुक्कस्सेण सरीरतिगुणविप्फुज्जणं । कसायसमुग्घादो णाम कोध-भयादीहि सरीरतिगुणविप्फुज्जणं । वेउव्वियसमुग्घादो णाम देव-णेरइयाणं वेउव्वियसरीरोदइल्लाणं साभावियमागारं छंड्डिय अण्णागारेणच्छणं । मारणंतियसमुग्घादो णाम अप्पणो वट्टमाणसरीरमछंड्डिय रिजुगईए विग्गहगईए वा जावुप्पज्जमाणखेत्तं ताव गंतूण सरीरतिगुणबाहल्लेण अण्णहा वा अंतोमुहुत्तमच्छणं । वेदण-कसायसमुग्घादा मारणंतियसमुग्घादे किण्ण पदंति त्ति वुत्ते ण पदंति । मारणंतियसमुग्घादो णाम बद्धपरभवियाउआणं चेव होदि । वेदण-कसायसमुग्घादा पुण बद्धाउआणमबद्धाउआणं च होंति । मारणंतियसमुग्घादो णिच्छएण उप्पज्जमाणदिसाहिमुहो होदि, ण चेयराणमेगदिसाए गमणणियमो, दससु वि दिसासु गमणे पडिबद्धत्तादो । मारणंतियसमुग्घादस्स आयामो उक्कस्सेण अप्पणो उप्पज्जमाणखेत्तपज्जवसाणो, ण चेयराणमेस णियमो त्ति । तेजासरीरसमुग्घादो णाम तेजइयसरीरविउव्वणं । तं दुविहं णिस्सरणप्पयं अणिस्सरणप्पयं चेदि । तत्थ जं तं णिस्सरणप्पयं तेजइयसरीरविउव्वणं तं पि दुविहं, पसत्थमप्पसत्थं चेदि । तत्थ अप्पसत्थं बारहजोयणायामं णवजोयणवित्थारं सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागबाहल्लं जासवणकुसुमसंकासं भूमिपव्वदादिदहणक्खमं पडिवक्खरहियं रोसिंधणं वामंसप्पभवं इच्छियखेत्तमेत्तविसप्पणं । जं तं पसत्थं तं पि एरिसं चेव, णवरि हंसधवलं दक्खिणंससंभवं अणुकंपाणिमित्तं मारि-रोगादिपसमणक्खमं । जं तमणिस्सरणप्पयं तेजइयसरीरं तेणेत्थ अणधियारो । आहारसमुग्घादो णाम पत्तिड्ढीणं महारिसीणं होदि । तं च हत्थुस्सेधं हंसधवलं सव्वंगसुंदरं खणमेत्तेण अणेयजोयणलक्खगमणक्खमं अप्पडिहयगमणं उत्तमंगसंभवं, आणाकणिट्ठदाए असंजमबहुलदाए च लद्धप्पसरूवं । केवलिसमुग्घादो णाम दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणभेएण चउव्विहो । तत्थ दंड-समुग्घादो णाम पुव्वसरीरबाहल्लेण तत्तिगुणबाहल्लेण वा सविक्खंभादो सादिरेयतिगुणपरिट्ठएण केवलिजीवपदेसाणं दंडागारेण देसूणचोद्दसरज्जुविसप्पणं । कवाडसमुग्घादो णाम पुव्विल्लबाहल्लायामेण वादवलयवदिरित्तसव्वखेत्तावूरणं । पदरसमुग्घादो णाम केवलिजीवपदेसाणं वादवलयरुद्धलोगखेत्तं मोत्तूण सव्वलोगावूरणं । लोगपूरणसमुग्घादो णाम केवलिजीवपदेसाणं घणलोगमेत्ताणं सव्वलोगावूरणं । वुत्तं च— वेदण-कसाय-वेउव्विओ य मरणंतिओ समुग्घादो । तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु ॥ ११ ॥ उववादो एयविहो । सो वि उप्पण्णपढमसमए चेव होदि । तत्थ उज्जुवगदीए उप्पण्णाणं खेत्तं बहुवं ण लब्भदि, संकोचिदासेसजीवपदेसादो । विग्गहो तिविहो, पाणिमुद्दा लांगलिओ गोमुत्तिओ चेदि । तत्थ पाणिमुद्दा एगविग्गहा । विग्गहो वक्को कुटिलो त्ति एगट्ठो । लांगलिओ दुविग्गहो । गोमुत्तिओ तिविग्गहो । तत्थ मारणंतिएण विणा विग्गहगदीए उप्पण्णाणं उजुगदीए उप्पणपढमसमयओगाहणाए समाणा चेव ओगाहणा भवदि । णवरि दोण्हमोगाहणाणं संठाणे समाणत्तणियमो णत्थि । कुदो ? अणुपुव्विसंठाणणामकम्मेहि जणिदसंठाणाणमेगत्तविरोधा । विग्गहगदीए मारणंतियं

काढूणुप्पण्णाणं पढमसमए असंखेज्जजोयणमेत्ता ओगाहणा होदि, पुव्वं पसारिदएग-दो-तिदंडाणं पढमसमए उवसंहाराभावादो। एदेहि दसहि विसेसणेहि जहासंभवं विसेसिदमिच्छाइट्ठिआदि-चोद्दसजीवसमासाणं खेत्तपरूवणं कस्सामो। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि मिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते, सव्वलोगे। कुदो ? जेण सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागेणूणो सव्वो जीवपुंजो सत्थाणसत्थाणरासी वट्टदे। वेदण-कसायसमुग्घादगदजीवा वि सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता। मारणंतियसमुग्घादगदजीवा वि सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता। कुदो ? एदेसिं तिण्हं रासीणं अप्पणो जीविदस्स संखेज्जदिभागमेत्तसमुग्घादकालत्तादो। उववादरासी पुण सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो, एगसमयसंचयादो। तेणेदे पंच वि रासिणो अणंता, तदो सव्वलोगे भवंति। विहारवदिसत्थाणमिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे। कुदो ? ण ताव तसअपज्जत्तरासी विहरदि, तत्थ विहायगदिणामकम्मस्स उदयाभावा। तसपज्जत्तरासिस्स वि संखेज्जदिभागो चेव विहरमाणरासी होदि। कुदो ? ममेदं बुद्धीए पडिगहिदखेत्तं सत्थाणं णाम। तत्तो बाहिं गंतूणच्छणं विहारवदिसत्थाणं। तत्थच्छणकालो सगावासे अवट्ठाणकालस्स संखेज्जदिभागो त्ति। दोण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो ? चत्तारि रज्जुबाहल्लं जगपदरं अधोलोगपमाणं होदि। तिण्णि रज्जुबाहल्लं जगपदरमुड्ढलोगपमाणं होदि। एदे दोण्णि वि लोगे तसपज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागेण संखेज्जघणंगुलगुणिदेण ओवट्टिदे सेढीए असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति। संखेज्जघणंगुलगुणगारो कधमवगम्मदे ? वुच्चदे—सयंपहणगिंदपव्वयपरभागट्ठियतसपज्जत्तरासी पहाणो इयरकम्मभूमिजीवेहिंतो दीहाउवो महल्लोगाहणो य। भोगभूमीसु पुण विगलिंदिया णत्थि। पंचिंदिया वि तत्थ सुट्ठु थोवा, सुहकम्माहियजीवाणं बहुवाणमसंभवादो। सयंपहपव्वयपरभागट्ठियजीवाणमोगाहणा महल्लेत्ति जाणावणसुत्तमेदं—संखो पुण बारह जोयणाणि गोम्ही भवे तिकोसं तु। भमरो जोयणमेगं मच्छो पुण जोयणसहस्सो ॥ १२ ॥ एदाओ ओगाहणाओ घणंगुलपमाणेण कीरमाणे संखेज्जाणि घणंगुलाणि हवंति, तेण संखेज्जघणंगुलगुणगारो विहारवदिसत्थाणरासिस्स ठविदो। सयंपहणगिंदपव्वदस्स परदो जहण्णोगाहणा वि जीवा अत्थि त्ति चे ण, मूलग्गसमासं काऊण अद्धं कदे वि संखेज्जघणंगुलदंसणादो। तं कथं ? तत्थ ताव भमरखेत्ताणयणविधाणं भणिस्सामो। भमरखेत्तं पुण जोयणायामं अद्धजोयणुस्सेहं जोयणद्धपरिहिविक्खंभं ठविय विक्खंभद्धमुस्सेहगुणमायामेण गुणिदे उस्सेहजोयणस्स तिण्णि-अट्ठभागा भवंति। ते घणंगुलाणि कीरमाणे पण्णरहसद-छत्तीसरूवेहि घणीकदेहि तिण्णिसय-वासट्ठिकोडीहि अट्ठहत्तरिसहस्साहिय-अट्ठत्तीसलक्खेहि छस्सद-छप्पण्णेहि य उस्सेधघणजोयणाणि गुणिदे पमाणघणंगुलाणि हवंति। गोम्हि-आयामो उस्सेधजोयणतिण्णि चउब्भागो, तदट्ठभागो विक्खंभो, विक्खंभद्धं बाहल्लं। एदे तिण्णि वि परोप्परं गुणिदे उस्सेधजोयणघणस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि। तं पण्णरहसदछत्तीसरूवेहि घणीकदेहि गुणिदे पमाणघणंगुलाणि होंति। बारहजोयणायाम-चदुजोयणमुहसंखखेत्तफलं— व्यासं तावत्कृत्वा वदनद-

लोनं मुखार्धवर्गयुतम् । द्विगुणं चतुर्विभक्तं सनाभिकेऽस्मिन् गणितमाहुः ॥ १३ ॥ एदेण सुत्तेण आणीय मुहहीणुस्सेहसहिदुस्सेहचदुब्भागेण गुणिय उस्सेहघणजोयणाणि आणीय पुव्वुत्तगुणगारेण गुणिदे पमाणघणंगुलाणि होंति । जोयणसहस्सायामपंचसदुस्सेह-तदद्धवित्थार-महामच्छखेत्तं पि संखेज्जाणि पमाणघणंगुलाणि होंति । एत्थ घणंगुलस्स संखेज्जदिभागं पक्खिविय अद्धेण छिण्णे वि संखेज्जाणि पमाणघणंगुलाणि होंति त्ति सिद्धं । किं च विहारवदिसत्थाणे ण तिरिक्खखेत्तस्स पमाणत्तं, किंतु देवखेत्तस्सेव, पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तमुहेण संखेज्जजोयणसहस्सं विहरमाणदेवोगाहणाए संखेज्जघणंगुलत्तुवलंभादो । तेण संखेज्जघणंगुलोगाहणाए गुणेयव्वमिदि । असंखेज्जजोयणाणि विहरंता वि देवा अत्थि त्ति चे ण, तेसिं देवाणमसंखेज्जदिभागत्तेण पहाणत्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे ? 'तिरियलोगस्स संखेज्जदिभाए' त्ति वक्खाणादो । तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं कथं ? तिरियलोगो णाम जोयणलक्खसत्तभागमेत्तसूचिअंगुलबाहल्लजगपदरमेत्तो । तं पुव्विल्लविहारवदिसत्थाणखेत्तेणोवट्टिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति । तेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे त्ति वुत्तं । अड्ढाइज्जखेत्तादो विहारवदिसत्थाणजीवखेत्तमसंखेज्जगुणं । कुदो ? अड्ढाइज्जम्मि संखेज्जपमाणघणंगुलदंसणादो । वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदि भागे, दोण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एत्थ पुव्वं व ओवट्टणा कायव्वा । णवरि वेउव्वियसमुग्घादस्स जोदिसियरासी सत्तदंडुस्सेहो पहाणो, तेण जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागस्स संखेज्जघणंगुलाणि गुणगारो ठवेयव्वो । कुदो ? संखेज्जजोयणसहस्सं विउव्वमाणदेवाणमुवलंभादो । असंखेज्जजोयणाणि णिरुंभिय विउव्वंता देवा अत्थि त्ति चे ण, तेसिं देवाणमसंखेज्जदिभागत्तादो । सगोहिखेत्तमेत्तं सव्वे देवा विउव्वंति त्ति के वि भणंति, तं ण घडदे, 'तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे' त्ति वक्खाणादो । मिच्छाइट्ठिस्स सेस-तिण्णि विसेसणाणि ण संभवंति, तक्कारणसंजमादिगुणाणमभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स सत्थाणादी सत्त विसेसा सुत्तेण अणुद्दिट्ठा अत्थि त्ति कथं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो । किं च 'मिच्छादिट्ठी' इदि सामण्णवयणेण एदे सत्त वि मिच्छाइट्ठिविसेसा सूचिदा चेव, एदव्वदिरित्तमिच्छाइट्ठीणमभावादो । सेस चत्तारि वि लोगा सुत्तेण सूचिदा चेव, सेसचदुण्हं लोगाणं लोगपुधभूदाणमणुवलंभादो । तम्हा सुत्तसंबद्धमेवेदं वक्खाणमिदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभाए ॥ ३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थं भणिस्सामो । जदि वि सव्वगुणट्ठाणाणं पहुडिसद्दस्स ववत्थावाइस्स संगहणसंभवो अत्थि, तो वि सजोगिगुणट्ठाणं णो गेण्हदि । कुदो ? पुरदो भण्णमाणबाधगसुत्तदंसणादो । सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादपरिणदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे, तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-

भागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । तं कथं? एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्मीसाणरासी पहाणो । तेसिमोगाहणा सत्तहत्थुस्सेहा, अंगुलगणणाए अट्ठसट्ठिसदुस्सेधंगुलपमाणा, एदस्स दसभागविक्खंभा । कुदो? जदो देव-मणुस्स-णेरइयाणमुस्सेधो दस-णव-अट्ठतालपमाणेण भणिदो । पुणो वासद्धं वग्गिय विगुणिय अट्ठसट्ठिसदुस्सेधंगुलेहि गुणिय घणीकदपंचसदंगुलेहि ओवट्टिदे पमाणघणंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदेण तिण्हं गुणट्ठाणाणं सत्थाणादिरासिं ओघरासिस्स संखेज्जभागं संखेज्जदिभागं च गुणिदे तिण्हं गुणट्ठाणाणं सत्थाणादिखेत्ताणि होंति । णवरि वेदण-कसायखेत्ताणि णवहि गुणेयव्वाणि, सरीरतिगुणविक्खंभादो । विहारवेउव्वियपदाणं संखेज्जाणि घणंगुलाणि । अथवा वेदणादिणा सरीरतिगुणसमुग्घादं करेंता सुट्ठु थोवा त्ति मज्झिमगुणगारो णवद्धरूवपमाणो होदि त्ति । एदेहि लोगे भागे हिदे लद्धं विरलेदूण एक्केक्कस्स रूवस्स लोगं समखंडं कादूण दिण्णे एगभागो एदेहि रुद्धखेत्तं होदि । उड्ढलोगपमाणं तिण्णि रज्जुबाहल्लं जगपदरं । एत्थ वि ओवट्टणा पुव्वं व कादव्वा । अधोलोगपमाणं चत्तारि रज्जुबाहल्लं जगपदरं । तथा चेव ओवट्टणा । तिरियलोगपमाणं जोयण लक्ख-सत्तभागबाहल्लं जगपदरं । एत्थ वि ओवट्टणा पुव्वं व कायव्वा । एत्थ तिरियलोगपमाणे आणिज्जमाणे विक्खंभायामेहि एगरज्जुपमाणमेव तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगो होदि त्ति के वि आइरिया भणंति, तं ण घडदे, पुव्वब्भुवगमेण सह विरोधा । को सो पुव्वब्भुवगमो? चत्तारि-तिण्णि-रज्जुबाहल्लजगपदरपमाणा अध-उड्ढलोगा, सत्तरज्जुबाहल्लजगपदरपमाणो सव्वलोगो त्ति । माणुसलोगपमाणं पणदालीसजोयणसदसहस्सविक्खंभं जोयणसदसहस्सुस्सेधं । पुणो विक्खंभुस्सेधे अंगुलाणि करिय— व्यासं षोडशगुणितं षोडशसहितं त्रिरूपरूपैर्भक्तम् । व्यासत्रिगुणितसहितं सूक्ष्मादपि तद्भवेत्सूक्ष्मम् ॥ १४ ॥ एदेण सुत्तेण परिट्ठयं कादूण विक्खंभचउब्भागेण गुणिदे जादाणि पदरंगुलाणि । पुणरवि उस्सेधेण गुणिदे संखेज्जाणि घणंगुलाणि जादाणि । पुव्वं व ओवट्टणा एत्थ कायव्वा । मारणंतिय-उववादगद-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि ओघरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूणेगभागो उववादं करेदि । तस्स वि असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उववादं करेंति त्ति ओघरासिस्स दो आवलियाए असंखेज्जदिभागा भागहारं ठवेदव्वा । पुणो रूवूणावलियाए असंखेज्जदिभागो उवरि गुणगारो ठवेदव्वो । सेढीए संखेज्जदिभागायामविदियदंडट्ठियजीवे इच्छिय अवरो आवलियाए असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेयव्वो । उवरि घणंगुलस्स संखेज्जदिभागमवणिय पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं संखेज्जपदरंगुलाणि च गुणगारं ठविय किंचूणदिवड्ढरज्जूहि गुणिय ओवट्टेयव्वं । मारणंतियस्स एवं चेव वत्तव्वं । णवरि अप्पणो रासिस्स असंखेज्जदिभागो मारणंतियं करेदि । मारणंतियकालादो गुणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो मारणंतियजीवा सगसव्वजीवेहिंतो संखेज्जगुणहीणा किण्ण होंति? ण, मरंतदेवजीवेहिंतो तम्हि चेव भवे मिच्छत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंखेज्जगुणत्तादो, उवसमसम्मत्तद्धावसेसे आउए उवसमसम्मत्तगुणं पडिवज्जंताणं बहुवाणमभावादो, तत्तो तस्स संखेज्जगुणणियमाभावादो च । एत्थ उवरिमरासिस्स गुणगारो पुव्वुत्तो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चेव होदि, देवरासिस्स पहाणत्तादो। उववादे पुण तिरिक्खरासी पहाणो। णवरि असंजदसम्माइट्ठि-उववादे देवा पहाणा, मारणंतिए तिरिक्खा पहाणा। सम्मामिच्छाइट्ठिस्स मारणंतिय-उववादा णत्थि, तग्गुणस्स तदुहयविरोहित्तादो। एवं संजदासंजदाणं। णवरि उववादो णत्थि, अपज्जत्तकाले संजमासंजमगुणस्स अभावादो। संजदासंजदाणमोगाहणगुणगारो घणंगुलं। मारणंतिए पदरंगुलं दादव्वं। वेगुव्वियपदेण सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागेण। संजदासंजदाणं कथं वेउव्वियसमुग्घादस्स संभवो? ण, ओरालियसरीरस्स विउव्वणप्पयस्स विण्हुकुमारादिसु दंसणादो। संजदासंजदेसु वि मारणंतियरासी ओघरासिस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं परूविदं। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जहण्णिया ओगाहणा आहुट्ठरयणीओ, उक्कस्सिया पंचसद-पणवीसुत्तरधणूणि। एदाओ दो वि ओगाहणाओ भरह-इरावएसु चेव होंति, ण विदेहेसु, तत्थ पंचधणुस्सदुस्सेधणियमा। तत्तो थोवूणुस्सेधो वा विदेहसंजदरासी जदो सव्वुक्कस्सो होदि, सो पधाणो, पंचधणुस्सदुस्सेहाविणाभावित्तादो। एत्थ अंगुलाणि कदे उस्सेहणवमभागो विक्खंभो त्ति कट्टु परिट्ठयमद्धं करिय विक्खंभद्धेण गुणिय उस्सेहेण गुणिदे संखेज्जाणि घणंगुलाणि जादाणि। एदेहि संखेज्जघणंगुलेहि अप्पप्पणो रासिं गुणिदे इच्छिदखेत्तं होदि। णवरि आहारसरीरस्स उस्सेधो एया रयणी, उस्सेहदसमभागो तस्स विक्खंभो, दिव्वत्तादो। विहारे सत्थाणसमाणोगाहणमुहमच्छिण्णपउमणालसुत्तसंताणं व मूलाहारसरीराणमंतरे जीवपदेसाणमवट्ठाणादो। ण च सरीरादो-गदजीवपदेसाणं पुणो तत्थ पवेसाभावो, समुग्घादगदकेवलिजीवपदेसेहि वियहिचारादो। एदाणि खेत्ताणि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो त्ति पमत्तादओ चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियस्स सत्तरज्जूहि संखेज्जपदरंगुलगुणिदइच्छिदसंजदरासी गुणेदव्वो। तेण मारणंतियसमुग्घादगदसंजदा माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति। एदं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियाहार-मारणंतियसमुग्घादाणं उत्तं। णवरि तेजासमुग्घादस्स विक्खंभायामे णव-बारहजोयणपमाणे कदंगुले अण्णोण्णं गुणिय बाहल्लेण गुणिदे तेजासमुग्घादखेत्तं होदि। एदं तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि गुणिदे सव्वखेत्तसमासो होदि। ओवट्टणा पुव्वं व। अप्पमत्तसंजदा सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणत्था केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतिय-अप्पमत्ताणं पमत्तसंजदभंगो। अप्पमत्ते सेसपदा णत्थि। चदुण्हमुवसमा सत्थाणसत्थाण-मारणंतियपदेसु पमत्तसमा। चदुण्हं खवगाणं अजोगिकेवलीणं च सत्थाणसत्थाणं पमत्तसमं। खवगुवसामगाणं णत्थि वुत्तसेसपदाणि। खवगुवसामगाणं ममेदंभावविरहिदाणं कथं सत्थाणसत्थाणपदस्स संभवो? ण एस दोसो, ममेदंभावसमण्णिदगुणेसु तहा गहणादो। एत्थ पुण अवट्ठाणमेत्तगहणादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे, असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा ॥ ४ ॥

एत्थ सजोगिकेवलिस्स सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणाणं पमत्तभंगो। दंडगदो केवली केवडि खेत्ते ? चउण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। तं कथं ? अट्ठुत्तरसदपमाणंगुलाणि उस्सेधो उक्कस्सोगाहणकेवलीणं होदि। तस्स णवमभागो विक्खंभो १२ एत्तिओ होदि। एदस्स परिट्ठओ सत्ततीस अंगुलाणि पंचाणउदि-तेरससदभागा ३७ $\frac{९५}{११३}$। इमं विक्खंभचउब्भागेण गुणिदे मुहपदरंगुलाणि होंति। एदाणि देसूणचोद्दसरज्जूहि गुणिदे दंडखेत्तं होदि। एदं संखेज्जरूवगुणं तेरासियकमेण चदुहि लोगेहि भागे हिदे तेसिं लोगाणमसंखेज्जदिभागो आगच्छदि। माणुसलोगेण भागे हिदे असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि आगच्छंति। णवरि पलियंकेण दंडसमुग्घादगदकेवलिस्स विक्खंभो पुव्वविक्खंभादो तिगुणो होदि। तस्स पमाणमेदं ३६। एदस्स परिट्ठओ तेरहुत्तरसदंगुलाणि सत्तावीस-तेरहुत्तरसदभागा ११३ $\frac{२७}{११३}$। सेसं पुव्वं व। कवाडगदो केवली केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ कवाडगदकेवलिस्स खेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे–केवली पुव्वाहिमुहो वा उत्तराहिमुहो वा समुग्घादं करेंतो जदि पलियंकेण समुग्घादं करेदि, तो कवाडबाहल्लं छत्तीसंगुलाणि होंति। अह जइ काउस्सग्गेण कवाडं करेदि, तो बारहंगुलबाहल्लं कवाडं होदि। तत्थ ताव पुव्वाहिमुहकेवलिस्स कवाडखेत्ताणयणं भण्णमाणे चोद्दसरज्जुआयामं सत्तरज्जुविक्खंभं छत्तीसंगुलबाहल्लं खेत्तं ठविय मज्झे छेत्तूण एक्कखेत्तस्सुवरि विदियखेत्तं ठविदे बाहत्तरिअंगुलबाहल्लं जगपदरं होदि। काउस्सग्गेण ट्ठिदकेवलिकवाडखेत्तं चउव्वीसंगुलबाहल्लं होदि। उत्तराहिमुहो होदूण पलियंकेण समुग्घादगदकेवलिकवाडखेत्तं छत्तीसंगुलबाहल्लं जगपदरं होदि। इयरस्स १२ बारहंगुलबाहल्लं, वेयणाए विणा तिगुणत्ताभावा। एदं खेत्तं तेरासियकमेण तिण्हं लोगाणं पमाणेण कीरमाणे तेसिं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स पुण संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं होदि। पदरगदो केवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु। लोगस्स असंखेज्जदिभागं वादवलयरुद्धखेत्तं मोत्तूण सेसबहुभागेसु अच्छदि त्ति जं वुत्तं होदि। घणलोगपमाणं तेदालीसुत्तरतिसद ३४३ घणरज्जूओ। अधोलोगपमाणं छण्णवुदिसदघणरज्जूओ १९६। उड्ढलोगपमाणं सत्तेत्तालीससदघणरज्जूओ १४७। उड्ढलोगपमाणाणयणे सुत्तगाहा–मूलं मज्झेण गुणं मुहसहिदद्धमुस्सेधकदिगुणिदं। घणगणिदं जाणेज्जो मुदिंगसंठाणखेत्तम्हि ॥ १५ ॥ एदिस्से गाहाए अत्थो वुच्चदे–मूलं मुदिंगखेत्तस्स बुंधवित्थारं, मज्झेण मुदिंगमज्झपंचरज्जूहि सह, गुणं जुदं कादव्वं। मुहं मुदिंगमुहरुंधपमाणं, सहिदं मुदिंगमज्झेण जुदं कादूण, अद्धं अद्धं करिय समीकदं, उस्सेधकदिगुणिदं उस्सेधवग्गेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गुणिदे कदे, मुदिंग- खेत्तफलं होदि । मुह-तलसमासअद्धं उस्सेधगुणं गुणं च वेहेण । घणगणिदं जाणेज्जा वेत्तासणसंठिए खेत्ते ॥ १६ ॥

एदीए गाहाए अधोलोगघणगणिदमाणेज्जो । संपदि लोगपेरंतट्ठिदवादवलयरुद्धखेत्ताणयणविधाणं वुच्चदे— लोगस्स तले तिण्हं वादाणं बाहल्लं पादेक्कं वीससहस्सजोयणमेत्तं । तं सव्वमेगट्ठं कदे सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लं जगपदरं होइ । णवरि दोसु वि अंतेसु सट्ठिसहस्सजोयणुस्सेहपरिहाणिखेत्तेण ऊणं एदमजोएदूण सट्ठिसहस्सबाहल्लं जगपदरमिदि संकप्पिय तच्छेदूण पुध ट्ठवेदव्वं ६०००० । पुणो एगरज्जुस्सेधेण सत्तरज्जुआयामेण सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं बुद्धीए पुध करिय जगपदरपमाणेणा-बद्धे वीससहस्साहियजोयणलक्खस्स सत्तभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{१२००००}{७}$ । तं पुव्विल्लखेत्तस्सुवरि ट्ठविदे चालीसजोयणसहस्साहिय पंचण्हं लक्खाणं सत्तभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५४००००}{७}$ । पुणो अवरासु दोसु दिसासु एगरज्जुस्सेधेण तले सत्तरज्जुआयामेण मुहे सत्तभागाहियछरज्जुरुंदत्तेण सट्ठिजोयणसहस्सबाहल्लेण ट्ठिदवादवलयखेत्ते जगपदरपमाणेण कदे वीसजोयणसहस्साहिय पंचवंचास-जोयणलक्खाणं तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५५२००००}{३४३}$ । एदं पुव्विल्लखेत्तस्सुवरि पक्खित्ते एगूणवीसलक्ख-असीदिसहस्सजोयणाहिय-तिण्हं कोडीणं तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{३१९८००००}{३४३}$ । पुणो सत्तरज्जुविक्खंभ-तेरह-रज्जुआयाम-सोलहवारह-सोलहवारहजोयणबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्ते जगपदरपमाणेण कदे चउसट्ठिसदजोयणूण-अट्ठारहसहस्सजोयणाणं तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं उप्पज्जदि $\frac{१७८३६}{३४३}$ । पुणो सत्तभागाहिय-छरज्जुमूलविक्खंभेण छरज्जुउस्सेधेण एगरज्जुमुहेण सोलह-वारहजोयणबाहल्लेण दोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे वादालीसजोयणसदस्स तेदालीस-तिसदभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{४२००}{३४३}$ । पुणो एगपंच एगरज्जुविक्खंभेण सत्तरज्जुउस्सेधेण वारह-सोलह-वारहजोयणबाहल्लेण उवरिमदोसु वि पासेसु ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे अट्ठासीदिसमहिय-पंचजोयणसदाणं एगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{५८८}{४९}$ । उवरि रज्जुविक्खंभेण सत्तरज्जु-आयामेण किंचूणजोयणबाहल्लेण ट्ठिदवादखेत्तं जगपदरपमाणेण कदे ति-उत्तर-तिसदाणं वेसहस्सविसद-चालीसभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{३०३}{२२४०}$ । एदं सव्वमेगत्थ मेलाविदे चउवीसकोडिसमहियसहस्सकोडीओ एगूणवीसलक्ख-तेसीदिसहस्स-चदुसद-सत्तासीदिजोय-णाणं णव-सहस्स-सत्तसय-सट्ठिरूवाहियलक्खाए अवहिदेगभागबाहल्लं जगपदरं होदि $\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९७६०}$ । एदं वादरुद्धक्खेत्तं घणलोगम्हि अवणिदे पदरगदकेवलिखेत्तं देसूणलोगो होदि । एदं पदरगदकेवलिखेत्तमधोलोगपमाणेण कदे वे अधोलोगा अधोलोगस्स चदुब्भागेण सादिरेगेण ऊणया । उड्ढलोगपमाणेण कदे दुवे उड्ढलोगा उड्ढलोगस्स तिभागेण देसूणेण सादिरेया । लोगपूरणगदो केवली केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५ ॥

एत्थ 'आदेसेण' गहणं ओघपडिसेधफलं। गदिगहणमिंदियादिपडिसेहफलं। अणुवादगहणं सुत्तस्स अकट्टिवुत्तपरूवणफलं। णिरयगदिणिद्देसो देवगदियादिपडिसेधफलो। णेरइएसु त्ति वयणं तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेधफलं। लोगस्स असंखेज्जदिभागे इदि वुत्ते सेसलोगाणं कथं गहणं होदि? ण, खेत्त-फोसणसुत्ताणं देसामासिगत्तादो। संपदि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगद-मिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एदस्स अत्थपरूवणट्ठमेत्थोगाहणा वुच्चदे। तं जहा—पढमाए पुढवीए पढमपत्थडम्हि णेरइयाणमुस्सेधो तिण्णि हत्था। तेरहमपत्थडे सत्त धणू तिण्णि हत्था छ अंगुलाणि णेरइयाणमुस्सेधो होदि। मुह-भूमिविसेसम्हि दु उच्छेहभजिदम्हि सा हवे वड्ढी। वड्ढी इच्छागुणिदा मुहसहिदा सा फलं होदि ॥ १७ ॥

एदीए गाहाए सेसएक्कारसपत्थडणेरइयाणमुस्सेधा आणेयव्वा। तेसिं पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हस्त	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल	०	८$\frac{१}{२}$	१७	१$\frac{१}{२}$	१०	१८$\frac{१}{२}$	३	११$\frac{१}{२}$	२०	४$\frac{१}{२}$	१३	२१$\frac{१}{२}$	६

विदियपुढविएक्कारसमपत्थडे णेरइयाणमुस्सेधो पण्णरह धणूणि वे हत्था वारह अंगुलाणि। सेसदसपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो पुव्विल्लगाहाए आणेदव्वो। तेसिं पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष	८	९	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५
हस्त	२	०	३	२	१	०	३	१	०	३	२
अंगुल	२$\frac{२}{११}$	२२$\frac{४}{११}$	१८$\frac{६}{११}$	१४$\frac{८}{११}$	१०$\frac{१०}{११}$	७$\frac{१}{११}$	३$\frac{३}{११}$	२३$\frac{५}{११}$	१९$\frac{७}{११}$	१५$\frac{९}{११}$	१२

तदियपुढविणवमपत्थडम्हि णेरइयाणमुस्सेधो एक्कत्तीस धणूणि एगो हत्थो य। सेसट्ठपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो पुव्विल्लगाहाए आणेदव्वो। णवरि एत्थ एक्कत्तीस धणूणि सहत्थाणि भूमी होदि। पण्णरस धणूणि वे हत्था वारह अंगुलाणि मुहं होदि। भूमीदो मुहं सोहिय उस्सेधेण णवहि भागे हिदे वड्ढी होदि। तं वड्ढिं णवसु ठाणेसु ठविय एगादिएगुत्तरेहि गुणगारेहि गुणिय मुहम्मि पक्खित्ते इच्छिदउस्सेधो होदि। तस्स पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७	८	९
धनुष	१७	१९	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१
हस्त	१	०	३	२	१	०	३	२	१
अंगुल	१०$\frac{२}{३}$	९$\frac{१}{३}$	८	६$\frac{२}{३}$	५$\frac{१}{३}$	४	२$\frac{२}{३}$	१$\frac{१}{३}$	०

चउत्थपुढविसत्तमपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो वासट्ठी धणूणि वे हत्था य। एदं भूमिं करिय सेस-छ-पत्थडणेरइयाणमुस्सेधो आणेदव्वो। तस्स पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७
धनुष	३५	४०	४४	४९	५३	५८	६२
हस्त	२	०	२	०	२	०	२
अंगुल	२०$\frac{४}{७}$	१७$\frac{१}{७}$	१३$\frac{५}{७}$	१०$\frac{२}{७}$	६$\frac{६}{७}$	३$\frac{३}{७}$	०

पणुवीसुत्तरसदधणूणि। एदं भूमिं करिय सेसचदुण्हं पत्थडाणमुस्सेधो आणेदव्वो। पंचमपुढविपंचमपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो आणेदव्वो। तेसिं पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३	४	५
धनुष	७५	८७	१००	११२	१२५
हस्त	०	२	०	२	०

छट्ठीए पुढवीए तदियपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो अड्ढाइज्जसदधणूणि । एदं भूमिं करिय सेसदोण्हं पत्थडाणमुस्सेधो आणेदव्वो । तस्स पमाणमेदं—

प्रस्तार	१	२	३
धनुष	१६६	२०८	२५०
हस्त	२	१	०
अंगुल	१६	८	०

सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणमुस्सेधो पंचसदधणूणि । तेसिं पमाणमेदं—

प्रस्तार	१
धनुष	५००

एत्थ णेरइएसु उस्सेधअट्ठमभागो विक्खंभो त्ति कट्टु परिट्ठयमद्धं करिय विक्खंभद्धेण गुणियुस्सेहेण गुणिदे णेरइयाणमोगाहणा होदि । ओगाहणं पडि सत्तमपुढवीपधाणा, पढमपुढविओगाहणादो सत्तमपुढविओगाहणाए संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । दव्वं पडि पढमपुढवी पहाणा; सेसपुढविदव्वादो पढमपुढविदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । ओगाहणगुणगारादो दव्वगुणगारो बहुगो त्ति पढमपुढवी पहाणा कायव्वा । सामण्णेण एत्थ अत्थपदं वुच्चदे । सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा होदि । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागो । एदमत्थपदं सव्वत्थ जोजेदव्वं । पुणो अप्पप्पणो रासीओ ठविय अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तोगाहणाए गुणिय चदुहि लोगेहि ओवट्टिदे चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो आगच्छदि । माणुसखेत्तेणोवट्टिदे असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि होंति । णवरि वेयण-कसायेसु णवगुणा, वेउव्वियसमुग्घादे संखेज्जगुणा ओगाहणा सव्वत्थ कायव्वा । एवं मारणंतियपदस्स । णवरि ओवट्टणं ठविज्जमाणे पढमपुढविदव्वं पहाणं कायव्वं । कुदो ? मारणंतिएहि परिणदजीवस्स तत्थ विग्गहगईए रज्जुअसंखेज्जदिभागमेत्तदीहत्तस्स वि उवलंभादो । तेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपढमपुढविउवक्कमणकालेण ओवट्टिय लद्धस्स असंखेज्जा भागा विग्गहं करेंति । तेसिं पि असंखेज्जा भागा मारणंतियं करेंति त्ति । पुणो तमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमारणंतियउवक्कमणकालेण गुणिदे मारणंतियरासी आगच्छदि । पुणो णेरइयमुहवित्थारेण णवगुणरज्जुअसंखेज्जदिभागेण मारणंतियरासिं गुणिदे तक्खेत्तं होदि । उववादस्सोवट्टणं ठविज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण विदियपुढविदव्वे भागे हिदे तिरिक्खेहिंतो विदियपुढवीए उप्पज्जमाणमिच्छाइट्ठिणो होंति । पुणो अवरेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय रूवूणेण गुणिदे विग्गहगईए मारणंतिएण उप्पज्जमाणतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो होंति । पुणो अवरेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविदे तिरिक्खेहिंतो विग्गहगदीए रज्जुपडिभागेण मारणंतियं करिय उप्पज्जमाणतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो होंति त्ति वत्तव्वं । सव्वत्थ रज्जुमेत्तायामविदियदंडुवलंभादो । पुणो एदं दव्वं तिरिक्खोगाहणमुहवित्थारेण णवरज्जुगुणिदेण गुणेदव्वं । ओवट्टणा पुव्वं व कादव्वा । एवं सासणस्स । णवरि उववादो णत्थि । मारणंतियरासिमिच्छिय दो आवलियाए असंखेज्जदिभागे अण्णोण्णगुणे करिय पुव्वरासिस्स भागहारं ठविय तप्पाओग्गेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मारणंतियरासी होदि । सेसविधी पुव्वं व । एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स । णवरि मारणंतियं पि णत्थि । असंजदसम्माइट्ठिस्स सासणभंगो । णवरि उववादो अत्थि । मारणंतिय-उववादेसु णेरइया सम्माइट्ठिणो संखेज्जा चेव होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ६ ॥

दव्वट्ठियणयमवलंबिय सुत्तं जदो ट्ठिदं तदो सत्तण्हं पुढवीणं परूवणा ओघपरूवणाए तुल्लेत्ति घडदे । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे पढमपुढविपरूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला, सव्वगुणाणं सव्वपदेहि सरिसत्तुवलंभादो । ण विदियादिपंचपुढवीणं परूवणा ओघपरूवणाए पदं पडि तुल्ला, तत्थ असंजदसम्माइट्ठीणं उववादाभावादो । ण सत्तमपुढविपरूवणा वि णिरओघपरूवणाए तुल्ला, सासणसम्माइट्ठिमारणंतियपदस्स असंजदसम्माइट्ठिमारणंतिय-उववादपदाणं च तत्थ अभावादो । सत्तण्हं पुढवीणं ओगाहणाभेदो मारणंतिय-उववादाणं ठविज्जमाणरज्जुभेदो दव्वविसेसो च वत्तव्वो । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिमारणंतियखेत्तं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं । कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागगुणिदतद्दव्वे सेढीए संखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो त्ति एगपदेसमादिं कादूण जा उक्कस्सेण सगुप्पत्तिपदेसो त्ति मारणंतियखेत्तायामस्सुवलंभादो । ण चेदमसिद्धं, महामच्छखेत्तट्ठाणपरूवणण्णहाणुववत्तीदो । तत्थ जेण सेढीए असंखेज्जदिभागायामेण मारणंतियं करिय मरंता बहुवा, तेण तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तं घडदे ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते ? सव्वलोए ॥ ७ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा ओघमिच्छादिट्ठिपरूवणाए तुल्ला । णवरि वेउव्वियसमुग्घादगदजीवा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे, तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदसेढिमेत्तो त्ति गुरूवदेसादो ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूचिद-अत्थो वुच्चदे—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणवेदण-कसाय-वेउव्विएहि परिणदसासणसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । रासिपमाणं भण्णमाणे सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा । सेसरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तीओ । णवरि वेउव्वियसमुग्घादरासी मूलरासिस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? तिरिक्खेसु विउव्वमाणजीवाणं पउरं संभवाभावादो । एत्थ ओगाहणगुणगारो संखेज्जघणंगुलमेत्तो, एगघणंगुलं वा । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं । मारणंतियसमुग्घादगदसासणसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । ओघरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे मरंतसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण हरिय रूवूणेण गुणिदे मारणंतियसमुग्घादगदरासी होदि । पुणो वि आवलियाए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुमेत्तायामेण मारणंतियसमुग्घादगद-एगसमयसंचिदरासी होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तक्कालसंचिदरासी होदि । एदं संखेज्जपदरंगुलगुणिदरज्जूए गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि । एवमसंजद-संजदासंजदाणं । सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतियं णत्थि । उववादगदसासणसम्माइट्ठी केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एत्थ रासिपमाणमाणिज्जमाणे मूलरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे उप्पज्जमाणसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । पुणो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रूवूणेण गुणिदे विग्गहगईए मारणंतिएण उप्पज्जमाणरासी होदि । संखेज्जा भागा मारणंतियं कादूणुप्पज्जंति त्ति के वि भणंति, एदं जाणिय वत्तव्वं । णत्थि एत्थ मज्झणियमो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे उज्जुदो आगच्छमाणरासी होदि । एदस्स पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण गुणिदरज्जुं गुणगारं ठविदे उववादखेत्तं होदि । एत्थ ओवट्टणा पुव्वं व । एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स । णवरि उववादे संखेज्जा होंति, पुव्वं बद्धायुगमणुस्ससम्मादिट्ठीहि विणा अण्णेसिं तत्थ उववादाभावादो । ओगाहणगुणगारो वि संखेज्जपदरंगुलमेत्तो, एगपदरंगुलमेत्तो वा । सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजदाणं उववादं णत्थि ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

एदं पि देसामासियं सुत्तमेव, संगहिदाणेगसुत्तत्थादो । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगद-पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एत्थ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तरासिं मोत्तूण पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तरासी चेव घेत्तव्वो, अपज्जत्तोगाहणादो पज्जत्तोगाहणाए असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एत्थ सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जभागमेत्ता होदि । सेसरासीओ तस्स संखेज्जदिभागमेत्तीओ । एत्थ ओगाहणगुणगारो संखेज्जघणंगुलमेत्तो । ओवट्टणं जाणिदूण कादव्वं । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीमिच्छादिट्ठीणं । वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीमिच्छाइट्ठीणं । मारणंतियसमुग्घादगदपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तरासिस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारस्स सत्तादो । तं कथं ? संखेज्जवस्साउअतिरिक्खोवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तेरासियकमेण भागे हिदे मरंतपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । एत्थ उवक्कमणकालागमणविधी वुच्चदे—संखेज्जावलियासु जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागो णिरंतरुवक्कमणकालो लब्भदि, तो उवक्कमणाणुवक्कमणप्पयम्मि

आयुट्ठिदिम्हि केत्तियमुवक्कमणकालं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालो लब्भदि। एवं संखेज्जवस्साउअरासीणं सांतराणमुवक्कमणकालो अण्णेसिं पि आणेदव्वो। पुणो मारणंतियरासिमिच्छिय अवरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय रूवूणेण गुणिय रज्जुआयामेण ट्ठिदरासिमिच्छिय अण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागहारो ठवेयव्वो। पुणो एत्थतणसंचयमिच्छिय मारणंतियउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिय पुणो एदं रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि। एदेण तिण्णि वि लोगे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति सिद्धं। तिरिय-णरलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीणं वत्तव्वं। उववादगदपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। एत्थ उववादखेत्तमाणिज्जमाणे मारणंतियभंगो। णवरि पढमं उवसंहरिय विदियदंडट्ठियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो, असंखेज्जजोयणविदियदंडायामजीवाणं बहूणमणुवलंभादो। एसो एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणगारे अवणिदे रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलाणि गुणगारो होदि। एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तजोणिणीणं वत्तव्वं। सेसगुणट्ठाणाणं तिरिक्खोघभंगो। णवरि जोणिणीसु असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १० ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे—सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो? उस्सेधघणंगुलं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तोगाहणत्तादो। अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। विहारवदिसत्थाणं वेउव्वियसमुग्घादो य णत्थि। मारणंतिय-उववादगदा केवडि खेत्ते? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो? रासिस्स भागहारभूदा होदूण जहाकमेण दोण्णि तिण्णि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागा लब्भंति त्ति। तिरिय-माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। सुगममेदं।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। कुदो? मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिखेत्तग्गहणादो। सेढीए असंखेज्जदिभाग-

मेत्तमणुसअपज्जत्ताणं खेत्तस्स गहणं किण्ण कीरदे ? ण, तस्स अंगुलस्स संखेज्जदिभागे संखेज्जंगुलेसु वा अवट्ठाणादो। मारणंतिय-उववादगदमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरिय-णरलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। कुदो ? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तरासीदो। एवमुववादस्स वि। णवरि एगो आवलियाए असंखेज्जदिभागो दोण्णि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागा च मणुसअपज्जत्तरासिस्स भागहारा ट्ठवेदव्वा। सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि परिणदा केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। सम्मामिच्छाइट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-समुग्घादपरिणदा केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। संजदासंजदा सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादपरिणदा केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघभंगो। एवं मणुसपज्जत्तमणुसिणीसु। णवरि मिच्छाइट्ठीणं सासणसम्माइट्ठिभंगो। मणुसिणीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि। पमत्ते तेजाहारसमुग्घादा णत्थि।

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? ओघं ॥ १२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो मूलोघमवधारिय लोगस्स असंखेज्जदिभागे, असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा त्ति वत्तव्वो।

मणुसअपज्जत्ता केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १३ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादेहि परिणदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुस-खेत्तस्स संखेज्जदिभागे णिचिदकमेण। विण्णासकमेण पुण असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि। मारणंतियसमुग्घादो माणुसोघतुल्लो। मारणंतियखेत्तं ठविज्जमाणे सूचिअंगुलपढम-तदियवग्गमूले गुणेदूण सेढिम्हि भागे हिदे दव्वं होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-उवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमयम्हि मरंतरासी होदि। तं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिय रूवूणेण गुणिदे एगसमयसंचिदमारणंतियरासी होदि। पुणो तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण मारणंतियउवक्कमणकालेण गुणिदे मारणंतियकालब्भंतरे संचिदरासी होदि। पुणो अवरेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुआयामेण मुक्कमारणंतियरासी होदि। रज्जुआयदस्स विक्खंभो पदरंगुले पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओव-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ट्ठिदे होदि। एवमुववादस्स वि। णवरि एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणगारो अवणेदव्वो। विदियदंडे सेढीए संखेज्जदिभागायामेण मुक्कमारणंतियजीवे इच्छामो त्ति अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १४ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगददेवमिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे। कुदो ? पधाणीकदजोइसियरासित्तादो। मारणंतिय-उववादपरिणदमिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एत्थ खेत्तपमाणं जाणिय ट्ठवेदव्वं। सेसगुणट्ठाणाणमोघभंगो।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा त्ति ॥ १५ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूचिद-अत्थो वुच्चदे। तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-उववादपरिणदभवणवासियमिच्छादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। तिरिक्ख-मणुसमिच्छादिट्ठिणो कण्णागारेण ट्ठिदभवणवासियखेत्तेसु उप्पज्जमाणा वे विग्गहे कादूण सेढीए संखेज्जदिभागायामेण उप्पज्जंता संभवंति, तदो तिरियलोगादो असंखेज्जगुणेण उववादखेत्तेण होदव्वमिदि ? सच्चमेदं जइ सेढीए संखेज्जदिभागमेत्तायामो उववादखेत्तस्स लब्भइ। किंतु संखेज्जसूचिअंगुलमेत्तो चेव। एत्तो संखेज्जजोयणाणि हेट्ठा गंतूण भवणवासियविमाणाणमवट्ठाणाणुवलंभादो। ण च तिरियलोगे सव्वत्थ तदावासा, तिरियलोगस्स मज्झिमासंखेज्जदिभागे चेव तेसिमत्थित्तदंसणादो। ण च उवरिमदेवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खाणं व भवणवासिएसुप्पज्जमाणतिरिक्खमणुस्साणं सगुप्पत्तिदिसं मुच्चा तिरिच्छेण गमणमत्थि, कंडुज्जुवाए गईए भवणवासियजगपणिधिमागंतूण हेट्ठावलिए भवणवासिएसुप्पत्तिदंसणादो। एदं कुदो णव्वदे ? भवणवासियाणमुववादखेत्तस्स तिरियलोगासंखेज्जदिभागत्तण्णहाणुववत्तीदो। सगच्छिदट्ठाणादो हेट्ठा ओयरिय भवणवासिएसुप्पज्जमाणाणमुववादखेत्तायामो सेढीए संखेज्जदिभागो लब्भदि त्ति तग्गहणं जुत्तं, तहा तत्थुप्पज्जमाणाणं सुट्ठु त्थोवत्तादो। एदं कुदो णव्वदे ? तिरियलोगस्सासंखेज्जदिभागे त्ति वक्खाणादो। मारणंतियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे, अड्डाइज्जादो वि असंखेज्जगुणे। सेसमोघं। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि। वाणवेंतर जोइसियाणं देवोघभंगो। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि। पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दस धणू चेय। वेंतर-जोदि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा ॥ १८ ॥ एदम्हादो उस्सेहादो एत्थ ओगाहणखेत्तमाणेदव्वं । सोधम्मीसाणे सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । एत्थ सगलखेत्तपरिक्खा भवणवासियभंगो । अप्पणो ओहिखेत्तमेत्तं देवा विउव्वंति त्ति जं आइरियवयणं तण्ण घडदे, लोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवेउव्वियखेत्तस्सप्पसंगादो । मारणंतिय-उववादाणं देवोघभंगो । उववादखेत्तं ठविज्जमाणे विक्खंभसूचीगुणिदसेढिं ठविय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाएण सोहम्मीसाणउवक्कमणकालेण ओवट्टिदे उप्पज्जमाणजीवा होंति । असंखेज्जजोयणविदियदंडेण उप्पज्जमाणजीवे इच्छिय अवरो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । एक्कपदरंगुलविक्खंभेण सेढीए संखेज्जदिभागायामेण खेत्तं पुसंति त्ति पदरंगुलगुणिदसेढीए संखेज्जदिभागो गुणगारो ठवेदव्वो । सव्वत्थ उजुगदीए उप्पज्जमाणजीवेहिंतो विग्गहगदीए उप्पज्जमाणजीवा असंखेज्जगुणा । कुदो ? सेढीदो उस्सेढीए बहुत्तुवलंभादो । भवणवासियउववादखेत्तं व तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो किं ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, पभापत्थडे उप्पज्जमाणाणं तिरिक्खाणं सव्वेसिं पि सेढीए संखेज्जदिभागायामो विदियदंडस्स लब्भदे, तेणेदमुववादखेत्तं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं त्ति । सेसगुणट्ठाणाणं देवभंगो । सणक्कुमारप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जो त्ति मिच्छादिट्ठी ओघभंगो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं ओघभंगो ।

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगद-असंजदसम्माइट्ठिणो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति त्ति वत्तव्वं । णवरि सव्वट्ठे सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । कथं ? सव्वट्ठे वेदण-कसायसमुग्घादाणं तेहिंतो समुप्पज्जमाणथोवविप्फुज्जणं पडुच्च तथोवदेसादो, कारणे कज्जोवयारादो वा । एवं गदिमग्गणा समत्ता ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ॥ १७ ॥

एत्थ लोगणिद्देसेण पंचण्हं लोगाणं गहणं, देशामर्शकत्वाल्लोकस्य । बादर-सुहुमादिवयणेण सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदजीवाणं गहणं, छव्विहावत्थावदिरित्तबादरादीणमभावादो । तदो सव्वसुत्ताणि देसामासिगाणि चेव,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ण एस णियमो वि, उभयगुणोवलंभा। सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा एइंदिया केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। माणुसखेत्तं ण विण्णायदे, संपहियकाले विसिट्ठुवएसाभावा। तं जहा—वेउव्वियमुट्ठावेंतरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स ओगाहणा उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। विउव्वमाण-एइंदियरासीदो घणंगुलस्स भागहारो किमप्पो बहुगो समो वा इदि ण णव्वदे। जदि वेउव्वियरासीदो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो होदि, तो माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। अह असंखेज्जगुणो, तो असंखेज्जदिभागे। अह सरिसो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। ण च एत्थ एदं चेव होदि त्ति णिच्छओ अत्थि, तदो माणुसखेत्तं ण णव्वदि त्ति सिद्धं। बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। तं जहा—मंदरमूलादो उवरि जाव सदर-सहस्सारकप्पो त्ति पंचरज्जु-उस्सेधेण लोगणाली समचउरंसा वादेण आउण्णा, तं जगपदरं कस्सामो। एक्कुणवंचासरज्जुपदराणं जदि एगं जगपदरं लब्भदि, तो पंचरज्जुपदराणं किं लभामो त्ति फलगुणिदमिच्छं पमाणेणोवट्टिदे वे-पंचभागूण-एगूणसत्तरिरूवेहि घणलोगे भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। लोगपेरंतवादखेत्तं संखेज्जजोयणबाहल्लं जगपदरं पुव्वपरूविदमाणेदूण एत्थेव पक्खिविय अट्ठपुढविखेत्तं तेसिं हेट्ठा ट्ठिदवादजगपदरं संखेज्जजोयणबाहल्लमाणेदूण पक्खित्ते जेण लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ताणं खेत्तं जादं, तेण बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्ता लोगस्स संखेज्जदिभागे होंति त्ति सिद्धं। वेउव्वियसमुग्घादगदाणं एइंदियओघभंगो। मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे। बादरेइंदियअपज्जत्ताणं बादरेइंदियभंगो। णवरि वेउव्वियपदं णत्थि। सुहुमेइंदिया तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ता य सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे, सुहुमाणं सव्वत्थ अच्छणं पडि विरोहाभावादो।

वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता य केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे॥ १८॥

एदस्स अत्थो—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादपरिणदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। णवरि तिण्हमपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। मारणंतियउववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे, अड्ढाइज्जादो वि असंखेज्जगुणे। एत्थ मारणंतियखेत्तमाणिज्जमाणे बीइंदिय-तीइंदिय-चदुरिंदिया तेसिं पज्जत्तापज्जत्तदव्वं ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-उवक्कमणकालेण खंडिय तस्स असंखेज्जदिभागो वा संखेज्जदिभागो वा मारणंतिएण विणा मरदि त्ति एदस्स असंखेज्जा भागा संखेज्जा भागा वा घेत्तूण मारणंतिय-उवक्कमणकालेण आवलि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मारणंतियरासी होदि । रज्जुमेत्तायामेण ट्ठिदरासिमिच्छामो त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय अप्पप्पणो विक्खंभवग्गगुणिदरज्जूए गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि । उववादखेत्तं ठविज्जमाणे एदं चेव ठविय मारणंतिय-उवक्कमण-कालगुणगारमवणिदे एगसमयसंचिदो मारणंतियरासी होदि । तस्स असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उप्पज्जंति त्ति तस्स असंखेज्जे भागे घेत्तूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिदे सेढीए संखेज्जदिभागायामेण विदियदंडट्ठिदरासी होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १९ ॥

एदस्स अत्थो—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगद-पंचिंदियमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । मारणंतिय उववादगदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एदाणं खेत्ताणमाणयणं पुव्वं व कादव्वं । सासणादीणमोघभंगो । एवं पज्जत्ताणं पि वत्तव्वं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति ण वुच्चदे ।

पंचिंदियअपज्जत्ता केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २१ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदपंचिंदियअपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्त-ओगाहणादो । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एवमिंदियमग्गणा गदा ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया, बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता, सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता य केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—पुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया सुहुमआउकाइया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया सुहुमतेउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता च सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोए, असंखेज्जलोगमेत्तपरिमाणादो। णवरि तेउकाइया वेउव्वियसमुग्घादगदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, वाउकाइया वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। माणुसखेत्तं ण णव्वदे। बादर-पुढविकाइया तेसिं चेव अपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। तं जहा—जेण बादरपुढविकाइया सापज्जत्ता पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति, तेण पुढवीओ जगपदरप-माणेण कस्सामो। तत्थ पढमपुढवी एगरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुदीहा वीससहस्सूण-वे-जोयणलक्खबाहल्ला, एसा अप्पणो बाहल्लस्स सत्तमभागबाहल्लं जगपदरं होदि। विदियपुढवी सत्तमभागूण-वे-रज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा बत्तीसजोयणसहस्सबाहल्ला सोलह-सहस्साहियचदुण्हं लक्खाणं एगुणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। तदियपुढवी वे-सत्तभागहीण-तिण्णिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जु-आयदा अट्ठावीसजोयणसहस्सबाहल्ला बत्तीससहस्साहियं पंचलक्खजोयणाणं एगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। चउत्थपुढवी तिण्णिसत्तभागूण-चत्तारिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा चउवीसजोयणसहस्सबाहल्ला छजोयणलक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। पंचमपुढवी चत्तारिसत्तभागूणपंचरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा वीसजोयणसहस्सबाहल्ला वीससहस्साहियछण्हं लक्खाणमेगूण-वंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। छट्ठपुढवी पंच-सत्त-भागूण-छरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा सोलहजोयणसहस्सबाहल्ला वाणउदि-सहस्साहियपंचण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। सत्तमपुढवी छ-सत्त-भागूण-सत्तरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा अट्ठजोयणसहस्सबाहल्ला चउदालसहस्साहियतिण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि। अट्ठमपुढवी सत्तरज्जुआयदा एगरज्जु-रुंदा अट्ठजोयणबाहल्ला सत्तमभागाहिय-एकजोयणबाहल्लं जगपदरं होदि। एदाणि सव्वाणि एगट्ठे कदे तिरियलोगबाहल्लादो संखेज्ज-गुणबाहल्लं जगपदरं होदि। एत्थ असंखेज्जलोगमेत्ता पुढविकाइया चिट्ठंति, तेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणो त्ति सिद्धं। एदेहि पदेहि लोगस्स असंखेज्जदिभागे चिट्ठंता बादरपुढविकाइया सुत्तेण सव्वलोगे चिट्ठंति त्ति वुत्ता, तं कथं घडदे ? ण, मारणंतिय-उववादपदे पडुच्च तथोवदेसादो। मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे। एवं बादरआउकाइयाणं तेसिमपज्जत्ताणं च। पुढवीसु सव्वत्थ ण जलमुवलं-भदि त्ति आउकाइया सव्वत्थ पुढवीसु ण होंति त्ति णासंकणिज्जं, बादरकम्मोदएण बादरत्तमुवगयाणं अणुवलंभमाणाणं पि सव्वपुढवीसु अत्थित्तविरोहाभावादो। एवं बादरतेउकाइयाणं तस्सेव अपज्जत्ताणं च। णवरि वेउव्वियपदमत्थि, ते च पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। तेउकाइया बादरा सव्वपुढवीसु होंति त्ति कथं णव्वदे ? आगमादो। एवं बादरवाउकाइयाणं तेसिमपज्जत्ताणं च। णवरि सत्थाण-वेयण-कसाय-समुग्घादगदा तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, दो-लोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्ज-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिभागे। माणुसखेत्तं ण विण्णायदे। सव्वअपज्जत्तेसु वेउव्वियपदं णत्थि। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता बादरणिगोदपदिट्ठिदा तस्सेव अपज्जत्ता च बादरपुढवितुल्ला।

बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—बादरपुढविपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणं ठविय जोएदव्वं। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णरतिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एवं बादरआउकाइयपज्जत्ता। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणमेवं चेव। णवरि बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता वेदण-कसाय-सत्थाणेसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे। एदेसिं रासीणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जगपदराणि पदरंगुलेण खंडिदेयखंडमेत्तपमाणं होदि। ओगाहणा पुण घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तओगाहणा वि घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, अण्णहा तदो बीइंदिय ओगाहणा असंखेज्जगुणा ण होज्ज। तदो पत्तेयसरीरपज्जत्तरासी तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागेण होज्ज ? ण एस दोसो, घणंगुलभागहारो पदरंगुलभागहारादो संखेज्जगुणो त्ति। पत्तेयसरीरपज्जत्तजहण्णोगाहणादो बीइंदियपज्जत्तजहण्णोगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति कुदो णव्वदे ? वेदणाखेत्तविहाणम्हि वुत्तवोगाहणदंडयादो। तं जहा—सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा। सुहुमवाउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमआउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरवाउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरआउकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। वेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। तेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा। सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमतेउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरवाउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरतेउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । वेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । वेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओगाहणा संखेज्जगुणा । वेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । बादरवणप्फइपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा । सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणागुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सुहुमादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बादरादो सुहुमस्स ओगाहणागुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो संखेज्जा समया । एत्थ बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो इदि वुत्ते होदु णामेदं, पदरंगुलभागहारादो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो त्ति कुदो णव्वदे ? तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो त्ति गुरूवएसादो । एदम्हादो चेव एदिस्से ओगाहणाए जीवबहुत्तं च णायव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता किमिदि सुत्तम्हि ण वुत्ता ? ण, तेसिं पत्तेयसरीरेसु अंतब्भावादो । बादरतेउकाइयपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-समुग्घादगदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे ।

बादरवाउकाइयपज्जत्ता केवडि खेत्ते ? लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे—सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा बादरवाउपज्जत्ता तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । बादरवाउपज्जत्तरासी लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तो मारणंतिय-उववादगदो सव्वलोगे किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, रज्जुपदरमुहेण पंचरज्जुआयामेण ट्ठिदखेत्ते चेव पाएण तेसिमुप्पत्तीदो । अण्णखेत्तंतरं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणमइथोवत्तं कथमवगम्मदे ? बादरवाउकाइयपज्जत्ता लोगस्स संखेज्जदिभागे इदि सुत्तादो । अण्णहा सुत्तस्स पुध आरंभो णिरत्थओ होज्ज, बादरवाउअपज्जत्तेसु अंतब्भावादो । वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । अड्डाइज्जं ण विण्णायदे ।

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ॥ २५ ॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा वणप्फदिकाइया सुहुमवणप्फइकाइया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता च सव्वलोए, एवं णिगोद सुहुमणिगोद तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं च । बादरवणप्फइकाइय बादरणिगोदा तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता च सत्थाण-वेदणसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोए । बादरा पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति त्ति लोगस्स असंखेज्जदिभागे होंति । एदं कथं णव्वदे ? गुरूवएसादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २६ ॥

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठी सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एत्थ ओवट्टणा जाणिय कायव्वा । सेसगुणट्ठाणाणं पंचिंदियभंगो ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ २७ ॥

सुगममेदं ।

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ २८ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे– पंचमणजोगि-पंचवचिजोगिमिच्छादिट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । वेउव्वियसमुग्घादगदाणं कथं मणजोग-वचिजोगाणं संभवो ? ण, तेसिं पि णिप्पण्णुत्तरसरीराणं मणजोगवचिजोगाणं परावत्तिसंभवादो । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । मारणंतियसमुग्घादगदाणं असंखेज्जजोयणायामेण ठिदाणं मुच्छिदाणं कथं मण-वचिजोगसंभवो ? ण, वारणाभावादो अवत्ताणं णिब्भरसुत्तजीवाणं व तेसिं तत्थ संभवं पडि विरोहाभावादो । ॥ ३८४ ॥
मण-वचिजोगेसु उववादो णत्थि । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असमुग्घादसजोगिकेवलि त्ति मूलोघभंगो । णवरि सासणअसंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ३० ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा कायजोगिमिच्छाइट्ठी सव्वलोए। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणा जाणिय कायव्वा।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३१ ॥

जोगाभावादो एत्थ अजोगीणमग्गहणं। सेसं सुगमं।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ३२ ॥

गुणपडिवण्णाणमेगजोगो किण्ण कदो? ण, सजोगिम्हि लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु सव्वलोगे वा इदि विसेसुवलंभादो।

ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ३३ ॥

एदे सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतियसमुग्घादगदा सव्वलोए, सुहुमपज्जत्ताणं सव्वलोगखेत्तेसु संभवादो। उववादो णत्थि, णिरुद्धोरालियकायजोगादो। विहारवदिसत्थाणगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, तसपज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागस्स संचारो होदि त्ति गुरूवएसादो। अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे, ओरालियकायजोगे णिरुद्धे वेउव्वियकायजोगिसहगदवेउव्वियसमुग्घादस्स असंभवादो।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३४ ॥

कथं सजोगिकेवली लोगस्स असंखेज्जदिभागे? ण एस दोसो, ओरालियकायजोगे णिरुद्धे ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगसहगदकवाड-पदर-लोगपूरणाणमसंभवादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमुववादो णत्थि। पमत्ते आहारसमुग्घादो णत्थि। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३५ ॥

बहुसु कथमेगवयणणिद्देसो? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एगत्तुवलंभादो। अथवा मिच्छाइट्ठी इदि एसो बहुवयणणिद्देसो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेव । कथं पुण एत्थ विहत्ती णोवलब्भदे ? 'आइ-मज्झंतवण्णसरलोवो' इदि विहत्तिलोवादो । सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा ओरालियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठी सव्वलोगे । विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादा णत्थि, तेण तेसिं विरोहादो । ओरालियमिस्सस्स वेउव्वियादिपदेहि भेदसंभवादो ओघणिद्देसो ण घडदे ? ण एस दोसो, एत्थ विज्जमाणपदाणं परूवणा ओघपरूवणाए तुल्लेत्ति ओघत्तविरोहाभावादो ।

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३६ ॥

एत्थ पुव्वसुत्तादो ओरालियमिस्सकायजोगो अणुवट्टदे । तेणेवं संबंधो भवदि– ओरालियमिस्सकायजोगीसु सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? इदि । सासणसम्मादिट्ठी सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? ओरालियमिस्सम्हि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसासणसम्मादिट्ठिरासिस्स संभवादो । एत्थ सेसपदाणि णत्थि, तेण तेसिं तत्थ विरोधादो । असंजदसम्माइट्ठी सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे, संखेज्जपरिमाणादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमुववादो किमट्ठं ण उत्तो ? ण, ओरालियमिस्सम्हि ट्ठिदाणमोरालियमिस्सकायजोगेसु उववादाभावादो । अथवा उववादो अत्थि, गुणेण सह अक्कमेण उपात्तभवसरीरपढमसमए उवलंभादो, पंचावत्थावदिरित्तओरालियमिस्सजीवाणमभावादो च । सजोगिकेवली कवाडगदो तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे ।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३७ ॥

एदस्सत्थो– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा मिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे, पहाणीकयजोइसियरासित्तादो । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एत्थ ओवट्टिय दट्ठव्वं । सासणादिपरूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला, णवरि सव्वत्थ उववादो णत्थि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३८ ॥

एदस्सत्थो–वेउव्वियमिस्सकायजोगी मिच्छादिट्ठी सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सत्थाण-वेदण-समुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे।

आहारकायजोगीसु आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३९ ॥

एदस्स अत्थो–सत्थाण-विहारवदिसत्थाणपरिणदपमत्तसंजदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। सेसपदाणि णत्थि। आहारमिस्सकायजोगिणो पमत्तसंजदा सत्थाणगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ४० ॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-उववादगदा कम्मइयकायजोगिमिच्छादिट्ठिणो जेण सव्वत्थ सव्वद्धं होंति, तेण सव्वलोगे वुत्ता।

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ४१ ॥

एदे दो वि रासीओ जेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति, तेण सुत्ते ओघमिदि वुत्तं।

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु सव्वलोगे वा ॥ ४२ ॥

सुगममेदं सुत्तं। एवं जोगमग्गणा समत्ता।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टित्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४३ ॥

एदस्स अत्थो–सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा इत्थिवेदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणम-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे, पहाणीकददेवितिथिवेदरासित्तादो। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणा देवोघतुल्ला। सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघभंगो। णवरि असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उववादो णत्थि। पमत्तसंजदे ण होंति तेजाहारा। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा पुरिसवेद-मिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि उवसामग-खवगा त्ति ओघभंगो।

णवुंसयवेदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ४४ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदणवुंसयवेदमिच्छादिट्ठी सव्वलोए। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे। णवरि वेउव्वियसमुग्घादगदा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे। अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति तेण ओघमिदि घडदे। सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टित्ति एदेसिं पि परूवणा ओघतुल्ला त्ति ओघमिदि वुत्तं। णवरि पमत्ते तेजाहारपदं णत्थि।

अवगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४५ ॥

एदस्स अत्थो—चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे सत्थाणत्था अच्छंति। मारणंतियसमुग्घादगदा उवसामगा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति त्ति वुत्तं होदि।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ४६ ॥

पुव्वं परूविदत्थमिदं सुत्तमिदि एत्थ एदस्स अत्थो ण वुच्चदे। एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ४७ ॥

चदुकसाइमिच्छाइट्ठिणो सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा ओघमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगम्हि अच्छणेण अणुहरंति। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादगदा वि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छणं पडि अणुहरंति। तदो चदुकसायमिच्छादिट्ठिणो दव्वट्ठियणएण ओघत्तमुवलभंते।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४८ ॥

एत्थ सुत्ते ओघमिदि किण्ण वुत्तं ? ण एस दोसो, दव्वट्ठियणयावलंबणाभावादो। सो वि किमिदि णावलंबिदो ? पज्जवट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं। जदि एवं, तो दव्वट्ठियसिस्सा अणणुग्गहिदा होंति ? ण, पुव्वुत्तसुत्तेण मिच्छादिट्ठिपडिबद्धेण दव्वट्ठियसिस्साणमणुग्गहकरणा। एदेण दव्व-पज्जवट्ठियणयपज्जायपरिणदजीवाणुग्गहकारिणो जिणा इदि जाणाविदं। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदसासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति। 'लोगस्स असंखेज्जदिभागे' इदि सुत्ते वुत्तं, तेण माणुसखेत्तस्स वि असंखेज्जदिभागे एदेहि होदव्वं, लोगत्तं पडि विसेसाभावादो ? ण एस दोसो। होदि एस दोसो, जदि पज्जवट्ठियणयमस्सिदूण एस लोगसद्दो ट्ठिदो। किंतु दव्वट्ठियणयमवलंबिऊण ट्ठिदत्तादो सव्वलोगसमूहस्स अखंडस्स वाचगो, तेण 'लोगस्स असंखेज्जदिभागे' इदि सुत्तवयणं ण विरुज्झदे। जदि एवं, तो पज्जवट्ठियणयमवलंबिऊण ट्ठिदवक्खाणवयणं सुत्तेण असंबद्धं होदि त्ति ? ण, विसेसवदिरित्तजादीए अभावादो। विसेसालिंगिदसामण्णलोगो जेण सुत्तम्मि वुत्तो तेण लोगस्स अवयवभूदचत्तारि लोगे अस्सिदूण जं वक्खाणं तण्ण सुत्तविरुद्धमिदि। एवं सम्मामिच्छाइट्ठीणं। णवरि मारणंतिय-उववादपदं णत्थि। एवं संजदासंजदाणं। णवरि उववादपदं णत्थि। सेसगुणट्ठाणाणि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। णवरि मारणंतियसमुग्घादगदा माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे होंति। लोभकसायविसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो।

अकसाईसु चदुट्ठाणमोघं ॥ ५० ॥

एत्थ ट्ठाणसद्दो गुणट्ठाणवाचगो, 'अवयवेषु प्रवृत्ताः शब्दाः समुदायेष्वपि वर्तन्ते' इति न्यायात्। यथा सत्यभामा भामा, बलदेवो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवः, भीमसेनः सेन इति। कधमुवसंतकसाओ अकसाओ? ण, भावकसायाभावं पेक्खिदूण तस्स वि अकसायत्तसिद्धीदो। बहुव्वीहि-समासं कादूण 'अकसाएसु' त्ति णिद्देसो किण्ण कदो? ण, पज्जयपडिसेधे कदे कसायविरहिदथंभादीणं पि अकसायत्तप्पसंगादो। दव्वपडिसेहे कदे सो दोसो ण पावदे, एदेण णावएण ओसारिदपसज्जपडिसेहत्तादो। कस्स णयस्स एस ववहारो? सद्दट्ठसंबंधस्स णिच्चत्तमिच्छंतसद्दणयस्स। 'अवगदवेदएसु' त्ति दव्वणिद्देसो वि एवं चेव वक्खाणेदव्वो। सेसं सुगमं। एवं कसायमग्गणा समत्ता।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ५१ ॥

एसा णिद्धारणे सत्तमी, मदि-सुदअण्णाणीणं मिच्छादिट्ठिविदिरित्ताणं सासणाणं पि संभवादो। सेसं पुव्वं पदुप्पादिदमिदि पुव्वुत्तट्ठावधारिदसिस्साणुरोहेण ण वुच्चदे।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ५२ ॥

एत्थ पुव्वसुत्तादो मदि-सुदअण्णाणीसु त्ति अणुवट्टदे। कथं णिच्चेयणस्स खणखइणो सद्दस्स अविणट्ठरूवेण अणुवत्ती? ण एस दोसो, एदस्स सुत्तस्स अवयवभावेण ट्ठिदअण्णसद्दस्स पुव्वसद्देण समाणत्तमवेक्खिय सो चेव एसो इदि पच्चयहिण्णाणपच्चयणिमित्तस्स अणुवत्तिविरोहाभावादो। सेसो गदट्ठो।

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५३ ॥

एदस्सत्थो—विभंगणाणिमिच्छाइट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो एदं? पहाणीकदपज्जत्तदेवरासित्तादो। मारणंतिय-समुग्घादगदा एवं चेव। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। उववादपदं णत्थि। सासणसम्मादिट्ठी सव्वेहि वि पदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ वि उववादो णत्थि।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५४ ॥

एदं सुत्तं वुत्तत्थमिदि पुणो ण एदस्स अत्थो वुच्चदे।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५५ ॥

किमट्ठं एदेसु तीसु सुत्तेसु पज्जयणयदेसणा ? बहूणं जीवाणमणुग्गहट्ठं । दव्वट्ठिएहिंतो पज्जवट्ठियजीवाणं बहुत्तं कथमवगम्मदे ? ण, संगहरुइजीवेहिंतो बहूणं वित्थररुइजीवाणमुवलंभादो । सेसमवगदट्ठं ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ ५६ ॥

एत्थ किमट्ठं दव्वट्ठियणओ अवलंबिदो ? ण, पज्जवट्ठियणयावलंबणे कारणाभावा । पज्जवट्ठियणओ अवलंबिज्जदे विसेसपदुप्पायणट्ठं, ण च एत्थ को वि विसेसो अत्थि । ण च पुव्वसुत्तेहि वियहिचारो, पादेक्कं गुणट्ठाणेसु तत्थ णाणभेदोवलंभादो । सेसं सुगमं ।

अजोगिकेवली ओघं ॥ ५७ ॥

एसो णवसु पदेसु कत्थ वट्टदे ? सेसपदसंभवाभावादो सत्थाणपदे । ण उप्पण्णपदेसो घरं गामो देसो वा सत्थाणं, तस्स वि उवयारदंसणादो । ण च ममेदंबुद्धीए पडिगहिदपदेसो सत्थाणं, अजोगिम्हि खीणमोहम्हि ममेदंबुद्धीए अभावादो त्ति ? ण एस दोसो, वीदरागाणं अप्पणो अच्छिदपदेसस्सेव सत्थाणववएसादो । ण सरागाणमेस णाओ, तत्थ ममेदंभावसंभवादो । अथवा एस चेव णाओ सव्वत्थ घेप्पउ, विरोहाभावादो । जदि एवं सत्थाणस्स अत्थो वुच्चदि, तो सासणसत्थाणफोसणस्स अट्ठ चोद्दसभागा पावंति त्ति चे ण, फोसणे ममेदंबुद्धिपडिगहिदस्स ससामिसंबंधेण वारिदस्स चेव सत्थाणववदेसादो । सेसं सुगमं । एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ५८ ॥

एत्थ किमट्ठं दव्वट्ठियणयदेसणा कीरदे ? ण, संजमसामण्णे पहाणीकदे ओघं पडि विसेसाभावादो । पज्जवट्ठियणयपरूवणा एत्थ जाणिय वत्तव्वा ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ५९ ॥

एगजोगो किण्ण कदो ? ण, खेत्तं पडि सेसगुणट्ठाणेहिंतो सजोगिस्स विसेसोवलंभादो । जदि एवं, तो सेसगुणट्ठाणाणं पि णाणाविहभेयभिण्णाणं पुध पुध सुत्तकरणं पावेदि त्ति चे ण, तेसिं पहाणीकयखेत्तजणिदविसेसाभावादो । एत्थ सेसा पज्जवट्ठियणयपरूवणा सव्वा वत्तव्वा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ६० ॥

ओघपमत्तादिरासीदो सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदपमत्तादओ समाणा त्ति एदेसिं परूवणा ओघं भवदि । ण च सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेहिंतो पुधभूदा परिहारसुद्धिसंजदा अत्थि, जेण तदो भेदो होज्ज । किमिदि पुधभूदा णत्थि ? दुणयवदिरित्तछदुमत्थजीवाभावादो । सेसं सुगमं ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति संपहि ण वुच्चदे । णवरि पमत्तसंजदे तेजाहारं णत्थि ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवगा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६२ ॥

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु त्ति आधारणिद्देसो । तत्थ सुहुमसांपराइसुद्धिसंजदा दुविधा होंति उवसामगा खवगा चेदि । ते अप्पणो पदेसु वट्टमाणा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे होंति । णवरि मारणंतियपदे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे होंति ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणमोघं ॥ ६३ ॥

एत्थ ट्ठाणसद्दो पुव्वुत्तणाएण गुणट्ठाणवाची । चदुण्हं ठाणाणं समाहारो चदुट्ठाणी, सा ओघं होदि । उवसंतकसाय-खीणकसाय-सजोगि-अजोगिजिणाणं जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं अप्पणो ओघपरूवणं होदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

संजदासंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६४ ॥

एदस्स अत्थो पुव्वं परूविदो ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ६५ ॥

ओघपरूवणा गुणट्ठाणाणमभेदेण भेदेण च जा कदा, सा अत्थोघ-आदेसोघेहिं दुविधा होदि । आदेसोघो वि गुणट्ठाणभेदेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चोद्दसविहो होदि। एत्थ ओघमिदि वुत्ते कदमस्स ओघस्स गहणं ? आदेसोघस्स अवयवभूदमिच्छादिट्ठीणमोघस्स। कथमेदं लब्भदे ? पच्चासत्तीदो। अण्णेहि वि ओघेहि सह कथंचि पच्चासत्ती अत्थि त्ति भणिदे ण, अण्णेहि सह मिच्छादिट्ठीहि जेम पयरिसेण पच्चासत्तीए अभावादो। एदमत्थपदं सव्वत्थ जोजेयव्वं। असंजदचदुगुणट्ठाणाणमेगजोगो किण्ण कदो ? ण, मिच्छादिट्ठीणं सेसगुणट्ठाणेहि सह खेत्तेण पयरिसपच्चासत्तीए अभावादो।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ६६ ॥

एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तणेण पच्चासत्ती अत्थि त्ति एगजोगो कदो। एवं संजममग्गणा समत्ता।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा चक्खुदंसणी मिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणा जाणिय कादव्वा। एवं मारणंतियसमुग्घादगदा। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। एवं चेव उववादगदाणं पि वत्तव्वं। अपज्जत्तकाले चक्खुदंसणाभावादो उववादो णत्थि त्ति णासंकणिज्जं, अपज्जत्तकाले वि खओवसमं पडुच्च चक्खुदंसणुवलंभादो। जदि एवं, तो लद्धिअपज्जत्ताणं पि चक्खुदंसणित्तं पसज्जदे। ण एस दोसो, णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं चक्खुदंसणमत्थि; उत्तरकाले णिच्छएण चक्खुदंसणोवजोगसमुप्पत्तीए अविणाभाविचक्खुदंसणखओवसमदंसणादो। चउरिंदिय-पंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणं चक्खुदंसणं णत्थि, तत्थ चक्खुदंसणोवओगसमुप्पत्तीए अविणाभाविचक्खुदंसणक्खओवसमाभावादो। सेसगुणट्ठाणाणं पज्जवट्ठियपरूवणा जाणिय वत्तव्वा।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ६८ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ६९ ॥

एदेसिमणंतरदोसुत्ताणमेगत्तं किण्ण कदं ? ण, मिच्छादिट्ठीहि सेसगुणट्ठाणाणं पचासत्तीए अभावादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ ७० ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ ७१ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति पज्जवट्ठियपरूवणा ण कीरदे । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ७२ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपदेहि सव्वलोगच्छणेण, विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छणेण च सरिसत्तमत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं । णवरि वेउव्वियसमुग्घादगदा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे ।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ७३ ॥

चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तणेण च सरिसत्तुवलंभादो सिद्धमोघत्तं । विसेसदो पुण मारणंतिय-उववादगदा किण्ह-णील-काउलेस्सियअसंजदसम्मादिट्ठिणो संखेज्जा वि होदूण माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छंति, असंखेज्जजोयणायामत्तादो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७४ ॥

तेउलेस्सियमिच्छादिट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । मारणंतियसमुग्घादगदा एवं चेव । णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं । एवं चेव उववादगदाणं । एत्थ ओवट्टणं ठविज्जमाणे सुधम्मरासिं ठविय अप्पणो उवक्कमणकालेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगसमएण तत्थुववज्जमाणजीवा होंति । पुणो अवरमेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारसरूवेण ट्ठविदे रज्जुआयामेण उववादगदरासी होदि । पुणो संखेज्जपदरंगुलमेत्तरज्जूहि गुणिदे उववादखेत्तं होदि । ओवट्टणा जाणिय कायव्वा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेउलेस्सियगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो। पम्मलेस्सियमिच्छादिट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, पहाणीभूदतिरिक्खरासित्तादो। वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे, पधाणीकदसणक्कुमार-माहिंदरासीदो। सासणादिगुणपडिवण्णाणं अप्पमत्तसंजदंताणं ओघभंगो।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७५ ॥

सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, तेण सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। सेसगुणट्ठाणाणमोघभंगो। णवरि मिच्छादिट्ठिप्पहुडि सव्वगुणट्ठाणेसु मारणंतिय-उववादपदेसु जीवा संखेज्जा चेव।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ७६ ॥

एदं सुत्तं सुगमं। जधा कसायमग्गणाए अकसाइया वुत्ता, तथा एत्थ लेस्सामग्गणाए अलेस्सिया किण्ण वुत्ता त्ति भणिदे वुच्चदे—जत्थ दव्वं पहाणीभूदं, तत्थ भणिदं होदि। जत्थ पुण पज्जवो पहाणो, तत्थ ण होदि। लेस्सामग्गणा पुण पज्जयपहाणा एत्थ कदा, तेण अलेस्सिया ण परूविदा। एवं लेस्सामग्गणा समत्ता।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ७७ ॥

एदं सुत्तं सव्वं पि मूलोघादो अविसिट्ठमिदि मूलोघपज्जवट्ठियपरूवणं लभदे।

अभवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते? सव्वलोए ॥ ७८ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा अभवसिद्धिया सव्वलोगे। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदट्ठिदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो? तसरासिमस्सिदूण वुत्तबंधप्पाबहुगसुत्तादो णज्जदे। तं जहा—सव्वत्थोवा धुवबंधगा। सादियबंधगा असंखेज्जगुणा। अणादियबंधगा असंखेज्जगुणा। अद्धुवबंधगा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? धुवबंधगेणूणसादियबंधगमेत्तेण। तसेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अभवसिद्धिया होंति त्ति एदं कुदो णव्वदे? पलिदोवमस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जदिभागमेत्तसादियबंधगेहिंतो असंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । सादियबंधगा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति कुदो णव्वदे ? जुत्तीदो । का जुत्ती ? वुच्चदे– तसेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता सादियबंधगा वासपुधत्तंतरेण तसट्ठिदीए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो । एइंदिएसु संचिदअणंतसादियबंधगेहिंतो पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता सादियबंधगा तसेसु किण्ण उप्पज्जंति ? ण, सव्वगुण-मग्गणट्ठाणेसु आयाणुसारि-वओवलंभादो । जेण एइंदिएसु आओ संखेज्जो, तेण तेसिं वएण वि तत्तिएण चेव होदव्वं । तदो सिद्धं सादियबंधगा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठि-खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ७९ ॥

दव्वट्ठियपरूवणं पडि विसेसो णत्थि त्ति ओघमिदि वुत्तं । पज्जवट्ठियपरूवणाए वि णत्थि कोइ विसेसो । णवरि खइयसम्मादिट्ठीसु संजदासंजदाणं मणुसपज्जत्तसंजदासंजदपरूवणा कादव्वा । असंजदसम्मादिट्ठी वि मारणंतिय-उववादपदेसु वट्टमाणा संखेज्जा । सेसं सुगमं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥

पुव्विल्लेहि सह खेत्तं पडि पयरिसेण पच्चासत्तीए अभावादो पुध सुत्तारंभो । सेसं सुगमं ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपमत्तसंजदा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८१ ॥

एत्थ ओघपज्जवट्ठियपरूवणा णिरवयवा सव्वगुणट्ठाणेसु परूवेदव्वा, विसेसाभावादो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा असंजदसम्माइट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । मारणंतिय-उववादपदेसु एसो चेव आलावो । णवरि तेसु पदेसु ट्ठिदजीवा संखेज्जा चेव होंति, उवसमसेढीदो ओदरिय उवसमसम्मत्तेण सह असंजमं पडिवण्णजीवाणं संखेज्जत्तुवलंभादो । सेसउवसमसम्मादिट्ठीणं किण्ण मरणमत्थि त्ति वुत्ते सभावदो । एवं संजदासंजदाणं पि । णवरि उववादपदं णत्थि । सेसाणमोघं । णवरि पमत्तसंजदस्स उवसमसम्मत्तेण तेजाहारं णत्थि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ८३ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८४ ॥ मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८५ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि त्ति एदेसिं परूवणा ण कीरदे । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा सण्णिमिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एवं मारणंतिय-उववादपदेसु वि वत्तव्वं । णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे इदि भाणिदव्वं । सेसगुणट्ठाणाणमोघभंगो, तदो विसेसाभावादो ।

असण्णी केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे ॥ ८७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

सव्वपदेहि ओघपरूवणादो विसेसो णत्थि त्ति ओघत्तं जुज्जदे ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८९ ॥

एदस्स सुत्तस्स पज्जवट्ठियपरूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला । णवरि उववादो सरीरगहिदपढमसमए वत्तव्वो । सजोगिकेवलिस्स वि पदर-लोगपूरणसमुग्घादा वि णत्थि, तत्थ आहारित्ताभावादो ।

अणाहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९० ॥

दव्वट्ठियपरूवणाए ओघं होदि । पज्जवट्ठियपरूवणाए पुण उववादपदमेक्कं चेव अत्थि । सेसं णत्थि । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी अजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९१ ॥

पज्जवट्ठियणएण उववादगदा सासणसम्मादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । असंजदसम्मादिट्ठीणं परूवणा एवं चेव । अजोगिकेवली चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे ।

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा ॥ ९२ ॥

पदरगदो सजोगिकेवली लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु वा होदि, लोगपेरंतट्ठिदवादवलयवदिरित्तसयललोगखेत्तमावूरिय ट्ठिदत्तादो । लोगपूरणे पुण सव्वलोगे भवदि, सव्वलोगमावूरिय ट्ठिदत्तादो । एवं आहारमग्गणा समत्ता । एवं खेत्ताणिओगद्दारं समत्तं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-
धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे
जीवस्थाने क्षेत्रानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति तृतीयो भागः समाप्तः ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीजिनाय नमः ।

स्पर्शनानुगमः ।

(चतुर्थो भागः)

णमिऊणेलाइरिए तिहुवणभवणेक्कमंगलपईवे । कलिकलुसफुसणवसणे सुत्तं फोसासियं वोच्छं ॥

फोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

णामफोसणं ठवणफोसणं दव्वफोसणं खेत्तफोसणं कालफोसणं भावफोसणं चेदि छव्विहं फोसणं । तत्थ णामफोसणं फोसणसद्दो । एसो दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो, धुवत्तेण विणा वाचिय-वाचयभावाणुववत्तीदो । सोयमिदि बुद्धीए अण्णदव्वेण अण्णदव्वस्स एयत्तकरणं ठवणफोसणं णाम । जहा, घड-पिढरादिसु एसो उसहो अजियो अहिणंदणो त्ति । एसो वि दव्वट्ठियस्स णिक्खेवो, दोण्हमेयत्त-धुवत्तेहि विणा ठवणापवुत्तीए असंभवादो । आगम-णोआगमभेदेण दुविहं दव्वफोसणं । तत्थ फोसणपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो खओवसमसहिओ आगमदो दव्वफोसणं णाम । णोआगमदव्वफोसणं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तदव्वफोसणभेएण तिविहं । तत्थ जाणुगसरीरदव्वफोसणं भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेएण तिविहं । कथमेदस्स तिविहसरीरस्स फोसणववदेसो ? फोसणपाहुडसहचारादो । जहा, असिसहचरिदो असी, धणुसहचरिदो धणुहमिदि । भवियदव्वफोसणं भविस्सकाले फोसणपाहुडजाणओ । कथमेदस्स दव्वफोसणववएसो ? पुव्वुत्तरावत्थाणं दव्वेण एगत्तादो । जहा, इंदट्ठमाणिदकट्ठस्स इंदो त्ति ववदेसो । तव्वदिरित्तदव्वफोसणं सचित्त-अचित्त-मिस्सयभेदेण तिविहं । सचित्ताणं दव्वाणं जो संजोओ सो सचित्तदव्वफोसणं । अचित्ताणं दव्वाणं जो अण्णोण्णेण संजोओ सो अचित्तदव्वफोसणं । मिस्सयदव्वफोसणं छण्हं दव्वाणं संजोएण एगूणसट्ठिभेयभिण्णं । सेसदव्वाणमागासेण सह संजोओ खेत्तफोसणं । अमुत्तेण आगासेण सह सेसदव्वाणं मुत्ताणममुत्ताणं वा कथं फोसो ? ण एस दोसो, अवगेज्झावगाहगभावस्सेव उवयारेण फासववएसादो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्तपमेयत्तादिणा अण्णोण्णसमाणत्तणेण वा । कालदव्वस्स अण्णदव्वेहि जो संजोओ सो कालफोसणं णाम । एत्थ अमुत्तेण कालदव्वेण सेसदव्वाणं जदि वि फासो णत्थि, परिणामिज्जमाणाणि सेसदव्वाणि परिणामत्तेण कालेण पुसिदाणि त्ति उवयारेण कालफोसणं वुच्चदे । खेत्त-कालपोसणाणि दव्वफोसणम्हि किण्ण पदंति त्ति वुत्ते ण पदंति, दव्वादो दव्वेगदेसस्स कथंचि भेदुवलंभादो । भावफोसणं दुविहं आगम-णोआगमभेएण । फोसणपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमदो भावफोसणं । फासगुणपरिणदपोग्गलदव्वं णोआगमभावफोसणं । एदेसु फोसणेसु जीवखेत्तफोसणेण पयदं । अस्पर्शि स्पृश्यत इति स्पर्शनम् । फोसणस्स अणुगमो फोसणाणुगमो, तेण फोसणाणुगमेण । णिद्देसो कहणं वक्खाणमिदि एयट्ठो । सो दुविहो, जहा पयई । ओघेण पिंडेण अभेदेणेत्ति एयट्ठो । आदेसेण भेदेण विसेसेणेत्ति समाणट्ठो । ओघणिद्देसो आदेसणिद्देसोत्ति दुविहो चेव णिद्देसो होदि, दव्वपज्जवट्ठियणए अणवलंबिय कहणोवायाभावादो । जदि एवं, तो पमाणवक्कस्स अभावो पसज्जदे इदि वुत्ते, होदु णाम अभावो, गुणप्पहाणभावमंतरेण कहणोवायाभावादो । अथवा, पमाणुप्पाइदं वयणं पमाणवक्कमुवयारेण वुच्चदे ।

ओघेण मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ २ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो ताव ओघेणेत्ति वयणं । सेसगुणट्ठाणपडिसेहट्ठं मिच्छादिट्ठीहिं त्ति वयणं । केवडियं खेत्तं फोसिदमिदि पुच्छासुत्तं सत्थस्स पमाणत्तपदुप्पायणफलं । खेत्ताणिओगद्दारे सव्वमग्गणट्ठाणाणि अस्सिदूण सव्वगुणट्ठाणाणं वट्टमाणकालविसिट्ठं खेत्तं पदुप्पादिदं, संपदि फोसणाणिओगद्दारेण किं परूविज्जदे ? चोद्दस मग्गणट्ठाणाणि अस्सिदूण सव्वगुणट्ठाणाणं अदीदकालविसेसिदखेत्तं फोसणं वुच्चदे । एत्थ वट्टमाणखेत्तपरूवणं पि सुत्तणिबद्धमेव दीसदि । तदो ण पोसणमदीदकालविसिट्ठखेत्त-पदुप्पाइयं, किंतु वट्टमाणादीदकालविसेसिदखेत्तपदुप्पाइयमिदि ? एत्थ ण खेत्तपरूवणं, तं तं पुव्वं खेत्ताणिओगद्दारपरूविदवट्टमाणखेत्तं संभराविय अदीदकालविसिट्ठखेत्तपदुप्पायणट्ठं तस्सुवादाणा । तदो फोसणमदीदकालविसेसिदखेत्ते पदुप्पाइयमेवेत्ति सिद्धं । सव्वलोगो, सव्वो लोगो मिच्छादिट्ठीहि च्छुत्तो त्ति जं वुत्तं होदि । एत्थ लोगपमाणं पुव्वं व आणेदव्वं । अथवा— मुहसहिदमूलमद्धं छेत्तूणद्धेण सत्तवग्गेण । हंतूणेगट्ठकदे घणरज्जू होंति लोगम्हि ॥ १ ॥ एदीए गाहाए आणेदव्वो । अथवा सत्तरज्जुविक्खंभ-चोद्दसरज्जुआयदखेत्तं ठविय आयामं चोद्दसखंडाइं कादूण विक्खंभेण सत्त खंडे करिय लोगपमाणादो अधियखेत्तं फुसिय फेलिदे सगल-विगलावयवसहिद-लोगखेत्तं परिप्फुडं होदूण दीसदि । तत्थ ट्ठिदसुत्तवसेण सव्वाणि खेत्तखंडाणि आणिय मेलाविदे वि तं चेव लोगपमाणं होदि । एत्थ पज्जवट्ठियपरूवणा वुच्चदे । सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदमिच्छादिट्ठीहि अदीदेण वट्टमाणेण च सव्वलोगो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि वट्टमाणे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणमेत्तं खेत्तं फोसिदं । एत्थ ओवट्टणाए खेत्तभंगो । अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा । तं जधा— लोगणालिं चोद्दस खंडे करिय मेरुमूलादो हेट्ठिम-दो-खंडाणि उवरिम-छ-खंडाणि च एगट्ठे कदे अट्ठ चोद्दसभागा होंति । ते च हेट्ठिम-जोयणसहस्सेणूणा होंणि ।

सासणसम्मादिट्ठीहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३ ॥

एदं सुत्तं मंदबुद्धिसिस्ससंभालणट्ठं खेत्ताणिओगद्दारे उत्तमेव पुणरवि उत्तं, अदीदाणागदवट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तेसु चोद्दसगुणट्ठाणणिबद्धेसु पुच्छिदेसु तस्सिस्स संदेहविणासणट्ठं वा दु-कालविसिट्ठखेत्तपरूवणं कीरदे । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो । माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं खेत्तं फोसिदं । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

अट्ठ वारह चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४ ॥

सासणसम्मादिट्ठीहिं ति पुव्वसुत्तादो अणुवट्टदे । अदीदकालखेत्तपदुप्पयणट्ठमिदं सुत्तमागदं । तं कथं णव्वदे ? अट्ठ वारह चोद्दसभागण्णहाणुववत्तीदो । जेणेदं देसामासिगसुत्तं, तेणेदस्स पज्जवट्ठियपरूवणा पज्जवट्ठियजणाणुग्गहट्ठं कीरदे । तं जहा—सत्थाण-सत्थाणगदेहिं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं । अदीदसत्थाणखेत्त-स्साणयणविहणं वुच्चदे । तं जहा—तत्थ ताव तिरिक्खसासणसत्थाणखेत्तं भणिस्सामो । तसजीवा लोगणालीए अब्भंतरे चेव होंति, णो बहिद्धा । तं कुदो णव्वदे ? 'अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा' त्ति वयणादो । तदो रज्जुपदरब्भंतरे सव्वत्थ सासणा संभवंति । तसजीव-विरहिदेसु असंखेज्जेसु समुद्देसु णवरि सासणा णत्थि । वेरियवेंतरदेवेहि घित्ताणमत्थि संभवो, णवरि ते सत्थाणत्था ण होंति, विहारेण परिणदत्तादो । तं खेत्तं तिरियलोगपमाणेण कीरमाणे एगं जगपदरं पुरदो भण्णमाणपमाणेहि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं रज्जूपदरम्हि अवणिय संखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं होदूण संखेज्जंगुलबाहल्लं जगपदरं होदि । संपहि जोइसियसासणसम्माइट्ठि-सत्थाणखेत्तं भणिस्सामो । तं जहा—जंबूदीवे वे चंदा, वे सूरा । लवणसमुद्दे चत्तारि चंदा चत्तारि सूरा । धादइखंडे पुध पुध वारह चंदाइच्चा । कालोदयसमुद्दे बादाल चंदाइच्चा । पोक्खरदीवद्धे बाहत्तरि चंदाइच्चा । माणुसोत्तरसेलादो बाहिरपंतीए चोद्दालसदमेत्ता । तदो चत्तारि रूवपक्खेवं कादूण णेदव्वं जाव बाहिरमट्ठ पंतीओ गदाओ त्ति । तदो समुद्दब्भंतरपढमपंतीए वेसद-अट्ठासीदिमेत्ता । तदो चदुरूव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्भहियं कादूण णेदव्वं जाव एत्थतणबाहिरपंति त्ति । एवं णेदव्वं जाव सयंभूरमणसमुद्दो त्ति । वुत्तं च–चंदाइच्च-गहेहिं चेवं णक्खत्त-तारूवेहिं । दुगुण-दुगुणेहिं णीरंतरेहि दुवग्गो तिरियलोगो ॥ २ ॥ एदाणि सव्वविमाणाणि मेलाविदे संखेज्जपदरंगुलेहि जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागमेत्ताणि विमाणाणि होंति । पुणो ताणि–छावट्ठिं च सहस्सं णवयसदं पंचसत्तरि य होंति । एयससीपरिवारो ताराणं कोडिकोडीओ ॥ ३ ॥ एदाहि ताराहि चंदाइच्च-गह-णक्खत्तेहि य पंचट्ठाणट्ठिदं परिवाडीए गुणिय मेलाविदे जोदिसियसव्वविमाणाणि होंति । तिरियलोगावट्ठिदसयलचंदाणं सपरिवाराणमाणयणविहाणं वत्तइस्सामो । तं जहा–जंबूदीवादिपंचदीवसमुद्दे मोत्तूण तदियसमुद्दमादिं कादूण जाव सयंभूरमणसमुद्दो त्ति एदासिमाणयण किरिया ताव उच्चदे–तदियसमुद्दम्मि गच्छो बत्तीस, चउत्थदीवे गच्छो चउसट्ठी, उवरिमसमुद्दे गच्छो अट्ठावीसुत्तरसयं । एवं दुगुणकमेण गच्छा गच्छंति जाव सयंभूरमणसमुद्दं ति । संपहि एदेहिं गच्छेहिं पुध गुणिज्जमाणरासिपरूवणा कीरदे । तदियसमुद्दे वेसदमट्ठासीदं, उवरिमदीवे तत्तो दुगुणं । एवं दुगुण-दुगुणकमेण गुणिज्जमाणरासीओ गच्छंति जाव सयंभूरमणसमुद्दं पत्ताओ त्ति । संपहि अट्ठासीदि-विसदेहि सव्वगुणिज्जमाणरासीओ ओवट्टिय लद्धेण सग-सगगच्छे गुणिय अट्ठासीदि-वेसदमेव सव्वगच्छाणं गुणिज्जमाणं कायव्वं । एवं कदे सव्वगच्छा अण्णोण्णं पेक्खिदूण चदुग्गुणकमेण अवट्ठिदा जादा । संपहि चत्तारिमादिं कादूण चदुरुत्तरकमेण गदसंकलणाए आणयणे कीरमाणे पुव्विल्लगच्छेहिंतो संपहियगच्छा रूऊणा होंति, दुगुणजादट्ठाणे चत्तारिरूववड्ढीए अभावादो । एदेहि गच्छेहि गुणिज्जमाणमज्झिमधणाणि चउसट्ठिमादिं काऊण दुगुण-दुगुणकमेण गच्छंति जाव सयंभूरमणसमुद्दं ति । पुणो गच्छसमीकरणट्ठं सव्वगच्छेसु एगेगरूवपक्खूणो कायव्वो । एवं कादूण चउसट्ठिरूवेहिं मज्झिमधणाणि ओवट्टिय लद्धेण सग-सगगच्छे गुणिय सव्वगच्छाणं चउसट्ठिरूवाणि गुणिज्जमाणत्तणेण ठवेदव्वाणि । एवं कदे वड्ढिदरासिस्स पमाणं वुच्चदे–एगरूवमादिं कादूण गच्छं पडि दुगुण-दुगुणकमेण सयंभूरमणसमुद्दो त्ति गच्छरासी वड्ढिदो होदि । संपहि एवं ट्ठिदसंकलणाणमाणयणं वुच्चदे–छरूवाहियजंबूदीवछेदणएहि परिहीणरज्जुच्छेदणाओ गच्छं कादूण जदि संकलणा आणिज्जदि तो जोदिसियजीवरासी ण उप्पज्जदि, जगपदरस्स वेछप्पण्णंगुलसदवग्गभागहाराणुववत्तीदो । तेण रज्जुच्छेदणासु अण्णेसिं पि तप्पाओग्गाणं संखेज्जरूवाणं हाणिं काऊण गच्छो ठवेदव्वो । एवं कदे तदियसमुद्दो आदी ण होदि त्ति णासंकणिज्जं; सो चेव आदी होदि, सयंभूरमणसमुद्दस्स परभागसमुप्पण्णरज्जुछेदणयसलागाणमाणयणकारणादो । सयंभूरमणसमुद्दस्स परदो रज्जुच्छेदणया अत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? वेछप्पण्णंगुलसदवग्गसुत्तादो । 'जत्तियाणि दीव-सागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि तत्तियाणि रज्जुछेदणाणि' त्ति परियम्मेण एदं वक्खाणं किण्ण विरुज्झदे ? एदेण सह विरुज्झदि, किंतु सुत्तेण सह ण विरुज्झदि । तेणेदस्स वक्खाणस्स गहणं कायव्वं, ण परियम्मस्स; तस्स सुत्तविरुद्धत्तादो । ण सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होदि, अइप्पसंगादो । तत्थ जोइसिया णत्थि त्ति कुदो णव्वदे ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एदम्हादो चेव सुत्तादो। एसा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवाहियजंबूदीवछेदणयसहिददीवसायररूवमेत्तरज्जुच्छेदपमाणपरिक्खाविही ण अण्णाइरिओवदेसपरंपराणुसारिणी, केवलं तु तिलोयपण्णत्तिसुत्ताणुसारिजोदिसियदेवभागहारपदुप्पाइयसुत्तावलंबिजुत्तिबलेण पयदगच्छसाहणट्ठमम्हेहि परूविदा, प्रतिनियतसूत्रावष्टम्भबलविजृंभितगुणप्रतिपन्नप्रतिबद्धासंख्येयावलिकावहारकालोपदेशवत् आयतचतुरस्रलोकसंस्थानोपदेशवद्वा। तदो ण एत्थ इदमित्थमेवेत्ति एयंतपरिग्गहेण असग्गाहो कायव्वो, परमगुरुपरंपरागओवएसस्स जुत्तिबलेण विहडावेदुमसक्कियत्तादो, अदिंदिएसु पदत्थेसु छदुमत्थवियप्पाणमविसंवादणियमाभावादो। तम्हा चिरंतणाइरियवक्खाणापरिच्चाएण एसा वि दिसा हेदुवादाणुसारिउप्पण्णसिस्साणुरोहेण अउप्पण्णजणउप्पायणट्ठं च दरिसेदव्वा। तदो ण एत्थ संपदायविरोहासंका कायव्वा त्ति। एदेण विहाणेण परूविदगच्छं विरलिय रूवं पडि चत्तारि रूवाणि दादूण अण्णोण्णब्भत्थं करिय 'रूपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा' एदेण गाहाखंडेण संकलणाओ आणिय दोण्हं संकलणाणं धणं कादूण तदियसंकलणे अवणिदे चंदबिंबसलागाओ उप्पज्जंति। ताओ अट्ठारससयसमहियताराहि गुणिदे जोदिसियाणं सयलबिंबसलागाओ होंति। ताओ संखेज्जघणंगुलेहि गुणिदाओ सत्थाणखेत्तं होदि। सत्थाणखेत्तं संखेज्जरूवेहिं गुणिय संखेज्जघणंगुलेहि ओवट्टिदे जोइसियरासी होदि। एदाणि जोदिसियदेवुस्सेधगुणिदविमाणब्भंतरपदरंगुलेहि गुणिदे जोइसियसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। णवरि देवुस्सेधगुणिदविमाणब्भंतरपदरंगुलाणि उस्सेहंगुलाणि त्ति कट्टु पमाणंगुलाणि कायव्वाणि। उस्सेहंगुलाणि त्ति कथं णव्वदे ? अण्णहा जंबूदीवब्भंतरे जंबूदीवताराणमोगासाभावादो। अथवा एदाणि पमाणंगुलाणि चेव। कथं पुण सम्मांति ? ण, जंबूदीव-लवणसमुद्देहि वि अस्सिदूण अवट्ठाणादो। वेंतरदेवसासणसम्माइट्ठिसत्थाणखेत्तं पि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। तं कथं ? वेंतरदेवरासिं ट्ठविय एक्केक्कम्हि वेंतरावासे संखेज्जा चेव वेंतरदेवा होंति त्ति संखेज्जरूवेहि भागे हिदे वेंतरावासा होंति। ण एस कमो भवणवासिय-सोधम्मादीणं, तत्थ संखेज्जेसु भवणविमाणेसु असंखेज्जजोयणायामेसु असंखेज्जा देवा देवीओ होंति। कुदो ? तेसिमसंखेज्जत्तण्णहाणुववत्तीदो। पुणो वेंतरावासे अप्पणो विमाणब्भंतरसंखेज्जघणंगुलेहि गुणिदे वेंतरदेवसासणसम्माइट्ठिसत्थाणखेत्तं होदि। एदाणि तिण्णि वि खेत्ताणि एगट्ठ मेलिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। केत्तियमेत्तेणूणा ? तदियपुढवीए हेट्ठिल्लजोयणसहस्सेण। मारणंतियसमुग्घादगदेहि बारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। तं जहा—मेरुमूलादो उवरि जावीसिपब्भारपुढवि त्ति सत्त रज्जू, हेट्ठा जाव छट्ठी पुढवि त्ति पंच रज्जू। एदाओ मेलिदे सासणमारणंतियखेत्तायामो होदि। णवरि हेट्ठिमजोयणसहस्सेण ऊणो त्ति वत्तव्वो। जदि सासणा एइंदिएसु उप्पज्जंति, तो तत्थ दो गुणट्ठाणाणि होंति। ण च एवं संताणिओगद्दारे तत्थ एक्कमिच्छादिट्ठिगुणप्पदुप्पायणादो दव्वाणिओगद्दारे वि तत्थ एगगुणट्ठाणदव्वस्स पमाणपरूवणादो च। को एवं भणदि

जथा सासणा एइंदिएसुप्पज्जंति त्ति । किंतु ते तत्थ मारणंतियं मेल्लंति त्ति अम्हाणं णिच्छओ । ण पुण ते तत्थ उप्पज्जंति त्ति, छिण्णाउअकाले तत्थ सासणगुणाणुवलंभादो । जत्थ सासणाणमुववादो णत्थि, तत्थ वि जदि सासणा मारणंतियं मेल्लंति, तो सत्तमपुढविणेरइया वि सासणगुणेण सह पंचिंदियतिरिक्खेसु मारणंतियं मेल्लंतु, सासणत्तं पडि विसेसाभावादो ? ण एस दोसो, भिण्णजादित्तादो । एदे सत्तमपुढविणेरइया पंचिंदियतिरिक्खेसु गब्भोवक्कंतिएसु चेव उप्पज्जणसहावा, ते पुण देवा पंचिंदिएसु एइंदिएसु य उप्पज्जणसहावा, तदो ण समाणजादीया । जं जाए जादीए पडिवण्णं, तं ताए चेव जादीए होदि त्ति पडिवज्जेदव्वं, अण्णहा अणवत्थापसंगादो । तम्हा सत्तमपुढविणेरइया सासणगुणेण सह देवा इव मारणंतियं ण करेंति त्ति सिद्धं । देवसासणा एइंदिएसु मारणंतियं करेमाणा सव्वलोगेइंदिएसु किण्ण मारणंतियं करेंति त्ति ? ण, तेसिं सासणगुणपाहम्मेण लोगणालीए बाहिरमुप्पज्जणसहावाभावादो । लोगणालीए अब्भंतरे मारणंतियं करेंता वि भवणवासियजगमूलादोवरिं चेव देव-तिरिक्खसासणसम्मादिट्ठिणो मारणंतियं करेंति, णो हेट्ठा । कुदो ? सासणगुणपाहम्मादो चेव । रज्जुपदरमेत्तपुढवी उवरि णत्थि । देवा वि सुहुमेइंदिएसु ण उप्पज्जंति । ण च बादरेइंदिया वाउक्काइयवदिरित्ता पुढवीए विणा अण्णत्थ अच्छंति । तदो सासणमारणंतियखेत्तस्स वारह चोद्दसभागोवदेसो ण घडदि त्ति ? ण एस दोसो, ईसिपब्भारपुढवीदो उवरि सासणाणमाउकाइएसु मारणंतियसंभवादो, अट्ठमपुढवीए एगरज्जुपदरब्भंतरं सव्वमावूरिय ट्ठिदाए तेसिं मारणंतियकरणं पडि विरोहाभावादो च । वाउकाइएसु सासणा मारणंतियं किण्ण करेंति ? ण, सयलसासणाणं देवाणं व तेउ-वाउकाइएसु मारणंतियाभावादो, पुढविपरिणामविमाणतलसिलाथंभथूलतल उब्भभसालभंजियाकुड्डुतोरणादीणं तदुप्पत्तिजोगाणं दंसणादो च । उववादगदेहि देसूणेक्कारह चोद्दसभागा फोसिदा । तं जहा–हेट्ठा जाव छट्ठी पुढवि त्ति पंच रज्जू, उवरि जाव आरण-अच्चुदकप्पो त्ति छ रज्जु, आयामो वित्थारो च एगरज्जु, एदं उववादखेत्तपमाणं । के वि आइरिया 'देवा णियमेण मूलसरीरं पविसिय मरंति' त्ति भणंति, तेसिमभिप्पाएण दस-चोद्दसभागा देसूणा । एदं वक्खाणमेत्थेव कम्मइयसरीरसासणउववादफोसणस्स एक्कारह-चोद्दसभागपरूवयसुत्तेण विरुद्धं ति ण घेत्तव्वं । जे पुण देवसासणा एइंदिएसुप्पज्जंति त्ति भणंति, तेसिमभिप्पाएण वारह चोद्दसभागा देसूणा उववादफोसणं होदि, एदं पि वक्खाणं संत-दव्वसुत्तविरुद्धं ति ण घेत्तव्वं ।

सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ?
लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । सम्मामिच्छाइट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public.Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो। माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। कारणं खेत्तभंगो। असंजदसम्माइट्ठीणं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदाण खेत्तम्हि वुत्तत्थो संभरिय वत्तव्वो।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ६ ॥

पुव्वसुत्तादो सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदमिदि अणुवट्टदे। अदीदकालेणेत्ति वयणस्स अज्झाहारो कायव्वो। कुदो ? एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तस्स पुव्वं परूविदत्तादो। सम्मामिच्छादिट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। एत्थ सत्थाणखेत्तमेलावणविहाणं पुव्वं व कायव्वं। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। एत्थ देसूणविधाणं पुव्वं व वत्तव्वं। असंजदसम्माइट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागखेत्तुप्पायणे सासणभंगो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, उवरि छ रज्जू, हेट्ठा दो रज्जु त्ति। उववादगदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, हेट्ठा असंजदसम्माइट्ठीणं उववादखेत्ताणुवलंभादो।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदाणं पज्जवट्ठियपरूवणा खेत्ततुल्ला।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८ ॥

पुव्वं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तं परूविदमिदि कट्टु इदं सुत्तमदीदकालसंबंधीदि अवगम्मदे। अणागदकालसंबंधी ण होदि, तेण ववहाराभावादो। अधवा अदीदाणागदकालविसिट्ठखेत्ताणं परूवयाणि पच्छिमसव्वसुत्ताणि त्ति णिच्छओ कायव्वो, उभयत्थ विसेसाभावादो। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ सत्थाणसत्थाणखेत्ताणयणविधाणं वुच्चदे—सयंभूरमणसमुद्दविक्खंभो दोहि वि पासेहि सादिरेगमेगरज्जुअद्धपमाणं होदि। सयंपहपव्वदपरभागखेत्तं पि दोहि वि पासेहि एगरज्जु-अट्ठमभागमेत्तविक्खंभो होदि। ते दो वि मेलिदे पंचट्ठभागा होंति। एदे रज्जुविक्खंभम्हि अवणिदे तिण्णि अट्ठभागा होंति। एदम्हि खेत्ते खुज्जमंडलागारेण संट्ठिदे भोगभूमिपडिभागे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णत्थि संजदासंजदा। बाहिरिल्लएसु पंचसु अट्ठभागेसु अड्ढाइज्जदीवेसु दोसु समुद्देसु च अत्थि, कम्मभूमित्तादो। 'व्यासार्धकृतित्रिकं समस्तफलितमिति' एदेण सुत्तेण मज्झिल्लखेत्तफलमाणिदे सोलससत्तावीसभागब्भहियचदुसट्ठि-चदुसदरूवेहि जगपदरे भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। तं रज्जुपदरम्हि अवणिय संखेज्जंगुलेहि गुणिदे संजदासंजदसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। सेसपदाणं खेत्तमाणिज्जमाणे एगं जगपदरं ठविय संखेज्जसूचिअंगुलेहि संजदासंजदउस्सेधस्स एगूणवंचासभागमेत्तेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तं होदि। कथं संजदासंजदाणं सेसदीव-समुद्देसु संभवो? ण, पुव्ववेरियदेवेहि तत्थ घित्ताणं संभवं पडि विरोहाभावादो। कथमेसो अत्थो सुत्तेण अकहिदो अवगम्मदे? ण एस दोसो, सुत्तट्ठिएण 'वा' सद्देण अवुत्तसमुच्चयट्ठेण सूचिदत्तादो। मारणंतियसमुग्घादगदेहिं छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। कुदो? सव्वत्थ लोगणालीए अब्भंतरे अच्छिय मारणंतियकरणं पडि विरोहाभावादो। केण ऊणा छ चोद्दसभागा? हेट्ठिमेण जोयणसहस्सेण आरणच्चुदविमाणाणमुवरिमभागेण च।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९ ॥

दव्वट्ठियणयमस्सिदूण भण्णमाणे अदीद-वट्टमाणकालेसु 'लोगस्स असंखेज्जदिभागो' इदि होदि। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो। वट्टमाणकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियणयपरूवणाए खेत्तभंगो। संपदि अदीदकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियपरूवणा कीरदे। तं जहा– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियतेजाहारसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो पोसिदो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो। विउव्वणादिइड्ढिपत्तेहि माणुसखेत्तब्भंतरे अप्पडिहयगमणेहि रिसीहि अदीदकाले सव्वं पि माणुसखेत्तं पुसिज्जदि त्ति 'माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो' इदि वयणं ण घडदे? ण एस दोसो, उवरि जोयणलक्खुप्पायणेण जोयणलक्खमेत्तगमणे संभवाभावादो। मेरुमत्थयचढणसमत्थाणमिसीणं किमिदि जोयणलक्खुप्पायणे ण संभवो? होदु णाम मेरुपव्वदुद्देसे सा सत्ती, ण सव्वत्थ, 'माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे' इदि आइरियवयणण्णहाणुववत्तीदो। अथवा अदीदकाले लद्धिसंपण्णमुणिवरेहिं सव्वं पि माणुसखेत्तं पुसिज्जदि, तस्स माणुसखेत्तववएसण्णहाणुववत्तीदो। सत्थाणे पुण माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो चेव पोसिदो। जदि एवं, तो पंचिंदियतिरिक्खाणं पि पुव्ववेरियदेवाणं पयोगादो जोयणलक्खुप्पायणं पावदि? होदु, ण को वि दोसो। मारणंतियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो पोसिदो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। मारणंतियखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, तदो संखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं वा किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि। ण ताव उड्ढवट्टाणं पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभाणं समपरिमंडलसंठिदाणं सत्तरज्जुआयदाणं खेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, संखेज्जपदरंगुलमेत्तसेढिपमाणत्तादो। ण च पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभसंखेज्ज-

गुलबाहल्लं संखेज्जरज्जुआयदकप्पवासियविमाणमेत्ततिरिच्छवट्टाणं खेत्तं पि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, एदस्स पुव्वखेत्तादो संखेज्जगुणहीणस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तविरोधा। विमाणप्पडिट्ठिदअसंखेज्जुववादभवणसम्मुहवट्टखेत्तेसु समुदिदेसु किण्ण तं होइ ? ण, सेढीए असंखेज्जदिभागासंखेज्जजोयणरुंदयखेत्तेसु गहिदेसु वि तदसंभवादो।

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जा वा भागा, सव्वलोगो वा ॥ १० ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियपरूवणाए खेत्तभंगो। अदीदकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियपरूवणाए खेत्तभंगो चेव। णवरि कवाडगदस्स पणदालीसजोयणसदसहस्सबाहल्लं जगपदरमेगं कवाडखेत्तं होदि। अवरं णवदिजोयणसदसहस्सबाहल्लं जगपदरं होदि। एवं दोण्णि कवाडखेत्ताणि मेलिदे तिरियलोगादो संखेज्जगुणाणि। एवमोघपरूवणा समत्ता।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो वट्टमाणकाले पोसिदो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। सेसं खेत्तभंगो।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १२ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले णेरइएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो अत्थो सुत्ते अवुत्तो कथं परूविज्जदे ? ण, सुत्तत्थेण 'वा' सद्देण समुच्चयट्ठेण सूचिदत्तादो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-खेत्ताणि अदीदकाले तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि किण्ण होंति त्ति वुत्ते ण होंति, इंदय-सेढीबद्ध-पइण्णएहि रुद्धसव्वखेत्तस्स तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। इंदय-सेढीबद्ध-पइण्णएसु संचरंतेहिं णेरइयमिच्छाइट्ठीहि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो किण्ण पुसिज्जदि त्ति वुत्ते ण पुसिज्जदि, णेरइयाणं परखेत्तगमणाभावादो। परखेत्तगमणाभावे विहारवदिसत्थाणस्स अभावो पसज्जदि त्ति वुत्ते ण पसिज्जदे, एक्कम्हि इंदए सेढीबद्ध-पइण्णए च संट्ठिदगामागारबहुविधबिलगमणसंभवादो। असंखेज्जजोयणमेत्तायामसेढीबद्ध-पइण्णया अत्थि त्ति तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति णासंकणिज्जं,

असंखेज्जजोयणायामसेढीबद्ध-पइण्णयाणं पि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। मारणंतिय-उववादपदेहि णेरइयमिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले छ चोद्दसभागा देसूणा पोसिदा। ऊणपमाणं देसूणतिण्णिजोयणसहस्सं। तिरिक्खणेरइयाणं सव्वदिसासु गमणागमणसंभवो अत्थि त्ति छ चोद्दसभागा होंति, कधं देसूणत्तं? वुच्चदे– विग्गहो जीवाण किं सहेउओ, आहो अहेउओ त्ति? ण ताव अहेउओ, णिक्कारणकज्जाणुवलंभादो। विदिये कारणं वत्तव्वमिदि। कम्मं तक्कारणं, संसारिजीवसव्वावत्थाणं कम्मवदिरित्तकारणाणुवलंभादो। तत्थ वि आणुपुव्विणामं चेव कारणं, अण्णासिं सव्वपयडीणं पुध पुध कज्जाणमुवलंभादो, पुव्वुत्तरसरीराणमंतरालखेत्ते आणुपुव्वीए विवागो होदि त्ति गुरूवदेसादो वा। आणुपुव्विउदयाभावे वि मुक्कमारणंतियजीवाणं वक्कुवलंभादो णाणुपुव्विफलं विग्गहो त्ति णासंकणिज्जं, तस्स तित्थयरस्सेव पच्चासण्णविवागाणुपुव्विफलत्तादो। अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबाहल्लतिरियपदरम्हि सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे तत्थ जत्तिओ रासी तत्तियमेत्ताओ णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए पयडीओ। लोगे सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा होंति। पणदालीसजोयणलक्खबाहल्ले तिरियपदरे उड्ढं कवाडछेदणयणिप्पण्णे सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा होंति। णवजोयणसदबाहल्लतिरियपदरे सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा होंति त्ति वग्गणसुत्तादो आणुपुव्विणामं संठाणविवाई चेवेत्ति णासंकणिज्जं, तिस्से खेत्त-संठाणेसु वावदाए एक्कत्थेव वावारविरोहादो। ते च आगासपदेसा एत्थ चेव अच्छंति त्ति ण णियमो अत्थि, समयाविरोहेण तेसिमवट्ठाणादो। तदो आणुपुव्विविवागपाओग्गखेत्ते अवट्ठाणं उप्पण्णपढमविदियतदियवंकेसु णत्थि त्ति देसूणत्तं घडदे। एसो अत्थो उवरि सव्वत्थ जहावसरं परूवेदव्वो।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्ताणिओगद्दारे जो वुत्तो, सो वत्तव्वो।

पंच चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १४ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। तं जहा– णेरइयाणं बिलाणि संखेज्जजोयणवित्थडाणि वि अत्थि, असंखेज्जजोयणवित्थडाणि वि। तत्थ जदि वि चदुरसीदिलक्खणेरइयावासा असंखेज्जजोयणवित्थडा होंति, तो वि सव्वखेत्तसमासो तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव जथा होदि तथा वत्तइस्सामो– णिरयावासा के वि परिमंडलायारा, के वि तंसा, के वि चउरंसा, के वि पंचंसा, के वि छंसा। एदे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वे वि समीकरणे कदे चउरंसा असंखेज्जजोयणवित्थडा होंति । सयलणेरइयरासिणा घणंगुलस्स संखेज्जदिभागे गुणिदे वट्टमाणकाले णेरइएहि रुद्धखेत्तं होदि । वट्टमाणे णेरइयरुद्धणिरयबिलभागादो अरुद्धभागो संखेज्जगुणो त्ति संखेज्जरूवेहि गुणिदे णेरइयाणमदीद-सत्थाणखेत्तं होदि । तेण तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तं ण विरुज्झदे । एवं 'वा' सद्दसूचिदस्स अत्थस्स परूवणा कदा होदि । सासणस्स णिरयगदीए उववादो णत्थि, सुत्तपडिसिद्धत्तादो । मारणंतियसमुग्घादगदेहि पंच चोद्दसभागा पोसिदा । कुदो ? सत्तमपुढवीदो सासणाणं मारणंतियकरणसंभवाभावा । तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो णव्वदे ।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो पोसिदो । कारणं खेत्तसिद्धं । अदीदकाले वि एदेहि दोहि वि गुणट्ठाणेहि एदेहि पदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो चेव पोसिदो, 'असंखेज्जजोयणवित्थडा णेरइयसव्वावासा' इदि मणेण संकप्पिय एगावासखेत्तफलं चउरासीदिलक्खरूवेहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तफलोवलंभादो । सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादपदा णत्थि । असंजदसम्माइट्ठीहि मारणंतिय-उववादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणकाले पोसिदो । कारणं खेत्तसिद्धं । अदीदकाले मारणंतियसमुग्घादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो पोसिदो । कुदो ? सव्वजीवाणं अवक्कमणछक्कणियमदंसणादो, उड्ढं गच्छमाणजीवाणं पि अप्पणो उप्पत्तिखेत्तमपावेदूण अंतरकाले चेव दिस-विदिसाणं गमणाभावादो । ण च उप्पत्तिखेत्तसमाणखेत्तंतरट्ठियाणं पि जीवाणमणियदगमणमत्थि, एगदिसाए णियदगमणादो; तिरिच्छं गच्छमाणाणं पि जीवाणमप्पणो उप्पज्जमाणदिसं मोत्तूण अण्णदिसाणं गमणाभावादो, उप्पज्जमाणदिसं गच्छंताणं पि जीवाणं अप्पणो उप्पज्जमाणखेत्तसमाणट्ठाणमपावेदूण अंतराले सव्वत्थ उजुवलणाभावादो । तदो सव्वणिरयावासेहिंतो माणुसखेत्तमागच्छंताणं सम्मादिट्ठीणं णिरयावासप्पडिट्ठिदपडिणियदवट्टाणं पोसणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो चेव । अथवा णेरइयसम्मादिट्ठीणं तत्थतणमिच्छाइट्ठीणं व घणरज्जुपदरसव्वागासपदेसेहिंतो ण णिग्गमणमत्थि, मणुसोववादियत्तादो; णेरइयपडिबद्धाणं मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणं व पडिबद्धागासपदेसाणं रज्जुपदरम्हि सव्वत्थाभावादो । किं तदभावलिंगम् ? एदं चेव पोसणसुत्तं । समीकरणे कदे जदि एक्कणेरइयावासविक्खंभो एगसेढिं विदियवग्गमूलेण खंडियमेत्तो होदि, तो तस्स खेत्तफलं जगपदरं सेढिपढमवग्गमूलेण खंडियमेत्तं होदि । पुणो अदीदकाले तत्थ ट्ठाइदूण उड्ढं मारणंतियं मेल्लंताणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एदं खेत्तफलं मुहं होदि, संखेज्जरज्जुआयामो होदि। एत्थ उस्सेधेण खेत्तफलं गुणिदे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं मारणंतियखेत्तं होदि त्ति वुत्ते ण होदि, णिरयावासो ण एक्को वि एरिसविक्खंभसहिओ अत्थि। कधमेदं परिच्छिज्जदे ? 'णेरइया असंजदसम्मादिट्ठी सव्वपदेहि अदीदकाले तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं पुसंति' त्ति सुत्तवयणादो। केत्तिओ पुण णेरइयावासाणं विक्खंभो होदि त्ति वुत्ते असंखेज्जजोयणमेत्तो होदि। तं जहा– सग-सगसत्थाणखेत्तं ट्ठविय सगसगबिल-संखाए ओवट्टिदे एगबिलेण रुद्धखेत्तमसंखेज्जजोयणविक्खंभायामं होदि। तं संखेज्जरज्जूहि गुणिदे एगबिलमस्सिदूण मारणंतियखेत्तं होदि। एदं बिलसंखाए गुणिदे सयलं मारणंतियखेत्तं होदि। एदं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं होदि। सव्वणिरयावासाणं खादफलमसंखेज्जजोयणमेत्तं होदूण एगरज्जुपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि। कुदो ? 'असंजदसम्मादिट्ठिमारणंतियपोसणं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो' त्ति वयणादो। जदि कहिं पि एक्कस्स बिलस्स खेत्तफलं रज्जुपदरस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि, तो असंजदसम्मादिट्ठिमारणंतियपोसणं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं होइ, तिरियपदरबाहल्लादो मारणंतियखेत्तबाहल्लस्स असंखेज्जगुणत्तादो। पढमपुढविसत्थाणखेत्ते सेढीए संखेज्जदिभागेण गुणिदे असंजदसम्मादिट्ठिमारणंतियपोसणं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं होदि त्ति के वि पच्चवट्ठाणं कुणंति। तण्ण घडदे, सत्थाणखेत्तं बिलसलागाहि ओवट्टिय लद्धस्स वग्गमूलविक्खंभेण अद्धरज्जुआयामपोसणखेत्तुवलंभादो। ण उड्ढं गंतूण तिरिच्छं गच्छंताणं बहुपोसणं, तिरिच्छं गंतूण उड्ढं गच्छंताणं व, पुव्वुत्तेणेव विक्खंभेण गमणुवलंभादो। एवमुववादस्स वि वत्तव्वं।

पढमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगद–मिच्छादिट्ठीणं परूवणा वट्टमाणकाले खेत्तसमाणा। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो ? असंखेज्जजोयणविक्खंभणिरयावासखादफलं ठविय तप्पाओग्गसंखेज्जबिलसलागाहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो। मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? वुच्चदे– असीदिसहस्साहियजोयणलक्खपढमपुढवीबाहल्लम्मि हेट्ठिमजोयणसहस्सं णेरइएहि सव्वकालं ण छुप्पदि त्ति कट्टु जोयणसहस्स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मवणिय सेसबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उस्सेधेण एगूणवंचासमेत्तखंडाणि कादूण पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, 'एगरज्जुरुंदो सत्तरज्जुआयदो जोयणलक्खबाहल्लो तिरियलोगो' त्ति उवदेसादो। जे पुण जोयणलक्खबाहल्लरज्जुवट्टं तिरियलोगपमाणं भणंति तेसिमुवदेसेण तिरियलोगादो सादिरेयं मारणंतिय-उववादखेत्तं होदि। ण च एदं घडदे, एदम्हि उवदेसे पडिग्गहिदे लोगम्हि तिण्णिसदतेदालमेत्तघणरज्जूणमणुप्पत्तीदो, 'रज्जू सत्तगुणिदा जगसेढी, सा वग्गिदा जगपदरं, सेढीए गुणिदजगपदरं घणलोगो होदि' त्ति परियम्मसुत्तेण सव्वाइरियसम्मदेण विरोहप्पसंगादो च। कदजुम्मेहि पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-जोणिणि-जोदिसिय-वेंतरदेव-अवहारकालेहि खुद्दाबंधसुत्तसिद्धेहि अकदजुम्मजगपदरे भागे हिदे एदाओ रासीओ सछेदाओ होज्ज? ण च एवं, जीवाणं छेदाभावा। किं च दव्वाणियोगद्दारवक्खाणम्हि वुत्तहेट्ठिम-उवरिमवियप्पा अभावमुवढुक्कंते, अवग्गसमुट्ठिदलोगत्तादो। तिण्णिसदतेदालघणरज्जुपमाणो उवमालोओ णाम। एदम्हादो अण्णो पंचदव्वाहारलोगो, तदो सव्वमेदं घडदि त्ति वुत्ते ण, उवमेयाभावे उवमाए अण्णत्थ अणुवलंभादो। तम्हा उवमेयेसु उस्सेह-पमाणंगुलपलिदोवम-सागरोवमसण्णिदेसु खेत्त-कालेसु संतेसु उवमाभूदउस्सेह-पमाणंगुल-पल्ल-सागराणमत्थित्तमुवलब्भदे। तम्हा एत्थ वि उवमेएण लोगेण पमाणदो उवमालोगाणुसारिणा पंचदव्वहारेण होदव्वं, अण्णहा एदस्स उवमालोगत्ताणुववत्तीदो। सासणसम्माइट्ठि-सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादगदखेत्तपरूवणा वट्टमाणकाले खेत्तसमाणा। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि अदीदकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ पज्जवट्ठियपरूवणा मिच्छादिट्ठिसमाणा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ कारणं मिच्छाइट्ठीणं व वत्तव्वं। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं अप्पणो सव्वपदाणं वट्टमाणकाले खेत्तभंगो। एदेहि दोहि गुणट्ठाणेहि अदीदकाले सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, एगणिरयावासस्स असंखेज्जघणंगुलाणि ठविय तप्पाओग्गाहि संखेज्जबिलसलागाहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदंसणादो। मारणंतिय-उववादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो पोसिदो। कुदो? सदुक्खंभदुबाहाणं खादफलस्स तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो। जदि वि उड्ढं गंतूण सगबिलवग्गमूलविक्खंभेण मणुसगइं गच्छंति, तो वि तिरियलोगस्सासंखेज्जदिभागो, तिरिच्छेण लद्धखेत्तस्स बिलखेत्तवग्गमूलगुणिदसेढीए संखेज्जदिभागपमाणत्तादो। एदमत्थपदं सव्वत्थ जहासंभवं जाणिऊण जोजेयव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विदियादि जाव छट्ठीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदमिच्छादिट्ठीणं उववादविरहिदसेसपदट्ठिदसासणसम्मादिट्ठीणं च परूवणाए खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो ।

एग वे तिण्णि चत्तारि पंच चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १८ ॥

एत्थ 'वा' सद्दसूचिदत्थं ताव वत्तइस्सामो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि विदियादि-पंचपुढविमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले एगो चोद्दसभागो विदियाए पुढवीए फोसिदो । तदियाए वे चोद्दसभागा, चउत्थीए तिण्णि चोद्दसभागा, पंचमीए चत्तारि चोद्दसभागा, छट्ठीए पंच चोद्दसभागा, सव्वत्थ णेरइयाणमगम्मखेत्तेणूण त्ति वत्तव्वं । एवं सासणसम्मादिट्ठीणं पि वत्तव्वं । णवरि उववादो णत्थि । किमट्ठमेदेसिमदीदकाले एत्तियं खेत्तं होदि ? णिग्गमण-पवेसणं पडि सम्मादिट्ठीणं व णियमाभावा । भोगभूमिसंठाणसंठिदा असंखेज्जदीव-समुद्दा णेरइएहि कथं पुसिज्जंति ? ण, तत्थ वि णेरइयाणं णिग्गमण-पवेसं पडि विरोहाभावादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९ ॥

एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणकाले सत्थाणादिपंचपदट्ठियाणं मारणंतियपदट्ठियअसंजदसम्मादिट्ठीणं च परूवणाए खेत्तभंगो । एदेहि चेव अदीदकाले सत्थाणादिपंचपदट्ठिदेहि मारणंतियपदट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठीहि य विदियादिछट्ठिपुढविविसेसिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । विदियादि-छसु पुढवीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमुववादो णत्थि ।

सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणखेत्तपरूवयं, उवरिमसुत्तेण अदीदाणागदकालविसिट्ठखेत्तपरूवणादो । एदस्स परूवणाए खेत्तभंगो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २१ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एसो 'वा' सद्दत्थो। मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु छ चोद्दसभागा चित्ताए जोयणसहस्सेणूण-हेट्ठिमचदुहि सहस्सेहि ऊणा फोसिदा। ण केवलं हेट्ठिलजोयणेहि चेव ऊणा, किंतु अण्णो वि देसो लोगणालीए अब्भंतरे णेरइएहि अच्छुत्तो अत्थि। तं कथं णव्वदे? 'विदियाए पुढवीए एगो चोद्दसभागो देसूणो' इदि सुत्तवयणादो। अण्णहा एदस्स देसूणत्तं पिंडिदूण संपुण्णो एगो चोद्दसभागो होज्ज, चित्ताए जोयणसहस्सपवेसादो। एत्थ पुणो केण खेत्तेणूणो एगो चोद्दसभागो त्ति वुत्ते वुच्चदे– णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-पंचिंदियतिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीहि पडिबद्धखेत्तं मोत्तूण अण्णखेत्तेणूणो। वादरुद्धसव्वखेत्तेणूणत्तं किण्ण वुच्चदे? ण, तत्थ वि आणुपुव्विविवागपाओग्गखेत्ताणं संभवं पडि विरोहाभावादो।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२ ॥

एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं सत्तमाए पुढवीए मारणंतिय-उववादपदा णत्थि। सेसपंचपदट्ठिदेहि तिण्णिगुणट्ठाणजीवेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? ओघं ॥ २३ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो। विहारवदिसत्थाणपरिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। असंखेज्जेसु समुद्देसु तसजीवविरहिदेसु कथं विहरंत तिरिक्खाणं संभवो? ण तत्थ पुव्ववेरियदेवाणं पयोगदो विहारविरोहाभावादो। अदीदकाले विहरंततिरिक्खेहि छुत्तखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे– पुव्ववेरियदेवपयोगदो उवरि जोयणलक्खंचितमेरु-कुलसेल-कुंडल-रुजग-माणुसुत्तर-णगिंदवरपव्वदादिरुद्धखेत्तं मोत्तूण सव्वं फुसंति त्ति लक्खजोयणबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उड्ढमेगूणवंचास-

खंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तं होदि। वेउव्वियसमुग्घादगदाणं वट्टमाणकाले खेत्तभंगो। तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोहि लोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कारणं, वाउकाइयजीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता विउव्वणक्खमा वट्टमाणकाले होंति, ते रज्जुपदरं पंचरज्जुबाहल्लं अदीदकाले फुसंति त्ति।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्तम्हि परूविदो।

सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५ ॥

एत्थ 'वा' सद्दत्थो वुच्चदे– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदसासणसम्मादिट्ठीहिं तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ ताव तिरिक्खसासणसत्थाणसत्थाणखेत्ताणयणविधाणं वुच्चदे– लवण-कालोदग-संयभुरमणसमुद्दे मोत्तूण सेससमुद्देसु णत्थि सत्थाणसत्थाणसासणा, तत्थुप्पण्णतसजीवाणमभावादो। सव्वेसु दीवेसु अत्थि सत्थाणसत्थाणसासणा, तत्थ तसजीवाणमुप्पत्तिदंसणादो। सत्थाणसत्थाणसासणेहि सव्वे दीवा तिण्णि समुद्दा तीदकाले पुसिज्जंति त्ति तेसिमाणयणट्ठमिमा परूवणा कीरदे। जंबूदीवो खेत्तगुणिदेण– सत्त णव सुण्ण पंच य छण्णव चदु एक्क वंच सुण्णं च। जंबूदीवस्सेदं गणिदफलं होइ णायव्वं ॥ ४ ॥ एदस्स एया सलागा होदि १। एदेण पमाणेण लवणसमुद्दे कीरमाणे सो जंबूदीवादो खेत्तगुणिदेण चउवीसगुणो होदि। वुत्तं च– बाहिरसूईवग्गो अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणो। जंबूदीवपमाणा खंडा ते होंति चउवीसा ॥ ५ ॥ एदीए गाहाए सव्वेसिं दीव-समुद्दाणं पुध पुध खेत्तफलसलागाओ आणेदव्वाओ। तत्थ अट्ठण्हं खेत्तफलसलागाओ एदाओ– | १ | २४ | १४४ | ६७२ | २८८० | ११९०४ | ४८३८४ | १९५०७२ | लवणसमुद्दखेत्तफलवुप्पण्णो पमाणेण एगं होदि। लवणसमुद्दपमाणेण धादइखंडम्हि कीरमाणे छग्गुणो होदि। कालोदयसमुद्दो अट्ठावीसगुणो होदि। पोक्खरदीवो वीसुत्तरसदगुणो होदि। पोक्खरसमुद्दो चदुसदछण्णउदिगुणो होदि। एवं लवणसमुद्दजंबूदीवसलागाहि दीव-सायरजंबूदीवसलागाओ ओवट्टिय गुणगारा उप्पादेदव्वा। १। ६। २८। १२०। ४९६। २०१६। ८१२८। एवं ठविदगुणगारसलागाहि लवणसमुद्दजंबूदीवसलागाओ गुणिय जंबूदीवजोयणपदराणि गुणिदे इच्छिददीव-सायराणं खेत्तफलं होदि। संपहि समुद्दाणं चेव खेत्तफलमाणेदुमिच्छामो त्ति अप्पणो इच्छिद-इच्छिदसमुद्दाणं लवणसमुद्दगुणगारसलागाणयणविहाणं वुच्चदे– लवणोदयसमुद्दादो कालोदयसमुद्दो खेत्तफलेण अट्ठावीसगुणो। तम्हि उप्पाइज्जमाणे दो रूवे ठविय पढमस्स वड्डी णत्थि त्ति एगरूवमवणिय सेसेगरूवं विरलिय सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोलस होंति । ते दुगुणिय चत्तारि अवणिदे कालोदयसमुद्दस्स अट्ठावीस गुणगारसलागा उप्पज्जंति । तेहिं लवणोदयसमुद्दस्स खेत्तफले गुणिदे कालोदयसमुद्दस्स खेत्तफलं होदि । लवणसमुद्दादो पोक्खरसमुद्दो खेत्तगुणिदेण चत्तारिसदछण्णउदिमेत्तगुणो होदि । तम्हि गुणगारे आणिज्जमाणे तिण्णि समुद्दा त्ति कट्टु रूवूणं करिय विरलिय रूवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे वेसदछप्पण्णा होंति । ते दुगुणिय पुध ट्ठविय पुणो पुव्विल्लविरलणमेव विरलिय रूवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोण्णगुणं करिय उप्पण्णरासिं दुगुणरासीदो अवणिदे पोक्खरसमुद्दस्स गुणगारसलागा होंति । तेहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे पोक्खरसमुद्दस्स खेत्तफलं होदि । पुणो चउत्थसमुद्दो लवणसमुद्दं दट्ठूणट्ठावीससदाहिय अट्ठसहस्सगुणो होदि । एदस्स गुणगारस्स उप्पत्ती वुच्चदे— चत्तारि रूवूणे करिय विरलिय रूवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णगुणे कदे छण्णउदिरूवाहियचत्तारिसहस्साणि होंति । ते दुगुणिय पुध ट्ठविय पुव्विल्लविरलणरासिं विरलिय रूवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोणगुणे कदे चउसट्ठी उप्पज्जदि । पुणो पुव्विल्लदुगुणिदरासिम्हि एदमवणिदे चउत्थसमुद्दस्स गुणगारसलागा होंति । एदाहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे चउत्थसमुद्दखेत्तफलं होदि । एवमणेण बीजपदेण सव्वसमुद्दाणं खेत्तफलमाणेदव्वं । तत्थ सव्वपच्छिमस्स सयंभुरमणसमुद्दस्स खेत्तफलाणयणं भण्णदे— दीव-सागर-रूवाणि अद्धिदे समुद्दसंखा होदि । ताओ समुद्दसलागाओ रूवूणाओ करिय विरलिय रूवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भत्थे कदे जोयणलक्खवग्गेण छत्तीससदरूवाहियतिसहस्सपदुप्पण्णेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि । पुणो एदं दुगुणिय पुध ट्ठविय पुव्विल्लविरलणं विरलिय रूवं पडि चत्तारि दादूण अण्णोण्णब्भत्थे कदे छप्पण्णजोयणलक्खाए सेढिं खंडेदूण एगखंडमागच्छदि । तं पुव्विल्लदुगुणिदरासिम्हि अवणिदे सयंभूरमणसमुस्सद्दगुणगारसलागा होंति । एदाहि लवणसमुद्दखेत्तफले गुणिदे सयंभुरमणसमुद्दस्स खेत्तफलं जगपदरस्स वासीदिभागो सादिरेगो होदि । एत्थ करणगाहा— सोलस सोलसहिं गुणे रूवूणोवहिसलागसंखा त्ति । दुगुणम्हि तम्हि सोहे चउक्कपहदं चउक्कं तु ॥ ६ ॥ संपदि सव्वसमुद्दाणं खेत्तफलसंकलणा वुच्चदे— लवणसमुद्दस्स एगा गुणगारसलागा, कालोदगसमुद्दस्स अट्ठावीस । एदेसिं संकलणमाणिज्जमाणे 'रूपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा' एदेण अज्जाखंडेण आणेदव्वं । एगमादिं कादूण सोलसगुणकमेण गदा त्ति कट्टु दो रूवे ठविय अद्धिय पुध ठविय उवरि एगरूवं दादव्वं । पुणो तं सोलसेहि गुणिय 'रूपेषु गुणमर्थेषु वर्ग्गणं' एदेण अज्जाखंडेण लद्धविसदछप्पण्णेसु रूवेसु रूवूणेसु आदिसंगुणेसु रूवूणगुणगारेण भजिदेसु जं लद्धं तं दुगुणिय पंच अवणिदे पक्खे सलागसंकलणा होदि । कथं पंच समुप्पण्णा ? पुव्वपक्खित्तएगादिचदुगुणकमेण गदरासिं मेलाविदे अवणयणरासी आगच्छदि । एदाहि पुव्वुत्तसंकलणसलागाहि लवणसमुद्दखेत्तफलं गुणिदे लवणकालोदयसमुद्दाणं खेत्तफलं होदि। तिण्हं समुद्दाणं खेत्तफलसंकलणा वुच्चदे— तिसु रूवेसु एगरूवमवणिय पुध ट्ठविय सेसमद्धिय रूवस्सुवरि वग्गणं ठविय तस्सुवरि रूवं ठविय हेट्ठिम-उवरिम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रूवाणि सोलसेहि गुणिय 'रूपेषु गुणमर्थेषु वग्गणं' एदेण अज्जाखंडेण लद्धा चारि सहस्सा छण्णउदी। 'रूपोनमादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा' एदेण अज्जाखंडेण लद्धाणि वे सदाणि तेहत्तराणि, एदाणि दुगुणिय एक्कावीसमवणिदे गुणगारसलागासंकलणा होदि। कथमेक्कवीसस्स उप्पत्ती? एगरूवं विरलिय चत्तारि दादूण अण्णोण्णब्भत्थं करिय पंचहि गुणिय एगादिचदुग्गुणसंकलणं पक्खित्ते अवणयणसलागपमाणं एक्कवीसं होदि। एत्थ करणगाहा—इट्ठसलागाखुत्तो चत्तारि परोप्परेण संगुणिय। पंचगुणे खित्तव्वा एगादिचदुगुणा संकलणा ॥ ७ ॥ एत्थ सव्वत्थ दुरूवूणगच्छं विरलेदव्वं ५। २१। ८५। ३४१। १३६५। ५४६१। एदाओ अवणयणधुवरासीओ अणंतरहेट्ठिमं चदुहि गुणिय रूवं पक्खित्ते उप्पज्जंति जाव सयंभूरमणसमुद्दो त्ति। संपदि सयंभूरमणसमुद्दविरहिदसव्वसमुद्दखेत्तफलाणयणविधाणं वुच्चदे—दीव-सायररूवाणं अद्धं रूवूणं विरलिय रूवं पडि वेण्णि दादूण अण्णोण्णब्भासे कदे चोद्दसगुणिदजोयणलक्खमूलेण खंडिदसेढीए वग्गमूलस्स अद्धमागच्छदि। अथ पुव्वविरलणाए रूवं पडि जदि चत्तारि रूवाणि दादूण अण्णोण्णब्भासो कीरदे, तो चोद्दसगुणजोयणलक्खेण खंडिदे सेढीए चदुभागो आगच्छदि। अध रूवं पडि सोलस दादूण अण्णोण्णब्भासो कीरदि, तो जोयणलक्खवग्गेण तिसहस्सछत्तीससदरूवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। पुणो तं रूवूणं करिय एगेण आदिणा गुणिय पण्णारसरूवेहि भागे हिदे जोयणलक्खवग्गेण चालीसाहियसत्तेतालसहस्सरूवगुणिदेण जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। एदं दुगुणिय सेढिअसंखेज्जदिभागमेत्तमवणयणरासिं पुव्विल्लकरणगाहाए आणिदमवणिय लवणसमुद्दखेत्तफलेण गुणिदे सयंभूरमणविरहिदसमुद्दाणं खेत्तफलं होदि। तं केत्तियमिदि भणिदे एगूणचालीसाहियवारससदरूवेहि जगपदरम्हि भागे हिदे एगभागपमाणं होदि। तत्थ मूलिल्लदोसमुद्दखेत्तफलं संखेज्जजोयणपदरमेत्तमवणिय रज्जुपदरम्हि अवणिदे एक्कवंचासरूवेहि सादिरेगेहि जगपदरम्हि खंडिदे एगखंडो आगच्छदि। तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं तिरिक्खसासणसत्थाणखेत्तं होदि। सेसपदसासणसम्मादिट्ठीहि सव्वे दीव-समुद्दा पुव्ववेरियदेवसंबंधेण पुसिज्जंति त्ति कट्टु जोयणलक्खबाहल्लं तप्पाओग्गबाहल्लं वा रज्जुपदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ट्ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। 'वा' सद्दस्स अत्थो गदो। मारणंतियसमुग्घादगदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा पोसिदा। तिरिक्खसासणा मेरुमूलादो हेट्ठा किण्ण मारणंतियं करेंति त्ति वुत्ते णेरइएसु किण्ण उप्पज्जंति? सभावदो। जदि एवं, तो हेट्ठा सभावदो चेव मारणंतियं ण मेलंति त्ति किण्ण घेप्पदे? जदि सासणसम्मादिट्ठिणो हेट्ठा ण मारणंतियं मेलंति, तो तेसिं भवणवासियदेवेसु मेरुतलादो हेट्ठा ट्ठिदेसु उप्पत्ती ण पावदि त्ति वुत्ते ण एस दोसो, मेरुतलादो हेट्ठा सासणसम्मादिट्ठीणं मारणंतियं णत्थि त्ति एदं सामण्णवयणं। विसेसदो पुण भण्णमाणे णेरइएसु हेट्ठिमएइंदिएसु वा ण मारणंतियं मेलंति त्ति एस परमत्थो। कथमेत्थ देसूणत्तं? ण ताव हेट्ठिमजोयणसहस्सेण ऊणा सत्त चोद्दसभागा, तिरिक्खसासणेहि भवणवासिएसु मारणंतियं मेल्लमाणेहि तस्स वि छुवणसंभवो-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वलंभादो । मेरुमूलादो हेट्ठा देसूणजोयणलक्खं फुसंताणं सासादणाणं सत्त-चोद्दसभागेहि सादिरेगेहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, छमग्गं पयट्टेहि पडिणिययउप्पत्तिट्ठाणेहि तसजीवेहि णिरंतरं ण सत्त रज्जू फुसिज्जंति, तथा संभवाभावा । सो वि कथं णव्वदे ? देसूण-वयणण्णहाणुववत्तीदो । उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा पोसिदा त्ति वत्तव्वं । सुत्ते अउत्तं कधमेदं णव्वदे ? कम्मइयकायजोगिसासणा-णमेक्कारह-चोद्दसभागपोसणपरूवयसुत्तादो, खुद्दाबंधम्मि उववादपरिणयसासणाणमेक्कारह-चोद्दसभागपोसणपरूवयसुत्तादो च णव्वदे । एत्थ महंते उववादपोसणखेत्ते संते मारणंतियफोसणमेव किमट्ठं परूविदं ? ण, एत्थ उववादविवक्खाए अभावादो । तदविवक्खा किण्णि-बंधणा, सासणाणमेइंदिएसु अणुप्पज्जमाणाणं तत्थ मारणंतियविहाणणिबंधणा । तेण उववादस्स एक्कारह चोद्दसभागा फोसणमुवलब्भदे ।

सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणकाले सव्वपदपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदट्ठिद-सम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । एत्थ पज्जवट्ठियपरूवणा सासणपरूवणाए तुल्ला ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २७ ॥

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु त्ति महाधिकारो अणुवट्टदे । एदं सुत्तं वट्टमाणकालविसिट्ठअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदखेत्तं जदो परूवेदि, तदो एदस्स परूवणाए खेत्तभंगो ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

असंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाणपदे वट्टमाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो । एदे असंजदसम्मादिट्ठिणो सत्थाणपदे सव्वदीवेसु होंति, लवण-कालोदय-सयंभूरमणसमुद्देसु च । तम्हा सेससमुद्दखेत्तूणरज्जुपदरं एत्थ सत्थाणखेत्तं होदि । एदस्साणयणविधाणं पुव्वं व कादव्वं । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु वट्टंता अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागं, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं फुसंति । कुदो ? पुव्ववेरिय-देवपयोगदो जोयणलक्खबाहल्लं संखेज्जजोयणबाहल्लं वा रज्जुपदरं सव्वमदीदकाले फुसंति त्ति । मारणंतियपदे वट्टमाणेहि छ चोद्दसभागा देसूणा पोसिदा । कुदो ? अच्चुदकप्पादो उवरि तेसिमुप्पत्तीए अभावादो तत्थ गमणाभावा । ण च उप्पत्तिखेत्तमुल्लंघिय गमणं संभवदि,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अइप्पसंगा। उवरि णवगेवज्जेसु मिच्छादिट्ठिणो जदि उप्पज्जंति, तो असंजदसम्मादिट्ठीणं संजदासंजदाणं च उप्पत्ती किमिदि ण होज्ज? मिच्छादिट्ठिणो दव्वलिंगेण उप्पज्जंति चे, एदे वि दव्वलिंगेण चेव उप्पज्जंतु, ण कोवि दोसो। उप्पज्जंतु चे, ण, खेत्तस्स देसूण-सत्त-चोद्दसभागत्तप्पसंगादो? ण एस दोसो, जदि वि णवगेवज्जेसु दव्वलिंगिणो असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा च उप्पज्जंति, तो वि सत्त चोद्दसभागा ण होंति, माणुसखेत्तादो चेव तत्थुप्पत्तीदो। उववादगदेहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तं जहा— तिरिक्खेसु तिरिक्ख-देव-णेरइयसम्मादिट्ठिणो ण उप्पज्जंति त्ति। कुदो? सहावादो। मणुसखइयसम्मादिट्ठिणो चेव उप्पज्जंति, पुव्वं मिच्छत्तसंसिदेहि बद्धतिरिक्खाउअत्तादो। ते वि भोगभूमीसु चेव उप्पज्जंति, दाणादिसयलदसधम्मे विज्जमाणाणुमोदादो। तेण सयंपहपव्वदोवरिमभागो सव्वो चेव उववादपरिणदसम्मादिट्ठीहि पुसज्जदि त्ति तस्साणयणविधाणं वुच्चदे— सयंपहपव्वदादो परभागो दोहि वि पासेहि रज्जुपंचट्ठभागो रज्जूए तप्पाओग्गा संखेज्जा भागा वा होंति। तेसु रज्जुविक्खंभम्हि फेडिदेसु अवसेसा तिण्णि अट्ठभागा रज्जूए संखेज्जदिभागो वा होदि। एदेण विक्खंभायामेण ट्ठिदसम्मादिट्ठिउववाद-खेत्तं— विक्खंभवग्गदसगुणकरणी वट्टस्स परिट्ठओ होदि। विक्खंभचउब्भागो परिठयगुणिदो हवे गणिदं ॥ ८ ॥ एदीए गाहाए पदरागारेण कदे जगपदरं अट्ठसत्तावण्णभागब्भहियचालीसोत्तरचदुहि सदेहि खंडिद-एयभागो सादिरेगो आगच्छदि, तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि छिण्णेग भागो वा। तं उस्सेधसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरिक्खसम्मादिट्ठिउववादखेत्तं होदि। संजदासंजदेहि सत्थाणपदट्ठिएहि तिण्हं लोगाणम-संखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ सत्थाणखेत्तमाणिज्जमाणे तिरिक्खसम्मादिट्ठिउववाद-पदरखेत्तमुस्सेधगुणगारवज्जिदं रज्जुपदरम्हि अवणिदे जगपदरं सादिरेयपंचपंचासरूवेहि भजिदएगभागो आगच्छदि। तं संखेज्जुस्सेधं-गुलेहि गुणिदं संजदासंजदाणं सत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय वेउव्वियपरिणदेहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो। कुदो? संजदासंजदाणं वेरियदेवसंबंधेण जोयणलक्खबाहल्लं तिरियपदरस्स अदीदकाले पोसो अत्थि त्ति। मारणंतियसमुग्घादगदेहि संजदा-संजदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, तिरिक्खसंजदासंजदाणमच्चुदकप्पो त्ति मारणंतिएण गमणसंभवादो।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २९ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालसंबंधि त्ति एदस्स परूवणाए खेत्तभंगो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वलोगो वा ॥ ३० ॥

परिसेसादो एदं सुत्तं तीदाणागदकालसंबंधी। एत्थ ताव 'वा' सद्दत्थो उच्चदे– ति-विसेसणविसिट्ठसत्थाणतिरिक्खमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एदं खेत्तमाणिज्जमाणे असंखेज्जेसु समुद्देसु भोगभूमिपडिभागदीवाणमंतरेसु ट्ठिदेसु सत्थाणपदट्ठिदतिविहा तिरिक्खा णत्थि त्ति एदं खेत्तं पुव्वविधाणेणाणिय रज्जुपदरम्हि अवणिय संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदियतिरिक्खतिगमिच्छादिट्ठिसत्थाणखेत्तं होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदतिविहमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कुदो? मित्तामित्तदेववसेण सव्वदीव-सागरेसु संचरणं पडि विरोहाभावादो। तेणेत्थ संखेज्जंगुलबाहल्लं तिरियपदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे पंचिंदियतिरिक्खतिगमिच्छादिट्ठिविहारवदिसत्थाणादिखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। 'वा' सद्दट्ठो गदो। मारणंतिय-उववादगदपंचिंदियतिरिक्खतिगमिच्छादिट्ठीहि सव्वलोगो फोसिदो। लोगणालीए बाहिं तसकाइयाणमसंभवादो सव्वलोगो त्ति वयणं कधं घडदे? ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादट्ठिदतसजीवे मोत्तूण सेसतसाणं बाहिरे अत्थित्तप्पडिसेहादो।

सेसाणं तिरिक्खगदीणं भंगो ॥ ३१ ॥

सेसाणमिदि उत्ते सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा घेत्तव्वा, अण्णेसिमसंभवादो। एक्किस्से तिरिक्खगदीए तिरिक्खगदीणमिदि बहुत्तणिद्देसो कधं घडदे? ण एस दोसो, एक्किस्से वि तिरिक्खगदीए गुणट्ठाणादिभेएण बहुत्तविरोहाभावादो। एदेसिं चदुण्हं गुणट्ठाणाणं परूवणा वट्टमाणकाले खेत्तसमाणा। अदीदकाले एदेसिं तिरिक्खोघपरूवणाए तुल्ला। णवरि जोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि, एत्तिओ चेव विसेसो।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३२ ॥

वट्टमाणकाले सत्थाण-वेदण-कसायपदे वट्टमाणपंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतियउववादपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो।

सव्वलोगो वा ॥ ३३ ॥

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेत्ति अणुवट्टदे। एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो उच्चदे– सत्थाण-वेदण-कसायपदगदेहि पंचिंदियतिरिक्ख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अपज्जत्तएहिं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? अड्डाइज्जदीव-समुद्देसु कम्मभूमिपडिभागे सयंपहपव्वदपरभागे च तेसिं संभवादो । अदीदकाले सयंपहपव्वदपरभागं सव्वं ते पुसंति त्ति तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं खेत्तं होदि । तस्साणयणविधाणं वुच्चदे— सयंपहपव्वदब्भंतरखेत्तं जगपदरस्स संखेज्जदिभागं रज्जुपदरम्हि अवणिदे सेसं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो होदि । तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । अपज्जत्ताणमंगुलासंखेज्जदिभागोगाहणाणं कधं संखेज्जंगुलुस्सेधो लब्भदे ? ण, मुदपंचिंदियादितसकलेवरेसु अंगुलस्स संखेज्जदिभागमादिं कादूण जाव संखेज्जजोयणाणि त्ति कमवड्ढीए ट्ठिदेसु उप्पज्जमाणाणमपज्जत्ताणं संखेज्जंगुलुस्सेधं पडि विरोहाभावादो । अथवा सव्वेसु दीवसमुद्देसु पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि । कुदो, पुव्ववेरियदेवसंबंधेण एगबंधणबद्धछज्जीवणिकाओगाढकम्मभूमिपडिभागुप्पण्णओरालियदेहमच्छादीणं सव्वदीवसमुद्देसु संभवोवलंभादो । महामच्छोगाहणम्हि एगबंधणबद्धछज्जीवणिकायाणमत्थित्तं कथं णव्वदे ? वग्गणम्हि उत्तअप्पाबहुगादो । तं जहा— 'सव्वत्थोवा महामच्छसरीरे पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तसकाइयजीवा । तेउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइया जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जलोगमेत्तो । तेसिं पडिभागो वि असंखेज्जलोगमेत्तो । एवं आउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया अणंतगुणा त्ति' । ण च सव्वे ते पज्जत्ता चेव, तसअपज्जत्ताणं पि तेउकाइयाणं च संभवादो । ण च मुदसरीरे चेव पंचिंदियअपज्जत्ताणं संभवो त्ति वोत्तुं जुत्तं, तस्स विधाययसुत्ताभावा । महामच्छादिदेहे तेसिमत्थित्तस्स सूचगं पुण इदमप्पाबहुगसुत्तं होदि । तसपज्जत्तरासीदो तसअपज्जत्तरासी असंखेज्जगुणो । तेण जत्थ तसजीवाणं संभवो होदि, तत्थ सव्वत्थ वि पज्जत्तेहिंतो अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा होंति । तम्हा संखेज्जंगुलबाहल्लं तिरियपदरमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तसत्थाण-वेदण-कसायखेत्तं होदि । 'वा' सद्दो गदो । मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणं पडि विरोहाभावा ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्ताणिओगद्दारे परूविदो त्ति णेह परूविज्जदे ।

सव्वलोगो वा ॥ ३५ ॥

एत्थ ताव 'वा' सद्दो उच्चदे— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फोसिदो, तीदाणागदकालेसु वेरियदेवसंबंधेण वि माणुसोत्तरसेलादो परदो गमणाभावा। माणुसखेत्तस्स पुण संखेज्जदिभागो फोसिदो। मिच्छादिट्ठीणं आगासगमणादिविसेससत्तिविरहिदाणं जोयणलक्खबाहल्लेण फासाभावादो। अथवा सव्वपदेहि माणुसलोगो देसूणो फोसिदो, पुव्ववेरियदेवसंबंधेण उड्ढं देसूणजोयणलक्खुप्पायणसंभवादो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वलोगे गमणागमणे विरोहाभावादो।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो।

सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो। माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। अथवा विहारादि-उवरिमपदेहि माणुसखेत्तं देसूणं फोसिदं। केण ऊणं ? चित्तकुलसेल-मेरुपव्वद-जोइसावासादिणा। माणुसेहि अगम्मपदेसस्स तस्स कथं माणुसखेत्तववएसो ? ण, लद्धिसंपण्णमुणीणमगम्मपदेसाभावा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि सत्त चोद्दसभावा देसूणा फोसिदा। किं कारणं ? सासणाणं मारणंतिएण भवणवासियलोगादो हेट्ठा गमणाभावादो, उवरि सव्वत्थ मारणंतिएण गमणसंभवादो। उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो; तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। ण ताव णेरइयसासणाणं मणुसेसुप्पज्जमाणाणं फोसणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, दुक्खंभदुबाहुखेत्तफलस्स णेरइयअसंजदसम्मादिट्ठिमारणंतियखेत्तफलस्सेव तिरियलोगासंखेज्जदिभागत्तुवलंभादो। णादीदकाले अट्ठरज्जुमावूरिय ट्ठिददेवसासणाणं मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणमुववादफोसणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, छक्कावक्कमणियमबलेण पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभ-अट्ठरज्जुस्सेहचदुपाणालीसु मणुअलोगमागच्छंताणमुववादखेत्तफलस्स तिरियलोगादो संखेज्जगुणत्तुवलंभादो। ण तिरिक्खेहिंतो मणुस्सेसुप्पज्जमाणसासणाणमुववदखेत्तं पि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, तत्थ वि चदुहि चेव पथेहि आगमणदंसणादो त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव णेरइयसासणे अस्सिदूण उत्तदोसो, तण्णिबंधणुववादफोसणबलेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्ताणब्भुवगमादो। ण देवसासणे अस्सिदूण उत्तदोसो वि, अट्ठरज्जुस्सेहलोगणालीए समचउरस्साए अंतोट्ठिददेवसासणाणं हेट्ठिम-उवरिमाणं च कंडुज्जुवाए गईए चढणोयरणवावारेण मणुवलोगपणिधिमागंतूण एग-दोविग्गहं करिय मणुसेसुप्पज्जमाणाणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तफोसणस्सुवलंभादो। तिरिच्छं गंतूण विग्गहं करिय देवसासणा मणुसेसु किण्ण उप्पज्जंति ? मणुसगइविरहियदिसाए सहावदो चेव तेसिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गमणाभावादो। ण च मणुसगइसंमुहमागंतूण विग्गहं करिय मणुस्सेसुप्पण्णाणं खेत्तं बहुअमुवलब्भइ, तक्खेत्तस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागपहाणत्तादो। तम्हा एवंविहणियमवसेण तलफोसणमेत्तस्सेव संगहो कायव्वो। मणुसोववादिणो देवसासणा मूलसरीरं पविसिय कालं करेंति त्ति भणंताणमभिप्पायेण तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागमेत्तमेदं फोसणं समत्थेदव्वं। तिरिक्खसासणेसु मणुस्सेसुप्पज्जमाणेसु वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसणमुवलब्भइ, तिरिक्खसासणसम्माइट्ठीणं चउग्गईसुप्पज्जमाणाणं तिरिक्खभवाभिमुहसेसगइजीवाणं च तिरिच्छं गंतूण विग्गहं करिय उप्पत्तिदंसणादो। अत एव च 'तिरोऽञ्चन्तीति तिर्यञ्चः'। एदेसिमेवंविहा गई अत्थि त्ति कुदो णव्वदे? देवसासणोववादस्स पंच-चोद्दसभागफोसणपरूवणण्णहाणुववत्तीदो। तदो ण पुव्वुत्तदोसप्पसंगो त्ति सद्दहेयव्वं।

सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३८ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठीणं वट्टमाणकाले सगसव्वपदेहि खेत्तभंगो। सत्थाणपदट्ठिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो संखेज्जा भागा वा। अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुससम्मामिच्छादिट्ठिभंगो। णवरि मारणंतियसमुग्घादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। तं कथं? मणुससम्मादिट्ठिदेवेसु मारणंतियं करेंता संखेज्जपंथ-संखेज्जविमाणेसु चेव मारणंतियं करेंति, वाणवेंतर-जोदिसिएसु तेसिमुप्पत्तीए अभावादो। तत्थ एक्केक्किस्से वट्टाए जदि वि असंखेज्जजोयणलक्खबाहल्लं होदि, तो वि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव खेत्तं फोसिदं होज्ज। तेणेदमप्पधाणं। मणुसा पुव्वं तिरिक्खेसु बद्धायुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण तिरिक्खेसु उप्पज्जंति, एदं खेत्तं पधाणं। कधमेदमाणिज्जदे? सयंपहपव्वदादो उवरिमखेत्तविक्खंभं ठविय—व्यासं षोडशगुणितं षोडशसहितं त्रिरूपरूपहृतं। व्यासत्रिगुणितसहितं सूक्ष्मादपि तद्भवेत्सूक्ष्मम् ॥ ९ ॥ एदीए गाहाए परिधिमाणीय विक्खंभचउब्भागेण गुणिय संखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो मारणंतियखेत्तं होदि। अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं। उववादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। तं जहा—जदि वि अट्ठरज्जुखेत्तं रज्जुविक्खंभमदीदकाले चउव्विहा देवा आऊरिय ट्ठिदा असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसेसु उप्पज्जंति, तो वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसणं, देवसासणाणं व तत्थतणअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुसेसुप्पज्जमाणाणमागमणणियमोवलंभादो। एसो अत्थो अण्णत्थ वि वत्तव्वो। अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। संजदासंजदाणं वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाणेण अदीदकाले संजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेउव्वियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा फोसिदा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कारणं चिंतिय वत्तव्वं। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं।

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जा वा भागा, सव्वलोगो वा ॥ ३९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं उत्तो त्ति संपदि ण उच्चदे। एवं पज्जत्तमणुसमणुसिणीसु। मणुसिणीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि। पमत्ते तेजाहारं णत्थि।

मणुसापज्जत्तेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४० ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। मारणंतिय-उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो।

सव्वलोगो वा ॥ ४१ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा अदीदकाले फोसिदा। मारणंतिय-उववादगदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणे विरोहाभावा।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४२ ॥

एत्थ ताव मिच्छादिट्ठीणं उच्चदे— सत्थाणसत्थाणपरिणदेहिं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एवं विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि वत्तव्वं। मारणंतिय-उववादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। सासणसम्मादिट्ठिस्स सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं खेत्तोघं। मारणंतियउववादपदाणं पि खेत्तोघमेव होदि। एसा वट्टमाणपमाणपरूवणा। अदीदाणागदपरूवणट्ठमाह—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४३ ॥

सत्थाणसत्थाणमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ ओघकारणं वत्तव्वं। सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ वि ओघकारणं वत्तव्वं। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि दोगुणट्ठाणजीवेहि अदीदकाले अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। केण ऊणा? तदियपुढविहेट्ठिमतलसहस्सजोयणेहि अण्णेहि वि देवाणमगम्मपदेसेहि। मारणंतियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, हेट्ठा दो रज्जू, उवरि सत्त रज्जु त्ति। उववादगदेहि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि पंच चोद्दसभागा देसूणा फोसिंदा, सहस्सारकप्पादो उवरिमेदेसिमुववादाभावा। छक्कावक्कमणियमे संते पंचचोद्दसभागफोसणं ण जुज्जदि त्ति णासंकणिज्जं, चदुण्हं दिसाणं हेट्ठुवरिमदिसाणं च गच्छंतेहि तदा मारणं पडि विरोहाभावादो। का दिसा णाम? सगठाणादो कंडुज्जुवा दिसा णाम। ताओ छच्चेव, अण्णेसिमसंभवादो। का विदिसा णाम? सगट्ठाणादो कण्णायारेण ट्ठिदखेत्तं विदिसा। जेण सव्वे जीवा कण्णायारेण ण जांति तेण छक्कावक्कमणियमो जुज्जदे। ण च एगदंडेणेव उप्पत्तिट्ठाणेण उवरि सरिसा होंति त्ति णियमो, एगंगुलादिवियप्पेहि तिरिक्खेण आयदं पढमदंडं काऊण तिरिक्ख-मणुसाणं विदियदंडेण समुप्पत्तिट्ठाणपावणे विरोहाभावादो। भवणवासिएसु उप्पज्जमाणतिरिक्खुववादखेत्ते गहिदे पंच रज्जू सादिरेया किण्ण होंति त्ति उत्ते ण होंति, अहियखेत्तादो ऊणखेत्तस्स बहुत्तुवदेसा। तं कथं णव्वदे? हेट्ठा दंडायारेण ओयरिय विग्गहं काऊण भवणवासिएसुप्पण्णाणं पढम-विदियदंडेहि अदीदकाले रुद्धखेत्तादो सहस्सारुववादसेज्जाए उवरिमभागस्स संखेज्जगुणत्ता। विमाणसिहरमुस्सेहजोयणपमाणं त्ति ण थोवो उवरिमभागो, सहस्सारुवरिमपज्जवसाणस्स लक्खपमाणजोयणेहिंतो बहुअत्तादो। तं कुदो णव्वदे? देसूणपंच-चोद्दसभागफोसणण्णहाणुववत्तीदो।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो खेत्तपरूवणाए उत्तो त्ति इह ण उच्चदे।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४५ ॥

सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो 'वा' सद्दट्ठो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । उववादगदेहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि मणुसवदिरित्ताणमुववादाभावा । एवं सम्मामिच्छादिट्ठीणं पि । णवरि मारणंतिय-उववादपदा णत्थि ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४६ ॥

वाणवेंतर-जोदिसियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं खेत्तभंगो । भवणवासियमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो । अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । उववादपरिणदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । जदि वि एदं वट्टमसंखेज्जसेढीमेत्तं, तो वि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं चेव उववादेण वट्टमाणकाले फुसदि, तिरियलोगमज्झम्मि तदसंखेज्जदिभागे चेव भवणावासाणमवट्ठाणादो, तदवट्ठिददिसं मोत्तूणण्णदिसाए गमणाभावादो, हेट्ठा ओयरिय उप्पज्जमाणाणं सुट्ठु थोवत्तादो । मारणंतियसमुग्घादगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो । भवणवासियसासणसम्मादिट्ठीणं खेत्तभंगो ।

अद्धुट्ठा वा, अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४७ ॥

भवणवासियमिच्छदिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अद्धुट्ठा वा अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा । अद्धुट्ठरज्जू सयमेव विहरंति । कथमद्धुट्ठरज्जू जादा ? मंदरतलादो हेट्ठा दोण्णि, उवरि जाव सोधम्मविमाणसिहरधजदंडो त्ति दिवड्ढरज्जू । उवरिमदेवपयोगेण अट्ठ रज्जू । मारणंतियसमुग्घादगदेहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । उवरि सत्त, हेट्ठा दोण्णि, एवं णव रज्जू । उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । जोयणलक्खबाहल्लं तिरियपदरमदीदकाले किण्ण पुसिज्जदि ? ण, तिरिच्छेण भवणट्ठिदपदेसं गंतूण हेट्ठा मुक्कमारणंतियाणमुववादेण हेट्ठुवरिमासेसखेत्तफुसणाभावादो । पुणो कथं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं जुज्जदे ? सगावट्ठिदपदेसादो हेट्ठा गंतूण तिरिच्छेण पल्लट्टिय सगभवणेसुप्पण्णाणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो उववादफोसणं होदि । अण्णहा किण्ण होदि ? भवणवासियपाओग्गाणुपुव्विपडिबद्धागासपदेसाणमवट्ठाणवसेण मारणंतियसंभवादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवणवासियसासणसम्मादिट्ठिसत्थाणसव्वपदाणं भवणवासियमिच्छादिट्ठिभंगो। वाणवेंतरमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। तं जहा– एगं जगपदरं ठविय तप्पाओग्गसंखेज्जपदरंगुलेहि भागे हिदे वेंतरावासाण पमाणं होदि। तमेगावासोगाहणाए संखेज्जघणंगुलपमाणाए गुणिदे संखेज्जंगुलाणि बाहल्लं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं जगपदरं होदि। असंखेज्जजोयणवित्थडा वेंतरावासा अप्पधाणा त्ति कट्टु इदं भणिदं। अह जइ ते चेय पहाणा, जगपदरस्स असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि भागहारं ठविय असंखेज्जघणंगुलेहि एगावासुप्पण्णेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सगपच्चएण आहुट्ठ-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। परपच्चएण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। मारणंतियसमुग्घादगदेहि णव चोद्दसभागा फोसिदा। उववादेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। उववादेण तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं खेत्तं वट्टमाणकाले अवरुंभिय ट्ठिदवेंतरा अदीदकाले कथं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागं पुसंति त्ति उत्ते ण एस दोसो, खेत्तं णाम सव्वजीवाणमोगाहणाओ उववादविसिट्ठाओ एगट्ठं करिय गहिदे होदि। तेण तिरियलोगादो वेंतरमिच्छादिट्ठि-उववादखेत्तमसंखेज्जगुणं जादं। फोसणम्हि पुण जीवपडिट्ठिदओगाहणाओ ण घेप्पंति, किंतु तीदकाले उववादपरिणदमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिवेंतरेहि च्छित्तखेत्तमेव घेप्पदि, वेंतरेसु वि ण देवा णेरइया वा उप्पज्जंति, ण च एइंदिया विगलिंदिया, किंतु सण्णि-असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-मणुसा चेव। ण च वेंतराणमावासा सोधम्मादिसु तिरियलोगबाहिरेसु कप्पेसु अत्थि, तधोवदेसाभावा। ण च लक्खजोयणबाहल्लतिरियपदरम्हि सव्वत्थ वेंतरावासा चेव, जोदिसियवासाणं वेलंधरपण्णगादिआवासाणं च अभावप्पसंगा। ण च भूमीए चेव वेंतरावासा होंति त्ति णियमो अत्थि, आगासपदिट्ठियाणं पि वेंतरावासाणं संभवादो। ण च तिरियलोगे चेव वेंतरावासाणमत्थित्तणियमो, हेट्ठा पंकबहुलपुढवीए वि भूत-रक्खसावासाणमुवलंभादो। तम्हा किंचूणमजोएदूण वेलक्खबाहल्लतिरियपदरं ठविय सत्तकदीए ओवट्टिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि। एवं चेव जोदिसियाणं पि वत्तव्वं, णवरि उववादखेत्ते आणिज्जमाणे णवजोयणसदबाहल्लं तिरियपदरं सत्तकदीए खंडिदे पदरागारेण ट्ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियमारणंतियपदपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि भवणवासिय-वेंतर-जोदिसिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अड्डुट्ठा वा, अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४९ ॥

सत्थाणसत्थाणभवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । णवरि भवणवासिएसु चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो त्ति वत्तव्वं । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदपरिणदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि अड्डुट्ठा चोद्दसभागा देसूणा सगपच्चएण; परपच्चएण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । णवरि सम्मामिच्छादिट्ठीणं मारणंतियपदं णत्थि ।

सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति देवोघं ॥ ५० ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि मिच्छादिट्ठीहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । सेसगुणट्ठाणजीवेहि अप्पप्पणो पदेसु वट्टमाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । अदीदे काले सोधम्मीसाणकप्पवासियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपदपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तं जहा—सव्वे इंदया संखेज्जजोयणवित्थडा, सेढीबद्धा असंखेज्जजोयणवित्थडा, पइण्णया वामिस्सा । एत्थ जदि वि सव्वविमाणाणि असंखेज्जजोयणवित्थडाणि त्ति घेप्पंति, तो वि सव्वविमाणखेत्तफलसमासो तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि । तं जहा—एगविमाणायामो असंखेज्जजोयणमेत्तो त्ति कट्टु असंखेज्जजोयणविक्खंभेणायामं गुणिय विमाणुस्सेहसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो होदि, एक्केक्कविमाणायाम-विक्खंभाणं सेढिपढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणपमाणत्तादो । तं सोधम्मीसाणविमाणसंखाए गुणिदे वि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो होदि त्ति । एत्थ सव्वकप्पाणं कमेण विमाणसंखापरूवयगाहाओ—वत्तीसं सोहम्मे अट्ठावीसं तहेव ईसाणे । वारह सणक्कुमारे अट्ठेव य होंति माहिंदे ॥ १० ॥ बम्हे कप्पे बम्होत्तरे य चत्तारि सयसहस्साइं । छसु कप्पेसु य एयं चउरासीदी सयसहस्सा ॥ ११ ॥ पण्णासं तु सहस्सा लंतय-काविट्ठएसु कप्पेसु । सुक्क-महासुक्केसु य चत्तालीसं सहस्साइं ॥ १२ ॥ छच्चेव सहस्साइं सयारकप्पे तहा सहस्सारे । सत्तेव विमाणसया आरणकप्पच्चुदे चेय ॥ १३ ॥ एक्कारसयं तिसु हेट्ठिमेसु तिसु मज्झिमेसु सत्तहियं । एक्काणउदिविमाणा तिसु गेवज्जेसुवरिमेसु ॥ १४ ॥ गेवज्जाणुवरिमया णव चेव अणुद्दिसा विमाणा त्ति । तह य अणुत्तरणामा पंचेव हवंति संखाए ॥ १५ ॥ विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । मारणंतियपरिणदेहि मिच्छादिट्ठि-सासणेहि णव चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि दिवड्ढ चोद्दसभागा फोसिदा । सोधम्मकप्पो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

धरणीतलादो दिवड्ढरज्जुमोस्सरिय ट्ठिदो त्ति सम्मामिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। एवं असंजदसम्मादिट्ठीणं पि। णवरि मारणंतिएण अट्ठ चोद्दसभागा, उववादेण दिवड्ढ-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। जेणेवं देवोघादो सोधम्मकप्पे ण विसेसो अत्थि तेण देवोघमिदि सुत्तवयणं सुट्ठु सुघडमिदि।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

एदेसिं पंचण्हं कप्पाणं चदुगुणट्ठाणजीवेहि जहासंभवं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसा वट्टमाणपरूवणा।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ५२ ॥

पंचकप्पवासियचदुगुणट्ठाणजीवेहि सत्थाणसत्थाणपदपरिणदेहि अदीदकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-पदपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। उववादपरिणदेहि सणक्कुमार-माहिंददेवेहिं तिण्णि चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। बम्ह-बम्हुत्तर-कप्पवासियदेवेहि आहुट्ठ-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। लंतय-काविट्ठदेवेहि चत्तारि चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सुक्क-महासुक्कदेवेहि अद्धपंचम-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेहि पंच चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादा णत्थि।

आणद जाव आरणच्चुदकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५३ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणखेत्तपरूवयस्स अत्थो पुव्वं परूविदो त्ति पुणो ण उच्चदे।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ ५४ ॥

मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपदपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्ज-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो 'वा' सद्दत्थो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, चित्ताए उवरिमतलादो हेट्ठा एदेसिं गमणाभावादो । मिच्छादिट्ठिसासणसम्मादिट्ठीणं उववादो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो । कुदो ? एगूणदालीसजोयणलक्खविक्खंभ-संखेज्जरज्जुआयदमुववादखेत्तं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं ण पावेदि त्ति । सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादपदं णत्थि । असंजदसम्माइट्ठीहि उववादपरिणदेहि अद्धछक्क-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । अरणच्चुदकप्पे छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । किं कारणं ? तिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदाणं वेरियदेवसंबंधेण सव्वदीव-सायरेसु ट्ठिदाणं तत्थुववादोवलंभादो ।

णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । अदीदपरूवणा वि खेत्तभंगो चेय । कुदो ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तेण च समाणत्तुवलंभादो ।

अणुद्दिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

एदेसु ट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेदि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो, णवगेवज्जादिउवरिमदेवाणं तिरिक्खेसु चयणोववादाभावादो । णवरि पंचपदपरिणदेहि सव्वट्ठसिद्धिदेवेहि माणुसलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । एवं गदिमग्गणा समत्ता ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ ५७ ॥

एइंदिएहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीद-वट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो । वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो । माणुसखेत्तं ण णव्वदे । अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णरतिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । अदीदकाले पंचरज्जुबाहल्लं तिरियपदरं विउव्वमाणा वाउक्काइया फुसंति त्ति । बादरेइंदिय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरेइंदियपज्जत्तेहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। किं कारणं ? जेण पंचरज्जुबाहल्लं रज्जुपदरं वाउकाइयजीवावूरिदं बादरएइंदियजीवावूरिदअट्ठपुढवीओ च, तेसिं पुढवीणं हेट्ठा ट्ठिदवीसा-वीसजोयणसहस्सबाहल्लं तिण्णि तिण्णि वादवलए लोगंतट्ठिदवाउकाइयखेत्तं च एगट्ठे कदे लोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति। एदेहि अदीदकाले वि एत्तियं चेव खेत्तं फोसिदं, विवक्खिदपदपरिणदाणमेदेसिं सव्वद्धमण्णत्थच्छणाभावादो। वेउव्वियपदपरिणदेहि वट्टमाण-काले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो अमुणिदविसेसो फोसिदो। तीदे काले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगे-हिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीद-वट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो। एवं बादरेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। णवरि वेउव्वियं णत्थि। सुहुमेइंदिय-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएहि सत्थाणसथाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो, 'सुहुमा जल-थलागासे सव्वत्थ होंति' त्ति वयणादो।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५८ ॥

एदस्सत्थो– वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएहि तेसिं पज्जत्तेहि य सत्थाणसत्थाणविहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। तेसिं चेव अपज्जत्तेहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसा वट्टमाणपरूवणा पुव्वुत्तरसंभालणणिमित्तं कदा।

सव्वलोगो वा ॥ ५९ ॥

ताव 'वा' सद्दो उच्चदे– बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएहि तेसिं चेव पज्जत्तेहि य सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-परिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो अदीदकाले फोसिदो। विगलिं-दियसत्थाणत्था सयंपहपव्वदस्स परभागे चेव होंति त्ति तदो परभागे पुव्वं व पदरागारेण ठइदे विगलिंदियसत्थाणसत्थाणखेत्तं तिरिय-लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। सेसपदेहि वइरिसंबंधेण विगलिंदिया सव्वत्थ तिरियपदरब्भंतरे होंति त्ति पदरागारेण ठइदे एदं वि खेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि। मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो। तेसिं चेव अपज्जत्तेहि सत्थाण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय उववादपरिणदेहिं सव्वलोगो फोसिदो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं जथा कारणं उत्तं, तथा एत्थ वि पुध पुध विगलिंदिय-अपज्जत्ताणं वत्तव्वं।

पंचिंदिय-पंचिंदियपजत्तएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६० ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तपंचिंदियदुगपरूवणाए तुल्ला, उभयत्थ वट्टमाणकालावलंबणं पडि साधम्मादो।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ ६१ ॥

दुविधपंचिंदियमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ पुव्वं व जोदिसियवेंतरावासरुद्धखेत्तं अदीदकाले पंचिंदियतिरिक्खेहि सत्थाणीकयखेत्तं च घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो दरिसेदव्वो। एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो उवरि छ, हेट्ठा दो रज्जुखेत्तब्भंतरे सव्वत्थ पुव्वपदपरिणददुविहपंचिंदियाणमुवलंभा। मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, विवक्खिदादीदकालत्तादो।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६२ ॥

एदेसिं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तपरूवणा एदेसिं चेव खेत्ताणिओगद्दारोघम्हि उत्तपरूवणाए तुल्ला। कुदो ? सासणप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति सव्वपदाणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तेण च एदेसिं चेव खेत्ताणिओगद्दारउत्तपदेहि साधम्मुवलंभादो। सेसगुणट्ठाणाणं पि सव्वपदेहि सरिसत्तदंसणादो च। अदीदकालमस्सिदूण परूवणं कीरमाणे वि णत्थि भेदो, पंचिंदियवदिरित्तगुणपडिवण्णाणमभावा।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ६३ ॥

एत्थ वि तिविधं कालमस्सिदूण ओघपरूवणा चेव कादव्वा, उभयत्थ पंचिंदियत्तं पडि भेदाभावा।

पंचिंदियअपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगा। उत्तमेव किमिदि पुणो वि उच्चदे, फलाभावा ? ण, मंदबुद्धिभवियजणसंभालणदुवारेण फलोवलंभादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वलोगो वा ॥ ६५ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं व तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं दरिसेदव्वं । एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो । मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वलोगम्हि एदेहि पदेहि सह सव्वअपज्जत्ताणं गमणागमणपडिसेहाभावा । एवमिंदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-तस्सेवअपज्जत्त-सुहुमपुढविकाइय-सुहुमआउकाइय-सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइय-तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ ६६ ॥

पुढविकाइय-आउकाइय-तेसिं चेव सव्वसुहुमेहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-तेसिं चेव अपज्जत्त-बादरतेउकाइय-तस्सेव अपज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिद-तेसिं चेव अपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तिरियलोगादो संखेज्जगुणत्तं कथं णव्वदे ? उच्चदे— एदे पुढवीओ चेव अस्सिदूण अच्छंति । सव्वपुढवीओ च सत्तरज्जुआयदाओ, पढमपुढवी सादिरेगएगरज्जुरुंदा [१] । विदियपुढवी छहि सत्तभागेहि समहियएगरज्जुरुंदा [१ ६/७] । तदियपुढवी पंच-सत्तभागाहिय वे रज्जुरुंदा [२ ५/७] । चउत्थपुढवी चत्तारिसत्तभागाहिय-तिण्णिरज्जुरुंदा [३ ४/७] । पंचमपुढवी तिण्णिसत्तभागाहिय-चत्तारिरज्जुरुंदा [४ ३/७] । छट्टपुढवी वे-सत्तभागाहियपंचरज्जुरुंदा [५ २/७] । सत्तमपुढवी एग-सत्तभागाहिय छरज्जुरुंदा [६ १/७] । अट्ठमपुढवी सादिरेयएगरज्जुरुंदा । पढमपुढविबाहल्लं असीदिसहस्साहियजोयणलक्खपमाणं होदि १८०००० । विदियपुढवी बत्तीसजोयणसहस्सबाहल्ला ३२००० । तदियपुढवी अट्ठावीसजोयणसहस्सबाहल्ला २८००० । चउत्थपुढवी चउवीसजोयणसहस्सबाहल्ला २४००० । पंचमपुढवी वीसजोयणसहस्सबाहल्ला २०००० । छट्टपुढवी सोलसजोयणसहस्सबाहल्ला १६००० । सत्तमपुढवी अट्ठजोयणसहस्सबाहल्ला ८००० । अट्ठमपुढवी अट्ठजोयणबाहल्ला ८ । एदाओ अट्ठपुढवीओ पदरागारेण ठइदे तिरियलोगबाहल्लादो संखेज्जगुणबाहल्लं जगपदरं होदि । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो । कुदो ? तस्सहावत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेऊणं पुढविभंगो। णवरि वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। तं जहा—तेउक्काइया पज्जत्ता चेव वेउव्वियसरीरं उट्ठावेंति, अपज्जत्तेसु तदभावा। ते च पज्जत्ता कम्मभूमीसु चेव होंति त्ति। सयंपहपव्वदपरभागखेत्तं जगपदरे बद्धे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति। अथवा बादरतेउकाइयपज्जत्ता कम्मभूमीए उप्पण्णा वाउसंबंधेण संखेज्जजोयणबाहल्लं तिरियपदरं अदीदकाले सव्वमावूरिय विउव्वंति त्ति गहिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो चेव होदि। बादरतेउकाइया बादरपुढविभंगो, बादरपुढविकाइया इव बादरतेउकाइया वि सव्वपुढवीसु अच्छंति त्ति। णवरि वेउव्वियपदस्स तेउकाइयवेउव्वियपदभंगो। वाउकाइयाणं तीदाणागदकालेसु तेउकाइयाणं भंगो। णवरि वेउव्वियस्स वट्टमाणकाले माणुसखेत्तगदविसेसो ण जाणिज्जदि। अदीदकाले वेउव्वियपरिणदेहि वाउक्काइएहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि बादर-वाउक्काइएहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। वेउव्वियपदस्स वट्टमाणकाले खेत्तभंगो। तीदे काले वेउव्वियपदस्स वाउकाइयवेउव्वियभंगो। मारणंतियउववादपरिणदेहि बादरवाउक्काइएहि सव्वलोगो फोसिदो। एवं बादरवाउक्काइयअपज्जत्ताणं। णवरि वेउव्वियपदं णत्थि। सुहुमतेउक्काइय-सुहुमवाउक्काइया तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय उववादपरिणदेहि तीदाणागदवट्टमाणकालेसु सव्वलोगो फोसिदो।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जधा खेत्ताणिओगद्दारे उत्तो तधा वत्तव्वो।

सव्वलोगो वा ॥ ६८ ॥

एत्थ ताव 'वा' सद्दट्ठो वुच्चदे—बादरपुढविकाइयपज्जत्त-बादरआउकाइयपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो। बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि य सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो। किं कारणं? सव्वपुढवीसु बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता णत्थि, 'चित्ताए उवरिमभागे चेव अत्थि' त्ति आइरियवयणादो। अथवा, पत्तेयसरीरपज्जत्ता तिरियलोगादो संखेज्जगुणं खेत्तं पुसंति। कुदो? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणं तिरियलोगादो संखेज्जगुणपोसणखेत्तब्भुवगमादो। ण च पत्तेयसरीरपज्जत्तवदिरित्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता अत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरणिगोदपदिट्ठिदा सव्वे पत्तेयसरीरा चेवेत्ति कधं णव्वदे ? बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा । जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥ १६ ॥ इदि सुत्तवयणादो णव्वदे । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ता सव्वासु पुढवीसु अत्थि त्ति कधं णव्वदे ? सव्वपुढवीसु विज्जमाणपुढविकाइयपज्जत्तपोसणेण सह एगत्तेणुवदिट्ठअसंखेज्जाणि तिरियपदराणि त्ति वक्खाणवयणादो णव्वदे । तम्हा पत्तेयसरीरपज्जत्तेहि पोसिदखेत्तेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि । जधा पत्तेयसरीरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता सव्वासु पुढवीसु होंति, तधा बादर-आउक्काइयपज्जत्तेहि वि सव्वासु पुढवीसु होदव्वं । अधवा बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तपत्तेगसरीरा चेव सव्वपुढवीसु होंति । बादरणिगोदाणमजोणीभूदपत्तेयसरीरपज्जत्ता चित्ताए उवरिमभागे चेव होंति त्ति कट्टु बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ते बादरणिगोदाणमजोणीभूदे चेव घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो त्ति घेत्तव्वं । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो । एवं बादरतेउक्काइयपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि वेउव्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो वत्तव्वो ।

बादरवाउपज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ६९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जधा खेत्ताणिओगद्दारे उत्तो तधा वत्तव्वो, वट्टमाणकालमस्सिदूण ट्ठिदत्तादो ।

सव्वलोगो वा ॥ ७० ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतियउववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवबादरसुहुम-पज्जत्तापज्जत्तएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ ७१ ॥

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवसुहुमपज्जत्तापज्जत्तएहि सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । बादरवणप्फदिकाइयबादरणिगोद-तेसिं पज्जत्तापज्जत्तएहिं सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिसु वि कालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ७२ ॥

वट्टमाणकालमदीदकालं च अस्सिदूण जधा ओघम्हि सासणादिगुणाणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि कादव्वा । णवरि मिच्छाइट्ठीणं पंचिंदियमिच्छादिट्ठिभंगो, मारणंतियउववादपदं मोत्तूण अण्णत्थ सव्वलोगत्ताभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ ७३ ॥

वट्टमाणकालमस्सिदूण जधा पंचिंदियअपज्जत्ताणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि वट्टमाणकालमस्सिदूण परूवणा कादव्वा । जधा अदीदकालमस्सिदूण सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो, मारणंतिय-उववादपदपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो त्ति पंचिंदियअपज्जत्ताणं परूवणा कदा, तहा एत्थ वि कायव्वा । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७४ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालमस्सिदूण ट्ठिदमिदि एदस्स परूवणं कीरमाणे जधा खेत्ताणिओगद्दारे पंचपंचमण-वचिजोगिमिच्छादिट्ठीणं परूवणा कदा, तधा एत्थ वि मंदबुद्धिसिस्ससंभालणट्ठं परूवणा कादव्वा ।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ ७५ ॥

पंचमण-पंचवचिजोगिमिच्छादिट्ठीहि सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ सत्थाणखेत्ताणयणविधाणं जाणिय कादव्वं । एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । घणलोगमट्ठभागूणतेदालीसरूवेहि छिण्णेगभागो, अधोलोगं साद्धचउव्वीसरूवेहि छिण्णेगभागो, उड्ढलोगमट्ठभागूणसाद्धट्ठारसरूवेहि छिण्णेगभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो त्ति जं उत्तं होदि । मारणंतियपदेण सव्वलोगो फोसिदो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ ७६ ॥

वट्टमाणकालमस्सिदूण जधा खेत्ताणिओगद्दारस्स ओघम्हि एदेसिं चदुण्हं गुणट्ठाणाणं खेत्तपरूवणा कदा, तधा एत्थ वि सिस्स-संभालणट्ठं परूवणा कादव्वा; णत्थि कोइ विसेसो । अदीदकालमस्सिदूण जधा फोसणाणिओगद्दारस्स ओघम्हि तीदाणागदकालेसु एदेहि चदुगुणट्ठाणजीवेहि छुत्तखेत्तपरूवणा कदा, तधा एत्थ वि कादव्वा, विसेसाभावा । णवरि सासणसम्मादिट्ठि–असंजदसम्मादिट्ठीसु उववादो णत्थि, उववादेण पंचमण-वचिजोगाणं सहअणवट्ठाणलक्खणविरोहा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७७ ॥

एदेसिमट्ठण्हं गुणट्ठाणाणं जधा फोसणाणिओगद्दारस्स ओघम्हि तिण्णि काले अस्सिदूण परूवणा कदा, तथा एत्थ वि कादव्वा। जदि एवं, तो सुत्ते ओघमिदि किण्ण परूविदं ? ण, तधा परूवणाए कायजोगाविणाभाविसजोगिचउव्विहसमुग्घादखेत्तपडिसेहफलत्तादो।

कायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ७८ ॥

सत्थाणसत्थाण–वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदकायजोगिमिच्छादिट्ठीणं तिसु वि कालेसु सव्वलोगत्तुवलंभादो, विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जदिगुणत्तेण; अदीदकाले अट्ठ-चोद्दसभागत्तेण च तुल्लत्तुवलंभादो, सुत्तेण ओघमिदि उत्तं।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ७९ ॥

एदेसिमेक्कारसण्हं गुणट्ठाणाणं तिविहं कालमस्सिदूण सत्थाणादिपदाणं परूवणा कीरमाणे फोसणाणिओगद्दारोघम्हि जधा तिविहं कालमस्सिदूण एक्कारसण्हं गुणट्ठाणाणं सत्थाणादिपरूवणा कदा, तथा कादव्वा; णत्थि एत्थ विसेसो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स पुधारंभो किंफलो ? ण, सजोगिकेवलि-चत्तारिसमुग्घादा कायजोगाविणाभाविणो त्ति मंदमेहाविजणावबोहणफलत्तादो। एगजोगं कादूण ओघमिदि उत्ते वि ओघत्तण्णहाणुववत्तीदो कायजोगी वि चदुण्हं समुग्घादाणमत्थित्तं परिच्छिज्जदे चे, ण एस दोसो, ओघमिदि उत्ते इमाणि पदाणि अत्थि, इमाणि च णत्थि त्ति ण णव्वदे। जाणि संभवंति पदाणि तेसिं परूवणाओ ओघपरूवणाए तुल्ला त्ति एत्तियमेत्तं चेव णव्वदे। तेण पुध सुत्तारंभो कायजोगिम्हि चउव्विहसमुग्घादाणमत्थित्तपदुप्पायणफलो त्ति।

ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८१ ॥

दव्वट्ठियपरूवणाए ओघत्तं जुज्जदे। पज्जवट्ठियपरूवणाए पुण ओघत्तं णत्थि, ओरालियजोगे णिरुद्धे विहार-वेउव्वियपदाणमट्ठ-चोद्दसभागत्ताणुवलंभादो। तदो एत्थ भेदपरूवणा कीरदे–सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतियपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो। उववादो णत्थि, दोण्हं सहाणवट्ठाणलक्खणविरोहा। वट्टमाणकाले वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदाणागदेसु तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो, वाउक्काइयवेउव्वियफोसणस्स पाधण्णविवक्खाए । विहारपरिणदेहि ओरालियकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८२ ॥

एदस्स वट्टमाणकालसंबंधिसुत्तस्स खेत्ताणिओगद्दारे ओरालियकायजोगिसासणसुत्तस्सेव परूवणा कादव्वा ।

सत्त चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८३ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । उववादो णत्थि । मारणंतियपरिणदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । केण ऊणा ? इसिपब्भारपुढवीए उवरिमबाहल्लेण ।

सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्ताणिओगद्दारोरालियकायजोगसम्मामिच्छादिट्ठिसुत्तपरूवणाए तुल्ला । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि ओरालियसम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादा णत्थि ।

असंजदसम्मादिट्ठीहि संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि संजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणद्धाए फोसिदो ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखे-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो। मारणंतिय(-उववाद-)परिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि असंजदसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणमुववादाभावादो।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८७ ॥

एदेसिमट्ठण्हं गुणट्ठाणाणं तिण्णि वि काले अस्सिदूण परूवणं कीरमाणे खेत्तपोसणाणं मूलोघपमत्तादिपरूवणाए समाणा परूवणा कादव्वा। णवरि सजोगिकेवलिम्हि कवाड-पदर-लोगपूरणाणि णत्थि। तं कधं णव्वदे ? सजोगिकेवलीहि लोगस्स असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा फोसिदो त्ति सुत्तेण अणिद्दिट्ठत्तादो।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि ओरालियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु जेण सव्वलोगो फोसिदो, तेण ओघत्तमेदेसिं ण विरुज्झदे। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदाणमेत्थाभावा णोघत्तं जुज्जदे ? होदु णाम एदेसिं दोण्हं पि पदाणमभावो तथावि पदसंखाविवक्खाभावा विज्जमाणपदाणं फोसणस्स ओघपदफोसणेण तुल्लत्तमत्थि त्ति ओघत्तं ण विरुज्झदे।

सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८९ ॥

एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदओरालियमिस्ससासणसम्मादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। कथं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? देव-णेरइयमणुस्स-तिरिक्खसासणसम्मादिट्ठीहि तिरिक्खमणुस्सेसुप्पज्जिय सरीरं घेत्तूण ओरालियमिस्सकायजोगेण सह सासणगुणमुव्वहंतेहि अदीदकाले संखेज्जंगुलबाहल्लरज्जुपदरं मज्झिल्लसमुद्दवज्जं सव्वं जेण फुसिज्जदि तेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो त्ति वयणं जुज्जदे। एत्थ विहार-वेउव्विय-मारणंतिय-पदाणि णत्थि, एदेसिमोरालियमिस्सकायजोगेण सहअवट्ठाणविरोहा। उववादो पुण अत्थि, सासणगुणेण सह अक्कमेण उवात्तभवसरीरपढमसमए उववादोवलंभा। मिच्छादिट्ठीणं पुण मारणंतिय-उववादपदाणि लब्भंति, अणंतो ओरालियमिस्सेइंदियअपज्जत्तरासी सट्ठाणे परट्ठाणे च वक्कमणोवक्कमणं करेमाणो लब्भदि त्ति। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि ओरालियमिस्सकायजोगीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरिय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स संखेज्जभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कथं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं? ण, पुव्वं तिरिक्ख-मणुस्सेसु आउअं बंधिय पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय बद्धाउवसेण भोगभूमिसंठाणअसंखेज्जदीवेसु उप्पण्णेहि भवसरीरग्गहणपढमसमए वट्टमाणेहि ओरालियमिस्सकायजोगअसंजदसम्मादिट्ठीहि अदीदकाले फोसिदतिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तुवलंभा। कवाडगदेहि सजोगिकेवलीहि ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; अदीदेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ कवाडखेत्तादो जगपदरुप्पायणविधाणं जाणिय वत्तव्वं।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९० ॥

एदं सुत्तं जेण वट्टमाणकाले पडिबद्धं तेणेदस्स वक्खाणे कीरमाणे जधा खेत्ताणिओगद्दारे वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिप्पहुडिबद्धसुत्तस्स वक्खाणं कदं, तथा एत्थ वि कायव्वं।

अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ९१ ॥

सत्थाणसत्थाणपरिणद-वेउव्वियमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहिं अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा। उववादो णत्थि। मारणंतियपरिणदेहि तेरह चोद्दसभागा फोसिदा, हेट्ठा छ, उवरि सत्त रज्जू। घणलोगमेगरूवस्स अट्ठतेरसभागूण-सत्तावीसरूवेहि खंडिदएगखंडं फोसंति त्ति वुत्तं होइ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ९२ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाणपरिणदवेउव्वियकायजोगिसासणसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-
एत्थ तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तपरूवणं पुव्वं व वत्तव्वं।
भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा। उववादो णत्थि। मारणंतियपरिणदेहि बारह चोद्दसभागा फोसिदा। तेणोघमिदि जुज्जदे।

सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ९३ ॥

जेणेदेसिं वट्टमाणपरूवणा खेत्तोघपरूवणाए तुल्ला, तेणोघं होदि। अदीदपरूवणा वि फोसणोघेण तुल्ला। तं जहा—सत्थाण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। असंजदसम्मादिट्ठिस्स उववादो णत्थि। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतिय-उववादो णत्थि। तेणेत्थ वि ओघत्तमेदेसिं जुज्जदे।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ?

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदवेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियमारणंतियपदाणि णत्थि। सासणसम्मादिट्ठिस्स वि एवं चेव वत्तव्वं, वाणवेंतरजोदिसियदेवाणमसंखेज्जावासेसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमोट्ठहिय ट्ठिदेसु सासणाणमुप्पत्तिदंसणादो। असंजदसम्माइट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहिं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादोअसंखेज्जगुणो फोसिदो, वाणवेंतर-जोदिसिय-भवणवासिएसु एदेसिमुववादाभावा; सम्मादिट्ठिउववादपाओग्गसोधम्मादिउवरिमविमाणाणं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे चेव अवट्ठाणादो।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ?

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि आहारकायजोगिपमत्तसंजदेहि तीदे काले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। उववाद-वेउव्वियं णत्थि। मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो। माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। आहारमिस्सकायजोगिपमत्तसंजदेहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९६ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहि मिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु जेण सव्वलोगो फोसिदो, तेण सुत्ते ओघमिदि वुत्तं। एत्थ विहारवदिसत्थाण-वेउव्विय-मारणंतियपदाणि णत्थि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो ।

एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा ॥ ९८ ॥

एत्थ उववादवदिरित्तसेसपदाणि णत्थि, कम्मइयकायजोगविवक्खादो । उववादे वट्टमाणा सासणा हेट्ठा पंच, उवरि छ रज्जूओ फुसंति त्ति एक्कारह चोद्दसभागा फोसिदखेत्तं होदि ।

असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९९ ॥

एदस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो ।

छ चोद्दसभागा देसूणा ॥ १०० ॥

एत्थ वि उववादपदमेक्कं चेव । तिरिक्खासंजदसम्माइट्ठिणो जेणुवरि छ रज्जूओ गंतूणुप्पज्जंति, तेण फोसणखेत्तपरूवणं छ-चोद्दसभागमेत्तं होदि । हेट्ठा फोसणं पंचरज्जुपमाणं ण लब्भदे, णेरइयासंजदसम्मादिट्ठीणं तिरिक्खेसुववादाभावा ।

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ॥ १०१ ॥

पदरगदकेवलीहि लोगस्स असंखेज्जा भागा फोसिदा, लोगपेरंतट्ठिदवादवलएसु अपविट्ठजीवपदेसत्तादो । लोगपूरणे सव्वलोगो फोसिदो, वादवलएसु वि पविट्ठजीवपदेसत्तादो । एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०२ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ १०३ ॥

सत्थाणत्थेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वाणवेंतर-जोदिसियावासे संखेज्जजोयणबाहल्लं रज्जुपदरं च घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो साहेदव्वो ।

विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्ल-रज्जुपदरपरिब्भमणसत्तिजुत्तदेवित्थि-पुरिसवेदमिच्छादिट्ठीणमुवलंभादो। मारणंतियउववाद-परिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, दुपदपरिणदमिच्छादिट्ठीणमगम्मपदेसाभावादो।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०४ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो।

अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १०५ ॥

सत्थाणत्थेहि सासणसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, अदीदकालविवक्खादो। एत्थ वि पुव्वं व तिण्णि खेत्ताणि घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो दरिसेदव्वो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्लरज्जुपदरब्भंतरे देवित्थि-पुरिससासणाणं गमणागमणं पडि पडिसेहाभावा। मारणंतियपरिणदेहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। हेट्ठा पंच रज्जू फोसणं किण्ण लब्भदे ? ण, णेरइएहिंतो इत्थि-पुरिसवेदे सासणाणं तिरिक्ख-मणुस्सेसु मारणंतियमेल्लमाणाणमभावादो, तिरिक्खित्थि-पुरिसवेदसासणाणं णिरयगदिं मारणंतियं मेल्लमाणाणमभावादो च। उववादपरिणदेहि एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सुत्ते उववादफोसणं किण्ण वुत्तं ? ण, फोसणसुत्ते उववादविवक्खाभावा। णिरयादो आगच्छंतेहि पंच रज्जू, देवेहिंतो आगच्छंतेहि छ रज्जू फोसिदा त्ति एक्कारह चोद्दसभागा फोसणखेत्तं होदि।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०६ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालविवक्खादो।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ १०७ ॥

सत्थाणत्थेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तीदकालविवक्खादो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतियं णत्थि। उववादपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छादिट्ठीणं उववादो णत्थि। इत्थिवेदेसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०८ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, विवक्खिदवट्टमाणकालत्तादो ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १०९ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, विवक्खिदातीदकालत्तादो । मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि तिरिक्खसंजदासंजदाणमुववादाभावा ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसामग-खवगेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११० ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । अदीदकाले एदेहि सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । पमत्तसंजदे तेजाहारपदाणं वि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि इत्थिवेदे तेजाहारं णत्थि । मारणंतिय-परिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १११ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदणवुंसयवेदमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु जेण सव्वलोगो फोसिदो; विहारपरिणदेहि तिसु वि कालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो त्ति; तेण ओघत्तं जुज्जदे । किंतु वेउव्वियपदस्स ओघभंगो ण होदि, तत्थ वेउव्वियपदं वट्टमाणकाले तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तमदीदकाले उभयत्थ वि अट्ठ पंच चोद्दसभागा त्ति ? ण, पदविसेसविवक्खाभावेण ओघणिद्देसस्स विरोहाभावा ।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११२ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो ।

बारह चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ११३ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसयसासणेहि तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्ज-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, पहाणीकदतिरिक्खसासणरासित्तादो । उववादपरिणदेहि एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, णवुंसगवेदतिरिक्खसासणेसुप्पज्जमाणदेवणेरइयाणं छ-पंचरज्जुबाहल्लतिरियपदरफोसणोवलंभादो । मारणंतिय-परिणदेहि बारह चोद्दसभागा फोसिदा, णेरइय-तिरिक्खाणं पंच-सत्तरज्जुबाहल्लरज्जुपदरफोसणोवलंभादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११४ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसयवेद-सम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तिरियरासिस्स पाधण्णादो । मारणंतिय-उववादा णत्थि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ११६ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसगवेद-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो । एसो 'वा' सद्दट्ठो । मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि तिरिक्खासंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं गमणाभावा । उववादपदं णत्थि । णवरि असंजदसम्मादिट्ठीहि उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ११७ ॥

पमत्ते तेजाहाराभावादो ओघत्तं ण जुज्जदे ? ण, सुत्ते पदविवक्खाए विणा सामण्णणिद्देसादो । सेसं चिंतिय वत्तव्वं ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ११८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणादीदकालपरूवणा ओघादो ण भिज्जदि त्ति सुत्ते ओघमिदि भणिदं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ११९ ॥

एगजोगो किण्ण कदो ? ण, पुव्वखेत्तेण सजोगिखेत्तस्स अदीद-वट्टमाणकालेसु तुल्लत्ताभावादो एगजोगत्ताणुववत्तीए । एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण किंचि वुच्चदे । एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ १२० ॥

एदस्स सुत्तस्स अदीद-वट्टमाणकाले अस्सिदूण परूवणे कीरमाणे फोसणमूलोघादो ण केण वि अंसेण भिज्जदि त्ति ओघमिदि सुत्तवयणं सुट्ठु संबद्धं । तदो मूलोघपरूवणं सुट्ठु संभालिय एत्थ सिस्साणं पडिबोहो कायव्वो । लोहगयविसेसावबोहणट्ठमुत्तरसुत्तं भण्णदे—

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयउवसमा खवा ओघं ॥ १२१ ॥

कुदो ? ओघसुहुमसांपराइयउवसम-खवगेहिंतो एदेसिं विसेसाभावा । सो च विसेसाभावो सिस्साणं सण्णिदरिसेयव्वो ।

अकसाईसु चदुट्ठाणमोघं ॥ १२२ ॥

णामेगदेसग्गहणे वि णामिल्लसंपच्चओ होदि त्ति चदुट्ठाणसद्देण वीदरागाणं चदुण्हं गुणट्ठाणाणं गहणं होदि । तेसिं परूवणा सुगमा, ओघसमाणत्तादो । एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १२३ ॥

जेण सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदमदि-सुदअण्णाणिमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो, विहार-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा, तेण ओघमिदि जुज्जदे ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १२४ ॥

ओघो जेण अणेयपयारो मिच्छादिट्ठिओघादिभेदेण, तेण कस्सोघस्स एत्थ गहणं होदि त्ति ण णव्वदे ? जेणोघेण सासणसम्मादिट्ठीणं पगरिसेण पच्चासत्ती अत्थि, तस्सेव गहणं । केण सह एत्थ पुण पगरिसेण पच्चासत्ती विज्जदे ? सासणसम्मादिट्ठिस्स ओघेण । वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो सगसव्वपदखेत्तुवलंभादो । तीदे काले वि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागस्स, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागस्स, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणस्स; विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदेसु अट्ठ चोद्दसभागमेत्तस्स, मारणंतिय-उववादपदेसु बारसेक्कारस-चोद्दसभागखेत्तस्सुवलंभादो । एदमत्थपदं सव्वत्थ वत्तव्वं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२५ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगा, वट्टमाणकालसंबंधित्तादो ।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १२६ ॥

सत्थाणपरिणदेहि विभंगणाणमिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो 'वा' सद्दट्ठो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा; मारणंतियपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो । सेसं सुगमं ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १२७ ॥

कुदो ? वट्टमाणकाले सगसव्वपदाणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणत्तेण; तीदे काले सत्थाणस्स तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तेण, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तेण, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणत्तेण; विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं देसूण-अट्ठ-चोद्दसभागत्तेण, मारणंतियस्स देसूण-बारह-चोद्दसभागत्तेण, ओघसासणसम्मादिट्ठिखेत्तेण सरिसत्तुवलंभादो । कथं सारिच्छे एगत्तं ? ण, दव्वट्ठियणयणिबंधणववहाराणं सरिसे वि एगत्तालंबणाणमुवलंभा ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १२८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, मूलोघम्हि वित्थरेण परूविदत्तादो । तत्थ णाणविसेसणेण विणा सामण्णेण परूविदमिदि चे ण, सामण्णेण परूविदे वि सा मदि-सुदणाणपरूवणा चेय, मदि-सुदणाणवदिरित्तछदुमत्थसम्मादिट्ठीणमणुवलंभा । ओधिणाणविरहिदसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ओधिणाणस्स ओघत्तं ण जुज्जदे चे ण, एत्थ दव्वपमाणेण अहियाराभावा । ओघअसंजदसम्मादिट्ठिआदिफोसणेहि ओधिणाणअसंजदसम्मादिट्ठिआदिफोसणाणं सरिसत्तुवलंभादो ओधिणाणस्स ओघत्तं जुज्जदे चेय ।

॥४४६॥

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १२९ ॥

अदीद-वट्टमाणकाले सव्वपदाणमोघसव्वपदेहि सरिसत्तुवलंभादो एत्थ वि ओघत्तं जुज्जदे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ १३० ॥

एदस्स अत्थो सुगमो, ओघम्हि परूविदत्तादो, केवलणाणवदिरित्तसजोगिकेवलीणमभावा ओघसजोगिपरूवणाणं पडि सामण्णा।

अजोगिकेवली ओघं ॥ १३१ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो, ओघम्हि परूविदत्तादो। पुध सुत्तारंभो किमट्ठो ? ण, सजोगि-अजोगिकेवलीणं वट्टमाणादीदकालेण पच्चासत्तीए अभावादो एगजोगत्ताणुववत्तीए। एवं णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १३२ ॥

एत्थ ओघपरूवणादो ण को वि भेदो अत्थि, विवक्खिदसंजमसामण्णादो। ण च संजमसामण्णविरहिदा संजदा अत्थि, तेसिमसंजदत्तप्पसंगादो।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥

पुध सुत्तारंभो किमट्ठो ? ण, पुव्विल्लेहि सह फोसणेण पच्चासत्तिअभावप्पदंसणफलत्तादो। सेसं सुगमं।

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ १३४ ॥

एदं पि सुत्तं सुगममिदि ण एत्थ किंचि वत्तव्वमत्थि।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३५ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो; मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो तीदे काले फोसिदो। पमत्ते तेजाहारं णत्थि, लद्धीए उवरि लद्धीणमभावा।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइय-उवसमा खवा ओघं ॥ १३६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, ओघम्हि परूविदत्तादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ १३७ ॥

चदुण्हं ट्ठाणाणं समाहारो चदुट्ठाणी; सा ओघं भवदि, जहाक्खादसंजदचदुगुणट्ठाणाणं परूवणा ओघसरिसा त्ति जं वुत्तं होदि ।

संजदासंजदा ओघं ॥ १३८ ॥

संजमाणुवादेण संजमासंजम-असंजमाणं कधं गहणं होदि ? ण, एसो संजमाणुवादो ण संजममेव परूवेदि, किंतु संजमं संजमासंजममसंजमं च, तेणेदेसिं पि गहणं होदि । जदि एवं, तो एदिस्से मग्गणाए संजमाणुवादववदेसो ण जुज्जदे ? ण, अंब-णिंबवणं व पाधण्णपदमासेज्ज संजमाणुवादववदेसजुत्तीए । सेसं सुगमं ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ १३९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, ओघम्हि मिच्छादिट्ठिआदिचदुगुणट्ठाणपरूवणाण परूविदत्तादो । एवं संजममग्गणा समत्ता ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १४० ॥

एदं सुत्तं सुगमं खेत्ताणिओगद्दारे उत्तट्ठादो ।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १४१ ॥

सत्थाणत्थेहि चक्खुदंसणिमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि देसूणट्ठ चोद्दसभागा; मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४२ ॥

ओघसासणसम्मादिट्ठिआदिसयलगुणट्ठाणेहिंतो चक्खुदंसणिसासणसम्मादिट्ठिआदिगुणट्ठाणाणं ण को वि भेदो, चक्खुदंसणवदिरित्तसासणादिगुणट्ठाणाणमभावादो । तेण ओघमिदि सुट्ठु जुज्जदे ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४३ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, ओघम्हि वित्थरेण परूविदत्तादो । ण च ओघपरूविदमिच्छादिट्ठिआदिखीणकसायपज्जंतगुणट्ठाणाणि अचक्खुदंसणविरहिदाणि अत्थि, तधाणुवलंभादो । तेणेदेसिं सव्वेसिं पि ओघत्तं जुज्जदे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ १४४ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १४५ ॥

एदं पि सुगमं । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिय-मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १४६ ॥

जेण सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो, विहारपरिणदेहि अदीद-वट्टमाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; वट्टमाणकाले वेउव्वियपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; अदीदे पंच चोद्दसभागा फोसिदा; तेण ओघत्तं जुज्जदे । विहार-वेउव्वियपदेसु देसूणट्ठ-चोद्दसभागपोसणखेत्ताभावा ओघत्तं ण घडदे इदि पच्चवट्ठाणं ण कायव्वं, सुत्ते पदविसेसाभावा । सव्वलोगत्तमेत्तेण सरिसत्तमालोविय ओघत्तुववत्तीए ।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, अल्लीणवट्टमाणत्तादो ।

पंच चत्तारि वे चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १४८ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि किण्ह-णील-काउलेस्सियसासणेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। देवे मोत्तूण णेरइय-अपज्जत्तभवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-तिरिक्खेसु चेव एदस्स खेत्तस्सुवलंभादो तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तमुववण्णं । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि किण्ह-णील-काउलेस्सियसासणेहि जहाकमेण देसूणा पंच चत्तारि वे चोद्दसभागा फोसिदा । णेरइएहिंतो तिरिक्खेसु उप्पज्जमाणसासणे पेक्खिदूण एसा फोसणपरूवणा कदा । देवेहिंतो एइंदिएसु मारणंतियं मेल्लमाणसासणखेत्ते गहिदे पुव्विल्लखेत्तेण सह जहाकमेण बारस-एक्कारस-णव-चोद्दसभागमेत्तखेत्तं किण्ण लब्भदि त्ति उत्ते ण लब्भदि, देवाणमप्पणो आउवचरिमसमओ त्ति पुव्विल्लतेउ-पम्म-सुक्कलेस्साणं विणासाभावा । किण्ह-णील-काउलेस्सियतिरिक्ख-मणुससासणाणमेइंदिएसु मारणंतियं मेल्लमाणाणं सत्त चोद्दसभागा उवरि लब्भंति त्ति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेट्ठिलखेत्तेहि सह बारसेक्कारस-णव-चोद्दसभागमेत्तखेत्तं किण्ण लब्भदे ? ण, तिरिक्ख-मणुसउवसमसम्माइट्ठीणं उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे सुट्ठु संकिलिट्ठाणं पि संजदासंजदाणं व किण्ह-णील-काउलेस्साओ ण होंति त्ति गुरूवदेसंतरजाणावणट्ठं तहाणुवदेसादो । देवेसु तिरिक्खगईए उववण्णेसु उववादस्स एक्कारस-दस-अट्ठ-चोद्दसभागमेत्तखेत्तं किण्ण-लब्भदे ? ण, किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह अच्छिऊण पच्छा ताहि सह उववादाभावादो । ण च लेस्सा उववादसमाणकालभाविणी मग्गणा होइ, आधेयपुव्वुत्तरकालेसु असंतीए आहारत्तविरोहादो । तम्हा सुत्तुत्तमेव होदु, णिरवज्जत्तादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १४९ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि तिलेस्सियसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो । कुदो ? पहाणणेरइयतिरिक्खरासित्तादो । मारणंतिय-उववादपरिणदेहि किण्ह-णीललेस्सियअसंजदसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो, छट्ठ-पंचमपुढवीहिंतो माणुसेसु आगच्छमाणअसंजदसम्मादिट्ठीणं पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभ-पंच-चत्तारिरज्जुआयदखेत्तुवलंभादो । मारणंतिय-उववादपरिणदकाउलेस्सियअसंजदसम्मादिट्ठीहिं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो, काउलेस्साए सह असंखेज्जेसु दीवेसु पढमपुढवीए च उप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठिछुत्तखेत्तग्गहणादो ।

तेउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५० ॥

एदस्स परूवणा खेत्तभंगा, अलीणवट्टमाणत्तादो ।

अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १५१ ॥

सत्थाणपदपरिणदेहि तेउलेस्सियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो 'वा' सद्दट्ठो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ-चोद्दसभागा, मारणंतिय-उववादपरिणदेहि णव-दिवड्ढ-चोद्दसभागा फोसिदा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५२ ॥

एदस्स परूवणा खेत्तभंगा ।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १५३ ॥

सत्थाणपरिणदेहि दोगुणट्ठाणजीवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि देसूण-अट्ठचोद्दसभागा । उववादपरिणदेदि दिवड्ढ-चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । णवरि सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतिय-उववादा णत्थि । सणक्कुमार-माहिंदे तेउलेस्सा अत्थि त्ति उववादस्स देसूण-तिण्णि-चोद्दसभागा किण्ण होंति ? ण, सोहम्मीसाणादो संखेज्जाणि चेव जोयणाणि गंतूण सणक्कुमार-माहिंदकप्पपारंभो होदूण दिवड्ढरज्जुम्हि परिसमत्तीदो । तस्सुवरिमपेरंते तेउलेस्सिया किण्ण होंति ? ण, तस्स हेट्ठिमविमाणे चेव तेउलेस्सासंभवोवदेसा ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५४ ॥

एदस्स परूवणा खेत्तभंगा, वट्टमाणकालसंबंधादो ।

दिवड्ढ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १५५ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदतेउलेस्सियसंजदासंजदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतियपरिणदेहि दिवड्ढ-चोद्दसभागा फोसिदा । उववादो णत्थि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ १५६ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि परूविदत्तादो ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५७ ॥

सुगममेदं सुत्तं, खेत्तम्हि उत्तत्थादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १५८ ॥

सत्थाणपरिणदपम्मलेस्सियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि देसूणट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि देसूणपंच चोद्दसभागा फोसिदा । णवरि सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतियउववादा णत्थि ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, खेत्ताणिओगद्दारे उत्तत्थादो । उत्तमेव किमिदि पुणो उच्चदे ? ण, मंदबुद्धिसिस्सस्स संभालणट्ठं तप्परूवणादो ।

पंच चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १६० ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि पम्मलेस्सियसंजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; मारणंतियपरिणदेहि देसूणा पंच चोद्दसभागा फोसिदा ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ १६१ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, खेत्ताणिओगद्दारे उत्तत्थादो ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १६३ ॥

सत्थाणपरिणदसुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । उववादपरिणदसुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठीहि सासणसम्मादिट्ठीहि य चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो; तिरिक्खमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसु उववादाभावा । पणदालीसलक्खजोयणविक्खंभेण पंचरज्जुआयामेण ट्ठिदखेत्तमाऊरिय सुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिमणुसाणं चेव सुक्कलेस्सियदेवेसुववादुवलंभा । ते तत्थ ण उप्पज्जंति त्ति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कधं णव्वदे ? पंच चोद्दसभागुवदेसाभावादो । उववादपरिणदअसंजदसम्मादिट्ठीहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, तिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसुववादुवलंभा । सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदसुक्कलेस्सियसंजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा फोसिदा, तिरिक्खसंजदासंजदाणं सुक्कलेस्साए सह अच्चुदकप्पे उववादुवलंभा । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतिय-उववादा णत्थि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६४ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, तदो ण किंचि वत्तव्वमत्थि । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६५ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, वट्टमाणादीदकाले अस्सिदूण ओघम्हि परूविदत्तादो ।

अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ १६६ ॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सव्वलोगो फोसिदो । विहार-वेउव्वियपरिणदेहि वट्टमाणकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; असंखेज्जरासीसु तेसिमसंखेज्जदिभागमेत्तो तत्थ तत्थ अभव्वरासि त्ति उवदेसादो । अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि तिण्णि वि काले अस्सिदूण परूविदत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १६८ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । सत्थाणपरिणदेहि खइयअसंजदसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; विहार-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तं कथं लब्भदे ? बद्धाउअमणुसखइयसम्मादिट्ठीसु तिरिक्खेसुप्पज्जमाणेसु असंखेज्जदीवेसु अच्छिय सोधम्मीसाणकप्पेसु उप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठिछुत्तखेत्तं मणुस्सेसुप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठिपोसिदखेत्तं च घेत्तूण लब्भदे । एदम्मि खेत्ते आणिज्जमाणे देसूणजोयणलक्खबाहल्लं रज्जुपदरं उड्ढं सत्तवग्गेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छिंदिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स बाहल्लादो संखेज्जदिभागबाहल्लं जगपदरं होदि । एवं संजादे ओघत्तं कधं जुज्जदे ? ण, उववादविरहिदसेसपदखेत्तेहि तुल्लत्तमवेक्खिय ओघत्तुववत्तीए ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६९ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, संखेज्जा भागा वा, फोसिदा; खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणं तिरिक्खेसु असंभवादो । मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो तीदे काले फोसिदो, पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभेण संखेज्जरज्जुआयदपोसणखेत्तुवलंभादो । पमत्तादिगुणट्ठाणाणं ओघभंगो, विसेसाभावा ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७० ॥

एदं सुत्तं सुगमं, ओघम्हि परूविदत्तादो ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ॥ १७१ ॥

एदस्स सुत्तस्स जेण अदीद-वट्टमाणपरूवणा मूलोघम्हि उत्तचदुगुणट्ठाण-अदीद-वट्टमाणपरूवणाए तुल्ला, तेण ओघत्तं जुज्जदे ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १७२ ॥

वट्टमाणपरूवणाए सव्वपदाणं ओघत्तं होदु णाम, विसेसाभावा । अदीद-परूवणाए वि सत्थाणस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो । विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं य देसूणट्ठचोद्दसभागमेत्तखेत्तुवलंभादो ओघत्तं जुज्जदे । किंतु मारणंतिय-उववादपरिणदाणमोघत्तं णत्थि, ओघम्हि उत्तं अट्ठ-चोद्दसभागखेत्तं मोत्तूण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणमेत्तपोसणखेत्तुवलंभा । कुदो ? मणुसगदिं मोत्तूण अण्णत्थ उवसमसम्मत्तेण सह मरणाणुवलंभा ? ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादे मोत्तूण सेसपदेहि सरिसत्तमत्थि त्ति ओघत्तुववत्तीदो ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥ ॥४५४॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । सत्थाण-विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदउवसमसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि तीदे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, मणुसगदीए चेव मारणंतियदंसणादो। सेसमव्वगुणट्ठाणाणमोघभंगो।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १७४ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १७५ ॥ मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १७६ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि अवगदत्थाणि, ओघम्हि परूविदत्तादो। तदो एदेसिं परूवणा ण कीरदे। एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७७ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगा, समल्लीणवट्टमाणकालत्तादो।

अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १७८ ॥

सत्थाणपरिणदेहि सण्णिमिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहार-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा, मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १७९ ॥

एदेसिमोघादो ण को वि भेदो अत्थि, सण्णिरहिदसासणादीणमभावा।

असण्णीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो ॥ १८० ॥

सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि असण्णीहि तिसु वि अद्धासु सव्वलोगो फोसिदो। विहारपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो तिसु वि कालेसु फोसिदो। वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणे फोसिदो। तीदे पंच चोद्दसभागा त्ति वत्तव्वं। एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १८१ ॥

उववादस्स रज्जुआयामो आहारणिरुद्धे ण लब्भदि, तेण सव्वलोगो पोसणाभावा णोघत्तं जुज्जदे ? ण, सरीरगहिदपढमसमए वट्टमाणजीवेहि आऊरिदसव्वलोगुवलंभादो। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ १८२ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा । तीदकालपरूवणं भण्णमाणे पोसणोघम्हि चदुण्हं गुणट्ठाणाणं जहा उत्तं तधा वत्तव्वं । णवरि सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि उववादपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८३ ॥

एदस्स सुत्तस्स परूवणा अदीद-वट्टमाणेहि ओघतुल्ला । णवरि सजोगकेवली पदर-लोगपूरणपदा णत्थि ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १८४ ॥

कुदो ? कम्मइयकायजोगीसु सव्वेसु अणाहारित्तुवलंभादो । अजोगिअणाहारिपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसा, अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८५ ॥

एदं सुत्तं सुगमं । एवं आहारमग्गणा समत्ता । एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने स्पर्शनानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति चतुर्थो भागः समाप्तः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः

कालानुगमः

(पञ्चमो भागः)

कम्मकलंकुत्तिण्णं विबुद्धसव्वत्थमुद्धुदत्थमणं । णमिऊण उसहसेणं कालणिओगं भणिस्सामो ॥

कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

णामकालो ठवणकालो दव्वकालो भावकालो चेदि कालो चउव्विहो । तत्थ णामकालो णाम कालसद्दो । कधं सद्दो अप्पाणं पडिवज्जादि चे, ण एस दोसो सद्दस्स स-परप्पयासमयपमाणपडिवादीणमुवलंभा । सो एसो इदि अण्णम्हि बुद्धीए अण्णारोवणं ठवणा णाम । सा दुविहा, सब्भावासब्भावभेदेण । अणुहरंतए अणुहरंतस्स अण्णस्स बुद्धीए समारोवा सब्भावट्ठवणा । तव्वदिरित्ता असब्भावट्ठवणा । तत्थ सब्भावट्ठवणा कालो णाम पल्लवियंकुरिय-कुलिद-करलिद-फुलिद-मउलिद-कलकोइलपलाववणखंडुज्जोइयचित्तालिहियवसंतो । असब्भावट्ठवणकालो णाम मणिभेद-गेरुअ-मट्टि-ठिक्करादिसु वसंतो त्ति बुद्धिबलेण ठविदो । दव्वकालो दुविहो, आगमदो णोआगमदो य । आगमदो कालपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो । णोआगमदो दव्वकालो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेदेण तिविहो । तत्थ जाणुगसरीरणोआगमदव्वकालो भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेदेण तिविहो । सो वि बहुसो पुव्वं परूविदो त्ति णेह वुच्चदे । भवियणोआगमदव्वकालो भविस्सकाले कालपाहुडजाणओ जीवो । ववगददोगंधपंचरसट्ठपासपंचवण्णो कुंभारचक्कहेट्ठिमसिलव्व वत्तणालक्खणो लोगागासपमाणो अत्थो तव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो णाम । वुत्तं च पंचत्थिपाहुडे—कालो त्ति य ववएसो सब्भावपरूवओ हवइ णिच्चो । उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई ॥ १ ॥ कालो परिणामभवो परिणामो दव्वकालसंभूओ । दोण्हं एस सहाओ कालो खणभंगुरो णियदो ॥ २ ॥ ण य परिणमइ सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेहिं । विविहपरिणामियाणं हवइ सुहेऊ सयं कालो ॥ ३ ॥ लोयाया-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया दु एक्केक्का । रयणाणं रासी इव ते कालाणू मुणेयव्वा ॥ ४ ॥ जीवसमासाए वि उत्तं— छप्पंचणवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं । आणाए अहिगमेण य सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥ ५ ॥ तहा आयारंगे वि वुत्तं— पंचत्थियाय छज्जीवणिकाए कालदव्वमण्णे य । आणागेज्झे भावे आणाविचएण विचिणादि ॥ ६ ॥ तह गिद्धपिच्छाइरियप्पयासिदतच्चत्थसुत्ते वि 'वर्त्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य' इदि दव्वकालो परूविदो । जीवट्ठाणादिसु दव्वकालो ण वुत्तो त्ति तस्साभावो ण वोत्तुं सक्किज्जदे, एत्थ छदव्वपदुप्पायणे अहियाराभावा । तम्हा दव्वकालो अत्थि त्ति घेत्तव्वो । जीवाजीवादिअट्ठभंगदव्वं वा णोआगमदव्वकालो । भावकालो दुविहो, आगमणोआगमभेदा । कालपाहुडजाणओ उवजुत्तो जीवो आगमभावकालो । दव्वकालजणिदपरिणामो णोआगमभावकालो भण्णदि । पोग्गलादिपरिणामस्स कथं कालववएसो ? ण एस दोसो, कज्जे कारणोवयारणिबंधणत्तादो । वुत्तं च पंचत्थिपाहुडे ववहारकालस्स अत्थित्तं । तं जहा— सब्भावसहावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च । परियट्टणसंभूओ कालो णियमेण पण्णत्तो ॥ ७ ॥ समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती । मास उडु अयण संवच्छरो त्ति कालो परायत्तो ॥ ८ ॥ णत्थि चिरं वा खिप्पं वुत्तारहिदं तु सा वि खलु वुत्ता । पोग्गलपव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्च भवो ॥ ९ ॥ इदि । एत्थ केण कालेण पयदं ? णोआगमदो भावकालेण । तस्स समय-आवलिय-खण-लव-मुहुत्त-दिवस-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छर-जुग-पुव्व-पव्व-पलिदोवम-सागरोवमादिरूवत्तादो । कथमेदस्स कालववएसो ? ण, कल्यन्ते संख्यायन्ते कर्म-भव-कायायुस्थितयोऽनेनेति कालशब्दव्युत्पत्तेः । कालः समय अद्धा इत्येकोऽर्थः । समयादीणमत्थो वुच्चदे— अणोरण्वंतरव्यतिक्रमकालः समयः । चोद्दसरज्जुआगासपदेसकमणमेत्तकालेण जो चोद्दसरज्जुकमणक्खमो परमाणू तस्स एगपरमाणुवक्कमणकालो समओ णाम । असंखेज्जसमए घेत्तूण एया आवलिया होदि । तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाहि एगो उस्सासणिस्सासो होदि । सत्तहि उस्सासेहि एगो थोवसण्णिदो कालो होदि । सत्तहि थोवेहि लवो णाम कालो होदि । साद्धअट्ठत्तीसलवेहि णाली णाम कालो होदि । वेहि णालियाहि मुहुत्तो होदि । उच्छ्वासानां सहस्राणि त्रीणि सप्त शतानि च । त्रिसप्ततिः पुनस्तेषां मुहूर्तो ह्येक इष्यते (३७७३) ॥ १० ॥ निमेषाणां सहस्राणि पंच भूयः शतं तथा । दश चैव निमेषाः स्युर्मुहूर्ते गणिता बुधैः (५११०) ॥ ११ ॥ त्रिंशन्मुहूर्तो दिवसः । मुहूर्तानां नामानि— रौद्रः श्वेतश्च मैत्रश्च ततः सारभटोऽपि च । दैत्यो वैरोचनश्चान्यो वैश्वदेवोऽभिजित्तथा ॥ १२ ॥ रोहणो बलनामा च विजयो नैर्ऋतोऽपि च । वरुणश्चार्यमा च स्युर्भाग्यः पंचदशो दिने (१५) ॥ १३ ॥ सावित्रो धुर्यसंज्ञश्च दात्रको यम एव च । वायुर्हुताशनो भानुर्वैजयन्तोऽष्टमो निशि ॥ १४ ॥ सिद्धार्थः सिद्धसेनश्च विक्षोभो योग्य एव च । पुष्पदन्तः सुगन्धर्वो मुहूर्तोऽन्योऽरुणो मतः (१५) ॥ १५ ॥ समयो रात्रिदिनयोर्मुहूर्ताश्च समाः स्मृताः । षण्मुहूर्ता दिनं यान्ति कदाचिच्च पुनर्निशम् ॥ १६ ॥ पंचदशदिवसाः पक्षः । दिवसानां नामानि— नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् । देवताश्चन्द्रसूर्येन्द्रा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकाशो धर्म एव च ॥ १७ ॥ द्वौ पक्षौ मासः । ते च श्रावणादयः प्रसिद्धाः । द्वादशमासं वर्षम् । पंचभिर्वर्षैर्युगः । एवमुवरि वि वत्तव्वं जाव कप्पो त्ति । एसो कालो णाम । कस्स इमो कालो ? जीव-पोग्गलाणं । कुदो ? तप्परिणामत्तादो । अधवा इमो सुज्जमंडलस्स परियट्टणलक्खणस्स, तदुदयत्थमणेहिंतो दिवसादीणमुप्पत्तीए । केण कालो कीरदि ? परमट्ठकालेण । कत्थ कालो ? माणुसखेत्तेक्कसुज्जमंडले तियालगोयराणंतपज्जाएहि आवूरिदे । जदि माणुसखेत्तेक्कसुज्जमंडले कालो ट्ठिदो होदि, कधं तेण सव्वपोग्गलाणमणंतगुणेण पदीवो व्व सपरप्पयासकारणेण जवरासि व्व समयभावेणावट्ठिदेण छद्दव्वपरिणामा पयासिज्जंते ? ण एस दोसो, मिणिज्जमाणदव्वेहिंतो पुधभूदेण मागहपत्थेणेव मवणविरोहाभावा । ण चाणवत्था, पईवेण विउच्चारा । देवलोगे कालाभावे तत्थ कधं कालववहारो ? ण, इहत्थेणेव कालेण तेसिं ववहारादो । जदि जीव-पोग्गलपरिणामो कालो होदि, तो सव्वेसु जीव-पोग्गलेसु संठिएण कालेण होदव्वं; तदो माणुसखेत्तेक्कसुज्जमंडलट्ठिदो कालो त्ति ण घडदे ? ण एस दोसो, णिरवज्जत्तादो । किंतु ण तहा लोगे समए वा संववहारो अत्थि; अणाइणिहणरूवेण सुज्जमंडलकिरियापरिणामेसु चेव कालसंववहारो पयट्टो । तम्हा एदस्सेव गहणं कायव्वं । केवचिरं कालो ? अणादिओ अपज्जवसिदो । कालस्स कालो किं तत्तो पुधभूदो अणण्णो वा ? ण ताव पुधभूदो अत्थि, अणवट्ठाणप्पसंगा । णाणण्णो वि, कालस्स कालाभावप्पसंगा । तदो कालस्स कालेण णिद्देसो ण घडदे ? ण एस दोसो, ण ताव पुधपक्खुत्तदोसो संभवदि, अणब्भुवगमा । णाणण्णपक्खदोसो वि, इट्ठत्तादो । ण च कालस्स कालेण णिद्देसो णत्थि, सुज्जमंडलंतरट्ठियकालेण तत्तो पुधभूदसुज्जमंडलट्ठियकालणिद्देसादो । अधवा, जधा घडस्स भावो, सिलावुत्तयस्स सरीरमिच्चादिसु एक्कम्हि वि भेदववहारो, तहा एत्थ वि एक्कम्हि काले भेदेण ववहारो जुज्जदे । कदिविधो कालो ? सामण्णेण एयविहो । तीदो अणागदो वट्टमाणो त्ति तिविहो । अधवा गुणट्ठिदिकालो भवट्ठिदिकालो कम्मट्ठिदिकालो कायट्ठिदिकालो उववादकालो भावट्ठिदिकालो त्ति छव्विहो । अहवा अणेयविहो परिणामेहिंतो पुधभूदकालाभावा, परिणामाणं च आणंतिओवलंभा । जहत्थमवबोहो अणुगमो । कालस्स अणुगमो कालाणुगमो, तेण कालाणुगमेण । णिद्देसो कहणं पयासणं अहिव्वत्तिजणणमिदि एयट्ठो । सो च दुविहो, ओघेण आदेसेण चेदि । तत्थ ओघणिद्देसो दव्वट्ठियणयपदुप्पायणो, संगहिदत्थादो । आदेसणिद्देसो पज्जवट्ठियणयपदुप्पायणो, अत्थभेदावलंबणादो । किमट्ठं दुविहो णिद्देसो उसहसेणादिगणहरदेवेहि कीरदे ? ण एस दोसो, उहयणयमवलंबिय ट्ठिदसत्ताणुग्गहट्ठं तथोवदेसादो ।

ओघेण मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो होदि' त्ति जाणावणट्ठं ओघणिद्देसो कदो । सेसगुणट्ठाणपडिसेहफलो मिच्छाइट्ठिणिद्देसो । कालादो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कालेण णिहालिज्जमाणे केवचिरं होंति त्ति पुच्छा जिणपण्णत्तत्थमिदं सुत्तमिदि पदुप्पायणफला। बहुसु णाणाजीवमिदि एगवयणणिद्देसो जादिणिबंधणो त्ति ण दोसयरो। सव्वद्धा इदि कालविसिट्ठबहुजीवणिद्देसो। कुदो ? सव्वा अद्धा कालो जेसिं जीवाणमिदि व-समासवसेण बज्झट्ठप्पवुत्तीए। अहवा, सव्वद्धा इदि कालणिद्देसो। कधं ? मिच्छादिट्ठीणं कालत्तणण्णपरिणामिणो परिणामेहिंतो कथंचि अभेदमासेज्ज मिच्छादिट्ठीणं कालत्ताविरोहा। सव्वकालं णाणाजीवे पडुच्च मिच्छादिट्ठीणं वोच्छेदो णत्थि त्ति भणिदं होदि।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो णिद्देसो। जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३ ॥

अभवसिद्धियजीवमिच्छत्तं पडुच्च अणादिअपज्जवसिदमिदि भणिदं, अभव्वमिच्छत्तस्स आदिमज्झंताभावादो। भवसिद्धियमिच्छत्तकालो अणादिओ सपज्जवसिदो। जहा बद्धणकुमारस्स मिच्छत्तकालो। अण्णेगो भवसिद्धियमिच्छत्तकालो सादिओ सपज्जवसिदो। जहा कण्हादिमिच्छत्तकालो। तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो मिच्छत्तकालो, तस्स इमो णिद्देसो। सो दुविहो, जहण्णो उक्कस्सो चेदि। तत्थ जहण्णकालपरूवणाजाणावणट्ठं जहण्णेणेत्ति वुत्तं। मुहुत्तस्संतो अंतोमुहुत्तं, एसो मिच्छत्तजहण्णकालणिद्देसो। तं जहा— सम्मामिच्छादिट्ठी वा असंजदसम्मादिट्ठी वा संजदासंजदो वा पमत्तसंजदो वा परिणामपच्चएण मिच्छत्तं गदो। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तं अच्छिय पुणरवि सम्मामिच्छत्तं वा असंजमेण सह सम्मत्तं वा संजमासंजमं वा अप्पमत्तभावेण संजमं वा पडिवण्णस्स सव्वजहण्णो मिच्छत्तकालो होदि। सासणसम्मादिट्ठी मिच्छत्तं किण्ण पडिवज्जाविदो ? ण, सासणसम्मत्तपच्छायदमिच्छादिट्ठिस्स अइतिव्वसंकिलिट्ठस्स मिच्छत्तत्तम्हा विणडिअस्स सव्वजहण्णकालेण गुणंतरसंकमणाभावा। उक्कस्सकालपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ४ ॥

अद्धपोग्गलपरियट्टं णाम किं ? वुच्चदे—अणाइसंसारे हिंडंताणं जीवाणं दव्वपरियट्टणं खेत्तपरियट्टणं कालपरियट्टणं भवपरियट्टणं भावपरियट्टणमिदि पंच परियट्टणाणि होंति। जं तं दव्वपरियट्टणं तं दुविहं, णोकम्मपोग्गलपरियट्टणं कम्मपोग्गलपरियट्टणं चेदि। तत्थ णोकम्मपोग्गलपरियट्टं वत्तइस्सामो। तं जहा—जदि वि पोग्गलाणं गमणागमणं पडि विरोहो णत्थि, तो वि बुद्धीए आदिं कादूण णोकम्मपोग्गलपरियट्टे भण्णमाणे अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे सव्वपोग्गलरासिम्हि एक्को वि परमाणू ण भुत्तो त्ति सव्वपोग्गलाणमगहिंदसण्णा पोग्गलपरियट्टपढमसमए कादव्वा। अदीदकाले वि सव्वजीवेहि सव्वपोग्गलाणमणंतिमभागो सव्वजीवरासीदो अणंतगुणो, सव्वजीवरासिउवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणो पोग्गलपुंजो भुत्तुज्झिदो। कुदो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणेण सिद्धाणमणंतिमभागेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणिदादीदकालमेत्तसव्वजीवरासिसमाणभुत्तुज्झिदपोग्गलपरिमाणोवलंभा । सव्वे वि पोग्गला खलु एगे भुत्तुज्झिदा हु जीवेण । असइं अणंतखुत्तो पोग्गलपरियट्टसंसारे ॥ १८ ॥ एदीए सुत्तगाहाए सह विरोहो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण होदि, सव्वेगदेसम्हि गाहत्थसव्वसद्दप्पवुत्तीदो । ण च सव्वम्हि पयट्टमाणस्स सद्दस्स एगदेसपउत्ती असिद्धा, गामो दद्धो, पदो दद्धो, इच्चादिसु गाम-पदाणमेगदेसपयट्टसद्दुवलंभादो । तेण पोग्गलपरियट्टादिसमए अगहिदसण्णिदे चेव पोग्गले तिण्हमेक्कदरसरीरणिप्पायणट्ठमभवसिद्धिएहि अणंतगुणे सिद्धाणमणंतिमभागमेत्ते गेण्हदि । ते च गेण्हंतो अप्पणो ओगाढखेत्तट्ठिदे चेय गेण्हदि, णो पुध खेत्तट्ठिदे । वुत्तं च—एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं । बंधइ जहुत्तहेदू सादियमध णादियं चावि ॥ १९ ॥ विदियसमए वि अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे अगहिदे चेव गेण्हदि । एवमुक्कस्सेण अणंतकालमगहिदे चेव गेण्हदि । जहण्णेण दो-समएसु चेव अगहिदे गेण्हदि, पढमसमयगहिदपोग्गलाणं विदियसमए णिज्जरिय अकम्मभावं गदाणं पुणो तदियसमए तम्हि चेव जीवे णोकम्मपज्जाएण परिणदाणमुवलंभादो । तं कथं णव्वदे ? णोकम्मस्स आबाधाए विणा उदयादिणिसेगुवदेसा । एसो पोग्गलपरियट्टकालो तिविहो होदि, अगहिदगहणद्धा गहिदगहणद्धा मिस्सयगहणद्धा चेदि । अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे जं अगहिदपोग्गलगहणकालो तं अगहिदगहणद्धा णाम । अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे गहिदपोग्गलाणं चेय गहणकालो गहिदगहणद्धा णाम । अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे गहिदागहिदपोग्गलाणमक्कमेण गहणकालो मिस्सयगहणद्धा णाम । एवं तीहि पयारेहि पोग्गलपरियट्टकालो जीवस्स गच्छदि । एत्थ तिण्हमद्धाणं परियट्टणकमो वुच्चदे । तं जहा—पोग्गलपरियट्टादिसमयप्पहुडि अणंतकालो अगहिदगहणद्धा भवदि, तत्थ सेसदोपयाराभावा । पुणो अगहिदगहणद्धावसाणे सइं मिस्सयगहणद्धा होदि । पुणो वि विदियवारे अगहिदगहद्धाए अणंतकालं गंतूण सइं मिस्सयद्धा होदि । एवं तदियवारे वि अगहिदगहणद्धाए अणंतकालं गमिय सइं मिस्सयद्धाए परिणमदि । एदेण पयारेण मिस्सयद्धाओ वि अणंताओ जादाओ । पुणो णंतकालं अगहिदगहणद्धाए गमिय सइं गहिदगहणद्धाए परिणमदि । एदेण कमेण अणंतो कालो गच्छदि जाव गहिदगहणद्धसलागाओ वि अणंतत्तं पत्ताओ त्ति । पुणो उवरि अणंतं कालं मिस्सयगहणद्धाए गमेदूण सइं अगहिदगहणद्धाए परिणमदि । एवमेदाहि दोहि अद्धाहि अणंतकालं गमिय सइं गहिदगहणद्धा भवदि । एवमेदेण पयारेण जीवस्स कालो गच्छदि जाव एत्थतणगहिदगहणद्धासलागाओ अणंतत्तं पत्ताओ त्ति । एवं दो परियट्टणवारा गदा । पुणो णंतं कालं मिस्सयद्धाए गमिय सइं गहिदगहणद्धाए परिणमदि । एदेण पयारेण गहिदगहणद्धासलागाओ अणंतत्तं पत्ताओ । तदो सइमगहिदगहणद्धाए परिणमदि । एदेण वि पयारेण अणंतो कालो गच्छदि जाव एत्थतणअगहिदगहणद्धासलागाओ अणंतत्तं पत्ताओ त्ति । एसो तदियो परियट्टो । संपदि चउत्थपरियट्टं भणिस्सामो । तं जहा—अणंतकालं गहिदगहणद्धाए गमेदूण सइं मिस्सयगहणद्धाए परिणमदि । एवमेदाहि दोहि अद्धाहि अणंतकालं गमेदि जाव एत्थतणमिस्सयगहणद्धासलागाओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणंतत्तं पत्ताओ त्ति । तदो सइमगहिदगहणद्धाए परिणमदि । पुणो उवरि एदेण चेव कमेण कालो गच्छदि जाव पोग्गलपरियट्टचरिमसमओ त्ति । पोग्गलपरियट्टआदिमसमए जे जीवेण णोकम्मसरूवेण गहिदा पोग्गला ते विदियादिसमएसु अकम्मभावं गंतूण जम्हि काले ते चेव सुद्धा आगच्छंति सो कालो पोग्गलपरियट्टेत्ति भण्णदि । एत्थ अप्पाबहुगं । सव्वत्थोवा अगहिदगहणद्धा । मिस्सयगहणद्धा अणंतगुणाओ । जहण्णिया गहिदगहणद्धा अणंतगुणा । जहण्णओ पोग्गलपरियट्टो विसेसाहिओ ।

०	+	+	१
+	०	१	+
१	१	०	०

उक्कस्सिया गहिदगहणद्धा अणंतगुणा । उक्कस्सओ पोग्गलपरियट्टो विसेसाहिओ । किं कारणमगहिदगहणद्धा थोवा जादा ? वुच्चदे— जे णोकम्मपज्जाएण परिणमिय अकम्मभावं गंतूण तेण अकम्मभावेण जे थोवकालमच्छिया ते बहुवारमागच्छंति, अविणट्ठचउव्विहपाओग्गादो । जे पुण अप्पिदपोग्गलपरियट्टब्भंतरे ण गहिदा ते चिरेण आगच्छंति, अकम्मभावं गंतूण तत्थ चिरकालावट्ठाणेण विणट्ठचउव्विहपाओग्गत्तादो । भणिदं च— सुहुमट्ठिदिसंजुत्तं आसण्णं कम्मणिज्जरामुक्कं । पाएण एदि गहणं दव्वमणिद्दिट्ठसंठाणं ॥ २० ॥ एदेण कारणेण अगहिदगहणद्धा थोवा जादा । एसो णोकम्मपोग्गलपरियट्टो णाम । जधा णोकम्मपोग्गलपरियट्टो वुत्तो, तधा चेव कम्मपोग्गलपरियट्टो वत्तव्वो । णवरि विसेसो णोकम्मपोग्गला आहारवग्गणादो आगच्छंति । कम्मपोग्गला पुण कम्मइयवग्गणादो । णोकम्मपोग्गलाणं तदियसमए चेव मिस्सयगहणद्धा होदि । कम्मपोग्गलाणं पुण तिसमयाहियावलियाए । कुदो ? बंधावलियादीदाणं समयाहियावलियाए ओकड्डणवसेण पत्तोदयाणं दुसमयाहियावलियाए अकम्मभावं गदाणं कम्मपोग्गलाणं तिसमयाहियावलियाए कम्मपज्जाएण परिणमिय अण्णपोग्गलेहि सह जीवे बंधं गदाणमुवलंभा । णवरि दोसु वि पोग्गलपरियट्टेसु सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएण पढमसमयतब्भवत्थेण पढमसमयआहारएण जहण्णुववादजोगेण गहिदकम्म-णोकम्मदव्वं घेत्तूण आदी कायव्वा । एत्थ उवउज्जंती गाहा— गहणसमयम्हि जीवो उप्पादेदि हु गुणंसपच्चयदो । जीवेहि अणंतगुणं कम्म पदेसेसु सव्वेसु ॥ २१ ॥ एवं दव्वपोग्गलपरियट्टणं गदं । खेत्त-काल-भव-भावपोग्गलपरियट्टा भाणिदूण गेण्हिदव्वा । तेसिं गाहाओ— सव्वे वि पोग्गला खलु एगे भुत्तुज्झिदा हु जीवेण । असइं अणंतखुत्तो पोग्गलपरियट्टसंसारे ॥ २२ ॥ सव्वम्हि लोगखेत्ते कमसो तण्णत्थि जण्ण ओच्छुण्णं । ओगाहणओ बहुसो हिंडंते खेत्तसंसारे ॥ २३ ॥ ओसप्पिण्णि-उस्सप्पिणि-समयावलिया णिरंतरा सव्वा । जादो मुदो य बहुसो हिंडंतो कालसंसारे ॥ २४ ॥ णिरआउआ जहण्णा जाव दु उवरिल्लओ दु गेवज्जो । जीवो मिच्छत्तवसा भवट्ठिदिं हिंडिदो बहुसो ॥ २५ ॥ सव्वासिं पगदीणं अणुभाग-पदेसबंधठाणाणि । जीवो मिच्छत्तवसा परिभमिदो भावसंसारे ॥ २६ ॥ परियट्टिदाणि बहुसो पंच वि परियट्टणाणि जीवेण । जिणवयणमलभमाणेण दीदकाले अणंताणि ॥ २७ ॥ जह गेण्हइ परियट्टं पुरिसो अच्छादणस्स विविहस्स । तह पोग्गलपरियट्टे गेण्हइ जीवो सरीराणि ॥ २८ ॥ अदीदकाले एगस्स जीवस्स सव्वत्थोवा भावपरियट्टवारा । भवपरियट्टवारा अणंतगुणा । कालपरियट्टवारा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणंतगुणा। खेत्तपरियट्टवारा अणंतगुणा। पोग्गलपरियट्टवारा अणंतगुणा। सव्वत्थोवो पोग्गलपरियट्टकालो। खेत्तपरियट्टकालो अणंतगुणो। कालपरियट्टकालो अणंतगुणो। भवपरियट्टकालो अणंतगुणो। भावपरियट्टकालो अणंतगुणो। एदेसु परियट्टेसु पोग्गलपरियट्टेण पयदं। कम्म-णोकम्मभेदेण दुविहो पोग्गलपरियट्टो, तत्थ केण पयदं? दोहि वि पयदं, दोण्हं कालभेदाभावा। सो वि कुदो अवगम्मदे? पोग्गलपरियट्टप्पाबहुगे दो वि पोग्गलपरियट्टे एकट्ठं कादूण कालप्पाबहुगविधाणादो। एदस्स पोग्गलपरियट्टकालस्स अद्धं देसूणं सादि-सणिहणमिच्छत्तस्स कालो होदि। तं कधं? एगो अणादियमिच्छादिट्ठी अपरित्तसंसारो अधापवत्तकरणं अपुव्वकरणं अणियट्टिकरणमिदि एदाणि तिण्णि करणाणि कादूण सम्मत्तंगहिदपढमसमए चेव सम्मत्तगुणेण पुव्विल्लो अपरित्तो संसारो ओहट्टिदूण परित्तो पोग्गलपरिवट्टस्स अद्धमेत्तो होदूण उक्कस्सेण चिट्ठदि। जहण्णेण अंतोमुहुत्तमेत्तो। एत्थ पुण जहण्णकालेण णत्थि कज्जं, उक्कस्सेण अधियारादो। सम्मत्तंगहिदपढमसमए णट्ठो मिच्छत्तपज्जाओ। कधमुप्पत्ति-विणासाणमेक्को समओ? ण, एक्कम्हि समए पिंडागारेण विणट्ठस्स घडाकारेणुप्पण्णस्स मट्टियदव्वस्सुवलंभा। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमुवसमसम्मत्तद्धाए अच्छिदूण मिच्छत्तं गदो। तदो मिच्छत्तेण सादिओ जादो, विणट्ठो सम्मत्तपज्जाएण। तदो मिच्छत्तपज्जाएण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण अपच्छिमे भवग्गहणे मणुस्सेसु उववण्णो (१)। पुणो अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे तिण्णि वि करणाणि कादूण पढमसम्मत्तं पडिवण्णो (२)। तदो वेदगसम्मादिट्ठी जादो (३) अंतोमुहुत्तेण अणंताणुबंधिं विसंजोएदूण (४) तदो दंसणमोहणीयं खवेदूण (५) पुणो अप्पमत्तो जादो (६) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (७) खवगसेढिमारुहमाणो अप्पमत्तसंजदट्ठाणे अधापवत्तविसोहीए विसुज्झिदूण (८) अपुव्वकरणखवगो (९) अणियट्टिखवगो (१०) सुहुमखवगो (११) खीणकसाओ (१२) सजोगी (१३) अजोगी होदूण सिद्धो जादो (१४)। एवमेदेहि चोद्दसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सादिसपज्जवसिदमिच्छत्तकालो होदि। मिच्छत्तं णाम पज्जाओ। सो च उप्पाद-विणासलक्खणो, ट्ठिदीए अभावादो। अह जइ तस्स ट्ठिदी वि इच्छिज्जदि, तो मिच्छत्तस्स दव्वत्तं पसज्जदे; 'उप्पाद-ट्ठिदि-भंगा हंदि दवियलक्खणं' इच्चारिसादो त्ति? ण एस दोसो, जमक्कमेण तिलक्खणं तं दव्वं; जं पुण कमेण उप्पाद-ट्ठिदि-भंगिल्लं सो पज्जाओ त्ति जिणोवदेसादो। जदि एवं, तो पुढवि-आउ-तेउ-वाऊणं पि पज्जायत्तं पसज्जदि त्ति वुत्ते, होदु तेसिं पज्जायत्तं, इट्ठत्तादो। तेसु दव्ववहारो वि लोए दिस्सदीदि चे ण, तस्स दुणयणिबंधणणेगमणयणिबंधणत्तादो। सुद्धे दव्वट्ठियणए अवलंबिदे छच्चेय दव्वाणि; असुद्धे दव्वट्ठियणए अवलंबिदे पुढविआदीणि अणेयाणि दव्वाणि होंति त्ति वंजणपज्जायस्स दव्वत्तब्भुवगमादो। सुद्धे पज्जायणए अप्पिदे पज्जायस्स उप्पाद-विणासा दो चेव लक्खणाणि। असुद्धे अस्सिदे कमेण तिण्णि वि लक्खणाणि, उप्पण्णस्स पज्जयस्स वज्जसिलाथंभादिसु वंजणसण्णिदस्स अवट्ठाणुवलंभादो। मिच्छत्तं पि वंजणपज्जाओ, तम्हा एदस्स उप्पाद-ट्ठिदि-भंगा कमेण तिण्णि वि अविरुद्धा त्ति घेत्तव्वं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उप्पज्जंति वियंति य भावा णियमेण पज्जवणयस्स। दव्वट्ठियस्स सव्वं सदा अणुप्पण्णमविणट्ठं॥ २९ ॥ इदि एसा वि गाहा ण विरुज्झदे, सुद्धदव्व-पज्जवट्ठियणए अवलंबिय ट्ठिदत्तादो । 'भविया सिद्धी जेसिं जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा' इदि वयणादो सव्वेसिं भव्वजीवाणं वोच्छेदेण होदव्वं, अण्णहा तल्लक्खणविरोहादो । ण च सव्वओ ण णिट्ठादि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो त्ति ? ण एस दोसो, तस्साणंतियादो । सो अणंतो वुच्चदि, जो संखेज्जासंखेज्जरासिव्वए संते अणंतेण वि कालेण ण णिट्ठदि । वुत्तं च— संते वए ण णिट्ठादि कालेणाणंतएण वि । जो रासी सो अणंतो त्ति विणिद्दिट्ठो महेसिणा ॥ ३० ॥ जदि एवं, तो अद्धपोग्गलपरियट्टादिरासीणं सव्वयाणमणंतत्तं फिट्टदित्ति वुत्ते फिट्टदु णाम, को दोसो ? तेसु अणंतववहारो सुत्ताइरियवक्खाणपसिद्धो उवलब्भदे चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । तं जहा— पच्चक्खेण पमाणेण उवलद्धो जो थंभो सो जहा उवयारेण पच्चक्खो त्ति लोए वुच्चदे, तहा ओहिणाणविसयमुल्लंघिय ट्ठिदरासीओ केवलस्स अणंतस्स विसओ त्ति उवयारेण ताओ अणंताओ त्ति वुच्चंति । तम्हा तेसु सुत्ताइरियवक्खाणपसिद्धेण अणंतववहारेण णेदं वक्खाणं विरुज्झदे । अहवा वए संते वि अक्खयो को वि रासी अत्थि, सव्वस्स सपडिवक्खस्सेवुवलंभादो । एसो वि भव्वरासी अणंतो, तम्हा संते वि वए अणंतेण वि कालेण ण णिट्ठिस्सइ त्ति सिद्धं ।

सासणसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ ५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अवयवत्थो पुव्वं परूविदो त्ति णेह वुच्चदे, पुणरुत्तभया । एत्थ एगसमयनिरूवणा कीरदे । तं जधा— दो वा तिण्णि वा एगुत्तरवड्ढीए जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा उवसमसम्मादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति सासणत्तं पडिवण्णा एगसमयं दिट्ठा । विदियसमये सव्वे वि मिच्छत्तं गदा, तिसु वि लोएसु सासणाणमभावो जादो त्ति लद्धो एगसमओ ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६ ॥

दोण्णि वा तिण्णि वा एवं एगुत्तरवड्ढीए जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा उवसमसम्मादिट्ठिणो एगसमयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण छ आवलियाओ उवसमसम्मत्तद्धाए अत्थि त्ति सासणत्तं पडिवण्णा । जाव ते मिच्छत्तं ण गच्छंति ताव अण्णे वि अण्णे वि उवसमसम्मादिट्ठिणो सासणत्तं पडिवज्जंति । एवं गिम्हकालरुक्खछाहीव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं कालं जीवेहि असुण्णं होदूण सासणगुणट्ठाणं लब्भदि । केवडिओ सो पुण कालो ? सगरासीदो असंखेज्जगुणो । तं जहा— सासणगुणस्स णिरंतरुवक्कमणकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो । सांतरुवक्कमणवारा पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । एवं होंति त्ति कट्टु

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणुक्कस्सकालुप्पत्तिविहाणं वुच्चदे । तं जधा—एगस्स सासणगुणट्ठाणुवक्कमणवारस्स जदि मज्झिमपडिवत्तीए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो सासणगुणकालो लब्भदि, संखेज्जावलियमेत्तो वा, आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तो वा, तो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउवक्कमणवाराणं केत्तियं कालं लभामो त्ति इच्छागुणिदफलम्हि पमाणेणोवट्टिदे सगरासीदो असंखेज्जगुणो सासणकालो होदि त्ति घेत्तव्वं । जदि वि एत्थ सुत्तं णत्थि, तो वि एदं वक्खाणं सुत्तं व सद्दहेदव्वं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ ७ ॥

एदस्सत्थो—एक्को उवसमसम्मादिट्ठी उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति सासणं गदो । जदि उवसमसम्मत्तद्धा महंती होदि, तो को दोसो ? ण, सासणगुणद्धाए बहुत्तप्पसंगा । जेत्तियाए उवसमसम्मत्तद्धाए सेसाए जीवो सासणं पडिवज्जदि, तेत्तिओ चेव सासणगुणकालो होदि त्ति आइरियपरंपरागदुवदेसा । वुत्तं च—उवसमसम्मत्तद्धा जत्तियमेत्ता हु होइ अवसिट्ठा । पडिवज्जंता साणं तत्तियमेत्ता य तस्सद्धा ॥ ३१ ॥ एगसमयं सासणगुणेण सह ट्ठिदो, विदियसमए मिच्छत्तं गदो । एवं सासणगुणस्स लद्धो एगसमओ ।

उक्कस्सेण छ आवलिआओ ॥ ८ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—एक्को उवसमसम्माइट्ठी उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो । तत्थ सासणगुणम्हि छ आवलियाओ अच्छिदूण मिच्छत्तं गदो । कुदो ? साहियासु छसु आवलियासु सेसासु सासणगुणपडिवज्जणाभावा । वुत्तं च—उवसमसम्मत्तद्धा जइ छावलिया हवेज्ज अवसिट्ठा । तो सासणं पवज्जइ णो हेट्ठुकट्ठकालेसु ॥ ३२ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९ ॥

एदस्स अत्थो—अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठी वेदगसम्मत्तसहिदअसंजद-संजदासंजद-पमत्तसंजदा सत्तट्ठ जणा वा, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता वा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदा । तत्थ सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिदूण मिच्छत्तं वा असंजमेण सह सम्मत्तं वा पडिवण्णा । णट्ठं सम्मामिच्छत्तं । एवं सम्मामिच्छत्तस्स अंतोमुहुत्तकालो सिद्धो । अप्पमत्तसंजदो किमिदि सम्मामिच्छत्तं ण णीदो ? ण, तस्स संकिलेस-विसोहीहि सह पमत्तापुव्वगुणे मोत्तूण गुणंतरगमणाभावा । मदस्स वि असंजदसम्मादिट्ठिविदिरित्तगुणंतरगमणाभावा । पच्छा सम्मामिच्छादिट्ठी संजमं संजमासंजमं वा किण्ण णीदो ? ण, तस्स मिच्छत्त-सम्मत्तसहिदासंजदगुणे मोत्तूण गुणंतरगमणाभावा । किं कारणं ? सहावदो चेय । ण हि सहाओ परपज्जणिओगारुहो, विरोहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १० ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—पुव्वुत्तजीवा सम्मामिच्छत्तं गंतूण तत्थंतोमुहुत्तमच्छिय जाव ते मिच्छत्तं वा सासंजमसम्मत्तं वा ण पडिवज्जंति, ताव अण्णे वि अण्णे वि पुव्वुत्तजीवा सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जावेदव्वा जाव सव्वुक्कस्सो णाणाजीवावेक्खो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालो जादो त्ति। सो पुण सगरासीदो असंखेज्जगुणो। एदस्स वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। तदो णियमेण अंतरं होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—एक्को मिच्छादिट्ठी विसुज्झमाणो सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो। सव्वलहुमंतोमुहुत्तकालमच्छिदूण विसुज्झमाणो चेव सासंजमं सम्मत्तं पडिवण्णो। संकिलेसं पूरिय मिच्छत्तं किण्ण गदो ? ण, विसोधिअद्धं संपुण्णमच्छिय संकिलेसं पूरिय मिच्छत्तं गच्छमाणसम्मामिच्छत्तकालस्स बहुत्तप्पसंगा। एक्किस्से विसोहीए कालादो संकिलेसविसोहीणं दोण्हं पि कालो दोण्हं विच्चाले ट्ठिदपडिभग्गकालसहिदो णिच्छएण संखेज्जगुणो त्ति अहिप्पाएण मिच्छत्तं ण णीदो। अधवा वेदगसम्मादिट्ठी संकिलिस्समाणगो सम्मामिच्छत्तं गदो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तकालमच्छिदूण अविणट्ठसंकिलेसो मिच्छत्तं गदो। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं दोहि पयारेहि सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णकालपरूवणा गदा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२ ॥

तं कथं ? एक्को विसुज्झमाणो मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छत्तं गदो, सव्वुक्कस्सअंतोमुहुत्तमच्छिदूण संकिलिट्ठो होदूण मिच्छत्तं गदो। पुव्विल्लजहण्णकालादो एसो उक्कस्सकालो संखेज्जगुणो, सव्वुक्कस्सतिकालसमूहत्तादो। अधवा वेदगसम्मादिट्ठी संकिलिस्समाणगो सम्मामिच्छत्तं गदो। सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तकालमच्छिदूण असंजदसम्मादिट्ठी जादो। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १३ ॥

अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु असंजदसम्मादिट्ठिवोच्छेदो णत्थि। कुदो ? सहावदो। एसो सहाओ असंजदसम्मादिट्ठिरासिस्सत्थि त्ति कथं णव्वदे ? सव्वद्धा-वयणादो। कथं पक्खो चेव साहणत्तं पडिवज्जदे ? ण, उभयपक्खवत्तिसट्ठिजुत्तस्स जिणवयणस्स एक्कस्स वि पक्खसाहणत्ते विरोहाभावा। दिवायरो सुओ उदेदि त्ति वयणस्सेव किरियाविसेसणत्तादो सव्वद्धमिदि पावेदि ? ण, तहा विवक्खाभावा। पुणो कधमेत्थतणविवक्खा ? वुच्चदे—सव्वा अद्धा जेसिं ते सव्वद्धा, सव्वकालसंबंधिणो त्ति वुत्तं होदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥

तं कधं ? अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा संजदासंजदो वा पमत्तसंजदो वा पुव्वं सासंजमसम्मत्ते बहुवारं परियट्टंतो अच्छिदो असंजदो जादो। सव्वलहुमंतोमुहुत्तद्धमच्छिय मिच्छत्तं वा सम्मामिच्छत्तं वा संजमासंजमं वा अप्पमत्तभावेण संजमं वा पडिवण्णो। उवरिमगुणट्ठाणेहिंतो संकिलेसेण जे असंजदसम्मत्तं पडिवण्णा, ते अविणट्ठेण तेण संकिलेसेण सह मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं वा णेदव्वा। जे हेट्ठिमगुणट्ठाणेहिंतो विसोहीए सासंजमं सम्मत्तं पडिवण्णा, ते ताए चेव विसोहीए अविणट्ठाए सह संजमासंजमं अप्पमत्तभावेण संजमं वा णेदव्वा, अण्णहा जहण्णकालाणुववत्तीदो।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १५ ॥

तं कधं? एक्को पमत्तो अप्पमत्तो वा चदुण्हमुवसामगाणमेक्कदरो वा समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु अणुत्तरविमाणवासियदेवेसु उववण्णो। सासंजमसम्मत्तस्स आदी जादो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। तत्थ असंजदसम्मादिट्ठी होदूण ताव ट्ठिदो जाव अंतोमुहुत्तमेत्ताउअं सेसं ति। तदो अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णो (१)। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (२) खवगसेढिपाओग्गविसोहीए विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (३)। अपुव्वखवगो (४) अणियट्टिखवगो (५) सुहुमखवगो (६) खीणकसाओ (७) सजोगी (८) अजोगी (९) होदूण सिद्धो जादो। एदेहि णवहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणपुव्वकोडीए अदिरित्ताणि समऊणतेत्तीससागरोवमाणि असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो होदि। किमट्ठं समऊणतेत्तीससागरोवमाउठिदिएसु देवेसुप्पादिदो ? ण, अण्णहा असंजदद्धाए दीहत्ताणुवलंभा। कुदो ? जदि तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उप्पादिज्जदि, तो वासपुधत्तावसेसे आउए णिच्छएण संजमं पडिवज्जदि। जो पुण समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिय मणुसेसु उववण्णो, सो अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडिमसंजमेण सह अच्छिय पुणो णिच्छएण संजदो होदि, तेण समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पादिदो।

संजदासंजदा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि परूविदत्तादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेणंतोमुहुत्तं ॥ १७ ॥

तं कधं ? एक्को अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी पमत्तसंजदो वा पुव्वं पि बहुसो संजमासंजमगुणट्ठाणे परि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यट्टिदो परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो। सव्वलहुमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदूण पमत्तसंजदचरो मिच्छत्तं वा सम्मामिच्छत्तं वा असंजदसम्मत्तं वा पडिवण्णो। पच्छाकदमिच्छत्ता सासंजमसम्मत्ता च अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णा। कुदो? अण्णहा संजदासंजदद्धाए जहण्णत्ताणुववत्तीए। किमट्ठं सम्मामिच्छादिट्ठी संजमासंजमं गुणं ण णीदो? ण, तस्स देसविरदिपज्जाएण परिणमणसत्तीए असंभवा। वुत्तं च–ण य मरइ णेव संजममुवेइ तह देससंजमं वावि। सम्मामिच्छादिट्ठी ण उ मरणंतं समुग्घाओ॥ ३३॥

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा॥ १८॥

तं कधं? एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मियो मिच्छाइट्ठी सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसंमुच्छिमपज्जत्तएसु मच्छ-कच्छव-मंडूकादिसु उववण्णो। सव्वलहुएण अंतोमुहुत्तकालेण सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो जादो (१)। विस्संतो (२) विसुद्धो (३) होदूण संजमासंजमं पडिवण्णो। पुव्वकोडिकालं संजमासंजममणुपालिदूण मदो सोधम्मादि-आरणच्चुदंतेसु देवेसु उववण्णो। णट्ठो संजमासंजमो। एवमादिल्लेहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा पुव्वकोडी संजमासंजमकालो होदि।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा॥ १९॥

जेण तिसु वि कालेसु पमत्तापमत्तसंजदेहि विरहिदो एगो वि समओ णत्थि, तेण सव्वद्धं हवंति।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं॥ २०॥

तं जधा–पमत्तस्स ताव एगसमओ वुच्चदे। एक्को अप्पमत्तो अप्पमत्तद्धाए खीणाए एगसमयं जीविदमत्थि त्ति पमत्तो जादो। पमत्तगुणेण एगसमयं दिट्ठो विदियसमए मदो देवो जादो। णट्ठो पमादविसिट्ठसंजमो। एवं पमत्तस्स एगसमयपरूवणा गदा। अप्पमत्तस्स वुच्चदे–एक्को पमत्तो पमत्तद्धाए खीणाए एगसमयं जीवियमत्थि त्ति अप्पमत्तो जादो। अप्पमत्तगुणेण एगसमयं दिट्ठो विदियसमए मदो देवो जादो। णट्ठमप्पमत्तगुणट्ठाणं। अधवा उवसमसेढीदो ओदरमाणो अपुव्वकरणो एगसमयं जीविदमत्थि त्ति अप्पमत्तो जादो, विदियसमए मदो देवेसुववण्णो। एवं दोहि पयारेहि अप्पमत्तस्स एगसमयपरूवणा कदा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं॥ २१॥

पमत्तस्स ताव वुच्चदे–एक्को अप्पमत्तो पमत्तपज्जाएण परिणमिय सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गदो। एवं पमत्तस्स उक्कस्सकालपरूवणा गदा। अप्पमत्तस्स वुच्चदे–एक्को पमत्तो अप्पमत्तो होदूण सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पमत्तो जादो। एसा अप्पमत्तस्स उक्कस्सकालपरूवणा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चउण्हं उवसमा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२ ॥

तं कधं ? दो वा तिण्णि वा अणियट्टिउवसमागा सेढीदो ओदरमाणा एगसमयं जीविदमत्थि त्ति अपुव्वकरणउवसामगा जादा। एगसमयमपुव्वकरणेण सह दिट्ठा विदियसमए मदा देवा जादा। एवमपुव्वकरणस्स एगसमयपरूवणा कदा। अप्पमत्तमपुव्वकरणं करिय विदियसमए कालं कराविय अपुव्वकरणस्स एगसमयपरूवणा किण्ण कदेत्ति वुत्ते ण, अपुव्वकरणपढमसमयादो जाव णिद्दा-पयलाणं बंधो ण वोच्छिज्जदि ताव अपुव्वकरणाणं मरणाभावा। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणमेगसमयपरूवणा णाणाजीवे अस्सिदूण कायव्वा। णवरि अणियट्टि-सुहुमउवसामगाणं चढंत-ओदरंतजीवे अस्सिदूण दोहि पयारेहि एगसमयपरूवणा कादव्वा। उवसंतकसायस्स चढंतजीवे चेय अस्सिदूण एगसमयपरूवणा कादव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३ ॥

तं कधं ? सत्तट्ठ वा चउवण्णा वा अप्पमत्ता अपुव्वकरणउवसामगा जादा जाव ते अणियट्टिट्ठाणं ण पावेंति ताव अण्णे वि अण्णे वि अप्पमत्ता अपुव्वकरणगुणट्ठाणं पडिवज्जावेदव्वा। ओयरमाणअणियट्टिणो वि अपुव्वकरणं पडिवज्जावेदव्वा। एवं चढंत-ओयरंतजीवेहि असुण्णं होदूण अपुव्वकरणगुणट्ठाणं अच्छदि जाव तप्पाओग्गउक्कस्संतोमुहुत्तं ति। तदो णिच्छएण विरहो। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणमुक्कस्सकालपरूवणा कादव्वा। णवरि उवसंतकसायस्स उक्कस्सकाले भण्णमाणे एगो उवसंतकसाओ चडिय जाव णोअरदि ताव अण्णे सुहुमसांपराइया उवसंतकसायगुणट्ठाणं चडावेदव्वा। एवं पुणो संखेज्जवारं चडाविय उवसंतकालो वड्ढावेदव्वो जाव तप्पाओग्गुक्कस्सअंतोमुहुत्तं पत्तो त्ति।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २४ ॥

तं कधं ? एक्को अणियट्टिउवसामगो एगसमयं जीविदमत्थि त्ति अपुव्वउवसामगो जादो एगसमयं दिट्ठो विदियसमए मदो लयसत्तमो देवो जादो। एवं तिण्हमुवसामगाणमेगसमयपरूवणा वत्तव्वा। णवरि अणियट्टि-सुहुमउवसामगाणं चढणोयरणविहाणेण वेहि पयारेहि, चढणमस्सिदूण उवसंतकसायस्स एगपयारेण एगसमयपरूवणा कायव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५ ॥

तं जहा–एक्को अप्पमत्तो अपुव्वउवसामगो जादो। तत्थ सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अणियट्टिट्ठाणं पडिवण्णो। एवं तिण्हमुवसामगाणं वत्तव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चदुण्हं खवगा अजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २६ ॥

तं कधं ? सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अप्पमत्ता अप्पमत्तद्धाए खीणाए अपुव्वकरणखवगा जादा । अंतोमुहुत्तमच्छिय अणियट्टिट्ठाणं गदा । एवं चेव चदुण्हं खवगाणं जाणिदूण भाणिदव्वं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २७ ॥

तं जहा–सत्तट्ठ जणा वा बहुगा वा अप्पमत्तसंजदा अपुव्वखवगा जादा । ते तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय अणियट्टिणो जादा । तम्हि चेव समए अण्णे अप्पमत्ता अपुव्वखवगा जादा । एवं पुणो पुणो संखेज्जवारं चढणकिरियाए कदाए णाणाजीवे अस्सिदूण अपुव्वकरणुक्कस्सकालो होदि । एवं चेव चदुण्हं खवगाणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २८ ॥

तं जहा–एक्को अप्पमत्तो अपुव्वकरणखवगो जादो अंतोमुहुत्तमच्छिदूण अणियट्टिखवगो जादो । एवं चेव चदुण्हं खवगाणं जहण्णकालपरूवणा कादव्वा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९ ॥

एक्को अप्पमत्तो अपुव्वखवगो जादो । तत्थ सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिदूण अणियट्टिगुणट्ठाणं पडिवण्णो । एगजीवमस्सिदूण अपुव्वकरणुक्कस्सकालो जादो । एवं चेव चदुण्हं खवगाणं जाणिदूण वत्तव्वं । एत्थ जहण्णुक्कस्सकाला वे वि सरिसा, अपुव्वादिपरिणाणमणुक्कट्टीए अभावादो ।

सजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३० ॥

तिसु वि कालेसु जेण एक्को वि समओ सजोगिविरहिदो णत्थि तेण सव्वद्धत्तणं जुज्जदे ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१ ॥

तं कधं ? एक्को खीणकसाओ सजोगी होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय समुग्घादं करिय पच्छा जोगणिरोहं किच्चा अजोगी जादो । एवं सजोगिस्स जहण्णकालपरूवणा एगजीवमल्लीणा गदा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ ३२ ॥

तं जहा–एक्को खइयसम्मादिट्ठी देवो वा णेरइओ वा पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । सत्त मासे गब्भे अच्छिदूण गब्भपवेसणजम्मेण अट्ठवस्सिओ जादो (८) । अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णो (१) । पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (२) अप्पमत्तट्ठाणे अधापमत्तकरणं कादूण (३) अपुव्वकरणो (४) अणियट्टिकरणो (५) सुहुमखवगो (६) खीणकसाओ (७) होदूण सजोगी जादो । अट्ठहि वस्सेहि सत्तहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणपुव्वकोडिकालं विहरित्ता अजोगी जादो (८) । एवं अट्ठहि वस्सेहि अट्ठहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणपुव्वकोडी सजोगिकेवलिकालो होदि । ओघपरूवणा समत्ता ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३३ ॥

कुदो ? णिरयगदिम्हि सव्वकालं मिच्छादिट्ठिवोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३४ ॥

तं जधा–एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा पुव्वं पि बहुवारपरिणमिदमिच्छत्तो संकिलेसं पूरेदूण मिच्छादिट्ठी जादो । सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तकालमच्छिय विसुद्धो होदूण सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं वा पडिवण्णो । एवं मिच्छादिट्ठिस्स जहण्णकालपरूवणा गदा ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३५ ॥

तं जहा–एक्को तिरिक्खो मणुसो वा सत्तमाए पुढवीए उववण्णो । तत्थ मिच्छत्तेण सह तेत्तीसं सागरोवमाणि अच्छिय उवट्टिदो । लद्धाणि णेरइयमिच्छादिट्ठिस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३६ ॥

कुदो ? णिरयगदिम्हि एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सपरूवणाणं एदेसिं चेव ओघणाणेगजीवजहण्णुक्कस्सपरूवणाहिंतो भेदाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३७ ॥

कुदो ? णिरयगदिम्हि असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३८ ॥

तं जहा–एगो मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा सम्मत्ते बहुवारं पुव्वं परियट्टिदूण अच्छिदो विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवण्णो । तत्थ सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय सम्मामिच्छत्तं मिच्छत्तं वा गदो । एवं णिरयगदिअसंजदसम्मादिट्ठिस्स जहण्णकालपरूवणा गदा ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३९ ॥

तं जधा–एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी सत्तमाए पुढवीए उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो । पुणो अंतोमुहुत्तावसेसआउट्ठिदीए मिच्छत्तं गदो (४) । आउगं बंधिदूण (५) अंतोमुहुत्तं विस्समिय (६) उवट्टिदो । एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो ।

पढमाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ?
णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ४० ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिविरहिदसत्तण्हं पुढवीणं सव्वद्धा अभावादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४१ ॥

तं जहा–अप्पप्पणो पुढवीसु ट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी वा बहुसो मिच्छत्तचरो परिणामपचएण मिच्छत्तं गदो । सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुव्विल्लगुणेसु अण्णदरगुणं गदो । एवं सत्तण्हं पुढवीणं मिच्छादिट्ठिपादेक्कमंतोमुहुत्तपरूवणा कदा ।

उक्कस्सेण सागरोवमं तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ४२ ॥

पढमाए पुढवीए एक्कं सागरोवमं, विदियाए पुढवीए तिण्णि सागरोवमं, तदियाए पुढवीए सत्त सागरोवमाणि, चउत्थीए पुढवीए दस सागरोवमाणि, पंचमीए पुढवीए सत्तारस सागरोवमाणि, छट्ठीए पुढवीए वावीस सागरोवमाणि, सत्तमीए पुढवीए तेत्तीस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सागरोवमाणि मिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो। कुदो? एदेहिंतो अधिगबंधाभावा। तं पि कुदो णव्वदे? एक्क तिय सत्त दस तह सत्तारह दु-तिहदेक्कअधिय दस। उवही उक्कस्सट्ठिदी सत्तण्हं होइ पुढवीणं ॥ ३४ ॥ इदि णिरयाउबंधसुत्तादो।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ४३ ॥

कुदो? दोण्हं गुणट्ठाणाणं णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण दोण्हं पि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण छ आवलियाओ अंतोमुहुत्तमेवमादिणा भेदाभावा।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ४४ ॥

तं जहा—सत्तण्हं पुढवीणं असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदाणं सव्वद्धाणुवलंभादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४५ ॥

तं जहा—सत्तसु पुढवीसु ट्ठिदबहुसो सम्मत्तचरअट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी वा सम्मत्तं पडिवज्जिय अंतो-मुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं वा पडिवण्णो। एसो सत्तसु पुढवीसु असंजदसम्मादिट्ठिजहण्णकालो परूविदो।

उक्कस्सं सागरोपमं तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ४६ ॥

तं जधा—एक्को तिरिक्खो मणुसो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी पढमाए पुढवीए वा एवं जाव सत्तमीए वा उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४)। सम्मत्तेण अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदि-मच्छिय णिप्फिडिदूण मणुसेसु उववण्णो। एवं तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदि असंजदसम्मादिट्ठिउक्कस्सकालो होदि। णवरि सत्तमाए छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा उक्कस्सट्ठिदि त्ति वत्तव्वं, तत्थ मिच्छत्तगुणेण विणा णिग्गमाभावा। असंजदसम्मादिट्ठिम्मि आउअं बंधिय विस्संतो होदूण मिच्छत्तं गंतूण सत्तमपुढवीदो णिस्सरिदे सम्मत्तकालो बहुगो लब्भदि त्ति वुत्ते ण, सत्तमपुढविणेरइयाणं मणुसेसुव-वादाभावा। असंजदसम्मादिट्ठीणं पि णिरयतिरिक्खाउबंधाभावा। जेण गुणेण आउअबंधस्स संभवो अत्थि, तेणेव गुणेण णिग्गमादो च।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ४७ ॥

कुदो? मिच्छादिट्ठीहि विणा सव्वदा तिरिक्खगदीए अणुवलंभा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४८ ॥

तं जहा—एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो वा बहुसो मिच्छत्तचरो मिच्छत्तं पडिवण्णो। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुव्वुत्तगुणेसु अण्णदरगुणं गदो। एवं जहण्णकालपरूवणा गदा।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टं ॥ ४९ ॥

एक्को मणुसो देवो णेरइओ वा अणादियछव्वीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी तिरिक्खेसु उववण्णो। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि पोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिदूण अण्णगदिं गदो। असंखेज्जपोग्गलपरियट्टाणि त्ति वयणादो अणंतोवलद्धी होदि त्ति अणंतग्गहणं किण्णावणिज्जदे ? ण, अणंतग्गहणमंतरेण पोग्गलपरियट्टस्स अणंतत्तुवलद्धीए उवायाभावादो। पोग्गलपरियट्टाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेवेत्ति कधं णव्वदे ? ण, आइरियपरंपरागदवक्खाणा तदवगदीए।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ५० ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सपरूवणाहि विसेसाभावा।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ५१ ॥

कुदो ? तीदाणागद-वट्टमाणकालेसु असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदतिरिक्खगदीए अभावा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५२ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी वा संजदासंजदो वा परिणामपच्चएण असंजदसम्मादिट्ठी जादो। सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय विसोहीए ढुक्कओ संजमासंजमं गदो, संकिलेसेण ढुक्कओ मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं वा गदो। एवं जहण्णकालपरूवणा गदा।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि ॥ ५३ ॥

तं जधा—एक्को मणुस्सो बद्धतिरिक्खाउओ सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय देवुत्तरकुरुतिरिक्खेसु उववण्णो। तिण्णि पलिदोवमाणि तत्थ सम्मत्तेण सह अच्छिय मदो देवो जादो। एवं तिरिक्खेसु असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो परूविदो।

संजदासंजदा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ५४ ॥

कुदो ? तिसु वि कालेसु संजदासंजदविरहिदतिरिक्खाभावा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५५ ॥

तं जहा—अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा परिणामपच्चएण संजमासंजमं गदो । सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय पुव्वुत्ताणमेक्कदरं गदो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ ५६ ॥

एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा मिच्छादिट्ठी अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसंमुच्छिमपज्जत्तमंडूक-मच्छ-कच्छवादीसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) संजमासंजमं पडिवण्णो । एदेहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणपुव्वकोडिकालं संजमासंजममणुपालिदूण मदो देवो जादो ।

पंचिंदियतिरिक्ख–पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त–पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ५७ ॥

कुदो ? तिसु वि कालेसु पंचिंदियतिरिक्खतियमिच्छादिट्ठिविरहिदपंचिंदियतिरिक्खतियाणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५८ ॥

एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो वा दिट्ठमग्गो मिच्छत्तं पडिवण्णो । सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय पुव्वुत्ताणमण्णदरं गुणं गदो । तेण अंतोमुहुत्तमिदि सुत्ते वुत्तं ।

उक्कस्सं तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण अब्भहियाणि ॥ ५९ ॥

तं जधा—एक्को देवो णेरइओ मणुस्सो वा अप्पिदपंचिंदियतिरिक्खवदिरित्ततिरिक्खो वा अप्पिदपंचिंदियतिरिक्खेसु उववण्णो । सण्णि-इत्थि-पुरिस-णवुंसगवेदेसु कमेण अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ हिंडिदूण असण्णि-इत्थि पुरिस-णवुंसयवेदेसु वि एवं चेव अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ परिभमिय तदो पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु उववण्णो । तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो पंचिंदियतिरिक्खअसण्णिपज्जत्तएसु उववज्जिय तत्थतण-इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदएसु पुणो वि अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ परिभमिय पच्छा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तइत्थि-णवुंसगवेदेसु अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ पुरिसवेदेसु सत्त पुव्वकोडीओ हिंडिदूण तदो देव-उत्तरकुरुतिरिक्खेसु पुव्विल्लाउवसेण इत्थिवेदेसु वा पुरिसवेदेसु वा उववण्णो । तत्थ तिण्णि पलिदोवमाणि जीविदूण मदो देवो जादो । एदाओ पंचाणउदि पुव्वकोडीओ पुव्वकोडिवारसपुधत्त-

सण्णिदाओ त्ति एदासिं पुव्वकोडिपुधत्तववदेसो सुत्तणिद्दिट्ठो ण जुज्जदे ? ण एस दोसो, तस्स वइउल्लवाइत्तादो। वारसण्हं पुव्वकोडिपुधत्ताणं कधमेगत्तं ? ण, जाइमुहेण सहस्साण वि एगत्तविरोहाभावा । णवरि पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु सत्तेतालीसपुव्वकोडीओ हिंडाविय पच्छा तिपलिदोवमिएसु तिरिक्खेसु उप्पादेदव्वो । कुदो ? अपज्जत्तत्तेण एदेसिमपरिणदाणं पच्छा सेसपुव्वकोडीओ परिब्भमणे संभवाभावा । अपज्जत्तएसु कधमित्थिवेदस्स संभवो ? ण, अपज्जत्तित्थिवेदाणमण्णोण्णविरोहाभावा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पण्णारस पुव्वकोडीओ भमाविय पच्छा देवुत्तरकुरवेसु उप्पादेदव्वो । कुदो ? वेदंतरसंकंतीए अभावादो । णत्थि अण्णो कोइ विसेसो ।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ६० ॥

कुदो ? तिसु वि पंचिंदियतिरिक्खेसु ट्ठिददोगुणट्ठाणाणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण छावलियाओ अंतोमुहुत्तमिदि एदेहि विसेसाभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ६१ ॥

कुदो ? तिसु वि पंचिंदियतिरिक्खेसु असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६२ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी संजदासंजदो वा विसोहि-संकिलेसवसेण असंजदसम्मादिट्ठी होदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अविणट्ठसंकिलेस-विसोहीहि पडिवण्णगुणंतरस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि, तिण्णि पलिदोवमाणि, तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि ६३ ॥

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं संपुण्णाणि तिण्णि पलिदोवमाणि । कुदो ? मणुस्सस्स बद्धतिरिक्खाउअस्स सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय देवुत्तरकुरु-पंचिंदियतिरिक्खेसुववज्जिय अप्पणो आउट्ठिदिमणुपालिय देवेसुप्पण्णस्स संपुण्णतिण्णिपलिदोवममेत्तसासंजमसम्मत्तकालुवलंभादो । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु देसूणतिण्णिपलिदोवमाणि । कुदो ? तिरिक्खस्स मणुस्सस्स वा अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठिस्स देवुत्तरकुरुपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु उप्पज्जिय वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतस्स मुहुत्तपुधत्तेण विसुद्धो होदूण वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय मुहुत्तपुधत्तब्भहिय-वे-मासूणतिण्णि पलिदोवमाणि सम्मत्तमणुपालिय देवेसुववण्णस्स देसूणतिण्णिपलिदोवममेत्तसम्मत्तकालुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजदासंजदा ओघं ॥ ६४ ॥

कुदो ? तिसु वि पंचिंदियतिरिक्खेसु णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा, इच्चाइणा भेदाभावा । णवरि जोणिणीसु वे मासे अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया त्ति वत्तव्वं ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ६५ ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तविरहिदकालाणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ६६ ॥

कुदो ? एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्त-अपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त मणुसपज्जत्तापज्जत्तएसु अण्णदरस्स खुद्दाभवग्गहणावुट्ठिदपंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु उववज्जिय सव्वजहण्णकालमच्छिय पुव्वुत्ताणमण्णदरं गदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तअपज्जत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६७ ॥

कुदो ? पुव्वुत्ताणमण्णदरस्स पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु उववज्जिय सण्णि-असण्णि-अपज्जत्तएसु अट्ठट्ठवारमुप्पज्जिय णिस्सरिदूण पुव्वुत्ताणमण्णदरं गदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तुक्कस्सकालुवलंभा ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ६८ ॥

कुदो ? तिविधेसु वि मणुस्सेसु मिच्छादिट्ठि-विरहिदकालाणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६९ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छादिट्ठिस्स असंजदसम्मादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स वा संकिलेसवसेण मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुव्वुत्ताणमण्णदरं गदस्स तिसु वि मणुस्सेसु अंतोमुहुत्तमेत्तमिच्छत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ ७० ॥

कुदो ? अणप्पिदजीवस्स अप्पिदमणुसेसुववज्जिय इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदेसु अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ परिभमिय अपज्जत्तएसुववज्जिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो इत्थिणवुंसयवेदेसु अट्टट्ठपुव्वकोडीओ, पुरिसवेदेसु सत्त पुव्वकोडीओ हिंडिय देवुत्तरकुरवेसु तिण्णि पलिदोवमाणि अच्छिय देवेसुववण्णस्स पुव्वकोडिपुधत्तब्भहियतिण्णिपलिदोवममुवलंभा । णवरि मणुसमिच्छादिट्ठिस्स चेय सत्तेत्तालीस-पुव्वकोडिओ अहिया होंति, ण सेसाणं । पज्जत्तमिच्छादिट्ठीणं तेवीसपुव्वकोडीओ, मणुसअपज्जत्तएसु तेसिमुप्पत्तीए अभावादो । मणुसिणीमिच्छादिट्ठीसु सत्तपुव्वकोडीओ अहियाओ, वेदंतरसंकंतीए अभावादो ।

सासणसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७१ ॥

कुदो ? उवसमसम्मादिट्ठीणं सत्तट्ठजणाणं उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति सासणगुणं गदाणं तत्थेगसमयमच्छिय मिच्छत्तं पडिवण्णाणमेगसमओवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७२ ॥

कुदो ? संखेज्जाणं उवसमसम्मादिट्ठीणमुवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण छ आवलियाओ अत्थि त्ति सासणं पडिवण्णाणं संखेज्जवाराणुसंचिदसासणद्धाणमंतोमुहुत्तत्तुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७३ ॥

कुदो ? उवसमसम्माइट्ठिस्स उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति सासणं पडिवज्जिय विदियसमए चेव मिच्छत्तं पडिवण्ण-सासणस्स एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सं छ आवलियाओ ॥ ७४ ॥

कुदो ? उवसमसम्मादिट्ठिस्स उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति सासणं पडिवज्जिय छ आवलियाओ तत्थ गमिय मिच्छत्तं पडिवण्णस्स छ आवलिओवलंभा ।

सम्मामिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७५ ॥

पमत्तसंजद-संजदासंजद—अट्ठावीसमोहसंतकम्मियमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिपच्छायदाणं संखेज्जसम्मामिच्छादिट्ठीणं सव्व-जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय विसोहि-संकिलेस-वसेण सम्मत्त-मिच्छत्ताणि उवगदाणं सव्वजहण्णंतोमुहुत्तुवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७६ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठीणं सव्वुक्कस्ससम्मामिच्छत्तद्धाणं मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजद-पमत्तसंजदेहि संखेज्जवारमणुसंचिदद्धाणमंतोमुहुत्तुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७७ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स दिट्ठमग्गस्स पुव्वुत्तचदुगुणट्ठाणेसु एगजीवण्णदरगुणपच्छायदस्स सव्वजहण्णद्धमच्छिदूण संकिलेस-विसोहिवसेण मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिगुणे पडिवण्णस्स सव्वजहण्णंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७८ ॥

पुव्वुत्तचदुगुणट्ठाणेसु अदिट्ठमग्गेगजीवण्णदरगुणपच्छायदसम्मामिच्छादिट्ठिस्स दीहद्धमच्छिय देस-सयलसंजमविरहिददोगुणट्ठाणे गदस्स सव्वुक्कस्संतोमुहुत्तुवलंभा ।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ७९ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदमणुस्साणं सव्वकालमणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८० ॥

दिट्ठमग्गमिच्छादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्तसंजदगुणट्ठाणेहिंतो आगदस्स सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तद्धमच्छिय जहण्णकालाविरोहेण गुणंतरं गदस्स जहण्णंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि, तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ ८१ ॥

एत्थ सादिरेयसद्दो दोसु वि तिपलिदोवमेसु संबंधणिज्जो, दोण्हं पच्चासत्तिवसेण एगत्तमुवगयाणं विसेसणरूवेण पयट्टत्तादो । तम्हा मणुस-मणुसपज्जत्तएसु सादिरेयाणि तिण्णि पलिदोवमाणि, अण्णत्थ देसूणाणि । कुदो ? 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो । ॥४७९॥

कधं सादिरेयत्तं ? अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठिस्स पुव्वकोडितिहाए सेसे बद्धमणुसाउअस्स तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय सम्मत्तेण सह देसूणपुव्वकोडितिभागं गमिय तिपलिदोवमाउट्ठिदिदेउत्तरकुरवेसुप्पज्जिय अप्पणो आउट्ठिदिमणुपालिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवेसुप्पण्णस्स तिण्णिपलिदोवमाणमुवरिं देसूणपुव्वकोडितिभागुवलंभा । मणुसिणीसु देसूणतिण्णि पलिदोवमाणि, अण्णदरअट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठिस्स तिपलिदोवमिएसु मणुसेसुववज्जिय णव मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतस्स उत्ताणसेज्जाए अंगुलिआहारेण सत्त दिवसे, रंगंतो सत्त दिवसे, अथिरगमणेण सत्त दिवसे, थिरगमणेण सत्त दिवसे, कलासु सत्त दिवसे, गुणेसु सत्त दिवसे, अण्णे वि सत्त दिवसे गमिय विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवज्जिय अप्पणो आउट्ठिदिं जीविदूण देवेसु उववण्णस्स एगूणवण्णदिवसेहि अहियणवमासूणतिण्णिपलिदोवमुवलंभा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ८२ ॥

कुदो ? ओघादो भेदाभावा । णवरि संजदासंजदाणं सव्वलहुं जोणिणिक्खमणजम्मणुब्भवट्ठवस्सेहि ऊणा पुव्वकोडी संजमासंजमकालो वत्तव्वो, तिरिक्खाणं व मणुस्साणं अंतोमुहुत्तकालेण अणुव्वयगहणाभावा ।

मणुसअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८३ ॥

एइंदियबादर-सुहुम-वि-ति-चउरिंदिय-सण्णि-असण्णिपंचिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं मणुसपज्जत्ताणं वा मणुसअपज्जत्तएसु उववज्जिय खुद्दाभवग्गहणमेत्ताउट्ठिदिं गमिय पुव्वुत्तजीवेसुप्पण्णाणं तक्कालुवलंभा ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८४ ॥

पुव्वुप्पण्णमणुसअपज्जत्तएसु गदेसु तक्काले चेव अण्णण्णे जीवे मणुसअपज्जत्तेसुप्पादिय उप्पादिय अणुसंधिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तअणुसंधाणवारसलागुवलंभादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८५ ॥

पुव्वुत्तजीवेहिंतो आगंतूण मणुसअपज्जत्तएसु उववण्णस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णाउट्ठिदिकालदंसणादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८६ ॥

पुव्वुत्तजीवेहिंतो आगंतूण मणुसअपज्जत्तएसु उप्पण्णस्स अंतोमुहुत्तादो उवरिमकालवियप्पाणमुक्कस्साउट्ठिदिअपज्जत्तस्स वि अणुवलंभा । ॥४८०॥

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ८७ ॥

देवमिच्छादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८८ ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा संकिलेसेण मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णकालमच्छिय पुव्वुत्तदोगुणट्ठाणाणमण्णदरं गदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ८९ ॥

मणुसमिच्छादिट्ठिस्स दव्वसंजमबलेण एक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसुप्पज्जिय मिच्छत्तेण सह अप्पणो आउट्ठिदिमणुपालिय मणुसेसुववण्णस्स एक्कत्तीससागरोवममेत्तदेवमिच्छादिट्ठिकालदंसणादो ।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९० ॥

सव्वपयारेण ओघादो भेदाभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ९१ ॥

देवेसु असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९२ ॥

मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा विसोहिवसेण सम्मत्तं पडिवज्जिय सव्वजहण्णसम्मत्तद्धमच्छिय मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणमण्णदरं गदस्स अंतोमुहुत्तकालदंसणादो ।

उक्कस्सं तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ९३ ॥

उक्कस्साउट्ठिदिदेवेसुप्पण्णसंजदस्स भुंजमाणाउअस्स घादाभावादो अप्पणो उक्कसट्ठिदिं जीविय मणुसेसु उप्पण्णदेवअसंजदसम्मादिट्ठिस्स तेत्तीसं सागरोवममेत्तकालुवलद्धीए ।

भवणवासियप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ९४ ॥

तिण्हं पि कालाणं देवमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदाणमभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो, जथा देवोघम्हि एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं जहण्णकालपरूवणा वुत्ता, तहा भवणवासियप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पो त्ति मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं जहण्णकालपरूवणा कादव्वा ।

उक्कस्सेण सागरोवमं पलिदोवमं सादिरेयं वे सत्त दस चोद्दस सोलस अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ९६ ॥

एदस्सुदाहरणं—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा मिच्छादिट्ठी भवणवासियदेवेसु उववण्णो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागब्भहियं सागरोवमं जीविदूण मिच्छत्तेणेव उवट्टिदो । एसो मिच्छादिट्ठिणो बद्धआउअघादं पडुच्च कालो वुत्तो । अथवा, अंतोमुहुत्तूणअद्धसागरोवमेण सादिरेगं सागरोवमं जीविदूण उव्वट्टिदो । एसो सम्मादिट्ठिणो बद्धआउअघादं पडुच्च उत्तो । एसो भवणवासियमिच्छादिट्ठि-उक्कस्सकालो । एक्को विराहियसंजदो वेमाणियदेवेसु आउअं बंधिदूण तमोवट्टणाघादेण घादिय भवणवासियदेवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मत्तं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तूणसागरोवमद्धेण अहियं सागरोवमं तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणयं सम्मत्तेण सह जीविदूण उव्वट्टिय मणुसो जादो । एसो भवणवासियअसंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो । वाणवेंतर-जोदिसियाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि अंतोमुहुत्तूणपलिदोवमद्धेण अहियं पलिदोवमं मिच्छत्तुक्कस्सकालो होदि । एसो चेव कालो तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो होदि । सोधम्मीसाणे मिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो वे सागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अब्भहियाणि । एसो मिच्छादिट्ठिणो बद्धाउअस्स घादं पडुच्च कालो वुत्तो । सम्मादिट्ठिणो बद्धदेवाउअघादं पडुच्च अंतोमुहुत्तूणअद्धसागरोवमेण अब्भहियाणि वे सागरोवमाणि मिच्छत्तुक्कस्सकालो होदि । 'वे सत्त दस चोद्दस सोलसट्ठारस य वीस वावीसा' एदीए गाहाए सह एदस्स सुत्तस्स किण्ण विरोहो होदि ? ण होदि विरोहो, भिण्णविसयत्तादो । तं जहा—वुत्तं सुत्तं वंधप्पडिबद्धं, काल-सुत्तं पुण संतमपेक्खिय ट्ठिदमिदि सणक्कुमार-माहिंदे सत्त सागरोवमाणि सादिरेयाणि, बम्ह-बम्हुत्तरकप्पे दस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, लंतव-काविट्ठ-कप्पे चोद्दस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, सुक्क-महासुक्केसु सोलस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, सदर-सहस्सार-कप्पेसु अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि । जहा दोहि पयारेहि सोधम्मीसाणे सादिरेयत्तं परूविदं, तहा एत्थ वि वत्तव्वं । सोधम्मादि जाव सहस्सारो त्ति असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो वे सत्त दस चोद्दस सोलस अट्ठारस सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणअद्धसागरोवमेण सादिरेयाणि होंति, एदस्स हेट्ठदो सम्मादिट्ठिस्सघादाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, बहुसो परूविदत्तादो ।

आणद(प्पहुडि)जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ९८ ॥

कुदो ? एदेसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, बहुसो परूविदत्तादो ।

उक्कस्सेण वीसं वावीसं तेवीसं चउवीसं पणवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगूणतीसं तीसं एक्कत्तीसं सागरोवमाणि ॥ १०० ॥

एदेसु एक्कारससु उक्कस्साउअं बंधिय अप्पप्पणो देवेसुप्पज्जिय आउट्ठिदिमणुपालिय मणुसेसुप्पण्णमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी-णमप्पप्पणो वुत्तुक्कस्सकालुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १०१ ॥

ओघादो णाणेगजीवं पडुच्च भेदाभावा ।

अणुद्दिस-अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराजिदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १०२ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदतेरसण्हं विमाणाणं सव्वकालमणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एक्कत्तीसं, वत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १०३ ॥

कुदो ? गुणंतरं संकंतीए अभावादो । एत्थ सादिरेयपमाणमेगो समओ, हेट्ठिलुक्कस्सट्ठिदी समयाहिया उवरिल्लाणं जहण्णट्ठिदी होदि त्ति आइरियपरंपरागदुवदेसादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण वत्तीस, तेत्तीस सागरोवमाणि ॥ १०४ ॥

णवसु हेट्ठिमेसु अणुदिसविमाणेसु वत्तीसं सागरोवमाणि । चदुसु अणुत्तरविमाणेसु तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि, सुत्ते हि ऊणाहियवयणाभावा ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १०५ ॥

तिसु वि कालेसु तत्थ असंजदसम्मादिट्ठिविरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ १०६ ॥

पुध सुत्तारंभादो चेव णव्वदे सव्वट्ठसिद्धिम्हि जहण्णुक्कस्सट्ठिदी सरिसा त्ति । पुणो जहण्णुक्कस्सगहणं किमट्ठं कीरदे ? ण तस्स मंदबुद्धिजणाणुग्गहट्ठत्तादो । एवं गदिमग्गणा समत्ता ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १०७ ॥

तिसु वि कालेसु एइंदियाणं विरहाभावादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १०८ ॥

अणेइंदियस्स एइंदिएसुप्पज्जिय सव्वजहण्णमेइंदियद्धमच्छिय अणेइंदिए उप्पण्णस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तएइंदियकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १०९ ॥

अणेइंदिओ एइंदिएसुप्पज्जिय अदिबहुअं कालं जदि अच्छदि तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव पोग्गलपरियट्टाणि अच्छदि । कुदो ? एदम्हादो उवरि अच्छणसत्तीए अभावा ।

बादरएइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ११० ॥

बादरेइंदियविरहिदकालाभावादो । किमट्ठं तेसिं णत्थि विरहो ? सहावदो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १११ ॥

अणेइंदियस्स सुहुमेइंदियस्स वा बादरेइंदिएसु सव्वजहण्णाउवएसुप्पज्जिय अणिंदियं गदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तबादरेइंदिय-भवट्ठिदीए उवलंभा ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ११२ ॥

अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो अणेयवियप्पो त्ति कट्टु पदरावलियादो हेट्ठिमवियप्पाणं पडिसेहं कादूण उवरिमवियप्पगहणट्ठं असंखेज्जासंखेज्जाणि त्ति णिद्देसो कदो । पदर-पल्लादिउवरिमवियप्पपडिसेहट्ठं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिणिद्देसो कदो । अणेइंदिओ सुहुमेइंदिओ वा बादरेइंदिएसु उप्पज्जिय तत्थ जदि सुट्ठु महल्लं कालमच्छदि तो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ अच्छदि । पुणो णिच्छएण अण्णत्थ गच्छदि त्ति जं वुत्तं होदि । कम्मट्ठिदिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे बादरट्ठिदी जादा त्ति परियम्मवयणेण सह एदं सुत्तं विरुज्झदि त्ति णेदस्स ओक्खत्तं, सुत्ताणुसारि परियम्मवयणं ण होदि त्ति तस्सेव ओक्खत्तप्पसंगा ।

बादरेइंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ११३ ॥

कुदो ? बादरेइंदियपज्जत्ताणं तिसु वि कालेसु विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११४ ॥

खुद्दाभवग्गहणं संखेज्जावलियमेत्तं, एगं मुहुत्तं छासट्ठिसहस्स-तिसद-छत्तीसरूवमेत्तखंडाणि कादूण एगखंडमेत्तत्तादो । एदं पि कधं णव्वदे ? तिण्णि सया छत्तीसा छावट्ठि सहस्स चेव मरणाइं । अंतोमुहुत्तकाले तावदिया होंति खुद्दभवा ॥ ३५ ॥ त्ति गाहासुत्तादो । मुहुत्तस्स एवदियभागो संखेज्जावलियमेत्तो त्ति कधं णव्वदे ? आवलिय अणागारे चक्खिंदिय-सोद-घाण-जिब्भाए । मण-वयण-कायफासे अवाय-ईहासुदुस्सासे ॥ ३६ ॥ केवलदंसण-णाणे कसायसुक्केक्कए पुधत्ते य । पडिवादुवसामेंतय खवेंतए संपराए य ॥ ३७ ॥ माणद्धा कोधद्धा मायद्धा तंहि चेव लोभद्धा । खुद्दभवग्गहणं पुण किट्टीकरणं च बोद्धव्वं ॥ ३८ ॥ इदि गाहासुत्तादो । अंतोमुहुत्तं पि संखेज्जावलियमेत्तं चेव, तदो एदेसिं दोण्हं विसेसो णत्थि त्ति अंतोमुहुत्तवयणं सुत्तत्थं संदेहमुप्पादेदि त्ति वुत्ते णत्थि संदेहो, खुद्दाभवग्गहणमभणिय अंतोमुहुत्तमिदि भणिदजिणाणादो ताणं विसेसो अत्थि त्ति अवगम्मदे । घादखुद्दाभवग्गहणादो बादरेइंदियपज्जत्तजहण्णाउअं संखेज्जगुणमिदि भणिदवेअणकालविधाणअप्पाबहुगादो य । बादरेइंदियपज्जत्तवदिरित्तो सव्वजहण्णाउअबादरेइंदियपज्जत्तएसु उप्पज्जिय अण्णत्थ गदे बादरेइंदियपज्जत्तस्स जहण्णकालो लब्भदि त्ति भणिदं होदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ११५ ॥

पुढविकाइएसु वावीस वाससहस्साणि उक्कस्साउअं सुत्तसिद्धमत्थि। बादरेइंदियपज्जत्तभवट्ठिदी असंखेज्जवासमेत्ता किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, तत्थासंखेज्जवारमेगजीवस्स उप्पत्तीए असंभवा। उक्कस्ससंखेज्जमेत्तं तस्स संखेज्जभागमेत्तं वा वारं जदि उप्पज्जदि तो वि असंखेज्जाणि वस्साणि होंति त्ति वुत्ते ण होंति, संखेज्जाणि वाससहस्साणि त्ति सुत्तण्णहाणुवत्तीदो तप्पाओग्गसंखेज्जवारुप्पत्तिसिद्धीए। अणप्पिदो बादरेइंदियपज्जत्तएसु संखेज्जाणि वाससहस्साणि उक्कस्सेण तत्थ परिभमिय पुणो अणप्पिदेसु णिच्छएण उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि।

बादरेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ११६ ॥

कुदो? एदेसिं सव्वद्धासु विरहाभावादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११७ ॥

कुदो? अपज्जत्तएसु जहण्णियाए आउट्ठिदीए तत्तियमेत्ताए उवलंभा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११८ ॥

कुदो? अणप्पिदिंदिओ बादरेइंदियअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय जदि वि संखेज्जसहस्सवारं तत्थेव तत्थेव उप्पज्जदि, तो वि तेसिं सव्वेसु अंतोमुहुत्तेसु एगट्ठ कदेसु वि एगमुहुत्तपमाणाभावा।

सुहुमएइंदिया केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ११९ ॥

कुदो? सव्वद्धा सुहुमेइंदियविरहाभावा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १२० ॥

अणप्पिदिंदियस्स सुहुमेइंदियअपज्जत्तएसु सव्वजहण्णकालमच्छिय अणप्पिदिंदियं गदस्स खुद्दाभवग्गहणुवलंभा।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ १२१ ॥

तं जहा—अणिंदिएहिंतो आगंतूण सुहुमेइंदिएसुप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तं तेसिमुक्कस्सभवट्ठिदिं तत्थ गमिय अणिंदियं गच्छदि। कुदो? हेउसरूवजिणवयणोवलंभादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमेइंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२२ ॥

सव्वद्धासु विरहाभावा । सो वि कथं णव्वदे ? अण्णहाणुववत्तिहेउलक्खणोवलक्खियजिणवयणादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२३ ॥

केम्महंतं ? तेसिं जहण्णाउट्ठिदिमेत्तं । एत्थ खुद्दाभवग्गहणं किण्ण लब्भदे ? ण, अपज्जत्ते मोत्तूण अण्णत्थ तस्स संभवाभावा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२४ ॥

एगाउट्ठिदी संखेज्जावलियमेत्ता त्ति कट्टु संखेज्जवारं वा तत्थेव पुणो पुणो उप्पज्जमाणस्स दिवस-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छरादिकालो किण्ण लब्भदे ? ण, तेत्तियवारं तत्थुप्पत्तीए असंभवा । सो वि कथं णव्वदे ? अंतोमुहुत्तवयणण्णहाणुववत्तीदो । कथं सज्झ-साहणाणमेयत्तं ? ण, पमाणेणाणेयंता । किंतु एगजीवजहण्णआउट्ठिदिकालादो तस्सेवुक्कस्सभवट्ठिदिकालो संखेज्जगुणो, णाणाआउट्ठिदिसमूहणिप्फण्णत्तादो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो परूविदत्तादो । कधमेग-बहुवयणाणमेगमहियरणं ? ण एस दोसो, सव्वत्थ दोण्हमण्णोण्णाविणाभावुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १२६ ॥

असंजदसम्मादिट्ठीणमवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो वि होंतो अंतोमुहुत्तमिदि सुत्ते णिद्दिट्ठो । एसो अपज्जत्ता-उट्ठिदी जहण्णिया संखेज्जावलियमेत्ता अंतोमुहुत्तमिदि सुत्ते किण्ण वुत्ता ? ण एस दोसो, पज्जत्ताउआदो अपज्जत्तजहण्णाउअं संखेज्जगुण-हीणमिदि पदुप्पायणट्ठं खुद्दाभवग्गहणस्सुवदेसा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२७ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो परूविदत्तादो ।

बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १२८ ॥

उवदेसेण विणा जाणिज्जदि त्ति सुगममेदं सुत्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, अंतोमुहुत्तं ॥ १२९ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो वि-ति-चउरिंदियाणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणं, तत्थ अपज्जत्ताणं संभवा। पज्जत्ताणं अंतोमुहुत्तं, तत्थ खुद्दाभवग्गहणस्स संभवाभावा।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ १३० ॥

तीइंदियाणमेगूणवण्णदिवसा उक्कस्साउट्ठिदिपमाणं, चउरिंदियाणं छम्मासा, बीइंदियाणं बारस वासा। जदो एवं, तदो संखेज्जाणि वाससहस्साणि त्ति ण घडदे ? ण एस दोसो, एदाओ एगाउट्ठिदीओ। एदाहि ण एत्थ कज्जमत्थि, भवट्ठिदीए अहियारादो। का भवट्ठिदी णाम ? आउट्ठिदिसमूहो। जदि एवं, तो असंखेज्जाणि वाससहस्साणि भवट्ठिदी किण्ण होदि ? ण एस दोसो, असंखेज्जवारं संखेज्जवाससहस्सविरोहिसंखेज्जवारं वा तत्थुप्पत्तीए संभवाभावा। अणप्पिदिंदिएहिंतो आगंतूण अप्पिदिंदिएसु उप्पज्जिय संखेज्जाणि चेव हिंडदि, असंखेज्जाणि ण परिभमदि त्ति वुत्तं होदि।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया अपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १३१ ॥

उवदेसेण विणा एदस्स सुत्तस्स अत्थो णव्वदे।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १३२ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १३३ ॥

एदं पि सुगमं चेव। णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण अंतरविरहिया असीदि-सट्ठि-चालीसअपज्जत्तभवा। जदि वि एत्तियवारमेगो जीवो तत्थतणुक्कस्सट्ठिदीए उप्पज्जदि, तो वि तब्भवट्ठिदिकालसमासो अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव। कथमेदं णव्वदे ? अंतोमुहुत्तुवदेसण्णहाणुववत्तीदो।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १३४ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जधा मूलोघम्हि मिच्छत्तस्स जहण्णकालपरूवणासुत्तस्स वुत्तो तहा वत्तव्वो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १३६ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पंचिंदियाणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि सागरोवमसहस्साणि, पंचिंदियपज्जत्ताणं सागरोवमसदपुधत्तं । एदस्सुदाहरणं—एक्को एइंदियादो विगलिंदियादो वा आगंतूण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु उववज्जिय सगट्ठिदिमच्छिय अणिंदियं गदो । एक्कस्सेव सागरोवमसहस्सस्स सुवंतब्भूदबहुत्तमवेक्खिय सागरोवमसहस्साणि त्ति सुत्ते बहुवयणणिद्देसो कदो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १३७ ॥

कुदो ? ओघादो णाणेगजीवसासणादिकालाणं भेदाभावा ।

पंचिंदियअपज्जत्ता बीइंदियअपज्जत्तभंगो ॥ १३८ ॥

णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिच्चाइणा भेदाभावा । णवरि पंचिंदियअपज्जत्तएसु णिरंतरुप्पज्जणभववारा चउवीस होंति । एवमिंदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १३९ ॥

कुदो ? सव्वद्धासु एदेसिं संताणस्स विच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १४० ॥

एदस्सुदाहरणं—एगो अणप्पिदकाइओ जीवो अप्पिदकाइएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णं कालमच्छिय अणप्पिदकाइयं गदो । लद्धो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणकालो ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ १४१ ॥

एदस्सुदाहरणं—एगो अणप्पिदकाइओ अप्पिदकाइएसु उप्पज्जिय सव्वुक्कस्सियं अप्पिदकाइयट्ठिदिमसंखेज्जलोगमेत्तं परिभमिय अणप्पिदकायं गदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १४२ ॥

कुदो ? सव्वकालमणुच्छिण्णसंताणत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १४३ ॥

एदस्सुदाहरणं–एगो अणप्पिदकाइओ अप्पिदकाइयअपज्जत्तएसु उववज्जिय सव्वजहण्णमाउट्ठिदिं गमिय अणप्पिदकाइएसु उववण्णो । लद्धो जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणकालो ।

उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी ॥ १४४ ॥

कम्मट्ठिदि त्ति वुत्ते किं सव्वेसिं कम्माणं ट्ठिदीओ घेप्पंति, आहो एक्कस्स चेय ट्ठिदी घेप्पदि त्ति ? सव्वकम्माणं ट्ठिदीओ ण घेप्पंति, किंतु एक्कस्सेव कम्मट्ठिदी घेप्पदि । कुदो ? गुरूवदेसादो । तत्थ वि दंसणमोहणीयस्स चेय उक्कस्सट्ठिदीए सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ताए गहणं कादव्वं, पाहण्णियादो । कुदो पहाणत्तं ? संगहिदासेसकम्मट्ठिदीए । के वि आइरिया कम्मट्ठिदीदो बादरट्ठिदी परियम्मे उप्पण्णा त्ति कज्जे कारणोवयारमवलंबिय बादरट्ठिदीए चेय कम्मट्ठिदिसण्णमिच्छंति, तन्न घटते, 'गौण-मुख्ययोर्मुख्ये संप्रत्यय' इति न्यायात् । ण च बादराणं सामण्णेण वुत्तकालो बादरेगदेसाणं बादरपुढविकाइयाणं पि सो चेव होदि त्ति, विरोहा । सामण्णबादरट्ठिदिमण्णपयोरेण परूविय संपहि बादरपुढविट्ठिदिं भण्णमाणे उवयारावलंबणे पओजणाभावा च । एदस्सुदाहरणं–अणप्पिदबादरकाइओ अप्पिबादरकाइएसु उप्पज्जिय तत्थ सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्तकालमच्छिय अणप्पिदबादरकाइयं गदो ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १४५ ॥

सव्वद्धासु एदेसिं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४६ ॥

एदस्सुदाहरणं–एगो अणप्पिदकाइओ अप्पिदकाइएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अणप्पिदकायं गदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ १४७ ॥

सुद्धपुढविजीवाणमाउट्ठिदिपमाणं वारह वस्ससहस्सा (१२०००), खरपुढविकाइयाणं वावीस वस्ससहस्सा (२२०००), आउकाइयपज्जत्ताणं सत्त वाससहस्सा (७०००), तेउकाइयपज्जत्ताणं तिण्णि दिवसा (३), वाउकाइयपज्जत्ताणं तिण्णि वाससहस्साणि (३०००), वणप्फइकाइयपज्जत्ताणं दस वाससहस्साणि (१००००) उक्कस्साउट्ठिदिपमाणं होदि । एदासु आउट्ठिदीसु संखेज्जसहस्सवारमुप्पण्णे संखेज्जाणि वाससहस्साणि होंति । उदाहरणं–एगो अणप्पिदकाइयो, अप्पिदकाइयपज्जत्तएसु उववण्णो । पुणो तम्हि चेव संखेज्जाणि वाससहस्साणि अच्छिय अणप्पिदकाइयं गदो ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १४८ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहणेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १४९ ॥

उदाहरणं—एगो अणप्पिदकाइओ अप्पिदकाइयअपज्जत्तएसु उववण्णो । तत्थ खुद्दाभवग्गहणमच्छिदूण अणप्पिदं काइयं गदो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५० ॥

उदाहरणं—एगो अणप्पिदकाइओ अप्पिदकाइएसु उप्पज्जिय सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तकालं तत्थ परिभमिय अण्णकायं गदो ।

सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणं भंगो ॥ १५१ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा । पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च अंतोमुहुत्तमिच्चेदेहि सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तेहि विसेसाभावा ।

वणप्फदिकाइयाणं एइंदियाणं भंगो ॥ १५२ ॥

कुदो णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टमिच्चेदेण एइंदिएहिंतो वणप्फदिकाइयाणं भेदाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिगोदजीवा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १५३ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १५४ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय ।

उक्कस्सेण अड्ढाइज्जादो पोग्गलपरियट्टं ॥ १५५ ॥

तं जहा–एगो अण्णकायादो आगंतूण णिगोदेसुववण्णो । तत्थ अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिदूण अण्णकायं गदो ।

बादरणिगोदजीवाणं बादरपुढविकाइयाणं भंगो ॥ १५६ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी इच्चेएण बादरणिगोदाणं बादरपुढविकाइएहिंतो भेदाभावा ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १५७ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५८ ॥

तसकाइयाणं तेसिं पज्जत्ताणं च जहण्णकालो अंतोमुहुत्तं । तसकाइयाणमंतोमुहुत्तमिदि अभणिय खुद्दाभवग्गहणं ति किण्ण वुत्तं ? ण, खुद्दाभवग्गहणं पेक्खिदूण जहण्णमिच्छत्तकालस्स थोवत्तादो । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, वे सागरोवमसहस्साणि ॥ १५९ ॥

तं जहा–दो जीवा थावरकायादो आगंतूण एगो तसकाइएसु, अण्णेगो तसकाइयपज्जत्तएसु उववण्णो । तत्थ जो सो तसकाइएसु उववण्णो सो पुव्वकोडिपुधत्तब्भहिय-वे-सागरोवमसहस्साणि तत्थ परिभमिय थावरकायं गदो । इदरो वि वे सागरोवमसहस्सं परिभमिय थावरं गदो, एत्तो उवरि तत्थच्छणसंभवाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ १६० ॥

कुदो ? ओघसासणादिसयलगुणट्ठाणाणं णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहिंतो तसकाइयतसकाइयपज्जत्तसासणादिसयलगुणट्ठाण-णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालाणं भेदाभावादो ।

तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो १६१ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-अपज्जत्तएसु जहाकमेण असीदि-सट्ठि-चालीस-चदुवीस-अणुबद्धभवेसु बहुसदवारपरियट्टणसंभूदअंतोमुहुत्तकालो इच्चेदेहि विसेसा-भावा । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा पमत्त-संजदा अप्पमत्तसंजदा सजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १६२ ॥

कुदो ? मणजोग-वचिजोगेहि परिणमणकालादो तदुवक्कमणकालंतरस्स थोवत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १६३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थणिच्छयसमुप्पायणट्ठं मिच्छादिट्ठिआदिगुणट्ठाणाणि अस्सिदूण एगसमयपरूवणा कीरदे । एत्थ ताव जोग-परावत्ति-गुणपरावत्ति-मरण-वाघादेहि मिच्छत्तगुणट्ठाणस्स एगसमओ परूविज्जदे । तं जधा—एक्को सासणो सम्मामिच्छादिट्ठी असं-जदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा मणजोगेण अच्छिदो । एगसमओ मणजोगद्धाए अत्थि त्ति मिच्छत्तं गदो । एगसमयं मणजोगेण सह मिच्छत्तं दिट्ठं । विदियसमए मिच्छादिट्ठी चेव, किंतु वचिजोगी कायजोगी वा जादो । एवं जोगपरावत्तीए पंचविहा एयसमयपरूवणा कदा । कथं समयभेदो ? सासणादिगुणट्ठाणपच्छाकधत्तेण । गुणपरावत्तीए एगसमओ वुच्चदे । तं जहा—एक्को मिच्छा-दिट्ठी वचिजोगेण कायजोगेण वा अच्छिदो । तस्स वचिकायजोगद्धासु खीणासु मणजोगो आगदो । मणजोगेण सह एगसमये मिच्छत्तं दिट्ठं । विदियसमए वि मणजोगी चेव । किंतु सम्मामिच्छत्तं वा असंजमेण सह सम्मत्तं वा संजमासंजमं वा अपमत्तभावेण संजमं वा पडिवण्णो । एवं गुणपरावत्तीए चउव्विहा एगसमयपरूवणा कदा । कथमेत्थ समयभेदो ? पडिवज्जमाणगुणभेएण । पुव्विल्ल-पंचसु समएसु संपहिलद्धचदुसमए पक्खित्ते णव भंगा होंति (९) । एक्को मिच्छादिट्ठी वचिजोगेण कायजोगेण वा अच्छिदो । तेसिं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खएण मणजोगो आगदो। एगसमयं मणजोगेण सह मिच्छत्तं दिट्ठं। विदियसमए मदो। जदि तिरिक्खेसु वा मणुसेसु वा उप्पण्णो, तो कम्मइयकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वा। अथ देव-णेरइएसु जइ उववण्णो तो कम्मइयकायजोगी वेउव्वियमिस्सकायजोगी वा जादो। एवं मरणेण लद्धएगभंगे पुव्विल्लणवभंगेसु पक्खित्ते दस भंगा होंति (१०)। वाघादेण एक्को मिच्छादिट्ठी वचिजोगेण कायजोगेण वा अच्छिदो। तेसिं वचि-कायजोगाणं खएण तस्स मणजोगो आगदो। एगसमयं मणजोगेण मिच्छत्तं दिट्ठं। विदियसमए वाघादिदो कायजोगी जादो। लद्धो एगसमओ। एदं पुव्विल्लदसभंगेसु पक्खित्ते एक्कारस भंगा (११)। एत्थ उववुज्जंती गाहा—

गुण-जोगपरावत्ती वाघादो मरणमिदि हु चत्तारि। जोगेसु होंति ण वरं पच्छिल्लदुगुणकमा जोगे॥ ३९॥ एदम्हि गुणट्ठाणे ट्ठिदजीवा इमं गुणट्ठाणं पडिवज्जंती, ण पडिवज्जंति त्ति णादूण, गुणपडिवण्णा वि इमं गुणट्ठाणं गच्छंति ण गच्छंति त्ति चिंतिय, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्तसंजदाणं च चउव्विहा एगसमयपरूवणा परूविदव्वा। एवमप्पमत्तसंजदाणं। णवरि वाघादेण विणा तिविधा एगसमयपरूवणा कादव्वा। किमट्ठं वाघादो णत्थि? अप्पमाद-वाघादाणं सहअणवट्ठाणलक्खणविरोहा। सजोगिकेवलिस्स एगसमयपरूवणा कीरदे। तं जहा—एक्को खीणकसाओ मणजोगेण अच्छिदो मणजोगद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति सजोगी जादो। एगसमयं मणजोगेण दिट्ठो सजोगिकेवली विदियसमए वचिजोगी वा जादो। एवं चदुसु मणजोगेसु पंचसु वचिजोगेसु पुव्वुत्तगुणट्ठाणाणं एगसमयपरूवणा कादव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं॥ १६४॥

तं जधा—मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो अप्पमत्तसंजदो सजोगिकेवली वा अणप्पिदजोगे ट्ठिदो अद्धाक्खएण अप्पिदजोगं गदो। तत्थ तप्पाओग्गुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अणप्पिदजोगं गदो।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं॥ १६५॥

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ; इच्चेदेहि पंचमणवचिजोगसासणाणं ओघसासणेहिंतो भेदाभावा। एत्थ वि जोग-गुणपरावत्ति-मरण-वाघादेहि समयाविरोहेण एगसमयपरूवणा कायव्वा।

सम्मामिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं॥ १६६॥

उदाहरणं—सत्तट्ठ जणा बहुगा वा मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा वा अप्पिदमण-वचिजोगेसु ट्ठिदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अप्पिदजोगद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति सम्मामिच्छत्तं गदा। एगसमयमप्पिदजोगेण सह दिट्ठा, विदियसमए सव्वे अणप्पिदजोगं गदा। एवं मरणेण विणा जोग-गुणपरावत्ति वाघादेहि एगसमयपरूवणा चिंतिय वत्तव्वा।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६७ ॥

कुदो ? अप्पिदजोगेण सहिदसम्मामिच्छादिट्ठीणं पवाहस्स अच्छिण्णरूवस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागायामस्सुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १६८ ॥

एत्थ वि मरणेण विणा गुण-जोगपरावत्ति-वाघादे अस्सिदूण एगसमयपरूवणा जाणिय वत्तव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १६९ ॥

उदाहरणं—एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी अणप्पिदजोगे ट्ठिदो अप्पिदजोगं पडिवण्णो। तत्थ तप्पाओग्गुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अणप्पिदजोगं गदो। लद्धमंतोमुहुत्तं।

चदुण्हमुवसमा चदुण्हं खवगा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७० ॥

उवसामगाणं वाघादेण विणा जोग-गुणपरावत्ति-मरणेहि णाणाजीवे अस्सिदूण एगसमयपरूवणा कादव्वा। खवगाणं मरण-वाघादेहि विणा जोग-गुणपरावत्तीओ दो चेव अस्सिदूण एगसमयपरूवणा परूवेदव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७१ ॥

तं जधा—चत्तारि उवसामगा चत्तारि खवगा च अणप्पिदजोगे ट्ठिदा अद्धाक्खएण अप्पिदजोगं गदा। तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो वि अणप्पिदजोगं पडिवण्णा। लद्धमंतोमुहुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७२ ॥

एत्थ एगसमयपरूवणा खवगुवसामगाणं दोहि तीहि पयारेण जाणिय वत्तव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७३ ॥

एत्थ अंतोमुहुत्तपरूवणा जाणिय वत्तव्वा। एत्थ एगसमयवियप्पपरूवणट्ठं गाहा—एक्कारस छ सत्त य एक्कारस दस य णव य अट्ठ वा। पण पंच पंच तिण्णि य दु दु दु दु एगो य समयगणा ॥ ४१ ॥ ११, ६, ७, ११, १०, ९, ८, ५, ५, ५, ३, २, २, २, २, १।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कायजोगीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १७४ ॥

कुदो ? सव्वद्धासु कायजोगिमिच्छादिट्ठीणं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७५ ॥

तं जहा—एगो सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा कायजोगद्धाए अच्छिदो । तिस्से एगसमयावसेसे मिच्छादिट्ठी जादो । कायजोगेण एगसमयं मिच्छत्तं दिट्ठं । विदियसमए अण्णजोगं गदो । अथवा मणवचिजोगेसु अच्छिदस्स मिच्छादिट्ठिस्स तेसिमद्धाक्खएण कायजोगो आगदो । एगसमयं कायजोगेण सह मिच्छत्तं दिट्ठं । विदियसमए सम्मामिच्छत्तं वा असंजमेण सह सम्मत्तं वा संजमासंजमं अप्पमत्तभावेण संजमं वा पडिवण्णो । लद्धो एगसमओ । एत्थ मरण-वाघादेहि एगसमओ णत्थि । कुदो ? मुदे वाघादिदे वि कायजोगं मोत्तूण अण्णजोगाभावा ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टं ॥ १७६ ॥

तं जहा—एगो मिच्छादिट्ठी मण-वचिजोगेसु अच्छिदो अद्धाखएण कायजोगी जादो, सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिदूण एइंदिएसु उप्पण्णो । तत्थ अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं कायजोगेण सह परियट्टिदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टेसुप्पण्णेसु तसेसु आगंतूण सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय वचिजोगी जादो । लद्धो कायजोगस्स उक्कस्सकालो ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति मणजोगिभंगो ॥ १७७ ॥

एदं सुत्तं सुगमं, मणजोगे णिरुद्धे पवंचेण परूविदत्तादो । णवरि मरण-वाघादा सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं णत्थि । सासणसम्मादिट्ठी-संजदासंजद-पमत्तसंजदाणं वाघादेण एगसमओ णत्थि, मरणेण पुण अत्थि ।

ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १७८ ॥

कुदो ? ओरालियकायजोगिमिच्छादिट्ठिसंताणस्स सव्वद्धासु वोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७९ ॥

एत्थ मरण-गुण-जोगपरावत्तीहि एगसमयो परूवेदव्वो । वाघादेण एगसमओ ण लब्भदि, तस्स कायजोगाविणाभावित्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण वावीसं वाससहस्साणि देसूणाणि ॥ १८० ॥

तं जहा—एगो तिरिक्खो मणुस्सो देवो वा वावीससहस्सवासाउट्ठिदिएसु एइंदिएसु उववण्णो । सव्वजहण्णेण अंतोमुहुत्तकालेण पज्जत्तिं गदो । ओरालियमिस्सअपज्जत्तकालेणूणवावीसवाससहस्साणि ओरालियकायजोगेण अच्छिय अण्णजोगं गदो । एवं देसूणवावीसवाससहस्साणि जादाणि । अथवा देवो ण उप्पादेदव्वो, तस्स जहण्णअपज्जत्तकालाणुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति मणजोगिभंगो ॥ १८१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, पुव्वं परूविदत्तादो । णवरि वाघादेण एत्थ एगसमयपरूवणा परूवेदव्वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १८२ ॥

कुदो ? ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठिसंताणवोच्छेदस्स सव्वद्धासु अभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं ॥ १८३ ॥

तं जहा—एगो एइंदिओ सुहुमवाउकाइएसु अधोलोगंते ट्ठिएसु खुद्दाभवग्गहणाउट्ठिदिएसु तिण्णि विग्गहे काऊण उववण्णो । तत्थ तिसमऊणखुद्दाभवग्गहणमपज्जत्तो होदूण जीविय मदो, विग्गहं कादूण कम्मइयकायजोगी जादो । एवं तिसमऊणखुद्दाभवग्गहणमोरालियमिस्सजहण्णकालो जादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८४ ॥

तं जहा—अपज्जत्तएसु उववज्जिय संखेज्जाणि भवग्गहणाणि तत्थ परियट्टिय पुणो पज्जत्तएसु उववज्जिय ओरालियकायजोगी जादो । एदाओ संखेज्जभवग्गहणद्धाओ मिलिदाओ वि मुहुत्तस्संतो चेव होंति ।

सासणसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १८५ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सासणा सगद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । एगसमयमच्छिदूण विदियसमए मिच्छत्तं गदा । लद्धो ओरालियमिस्सेण सासणाणमेगसमओ ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८६ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सासणा ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । सासणगुणेण अंतोमुहुत्तमच्छिय ते मिच्छत्तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गदा । तस्समए चेय अण्णे सासणा ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । एवमेक्क-दो-तिण्णि आदिं कादूण जाव उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवारं सासणा ओरालियमिस्सकायजोगं पडिवज्जावेदव्वा । तदो णियमा अंतरं होदि । एवमेस कालो मेलाविदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १८७ ॥

तं जधा—एक्को सासणो सगद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति ओरालियमिस्सकायजोगी जादो । विदियसमए मिच्छत्तं गदो । लद्धो एगसमओ ।

उक्कस्सेण छ आवलियाओ समऊणाओ ॥ १८८ ॥

तं जधा—देवो वा णेरइओ वा उवसमसम्मादिट्ठी उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो। एगसमयमच्छिय कालं करिय तिरिक्ख-मणुस्सेसु उजुगदीए उववज्जिय ओरालियमिस्सकायजोगी जादो। समऊण-छ-आवलियाओ अच्छिय मिच्छत्तं गदो।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८९ ॥

तं जधा—सत्तट्ठ जणा बहुगा वा असंजदसम्मादिट्ठिणो णेरइया ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । सव्वलहुं पज्जत्तिं गदा, बहुसागरोवमाणि पुव्वं दुक्खेण सह ट्ठिदत्तादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९० ॥

तं जधा—देव-णेरइया मणुस्सा सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सम्मादिट्ठिणो ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । ते पज्जत्तिं गदा । तस्समए चेव अण्णे असंजदसम्मादिट्ठिणो ओरालियमिस्सकायजोगिणो जादा । एवमेक्क-दो-तिण्णि जावुक्कस्सेण संखेज्जवारा त्ति । एदाहि संखेज्जसलागाहि एगमपज्जत्तद्धं गुणिदे एगमुहुत्तस्स अंतो चेव जेण होदि, तेण अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९१ ॥

तं जधा—एक्को सम्मादिट्ठी वावीस सागरोवमाणि दुक्खेक्करसो होदूण जीविदो । छट्ठीदो उव्वट्टिय मणुसेसु उप्पण्णो । विग्गहगदीए तस्स सम्मत्तमाहप्पेण उववज्जिदपुण्णपोग्गलस्स ओरालियणामकम्मोदएण सुअंध-सुरस-सुवण्ण-सुहपासपरमाणुपोग्गलबहुला आगच्छंति, तस्स जोगबहुत्तदंसणादो । एदस्स जहण्णिया ओरालियमिस्सकायजोगस्स अद्धा होदि । ॥४९८॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९२ ॥

एदं कस्स होदि ? सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवस्स तेत्तीस सागरोवमाणि सुहलालियस्स पमुट्ठदुक्खस्स माणुसगब्भे गूह-मुत्तंत-पित्त-खरिस-वस-सेंभ-लोहि-सुक्कामाट्टिदे अइदुग्गंधे दूरसे दुव्वण्णे दुप्पासे चमारकुंडोपमे उप्पण्णस्स, तत्थ मंदो जोगो होदि त्ति आइरियपरंपरागदुवदेसा। मंदजोगेण थोवे पोग्गले गेण्हंतस्स ओरालियमिस्सद्धा दीहा होदि त्ति उत्तं होदि। अथवा जोगो एत्थ महल्लो चेव होदु, जोगवसेण बहुआ पोग्गला आगच्छंतु, तो वि एदस्स दीहा अपज्जत्तद्धा होदि, विलिसाए दूसियस्स लहुं पज्जत्तिसमाणणे असामत्थियादो।

सजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १९३ ॥

एसो एगसमओ कस्स होदि ? सत्तट्ठजणाणं दंडादो कवाडं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय रुजगं गदाणं, रुजगादो कवाडं गंतूण एगसमयमच्छिय दंडं गदकेवलीणं वा।

उक्कस्सेण संखेज्जसमयं ॥ १९४ ॥

एदे संखेज्जसमया कम्हि होंति ? कवाडे चडण-ओयरणकिरियावावददंड-पदरपज्जायपरिणदसंखेज्जकेवलीहि संखेज्जसमयपंतीए ट्ठिदेहि अधिउत्तेहि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ ॥ १९५ ॥

एसो कम्हि होदि ? कवाडगदकेवलिम्हि चडणोदरणकिरियावावददंड-पदरपज्जयपरिणदकेवलीहिंतो आगदम्हि। बहुआ समया किण्ण होंति ? ण, कवाडम्हि एगसमयं मोत्तूण बहुसमयमच्छणाभावा। कथमेक्कस्सेव जहण्णुक्कस्सववएसो ? ण एस दोसो, कणिट्ठो वि जेट्ठो वि एसो चेव मम पुत्तो त्ति लोगे ववहारुवलंभा।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ १९६ ॥

कुदो ? सव्वद्धासु वेउव्वियकायजोगिमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिसंताणवोच्छेदाभावा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १९७ ॥

तं जहा—एगो मिच्छादिट्ठी मण-वचिजोगेसु अच्छिदो अद्धाखएण वेउव्वियकायजोगी जादो। एगसमयं वेउव्वियकायजोगेण

॥४९९॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दिट्ठो। विदियसमए मदो अण्णजोगं गदो। मरणेण विणा सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा जादो। अथवा सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा वेउव्वियकायजोगद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति मिच्छादिट्ठी जादो। विदियसमए अण्णजोगं गदो। वाघादेण एगसमओ णत्थि, णिरुद्धकायजोगादो। एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स वि एगसमयपरूवणा तीहि पयारेहि कायव्वा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९८ ॥

तं जहा—मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देवा णेरइया वा मण-वचिजोगेसु ट्ठिदा कायजोगिणो जादा। सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अण्णजोगिणो जादा। लद्धमंतोमुहुत्तं।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ १९९ ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेदेहि ओघसासणादो भेदाभावा।

सम्मामिच्छादिट्ठीणं मणजोगिभंगो ॥ २०० ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिच्चेएण मणजोगिसम्मामिच्छादिट्ठीहिंतो वेउव्वियकायजोगिसम्मामिच्छादिट्ठीणं विसेसाभावा।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०१ ॥

एत्थ ताव मिच्छादिट्ठिस्स जहण्णकालो वुच्चदे—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा दव्वलिंगिणो उवरिमगेवज्जेसु उववण्णा सव्वलहुमंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदा। संपहि सम्मादिट्ठीणं वुच्चदे—संखेज्जा संजदा सव्वट्ठदेवेसु दो विग्गहं कादूण उववण्णा। किमट्ठं दो विग्गहे कराविदा ? बहुपोग्गलग्गहणट्ठं। तं पि किमट्ठं ? थोवकालेण पज्जत्तिसमाणट्ठं। मिच्छादिट्ठी दो विग्गहे किण्ण कराविदो ? ण, तत्थ वि पडिसेहाभावा।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०२ ॥

सत्तट्ठ जणा उक्कस्सेण असंखेज्जसेढिमेत्ता वा मिच्छादिट्ठिणो देव-णेरइएसु उववज्जिय वेउव्वियमिस्सकायजोगिणो जादा, अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदा। तस्समए चेव अण्णे मिच्छादिट्ठिणो वेउव्वियमिस्सकायजोगिणो जादा। एवमेक्क-दो-तिण्णि उक्कस्सेण पलिदो-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सलागाओ लब्भंति । एदाहि वेउव्वियमिस्सद्धं गुणिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो वेउव्वियमिस्स कालो होदि । असंजदसम्मादिट्ठीणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि एदे एगसमएण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो उक्कस्सेण उप्पज्जंति, रासीदो वेउव्वियमिस्सकालो असंखेज्जगुणो । तं कथं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो । देवलोए उप्पज्जमाणसम्मादिट्ठीहिंतो देव-णेरइएसु उप्पज्जमाणमिच्छादिट्ठी असंखेज्जसेढिगुणिदमेत्ता होंति त्ति कालो वि तावदिगुणो किण्ण होदि त्ति वुत्ते, ण होदि, उहयत्थ वेउव्वियमिस्सद्धासलागाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवदेसा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०३ ॥

तं जहा—एक्को दव्वलिंगी उवरिमगेवेज्जेसु दो विग्गहे कादूण उववण्णो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदो । सम्मादिट्ठी एक्को संजदो सव्वट्ठदेवेसु दो विग्गहे कादूण उववण्णो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०४ ॥

तं जहा—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा मिच्छादिट्ठी सत्तमपुढविणेरइएसु उववण्णो सव्वचिरेण अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदो । सम्मादिट्ठिस्स—एक्को बद्धणिरयाउओ सम्मत्तं पडिवज्जिय दंसणमोहणीयं खविय पढमपुढविणेरइएसु उववज्जिय सव्वचिरेण अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदो । दोण्हं जहण्णकालेहिंतो उक्कस्सकाला दो वि संखेज्जगुणा । कथमेदं णव्वदे ? गुरूवदेसादो ।

सासणसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २०५ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सासणसम्मादिट्ठिणो सगद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति देवेसु उववण्णा । विदियसमए सव्वे मिच्छत्तं गदा । लद्धो एगसमओ ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०६ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा जावुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा एक्क-वे-तिण्णि समए आदिं कादूण जाव उक्कस्सेण समऊण-छ-आवलियाओ सासणद्धा अत्थि त्ति देवेसु उववण्णा । ते सव्वे कमेण मिच्छत्तं गदा । तस्समए चेव पुव्वं व सासणा देवेसुववण्णा । एवं णिरंतरं णाणाजीवे अस्सिदूण सासणद्धा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता सगरासीदो असंखेज्जगुणा जादा त्ति ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २०७ ॥

तं जधा—एक्को सासणो सगद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति देवेसुववण्णो, विदियसमए मिच्छत्तं गदो। लद्धो एगसमओ।

उक्कस्सेण छ आवलियाओ समऊणाओ ॥ २०८ ॥

तं जहा—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति आसणं गंतूण एगसमयमच्छिय उजुगदीए देवेसुववज्जिय समऊण-छ-आवलियाओ आसणेणच्छिय मिच्छत्तं गदो।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २०९ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा पमत्तसंजदा मणजोगेण वचिजोगेण वा अच्छिदा सगद्धाए खीणाए आहारकायजोगिणो जादा। विदियसमए मुदा, मूलसरीरं वा पविट्ठा। लद्धो एगसमओ। एत्थ वाघाद-गुणपरावत्तीहि एगो समओ ण लब्भदि।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१० ॥

तं जहा—आहारसरीरमुट्ठाविदपमत्तसंजदा मण-वचिजोगट्ठिदा आहारकायजोगिणो जादा। जाधे ते जोगंतरं गदा, ताधे चेव अण्णे आहारकायजोगं पडिवण्णा। एवमेगादि एगुत्तरवड्ढीए संखेज्जसलागाओ लब्भंति। एदाहि एगं कायजोगद्धं गुणिदे आहारकायजोगद्धा उक्कस्सिया अंतोमुहुत्तपमाणा होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ २११ ॥

तं जधा—एक्को पमत्तसंजदो मणजोगे वचिजोगे वा अच्छिदो आहारकायजोगं गदो। विदियसमए मदो, मूलसरीरं वा पविट्ठो।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१२ ॥

तं जधा—मणजोगे वचिजोगे वा ट्ठिदपमत्तसंजदो आहारकायजोगं गदो, सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अण्णजोगं गदो।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१३ ॥

तं जधा—सत्तट्ठ जणा पमत्तसंजदा दिट्ठमग्गा आहारमिस्सजोगिणो जादा, सव्वलहुमंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदा। एवं जहण्णकालो परूविदो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१४ ॥

तं जधा—सत्तट्ठ जणा पमत्तसंजदा दिट्ठमग्गा अदिट्ठमग्गा वा आहारमिस्सकायजोगिणो जादा, अंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदा। तस्समए चेव अण्णे आहारमिस्सकायजोगिणो जादा। एवमेक्क-दो-तिण्णि जाव संखेज्जसलागा जादा त्ति कादव्वं। पुणो एदाहि सलागाहि आहारमिस्सकायजोगद्धं गुणिदे आहारमिस्सकायजोगस्स उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१५ ॥

तं जधा—एक्को पमत्तसंजदो पुव्वमणेगवारमुट्ठाविदआहारसरीरो आहारमिस्सकायजोगी जादो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तेण पज्जत्तिं गदो। लद्धो जहण्णकालो।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१६ ॥

तं जधा—एक्को पमत्तसंजदो अदिट्ठमग्गो आहारमिस्सो जादो। सव्वचिरेण अंतोमुहुत्तेण जहण्णकालादो संखेज्जगुणेण पज्जत्तिं गदो।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २१७ ॥

कुदो ? विग्गहगदीए वट्टमाणजीवाणं सव्वद्धासु विरहाभावादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २१८ ॥

तं जहा—एगो मिच्छादिट्ठी विग्गहगदिणामकम्मवसेण एगविग्गहे मारणंतियं गदो। पुणो अंतोमुहुत्तेण छिण्णाउओ होदूण बद्धाउवसेण उप्पण्णपढमसमए कम्मइयकायजोगी जादो। विदियसमए ओरालियमिस्सं वेउव्वियमिस्सं वा गदो। लद्धो एगसमओ।

उक्कस्सेण तिण्णि समया ॥ २१९ ॥

तं जधा—एगो सुहुमेइंदियो अहो सुहुमवाउकाइएसु तिण्णि विग्गहं मारणंतियं गदो। अंतोमुहुत्तेण छिण्णाउओ होदूण उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि तिसु विग्गहेसु तिण्णि समयं कम्मइयजोगी होदूण चउत्थसमए ओरालियमिस्सं गदो। सुहुमेइंदियाणं सुहुमेइंदिएसु उप्पज्जमाणाणं तिण्णि विग्गहा होंति त्ति णियमो कधं णव्वदे ? णत्थि एत्थ णियमो, किंतु संभवं पडुच्च सुहुमेइंदियग्गहणं कदं। बादरेइंदिया सुहुमेइंदिया तसकाया वा सुहुमेइंदिएसु उववज्जमाणा तिण्णि विग्गहे करेंति त्ति एस णियमो घेत्तव्वो, आइरियपरंपरागदत्तादो। तिण्णिविग्गहाकरणदिसा वुच्चदे—बम्हलोगुद्देसे वामदिसालोगपेरंतादो तिरिच्छेण दक्खिणं तिण्णि रज्जुमेत्तं गंतूण तदो साद्धदसरज्जूणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अधो कंडुज्जुवं गंतूण तदो संमुहं चदुरज्जुमेत्तं आगंतूण पुणो तिरिच्छेण चदुरज्जुमेत्तं गंतूण कोणदिसाठिदलोगपेरंतसुहुमवाउकाइएसु उप्पज्जमाणस्स तिण्णि विग्गहा होंति ।

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ?
णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२० ॥

तं जधा—सासणसम्मादिट्ठी-असंजदसम्मादिट्ठी एगविग्गहं कादूणुप्पण्णपढमसमए एगसमओ कम्मइयकायजोगेण लब्भदि ।

उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥ २२१ ॥

तं जधा—सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दोण्णि विग्गहं कादूण बद्धाउवसेणुप्पज्जिय दोण्णि समए अच्छिय ओरालियमिस्सं वेउव्वियमिस्सं वा गदा । तस्समए चेव अण्णे कम्मइयकायजोगिणो जादा । एवमेगं कंडयं कादूण एरिसाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तं कंडयाणि होंति । एदाणं सलागाहि दोण्णि समए गुणिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो कम्मइयकायजोगस्स उक्कस्सकालो होदि ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२२ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

उक्कस्सेण वे समयं ॥ २२३ ॥

कुदो ? एदेसिं सुहुमेइंदिएसु उप्पत्तीए अभावा, वड्ढि-हाणिकमेण ट्ठिदलोगंते उप्पत्तीए अभावादो च ।

सजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण तिण्णि समयं ॥ २२४ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा वा सजोगिणो समगं कवाडं गदा, पदर-लोगपूरणं गंतूण भूओ पदरं गंतूण तिण्णि समयं कम्मइयकायजोगिणो होदूण कवाडं गदा ।

उक्कस्सेण संखेज्जसमयं ॥ २२५ ॥

कुदो ? तिण्णि समइयं कंडयं काऊण संखेज्जकंडयाणमुवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण तिण्णि समयं ॥ २२६ ॥

कुदो ? पदरादो लोगपूरणादो वा कवाडस्स गमणाभावा । एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २२७ ॥

कुदो ? सव्वद्धासु इत्थिवेदमिच्छादिट्ठीणं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २२८ ॥

तं जहा—एक्को इत्थिवेदगो सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा परिणामपच्चएण मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णकालमच्छिय अण्णगुणं गदो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं ॥ २२९ ॥

तं जहा—एक्को अणप्पिदवेदो इत्थिवेदेसु उववण्णो । पुणो तत्थ इत्थिवेदेण पलिदोवमसदपुधत्तं परियट्टिय अणप्पिदवेदं गदो ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २३० ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण रासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेएण ओघादो विसेसाभावा ओघमिदि वुत्तं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २३१ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सगरासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, इच्चेदेण ओघादो भेदाभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २३२ ॥

कुदो ? इत्थिवेदम्हि असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदकालाणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३३ ॥

तं जहा—एगो मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा इत्थिवेदगो परिणामपच्चएण असंजदसम्मादिट्ठी होदूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय जहण्णकालाविरोहेण गुणंतरं गदो । लद्धो जहण्णकालो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण पणवण्णपलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ २३४ ॥

कुदो ? अणप्पिदवेदस्स पणवण्णपलिदोवमाउट्ठिदिदेवीसु उववज्जिय छ पज्जत्तीओ समाणिय अंतोमुहुत्तं विस्समिय पुणो अंतोमुहुत्तं विसुद्धो होदूण वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय सम्मत्तेण आउट्ठिदिमणुपालिय कालं कादूण पुरिसवेदं पडिवण्णस्स तीहिं अंतोमुहुत्तेहि ऊणपणवण्णपलिदोवमुवलंभा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ २३५ ॥

कुदो ? ओघं पेक्खिदूण उत्तगुणट्ठाणाणं भेदाभावा । णवरि संजदासंजदउक्कस्सकालम्हि अत्थि विसेसो । तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ त्थीवेदेसु कुक्कुडमक्कडादिसु उववज्जिय वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिप्फिडिय मुहुत्तपुधत्तस्सुवरि सम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं घेत्तूण वेमासमुहुत्तपुधत्तूणपुव्वकोडिं संजमासंजममणुपालिय मदो देवो जादो त्ति । ओघम्हि पुण अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडिसंजदासंजदउक्कस्सकालो सण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तमच्छ-कच्छव-मंडूकादिसु लद्धो, एत्थ सो ण लब्भदि, सम्मुच्छिमेसु इत्थिवेदाभावा ।

पुरिसवेदएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २३६ ॥

तिसु वि अद्धासु पुरिसवेदमिच्छादिट्ठीणं विरहासंभवा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३७ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स पमत्तसंजदस्स वा दिट्ठमग्गस्स मिच्छादिट्ठी होदूण सव्वजहण्णमच्छिय गुणंतरं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तुवलंभा ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ २३८ ॥

एदस्सुदाहरणं— एक्को त्थी-णवुंसयवेदेसु बहुवारं परियट्टिदजीवो पुरिसवेदेसु उववण्णो । पुरिसवेदो होदूण सागरोवमसदपुधत्तं परिभमिय अणप्पिदवेदं गदो । तिसदमादिं करिय जाव णवसदं ति एदिस्से संखाए सदपुधत्तमिदि सण्णा ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ २३९ ॥

कुदो ? एदेसिं उत्तगुणट्ठाणाणं णाणेगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सकालेहि ओघादो भेदाभावा । णवरि संजदासंजदाणमित्थिवेदभंगो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णवुंसयवेदेसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २४० ॥

कुदो ? सव्वद्धासु एदेसिं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४१ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छादिट्ठिस्स असंजदसम्मादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स संजदस्स वा मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णद्धमच्छिय गुणंतरं गदस्स अंतोमुहुत्तुवलंभा ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २४२ ॥

एदस्सुदाहरणं—एक्को परिभमिदित्थीपुरिसवेदट्ठिदिगो णवुंसयवेदं पडिवज्जिय तमच्छंडंतो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परिभमिय अण्णवेदं गदो ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २४३ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २४४ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २४५ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४६ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स संजदस्स वा दिट्ठमग्गस्स असंजदसम्मत्तं पडिवज्जिय सव्वजहण्णद्धमच्छिय गुणंतरं गदस्संतोमुहुत्तुवलंभा ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २४७ ॥

कुदो ? अट्ठावीससंतकम्मगस्स सत्तमपुढवीए उप्पज्जिय छ पज्जत्तीओ समाणिय विस्समिय विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवज्जिय अंतोमुहुत्तावसेसे आउए मिच्छत्तं गंतूण आउअं बंधिय अंतोमुहुत्तं विस्समिय णिग्गदस्स छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणतेत्तीससागरोवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजदासंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ २४८ ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि ओघादो विसेसाभावा ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ २४९ ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि ओघादो विसेसाभावा । एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोहकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति मणजोगिभंगो ॥ २५० ॥

कुदो ? दव्वट्ठियणयावलंबणा । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं वत्तइस्सामो । तं जहा—कोधकसाई मिच्छादिट्ठी एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं । एत्थ कसाय, गुणपरावत्ति-मरणेहि एगसमओ वत्तव्वो । वाघादेण एगसमओ ण लब्भदि, कोधस्सेव तत्थुप्पत्तीदो । तं जहा—एक्को सासणो सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा कोधकसाई एगसमयं कोधकसायद्धा अत्थि त्ति मिच्छत्तं गदो । एगसमयं कोधेण मिच्छत्तं दिट्ठं । विदियसमए अण्णकसायं गदो । एसा कसायपरावत्ती । एक्को मिच्छादिट्ठी अण्णकसाएणच्छिदो, तस्स अद्धाक्खएण कोधकसाओ आगदो, एगसमयं कोहेण सह दिट्ठो । विदियसमए सम्मामिच्छत्तं असंजदसम्मत्तं संजमासंजमं अप्पमत्तभावेण संजमं वा पडिवण्णो । एसा गुणपरावत्ती । एक्को मिच्छादिट्ठी अण्णकसाएणच्छिदो, तस्सद्धाक्खएण कोहकसाई जादो । एगसमयं कोहेण सह दिट्ठो । विदियसमए मदो अण्णकसाएसु उववण्णो । एसो मरणेण एगसमओ । कोहेण मदो णिरयगदीएण उप्पादेदव्वो, तत्थुप्पण्णजीवाणं पढमं कोधोदयस्सुवलंभा । माणेण मदो मणुसगदीएण उप्पादेदव्वो, तत्थुप्पण्णाणं पढमसमए माणोदयणियमोवदेसा । मायाए मदो तिरिक्खगईएण उप्पादेदव्वो, तत्थुप्पण्णाणं पढमसमए माओदयणियमोवदेसा । लोभेण मदो देवगदीएण उप्पादेदव्वो, तत्थुप्पण्णाणं पढमं चेय लोहोदओ होदि त्ति आइरियपरंपरागदुवदेसा । एवं सेसगुणट्ठाणाणं पि णादूण वत्तव्वं । एवं माण-माया लोभाणं वत्तव्वं । णवरि कसाय-गुणपरावत्ति-मरण-वाघादेहि चउहि वि एगसमयपरूवणा वत्तव्वा ।

दोण्णि तिण्णि उवसमा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २५१ ॥

तिसु वि कसाएसु दोण्हि उवसामगा, अणियट्टीदो उवरि तिण्हं कसायाणमभावा । लोभकसाए तिण्णि उवसामगा, उवसंतकसाए लोभोदयाभावा । एदेसिं कसायपरावत्ति-गुणपरावत्ति-वाघादेहि एगसमओ णत्थि । कुदो ? तहाविहुवएसाभावा । किंतु अणियट्टि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमसांपराइयाणं चढंत-ओयरंत-पढमसमए मदाणं एगसमओ लब्भइ। अपुव्वस्स पुण ओयरंतस्स पढमसमए चेव। कुदो? चढमाणअपुव्वस्स पढमसमए मरणाभावा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५२ ॥

कुदो? चढंत-ओयरंतपज्जयपरिणदजीवेहि अंतोमुहुत्तकालं एदेसिं गुणट्ठाणाणमसुण्णत्तुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २५३ ॥

कुदो? तिण्हमुवसामगाणं मरणेण एगसमओवलंभा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५४ ॥

कुदो? कसायाणमुदयस्स अंतोमुहुत्तादो उवरि णिच्छएण विणासो होदि त्ति गुरूवदेसा।

दोण्णि तिण्णि खवा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५५ ॥

एत्थ एगसमओ किण्ण लब्भदे? उच्चदे—ण ताव कसायपरावत्तीए एगसमओ लब्भदि, खवगुवसामगेसु कसायुदयस्स जहण्णकालस्स वि अंतोमुहुत्तपरिमाणुवदेसा। ण गुणपरावत्तीए वि एगसमओ, एगसमइयस्स कसायुदयस्स खवगुवसमसेढीसु अभावा। ण वाघादेण, खवगुवसमसेढीसु वाघादस्स पडिसेहा। ण मरणेण वि, खवगेसु मरणाभावा। तदो जहण्णकालेण णिच्छएण अंतोमुहुत्तेण होदव्वमिदि।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५६ ॥

कमेण अंतोमुहुत्तंतरेण खवगसेढिं चढमाणबहुजीवे अस्सिदूण जहण्णकालादो संखेज्जगुणकालुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५७ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकसाईसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ २५९ ॥

कुदो ? सव्वेण वि पयारेण णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालगदविसेसाभावा । एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि–सुदअण्णाणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २६० ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणमिच्चेएण ओघादो भेदाभावा । अणादिअणिहण-अणादिसणिहण-मदि-सुदअण्णाणी वि अत्थि, किंतु तेहि एत्थ अणहियारो ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २६१ ॥

कुदो ? मदि-सुदअण्णाणविरहिदसासणाणमभावा ।

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २६२ ॥

कुदो ? विभंगणाणिमिच्छादिट्ठीणं तिसु वि कालेसु संताणवोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २६३ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स वा दिट्ठमग्गस्स मिच्छत्तं पडिवज्जिय सव्वजहण्णद्धमच्छिय गुणंतरं गदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तविभंगणाणकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २६४ ॥

उदाहरणं–एक्को मिच्छादिट्ठी सत्तमाए पुढवीए उववज्जिय छ पज्जत्तीओ समाणिय विभंगणाणी जादो । अप्पणो आउट्ठिदिमणुपालिय कालं काऊण णिग्गयस्स णट्ठं विभंगणाणं, अपज्जत्तद्धाए तस्स विरोहा । एवमंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि विभंगणाणस्स उक्कस्सकालो होदि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २६५ ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सगरासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेएण ओघादो भेदाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओधिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ २६६ ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि एदेसिं ओघादो विसेसाभावा । णवरि ओधिणाणिसंजदासंजदेगजीवुक्कस्सकालम्हि अत्थि विसेसो । तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो संजमासंजमं पडिवज्जिय मदि-सुदणाणी जादो । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण ओधिणाणमुप्पादेदि । एत्तिओ चेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ २६७ ॥

कुदो ? पमत्तापमत्तसंजदाणमुवसामगाणं खवगाणं च णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि ओघादो भेदाभावा ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ २६८ ॥

कुदो ? केवलणाणविरहिदसजोगि-अजोगिकेवलीणमभावा । एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ २६९ ॥

सामण्णसंजमे अवलंबिदे विसेसाणुवलद्धीदो ।

सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ २७० ॥

कुदो ? पमत्तापमत्ताणं णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । दोण्हमुवसामगाणं जहण्णेण णाणेगजीवं पडुच्च एगो समओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, दोण्हं खवगाणं णाणेगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिच्चेएण ओघादो भेदाभावा ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ २७१ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ अंतोमुहुत्तमिच्चेदेहि विसेसाभावा ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा ओघं ॥ २७२ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणमुभयत्थ संजमभेदाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ २७३ ॥

कुदो ? ओघादेसेसु चदुण्हं गुणट्ठाणाणं संजमभेदाणुवलंभा ।

संजदासंजदा ओघं ॥ २७४ ॥

एदस्सत्थो सुगमो ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ २७५ ॥

एदस्स वि अत्थो अवधारिओघद्धाणं सुगमो । एवं संजममग्गणा समत्ता ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २७६ ॥

कुदो ? चक्खुदंसणिमिच्छादिट्ठिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २७७ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छादिट्ठिस्स असंजदसम्मादिट्ठिस्स संजदासंजदस्स संजदस्स वा दिट्ठमग्गस्स मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णद्धमच्छिय गुणंतरं गदस्स अंतोमुहुत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि ॥ २७८ ॥

उदाहरणं—एगो अचक्खुदंसणी मिच्छादिट्ठी चक्खुदंसणीसु उववण्णो । चक्खुदंसणी होदूण वे सागरोवमसहस्साणि परिभमिय अचक्खुदंसणं गदो । लद्धिअपज्जत्तेसु चक्खुदंसणं णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं व किण्ण उच्चदे ? ण, तम्हि भवे तत्थ चक्खुदंसणुवजोगाभावा । णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं तम्हि भवे णियमेण चक्खुदंसणुवजोगुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ २७९ ॥

कुदो ? चक्खुदंसणविरहिदसासणादीणमभावा ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ २८० ॥

कुदो ? अचक्खुदंसणविरहिदसावरणजीवाणुवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ २८१ ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २८२ ॥

एदाणि दोवि सुत्ताणि अवहारिदणाणाणुवादाणं सुगमाणि । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २८३ ॥

कुदो ? सव्वकालं तिलेस्सियमिच्छादिट्ठीणं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २८४ ॥

किण्हलेस्साए ताव अंतोमुहुत्तपरूवणं कीरदे । तं जहा— णीललेस्साए अच्छिदस्स तिस्से अद्धाखएण किण्हलेस्सा जादा । सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिदूण णीललेस्सिओ जादो । काउलेस्सिओ किण्ण होदि ? ण, किण्हलेस्साए परिणदस्स जीवस्स अणंतरमेव काउलेस्सापरिणामेण परिणमणसत्तीए असंभवा । णीललेस्साए उच्चदे— हीयमाण-वड्ढमाणकिण्हलेस्साए काउलेस्साए वा अच्छिदस्स णीललेस्सा आगदा । सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय जहण्णकालाविरोहेण काउलेस्सं किण्हलेस्सं वा गदो, अण्णलेस्सागमणासंभवा । के वि आइरिया हीयमाणलेस्साए चेव जहण्णकालो होदि त्ति भणंति । काउलेस्साए वि उच्चदे— हीयमाणणीललेस्साए तेउलेस्साए वा अच्छिदस्स काउलेस्सा आगदा । तत्थ सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय जदि तेउलेस्सादो आगदो, तो णीललेस्सं णेदव्वो । अह णील-लेस्सादो आगदो तो तेउलेस्साए णेदव्वो, अण्णहा संकिलेस-विसोहीओ आउरंतस्स जहण्णकालाणुववत्तीदो । एत्थ जोगस्सेव एगस-मओ जहण्णकालो किण्ण लब्भदे ? ण, जोग-कसायाणं व लेस्साए तिस्सा परावत्तीए गुणपरावत्तीए मरणेण वाघादेण वा एगसमय-कालस्सासंभवा । ण ताव लेस्सापरावत्तीए एगसमओ लब्भदि, अप्पिदलेस्साए परिणमिदविदियसमए तिस्से विणासाभावा, गुणंतरं गदस्स विदियसमए लेस्संतरगमणाभावादो च । ण गुणपरावत्तीए, अप्पिदलेस्साए परिणदविदियसमए गुणंतरगमणाभावा । ण च वाघादेण, तिस्से वाघादाभावा । ण च मरणेण, अप्पिदलेस्साए परिणदविदियसमए मरणाभावा ।

उक्कस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २८५ ॥

एदेसिमुदाहरणाणि । तं जहा— णीललेस्साए अच्छिदस्स किण्हलेस्सा आगदा । तत्थ सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अधो सत्तमीए पुढवीए उववण्णो । तत्थ तेत्तीसं सागरोवमाणि गमिय उववट्टिदो । पच्छा वि अंतोमुहुत्तकालं भावणवसेण सा चेव लेस्सा होदि । एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दोहि अंतोमुहुत्तेहि सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि किण्हलेस्साए उक्कस्सकालो होदि। णीललेस्साए उच्चदे– काउलेस्साए अच्छिदस्स णीललेस्सा आगदा। तत्थ दीहमंतोमुहुत्तमच्छिदूण पंचमीए पुढवीए उववण्णो। तत्थ सत्तारस सागरोवमाणि ताए लेस्साए गमिय उववट्टिदो। उववट्टिदस्स वि अंतोमुहुत्तं सा चेव लेस्सा होदि। एवं दोहि अंतोमुहुत्तेहि सादिरेयाणि सत्तारस सागरोवमाणि णीललेस्साए उक्कस्सकालो होदि। काउलेस्साए उच्चदे– तेउलेस्साए अच्छिदस्स सगद्धाए खीणाए काउलेस्सा आगदा। तत्थ दीहमंतोमुहुत्तमच्छिय तदियाए पुढवीए उववण्णो। तीए लेस्साए सत्त सागरोवमाणि तत्थ गमिय उववट्टिदो। उववट्टिदस्स वि सा चेव लेस्सा अंतोमुहुत्तं होदि। एवं दोहि अंतोमुहुत्तेहि सादिरेयाणि सत्त सागरोवमाणि काउलेस्साए उक्कस्सकालो होदि।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २८६ ॥

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण रासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, एदेहि तिलेस्सागदसासणाणं तदो भेदाभावा।

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २८७ ॥

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सगरासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिच्चेदेहि तदो भेदाभावा।

असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २८८ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २८९ ॥

तं जहा– एगो असंजदसम्मादिट्ठी वड्ढमाणणीललेस्साए अच्छिदो किण्हलेस्सं गदो। तत्थ सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो णीललेस्सामागदो। णीललेस्साए उच्चदे– हायमाणकिण्हलेस्सिओ णीललेस्सी जादो। ताए सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय काउलेस्सं गदो। काउलेस्साए उच्चदे– एगो सम्मादिट्ठी हायमाणणीललेस्सिओ काउलेस्सं गदो। तत्थ सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय तेउलेस्सिओ जादो। पुव्वं हायमाण-वड्ढमाणतेउ-काउलेस्साहिंतो काउ-णीललेस्साणमागदाणं जहण्णकालो उत्तो, सो संपहि एत्थ किण्ण उच्चदे? ण, पाएण तस्सुवएसाभावा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २९० ॥

किण्हलेस्साए देसूणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि, णीललेस्साए देसूणसत्तारस सागरोवमाणि, काउलेस्साए देसूणसत्त सागरोवमाणि। 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो उदाहरणाणि उद्देसपरिवाडीए णिद्दिसंते। तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी सत्तमाए पुढवीए किण्हलेस्साए सह उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तूणतेत्तीसं सागरोवमाणि भवसंबंधेण अवट्ठिदाए किण्हलेस्साए गमिय अंतोमुहुत्तावसेसे मिच्छत्तं गंतूण आउअं बंधिय विस्समिय मदो, तिरिक्खो जादो। एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि किण्हलेस्साए उक्कस्सकालो होदि। एगो अट्ठावीससंतकम्मिओ णीललेस्साए पंचमपुढवीए हेट्ठिमपत्थडे उक्कस्साउट्ठिदिओ होदूण उववण्णो। तत्थ जहण्णिया किण्हलेस्सा चे ण, सव्वेसिं णेरइयाणं तत्थतणाणं तीए चेव लेस्साए अभावा। एक्कम्हि पत्थडे भिण्णलेस्साणं कथं संभवो? विरोहाभावा। एसो अत्थो सव्वत्थ जाणिदव्वो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवण्णो। आउट्ठिदिमणुपालिय मुदो मणुस्सो जादो। तत्थ वि अंतोमुहुत्तं तीए चेव लेस्साए अच्छिदूण लेस्संतरं गदो। पच्छिल्लमंतोमुहुत्तं पुव्विल्लतिसु अंतोमुहुत्तेसु सोहिय सुद्धसेसेण ऊणाणि सत्तारस सागरोवमाणि असंजदसम्मादिट्ठिस्स णीललेस्साए उक्कस्सकालो होदि। एगो मिच्छादिट्ठी तदियाए पुढवीए उक्कस्साउट्ठिदिओ काउलेस्साओ होदूण उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो विस्संतो विसुद्धो होदूण सम्मत्तं पडिवज्जिय आउट्ठिदिमणुपालिय मणुसो जादो। पच्छा वि अंतोमुहुत्तं सा चेव लेस्सा होदि। पच्छिल्लं अंतोमुहुत्तं पुव्विल्लतिसु अंतोमुहुत्तेसु सोहिय सुद्धसेसेण ऊणाणि सत्त सागरोवमाणि काउलेस्साए उक्कस्सकालो होदि।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति?

णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २९१ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९२ ॥

तं जहा—हायमाणपम्मलेस्साए अच्छिदस्स सगद्धाखएण तेउलेस्सा आगदा। तत्थ सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय काउलेस्सं गदो। एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स वि तेउलेस्साए जहण्णकालो वत्तव्वो। पम्मलेस्साए उच्चदे—एक्को सुक्कलेस्साए हायमाणाए अच्छिदो मिच्छादिट्ठी तिस्से अद्धाखएण पम्मलेस्सिओ जादो। सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिदूण तेउलेस्सं गदो। एवं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं मिच्छादिट्ठी पम्मलेस्साए। एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स वि जहण्णकालो वत्तव्वो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण वे अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २९३ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी काउलेस्साए अच्छिदो । तिस्से अद्धाखएण तेउलेस्सिओ जादो । तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिदूण मदो सोहम्मे उववण्णो । वे सागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियाणि जीविदूण चुदो णट्ठलेस्सिओ जादो । लद्धा सगट्ठिदी पुव्विल्लंतोमुहुत्तेण अब्भहिया । अंतोमुहुत्तूणअड्ढाइज्जसागरोवममेत्ता ट्ठिदी किण्ण लब्भदे ? ण, मिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठीहि उवरिमदेवेसु बद्धमाउअमोवट्टणाघादेण घादिय मिच्छादिट्ठी जदि सुट्ठु महंतं करेदि, तो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणब्भधियवेसागरोवमाणि करेदि, सोहम्मे उप्पज्जमाणमिच्छादिट्ठीणं एदम्हादो अहियाउट्ठवणे सत्तीए अभावा । अड्ढाइज्जसागरोवमट्ठिदीए उप्पण्णसम्मादिट्ठिं मिच्छत्तं णेदूण उक्कस्सकालं भणिस्सामो ? ण, अंतोमुहुत्तूणड्ढाइज्जसागरोवमेसु उप्पण्णसम्मादिट्ठिस्स सोहम्मणिवासिस्स मिच्छत्तगमणे संभवाभावा । तं पि कथं णव्वदे ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागब्भहियवेसागरोवममेत्ता सोहम्मीसाणे मिच्छाइट्ठि-आउट्ठिदी होदि त्ति आइरियपरंपरागदोवदेसा । अथवा अण्णेणुवएसेण अड्ढाइज्जसागरोवमाणि देसूणाणि मिच्छादिट्ठिस्स वि संभवंति, भवणादिसहस्सारंतदेवेसु मिच्छाइट्ठिस्स दुविहाउट्ठिदिपरूवणण्णहाणुववत्तीदो । असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को असंजदो सोहम्मीसाणदेवेसु वे सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणं सागरोवमस्स अद्धं च आउवं करिय अंतोमुहुत्तं तेउलेस्सी होदूण कमेण कालं करिय सोहम्मे उववण्णो । सगट्ठिदिमच्छिय पुणो मणुसेसुववज्जिय अंतोमुहुत्तं तीए चेव लेस्साए परिणमिय पम्मलेस्सं काउलेस्सं वा गदो । लद्धाणि अंतोमुहुत्तूणअड्ढाइज्जसागरोवमाणि संपुण्णाणि । अहियाणि वा किण्ण होंति त्ति उत्ते ण, पुव्वावरकालम्हि लद्धअंतोमुहुत्तादो अद्धसागरोवमम्हि पडिदंतोमुहुत्तस्स बहुत्तुवदेसा । पम्मलेस्साए उच्चदे—एक्को मिच्छादिट्ठी वड्ढमाणतेउलेस्सिओ सगद्धाए खीणाए पम्मलेस्सिओ जादो । दीहमंतोमुहुत्तद्धमच्छिय सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु उववण्णो । तत्थ अट्ठारह सागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियाणि जीविदूण चुदस्स णट्ठा पम्मलेस्सा । असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को संजदो पम्मलेस्साए अंतोमुहुत्तमच्छिदो सदार-सहस्सारदेवेसु अट्ठारस सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तूणमद्धसागरं च आउअं करिय कमेण कालं करिय सहस्सारदेवेसु उववज्जिय सगट्ठिदिमच्छिय चुदो मणुसो जादो । तत्थ वि अंतोमुहुत्तं पम्मलेस्साए अच्छिय सुक्कलेस्सं तेउलेस्सं वा गदो । लद्धाणि अंतोमुहुत्तूणद्धसागरोवमेण अहियाणि अट्ठारस सागरोवमाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ २९४ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण सगरासीदो असंखेज्जगुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेदेहि तेउ-पम्मलेस्सियसासणाणं तत्तो भेदाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २९५ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमिच्चेएहि तेउ-पम्मलेस्सियसम्मामिच्छादिट्ठीणं तत्तो भेदाभावा ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २९६ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २९७ ॥

तत्थ ताव संजदासंजदाणमेगसमयपरूवणा कीरदे—एक्को मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा वड्ढमाणतेउलेस्सिओ एगसमओ तेउलेस्साए अत्थि त्ति संजमासंजमं पडिवण्णो । एगसमयं संजमासंजमं तेउलेस्साए सह दिट्ठं । विदियसमए संजदासंजदो पम्मलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावत्ती (१)। अथवा एक्को संजदासंजदो हायमाणपम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सद्धाए खीणाए एगसमयं संजमासंजमगुणो अत्थि त्ति तेउलेस्सिओ जादो । तेउलेस्साए सह संजमासंजमो एगसमयं दिट्ठो । विदियसमए तीए लेस्साए सह असंजदसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी वा जादो । एसा गुणपरावत्ती (२)। मरण-वाघादेहि एगसमओ ण लब्भदि । संपदि पम्मलेस्साए उच्चदे । तं जहा—एगो मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी वा वड्ढमाणपम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति संजमासंजमं पडिवण्णो । विदियसमए संजमासंजमेण सह सुक्कलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावत्ती (३)। अथवा वड्ढमाणतेउलेस्सिओ संजदासंजदो तेउलेस्सद्धाए खएण पम्मलेस्सिओ जादो । एगसमयं पम्मलेस्साए सह संजमासंजमं दिट्ठं, विदियसमए अप्पमत्तो जादो । एसा गुणपरावत्ती । अथवा संजदासंजदो हायमाणसुक्कलेस्सिओ सुक्कलेस्सद्धाखएण पम्मलेस्सिओ जादो । विदियसमए पम्मलेस्सिओ चेव, किंतु असंजदसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी मिच्छादिट्ठी वा जादो । एसा गुणपरावत्ती (४)। मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिगुणट्ठाणेसु तेउ-पम्मलेस्साणं लेस्सा-गुणपरावत्तीओ अस्सिदूण एगसमओ किण्ण उच्चदे ? ण, तत्थ एगसमयसंभवाभावा । वड्ढमाणतेउलेस्सादो पम्मलेस्सं गंतूण विदियसमए उवरिमगुणट्ठाणं गच्छंताणं मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं पम्मलेस्साए एगसमओ लब्भदि । हायमाणतेउलेस्साए एगसमओ अत्थि त्ति मिच्छादिट्ठिअसंजदसम्मादिट्ठिगुणट्ठाणे पडिवण्णाणं तेउलेस्साए एगसमओ लब्भदि । एवं काउ-णीललेस्साणं पि एगसमओ लब्भदि त्ति उत्ते ण लब्भदि, जदो मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो एगसमयं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लेस्साए परिणमिय विदियसमए अण्णगुणं लेस्संतरं वा ण गच्छंति। एदाणि गुणट्ठाणाणि पडिवज्जंता वि लेस्साए एगो समओ अत्थि त्ति ण पडिवज्जंति। कुदो ? सहावदो। हेट्ठिमगुणट्ठाणाणि लेस्साए एगो समओ अत्थि त्ति जहा संजमासंजमगुणट्ठाणं पडिवज्जंति, पमत्तसंजदो तहा संजमासंजमगुणट्ठाणं किण्ण पडिवज्जदे ? सहावदो। अथवा णत्थि एत्थ पडिसेहो। पमत्तस्स उच्चदे—एक्को पमत्तो हायमाण-पम्मलेस्साए अच्छिदो। तिस्से अद्धाखएण पमत्तद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति तेउलेस्सिओ जादो एगसमओ दिट्ठो। विदियसमए तेउलेस्सा चेव, किंतु संजमासंजमं असंजमेण सह सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं मिच्छत्तं वा गदो। एसा गुणपरावत्ती (१)। अथवा, अप्पमत्तो तेउलेस्साए अच्छिदो। तिस्से अप्पमत्तद्धाए खएण पमत्तो जादो। पमत्तो तेउलेस्साए सह एगसमयं दिट्ठो। विदियसमए मदो देवो जादो। एवं मरणेण (२)। पमत्तसंजदो तेउलेस्साए परिणमिय विदियसमए जेण लेस्संतरं ण गच्छदि, पमत्तगुणं पडिवज्जमाणो वि तेउलेस्सद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति ण पडिवज्जदि, तेण लेस्सापरावत्ती णत्थि। अप्पमत्तो हायमाणपम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति पमत्तो जादो। विदियसमए वि पमत्तो चेव, किंतु तेउलेस्सिओ जादो। एसा लेस्सापरावत्ती (३)। अथवा पमत्तो तेउलेस्साए अच्छिदो। तिस्से अद्धाक्खएण पम्मलेस्सा आगदा। पम्मलेस्साए सह पमत्तो एगसमयं दिट्ठो। विदियसमए पम्मलेस्सिओ चेव, किंतु अप्पमत्तो जादो। एसा गुणपरावत्ती। पम्मलेस्सद्धाए अच्छिदो पमत्तो तिस्से अद्धाखएण तेउलेस्साए परिणमिय विदियसमए अप्पमत्तो किण्ण कीरदे ? ण, हीयमाणलेस्साए अप्पमत्तगुणग्गहणाभावा। मिच्छत्तादिगुणं किण्ण पडिवज्जदि ? ण, तेउलेस्साए पडिय अंतोमुहुत्तमणच्छिय हेट्ठिमगुणग्गहणाभावा। अथवा अप्पमत्तो पम्मलेस्साए अच्छिदो अप्पमत्तद्धाखएण पमत्तो जादो। विदियसमए मदो देवत्तं गदो। अप्पमत्तसंजदस्स उच्चदे—मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदो पमत्तसंजदो वा वड्ढमाणतेउलेस्सिओ तेउलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति अप्पमत्तो जादो। तेउलेस्साए सह एगसमयं अप्पमत्तो दिट्ठो। विदियसमए पम्मलेस्सिगो जादो। एसा लेस्सापरावत्ती (१)। अथवा पमत्तो हायमाणपम्मलेस्सिगो एगसमयमप्पमत्तद्धा अत्थि त्ति पम्मलेस्सद्धाए खएण तेउलेस्सिगो जादो। विदियसमए पमत्तगुणं पडिवण्णो। एसा गुणपरावत्ती (२)। अथवा पमत्तो वड्ढमाणतेउलेस्सिओ अप्पमत्तो जादो। विदियसमए मदो देवत्तं गदो। एवं मरणेण (३)। पमत्तो वड्ढमाणपम्मलेस्सिगो पम्मलेस्सद्धाए एगसमओ अत्थि त्ति अप्पमत्तो जादो। विदियसमए अप्पमत्तो चेव, किंतु सुक्कलेस्सं गदो। एसा लेस्सापरावत्ती (१)। अथवा अप्पमत्तो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सद्धाखएण पम्मलेस्सिगो जादो। विदियसमए पम्मलेस्साए सह पमत्तगुणं पडिवण्णो। एसा गुणपरावत्ती (२)। अथवा पमत्तो पम्मलेस्साए अच्छिदो पमत्तद्धाए खीणाए एगसमयं जीविदमत्थि त्ति अप्पमत्तो जादो। विदियसमए मदो देवत्तं गदो। एवं मरणेण (३)।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्समंतोमुहुत्तं ॥ २९८ ॥

तं जहा—संजदासंजदो पमत्तसंजदो अप्पमत्तसंजदो वा तेउ-पम्मलेस्सासु अप्पिदलेस्साए परिणमिय सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अणप्पिदलेस्सं गदो ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ २९९ ॥

कुदो ? तिसु वि कालेसु सुक्कलेस्सियमिच्छादिट्ठीणं विरहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३०० ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी वड्ढमाणपम्मलेस्सिओ सगद्धाए खएण सुक्कलेस्सिओ जादो । सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पम्मलेस्सं गदो, अण्णलेस्सागमेण संभवाभावा ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३०१ ॥

तं जहा—एक्को दव्वलिंगी दव्वसंजममाहप्पेण उवरिमगेवज्जेसु आउअं बंधिय पम्मलेस्साए अच्छिदस्स तिस्से अद्धाखएण सुक्कलेस्सा आगदा । तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय कालं करिय उवरिमगेवेज्जेसु उववज्जिय सगट्ठिदिं गमिय चुदो तक्खणे चेव णट्ठलेस्सिओ जादो । एवं पढमिल्लंतोमुहुत्तेण सादिरेगएक्कत्तीस सागरोवममेत्तो मिच्छत्तसहिदसुक्कलेस्सुक्कस्सकालो होदि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ३०२ ॥

सुक्कलेस्सेत्ति अणुवट्टदे । कुदो ओघत्तं ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छ आवलियाओ, इच्चेदेहि तदो भेदाभावा ।

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३०३ ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि सह ओघसम्मामिच्छादिट्ठीहिंतो भेदाभावा । ॥५१९॥

असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ३०४ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि, इच्चेदेहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विसेसाभावा । णवरि पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । कुदो ? एत्थ पच्छिममणुससहगदअंतोमुहुत्तेण सादिरेगत्तुवलंभा । ओघम्हि देसूणपुव्वकोडीए सादिरेगत्तदंसणादो ।

संजदासंजदा पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३०५ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३०६ ॥

तं जहा—एक्को पमत्तसंजदो हायमाणसुक्कलेस्सिगो एगो समओ सुक्कलेस्साए अत्थि त्ति संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदो चेव, किंतु पम्मलेस्सं गदो । एसा लेस्सापरावत्ती (१) । सेसगुणट्ठाणेहिंतो संजमासंजमं पडिवज्जंताणं सुक्कलेस्साए एगसमओ ण लब्भदि । कुदो ? वड्ढमाणसुक्कलेस्साए संजमासंजमं पडिवण्णाणं विदियसमए पम्मलेस्साए गमणाभावा । अथवा संजदासंजदो वड्ढमाणपम्मलेस्सिगो तिस्से अद्धाखएण संजमासंजमद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति सुक्कलेस्सिओ जादो । विदियसमए सुक्कलेस्सिओ चेव, किंतु अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवण्णो । एसा गुणपरावत्ती (२) । पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अप्पमत्तो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति पमत्तो जादो । विदियसमए पमत्तो चेव, किंतु पम्मलेस्सा परावत्तिदा । एसा लेस्सापरावत्ती (१) । अथवा एक्को पमत्तो वड्ढमाणपम्मलेस्सिगो पम्मलेस्सद्धाए खएण सुक्कलेस्सिगो जादो । विदियसमए सुक्कलेस्सिगो चेव, किंतु अप्पमत्तो जादो । एसा गुणपरावत्ती (२) । अथवा अप्पमत्तो हायमाणसुक्कलेस्सिगो सुक्कलेस्सद्धाए सह पमत्तो जादो । विदियसमए मदो देवत्तं गदो (३) । अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को पमत्तो सुक्कलेस्साए अच्छिदो, सुक्कलेस्साए सह अप्पमत्तो जादो । विदियसमए मदो देवत्तं गदो (१) । अथवा अपुव्वकरणो ओदरंतो सुक्कलेस्सिगो अप्पमत्तो होदूण मदो देवो जादो (२) । एत्थ एगसमयभंगपरूवणगाहा—

दो द्दो य तिण्णि तेऊ तिण्णि तिया होंति पम्मलेस्साए । दो तिग दुगं च समया बोद्धव्वा सुक्कलेस्साए ॥ ४१ ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३०७ ॥

कुदो ? सुक्कलेस्साए परिणमिय उक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पम्मलेस्सं गदाणमुक्कस्सकालुवलंभा ।

चदुण्हमुवसमा चदुण्हं खवगा सजोगिकेवली ओघं ॥ ३०८ ॥

कुदो ? एदेसिमोघे वि सुक्कलेस्सं मोत्तूण अण्णलेस्साभावा । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३०९ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो ॥ ३१० ॥

तं जहा– भवियत्तं दुविहं, अणादिसपज्जवसिदं सादिसपज्जवसिदमिदि । पुव्वमलद्धसम्मत्तस्स अणादिसपज्जवसिदं । सम्मत्तं लहिऊण मिच्छत्तं गदस्स सादिसपज्जवसिदं । अणादित्तादो अकिट्टिमस्स ण विणासो चे ण अण्णाणस्स कम्मबंधस्स य अणादिस्स वि विणासुवलंभा । अकारणत्तादो ण तस्स विणासो चे ण, अणादिबंधनबद्धकम्मकारणत्तादो । सिद्धाणं मिच्छत्तासंजमकसायजोगकम्मासवविरहियाणं ण संसारे पदणमत्थि, तदो ण सादि भवियत्तं । ण पडिवण्णसम्मत्तस्स वि सादि भवियत्तं होदि, पुव्वं पि तत्थ भवियत्तुवलंभा ? एत्थ परिहारो वुच्चदे–ण संसारे णिवदिदसिद्धे अस्सिदूण भवियत्तं सादि उच्चदे । ण च ते संसारे णिवदंति, णट्ठासवत्तादो । किंतु गहिदसम्मत्तजीवस्स भवियत्तं सादि उच्चदे । ण च तं पुव्वमत्थि, सादिसांतस्सेदस्स पुव्विल्लेण अणादि-अणंतेण सह एयत्तविरोहा । पुव्विल्लमवि भवियत्तं सांतं चे ण, सत्तिं पडुच्च तस्स सांतत्तुवएसा । ण वत्तिं पडुच्च सम्मत्तगहणेण विणा अणंतसंसारस्स जीवस्स सांतं भवियत्तं, विरोहा । अणादि-अणंतेण वि भवियत्तेण होदव्वं, अण्णहा भव्वजीववोच्छेदप्पसंगादो । अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो । भावकलंकइपउरा णिगोदवासं ण मुंचंति ॥ ४२ ॥ एयणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा । सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वितीदकालेण ॥ ४३ ॥ इच्चादिसुत्तदंसणादो य । ण च मोक्खमगच्छंताणं भवियत्तं णत्थि त्ति वोत्तुं जुत्तं, मोक्खगमणसत्तिसब्भावं पडुच्च तेसिं भवियत्तुवदेसा । ण च सत्तिमंताणं सव्वेसिं पि वत्तीए होदव्वमिदि णियमो अत्थि सव्वस्स वि हेमपासाणस्स हेमपज्जाएण परिणमणपसंगा । ण च एवं, अणुवलंभा । णिव्वुइं गच्छमाणो वि ण वोच्छिज्जदि भव्वरासि त्ति कधमेदं णव्वदे ? तस्साणंतियादो । सो रासी अणंतो उच्चइ, जो संते वि वए ण णिट्ठादि, अण्णहा अणंतववएसो अणत्थओ होज्ज । तम्हा तिविहेण भवियत्तेण होदव्वमिदि । ण च सुत्तेण सह विरोहो, सत्तिं पडुच्च सुत्ते अणादिसांतत्तुवएसा ।

जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो णिद्देसो ॥ ३११ ॥

तिण्हं भवियाणं मज्झे जो सादिसपज्जवसिदो भविओ तस्स इमो णिद्देसो परूवणा पण्णवणा त्ति उत्तं होदि । अथवा भवियाणं जं मिच्छत्तं तं दुविहं, अणादिसपज्जवसिदं सादिसपज्जवसिदमिदि । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो मिच्छादिट्ठी तस्स इमो णिद्देसो त्ति वत्तव्वं । पुव्विल्लम्हि पुण अत्थे जो सादिओ सपज्जवसिदो भविओ तस्स मिच्छत्तस्स इमो णिद्देसो परूवेदव्वो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१२ ॥

तं जहा—सम्मादिट्ठी दिट्ठमग्गो मिच्छत्तं गंतूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अण्णगुणं गदो।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ३१३ ॥

तं जहा—एक्को अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णि करणाणि करिय सम्मत्तं पडिवण्णो। तेण सम्मत्तेण उप्पज्जमाणेण अणंतो संसारो छिण्णो संतो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। उवसमसम्मत्तेण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियसेसाए आसाणं गंतूण मिच्छत्तं णेदव्वो। अहवा उवसमसम्मादिट्ठी चेव मिच्छत्तं गंतूण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं मिच्छत्तेण परियट्टिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे सम्मत्तं घेत्तूण अणंताणुबंधी विसंजोइय विस्समिय दंसणमोहं खविय पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं करिय अधापमत्तकरणं काऊण अपुव्वो अणियट्टी सुहुमो खीणो सजोगी अजोगी होदूण सिद्धो जादो। जादं देसूणमद्धपोग्गलपरियट्टं।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३१४ ॥

कुदो? सासणादीणं भवियत्तं मोत्तूण अण्णस्सासंभवा।

अभवसिद्धिया केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३१५ ॥

कुदो? अव्वयत्तादो।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ ३१६ ॥

कुदो? मिच्छत्तं मोत्तूण तस्स गुणंतरगमणाभावा। एवं भवियमग्गणा समत्ता।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी-खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३१७ ॥

कुदो? सव्वगुणट्ठाणाणमप्पणो णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकाले अस्सिदूण भेदाभावा। णवरि खइयसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु अत्थि भेदो। तं भणिस्सामो। ण चेसो भेदो सुत्तेण अपरूविदो, संगहिदविसेससामण्णमवलंबिय ओघमिदि णिद्देसादो। तं जहा—एगो देवो णेरइओ वा सम्मादिट्ठी मणुसेसुववज्जिय अंतोमुहुत्तब्भहियगब्भादिअट्ठवस्से गमिय संजमासंजमं पडिवज्जिय अंतोमुहुत्तं विस्समिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अंतोमुहुत्तेण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिट्ठी जादो। चदुहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियअट्ठवस्सेहि ऊणियं पुव्वकोडिसंजमासंजमणुपालिय मदो देवो जादो। एत्थेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ॥ ३१८ ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुक्कस्सकालेहि सव्वगुणट्ठाणाणं ओघगुणट्ठाणेहिंतो भेदाभावा।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१९ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियसेसाए सव्वे आसाणं गदा। अंतरं गदं।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३२० ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा। तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय वेदगसम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं मिच्छत्तं वा गदा। एदस्स एगा सलागा णिक्खिविदव्वा। तस्समए चेव अण्णे मिच्छादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय चदुण्हं गुणट्ठाणाणमण्णदरं गदा। विदियसलागा लद्धा होदि। एवं तिण्णि चत्तारि आदिं गंतूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सलागाओ लब्भंति। तं कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो। एदाहि सलागाहि उवसमसम्मत्तद्धं गुणिदे सगरासीदो असंखेज्जगुणो अणंतरकालो होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२१ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो, अवरो देससंजमेण सह तं चेव पडिवण्णो, सव्वजहण्णमद्धमच्छिय उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए आसाणं गदा। एसो दोण्हं पि जहण्णकालो।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२२ ॥

तं जहा—दो मिच्छादिट्ठिणो। तत्थ एगो उवसमसम्मत्तं अवरो देससंजमं पडिवण्णो। सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तद्धमच्छिय दोण्णि वि तिण्हमण्णदरं गदा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति केवचिरं कालादो होंति ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३२३ ॥

तं जहा–पमत्त-अप्पमत्ताणं ताव उच्चदे । सत्तट्ठ जणा बहुआ वा उवसमसम्मादिट्ठिणो उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तापमत्ता होदूण एगसमयमच्छिय कालं करिय देवा जादा । अपुव्वकरणस्स ओदरमाणेहि, अणियट्टि-सुहुमसांपराइयाणं चढणोयरणकिरिया-वावदेहि, उवसंतस्स चढंतेहि अप्पिदगुणपडिवण्णाविदियसमए मदेहि जीवेहि एगसमओ वत्तव्वो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२४ ॥

पमत्तापमत्ताणं ताव उच्चदे–सत्तट्ठ जणा बहुआ वा दंसणमोहणीयउवसामगा चारित्तमोहणीयउवसामगा वा पमत्तापमत्तगुणे पडिवण्णा । तेसु अंतोमुहुत्तद्धमच्छिय अण्णगुणं गदा । तम्हि चेव समए अण्णे उवसमसम्मादिट्ठिणो पमत्तापमत्तगुणे पडिवण्णा । एवमेत्थ संखेज्जसलागा लब्भंति । एदाहि पमत्तापमत्तद्धं गुणिदे वि अंतोमुहुत्तं चेव होदि । कुदो ? अंतोमुहुत्तमिदि सुत्ते उद्दिट्ठत्तादो । एवं चेव चदुण्हमुवसामगाणं वि वत्तव्वं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३२५ ॥ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२६ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि, णाणाजीवजहण्णुक्कस्सकालपरूवणाए परूविदत्तादो ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ३२७ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३२८ ॥ मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३२९ ॥

ओघम्हि उत्तसासणादीणं सम्मत्ताणुवादम्हि उत्तसासणादितिण्हं गुणट्ठाणाणं च भेदाभावा । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३३० ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३३१ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय, बहुसो परूविदत्तादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ३३२ ॥

तं जहा–एगो असण्णी सण्णीसु उववण्णो सागरोवमसदपुधत्तं तत्थेव भमिय पुणो असण्णित्तं गदो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ३३३ ॥

सण्णिसासणादीणं ओघसासणादीणं च सण्गित्तं पडि भेदाभावा ।

असण्णी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३३४ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३३५ ॥

तं जहा–एगो सण्णी असण्णीसु उप्पज्जिय खुद्दाभवग्गहणमेत्तकालमच्छिय सण्णित्तं गदो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ३३६ ॥

तं जहा–एगो सण्णी मिच्छादिट्ठी असण्णी होदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टं तत्थ परियट्टिदूण सण्णित्तं गदो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा ॥ ३३७ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३३८ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय, ओघम्हि उत्तद्धादो ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ३३९ ॥

तं जहा–एको मिच्छादिट्ठी विग्गहं कादूण उववण्णो । अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं असंखेज्जासंखेज्जा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीपमाणं तत्थ परिभमिय आहारगो जादो । पुणो अवसाणे विग्गहं करिय अणाहारित्तं गदो । एवमाहारिमिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्सकालो सिद्धो होदि ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३४० ॥

कुदो ? णाणेगजीवजहण्णुकस्सकालेहि आहारिसासणादीणं ओघसासणादीहि भेदाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ ३४१ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठी णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा होंति, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगो समओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया; सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वे समया; सयोगिकेवलीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण तिण्णि समया, उक्कस्सेण संखेज्जसमया, एकजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण तिण्णि समया इच्चेएहि अणाहारमिच्छादिट्ठिआदीणं कम्मइयकायजोगिमिच्छादिट्ठिआदीहिंतो विसेसाभावा ।

अजोगिकेवली ओघं ॥ ३४२ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण पंचहरस्सक्खरुच्चारणकालो इच्चेदेहि भेदाभावा । एवं आहारमग्गणा समत्ता । एवं कालाणिओगद्दारं सम्मत्तं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-
धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे
जीवस्थाने कालानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति पञ्चमो भागः समाप्तः ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनेश्वराय नमः

अंतराणुगमो

(षष्ठो भागः)

अंताइमज्झहीणं दसद्धसयचावदीहिरं पढमजिणं। वोच्छं णमिऊणंतरमणंतरुत्तुंगसण्हमइदुग्गेज्झं ॥

अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

णाम-ट्ठवणा-दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेण छव्विहमंतरं। तत्थ णामंतरमंतरसद्दो बज्झत्थे मोत्तूण अप्पाणम्हि पयट्टो। ट्ठवणंतरं दुविहं सब्भावासब्भावभेएण। भरह-बाहुवलीणमंतरमुव्वेल्लंतो णदो सब्भावट्ठवणंतरं। अंतरमिदि बुद्धीए संकप्पिय दंड-कंड-कोदंडादओ असब्भावट्ठवणंतरं। दव्वंतरं दुविहं आगम-णोआगमभेएण। अंतरपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो अंतरदव्वागमो वा आगमदव्वंतरं। णोआगमदव्वंतरं जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं। आधारे आधेयोवयारेण लद्धंतरसण्णं जाणुगसरीरं भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेएण तिविहं। कथं भवियस्स अणाहारदाए ट्ठिदस्स अंतरववएसो? ण एस दोसो, कूरपज्जयाणाहारेसु वि तंदुलेसु एत्थ कूरववएसुवलंभा। कथं भूदे एसो ववहारो? ण, रज्जपज्जायअणाहारे वि पुरिसे राओ आगच्छदि त्ति ववहारुवलंभा। भवियणोआगमदव्वंतरं भविस्सकाले अंतरपाहुडजाणओ संपहि संते वि उवजोए अंतरपाहुडअवगमरहिओ। तव्वदिरित्तदव्वंतरं तिविहं सचित्ताचित्तमिस्सभेएण। तत्थ सचित्तंतरं उसहसंभवाणं मज्झे ट्ठिओ अजिओ। अचित्ततव्वदिरित्तदव्वंतरं णाम घणोअहि-तणुवादाणं मज्झे ट्ठिओ घणाणिलो। मिस्संतरं जहा उज्जंत-सत्तुंजयाणं विचालट्ठिदगामणगराइं। खेत्त-कालंतराणि दव्वंतरे पविट्ठाणि, छदव्ववदिरित्तखेत्त-कालाणमभावा। भावंतरं दुविहं आगम-णोआगमभेएण। अंतरपाहुडजाणओ उवजुत्तो भावागमो वा आगमभावंतरं। णोआगमभावंतरं णाम ओदइयादी पंच भावा दोण्हं भावाणमंतरे ट्ठिदा। एत्थ केण अंतरेण पयदं? णोआगमदो भावंतरेण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ वि अजीवभावंतरं मोत्तूण जीवभावंतरं पयदं, अजीवभावंतरेण इह पओजणाभावा। अंतरमुच्छेदो विरहो परिणामंतरगमणं णत्थित्तगमणं अण्णभावं ववहाणमिदि एयट्ठो। एदस्स अंतरस्स अणुगमो अंतराणुगमो। तेण अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयावलंबणेण। तिविहो णिद्देसो किण्ण होज्ज ? ण, तइज्जस्स णयस्स अभावा। तं पि कथं णव्वदे ? संगहासंगहवदिरित्ततव्विसयाणुवलंभा। एवं मणम्मि काऊण ओघेणादेसेण येत्ति उत्तं। एक्केण णिद्देसेण पज्जत्तमिदि चे ण, एक्केण दुणयावलंबिजीवाणमुवयारकरणे उवायाभावा।

ओघेण मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायसंभालट्ठं ओघेणेत्ति उत्तं। सेसगुणट्ठाणवुदासट्ठो मिच्छादिट्ठिणिद्देसो। केवचिरं कालादो इदि पुच्छा एदस्स पमाणत्तपदुप्पायणफला। णाणाजीवमिदि बहुस्सु एयवयणणिद्देसो कथं घडदे ? णाणाजीवट्ठियसामण्णविवक्खाए बहूणं पि एगत्तविरोहाभावा। णत्थि अंतरं मिच्छत्तपज्जयपरिणदजीवाणं तिसु वि कालेसु वोच्छेदो विरहो अभावो णत्थि त्ति उत्तं होदि। अंतरस्स पडिसेहे कदे सो पडिसेहो तुच्छो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं णिरंतरग्गहणं, विहिरूवेण पडिसेहादो वदिरित्तेण मिच्छादिट्ठिणो सव्वकालमच्छंति त्ति उत्तं होदि। अथवा पज्जवट्ठियणयावलंबियजीवाणुग्गहट्ठं णत्थि अंतरमिदि पडिसेहवयणं, दव्वट्ठियणयावलंबिजीवाणुग्गहट्ठं णिरंतरमिदि विहिवयणं। एसो अत्थो उवरि सव्वत्थ वत्तव्वो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छत्त-सम्मत्त-संजमासंजम-संजमेसु बहुसो परियट्टिदो, परिणामपच्चएण सम्मत्तं गदो, सव्वलहुमंतोमुहुत्तंतं सम्मत्तेण अच्छिय मिच्छत्तं गदो, लद्धमंतोमुहुत्तं सव्वजहण्णं मिच्छत्तंतरं। एत्थ चोदगो भणदि—जं पढमिल्लमिणं मिच्छत्तं तं पुणो सम्मत्तुत्तरकाले ण होदि, पुव्वकाले वट्टंतस्स उत्तरकाले पउत्तिविरोहा। ण च तं चे उत्तरकाले उप्पज्जइ उप्पण्णस्स उप्पत्तिविरोहा। तदो अंतिल्लं मिच्छत्तं पढमिल्लं ण होदि त्ति अंतरस्स अभावो चेयेत्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे—सच्चमेवमेदं जदि सुद्धो पज्जयणओ अवलंबिज्जदि। किंतु णइगमणयमवलंबिय अंतरपरूवणा कीरदे, तस्स सामण्णविसेसुहयविसयत्तादो। तदो ण एस दोसो। तं जहा—पढमंतिममिच्छत्तं पज्जाया अभिण्णा, मिच्छत्तकम्मोदयजादत्तेण अत्तागम-पदत्थाणमसद्दहणेण एगजीवाहारत्तेण भेदाभावा। ण पुव्वुत्तरकालभेएण ताणं भेओ, तधा विवक्खाभावा। तम्हा पुव्वुत्तरद्धासु अच्छिण्णसरूवेण ट्ठिदमिच्छत्तस्स सामण्णावलंबणेण एकत्तं पत्तस्स सम्मत्तपज्जओ अंतरं होदि। एस अत्थो सव्वत्थ पउज्जिदव्वो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण वे छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ४ ॥

एदस्स णिदरिसणं—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा लांतय-काविट्ठकप्पवासियदेवेसु चोद्दससागरोवमाउट्ठिदिएसु उप्पण्णो। एक्कं सागरोवमं गमिय विदियसागरोवमादिसमए सम्मत्तं पडिवण्णो। तेरससागरोवमाणि तत्थ अच्छिय सम्मत्तेण सह चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुसाउएणूणवावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु आरणच्चुददेवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजममणुपालिय उवरिमगेवज्जे देवेसु मणुसाउगेणूणएक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तूणछावट्ठिसागरोवमचरिमसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदो। तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो सम्मत्तं पडिवज्जिय विस्समिय चुदो मणुसो जादो। तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुपालिय मणुस्साउएणूणवीससागरोवमाउट्ठिदिएसुववज्जिय पुणो जहाकमेण मणुसाउएणूणवावीस-चउवीससागरोवमट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिय अंतोमुहुत्तूणवेछावट्ठिसागरोवमचरिमसमए मिच्छत्तं गदो। लद्धमंतरं अंतोमुहुत्तूणवेछावट्ठिसागरोवमाणि। एसो उप्पत्तिकमो अउप्पण्णउप्पायणट्ठं उत्तो। परमत्थदो पुण जेण केण वि पयारेण वे छावट्ठी पूरेदव्वा।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ५ ॥

तं जहा, सासणसम्मादिट्ठिस्स ताव उच्चदे—दो जीवमादिं काऊण एगुत्तरकमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवियप्पेण उवसमसम्मादिट्ठिणो उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयमादिं काऊण जाव छावलियावसेसाए आसाणं गदा। तेत्तियं पि कालं सासणगुणेण अच्छिय सव्वे मिच्छत्तं गदा। तिसु वि लोगेसु सासणाणमेगसमए अभावो जादो। पुणो विदियसमए सत्तट्ठ जणा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा। लद्धमंतरमेगसमओ। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सम्मामिच्छादिट्ठिणो णाणाजीवगदसम्मामिच्छत्तद्धाखएण सम्मत्तं मिच्छत्तं वा सव्वे पडिवण्णा। तिसु वि लोगेसु सम्मामिच्छादिट्ठिणो एगसमयमभावीभूदा। अणंतरसमए मिच्छाइट्ठिणो सम्मादिट्ठिणो वा सत्तट्ठ जणा बहुआ वा सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णा। लद्धमंतरमेगसमओ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६ ॥

णिदरिसणं सासणसम्मादिट्ठिस्स ताव उच्चदे—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा। तेहि आसाणेहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आय-व्वयवसेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं सासणगुणप्पवाहो अविच्छिण्णो कदो । पुणो अणंतरसमए सव्वे मिच्छत्तं गदा । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालं सासणगुणट्ठाणमंतरिदं । तदो उक्कस्संतरस्स अणंतरसमए सत्तट्ठ जणा बहुआ वा उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे— णाणाजीवगदसम्मामिच्छत्तद्धाए उक्कस्संतरजोग्गाए अदिक्कंताए सव्वे सम्मामिच्छादिट्ठिणो सम्मत्तं मिच्छत्तं वा पडिवण्णा । अंतरिदं सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणं । पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउक्कस्संतरकालस्स अणंतरसमए अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठिणो वेदगसम्मादिट्ठिणो उवसमसम्मादिट्ठिणो वा सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णा । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ७ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो सासणसम्मादिट्ठिस्स पढमं उच्चदे— एक्को सासणसम्मादिट्ठि उवसमसम्मत्तपच्छायदो केत्तियं पि कालमासाणगुणेणच्छिय मिच्छत्तं गदो अंतरिदो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण भूओ उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । अंतोमुहुत्तकालेण आसाणं किण्ण णीदो ? ण, उवसमसम्मत्तेण विणा आसाणगुणग्गहणाभावा । उवसमसम्मत्तं पि अंतोमुहुत्तेण किण्ण पडिवज्जदे ? ण, उवसमसम्मादिट्ठि मिच्छत्तं गंतूण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लमाणो तेसिमंतोकोडाकोडीमेत्तट्ठिदिं घादिय सागरोवमादो सागरोवमपुधत्तादो वा जाव हेट्ठा ण करेदि ताव उवसमसम्मत्तगहणसंभवाभावा । ताणं ट्ठिदीओ अंतोमुहुत्तेण घादिय सागरोवमादो सागरोवमपुधत्तादो वा हेट्ठा किण्ण करेदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तायामेण अंतोमुहुत्तुक्कीरणकालेहि उव्वेल्लणखंडएहि घादिज्जमाणाए सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तट्ठिदीए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण विणा सागरोवमस्स वा सागरोवमपुधत्तस्स वा हेट्ठा पदणाणुववत्तीदो । सासणपच्छायदमिच्छाइट्ठिं संजमं गेण्हाविय दंसणतियमुवसामिय पुणो चरित्तमोहमुवसामेदूण हेट्ठा ओयरिय आसाणं गदस्स अंतोमुहुत्तंतरं किण्ण परूविदं ? ण, उवसमसेढीदो ओदिण्णाणं सासणगमणाभावादो । तं पि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव भूदबलीवयणादो । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे— एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी परिणामपच्चएण मिच्छत्तं सम्मत्तं वा पडिवण्णो अंतरिदो । अंतोमुहुत्तेण भूओ सम्मामिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरमंतोमुहुत्तं ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ८ ॥

ताव सासणस्सुदाहरणं वुच्चदे— एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए अणंतो

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसारो छिण्णो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। पुणो अंतोमुहुत्तं सम्मत्तेणच्छिय आसाणं गदो (१)। मिच्छत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो अद्धपोग्गलपरियट्टं मिच्छत्तेण परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो एगसमयावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो। लद्धमंतरं। भूओ मिच्छादिट्ठी जादो (२)। वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय (३) अणंताणुबंधिं विसंजोजिय (४) दंसणमोहणीयं खविय (५) अप्पमत्तो जादो (६)। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (७) खवगसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिऊण (८) अपुव्वखवगो (९) अणियट्टिखवगो (१०) सुहुमखवगो (११) खीणकसाओ (१२) सजोगिकेवली (१३) अजोगिकेवली (१४) होदूण सिद्धो जादो। एवं समयाहियचोद्दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सासणसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं होदि। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे– एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं गेण्हंतेण गहिदसम्मत्तपढमसमए अणंतो संसारो छिंदिदूण अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। उवसमसम्मत्तेण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (२)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। तत्थेव अणंताणुबंधिं विसंजोइय सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो। लद्धमंतरं (३)। तदो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय (४) दंसणमोहणीयं खवेदूण (५) अप्पमतो जादो (६)। पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं करिय (७) खवगसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय (८) अपुव्वखवगो (९) अणियट्टिखवगो (१०) सुहुमखवगो (११) खीणकसाओ (१२) सजोगिकेवली (१३) अजोगिकेवली (१४) होदूण सिद्धिं गदो। एदेहि चोद्दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति अंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ९ ॥

कुदो ? सव्वकालमेदाणमुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १० ॥

एदस्स सुत्तस्स गुणट्ठाणपरिवाडीए अत्थो उच्चदे। तं जहा– एक्को असंजदसम्मादिट्ठी संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमंतरिय भूओ असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतरमंतोमुहुत्तं। संजदासंजदस्स उच्चदे– एक्को संजदासंजदो असंजदसम्मादिट्ठिं मिच्छादिट्ठिं संजमं वा पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमंतरिय भूओ संजमासंजमं पडिवण्णो। लद्धमंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं संजदासंजदस्स। पमत्तसंजदस्स उच्चदे– एगो पमत्तो अप्पमत्तो होदूण सव्वलहुं पुणो वि पमत्तो जादो। लद्धमंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं पमत्तस्स। अप्पमत्तस्स उच्चदे–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगो अप्पमत्तो उवसमसेढीमारुहिय पडिणियत्तो अप्पमत्तो जादो। लद्धमंतरं जहण्णमप्पमत्तस्स। हेट्ठिमगुणेसु किण्ण अंतराविदो? ण, उवसमसेढीसव्वगुणट्ठाणद्धाणाहिंतो हेट्ठिमएगगुणट्ठाणद्धाए संखेज्जगुणत्तादो।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ११ ॥

गुणट्ठाणपरिवाडीए उक्कस्संतरपरूवणा कीरदे– एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण पढमसम्मत्तं गेण्हंतेण अणंतो संसारो छिंदिदूण गहिदसम्मत्तपढमसमए अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। उवसमसम्मत्तेण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गंतूणंतरिदो। मिच्छत्तेणद्धपोग्गलपरियट्टं भमिय अपच्छिमे भवे संजमं संजमासंजमं वा गंतूण कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे परिणामपच्चएण असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतरं (२)। पुणो अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) खवगसेडीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय (५) अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) खीणो (९) सजोगी (१०) अजोगी (११) होदूण परिणिउदो। एवमेक्कारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमसंजदसम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं होदि। संजदासंजदस्स उच्चदे– एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण गहिदसम्मत्तपढमसमए सम्मत्तगुणेण अणंतो संसारो छिण्णो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। सम्मत्तेण सह गहिदसंजमासंजमेण अंतोमुहुत्तमच्छिय छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो (१) अंतरिदो मिच्छत्तेण अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय अपच्छिमे भवे सासंजमं सम्मत्तं संजमं वा पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होदूण परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो (२)। लद्धमंतरं। अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) खवगसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय (५) अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) खीणकसाओ (९) सजोगी (१०) अजोगी (११) होदूण परिणिव्वुदो। एवमेक्कारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमुक्कस्संतरं संजदासंजदस्स होदि। पमत्तस्स उच्चदे– एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवज्जंतेण अणंतो संसारो छिंदिओ, अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो कदो। अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) पमत्तो जादो (२)। आदी दिट्ठा। छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गंतूणंतरिय मिच्छत्तेणद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिय अपच्छिमे भवे सासंजमसम्मत्तं संजमासंजमं वा पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होऊण अप्पमत्तभावेण संजमं पडिवज्जिय पमत्तो जादो (३)। लद्धमंतरं। तदो खवगसेढीपाओग्गो अप्पमत्तो जादो (४)। पुणो अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) खीणकसाओ (८) सजोगी (९) अजोगी (१०) होदूण णिव्वाणं गदो। एवं दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं पमत्तस्सुक्कस्संतरं होदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि वि करणाणि करिय उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णेण छेत्तूण अणंतो संसारो अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तो पढमसमए कदो। तत्थंतोमुहुत्तमच्छिय (१) पमत्तो जादो अंतरिदो मिच्छत्तेण अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिय अपच्छिमे भवे सम्मत्तं संजमासंजमं वा पडिवज्जिय सत्त कम्माणि खविय अप्पमत्तो जादो (२)। लद्धमंतरं। पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (३) अप्पमत्तो जादो (४)। अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) खीणकसाओ (८) सजोगी (९) अजोगी (१०) होदूण णिव्वाणं गदो। लद्धमुक्कस्संतरं एवं दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १२ ॥

अपुव्वस्स ताव उच्चदे—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अपुव्वकरणउवसामगद्धाए खीणाए अणियट्टिउवसामगा वा अप्पमत्ता वा कालं करिय देवा जादा। एगसमयमंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं। तदो विदियसमए अप्पमत्ता वा ओदरंता अणियट्टिणो वा अपुव्वकरणउवसामगा जादा। लद्धमेगसमयमंतरं। एवं चेव अणियट्टिउवसामगाणं सुहुमउवसामगाणं उवसंतकसायाणं च जहण्णंतरमेगसमओ वत्तव्वो।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ १३ ॥

तं जधा—सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अपुव्वउवसामगा अणियट्टिउवसामगा अप्पमत्ता वा कालं करिय देवा जादा। अंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं जाव उक्कस्सेण वासपुधत्तं। तदो अदिक्कंते वासपुधत्ते सत्तट्ठ जणा बहुआ वा अप्पमत्ता अपुव्वकरणउवसामगा जादा। लद्धमुक्कस्संतरं वासपुधत्तं। एवं चेव सेसतिण्हमुवसामगाणं वासपुधत्तंतरं वत्तव्वं, विसेसाभावा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥

तं जधा—एक्को अपुव्वकरणो अणियट्टिउवसामगो सुहुमउवसामगो उवसंतकसाओ होदूण पुणो वि सुहुमउवसामगो अणियट्टिउवसामगो होदूण अपुव्वउवसामगो जादो। लद्धमंतरं। एदाओ पंच वि अद्धाओ एक्कट्ठं कदे वि अंतोमुहुत्तमेव होदि त्ति जहण्णंतरमंतोमुहुत्तं होदि। एवं चेव सेसतिण्हमुवसामगाणमेगजीवजहण्णंतरं वत्तव्वं। णवरि अणियट्टिउवसामगस्स दो सुहुमद्धाओ एगा उवसंतकसायद्धा च जहण्णंतरं होदि। सुहुमउवसामगस्स उवसंतकसायद्धा एक्का चेव जहण्णंतरं होदि। उवसंतकसायस्स पुण हेट्ठा उवसंतकसायमोदरिय सुहुमसांपराओ अणियट्टिकरणो अपुव्वकरणो अप्पमत्तो होदूण पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं करिय अप्पमत्तो अपुव्वो अणियट्टी सुहुमो होदूण पुणो उवसंतकसायगुणट्ठाणं पडिवण्णस्स णवद्धासमूहमेत्तमंतोमुहुत्तमंतरं होदि। ॥५३३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १५ ॥

अपुव्वस्स ताव उच्चदे—एक्केण अणादियमिच्छादिट्ठिणा तिण्णि करणाणि करिय उवसमसम्मत्तं संजमं च अक्कमेण पडिवण्णपढमसमए अणंतसंसारं छिंदिय अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तं कदेण अप्पमत्तद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता अणुपालिदा (१)। तदो पमत्तो जादो (२)। वेदगसम्मत्तमुवसामिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) उवसमसेढीपाओग्गो अप्पमत्तो जादो (५)। अपुव्वो (६) अणियट्टी (७) सुहुमो (८) उवसंतकसायो (९) पुणो सुहुमो (१०) अणियट्टी (११) अपुव्वकरणो जादो (१२)। हेट्ठा पडिय अंतरिदो अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण अपच्छिमे भवे दंसणतिगं खविय अपुव्वुवसामगो जादो (१३)। लद्धमंतरं। तदो अणियट्टी (१४) सुहुमो (१५) उवसंतकसाओ (१६) जादो। पुणो पडिणियत्तो सुहुमो (१७) अणियट्टी (१८) अपुव्वो (१९) अप्पमत्तो (२०) पमत्तो (२१) पुणो अप्पमत्तो (२२) अपुव्वखवगो (२३) अणियट्टी (२४) सुहुमो (२५) खीणकसाओ (२६) सजोगी (२७) अजोगी (२८) होदूण णिव्वुदो। एवमट्ठावीसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमपुव्वकरणस्सुक्कस्संतरं होदि। एवं तिण्हमुवसामगाणं। णवरि परिवाडीए छव्वीसं चउवीसं वावीसं अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं तिण्हमुक्कस्संतरं होदि।

चदुण्हं खवग-अजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १६ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अपुव्वकरणखवगा एक्कम्हि चेव समए सव्वे अणियट्टिखवगा जादा। एगसमयमंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं। विदियसमए सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अप्पमत्ता अपुव्वकरणखवगा जादा। लद्धमंतरमेगसमओ। एवं सेसगुणट्ठाणाणं वि अंतरमेगसमयो वत्तव्वो।

उक्कस्सेण छम्मासं ॥ १७ ॥

तं जहा—सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अपुव्वकरणखवगा अणियट्टिखवगा जादा। अंतरिदमपुव्वखवगगुणट्ठाणं उक्कस्सेण जाव छम्मासा त्ति। तदो सत्तट्ठ जणा अट्ठुत्तरसदं वा अप्पमत्ता अपुव्वखवगा जादा। लद्धं छम्मासुक्कस्संतरं। एवं सेसगुणट्ठाणाणं पि छम्मासुक्कस्संतरं वत्तव्वं।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १८ ॥

कुदो? खवगाणं पदणाभावा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १९ ॥

कुदो ? सजोगिकेवलिविरहिदकालाभावा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २० ॥

कुदो ? सजोगीणमजोगिभावेण परिणदाणं पुणो सजोगिभावेण परिणमणाभावा । एवमोघाणुगमो समत्तो ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २१ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि विरहिदपुढवीणं सव्वद्धमणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २२ ॥

मिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को मिच्छादिट्ठी दिट्ठमग्गो परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं वा सम्मत्तं वा पडिवज्जिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो मिच्छादिट्ठी जादो । लद्धमंतोमुहुत्तमंतरं । सम्मादिट्ठिं पि मिच्छत्तं णेदूण सव्वजहण्णेणंतोमुहुत्तेण सम्मत्तं पडिवज्जाविय असंजदसम्मादिट्ठिस्स जहण्णंतरं वत्तव्वं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २३ ॥

तं जहा—मिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं वुच्चदे । एक्को तिरिक्खो मणुसो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ अधो सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो थोवावसेसे आउए मिच्छत्तं गदो (४) लद्धमंतरं । तिरिक्खाउअं बंधिय (५) विस्समिय (६) उवट्टिदो । एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि मिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि । असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं वुच्चदे—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी अधो सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) संकिलिट्ठो मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । अवसाणे तिरिक्खाउअं बंधिय अंतोमुहुत्तं विस्समिय विसुद्धो होदूण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५) । लद्धमंतरं । भूओ मिच्छत्तं गंतूणुव्वट्टिदो (६) । एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि असंजदसम्मादिट्ठिउक्कस्संतरं होदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २४ ॥

तं जहा–णिरयगदीए ट्ठिदसासणसम्मादिट्ठिणो सम्मामिच्छादिट्ठिणो च सव्वे गुणंतरं गदा । दो वि गुणट्ठाणाणि एगसमयमंतरिदाणि । पुणो विदियसमए के वि उवसमसम्मादिट्ठिणो आसाणं गदा, मिच्छादिट्ठिणो असंजदसम्मादिट्ठिणो च सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णा । लद्धमंतरं दोण्हं गुणट्ठाणाणमेगसमओ ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५ ॥

तं जहा–णिरयगदीए ट्ठिदसासणसम्मादिट्ठिणो सम्मामिच्छादिट्ठिणो च सव्वे अण्णगुणं गदा । दोण्णि वि गुणट्ठाणाणि अंतरिदाणि । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो दोण्हं गुणट्ठाणाणमंतरकालो होदि । पुणो तेत्तियमेत्तकाले वदिक्कंते अप्पप्पणो कारणीभूदगुणट्ठाणेहिंतो दोण्हं गुणट्ठाणाणं संभवे जादे लद्धमुक्कस्संतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ २६॥

तं जहा–'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो सासणस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, सम्मामिच्छाइट्ठिस्स अंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं होदि । दोण्हं णिदरिसणं–एक्को णेरइओ अणादियमिच्छादिट्ठी उवसमसम्मत्तप्पाओग्गसादियमिच्छादिट्ठी वा तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । उवसमसम्मत्तेण केत्तियं हि कालमच्छिय आसाणं गंतूण मिच्छत्तं गदो अंतरिदो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण उव्वेलणखंडएहि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तट्ठिदीओ सागरोवमपुधत्तादो हेट्ठा करिय पुणो तिण्णि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए आसाणं गदो । लद्धमंतरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एक्को सम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छत्तं सम्मत्तं वा गंतूणंतोमुहुत्तमंतरिय पुणो सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो । लद्धमंतोमुहुत्तमंतरं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २७ ॥

तं जधा–एक्को सादिओ अणादिओ वा मिच्छादिट्ठी सत्तमपुढवीणेरइएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (४) आसाणं गंतूण मिच्छत्तं गदो अंतरिदो । अवसाणे तिरिक्खाउअं बंधिय विसुद्धो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होदूण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए आसाणं गदो । लद्धमंतरं । तदो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (५) उवट्टिदो । एवं पंचहि अंतोमुहुत्तेहि समयाहिएहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि सासणुक्कस्संतरं होदि । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को तिरिक्खो मणुसो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ सत्तमपुढवीणेरइएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४)। पुणो सम्मत्तं मिच्छत्तं वा गंतूण देसूणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिमंतरिय मिच्छत्तेणाउअं बंधिय विस्समिय सम्मामिच्छत्तं गदो (५)। तदो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (६) उवट्टिदो । छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि ।

पढमादि जाव सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २८ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदसत्तपुढवीणेरइयाणं सव्वकालमणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी अण्णगुणं णेदूण सव्वजहण्णेण अंतोमुहुत्तकालेण पुणो तं चेव गुणं पडिवज्जाविदे अंतोमुहुत्तमेत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण सागरोवमं तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३० ॥

एत्थ तिण्णि-आदीसु सागरोवमसद्दो पादेक्कं संबंधणिज्जो । 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पढमीए पुढवीए देसूणमेगं सागरोवमं, विदियाए देसूणतिण्णि सागरोवमाणि, तदियाए देसूणसत्तसागरोवमाणि, चउत्थीए देसूणदससागरोवमाणि, पंचमीए देसूणसत्तारससागरोवमाणि, छट्ठीए देसूणवावीससागरोवमाणि, सत्तमीए देसूणतेत्तीससागरोवमाणि त्ति वत्तव्वं । णवरि दोण्हं पि गुणट्ठाणाणं सत्तमीए पुढवीए देसूणपमाणं छअंतोमुहुत्तमेत्तं । तं च णिरओघे परूविदमिदि णेह परूविज्जदे । सेसपुढवीसु मिच्छादिट्ठीणं सग-सगआउट्ठिदीओ चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ । के ते चत्तारि अंतोमुहुत्ता ? छ पज्जत्तीओ समाणणे एक्को, विस्समणे विदिओ, विसोहिआऊरणे तदिओ, अवसाणे मिच्छत्तं गदस्स चउत्थो अंतोमुहुत्तो । असंजदसम्मादिट्ठीणं सेसपुढवीसु सग-सगआउट्ठिदीओ पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ अंतरं होदि । तं जधा—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ पढमादि जाव छट्ठीसु उववण्णो छहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मत्तं पडिवण्णो (४) सव्वलहुं मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। सगट्ठिदिमच्छिय उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५) सासणं गंतूणुव्वट्टिदो। एवं पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ सग-सगट्ठिदीओ सम्मत्तुक्कस्संतरं होदि।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३१ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३२ ॥

जधा णिरओघम्हि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपरूवणा कदा, तहा एत्थ वि कादव्वा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ३३ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय, णिरओघम्हि परूविदत्तादो।

उक्कस्सेण सागरोवमं तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे—सत्तमपुढवीसासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणं णिरओघुक्कस्सभंगो, सत्तमपुढविं चेवमस्सिदूण तत्थेदेसिमुक्कस्सपरूवणादो। पढमादिछपुढवीसासणाणमुक्कस्से भण्णमाणे—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा पढमादिछसु पुढवीसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिऊण आसाणं गदो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। सग-सगुक्कस्सट्ठिदीओ अच्छिय अवसाणे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए सासणं गंतूणुव्वट्टिदो। एवं समयाहियचदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ सगसगुक्कस्सट्ठिदीओ सासणाणुक्कस्संतरं होदि। एदेसिं सम्मामिच्छादिट्ठीणं उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अप्पिदणेरइएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं सम्मत्तं वा गंतूणंतरिदो। सगट्ठिदिमच्छिय सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (५)। लद्धमंतरं। मिच्छत्तं सम्मत्तं वा गंतूण उव्वट्टिदो (६)। छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ सग-सगुक्कस्सट्ठिदीओ सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि। सव्वगदीहिंतो सम्मामिच्छादिट्ठि-णिस्सरणकमो वुच्चदे। तं जहा—जो जीवो सम्मादिट्ठी होदूण आउअं बंधिय सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जदि, सो सम्मत्तेणेव णिप्फिडदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अह मिच्छादिट्ठी होदूण आउअं बंधिय जो सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जदि, सो मिच्छत्तेणेव णिप्फिडदि । कधमेदं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३५ ॥

सुगममेदं सुत्तं

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३६ ॥

कुदो ? तिरिक्खमिच्छादिट्ठिमण्णगुणं णेदूण सव्वजहण्णेण कालेण पुणो तस्सेव गुणस्स तम्मि ढोइदे अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ ३७ ॥

णिदरिसणं—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु कुक्कुड-मक्कडादिसु उववण्णो, वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतो । एत्थ वे उवदेसा । तं जहा—तिरिक्खेसु वेमास-मुहुत्तपुधत्तस्सुवरि सम्मत्तं संजमासंजमं च जीवो पडिवज्जदि । मणुसेसु गब्भादिअट्ठवस्सेसु अंतोमुहुत्तब्भहिएसु सम्मत्तं संजमं संजमासंजमं च पडिवज्जदि त्ति । एसा दक्खिणपडिवत्ती । दक्खिणं उज्जुवं आइरियपरंपरागदमिदि एयट्ठो । तिरिक्खेसु तिण्णिपक्ख-तिण्णिदिवस-अंतोमुहुत्तस्सुवरि सम्मत्तं संजमासंजमं च पडिवज्जदि । मणुसेसु अट्ठवस्साणमुवरि सम्मत्तं संजमं संजमासंजमं च पडिवज्जदि त्ति । एसा उत्तरपडिवत्ती । उत्तरमणुज्जुवं आइरियपरंपराए णागदमिदि एयट्ठो । पुणो मुहुत्तपुधत्तेण विसुद्धो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो । अवसाणे आउअं बंधिय मिच्छत्तं गदो । पुणो सम्मत्तं पडिवज्जिय कालं कादूण सोहम्मीसाणदेवेसु उववण्णो । आदिल्लेहि मुहुत्तपुधत्तब्भहिय-वेमासेहि अवसाणे उवलद्ध-वेअंतोमुहुत्तेहि य ऊणाणि तिण्णि पलिदोवमाणि मिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३८ ॥

कुदो ? ओघचदुगुणट्ठाणणाणेगजीव-जहण्णुक्कस्संतरकालेहिंतो तिरिक्खगदिचदुगुणट्ठाणणाणेगजीव-जहण्णुक्कस्संतरकालाणं भेदाभावा । तं जहा—सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ अंतरमाहप्पजाणावणट्ठमप्पाबहुगं उच्चदे—सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठिरासी । तस्सेव कालो णाणाजीवगदो असंखेज्जगुणो । तस्सेव अंतरम- ॥५३९॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संखेज्जगुणं । एदमप्पाबहुगं ओघादिसव्वमग्गणासु सासणाणं पउंजिदव्वं । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदस्स कालस्स साहणउवएसो उच्चदे । तं जहा—तसेसु अच्छिदूण जेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लिदाणि सो सागरोवमपुधत्तेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तट्ठिदिसंतकम्मेण उवसमसम्मत्तं पडिवज्जदि । एदम्हादो उवरिमासु ट्ठिदीसु जदि सम्मत्तं गेण्हदि, तो णिच्छएण वेदगसम्मत्तमेव गेण्हदि । अथ एइंदिएसु जेण सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणि उव्वेल्लिदाणि, सो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवममेत्ते सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ट्ठिदिसंतकम्मे सेसे तसेसुववज्जिय उवसमसम्मत्तं पडिवज्जदि । एदाहि ट्ठिदीहि ऊणसेसकम्मट्ठिदिउव्वेल्लणकालो जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो तेण सासणेगजीवजहण्णंतरं पि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं होदि । उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । णवरि विसेसो एत्थ अत्थि तं भणिस्सामो—एक्को तिरिक्खो अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णि करणाणि करिय सम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए संसारमणंतं छिंदिय पोग्गलपरियट्टद्धं काऊण उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो आसाणं गदो मिच्छत्तं गंतूणंतरिय (१) अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय दुचरिमे भवे पंचिंदियतिरिक्खेसु उववज्जिय मणुसेसु आउअं बंधिय तिण्णि करणाणि करिय उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । उवसमसम्मत्तद्धाए मणुसगदिपाओग्गआवलियासंखेज्जदिभागावसेसाए आसाणं गदो । लद्धमंतरं । आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसासणद्धमच्छिय मदो मणुसो जादो सत्त मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्कंतो सत्त वस्साणि अंतोमुहुत्तब्भहियपंचमासे च गमेदूण (२) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (३) अणंताणुबंधी विसंजोइय (४) दंसणमोहणीयं खविय (५) अप्पमत्तो (६) पमत्तो (७) पुणो अप्पमत्तो (८) पुणो अपुव्वादिछहि अंतोमुहुत्तेहि (१४) णिव्वाणं गदो । एवं चोद्दसअंतोमुहुत्तेहि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण अब्भहिएहि अट्ठवस्सेहि य ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमंतरं होदि । एत्थुववज्जंतो अत्थो वुच्चदे । तं जधा—सासणं पडिवण्णविदियसमए जदि मरदि, तो णियमेण देवगदीए उववज्जदि । एवं जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागो देवगदिपाओग्गो कालो होदि । तदो उवरि मणुसगदिपाओग्गो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो कालो होदि । एवं सण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-चउरिंदिय-तेइंदिय-वेइंदिय-एइंदियपाओग्गो होदि । एसो णियमो सव्वत्थ सासणगुणं पडिवज्जमाणाणं । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ दव्व-कालंतरअप्पाबहुगस्स सासणभंगो । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । णवरि एत्थ विसेसो उच्चदे—एक्को तिरिक्खो अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णि करणाणि काऊण सम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए अद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तं संसारं काऊण पढमसम्मत्तं पडिवण्णो सम्मामिच्छत्तं गदो (१) मिच्छत्तं गंतूण (२) अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण दुचरिमभवे पंचिंदियतिरिक्खेसु उववज्जिय मणुसाउअं बंधिय अवसाणे उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय सम्मामिच्छत्तं गदो (३) । लद्धमंतरं । तदो मिच्छत्तं गदो (४) मणुसेसुववण्णो । उवरि सासणभंगो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं सत्तारसअंतोमुहुत्तब्भहिय-अट्ठवस्सेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि । असंजदसम्मादिट्ठिस्स णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । णवरि विसेसो उच्चदे– एक्को अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णि करणाणि काऊण पढमसम्मत्तं पडिवण्णो (१) उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए आसाणं गंतूणंतरिदो । अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण दुचरिमभवे पंचिंदियतिरिक्खेसु उववण्णो । मणुसेसु वासपुधत्ताउअं बंधिय उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । तदो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताए वा एवं गंतूण समऊणछावलियमेत्ताए वा उवसमसम्मत्तद्धाए सेसाए आसाणं गंतूण मणुसगदिपाओग्गम्हि मदो मणुसो जादो (२) । उवरि सासणभंगो । एवं पण्णारसेहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियअट्ठवस्सेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं सम्मत्तुक्कस्संतरं होदि । संजदासंजदाणं णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । एत्थ विसेसो उच्चदे– एक्को अणादियमिच्छादिट्ठी अद्धपोग्गलपरियट्टस्सादिसमए उवसमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो । (१) छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गंतूणंतरिदो मिच्छत्तं गदो । अद्धपोग्गलपरियट्टं परिभमिय दुचरिमे भवे पंचिंदियतिरिक्खेसु उप्पज्जिय उवसमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (२) । लद्धमंतरं । तदो मिच्छत्तं गदो (३) आउअं बंधिय (४) विस्समिय (५) कालं गदो मणुस्सेसु उववण्णो । उवरि सासणभंगो । एवमट्ठारसमंतोमुहुत्तब्भहिय-अट्ठवस्सेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं संजदासंजदुक्कस्संतरं होदि । तिरिक्खेसु संजमासंजमग्गहणादो पुव्वमेव मिच्छादिट्ठी मणुसाउअं किण्ण बंधाविदो ? ण, बद्धमणुसाउमिच्छादिट्ठिस्स संजमग्गहणाभावा ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३९ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४० ॥

कुदो ? तिण्हं पंचिंदियतिरिक्खाणं तिण्णि मिच्छादिट्ठिजीवे दिट्ठमग्गे सम्मत्तं णेदूण सव्वजहण्णकालेण पुणो मिच्छत्ते गेण्हाविदे अंतोमुहुत्तकालुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ ४१ ॥

तं जधा– तिण्णि तिरिक्खा मणुसा वा अट्ठावीससंतकम्मिया तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु पंचिंदियतिरिक्खतिगकुक्कुड-मक्कडादिएसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उववण्णा, वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंता, मुहुत्तपुधत्तेण विसुद्धा वेदगसम्मत्तं पडिवण्णा अवसाणे आउअं बंधिय मिच्छत्तं गदा। लद्धमंतरं। भूओ सम्मत्तं पडिवज्जिय कालं करिय सोहम्मीसाणदेवेसु उववण्णा। एवं वेअंतोमुहुत्तेहि मुहुत्तपुधत्तब्भहिय-वेमासेहि य ऊणाणि तिण्णि पलिदोवमाणि तिण्हं मिच्छादिट्ठीणमुक्कस्संतरं होदि।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ४२ ॥

तं जहा—पंचिंदियतिरिक्खतिगसासणसम्मादिट्ठिपवाहो केत्तियं पि कालं णिरंतरमागदो। पुणो सव्वेसु सासणेसु मिच्छत्तं पडिवण्णेसु एगसमयं सासणगुणविरहो होदूण विदियसमए उवसमसम्मादिट्ठिजीवेसु सासणं पडिवण्णेसु लद्धमेगसमयमंतरं। एवं चेव तिरिक्खतिगसम्मामिच्छादिट्ठीणं पि वत्तव्वं।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४३ ॥

तं जहा—पंचिंदियतिरिक्खतिगसासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठिजीवेसु सव्वेसु अण्णगुणं गदेसु दोण्हं गुणट्ठाणाणं पंचिंदियतिरिक्खतिएसु उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तंतरं होदूण पुणो दोण्हं गुणट्ठाणाणं संभवे जादे लद्धमंतरं होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ४४ ॥

पंचिंदियतिरिक्खतियसासणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, सम्मामिच्छादिट्ठीणं अंतोमुहुत्तमेगजीवजहण्णंतरं होदि। सेसं सुगमं।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ ४५ ॥

एत्थ ताव पंचिंदियतिरिक्खसासणाणं उच्चदे। तं जहा—एक्को मणुसो णेरइओ देवो वा एगसमयावसेसाए सासणद्धाए पंचिंदियतिरिक्खेसु उववण्णो। तत्थ पंचाणउदिपुव्वकोडिअब्भहियतिण्णि पलिदोवमाणि गमिय अवसाणे उवसमसम्मत्तं घेत्तूण एगसमयावसेसे आउए आसाणं गदो कालं करिय देवो जादो। एवं दुसमऊणसगट्ठिदी सासणुक्कस्संतरं होदि। सम्मामिच्छादिट्ठीणमुच्चदे—एक्को मणुसो अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) अंतरिय पंचाणउदिपुव्वकोडीओ परिभमिय तिपलिदोवमिएसु उववज्जिय अवसाणे पढमसम्मत्तं घेत्तूण सम्मामिच्छत्तं गदो। लद्धमंतरं (५)। सम्मत्तं वा मिच्छत्तं वा जेण गुणेण आउअं बद्धं तं पडिवज्जिय (६) देवेसु उववण्णो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा सगट्ठिदी उक्कस्संतरं होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं । णवरि सत्तेतालीसपुव्वकोडीओ तिण्णि पलिदोवमाणि च पुव्वुत्तदोसमयछअंतोमुहुत्तेहि य ऊणाणि उक्कस्संतरं होदि । एवं जोणिणीसु वि । णवरि सम्मामिच्छादिट्ठिउक्कस्सम्हि अत्थि विसेसो । उच्चदे– एक्को णेरइओ देवो वा मणुसो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिकुक्कुड-मक्कडेसु उववण्णो वे मासे गब्भे अच्छिय णिक्खंतो मुहुत्तपुधत्तेण विसुद्धो सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो । पण्णारस पुव्वकोडीओ परिभमिय कुरवेसु उववण्णो । सम्मत्तेण वा मिच्छत्तेण वा अच्छिय अवसाणे सम्मामिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरं । जेण गुणेण आउअं बद्धं, तेणेव गुणेण मदो देवो जादो । दोहि अंतोमुहुत्तेहि मुहुत्तपुधत्ताहिय-वेमासेहि य ऊणाणि पुव्वकोडिपुधत्तब्भहियतिण्णि पलिदोवमाणि उक्कस्संतरं होदि । सम्मुच्छिमेसु-प्पाइय सम्मामिच्छत्तं किण्ण पडिवज्जाविदो ? ण; तत्थ इत्थिवेदाभावा । सम्मुच्छिमेसु इत्थि-पुरिसवेदा किमट्ठं ण होंति ? सहावदो चेय ।

असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ४६ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदपंचिंदियतिरिक्खतिगस्स सव्वद्धमणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४७ ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खतियअसंजदसम्मादिट्ठीणं दिट्ठमग्गाणं अण्णगुणं पडिवज्जिय अइदहरकालेण पुणरागयाणमंतोमुहुत्तं-तरुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ ४८ ॥

पंचिंदियतिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठीणं ताव उच्चदे– एक्को मणुसो अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) संकलिट्ठो मिच्छत्तं गंतूणंतरिय पंचाणउदिपुव्वकोडीओ गमेदूण तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसुववण्णो थोवावसेसे जीविए उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । लद्धमंतरं (५) । तदो उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति आसाणं गंतूण देवो जादो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि पंचाणउदिपुव्वकोडि-अब्भहियतिण्णि पलिदोवमाणि पंचिंदियतिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठीणं उक्कस्संतरं होदि । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु एवं चेव । णवरि सत्तेतालीसपुव्वकोडीओ अहियाओ त्ति भाणिदव्वं । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु वि एवं चेव । णवरि कोच्छि विसेसो अत्थि, तं परू-वेमो । तं जहा– एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु उप्पण्णो । दोहि मासेहि गब्भादो णिक्कमिय मुहुत्तपुधत्तेण वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (१) संकिलिट्ठो मिच्छत्तं गंतूणंतरिय पण्णारस पुव्वकोडीओ भमिय तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु उप्पण्णो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अवसाणे उवसमसम्मत्तं गंदो । लद्धमंतरं (२) । छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए आसाणं गदो मदो देवो जादो । दोहि अंतोमुहुत्तेहि मुहुत्तपुधत्तब्भहिय-वेमासेहि य ऊणा सगट्ठिदी असंजदसम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं होदि ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ४९ ॥

कुदो ? संजदासंजदविरहिदपंचिंदियतिरिक्खतिगस्स सव्वदाणुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५० ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खतिगसंजदासंजदस्स दिट्ठमग्गस्स अण्णगुणं गंतूण अइदहरकालेण पुणरागदस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ॥ ५१ ॥

तत्थ ताव पंचिंदियतिरिक्खसंजदासंजदाणं उच्चदे । तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (४) संकिलिट्ठो मिच्छत्तं गंतूणंतरिय छण्णउदिपुव्वकोडीओ परिभमिय अपच्छिमाए पुव्वकोडीए मिच्छत्तेण सम्मत्तेण वा सोहम्मादिसु आउअं बंधिय अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए संजमासंजमं पडिवण्णो (५) कालं करिय देवो जादो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ छण्णउदिपुव्वकोडीओ उक्कस्संतरं जादं । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु एवं चेव । णवरि अट्ठेतालीसपुव्वकोडीओ त्ति भाणिदव्वं । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु वि एवं चेव । णवरि कोइ विसेसो अत्थि तं भणिस्सामो । तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु उप्पण्णो वे मासे गब्भे अच्छिय णिक्खंतो मुहुत्तपुधत्तेण विसुद्धो वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (१) । संकिलिट्ठो मिच्छत्तं गंतूणंतरिय सोलसपुव्वकोडीओ परिभमिय देवाउअं बंधिय अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए संजमासंजमं पडिवण्णो (२) । लद्धमंतरं । मदो देवो जादो । बेहि अंतोमुहुत्तेहि मुहुत्तपुधत्तब्भहिय-वेमासेहि य ऊणाओ सोलहपुव्वकोडीओ उक्कस्संतरं होदि ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ५२ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५३ ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तयस्स अण्णेसु अपज्जत्तएसु खुद्दाभवग्गहणाउट्ठिदिएसु उववज्जिय पडिणियत्तिय आगदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ५४ ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तयस्स अणप्पिदजीवेसु उप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिय पडिणियत्तिय आगंतूण पंचिंदियतिरिक्खापज्जत्तेसु उप्पण्णस्स सुत्तुत्तंतरुवलंभा ।

एदं गदिं पडुच्च अंतरं ॥ ५५ ॥

जीवट्ठाणम्हि मग्गणविसेसिदगुणट्ठाणाणं जहण्णुक्कस्संतरं वत्तव्वं । अदीदसुत्ते पुणो मग्गणाए उत्तमंतरं । तदो णेदं घडदि त्ति आसंकिय गंथकत्तारो परिहारं भणदि एवमेदं गदिं पडुच्च उत्तं सिस्समइविप्फारणट्ठं । तदो ण दोसो त्ति ।

गुणं पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ५६ ॥

एदस्सत्थो—गुणं पडुच्च अंतरे भण्णमाणे उभयदो जहण्णुक्कस्सेहिंतो णाणेगजीवेहि वा अंतरं णत्थि, गुणंतरगहणाभावा पवाहवोच्छेदाभावाच्च ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ५७ ॥

सुगममेदं सुदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५८ ॥

कुदो ? तिविहमणुसमिच्छादिट्ठिस्स दिट्ठमग्गस्स गुणंतरं पडिवज्जिय अइदहरकालेण पडिणियत्तिय आगदस्स सव्वजहण्णंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ ५९ ॥

ताव मणुसमिच्छादिट्ठीणं उच्चदे । तं जधा—एक्को तिरिक्खो मणुस्सो वा अट्ठावीससंतकम्मिओ तिपलिदोवमिएसु मणुसेसु उववण्णो । णव मासे गब्भे अच्छिदो । उत्ताणसेज्जाए अंगुलिआहारेण सत्त, रंगंतो सत्त, अथिरगमणेण सत्त, थिरगमणेण सत्त, कलासु सत्त, गुणेसु सत्त, अण्णे वि सत्त दिवसे गमिय विसुद्धो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो । तिण्णि पलिदोवमाणि गमेदूण मिच्छत्तं गदो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजमासंजमं पडिवण्णो । लद्धमंतरं (२)। मदो देवो जादो । एवं अट्ठवस्सेहि वे-अंतोमुहुत्तेहि य ऊणाओ अट्ठेदालीसपुव्वकोडीओ संजदासंजदुक्कस्संतरं होदि । पमत्तस्स उक्कस्संतरं उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अण्णगदीदो आगंतूण मणुसेसु उववण्णो । गब्भादि-अट्ठवस्सेहि वेदगसम्मत्तं संजमं च पडिवण्णो अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण (२) मिच्छत्तं गंतूणंतरिय अट्ठेतालीसपुव्वकोडीओ परिभमिय अपच्छिमाए पुव्वकोडीए बद्धाउओ संतो अप्पमत्तो होदूण पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (३)। मदो देवो जादो । तिण्णिअंतोमुहुत्तब्भहिय-अट्ठवस्सेणूणअट्ठेदालीसपुव्वकोडीओ पमत्तुक्कस्संतरं होदि । अप्पमत्तस्स उक्कस्संतरं उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अण्णगदीदो आगंतूण मणुसेसु उप्पज्जिय गब्भादिअट्ठवस्सिओ जादो । सम्मत्तं अप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१)। पमत्तो होदूणंतरिदो अट्ठेता-लीसपुव्वकोडीओ परिभमिय अपच्छिमाए पुव्वकोडीए बद्धदेवाउओ संतो अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (२)। तदो पमत्तो होदूण (३) मदो देवो जादो । तीहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियअट्ठवस्सेहि ऊणाओ अट्ठेदालीस पुव्वकोडीओ उक्कस्संतरं । पज्जत्त-मणुसिणीसु एवं चेव । णवरि पज्जत्तेसु चउवीसपुव्वकोडीओ, मणुसिणीसु अट्ठपुव्वकोडीओ त्ति वत्तव्वं ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७० ॥

कुदो ? तिविहमणुस्साणं चउव्विहउवसामगेहि विणा एगसमयावट्ठाणुवलंभा ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ७१ ॥

कुदो ? तिविहमणुस्साणं चउव्विहउवसामगेहि विणा उक्कस्सेण वासपुधत्तावट्ठाणुवलंभादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७२ ॥

सुगममेदं सुत्तं, ओघम्हि उत्तत्तादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं ॥ ७३ ॥

मणुस्साणं ताव उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ मणुसेसु उववण्णो गब्भादिअट्ठवस्सेहि सम्मत्तं संजमं च समगं पडिवण्णो (१)। पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे सादासादबंधपरावत्तिसहस्सं कादूण (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) उवसमसेढीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (४)। अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो (११) अपमत्तो होदूणंतरिदो । अट्ठेतालीसपुव्वकोडीओ परिभमिय अपच्छिमाए पुव्वकोडीए बद्धदेवाउओ सम्मत्तं संजमं च पडिवज्जिय दंसणमोहणी-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

यमुवसामिंय उवसमसेढीपाओग्गविसोहीए विसुज्झिय अपमत्तो होदूण अपुव्वो जादो । लद्धमंतरं । तदो णिद्दा-पयलाणं बंधवोच्छेद-पढमसमए कालं गदो देवो जादो । अट्ठवस्सेहि एक्कारसअंतोमुहुत्तेहि य अपुव्वद्धाए सत्तमभागेण च ऊणाओ अट्ठेतालीसपुव्वकोडीओ उक्कस्संतरं होदि । एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं । णवरि दसहिं णवहि अट्ठहि अंतोमुहुत्तेहि एगसमयाहियअट्ठवस्सेहि य ऊणाओ अट्ठेदालीसपुव्वकोडीओ उक्कस्संतरं होदि त्ति वत्तव्वं । पज्जत्त-मणुसिणीसु एवं चेव । णवरि पज्जत्तेसु चउवीसं पुव्वकोडीओ, मणुसिणीसु अट्ठ पुव्वकोडीओ त्ति वत्तव्वं ।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७४ ॥

कुदो ? एदेसु गुणट्ठाणेसु अण्णगुणं णिव्वुदिं च गदेसु एदेसिमेगसमयमेत्तजहण्णंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण छम्मासं, वासपुधत्तं ॥ ७५ ॥

मणुस-मणुसपज्जत्ताणं छमासमंतरं होदि । मणुसिणीसु वासपुधत्तमंतरं होदि । जहासंखाए विणा कधमेदं णव्वदे ? गुरूवदेसादो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ७६ ॥

कुदो ? भूओ आगमणाभावा । णिरंतरणिद्देसो किमट्ठं वुच्चदे ? णिग्गयमंतरं जम्हा गुणट्ठाणादो तं गुणट्ठाणं णिरंतरमिदि विहिमुहेण दव्वट्ठियणयावलंबिसिस्साणं पडिसेहपरूवणट्ठं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ७७ ॥

णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरमिच्चेदेण भेदाभावा ।

मणुसअपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ७८ ॥

किमट्ठमेदस्स एम्महंतस्स रासिस्स अंतरं होदि ? एसो सहाओ एदस्स । ण च सहावे जुत्तिवादस्स पवेसो अत्थि, भिण्णविसयादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७९ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८० ॥

कुदो ? अणप्पिदअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय अइदहरकालेण आगदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ८१ ॥

कुदो ? मणुसअपज्जत्तस्स एइंदिय गदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टा परियट्टिदूण पडिणियत्तिय आगदस्स सुत्तुत्तंतरुवलंभा ।

एदं गदिं पडुच्च अंतरं ॥ ८२ ॥

सिस्साणमंतरसंभवपदुप्पायणट्ठमेदं सुत्तं ।

गुणं पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ८३ ॥

उभयदो जहण्णुक्कस्सेण णाणेगजीवेहि वा णत्थि अंतरमिदि वुत्तं होदि । कुदो ? मग्गणमछंडिय गुणंतरग्गहणाभावा ।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ८४ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८५ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं दिट्ठमग्गाणं देवाणं गुणंतरं गंतूण अइदहरकालेण पडिणियत्तिय आगदाणं अंतोमुहुत्त-अंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ८६ ॥

मिच्छादिट्ठिस्स ताव उच्चदे—एक्को दव्वलिंगी अट्ठावीससंतकम्मिओ उवरिमगेवेज्जेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो । एक्कत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तेणंतरिय । अवसाणे मिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरं (४) । चुदो मणुसो जादो । चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि एक्कत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि । असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को दव्वलिंगी अट्ठावीससंतकम्मिओ उवरिमगेवेज्जेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिय एक्कत्तीसं सागरोवमाणि अच्छिदूण आउअं बंधिय सम्मत्तं पडिवण्णो । लद्धमंतरं (५) । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि एक्कत्तीसं सागरोवमाणि असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं होदि । ॥५५०॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ८७ ॥

कुदो ? दोण्हं पि सांतररासीणं णिरवसेसेण अण्णगुणं गदाणं एगसमयंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८८ ॥

कुदो ? एदासिं दोण्हं रासीणं सांतराणं णिरवसेसेण अण्णगुणं गदाणं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते अंतरं पडि विरोहाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ८९ ॥

सासणसम्मादिट्ठिस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो अंतरं, सम्मामिच्छादिट्ठिस्स अंतोमुहुत्तं । सेसं सुगमं, बहुसो परूविदत्तादो ।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ९० ॥

सासणस्स तावुच्चदे—एक्को मणुसो दव्वलिंगी उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय सासणं गंतूण तत्थ एगसमओ अत्थि त्ति मदो देवो जादो । एगसमयं सासणगुणेण दिट्ठो । विदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिय एक्कत्तीसं सागरोवमाणि गमिय आउअं बंधिय उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो सासणं गदो । लद्धमंतरं । सासणगुणेणेगसमयमच्छिय विदियसमए मदो मणुसो जादो । तिहि समएहि ऊणाणि एक्कत्तीसं सागरोवमाणि सासणुक्कस्संतरं । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को दव्वलिंगी अट्ठावीससंतकम्मिओ उवरिमगेवज्जेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिय एक्कत्तीसं सागरोवमाणि गमिय आउअं बंधिय सम्मामिच्छत्तं गदो (५) जेण गुणेण आउअं बद्धं, तेणेव गुणेण मदो मणुसो जादो (६)। छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि एक्कत्तीसं सागरोवमाणि सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-सोधम्मीसाणप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ९१ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९२ ॥

कुदो ? णवसु सग्गेसु वट्टंतमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं अण्णगुणं गंतूणंतरिय लहुमागदाणं अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण सागरोवमं पलिदोवमं वे सत्त दस चोद्दस सोलस अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ९३ ॥

मिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे–तिरिक्खो मणुसो वा अप्पिददेवेसु सग-सगुक्कस्साउट्ठिदिएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो । अंतरिदो अप्पणो उक्कस्साउट्ठिदिमणुपालिय अवसाणे मिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरं (४)। चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदीओ मिच्छादिट्ठिउक्कस्संतरं होदि । एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स वि । णवरि पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणउक्कस्सट्ठिदीओ अंतरं होदि ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणं सत्थाणोघं ॥ ९४ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं; उक्कस्सेण वेहि समएहि छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ उक्कस्सट्ठिदीओ अंतरमिच्चेएहि भेदाभावा । णवरि सग-सगुक्कस्सट्ठिदीओ देसूणाओ उक्कस्संतरमिदि एत्थ वत्तव्वं, सत्थाणोघण्णहाणुववत्तीदो ।

आणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ९५ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९६ ॥

कुदो ? तेरसभुवणट्ठिदमिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठीणं दिट्ठमग्गाणमण्णगुणं गंतूण लहुमागदाणमंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण वीसं वावीसं तेवीसं चउवीसं पणवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं ऊणत्तीसं तीसं एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ९७ ॥

मिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे–एक्को दव्वलिंगी मणुसो अप्पिददेवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(३) वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो। अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदीओ अणुपालिय अवसाणे मिच्छत्तं गदो (४)। चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणो अप्पप्पणो उक्कस्सट्ठिदीओ मिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं होदि। असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे– एक्को दव्वलिंगी बद्धुक्कस्साउओ अप्पिददेवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अप्पप्पणो उक्कस्साउट्ठिदियमणुपालिय सम्मत्तं गंतूण (५) मदो मणुसो जादो। पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणउक्कस्सट्ठिदिमेत्तं लद्धमंतरं।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणं सत्थाणमोघं ॥ ९८ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वेहि समएहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ अप्पप्पणो उक्कस्सट्ठिदीओ अंतरं होदि, एदेहि भेदाभावा।

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ९९ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १०० ॥

एगगुणत्तादो अण्णगुणगमणाभावा। एवं गदिमग्गणा समत्ता।

इंदियाणुवादेण एइंदियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १०१ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १०२ ॥

कुदो ? एइंदियस्स तसकाइयापज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वलहुएण कालेण पुणो एइंदियमागदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि १०३ ॥

तं जहा– एइंदिओ तसकाइएसु उववज्जिय अंतरिदो पुव्वकोडीपुधत्तेणब्भहियवेसागरोवमसहस्समेत्तं तसट्ठिदिं परिभमिय एइंदियं गदो। लद्धमेइंदियाणमुक्कस्संतरं तसट्ठिदिमेत्तं। देवमिच्छादिट्ठीणमेइंदिएसु पवेसिय असंखेज्जपोग्गलपरियट्टी तत्थ भमाडिय पच्छा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवेसुप्पाइय देवाणमंतरं किण्ण परूविदं ? ण, णिरुद्धदेवगदिमग्गणाए अभावप्पसंगा। मग्गणमछंडंतेण अंतरपरूवणा कादव्वा, अण्णहा अव्ववत्थावत्तीदो। एइंदियं तसकाइएसु उप्पादिय अंतरे भण्णमाणे मग्गणाए विणासो किण्ण होदीदि चे होदि, किंतु जीए मग्गणाए बहुगुणट्ठाणाणि अत्थि तीए तं मग्गणमछंडिय अण्णगुणेहि अंतराविय अंतरपरूवणा कादव्वा। जीए पुण मग्गणाए एक्कं चेव गुणट्ठाणं तत्थ अण्णमग्गणाए अंतराविय अंतरपरूवणा कादव्वा इदि एसो सुत्ताभिप्पाओ। ण च एइंदिएसु गुणट्ठाणबहुत्तमत्थि, तेण तसकाइएसु उप्पादिय अंतरपरूवणा कदा।

बादरेइंदियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १०४ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १०५ ॥

कुदो ? बादरेइंदियस्स अण्णअपज्जत्तेसु उप्पज्जिय सव्वत्थोवेण कालेण पुणो बादरेइंदियं गदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ १०६ ॥

तं जहा– एक्को बादरेइंदिओ सुहुमेइंदियादिसु उप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तकालमंतरिय पुणो बादरेइंदिएसु उववण्णो। लद्धमसंखेज्जलोगमेत्तं बादरेइंदियाणमंतरं।

एवं बादरेइंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणं ॥ १०७ ॥

कुदो ? बादरेइंदिएहिंतो सव्वपयारेण एदेसिमंतरस्स भेदाभावा।

सुहुमेइंदिय-सुहुमेइंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १०८ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १०९ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियस्स अणप्पिदअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वत्थोवेण कालेण तीसु वि सुहुमेइंदिएसु आगंतूणुप्पण्णस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ११० ॥

तं जहा—एक्को सुहुमेइंदिओ पज्जत्तो अप्पमत्तो च बादरेइंदिएसु उववण्णो। तसकाइएसु बादरेइंदिएसु च असंखेज्जासंखेज्जा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीपमाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय पुणो तिसु सुहुमेइंदिएसु आगंतूण उववण्णो। लद्धमंतरं बादरेइंदिय-तसकाइयाणमुक्कस्सट्ठिदी।

बीइंदिय-तीइंदिय-चदुरिंदिय-तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १११ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११२ ॥

कुदो ? अणप्पिदअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वत्थोवेण कालेण पुणो णवसु विगलिंदिएसु आगंतूण उप्पण्णस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ११३ ॥

तं जहा—णव हि विगलिंदिया एइंदिएसु उप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे परियट्टिय पुणो णवसु विगलिंदिएसु उप्पण्णा ? लद्धमंतरं असंखेज्जपोग्गलपरियट्टमेत्तं।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ११४ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वे छावट्ठिसागरोवमाणि अंतोमुहुत्तेण ऊणाणि इच्चेएण भेदाभावा।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ११५ ॥

दोगुणट्ठाणजीवेसु सव्वेसु अण्णगुणं गदेसु दोण्हं गुणट्ठाणाणं एगसमयविरहुवलंभा।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११६ ॥

कुदो ? सांतररासित्तादो। बहुगमंतरं किण्ण होदि ? सभावा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ११७ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो उत्तत्तादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ११८ ॥

सासणस्स ताव उच्चदे—एक्को अणंतकालमसंखेज्जलोगमेत्तं वा एइंदिएसु ट्ठिदो असण्णिपंचिंदिएसु आगंतूण उववण्णो । पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) कमेण कालं करिय भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसुप्पण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सासणं गदो । आदी दिट्ठा । मिच्छत्तं गंतूणंतरिय सगट्ठिदिं परियट्टियावसाणे सासणं गदो । लद्धमंतरं । तदो थावरपाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिय कालं करिय थावरकाएसु उववण्णो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण णवहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगट्ठिदी अंतरं । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को जीवो एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो । पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरेसु आउअं बंधिय (४) विस्समिय (५) देवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सम्मामिच्छत्तं गदो (१०) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिय सगट्ठिदिं परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे सम्मामिच्छत्तं गदो (११) । लद्धमंतरं । मिच्छत्तं गंतूण (१२) एइंदिएसु उववण्णो । बारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणसगट्ठिदी सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं । 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पंचिंदियट्ठिदी पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियसागरोवमसहस्समेत्ता, पज्जत्ताणं सागरोवमसदपुधत्तमेत्ता त्ति वत्तव्वं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ११९ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२० ॥

कुदो ? एदेसिमण्णगुणं गंतूण सव्वदहरेण कालेण पडिणियत्तिय अप्पप्पणो गुणमागदाणमंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १२१ ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्समिय (५) मदो देवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति आसाणं गदो अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (१०)। पुणो सासणं गदो आवलियाए असंखेज्जदिभागं कालमच्छिदूण थावरकाएसु उववण्णो। दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगट्ठिदी लद्धमुक्कस्संतरं। सागरोवमसदपुधत्तं देसूणमिदि वत्तव्वं ? ण, पंचिंदियपज्जत्तट्ठिदीए देसूणाए वि सागरोवमसदपुधत्तत्तादो। तं पि कथं णव्वदे ? सुत्ते देसूणवयणाभावादो। सण्णिसम्मुच्छिमपंचिंदिएसुप्पाइय सम्मत्तं गेण्हाविय मिच्छत्तेण किण्णांतराविदो ? ण, तत्थ पढमसम्मत्तग्गहणाभावा। वेदगसम्मत्तं किण्ण पडिवज्जाविदो ? ण, एइंदिएसु दीहद्धमवट्ठिदस्स उव्वेल्लिदसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तस्स तदुप्पायणे संभवाभावा। संजदासंजदस्स वुच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु उववण्णो तिण्णिपक्ख-तिण्णिदिवस-अंतोमुहुत्तेहि (१) पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (२) छावलियाओ पढमसम्मत्तद्धाए अत्थि त्ति आसाणं गंतूणंतरिदो। मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे पंचिंदियभवे सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे संजमासंजमं च पडिवण्णो (३) अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६)। उवरि छ मुहुत्ता। तिण्णिपक्खेहि तिण्णिदिवसेहि वारसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया सगट्ठिदी लद्धं संजदासंजदाणमुक्कस्संतरं। एइंदिएसु किण्ण उप्पाइदो ? लद्धमंतरं करिय उवरि सिज्झणकालादो मिच्छत्तं गंतूण एइंदिएसु आउअं बंधिय तत्थुप्पज्जणकालो संखेज्जगुणो त्ति एइंदिएसु ण उप्पादिदो। उवरिमाणं पि एदमेव कारणं वत्तव्वं। पमत्तस्स वुच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्सेहि उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) पमत्तो जादो (२)। हेट्ठा पडिदूणंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे मणुसो जादो। दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अप्पमत्तो होदूण पमत्तो जादो (३)। लद्धमंतरं। भूओ अप्पमत्तो (४) उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया सगट्ठिदी पमत्तस्सुक्कस्संतरं लद्धं। अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो। आदी दिट्ठा (१)। अंतरिदो अपच्छिमे पंचिंदियभवे मणुसेसु उववण्णो। दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (२)। तदो पमत्तो (३) अप्पमत्तो (४)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवमट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया पंचिंदियट्ठिदी उक्कस्संतरं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चदुण्हमुवसामगाणं णाणाजीवं पडि ओघं ॥ १२२ ॥

कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तमिच्चेएहि ओघादो भेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२३ ॥

तिण्हमुवसामगाणमुवरि चढिय हेट्ठा ओदिण्णे जहण्णमंतरं होदि । उवसंतकसायस्स हेट्ठा ओदरिय पुणो सव्वजहण्णेण कालेण उवसंतकसायत्तं पडिवण्णे जहण्णमंतरं होदि ।

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १२४ ॥

एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सेहि विसुद्धो उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो अंतोमुहुत्तेण (१) वेदगसम्मत्तं गदो । तदो अंतोमुहुत्तेण (२) अणंताणुबंधी विसंजोजिय (३) विस्समिय (४) दंसणमोहणीयमुवसमिय (५) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (६) उवसमसेढीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (७) । अपुव्वो (८) अणियट्टी (९) सुहुमो (१०) उवसंतो (११) सुहुमो (१२) अणियट्टी (१३) अपुव्वो (१४) । हेट्ठा ओदरिदूण पंचिंदियट्ठिदिं परिभमिय पच्छिमे भवे मणुसेसु उववण्णो । दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो । पुणो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण उवसमसेढीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण अपुव्वउवसामगो जादो । लद्धमंतरं (१५) । तदो अणियट्टी (१६) सुहुमो (१७) उवसंतकसाओ (१८) सुहुमो (१९) अणियट्टी (२०) अपुव्वो (२१) अप्पमत्तो (२२) पमत्तो (२३) अप्पमत्तो (२४) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवं अट्ठहि वस्सेहि तीसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगट्ठिदी अपुव्वुक्कस्संतरं । एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं वत्तव्वं । णवरि अट्ठावीस-छव्वीस-चदुवीसअंतोमुहुत्तेहि अब्भहियअट्ठवस्सूणा सगट्ठिदी अंतरं होदि ।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १२५ ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा; एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरमिच्चेएहि ओघादो भेदाभावा । ॥५५८॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ १२६ ॥

कुदो ? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरमिच्चेदेण ओघादो भेदाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियअपज्जत्ताणं वेइंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ १२७ ॥

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्ट-मिच्चेएहि वेइंदियअपज्जत्तेहिंतो पंचिंदियअपज्जत्ताण भेदाभावा ।

एदमिंदियं पडुच्च अंतरं ॥ १२८ ॥ गुणं पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १२९ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवमिंदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १३० ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १३१ ॥

कुदो ? एदेसिमणप्पिदअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वत्थोवेण कालेण पुणो अप्पिदकायमागदाणं खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १३२ ॥

कुदो ? अप्पिदकायादो वणप्फदिकाइएसुप्पज्जिय अंतरिदजीवो वणप्फदिकायट्ठिदिं आवलियाए असंखेज्जदिभागपोग्गलपरियट्टमेत्तं परिभमिय अणप्पिदसेसकायट्ठिदिं च, तदो अप्पिदकायमागदो जो होदि, तस्स सुत्तुत्तुक्कस्संतरुवलंभा ।

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १३३ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १३४ ॥

कुदो ? अप्पिदकायादो अणप्पिदकायं गंतूण अइलहुएण कालेण पुणो अप्पिदकायमागदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ १३५ ॥

कुदो ? अप्पिदकायादो पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएसु उप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तकालं तत्थेव परिभमिय पुणो अप्पिदकायमागदस्स असंखेज्जलोगमेत्तंतरुवलंभा ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १३६ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १३७ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय ।

उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १३८ ॥

कुदो ? अप्पिदकायादो णिगोदजीवेसुप्पण्णस्स अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टाणि सेसकायपरिब्भमणेण सादिरेयाणि परिभमिय अप्पिदकायमागदस्स अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टमेत्तंतरुवलंभा ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १३९ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण वे छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि; इच्चेदेहि मिच्छादिट्ठि-ओघादो भेदाभावा ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ १४० ॥

कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; इच्चेएहि भेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ १४१ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ १४२ ॥

तं जहा– एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो । पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिदूण (४) विस्संतो (५) मदो भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सासणं गदो। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। तसट्ठिदिं परिभमिय अवसाणे सासणं गदो। लद्धमंतरं। तदो तत्थ थावरपाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदूण कालं गदो थावरकाएसु उववण्णो। आवलियाए असंखेज्जदिभागेण णवहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तट्ठिदी अंतरं होदि। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिय जीवो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्समिय (५) पुव्वुत्तदेवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। सम्मामिच्छत्तं गदो (१०)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसाए तस-तसपज्जत्तट्ठिदीए सम्मामिच्छत्तं गदो। लद्धमंतरं (११)। मिच्छत्तं गंतूण (१२) एइंदिएसु उववण्णो। वारसअंतोमुहुत्तेहि ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं होदि।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १४३ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४४ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ १४५ ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) कालं करिय भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए आसाणं गदो। अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (१०)। लद्धमंतरं। पुणो सासणं गदो आवलियाए असंखेज्जदिभागं कालमच्छिदूण एइंदिएसु उववण्णो। दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं। संजदासंजदस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु उववण्णो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु किण्ण उप्पादिदो ? ण, तत्थ संजमासंजमग्गहणाभावा । तिण्णिपक्ख-तिण्णिदिवसेहि अंतोमुहुत्तेण य पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)। पढमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो। अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय पच्छिमे तसभवे सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे संजमासंजमं पडिवण्णो (२)। लद्धमंतरं। अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६)। उवरि खवगसेढिम्हि छ मुहुत्ता। एवं बारसअंतोमुहुत्ताहिय-अट्ठेतालीसदिवसेहि ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी संजदासंजदुक्कस्संतरं। पमत्तस्स उच्चदे—एक्को एइंदियट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) पमत्तो (२) हेट्ठा परिवदिय अंतरिदो। सगट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे सम्मादिट्ठी मणुसो जादो। दंसणमोहणीयं खविय अप्पमत्तो होदूण पमत्तो जादो (३) लद्धमंतरं। भूओ अप्पमत्तो (४)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवं अट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणा तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं। अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को थावरट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय पच्छिमे भवे मणुसो जादो। सम्मत्तं पडिवण्णो दंसणमोहणीयं खविय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (२)। लद्धमंतरं। तदो पमत्तो (३) अप्पमत्तो (४)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवमट्ठहि वस्सेहि दसहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया तस-तसपज्जत्तट्ठिदी उक्कस्संतरं।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ १४६ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४७ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि, वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ १४८ ॥

जधा पंचिंदियमग्गणाए चदुण्हमुवसामगाणमंतरपरूवणा परूविदा, तधा एत्थ वि णिरवयवा परूवेदव्वा।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १४९ ॥

सुगममेदं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayū Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सजोगिकेवली ओघं ॥ १५० ॥

एदं पि सुगमं ।

तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो ॥ १५१ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टमिच्चेएहि पंचिंदियअपज्जत्तेहिंतो तसकाइयअपज्जत्ताणं भेदाभावा ।

एदं कायं पडुच्च अंतरं; गुणं पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १५२ ॥

सुगममेदं सुत्तं । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजद-सजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १५३ ॥

कुदो ? अप्पिदजोगसहिदअप्पिदगुणट्ठाणाणं सव्वकालं संभवादो । कधमेगजीवमासेज्ज अंतराभावो ? ण ताव जोगंतरगमणेणंतरं संभवदि, मग्गणाए विणासापत्तीदो । ण च अण्णगुणगमणेण अंतरं संभवदि, गुणंतरं गदस्स जीवस्स जोगंतरगमणेण विणा पुणो आगमणाभावादो । तम्हा एगजीवस्स वि णत्थि चेव अंतरं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १५४ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५५ ॥

कुदो ? दोण्हं रासीणं सांतरत्तादो । सांतरत्ते वि अहियमंतरं किण्ण होदि ? सहावदो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १५६ ॥

कुदो ? गुण-जोगंतरगमणेहि तदसंभवा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ १५७ ॥

कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तमिच्चेएहि ओघादो भेदाभावा।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १५८ ॥

जोग-गुणंतरगमणेण तदसंभवा। एगजोगपरिणमणकालादो गुणकालो संखेज्जगुणो त्ति कथं णव्वदे ? एगजीवस्स अंतराभाव-पदुप्पायणसुत्तादो।

चदुण्हं खवाणमोघं ॥ १५९ ॥

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासं; एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरमिच्चेदेहि भेदाभावा।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १६० ॥

तम्हि जोग-गुणंतरसंकंतीए अभावादो।

सासणसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ १६१ ॥

कुदो ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; इच्चेदेहि ओघादो भेदाभावा।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १६२ ॥

कुदो ? तत्थ जोगंतरगमणाभावा। गुणंतरं गदस्स वि पडिणियत्तिय सासणगुणेण तम्हि चेव जोगे परिणमणाभावा।

असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १६३ ॥

कुदो ? देव-णेरइय-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुसेसु उप्पत्तीए विणा मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं तिरिक्खेसु उप्पत्तीए विणा एगसमयं असंजदसम्मादिट्ठिविरहिदओरालियमिस्सकायजोगस्स संभवादो।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ १६४ ॥

तिरिक्ख-मणुस्सेसु वासपुधत्तमेत्तकालमसंजदसम्मादिट्ठीणमुववादाभावा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १६५ ॥

तम्हि तस्स गुण-जोगंतरसंकंतीए अभावा ।

सजोगिकेवलीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १६६ ॥

कुदो ? कवाडपज्जायविरहिदकेवलीणमेगसमओवलंभा ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ १६७ ॥

कवाडपज्जाएण विणा केवलीणं वासपुधत्तच्छणसंभवादो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १६८ ॥

कुदो ? जोगंतरमगंतूण ओरालियमिस्सकायजोगे चेव ट्ठिदस्स अंतरासंभवा ।

वेउव्वियकायजोगीसु चदुट्ठाणीणं मणजोगिभंगो ॥ १६९ ॥

कुदो ? णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण साधम्मादो ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७० ॥

तं जहा—वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठिणो सव्वे वेउव्वियकायजोगं गदा । एगसमयं वेउव्वियमिस्सकायजोगो मिच्छादिट्ठीहि विरहिदो दिट्ठो । विदियसमए सत्तट्ठ जणा वेउव्वियमिस्सकायजोगे दिट्ठा । लद्धमेगसमयमंतरं ।

उक्कस्सेण बारस मुहुत्तं ॥ १७१ ॥

तं जहा—वेउव्वियमिस्समिच्छादिट्ठीसु सव्वेसु वेउव्वियकायजोगं गदेसु बारसमुहुत्तमेत्तमंतरिय पुणो सत्तट्ठजणेसु वेउव्वियमिस्सकायजोगं पडिवण्णेसु बारसमुहुत्तंतरं होदि ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १७२ ॥

तत्थ जोग-गुणंतरगमणाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं ओरालियमिस्सभंगो ॥ १७३ ॥

कुदो ? सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण एगसमयं, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो तेहि, एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं तेण; असंजदसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सगयएगसमय-मासपुधत्तंतरेण, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण च तदो भेदाभावा ।

आहारकायजोगिआहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७४ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ १७५ ॥

एदं पि सुगममेव ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १७६ ॥

तम्हि जोग-गुणंतरग्गहणाभावा ।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-सजोगिकेवलीणं ओरालियमिस्सभंगो ॥ १७७ ॥

मिच्छादिट्ठीणं णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण; सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवगयएगसमय-पलिदोवमासंखेज्जदिभागंतरेहि, एगजीवगयअंतराभावेण; असंजदसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवगयएगसमयमासपुधत्तंतरेहि, एगजीवगयअंतराभावेण; सजोगिकेवलिणाणाजीवगयएगसमयवासपुधत्तेहि, एगजीवगयअंतराभावेण च दोण्हं समाणत्तुवलंभा । एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १७८ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७९ ॥

कुदो ? इत्थिवेदमिच्छादिट्ठिस्स दिट्ठमग्गस्स अण्णगुणं गंतूण पडिणियत्तिय लहुं मिच्छत्तं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण पणवण्ण पलिदोवमाणि देसूणाणि ॥ १८० ॥

तं जहा—एक्को पुरिसवेदो णउंसयवेदो वा अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ पणवण्णपलिदोवमाउट्ठिदिदेवीसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो अंतरिदो अवसाणे आउअं बंधिय मिच्छत्तं गदो । लद्धमंतरं (४)। सम्मत्तेण बद्धाउअत्तादो सम्मत्तेणेव णिग्गदो (५) मणुसो जादो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहिं ऊणाणि पणवण्ण पलिदोवमाणि उक्कस्संतरं होदि । छप्पुढविणेरइएसु सोहम्मादिदेवेसु च सम्माइट्ठी बद्धाउओ पुव्वं मिच्छत्तेण णिस्सारिदो । एत्थ पुण पणवण्णपलिदोवमाउट्ठिदिदेवीसु तहा ण णिस्सारिदो । एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ १८१ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ १८२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगममेव ।

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं ॥ १८३ ॥

तं जहा—एक्को अण्णवेदट्ठिदिमच्छिदो सासणद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति इत्थिवेदेसु उववण्णो एगसमयं सासणगुणेण दिट्ठो । विदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अवसाणे त्थीवेदट्ठिदीए एगसमयावसेसाए सासणं गदो । लद्धमंतरं । मदो वेदंतरं गदो । वेहि समएहि ऊणयं पलिदोवमसदपुधत्तमंतरं लद्धं । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो देवीसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते सम्मामिच्छत्तं गदो (५)। लद्धमंतरं । जेण गुणेण आउअं बद्धं तं गुणं पडिवज्जिय अण्णवेदे उववण्णो (६)। एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया त्थीवेदट्ठिदी सम्मामिच्छत्तुक्कस्संतरं होदि । ॥५६७॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १८४ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८५ ॥

कुदो ? अण्णगुणं गंतूण पडिणियत्तिय तं चेव गुणमागदाणमंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं ॥ १८६ ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे । तं जहा– एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ देवीसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गदो अंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५)। लद्धमंतरं । छावलियावसेसे पढमसम्मत्तकाले सासणं गंतूण मदो वेदंतरं गदो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणयं पलिदोवमसदपुधत्तमंतरं होदि । देसूणवयणं सुत्ते किण्ण कदं ? ण, पुधत्तणिद्देसेणेव तस्स अवगमादो । संजदासंजदस्स उच्चदे– एक्को अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो त्थीवेदेसु उववण्णो । वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतो दिवसपुधत्तेण विसुद्धो वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय अंते पढमसम्मत्तं देससंजमं च जुगवं पडिवण्णो (२)। आसाणं गंतूण मदो देवो जादो । वेहि मुहुत्तेहि दिवसपुधत्ताहिय-वेमासेहि य ऊणा त्थीवेदट्ठिदी उक्कस्संतरं होदि । पमत्तस्स उच्चदे– एक्को अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ अण्णवेदो त्थीवेदमणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१)। पुणो पमत्तो जादो (२)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं परिभमिय पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (३)। मदो देवो जादो। अट्ठवस्सेहिं तीहिं अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया त्थीवेदट्ठिदी लद्धमुक्कस्संतरं । एवमप्पमत्तस्स वि उक्कस्संतरं भाणिदव्वं, विसेसाभावा ।

दोण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्समोघं ॥ १८७ ॥

कुदो ? एगसमय-वासपुधत्तंतरेहि ओघादो भेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८८ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं ॥ १८९ ॥

तं जहा– एक्को अण्णवेदो अट्ठावीससंतकम्मिओ त्थीवेदमणुसेसुववण्णो । अट्ठवस्सिओ सम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अणंताणुबंधी विसंजोइय (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६) अपुव्वो (७) अणियट्टी (८) सुहुमो (९) उवसंतो (१०) भूओ पडिणियत्तो सुहुमो (११) अणियट्टी (१२) अपुव्वो (१३) हेट्ठा पडिदूणंतरिदो त्थीवेदट्ठिदिं भमिय अवसाणे संजमं पडिवज्जिय कदकरणिज्जो होदूण अपुव्वुवसामगो जादो । लद्धमंतरं । तदो णिद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे मदो देवो जादो । अट्ठवस्सेहि तेरसंतोमुहुत्तेहि य अपुव्वकरणद्धाए सत्तमभागेण च ऊणिया सगट्ठिदी अंतरं । अणियट्टिस्स वि एवं चेव । णवरि वारस अंतोमुहुत्ता एगसमओ च वत्तव्वो ।

दोण्हं खवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १९० ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ १९१ ॥

अप्पमत्तत्थीवेदाणं वासपुधत्तेण विणा अण्णस्स अंतरस्स अणुवलंभादो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १९२ ॥

सुगममेदं ।

पुरिसवेदएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ १९३ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च अंतराभावेण, एगजीवविसयअंतोमुहुत्त-देसूणवेच्छावट्ठिसागरोवमंतरेहि य तदो भेदाभावा ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १९४ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९५ ॥

एदं पि सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ १९६ ॥

एदं पि सुबोहं ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १९७ ॥

तं जहा—एक्को अण्णवेदो उवसमसम्मादिट्ठी सासणं गंतूण सासणद्धाए एगो समओ अत्थि त्ति पुरिसवेदो जादो । सासणगुणेण एगसमयं दिट्ठो, विदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो पुरिसवेदट्ठिदिं भमिय अवसाणे उवसमसम्मत्तं घेत्तूण सासणं पडिवण्णो । विदियसमए मदो देवेसु उववण्णो । एवं वि-समऊणसागरोवमसदपुधत्तमुक्कस्संतरं होदि । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अण्णवेदो देवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अंते सम्मामिच्छत्तं गदो (५)। लद्धमंतरं। अण्णगुणं गंतूण (६) अण्णवेदे उववण्णो। छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणं सागरोवमसदपुधत्तमुक्कस्संतरं होदि ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ १९८ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ २०० ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अण्णवेदो देवेसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो सगट्ठिदिं भमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५)। छावलियावसेसे उवसमसम्मत्तकाले आसाणं गंतूण मदो देवेसु उववण्णो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणं सागरोवमसदपुधत्तमंतरं होदि । संजदासंजदस्स वुच्चदे—एक्को अण्णवेदो पुरिसवेदेसु उववण्णो । वे मासे गब्भे अच्छिदूण णिक्खंतो दिवसपुधत्तेण उवसमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो । उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो (१) मिच्छत्तं गंतूण पुरिसवेदट्ठिदिं परिभमिय

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंते मणुसेसु उववण्णो। कदकरणिज्जो होदूण संजमासंजमं पडिवण्णो (२)। लद्धमंतरं। तदो अप्पमत्तो (३) पमत्तो (४) अप्पमत्तो (५)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवं वेहि मासेहि तीहि दिवसेहि एक्कारसेहि अंतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुरिसवेदट्ठिदी ऊक्कस्संतरं होदि। किं कारणं अंतरे लद्धे मिच्छत्तं णेदूण अण्णवेदेसु ण उप्पादिदो? ण एस दोसो, जेण कालेण मिच्छत्तं गंतूण आउअं बंधिय अण्णवेदेसु उववज्जदि, सो कालो सिज्झणकालादो संखेज्जगुणो त्ति कट्टु अणुप्पाइदत्तादो। उवरिल्लाणं पि एदं चेय कारणं वत्तव्वं। पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणं पंचिंदियपज्जत्तभंगो। णवरि विसेसं जाणिय वत्तव्वं।

दोण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ २०१ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०२ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ २०३ ॥

तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ अण्णवेदो पुरिसवेदमणुसेसु उववण्णो अट्ठवस्सिओ जादो। सम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अणंताणुबंधिं विसंजोइय (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५) अप्पमत्तो (६) अपुव्वो (७) अणियट्टी (८) सुहुमो (९) उवसंतकसाओ (१०) पडिणियत्तो सुहुमो (११) अणियट्टी (१२) अपुव्वो (१३) हेट्ठा परियट्टिय अंतरिदो। सागरोवमसदपुधत्तं परिभमिय कदकरणिज्जो होदूण संजमं पडिवज्जिय अपुव्वो जादो। लद्धमंतरं। उवरि पंचिंदियभंगो। एवमट्ठवस्सेहि एगूणतीसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणा सगट्ठिदी अंतरं होदि। अणियट्टिस्स वि एवं चेव वत्तव्वं। णवरि अट्ठवस्सेहि सत्तावीसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणं सागरोवमसदपुधत्तमंतरं होदि।

दोण्हं खवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २०४ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण वासं सादिरेयं ॥ २०५ ॥

तं जहा—पुरिसवेदेण अपुव्वगुणं पडिवण्णा सव्वे जीवा उवरिमगुणं गदा। अंतरिदमपुव्वगुणट्ठाणं। पुणो छमासेसु अदिक्कंतेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वे इत्थिवेदेण चेव खवगसेढिमारूढा । पुणो चत्तारि वा पंच वा मासे अंतरिदूण खवगसेढिं चढमाणा णवुंसयवेदोदएण चढिदा । पुणो वि एक्क-दो मासे अंतरिदूण इत्थिवेदेण चढिदा । एवं संखेज्जवारमित्थि-णवुंसयवेदोदएण चेव खवगसेढिं चढाविय पच्छा पुरिसवेदोदएण खवगसेढिं चढिदे वासं सादिरेयमंतरं होदि । कुदो ? णिरंतरं छम्मासंतरस्स असंभवादो । एवमणियट्टिस्स वि वत्तव्वं । केसु वि सुत्तपोत्थएसु पुरिसवेदस्संतरं छम्मासा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २०६ ॥

कुदो ? खवगाणं पडिणियत्तीए असंभवा ।

णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २०७ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २०८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २०९ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी अट्ठावीससंतकम्मिओ सत्तमपुढवीए उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो । अवसाणे मिच्छत्तं गंतूण (४) आउअं बंधिय (५) विस्समिय (६) मदो तिरिक्खो जादो । एवं छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसामिदो त्ति मूलोघं ॥ २१० ॥

कुदो ? सासणसम्मादिट्ठिस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । सम्मामिच्छादिट्ठिस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । असंजदसम्मादिट्ठिस्स णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । संजदा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजदस्स णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं। पमत्तस्स णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं। अप्पमत्तस्स णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं। अपुव्वकरणस्स णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवमणियट्टिस्स वि त्ति। एदेसिमेदेहि ओघादो भेदाभावा।

दोण्हं खवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २११ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २१२ ॥

कुदो ? अप्पसत्थवेदत्तादो।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २१३ ॥

सुगममेदं।

अवगदवेदएसु अणियट्टिउवसम-सुहुमउवसमाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २१४ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २१५ ॥

कुदो ? उवसामगत्तादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१६ ॥

कुदो ? उवरि चढिय हेट्ठा ओदिण्णस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २१७ ॥

सुगममेदं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २१८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २१९ ॥

कुदो ? एगवारमुवसमसेढिं चढिय ओदरिदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदे उक्कस्सेण उवसमसेढीए वासपुधत्तंतरुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २२० ॥

उवरि उवसंतकसायस्स चडणाभावा । हेट्ठा पडिदे वि अवगदवेदत्तणेण चेय उवसंतगुणट्ठाणपडिवज्जणे संभवाभावा ।

अणियट्टिखवा सुहुमखवा खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ २२१ ॥

कुदो ? अवगदवेदत्तं पडि उहयत्थ अत्थविसेसाभावा ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ २२२ ॥

सुगममेदं । एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोहकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा त्ति मणजोगिभंगो ॥ २२३ ॥

मिच्छादिट्ठि–असंजदसम्मादिट्ठि–संजदासंजद–पमत्त–अप्पमत्तसंजदाणं मणजोगिभंगो होदु, णाणेगजीवं पडि अंतराभावेण साधम्मादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणं मणजोगिभंगो होदु णाम, णाणाजीवजहण्णुक्कस्स-एगसमय-पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागंतरेहि, एगजीवं पडि अंतराभावेण च साधम्मादो । तिण्हमुवसामगाणं पि मणजोगिभंगो होदु णाम, णाणाजीवजहण्णुक्कस्सेण एगसमयवासपुधत्तंतरेहि, एगजीवस्संतराभावेण च साधम्मादो । किंतु तिण्हं खवाणं मणजोगिभंगो ण घडदे । कुदो ? मणजोगस्सेव कसायाणं छम्मासांतरभावा । तं हि कधं णव्वदे ? अप्पिदकसायवदिरित्तेहि तिहि कसाएहि एग-दु-ति-संजोगकमेण खवगसेढिं चढमाणाणं बहुवंतरुवलंभा ? ण एस दोसो, ओघेण सहप्पिदमणजोगिभंगण्णहाणुववत्तीदो । चदुण्हं कसायाणमुक्कस्संतरस्स छम्मासमेत्तस्सेव सिद्धीदो । ण पाहुडसुत्तेण वियहिचारो, तस्स भिण्णोवदेसत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२४ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २२५ ॥

उवसमसेढिविसयत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २२६ ॥

हेट्ठा ओदरिय अकसायत्ताविणासेण पुणो उवसंतपज्जाएण परिणमणाभावा ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ २२७ ॥ सजोगिकेवली ओघं ॥ २२८ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २२९ ॥

अच्छिण्णपवाहत्तादो गुणसंकंतीए अभावादो ।

सासणसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ २३० ॥

कुदो ? जहण्णुक्कस्सेगसमय-पलिदोवमासंखेज्जदिभागेहि साधम्मादो ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २३१ ॥

कुदो ? णाणंतरगमणे मग्गणविणासादो ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २३२ ॥

कुदो ? सव्वकालमविच्छिण्णपवाहत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३३ ॥

तं जहा—एक्को असंजदसम्मादिट्ठी संजमासंजमं पडिवण्णो तत्थ सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो वि असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतोमुहुत्तमंतरं ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ २३४ ॥

तं जहा—जो कोई जीवो अट्ठावीससंतकम्मिओ पुव्वकोडाउट्ठिदिसण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) अंतोमुहुत्तेण विसुद्धो संजमासंजमं गंतूणंतरिदो । पुव्वकोडिकालं संजमासंजममणुपालिदूण मदो देवो जादो । लद्धं चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया पुव्वकोडी अंतरं । ओधिणाणिअसंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४)। तदो अंतोमुहुत्तेण ओधिणाणी जादो । अंतोमुहुत्तमच्छिय (५) संजमासंजमं पडिवण्णो । पुव्वकोडिं संजमासंजममणुपालिदूण मदो देवो जादो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया पुव्वकोडी लद्धमंतरं ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २३५ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३६ ॥

एदं पि सुगमं, ओघादो एदस्स भेदाभावा ।

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २३७ ॥

तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ मणुसेसु उववण्णो । अट्ठवस्सिओ संजमासंजमं वेदगसम्मत्तं च जुगवं पडिवण्णो (१)। अंतोमुहुत्तेण संजमं गंतूणंतरिय संजमेण पुव्वकोडिं गमिय अणुत्तरदेवेसु तेत्तीसाउट्ठिदिएसु उववण्णो (३३)। तदो चुदो पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । खइयं पट्ठविय संजममणुपालिय पुणो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । दीहकालमच्छिदूण संजमासंजमं पडिवण्णो (२)। लद्धमंतरं । तदो संजमं पडिवण्णो (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (५)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमट्ठवस्सेहि एक्कारसअंतो-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुहुत्तेहि य ऊणियाहि तीहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतरं । एवमोहिणाणिसंजदासंजदस्स वि । णवरि आभिणिबोहियणाणस्स आदीदो अंतोमुहुत्तेण आदिं कादूण अंतराविय वारसअंतोमुहुत्तेहि समहियअट्ठवस्सूण-तीहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि त्ति वत्तव्वं । एदं वक्खाणं ण भद्दयं, अप्पंतरपरूवणादो । तदो दीहंतरट्ठमण्णा परूवणा कीरदे । एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ सण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तमच्छिय (४) असंजदसम्मादिट्ठी जादो । पुव्वकोडिं गमिय लंतय-काविट्ठदेवेसु तेरससागरोवमाउट्ठिदिएसु उववण्णो (१३) । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । तत्थ संजममणुपालिय बावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो । (२२) । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । तत्थ खइयं पट्ठविय संजममणुपालिय एक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो (३१) । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे संजमासंजमं गदो । लद्धमंतरं (५) । विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (६) । पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (७) खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (८) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवं चोद्दसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणचदुपुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतरं । एवमोधिणाणिसंजदासंजदस्स वि अंतरं वत्तव्वं । णवरि आभिणिबोहियणाणस्स आदिदो अंतोमुहुत्तेण आदिं कादूण अंतरावेदव्वो । पुणो पण्णारसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि चदुहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उप्पादेदव्वाणि ? णेदं घडदे, सण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु संजमासंजमस्सेव ओहिणाणुवसमसम्मत्ताणं संभवाभावादो । तं कधं णव्वदे ? 'पंचिंदिएसु उवसामेंतो गब्भोवक्कंतिएसु उवसामेदि, णो सम्मुच्छिमेसु' त्ति चूलियासुत्तादो । ओहिणाणाभावो कुदो णव्वदे ? सम्मुच्छिमेसु ओहिणाणमुप्पाइय अंतरपरूवयआइरियाणमणुवलंभा । भवदु णाम सण्णिसम्मुच्छिमेसु ओहिणाणाभावो, कहमोघम्मि उत्ताणमाभिणिबोहियसुदणाणाणं तेसु संभवंताणमेवेदमंतरं ण उच्चदे ? ण, तत्थुप्पण्णाणमेवंविहंतरासंभवादो । तं कुदो णव्वदे ? तहा अवक्खाणादो । अहवा जाणिय वत्तव्वं । गब्भोवक्कंतिएसु गमिदअट्ठेतालीसदिवसेसु ओहिणाणमुप्पादिय किण्ण अंतराविदो ? ण, तत्थ वि ओहिणाणसंभवपरूवयंतवक्खाणाइरियाणमभावादो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २३८ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३९ ॥

तं जहा—पमत्तापमत्तसंजदा अप्पिदणाणेण सह अण्णगुणं गंतूण पुणो पल्लट्टिय सव्वजहण्णेण कालेण तं चेव गुणमागदा। लद्धमंतोमुहुत्तं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २४० ॥

तं जहा—एक्को पमत्तो अप्पमत्तो (१) अपुव्वो (२) अणियट्टी (३) सुहुमो (४) उवसंतो (५) होदूण पुणो वि सुहुमो (६) अणियट्टी (७) अपुव्वो (८) अप्पमत्तो जादो (९)। अद्धाखएण कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए पमत्तो जादो (१)। लद्धमंतरं। तदो अप्पमत्तो (२)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अंतरस्स अब्भंतरिमेसु नवसु अंतोमुहुत्तेसु बाहिरिल्लअट्ठअंतोमुहुत्तेसु सोहिदेसु एगो अंतोमुहुत्तो अवचिट्ठदे। तेत्तीसं सागरोवमाणि एगेणंतोमुहुत्तेण अब्भहियपुव्वकोडीए सादिरेयाणि उक्कस्संतरं। एवं विसेसमजोएदूण उत्तं। विसेसे जोइज्जमाणे अंतरब्भंतरादो अप्पमत्तद्धाओ तासिं अंतर-बाहिरिया एक्का खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तद्धा तत्थेगद्धादो दुगुणा सरिसा त्ति अवणेदव्वा। पुणो अंतरब्भंतराओ छ उवसामगद्धाओ अत्थि, तासिं बाहिरिल्लएसु अवसिट्ठसत्तसु अंतोमुहुत्तेसु तिण्णि खवगद्धाओ अवणेदव्वा। एक्किस्से उवसंतद्धाए एगखवगद्धद्धं विसोहिदे अवसिट्ठेहि अड्डुट्ठंतोमुहुत्तेहि ऊणियाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतरं होदि। ओधिणाणिपमत्तसंजदमप्पमत्तादिगुणं णेदूण अंतराविय पुव्वं व उक्कस्संतरं वत्तव्वं, णत्थि एत्थ विसेसो। अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अप्पमत्तो अपुव्वो (१) अणियट्टी (२) सुहुमो (३) उवसंतो (४) होदूण पुणो वि सुहुमो (५) अणियट्टी (६) अपुव्वो होदूण (७) कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अप्पमत्तो जादो। लद्धमंतरं (१)। तदो पमत्तो (२) अप्पमत्तो (३)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अंतरस्स अब्भंतरिमाओ छ उवसामगद्धाओ अत्थि, तासिं अंतरबाहिरिल्लाओ तिण्णि खवगद्धाओ अवणेदव्वा। अंतरब्भंतरिमाए उवसंतद्धाए अंतर-बाहिरखवगद्धाए अद्धमवणेदव्वं। अवसिट्ठेहि अद्धछट्ठंतोमुहुत्तेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि। सरिसपक्खे अंतरस्सब्भंतरसत्तअंतोमुहुत्तेसु अंतर-बाहिरणवअंतोमुहुत्तेसु सोहिदेसु अवसेसा वे अंतोमुहुत्ता। एदेहि ऊणाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि। एवमोहिणाणिणो वि वत्तव्वं, विसेसाभावा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २४१ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २४२ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २४४ ॥

तं जहा–एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ पुव्वकोडाउअमणुसेसु उववण्णो । अट्ठवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१)। तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (२) उवसमसेढीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो (३) अपुव्वो (४) अणियट्टी (५) सुहुमो (६) उवसंतो (७) पुणो वि सुहुमो (८) अणियट्टी (९) अपुव्वो (१०) होदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदो । देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालेदूण मदो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । खइयं पट्ठविय संजमं कादूण कालं गदो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउओ मणुसो जादो संजमं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अपुव्वो जादो । लद्धमंतरं (११)। अणियट्टी (१२) सुहुमो (१३) उवसंतो (१४) भूओ सुहुमो (१५) अणियट्टी (१६) अपुव्वो (१७) अप्पमत्तो (१८) पमत्तो (१९) अप्पमत्तो (२०)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता । अट्ठहि वस्सेहि छव्वीसंतोमुहुत्तेहि य ऊणा तीहि पुव्वकोडीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि । अधवा चत्तारि पुव्वकोडीओ तेरस-वावीस-एक्कत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसु उप्पाइयवत्तव्वाओ । एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं । णवरि चदुवीस वावीस वीस अंतोमुहुत्ता ऊणा कादवा । एवमोहिणाणीणं पि वत्तव्वं, विसेसाभावा ।

चदुण्हं खवगाणमोघं । णवरि विसेसो ओधिणाणीसु खवाणं वासपुधत्तं ॥ २४५ ॥

कुदो ? ओधिणाणीणं पाएण संभवाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणपज्जवणाणीसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २४६ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४८ ॥

तं जहा—एक्को पमत्तो मणपज्जवणाणी अप्पमत्तो होदूण उवरि चढिय हेट्ठा ओदरिदूण पमत्तो जादो । लद्धमंतरं । अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अप्पमत्तो मणपज्जवणाणी पमत्तो होदूणंतरिय सव्वचिरेण कालेण अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं । उवसमसेढिं चढाविय किण्णंतराविदो ? ण, उवसमसेढिसव्वद्धाहिंतो पमत्तद्धा एक्का चेव संखेज्जगुणा त्ति गुरूवदेसादो ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २४९ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २५० ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५१ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ २५२ ॥

तं जहा—एक्को पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवण्णो (१) । पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे सादासादबंधपरावत्तसहस्सं कादूण (२) विसुद्धो मणपज्जवणाणी जादो (३) । उवसमसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण सेडीमुवगदो (४) । अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो वि सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो (११) पमत्ता-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्तसंजदट्ठाणे (१२) पुव्वकोडिमच्छिदूण अणुदिसादिसु आउअं बंधिदूण अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए विसुद्धो अपुव्वुवसामगो जादो। णिद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे कालं गदो देवो जादो। अट्ठवस्सेहि बारसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया पुव्वकोडी उक्कस्संतरं। एवं तिण्हमुवसामगाणं। णवरि जहाकमेण दस णव अट्ठ अंतोमुहुत्ता समओ य पुव्वकोडीदो ऊणा त्ति वत्तव्वं।

चदुण्हं खवगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २५३ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २५४ ॥

कुदो? मणपज्जवणाणेण खवगसेढिं चढमाणाणं पउरं संभवाभावा।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २५५ ॥

एदं पि सुगमं।

केवलणाणीसु सजोगिकवली ओघं ॥ २५६ ॥

णाणेगजीवअंतराभावेण साधम्मादो।

अजोगिकेवली ओघं ॥ २५७ ॥

सुगममेदं सुत्तं। एवं णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २५८ ॥

पमत्तापमत्तसंजदाणं णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। चदुण्हमुवसामगाणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण वासपुधत्तं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण देसूणपुव्वकोडी अंतरमिदि तदो विसेसाभावा।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ २५९ ॥

सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २७४ ॥

कुदो ? अधिगदसंजमाविणासेण अंतरावणे उवायाभावा ।

खवाणमोघं ॥ २७५ ॥

कुदो ? णाणाजीवगदजहण्णुक्कस्सेगसमय-छम्मासेहि एगजीवस्संतराभावेण य साधम्मादो ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु अकसाइभंगो ॥ २७६ ॥

कुदो ? अकसायाणं जहाक्खादसंजमेण विणा अण्णसंजमाभावा ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २७७ ॥

कुदो ? गुणंतरग्गहणे मग्गणाविणासा, गुणंतरग्गहणेण विणा अंतरकरणे उवायाभावा ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २७८ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिप्पवाहवोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २७९ ॥

कुदो ? गुणंतरं गंतूणंतरिय अविणट्ठअसंजमेण जहण्णकालेण पलट्टिय मिच्छत्तं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभा ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २८० ॥

तं जहा—एक्को अट्ठावीसमोहसंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी सत्तमाए पुढवीए उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मत्तं पडिवज्जिय अंतरिदो अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए मिच्छत्तं गदो (४) । लद्धमंतरं । तिरिक्खाउअं बंधिय (५) विस्समिय (६) मदो तिरिक्खो जादो । छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि मिच्छत्तुक्कस्संतरं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमोघं ॥ २८१ ॥

कुदो ? सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं; उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं । असंजदसम्मादिट्ठीसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं; एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं; उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणमिच्चेदेहि तदो भेदाभावा। असंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं णादमवि मंदमेहाविजणाणुग्गहट्ठं परूवेमो–एक्को अणादियमिच्छादिट्ठी तिण्णि वि करणाणि कादूण अद्धपोग्गलपरियट्टादिसमए पढमसम्मत्तं पडिवण्णो (१)। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो। अंतरिदो अद्धपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण अपच्छिमे भवग्गहणे असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतरं (२)। तदो अणंताणुबंधी विसंजोइय (३) विस्संतो (४) दंसणमोहं खविय (५) विस्संतो (६) अप्पमत्तो जादो (७)। पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (८) खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (९)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवं पण्णारसेहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टमसंजदसम्मादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं। एवं संजममग्गणा समत्ता।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठीणमोघं ॥ २८२ ॥

कुदो? णाणाजीवे पडुच्च अंतराभावेण, एगजीवगयअंतोमुहुत्तमेत्तजहण्णंतरेण देसूण-वे-छावट्ठिसागरोवममेत्तउक्कस्संतरेण य तदो भेदाभावा।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ २८३ ॥

कुदो? णाणाजीवगयएगसमय–पलिदोवमासंखेज्जदिभागजहण्णुक्कस्संतरेहि साधम्मुवलंभा।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ २८४ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ २८५ ॥

तं जहा–एक्को भमिदअचक्खुदंसणट्ठिदिओ असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) देवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सासणं गदो। मिच्छत्तं गंतूणंतरिय चक्खुदंसणिट्ठिदिं परिभमिय अवसाणे सासणं गदो। लद्धमंतरं। अचक्खुदंसणिपाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदूण मदो अचक्खुदंसणी जादो। एवं णवहि अंतोमुहुत्तेहि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण य ऊणिया चक्खुदंसणिट्ठिदी सासणुक्कस्संतरं। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उच्चदे–एक्को अचक्खु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणिट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदिएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासियवाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) देवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९) सम्मामिच्छत्तं गदो (१०)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो चक्खुदंसणिट्ठिदिं परिभमिय अवसाणे सम्मामिच्छत्तं गदो (११)। लद्धमंतरं। मिच्छत्तं गंतूण (१२) अचक्खुदंसणीसु उववण्णो। एवं वारसअंतोमुहुत्तेहि ऊणिया चक्खुदंसणिट्ठिदी उक्कस्संतरं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?

णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २८६ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २८७ ॥

कुदो ? एदेसिं सव्वेसिं पि अण्णगुणं गंतूण जहण्णकालेण अप्पिदगुणं गदाणमंतोमुहुत्तंतरुवलंभा।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ २८८ ॥

तं जहा– एक्को अचक्खुदंसणिट्ठिदिमच्छिदो असण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो। पंचहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु आउअं बंधिय (४) विस्संतो (५) कालं गदो देवेसु उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (६) विस्संतो (७) विसुद्धो (८) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (९)। उवसमसम्मत्तद्धाए छ आवलियाओ अत्थि त्ति सासणं गंतूणंतरिदो। मिच्छत्तं गंतूण चक्खुदंसणिट्ठिदिं भमिय अवसाणे उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (१०)। लद्धमंतरं। पुणो सासणं गदो अचक्खुदंसणीसु उववण्णो। दसहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगट्ठिदी असंजदसम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं। संजदासंजदस्स उच्चदे। तं जहा– एक्को अचक्खुदंसणिट्ठिदिमच्छिदो गब्भोवक्कंतियपंचिंदियपज्जत्तएसु उववण्णो। सण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु किण्ण उप्पादिदो ? ण, सम्मुच्छिमेसु पढमसम्मत्तुप्पत्तीए असंभवादो। ण च असंखेज्जलोगमणंतं वा कालमचक्खुदंसणीसु परिभमियाण वेदगसम्मत्तग्गहणं संभवदि, विरोहा। ण च थोवकालमच्छिदो चक्खुदंसणिट्ठिदीए समाणणक्खमा। तिण्णि पक्ख तिण्णि दिवस अंतोमुहुत्तेण य पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो (२)। पढमसम्मत्तद्धाए छावलियाओ अत्थि त्ति सासणं गदो। अंतरिदो मिच्छत्तं गंतूण सगट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे कदकरणिज्जो होदूण संजमासंजमं पडिवण्णो (३)। लद्धमंतरं। अप्पमत्तो (४) पमत्तो (५)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अप्पमत्तो (६) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमडदालीसदिवसेहि वारसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणा सगट्ठिदी संजदासंजदुक्कस्संतरं । पमत्तस्स उच्चदे– एक्को अचक्खुदंसणिट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) । पुणो पमत्तो जादो (२) । हेट्ठा पडिदूणंतरिदो । चक्खुदंसणिट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे मणुसो जादो । कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए अप्पमत्तो होदूण पमत्तो जादो (३) । लद्धमंतरं । भूओ अप्पमत्तो (४) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमट्ठवस्सेहि दसअंतोमुहुत्तेहि ऊणिया सगट्ठिदी पमत्तस्सुक्कस्संतरं । अप्पमत्तस्स उच्चदे– एक्को अचक्खुदंसणिट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) । हेट्ठा पडिदूण अंतरिदो चक्खुदंसणिट्ठिदिं परिभमिय अपच्छिमे भवे मणुसेसु उववण्णो । कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो (२) । लद्धमंतरं । तदो पमत्तो (३) अप्पमत्तो (४) । उवरि छ अंतोमुहुत्ता । एवमट्ठवस्सेहि दसअंतोमुहुत्तेहि उणिया चक्खुदंसणिट्ठिदी अप्पमत्तुक्कस्संतरं होदि ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ २८९ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९० ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि देसूणाणि ॥ २९१ ॥

तं जहा– एक्को अचक्खुदंसणिट्ठिदिमच्छिदो मणुसेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सेण उवसमसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो (१) । अंतोमुहुत्तेण वेदगसम्मत्तं गदो (२) । तदो अंतोमुहुत्तेण अणंताणुबंधिं विसंजोजिदो (३) । दंसणमोहणीयमुवसामिय (४) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (५) उवसमसेडीपाओग्गअप्पमत्तो जादो (६) । अपुव्वो (७) अणियट्टी (८) सुहुमो (९) उवसंतो (१०) सुहुमो (११) अणियट्टी (१२) अपुव्वो (१३) हेट्ठा ओदरिय अंतरिदो चक्खुदंसणिट्ठिदिं परिभमिय अंतिमे भवे मणुसेसु उववण्णो । कदकरणिज्जो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे विसुद्धो अप्पमत्तो जादो । सादासादबंधपरावत्तसहस्सं कादूण उवसमसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण अपुव्वुवसामगो जादो (१४) । लद्धमंतरं । तदो अणियट्टी (१५) सुहुमो (१६) उवसंतो (१७) पुणो वि सुहुमो (१८) अणियट्टी (१९) अपुव्वो (२०) अप्पमत्तो (२१) पमत्तो (२२) अप्पमत्तो (२३) होदूण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खवगसेढीमारूढो। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। एवमट्ठवस्सेहि एगूणत्तीसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया सगट्ठिदी अपुव्वकरणुक्कस्संतरं। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं। णवरि सत्तावीस पंचवीस तेवीस अंतोमुहुत्ता ऊणा कायव्वा।

चदुण्हं खवाणमोघं ॥ २९२ ॥

सुगममेदं।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ २९३ ॥

कुदो ? ओघादो भेदाभावा।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ २९४ ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २९५ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि। एवं दंसणमग्गणा समत्ता।

लेस्साणुवादे किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ २९६ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९७ ॥

तं जहा—सत्तम-पंचम-पढमपुढविमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो किण्ह-णील-काउलेस्सिया अण्णगुणं गंतूण थोवकालेण पडिणियत्तिय तं चेव गुणमागदा। लद्धं दोण्हं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २९८ ॥

तं जहा—तिण्णि मिच्छादिट्ठिणो किण्ह-णील-काउलेस्सिया सत्तम-पंचम-तदिय-पुढवीसु कमेण उववण्णा। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं पडिवण्णा अंतरिदा अवसाणे मिच्छत्तं गदा। लद्धमंतरं (४)। मदा मणुसेसु उववण्णा। णवरि सत्तमपुढवीणेरइओ तिरिक्खाउअं बंधिय (५) विस्समिय (६) तिरिक्खेसु उववज्जदि त्ति वत्तव्वं। एवं छ-चदु-चदुअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त-सागरोवमाणि किण्ह-णील-काउलेस्सियमिच्छादिट्ठिउक्कस्संतरं होदि। एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स वि वत्तव्वं। णवरि अट्ठ-पंच-पंचअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त-सागरोवमाणि उक्कस्संतरं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ २९९ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ३०० ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३०१ ॥

तं जहा—तिण्णि मिच्छादिट्ठी जीवा सत्तम-पंचम-तदियपुढवीसु किण्ह-णील-काउलेस्सिया उववण्णा। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा (४) सासणं गदा । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदा । अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा । सासणं गंतूण विदियसमए मदा मणुसेसु उववण्णा । णवरि सत्तमपुढवीए सासणा मिच्छत्तं गंतूण (५) तिरिक्खेसुववज्जंति त्ति वत्तव्वं । एवं पंच-चदु-चदुअंतोमुहुत्तेहि उणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त-सागरोवमाणि-किण्ण-णील-काउलेस्सियसासणुक्कस्संतरं होदि । एगसमओ अंतोमुहुत्तब्भंतरे पविट्ठो त्ति पुध ण उत्तो । एवं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वि । णवरि छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि तेत्तीस-सत्तारस-सत्त-सागरोवमाणि किण्ह-णील-काउलेस्सियसम्मामिच्छादिट्ठिउक्कस्संतरं ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिअसंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३०२ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३०३ ॥

तं जहा—चत्तारि जीवा मिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठिणो तेउ-पम्मलेस्सिया अण्णगुणं गंतूण सव्वजहण्णकालेण पडिणियत्तिय तं चेव गुणमागदा । लद्धमंतरं ।

उक्कस्सेण वे अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३०४ ॥

तं जहा—वे मिच्छादिट्ठिणो तेउ-पम्मलेस्सिया सादिरेय-वे-अट्ठारससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णा । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं घेत्तूणंतरिदा। सगट्ठिदिं जीविय अवसाणे मिच्छत्तं गदा (४)। लद्धं सादिरेय-वे-अट्ठारससागरोवममेत्तंतरं। एवं सम्मादिट्ठिस्स वि। णवरि पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणियाओ सगट्ठिदीओ अंतरं।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ ३०५ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ३०६ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण वे अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३०७ ॥

तं जहा—वे सासणा तेउ-पम्मलेस्सिया सादिरेय-वे-अट्ठारससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णा। एगसमयमच्छिय विदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदा। अवसाणे वे वि उवसमसम्मत्तं पडिवण्णा। पुणो सासणं गंतूण विदियसमए मदा। एवं सादिरेय-वे-अट्ठारस-सागरोवमाणि दुसमऊणाणि सासणुक्कस्संतरं होदि। एवं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वि। णवरि छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणियाओ उत्तट्ठिदीओ अंतरं।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि?
णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३०८ ॥

कुदो? णाणाजीवपवाहवोच्छेदाभावा। एगजीवस्स वि लेस्सद्धादो गुणद्धाए बहुत्तुवदेसा।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३०९ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१० ॥ ॥५९०॥

तं जहा—वे देवा मिच्छादिट्ठि-सम्मादिट्ठिणो सुक्कलेस्सिया गुणंतरं गंतूण जहण्णेण कालेण अप्पिदगुणं पडिवण्णा। लद्धमंतोमुहुत्तमंतरं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३११ ॥

तं जहा—वे जीवा सुक्कलेस्सिया मिच्छादिट्ठी दव्वलिंगिणो एक्कत्तीससागरोवमिएसु देवेसु उववण्णा। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा (१) विस्संता (२) विसुद्धा (३) सम्मत्तं पडिवण्णा। तत्थेगो मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो (४) अवरो सम्मत्तेणेव। अवसाणे जहाकमेण वे वि जणा मिच्छत्त-सम्मत्ताणि पडिवण्णा (५)। चदु-पंचअंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि एक्कत्तीसं सागरोवमाणि मिच्छादिट्ठि-असंजद-सम्मादिट्ठीणमुक्कस्संतरं।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ ३१२ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ३१३ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण एक्कत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३१४ ॥

एदं पि सुगमं।

संजदासंजद-पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३१५ ॥

कुदो ? णाणाजीवपवाहस्स वोच्छेदाभावा, एगजीवस्स लेस्सद्धादो गुणद्धाए बहुत्तुवदेसादो।

अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३१६ ॥

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१७ ॥

तं जहा—एक्को अप्पमत्तो सुक्कलेस्साए अच्छिदो उवसमसेढिं पडिदूणंतरिय सव्वजहण्णकालेण पडिणियत्तिय अप्पमत्तो जादो। लद्धमंतरं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्समंतोमुहुत्तं ॥ ३१८ ॥

एदस्स जहण्णभंगो । णवरि सव्वचिरेण कालेण उवसमसेढीदो ओदिण्णस्स वत्तव्वं ।

तिण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३१९ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३२० ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२१ ॥ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२२ ॥

एदेसिं दोण्हं सुत्ताणमत्थे भण्णमाणे खिप्प-चिरकालेहि उवसमसेढिं चढिय ओदिण्णाणं जहण्णुक्कस्सकाला वत्तव्वा ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३२३ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३२४ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३२५ ॥

उवसंतादो उवरि उवसंतकसाएण पडिवज्जमाणगुणट्ठाणाभावा, हेट्ठा ओदिण्णस्स वि लेस्संतरसंकंतिमंतरेण पुणो उवसंतगुणग्गहणाभावा ।

चदुण्हं खवगा ओघं ॥ ३२६ ॥ सजोगिकेवली ओघं ॥ ३२७ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३२८ ॥

कुदो ? सव्वपयारेण ओघपरूवणादो भेदाभावा ।

अभवसिद्धियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३२९ ॥

कुदो ? अभव्वपवाहवोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३३० ॥

कुदो ? गुणंतरसंकंतीए तत्थाभावा । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३३१ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३३२ ॥

तं जहा–एगो असंजदसम्मादिट्ठी संजमासंजमगुणं गंतूण सव्वजहण्णेण कालेण पुणो असंजदसम्मादिट्ठी जादो । लद्धमंतरं ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ ३३३ ॥

तं जहा–एगो मिच्छादिट्ठी अट्ठावीससंतकम्मिओ पंचिंदियतिरिक्खसण्णिसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) । संजमासंजमगुणं गंतूणंतरिदो पुव्वकोडिं जीविय मदो देवो जादो । एवं चदुहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणिया पुव्वकोडी उक्कस्संतरं ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओहिणाणिभंगो ॥ ३३४ ॥

जधा ओहिणाणमग्गणाए संजदासंजदादीणमंतरपरूवणा कदा, तहा कादव्वा, णत्थि एत्थ कोइ विसेसो ।

चदुण्हं खवगा अजोगिकेवली ओघं ॥ ३३५ ॥ सजोगिकेवली ओघं ॥ ३३६ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३३७ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३३८ ॥

तं जहा–एक्को असंजदसम्मादिट्ठी अण्णगुणं गंतूण सव्वजहण्णकालेण असंजदसम्मादिट्ठी जादो। लद्धमंतरं।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ ३३९ ॥

तं जहा–एक्को पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववज्जिय गब्भादिअट्ठवस्सिओ जादो। दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिट्ठी जादो (१)। अंतोमुहुत्तमच्छिदूण (२) संजमासंजमं संजमं वा पडिवज्जिय पुव्वकोडिं गमिय कालं गदो देवो जादो। अट्ठवस्सेहि वे-अंतोमुहुत्तेहि य ऊणिया पुव्वकोडी अंतरं ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ?
णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३४० ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३४१ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३४२ ॥

तं जहा–एक्को पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमुवरि अंतोमुहुत्तेण (१) खइयं पट्ठविय (२) विस्समिय (३) संजमासंजमं पडिवज्जिय (४) संजमं पडिवण्णो। पुव्वकोडिं गमिय मदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु उववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो। थोवावसेसे जीविए संजमासंजमं गदो (५)। तदो अप्पमत्तादिणवहि अंतोमुहुत्तेहि सिद्धो जादो। अट्ठवस्सेहि चोद्दसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणदोपुव्वकोडीहिं सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं संजदासंजदस्स। पमत्तस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उच्चदे—एक्को पमत्तो अप्पमत्तो (१) अपुव्वो (२) अणियट्टी (३) सुहुमो (४) उवसंतो (५) पुणो वि सुहुमो (६) अणियट्टी (७) अपुव्वो (८) अप्पमत्तो (९) अद्धाखएण कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए पमत्तो जादो। लद्धमंतरं (१)। तदो अप्पमत्तो (२)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अंतरस्स बाहिरा अट्ठ अंतोमुहुत्ता, अंतरस्स अब्भंतरिमा वि णव, तेणेगंतोमुहुत्तब्भहियपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्संतरं। अथवा अंतरस्सब्भंतराओ दो अप्पमत्तद्धाओ, तासिं बाहिरिया एक्का पमत्तद्धा सुद्धा। अंतरब्भंतराओ छ उवसामगद्धाओ, तासिं बाहिरियाओ तिण्णि खवगद्धाओ सुद्धाओ। अंतरब्भंतरिमाए उवसंतद्धाए एक्किस्से खवगद्धाए अद्धं सुद्धं। अवसेसा अद्धुट्ठा अंतोमुहुत्ता। तेहि ऊणियाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तस्सुक्कस्संतरं। अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अप्पमत्तो खइयसम्मादिट्ठी अपुव्वो (१) अणियट्टी (२) सुहुमो (३) उवसंतो (४) पुणो वि सुहुमो (५) अणियट्टी (६) अपुव्वो होदूण (७) कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो, अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अप्पमत्तो जादो। लद्धमंतरं (१)। तदो पमत्तो (२) पुणो अप्पमत्तो (३)। उवरि छ अंतोमुहुत्ता। अंतरस्स अब्भंतरिमाओ छ उवसामगद्धाओ बाहिरिल्लियासु तिसु खवगद्धासु सुद्धाओ अंतरब्भंतरिमाए उवसंतद्धाए खवगद्धाए अद्धं सुद्धं। अवसेसाए अद्धछट्ठअंतोमुहुत्ता। एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३४३ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३४४ ॥

एदं पि सुगमं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३४५ ॥

एदं पि अवगदत्थं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३४६ ॥

तं जहा—एक्को पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। अट्ठवस्सेहि अंतोमुहुत्तब्भहिएहि (१) अप्पमत्तो जादो (२)। पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण तम्हि चेव खइयं पट्ठविय (३) उवसमसेडीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो (४) अपुव्वो (५) अणियट्टी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो जादो (११) अंतरिदो । पुव्वकोडिं संजममणुपालिय तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिगेसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए अपुव्वो जादो (१२) । लद्धमंतरं । तदो अणियट्टी (१३) सुहुमो (१४) उवसंतो (१५) पुणो सुहुमो (१६) अणियट्टी (१७) अपुव्वो जादो (१८) । उवरि अप्पमत्तादिणवअंतोमुहुत्तेहि सिद्धिं गदो । एवमट्ठवस्सेहि सत्तावीसअंतोमुहुत्तेहि ऊणदोपुव्वकोडीहि सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतरं । एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं । णवरि पंचवीस तेवीस एक्कवीस मुहुत्ता ऊणा कादव्वा ।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ ३४७ ॥ सजोगिकेवली ओघं ॥ ३४८ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं सम्मादिट्ठिभंगो ॥ ३४९ ॥

सम्मत्तमग्गणाए ओघम्हि जधा असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं परूविदं तथा एत्थ वि परूविदव्वं ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३५० ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३५१ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ३५२ ॥

तं जहा—एक्को मिच्छादिट्ठी वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमं पडिवण्णो अंतरिदो । जत्तियं कालं संजमासंजमेण संजमेण च अच्छिदो तेत्तियमेत्तेणूणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसु उववण्णो । तदो चुदो मणुसेसु उववण्णो । तत्थ जत्तियं कालं असंजमेण संजमेण वा अच्छदि, पुणो सग्गादो मणुसगदिमागंतूण जं वासपुधत्तादिकालमच्छिस्सदि तेहि दोहि वि कालेहि ऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो मणुसो जादो । वे अंतोमुहुत्तावसेसे वेदगसम्मत्तकाले परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो । लद्धमंतरं । तदो अंतोमुहुत्तेण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिट्ठी जादो । आदिल्लमेक्कं अंतिल्ला दुवे अंतोमुहुत्ता, एदेहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि छावट्ठिसागरोवमाणि संजदासंजदुक्कस्संतरं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३५३ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३५४ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३५५ ॥

तं जहा—एक्को पमत्तो अप्पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे पमत्तो जादो । लद्धमंतरं । खइयं पट्ठविय खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (२) खवगसेढिमारूढो अपुव्वादिछअंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो । अंतरस्स आदिल्लमेक्कमंतोमुहुत्तं अंतरबाहिरेसु अट्ठअंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा सत्त अंतोमुहुत्ता । एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तसंजदुक्कस्संतरं । अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अप्पमत्तो पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे आउए अप्पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (१) । पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे खइयं पट्ठविय (२) खवगसेढीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (३) खवगसेढीमारूढो अपुव्वादिछहि अंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो । अंतरस्सादिल्लमेक्कं बाहिरेसु णवसु अंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा अट्ठ । एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३५६ ॥

णिरंतरमुवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाभावा ।

उक्कस्सेण सत्त रादिंदियाणि ॥ ३५७ ॥

किमत्थो सत्तरादिंदियविरहणियमो ? सभावदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३५८ ॥

तं जहा—एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय असंजदो जादो। अंतोमुहुत्तमच्छिदूण संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तेण पुणो असंजदो जादो। लद्धं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३५९ ॥

तं जहा—एक्को सेडीदो ओदरिय असंजदो जादो। तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमासंजमं पडिवण्णो। तदो अप्पमत्तो पमत्तो होदूण असंजदो जादो। लद्धमुक्कस्संतरं।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३६० ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण चोद्दस रादिंदियाणि ॥ ३६१ ॥

एदं पि सुगमं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३६२ ॥

तं जहा—एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमच्छिय असंजदो जादो। पुणो वि अंतोमुहुत्तेण संजमासंजमं पडिवण्णो। लद्धं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३६३ ॥

तं जहा—एक्को सेडीदो ओदरिय संजदासंजदो जादो। अंतोमुहुत्तमच्छिय अप्पमत्तो पमत्तो असंजदो च होदूण संजदासंजदो जादो। लद्धमुक्कस्संतरं।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३६४ ॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण पण्णारस रादिंदियाणि ॥ ३६५ ॥

एदं पि सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३६६ ॥

तं जहा—एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय अप्पमत्तो जादो। पुणो वि पमत्तत्तं गदो। लद्धमंतरं। एवं चेव अप्पमत्तस्स वि जहण्णंतरं वत्तव्वं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३६७ ॥

तं जहा—एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण पुणो संजदासंजदो असंजदो अप्पमत्तो च होदूण पमत्तो जादो। लद्धमंतरं। अप्पमत्तस्स उच्चदे—एक्को सेढीदो ओदरिय अप्पमत्तो जादो। पुणो पमत्तो असंजदो संजदासंजदो च होदूण भूओ अप्पमत्तो जादो। लद्धमुक्कस्संतरं।

तिण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३६८ ॥

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३६९ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३७० ॥

तं जहा—उवसमसेढिं चढिय आदिं करिय पुणो उवरिं गंतूण ओदरिय अप्पिदगुणं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तमंतरं होदि।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३७१ ॥

एदस्स जहण्णभंगो। णवरि विसेसा विदियवारं चढमाणस्स जहण्णंतरं, पढमवारं चढिय ओदिण्णस्स उक्कस्संतरं वत्तव्वं।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३७२ ॥ उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ ३७३ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३७४ ॥

हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु अंतराविय सव्वजहण्णेण कालेण पुणो उवसंतकसायभावं गयस्स जहण्णंतरं किण्ण उच्चदे ? ण, हेट्ठा ओइण्णस्स

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेदगसम्मत्तमपडिवज्जिय पुव्वुवसमसम्मत्तेणुवसमसेढीसमारुहणे संभवाभावादो । तं पि कुदो ? उवसमसेढीसमारुहणपाओग्गकालादो सेसुवसमसम्मत्तद्धाए त्थोवत्तुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे ? उवसंतकसायएगजीवस्संतराभावण्णहाणुववत्तीदो ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एयसमयं ॥ ३७५ ॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३७६ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३७७ ॥

गुणसंकंतीए असंभवादो ।

मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३७८ ॥

कुदो ? णाणाजीवपवाहस्स वोच्छेदाभावा, गुणंतरसंकंतीए अभावादो । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठीणमोघं ॥ ३७९ ॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च अंतराभावेण, एगजीवं पडुच्च अंतोमुहुत्तदेसूणवेछावट्ठिसागरोवममेत्तजहण्णुक्कस्संतरेहि य साधम्मुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति पुरिसवेदभंगो ॥ ३८० ॥

कुदो ? सागरोवमसदपुधत्तट्ठिदिं पडि दोण्हं साधम्मुवलंभा । णवरि असण्णिट्ठिदिमच्छिय सण्णीसुप्पण्णस्स उक्कस्सट्ठिदी वत्तव्वा ।

चदुण्हं खवाणमोघं ॥ ३८१ ॥

सुगममेदं ।

असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३८२ ॥

कुदो ? असण्णिपवाहस्स वोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३८३ ॥

कुदो ? गुणसंकंतीए अभावादो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठीणमोघं ॥ ३८४ ॥

सुगममेदं ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघं ॥ ३८५ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं ॥ ३८६ ॥

एदं पि अवगयत्थं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ३८७ ॥

तं जहा—एक्को सासणद्धाए दो समया अत्थि त्ति कालं गदो । एगविग्गहं कादूण विदियसमए आहारी होदूण तदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे आहारकाले उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो । एगसमयावसेसे आहारकाले सासणं गंतूण विग्गहं गदो । दोहि समएहि ऊणो आहारुक्कस्सकालो सासणुक्कस्संतरं । एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (५) । लद्धमंतरं । तदो सम्मत्तेण वा मिच्छत्तेण वा अंतोमुहुत्तमच्छिदूण (६) विग्गहं गदो । छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥ ३८८ ॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३८९ ॥

कुदो ? गुणंतरं गंतूण सव्वजहण्णकालेण पुणो अप्पिदगुणपडिवण्णस्स जहण्णंतरुवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ३९० ॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५) । लद्धमंतरं । उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए सासणं गंतूण विग्गहं गदो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं । संजदासंजदस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण सम्मुच्छिमेसु उववण्णो । छहिं पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो (४) । मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो (५) । लद्धमंतरं । उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए सासणं गंतूण विग्गहं गदो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं । पमत्तस्स उच्चदे—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्सेहि अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण (२) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते पमत्तो जादो । लद्धमंतरं (३) । कालं कादूण विग्गहं गदो । तिहि अंतोमुहुत्तेहि अट्ठवस्सेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं । अप्पमत्तस्स एवं चेव । णवरि अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण अंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अप्पमत्तो होदूण (२) पुणो पमत्तो जादो (३) । कालं करिय विग्गहं गदो । तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च ओघभंगो ॥ ३९१ ॥

सुगममेदं, बहुसो उत्तत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३९२ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ३९३ ॥

तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । अट्ठवस्सिओ सम्मत्तं अप्पमत्तभावेण संजमं च समगं पडिवण्णो (१) । अणंताणुबंधिं विसंजोएदूण (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) तदो अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो वि परिवडमाणगो सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो जादो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)। हेट्ठा ओदरिदूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते अपुव्वो जादो। लद्धमंतरं। तदो णिद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे मरिय विग्गहं गदो। अट्ठवस्सेहि बारसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं। णवरि दस णव अट्ठ अंतोमुहुत्ता समयाहिया ऊणा कादव्वा।

चदुण्हं खवाणमोघं ॥ ३९४ ॥

सुगममेदं।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ३९५ ॥

एदं पि सुगमं।

अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ ३९६ ॥

मिच्छादिट्ठीणं णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण, सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसमयपलिदोवमासंखेज्जदिभागजहण्णुक्कस्संतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य, असंजदसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसमय-मासपुधत्तंतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य दोण्हं अंतराभावेण य, सजोगिकेवलीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसमय-वासपुधत्तजहण्णुक्कस्संतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य दोण्हं साधम्मुवलंभादो। विसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसा, अजोगिकेवली ओघं ॥ ३९७ ॥

सुगममेदं। एवं आहारमग्गणा समत्ता। एवमंतराणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-
धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे
जीवस्थाने अंतरानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इदि अंतराणुओगद्दारं समत्तं. ६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अर्हत्परमेष्ठिने नमः

भावाणुगमो

(सप्तमो भागः)

अवगयअसुद्धभावे उवगयकम्मक्खउच्चउब्भावे । पणमिय सव्वरहंते भावणिओगं परूवेमो ॥

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावो त्ति चउव्विहो भावो । भावसद्दो बज्झत्थणिरवेक्खो अप्पाणम्हि चेव पयट्टो णामभावो होदि । तत्थ ठवणभावो सब्भावासब्भावभेएण दुविहो । विराग-सरागादिभावे अणुहरंती ठवणा सब्भावट्ठवणभावो । तव्विवरीदो असब्भावट्ठवणभावो । तत्थ दव्वभावो दुविहो आगम-णोआगमभेएण । भावपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वभावो होदि । जो णोआगमदव्वभावो सो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । तत्थ णोआगमजाणुगसरीरदव्वभावो तिविहो भविय-वट्टमाण-समुज्झादभेएण । भावपाहुडपज्जायपरिणदजीवस्स आहारो जं होसदि सरीरं तं भवियं णाम । भावपाहुडपज्जायपरिणदजीवेण जमेगीभूदं सरीरं तं वट्टमाणं णाम । भावपाहुडपज्जाएण परिणदजीवेण एगत्तमुवणमिय जं पुधभूदं सरीरं तं समुज्झादं णाम । भावपाहुडपज्जयसरूवेण जो जीवो परिणमिस्सदि सो णोआगमभवियदव्वभावो णाम । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वभावो तिविहो सचित्ताचित्त-मिस्सभेएण । तत्थ सचित्तो जीवदव्वं । अचित्तो पोग्गल-धम्माधम्म-कालागासदव्वाणि । पोग्गल-जीवदव्वाणं संजोगो कथंचि जच्चंतरत्तमावण्णो णोआगममिस्सदव्वभावो णाम । कथं दव्वस्स भाववएसो ? ण, भवनं भावः, भूतिर्वा भाव इति भावसद्दस्स विउप्पत्तिअवलंबणादो । जो भावभावो सो दुविहो आगमणोआगमभेएण । भावपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावभावो णाम । णोआगमभावभावो पंचविहो ओदइओ ओवसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामिओ चेदि । तत्थ कम्मोदयजणिदो भावो ओदइओ णाम । कम्मुवसमेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

समुब्भूदो ओवसमिओ णाम। कम्माणं खवेण पयडीभूदजीवभावो खइओ णाम। कम्मोदए संते वि जं जीवगुणक्खंडमुवलंभदि सो खओवसमिओ भावो णाम। जो चउहि भावेहि पुव्वत्तेहि वदिरित्तो जीवाजीवगओ सो पारिणामिओ णाम (५)। एदेसु चदुसु भावेसु केण भावेण अहियारो ? णोआगमभावभावेण। तं कथं णव्वदे ? णामादिसेसभावेहि चोद्दसजीवसमासाणमणप्पभूदेहि इह पओजणाभावा। तिण्णि चेव इह णिक्खेवा होंतु, णाम-ट्ठवणाणं विसेसाभावादो ? ण, णामे णामवंतदव्वज्झारोवणियमाभावादो, णामस्स ट्ठवणणियमाभावा, ट्ठवणाए इव आयराणुग्गहाणमभावादो च। भणिदं च—अप्पिदआदरभावो अणुग्गहभावो य धम्मभावो य। ठवणाए कीरंते ण होंति णामम्मि एए दु ॥ १ ॥ णामिणि धम्मुवयारो णामं ट्ठवणा य जस्स तं ठविदं। तद्धम्मे ण वि जादो सुणाण-ठवणाणमविसेसं ॥ २ ॥ तम्हा चउव्विहो चेव णिक्खेवो त्ति सिद्धं। तत्थ पंचसु भावेसु केण भावेण इह पओजणं ? पंचहिं वि। कुदो ? जीवेसु पंचभावाणमुवलंभा। ण च सेसदव्वेसु पंच भावा अत्थि, पोग्गलदव्वेसु ओदइय-पारिणामियाणं दोण्हं चेव भावाणमुवलंभा, धम्मा-धम्म-कालागासदव्वेसु एक्कस्स पारिणामियभावस्सेवुवलंभा। भावो णाम जीवपरिणामो तिव्व-मंदणिज्जराभावादिरूवेण अणेयपयारो। तत्थ तिव्व-मंदभावो णाम—सम्मत्तुप्पत्तीय वि सावयविरदे अणंतकम्मंसे। दंसणमोहक्खवए कसायउवसामए य उवसंते ॥ ३ ॥ खवए य खीणमोहे जिणे य णियमा भवे असंखेज्जा। तव्विवरीदो कालो संखेज्जगुणाए सेडीए ॥ ४ ॥ एदेसिं सुत्तुद्दिट्ठपरिणामाणं पगरिसापगरिसत्तं तिव्व-मंदभावो णाम। एदेहि चेव परिणामेहि असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मसडणं कम्मसडणजणिदजीवपरिणामो वा णिज्जराभावो णाम। तम्हा पंचेव जीवभावा इदि णियमो ण जुज्जदे ? ण एस दोसो, जदि जीवादिदव्वादो तिव्व-मंदादिभावा अभिण्णा होंति, तो ण तेसिं पंचभावेसु अंतब्भावो, दव्वत्तादो। अह भेदो अवलंबेज्ज, पंचण्हमण्णदरो होज्ज, एदेहिंतो पुधभूदछट्ठभावाणुवलंभा। भणिदं च—ओदइओ उवसमिओ खइओ तह वि य खओवसमिओ य। परिणामिओ दु भावो उदएण दु पोग्गलाणं तु ॥ ५ ॥ भावो णाम किं ? दव्वपरिणामो पुव्वावरकोडिवदिरित्तवट्टमाणपरिणामुवलक्खियदव्वं वा। कस्स भावो ? छण्हं दव्वाणं। अथवा ण कस्सइ, परिणामि-परिणामाणं संगहणयादो भेदाभावा। केण भावो ? कम्माणमुदएण खएण खओवसमेण कम्माणमुवसमेण सभावदो वा। तत्थ जीवदव्वस्स भावा उत्तपंचकारणेहिंतो होंति। पोग्गलदव्वभावा पुण कम्मोदएण विस्ससादो वा उप्पज्जंति। सेसाणं चदुण्हं दव्वाणं भावा सहावदो उप्पज्जंति। कत्थ भावो ? दव्वम्हि चेव, गुणिव्वदिरेगेण गुणाणमसंभवा। केवचिरो भावो ? अणादिओ अपज्जवसिदो जहा—अभव्वाणमसिद्धदा, धम्मत्थिअस्स गमणहेदुत्तं, अधम्मत्थिअस्स ठिदिहेउत्तं, आगासस्स ओगाहणलक्खणत्तं, कालदव्वस्स परिणामहेदुत्तमिच्चादि। अणादिओ सपज्जवसिदो जहा—भव्वस्स असिद्धदा भव्वत्तं मिच्छत्तमसंजमो इच्चादि। सादिओ अपज्जवसिदो जहा—केवलणाणं केवलदंसणमिच्चादि। सादिओ सपज्जवसिदो जहा—सम्मत्तसंजमपच्छायदाणं मिच्छत्ता-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजमा इच्चादि। कदिविधो भावो ? ओदइओ उवसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामिओ त्ति पंचविहो। तत्थ जो सो ओदइओ जीवदव्वभावो सो ठाणदो अट्ठविहो, वियप्पदो एक्कवीसविहो। किं ठाणं ? उप्पत्तिहेऊ ट्ठाणं। उत्तं च–गदि-लिंग-कसाया वि य मिच्छादंसणमसिद्धदण्णाणं। लेस्सा असंजमो चिय होंति उदयस्स ट्ठाणाइं ॥ ६॥ संपहि एदेसिं वियप्पो उच्चदे–गई चउव्विहा णिरय-तिरिय-णर-देवगई चेदि। लिंगमिदि तिविहं त्थी-पुरिस-णवुंसयं चेदि। कसाओ चउव्विहो कोहो माणो माया लोहो चेदि। मिच्छादंसणमेयविहं। असिद्धत्तमेयविहं। किमसिद्धत्तं ? अट्ठकम्मोदयसामण्णं। अण्णाणमेयविहं। लेस्सा छव्विहा। असंजमो एयविहो। एदे सव्वे वि एक्कवीस वियप्पा होंति (२१)। पंचजादि-छसंठाण-छसंघडणादिओदइया भावा कत्थ णिवदंति ? गदीए, एदेसिमुदयस्स गदिउदयाविणाभावित्तादो। ण लिंगादीहि वियहिचारो, तत्थ तहाविहविवक्खाभावादो। उवसमिओ भावो ठाणदो दुविहो। वियप्पदो अट्ठविहो। भणिदं च–सम्मत्तं चारित्तं दो चेय ट्ठाणाइमुवसमे होंति। अट्ठवियप्पा य तहा कोहाईया मुणेदव्वा ॥ ७॥ ओवसमियस्स भावस्स सम्मत्तं चारित्तं चेदि दोण्णि ट्ठाणाणि। कुदो ? उवसमसम्मत्तं उवसमचारित्तमिदि दोण्हं चेवुवलंभा। उवसमसम्मत्तमेयविहं। ओवसमियं चारित्तं सत्तविहं। तं जहा–णवुंसयवेदुवसामणद्धाए एयं चारित्तं, इत्थिवेदुवसामणद्धाए विदियं, पुरिस-छण्णोकसायउवसामणद्धाए तदियं, कोहुवसामणद्धाए चउत्थं, माणुवसामणद्धाए पंचमं, माओवसामणद्धाए छट्ठं, लोहुवसामणद्धाए सत्तममोवसमियं चारित्तं। भिण्णकज्जलिंगेण कारणभेदसिद्धीदो उवसमियं चारित्तं सत्तविहं उत्तं। अण्णहा पुण अणेयपयारं, समयं पडि उवसमसेडिम्हि पुध पुध असंखेज्जगुणसेडिणिज्जराणिमित्तपरिणामुवलंभा। खइओ भावो ठाणदो पंचविहो। वियप्पादो णवविहो। भणिदं च—लद्धीओ सम्मत्तं चारित्तं दंसणं तहा णाणं। ठाणाइं पंच खइए भावे जिणभासियाइं तु ॥ ८॥ लद्धी सम्मत्तं चारित्तं णाणं दंसणमिदि पंच ठाणाणि। तत्थ लद्धी पंच वियप्पा दाण-लाह-भोगुवभोग-वीरियमिदि। सम्मत्तमेयवियप्पं। चारित्तमेयवियप्पं। केवलणाणमेयवियप्पं। केवलदंसणमेयवियप्पं। एवं खइओ भावो णववियप्पो। खओवसमिओ भावो ठाणदो सत्तविहो। वियप्पदो अट्ठारसविहो। भणिदं च—णाणण्णाणं च तहा दंसण-लद्धी तहेव सम्मत्तं। चारित्तं देसजमो सत्तेव य होंति ठाणाइं ॥ ९॥ णाणमण्णाणं दंसणं लद्धी सम्मत्तं चारित्तं संजमासंजमो चेदि सत्त ट्ठाणाणि। तत्थ णाणं चउव्विहं मदि-सुद-ओधि-मणपज्जवणाणमिदि। केवलणाणं किण्ण गहिदं ? ण, तस्स खाइयभावादो। अण्णाणं तिविहं मदि-सुद-विहंगअण्णाणमिदि। दंसणं तिविहं चक्खु-अचक्खु-ओहिदंसणमिदि। केवलदंसणं ण गहिदं। कुदो ? अप्पणो विरोहिकम्मस्स खएण समुब्भवादो। लद्धी पंचविहा दाणादिभेएण। सम्मत्तमेयविहं वेदगसम्मत्तवदिरेगेण अण्णसम्मत्ताणमणुवलंभा। चारित्तमेयविहं, सामाइयछेदोवट्ठावण-परिहारसुद्धिसंजमविवक्खाभावा। संजमासंजमो एयविहो। एवमेदे सव्वे वि वियप्पा अट्ठारस होंति (१८)। पारिणामिओ तिविहो भव्वाभव्व-जीवत्तमिदि। उत्तं च–एयं ठाणं तिण्णि वियप्पा तह पारिणामिए होंति। भव्वाभव्वा जीवा अत्तवणदो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेव बोद्धव्वा ॥ १० ॥ एदेसिं पुव्वुत्तभाववियप्पाणं संगहगाहा—इगिवीस अट्ठ तह णव अट्ठारस तिण्णि चेव बोद्धव्वा । ओदइयादी भावा वियप्पदो आणुपुव्वीए ॥ ११ ॥ अथवा सण्णिवादियं पडुच्च छत्तीसभंगा । सण्णिवादिएत्ति का सण्णा ? एक्कम्हि गुणट्ठाणे जीवसमासे वा बहवो भावा जम्हि सण्णिवदंति तेसिं भावाणं सण्णिवादिएत्ति सण्णा । एग-दु-ति-चदु-पंचसंजोगेण भंगा परूविज्जंति । एगसंजोगेण जथा—ओदइओ ओदइओ त्ति 'मिच्छादिट्ठी असंजदो य' । दंसणमोहणीयस्स उदएण मिच्छादिट्ठि त्ति भावो, असंजदो त्ति संजमघादीणं कम्माणमुदएण । एदेण कमेण सव्वे वियप्पा परूवेदव्वा । एत्थ सुत्तगाहा—एकोत्तरपदवृद्धो रूपाद्यैर्भाजितं च पदवृद्धैः । गच्छः संपातफलं समाहतः सन्निपातफलं ॥ १२ ॥ एदस्स भावस्स अणुगमो भावाणुगमो । तेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण संगहिदो, आदेसेण असंगहिदो त्ति णिद्देसो दुविहो होदि, तदियस्स णिद्देसस्स संभवाभावा ।

ओघेण मिच्छादिट्ठि त्ति को भावो ? ओदइओ भावो ॥ २ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति जाणावणट्ठमोघेणेत्ति भणिदं । अत्थाहिहाणपच्चया तुल्लणामधेया इदि णायादो इदि-करणपरो मिच्छादिट्ठिसद्दो मिच्छत्तभावं भणदि । पंचसु भावेसु एसो को भावो त्ति पुच्छिदे ओदइओ भावो त्ति तित्थयरवयणादो दिव्वज्झुणी विणिग्गया । को भावो, पंचसु भावेसु कदमो भावो त्ति भणिदं होदि । उदये भवो ओदइओ, मिच्छत्तकम्मस्स उदएण उप्पण्णमिच्छत्तपरिणामो कम्मोदयजणिदो त्ति ओदइओ । णणु मिच्छादिट्ठिस्स अण्णे वि भावा अत्थि, णाण-दंसण-गदि-लिंग-कसाय-भव्वाभव्वादिभावाभावे जीवस्स संसारिणो अभावप्पसंगा । भणिदं च—मिच्छत्ते दस भंगा आसादण-मिस्सए वि बोद्धव्वा । तिगुणा ते चदुहीणा अविरदसम्मस्स एमेव ॥ १३ ॥ देसे खओवसमिए विरदे खवगाण ऊणवीसं तु । ओसामगेसु पुध पुध पणतीसं भावदो भंगा ॥ १४ ॥ तदो मिच्छादिट्ठिस्स ओदइओ चेव भावो अत्थि, अण्णे भावा णत्थि त्ति णेदं घडदे ? ण एस दोसो, मिच्छादिट्ठिस्स अण्णे भावा णत्थि त्ति सुत्ते पडिसेहाभावा । किंतु मिच्छत्तं मोत्तूण जे अण्णे गदि-लिंगादओ साधारणभावा ते मिच्छादिट्ठित्तस्स कारणं ण होंति । मिच्छत्तोदओ एक्को चेव मिच्छत्तस्स कारणं, तेण मिच्छादिट्ठि त्ति भावो ओदइओ त्ति परूविदो ।

सासणसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? पारिणामिओ भावो ॥ ३ ॥

एत्थ चोदओ भणदि—भावो पारिणामिओ त्ति णेदं घडदे, अण्णेहिंतो अणुप्पण्णस्स परिणामस्स अत्थित्तविरोहा । अह अण्णेहिंतो उप्पत्ती इच्छिज्जदि, ण सो पारिणामिओ, णिक्कारणस्स सकारणत्तविरोहा इदि । परिहारो उच्चदे । तं जहा—जो कम्माणमुदय-उवसम-खइय-खओवसमेहि विणा अण्णेहिंतो उप्पण्णो परिणामो सो पारिणामिओ भण्णदि, ण णिक्कारणो कारणमंतरेणुप्पण्णपरिणामा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावा । सत्त-पमेयत्तादओ भावा णिक्कारणा उवलब्भंतीदि चे ण, विसेससत्तादिसरूवेण अपरिणमंतसत्तादिसामण्णाणुवलंभा । सासादणसम्मादिट्ठित्तं पि सम्मत्त-चारित्तुभयविरोहिअणंताणुबंधिचउक्कुदयमंतरेण ण होदि त्ति ओदइयमिदि किण्णेच्छिज्जदि ? सच्चमेयं, किंतु ण तधा अप्पणा अत्थि, आदिमचदुगुणट्ठाणभावपरूवणाए दंसणमोहवदिरित्तसेसकम्मेसु विवक्खाभावा । तदो अप्पिदस्स दंसणमोहणीयस्स कम्मस्स उदएण उवसमेण खएण खओवसमेण वा ण होदि त्ति णिक्कारणं सासणसम्मत्तं, अदो चेव पारिणामियत्तं पि । अणेण पयारेण णाएण सव्वभावाणं पारिणामियत्तं पसज्जदीदि चे होदु, ण कोइ दोसो, विरोहाभावा । अण्णभावेसु पारिणामियववहारो किण्ण कीरदे ? ण, सासणसम्मत्तं मोत्तूण अप्पिदकम्मादो णुप्पण्णस्स अण्णस्स भावस्स अणुवलंभा ।

सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ४ ॥

पडिबंधिकम्मोदए संते वि जो उवलब्भइ जीवगुणावयवो सो खओवसमिओ उच्चइ । कुदो ? सव्वघादणसत्तीए अभावो खओ उच्चदि । खओ चेव उवसमो खओवसमो, तम्हि जादो भावो खओवसमिओ । ण च सम्मामिच्छत्तुदए संते सम्मत्तस्स कणिया वि उव्वरदि, सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादित्तण्णहाणुववत्तीदो । तदो सम्मामिच्छत्तं खओवसमियमिदि ण घडदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे—सम्मामिच्छत्तुदए संते सद्दहणासद्दहणप्पओ करंचिओ जीवपरिणामो उप्पज्जइ । तत्थ जो सद्दहणंसो सो सम्मत्तावयवो । तं सम्मामिच्छत्तुदओ ण विणासेदि त्ति सम्मामिच्छत्तं खओवसमियं । असद्दहणभागेण विणा सद्दहणभागस्सेव सम्मामिच्छत्तववएसो णत्थि त्ति ण सम्मामिच्छत्तं खओवसमियमिदि चे एवंविहविवक्खाए सम्मामिच्छत्तं खओवसमियं मा होदु, किंतु अवयव्यवयवनिराकरणानिराकरणं पडुच्च खओवसमियं सम्मामिच्छत्तदव्वकम्मं पि सव्वघादी चेव होदु, जच्चंतरस्स सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्ताभावादो । किंतु सद्दहणभागो असद्दहणभागो ण होदि, सद्दहणासद्दहणाणमेयत्तविरोहा । ण च सद्दहणभागो कम्मोदयजणिओ, तत्थ विवरीयत्ताभावा । ण य तत्थ सम्मामिच्छत्तववएसाभावो, समुदाएसु पयट्टाणं तदेगदेसे वि पउत्तिदंसणादो । तदो सिद्धं सम्मामिच्छत्तं खओवसमियमिदि । मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण सम्मत्तस्स देसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण सम्मामिच्छत्तभावो होदि त्ति सम्मामिच्छत्तस्स खओवसमियत्तं केई परूवयंति, तण्ण घडदे, मिच्छत्तभावस्स वि खओवसमियत्तप्पसंगा । कुदो ? सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण सम्मत्तदेसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्तभावुप्पत्तीए उवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंजदसम्माइट्ठि त्ति को भावो ? उवसमिओ वा खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ ५ ॥

तं जहा—मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्तसव्वघादिफद्दयाणं सम्मत्तदेसघादिफद्दयाणं च उवसमेण उदयाभावलक्खणेण उवसमसम्मत्तमुप्पज्जदि त्ति तमोवसमियं। एदेसिं चेव खएण उप्पण्णो खइओ भावो। सम्मत्तस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण सह वट्टमाणो सम्मत्तपरिणामो खओवसमिओ। मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्मत्तस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण खओवसमिओ भावो त्ति केई भणंति, तण्ण घडदे, अइवत्तिदोसप्पसंगादो। कथं पुण घडदे ? जहट्ठियट्ठसद्दहणघायणसत्ती सम्मत्तफद्दएसु खीणा त्ति तेसिं खइयसण्णा। खयाणमुवसमो पसण्णदा खओवसमो। तत्थुप्पण्णत्तादो खओवसमियं वेदगसम्मत्तमिदि घडदे। एवं सम्मत्ते तिण्णि भावा, अण्णे णत्थि। गदिलिंगादओ भावा तत्थुवलंभंत इदि चे होदु णाम तेसिमत्थित्तं, किंतु ण तेहिंतो सम्मत्तमुप्पज्जदि। तदो सम्मादिट्ठी वि ओदइयादिववएसं ण लहदि त्ति घेत्तव्वं।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ६ ॥

सम्मादिट्ठीए तिण्णि भावे भणिऊण असंजदत्तस्स कदमो भावो होदि त्ति जाणावणट्ठमेदं सुत्तमागदं। संजमघादीणं कम्माणमुदएण जेणेसो असंजदो तेण असंजदो त्ति ओदइओ भावो। हेट्ठिल्लाणं गुणट्ठाणाणमोदइयमसंजदत्तं किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो, एदेणेव तेसिमोदइयअसंजदभावोवलद्धीदो। जेणेदमंतदीवयं सुत्तं तेणंते ठाइदूण अइक्कंतसव्वसुत्ताणमवयवसरूवं पडिवज्जदि, तत्थ अप्पणो अत्थित्तं वा पयासेदि, तेण अदीदगुणट्ठाणाणं सव्वेसिमोदइओ असंजमभावो अत्थि त्ति सिद्धं। एदमादीए अभणिय एत्थ भणंतस्स को अभिप्पाओ ? उच्चदे—असंजमभावस्स पज्जवसाणपरूवणट्ठमुवरिमाणमसंजमभावपडिसेहट्ठं चेत्थेदं उच्चदे।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ७ ॥

तं जहा—चारित्तमोहणीयकम्मोदए खओवसमसण्णिदे संते जदो संजदासंजद-पमत्तसंजद-अप्पमत्तसंजदत्तं च उप्पज्जदि, तेणेदे तिण्णि वि भावा खओवसमिया। पच्चक्खाणावरण-चदुसंजलण-णवणोकसायाणमुदयस्स सव्वप्पणा चारित्तविणासणसत्तीए अभावादो तस्स खयसण्णा। तेसिं चेव उप्पण्णचारित्तं सेडिं वावारंतस्स उवसमसण्णा। तेहि दोहिंतो उप्पण्णा एदे तिण्णि वि भावा खओवसमिया जादा। एवं संते पच्चक्खाणावरणस्स सव्वघादित्तं फिट्टदि त्ति उत्ते ण फिट्टदि, पच्चक्खाणं सव्वं घादयदि त्ति तं सव्वघादी उच्चदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वमपच्चक्खाणं ण घादेदि, तस्स तत्थ वावाराभावा। तेण तप्परिणदस्स सव्वघादिसण्णा। जस्सोदए संते जमुप्पज्जमाणमुवलब्भदि ण तं पडि तं सव्वघाइववएसं लहइ, अइप्पसंगादो। अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण चदुसंजलण-णवणोकसायाणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण पच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण देससंजमो उप्पज्जदि। वारसकसायाणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण चदुसंजुलण-णवणोकसायाणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण पमत्तापमत्तसंजमा उप्पज्जंति, तेणेदे तिण्णि वि भावा खओवसमिया इदि के वि भणंति। ण च एदं समंजसं। कुदो? उदयाभावो उवसमो त्ति कट्टु उदयविरहिदसव्व-पयडीहि ट्ठिदि-अणुभागफद्दएहि अ उवसमसण्णा लद्धा। संपहि ण क्खओ अत्थि, उदयस्स विज्जमाणस्स खयव्ववएसविरोहादो। तदो एदे तिण्णि भावा उदओवसमियत्तं पत्ता। ण च एवं, एदेसिमुदओवसमियत्तपदुप्पायणसुत्ताभावा। ण च फलं दाऊण णिज्जरियगय-कम्मखंडाणं खयव्ववएसं काऊण एदेसिं खओवसमियत्तं वोत्तुं जुत्तं, मिच्छादिट्ठिआदि सव्वभावाणं एवं संते खओवसमियत्तप्पसंगा। तम्हा पुव्विल्लो चेय अत्थो घेत्तव्वो, णिरवज्जत्तादो। दंसणमोहणीयकम्मस्स उवसम-खय-खओवसमे अस्सिदूण संजदासंजदादीणमोव-समियादिभावा किण्ण परूविदा? ण, तदो संजमासंजमादिभावाणमुप्पत्तीए अभावादो। ण च एत्थ सम्मत्तविसया पुच्छा अत्थि, जेण दंसणमोहणिबंधणओवसमियादिभावेहि संजदासंजदादीणं ववएसो होज्ज। ण च एवं, तहाणुवलंभा।

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो? ओवसमिओ भावो ॥ ८ ॥

तं जहा—एक्कवीसपयडीओ उवसामेंति त्ति चदुण्हं ओवसमिओ भावो। होदु णाम उवसंतकसायस्स ओवसमिओ भावो उवसमि-दासेसकसायत्तादो, ण सेसाणं तत्थ असेसमोहस्सुवसमाभावा? ण, अणियट्टिबादरसांपराइय-सुहुमसांपराइयाणं उवसमिदथोवकसायज-णिदुवसमपरिणामाणं ओवसमियभावस्स अत्थित्ताविरोहा। अपुव्वकरणस्स अणुवसंतासेसकसायस्स कथमोवसमिओ भावो? ण, तस्स वि अपुव्वकरणेहि पडिसमयमसंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मक्खंडे णिज्जरंतस्स ट्ठिदि-अणुभागखंडयाणि घादिदूण कमेण ठिदि-अणुभागे संखेज्जाणंतगुणहीणे करेंतस्स पारद्धुवसमणकिरियस्स तदविरोहा। कम्माणमुवसमेण उप्पण्णो भावो ओवसमिओ भण्णइ। अपुव्व-करणस्स तदभावा णोवसमिओ भावो इदि चे ण, उवसमणसत्तिसमण्णिदअपुव्वकरणस्स तदत्थित्ताविरोहा। तथा च उवसमे जादो उवसमियकम्माणमुवसमणट्ठं जादो वि ओवसमिओ भावो त्ति सिद्धं। अथवा भविस्समाणे भूदोवयारादो अपुव्वकरणस्स ओवसमिओ भावो, सयलासंजमे पयट्टचक्कहरस्स तित्थयरववएसो व्व।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चदुण्हं खवा सजोगिकेवली अजोगिकेवलि त्ति को भावो ? खइओ भावो ॥ ९ ॥

सजोगि-अजोगिकेवलीणं खविदघाइकम्माणं होदु णाम खइओ भावो । खीणकसायस्स वि होदु, खविदमोहणीयत्तादो । ण सेसाणं, तत्थ कम्मक्खयाणुवलंभा ? ण, बादर-सुहुमसांपराइयाणं पि खवियमोहेयदेसाणं कम्मक्खयजणिदभावोवलंभा । अपुव्वकरणस्स अविणट्ठकम्मस्स कथं खइओ भावो ? ण, तस्स वि कम्मक्खयणिमित्तपरिणामुवलंभा । एत्थ वि कम्माणं खए जादो खइओ, खयट्ठं जाओ वा खइओ भावो इदि दुविहा सद्दउप्पत्ती घेत्तव्वा । उवयारेण वा अपुव्वकरणस्स खइओ भावो । उवयारे आसइज्जमाणे अइप्पसंगो किण्ण होदीदि चे ण, पच्चासत्तीदो अइप्पसंगपडिसेहादो । ओघाणुगमो समत्तो ।

आदेसेण गइयाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छादिट्ठि त्ति को भावो ? ओदइओ भावो ॥ १० ॥

कुदो ? मिच्छत्तुदयजणिदअसद्दहणपरिणामुवलंभा । सम्मामिच्छत्तसव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण सम्मत्त-देसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा मिच्छत्तसव्वघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छाइट्ठी उप्पज्जदि त्ति खओवसमिओ सो किण्ण होदि ? उच्चदे—ण ताव सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तदेसघादिफद्दयाणमुदयक्खओ संतोवसमो अणुदओवसमो वा मिच्छादिट्ठीए कारणं, सव्वहिचारित्तादो । जं जदो णियमेण उप्पज्जदि तं तस्स कारणं, अण्णहा अणवत्थाप्पसंगादो । जदि मिच्छत्तुप्पज्जणकाले विज्जमाणा तक्कारणत्तं पडिवज्जंति तो णाण-दंसण-असंजमादओ वि तक्कारणं होंति । ण चेवं, तहाविहववहाराभावा । मिच्छादिट्ठीए पुण मिच्छत्तुदओ कारणं, तेण विणा तदणुप्पत्तीए ।

सासणसम्माइट्ठि त्ति को भावो ? पारिणामिओ भावो ॥ ११ ॥

अणंताणुबंधीणमुदएणेव सासणसम्मादिट्ठी होदि त्ति ओदइओ भावो किण्ण उच्चदे ? ण, आइल्लेसु चदुसु वि गुणट्ठाणेसु चारित्तावरणतिव्वोदएण पत्तासंजमेसु दंसणमोहणिबंधणेसु चारित्तमोहविवक्खाभावा । अप्पिदस्स दंसणमोहणीयस्स उदएण उवसमेण खएण खओवसमेण वा सासणसम्मादिट्ठी ण होदि त्ति पारिणामिओ भावो ।

सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ १२ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छत्तुदए संते वि सम्मद्दंसणेगदेसमुवलंभा । सम्मामिच्छत्तभावे पत्तजच्चंतरे अंसंसीभावो णत्थि त्ति ण तत्थ सम्मद्दंसणस्स एगदेस इदि चे, होदु णाम अभेदविवक्खाए जच्चंतरत्तं । भेदे पुण विवक्खिदे सम्मद्दंसणभागो अत्थि चेव, अण्णहा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जच्चंतरत्तविरोहा। ण च सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघाइत्तमेवं संते विरुज्झइ, पत्तजच्चंतरे सम्मदंसणंसाभावदो तस्स सव्वघाइत्ताविरोहा। मिच्छत्तसव्वघाइफद्दयाणं उदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण सम्मत्तस्स देसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्मामिच्छत्तसव्वघादिफद्दयाणमुदएण सम्मामिच्छत्तं होदि त्ति तस्स खओवसमियत्तं केइं भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? सव्वहिचारित्तादो। विउचारो पुव्वं परूविदो त्ति णेह परूविज्जदे।

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो? उवसमिओ वा, खइओ वा, खओवसमिओ वा भावो ॥ १३ ॥

तं जहा—तिण्णि वि करणाणि काऊण सम्मत्तं पडिवण्णजीवाणं ओवसमिओ भावो, दंसणमोहणीयस्स तत्थुदयाभावा। खविददंसणमोहणीयाणं सम्मादिट्ठीणं खइयो, पडिवक्खकम्मक्खएणुप्पण्णत्तादो। इदरेसिं सम्मादिट्ठीणं खओवसमिओ, पडिवक्खकम्मोदएण सह लद्धप्पसरूवत्तादो। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्मत्तदेसघादिफद्दयाणमुदएण सम्मादिट्ठी उप्पज्जदि त्ति तिस्से खओवसमियत्तं केइं भणंति, तण्ण घडदे, विउचारदंसणादो, अइप्पसंगादो वा।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ १४ ॥

संजमघादीणं कम्माणमुदएण असंजमो होदि, तदो असंजदो त्ति ओदइओ भावो। एदेण अंतदीवएण सुत्तेण अइक्कंतसव्वगुणट्ठाणेसु ओदइयमसंजदत्तमत्थि त्ति भणिदं होदि।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं ॥ १५ ॥

कुदो? मिच्छादिट्ठि त्ति ओदइओ, सासणसम्मादिट्ठि त्ति पारिणामिओ, सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति खओवसमिओ, असंजदसम्मादिट्ठि त्ति उवसमिओ खइओ खओवसमिओ वा भावो; संजमघादीणं कम्माणमुदएण असंजदो त्ति इच्चेदेहि णिरओघादो विसेसाभावा।

विदियाए जाव सत्तमीए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमोघं ॥ १६ ॥

सुगममेदं।

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो? उवसमिओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ १७ ॥

तं जहा—दंसणमोहणीयस्स उवसमेण उदयाभावलक्खणेण जेणुप्पज्जइ उवसमसम्मादिट्ठी तेण सा ओवसमिया। जदि उदयाभावो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वि उवसमो उच्चइ, तो देवत्तं पि ओवसमियं होज्ज, तिण्हं गईणमुदयाभावेण उप्पज्जमाणत्तादो ? ण, तिण्हं गईणं त्थिउक्कसंकमेण उदयस्सुवलंभा, देवगइणामाए उदओवलंभादो वा । वेदगसम्मत्तस्स दंसणमोहणीयावयवस्स देसघादिलक्खणस्स उदयादो उप्पण्णसम्मादिट्ठिभावो खओवसमिओ । वेदगसम्मत्तफद्दयाणं खयसण्णा, सम्मत्तपडिबंधणसत्तीए तत्थाभावा । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुदयाभावो उवसमो । तेहि दोहि उप्पण्णत्तादो सम्माइट्ठिभावो खइओवसमिओ । खइओ भावो किण्णोवलब्भदे ? ण, विदियादिसु पुढवीसु खइयसम्मादिट्ठीणमुप्पत्तीए अभावा ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ १८ ॥

सम्मादिट्ठित्तं दुभावसण्णिदं सोच्चा असंजदभावावगमत्थं पुच्छिदसिस्ससंदेहविणासणट्ठमागदमिदं सुत्तं । संजमघादिचारित्तमोहणीयकम्मोदयसमुप्पण्णत्तादो असंजदभावो ओदइओ । अदीदगुणट्ठाणेसु असंजदभावस्स अत्थित्तं एदेण सुत्तेण परूविदं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदाणमोघं ॥ १९ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठि त्ति ओदइओ, सासणसम्मादिट्ठि त्ति पारिणामिओ, सम्मामिच्छादिट्ठि त्ति खओवसमिओ, सम्मादिट्ठि त्ति ओवसमिओ खइओ खओवसमिओ वा; ओदइएण भावेण पुणो असंजदो, संजदासंजदो त्ति खओवसमिओ भावो इच्चेदेहि ओघादो चउव्विहतिरिक्खाणं भेदाभावा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु भेदपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? ओवसमिओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २० ॥

कुदो ? उवसम-वेदयसम्मादिट्ठीणं चेय तत्थ संभवादो । खइओ भावो किण्ण तत्थ संभवइ ? खइयसम्मादिट्ठीणं बद्धाउआणं त्थीवेदएसु उप्पत्तीए अभावा, मणुसगइवदिरित्तसेसगईसु दंसणमोहणीयक्खवणाए अभावादो च ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २१ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ २२ ॥

तिविहमणुससयलगुणट्ठाणाणं ओघसयलगुणट्ठाणेहिंतो भेदाभावा । मणुसअपज्जत्ततिरिक्खअपज्जत्तमिच्छादिट्ठीणं सुत्ते भावो किण्ण परूविदो ? ण, ओघपरूवणादो चेय तब्भावावगमादो पुध ण परूविदो ।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ २३ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठीणमोदइएण, सासणाणं पारिणामिएण, सम्मामिच्छादिट्ठीणं खओवसमिएण, असंजदसम्मादिट्ठीणं ओवसमिय-खइय-खओवसमिएहि भावेहि ओघमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि साधम्मुवलंभा ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवीओ च मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ २४ ॥

कुदो ? एदेसिं सुत्तुत्तगुणट्ठाणाणं सव्वपयारेण ओघादो भेदाभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? उवसमिओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २५ ॥

कुदो ? तत्थ उवसम-वेदगसम्मत्ताणं दोण्हं चेय संभवादो । खइओ भावो एत्थ किण्ण परूविदो ? ण, भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-विदियादिछपुढविणेरइय-सव्वविगलिंदिय-लद्धिअपज्जत्तित्थीवेदेसु सम्मादिट्ठीणमुववादाभावा, मणुसगइवदिरित्तण्णगईसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावा च ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २६ ॥

सुगममेदं ।

सोधम्मीसाणप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ २७ ॥

कुदो ? एत्थतणगुणट्ठाणाणं ओघचदुगुणट्ठाणेहिंतो अप्पिदभावेहि भेदाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria; Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? ओवसमिओ वा खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ २८ ॥

तं जहा—वेदगसम्मादिट्ठीणं खओवसमिओ भावो, खइयसम्मादिट्ठीणं खइओ, उवसमसम्मादिट्ठीणं ओवसमिओ भावो । तत्थ मिच्छादिट्ठीणमभावे संते कथमुवसमसम्मादिट्ठीणं संभवो, कारणाभावे कज्जस्स उप्पत्तिविरोहादो ? ण एस दोसो, उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेडिं चडंत-ओदरंताणं संजदाणं कालं करिय देवेसुप्पण्णाणमुवसमसम्मत्तुवलंभा । तिसु ट्ठाणेसु पउत्तो वासद्दो अणत्थओ, एगेणेव इट्ठकज्जसिद्धीदो ? ण, मंदबुद्धिसत्ताणुग्गहट्ठत्तादो ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ २९ ॥

सुगममेदं । एवं गइमग्गणा समत्ता ।

इंदियाणुवादेण पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३० ॥

कुदो ? एत्थतणगुणट्ठाणाणमोघगुणट्ठाणेहिंतो अप्पिदभावं पडि भेदाभावा । एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तमिच्छादिट्ठीणं भावो किण्ण परूविदो ? ण एस दोसो, परूवणाए विणा वि तत्थ भावोवलद्धीदो । परूवणा कीरदे परावबोहणट्ठं, ण च अवगयअट्ठपरूवणा फलवंता, परूवणाकज्जस्स अवगमस्स पुव्वमेवुप्पण्णत्तादो । एवमिंदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३१ ॥

कुदो ? ओघगुणट्ठाणेहिंतो एत्थतणगुणट्ठाणाणमप्पिदभावेहि भेदाभावा । सव्वपुढवी-सव्वआउ-सव्वतेउ-सव्ववाउ-सव्ववणप्फदि-तसअपज्जत्तमिच्छादिट्ठीणं भावपरूवणा सुत्ते ण कदा, अवगदपरूवणाए फलाभावा । तस-तसपज्जत्तगुणट्ठाणभावो ओघादो चेव णज्जदि त्ति तब्भावपरूवणमणत्थयमिदि तप्परूवणं पि मा किज्जदु त्ति भणिदे ण, तत्थ बहुसु गुणट्ठाणेसु संतेसु किण्णु कस्सइ अण्णो भावो होदि, ण होदि त्ति संदेहो मा होहदि त्ति तप्पडिसेहट्ठं तप्परूवणाकरणादो । एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३२ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणं ओघं ॥ ३३ ॥

एदं पि सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? खइओ वा खओवसमिओ वा भावो ॥ ३४ ॥

कुदो ? खइय-वेदगसम्मादिट्ठीणं देव-णेरइय-मणुसाणं तिरिक्ख-मणुसेसु उप्पज्जमाणाणमुवलंभा । ओवसमिओ भावो एत्थ किण्ण परूविदो ? ण, चउग्गइउवसमसम्मादिट्ठीणं मरणाभावादो ओरालियमिस्सम्हि उवसमसम्मत्तस्सुवलंभाभावा । उवसमसेडिं चढंत-ओयरंतसंजदाणमुवसमसम्मत्तेण मरणं अत्थि त्ति चे सच्चमत्थि, किंतु ण ते उवसमसम्मत्तेण ओरालियमिस्सकायजोगिणो होंति, देवगदिं मोत्तूण तेसिमण्णत्थ उप्पत्तीए अभावा ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवलि त्ति को भावो ? खइओ भावो ॥ ३६ ॥

एदं पि सुगमं ।

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघभंगो ॥ ३७ ॥

एदं पि सुगमं ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ३८ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठीणमोदइएण, सासणसम्मादिट्ठीणं पारिणामिएण, असंजदसम्मादिट्ठीणं ओवसमिय-खइय-खओवसमियभावेहि ओघमिच्छादिट्ठिआदीहि साधम्मुवलंभा ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ३९ ॥ ॥६१७॥

कुदो ? चारित्तावरणचदुसंजलण-सत्तणोकसायाणमुदए संते वि पमादाणुविद्धसंजमुवलंभा । कथमेत्थ खओवसमो ? पत्तोदय-
षट्ख.१५५ एक्कारसचारित्तमोहणीयपयडिदेसघादिफद्दयाणमुवसमसण्णा, णिरवसेसेण चारित्तघायणसत्तीए तत्थुवसमुवलंभा । तेसिं चेव सव्वघादि-

फद्दयाणं खयसण्णा, णट्ठोदयभावत्तादो। तेहि दोहिं पि उप्पण्णो संजमो खओवसमिओ। अथवा एक्कारसकम्माणमुदयस्सेव खओवसमसण्णा। कुदो? चारित्तघायणसत्तीए अभावस्सेव तव्ववएसादो। तेण उप्पण्ण इदि खओवसमिओ पमादाणुविद्धसंजमो।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सजोगिकेवली ओघं ॥ ४० ॥

कुदो? मिच्छादिट्ठीणमोदइएण, सासणाणं पारिणामिएण, कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्मादिट्ठीणं ओवसमिय-खइय-खओवसमियभावेहि, सजोगिकेवलीणं खइएण भावेण ओघम्मि गदगुणट्ठाणेहिं साधम्मुवलंभा। एवं जोगमग्गणा समत्ता।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ४१ ॥

सुगममेदं, एदस्सट्ठपरूवणाए विणा वि अत्थोवलद्धीदो।

अवगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ४२ ॥

एत्थ चोदगो भणदि–जोणि-मेहणादीहि समण्णिदं सरीरं वेदो, ण तस्स विणासो अत्थि, संजदाणं मरणप्पसंगा। ण भाववेदविणासो वि अत्थि, सरीरे अविणट्ठे तब्भावस्स विणासविरोहा। तदो णावगदवेदत्तं जुज्जदे इदि? एत्थ परिहारो उच्चदे–ण सरीरमित्थि-पुरिसवेदो, णामकम्मजणिदस्स सरीरस्स मोहणीयत्तविरोहा। ण मोहणीयजणिदमवि सरीरं, जीवविवाइणो मोहणीयस्स पोग्गलविवाइत्तविरोहा। ण सरीरभावो वि वेदो, तस्स तदो पुधभूदस्स अणुवलंभा। परिसेसादो मोहणीयदव्वकम्मक्खंधो तज्जणिदजीवपरिणामो वा वेदो। तत्थ तज्जणिदजीवपरिणामस्स वा परिणामेण सह कम्मक्खंधस्स वा अभावेण अवगदवेदो होदि त्ति तेण णेस दोसो त्ति सिद्धं। सेसं सुगमं। एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा ओघं ॥ ४३ ॥

सुगममेदं।

अकसाईसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ ४४ ॥

चोदओ भणदि–कसाओ णाम जीवगुणो, ण तस्स विणासो अत्थि, णाण-दंसणाणमिव। विणासे वा जीवस्स विणासेण होदव्वं,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णाण-दंसणविणासेणेव । तदो ण अकसायत्तं घडदे इदि ? होदु णाण-दंसणाणं विणासम्हि जीवविणासो, तेसिं तल्लक्खणत्तादो । ण कसाओ जीवस्स लक्खणं, कम्मजणिदस्स तल्लक्खणत्तविरोहा । ण कसायाणं कम्मजणिदत्तमसिद्धं, कसायवड्ढीए जीवलक्खणणाणहाणिअण्णहाणुववत्तीदो तस्स कम्मजणिदत्तसिद्धीदो । ण च गुणो गुणंतरविरोही, अण्णत्थ तहाणुवलंभा । सेसं सुगमं । एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ४५ ॥

कधं मिच्छादिट्ठिणाणस्स अण्णाणत्तं ? णाणकज्जाकरणादो । किं णाणकज्जं ? णादत्थसद्दहणं । ण तं मिच्छादिट्ठिम्हि अत्थि । तदो णाणमेव अण्णाणं, अण्णहा जीवविणासप्पसंगा । अवगयदवधम्मणाइसु मिच्छादिट्ठिम्हि सद्दहणमुवलंभए चे ण, अत्तागमपयत्थसद्दहणविरहियस्स दवधम्मणाइसु जहट्ठसद्दहणविरोहा । ण च एस ववहारो लोगे अप्पसिद्धो, पुत्तकज्जमकुणंते पुत्ते वि लोगे अपुत्तववहारदंसणादो । तिसु अण्णाणेसु णिरुद्धेसु सम्मामिच्छादिट्ठिभावो किण्ण परूविदो ? ण, तस्स सद्दहणासद्दहणेहिंतो दोहिम्मि अक्कमेण अणुविद्धस्स संजदासंजदो व्व पत्तजच्चंतरस्स णाणेसु अण्णाणेसु वा अत्थित्तविरोहा । सेसं सुगमं ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओधिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ४६ ॥

सुगममेदं, ओघादो भावं पडि भेदाभावा ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ ४७ ॥

एदं पि सुगमं ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ ४८ ॥

कुदो ? खइयभावं पडि भेदाभावा । सजोगो त्ति को भावो ? अणादिपारिणामिओ भावो । णोवसमिओ, मोहणीए अणुवसंते वि जोगुवलंभा । ण खइओ, अणप्पसरूवस्स कम्माणं खएणुप्पत्तिविरोहा । ण घादिकम्मोदयजणिओ, णट्ठे वि घादिकम्मोदए केवलिम्हि जोगुवलंभा । णो अघादिकम्मोदयजणिदो वि, संते वि अघादिकम्मोदए अजोगिम्हि जोगाणुवलंभा । ण सरीरणामकम्मोदयजणिदो वि, पोग्गलविवाइयाणं जीवपरिप्फंदणहेउत्तविरोहा । कम्मइयसरीरं ण पोग्गलविवाई, तदो पोग्गलाणं वण्ण-रस-गंध-फास-संठाणागमणा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दीणमणुवलंभा । तदुप्पाइदो जोगो होदु चे ण, कम्मइयसरीरं पि पोग्गलविवाई चेव, सव्वकम्माणमासयत्तादो । कम्मइओदयविणट्ठसमए चेव जोगविणासदंसणादो कम्मइयसरीरजणिदो जोगो चे ण, अघाइकम्मोदयविणासाणंतरं विणस्संतभवियत्तस्स पारिणामियस्स ओदइयत्तप्पसंगा । तदो सिद्धं जोगस्स पारिणामियत्तं । अथवा ओदइओ जोगो, सरीरणामकम्मोदयविणासाणंतरं जोगविणासुवलंभा । ण च भवियत्तेण विउवचारो, कम्मसंबंधविरोहिणो तस्स कम्मजणिदत्तविरोहा । सेसं सुगमं । एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ४९ ॥

सुगममेदं ।

सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ५० ॥

एदं पि सुगमं ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा ओघं ॥ ५१ ॥

कुदो ? खओवसमियं भावं पडि विसेसाभावा । पमत्तापमत्तसंजदेसु अण्णे वि भावा संति, एत्थ ते किण्ण परूविदा ? ण, तेसिं पमत्तापमत्तसंजमत्ताभावा । पमत्तापमत्तसंजदाणं भावेसु पुच्छिदेसु ण हि सम्मत्तादिभावाणं परूवणा णाओववण्णेत्ति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइया उवसमा खवा ओघं ॥ ५२ ॥

उवसामगाणमुवसमिओ भावो, खवगाणं खइओ भावो त्ति उत्तं होदि ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ ५३ ॥

सुगममेदं ।

संजदासंजदा ओघं ॥ ५४ ॥

एदं पि सुगमं ।

असंजदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति ओघं ॥ ५५ ॥

सुगममेदं, पुव्वं परूविदत्तादो । एवं संजममग्गणा समत्ता ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ५६ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिप्पहुडि खीणकसायपज्जंतसव्वगुणट्ठाणाणं चक्खु-अचक्खुदंसणविरहियाणमणुवलंभा ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ ५७ ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ ५८ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु चदुट्ठाणी ओघं ॥ ५९ ॥

चदुण्हं ठाणाणं समाहारो चदुट्ठाणी । केण समाहारो ? एगलेस्साए । सेसं सुगमं ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ॥ ६० ॥

एदं सुगमं ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६१ ॥

सुगममेदं । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६२ ॥

कुदो ? एत्थतणगुणट्ठाणाणं ओघगुणट्ठाणेहिंतो भवियत्तं पडि भेदाभावा ।

अभवसिद्धिय त्ति को भावो ? पारिणामिओ भावो ॥ ६३ ॥

कुदो ? कम्माणमुदएण उवसमेण खएण खओवसमेण वा अभवियत्ताणुप्पत्तीदो । भवियत्तस्स वि पारिणामिओ चेय भावो, कम्माणमुदय-उवसम-खय-खओवसमेहि भवियत्ताणुप्पत्तीदो । गुणट्ठाणस्स भावमभणिय मग्गणट्ठाणभावं परूवेंतस्स कोभिप्पाओ ? गुणट्ठाणभावो अउत्तो वि णाणिज्जओ । अभवियत्तं पुण उवदेसमवेक्खदे, पुव्वमपरूविदसरूवत्तादो । तेण मग्गणाभावो उत्तो त्ति । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ६४ ॥

सुगममेदं ।

खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? खइओ भावो ॥ ६५ ॥

कुदो ? दंसणमोहणीयस्स णिम्मूलक्खएणुप्पण्णसम्मत्तादो ।

खइयं सम्मत्तं ॥ ६६ ॥

खइयसम्मादिट्ठीसु सम्मत्तं खइयं चेव होदि त्ति अणुत्तसिद्धीदो णेदं सुत्तमाढवेदव्वं ? ण एस दोसो । कुदो ? ण ताव खइयसम्मादिट्ठी सण्णा खइयस्स सम्मत्तस्स अत्थित्तं गमयदि, तवण-भक्खरादिणामस्स अणणुअट्ठस्स वि उवलंभा । ण च अण्णं किंचि खइयसम्मत्तस्स अत्थित्तम्हि चिण्हमत्थि । तदो खइयसम्मादिट्ठिस्स खइयं चेव सम्मत्तं होदि त्ति जाणाविदं । अवरं च ण सव्वे सिस्सा उप्पण्णा चेव, किंतु अउप्पण्णा वि अत्थि । तेहि खइयसम्मादिट्ठीणं किमुवसमसम्मत्तं, किं खइयसम्मत्तं किं वेदगसम्मत्तं होदि त्ति पुच्छिदे एदस्स सुत्तस्स अवयारो जादो, खइयसम्मादिट्ठीणं खइयं चेव सम्मत्तं होदि, ण सेसदोसम्मत्ताणि त्ति जाणावणट्ठं । अपुव्वकरणक्खवयाणं खइयभावाणं खइयचरित्तस्सेव दंसणमोहखवयाणं पि खइयभावाणं तस्संबंधेण वेदयसम्मत्तोदए संते वि खइयसम्मत्तस्स अत्थित्तप्पसंगे तप्पडिसेहट्ठं वा ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ६७ ॥

सुगममेदं ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ६८ ॥

कुदो ? चारित्तावरणकम्मोदए संते वि जीवसहावचारित्तेगदेसस्स संजमासंजम-पमत्त-अप्पमत्तसंजमस्स आविब्भावस्सुवलंभा ।

खइयं सम्मत्तं ॥ ६९ ॥

सुगममेदं ।

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो ? ओवसमिओ भावो ॥ ७० ॥

मोहणीयस्सुवसमेणुप्पण्णचरित्तत्तादो, मोहोवसमणहेदुचारित्तसमण्णिदत्तादो य ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खइयं सम्मत्तं ॥ ७१ ॥

पारद्धदंसणमोहणीयक्खवणो कदकरणिज्जो वा उवसमसेढिं ण चढदि त्ति जाणावणट्ठमेदं सुत्तं भणिदं । सेसं सुगमं ।

चदुण्हं खवा सजोगिकेवली अजोगिकेवली त्ति को भावो ? खइओ भावो ॥ ७२ ॥

कुदो ? मोहणीयस्स खवणहेदुअपुव्वसण्णिदचारित्तसमण्णिदत्तादो मोहक्खएणुप्पण्णचारित्तादो घादिक्खएणुप्पण्णणवकेवललद्धीहिंतो ।

खइयं सम्मत्तं ॥ ७३ ॥

सुगममेदं ।

वेदयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ७४ ॥

सुगममेदं ।

खओवसमियं सम्मत्तं ॥ ७५ ॥

ओघम्मि असंजदसम्मादिट्ठिस्स तिण्णि भावा सामण्णेण परूविदा, एदं सम्मत्तमोवसमियं खइयं खओवसमियं वेत्ति ण परूविदं । संपहि सम्मत्तमग्गणाए एदं सम्मत्तमोवसमियं खइयं खओवसमियं वेत्ति एदेहि सुत्तेहि जाणाविदं । सेसं सुगमं ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ७६ ॥

अवगयत्थमेदं ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ७७ ॥

णादत्थमेयं ।

खओसवमियं सम्मत्तं ॥ ७८ ॥

कुदो ? दंसणमोहोदए संते वि जीवगुणीभूदसद्दहणस्स उप्पत्तीए उवलंभा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि त्ति को भावो ? उवसमिओ भावो ॥ ७९ ॥

कुदो ? दंसणमोहुवसमेणुप्पण्णसम्मत्तादो ।

उवसामियं सम्मत्तं ॥ ८० ॥ ओदइएण भावेण पुणो असंजदो ॥ ८१ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो ? खओवसमिओ भावो ॥ ८२ ॥

सुगममेदं ।

उवसमियं सम्मत्तं ॥ ८३ ॥

एदं पि सुगमं ।

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो ? उवसमिओ भावो ॥ ८४ ॥ उवसमियं सम्मत्तं ॥ ८५ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ८६ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८७ ॥ मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

तिण्णि वि सुत्ताणि अवगयत्थाणि । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ८९ ॥

सुगममेदं ।

असण्णि त्ति को भावो ? ओदइओ भावो ॥ ९० ॥

कुदो ? णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण असण्णित्तुप्पत्तीदो । असण्णिगुणट्ठाणभावो किण्ण परूविदो ? ण, उवदेसमंतरेण तदवगमादो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ९१ ॥

सुगममेदं ।

अणाहाराणं कम्मइयभंगो ॥ ९२ ॥

एदं पि सुगमं । कम्मइयादो विसेसपदुप्पायणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, अजोगिकेवलि त्ति को भावो ? खइओ भावो ॥ ९३ ॥

सुगममेदं । एवं आहारमग्गणा समत्ता । एवं भावाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने भावानुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति सप्तमो भागः समाप्तः ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ इति भावानुयोगद्दारं समाप्तम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

श्री सन्मतिजिनेन्द्राय नमः ।

अप्पाबहुगाणुगमो

(अष्टमो भागः)

केवलणाणुज्जोइयलोयालोए जिणे णमंसित्ता । अप्पबहुआणिओअं जहोवएसं परूवेमो ॥

अप्पाबहुआणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

तत्थ णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावभेएण अप्पाबहुअं चउव्विहं । अप्पाबहुअसद्दो णामप्पाबहुअं । एदम्हादो एदस्स बहुत्तमप्पत्तं वा एदमिदि एयत्तज्झारोवेण ट्ठविदं ठवणप्पाबहुगं । दव्वप्पाबहुअं दुविहं आगम-णोआगमभेएण । अप्पाबहुअपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वप्पाबहुअं । णोआगमदव्वप्पाबहुअं तिविहं जाणुअसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण । तत्थ जाणुअसरीरं भविय-वट्टमाण-समुज्झादमिदि तिविहमवि अवगयत्थं । भवियं भविस्सकाले अप्पाबहुअपाहुडजाणओ । तव्वदिरित्तअप्पाबहुअं तिविहं सचित्तमचित्तं मिस्समिदि । जीवदव्वप्पाबहुअं सचित्तं । सेसदव्वप्पाबहुअमचित्तं । दोण्हं पि अप्पाबहुअं मिस्सं । भावप्पाबहुअं दुविहं आगम-णोआगमभेएण । अप्पाबहुअपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावप्पाबहुअं । णाण-दंसणाणुभाग-जोगादिविसयं णोआगमभावप्पाबहुअं । एदेसु अप्पाबहुएसु केण पयदं ? सचित्तदव्वप्पाबहुएण पयदं । किमप्पाबहुअं ? संखाधम्मो, एदम्हादो एदं तिगुणं चदुगुणमिदि बुद्धिगेज्झो । कस्सप्पाबहुअं ? जीवदव्वस्स, धम्मिवदिरित्तसंखाधम्माणुवलंभा । केणप्पाबहुअं ? पारिणामिएण भावेण । कत्थप्पाबहुअं ? जीवदव्वे । केवचिरमप्पाबहुअं ? अणादि-अपज्जवसिदं । कुदो ? सव्वेसिं गुणट्ठाणाणमेदेणेव पमाणेण सव्वकालमवट्ठाणादो । कइविहमप्पाबहुअं ? मग्गणभेयभिण्णगुणट्ठाणमेत्तं । अप्पं च बहुअं च अप्पाबहुआणि । तेसिमणुगमो अप्पाबहुआणुगमो । तेण अप्पाबहुआणुगमेण णिद्देसो ॥६२७॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुविहो होदि ओघो आदेसो त्ति । संगहिदवयणकलावो दव्वट्ठियणिबंधणो ओघो णाम । असंगहिदवयणकलाओ पुव्विल्लत्थावयवणिबंधो पज्जवट्ठियणिबंधणो आदेसो णाम ।

ओघेण तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ २ ॥

तिसु अद्धासु त्ति वयणं चत्तारि अद्धाओ पडिसेहट्ठं । उवसमा त्ति वयणं खवयादिपडिसेहफलं । पवेसणेणेत्ति वयणं संचयपडिसेहफलं । तुल्ला त्ति वयणेण विसरिसत्तपडिसेहो कदो । आदिमेसु तिसु गुणट्ठाणेसु उवसामया पवेसणेण तुल्ला सरिसा । कुदो ? एआदिचउवण्णमेत्तजीवाणं पवेसं पडि पडिसेहाभावा । ण च सव्वद्धं तिसु उवसामगेसु पविसंतजीवेहि सरिसत्तणियमो, संभवं पडुच्च सरिसत्तउत्तीदो । एदेसिं संचओ सरिसो असरिसो त्ति वा किण्ण परूविदो ? ण एस दोसो, पवेससारिच्छेण तेसिं संचयसारिच्छस्स वि अवगमादो । पविस्समाणजीवाणं विसरिसत्ते संते संचयस्स विसरिसत्तं, अण्णहा दिट्ठविरोहादो । अपुव्वादिअद्धाणं थोव-बहुत्तादो विसरिसत्तं संचयस्स किण्ण होदि त्ति पुच्छिदे ण होदि, तिण्हमुवसामगाणमद्धाहिंतो उक्कस्सपवेसंतरस्स बहुत्तुवदेसादो । तम्हा तिण्हं संचओ वि सरिसो चेय । थोवा उवरि उच्चमाणगुणट्ठाणाण संखं पेक्खिय थोवा त्ति भणदा ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेय ॥ ३ ॥

पुधसुत्तारंभो किमट्ठो ? उवसंतकसायस्स कसाउवसामगाणं च पच्चासत्तीए अभावस्स संदंसणफलो । जेसिं पच्चासत्ती अत्थि तेसिमेगजोगो, इदरेसिं भिण्णजोगो होदि त्ति एदेण जाणाविदं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ४ ॥

कुदो ? उवसामगगुणट्ठाणमुक्कस्सेण पविस्समाणचउवण्णजीवेहिंतो खवगेगगुणमुक्कस्सेण पविस्समाणअट्ठुत्तरसदजीवाणं दुगुणत्तुवलंभा, पंचूण-चदुरुत्तरतिसदमेत्तेगुवसामगगुणट्ठाणुक्कस्ससंचयादो वि खवगेगगुणट्ठाणुक्कस्ससंचयस्स दुरूऊणछस्सदमेत्तस्स दुगुणत्तदंसणादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ५ ॥

पुधसुत्तारंभस्स कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । सेसं सुगमं ।

सजोगकेवली अजोगकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ ६ ॥

घाइयघादिकम्माणं छदुमत्थेहि पच्चासत्तीए अभावादो पुधसुत्तारंभो जादो । पवेसणेण तेत्तिया चेवेत्ति उत्ते पवेस-संचएहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठुत्तरसदुदुरूऊणछस्सदमेत्ता कमेण होंति त्ति घेत्तव्वं। दो वि तुल्ला त्ति उत्ते दो वि अण्णोण्णेण सरिसा त्ति भणिदं होदि। अजोगिकेवलिसंचओ पुव्विल्लगुणट्ठाणसंचएहि सरिसो जधा, तथा सजोगिकेवलिसंचयस्स वि सरिसत्ती। विसरिसत्तपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ७ ॥

कुदो ? दुरूवूणछस्सदमेत्तजीवेहिंतो अट्ठलक्ख-अट्ठाणउदिसहस्स-दुरहियपंचसदमेत्तजीवाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभा। हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिं छेत्तूण गुणयारो उप्पादेदव्वो।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ८ ॥

खवगुवसामगअप्पमत्तसंजदपडिसेहो किमट्ठं कीरदे ? ण, अप्पमत्तसामण्णेण तेसिं पि गहणप्पसंगा। सजोगिरासिणा बेकोडिछण्णउदिलक्ख-णवणउदिसहस्स-तिउत्तरसदमेत्तअप्पमत्तरासिम्हि भागे हिदे जं लद्धं सो गुणगारो होदि।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि। कुदो णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो। पुव्वुत्तअप्पमत्तरासिणा पंचकोडि-तिण्णउइलक्ख-अट्ठाणउइसहस्स-छब्भहियदोसदमेत्तम्हि पमत्तरासिम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं सो गुणगारो।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १० ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तादो। माणुसखेत्तब्भंतरे चेय संजदासंजदा होंति, णो बहिद्धा; भोगभूमिम्हि संजमासंजमभावविरोहा। ण च माणुसखेत्तब्भंतरे असंखेज्जाणं संजदासंजदाणमत्थि संभवो, तेत्तियमेत्ताणमेत्थावट्ठाणविरोहा। तदो संखेज्जगुणेहि संजदासंजदेहि होदव्वमिदि ? ण, सयंपहपव्वदपरभागे असंखेज्जजोयणवित्थडे कम्मभूमिपडिभाए तिरिक्खाणमसंखेज्जाणं संजमासंजमगुणसहिदाणमुवलंभा। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। को पडिभागो ? अंतोमुहुत्तगुणिदपमत्तसंजदरासी पडिभागो।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ११ ॥

कुदो ? तिविहसम्मत्तट्ठिदसंजदासंजदेहिंतो एगुवसमसम्मत्तादो सासणगुणं पडिवज्जिय छसु आवलियासु संचिदजीवाणमसंखेज्जगुणत्तुवदेसादो। तं पि कधं णव्वदे ? एगसमयम्हि संजमासंजमं पडिवज्जमाणजीवेहिंतो एक्कसमयम्हि चेव सासणगुणं पडिवज्जमाण-

जीवाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो। तं पि कुदो ? अणंतसंसारविच्छेयहेउसंजमासंजमलंभस्स अइदुलभत्तादो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्हि भागे हिदे गुणगारो आगच्छदि, उवरिमरासिअवहारकालेण हेट्ठिमरासिअवहारकाले भागे हिदे गुणगारो होदि, उवरिमरासिअवहारकालगुणिदहेट्ठिमरासिणा पलिदोवमे भागे हिदे गुणगारो होदि। एवं तीहि पयारेहि गुणयारो समाणभज्जमाणरासीसु सव्वत्थ साहेदव्वो। णवरि हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्हि भागे हिदे गुणगारो आगच्छदि त्ति एदं समाणासमाणभज्जमाणरासीणं साहारणं, दोसु वि एदस्स पउत्तीए बाहाणुवलंभा।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १२ ॥

एदस्सत्थो उच्चदे—सम्मामिच्छादिट्ठिअद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता, सासणसम्मादिट्ठिअद्धा वि छावलियमेत्ता। किंतु सासणसम्मादिट्ठिअद्धादो सम्मामिच्छाइट्ठिअद्धा संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणद्धाए उवक्कमणकालो वि सासणद्धोवक्कमणकालादो संखेज्जगुणो उवक्कमणविरोहाविरहकालाणमुहयत्थ साधम्मादो। तेण दोगुणट्ठाणाणि पडिवज्जमाणरासी जदि वि सरिसो, तो वि सासणसम्मादिट्ठीहिंतो सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा होंति। किंतु सासणगुणमुवसमसम्मादिट्ठिणो चेय पडिवज्जंति, सम्मामिच्छत्तगुणं पुण वेदगुवसमसम्मादिट्ठिणो अट्ठावीससंतकम्मियमिच्छादिट्ठिणो य पडिवज्जंति। तेण सासणं पडिवज्जमाणरासीदो सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासी संखेज्जगुणो। तदो संखेज्जगुणायादो संखेज्जगुणउवक्कमणकालादो च सासणेहिंतो सम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा, उवसमसम्मादिट्ठीहिंतो वेदगसम्मादिट्ठिणो असंखेज्जगुणा, 'कारणाणुसारिणा कज्जेण होदव्वमिदि' णायादो। सासणेहिंतो सम्मामिच्छादिट्ठिणो असंखेज्जगुणा किण्ण होंति त्ति उत्ते ण होंति, अणेयणिग्गमादो। जदि तेहि पडिवज्जमाणगुणट्ठाणमेक्कं चेव होदि, तो एस णाओ वोत्तुं जुत्तो। किंतु वेदगसम्मादिट्ठिणो मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं च पडिवज्जंति, सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणेहिंतो मिच्छत्तं पडिवज्जमाणवेदगसम्मादिट्ठिणो असंखेज्जगुणा, तेण पुव्वुत्तं ण घडदे इदि। ण चासंखेज्जगुणरासिवओ अण्णरासिमवेक्खियं होदि, तस्स अप्पणो आयाणुसरणसहावत्तादो। एदमेवं चेव होदि त्ति कधं णव्वदे ? सासणेहिंतो सम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो णव्वदे।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सम्मामिच्छादिट्ठिरासी अंतोमुहुत्तसंचिदो, असंजदसम्मादिट्ठिरासी पुण वेसागरोवमसंचिदो। सम्मामिच्छादिट्ठिअद्धादो वेसागरोवमकालो पलिदोवमासंखेज्जदिभागगुणो। सम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालादो वि असंजदसम्मादिट्ठिउवक्कमणकालो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागगुणो, उवक्कमणकालस्स अद्धाणुसारित्तदंसणादो। तेण पलिदोवमस्स असं-

खेज्जदिभागेण गुणगारेण होदव्वमिदि ? ण, असंजदसम्मादिट्ठिरासिस्स असंखेज्जपलिदोवमप्पमाणप्पसंगा । तं जहा– 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति' दव्वाणिओगद्दारसुत्तादो णव्वदि जधा पलिदोवममंतोमुहुत्तेण खंडिदेयखंडमेत्ता सम्मामिच्छादिट्ठिणो होंति त्ति । पुणो एदं रासिं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे असंखेज्जपलिदोवममेत्तो असंजदसम्मादिट्ठिरासी होदि । ण चेदं, 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति' एदेण सुत्तेण सह विरोहा । कधं पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणगारस्स सिद्धि ? उच्चदे– सम्मामिच्छादिट्ठिअद्धादो तप्पाओग्गअसंखेज्जगुणद्धाए संचिदो असंजदसम्मादिट्ठिरासी घेत्तव्वो, एदिस्से अद्धाए सम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालादो असंखेज्जगुणउवक्कमणकालुवलंभा । एत्थ संचिद-असंजदसम्मादिट्ठिरासीए वि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदमेत्तो होदि । अथवा दोण्हं उवक्कमणकाला जदि वि सरिसा होंति त्ति तो वि सम्मामिच्छादिट्ठीहिंतो असंजदसम्मादिट्ठी आवलियाए संखेज्जभागगुणा । कुदो ? सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासीदो सम्मत्तं पडिवज्जमाणरासिस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणत्तादो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ १४ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठीणमाणंतियादो । को गुणकारो ? अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? असंजदसम्मादिट्ठी पडिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ १५ ॥

संजदासंजदादिट्ठाणपडिसेहट्ठं असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणवयणं । उवरिमुच्चमाणरासिअवेक्खं सव्वत्थोववयणं । सेससम्मादिट्ठिपडिसेहट्ठमुवसमसम्मादिट्ठिवयणं ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १६ ॥

उवसमसम्मत्तादो खइयसम्मत्तमइदुलहं, दंसणमोहणीयक्खवएण उक्कस्सेण छम्मासमंतरिय उक्कस्सेण अट्ठुत्तरसदमेत्ताणं चेव उप्पज्जमाणत्तादो । खइयसम्मत्तादो उवसमसम्मत्तमइसुलहं, सत्तरादिंदियाणि अंतरिय एगसमएण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु तदुप्पत्तिदंसणादो । तदो खइयसम्मादिट्ठीहिंतो उवसमसम्मादिट्ठीहिं असंखेज्जगुणेहि होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु संचयकालमाहप्पेण उवसमसम्मादिट्ठीहिंतो खइयसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा जादा । तं जहा– उवसमसम्मत्तद्धा उक्कस्सिया वि अंतोमुहुत्तमेत्ता चेय । खइयसम्मत्तद्धा पुण जहण्णिया अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सिया दोपुव्वकोडिअब्भहियतेत्तीससागरोवममेत्ता । तत्थ मज्झिमकालो दिवड्ढपलिदोवममेत्तो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एत्थ अंतोमुहुत्तमंतरिय संखेज्जोवक्कमणसमएसु घेप्पमाणेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेतोवक्कमणकालो लब्भइ । एदेण कालेण संचिदजीवा वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण समयं पडि उवक्कंतपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेण संचिदउवसमसम्मादिट्ठीहिंतो असंखेज्जगुणा होंति । ण सेसवियप्पा संभवंति, ताणमसंखेज्जगुणसुत्तेण सह विरोहा । एत्थ चोदओ भणदि– आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तंतरेण खइयसम्मादिट्ठीण सोहम्मे जइ संचओ कीरदि पवेसाणुसारिणिग्गमादो मणुस्सेसु असंखेज्जा खइयसम्मादिट्ठिणो पावेंति । अह संखेज्जावलियंतरेण जइ संचओ कीरदि, तो संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिदे एयक्खंडमेत्ता खइयसम्मादिट्ठिणो पावेंति । ण च एवं, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारब्भुवगमादो । तदो दोहि वि पयारेहि दोसो चेय ढुक्कदि त्ति ? ण एस दोसो, खइयसम्मादिट्ठीणं पमाणागमणट्ठं पलिदोवमस्स संखेज्जावलियमेत्तभागहारस्स जुत्तीए उवलंभादो । तं जहा– अट्ठसमयब्भहियछम्मासब्भंतरे जदि संखेज्जुवक्कमणसमया लब्भंति, तो दिवड्ढपलिदोवमब्भंतरे किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए उवक्कमणकालो लब्भदि । तम्मि संखेज्जजीवेहि गुणिदे संखेज्जावलियाहि ओवट्टिदपलिदोवममेत्ता खइयसम्मादिट्ठिणो लब्भंति । तेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो भागहारो त्ति ण घेत्तव्वो । उवक्कमणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागे संते एदं ण घडदि त्ति णासंकणिज्जं, मणुसेसु खइयसम्मादिट्ठीणं असंखेज्जाणमत्थित्तप्पसंगादो । एवं संते सासणादीणमसंखेज्जावलियाहि भागहारेण होदव्वं ? ण एस दोसो, इट्ठत्तादो । ण अण्णेसिमाइरियाणं वक्खाणेण विरुद्धं ति एदस्स वक्खाणस्स अभद्दत्तं, सुत्तेण सह अविरुद्धस्स अभद्दत्तविरोहादो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १७ ॥

कुदो ? दंसणमोहणीयक्खवएणुप्पण्णखइयसम्मत्तादो खओवसमियवेदगसम्मत्तस्स सुट्ठु सुलहत्तुवलंभा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? ओघसोहम्मअसंजदसम्मादिट्ठिभागहारस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १८ ॥

कुदो ? अणुव्वयसहिदखइयसम्मादिट्ठीणमइदुलभत्तादो । ण च तिरिक्खेसु खइयसम्मत्तेण सह संजमासंजमो लब्भदि, तत्थ दंसणमोहणीयक्खवणाभावा । तं पि कुदो णव्वदे ? 'णियमा मणुसगदीए' इदि सुत्तादो । जे वि पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआ मणुसा तिरिक्खेसु खइयसम्मत्तेणुप्पज्जंति, तेसिं ण संजमासंजमो अत्थि, भोगभूमिं मोत्तूण अण्णत्थुप्पत्तीए असंभवादो । तेण खइयसम्मादिट्ठिणो संजदासंजदा संखेज्जा चेय, मणुसपज्जत्ते मोत्तूण अण्णत्थाभावा । अदो चेय भणिस्समाणासंखेज्जरासीहिंतो थोवा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदमेत्तसंखेज्जरूवपडिभागो । कुदो ? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिदे तत्थ एयखंडमेत्ताणमुवसमसम्मत्तेण सह संजदासंजदाणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एसो उवसमसम्मादिट्ठिउक्कस्ससंचयादो वेदगसम्मादिट्ठिउक्कस्ससंचयस्स सांतरस्स गुणगारो, अण्णहा पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो, उवसमसम्मादिट्ठिरासिस्स सांतरस्स कयाइ एगजीवस्स वि उवलंभा । वेदगसम्मादिट्ठिरासी पुण सव्वकालं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो चेय, णिरंतरस्स समाणायव्वयस्स अण्णरूवावत्तिविरोहा ।

पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २१ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तद्धासंचयादो, उवसमसम्मत्तेण सह पाएण संजमं पडिवज्जंताणमभावादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २२ ॥

अंतोमुहुत्तेण संचिदउवसमसम्मादिट्ठीहिंतो देसूणपुव्वकोडीसंचिदखइयसम्मादिट्ठीणं संखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २३ ॥

कुदो ? खइयादो खओवसमियस्स सम्मत्तस्स पाएण संभवा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

एवं तिसु वि अद्धासु ॥ २४ ॥

जथा पमत्तापमत्तसंजदाणं सम्मत्तप्पाबहुअं परूविदं, तहा तिसु उवसामगद्धासु परूवेदव्वं । तं जहा– सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी । खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा । कारणं, दव्वाहियत्तादो । वेदगसम्मादिट्ठी णत्थि, तेण सह उवसमसेडीआरोहणाभावा । उवसंतकसाएसु सम्मत्तप्पाबहुगं किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो, तिसु अद्धासु सम्मत्तप्पाबहुगे अवगदे तत्थ वि तदवगमादो । सुहं गहणट्ठं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चदुसु उवसमाएसु त्ति किण्ण परूविदं ? ण, 'एगजोगणिद्दिट्ठाणमेगदेसो णाणुवट्टदि' त्ति णायादो उवरि चदुण्हमणुउत्तिप्पसंगा। होदु चे ण, पडिजोगीणं चदुण्हमुवसामगाणमभावा।

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २५ ॥

कुदो ? थोवायुपदेसादो संकलिदसंचयस्स वि थोवत्तस्स णायसिद्धत्तादो।

खवा संखेज्जगुणा ॥ २६ ॥

कुदो ? संखेज्जगुणायादो संचउवलंभा। उवसम-खवगाणमेदमप्पाबहुगं पुव्वं परूविदमिदि एत्थ ण परूविदव्वं ? ण, पुव्वमुवसामग-खवगपवेसगाणमप्पाबहुगकथणादो। तदो चेव संचयप्पाबहुगसिद्धीए होदीदि चे सच्चं होदि, जुत्तीदो। जुत्तिवादे अणिउणसत्ताणुग्गहट्ठमेदमप्पाबहुअं पुणो वि परूविदं। खवगसेडीए सम्मत्तप्पाबहुअं किण्ण परूविदं ? ण, तेसिं खइयसम्मत्तं मोत्तूण अण्णसम्मत्ताभावा। तं कुदो णव्वदे ? खवगेसु उवसम-वेदगसम्मादिट्ठिदव्वादिपरूवयसुत्ताणुवलंभा। उवसमा खवा त्ति सद्दा उवसमसम्मत्त-खइयसम्मत्ताणं वाचया ण होंति त्ति भणंताणमभिप्पाएण खइयसम्मत्तस्स अप्पाबहुवपरूवयाणि, पुव्वमपरूविदखवगुवसामगसंचयस्स अप्पाबहुवपरूवयाणि वा दो वि सुत्ताणि त्ति घेत्तव्वं। एवं ओघपरूवणा समत्ता।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ २७ ॥

आदेसवयणं ओघपडिसेहफलं। सेसमग्गणादिपडिसेहट्ठं गदियाणुवादवयणं। सेसगदिपडिसेहणट्ठो णिरयगदिणिद्देसो। सेसगुणट्ठाणपडिसेहट्ठो सासणणिद्देसो। उवरि उच्चमाणगुणट्ठाणदव्वेहिंतो सासणा दव्वपमाणेण थोवा अप्पा इदि उत्तं होदि।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २८ ॥

कुदो ? सासणुवक्कमणकालादो सम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणस्स उवलंभा। को गुणगारो ? संखेज्जसमया। हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिम्हि भागे हिदे गुणगारो आगच्छदि। को हेट्ठिमरासी ? जो थोवो। जो पुण बहुओ सो उवरिमरासी। एदमत्थपदं जहावसरं सव्वत्थ वत्तव्वं।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालादो असंजदसम्मादिट्ठिउवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणस्स संभवुवलंभा, सम्मामिच्छत्तं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिवज्जमाणजीवेहिंतो सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंखेज्जगुणत्तादो वा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिमोवट्टिय गुणगारो साहेयव्वो।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३० ॥

को गुणगारो? असंखेज्जाओ सेडीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तासिं सेढीणं विक्खंभसूची अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि अंगुलवग्गमूलाणि विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जभागमेत्ताणि। तं जधा– असंजदसम्मादिट्ठीहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं गुणेदूण तेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। असंखेज्जाणि अंगुलवग्गमूलाणि गुणगारविक्खंभसूची होदि त्ति कथं णव्वदे? उच्चदे– असंजदसम्मादिट्ठीहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि अंगुलपढमवग्गमूलाणि। कुदो? दव्वविक्खंभसूची घणंगुलविदियवग्गमूलमेत्ता, असंजदसम्मादिट्ठीहि तम्मि घणंगुलविदियवग्गमूले ओवट्टिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि होंति त्ति तंतजुत्तिसिद्धीदो। तत्थ जेत्तियाणि रूवाणि तेत्तियमेत्ता सेडीओ गुणगारो होदि।

असंजदसम्माइट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ३१ ॥

कुदो? अंतोमुहुत्तमेत्तुवसमसम्मत्तद्धाए उवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण संचिदत्तादो उच्चमाणसव्वसम्मादिट्ठिरासीहिंतो उवसमसम्मादिट्ठी थोवा होंति।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

कुदो? सहावदो चेव उवसमसम्मादिट्ठीहिंतो असंखेज्जगुणसरूवेण खइयसम्माइट्ठीणमणाइणिहणमवट्ठाणादो, संखेज्जपलिदोवमब्भंतरे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण संचिदत्तादो असंखेज्जगुणा त्ति वुत्तं होदि। एत्थतणखइयसम्मादिट्ठीणं भागहारो असंखेज्जावलियाओ। कुदो? ओघासंजदसम्मादिट्ठीहिंतो असंखेज्जगुणहीणओघखइयसम्मादिट्ठीणं असंखेज्जदिभागमेत्तादो। ण वासपुधत्तंतरसुत्तेण सह विरोहो, सोहम्मीसाणकप्पं मोत्तूण अण्णत्थ ट्ठिदखइयसम्मादिट्ठीणं वासपुधत्तस्स विउलत्तवाइणो गहणादो। तं तहा घेप्पदि त्ति कुदो णव्वदे? ओघुवसमसम्मादिट्ठीहिंतो ओघखइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा त्ति अप्पाबहुअसुत्तादो।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३३ ॥

कुदो? खइयसम्मत्तादो खओवसमियस्स वेदगसम्मत्तस्स सुलहत्तुवलंभा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कधमेदं णव्वदे? आइरियपरंपरागदुवदेसादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ ३४ ॥

जहा सामण्णणेरइयाणमप्पाबहुअं परूविदं, तहा पढमपुढवीणेरइयाणमप्पाबहुअं परूवेदव्वं। ओघणेरइयअप्पाबहुआलावादो पढमपुढविणेरइयाणमप्पाबहुआलावस्स भेदाभावा। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो, सो जाणिय वत्तव्वो।

विदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ ३५ ॥

विदियादिछण्हं पुढवीणं सासणसम्मादिट्ठिणो बुद्धीए पुध पुध ट्ठविय सव्वत्थोवा त्ति उत्तं। कुदो? छण्हमप्पाबहुआणमेयत्तविरोहादो। सव्वेहिंतो थोवा सव्वत्थोवा। आदि-अंतेसु णेरइएसु णिद्दिट्ठेसु सेसमज्झिमणेरइया सव्वे णिद्दिट्ठा चेय, जावसद्दुच्चारणण्णहाणुववत्तीदो। जावसद्देण सत्तमपुढविणेरइया मज्जादत्ताए ठविदा। विदियपुढवीणेरइयाणमादित्तमावादिदं। आदी अंता च मज्झेण विणा ण होंति त्ति चदुण्हं पुढवीणेरइयाणं मज्झिमत्तं पि जावसद्देणेव परूविदं। तदो पुध पुध पुढवीणमुच्चारणा ण कदा।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

विदियपुढवीआदिसत्तमपुढवीपज्जंतसासणाणमुवरि पुध पुध छपुढवीसम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा, सासणसम्मादिट्ठिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालस्स जुत्तीए संखेज्जगुणत्तुवलंभा। को गुणगारो? संखेज्जा समया।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

कुदो? छप्पुढविसम्मामिच्छादिट्ठिउवक्कमणकालेहिंतो छप्पुढविअसंजदसम्मादिट्ठिउवक्कमणकालाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो, एगसमएण सम्मामिच्छत्तमुवक्कमंतजीवेहिंतो एगसमएण वेदयसम्मत्तमुवक्कमंतजीवाणमसंखेज्जगुणत्तादो वा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कथमेदं णव्वदे? 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति' सुत्तादो। असंखेज्जावलियाहि अंतोमुहुत्तत्तं किण्ण विरुज्झदि त्ति उत्ते ण, ओघअसंजदसम्मादिट्ठिअवहारकालं मोत्तूण सेसगुणपडिवण्णाणमवहारकालस्स कज्जे कारणोवयारेण अंतोमुहुत्तसिद्धीदो।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३८ ॥

छण्हं पुढवीणमसंजदसम्मादिट्ठीहिंतो सेडीबारस-दसम-अट्ठम-छट्ठ-तइय-विदियवग्गमूलोवट्टिदसेडीमेत्तछप्पुढविमिच्छादिट्ठिणो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जगुणा होंति । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेडीपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि सेडीवारसम-दसम-अट्ठम-छट्ठ-तदिय-विदियवग्गमूलाणि । कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिरासिणा गुणिदत्तादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ३९ ॥

सव्वेहि उच्चमाणगुणट्ठाणेहिंतो त्थोवा त्ति सव्वत्थोवा । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तउवक्कमणकालेण संचिदत्तादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४० ॥

एत्थ पुव्वं व तीहि पयारेहि सेचियसरूवेहि गुणयारो परूवेदव्वो । एत्थ खइयसम्मादिट्ठिणो ण परूविदा, हेट्ठिमछप्पुढवीसु तेसिमुववादाभावा, मणुसगइं मुच्चा अण्णत्थ दंसणमोहणीयखवणाभावादो च ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियपज्जत्ततिरिक्ख-पंचिंदिय-जोणिणीसु सव्वत्थोवा संजदासंजदा ॥ ४१ ॥

पयदचउव्विहतिरिक्खेसु जे देसव्वइणो ते तेसिं चेव सेसगुणट्ठाणजीवेहिंतो थोवा त्ति चदुण्हमप्पाबहुआणं मूलपदभेदेण परूविदं । किमट्ठं देसव्वइणो थोवा ? संजमासंजमुवलंभस्स सुदुल्लहत्तादो ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

चउव्विहतिरिक्खाणं जे सासणसम्मादिट्ठिणो ते सग-सगसंजदासंजदेहिंतो असंखेज्जगुणा, संजमासंजमुवलंभादो सासणगुणलंभस्स सुलहत्तुवलंभा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं कथं णव्वदे ? अंतोमुहुत्तसुत्तादो, आइरियपरंपरागदुवदेसादो वा ।

सम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा ॥ ४३ ॥ ॥ ६३७ ॥

चउव्विहतिरिक्खसासणसम्मादिट्ठीहिंतो सग-सगसम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा । कुदो ? सासणुवक्कमणकालादो सम्मामिच्छादिट्ठीणमुवक्कमणकालस्स तंत-जुत्तीए संखेज्जगुणत्तुवलंभा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४४ ॥

चउव्विहतिरिक्खसम्मामिच्छादिट्ठीहिंतो तेसिं चेव असंजदसम्मादिट्ठिणो असंखेज्जगुणा । कुदो ? सम्मामिच्छत्तमुवक्कमंतजीवेहिंतो सम्मत्तमुवक्कमंतजीवाणमसंखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं कुदो णव्वदे ? 'पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेणेत्ति' सुत्तादो, आइरियपरंपरागदुवदेसादो वा ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४५ ॥

चदुण्हं तिरिक्खाणमसंजदसम्मादिट्ठीहिंतो तेसिं चेव मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा असंखेज्जगुणा य । विप्पडिसिद्धमिदं । जदि अणंतगुणा, कथमसंखेज्जगुणत्तं ? अह असंखेज्जगुणा, कधमणंतगुणत्तं; दोण्हमक्कमेण एयत्थ पउत्तिविरोहा ? एत्थ परिहारो उच्चदे– 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो 'तिरिक्खमिच्छादिट्ठी केवडिया, अणंता, सेसतिरिक्खतियमिच्छादिट्ठी असंखेज्जा' इदि सुत्तादो वा एवं संबंधो कीरदे– तिरिक्खमिच्छादिट्ठी अणंतगुणा, सेसतिरिक्खतियमिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा त्ति, अण्णहा दोण्हमुच्चारणाए विहलत्तप्पसंगा । को गुणगारो ? तिरिक्खमिच्छादिट्ठीणमभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि गुणगारो । को पडिभागो ? तिरिक्खअसंजदसम्मादिट्ठिरासी पडिभागो । सेसतिरिक्खतियमिच्छादिट्ठीणं गुणगारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ असंखेज्जसेडीपढमवग्गमूलमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलाणि वा पडिभागो । अधवा सग-सगदव्वाणमसंखेज्जदिभागो गुणगारो । को पडिभागो ? सग-सग-असंजदसम्मादिट्ठी पडिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ४६ ॥

तं जहा– चउव्विहेसु तिरिक्खेसु भणिस्समाणसव्वसम्माइट्ठिदव्वादो उवसमसम्माइट्ठी थोवा, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-उवक्कमणकालब्भंतरे संचिदत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

कुदो ? असंखेज्जवस्साउगेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालेण संचिदत्तादो, अणाइणिहणसरूवेण उवसमसम्मादिट्ठीहिंतो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खइयसम्मादिट्ठीणं आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणत्तेण अवट्ठाणादो वा । आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ४८ ॥

कुदो ? दंसणमोहणीयक्खवएणुप्पण्णखइयसम्मत्ताणं सम्मत्तुप्पत्तीदो पुव्वमेव बद्धतिरिक्खाउआणं पउरं संभवाभावा । ण य लोए सारदव्वाणं दुल्लहत्तमप्पसिद्धं, अस्स-हत्थि-पत्थरादिसु साराणं लोए दुल्लहत्तुवलंभा ।

संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्माइट्ठी ॥ ४९ ॥

कुदो ? देसव्वयाणुविद्धुवसमसम्मत्तस्स दुल्लहत्तादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ५० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एदम्हादो गुणगारादो णव्वदे समयं पडि तदुवचयादो असंखेज्जगुणत्तेणुवचिदा त्ति असंखेज्जगुणत्तं । एत्थ खइयसम्माइट्ठीणमप्पाबहुअं किण्ण परूविदं ? ण, तिरिक्खेसु असंखेज्जवस्साउएसु चेय खइयसम्माइट्ठीण-मुववादुवलंभा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सम्मत्तप्पाबहुअविसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ५१ ॥

सुगममेदं ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ५२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ खइयसम्मादिट्ठीणमप्पाबहुअं णत्थि, सव्वित्थीसु सम्मादिट्ठीणमुववादाभावा, मणुसगइवदिरित्तण्णगईसु दंसणमोहणीयक्खवणाभावाच्च ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ ५३ ॥

तिसु वि मणुसेसु तिण्णि वि उवसमया पवेसणेण अण्णोण्णमवेक्खिय तुल्ला सरिसा, चउवण्णमेत्तत्तादो । ते च्चेय थोवा, उवरिम-गुणट्ठाणजीवावेक्खाए ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तेत्तिया चेव ॥ ५४ ॥

कुदो ? हेट्ठिमगुणट्ठाणे पडिवण्णजीवाणं चेय उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थपज्जाएण परिणामुवलंभा। संचयस्स अप्पाबहुअं किण्ण परूविदं ? ण, पवेसप्पाबहुएण चेय तदवगमादो। जदो संचओ णाम पवेसाहीणो, तदो पवेसप्पाबहुएण सरिसो संचयप्पाबहुओ त्ति पुध ण उत्तो।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ५५ ॥

कुदो ? अट्ठुत्तरसदमेत्तत्तादो।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ५६ ॥

सुगममेदं।

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेय ॥ ५७ ॥

कुदो ? खीणकसायपज्जाएण परिदाणं चेय उत्तरगुणट्ठाणुवक्कमुवलंभा।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ५८ ॥

मणुस-मणुसपज्जत्तएसु ओघसजोगिरासिं ठविय हेट्ठिमरासिणा ओवट्टिय गुणगारो उप्पादेदव्वो। मणुसिणीसु पुण तप्पाओग्गसंखेज्जसजोगिजीवे ट्ठविय अट्ठुत्तरसदं मुच्चा तप्पाओग्गसंखेज्जखीणकसाएहि ओवट्टिय गुणगारो उप्पादेदव्वो।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

मणुस-मणुसपज्जत्ताणं ओघम्हि उत्त-अप्पमत्तरासी चेव होदि। मणुसिणीसु पुण तप्पाओग्गसंखेज्जमेत्तो होदि। सेसं सुगमं।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ६० ॥

एदं पि सुगमं।

संजदासंजदा संखेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

मणुस-मणुसपज्जत्तएसु संजदासंजदा संखेज्जकोडिमेत्ता। मणुसिणीसु पुण तप्पाओग्गसंखेज्जरूवमेत्ता त्ति घेत्तव्वा, वट्टमाणकाले एत्तिया त्ति उवदेसाभावा। सेसं सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

कुदो ? तत्तो संखेज्जगुणकोडिमेत्तत्तादो । मणुसिणीसु तदो संखेज्जगुणा, तप्पाओग्गसंखेज्जरूवमेत्तत्तादो । सेसं सुगमं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

एदं पि सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६४ ॥

कुदो ? सत्तकोडिसयमेत्तत्तादो । सेसं सुगमं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा, मिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

असंखेज्ज-संखेज्जगुणाणमेगत्थ संभवाभावा एवं संबंधो कीरदे– मणुसमिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । कुदो ? सेडीए असंखेज्जदिभागपरिमाणत्तादो । मणुसपज्जत्तमणुसिणी मिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा, संखेज्जरूवपरिमाणत्तादो । सेसं सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ६६ ॥ खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६७ ॥

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ ६९ ॥

खीणदंसणमोहणीयाणं देससंजमे वट्टंताणं बहूणमभावा । खीणदंसणमोहणीया पाएण असंजदा होदूण अच्छंति । ते संजमं पडिवज्जंता पाएण महव्वयाइं चेव पडिवज्जंति, ण देसव्वयाइं ति उत्तं होदि ।

उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७० ॥

खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदेहिंतो उवसमसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणं बहूणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७१ ॥

कुदो ? बहुवायत्तादो, संचयकालस्स बहुत्तादो वा, उवसमसम्मत्तं पेक्खिय वेदगसम्मत्तस्स सुलहत्तादो वा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ७२ ॥

कुदो ? थोवकालसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७३ ॥

बहुकालसंचयादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७४ ॥

खइयसम्मत्तेण संजमं पडिवज्जमाणजीवेहिंतो वेदगसम्मत्तेण संजमं पडिवज्जमाणजीवाणं बहुत्तुवलंभा । मणुसिणीगयविसेसपदुप्पायणट्ठं उवरिमसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, मणुसिणीसु असंजद-संजदासंजद-पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ ७५ ॥

कुदो ? अप्पसत्थवेदोदएण दंसणमोहणीयं खवेंतजीवाणं बहूणमणुवलंभा ।

उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७६ ॥

अप्पसत्थवेदोदएण दंसणमोहणीयं खवेंतजीवेहिंतो अप्पसत्थवेदोदएण चेय दंसणमोहणीयं उवसमेंतजीवाणं मणुसेसु संखेज्जगुणाणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

सुगममेदं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥ ७८ ॥

एदस्सत्थो—मणुस-मणुसपज्जत्तएसु णिरुद्धेसु तिसु अद्धासु उवसमसम्मादिट्ठी थोवा, थोवकारणत्तादो । खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा, बहुकारणादो । मणुसिणीसु पुण खइयसम्मादिट्ठी थोवा, उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा । एत्थ पुव्वुत्तमेव कारणं । उवसामग-खवगाणं संचयस्स अप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि— ॥६४२॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ ७९ ॥

थोवपवेसादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

बहुप्पवेसादो ।

देवगदीए देवेसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ ८१ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ८२ ॥
असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुबोज्झाणि, बहुसो परूविदत्तादो ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ । केत्तियमेत्ताओ ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जपदरंगुलाणि वा पडिभागो । सेसं सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ८५ ॥

सुबोज्झमिदं सुत्तं ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ८६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुबोज्झं ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवीओ
च सत्तमाए पुढवीए भंगो ॥ ८८ ॥

एदेसिमिदि एत्थज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा संबंधाभावा । खइयसम्मादिट्ठीणमभावं पडि साधम्मुवलंभा सत्तमाए पुढवीए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भंगो एदेसिं होदि । अत्थदो पुण विसेसो अत्थि, तं भणिस्सामो–सव्वत्थोवा भवणवासियसासणसम्माइट्ठी । सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । मिच्छाइट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ । केत्तियमेत्ताओ ? घणंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? असंजदसम्मादिट्ठिरासी पडिभागो । सव्वत्थोवा वाणवेंतरसासणसम्मादिट्ठी । सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ । केत्तियमेत्ताओ ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जपदरंगुलाणि वा पडिभागो । एवं जोदिसियाणं पि वत्तव्वं । सग-सगइत्थिवेदाणं सग-सगोघभंगो । सेसं सुगमं ।

सोहम्मीसाण जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा देवगइभंगो ॥ ८९ ॥

जहा देवोघम्हि अप्पाबहुअं उत्तं, तधा एदेसिमप्पाबहुगं वत्तव्वं । तं जहा–सव्वत्थोवा सग-सगकप्पत्था सासणा । सग-सगकप्पसम्मामिच्छादिट्ठिणो संखेज्जगुणा । सग-सगकप्पअसंजदसम्मादिट्ठिणो असंखेज्जगुणा । सग-सगमिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । एत्थ गुणगारो जाणिय वत्तव्वो, एगसरूवत्ताभावा । अणंतरउत्तकप्पेसु असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी । खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति । सेसं सुगमं ।

आणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ ९० ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ९१ ॥

एदं पि सुगमं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ९२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कधमेदं णव्वदे ? दव्वाणिओगद्दारसुत्तादो ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ९३ ॥

कुदो ? मणुसेहिंतो आणदादिसु उप्पज्जमाणमिच्छादिट्ठी पेक्खिय तत्थुप्पज्जमाणसम्मादिट्ठीणं संखेज्जगुणत्तादो । देवलोए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मत्तमिच्छत्ताणि पडिवज्जमाणजीवाणं किण्ण पहाणत्तं ? ण, तेसिं मूलरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ९४ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तकालसंचिदत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ९५ ॥

कुदो ? संखेज्जसागरोवमकालेण संचिदत्तादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । संचयकालपडिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो किण्ण उच्चदे ? ण, एगसमएण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवाणं उवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणाणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ९६ ॥

कुदो ? तत्थुप्पज्जमाणखइयसम्मादिट्ठीहिंतो संखेज्जगुणवेदगसम्मादिट्ठीणं तत्थुप्पत्तिदंसणादो ।

अणुदिसादि जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ९७ ॥

कुदो ? उवसमसेडीचडणोयरणकिरियावावदुवसमसम्मत्तसहिदसंखेज्जसंजदाणमेत्थुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तसंचिदाणमुवलंभा ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ९८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? संखेज्जुवसमसम्मादिट्ठिजीवा पडिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ९९ ॥

कुदो ? खइयसम्मत्तेणुप्पज्जमाणसंजदेहिंतो वेदगसम्मत्तेणुप्पज्जमाणसंजदाणं संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कधं णव्वदे ? कारणाणुसारिकज्जदंसणादो । मणुसेसु खइयसम्मादिट्ठी संजदा थोवा, वेदगसम्मादिट्ठी संजदा संखेज्जगुणा; तेण तेहिंतो देवेसुप्पज्जमाणसंजदा वि तप्पडिभागिया चेवेत्ति घेत्तव्वं । एत्थ सम्मत्तप्पाबहुअं चेव, सेसगुणट्ठाणाभावा । कधमेदं णव्वदे एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ १०० ॥

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १०१ ॥ वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १०२ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । सव्वट्ठसिद्धिम्हि तेत्तीसाउट्ठिदिम्हि असंखेज्जजीवरासी किण्ण होदि ? ण, तत्थ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तंतरम्हि तदसंभवा । जदि एवं, तो आणदादिदेवेसु वासपुधत्तंतरेसु संखेज्जावलिओवट्टिदपलिदोवममेत्ता जीवा किण्ण होंति ? ण, तत्थतणमिच्छादिट्ठिआदीणमवहारकालस्स असंखेज्जावलियत्तं फिट्टिदूण संखेज्जावलियमेत्तअवहारकालप्पसंगा । होदु चे ण, 'आणद-पाणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण । अणुदिसादि जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्मादिट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेणेत्ति' एदेण दव्वसुत्तेण जुत्तीए सिद्धअसंखेज्जावलियभागहारगब्भेण सह विरोहा । एवं गदिमग्गणा समत्ता ।

इंदियाणुवादेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु ओघं । णवरि मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १०३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे—सेसिंदिएसु एगगुणट्ठाणेसु अप्पाबहुअस्साभावपदुप्पायणमुहेण पंचिंदियप्पाबहुअपदुप्पायणट्ठं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तगहणं कदं । जथा ओघम्मि अप्पाबहुअं कदं, तथा एत्थ वि अणूणाहियमप्पाबहुअं कायव्वं । णवरि एत्थ असंजदसम्मादिट्ठीहिंतो मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा त्ति अभणिदूण असंखेज्जगुणा त्ति वत्तव्वं, अणंताणं पंचिंदियाणमभावा । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ । केत्तियमेत्ताओ ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि । अथवा पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तमिच्छादिट्ठीणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-सगअसंजदसम्मादिट्ठिरासी । सत्थाण-सव्वपरत्थाणअप्पाबहुआणि एत्थ किण्ण परूविदाणि ? ण, परत्थाणादो चेव तेसिं दोण्हमवगमा । एवं इंदियमग्गणा सम्मत्ता ।

कायाणुवादेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु ओघं । णवरि मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १०४ ॥

एदस्सत्थो—एगगुणट्ठाण-सेसकाएसु अप्पाबहुअं णत्थि त्ति जाणावणट्ठं तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तगहणं कदं । एदेसु दोसु वि अप्पाबहुअं जथा ओघम्मि कदं, तथा कादव्वं, विसेसाभावा । णवरि सग-सगअसंजदसम्मादिट्ठीहिंतो मिच्छादिट्ठीणं अणंतगुणत्ते

पत्ते तप्पडिसेहट्ठमसंखेज्जगुणा त्ति उत्तं, तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ताणमाणंतियाभावा। को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ। को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि। सेसं सुगमं। एवं कायमग्गणा समत्ता।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु तीसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १०५ ॥

एदेहि उत्तसव्वजोगेहिं सह उवसमसेढिं चढंताणं उक्कस्सेण चउवण्णत्तमत्थि त्ति तुल्लत्तं परूविदं। उवरिमगुणट्ठाणजीवेहिंतो ऊणा त्ति थोवा त्ति परूविदा। एदेसिं वारसण्हमप्पाबहुआणं तिसु अद्धासु ट्ठिदउवसामगा मूलपदं जादा।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ १०६ ॥

सुगममेदं

खवा संखेज्जगुणा ॥ १०७ ॥

अट्ठुत्तरसदपरिमाणत्तादो।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ १०८ ॥

सुगममेदं।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥ १०९ ॥

एदं पि सुगमं। जेसु जोगेसु सजोगिगुणट्ठाणं संभवदि, तेसिं चेवेदमप्पाबहुअं घेत्तव्वं।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ११० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया। ओघम्हि जहा संखेज्जसमयसाहणं कदं, तहा एत्थ वि कायव्वं।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ १११ ॥

एत्थ वि जहा ओघम्हि गुणगारो साहिदो तहा साहेदव्वो। णवरि अप्पिदजोगजीवरासिपमाणं णादूण अप्पाबहुअं कायव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ११२ ॥

सुगममेदं ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ ११३ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ११४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ११५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एत्थ वि कारणं णिहालिय वत्तव्वं ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ११६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । जोगद्धाणं समासं कादूण तेण सामण्णरासिमोवट्टिय अप्पिदजोगद्धाए गुणिदे इच्छिद-इच्छिदरासीओ होंति । अणेण पयारेण सव्वत्थ दव्वपमाणमुप्पाइय अप्पाबहुअं वत्तव्वं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा, मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ ११७ ॥

एत्थ एवं संबंधो कायव्वो । तं जहा—पंचमणजोगि-पंचवचिजोगिअसंजदसम्मादिट्ठीहिंतो तेसिं चेव जोगाणं मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ । केत्तियमेत्ताओ ? सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि । कायजोगि-ओरालियकायजोगिअसंजदसम्मादिट्ठीहिंतो तेसिं चेव जोगाणं मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिं अणंतगुणो, सिद्धेहिं वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि त्ति ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्तापमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ ११८ ॥

एदेसिं गुणट्ठाणाणं जथा ओघम्हि सम्मत्तप्पाबहुअं उत्तं, तथा एत्थ वि अणूणाहियं वत्तव्वं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं तिसु अद्धासु ॥ ११९ ॥

सुगममेदं ।

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ १२० ॥

एदं पि सुगमं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १२१ ॥

अप्पिदजोगउवसामगेहिंतो अप्पिदजोगाणं खवा संखेज्जगुणा । एत्थ पक्खेवसंखेवेण मूलरासिमोवट्टिय अप्पिदपक्खेवेण गुणिय इच्छिदरासिपमाणमुप्पाएदव्वं ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली ॥ १२२ ॥

कवाडे चडणोयरणकिरियावावदचालीसजीवमुवलंभादो थोवा जादा ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १२३ ॥

कुदो ? देव-णेरइय-मणुस्सेहिंतो आगंतूण तिरिक्खमणुसेसुप्पण्णाणं असंजदसम्मादिट्ठीणमोरालियमिस्सम्हि सजोगिकेवलीहिंतो संखेज्जगुणाणमुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १२४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ १२५ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १२६ ॥

दंसणमोहणीयखएणुप्पण्णसद्दहणाणं जीवाणमइदुलहत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १२७ ॥

खओवसमियसम्मत्ताणं जीवाणं बहूणमुवलंभा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

वेउव्वियकायजोगीसु देवगदिभंगो ॥ १२८ ॥

जथा देवगदिम्हि अप्पाबहुअं उत्तं, तथा वेउव्वियकायजोगीसु वत्तव्वं । तं जहा—सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी । सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी । खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ १२९ ॥

कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ कारणं संभालिय वत्तव्वं ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३१ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ १३२ ॥

कुदो ? उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेढिम्हि मदजीवाणमइथोवत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १३३ ॥

उवसामगेहिंतो संखेज्जगुणअसंजदसम्मादिट्ठिआदिगुणट्ठाणेहिंतो संचयसंभवादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३४ ॥

तिरिक्खेहिंतो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवेदगसम्मादिट्ठिजीवाणं देवेसु उववादसंभवादो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १३५ ॥

सुगममेदं ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १३६ ॥

एदं पि सुगमं । उवसमसम्मादिट्ठीणमेत्थ संभवाभावा तेसिमप्पाबहुगं ण कहिदं । किमट्ठं उवसमसम्मत्तेण आहाररिद्धी ण उप्पज्जदि ? उवसमसम्मत्तकालम्हि अइदहरम्हि तदुप्पत्तीए संभवाभावा । ण उवसमसेडिम्हि उवसमसम्मत्तेण आहाररिद्धीओ लब्भइ, तत्थ पमादाभावा । ण च तत्तो ओइण्णाण आहाररिद्धी उवलब्भइ, जत्तियमेत्तेण कालेण आहाररिद्धी उप्पज्जइ, उवसमसम्मत्तस्स तत्तियमेत्तकालमवट्ठाणाभावा ।

कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली ॥ १३७ ॥

कुदो ? पदर-लोगपूरणेसु उक्कस्सेण सट्ठिमेत्तसजोगिकेवलीणमुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १३९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ कारणं णादूण वत्तव्वं ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ १४० ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सवत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ १४१ ॥

कुदो ? उवसमसेडिम्हि उवसमसम्मत्तेण मदसंजदाणं संखेज्जत्तादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १४२ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्मादिट्ठीहिंतो असंखेज्जजीवा विग्गहं किण्ण करेंति त्ति उत्ते उच्चदे– ण ताव देवा खइय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मादिट्ठिणो असंखेज्जा अक्कमेण मरंति, मणुसेसु असंखेज्जखइयसम्मादिट्ठिप्पसंगा । ण च मणुसेसु असंखेज्जा मरंति, तत्थासंखेज्जाणं सम्मादिट्ठीणमभावा । ण तिरिक्खा असंखेज्जा मारणंतियं करेंति, तत्थ आयाणुसारिवयत्तादो । तेण विग्गहगदीए खइयसम्मादिट्ठिणो संखेज्जा चेव होंति । होंता वि उवसमसम्मादिट्ठीहिंतो संखेज्जगुणा, उवसमसम्मादिट्ठिकारणादो खइयसम्मादिट्ठिकारणस्स संखेज्जगुणत्तादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १४३ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? खइयसम्मादिट्ठिरासिगुणिदअसंखेज्जावलियाओ । एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु दोसु वि अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १४४ ॥

दसपरिमाणत्तादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १४५ ॥

बीसपरिमाणत्तादो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ १४६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १४७ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १४८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? संखेज्जरूवगुणिदअसंखेज्जावलियाओ ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १४९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । किं कारणं ? असुहसासणगुणस्स सुलहत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १५० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । किं कारणं ? सासणायादो संखेज्जगुणायसंभवादो ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १५१ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । किं कारणं ? सम्मामिच्छादिट्ठिआयं पेक्खिदूण असंखेज्जगुणायत्तादो ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १५२ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १५३ ॥

संखेज्जरूवमेत्तत्तादो ।

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १५४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? असंखेज्जावलियपडिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १५५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १५६ ॥ उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १५८ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं दोसु अद्धासु ॥ १५९ ॥

सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी, उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा, इच्चेदेण साधम्मादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ १६० ॥

एदं सुत्तं पुणरुत्तं किण्ण होदि ? ण, एत्थ पवेसएहि अहियाराभावा । संचएण एत्थ अहियारो, ण सो पुव्वं परूविदो । तदो ण पुणरुत्तमिदि ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १६१ ॥

सुगममेदं ।

पुरिसवेदएसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १६२ ॥

चउवण्णपमाणत्तादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १६३ ॥

अट्ठुत्तरसदमेत्तत्तादो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ १६४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १६५ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १६६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १६७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १६८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सेसं सुगमं ।

॥६५४॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १६९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १७० ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ १७१ ॥

एदेसिं जथा ओघम्हि सम्मत्तप्पाबहुअं उत्तं तथा वत्तव्वं ।

एवं दोसु अद्धासु ॥ १७२ ॥

सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी, खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा; इच्चेदेहि साधम्मादो ।

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ १७३ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ १७४ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णउंसयवेदएसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १७५ ॥

कुदो ? पंचपरिमाणत्तादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १७६ ॥

कुदो ? दसपरिमाणत्तादो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ १७७ ॥

कुदो ? संचयरासिपडिग्गहादो ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १७८ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १७९ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १८० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १८१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १८२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ १८३ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ १८४ ॥

असंजदसम्मादिट्ठीणं ताव उच्चदे–सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी । खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पढमपुढवीखइयसम्मादिट्ठीणं पहाणत्तब्भुवगमादो । वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । संजदासंजदाणं-सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी । कुदो ? मणुसपज्जत्तणउंसयवेदे मोत्तूण तेसिमण्णत्थाभावा । उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

॥ ६५६ ॥

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ १८५ ॥

कुदो ? अप्पसत्थवेदोदएण बहूणं दंसणमोहणीयखवगाणमभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १८६ ॥ वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १८७ ॥

सुगमाणि दो वि सुत्ताणि ।

एवं दोसु अद्धासु ॥ १८८ ॥

जथा पमत्तापमत्ताणं सम्मत्तप्पाबहुअं परूविदं, तथा दोसु अद्धासु सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी, उवसमसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा त्ति परूवेयव्वं ।

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ १८९ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ १९० ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अवगदवेदएसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १९१ ॥ उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ १९२ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ १९३ ॥

कुदो ? अट्ठुत्तरसदपमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ १९४ ॥ सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ १९५ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

एदं पि सुगमं । एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोहकसाईसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ १९७ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खवा संखेज्जगुणा ॥ १९८ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

णवरि विसेसा, लोभकसाईसु सुहुमसांपराइय-उवसमा विसेसाहिया ॥ १९९ ॥

दोउवसामयपवेसएहिंतो संखेज्जगुणे दोगुणट्ठाणपवेसयक्खवए पेक्खिदूण कधं सुहुमसांपराइयउवसमया विसेसाहिया ? ण एस दोसो, लोभकसाएण खवएसु पविसंतजीवे पेक्खिदूण तेसिं सुहुमसांपराइयउवसामएसु पविसंताणं चउवण्णपरिमाणाणं विसेसाहियत्ता विरोहा । कुदो ? लोभकसाईसु त्ति विसेसणादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ २०० ॥

उवसामगेहिंतो खवगाणं दुगुणत्तुवलंभा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ २०१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २०२ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि । चदुकसायअप्पमत्तसंजदाणमेत्थ संदिट्ठी २ । ३ । ४ । ७ । पमत्तसंजदाणं संदिट्ठी ४ । ६ । ८ । १४ ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ २०३ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २०४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २०५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २०६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ २०७ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ २०८ ॥

एदेसिं जथा ओघम्हि सम्मत्तप्पाबहुअं उत्तं तथा वत्तव्वं, विसेसाभावादो ।

एवं दोसु अद्धासु ॥ २०९ ॥

जथा पमत्तापमत्ताणं सम्मत्तप्पाबहुअं परूविदं, तथा दोसु अद्धासु परूवेदव्वं । णवरि लोभकसायस्स एवं तिसु अद्धासु त्ति वत्तव्वं, जाव सुहुमसांपराइओ त्ति लोभकसायउवलंभा । एवं सुत्ते किण्ण परूविदं ? परूविदमेव पवेसप्पाबहुअसुत्तेण । तेणेव एसो अत्थो णव्वदि त्ति पुध ण परूविदो ।

सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २१० ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २११ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अकसाईसु सव्वत्थोवा उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ॥ २१२ ॥

चउवण्णपरिमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था संखेज्जगुणा ॥ २१३ ॥

अट्ठुत्तरसदपरिमाणत्तादो ।

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ २१४ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ २१५ ॥

कुदो ? अणूणाधियओघरासित्तादो । एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ २१६ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपरिमाणत्तादो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २१७ ॥

एत्थ एवं संबंधो कीरदे–मदि-सुदअण्णाणिसासणेहिंतो मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । विभंगणाणिसासणेहिंतो तेसिं चेव मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि त्ति । अण्णहा विप्पडिसेहत्ताहो ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ २१८ ॥

सुगममेदं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २१९ ॥

एदं पि सुगमं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ २२० ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २२१ ॥

सुगममेदं ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ २२२ ॥

कुदो ? अणूणाहियओघरासित्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Gaṇesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २२३ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ २२४ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपरिमाणत्तादो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २२५ ॥

कुदो ? पहाणीकयदेवअसंजदसम्मादिट्ठिरासित्तादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुगमोघं ॥ २२६ ॥

जथा ओघम्हि एदेसिं सम्मत्तप्पाबहुअं परूविदं, तथा परूवेदव्वमिदि वुत्तं होदि ।

एवं तिसु अद्धासु ॥ २२७ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २२८ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २२९ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

मणपज्जवणाणीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ २३० ॥

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २३१ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २३२ ॥

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २३३ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ २३४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जरूवाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २३५ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २३६ ॥

उवसमसेडीदो ओदिण्णाणं उवसमसेढिं चढमाणाणं वा उवसमसम्मत्तेण थोवाणं जीवाणमुवलंभा ।

खइयसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २३७ ॥

खइयसम्मत्तेण मणपज्जवणाणिमुणिवराणं बहूणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २३८ ॥

सुगममेदं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥ २३९ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २४० ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २४१ ॥

एदाणि तिण्णि सुत्ताणि सुगमाणि, बहुसो परूविदत्तादो ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ २४२ ॥

तुल्ला तत्तिया सद्दा हेउ-हेउमंतभावेण जोजेयव्वा । तं कथं ? जेण तुल्ला, तेण तत्तिया त्ति । केत्तिया ते ? अट्ठुत्तरसयमेत्ता ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ २४३ ॥

पुव्वकोडिकालम्हि संचयं गदा सजोगिकेवलिणो एगसमयपवेसगेहिंतो संखेज्जगुणा, संखेज्जगुणेण कालेण मिलिदत्तादो । एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ २४४ ॥

कुदो ? चउवण्णपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २४५ ॥

सुगममेदं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ २४६ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि । किं कारणं ? जेण णाण-वेदादिसव्ववियप्पेसु उवसमसेडिं चडंतजीवेहिंतो खवगसेढिं चढंत-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवा दुगुणा त्ति आइरिओवदेसादो । एगसमएण तित्थयरा छ खवगसेडिं चडंति । दस पत्तेयबुद्धा चढंति, बोहियबुद्धा अट्ठुत्तरसयमेत्ता, सग्गच्चुआ तत्तिया चेव । उक्कस्सोगाहणाए दोण्णि खवगसेडिं चडंति, जहण्णोगाहणाए चत्तारि, मज्झिमोगाहणाए अट्ठ । पुरिसवेदेण अट्ठुत्तरसयमेत्ता, णउंसयवेदेण दस, इत्थिवेदेण वीसं । एदेसिमद्धमेत्ता उमसमसेढिं चढंति त्ति घेत्तव्वं ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ २४७ ॥

केत्तिया ? अट्ठुत्तरसयमेत्ता । कुदो ? संजमसामण्णविवक्खादो ।

सजोगकेवली अजोगकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ २४८ ॥

सुबोज्झमेदं ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ २४९ ॥

कुदो ? एगसमयादो संचयकालसमूहस्स संखेज्जगुणत्तुवलंभा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ २५० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एत्थ ओघकारणं चिंतिय वत्तव्वं ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २५१ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २५२ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २५३ ॥

कुदो ? पुव्वकोडिसंचयादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २५४ ॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं तिसु अद्धासु ॥ २५५ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २५६ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २५७ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु दोसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ २५८ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २५९ ॥ अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ २६० ॥

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २६१ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २६२ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २६३ ॥

पुव्वकोडिसंचयादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २६४ ॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

एवं दोसु अद्धासु ॥ २६५ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ २६६ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ २६७ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा ॥ २६८ ॥

सुगममेदं ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ २६९ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ २७० ॥

कुदो ? खइयसम्मत्तस्स पउरं संभवाभावा ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २७१ ॥

कुदो ? खओवसमियसम्मत्तस्स पउरं संभवादो । एत्थ उवसमसम्मत्तं णत्थि, तीसं वासेण विणा परिहारसुद्धिसंजमस्स संभवाभावा । ण च तेत्तियकालमुवसमसम्मत्तस्सावट्ठाणमत्थि, जेण परिहारसुद्धिसंजमेण उवसमसम्मत्तस्सुवलद्धी होज्ज ? ण च परिहारसुद्धिसंजमच्छड्डंतस्स उमसमसेडीचडणट्ठं दंसणमोहणीयस्सुवसामण्णं पि संभवइ, जेणुवसमसेडिम्हि दोण्हं पि संजोगो होज्ज ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयउवसमा थोवा ॥ २७२ ॥

कुदो ? चउवण्णपमाणत्तादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ २७३ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

जथाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु अकसाइभंगो ॥ २७४ ॥

जथा अकसाईणमप्पाबहुगं उत्तं तथा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं पि कादव्वमिदि उत्तं होदि ।

संजदासंजदेसु अप्पाबहुअं णत्थि ॥ २७५ ॥

एयपदत्तादो । एत्थ सम्मत्तप्पाबहुअं उच्चदे । तं जहा—

संजदासंजदट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ २७६ ॥

कुदो ? संखेज्जपमाणत्तादो ।

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २७७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २७८ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

असंजदेसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ २७९ ॥

कुदो ? छावलियसंचयादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २८० ॥

कुदो ? संखेज्जावलियसंचयादो ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २८१ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? साभावियादो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ २८२ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? साभावियादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २८३ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २८४ ॥

कुदो ? सागरोवमसंचयादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? साभावियादो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २८५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? साभावियादो । एवं संजममग्गणा समत्ता ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ २८६ ॥

जथा ओघम्हि एदेसिमप्पाबहुगं परूविदं तथा एत्थ वि परूवेदव्वं, विसेसाभावा । विसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवरि चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २८७ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । कुदो ? साभावियादो ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ २८८ ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २८९ ॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा सासणसम्मादिट्ठी ॥ २९० ॥

सुगममेदं ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ २९१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो साभावियादो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ २९३ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा खइयसम्मादिट्ठी ॥ २९४ ॥

कुदो ? मणुसकिण्ह-णीललेस्सियसंखेज्जखइयसम्मादिट्ठिपरिग्गहादो ।

उवसमसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? णेरइएसु किण्हलेस्सिएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तउवसमसम्मादिट्ठीणमुवलंभा ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवरि विसेसो, काउलेस्सिएसु असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ २९७॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९८ ॥

कुदो ? पढमपुढविहिं संचिदखइयसम्मादिट्ठिग्गहणादो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ २९९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा ॥ ३०० ॥

कुदो ? संखेज्जपरिमाणत्तादो ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३०१ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ ३०२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सोहम्मीसाण-सणक्कुमारमाहिंदरासिपरिग्गहादो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३०४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुबोज्झं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३०६ ॥

को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । को पडिभागो ? घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पदरंगुलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ ३०७ ॥

जथा ओघम्हि अप्पाबहुअमेदेसिं उत्तं सम्मत्तं पडि, तथा एत्थ सम्मत्तप्पाबहुगं वत्तव्वमिदि वुत्तं होइ ।

सुक्कलेस्सिएसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ ३०८ ॥

सुगममेदं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३०९ ॥

कुदो ? चउवण्णपमाणत्तादो ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ३१० ॥

अट्ठुत्तरसदपरिमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३११ ॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेव ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगमं ।

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ३१३ ॥

को गुणगारो ? ओघसिद्धो ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ३१४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३१५ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ ३१६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३१७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३१८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३१९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३२० ॥

आरणच्चुदरासिस्स पहाणत्तपरियप्पणादो ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ३२१ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तसंचयादो ।

खइयसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३२२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

वेदगसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३२३ ॥

खओवसमियसम्मत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुगमोघं ॥ ३२४ ॥

जथा एदेसिमोघम्हि सम्मत्तप्पाबहुगं वुत्तं, तहा वत्तव्वं ।

एवं तिसु अद्धासु ॥ ३२५ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ ३२६ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ ३२७ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठी जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥ ३२८ ॥

एत्थ ओघअप्पाबहुअं अणूणाहियं वत्तव्वं ।

अभवसिद्धिएसु अप्पाबहुअं णत्थि ॥ ३२९ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो । एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठीसु ओहिणाणिभंगो ॥ ३३० ॥

जथा ओधिणाणीणमप्पाबहुगं परूविदं, तथा एत्थ परूवेदव्वं । णवरि सजोगि-अजोगिपदाणि वि एत्थ अत्थि, सम्मत्तसामण्णे अहियारादो ।

खइयसम्मादिट्ठीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ ३३१ ॥

तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३३२ ॥

सुगममेदं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ३३३ ॥ खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३३४ ॥

सजोगिकेवली अजोगिकेवली पवेसणेण दो वि तुल्ला तत्तिया चेव ॥ ३३५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ३३६ ॥

गुणगारो ओघसिद्धो, खइयसम्मत्तविरहिदसजोगीणमभावा ।

अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ३३७ ॥

को गुणगारो ? तप्पाओग्गसंखेज्जरूवाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३३८ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३३९ ॥

मणुसगदिं मोत्तूण अण्णत्थ खइयसम्मादिट्ठिसंजदासंजदाणमभावा ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३४० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥ ३४१ ॥

एदस्स अहिप्पाओ—जेण खइयसम्मत्तस्स एदेसु गुणट्ठाणेसु भेदो णत्थि, तेण णत्थि सम्मत्तप्पाबहुगं, एयपयत्तादो । एसो अत्थो एदेण परूविदो होदि ।

वेदगसम्मादिट्ठी सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा ॥ ३४२ ॥

कुदो ? तप्पाओग्गसंखेज्जपमाणत्तादो ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३४३ ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ ३४४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३४५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे वेदगसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥ ३४६ ॥

एत्थ भेदसद्दो अप्पाबहुअपज्जाओ घेत्तव्वो, सद्दाणमणेयत्थत्तादो । वेदगसम्मत्तस्स भेदो अप्पाबहुअं णत्थि त्ति उत्तं होदि ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ ३४७ ॥ उवसंतकसायवीदराग-छदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३४८ ॥ अप्पमत्तसंजदा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ३४९ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३५० ॥

को गुणगारो ? दो रूवाणि ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ ३५१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३५२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे उवसमसम्मत्तस्स भेदो णत्थि ॥ ३५३ ॥

सुगममेदं ।

सासाणसम्मादिट्ठि-सम्मा मिच्छादिट्ठि-मिच्छादिट्ठीणं णत्थि अप्पाबहुअं ॥ ३५४ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो । एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ३५५ ॥

जथा ओघम्हि अप्पाबहुगं परूविदं तहा एत्थ परूवेदव्वं, सण्णित्तं पडि उहयत्थ भेदाभावा । विसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवरि मिच्छादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३५६ ॥

ओघमिदि वुत्ते अणंतगुणत्तं पत्तं, तण्णिरायरणट्ठं असंखेज्जगुणा इदि उत्तं । गुणगारो पदरस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

असण्णीसु णत्थि अप्पाबहुअं ॥ ३५७ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो । एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसु अद्धासु उवसमा पवेसणेण तुल्ला थोवा ॥ ३५८ ॥

चउवण्णपमाणत्तादो ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३५९ ॥

सुगममेदं ।

खवा संखेज्जगुणा ॥ ३६० ॥

अट्ठुत्तरसदपमाणत्तादो ।

खीणकसायवीदरागछदुमत्था तत्तिया चेव ॥ ३६१ ॥

सुगममेदं ।

सजोगिकेवली पवेसणेण तत्तिया चेय ॥ ३६२ ॥ सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जगुणा ॥ ३६३ ॥
अप्पमत्तसंजदा अक्खवा अणुवसमा संखेज्जगुणा ॥ ३६४ ॥ पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३६५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

संजदासंजदा संखेज्जगुणा ॥ ३६६ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३६७ ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३६८ ॥
असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३६९ ॥ मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ ३७० ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदट्ठाणे सम्मत्तप्पाबहुअमोघं ॥ ३७१ ॥
एवं तिसु अद्धासु ॥ ३७२ ॥ सव्वत्थोवा उवसमा ॥ ३७३ ॥ खवा संखेज्जगुणा ॥ ३७४ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली ॥ ३७५ ॥

कुदो ? सट्ठिपमाणत्तादो ।

अजोगिकेवली संखेज्जगुणा ॥ ३७६ ॥

कुदो ? दुरूऊणछस्सदपमाणत्तादो ।

सासणसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३७७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३७८ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

मिच्छादिट्ठी अणंतगुणा ॥ ३७९ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि वि अणंतगुणो, अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे सव्वत्थोवा उवसमसम्मादिट्ठी ॥ ३८० ॥

कुदो ? संखेज्जजीवपमाणत्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

खइयसम्मादिट्ठी संखेज्जगुणा ॥ ३८१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

वेदगसम्मादिट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ ३८२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । एवं आहारमग्गणा समत्ता । एवमप्पाबहुगाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचित-धवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने अप्पाबहुगाणुयोगद्वारप्ररूपणा समाप्ता ।

॥ इति अष्टमो भागः समाप्तः ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

श्री गौतमगणधरस्वामिने नमः

अथ पढमखंडे जीवट्ठाणे

चूलिया

तिहुवणसिरसेहरए भवभयगब्भादु णिग्गदे पणउं । सिद्धे जीवट्ठाणस्समलिणगुणचूलियं वोच्छं ॥

कदि काओ पयडीओ बंधदि, केवडि कालट्ठिदिएहि कम्मेहि सम्मत्तं लब्भदि वा ण लब्भदि वा, केवचिरेण वा कालेण कदि भाए वा करेदि मिच्छत्तं, उवसमणा वा खवणा वा केसु खेत्तेसु कस्स व मूले, केवडियं वा दंसणमोहणीयं कम्मं खवेंतस्स चारित्तं वा संपुण्णं पडिवज्जंतस्स ॥ १ ॥

समत्तेसु अट्ठसु अणियोगद्दारेसु चूलिया किमट्ठमागदा ? पुव्वुत्ताणमट्ठण्णमणिओगद्दाराणं विसमपएसविवरणट्ठमागदा । एत्थ चोदओ भणदि– अट्ठहि अणिओगद्दारेहि परूविदमेव अट्ठं किं चूलिया परूवेदि, अण्णं वा ? जदि तं चेव परूवेदि, तो पुणरुत्तदोसो । विदीए चोद्दसजीवसमासपडिबद्धं वा परूवेदि, अप्पडिबद्धं वा ? पढमवियप्पे 'चोद्दसण्हं जीवसमासाणं परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ चेव अणिओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति' त्ति एदस्स सुत्तस्स अवहारणपदस्स विहलत्तं पसज्जदे । कुदो ? चूलियासण्णिदस्स चोद्दस-जीवसमासपडिबद्धट्ठपरूवयस्स णवमस्स अणिओगद्दारस्सुवलंभा । विदीए चूलिया जीवट्ठाणादो पुधभूदा होज्ज, चोद्दसजीवसमासपडि-बद्धअट्ठे अभणंतस्स जीवट्ठाणववएसविरोहा ? एत्थ परिहारो उच्चदे– ण ताव पुणरुत्तदोसो, अट्ठाणिओगद्दारेहि अपरूविदस्स तत्थ उत्तत्थणिच्छयजणणस्स अट्ठस्स तदो कथंचि पुधभूदस्स तेहि चेव सूचिदस्स परूवणादो । ण च एवकारपदस्स विहलत्तं, चूलियाए ॥६७७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठाणिओगद्दारेसु अंतब्भावादो । कथमंतब्भावो ? अट्ठाणिओगद्दारसूइदत्थपरूवणादो । तं जहा— खेत्त-कालंतरअणिओगद्दारेहि गदिरागदी सूचिदा । सा वि गदिरागदी पयडिसमुक्कित्तणं ट्ठाणसमुक्कित्तणं च सूचेदि, बंधेण विणा सत्तविहपरियट्टीसु परियट्टणाणुववत्तीदो । पयडि-ट्ठाणसमुक्कित्तणेहि जहण्णुक्कस्सट्ठिदीओ सूचिदाओ, सकसायजीवस्स ट्ठिदिबंधेण विणा पयडिबंधाणुववत्तीदो । अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणमिदि वयणेण पढमसम्मत्तग्गहणं सूचिदं, अण्णहा देसूणद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तमिच्छत्तट्ठिदीए संभवाभावा । तेण वि पढमसम्मत्तग्गहणेण तिण्णि महादंडया पढमसम्मत्तग्गहणजोग्गखेत्तिंदिय-तिविहकरण-पज्जत्त-ट्ठिदि-अणुभागखंडयादओ सूचिदा होंति । एदेणेव मोक्खो वि सूचिदो । कुदो ? अद्धपोग्गलपरियट्टादो उवरि आलीढसम्मत्ताणं संसाराभावा । तेण वि मोक्खेण दंसण-चारित्तमोहणीयखवणविहाणं तज्जोग्गखेत्त-गइ-करण-ट्ठिदीओ च सूचिदा भवंति । ण च तेसिं तत्थ णिण्णओ कदो, तत्थ णिण्णये कीरमाणे सिस्साणं मइवाउलत्तप्पसंगा । ण विदियवियप्पो, अणब्भुवगमादो । सा वि चूलिया एयविहा होदि सामण्णविवक्खाए, पज्जवट्ठियणयादो णवविहा । तं जहा— 'कदि पगडीओ बंधदि' त्ति पदे पगडि-ट्ठाणसमुक्कित्तणसण्णिदाओ दोण्णि चूलियाओ होंति । 'काओ पयडीओ बंधदि' त्ति पदम्हि पढम-विदिय-तदियदंडय-सण्णिदाओ तिण्णि चूलियाओ ट्ठिदाओ । 'केवडिकालट्ठिदिएहि कम्मेहि सम्मत्तं लब्भदि वा ण लब्भदि वा' त्ति पदम्हि जहण्णुक्कस्सट्ठिदिसण्णिदाओ दोण्णि चूलियाओ अवट्ठिदाओ । 'केवचिरेण कालेण कदि भाए वा करेदि मिच्छत्तं, उवसमणा वा खवणा वा केसु व खेत्तेसु कस्स व मूले, केवडियं वा दंसणमोहणीयं कम्मं खवेंतस्स चारित्तं वा संपुण्णं पडिवज्जंतस्स' एदेसु पदेसु अट्ठमी चूलिया । 'वा संपुण्णं' त्ति 'वा' सद्दम्हि गदिरागदी णाम णवमी चूलिया । एवं णव चूलिया होंति । अवांतरभेएण अणेयविहाओ वा । एदासिं णवण्हं चूलियाणमट्ठपरूवणट्ठमुवरिमसुत्तं भणदि—

कदि काओ पगडीओ बंधदि त्ति जं पदं तस्स विहासा ॥ २ ॥

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो पढममुद्दिट्ठस्स पढमं चेव णिद्देसो होदि त्ति णव्वदे । तदो णाढवेदव्वमिदं सुत्तमिदि ? ण एस दोसो, एदम्हि पदे इमाओ चूलियाओ अवट्ठिदाओ, इमाओ वि ण ट्ठिदाओ त्ति जाणावणट्ठं, 'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायस्स अत्थित्तपरूवणट्ठं च तदारंभादो । विविहा भासा विहासा, परूवणा णिरूवणा वक्खाणमिदि एयट्ठो ।

इदाणिं पगडिसमुक्कित्तणं कस्सामो ॥ ३ ॥

पगडीणं समुक्कित्तणं पगडिसमुक्कित्तणं, पयडिसरूवणिरूवणमिदि जं उत्तं होदि । इदाणिं संपहि, कस्सामो भणिस्सामो त्ति एयट्ठो । पढमं पयडिसमुक्कित्तणं चेव किमट्ठं उच्चदे ? ण, पयडीए अणवगदाए ट्ठाणसमुक्कित्तणादीणमवगमोवायाभावा । ण च अवय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विणि अणवगदे अवयवा अवगंतुं सक्किज्जंते, अण्णत्थ तहाणुवलंभा । तम्हा पयडिसमुक्कित्तणमेव पुव्वं परूविज्जदे । तं पि पयडिसमुक्कित्तणं मूलुत्तरपयडिसमुक्कित्तणभेएण दुविहं होइ । संगहियासेसवियप्पा दव्वट्ठियणयणिबंधणा मूलपयडी णाम । पुधप्पिदावयवा पज्जवट्ठियणयणिबंधणा उत्तरपयडी णाम । तत्थ मूलपयडिसमुक्कित्तणं पढमं किमट्ठं कीरदे ? ण एस दोसो, मूलपयडीए संगहिदासेसुत्तरपयडीए परूविदाए उत्तरपयडिपरूवणुववत्तीदो ।

तं जहा ॥ ४ ॥

पुच्छासुत्तमेदं किमट्ठं वुच्चदे ? सुत्तकत्तारस्स पमाणत्तपरूवणादो सुत्तस्स पमाणत्तपरूवणट्ठं ।

णाणावरणीयं ॥ ५ ॥

णाणमवबोहो अवगमो परिच्छेदो इदि एयट्ठो । तमावारेदि त्ति णाणावरणीयं कम्मं । णाणविणासयमिदि किण्ण उच्चदे ? ण, जीवलक्खणाणं णाण-दंसणाणं विणासाभावा । विणासे वा जीवस्स वि विणासो होज्ज, लक्खणरहिय-लक्खाणुवलंभा । णाणस्स विणासाभावे सव्वजीवाणं णाणत्थित्तं पसज्जदे चे, होदु णाम विरोहाभावा; 'अक्खरस्स अणंतभाओ णिच्चुग्घाडियओ' इदि सुत्ताणुकूलत्तादो वा । ण सव्वावयवेहि णाणस्सुवलंभो होदु त्ति वोत्तुं जुत्तं, आवरिदणाणभागाणमुवलंभविरोहा । आवरिदणाणभागा सावरणे जीवे किमत्थि आहो णत्थि त्ति । जदि अत्थि, ण ते आवरिदा, सव्वप्पणा संताणमावरिदत्तविरोहा । अह णत्थि, तो वि णावरणं, आवरिज्जमाणाणमभावे आवरणस्सत्थित्तविरोहा इदि ? एत्थ परिहारो उच्चदे- दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे आवरिदणाणभागा सावरणे वि जीवे अत्थि, जीवदव्वादो पुधभूदणाणाभावा, विज्जमाणणाणभागादो आवरिदणाणभागाणमभेदादो वा । आवरिदाणावरिदाणं कथमेगत्तमिदि चे ण, राहु-मेहेहि आवरिदाणावरिदसुज्जिंदुमंडलभागाणमेगत्तुवलंभा । एवं संते आवरिज्जावारयभावो जुज्जदे, अण्णहा तस्साणुवलंभप्पसंगादो । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे आवरिज्जमाणणाणभागा णत्थि, तेसिं तदुवलंभाभावा । ण च एदं सुत्तं पज्जवट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदं, तदावरिज्जमाणावारयववहाराभावा । किंतु दव्वट्ठियणयमवलंबिय सुत्तमिदमवट्ठिदं, तेणेत्थ आवरिज्जमाणावारयभावो ण विरुज्झदे । किमट्ठं णाणमावरिज्जमाणमिदि ? उच्चदे- अप्पणो विरोहिदव्वसण्णिहाणे संते वि जं णिम्मूलदो ण विणस्सदि, तमावरिज्जमाणं, इदरं चावारयं । ण च णाणस्स विरोहिकम्मदव्वसण्णिहाणे संते णिम्मूलविणासो अत्थि, जीवविणासप्पसंगा । तदो णाणमावरिज्जमाणं, कम्मदव्वं चावारयमिदि उत्तं । कथं पोग्गलेण जीवादो पुधभूदेण जीवलक्खणं णाणं विणासिज्जदि ? ण एस दोसो,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जीवादो पुधभूदाणं घड-पड-त्थंभंधयारादीणं जीवलक्खणणाणविणासयाणमुवलंभा । णाणावारओ पोग्गलक्खंधो पवाहसरूवेण अणाइ-बंधणबद्धो णाणावरणीयमिदि भण्णदे ।

दंसणावरणीयं ॥ ६ ॥

अप्पविसओ उवजोगो दंसणं । ण णाणमेदं, तस्स बज्झट्ठविसयत्तादो । ण च बज्झंतरंगविसयाणमेयत्तं, विरोहा । ण च णाणमेव दुसत्तिसहियं, पज्जयस्स पज्जयाभावा । णाण-दंसणलक्खणो जीवो त्ति तदो इच्छिदव्वो । एदं च दंसणमावरिज्जं, विरोहिदव्वसण्णिहाणे संते वि एदस्स णिम्मूलदो विणासाभावा । भावे वा जीवस्स वि विणासो पसज्जदे, लक्खणविणासे लक्खस्सावट्ठाणविरोहा । ण च णाण-दंसणाणं जीवलक्खणत्तमसिद्धं, दोण्हमभावे जीवदव्वस्सेव अभावप्पसंगादो । होदु चे ण, पमाणाभावे पमेयाणं सेसदव्वाणं पि अभावा-वत्तीदो । उत्तं च—एक्को मे सस्सदो अप्पा णाण-दंसणलक्खणो । सेसा दु बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १ ॥ असरीरा जीव-घणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य । सायारमणायारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ २ ॥ एदं दंसणमावारेदि त्ति दंसणावरणीयं । जो पोग्ग-लक्खंधो मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहि कम्मसरूवेण परिणदो जीवसमवेदो दंसणगुणपडिबंधओ सो दंसणावरणीयमिदि घेत्तव्वो ।

वेदणीयं ॥ ७ ॥

वेद्यत इति वेदनीयम् । एदीए उप्पत्तीए सव्वकम्माणं वेदणीयत्तं पसज्जदे ? ण एस दोसो, रूढिवसेण कुसलसद्दो व्व अप्पिद-पोग्गलपुंजे चेव वेदणीयसद्दप्पउत्तीदो । अथवा वेदयतीति वेदनीयम् । जीवस्स सुह-दुक्खाणुहवणणिबंधणो पोग्गलक्खंधो मिच्छ-त्तादिपच्चयवसेण कम्मपज्जयपरिणदो जीवसमवेदो वेदणीयमिदि भण्णदे । तस्सत्थित्तं कुदोवगम्मदे ? सुख-दुक्खकज्जण्णहाणुवव-त्तीदो । ण कज्जं कारणणिरवेक्खमुप्पज्जदे, अण्णत्थ तहाणुवलंभा । ण जीवो दुक्खसहावो, जीवलक्खणणाण-दंसणविरोहिदुक्खस्स जीवसहावत्तविरोहा ।

मोहणीयं ॥ ८ ॥

मुह्यत इति मोहनीयम् । एवं संते जीवस्स मोहणीयत्तं पसज्जदि त्ति णासंकणिज्जं, जीवादो अभिण्णम्हि पोग्गलदव्वे कम्मसण्णिदे उवयारेण कत्तारत्तमारोविय तथा उत्तीदो । अथवा मोहयतीति मोहनीयम् । एवं संते धत्तूर-सुरा-कलत्तादीणं पि मोहणीयत्तं पसज्ज-दीदि चे ण, कम्मदव्वमोहणीयेण एत्थ अहियारादो । ण कम्माहियारे धत्तूर-सुरा-कलत्तादीणं संभवो अत्थि । किं कम्मं ? पोग्गल-दव्वं । जदि एवं, तो सव्वपोग्गलाणं कम्मत्तं पसज्जदे ? ण, मिच्छत्तादिपच्चएहि जीवे संबद्धाणं जाइ-जरा-मरणादिकज्जकरणे समत्थाणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोग्गलाणं कम्मत्तब्भुवगमादो । उत्तं च—जीवपरिणामहेदू कम्मत्तं पोग्गला परिणमंति । ण य णाणपरिणदो पुण जीवो कम्मं समादियदि ॥ ३ ॥ जारिसओ परिणामो तारिसओ चेव कम्मबंधो वि । वत्थूसु विसम-समसण्णिदेसु अज्झप्पजोएण ॥ ४ ॥ मिच्छत्तादिपच्चएहि कोह-माण-माया-लोहादिकज्जकारित्तेण परिणदा पोग्गला जीवेण सह संबद्धा मोहणीयसण्णिदा होंति त्ति जं उत्तं होदि ।

आउअं ॥ ९ ॥

एति भवधारणं प्रति इत्यायुः । जे पोग्गला मिच्छत्तादिकारणेहि णिरयादिभवधारणसत्तिपरिणदा जीवणिविट्ठा ते आउअसण्णिदा होंति । तस्स आउअस्स अत्थित्तं कुदोवगम्मदे ? देहट्ठिदिअण्णहाणुववत्तीदो ।

णामं ॥ १० ॥

नाना मिनोति निर्वर्त्तयतीति नाम । जे पोग्गला सरीर-संठाण-संघडण-वण्ण-गंधादिकज्जकारया जीवणिविट्ठा ते णामसण्णिदा होंति त्ति उत्तं होदि । तस्स णामकम्मस्स अत्थित्तं कुदोवगम्मदे ? सरीर-संठाण-वण्णादिकज्जभेदण्णहाणुववत्तीदो ।

गोदं ॥ ११ ॥

गमयत्युच्च-नीचकुलमिति गोत्रम् । उच्च-णीचकुलेसु उप्पादओ पोग्गलक्खंधो मिच्छत्तादिपच्चएहि जीवसंबद्धो गोदमिदि उच्चदे ।

अंतरायं चेदि ॥ १२ ॥

अन्तरमेति गच्छति द्वयोरित्यन्तरायः । दाण-लाह-भोगोवभोगादिसु विग्घकरणक्खमो पोग्गलक्खंधो सकारणेहि जीवसमवेदो अंतरायमिदि भण्णदे । एत्तियाओ चेव मूलपयडीओ होंति त्ति जाणावणट्ठमिदि सद्दो पउत्तो । एत्थ उववुज्जंतओ सिलोगो—हेतावेवम्प्रकारादौ व्यवच्छेदे विपर्यये । प्रादुर्भावे समाप्तौ च इतिशब्दं विदुर्बुधाः ॥ ५ ॥ तदो अट्ठेव मूलपयडीओ । तं कुदो णव्वदे ? अट्ठकम्मजणिदकज्जेहिंतो पुधभूदकज्जस्स अणुवलंभादो । एदाहि अट्ठहि पयडीहि अणंताणंतपरमाणुसमुदयसमागमेणुप्पण्णाहि एगेगजीवपदेसम्मि संबद्धाणंतपरमाणूहि अणादिसरूवेण संबद्धो अमुत्तो वि मुत्तत्तमुवगओ आइद्धकुलालचक्कं व सत्तसु संसारेसु जीवो संसरदि त्ति घेत्तव्वं । मेहाविजीवाणुग्गहट्ठं संगहणयमवलंबिय पयडिसमुक्कित्तणं काऊण संपहि मंदबुद्धिजणाणुग्गहट्ठं ववहारणयपज्जयपरिणदो आइरिओ उवरिमसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ ॥ १३ ॥ आभिणिबोहियणाणावरणीयं सुदणाणावरणीयं ओहिणाणावरणीयं मणपज्जवणाणावरणीयं केवलणाणावरणीयं चेदि ॥ १४ ॥

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ त्ति एदं ण वत्तव्वं, पंचण्हं पयडीणं पुध णामणिद्देसेणेव णाणावरणीयस्स पयडिपंचयत्तब्भुवगमादो ? ण एस दोसो, दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं णाणावरणीयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ त्ति पदुप्पायणादो। एवं दोसो होज्ज, जदि दोण्णि वि सुत्ताणि एयणयणिबंधणाणि। किंतु पुव्विल्लं दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहकारि, पच्छिल्लं पि पज्जवट्ठियणयसिस्साणुग्गहकारि। तदो दो वि सुत्ताणि सहलाणि त्ति। अहिमुह-णियमियअत्थावबोहो आभिणिबोहो। थूल-वट्टमाण-अणंतरिदअत्था अहिमुहा। चक्खिंदिए रूवं णियमिदं, सोदिंदिए सद्दो, घाणिंदिए गंधो, जिब्भिंदिए रसो, फासिंदिए फासो, णोइंदिए दिट्ठ-सुदाणुभूदत्था णियमिदा। अहिमुह-णियमिदट्ठेसु जो बोधो सो अहिणिबोधो। अहिणिबोध एव आहिणिबोधियणाणं। एत्थ णाणं विसेसिज्जमाणं, तस्स सामण्णरूवत्तादो। आहिणिबोहियं विसेसणं, अण्णेहिंतो ववच्छेदकारित्तादो। तेण ण पुणरुत्तदोसो ढुक्कदे। तं च आहिणिबोहियणाणं चउव्विहं, अवग्गहो ईहा अवाओ धारणा चेदि। विषय-विषयिसंपातानन्तरमाद्यं ग्रहणमवग्रहः। विसओ बाहिरो अट्ठो, विसई इंदियाणि। तेसिं दोण्हं पि संपादो णाम णाणजणणजोग्गावत्था, तदणंतरमुप्पण्णं णाणमवग्गहो। सो वि अवग्गहो दुविहो, अत्थावग्गहो वंजणावग्गहो चेदि। तत्थ अप्पत्तत्थग्गहणमत्थावग्गहो, जधा चक्खिंदिएण। पत्तत्थग्गहणं वंजणावग्गहो, जधा फस्सिंदिएण। अवगृहीतस्यार्थस्य विशेषाकांक्षणमीहा। जो अवग्गहेण गहिदो अत्थो, तस्स विसेसाकंक्खणमीहा। जधा कं पि दट्ठूण किमेसो भव्वो अभव्वो त्ति विसेसपरिक्खा सा ईहा। णेहा संदेहरूवा, विचारबुद्धीदो संदेहविणासुवलंभा। संदेहादो उवरिमा, अवायादो ओरिमा, विच्चाले पउत्ता विचारबुद्धी ईहा णाम। वितर्कः श्रुतमिति वचनादीहा वियक्करूवत्तादो सुदणाणमिदि चे ण एस दोसो, ओग्गहेण पडिग्गहिदत्थालंबणो वियक्को ईहा, भिण्णत्थालंबणो वियक्को सुदणाणमिदि अब्भुवगमादो। ईहितस्यार्थस्य संदेहापोहनमवायः। पुव्वं किं भव्वो, किमेसो अभव्वो त्ति जो संदेहबुद्धीए विसईकओ जीवो सो एसो अभव्वो ण होदि, भव्वो चेय; भव्वत्ताविणाभाविसम्मणाण-सम्मद्दंसण-चरणाणमुवलंभादो, इदि उप्पण्णपच्चओ अवाओ णाम। लिंगजत्तादो अवायो सुदणाणमिदि णासंकणिज्जं, अवग्गहिदत्थादो पुधभूदत्थालंबणाए लिंगजणिदबुद्धीए णिण्णयरूवाए सुदणाणत्तब्भुवगमादो। अवाओ पुण अवगहिदत्थविसओ ईहापच्छायदो, तेण सुदणाणं ण होदि। अवग्गहावायाणं णिण्णयत्तं पडि भेदाभावा एयत्तं किण्ण होदि इदि चे, होदु तेण एयत्तं, किंतु अवग्गहो णाम विसयविसइसण्णिवायाणंतरभावी पढमो बोधविसेसो, अवाओ पुण ईहाणंतरकालभावी उप्पण्णसंदेहा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भावरूवो, तेण ण दोण्हमेयत्तं । निर्णीतस्यार्थस्य कालान्तरे अविस्मृतिर्धारणा । जत्तो णाणादो कालंतरे वि अविस्सरणहेदुभूदो जीवे संसकारो उप्पज्जदि तं णाणं धारणा णाम । ण च ओग्गहादि चउण्हं पि णाणाणं सव्वत्थ कमेण उप्पत्ती, तहाणुवलंभा । तदो कहिं पि ओग्गहो चेय, कहिं पि ओग्गहो ईहा य दो चेय, कहिं पि ओग्गहो ईहा अवाओ तिण्णि वि होंति, कहिं पि ओग्गहो ईहा अवाओ धारणा चेदि चत्तारि वि होंति । तत्र बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवसेतरभेदेनैकैको द्वादशविधः । तत्थ बहूणमेगवारेण ग्गहणं बहुअवग्गहो । ण च एसो अप्पसिद्धो, अक्कमेण जोग्गदेसट्ठिदपंचण्हमंगुलीणमुवलंभा । एक्कस्सेव दुवलंभो एयावग्गहो । अणेयंतवत्थुवलंभा एयावग्गहो णत्थि । अह अत्थि, एयंतसिद्धी पसज्जदे एयंतग्गाहयपमाणस्सुवलंभा इदि चे, ण एस दोसो, एयवत्थुग्गाहओ अवबोहो एयावग्गहो उच्चदि । ण च विहि-पडिसेह-धम्माणं वत्थुत्तमत्थि जेण तत्थ अणेयावग्गहो होज्ज । किंतु विहि-पडिसेहारद्धमेयं वत्थू, तस्स उवलंभो एयावग्गहो । अणेयवत्थुविसओ अवबोहो अणेयावग्गहो । पडिहासो पुण सव्वो अणेयंतविओ चेय, विहि-पडिसेहाणमण्णदरस्सेव अणुवलंभा । बहुपयाराणं हय-हत्थि-गो-महिसादीणं गहणं बहुविहावग्गहो । एयपयारग्गहणमेयविहावग्गहो । एय-एयविहाणं को विसेसो ? उच्चदे— एगस्स गहणं एयावग्गहो, एगजाईए ट्ठिदएयस्स बहूणं वा गहणमेयविहावग्गहो । आसुग्गहणं खिप्पावग्गहो, सणिग्गहणमखिप्पावग्गहो । अहिमुहअत्थग्गहणं णिसियावग्गहो, अणहिमुहअत्थग्गहणं अणिसियावग्गहो । अहवा उवमाणोवमेयभावेण गहणं णिसियावग्गहो, जहा कमलदलणयणा त्ति । तेण विणा गहणं अणिस्सियावग्गहो । णियमियगुणविसिट्ठअत्थग्गहणं उत्तावग्गहो । जधा चक्खिंदिएण धवलत्थग्गहणं, घाणिंदिएण सुअंधदव्वग्गहणमिच्चादि । अणियमियगुणविसिट्ठदव्वग्गहणमउत्तावग्गहो जहा चक्खिंदिएण गुडादीणं रसस्स ग्गहणं, घाणिंदिएण दहियादीणं रसग्गहणमिच्चादि । णायमणिस्सिदस्स अंतो पददि, एयवत्थुग्गहणकाले चेय तदो पुधभूदवत्थुस्स, ओवरिमभागग्गहणकाले चेय परभागस्स य, अंगुलिगहणकाले चेय देवदत्तस्स य गहणस्स अणिस्सिदववदेसादो । णिच्चत्ताए गहणं धुवावग्गहो, तव्विवरीयगहणमद्धुवावग्गहो । एवमीहादीणं पि बारस भेदा परूवेदव्वा । चक्खिंदियणोइंदियाणं अट्ठेतालीस आभिणिबोहियणाणवियप्पा होंति, एदेसिं वंजणावग्गहाभावा । सेसिंदियाणं सट्ठी मदिणाणवियप्पा, तत्थ अत्थ-वंजणोग्गहाणं दोण्हं पि संभवादो । एवंविधस्स णाणस्स जमावरणं तमाभिणिबोहियणाणावरणीयं । सुदणाणस्स आवरणीयं सुदणाणावरणीयं । तत्थ सुदणाणं णाम इंदिएहि गहिदत्थादो तदो पुधभूदत्थग्गहणं, जहा सद्दादो घडादीणमुवलंभो, धूमादो अग्गिस्सुवलंभो वा । तं च सुदणाणं वीसदिविधं । तं जथा— पज्जाओ पज्जायसमासो अक्खरं अक्खरसमासो पदं पदसमासो संघाओ संघायसमासो पडिवत्ती पडिवत्तिसमासो अणियोगो अणियोगसमासो पाहुडपाहुडो पाहुडपाहुडसमासो पाहुडो पाहुडसमासो वत्थू वत्थुसमासो पुव्वं पुव्वसमासो चेदि । खरणाभावा अक्खरं केवलणाणं । तस्स अणंतिमभागो पज्जाओ णाम

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मदिणाणं । तं च केवलणाणं व णिरावरणमक्खरं च । एदम्हादो सुहुमणिगोदलद्धिअक्खरादो जमुप्पज्जइ सुदणाणं तं पि पज्जाओ उच्चदि, कज्जे कारणोवयारादो । तदो अणंतभागब्भहियं सुदणाणं पज्जयसमासो उच्चइ । अणंतभागवड्ढि असंखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जगुणवड्ढी असंखेज्जगुणवड्ढी अणंतगुणवड्ढी त्ति एसा एका छवड्ढी । एरिसाओ असंखेज्जलोगमेत्तीओ छवड्ढीओ गंतूण पज्जायसमाससुदणाणस्स अपच्छिमो वियप्पो होदि । तमणंतेहि रूवेहि गुणिदे अक्खरं णाम सुदणाणं होदि । कथमेदस्स अक्खरववएसो ? ण, दव्वसुदपडिबद्धेयक्खरुप्पण्णस्स उवयारेण अक्खरववएसादो । एदस्सुवरि अक्खरवड्ढी चेव होदि, अवराओ वड्ढीओ णत्थि त्ति आइरियपरंपरागदुवदेसादो । केइं पुण आइरिया अक्खरसुदणाणं पि छव्विहाए वड्ढीए वड्ढदि त्ति भणंति, णेदं घडदे, सयलसुदणाणस्स संखेज्जदिभागादो अक्खरणाणादो उवरि छवड्ढीणं संभवाभावा । अक्खरसुदणाणादो उवरिमाणं पदसुदणाणादो हेट्ठिमाणं संखेज्जाणं सुदणाणवियप्पाणमक्खरसमासो त्ति सण्णा । तदो एगक्खरणाणे वड्ढिदे पदं णाम सुदणाणं होदि । कुदो एदस्स पदसण्णा ? सोलहसयचोत्तीसकोडीओ तेसीदिलक्खाअट्ठहत्तरिसदअट्ठासीदिअक्खरे च घेत्तूण एगं दव्वसुदपदं होदि । एदेहिंतो उप्पण्णभावसुदं पि उवयारेण पदं ति उच्चदि । एदस्स पदसुदणाणस्सुवरि एगक्खरसुदणाणे वड्ढिदे पदसमासो णाम सुदणाणं होदि । एवमेगक्खरादिकमेण पदसमाससुदणाणं वड्ढमाणं गच्छदि जाव संघाओ त्ति । संखेज्जेहि पदेहि संघाओ णाम सुदणाणं होदि । चउहि गईहि मग्गणा होदि । तत्थ णिरयगईए जत्तिएहि पदेहि एगपुढवी परूविज्जदि, तत्तियाणं पदाणं तेहिंतो उप्पण्णसुदणाणस्स य संघायसण्णा त्ति उत्तं होदि । एवं सव्वगईओ सव्वमग्गणाओ च अस्सिदूण वत्तव्वं । एदस्सुवरि अक्खरसुदणाणे वड्ढिदे संघायसमासो णाम सुदणाणं होदि । एवं संघायसमासो वड्ढमाणो गच्छदि जाव एयअक्खरसुदणाणेणूणपडिवत्तिसुदणाणेत्ति । जत्तिएहि पदेहि एयगइ-इंदिय-काय-जोगादओ परूविज्जंति, तेसिं पडिवत्तीसण्णा । पडिवत्तीए उवरि एगक्खरसुदणाणे वड्ढिदे पडिवत्तिसमासो णाम सुदणाणं होदि । एवं पडिवत्तिसमासो चेव होदूण गच्छदि जाव एगक्खरेणूणअणियोगद्दारसुदणाणेत्ति । जत्तिएहि पदेहि चोद्दसमग्गणाणं पडिबद्धेहि जो अत्थो जाणिज्जदि तेसिं पदाणं तत्थुप्पण्णणाणस्स य अणिओगो त्ति सण्णा । तस्सुवरि एगक्खरसुदणाणे वड्ढिदे अणियोगसमासो होदि । एवमणियोगसमाससुदणाणं एगेगक्खरुत्तरवड्ढीए वड्ढमाणं गच्छदि जाव एगक्खरेणूणपाहुडपाहुडेत्ति । तस्सुवरि एगक्खरसुदणाणे वड्ढिदे पाहुडपाहुडं होदि । संखेज्जेहि अणियोगसुदणाणेहि एगं पाहुडपाहुडं णाम सुदणाणं होदि । तस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे पाहुडपाहुडसमासो होदि । एदस्सुवरि एगक्खरादिवड्ढिकमेण पाहुडपाहुडसमासो गच्छदि जावेगक्खरेणूणपाहुडेत्ति । तस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे पाहुडो होदि । एदस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे पाहुडसमासो होदि । एवमेगेगक्खरवड्ढिकमेण पाहुडसमासो गच्छदि जाव एगक्खरेणूणवीसदिमपाहुडो त्ति । एदस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे वत्थुसुदणाणं होदि । तस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे वत्थुसमासो होदि । एवं वत्थुसमासो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गच्छदि जाव एगक्खरेणूण-अंतिमवत्थु त्ति। एदस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे पुव्वं णाम सुदणाणं होदि। तस्सुवरि एगक्खरे वड्ढिदे पुव्वसमासो होदि। एवं पुव्वसमासो गच्छदि जाव लोगबिंदुसारचरिमक्खरं ति। एदस्स सुदणाणस्स आवरणं सुदणाणावरणीयं। अवाग्धानादवधिः, अवधिश्च स ज्ञानं च तत् अवधिज्ञानम्। अथवा अवधिर्मर्यादा, अवधेर्ज्ञानमवधिज्ञानम्। तं च ओहिणाणं तिविहं, देसोही परमोही सव्वोही चेदि। एदेसिं सरूवपरूवणमुवरि कस्सामो। मदि-सुदणाणेहिंतो एदस्स सावहियत्तेण भेदाभावा पुधपरूवणं णिरत्थयमिदि चे, ण एस दोसो, मदि-सुदणाणाणि परोक्खाणि, ओहिणाणं पुण पच्चक्खं; तेण तेहिंतो तस्स भेदुवलंभा। मदिणाणं पि पच्चक्खं दिस्सदीदि चे ण, मदिणाणेण पच्चक्खं वत्थुस्स अणुवलंभा। जो पच्चक्खमुवलब्भइ, सो वत्थुस्स एगदेसो त्ति वत्थू ण होदि। जो वि वत्थू सो वि ण पच्चक्खेण उवलब्भदि, तस्स पच्चक्खापच्चक्खपरोक्खमइणाणविसयत्तादो। तदो मदिणाणं पच्चक्खेण ण वत्थुपरिच्छेदयं। जदि एवं तो ओहिणाणस्स वि पच्चक्खपरोक्खत्तं पसज्जदे, तिकालगोयराणंतपज्जाएहि उवचियं वत्थू, ओहिणाणस्स पच्चक्खेण तारिसवत्थुपरिच्छेदणसत्तीए अभावादो इदि चेण, ओहिणाणम्मि पच्चक्खेण वट्टमाणासेसपज्जायविसिट्ठवत्थुपरिच्छित्तीए उवलंभा, तीदाणागद-असंखेज्जपज्जायविसिट्ठवत्थुदंसणादो च। एवं पि तदो वत्थुपरिच्छेदो णत्थि त्ति ओहिणाणस्स पच्चक्ख-परोक्खत्तं पसज्जदे ? ण, उभयणयसमूहवत्थुम्मि ववहारजोगम्मि ओहिणाणस्स पच्चक्खत्तुवलंभा। ण चाणंतवंजणपज्जाए ण घेप्पदि त्ति ओहिणाणं वत्थुस्स एगदेसपरिच्छेदयं, ववहारणयवंजणपज्जाएहि एत्थ वत्थुत्तब्भुवगमादो। ण मदिणाणस्स वि एसो कमो, तस्स वट्टमाणासेसपज्जायविसिट्ठ-वत्थुपरिच्छेयणसत्तीए अभावादो, तस्स पच्चक्खग्गहणणियमाभावादो च। अत्रोपयोगी श्लोकः—नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः। अविभ्राड्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा ॥ ६ ॥ एवंविहस्स ओहिणाणस्स जमावारयं तमोहिणाणावरणीयं। परकीयमनोगतोऽर्थो मनः, तस्य पर्यायाः विशेषाः मनःपर्ययाः, तान् जानातीति मनःपर्ययज्ञानम्। तं च मणपज्जवणाणं दुविहं उजुमइ-विउलमइभेएण। तत्थ उजुमई चिंतियमेव जाणदि, णाचिंतियं। चिंतियं पि जाणमाणं उज्जुवेण चिंतियं चेव जाणदि, ण वक्कं चिंतियं। विउलमई पुण चिंतियमचिंतियं पि वक्कचिंतियमवक्कचिंतियं पि जाणदि। ओहि-मणपज्जवणाणाणं को विसेसो ? उच्चदे—मणपज्जवणाणं विसिट्ठसंजमपच्चयं, ओहिणाणं पुण भवपच्चयं गुणपच्चयं च। मणपज्जवणाणं मदिपुव्वं चेव, ओहिणाणं पुण ओहिदंसणपुव्वं। एसो तेसिं विसेसो। मणपज्जवणाणस्स आवरणं मणपज्जवणाणावरणीयं। केवलमसहायमिंदियालोयणिरवेक्खं तिकालगोयराणंतपज्जायसमवेदाणंतवत्थुपरिच्छेदयमसंकुडियमसवत्तं केवलणाणं। णट्ठाणुप्पण्णअत्थाणं कधं तदो परिच्छेदो ? ण, केवलत्तादो बज्झत्थावेक्खाए विणा तदुप्पत्तीए विरोहाभावा। ण तस्स विपज्जयणाणत्तं पसज्जदे, जहासरूवेण परिच्छित्तीदो। ण गद्दहसिंगेण विउचारो, तस्स अच्चंताभावरूवत्तादो। एदस्स आवरणं केवलणाणावरणीयं। केवलिम्हि किमेक्कं चेव णाणं, आहो पंच वि अत्थि त्ति। ण पढमपक्खो, आवरणिज्जाभावादो चदुण्हमावरणाणमभावप्पसंगादो। ण विइज्जओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पक्खो वि, पचक्खापचक्ख-परिमियापरिमिय-केवलाकेवलकमाकमणाणाणमेयत्थ अक्कमेण संभवविरोहा इदि ? एत्थ परिहारो उच्चदे— ण बिइज्जपक्खउत्तदोससंभवो, अणब्भुवगमादो । ण पढमपक्खउत्तदोससंभवो वि, आवरणवसेण समुप्पण्णमदिणाणादिचदुण्हमावरणिज्जाणमुवलंभादो । ण खीणावरणिज्जे तेसिं संभवो, आवरणणिबंधणाणं तदभावे संभवविरोहादो ।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स णव पयडीओ ॥ १५ ॥

एदं दव्वट्ठियणयमस्सिदूण ट्ठिदं सुत्तं संगहिदासेसविसेसत्तादो । कथं संगहादो विसेसो णव्वदे ? ण, बीजबुद्धीणं तदो तदवगमेविरोहाभावा । पज्जवट्ठियणयाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी णिद्दा पयला य, चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं चेदि ॥ १६ ॥

तत्थ णिद्दाणिद्दाए तिव्वोदएण रुक्खग्गे विसमभूमीए जत्थ वा तत्थ वा देसे घोरंतो अघोरंतो वा णिब्भरं सुवदि । पयलापयलाए तिव्वोदएण वइट्ठओ वा उब्भवो वा मुहेण गलमाणलालो पुणो पुणो कंपमाणसरीर-सिरो णिब्भरं सुवदि । थीणगिद्धीए तिव्वोदएण उट्ठाविदो वि पुणो सोवदि, सुत्तो वि कम्मं कुणदि, सुत्तो वि झंक्खइ, दंते कडकडावेइ । णिद्दाए तिव्वोदएण अप्पकालं सुवइ, उट्ठाविज्जंतो लहुं उट्ठेदि, अप्पसद्देण वि चेअए । पयलाए तिव्वोदएण वालुवाए भरियाइं व लोयणाइं होंति, गरुवभारोड्डव्वं व सीसं होदि, पुणो पुणो लोयणाइं उम्मिल्लणं-णिमिल्लणं कुणंति, णिद्दाभरेण पडंतो लहु अप्पाणं साहारेदि, मणा मणा कंपदि, सचेयणो सुवदि । कथमेदेसिं पंचण्हं दंसणावरणववएसो ? ण, चेयणमवहरंतस्स सव्वदंसणविरोहिणो दंसणावरणत्तं पडि विरोहाभावा । किं दर्शनम् ? ज्ञानोत्पादकप्रयत्नानुविद्धस्वसंवेदो दर्शनं, आत्मविषयोपयोग इत्यर्थः । नात्र ज्ञानोत्पादकप्रयत्नस्य तंत्रता, प्रयत्नरहितक्षीणावरणान्तरंगोपयोगस्य अदर्शनत्वप्रसंगात् । तत्र चक्षुर्ज्ञानोत्पादकप्रयत्नानुविद्धस्वसंवेदने रूपदर्शनक्षमोऽहमिति संभावनाहेतुश्चक्षुर्दर्शनम् । एतदावृणोतीति चक्षुर्दर्शनावरणीयम् । शेषेन्द्रिय-मनसां दर्शनमचक्षुर्दर्शनम् । तदावृणोतीत्यचक्षुर्दर्शनावरणीयम् । अवधेर्दर्शनं अवधिदर्शनम् । तदावृणोतीत्यवधिदर्शनावरणीयम् । केवलमसपत्नं, केवलं च तद्दर्शनं च केवलदर्शनम् । तस्य आवरणं केवलदर्शनावरणीयम् । बाह्यार्थसामान्यग्रहणं दर्शनमिति केचिदाचक्षते, तन्न, सामान्यग्रहणास्तित्वं प्रत्यविशेषतः श्रुत-मनःपर्यययोरपि दर्शनस्यास्तित्वप्रसंगात्, सामान्यग्रहणमन्तरेण विशेषग्रहणाभावतस्संसारावस्थायां ज्ञानदर्शनयोरक्रमेण प्रवृत्तिप्रसंगात् । न क्रमप्रवृत्तिरपि, सामान्यनिर्लुठितविशेषाभावतः, तत्रावस्तुनि ज्ञानस्य प्रवृत्तिविरोधात् । न च ज्ञानस्य प्रामाण्यं वस्त्वपरिच्छेदकत्वात् । न च विशेषमात्रं वस्तु, तस्यार्थ-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियाकर्तृत्वाभावात् । ततः सामान्यमात्मा, सकलार्थसाधारणत्वात्तद्विषय उपयोगो दर्शनमिति प्रत्येतव्यम् । केवलज्ञानमेव आत्मार्थावभासकमिति केचित्केवलदर्शनस्याभावमाचक्षते । तन्न, पर्यायस्य केवलज्ञानस्य पर्यायाभावतः सामर्थ्यद्वयाभावात् । भावे वा अनवस्था न कैश्चिन्निवार्यते । तस्मादात्मा स्वपरावभासक इति निश्चेतव्यम् । तत्र स्वावभासः केवलदर्शनम्, परावभासः केवलज्ञानम् । तथा सति कथं केवलज्ञान-दर्शनयोः साम्यमिति चेन्न; ज्ञेयप्रमाणज्ञानात्मकात्मानुभवस्य ज्ञानप्रमाणत्वाविरोधात् । इतिशब्द एतावदर्थे, दर्शनावरणीयस्य कर्मण एतावत्य एव प्रकृतयो नाधिका इत्यर्थः ।

वेदणीयस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ ॥ १७ ॥

एदं संगहणयसुत्तं, संगहिदासेसविसेसत्तादो । किमट्ठमिदं उच्चदे ? मेहाविजणाणुग्गहट्ठं । संपहि मंदबुद्धिजणाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सादावेदणीयं चेव असादावेदणीयं चेव ॥ १८ ॥

सादं सुहं, तं वेदावेदि भुंजावेदि त्ति सादावेदणीयं । असादं दुक्खं, तं वेदावेदि भुंजावेदि त्ति असादावेदणीयं । एत्थ चोदओ भणदि—जदि सुह-दुक्खाइं कम्मेहिंतो होंति, तो कम्मेसु विणट्ठेसु सुह-दुक्खवज्जएण जीवेण होदव्वं, सुह-दुक्खणिबंधणकम्माभावा । सुहदुक्खविवज्जिओ चेव होदि त्ति चे ण, जीवदव्वस्स णिस्सहावत्तादो अभावप्पसंगा । अह जइ दुक्खमेव कम्मजणियं, तो सादावेदणीयकम्माभावो होज्ज, तस्स फलाभावादो त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा—जं किं पि दुक्खं णाम तं असादावेदणीयादो होदि, तस्स जीवसरूवत्ताभावा । भावे वा खीणकम्माणं पि दुक्खेण होदव्वं, णाण-दंसणाणमिव कम्मविणासे विणासाभावा । सुहं पुण ण कम्मादो उप्पज्जदि तस्स जीवसहावत्तादो फलाभावा । ण सादावेदणीयाभावो वि, दुक्खुवसमहेउदव्वसंपादणे तस्स वावारादो । एवं संते सादावेदणीयस्स पोग्गलविवाइत्तं होइ त्ति णासंकणिज्जं, दुक्खुवसमेणुप्पण्णसुवत्थियकणस्स दुक्खाविणाभाविस्स उवयारेणेव लद्धसुहसण्णस्स जीवादो अपुधभूदस्स हेदुत्तणेण सुत्ते तस्स जीवविवाइत्तसुहहेदुत्ताणमुवदेसादो । तो वि जीव-पोग्गलविवाइत्तं सादावेदणीयस्स पावेदि त्ति चे ण, इट्ठत्तादो । तहोवएसो णत्थि त्ति चे ण, जीवस्स अत्थित्तण्णहाणुववत्तीदो तहोवदेसत्थित्तसिद्धीए । ण च सुह-दुक्खहेउदव्वसंपादयमण्णं कम्ममत्थि त्ति अणुवलंभादो । जस्सोदएण जीवो सुहं व दुक्खं व दुविहमणुभवइ । तस्सोदयक्खएण दु सुह-दुक्खविवज्जिओ होइ ॥ ७ ॥ ण च एदीए गाहाए सह विरोहो, सादावेदणीयादो उप्पण्णसुहाभावं पेक्खिऊण तत्थ सुह-दुक्खाभावोवदेसादो । दोसु पदेसु एवकारो किमट्ठं कीरदे ? उत्तरोत्तरपयडीणमभावपदुप्पायणट्ठं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मोहणीयस्स कम्मस्स अट्ठावीसं पयडीओ ॥ १९ ॥

एदं संगहणयसुत्तं संगहिदासेसविसेसत्तादो मेहाविजणाणुग्गहकारि । संपहि मज्झिमबुद्धिजणाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जं तं मोहणीयं कम्मं तं दुविहं, दंसणमोहणीयं चेव चारित्तमोहणीयं चेव ॥ २० ॥

कथमेदम्हादो मोहणीयस्स कम्मस्स सव्वभेदा अवगम्मंति ? आइरिओवदेसादो । जेत्तिओ एदस्स सुत्तस्स अत्थो तं सव्वमाइरिया परूवेंति । तं परूविज्जमाणं मेहाविणो अवहारयंति । तदो एत्तियमेत्तसुत्तेण कज्जसिद्धीदो वित्थारपरूवणं तेसिमणत्थयमिदि । मंदबुद्धिजणाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जं तं दंसणमोहणीयं कम्मं तं बंधादो एयविहं, तस्स संतकम्मं पुण तिविहं सम्मत्तं मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं चेदि ॥ २१ ॥

दंसणं अत्तागमपदत्थेसु रुई पच्चओ सद्धा फोसणमिदि एयट्ठो । तं मोहेदि विवरीयं कुणदि त्ति दंसणमोहणीयं । जस्स कम्मस्स उदएण अणत्ते अत्तबुद्धी, अणागमे आगमबुद्धी, अपयत्थे पयत्थबुद्धी, अत्तागमपयत्थेसु सद्धाए अत्थिरत्तं, दोसु वि सद्धा वा होदि तं दंसणमोहणीयमिदि उत्तं होदि । तं बंधादो एयविहं, मिच्छत्तादिपच्चएहि ढुक्कमाणाणं दंसणमोहणीयकम्मक्खंधाणमेगसहावाणमुवलंभा । बंधेण एयविहं दंसणमोहणीयं कथं संतादो तिविहत्तं पडिवज्जदे ? ण एस दोसो, जंतएण दलिज्जमाणकोद्दवेसु कोद्दव-तंदुलद्धतंदुलाणं व दंसणमोहणीयस्स अपुव्वादिकिरणेहि दलियस्स तिविहत्तुवलंभा । तत्थ अत्तागमपदत्थसद्धाए जस्सोदएण सिथिलत्तं होदि, तं सम्मत्तं । कथं तस्स सम्मत्तववएसो ? सम्मत्तसहचरिदोदयत्तादो उवयारेण सम्मत्तमिदि उच्चदे । जस्सोदएण अत्तागमपयत्थेसु असद्धा होदि, तं मिच्छत्तं । जस्सोदएण अत्तागमपयत्थेसु तप्पडिवक्खेसु य अक्कमेण सद्धा उप्पज्जदि तं सम्मामिच्छत्तं । संदेहो कुदो जायदे ? सम्मत्तोदयादो; सव्वसंदेहो मूढत्तं च मिच्छत्तोदयादो । दंसणमोहणीयं संतदो तिविहमिदि कुदो णव्वदे ? आगमदो लिंगदो य । विवरीदो अहिणिवेसो मूढत्तं संदेहो वि मिच्छत्तस्स लिंगाइं । आगमणागमेसु समभावो सम्मामिच्छत्तलिंगं । अत्तागमपयत्थसद्धाए सिथिलत्तं सद्धाहाणी वि सम्मत्तलिंगं ।

जं तं चारित्तमोहणीयं कम्मं तं दुविहं, कसायवेदणीयं चेव णोकसायवेदणीयं चेव ॥ २२ ॥

पापक्रियानिवृत्तिश्चारित्रम् । घादिकम्माणि पावं । तेसिं किरिया मिच्छत्तासंजमकसाया । तेसिमभावो चारित्तं । तं मोहेइ आवारेदि त्ति

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्तमोहणीयं। तं च दुविहं कसाय-णोकसायभेदेण। कुदो दुविहत्तसिद्धी? कसाय-णोकसाएहिंतो पुधभूदतइज्जकज्जाणुवलंभादो। एदं संगहणयसुत्तं, संगहिदासेसविसेसत्तादो। पज्जवट्ठियसत्ताणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जं तं कसायवेदणीयं कम्मं तं सोलसविहं, अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोहं, अपच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोहं, पच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोहं, कोहसंजुलणं, माणसंजुलणं, माया-संजुलणं लोहसंजुलणं चेदि ॥ २३ ॥

दुःखशस्यं कर्मक्षेत्रं कृषंति फलवत्कुर्वन्तीति कषायाः क्रोध-मान-माया-लोभाः। क्रोधो रोषः संरम्भ इत्यनर्थान्तरम्। मानो गर्वः स्तब्धत्वमित्येकोऽर्थः। माया निकृतिर्वंचना अनृजुत्वमिति पर्यायशब्दाः। लोभो गृद्धिरित्येकोऽर्थः। अनन्तान् भवाननुबद्धुं शीलं येषां ते अनन्तानुबन्धिनः। अनन्तानुबन्धिनश्च ते क्रोध-मान-माया-लोभाश्च अनन्तानुबन्धिक्रोध-मान-माया-लोभाः। जेहि कोह-माण-माया-लोहेहि अविणट्ठसरूवेहि सह जीवो अणंते भवे हिंडदि तेसिं कोह-माण-माया-लोहाणं अणंताणुबंधी सण्णा त्ति उत्तं होदि। एदेसिमुदयकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो चेय, ट्ठिदी चालीससागरोवमकोडाकोडिमेत्ता चेय। तदो एदेसिमणंतभवाणुबंधित्तं ण जुज्जदि त्ति? ण एस दोसो, एदेहि जीवम्हि जणिदसंसकारस्स अणंतेसु भवेसु अवट्ठाणब्भुवगमादो। अथवा अणंतो अणुबंधो जेसिं कोह-माण-माया-लोहाणं ते अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोहा। एदेहिंतो वड्ढिदसंसारो अणंतेसु भवेसु अणुबंधं ण छंडेदि त्ति अणंताणुबंधो संसारो। सो जेसिं ते अणंताणुबंधिणो कोह-माण-माया-लोहा। एदे चत्तारि वि सम्मत्त-चारित्ताणं विरोहिणो, दुविहसत्तिसंजुत्तत्तादो। तं कुदो णव्वदे? गुरूवदेसादो जुत्तीदो य। का एत्थ जुत्ती? उच्चदे—ण ताव एदे दंसणमोहणिज्जा, सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्तेहि चेव आवरियस्स सम्मत्तस्स आवरणे फलाभावादो। ण चारित्तमोहणिज्जा वि, अपच्चक्खाणावरणादीहि आवरिदचारित्तस्स आवरणे फलाभावा। तदो एदेसिमभावो चेय। ण च अभावो, सुत्तम्हि एदेसिमत्थित्तपदुप्पायणादो। तम्हा एदेसिमुदएण सासणगुणुप्पत्तीए अण्णहाणुववत्तीदो सिद्धं दंसणमोहणीयत्तं चरित्तमोहणीयत्तं च। ण चाणंताणुबंधिचउक्कवावारो चारित्ते णिप्फलो, अपच्चक्खाणादिअणंतोदयपवाहकारणस्स णिप्फलत्तविरोहा। प्रत्याख्यानं संयमः, न प्रत्याख्यानमप्रत्याख्यानमिति देशसंयमः। पच्चक्खाणस्स अभावो असंजमो संजमासंजमो वि; तत्थ असंजमं मोत्तूण अपच्चक्खाणसद्दो संजमासंजमे चेव वट्टदि त्ति कथं णव्वदे? आवरणसद्दपओगादो। ण च कम्मेहि असंजमो आवरिज्जदि, चारित्तावरणस्स कम्मस्स अचारित्तावरणत्तप्पसंगादो। पारिसेसादो अपच्चक्खाणसद्दट्ठो संजमासंजमो चेय। अथवा नञयमीषदर्थे वर्तते। तथा च न प्रत्याख्यानमित्यप्रत्याख्यानं संयमासंयम इति सिद्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न च नञः ईषदर्थे वृत्तिरसिद्धा, न रक्ता न श्वेता युवतिनखाः ताम्राः कुरवका इत्यत्रान्यथा स्ववचनविरोधप्रसंगाद्, अनुदरी कुमारीत्यत्र उदराभावतः कुमार्य्याः मरणप्रसंगाच्च । अत्रोपयोगी श्लोकः—प्रतिषेधयति समस्तं प्रसक्तमर्थं तु जगति नोशब्दः । स पुनस्तदवयवे वा तस्मादर्थान्तरे वा स्यात् ॥ ८ ॥ अप्रत्याख्यानं संयमासंयमः । तमावृणोतीति अप्रत्याख्यानावरणीयम् । तं चउव्विहं कोह-माण-माया-लोहभेएण । पच्चक्खाणं संजमो महव्वयाइं ति एयट्ठो । पच्चक्खाणमावरेंति त्ति पच्चक्खाणावरणीया कोह-माण-माया-लोहा । सम्यक् ज्वलतीति संज्वलनम् । किमत्र सम्यक्त्वम् ? चारित्रेण सह ज्वलनम् । चारित्तमविणासेंता उदयं कुणंति त्ति जं उत्तं होदि । चारित्तमविणासेंताणं संजुलणाणं कथं चारित्तावरणत्तं जुज्जदे ? ण, संजमम्हि मलमुप्पाइय जहाक्खादचारित्तुप्पत्तिपडिबंधयाणं चारित्तावरणत्ताविरोहा । ते वि चत्तारि कोह-माण-माया-लोहभेदेण । कोहाइसु पादेक्कं संजुलणसद्दुच्चारणं किमट्ठं ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणावरणं व संजलणाणं बंधोदयाभावं पडि पच्चासत्ती णत्थि त्ति जाणावणट्ठं ।

जं तं णोकसायवेदणीयं कम्मं तं णवविहं, इत्थिवेदं पुरिसवेदं णवुंसयवेदं हस्स-रदि अरदि-सोग-भय-दुगंछा चेदि ॥ २४ ॥

एत्थ णोसद्दो देसपडिसेहओ घेत्तव्वो, अण्णहा एदेसिमकसायत्तप्पसंगादो । होदु चे ण, अकसायाणं चारित्तावरणत्तविरोहा । ईषत्कषायो नोकषाय इति सिद्धम् । अत्रोपयोगी श्लोकः—भावस्तत्परिणामो द्विःप्रतिषेधस्तदैक्यगमनार्थः । नो तद्देशविशेषप्रतिषेधोऽन्यः स्व-परयोगात् ॥ ९ ॥ कसाएहिंतो णोकसायाणं कथं थोवत्तं ? ट्ठिदीहिंतो अणुभागदो उदयदो य । उदयकालो णोकसायाणं कसाएहिंतो बहुओ उवलब्भदि त्ति णोकसाएहिंतो कसायाणं थोवत्तं किण्णेच्छिज्जदे ? ण, उदयकालमहल्लत्तणेण चारित्तविणासिकसाएहिंतो तम्मलफलकम्माणं महल्लत्ताणुववत्तीदो । स्तृणाति छादयति दोषैरात्मानं परं चेति स्त्री । पुरुकर्मणि शेते प्रमादयतीति पुरुषः । न पुमान्न स्त्री नपुंसकः । एदस्स अहिप्पाओ—जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण पुरुसम्मि आकंखा उप्पज्जइ तेसिमित्थिवेदो त्ति सण्णा । जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण महेलियाए उवरि आकंखा उप्पज्जइ तेसिं पुरिसवेदो त्ति सण्णा । जेसिमुदएण इट्टावागग्गिसारिच्छेण दोसु वि आकंखा उप्पज्जइ तेसिं णउंसयवेदो त्ति सण्णा । हसनं हासः । जस्स कम्मक्खंधस्स उदएण हस्सणिमित्तो जीवस्स रागो उप्पज्जइ तस्स कम्मक्खंधस्स हस्सो त्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो । रमणं रतिः, रम्यते अनया इति वा रतिः । जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण दव्व-खेत्त-काल-भावेसु रदी समुप्पज्जइ तेसिं रदि त्ति सण्णा । दव्व-खेत्त-काल-भावेसु जेसिमुदएण जीवस्स अरई समुप्पज्जइ तेसिमरदि त्ति सण्णा । शोचनं शोकः, शोचयतीति वा शोकः । जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण जीवस्स सोगो समुप्पज्जइ तेसिं सोगो त्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सण्णा। भीतिर्भयम्। जेहिं कम्मक्खंधेहिं उदयमागदेहि जीवस्स भयमुप्पज्जइ तेसिं भयमिदि सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जुगुप्सनं जुगुप्सा। जेसिं कम्माणमुदएण दुगुंछा उप्पज्जदि तेसिं दुगुंछा इदि सण्णा। एदेसिं कम्माणमत्थित्तं कुदो णव्वदे? पच्चक्खेणुवलंभमाण-अण्णाणादंसणादिकज्जण्णहाणुववत्तीदो।

आउगस्स कम्मस्स चत्तारि पयडीओ ॥ २५ ॥

एदं दव्वट्ठियणयसुत्तं, संगहिदासेसविसेसत्तादो। कथमेदम्हादो सव्वत्थावगई? एदमाधारभूदं काऊण एदस्स सयलत्थपदुप्पाइय-आइरियादो। पज्जवट्ठियणयजणाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णिरयाऊ तिरिक्खाऊ मणुस्साऊ देवाऊ चेदि ॥ २६ ॥

जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण जीवस्स उड्ढगमणसहावस्स णेरइयभवम्मि अवट्ठाणं होदि तेसिं णिरयाउवमिदि सण्णा। जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण तिरिक्खभवस्स अवट्ठाणं होदि तेसिं तिरिक्खाउअमिदि सण्णा। एवं मणुस-देवाउआणं पि वत्तव्वं। जथा घड-पड-थंभादीणं पज्जायाणमवट्ठाणं वइससियमेवं णिरयभवादिपज्जायाणं पि वइससिए अवट्ठाणे जादे को दोसो चे ण, अकारणे अवट्ठाणे संते णियमविरोहादो। देव-णेरइयाणं जहण्णमवट्ठाणं दसवाससहस्साणि, उक्कस्सभवावट्ठाणं तेत्तीसं सागरोवमाणि। तिरिक्खमणुसाणं जहण्णमंतोमुहुत्तं उक्कस्सं तिण्णि पलिदोवमाणि, एसो णियमो ण जुज्जदे, पोग्गलाणं व अणियमेण अवट्ठाणं होज्ज। कथं पुग्गलाणमणियमेण अवट्ठाणं? एग-बे-तिण्णि समयाइं काऊण उक्कस्सेण मेरुपव्वदादिसु अणादि-अपज्जवसिदसरूवेण संट्ठाणावट्ठाणुवलंभा। तम्हा भवावट्ठाणेण सहेउएण होदव्वं, अण्णहा सरीरंतरं गयाणं पि णिरयगदीए उदयप्पसंगादो।

णामस्स कम्मस्स बादालीसं पिंडपयडीणामाइं ॥ २७ ॥

एदस्स संगहणयसुत्तस्स अत्थो जाणिय वत्तव्वो।

गदिणामं जादिणामं सरीरणामं सरीरबंधणणामं सरीरसंघादणामं सरीरसंट्ठाणणामं सरीरअंगोवंगणामं सरीरसंघडणणामं वण्णणामं गंधणामं रसणामं फासणामं आणुपुव्वीणामं अगुरुअलहुवणामं उवघादणामं परघादणामं उस्सासणामं आदावणामं उज्जोवणामं विहायगदिणामं तसणामं थावरणामं बादरणामं सुहुमणामं पज्जत्तणामं अपज्जत्तणामं पत्तेयसरीरणामं साधारणसरीरणामं थिरणामं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अथिरणामं सुहणामं असुहणामं सुभगणामं दूभगणामं सुस्सरणामं दुस्सरणामं आदेज्जणामं अणादेज्जणामं जसकित्तिणामं अजसकित्तिणामं णिमिणणामं तित्थयरणामं चेदि ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे— गतिर्भवः संसार इत्यर्थः। यदि गतिनामकर्म न स्यात् अगतिर्जीवः स्यात्। जम्हि जीवभावे आउकम्मादो लद्धावट्ठाणे संते सरीरादियाइं कम्माइमुदयं गच्छंति सो भावो जस्स पोग्गलक्खंधस्स मिच्छत्तादिकारणेहि पत्तकम्मभावस्स उदयादो होदि तस्स कम्मक्खंधस्स गति त्ति सण्णा। जातिर्जीवानां सदृशपरिणामः। यदि जातिनामकर्म न स्यात् मत्कुणा मत्कुणैः, वृश्चिका वृश्चिकैः, पिपीलिकाः पिपीलिकाभिः, व्रीहयो व्रीहिभिः, शालयः शालिभिः समाना न जायेरन्। दृश्यते च सादृश्यम्। तदो जत्तो कम्मक्खंधादो जीवाणं भूओ सरिसत्तमुप्पज्जदे, सो कम्मक्खंधो कारणे कज्जुवयारादो जादि त्ति भण्णदे। जदि पारिणामिओ सरिसपरिणामो णत्थि तो सरिसपरिणामकज्जण्णहाणुववत्तीदो तक्कारणकम्मस्स अत्थित्तं सिज्झेज्ज। किंतु गंगावालुवादिसु पारिणामिओ सरिसपरिणामो उवलब्भदे, तदो अणेयंतियादो सरिसपरिणामो अप्पणो कारणीभूदकम्मस्स अत्थित्तं ण साहेदि त्ति? ण एस दोसो, गंगावालुआणं पुढविकाइयणामकम्मोदएण सरिसपरिणामत्तब्भुवगमादो। परमाणुसु सरिसपरिणामो पारिणामिओ उवलब्भदि, तदो हेऊ अणेयंतिओ त्ति ण सक्किज्जदे वोत्तुं, साहणदोसेसु अणेयंतियस्स अभावा। अण्णहाणुववत्तिविरहेण साहणस्स ओक्खत्तं जायदे, ण अण्णहा, अव्ववत्थादो। ण च एत्थ अण्णहाणुववत्ती णत्थि, उवलंभादो। किं च जदि जीवपडिग्गहिदपोग्गलक्खंधसरिसपरिणामो पारिणामिओ वि अत्थि, तो हेऊ अणेयंतिओ होज्ज। ण च एवं, तहाणुवलंभा। जदि जीवाणं सरिसपरिणामो कम्मायत्तो ण होज्ज, तो चउरिंदिया हय-हत्थि-वय-वग्घ-छवल्लादिसंठाणा होज्ज, पंचिंदिया वि भमर-मक्कुण-सलहिंदगोव-खुल्लक्ख-रुक्खसंठाणा होज्ज। ण चेवमणुवलंभा, पडिणियदसरिसपरिणामेसु अवट्ठिदरुक्खादीणमुवलंभा च। तदो ण पारिणामिओ जीवाणं सरिसपरिणामो त्ति सिद्धं। जस्स कम्मस्स उदएण आहारवग्गणाए पोग्गलक्खंधा तेजा-कम्मइयवग्गणपोग्गलक्खंधा च सरीरजोग्गपरिणामेहि परिणदा संता जीवेण संबज्झंति तस्स कम्मक्खंधस्स सरीरमिदि सण्णा। जदि सरीरणामकम्मं जीवस्स ण होज्ज, तो तस्स असरीरत्तं पसज्जदे। असरीरत्तादो अमुत्तस्स ण कम्माणि, विमुत्त-मुत्ताणं पोग्गलप्पाणं संबंधाभावादो। होदु चे ण, सव्वजीवाणं सिद्धसमाणत्तावत्तीदो संसाराभावप्पसंगा। सरीरट्ठमागयाणं पोग्गलक्खंधाणं जेहि पोग्गलेहि जीवसंबद्धेहि पत्तोदएहि परोप्परं बंधो कीरइ तेसिं पोग्गलक्खंधाणं सरीरबंधणसण्णा, कारणे कज्जुवयारादो, कत्तारणिद्देसादो वा। जइ सरीरबंधणणामकम्मं जीवस्स ण होज्ज, तो वालुवकयपुरिससरीरं होज्ज, परमाणूणमण्णोण्णे बंधाभावा। जेहि कम्मक्खंधेहि उदयं पत्तेहि बंधणणामकम्मोदएण बंधमागयाणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरीरपोग्गलक्खंधाणं मट्ठत्तं कीरदे तेसिं सरीरसंघादसण्णा। जदि सरीरसंघादणामकम्मं जीवस्स ण होज्ज, तो तिलमोअओ व्व अमट्ठसरीरो जीवो होज्ज। ण चेवं, तहाणुवलंभा। जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण जाइकम्मोदयपरतंतेण सरीरस्स संठाणं कीरदे तं सरीरसंठाणं णाम। सरीरसंठाणणामकम्माभावे जीवसरीरमसंठाणं होज्ज। होदु चे ण, संठाणाभावे सरीरस्साभावप्पसंगादो। ण च णिरहेउअं सरीरसंठाणं, णिरहेउअस्स संठाणस्स जाईसु णियमविरोहा। ण च णियमो असिद्धो, हय-हत्थि-हरिणेसु संठाणणियमुवलंभा। तदो सिद्धं जीवसरीरसंठाणं सहेउअमिदि। जस्स कम्मक्खंधस्सुदएण सरीरस्संगोवंगणिप्फत्ती होज्ज तस्स कम्मक्खंधस्स सरीरंगोवंगं णाम। एदस्स कम्मस्साभावे अट्ठंगाणमुवंगाणं च अभावो होज्ज। ण चेवं, तहाणुवलंभा। एत्थुवउज्जंती गाहा— णलया बाहू अ तहा णियंब पुट्ठी उरो य सीसं च। अट्ठेव दु अंगाइं देहेण्णाइं उवंगाइं ॥ १० ॥ शिरसि तावदुपांगानि मूर्द्ध-करोटि-मस्तक-ललाट-शंख-भ्रू-कर्ण-नासिका-नयनाक्षि-कूट-हनु-कपोल-उत्तराधरोष्ठ-सृक्कणी-तालु-जिह्वादीनि। जस्स कम्मस्स उदएण सरीरे हड्ड-संधीणं णिप्फत्ती होज्ज, तस्स कम्मस्स संघडणमिदि सण्णा। एदस्स कम्मस्स अभावे सरीरमसंघडणं होज्ज। देवसरीरं वा होदु चे ण, तिरिक्ख-मणुससरीरेसु हड्डकलाउवलंभा। जस्स कम्मस्स उदएण जीवसरीरे वण्णणिप्फत्ती होदि, तस्स कम्मक्खंधस्स वण्णसण्णा। एदस्स कम्मस्साभावे अणियदवण्णं सरीरं होज्ज। ण च एवं, भमर-कलयंठी-हंस-बलायादिसु णियदवण्णुवलंभा। ण च णिरुहेउए णियमो होदि, विरोहादो। जस्स कम्मक्खंधस्स उदएण जीवसरीरे जादिपडिणियदो गंधो उप्पज्जदि तस्स कम्मक्खंधस्स गंधसण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जदि गंधणामकम्मं ण होज्ज, तो जीवसरीरगंधो अणियदो होज्ज। होदु चे ण, हत्थि-वग्घादिसु णियदगंधुवलंभादो। जस्स कम्मक्खंधस्स उदएण जीवसरीरे जादिपडिणियदो तित्तादिरसो होज्ज तस्स कम्मक्खंधस्स रससण्णा। एदस्स कम्मस्साभावे जीवसरीरे जाइपडिणियदरसो ण होज्ज। ण च एवं, णिंबंब-जंबीरादिसु णियदरसस्सुवलंभादो। जस्स कम्मक्खंधस्स उदएण जीवसरीरे जाइपडिणियदो पासो उप्पज्जदि तस्स कम्मक्खंधस्स पाससण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जदि पासणामकम्मं ण होज्ज तो जीवसरीरमणियदपासं होज्ज। ण च एवं सपुप्फफलकमलणालादिसु णियदफासुवलंभादो। पुव्वुत्तरसरीराणमंतरे एग-दो-तिण्णि समए वट्टमाणजीवस्स जस्स कम्मस्स उदएण जीवपदेसाणं विसिट्ठो संठाणविसेसो होदि, तस्स आणुपुव्वि त्ति सण्णा। संठाणणामकम्मादो संठाणं होदि त्ति आणुपुव्विपरियप्पणा णिरत्थिया चे ण, तस्स सरीरगहिदपढमसमयादो उवरि उदयमागच्छमाणस्स विग्गहकाले उदयाभावा। जदि आणुपुव्विकम्मं ण होज्ज तो विग्गहकाले अणियदसंठाणो जीवो होज्ज। ण च एवं, जादिपडिणियदसंठाणस्स तत्थुवलंभादो। पुव्वसरीरं छड्डिय सरीरंतरमघेत्तूण ट्ठिदजीवस्स इच्छिदगदिगमणं कुदो होदि? आणुपुव्वीदो। विहायगदीदो गदी किण्ण होदि? ण, तस्स तिण्हं सरीराणमुदएण विणा उदयाभावा। आणुपुव्वी संठाणम्हि वावदा कधं गमणहेऊ होदि त्ति चे ण, तिस्से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोसु वि कज्जेसु वावारे विरोहाभावा। अचत्तसरीरस्स जीवस्स विग्गहगईए उज्जुगईए वा जं गमणं तं कस्स फलं? ण, तस्स पुव्वखेत्तपरिच्चायाभावेण गमणाभावा। जीवपदेसाणं जो पसरो सो ण णिक्कारणो, तस्स आउअसंतफलत्तादो। वण्ण-गंध-रस-फासकम्माणं वण्ण-गंध-रस-पासा सकारणा णिक्कारणा वा। पढमपक्खे अणवत्था। विदियपक्खे सेसणोकम्मवण्ण-गंध-रस-फासा वि णिक्कारणा होंतु, विसेसाभावा। एत्थ परिहारो उच्चदे—ण पढमे पक्खे उत्तदोसो, अणब्भुवगमादो। ण विदियपक्खदोसो वि, कालदव्वं व दुस्सहावत्तादो एदेसिमुभयत्थ वावारविरोहाभावा। अणंताणंतेहि पोग्गलेहि आऊरियस्स जीवस्स जेहि कम्मक्खंधेहिंतो अगुरुअलहुअत्तं होदि, तेसिमगुरुअलहुअं ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जदि अगुरुअलहुवकम्मं जीवस्स ण होज्ज, तो जीवो लोहगोलओ व्व गरुअओ, अक्कतूलं व हलुओ वा होज्ज। ण च एवं, अणुवलंभादो। अगुरुवलहुअत्तं णाम जीवस्स साहावियमत्थि चे ण, संसारावत्थाए कम्मपरतंतम्मि तस्साभावा। ण च सहावविणासे जीवस्स विणासो, लक्खणविणासे लक्खविणासस्स णाइयत्तादो। ण च णाण-दंसणे मुच्चा जीवस्स अगुरुलहुअत्तं लक्खणं, तस्स आयासादीसु वि उवलंभा। किंच ण एत्थ जीवस्स अगुरुलहुत्तं कम्मेण कीरइ, किंतु जीवम्हि भरिओ जो पोग्गलक्खंधो, सो जस्स कम्मस्स उदएण जीवस्स गरुओ हलुवो वा त्ति णावडइ तमगुरुवलहुअं। तेण ण एत्थ जीवविसयअगुरुलहुवत्तस्स गहणं। उपेत्य घात उपघातः, आत्मघात इत्यर्थः। जं कम्मं जीवपीडाहेदुअवयवे कुणदि, जीवपीडाहेदुदव्वाणि वा विसासि-पासादीणि जीवस्स ढोएदि तं उवघादं णाम। के जीवपीडाकार्यवयवा इति चेन्महाशृङ्ग-लम्बस्तन-तुंदोदरादयः। जदि उवघादणामकम्मं जीवस्स ण होज्ज, तो सरीरादो वाद-पित्त-सेंभदूसिदादो जीवस्स पीडा ण होज्ज। ण च एवं, अणुवलंभादो। जीवस्स दुक्खुप्पायणे असादावेदणीयस्स वावारो चे, होदु तस्स तत्थ वावारो, किंतु उवघादकम्मं पि तस्स सहकारिकारणं होदि, तदुदयणिमित्तपोग्गलदव्वसंपादणादो। परेषां घातः परघातः। जस्स कम्मस्स उदएण परघादहेदू सरीरे पोग्गला णिप्फज्जंति तं कम्मं परघादं णाम। तं जहा—सप्पदाढासु विसं, विच्छियपुंछे परदुःखहेउपोग्गलोवचओ, सीह-वग्घछवलादिसु णह-दंता, सिंगिवच्छणाहीधत्तूरादओ च परघादुप्पायया। उच्छ्वसनमुच्छ्वासः। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो उस्सास-णिस्सासकज्जुप्पायणक्खमो होदि तस्स कम्मस्स उस्सासो त्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जदि उस्सासणामकम्मं ण होज्ज, तो जीवो अणुस्सासो होज्ज। ण च एवं, उस्सासविरहिदजीवाणुवलंभा। आतपनमातपः। जस्स कम्मस्स उदएण जीवसरीरे आदओ होज्ज, तस्स कम्मस्स आदओ त्ति सण्णा। जदि आदवणामकम्मं ण होज्ज, तो सूरमंडले पुढविकाइयसरीरे आदवाभावो होज्ज। ण च एवं, तहाणुवलंभा। को आदवो णाम? सोष्णः प्रकाशः आतपः। एवं संते तेउक्काइयम्मि वि आदावस्स उदओ पावेदि त्ति चे ण, तत्थतणउण्हपभाए तेउक्काइयणामकम्मोदएणुप्पण्णाए सयलपहाविणाभाविउण्हत्ताभावेण साधम्माभावादो। उद्योतनमुद्योतः। जस्स कम्मस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदएण जीवसरीरे उज्जोओ उप्पज्जदि तं कम्मं उज्जोवं णाम। जदि उज्जोवणामकम्मं ण होज्ज, तो चंद-णक्खत्त-तारा-खज्जोतादिसु
सरीराणमुज्जोवो ण होज्ज। ण च एवमणुवलंभा। विहाय आकाशमित्यर्थः। विहायसि गतिः विहायोगतिः। जेसिं कम्मक्खंधाणमुदएण
जीवस्स आगासे गमणं होदि तेसिं विहायगदि त्ति सण्णा। तिरिक्ख-मणुसाणं भूमीए गमणं कस्स कम्मस्स उदएण ? विहायगदि-
णामस्स। कुदो ? विहत्थिमेत्तप्पायजीवपदेसेहि भूमिमोट्टहिय सयलजीवपएसाणमायासे गमणुवलंभा। जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं
तसत्तं होदि, तस्स कम्मस्स तसेत्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो। जदि तसणामकम्मं ण होज्ज, तो बीइंदियादीणमभावो होज्ज।
ण च एवं, तेसिमुवलंभा। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो थावरत्तं पडिवज्जदि तस्स कम्मस्स थावरसण्णा। जदि थावरणामकम्मं ण
होज्ज, तो थावरजीवाणमभावो होज्ज। ण च एवं, तेसिमुवलंभा। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो बादरेसु उप्पज्जदि तस्स कम्मस्स
बादरमिदि सण्णा। जदि बादरणामकम्मं ण होज्ज, तो बादराणमभावो होज्ज। ण च एवं, पडिहयसरीरजीवाणं पि उवलंभादो।
जस्स कम्मस्स उदएण जीवो सुहुमत्तं पडिवज्जदि तस्स कम्मस्स सुहुममिदि सण्णा। जदि सुहुमणामकम्मं ण होज्ज, तो सुहुम-
जीवाणमभावो होज्ज। ण च एवं, सप्पडिवक्खाभावे बादराणं पि अभावप्पसंगादो। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो पज्जत्तो होदि तस्स
कम्मस्स पज्जत्तेत्ति सण्णा। जदि पज्जत्तणामकम्मं ण होज्ज, तो सव्वे जीवा अपज्जत्ता चेव होज्ज। ण च एवं, पज्जत्ताणं पि उवलंभा।
जस्स कम्मस्स उदएण जीवो पज्जत्तीओ समाणेदुं ण सक्कदि तस्स कम्मस्स अपज्जत्तणाम सण्णा। जदि अपज्जत्तणामकम्मं ण
होज्ज, तो सव्वे जीवा पज्जत्ता चेव होज्ज। ण च एवं, पडिवक्खाभावे अप्पिदस्स वि अभावप्पसंगादो। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो
पत्तेयसरीरो होदि, तस्स कम्मस्स पत्तेयसरीरमिदि सण्णा। जदि पत्तेयसरीरणामकम्मं ण होज्ज, तो एक्कम्हि सरीरे एगजीवस्सेव उव-
लंभो ण होज्ज। ण च एवं, णिव्वाहमुवलंभा। जस्स कम्मस्स उदएण जीवो साधारणसरीरो होज्ज, तस्स कम्मस्स साधारणसरीरमिदि
सण्णा। जदि साहारणणामकम्मं ण होज्ज, तो सव्वे जीवा पत्तेयसरीरा चेव होज्ज। ण च एवं, पडिवक्खाभावे अप्पिदस्स वि अभाव-
प्पसंगा। जस्स कम्मस्स उदएण रस-रुहिर-मेद-मज्जट्ठि-मांस-सुक्काणं थिरत्तमविणासो अगलणं होज्ज तं थिरणामं। जदि थिरणाम-
कम्मं ण होज्ज, तो एदेसिं गलणमेव होज्ज, थिरत्ताभावा। ण च एवं, हाणि-वड्ढीहि विणा अवट्ठाणदंसणादो। जस्स कम्मस्स उदएण
रस-रुहिर-मांस-मेद-मज्जट्ठि-सुक्काणं परिणामो होदि तमथिरणाम। अत्रोपयोगी श्लोकः— रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रवर्तते।
मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्ज्ञः शुक्रं ततः प्रजा ॥ ११ ॥ पंचदशाक्षिनिमेषा काष्ठा। त्रिंशत्काष्ठा कला। विंशतिकलो मुहूर्तः। कलाया
दशमभागश्च त्रिंशन्मुहूर्तं च भवत्यहोरात्रम्। पंचदश अहोरात्राणि पक्षः। पंचवीसकलासयाइं चउरसीदिकलाओ च तिहि-सत्तभागेहि
परिहीणणवकट्ठाओ च रसो रससरूवेण अच्छिय रुहिरं होदि। तं हि तत्तियं चेव कालं तत्थच्छिय मांससरूवेण परिणमइ। एवं सेसधादूणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पि वत्तव्वं। एवं मासेण रसो सुक्करूवेण परिणमइ। एवं जस्स कम्मस्स उदएण धादूणं कमेण परिणामो होदि तमथिरमिदि उत्तं होदि। एदस्साभावे कमणियमो ण होज्ज। ण च एवं, अणवत्थादो। सत्तधाउहेउकम्माणि वत्तव्वाणि ? ण, तेसिं सरीरणामकम्मादो उप्पत्तीए। सत्तधाउविरहिदविग्गहगदीए वि थिराथिराणमुदयदंसणादो णेदासिं तत्थ वावारो त्ति णासंकणिज्जं, सजोगिकेवलिपरघादस्सेव तत्थ अव्वत्तोदएण अवट्ठाणादो। जस्स कम्मस्स उदएण अंगोवंगणामकम्मोदयजणिदअंगाणमुवंगाणं च सुहत्तं होदि तं सुहं णाम। अंगोवंगाणमसुहत्तणिव्वत्तयमसुहं णाम। त्थी-पुरिसाणं सोहग्गणिव्वत्तयं सुभगं णाम। तेसिं चेव दूहवभावणिव्वत्तयं दूहवं णाम। एइंदियादिसु अव्वत्तचेट्ठेसु कधं सुहव-दूहव-भावा णज्जंते ? ण, तत्थ वि तेसिमव्वत्ताणमागमेण अत्थित्तसिद्धीदो। सुस्सरो णाम महुरो णाओ। जस्सोदएण जीवाणं महुरसरो होदि तं कम्मं सुस्सरं णाम। अमहुरो सरो दुस्सरो, जहा गद्दहुट्ट-सियालादीणं। जस्स कम्मस्स उदएण जीवे दुस्सरो होदि तं कम्मं दुस्सरं णाम। आदेयता ग्रहणीयता बहुमान्यता इत्यर्थः। जस्स कम्मस्स उदएण जीवस्स आदेयत्तमुप्पज्जदि तं कम्ममादेयं णाम। तव्विवरीयभावणिव्वत्तयकम्ममणादेयं णाम। जसो गुणो, तस्स उब्भावणं कित्ती। जस्स कम्मस्स उदएण संताणमसंताणं वा गुणाणमुब्भावणं लोगेहि कीरदि, तस्स कम्मस्स जसकित्तिसण्णा। जस्स कम्मस्सोदएण संताणमसंताणं वा अवगुणाणं उब्भावणं जणेण कीरदे, तस्स कम्मस्स अजसकित्तिसण्णा। नियतं मानं निमानं। तं दुविहं पमाणणिमिणं संठाणणिमिणमिदि। जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं दो वि णिमिणाणि होंति, तस्स कम्मस्स णिमिणमिदि सण्णा। जदि पमाणणिमिणणामकम्मं ण होज्ज, तो जंघा-बाहु-सिरणासियादीणं वित्थारायामा लोयंतविसप्पिणो होज्ज। ण चेवं, अणुवलंभा। तदो कालमस्सिदूण जाइं च जीवाणं पमाणणिव्वत्तयं कम्मं पमाणणिमिणं णाम। जदि संठाणणिमिणणामकम्मं ण होज्ज, तो अंगोवंग-पच्चंगाणि संकर-वदियरसरूवेण होज्ज। ण च एवं, अणुवलंभा। तदो कण्ण-णयण-णासियादीणं सजादिअणुरूवेण अप्पप्पणो ट्ठाणे जं णियामयं तं संठाणणिमिणमिदि। जस्स कम्मस्स उदएण जीवस्स तिलोगपूजा होदि तं तित्थयरं णाम।

जं तं गदिणामकम्मं तं चउव्विहं, णिरयगदिणामं तिरिक्खगदिणामं मणुसगदिणामं देवगदिणामं चेदि ॥ २९ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण णिरयभावो जीवाणं होदि, तं कम्मं णिरयगदि त्ति उच्चदि, कारणे कज्जुवयारादो। एवं सेसगईणं पि वत्तव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जं तं जादिणामकम्मं तं पंचविहं, एइंदियजादिणामकम्मं बीइंदियजादिणामकम्मं तीइंदियजादिणामकम्मं चउरिंदियजादिणामकम्मं पंचिंदियजादिणामकम्मं चेदि ॥ ३० ॥

एइंदियाणमेइंदिएहि एइंदियभावेण जस्स कम्मस्स उदएण सरिसत्तं होदि तं कम्ममेइंदियजादिणामं । तं पि अणेयपयारं, अण्णहा जंबू - णिंबंब - जंबीर - कयम्बंबिलिया - सालि - बीहि - जव - गोहूमादिजादीणं भेदाणुववत्तीदो । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं बीइंदियत्तणेण समाणत्तं होदि तं कम्मं बीइंदियजादिणामं । तं पि अणेयपयारं, अण्णहा संख - माउवाहय - खुल्ल - वराडयारिट्ठ - सुत्ति - गंडुवालाकुक्खिकिमियादिजादीणं भेदाणुववत्तीदो । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं तीइंदियभावेण समाणत्तं होदि तं तीइंदियजादिणामकम्मं । तं च अणेयपयारं, अण्णहा कुंथु - मक्कुण - जूअ - विच्छिय - गोम्हिंदगोव - पिपीलियादिजादि - भेदाणुववत्तीदो । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं चउरिंदियभावेण समाणत्तं होदि तं कम्मं चउरिंदियजादिणामं । तं च अणेयपयारं, अण्णहा भमर - महुवर - सलहय - पयंग - दंसमसय - मच्छियादिजादिभेदाणुववत्तीदो । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं पंचिंदियजादिभावेण समाणत्तं होदि तं पंचिंदियजादिणामकम्मं । तं चाणेयपयारं, अण्णहा मणुस - देव - णेरइय - सीह - हय - हत्थि - वय - वग्घ - छवल्लादिजादिभेदाणुववत्तीदो ।

जं तं सरीरणामकम्मं तं पंचविहं, ओरालियसरीरणामं वेउव्वियसरीरणामं आहारसरीरणामं तेयासरीरणामं कम्मइयसरीरणामं चेदि ॥ ३१ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण आहारवग्गणाए पोग्गलक्खंधा जीवेणोगाहदेसट्ठिदा रस - रुहिर - मांस - मेदट्ठि - मज्ज - सुक्कसहावओरालियसरीरसरूवेण परिणमंति तस्स ओरालियसरीरमिदि सण्णा । जस्स कम्मस्स उदएण आहारवग्गणाए खंधा अणिमादिअट्ठगुणोवलक्खियसुहासुहप्पयवेउव्वियसरीरसरूवेण परिणमंति तस्स वेउव्वियसरीरमिदि सण्णा । जस्स कम्मस्स उदएण आहारवग्गणाए खंधा आहारसरीरसरूवेण परिणमंति तस्स आहारसरीरमिदि सण्णा । जस्स कम्मस्स उदएण तेजइयवग्गणक्खंधा णिस्सरणाणिस्सरण - पसत्थापसत्थप्पयतेयासरीरसरूवेण परिणमंति तं तेयासरीरं णाम, कारणे कज्जुवयारादो । जस्स कम्मस्स उदओ कुंभंडफलस्स वेंटो व्व सव्वकम्मासयभूदो तस्स कम्मइयसरीरमिदि सण्णा ।

जं तं सरीरबंधणणामकम्मं तं पंचविहं, ओरालियसरीरबंधणणामं वेउव्वियसरीरबंधणणामं आहारसरीरबंधणणामं तेजासरीरबंधणणामं कम्मइयसरीरबंधणणामं चेदि ॥ ३२ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जस्स कम्मस्स उदएण ओरालियसरीरपरमाणू अण्णोण्णेण बंधमागच्छंति तमोरालियसरीरबंधणं णाम । एवं सेससरीरबंधणाणं पि अत्थो वत्तव्वो ।

जं तं सरीरसंघादणामकम्मं तं पंचविहं, ओरालियसरीरसंघादणामं वेउव्वियसरीरसंघादणामं आहारसरीरसंघादणामं तेजासरीरसंघादणामं कम्मइयसरीरसंघादणामं चेदि ॥ ३३ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण ओरालियसरीरक्खंधाणं सरीरभावमुवगयाणं बंधणणामकम्मोदएण एगबंधणबद्धाणं मट्ठत्तं होदि तमोरालियसरीरसंघादं णाम । एवं सेससरीरसंघादाणं पि अत्थो वत्तव्वो ।

जं तं सरीरसंठाणणामकम्मं तं छव्विहं, समचउरससरीरसंठाणणामं णग्गोहपरिमंडलसरीरसंठाणणामं सादियसरीरसंठाणणामं खुज्जसरीरसंठाणणामं वामणसरीरसंठाणणामं हुंडसरीरसंठाणणामं चेदि ॥ ३४ ॥

समं चउरस्रं समचउरस्रं समविभक्तमित्यर्थः । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं समचउरससंठाणं होदि तस्स कम्मस्स समचउरससंठाणमिदि सण्णा । णग्गोहो वडरुक्खो, तस्स परिमंडलं व परिमंडलं जस्स सरीरस्स तण्णग्गोहपरिमंडलं । णग्गोहपरिमंडलमेव सरीरसंठाणं णग्गोहपरिमंडलसरीरसंठाणं, आयतवृत्तमित्यर्थः । स्वातिर्वल्मीकः शाल्मलिर्वा, तस्य संस्थानमिव संस्थानं यस्य शरीरस्य तत्स्वातिशरीरसंस्थानम्, अहो विसालं उवरि सण्णमिदि जं उत्तं होदि । कुब्जस्य शरीरं कुब्जशरीरम् । तस्य-कुब्जशरीरस्य संस्थानमिव संस्थानं यस्य तत्कुब्जशरीरसंस्थानम् । जस्स कम्मस्स उदएण साहाणं दीहत्तं मज्झस्स हरस्सत्तं च होदि तस्स खुज्जसरीरसंठाणमिदि सण्णा । वामनस्य शरीरं वामनशरीरम् । वामनशरीरस्य संस्थानमिव संस्थानं यस्य तद्वामनशरीरसंस्थानम् । जस्स कम्मस्स उदएण साहाणं जं हरस्सत्तं कायस्स दीहत्तं च होदि तं वामणसरीरसंठाणं होदि । विसमपासाणभरियदइओ व्व विस्सदो विसमं हुंडं । हुंडस्स सरीरं हुंडसरीरं, तस्स संठाणमिव संठाणं जस्स तं हुंडसरीरसंठाणं णाम । जस्स कम्मस्स उदएण पुव्वत्तपंचसंठाणेहिंतो वदिरित्तमण्णसंठाणमुप्पज्जइ एक्कत्तीसभेदभिण्णं तं हुंडसंठाणसण्णिदं होदि त्ति णादव्वं ।

॥६९८॥

जं तं सरीरअंगोवंगणामकम्मं तं तिविहं ओरालियसरीरअंगोवंगणामं वेउव्वियसरीरअंगोवंगणामं आहारसरीरअंगोवंगणामं चेदि ॥ ३५ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जस्स कम्मस्स उदएण ओरालियसरीरस्स अंगोवंग-पच्चंगाणि उप्पज्जंति तं ओरालियसरीरअंगोवंगणामं। एवं सेसदोसरीरअंगोवंगाणं पि अत्थो वत्तव्वो। तेजा-कम्मइयसरीरअंगोवंगाणि णत्थि, तेसिं कर-चरण-गीवादिअवयवाभावा।

जं तं सरीरसंघडणणामकम्मं तं छव्विहं, वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणणामं वज्जणारायणसरीरसंघडणणामं णारायणसरीरसंघडणणामं अद्धणारायणसरीरसंघडणणामं खीलियसरीरसंघडणणामं असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामं चेदि ॥ ३६ ॥

संहननमस्थिसंचयः, ऋषभो वेष्टनम्, वज्रवदभेद्यत्वाद्वज्रऋषभः। वज्रवन्नाराचः वज्रनाराचः, तौ द्वावपि यस्मिन् वज्रशरीरसंहनने तद्वज्रऋषभवज्रनाराचशरीरसंहननम्। जस्स कम्मस्स उदएण वज्जहड्डाइं वज्जवेट्ठेण वेट्ठियाइं वज्जणाराएण खीलियाइं च होंति तं वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणमिदि उत्तं होदि। एसो चेव हड्डबंधो वज्जरिसहवज्जिओ जस्स कम्मस्स उदएण होदि तं कम्मं वज्जणारायणसरीरसंघडणमिदि भण्णदे। जस्स कम्मस्स उदएण वज्जविसेसणरहिदणारायण-खीलियाओ हड्डसंधीओ हवंति तं णारायणसरीरसंघडणं णाम। जस्स कम्मस्स उदएण हड्डसंधीओ णाराएण अद्धविद्धाओ हवंति तं अद्धणारायणसरीरसंघडणं णाम। जस्स कम्मस्स उदएण अवज्जहड्डाइं खीलियाइं हवंति तं खीलियसरीरसंघडणं णाम। जस्स कम्मस्स उदएण अण्णोण्णमसंपत्ताइं सरिसिवंदणाइं व सिराबद्धाइं हड्डाइं हवंति तं असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणं णाम।

जं तं वण्णणामकम्मं तं पंचविहं, किण्हवण्णणामं णीलवण्णणामं रुहिरवण्णणामं हालिद्दवण्णणामं सुक्किलवण्णणामं चेदि ॥ ३७ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गलाणं किण्हवण्णो उप्पज्जदि तं किण्हवण्णं णाम। एवं सेसवण्णाणं पि अत्थो वत्तव्वो।

जं तं गंधणामकम्मं तं दुविहं, सुरहिगंधं दुरहिगंधं चेव ॥ ३८ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गला सुअंधा होंति तं सुरहिगंधं णाम। जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गला दुग्गंधा होंति तं दुरहिगंधं णाम।

जं तं रसणामकम्मं तं पंचविहं, तित्तणामं कडुवणामं कसायणामं अंबणामं महुरणामं चेदि ॥ ३९ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गला तित्तरसेण परिणमंति तं तित्तं णाम। एवं सेसरसाणमत्थो वत्तव्वो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जं तं पासणामकम्मं तं अट्ठविहं, कक्खडणामं मउवणामं गरुवणामं लहुवणामं णिद्धणामं लुक्खणामं सीदणामं उसुणणामं चेदि ॥ ४० ॥

जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गलाणं कक्खडभावो होदि तं कक्खडं णाम । एवं सेसफासाणं पि अत्थो वत्तव्वो ।

जं तं आणुपुव्विणामकम्मं तं चउव्विहं, णिरयगदिपाओग्गाणुपुव्विणामं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्विणामं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्विणामं देवगदिपाओग्गाणुपुव्विणामं चेदि ॥ ४१ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण णिरयगइं गयस्स जीवस्स विग्गहगईए वट्टमाणस्स णिरयगइपाओग्गसंठाणं होदि तं णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामं । एवं सेसआणुपुव्वीणं पि अत्थो वत्तव्वो ।

अगुरुअलहुअणामं उवघादणामं परघादणामं उस्सासणामं आदावणामं उज्जोवणामं ॥ ४२ ॥

एदासिमेत्थ णिद्देसो किमट्ठो ? णामस्स कम्मस्स वादालीसं पिंडपगडीओ त्ति णिद्देसो पाधण्णपदत्थो त्ति जाणावणट्ठो । कुदो ? एदासिं पिंडपयडित्ताभावा ।

जं तं विहायगइणामकम्मं तं दुविहं, पसत्थविहायगदी अप्पसत्थविहायगदी चेदि ॥ ४३ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं सीह-कुंजर-वसहाणं व पसत्था गई होज्ज, तं पसत्थविहायगदी णाम । जस्स कम्मस्स उदएण खरोट्ट-सियालाणं व अप्पसत्था गई होज्ज, सा अप्पसत्थविहायगदी णाम ।

तसणामं थावरणामं बादरणामं सुहुमणामं पज्जत्तणामं, एवं जाव णिमिण-तित्थयरणामं चेदि ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो । ण पुणरुत्तदोसो वि, एदाओ पिंडपगडीओ ण होंति त्ति जाणावणट्ठं पुणो परूवणादो ।

गोदस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ, उच्चागोदं चेव णीचागोदं चेव ॥ ४५ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण उच्चागोदं होदि तमुच्चागोदं । गोत्रं कुलं वंशः संतानमित्येकोऽर्थः । जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं णीचगोदं होदि तं णीचगोदं णाम ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतराइयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ, दाणंतराइयं लाहंतराइयं भोगंतराइयं परिभोगंतराइयं वीरियंतराइयं चेदि ॥ ४६ ॥

जस्स कम्मस्स उदएण देंतस्स विग्घं होदि तं दाणंतराइयं। जस्स कम्मस्स उदएण लाहस्स विग्घं होदि तल्लाहंतराइयं। जस्स कम्मस्स उदएण भोगस्स विग्घं होदि तं भोगंतराइयं। सकृद् भुज्यत इति भोगः, ताम्बूलाशन-पानादिः। जस्स कम्मस्स उदएण परिभोगस्स विग्घं होदि तं परिभोगंतराइयं। पुनः पुनः परिभुज्यत इति परिभोगः, स्त्रीवस्त्राभरणादिः। जस्स कम्मस्स उदएण वीरियस्स विग्घं होदि तं वीरियंतराइयं णाम। वीर्यं बलं शुक्रमित्येकोऽर्थः। एवं पयडिसमुक्कित्तणं णाम पढमा चूलिया समत्ता।

विदिया चूलिया

एत्तो ट्ठाणसमुक्कित्तणं वण्णइस्सामो ॥ १ ॥

किं स्थानम्? तिष्ठंत्यस्यां संख्यायामस्मिन् वा अवस्थाविशेषे प्रकृतय इति स्थानम्। ठाणं ठिदी अवट्ठाणमिदि एयट्ठो। समुक्कित्तणं वण्णणं परूवणमिदि उत्तं होदि। ठाणस्स समुक्कित्तणा ठाणसमुक्कित्तणा। तं वण्णइस्सामो कस्सामो त्ति उत्तं होदि। ठाणसमुक्कित्तणा किमट्ठमागदा? पुव्वं पयडिसमुक्कित्तणाए जाओ पयडीओ परूविदाओ तासिं बंधो किमक्कमेण होदि, किं कमेणेत्ति पुच्छिदे एवं होदि त्ति जाणावणट्ठं ट्ठाणसमुक्कित्तणा आगदा।

तं जहा ॥ २ ॥

सा ठाणसमुक्कित्तणा कधं उच्चदि त्ति पुच्छिदे एवं उच्चदि त्ति जाणावेंतो ताव ट्ठाणाणं चेव सरूवसंखाणं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ ३ ॥

तं पयडिट्ठाणं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा होदि, एदेहिंतो वदिरित्तबंधगाणमभावा। एत्थ पढमाए अत्थे छट्ठी दट्ठव्वा, तेण मिच्छादिट्ठिट्ठाणमिदि संबंधेदव्वं। कधं तस्स ठाणववएसो? तिष्ठन्त्यस्मिन् बंधहेतुप्रकृतय इति स्थानशब्दस्य व्युत्पत्तेः। संजदस्सेत्ति वुत्ते अट्ठ वि संजदगुणट्ठाणाणि घेत्तव्वाणि, संजदभावं पडि भेदाभावा। णवमं गुणट्ठाणं ण घेप्पदि, तस्स बंधगत्ताभावा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णाणावरणीयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ, आभिणिबोहियणाणावरणीयं सुदणाणावरणीयं ओधिणाणावरणीयं मणपज्जवणाणावरणीयं केवलणाणावरणीयं चेदि ॥ ४ ॥

पुणरुत्तत्तादो ण वत्तव्वमिदं सुत्तं ? ण, सव्वेसिं जीवाणं सरिसणाणावरणीयकम्मक्खओवसमाभावा । जदि सव्वेहि जीवेहि गहिदत्थो टंकुक्किण्णक्खरं व ण विणस्सदि तो पुणरुत्तदोसो होज्ज । ण च एवं, जलालिहियक्खरस्सेव गहिदत्थस्स केसु वि विणासुवलंभादो । तदो भट्ठसंसकारसिस्ससंभालणट्ठं वत्तव्वमिदं सुत्तं ।

एदासिं पंचण्हं पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ५ ॥

एदासिं पुव्वुत्तपंचण्हं पयडीणं बंधमाणस्स जीवस्स एक्कम्हि अवत्थाविसेसे पंचसंखुवलक्खिए ठाणमवट्ठाणं होदि । एवकारो किमट्ठो ? एक्क-वे-तिण्णि-चत्तारि-संखुवलक्खियअवत्थाए अवट्ठाणपडिसेहट्ठो ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ ६ ॥

तं पंचसंखुवलक्खियभावाधारबंधट्ठाणमेदेसिं उत्तगुणट्ठाणाणं होदि, ण अण्णेसिं, एदेहिंतो पुधभूदगुणट्ठाणाभावा । संजदेत्ति उत्ते सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदंताणं गहणं, उवरिमाणं णाणावरणबंधाभावा ।

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स तिण्णि ट्ठाणाणि, णवण्हं छण्हं चदुण्हं ठाणमिदि ॥ ७ ॥

एदं संगहणयसुत्तं, सव्वविसेसाधारत्तादो । एदस्सत्थो उच्चदे— णवपयडिसंबंधि एक्कं ट्ठाणं, छप्पयडिसंबंधि विदियं ट्ठाणं, चत्तारि पयडिसंबंधि तदियं ठाणं । पयडिं पडि भेदाभावा ठाणभेदो ण जुज्जदि त्ति चे ण, णव-छ-चदुसंखाविसिट्ठपयडिसमूहाणमेयत्तविरोहा । किं च भिण्णगुणाधारत्तादो चाणेयत्तं ट्ठाणाणं । पज्जवणयाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तत्थ इमं णवण्हं ट्ठाणं, णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी णिद्दा य पयला य चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं चेदि ॥ ८ ॥

दंसणावरणीयस्स कम्मस्स उत्तरपयडीणं णामणिद्देसो संखा च पयडिसमुक्कित्तणाए सव्वमेदं परूविदं, पुणो एत्थ किमट्ठं उच्चदे ?

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्ससंभालणट्ठत्तादो। अथवा णेदाओ पयडीणं सण्णाओ। किंतु पयडिबंधकारणट्ठाणस्स सत्तीणं सण्णाओ। तेण ण पुणरुत्तदोसो।

एदासिं णवण्हं पयडीणं एक्कम्हि चेव ठाणं बंधमाणस्स ॥ ९ ॥

एदासिं पुव्वुत्तणवपयडीणं एक्कम्हि चेव भावे ठाणमवट्ठाणं होदि, बंधमाणस्स जीवस्स एदासिं पयडीणं बंधस्स वा। को सो एक्को भावो णवण्हं पयडीणं बंधहेदु ? सम्मत्ताभावो।

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ १० ॥

एक्कस्स ठाणस्स णवपयडिणिप्पण्णस्स एदे सामिणो होंति। किमट्ठं सामित्तं उच्चदे ? ण, सम्मत्ताभावं पडि एयत्तं पडिवण्णट्ठाणम्हि समुप्पण्णएगेयंतबुद्धिमोसारिय अणेयत्तबुद्धिसमुप्पायणट्ठत्तादो।

तत्थ इमं छण्हं ठाणं णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीओ वज्ज णिद्दा य पयला य चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं चेदि ॥ ११ ॥

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीओ वज्ज छण्हं ट्ठाणं होदि त्ति उत्ते सेसपयडीओ इमाओ होंति त्ति णव्वदे, तदो तासिं णिद्देसो अणत्थओ त्ति ? ण एस दोसो, अइजडसिस्ससंभालणट्ठत्तादो।

एदासिं छण्हं पयडीणं एक्कम्हि चेव ठाणं बंधमाणस्स ॥ १२ ॥

कधमेत्थ ठाणस्स एयत्तं ? छण्हं पयडीणं बंधजोग्गभावं पडि भेदाभावा। बंधमाणस्सेत्ति उत्ते जीवस्स वज्झमाणस्स वा कम्मस्स ग्गहणं।

तं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ १३ ॥

संजदस्सेत्ति उत्ते अपुव्वकरणद्धाए पढमसत्तमभागट्ठिदसंजदाणं ति गहणं। एदासिं पयडीणं बंधस्स जदि एदे सव्वे सामिणो हवंति तो कथमेक्कम्हि अवट्ठाणं, बहुअस्स एयत्तविरोहादो ? ण एस दोसो, बहूणं पि एदेसिं छप्पयडिबंधपरिणामेण समाणाणमेयत्ताविरोहा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ इमं चदुण्हं ठाणं, णिद्दा य पयला य वज्ज चक्खुदंसणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं ओधिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयं चेदि ॥ १४ ॥

णेदं सुत्तं णिप्फलं, वज्जिज्जमाणपयडिपरूवणाए विणा अप्पिदचदुपयअवगमे उवायाभावा। वदिरेगेण अवगदविधीदो पयडिणिद्देसो णिप्फलो त्ति णासंकणिज्जं, दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं णिद्दिट्ठस्स तस्स णिप्फलत्तविरोहा।

एदासिं चदुण्हं पयडीणं एक्कम्हि चेव ठाणं बंधमाणस्स ॥ १५ ॥

एदाओ चत्तारि पयडीओ बंधमाणस्स एक्कं चेव ट्ठाणं होदि त्ति एत्थ संबंधो कायव्वो। पढमाए अत्थे पाइयम्मि छट्ठी-सत्तमीणं पउत्तीए संभवादो। सेसं सुगमं।

तं संजदस्स ॥ १६ ॥

कुदो ? अपुव्वकरणादिसुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदंतमहारिसीसु एदासिं बंधुवलंभा। बहूणं संजदाणं संजदस्सेत्ति एगवयणेण णिद्देसो कथं घडदे ? ण, तेसिं बहूणं पि संजदत्तणेण एयत्ताविरोहा। ण च एयत्तमणेयत्तं वा अण्णोण्णेण पुधभूदमत्थि, अणुवलंभादो।

वेदणीयस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ, सादावेदणीयं असादावेदणीयं चेव ॥ १७ ॥

विस्सरणालुवसिस्ससंभालणट्ठमिदं सुत्तं, बज्झमाणपयडिमेत्तंतरंगकारणपदुप्पायणट्ठं वा। सेसं सुगमं।

एदासिं दोण्हं पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ १८ ॥

सादासादवेदणीयपयडीणं दोण्हं पि जुगवं बंधो णत्थि, तेसिं बंधकारणविसोहिसंकिलेसाणमक्कमेण पउत्तीए अभावादो। तेणेदेसिं दोण्हमेगं ठाणमिदि ण घडदे; किंतु दोण्हं वे ट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं ? बंधकारणविसोहि-संकिलेसाणं वे भेदादो होंतु णाम वेदणीयस्स मूलपयडीए सादावेदणीयमसादावेदणीयमिदि वेण्णि ट्ठाणाणि, दोण्हमक्कमेग बंधाभावा, मूलपयडिवदिरित्तुत्तरपयडीणमभावादो च। किंतु गंथयारेण एसो भेदो ण विवक्खिओ। को पुण गंथयारस्स अहिप्पाओ ? उच्चदे— एदेसिं दोण्हं पि एक्कम्हि चेव ट्ठाणं होदि त्ति उत्ते एक्कसंखावट्ठिदत्तादो एक्कम्हि चेव ट्ठाणमिदि घेत्तव्वं, अण्णहा ट्ठाणस्स एयत्तविरोहादो। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ १९ ॥

संजदस्सेत्ति वुत्ते जाव सजोगिभयवंतो ताव घेत्तव्वं, ण परदो; तत्थेदस्स बंधाभावा । सेसं सुगमं ।

मोहणीयस्स कम्मस्स दस ट्ठाणाणि, वावीसाए एक्कवीसाए सत्तारसण्हं तेरसण्हं णवण्हं पंचण्हं चदुण्हं तिण्हं दोण्हं एक्किस्से ठाणं चेदि ॥ २० ॥

एदं दव्वट्ठियणयसुत्तं । कुदो ? बीजीभूदत्तादो ।

तत्थ इमं वावीसाए ट्ठाणं, मिच्छत्तं सोलस कसाया इत्थिवेद-पुरिसवेद-णउंसयवेद तिण्हं वेदाणमेक्कदरं हस्सरदि-अरदिसोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा । एदासिं वावीसाए पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ २१ ॥

मिच्छत्त-सोलसकसाया धुवबंधिणो, उदएणेव बंधेण परोप्परेण विरोहाभावा । तेण तत्थ एगदरसद्दो ण पउत्तो । इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदाणं हस्सरदि-अरदिसोगजुगलाणं च उदएणेव बंधेण वि विरोहो अत्थि त्ति जाणावणट्ठमेक्कदरसद्दपओओ कओ । भय-दुगुंछासु पुण ण कओ, बंधं पडि विरोहाभावा । एदासिमेक्कम्हि चेव अवट्ठाणं होदि । कत्थ ? वावीसाए । कथमेक्कम्हि आहाराहेयभावो ? ण, संखाणादो संखेज्जस्स कथंचि पुधभूदस्स आधारत्ताविरोहा ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ २२ ॥

कुदो ? मिच्छत्तस्सण्णत्थ बंधाभावा । तं पि कुदो ? अण्णत्थ मिच्छत्तोदयाभावा । ण च कारणेण विणा कज्जस्सुप्पत्ती अत्थि, अइप्पसंगादो । तम्हा मिच्छादिट्ठी चेव सामी होदि । एत्थ बंधभंगा छ (६) ।

तत्थ इमं एक्कवीसाए ट्ठाणं मिच्छत्तं णवुंसयवेदं वज्ज ॥ २३ ॥

एत्थ णउंसयवेदं च इदि चसद्दो कायव्वो, अण्णहा समुच्चयस्स अवगमोवायाभावा ? ण, चसद्देण विणा वि तदवगमादो । वदिरेगपज्जवट्ठियणयाणुग्गहट्ठमेदं सुत्तं भणिय विहिणयाणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोलस कसाया इत्थिवेद पुरिसवेदो दोण्हं वेदाणमेक्कदरं हस्सरदि-अरदिसोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा। एदासिं एक्कवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ २४ ॥

एक्कवीसाए इदि संबंधे छट्ठी। एदासिं पयडीणं एक्कम्हि ट्ठाणमिदि उत्ते एक्कवीसाए त्ति घेत्तव्वं, एक्कवीसपयडिबंधपाओग्गपरिणामे वा। सेसं सुगमं। एत्थ भंगा चत्तारि (४)।

तं सासणसम्मादिट्ठिस्स ॥ २५ ॥

कुदो ? उवरि अणंताणुबंधिचदुक्कस्स इत्थिवेदस्स य बंधाभावा। तं पि कुदो ? तत्थ अणंताणुबंधीणमुदयाभावा। ण च कारणेण विणा कज्जं संभवदि, विरोहादो।

तत्थ इमं सत्तरसण्हं ट्ठाणं अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोभं इत्थिवेदं वज्ज ॥ २६ ॥

एक्कवीसपयडीसु अणंताणुबंधिचदुक्के अवणिदे सत्तारस पयडीओ हवंति। एदं सुत्तं वदिरेगणयाणुग्गहट्ठं। ताओ कदमाओ त्ति पुच्छिदमंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

बारस कसाय पुरिसवेदो हस्सरदि-अरदिसोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा। एदासिं सत्तरसण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ २७ ॥

कम्हि एक्कम्हि ? सत्तारससंखाए एदासिं बंधजोग्गजीवपरिणामे वा त्ति घेत्तव्वं। सेसं सुगमं। भंगा दोण्णि (२)।

तं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ २८ ॥

कुदो ? उवरि अपच्चक्खाणचदुक्कस्स बंधाभावा। तं पि कुदो ? सोदयाभावा। तदो एदाणि दो गुणट्ठाणाणि एदस्स बंधट्ठाणस्स सामित्तं पडिवज्जंति।

तत्थ इमं तेरसण्हं ट्ठाणं अपच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभं वज्ज ॥ २९ ॥

वज्जेत्ति उत्ते वज्जिय इदि घेत्तव्वं। सेसं सुगमं। पुव्वुत्तसत्तारसपयडीसु अपच्चक्खाणचदुक्के अवणिदे तेरस पयडीओ हवंति। ताओ कदमाओ त्ति भत्तीए पुच्छिदे तस्साणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि, पुव्वमणुमाणेण अवगयट्ठस्स दढीकरणट्ठं वा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठ कसाया पुरिसवेदो हस्सरदि-अरदिसोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा। एदासिं तेरसण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ३० ॥

कथं एक्कम्हि ? तेरससंखाए। कथं तेरसण्हमेयत्तं ? संखासामण्णावेक्खाए, तेरसण्हं पयडीणं बंधपाओग्गपरिणामे वा। सेसं सुगमं। एत्थ भंगा दोण्णि (२)।

तं संजदासंजदस्स ॥ ३१ ॥

कुदो ? उवरि पच्चक्खाणचदुक्कस्स बंधाभावा। तं पि कुदो ? तत्थ तस्सुदयाभावा। तेण संजदासंजदो चेव सामी होदि।

तत्थ इमं णवण्हं ट्ठाणं पच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोहं वज्ज ॥ ३२ ॥

तेरससु पयडीसु पच्चक्खाणचदुक्के अवणिदे णव पयडीओ हवंति। वदिरेगमुहेण णवपयडिट्ठाणं परूविय 'अन्वय-व्यतिरेकाभ्यां वस्तुनिर्णयः' इति न्यायात् अण्णयमुहेण परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

चदुसंजुलणा पुरिसवेदो हस्सरदि-अरदिसोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा। एदासिं णवण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ३३ ॥

सुगममेदं। भंगा दोण्णि (२)।

तं संजदस्स ॥ ३४ ॥

संजदस्सेत्ति उत्ते पमत्तादि-अपुव्वंताणं संजदाणं गहणं, उवरि छण्णोकसायाणं बंधाभावादो णवण्हं ट्ठाणस्स संभवाभावा।

तत्थ इमं पंचण्हं ट्ठाणं हस्सरदि-अरदिसोग-भयदुगुंछं वज्ज ॥ ३५ ॥

णवसु एदाओ चत्तारि पयडीओ अवणिदे अवसेसाओ पंच होंति। अत्थावत्तीदो पेक्खापुव्वयारिसिस्सेहि जदिवि अवगदाओ सेसपंचपयडीओ, तो वि सद्दाणुसारिसिस्साणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

चदुसंजलणं पुरिसवेदो। एदासिं पंचण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ३६ ॥

तत्थ पंचसंखाए, पंचपयडिबंधजोग्गपरिणामे वा। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तं संजदस्स ॥ ३७ ॥

कुदो ? अण्णत्थ पंचपयडिबंधाभावा ।

तत्थ इमं चदुण्हं ट्ठाणं पुरिसवेदं वज्ज ॥ ३८ ॥

पंचसु पयडीसु पुरिसवेदे अवणिदे अवसेसाओ चत्तारि हवंति । जदि वि तेसिं णामाणि अत्थावत्तीदो पमाणाणुसारिसिस्सेहिं अवगदाणि, तो वि सद्दाणुसारिसिस्साणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

चदुसंजलणं, एदासिं चदुण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ३९ ॥

सुगममेदं ।

तं संजदस्स ॥ ४० ॥

एदं पि सुगमं ।

तत्थ इमं तिण्हं ट्ठाणं कोधसंजलणं वज्ज ॥ ४१ ॥

चदुसु पयडीसु कोधसंजलणे अवणिदे अवसेसाओ तिण्णि पयडीओ हवंति । सेसं सुगमं ।

माणसंजलणं मायासंजलणं लोभसंजलणं, एदासिं तिण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ४२ ॥

सुगममेदं ।

तं संजदस्स ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

तत्थ इमं दोण्हं ट्ठाणं माणसंजलणं वज्ज ॥ ४४ ॥ मायासंजलणं लोभसंजलणं, एदासिं दोण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ४५ ॥ तं संजदस्स ॥ ४६ ॥ तत्थ इमं एक्किस्से ट्ठाणं मायासंजलणं वज्ज ॥ ४७ ॥ लोभसंजलणं, एदिस्से एक्किस्से पयडीए एक्कम्हि चेव ट्ठाणं बंधमाणस्स ॥ ४८ ॥ तं संजदस्स ॥ ४९ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आउअस्स कम्मस्स चत्तारि पयडीओ ॥ ५० ॥

एदं संगहणयाणुग्गहकारि सुत्तं, उवरि उच्चमाणासेसत्थमवगाहिय अवट्ठाणादो ।

णिरआउअं तिरिक्खाउअं मणुसाउअं देवाउअं चेदि ॥ ५१ ॥

ण चेदं णिरत्थयं सुत्तं, विस्सरणालुअसिस्ससंभालणट्टत्तादो ।

जं तं णिरयाउअं कम्मं बंधमाणस्स ॥ ५२ ॥

एदस्स 'एकम्हि चेव अवट्ठाणं होदि' त्ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा सुत्तस्स अकिरियत्तावत्तीदो । कत्थ अवट्ठाणं ? एक्कसंखाए, णिरयाउअबंधपाओग्गपरिणामे वा । किमट्ठमेत्थ एक्कम्हि चेव ट्ठाणमिदि वेदणीयस्सेव ण परूविदं ? ण एस दोसो, संखं पडुच्च चदुण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ठाणं होदि; परिणामं पडुच्च आउअस्स कम्मस्स चत्तारि ट्ठाणाणि होंति त्ति जाणावणट्ठं तहा अउत्तीदो ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ५३ ॥

तं बंधट्ठाणं मिच्छादिट्ठिस्स चेव होदि, मिच्छत्तोदएण विणा णिरआउअस्स बंधाभावा ।

जं तं तिरिक्खाउअं कम्मं बंधमाणस्स ॥ ५४ ॥

एदस्स अत्थो पुव्वं व परूवेदव्वो ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ ५५ ॥

तं बंधट्ठाणमेदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं होदि, एदेसु तिरिक्खाउअबंधपाओग्गपरिणामुवलंभा ।

जं तं मणुसाउअं कम्मं बंधमाणस्स ॥ ५६ ॥

सुगममेदं ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ ५७ ॥

कुदो ? उवरिमगुणट्ठाणेसु मणुसाउअबंधपरिणामाभावा । सम्मामिच्छादिट्ठिम्हि चत्तारि वि आउआणि बंधसरूवेण णत्थि त्ति घेत्तव्वं । कुदो ? तत्थेक्कस्स वि आउअस्स सामित्तपरूवणाभावा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जं तं देवाउअं कम्मं बंधमाणस्स ॥ ५८ ॥

सुगममेदं ।

तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ ५९ ॥

एदं पि सुगमं ।

णामस्स कम्मस्स अट्ठ ट्ठाणाणि, एक्कत्तीसाए तीसाए एगूणतीसाए अट्ठवीसाए छव्वीसाए पणुवीसाए तेवीसाए एक्किस्से ट्ठाणं चेदि ॥ ६० ॥

एदं संगहणयसुत्तं, बीजपदत्तादो । कधमेदम्हादो उवरि उच्चमाणसव्वत्थावगमो ? ण एस दोसो, एदस्सुवरि सव्वत्थं परूवयंत-आइरियवक्खाणादो तदवगमो विरोहाभावा । विसेसरुइसिस्साणुग्गहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तत्थ इमं अट्ठावीसाए ट्ठाणं, णिरयगदी पंचिंदियजादी वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वेउव्वियसरीरअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं अप्पसत्थविहायगई तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-दुहव-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिणणामं । एदासिं अट्ठावीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ६१ ॥

णिरयगदीए सह एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादीओ किण्ण बज्झंति ? ण, णिरयगइबंधेण सह एदासिं बंधाणं उत्तिविरोहादो । एदेसिं संताणमक्कमेण एयजीवम्हि उत्तिदंसणादो ण विरोहो त्ति चे, होदु संतं पडि विरोहाभावो, इच्छिज्जमाणत्तादो । ण बंधेण अविरोहो, तथोवदेसाभावा । ण च संतम्हि विरोहाभावं दट्ठूण बंधम्हि वि तदभावो वोत्तुं सक्किज्जइ, बंध-संताणमेयत्ताभावा । णिरयगईए सह जासिमक्कमेण उदओ अत्थि ताओ णिरयगईए सह बंधमागच्छंति त्ति केइं भणंति, तण्ण घडदे, थिर-सुहाणं धुवोदयत्तणेण णिरयगदीए सह उदयमागच्छंत्ताणं णिरयगदीए सह बंधप्पसंगादो । ण च एवं, सुहाणमसुहेहि सह बंधाभावा । तदो णिरयगदीए जासिमुदओ णत्थि, एयंतेण तासिं बंधो णत्थि चेव । जासिं पुण उदओ अत्थि, तासिं णिरयगदीए सह केसिं पि बंधो होदि, केसिं पि ण होदि त्ति घेत्तव्वं । एवमण्णासिं पि णिरयगदीए बंधेण सह विरुद्धबंधपयडीणं परूवणा कादव्वा ।

णिरयगइं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ६२ ॥

तं बंधट्ठाणं कस्स होदि त्ति पुच्छिदे मिच्छादिट्ठिस्स होदि । कुदो ? उवरिमगुणट्ठाणेसु णिरयगदीए बंधाभावा ।

तिरिक्खगदिणामाए पंच ट्ठाणाणि, तीसाए एगूणतीसाए छव्वीसाए पणुवीसाए तेवीसाए ट्ठाणं चेदि ॥ ६३ ॥

तिरिक्खगदिणामाए पयडीए त्ति संबंधो कायव्वो । एदं संगहणयसुत्तं, एदम्मि उवरि उच्चमाणसव्वत्थसंभवादो ।

तत्थ इमं पढमतीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं छण्हं संट्ठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्हं संघडणाणमेक्कदरं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोवं दोण्हं-विहायगदीणमेक्कदरं तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुभासुभाणमेक्कदरं सुहव-दुहवाणमेक्कदरं सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च। एदासिं पढमतीसाए पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ६४ ॥

एदासिं उत्तासेसपयडीणं एक्कम्हि चेव तीससंखाणम्मि एदासिमक्कमेण बंधजोग्गपरिणामे वा ट्ठाणमवट्ठाणं होदि । सेसं सुगमं । एत्थ भंगपमाणं ४६०८ ।

तिरिक्खगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-उज्जोवसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ६५ ॥

तं मिच्छादिट्ठिस्सेत्ति एदं चेव वत्तव्वं, णेदरं, पयडिणिद्देसेणेव तदवगमादो ? ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं तदुप्पत्तीदो । एदं बंधट्ठाणमुवरिमाणं णत्थि । कुदो ? हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं सासणे बंधाभावा ।

तत्थ इमं विदियतीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वज्ज पंचण्हं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं असंपत्तसेवट्टसंघडणं वज्ज पंचण्हं संघडणाणमेक्कदरं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोवं दोण्हं विहायगदीणमेक्कदरं तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुहासुहाणमेक्कदरं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहव-दुहवाणमेक्कदरं सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीण-मेक्कदरं णिमिणणामं । एदासिं विदियतीसाए पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ६६ ॥

पुव्विल्लतीसट्ठाणादो कथमेदस्स भेदो ? हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणमभावेण । तीसाहारं पडि ण भेद इदि चे ण, छस्संट्ठाणसंघडणपडिबद्धतीसठाणादो पंचसंठाणसंघडणपडिबद्धतीसट्ठाणस्स एयत्तविरोहा । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-उज्जोवसंजुत्तं बंधमाणस्स तं सासणसम्मादिट्ठिस्स ॥ ६७ ॥

अंतिमसंट्ठाण-संघडणाणि सासणस्स किण्ण बंधमागच्छंति ? ण, तत्थ तब्बंधजोग्गतिव्वसंकिलेसाभावादो । सेसं सुगमं । एत्थ भंगपमाणं ३२०० ।

तत्थ इमं तदियतीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तिण्हं जादीणमेक्कदरं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोवं अप्पसत्थविहाय-गदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुभासुभाणमेक्कदरं दुभग-दुस्सर-अणादेज्जं जस-कित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं । एदासिं तदियतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ६८ ॥

विगलिंदियाणं बंधो उदओ वि हुंडसंठाणमेवेत्ति सुत्ते उत्तं । णेदं घडदे, विगलिंदियाणं छस्संठाणुवलंभा ? ण एस दोसो, सव्वावयवेसु णियदसरूवपंचसंठाणेसु वे-तिण्णि-चदु-पंचसंठाणाणं संजोगेण हुंडसंठाणमणेयभेदभिण्णमुप्पज्जदि । ण च पंचसंट्ठाणाणि पच्चवयवमेरिसाणि त्ति णज्जंते, संपहि तथाविधोवदेसाभावा । ण च तेसु अविण्णादेसु एदेसिमेसो संजोगो त्ति णादुं सक्किज्जदे । तदो सव्वे हि विगलिंदिया हुंडसंठाणा वि होंता ण णज्जंति त्ति सिद्धं । विगलिंदियाणं बंधो उदओ वि दुस्सरं चेव होदि त्ति सुत्ते उत्तं । भमरादओ सुस्सरा वि दिस्संति, तदो कथमेदं घडदे ? ण, भमरादिसु कोइलासु व महुरसराणुवलंभा । भिण्णरुचीदो केसिं पि जीवाणमहुरो वि सरो महुरो व्व रुचइ त्ति तस्स सरस्स महुरत्तं किण्ण इच्छिज्जदि ? ण एस दोसो, पुरिसिच्छादो वत्थुपरिणामाणुवलंभा । ण च णिंबो केसिं पि रुच्चदि त्ति महुरत्तं पडिवज्जदे, अव्ववत्थावत्तीदो । एत्थ भंगा चउवीसा (२४) ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खगदिं विगलिंदिय-पज्जत्त-उज्जोवसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ६९ ॥

सुगममेदं ।

तत्थ इमं पढमऊणतीसाए ठाणं । जथा, पढमतीसाए भंगो । णवरि उज्जोवं वज्ज । एदासिं पढमउणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ७० ॥

ऊणतीसाए त्ति उत्ते एगूणतीसाए त्ति घेत्तव्वं, दोआदीहि ऊणतीसाए गहणं ण होदि । कुदो ? रूढिबलभावादो । जहा इदि उत्ते तं जहा इदि सिस्सपुच्छावयणं त्ति घेत्तव्वं । सेसं सुगमं ।

तिरिक्खगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ७१ ॥

एदं पुव्वुत्तबंधट्ठाणसामित्तसुत्तं सुगममिदि ण एत्थ किंचि उच्चदे ।

तत्थ इमं विदियएगूणतीसाए ट्ठाणं । जथा, विदियतीसाए भंगो । णवरि उज्जोवं वज्ज । एदासिं विदियाए ऊणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ७२ ॥

सुगममेदमणंतरमेव उत्तत्थत्तादो ।

तिरिक्खगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं सासणसम्मादिट्ठिस्स ॥ ७३ ॥

सुगममेदं सामित्तसुत्तं ।

तत्थ इमं तदियऊणतीसाए ठाणं । जथा, तदियतीसाए भंगो । णवरि उज्जोवं वज्ज । एदासिं तदियऊणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ७४ ॥

एदं वि सुगमं ।

तिरिक्खगदिं विगलिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ७५ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ इमं छव्वीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी एइंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं आदावुज्जोवाणमेक्कदरं थावर-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुहासुहाणमेक्कदरं दुहव-अणादेज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं। एदासिं छव्वीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ७६ ॥

एइंदियाणमंगोवंगं किण्ण परूविदं ? ण, तेसिं णलय-बाहू-णिदंब-पट्ठि-सीसोराणमभावादो तदभावा। एइंदियाणं छ संठाणाणि किण्ण परूविदाणि ? ण, पच्चवयवं परूविदलक्खणपंचसंठाणाणं समूहसरूवाण छसंठाणत्थित्तविरोहा। भंगा सोलस (१६)।

तिरिक्खगदिं एइंदिय-बादर-पज्जत्त-आदावुज्जोवाणमेक्कदरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ७७ ॥

कुदो ? अण्णेसिमेइंदियजादीए बंधाभावा।

तत्थ इमं पढमपणुवीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी एइंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-थावरं बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तं पत्तेग-साधारणसरीराणमेक्कदरं थिराथिराणमेक्कदरं सुहासुहाणमेक्कदरं दुहव-अणादेज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं। एदासिं पढमपणुवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ७८ ॥

अगुरुअलहुअत्तं णाम सव्वजीवाणं परिणामियमत्थि, सिद्धेसु खीणासेसकम्मेसु वि तस्सुवलंभा। तदो अगुरुलहुअकम्मस्स फलाभावा तस्साभावो इदि ? एत्थ परिहारो उच्चदे— होज्ज एसो दोसो, जदि अगुरुअलहुअं जीवविवाई होदि। किंतु एदं पोग्गलविवाई, अणंताणंतपोग्गलेहि गरुवपासेहि आरद्धस्स सरीरस्स अगुरुअलहुअत्तुप्पायणादो। अण्णहा गरुअसरीरेणोट्ठद्धो जीवो उट्ठेदुं पि ण सक्केज्ज। ण च एवं, सरीरस्स गुरुअलहुअत्ताणमणुवलंभा। सेसं सुगमं। एत्थ भंगा वत्तीसं (३२)।

तिरिक्खगदिं एइंदिय-पज्जत्त-बादर-सुहुमाणमेक्कदरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ७९ ॥

कुदो ? उवरिमाणमेइंदियबादर-सुहुमाणं बंधाभावा। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ इमं विदियपणुवीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-चदुण्हं जादीणमेक्कदरं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरु-अलहुअ-उवघाद-तस-बादर-अपज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दुहव-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिणं। एदासिं विदियपणुवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ८० ॥

परघादुस्सास-विहायगदि-सरणामाणमेत्थ बंधो णत्थि। कुदो? अपज्जत्तबंधेण सह विरोहा, अपज्जत्तकाले एदेसिमुदयाभावादो च। जेसिं जत्थ उदओ अत्थि तेसिं चेव तत्थ बंधो। ण थिर-सुहेहि अणेयंतो, सुहासुहपयडीणं अधुवबंधीणमक्कमेण बंधाभावा। सेसं सुगमं। एत्थ भंगा चत्तारि (४)।

तिरिक्खगदिं तस-अपज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ८१ ॥

सुगममेदं।

तत्थ इमं तेवीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदी एइंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-थावरं बादर-सुहुमाणमेक्कदरं अपज्जत्तं पत्तेय-साधारणसरीराणमेक्कदरं अथिर-असुह-दुहव-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिणं। एदासिं तेवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ८२ ॥

एत्थ संघडणस्स बंधो किण्ण उत्तो? ण, एइंदिएसु संघडणस्सुदयाभावा। एत्थ भंगा चत्तारि (४)। सेसं सुगमं।

तिरिक्खगदिं एइंदिय-अपज्जत्त-बादर-सुहुमाणमेक्कदरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ८३ ॥

सुगममेदं।

मणुसगदिणामाए तिण्णि ट्ठाणाणि, तीसाए एगूणतीसाए पणुवीसाए ट्ठाणं चेदि ॥ ८४ ॥

एदं संगहणयस्स सुत्तं, उवरि उच्चमाणसव्वत्थस्स आधारभावेण अवट्ठाणादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्थ इमं तीसाए ट्ठाणं, मणुसगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं वण्ण-गंध-रस-फासं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुहासुहाणमेक्कदरं सुभग-सुस्सर-आदेज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणं तित्थयरं। एदासिं तीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ८५ ॥

तित्थयरेण सह अजसकित्तीए अप्पसत्थाए तेण सह उदयमणागच्छमाणाए कथं बंधो ? ण, तेसिमुदयाणं व बंधाणं विरोहाभावा। दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं धुवबंधित्तादो संकिलेसकाले वि बज्झमाणेण तित्थयरेण सह किण्ण बंधो ? ण, तेसिं बंधाणं तित्थयरबंधेण सम्मत्तेण य सह विरोधादो। संकिलेसकाले वि सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं चेव बंधुवलंभा। एत्थ भंगा अट्ठ (८)।

मणुसगदिं पंचिंदिय-तित्थयरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं असंजदसम्मादिट्ठिस्स ॥ ८६ ॥

सुगममेदं सामित्तसुत्तं।

तत्थ इमं पढमएगूणतीसाए ट्ठाणं। जथा, तीसाए भंगो। णवरि विसेसो तित्थयरं वज्ज। एदासिं पढमएगूणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ८७ ॥

सुगममेदं।

मणुसगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ ८८ ॥

बंधट्ठाणाणं सामित्तं किमट्ठं उच्चदे ? ण, अण्णहा अउत्तसमाणदावत्तीदो। सेसं सुगमं।

तत्थ इमं विदियएगूणतीसाए ट्ठाणं, मणुसगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं वज्ज पंचण्हं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं असंपत्तसेवट्टसंघडणं वज्ज पंचण्हं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संघडणाणमेक्कदरं वण्ण-गंध-रस-फासं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं दोण्हं विहायगदीणमेक्कदरं तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुभासुभाणमेक्कदरं सुहवदुहवाणमेक्कदरं सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणं। एदासिं विदियएगूणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ८९ ॥

सेसं सुगमं । भंगा बत्तीससयं (३२००) ।

मणुसगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं सासणसम्मादिट्ठिस्स ॥ ९० ॥

एदं पि सुगमं ।

तत्थ इमं तदियएगूणतीसाए ठाणं, मणुसगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं छण्हं संट्ठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्हं संघडणाणमेक्कदरं वण्ण-गंध-रस-फासं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सासं दोण्हं विहायगदीणमेक्कदरं-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुहासुहाणमेक्कदरं सुभग-दुभगाणमेक्कदरं सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं । एदासिं तदियएगूणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ९१ ॥

कम्हि अवट्ठाणं ? एगूणतीसाए संखाए, एगूणतीसपयडिबंधपाओग्गपरिणामे वा । भंगा छादालसयं अट्ठुत्तरं (४६०८) । सेसं सुगमं ।

मणुसगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ९२ ॥

एदं पि सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ इमं पणुवीसाए ट्ठाणं, मणुसगदी पंचिंदियजादी ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं हुंडसंठाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं असंपत्तसेवट्टसंघडणं वण्ण-गंध-रस-फासं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-तस-बादर-अपज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिणं। एदासिं पणुवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ९३ ॥

अपज्जत्तेण सह थिरादीणि किण्ण बज्झंति ? ण, संकिलेसद्धाए बज्झमाणअपज्जत्तेण सह थिरादीणं विसोहिपयडीणं बंधविरोहा। सेसं सुगमं।

मणुसगदिं पंचिंदियजादि-अपज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स ॥ ९४ ॥

सुगममेदं।

देवगदिणामाए पंच ट्ठाणाणि, एक्कत्तीसाए तीसाए एगुणतीसाए अट्ठवीसाए एक्किस्से ट्ठाणं चेदि ॥ ९५ ॥

एदं संगहणयसुत्तं, उवरि उच्चमाणमसेसमत्थमवगाहिय अवट्ठिदत्तादो।

तत्थ इमं एक्कत्तीसाए ट्ठाणं, देवगदी पंचिंदियजादी वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं वेउव्विय-आहारअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरं। एदासिमेक्कत्तीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ९६ ॥

देवगदीए सह छ संघडणाणि किण्ण बज्झंति ? ण, देवेसु संघडणाणमुदयाभावा। सेसं सुगमं।

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-आहार-तित्थयरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं अप्पमत्तसंजदस्स वा अपुव्वकरणस्स वा ॥ ९७ ॥

सुगममेदं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ इमं तीसाए ठाणं। जथा, एक्कत्तीसाए भंगो। णवरि विसेसो तित्थयरं वज्ज।

एदासिं तीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ९८ ॥

एत्थ अथिरादीणं किण्ण बंधो होदि ? ण, एदासिं विसोहीए बंधविरोहा। सेसं सुगमं।

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-आहारसंजुत्तं बंधमाणस्स तं अप्पमत्तसंजदस्स वा अपुव्वकरणस्स वा ॥ ९९ ॥

सुगममेदं।

तत्थ इमं पढमएगूणतीसाए ट्ठाणं। जथा, एक्कत्तीसाए भंगो। णवरि विसेसो, आहारसरीरं वज्ज।

एदासिं पढमएगूणतीसाए पयडीणं एक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ १०० ॥

वज्ज वज्जिदव्वमिदि घेत्तव्वं। सेसं सुगमं।

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-तित्थयरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं अप्पमत्तसंजदस्स वा अपुव्वकरणस्स वा ॥ १०१ ॥

सुगममेदं।

तत्थ इमं विदियएगूणतीसाए ट्ठाणं, देवगदी पंचिंदियजादी वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं वेउव्वियसरीरअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं पसत्थविहायगदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुभासुभाणमेक्कदरं सुभग-सुस्सर-आदेज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिण-तित्थयरं। एदासिमेगूणतीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ १०२ ॥

देवगदीए सह उज्जोवस्स किण्ण बंधो होदि ? ण, देवगदीए तस्स उदयाभावा, तिरिक्खगदिं मोत्तूण अण्णगदीहि सह तस्स बंधविरोधादो च। देवेसु उज्जोवस्सुदयाभावे देवाणं देहदित्ती कुदो होदि ? वण्णणामकम्मोदयादो। उज्जोउदयजाददेहदित्ती सुट्ठु त्थोवा, पाएण थोवावयवपडिणियदा, तिरिक्खगदिउदयसंबद्धा च। तेण उज्जोउदओ तिरिक्खेसु चेव, ण देवेसु; विरोहादो। भंगा अट्ठ ८। सेसं सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्त-तित्थयरसंजुत्तं बंधमाणस्स तं असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा ॥ १०३ ॥

सुगममेदं ।

तत्थ इमं पढमअट्ठावीसाए ट्ठाणं, देवगदी पंचिंदियजादी वेउव्विय-तेजा कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं वेउव्वियअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं पसत्थविहायगदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणणामं । एदासिं पढमअट्ठवीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ १०४ ॥

एत्थ अजसकित्तीए बंधो णत्थि, पमत्तगुणट्ठाणे तिस्से बंधविणासादो । सेसं सुगमं ।

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं अप्पमत्तसंजदस्स वा अपुव्वकरणस्स वा ॥ १०५ ॥

एदं पि सुगमं ।

तत्थ इमं विदियअट्ठावीसाए ट्ठाणं, देवगदी पंचिंदियजादी वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं वेउव्वियसरीरअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासं पसत्थविहायगदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरं थिराथिराणमेक्कदरं सुभासुभाणमेक्कदरं सुभग-सुस्सर-आदेज्जं जसकित्ति अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणं । एदासिं विदियअट्ठावीसाए पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ १०६ ॥

एत्थ भंगा अट्ठ (८) । सेसं सुगमं ।

देवगदिं पंचिंदिय-पज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ १०७ ॥

संजदस्सेत्ति उत्ते पमत्तसंजदग्गहणं । कुदो ? उवरिमाणमथिरासुभ-अजसकित्तीणं बंधाभावा । सेसं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ इमं एक्किस्से ट्ठाणं जसकित्तिणामं । एदिस्से पयडीए एक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ १०८ ॥ बंधमाणस्स तं संजदस्स ॥ १०९ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । होदु णाम एगतीसाए तीसाए एगुणतीसाए अट्ठावीसाए ति चदुण्हं ट्ठाणाणं देवगदीए सह बंधो, ण एक्किस्से । कुदो ? देवगदिबंधस्स पंचिंदियजादिआदिअट्ठावीसपयडिबंधाविणाभावित्तणेण एगत्तविरोहादो चे, ण एस दोसो, इट्ठत्तादो । ण सुत्तविरोहो होदि, तस्स गुणट्ठाणणिबंधणत्तेण भूदपुव्वणयं पडुच्च संजुत्तपदुप्पायणे वावदस्स देवगदिबंधाभावे वि अणियट्टिम्मि कोधसंजलणबंधोवरमे वि अधापवत्तसंकमपवुत्ति व्व तदुववत्तीदो । एवं संते अपुव्वकरणम्हि णिद्दा-पयलाणं बंधवोच्छेदे जादे अधापवत्तसंकमो पसज्जदि त्ति णासंकणिज्जं, तस्स सव्वसंकमपुव्वसेससंतकम्मविसयस्स तदभावे तस्स वि अभावादो ।

गोदस्स कम्मस्स दुवे पयडीओ, उच्चागोदं चेव णीचागोदं चेव ॥ ११० ॥

णेदं सुत्तं पुणरुत्तदोसेण दूसिज्जदि, विस्सरणालुअसिस्सस्स संभालणट्ठं पुणो पुणो परूवणाए दोसाभावा ।

जं तं णीचागोदं कम्मं ॥ १११ ॥ बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा ॥ ११२ ॥

कुदो ? उवरि णीचागोदस्स बंधाभावा ।

जं तं उच्चागोदं कम्मं ॥ ११३ ॥

तमेगं ठाणमिदि अज्झाहारो कायव्वो ।

बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ ११४ ॥

सुगममेदं ।

अंतराइयस्स कम्मस्स पंच पयडीओ, दाणंतराइयं लाहंतराइयं भोगंतराइयं परिभोगंतराइयं वीरियंतराइयं चेदि ॥ ११५ ॥

सुगममेदं ।

एदासिं पंचण्हं पयडीणमेक्कम्हि चेव ट्ठाणं ॥ ११६ ॥

एदं पि सुगमं ।

बंधमाणस्स तं मिच्छादिट्ठिस्स वा सासणसम्मादिट्ठिस्स वा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वा असंजदसम्मादिट्ठिस्स वा संजदासंजदस्स वा संजदस्स वा ॥ ११७ ॥

सुगममेदं । एवं ठाणसमुक्कित्तणा णाम विदिया चूलिया समत्ता ।

तदिया चूलिया

इदाणिं पढमसम्मत्ताहिमुहो जाओ पयडीओ बंधदि ताओ पयडीओ कित्तइस्सामो ॥ १ ॥

पयडिसमुक्कित्तणं ट्ठाणसमुक्कित्तणं च भणिदाणंतरं तिण्णिमहादंडयपरूवणा किमट्ठमागदा ? पढमसम्मत्ताहिमुहमिच्छादिट्ठीहि बज्झमाणपयडीओ जाणावणट्ठमागदा । पुव्विल्लदो चूलियाओ किमट्ठमागदाओ ? ण, ताहि विणा उवरिमचूलियावगमणे उवायाभावा । ण च पयडीणं सरूवमजाणंतस्स तव्विसेसो जाणाविदुं सक्किज्जदे, अण्णत्थ तहाणुवलंभा । उवरि भण्णमाणचूलियाणमाहारभूदा दो चूलियाओ भणिदूण पढमसम्मत्ताभिमुहत्तणेण महत्तं संपत्तजीवेहि बज्झमाणत्तादो वा ।

पंचण्हं णाणावरणीयाणं णवण्हं दंसणावरणीयाणं सादावेदणीयं मिच्छत्तं सोलसण्हं कसायाणं पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा । आउगं च ण बंधदि । देवगदि-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरं समचउरससंठाणं वेउव्वियअंगोवंगं वण्ण-गंध-रस-फासं देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोदं पंचण्हमंतराइयाणमेदाओ पयडीओ बंधदि पढमसम्मत्ताभिमुहो सण्णिपंचिंदियतिरिक्खो वा मणुसो वा ॥ २ ॥

पंचण्हं णाणावरणीयाणमिच्चादी छट्ठीबहुवयणणिद्देसा विदियाए विहत्तीए अत्थे दट्ठव्वा । 'आउगं च ण बंधदि' एत्थतणचसद्दो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

समुच्चयत्थे दट्ठव्वो, आउगं च अण्णाओ च ण बंधदि त्ति । काओ अण्णाओ ? असाद-इत्थी-णउंसयवेद-आउचउक्क-अरदि-सोग-
णिरय-तिरिक्ख-मणुसगइ-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-ओरालियाहारसरीर-णग्गोहपरिमंडल-सादिय-खुज्ज-वामण-
हुंडसंठाण-ओरालियाहारसरीरंगोवंग-छसंघडण-णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी आदावुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-
थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साधारण-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-तित्थयर-णीचागोदमिदि एदाओ ण बंधदि,
विसुद्धतमपरिणामत्तादो । तित्थयराहारदुगं ण बंधदि, सम्मत्त-संजमाभावादो । एत्थ विसोधीए वड्ढमाणाए सम्मत्ताहिमुहमिच्छादिट्ठिस्स
पयडीणं बंधवोच्छेदक्कमो उच्चदे– सव्वो सम्मत्ताहिमुहमिच्छादिट्ठी सागरोवमकोडाकोडीए अंतो ठिदिं बंधदि, णो बहिद्धा । तदो
सागरोवमसदपुधत्तं हेट्ठा ओसरिदूण णिरआउअस्स बंधवोच्छेदो होदि । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण तिरिक्खाउअस्स बंधवो-
च्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण मणुसाउअस्स बंधवोच्छेदो होदि । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण देवाउअस्स बंधवो-
च्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण णिरयगदि-णिरयगदिपाओग्गाणुपुव्वीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो होदि । तदो सागरोव-
मसदपुधत्तं हेट्ठा ओसरिदूण सुहुमअपज्जत्तसाहारणसरीराणं अण्णोण्णसंजुत्ताणमेक्कसराहेण तिण्हं पयडीणं बंधवोच्छेदो । तदो सागरो-
वमसदपुधत्तमोसरिदूण सुहुम-अपज्जत्त-पत्तेयसरीराणं तिण्हमण्णोण्णसंजुत्ताणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोस-
रिदूण बादर-अपज्जत्त-साधारणसरीराणमण्णोण्णसंजुत्ताणं तिण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण
बादर-अपज्जत्त-पत्तेयसरीराणं तिण्हमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तं ओसरिदूण वेइंदिय-अपज्जत्ताणमण्णोण्णसं-
जुत्ताणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण तेइंदिय-अपज्जत्ताणमण्णोण्णसंजुत्ताणं दोण्हं पयडी-
णमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण चदुरिंदिय-अपज्जत्ताणमण्णोण्णसंजुत्ताणमेक्कसराहेण दोण्हं पयडीणं
बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण असण्णिपंचिंदिय-अपज्जत्ताणमण्णोण्णसंजुत्ताणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवो-
च्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण सण्णिपंचिंदिय-अपज्जत्ताणमण्णोण्णसंजुत्ताणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो ।
तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण सुहुम-पज्जत्त-साधारणाणमण्णोण्णसंजुत्ताणं तिण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरो-
वमसदपुधत्तमोसरिदूण सुहुम-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमण्णोण्णसंजुत्ताणं तिण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसद-
पुधत्तमोसरिदूण बादर-पज्जत्त-साधारणसरीराणं तिण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण बादर-
पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं एइंदिय-आदाव-थावराणं च एदासिं छण्हं पयडीणमण्णोण्णसंबद्धाणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोव-
मसदपुधत्तमोसरिदूण वेइंदिय-पज्जत्ताणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण तेइंदिय-पज्जत्ताणमेक्कसराहेण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण चदुरिंदिय-पज्जत्ताणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण असण्णिपंचिंदिय-पज्जत्ताणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण तिरिक्खगदि-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी उज्जोवाणं तिण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण णीचागोदस्स बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण अप्पसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं चदुण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण णवुंसयवेदबंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण वामणसंठाण-खीलियसरीरसंघडणाणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण खुज्जसंठाण-अद्धणारायणसरीरसंघडणाणं दोण्हं पयडीणं एक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण इत्थिवेदबंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण सादियसंठाण-णारायणसरीरसंघडणाणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण णग्गोधपरिमंडलसंठाण-वज्जणारायणसरीरसंघडणाणं दोण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण मणुसगदि-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वीणं पंचण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । तदो सागरोवमसदपुधत्तमोसरिदूण असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुभ-अजसकित्तीणं छण्हं पयडीणमेक्कसराहेण बंधवोच्छेदो । कुदो एस बंधवोच्छेदकमो ? असुह-असुहयर-असुहतमभेएण पयडीणमवट्ठाणादो । एसो पयडिबंधवोच्छेदकम्मो विसुज्झमाणाणं भव्वाभव्वमिच्छादिट्ठीणं साहारणो । किंतु तिण्णि करणाणि भव्वमिच्छादिट्ठिस्सेव, अण्णत्थ तेसिमणुवलंभादो । भणिदं च— खयउवसमो विसोही देसण पाओग्ग करणलद्धी य । चत्तारि वि सामण्णा करणं पुण होइ सम्मत्ते ॥ १ ॥ त्ति । एदासु पयडीसु बंधेण वोच्छिण्णासु अवसेसपयडीओ पुव्वं परूविदाओ तिरिक्खमणुसमिच्छादिट्ठी सम्मत्ताहिमुहो ताव बंधदि जाव मिच्छादिट्ठिचरिमसमयं पत्तो त्ति । एवं तदियचूलिया समत्ता ।

चउत्थी चूलिया

तत्थ इमो विदियो महादंडओ कादव्वो भवदि ॥ १ ॥

पढमदंडयादो अभिण्णस्स कथमेदस्स विदियत्तं ? ण, पयडिभेदेण सामित्तभेदेण च भेदुवलंभा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचण्हं णाणावरणीयाणं णवण्हं दंसणावरणीयाणं सादावेदणीयं मिच्छत्तं सोलसण्हं कसायाणं पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा। आउअं च ण बंधदि। मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा कम्मइय-सरीर-समचउरससंठाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं वण्ण-गंध-रस-फासं मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदी तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोदं पंचण्हमंतराइयाणं एदाओ पयडीओ बंधदि पढमसम्मत्ताहिमुहो अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइयं वज्ज देवो वा णेरइओ वा ॥ २ ॥

पढममहादंडए जथा ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं बंधवोच्छेदो जादो, तथा ताए चेव विसोहीए वट्टमाणाणं देव-णेरइयाणं तासिं पयडीणं बंधवोच्छेदो किण्ण जादो? उच्चदे—ण विसोही एक्कलिया मणुस-तिरिक्खगइउदएण सहकारिकारणेण वज्जिया तेसिं बंधवोच्छेदकरणक्खमा, कारणसामग्गीदो उप्पज्जमाणस्स कज्जस्स वियलकारणादो समुप्पत्तिविरोहा। देव-णेरइएसु तासिं धुवबंधित्तसंभवादो च ण बंधवोच्छेदो। एवं वज्जरिसहसंघडणस्स विणासे कारणं वत्तव्वं। 'आउगं च ण बंधदि' त्ति च-सद्दो समुच्चयट्ठत्तादो अण्णाओ च पयडीओ अबज्झमाणाओ सूचेदि। ताओ कदमाओ? असादावेदणीय-इत्थि-णउंसयवेद-अरदि-सोग-आउचउक्क-णिरय-तिरिक्ख-देवगदि-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चदुरिंदियजादि-वेउव्विय-आहारसरीरं समचउरससंठाणं वज्ज पंच संठाणं वेउव्वियाहार-सरीरअंगोवंगं वज्जरिसहसंघडणं वज्ज पंच संघडणं णिरय-तिरिक्ख-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी अप्पसत्थविहायगई आदाउज्जोव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद-तित्थयरमिदि। एदासिं बंधवोच्छेदक्कमो जहा पढममहादंडए उत्तो तथा वत्तव्वो। एवं चउत्थी चूलिया समत्ता।

पंचमी चूलिया

तत्थ इमो तदिओ महादंडओ कादव्वो भवदि ॥ १ ॥

एदस्स तदियत्तमउत्ते वि जाणिज्जदि, पुव्वं दोण्हं दंडयाणमुवलंभा? ण, जुत्तिवादे अकुसलसद्दाणुसारिसिस्साणुग्गहट्ठत्तादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आबाधाकंडयपमाणं पावेदि। तत्थ रूवूणाबाधाकंडयमेत्तट्ठिदीओ उक्कस्सट्ठिदीदो जाव ओहट्टंति ताव सा चेव उक्कस्सिया आबाधा होदि। एगाबाधाकंडएणूणउक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स समऊणतिण्णिवाससहस्साणि आबाधा होदि। एदेण सरूवेण सव्वट्ठिदीणं पि आबाधापरूवणं जाणिय कादव्वं। णवरि दोहिं आबाधाकंडएहिं ऊणियमुक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स आबाधा उक्कस्सिया दुसमऊणा होदि। तीहि आबाधाकंडएहि ऊणियमुक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स आबाधा उक्कस्सिया तिसमऊणा। चउहि आबाधाकंडएहि ऊणियमुक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणस्स आबाधा उक्कस्सिया चदुसमऊणा। एवं णेदव्वं जाव जहण्णट्ठिदि त्ति। सव्वाबाधाकंडएसु वीचारट्ठाणत्तं पत्तेसु समऊणाबाधाकंडयमेत्तट्ठिदीणमवट्ठिदा आबाधा होदि त्ति घेत्तव्वं।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ६ ॥

आबाधाए अवगदाए तदुवरि कम्मणिसेगो होदि त्ति अउत्ते वि जाणिज्जदि, तदो णेदं सुत्तं वत्तव्वमिदि? ण, पवयणे अणुमाणस्स पमाणत्ताभावादो। आगमो हि णाम केवलणाणपुरस्सरो पाएण अणिंदियत्थविसओ अचिंतियसहाओ जुत्तिगोयरादीदो। तदो ण तत्थ लिंगबलेण किंचि वोत्तुं सक्किज्जदि। तम्हा सुत्तमिदमाढवेदव्वं चेव। अथवा आबाधादो उवरि णिसेयरचणा होदि त्ति जदि वि जुत्तीए णव्वदि, तो वि किमुवरिमसव्वट्ठिदीसु परमाणुपोग्गलरचणा समाणा होदि, आहो असमाणा त्ति ण णव्वदे। तदो पदेसरयणासरूवपदंसणट्ठं वा आढवेदव्वमिदं सुत्तं। संपहि उक्कस्सट्ठिदीए पदेसरचणक्कमं परूवेमो। तं जहा– समयपबद्धस्स सव्वपदेसा अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा, सिद्धाणमणंतभागमेत्ता जदि वि होंति, तो वि संदिट्ठीए तिसट्ठिसदमेत्ता त्ति घेत्तव्वा ६३००। एत्थ णाणागुणहाणिसलागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंति। तं जहा– पढमणिसेओ अवट्ठिदहाणीए जेत्तियमद्धाणं गंतूण अद्धं होदि तमद्धाणं गुणहाणि त्ति उच्चदि। तस्स एगा सलागा णिक्खिविदव्वा। पुणो तत्तियं चेव अद्धाणमुवरि गंतूण पक्खेवो पदणिसेयस्स चदुभागो होदि। एदमद्धाणं विदिया दुगुणहाणि त्ति विदिया सलागा णिक्खिविदव्वा। एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमगुणहाणि त्ति। एदासिं सलागाणं सव्वसमासो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो मोहणीयणाणागुणहाणिसलागाणं तिण्णिसत्तभागमेत्ता त्ति उत्तं होदि। मोहणीयणाणागुणहाणिसलागा पुण परमगुरूवदेसेण पलिदोवमवग्गसलागद्धछेदेणूणपलिदोवमद्धछेदणमित्ता। णाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदिम्हि भागे हिदे गुणहाणी सा सव्वकम्माणं समाणा। कुदो? भज्जमाणाणुसारिभागहारादो। सव्वमेदं दव्वं पढमणिसेयपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्ता पढमणिसेया होंति। कुदो? पढमगुणहाणिम्हि पदिददव्वादो विदियादिगुणहाणीसु पदिददव्वस्स दुभाग-चदुब्भागत्तादिदंसणादो। तं पि कुदो? गुणहाणिं पडि अद्धद्धकमेण गोवुच्छविसेसाणं गमणुवलंभा। तं हि अवट्ठिदेण णिसेगभागहारेण दोगुण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हाणिपमाणेण विहज्जमाणपढमणिसेयाणमद्धद्धत्तुवलंभादो णव्वदे । एवमागददेसूणदिवड्ढगुणहाणीए संदिट्ठीए पणुवीसरूवूणसोलहसदाणं अट्ठावीससदभागमेत्ताए $\frac{१५७५}{१२८}$ समयपबद्धे भागे हिदे पढमणिसेओ आगच्छदि । एवं सव्वणिसेयाणं भागहारो जाणिय उप्पादेदव्वो । एत्थ णिसेगाणं संदिट्ठी ५१२ । ४८० । ४४८ । ४१६ । ३८४ । ३५२ । ३२० । २८८ । २५६ । २४० । २२४ । २०८ । १९२ । १७६ । १६० । १४४ । १२८ । १२० । ११२ । १०४ । ९६ । ८८ । ८० । ७२ । ६४ । ६० । ५६ । ५२ । ४८ । ४४ । ४० । ३६ । ३२ । ३० । २८ । २६ । २४ । २२ । २० । १८ । १६ । १५ । १४ । १३ । १२ । ११ । १० । ९ । एसा संदिट्ठी आबाहूण-कम्मट्ठिदीए । सयलकम्मट्ठिदीए किण्ण होदि ? ण, आबाहब्भंतरे पदेसणिसेयाभावादो । ण च एवं घेप्पमाणे चरिमगुणहाणिअद्धाणं तीहि वाससहस्सेहि ऊणयं होदि, णाणागुणहाणिसलागाहि आबाहूणकम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एयगुणहाणिआयामपमाणुवलंभादो । ण च णिसेगट्ठिदीए कम्मट्ठिदिएयत्तमसिद्धं, णिसेयाहियारे णिसेगट्ठिदीए चेव कम्मट्ठिदि त्ति ववहारदंसणादो, कम्मपदेसा चिट्ठंति एत्थ इदि ट्ठिदिसद्दउप्पत्तिअवलंबमाणादो वा । तेण णाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एगगुणहाणिमद्धाणं आगच्छदि त्ति जं पुव्वाइरियवक्खाणं तण्ण विरुज्झदे । संपुण्णाए कम्मट्ठिदीए णाणागुणहाणिसलागाहि ओवट्टिदाए एगगुणहाणिअद्धाणमागच्छदि त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण, तिण्हं वाससहस्साणं णिसेगट्ठिदीसु असंताणं फलभावेण मज्झिमरासिम्हि पवेसाणुववत्तीदो । तम्हा णिसेगट्ठिदिं चेव कम्मट्ठिदि त्ति घेत्तूण एयगुणहाणिअद्धाणं साहेयव्वं । एत्थ णिसेगक्कमो उच्चदे । तं जहा—णाणागुणहाणिसलागगच्छमेगादिदुगुणसंकलणमाणिय तीए समयपबद्धे भागे हिदे जं लद्धं तेण अंतादिधणे गुणिदे पढमादिगुणहाणिदव्वं होदि । तम्हि एगगुणहाणीए तीहि चउब्भागेहि एगरूवस्स चउब्भागेणब्भहिएहि भागे हिदे पढमणिसेओ होदि । तम्हि दोगुणहाणीहि भागे हिदे गोउच्छविसेसो आगच्छदि । पुणो पढमणिसेगं रूऊणगुणहाणिमेत्तट्ठाणेसु ट्ठविय एगादिएगुत्तरकमेण गोवुच्छविसेसेसु परिवाडीए अवणिदेसु विदियादि णिसेगा होंति । अत्रोपयोगिगणितसूत्रम्—प्रक्षेपकसंक्षेपेण विभक्ते यद्धनं समुपलब्धम् । प्रक्षेपास्तेन गुणाः प्रक्षेपसमानि खंडानि ॥ १ ॥ एवं रूवूण-दुरूवूणादिकम्मट्ठिदीणं णिसेगरचणा अव्वामोहेण कायव्वा ।

सादावेदणीय-इत्थिवेद-मणुसगदि-मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्विणामाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो पण्णारस सागरोवमकोडाकोडीओ ॥ ७ ॥

कुदो ? पारिणामियादो । सेसं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पण्णारस वाससदाणि आबाधा ॥ ८ ॥

पण्णारससागरोवमकोडाकोडीमेत्तट्ठिदिसमयपबद्धम्हि कम्मपदेसाणं मज्झे सुट्ठु जदि जहण्णट्ठिदीओ कम्मपदेसा होज्ज तो वि समयाहियपण्णारसवाससदमेत्तट्ठिदीओ होज्ज, णो हेट्ठा, तत्थ तहाविहपरिणामपदेसाणमसंभवादो । तेरासियकमेण पण्णारस-वाससदमेत्तआबाधाए आगमणं उच्चदे— तीसं सागरोवमकोडाकोडीमेत्तकम्मट्ठिदीए जदि आबाधा तिण्णि वाससहस्समेत्ता लब्भदि, तो पण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तट्ठिदीए किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेणोवट्टिदे पण्णारसवाससदमेत्ता आबाधा होदि ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ९ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीओ ॥ १० ॥

कुदो ? अदीवअप्पसत्थत्तादो । एत्थ गुणहाणिपणाणं णाणावरणीयगुणहाणिसमाणं, जहाणायं भज्ज-भागहारवड्ढीणमुवलंभादो । णाणागुणहाणिसलागा पुण पलिदोवमवग्गसलागद्धछेदणेणूणपलिदोवमद्धछेदणयमेत्ता । एदाओ णाणागुणहाणिसलागाओ सिद्धाओ कादूण एदाहिंतो सव्वकम्माणं णाणागुणहाणिसलागाओ तेरासियकमेण उप्पादेदव्वाओ ।

सत्तवाससहस्साणि आबाधा ॥ ११ ॥

सत्तवाससहस्सेहि मिच्छत्तुक्कस्सट्ठिदिम्हि भागे हिदे आबाधाकंडयमागच्छदि । एदं च सव्वकम्माणं सरिसं, जहाणायं भज्ज-भागहाराणं वड्ढि-हाणिदंसणादो । उक्कस्सट्ठिदीदो जाव समऊणाबाधाकंडयं ऊणं होदि ताव सा चे उक्कस्साबाधा । आबाधाकंडएणूणउक्कस्सट्ठिदीए पुण समऊणा सत्तवाससहस्साणि आबाधा होदि । एवमेसा चेव आबाधा अवट्ठिदा होदूण गच्छदि जाव अवरेगं समऊणाबाधाकंडयमाणं जादं ति । एवं हेट्ठा वि जाणिदूण वत्तव्वं ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ १२ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोलसण्हं कसायाणं उक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ ॥ १३ ॥

कुदो ? चारित्तमोहणीयत्तादो। मोहणीयत्तं पडि सामण्णत्तादो मिच्छत्तट्ठिदिसमाणा कसायट्ठिदी किण्ण संजदा ? ण, सम्मत्त-चारित्ताणं भेदेण भेदमुवगदकम्माणं पि समाणत्तविरोहादो।

चत्तारि वाससहस्साणि आबाधा ॥ १४ ॥

तं जहा—सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्तट्ठिदीए जदि सत्तवाससहस्समेत्ता आबाहा लब्भदि तो चालीससागरोवमकोडाकोडी-मेत्तट्ठिदीए किं लभदि त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे चत्तारि वाससहस्समेत्ता आबाहा लब्भदि।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ १५ ॥

सुगममेदं।

पुरिसवेद-हस्स-रदि-देवगदि-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-पसत्थ-विहायगदि-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो दससागरोवमकोडाकोडीओ ॥ १६ ॥

कुदो ? पयडिविसेसादो। एत्थ णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च पमाणं तेरासिएण आणेदूण सोदाराणं पबोहो कायव्वो।

दसवाससदाणि आबाधा ॥ १७ ॥

सुगममेदं।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ १८ ॥

एदं पि सुगमं।

णउंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा णिरयगदी तिरिक्खगदी एइंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-हुंडसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-वण्ण-गंध-रस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फास-णिरयगदि-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाव-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-तस-थावर-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुभ-दुब्भग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदाणं उक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ ॥ १९ ॥

कुदो ? पयडिविसेसादो । ण च सव्वाइं कज्जाइं एयंतेण बज्झत्थमवेक्खिय चे उप्पज्जंति, सालिबीजादो जवंकुरस्स वि उप्पत्तिप्पसंगा । ण च तारिसाइं दव्वाइं तिसु वि कालेसु कहिं पि अत्थि, जेसिं बलेण सालिबीजस्स जवंकुरुप्पायणसत्ती होज्ज, अणवत्थापसंगादो । तम्हा कम्हि वि अंतरंगकारणादो चेव कज्जुप्पत्ती होदि त्ति णिच्छओ कायव्वो । गुणहाणीए असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्ताए सव्वकम्माणं समाणाए अप्पिदुक्कस्सट्ठिदिम्हि भागे हिदे णाणादुगुणहाणिसलागा होंति । णाणादुगुणहाणिसलागाहि अप्पिदकम्मट्ठिदिम्हि भागे हिदे गुणहाणी होदि । रूवूण-दुरूवूणादिकम्मट्ठिदीसु अवसाणगुणहाणी विकला होदि । तत्थ णादूण णाणागुणहाणिसलागाओ वत्तव्वाओ ।

वेवाससहस्साणि आबाधा ॥ २० ॥

एत्थ तेरासियं काऊण आबाधा आबाधाकंडयाणि च आणेदव्वाणि । आबाधावड्ढि-हाणिट्ठाणं अवट्ठिदाबाधाए ट्ठिदीणमद्धाणं च पुव्वं व परूवेदव्वं ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ २१ ॥

एत्थ वेण्णिवाससहस्सूणकम्मट्ठिदिगुणहाणीसु पक्खेवसंक्खेवसुत्तादो पुव्वं पदेसरयणं कादव्वं । सेसं सुगमं ।

णिरयाउ-देवाउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ २२ ॥

एसा देव-णेरइयाणं आउअउक्कस्सणिसेयट्ठिदी । कुदो ? देव-णेरइएसु सम्माइट्ठि-मिच्छाइट्ठीणं गुणट्ठिदीए सुत्ते तेत्तीससागरोवमपमाणणिद्देसादो । किमट्ठमेत्थ णिरयदेवाउआणमुक्कस्सट्ठिदिपरूवणाए आबाहाए सह उक्कस्सणिसेयट्ठिदी ण उत्ता ? ण, एत्थ णिसेयट्ठिदिमणवेक्खिय आबाधापउत्ती होदि त्ति परूवणफलत्ता । जधा णाणावरणादीणमाबाधा णिसेयट्ठिदिपरतंता, एवमाउअस्स आबाधा णिसेयट्ठिदी अण्णोण्णायत्ताओ ण होंति त्ति जाणावणट्ठं णिसेयट्ठिदी चेव परूविदा । पुव्वकोडितिभागमादिं कादूण जाव असंखेपद्धा त्ति एदेसु आबाधावियप्पेसु देव-णेरइयाणं आउअस्स उक्कस्सणिसेयट्ठिदी संभवदि त्ति उत्तं होदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुव्वकोडितिभागो आबाधा ॥ २३ ॥

पुव्वकोडितिभागमादिं कादूण जाव असंखेपद्धा त्ति । जदि एदे आबाधावियप्पा आउअस्स सव्वणिसेयट्ठिदीसु होंति, तो पुव्वकोडितिभागो चेव उक्कस्सणिसेयट्ठिदीए किमट्ठं उच्चदे ? ण, उक्कस्साबाधाए विणा उक्कस्सणिसेयट्ठिदीए चेव उक्कस्सट्ठिदी ण होदि त्ति जाणावणट्ठमुक्कस्साबाधाउत्तीदो ।

आबाधा ॥ २४ ॥

पुव्वुत्ताबाधाकालब्भंतरे णिसेयट्ठिदीए बाधा णत्थि । जथा णाणावरणादीणं आबाधापरूवयसुत्तेण बाधाभावो सिद्धो, एवमेत्थ वि सिज्झदि, किमट्ठं विदियवारमाबाधा उच्चदे ? ण, जधा णाणावरणादिसमयपबद्धाणं बंधावलियवदिक्कंताणं ओकड्डण-परपयडि-संकमेहि बाधा अत्थि, तथा आउअस्स ओकड्डण-परपयडिसंकमादीहि बाधाभावपरूवणट्ठं विदियवारमाबाधाणिद्देसादो ।

कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ २५ ॥

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो त्ति किमट्ठमेत्थ ण परूविदं ? ण, विदियवारमाबाधाणिद्देसेण आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो होदि त्ति सिद्धीदो । कुदो ? अण्णहा विदियवारआबाधाणिद्देसाणुववत्तीदो ।

तिरिक्खाउ-मणुसाउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो तिण्णि पलिदोवमाणि ॥ २६ ॥

एसा वि णिसेयट्ठिदी चेव णिद्दिट्ठा । कुदो ? तिरिक्ख-मणुसेसु तिण्णि पलिदोवममेत्ताए ओरालियसरीरउक्कस्सट्ठिदीए उवलंभादो । किमट्ठमाबाधाए सह णिसेगुक्कस्सट्ठिदी ण परूविदा ? ण, णिसेगाबाधाओ अण्णोण्णायत्ताओ ण होंति त्ति जाणावणट्ठं तथा णिद्देसादो । एदस्स भावो—उक्कस्साबाधाए जहण्णणिसेयट्ठिदिमादिं कादूण जावुक्कस्सणिसेयट्ठिदी ताव बंधदि । एवं समऊण-दुसमऊणुक्कस्साबा-धादीणं पि परूवेदव्वं जाव असंखेपद्धा त्ति । पुव्वकोडितिभागादो आबाधा अहिया किण्ण होदि ? उच्चदे— ण ताव देव-णेरइएसु बहुसागरोवमाउट्ठिदिएसु पुव्वकोडितिभागादो अहिया आबाधा अत्थि, तेसिं छम्मासावसेसे भुंजमाणाउए असंखेपद्धापज्जवसाणे संते परभवियमाउअं बंधमाणाणं तदसंभवादो । ण तिरिक्ख-मणुसेसु वि तदो अहिया आबाधा अत्थि, तत्थ पुव्वकोडीदो अहियभवट्ठिदीए अभावा । असंखेज्जवस्साउतिरिक्ख-मणुसा अत्थि त्ति चे ण, तेसिं देव-णेरइयाणं व भुंजमाणाउए छम्मासादो अहिए संते परभवि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आउअस्स बंधाभावा । संखेज्जवस्साउआ वि तिरिक्ख-मणुसा कदलीघादेण वा अधट्ठिदिगलणेण वा जाव भुंजावभुत्ताउट्ठिदीए अद्धपमाणेण तदो हीणपमाणेण वा भुंजमाणाउअं ण कदं ताव ण परभवियमाउअं बंधंति । कुदो ? पारिणामियादो । तम्हा उक्कस्साबाधा पुव्वकोडितिभागादो अहिया णत्थि त्ति घेत्तव्वं ।

पुव्वकोडितिभागो आबाधा ॥ २७ ॥

अणेगाबाधाणं संभवे संते वि एत्थ पुव्वकोडितिभागो चेव आबाधा होदि, अण्णहा उक्कस्सट्ठिदीए अणुववत्तीदो इदि जाणावणट्ठं एदस्स सुत्तस्स अवयारो । सेसं सुगमं ।

आबाधा ॥ २८ ॥

पुव्वकोडितिभागो आबाधा त्ति एदेणेव सुत्तेण पुव्वकोडितिभागम्हि बाधाभावे अवगदे संते पुणो आबाधा इदि किमट्ठं उच्चदे ? ण, जधा णाणावरणादीणमाबाधाए अब्भंतरे ओकड्डुण-उक्कड्डुण-परपयडिसंकमेहि णिसेयाणं बाधा होदि, तथा आउअस्स बाधा णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पुणो आबाधापरूवणादो ।

कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ २९ ॥

सुगममेदं ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-वामणसंठाण-खीलियसंघडण-सुहुम-अपज्जत्त-साधारणणामाणं उक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो अट्ठारससागरोवमकोडाकोडीओ ॥ ३० ॥

एदमुक्कस्सट्ठिदिं गुणहाणीए सव्वकम्माणं पमाणेण समाणाए भागे हिदे एत्थतणणाणागुणहाणिसलागाओ उप्पज्जंति । एदाहि णाणागुणहाणिसलागाहिं कम्मट्ठिदिम्हि भागे हिदे एया दुगुणवड्ढी आगच्छदि । सेसं सुगमं ।

अट्ठारसवाससदाणि आबाधा ॥ ३१ ॥

कुदो ? सागरोवमकोडाकोडीए वाससदमाबाधा होदि, तं तेरासियकमेणागदअट्ठारसेहि गुणिदे अट्ठारसवाससदमेत्तआबाधुप्पत्तीदो । एदाए कम्मट्ठिदिम्हि भागे हिदे आबाधाकंडओ होदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ३२ ॥

एत्थ दिवड्ढगुणहाणीए किंचूणाए समयपबद्धम्हि भागे हिदे पढमणिसेओ होदि । विदियणिसेयभागहारो पुव्वभागहारादो सादिरेओ होदि । एवं गुणहाणिअब्भंतरसव्वणिसेयाणं भागहारा साहेयव्वा । एत्थुवउज्जंती गाहा—इच्छिदणिसेयभत्तो पढमणिसेयस्स भागहारो जो । पढमणिसेयेण गुणो तहिं तहिं होइ अवहारो ॥ २ ॥ एदीए गाहाए इच्छिदणिसेगाणं भागहारो आणेदव्वो । विदियगुणहाणिपढमणिसेयस्स भागहारो किंचूणतिण्णिगुणहाणिमेत्तो । कुदो ? पढमगुणहाणिपढमणिसेयादो विदियगुणहाणिपढमणिसेयस्स अद्धत्तादो । एवमुवरिमगुणहाणिं पडि भागहारो दुगुण-दुगुणादिकमेण गच्छदि जाव चरिमगुणहाणिपढमणिसेगो त्ति । सव्वगुणहाणिविदियादिणिसेयाणं भागहारपरूवणं जाणिय परूवेदव्वं । एवं सव्वकम्माणं पि वत्तव्वं ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-तित्थयरणामाणमुक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो अंतोकोडाकोडीए ॥ ३३ ॥

कुदो ? सम्माइट्ठिबंधत्तादो । अंतोकोडाकोडीए त्ति उत्ते सागरोवमकोडाकोडिं संखेज्जकोडीहि खंडिदएगखंडं होदि त्ति घेत्तव्वं । एदिस्से ट्ठिदीए अंतोमुहुत्तमेत्ताबाधादो पण्णवणोवाओ—दससागरोवमकोडाकोडीणमाबाधं वस्ससहस्सं ट्ठविय मुहुत्ते कदे अट्ठलक्खाहियकोडिमेत्ता मुहुत्ता होंति । तेसिं पमाणमेदं १०८००००० । एदेहि ओवट्टिददससागरोवमकोडाकोडिमेत्तट्ठिदी जदि एदेसिं तिण्हं कम्माणं होज्ज, तो एदिस्से ट्ठिदीए एगमुहुत्तमेत्ता आबाधा पावेदि । पुव्वुत्तभागहारेण दसगुणेणोवट्टिददससागरोवमकोडाकोडीमेत्ता ट्ठिदी जदी होदि, तो मुहुत्तस्स दसमभागो आबाधा होज्ज । ण च एदेसिमेत्तियमेत्ताबाधा होदि, असंजदसम्मादिट्ठिउक्कस्सट्ठिदिबंधादो संतादो वि संखेज्जगुणमिच्छाइट्ठिधुवट्ठिदीए संखेज्जंतोमुहुत्तमेत्ताबाधापसंगादो । ण च एवं, तत्तो संखेज्जगुणपंचिंदियअपज्जत्तुक्कस्सट्ठिदीए वि अंतोमुहुत्तमेत्ताबाधुवलंभा । तदो संखेज्जकोडीहिं खंडिददससागरोवमकोडाकोडी उक्कस्सट्ठिदी होदि त्ति सिद्धं । एदं वक्खाणं पाहुडचुण्णिसुत्तेण अपुव्वकरणपढमसमयट्ठिदिबंधस्स सागरोवमकोडीलक्खपुधत्तपमाणं परूवयंतेण विरुज्झदे त्ति णासंकणिज्जं, तस्स तंततरत्तादो । अथवा-सग-सगजादिपडिबद्धट्ठिदिबंधेसु आबाधासु च एसो तेरासियणियमो, ण अण्णत्थ, खवगसेडीए अंतोमुहुत्तट्ठिदिबंधाणमाबाधाभावप्पसंगादो । तम्हा सग-सगुक्कस्सट्ठिदिबंधेसु सग-सगुक्कस्साबाधाहि ओवट्टिदेसु आबाधाकंडयाणि आगच्छंति त्ति घेत्तव्वं । तदो एत्थ अंतोमुहुत्ताबाधाए वि संतीए अंतोकोडाकोडी ट्ठिदिबंधो होदि त्ति ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ३४ ॥

आबाधाकंडएण उक्कस्सट्ठिदिम्हि भागे हिदे आबाधा होदि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

णग्गोधपरिमंडलसंठाण-वज्जणारायणसंघडणणामाणं उक्कस्सगो ट्ठिदिबंधो वारस सागरोवमकोडाकोडीओ ॥ ३६ ॥

णामत्तणेण भेदे इदरणामकम्मेहिंतो असंते वि किमट्ठं ट्ठिदिभेदो ? ण, पयडिविसेसेण भिण्णाणं ट्ठिदिभेदं पडि विरोधाभावा । सेसं सुगमं ।

वारसवाससदाणि आबाधा ॥ ३७ ॥

एगेण आबाधाकंडएण अप्पिदुक्कस्सट्ठिदिम्हि भागे हिदे वारसवाससदमेत्ता आबाधा होदि ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ३८ ॥

सुगममेदं ।

सादियसंठाण-णारायसंघडणणामाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो चोद्दससागरोवमकोडाकोडीओ ॥ ३९ ॥

एदं पि सुगमं ।

चोद्दसवाससदाणि आबाधा ॥ ४० ॥

तं जहा—दसकोडाकोडीसागरोवमाणं जदि दसवाससदमेत्ताबाधा लब्भदि, तो चोद्दसकोडाकोडीसागरोवमेसु किं लभामो त्ति फलगुणिदमिच्छं पमाणेणोवट्टिदे चोद्दसवाससदाणि आबाधा होदि ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ४१ ॥

सुगममेदं ।

खुज्जसंठाण-अद्धणारायणसंघडणणामाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो सोलससागरोवमकोडाकोडीओ ॥ ४२ ॥

एदं पि सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सोलसवाससदाणि आबाधा ॥ ४३ ॥ आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ४४ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । एवं छट्ठी चूलिया समत्ता ।

सत्तमी चूलिया

एत्तो जहण्णट्ठिदिं वण्णइस्सामो ॥ १ ॥ तं जहा ॥ २ ॥

उक्कस्सविसोहीए जा ट्ठिदी बज्झदि सा जहण्णिया होदि, सव्वासिं ट्ठिदीणं पसत्थभावाभावादो । संकिलेसवड्ढीदो सव्वपयडिट्ठिदीणं वड्ढी होदि, विसोहिवड्ढीदो तासिं चेव हाणी होदि । को संकिलेसो णाम ? असादबंधजोग्गपरिणामो संकिलेसो णाम । का विसोही ? सादबंधजोग्गपरिणामो । उक्कस्सट्ठिदीदो हेट्ठिमट्ठिदीयो बंधमाणस्स परिणामो विसोहि त्ति उच्चदि, जहण्णट्ठिदीदो उवरिमविदियादिट्ठिदीओ बंधमाणस्स परिणामो संकिलेसो त्ति के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? जहण्णुक्कस्सट्ठिदिपरिणामे मोत्तूण सेसमज्झिमट्ठिदीणं सव्वपरिणामाणं पि संकिलेस-विसोहित्तप्पसंगादो । ण च एवं, एक्कस्स परिणामस्स लक्खणभेदेण विणा दुभावविरोहादो । संकिलेस-विसोहीणं वड्ढमाण-हायमाणलक्खणेण भेदो ण विरुज्झदि त्ति चे ण, वड्ढि-हाणिधम्माणं परिणामत्तादो जीवदव्वावट्ठाणाणं परिणामंतरेसु असंभवाणं परिणामलक्खणत्तविरोहादो । ण च कसायवड्ढी संकिलेसलक्खणं, ट्ठिदिबंधउड्ढीए अण्णहाणुववत्तीदो, विसोहिअद्धाए वड्ढमाणकसायस्स वि संकिलेसत्तप्पसंगादो । ण च विसोहिअद्धाए कसायउड्ढी णत्थि त्ति वोत्तुं जुत्तं, सादादीणं भुजगारबंधाभावप्पसंगा । ण च असाद-सादबंधाणं संकिलेस-विसोहीओ मोत्तूण अण्णकारणमत्थि, अणुवलंभा । ण कसायउड्ढी असादबंधकारणं, तक्काले सादस्स वि बंधुवलंभा । ण हाणी, तिस्से वि साहारणत्तादो । किं च विसोहीओ उक्कस्सट्ठिदिम्हि थोवा होदूण गणणाए वड्ढमाणाओ आगच्छंति जाव जहण्णट्ठिदि त्ति । संकिलेसा पुण जहण्णट्ठिदिम्हि थोवा होदूण उवरि पक्खेवुत्तरकमेण वड्ढमाणा गच्छंति जा उक्कस्सट्ठिदि त्ति । तदो संकिलेसेहिंतो विसोहीओ पुधभूदाओ त्ति दट्ठव्वाओ । तदो ट्ठिदमेदं सादबंधजोग्गपरिणामो विसोहि त्ति ।

पंचण्हं णाणावरणीयाणं चदुण्हं दंसणावरणीयाणं लोभसंजलणस्स पंचण्हमंतराइयाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं ॥ ३ ॥

कुदो ? कसायखवयस्स चरिमसमयबंधत्तादो । एत्थ गुणहाणीओ णत्थि, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीए विणा गुणहाणीए असंभवादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ४ ॥

आबाधाकंडएण असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तेण अप्पिदट्ठिदिम्हि भागे हिदे आबाधा आगच्छदि त्ति पुव्वमसइं परूविदं। संपहि अंतोमुहुत्तमेत्तट्ठिदीए आबाहाकंडयादो असंखेज्जगुणहीणाए कथमाबाधा उवलब्भदे ? ण एस दोसो, सग-सगजादि-पडिबद्धाबाधाकंडएहि सग-सगट्ठिदीसु ओवट्टिदासु सग-सगआबाधासमुप्पत्तीदो। ण च सव्वजादीसु आबाधाकंडयाणं सरिसत्तं, संखेज्जवस्सट्ठिदिबंधेसु अंतोमुहुत्तमेत्तआबाधोवट्टिदेसु संखेज्जसमयमेत्तआबाधाकंडयदंसणादो। तदो संखेज्जरूवेहि जहण्णट्ठिदिम्हि भागे हिदे संखेज्जावलियमेत्ता णिसेगट्ठिदीदो संखेज्जगुणहीणा जहण्णाबाधा होदि त्ति घेत्तव्वं।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ५ ॥

सुगममेदं।

पंचदंसणावरणीय-असादावेदणीयाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया ॥ ६ ॥

तं जहा—सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिट्ठिदिबंधमिच्छत्तस्स जदि एत्थ एक्कसागरोवममेत्तो उक्कस्सो ट्ठिदिबंधो लब्भदि तो तीससागरोवमकोडाकोडिमेत्तुक्कस्सट्ठिदिबंधदंसणावरणादीणं किं ट्ठिदिबंधं लभामो त्ति फलगुणिदमिच्छं पमाणेणोवट्टिदे सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा आगच्छंति। पुणो तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण आबाधट्ठाणविसेसेण रूवाहिएण एगमाबाधाकंडयं गुणिय रूऊणं कादूण लद्धवीचारट्ठाणाणि अवणिदे जहण्णओ ट्ठिदिबंधो होदि। सेसं सुगमं।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ७ ॥

तं जहा—एगेणाबाधाकंडएण समऊणजहण्णट्ठिदिम्हि भागे हिदे लद्धं रूवाहियं जहण्णाबाधा होदि। किमट्ठं जहण्णट्ठिदिं समऊणं करिय आबाधाकंडएण भागो घेप्पदे ? ण, पुव्वं समऊणाबाधाकंडएण विणा जहण्णत्तमुवगदत्तादो। ॥७३८॥

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ८ ॥

सुगममेदं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सादावेदणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो वारस मुहुत्ताणि ॥ ९ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयचरिमसमयबंधादो । तीसियस्स दंसणावरणीयस्स अंतोमुहुत्तमेत्तट्ठिदिं बंधमाणो सुहुमसांपराइओ तीसियवेदणीयभेदस्स सादावेदणीयस्स पण्णारससागरोवमकोडाकोडीउक्कस्सट्ठिदिअस्स कथं वारसमुहुत्तियं जहण्णट्ठिदिं बंधदे ? ण, दंसणावरणादो सुहस्स सादावेदणीयस्स विसोधीदो सुट्ठु ट्ठिदिबंधोवट्टणाभावा ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ १० ॥

कुदो ? संखेज्जरूवेहि वारसमुहुत्तेसु ओवट्टिदेसु अंतोमुहुत्तुवलंभादो ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ११ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छत्तस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स सत्त सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणिया ॥ १२ ॥

आवलियाए असंखेज्जदिभागेण बादरेइंदियपज्जत्ताणमाबाधट्ठाणविसेसेण रूवाहिएण एगमाबाधाकंडयं गुणिय रूऊणं कादूण सागरोवमम्हि सोहिदे मिच्छत्तजहण्णट्ठिदिसमुप्पत्तीदो । बादरेइंदियअपज्जत्तएसु सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तेसु वा मिच्छत्तस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो किण्ण होदीदि चे ण, एदेसु वीचारट्ठाणाणं बहुत्ताभावा ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ १३ ॥

कुदो ? समऊणजहण्णट्ठिदिम्हि आबाधाकंडएण भागे हिदे लद्धरूवाहियस्स जहण्णाबाधत्तब्भुवगमादो ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ १४ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बारसण्हं कसायाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया ॥ १५ ॥

किमट्ठं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सागरोवमचत्तारिसत्तभागाणमूणत्तं उच्चदे ? ण, बादरेइंदियपज्जत्तएसु वीचारट्ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेव वेदणासुत्तम्हि णिद्दिट्ठत्तादो ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ १६ ॥

कुदो ? आबाधकंडएण ओवट्टिदसमऊणजहण्णट्ठिदिम्हि समयाधियम्हि जहण्णाबाधुवलंभादो । सेसं सुगमं ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ १७ ॥

एदं पि सुगमं ।

कोधसंलजण-माणसंजलण-मायसंजलणाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो वे मासा मासं पक्खं ॥ १८ ॥

जथासंखेण कोधसंजलणस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो वे मासा, माणस्स मासो, मायाए पक्खो त्ति घेत्तव्वो । किमट्ठं पुध पुध संजलणसमुच्चारणं कीरदे ? ण, भिण्णट्ठाणेसु बंधवोच्छेदपदंसणट्ठं पुध पुध तस्सुच्चारणादो, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तिण्णमेगत्त-विरोधादो वा पुध पुधुच्चारणं कीरदे ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ १९ ॥

संखेज्जरूवेहिं जहण्णट्ठिदिम्हि भागे हिदे जहण्णाबाधुवलंभादो ।

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ २० ॥

सुगममेदं ।

पुरिसवेदस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो अट्ठ वस्साणि ॥ २१ ॥ अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ २२ ॥

आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ २३ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

इत्थिवेद-णउंसयवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरं छण्हं संट्ठाणाणं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्हं संघडणाणं वण्ण-गंध-रस-फासं तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-पसत्थविहायगदि-अप्पसत्थविहायगदि-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दुभव-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो सागरोवमस्स वे-सत्तभागा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणया ॥ २४ ॥

णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादिआदीणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवमस्स वे-सत्तभागमेत्तो होदु णाम, एदासिं वीससागरोवमकोडाकोडीमेत्तुक्कस्सट्ठिदिदंसणादो। किंतु इत्थिवेद-हस्स-रदि-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सरादीणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूण-सागरोवमवेसत्तभागमेत्तजहण्णट्ठिदिबंधो ण घडदे, एदासिं वीससागरोवमकोडाकोडीमेत्तुक्कस्सट्ठिदीए अभावादो ? ण, जदि वि एदासिमप्पणो उक्कस्सट्ठिदी वीससागरोवमकोडाकोडीमेत्ता णत्थि, तो वि मूलपयडिउक्कस्सट्ठिदिअणुसारेण ओहट्टमाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूण-सागरोवमवेसत्तभागमेत्तजहण्णट्ठिदिबंधाविरोहा। ण च इत्थिवेद-हस्स-रदीया कसायबंधाणुसारिणीया, णोकसायस्स तदणुसरणविरोहा। एसा जहण्णट्ठिदी बादरेइंदियपज्जत्तएसु सव्वविसुद्धेसु घेत्तव्वा, अण्णत्थ सव्वजहण्णट्ठिदिबंधस्स अणुवलंभादो। किं कारणं ? जादिविसोहीओ अवेक्खिय ट्ठिदिबंधस्स जहण्णत्तसंभवादो।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ २५ ॥ आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ २६ ॥

सुगमाणि दो वि सुत्ताणि।

णिरयाउअ-देवाउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो दसवाससहस्साणि ॥ २७ ॥

सुगममेदं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ २८ ॥

पुव्वकोडितिभागे वि भुज्जमाणाउए संते देव-णेरइयदसवाससहस्सआउट्ठिदिबंधसंभवादो पुव्वकोडितिभागो आबाधा त्ति किण्ण परूविदो ? ण, एवं संते जहण्णट्ठिदीए अभावप्पसंगादो ।

आबाधा ॥ २९ ॥ कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ३० ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

तिरिक्खाउअ-मणुसाउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३१ ॥

सुगममेदं ।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ३२ ॥

कुदो ? असंखेपद्धादो उवरिमआबाधाणं जहण्णट्ठिदीए सह विरोधादो ।

आबाधा ॥ ३३ ॥ कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ३४ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णिरयगदि-देवगदि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-णिरयगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो सागरोवमसहस्सस्स वे-सत्तभागा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणया ॥ ३५ ॥

कुदो ? सव्वविसुद्धेण असण्णिपंचिंदिएण बज्झमाणत्तादो । एदस्स परूवणट्ठं एत्थुवजुज्जंतं किंचि अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—एइंदिएसु मिच्छत्तस्सुक्कस्सट्ठिदिबंधो एगं सागरोवमं । कसायाणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागा । णाणदंसणावरणंतराइय-वेदणीयाणं तिण्णि सत्तभागा । णाम-गोद-णोकसायाणं वे सत्तभागा । १ । $\frac{४}{७}$ । $\frac{३}{७}$ । $\frac{२}{७}$ । एवं वेइंदियादीणमसण्णिपंचिंदियपज्जव-साणाणमुक्कस्सट्ठिदिबंधा वत्तव्वा । २५ । $\frac{१००}{७}$ । $\frac{७५}{७}$ । $\frac{५०}{७}$ । एदे बीइंदियाणं । ५० । $\frac{२००}{७}$ । $\frac{१५०}{७}$ । $\frac{१००}{७}$ । एदे तीइंदियाणं । १०० । $\frac{४००}{७}$ । $\frac{३००}{७}$ । $\frac{२००}{७}$ । एदे चदुरिंदियाणं । १००० । $\frac{४०००}{७}$ । $\frac{३०००}{७}$ । $\frac{२०००}{७}$ । एदे असण्णिपंचिंदियाणमुक्कस्सट्ठिदिबंधा । एइंदिएसु वीचारट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, आबाधाट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बीइंदियादिसु वीचारट्ठाणाणि पलिदो-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वमस्स संखेज्जदिभागो, आबाधाठाणाणि आवलियाए संखेज्जदिभागो। वेउव्वियछक्कं च णामकम्मं, तेण सागरोवमसहस्सवेसत्तभागा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणा तस्स जहण्णट्ठिदिबंधो होदि।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ३६ ॥ आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेगो ॥ ३७ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-तित्थयरणामाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो अंतोकोडाकोडीओ ॥ ३८ ॥

कुदो ? अपुव्वकरणचरिमसमयादो सत्तमभागमोदिण्णस्स अपुव्वकरणखवगस्स बंधादो।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ३९ ॥ आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ४० ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

जसगित्ति-उच्चागोदाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो अट्ठ मुहुत्ताणि ॥ ४१ ॥

कुदो ? चरिमसमयसकसायबंधादो।

अंतोमुहुत्तमाबाधा ॥ ४२ ॥ आबाधूणिया कम्मट्ठिदी कम्मणिसेओ ॥ ४३ ॥

एदाणि दो वि सुगमाणि। एत्थ जहण्णुक्कस्सपदेसबंधो अणुभागबंधो च किण्ण परूविदो ? ण, पयडिट्ठिदिबंधेसु अणुभाग-पदेसाविणाभावेसु परूविदेसु तप्परूवणासिद्धीदो। तं जहा— सण्णिपंचिंदियधुवट्ठिदिं अंतोकोडाकोडिं सग-सगकम्मपडिभाइयमप्पप्पणो उक्कस्सट्ठिदिम्हि सोहिदे ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो होदि। तत्थ एगरूवं पक्खित्ते ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि हवंति। एक्केक्कस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणस्स असंखेज्जा लोगा ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि। विसेसो पुण असंखेज्जा लोगा। तेसिं पडिभागो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो एदेसिमत्थित्तं णव्वदे ? जहण्णुक्कस्सट्ठिदीहिंतो सिद्धट्ठिदिबंधट्ठाणण्णहाणुववत्तीदो। ण च कारणमंतरेण कज्जस्सुप्पत्ती कहिं पि होदि, अणवट्ठाणादो। ताणि च ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि जहण्णट्ठाणादो जावप्पप्पणो उक्कस्सट्ठाणं ताव अणंतभागवड्ढी असंखेज्जभागवड्ढी संखेज्जभागवड्ढी संखेज्जगुणवड्ढी असंखेज्जगुणवड्ढी अणंतगुणवड्ढी त्ति छव्विहाए वड्ढीए ट्ठिदाणि। अणंतभागवड्ढिकंडयं गंतूण एगा असंखेज्जभागवड्ढी होदि। असंखेज्जभागवड्ढिकंडयं गंतूण एगा संखेज्जभागवड्ढी होदि। संखेज्जभागवड्ढिकंडयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गंतूण एगा संखेज्जगुणवड्ढी होदि। संखेज्जगुणवड्ढिकंडयं गंतूण एगा असंखेज्जगुणवड्ढी होदि। असंखेज्जगुणवड्ढिकंडयं गंतूण एगा अणंतगुणवड्ढी होदि। एदमेगं छट्ठाणं। एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि होंति। सव्वट्ठिदिबंधट्ठाणाणं एक्केक्कट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणस्स हेट्ठा छवड्ढिकमेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि अणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होंति। ताणि च जहण्णकसायउदयअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणप्पहुडि उवरिं जाव जहण्णट्ठिदि-उक्कस्सकसायउदयट्ठाणअणुभागबंधज्झवसाणट्ठाणाणि त्ति विसेसाहियाणि। विसेसो पुण असंखेज्जा लोगा। तस्स पडिभागो वि असंखेज्जा लोगा। एदेसिमत्थित्तं कुदो णव्वदे? कसायउदयट्ठाणादो अणुभागेण विणा अलद्धप्पसरूवादो। तदो सिद्धा पयडि-ट्ठिदिबंधादो अणुभागबंधस्स सिद्धी। कथं पदेसबंधस्स तदो सिद्धी? उच्चदे—ठिदिबंधे णिसेयविरयणा परूविदा। ण सा पदेसेहि विणा संभवदि, विरोहादो। तदो तत्तो चेव पदेसबंधो वि सिद्धो। पदेसबंधादो जोगट्ठाणाणि सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि जहण्णट्ठाणादो अवट्ठिदपक्खेवेण सेडीए असंखेज्जदिभागपडिभागिएण विसेसाहियाणि जाउक्कस्सजोगट्ठाणेत्ति दुगुण-दुगुणगुणहाणिअद्धाणेहि सहियाणि सिद्धाणि हवंति। कुदो? जोगेण विणा पदेसबंधाणुववत्तीदो। अथवा अणुभागबंधादो पदेसबंधो तक्कारणजोगट्ठाणाणि च सिद्धाणि हवंति। कुदो? पदेसेहि विणा अणुभागाणुववत्तीदो। ते च कम्मपदेसा जहण्णवग्गणाए बहुआ, तत्तो उवरि वग्गणं पडि विसेसहीणा अणंतभागेण। भागहारस्स अद्धं गंतूण दुगुणहीणा। एवं णेदव्वं जाव चरिमवग्गणेत्ति। एवं चत्तारि वि बंधा परूविदा होंति। संतोदय-उदीरणाओ किण्ण परूविदाओ? ण, बंधपरूवणादो तासिं पि परूवणासिद्धीदो। तं जहा—बंधो चेव बंधविदियसमयप्पहुडि संतकम्मं उच्चदि जाव णिल्लेवणचरिमसमओ त्ति। सो चेव बंधो बंधावलियादिक्कंतो ओकड्डिदूण उदए संछुब्भमाणो उदीरणा होदि। सो चेव दुसमयाधियबंधावलियाए ट्ठिदिक्खएण उदए पदमाणो उदयसण्णिदो होदि त्ति। एक्केक्किस्से पयडीए पयडिबंधो अणुभागबंधो ट्ठिदिबंधो पदेसबंधो चेदि चउव्विहो बंधो। तत्थ एक्केक्को चउव्विहो उक्कस्सो अणुक्कस्सो जहण्णो अजहण्णो त्ति। एदेहि सोलसेहि सव्वबंधपयडीओ गुणिदे असीदीए ऊणवेसहस्सबंधवियप्पा होंति (१९२०)। एवमुदओदीरण-सत्ताणं पि भेदा परूवेदव्वा। तेसिं पमाणमेदं २३६८। २३६८। २३६८। तेसिं सव्वसमासो ९०२४। सव्वेदम्हि परूविदे— सत्तमी चूलिया समत्ता होदि।

अट्ठमी चूलिया

एवदिकालट्ठिदिएहि कम्मेहि सम्मत्तं ण लहदि ॥ १ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेण एदेसु कम्मेसु जहण्णट्ठिदिबंधे उक्कस्सट्ठिदिबंधे जहण्णुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मेसु जहण्णुक्कस्सअणुभागसंतकम्मेसु जहण्णुक्कस्सपदेससंतकम्मेसु च संतेसु सम्मत्तं ण पडिवज्जदि त्ति घेत्तव्वं।

लभदि त्ति विभासा ॥ २ ॥

जे पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसे बंधंतो तेहि पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसेहि संतसरूवेण होंतेहि उदीरिज्जमाणेहि सम्मत्तं पडिवज्जदि तेसिं परूवणा कीरदि त्ति पइज्जासुत्तमेयं ।

एदेसिं चेव सव्वकम्माणं जावे अंतोकोडाकोडिट्ठिदिं बंधदि तावे पढमसम्मत्तं लभदि ॥ ३ ॥

पढमसम्मत्तलंभजोग्गो जीवो जेण उवयारेण पढमसम्मत्तं लभदि त्ति परूविदो । अत्थदो पुण एत्थ ण लभदि, तिकरणचरिमसमए सम्मत्तुप्पत्तीदो । एदेण खओवसमलद्धी विसोहिलद्धी देसणलद्धी पाओग्गलद्धि त्ति चत्तारि लद्धीओ परूविदाओ । पुव्वसंचिदकम्ममलपडलस्स अणुभागफद्दयाणि जदा विसोहीए पडिसमयमणंतगुणहीणाणि होदूणुदीरिज्जंति तदा खओवसमलद्धी होदि । पडिसमयमणंतगुणहीणकमेण उदीरिदअणुभागफद्दयजणिदजीवपरिणामो सादादिसुहकम्मबंधणिमित्तो असादादिअसुहकम्मबंधविरुद्धो विसोही णाम । तिस्से उवलंभो विसोहिलद्धी णाम । छद्दव्व-णवपदत्थोवदेसो देसणा णाम । तीए देसणाए परिणदआइरियादीणमुवलंभो, देसिदत्थस्स गहण-धारणविचारणसत्तीए समागमो अ देसणलद्धी णाम । सव्वकम्माणमुक्कस्सट्ठिदिमुक्कस्साणुभागं च घादिय अंतोकोडाकोडीट्ठिदिम्हि वेट्ठाणाणुभागे च अवट्ठाणं पाओग्गलद्धी णाम । कुदो ? एदेसु संतेसु करणजोग्गभाउवलंभादो । सुत्ते काललद्धी चेव परूविदा, तम्हि एदासिं लद्धीणं कथं संभवो ? ण, पडिसमयमणंतगुणहीणअणुभागुदीरणाए अणंतगुणकमेण वड्ढमाणविसोहीए आइरियोवदेसोवलंभस्स य तत्थेव संभवादो । एदाओ चत्तारि वि लद्धीओ भवियाभवियमिच्छाइट्ठीणं साहारणाओ, दोसु वि एदाणं संभवादो । उत्तं च—खयउवसमिय-विसोही देसण-पाओग्ग-करणलद्धी य । चत्तारि वि सामण्णा करणं पुण होइ सम्मत्ते ॥ १ ॥ एवमभव्वजीवजोग्गपरिणामे ट्ठिदिअणुभागाणं खंडयघादं बहुवारं करिय गुरूवदेसबलेण तेण विणा वा अभव्वजीवजोग्गविसोहीओ वोलिय भव्वजीवजोग्गविसोहीए अधापवत्तकरणसण्णिदाए भविओ जीवो परिणमइ, तस्स जीवस्स लक्खणजाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

सो पुण पंचिंदिओ सण्णी मिच्छाइट्ठी पज्जत्तओ सव्वविसुद्धो ॥ ४ ॥

जो सो सम्मत्तं पडिवज्जंतओ एइंदिओ बीइंदिओ तीइंदिओ चउरिंदियो वा ण होदि, तत्थ सम्मत्तग्गहणपरिणामाभावा । तदो पंचिंदिओ चेव । तत्थ वि असण्णी ण होदि, तेसु मणेण विणा विसिट्ठणाणाणुप्पत्तीदो । तदो सो सण्णी चेव । सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी वा पढमसम्मत्तं ण पडिवज्जदि, एदेसिं तेण पज्जाएण परिणमणसत्तीए अभावादो । उवसमसेडिं चडमाण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंता अत्थि, किंतु ण तस्स पढमसम्मत्तववएसो। कुदो ? सम्मत्तादो तस्सुप्पत्तीए। तदो तेण मिच्छाइट्ठिणा चेव होदव्वं। सो वि पज्जत्तो चेव, अपज्जत्ते पढमसम्मत्तुप्पत्तिविरोहादो। सो देवो वा णेरइओ वा तिरिक्खो वा मणुसो वा। इत्थिवेदो पुरिसवेदो णउंसयवेदो वा। मणजोगी वचिजोगी कायजोगी वा। कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई वा, किंतु हायमाणकसाओ। असंजदो। मदि-सुदसागारुवजुत्तो। तत्थ अणागारुवजुत्तो णत्थि, तस्स बज्झत्थे पउत्तीए अभावादो। छण्णं लेस्साणमण्णदरलेस्सो, किंतु हायमाणअसुहलेस्सो वड्ढमाणसुहलेस्सो। भव्वो। आहारी। णाणावरणीयस्स पंचपयडिसंतकम्मिओ। दंसणावरणीयस्स णवपयडिसंतकम्मिओ। वेदणीयस्स दुवे पयडिसंतकम्मिओ। मोहणीयस्स सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेहि विणा छव्वीसपयडीणं संतकम्मिगो, सम्मत्तेण विणा मोहणीयस्स सत्तावीससंतकम्मिगो, मोहणीयस्स अट्ठावीससंतकम्मिओ वा। जदि बद्धाउओ आउअस्स दुविहसंतकम्मिओ। अह अबद्धाउओ आउअस्स एक्कसंतकम्मिओ। चत्तारिगदि, पंचजादि, आहारसरीरं वज्ज चत्तारि सरीर, चत्तारि बंधण, चत्तारि संघाद, छसंट्ठाण, आहारंगोवंगेण विणा दोण्णि अंगोवंग, छसंघडण, वण्ण-गंध-रस-फास, चत्तारि आणुपुव्वी, अगुरुअलहुअ, उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव, दो विहायगदि, तस-थावर-बादर-सुहुम-पत्तेय-साहारण-पज्जत्तापज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणमिदि णामस्स बाहत्तरिपयडिसंतकम्मिओ। गोदस्स दोपयडिसंत-कम्मिओ। अंतराइयस्स पंचपयडिसंतकम्मिओ। आउगवज्जाणं कम्माणमंतोकोडाकोडीट्ठिदिसंतकम्मिगो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-णिरयगदि-तिरिक्खगदि-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चदुरिंदियजादि-पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगदि-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-उवघाद-अप्पसत्थविहायगदि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद-पंचंतराइयाणं विट्ठाणियअणुभागसंतकम्मिगो, एदासिमप्पसत्थपयडीणमणुभागस्स ति-चदुट्ठाणाणं विसोहीए घादसंभवादो। सादावेदणीय-मणुसगदि-देवगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर तेसिं चेव बंधण-संघाद समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्विय-सरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-परघादुस्सास-आदाउज्जोव-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोदाणं चदुट्ठाणाणुभागसंतकम्मिओ। कुदो ? एदासिं पसत्थपयडीणं विसोधीदो अणुभागस्स घादाभावा, समयंपडिविसोहिवड्ढीदो अणंतगुणकमेण एदासिमणुभागबंधस्स वड्ढिदंसणादो च। जासिं पयडीणं संतकम्ममत्थि, तासिमजहण्णअणुक्कस्सपदेससंतकम्मिगो। तिसु महादंडएसु उत्तपयडीणं बंधओ, अवसेसाणमबंधओ। तिसु महादंडगेसु उत्तपयडीणमंतोकोडाकोडिट्ठिदीए बंधओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिसु महादंडएसु उत्तअप्पसत्थपयडीणं वेट्ठाणियअणुभागबंधओ। तत्थ उत्तपसत्थपयडीणं चदुट्ठाणियअणुभागस्स बंधगो। पंच णाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा तिरिक्खगदि-मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदि-मणुसगदिपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणमणुक्कस्सपदेसबंधओ। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-त्थीणगिद्धि-मिच्छत्त-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-देवगदि-वेउव्वियसरीर-समचउरससरीरसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-पसत्थविहायगदि-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्सपदेसबंधओ वा अणुक्कस्सपदेसबंधओ वा। पंचण्हं णाणावरणीयाणं वेदओ। चक्खुदंसणावरणीयमचक्खुदंसणावरणीयमोहिदंसणावरणीयं-केवलदंसणावरणीयमिदि चदुण्हं दंसणावरणीयाणं वेदगो, णिद्दा-पयलाणं एक्कदरेण सह पंचण्हं वा वेदगो। सादासादाणमण्णदरस्स वेदगो। मोहणीयस्स दसण्हं णवण्हमट्ठण्हं वा वेदगो। काओ दस पयडीओ ? मिच्छत्तं अणंताणुबंधिचदुक्काणमेक्कदरं अपच्चक्खाणावरणचदुक्काणमेक्कदरं पच्चक्खाणावरणचदुक्काणमेक्कदरं संजुलणचदुक्काणमेक्कदरं तिण्हं वेदाणमेक्कदरं हस्सरदि-अरदिसोगदोजुगलाणमेक्कदरं भय-दुगुंछा चेदि। काओ णव पयडीओ ? भय-दुगुंछासु अण्णदरुदएण विणा। भय-दुगुंछाणमुदएण विणा अट्ठ हवंति। चदुण्हमाउगाणमण्णदरस्स वेदगो। जदि णेरइओ, णिरयगदि-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीरथिराथिर-सुहासुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोद-पंचतराइयाणं वेदगो। जदि तिरिक्खो, तिरिक्खगदिपंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छ-संठाणाणमेक्कदरस्स ओरालियसरीरअंगोवंगस्स छसंघडणाणमेक्कदरस्स वण्ण-गंधरस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासाणं, उज्जोवं सिया, दोविहायगदीणमेक्कदरस्स, तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं थिराथिर-सुहासुहाणं सुभग-दुभगाणमेक्कदरस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरस्स आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरस्स णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं वेदगो। जदि मणुसो, मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छसंठाणाणमेक्कदरस्स ओरालियसरीरंगोवंगस्स छसंघडणाणमेक्कदरस्स वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलघुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासाणं दोण्हं विहायगदीणमेक्कदरस्स तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं थिराथिर-सुभासुभाणं सुभग-दुभगाणमेक्कदरस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरस्स आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरस्स जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरस्स णिमिणणामस्स णीचुच्चागोदाणमेक्कदरस्स पंचण्हमंतराइयाणं च वेदगो। जदि देवो, देवगदि-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरसरीरसंठाणं-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसगित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं वेदगो, उत्तसेससव्वपयडीणमवेदगो। जासिं पयडीणमुदओ अत्थि तासिं पयडीणमेक्किस्से ट्ठिदीए ट्ठिदिक्खएण उदयं पविट्ठाए वेदगो, सेसाणं ट्ठिदीणमवेदगो। जासिं पयडीणमप्पसत्थाणमुदओ अत्थि तासिं वेट्ठाणियअणुभागस्स वेदगो। पसत्थाणं पयडीणमुदइल्लाणं चदुट्ठाणियअणुभागस्स वेदगो। उदइल्लाणं पयडीणमजहण्णाणुक्कस्सपदेसाणं वेदगो। जासिं पयडीणं वेदगो तासिं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणमुदीरगो। उदय-उदीरणाणं को विसेसो? उच्चदे—जे कम्मक्खंधा ओकड्डुकड्डुणादिपओगेण विणा ट्ठिदिक्खयं पाविदूण अप्पप्पणो फलं देंति, तेसि कम्मक्खंधाणमुदओ त्ति सण्णा। जे कम्मक्खंधा महंतेसु ट्ठिदि-अणुभागेसु अवट्ठिदा ओकड्डिदूण फलदाइणो कीरंति, तेसिमुदीरणा त्ति सण्णा, अपक्वपाचनस्य उदीरणाव्यपदेशात्। उदय-उदीरणादिलक्खणाइं सुत्ते अणुवदिट्ठाइं कथमेत्थ परूविज्जंति? ण एस दोसो, एदस्स देसामासियत्तादो। जेणेदं सुत्तं देसामासियं तेण उत्तासेसलक्खणाणि एदेण उत्ताणि चेव। 'सव्वविसुद्धो' त्ति एदस्स पदस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा—एत्थ पढमसम्मत्तं पडिवज्जंतस्स अधापवत्तकरण-अपुव्वकरण-अणियट्टिकरणभेदेण तिविहाओ विसोहीओ होंति। तत्थ अधापवत्तकरणसण्णिदविसोहीणं लक्खणं उच्चदे। तं जहा—अंतोमुहुत्तमेत्तसमयपंतिमुड्डायारेण ठवेदूण ट्टविय तेसिं समयाणं पाओग्गपरिणामपरूवणं कस्सामो—पढमसमयपाओग्गपरिणामा असंखेज्जा लोगा, अधापवत्तकरणविदियसमयपाओग्गा वि परिणामा असंखेज्जा लोगा। एवं समयं पडि अधापवत्तपरिणामाणं पमाणपरूवणं कादव्वं जाव अधापवत्तकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति। पढमसमयपरिणामेहिंतो विदियसमयपाओग्गपरिणामा विसेसाहिया। विसेसो पुण अंतोमुहुत्तपडिभागिओ। विदियसमयपरिणामेहिंतो तदियसमयपरिणामा विसेसाहिया। एवं णेयव्वं जाव अधापवत्तकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति। एदिस्से अद्धाए संखेज्जदिभागो णिव्वग्गणकंडयं णाम। तम्हि णिव्वग्गणकंडए जेत्तिया समया तेत्तियमेत्तं खंडाणि सव्वसमयपरिणामपंतीओ कादव्वाओ। तत्थ सव्वसमयपरिणामपंतीसु पढमखंडं थोवं। विदियखंडं विसेसाहियं। तत्तो तदियखंडयं विसेसाहियं। एवं णेयव्वं जाव चरिमखंडं ति। एक्केक्कस्स आयामो असंखेज्जा लोगा। एत्थतणविसेसो अंतोमुहुत्तपडिभागिओ, तेण एसो वि असंखेज्जलोगमेत्तो चेव। अधापवत्तकरणपढमसमयअंतोमुहुत्तमेत्तपरिणामखंडेसु जं पढमखंडं तं विदियादिसमयाणमंतोमुहुत्तमेत्त-खंडेसु केण वि सरिसं ण होदि। विदियखंडं पुण विदियसमयपढमपरिणामखंडेण सरिसं, तदियखंडं तदियसमयपढमपरिणामखंडेण सरिसं, चउत्थखंडं चउत्थसमयपढमपरिणामखंडेण सरिसं। एवं णेयव्वं जाव पढमसमयस्स णिव्वग्गणकंडयमेत्तपरिणामखंडेसु जं चरिमखंडं तं णिव्वग्गणकंडयमेत्तमुवरि चडिदूण ट्ठिदसमयस्स णिव्वग्गणकंडयमेत्तपरिणामखंडाणं पढमखंडेण सरिसं। एवं विदियादिसमयणिव्वग्गणकंडयमेत्तपरिणामखंडाणमणुकट्ठी कादव्वा। एवं कदे दुचरिमादिहेट्ठिमसमयाणं पढमखंडाणि मोत्तूण तेसिं विदियादिपरि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णामखंडाणि पुणरुत्ताणि जादाणि, चरिमसमयसव्वपरिणामखंडाणि अपुणरुत्ताणि, सव्वसमयाणं पढमपरिणामखंडेहि सह सरिसत्ताभावा । एदासिं विसोधीणमधापवत्तलक्खणाणमधापवत्तकरणमिदि सण्णा । कुदो ? उवरिमपरिणामा अध हेट्ठा हेट्ठिमपरिणामेसु पवत्तंति त्ति अधापवत्तसण्णा । कथं परिणामाणं करणसण्णा ? ण एस दोसो, असि-वासीणं व साहयतमभावविवक्खाए परिणामाणं करणत्तुवलंभादो । मिच्छादिट्ठिआदीणं ट्ठिदिबंधादिपरिणामा वि हेट्ठिमा उवरिमेसु, उवरिमा हेट्ठिमेसु अणुहरंति, तेसिं अधापवत्तसण्णा किण्ण कदा ? ण, इट्ठत्तादो । कथमेदं णव्वदे ? अंतदीवयअधापवत्तणामादो । एदासिं विसोहीणं तिव्व-मंददाए अप्पाबहुगं उच्चदे—पढमसमयजहण्णिया विसोही थोवा । विदियसमयजहण्णिया विसोही अणंतगुणा । तदियसमयजहण्णिया विसोही अणंतगुणा । एवं णेयव्वं जाव अंतोमुहुत्तमेत्तणिव्वग्गणकंडयचरिमसमयजहण्णविसोहि त्ति । तत्तो णियत्तिदूण पढमसमयउक्कस्सिया विसोही तदो अणंतगुणा । पुव्वपरूविदजहण्णविसोहीदो उवरिमसमयजहण्णविसोही अणंतगुणा । तदो विदियसमयउक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । तदो पुव्वुत्तजहण्णविसोहीदो उवरिमसमयजहण्णविसोही अणंतगुणा । तदो तदियसमयउक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । इदरत्थ जहण्णिया विसोही अणंतगुणा । तदो इदरत्थ उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । एदेण कमेण णेयव्वं जाव अधापवत्तकरणस्स चरिमसमयजहण्णविसोहि त्ति । तत्तो णिव्वग्गणकंडयमेत्तं ओसरिदूण ट्ठिदहेट्ठिमसमयस्स उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । तदो उवरिमसमय उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । एवमुक्कस्सियाओ चेव विसोहीओ णिरंतरं अणंतगुणक्कमेण णेदव्वाओ जाव अधापवत्तकरणस्स चरिमसमयउक्कस्सविसोहि त्ति । एवमधापवत्तकरणस्स लक्खणं परूविदं । संपहि अपुव्वकरणस्स लक्खणं वत्तइस्सामो । तं जहा—अपुव्वकरणद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि त्ति अंतोमुहुत्तमेत्तसमयाणं पढमं रचणा कायव्वा । तत्थ पढमसमयपाओग्गविसोहीणं पमाणमसंखेज्जा लोगा । विदियसमयपाओग्गविसोहीणं पमाणमसंखेज्जा लोगा । एवं णेयव्वं जाव चरिमसमओ त्ति । पढमसमयविसोहीहिंतो विदियसमयविसोहीओ विसेसाहियाओ । एवं णेदव्वं जाव चरिमसमओ त्ति । विसेसो पुण अंतोमुहुत्तपडिभागिओ । एदेसिं करणाणं तिव्व-मंददाए अप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा—अपुव्वकरणस्स पढमसमयजहण्णविसोही थोवा । तत्थेव उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । विदियसमयजहण्णिया विसोही अणंतगुणा । तत्थेव उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । तदियसमयजहण्णिगा विसोही अणंतगुणा । तत्थेव उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । एवं णेयव्वं जाव अपुव्वकरणचरिमसमओ त्ति । करणं परिणामो, अपुव्वाणि च ताणि करणाणि च अपुव्वकरणाणि, असमाणपरिणामा त्ति जं उत्तं होदि । एवमपुव्वकरणस्स लक्खणं परूविदं । इदाणिमणियट्टिकरणस्स लक्खणं उच्चदे । तं जहा—अणियट्टिकरणद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि त्ति तिस्से अद्धाए समया रचेदव्वा । एत्थ समयं पडि एक्केक्को चेव परिणामो होदि, एक्कम्हि समए जहण्णुक्कस्सपरिणामभेदाभावा । एदासिं विसोहीणं तिव्व-मंददाए अप्पाबहुगं उच्चदे—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पढमसमयविसोही थोवा। विदियसमयविसोही अणंतगुणा। तत्तो तदियसमयविसोही अजहण्णुक्कस्सा अणंतगुणा। एवं णेयव्वं जाव अणियट्टिकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति। एगसमए वट्टंताणं जीवाणं परिणामेहि ण विज्जदे णियट्टी णिव्वित्ती जत्थ ते अणियट्टिपरिणामा। एवमणियट्टिकरणस्स लक्खणं गदं। एदाहि विसोहीहि परिणदो जीवो जाणि कज्जाणि करेदि तप्पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेसिं चेव सव्वकम्माणं जाधे अंतोकोडाकोडिट्ठिदिं ठवेदि संखेज्जेहि सागरोवमसहस्सेहि ऊणियं ताधे पढमसम्मत्तमुप्पादेदि ॥ ५ ॥

अधापवत्तकरणे ताव ट्ठिदिखंडगो वा अणुभागखंडगो वा गुणसेडी वा गुणसंकमो वा णत्थि। कुदो? एदेसिं परिणामाणं पुव्वुत्तचउव्विहकज्जुप्पायणसत्तीए अभावादो। केवलमणंतगुणाए विसोहीए पडिसमयं विसुज्झंतो अप्पसत्थाणं कम्माणं वेट्ठाणियमणुभागं समयं पडि अणंतगुणहीणं बंधदि, पसत्थाणं कम्माणमणुभागं चदुट्ठाणियं समयं पडि अणंतगुणं बंधदि। एत्थ ट्ठिदिबंधकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो। पुण्णे पुण्णे ट्ठिदिबंधे पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणूणियमण्णं ट्ठिदिं बंधदि। एवं संखेज्जसहस्सवारं ट्ठिदिबंधोसरणेसु कदेसु अधापवत्तकरणद्धा समप्पदि। अधापवत्तकरणपढमसमयट्ठिदिबंधादो चरिमसमयट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। एत्थेव पढमसम्मत्त-संजमासंजमाभिमुहस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो, पढमसम्मत्त-संजमाभिमुहस्स अधापवत्तकरणचरिमसमयट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। सुत्ते संखेज्जेहि सागरोवमसहस्सेहि ऊणियं ट्ठिदिं बंधदि त्ति तिसु वि करणेसु सामण्णेण भणिदं, एसो विसेसो सुत्ते अणिद्दिट्ठो कथं णव्वदे? आइरियपरंपरागदुवदेसादो। एवमधापवत्तकरणस्स कज्जपरूवणं कदं। अपुव्वकरणस्स पढमो ट्ठिदिखंडओ जहण्णगो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, उक्कस्सओ सागरोवमपुधत्तमेत्तो आगाइदो। अधापवत्तकरणचरिमसमयट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणओ ट्ठिदिबंधो ताधे चेव आढत्तो आयुगवज्जाणं सव्वकम्माणं ट्ठिदिखंडओ होदि। ट्ठिदिबंधो पुण बज्झमाणपयडीणं चेव। अपुव्वकरणपढमसमए चेव गुणसेडी वि आढत्ता। तं जहा—उदयपयडीणमुदयावलियबाहिराट्ठिदट्ठिदीणं पदेसग्गमोकड्डणभागहारेण खंडिदेयखंडं असंखेज्जलोगेण भाजिदेगभागं घेत्तूण उदए बहुगं देदि। विदियसमए विसेसहीणं देदि एवं विसेसहीणं विसेसहीणं देदि जाव उदयावलियचरिमसमओ त्ति। विसेसो पुण वेगुणहाणिपडिभागिओ। एस कमो उदयपयडीणं चेव, ण सेसाणं, तेसिमुदयावलियब्भंतरे पडमाणपदेसग्गाभावा। उदइल्लाणमणुदइल्लाणं च पयडीणं पदेसग्गमुदयावलियबाहिरट्ठिदीसु ट्ठिदमोकड्डणभागहारेण खंडिदेगखंडं घेत्तूण उदयावलियबाहिरट्ठिदिम्हि असंखेज्जसमयपबद्धे देदि। तदो उवरिमट्ठिदीए तत्तो असंखेज्जगुणे देदि। तदियट्ठिदीए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो असंखेज्जगुणे देदि। एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए णेदव्वं जाव गुणसेडीचरिमसमओ त्ति। तदो उवरिमाणंतराए ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं दव्वं देदि। तदुवरिमट्ठिदीए विसेसहीणं देदि। एवं विसेसहीणं विसेसहीणं चेव पदेसग्गं णिरंतरं देदि जाव अप्पप्पणो उक्कीरिदट्ठिदिमावलियकालेण अपत्तो त्ति। णवरि उदयावलियबाहिरट्ठिदिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेगखंडं समऊणावलियाए वे त्तिभागे अइच्छाविय समयाहियतिभागे णिक्खिवदि पुव्वं व विसेसहीणकमेण। तदो उवरिमट्ठिदीए एसो चेव णिक्खेवो। णवरि अइच्छावणा समउत्तरा होदि। एवं णेयव्वं जाव अइच्छावणा आवलियमेत्ता जादा त्ति। तदो उवरिमणिक्खेवो चेव वड्ढदि जाव उक्कस्सणिक्खेवं पत्तो त्ति। जासिं ट्ठिदीणं पदेसग्गस्स उदयावलियब्भंतरे चेव णिक्खेवो तासिं पदेसग्गस्स ओकड्डणभागहारो असंखेज्जा लोगा। एवमुवरिमसव्वसमएसु कीरमाणगुणसेडीणमेसो चेव अत्थो वत्तव्वो। णवरि पढमसमए ओकड्डिदपदेसग्गादो विदियसमए असंखेज्जगुणं पदेसग्गमोकड्डदि, विदियसमयपदेसादो तदियसमए असंखेज्जगुणमोकड्डदि। एवं सव्वसमएसु णेयव्वं। पढमसमए दिज्जमाणपदेसग्गादो विदियसमए ट्ठिदिं पडि दिज्जमाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणं। एवं सव्वसमयाणं पि दिज्जमाणक्कमो वत्तव्वो। तम्हि चेव अपुव्वकरणपढमसमए अप्पसत्थाणं कम्माणमणुभागस्स अणंता भागा घादेदुमाढत्ता। एत्थ अणुभागकंडयमाहप्पजाणावणट्ठमप्पाबहुगं उच्चदे। तं जहा— अणुभागस्स एक्कम्हि पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरे जे अणुभागफद्दया ते थोवा। अइच्छावणा अणंतगुणा। णिक्खेवो अणंतगुणो। अणुभागखंडयदीहत्तमणंतगुणं। एदमप्पाबहुगं सव्वाणुभागखंडएसु दट्ठव्वं। गुणसेडिणिक्खेवो पुण अपुव्वकरणद्धादो अणियट्टीकरणद्धादो च विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधकालो ट्ठिदिखंडयउक्कीरणकालो च दो वि सव्वत्थ सरिसा विसेसहीणा। एगट्ठिदिखंडयकालब्भंतरे अणुभागखंडयसहस्सा णिवदंति, तक्कालादो संखेज्जगुणहीणाणुभागखंडयउक्कीरणद्धत्तादो। णवरि ट्ठिदिखंडयचरिमफालीए पडमाणकाले चेव सव्वत्थ ट्ठिदिबंधो समप्पदि, ट्ठिदिखंडयउक्कीरणकालेण समाणबंधगद्धत्तादो। तम्हि चेव समए चरिमाणुभागखंडयचरिमफाली विपददि, अणुभागखंडयउक्कीरणद्धाए ओवट्टिदट्ठिदिबंधकालम्हि विगलरूवाभावादो। एवं बहूहि ट्ठिदिखंडयसहस्सेहि अदिक्कंतेहि अपुव्वकरणद्धा समप्पदि। णवरि अपुव्वकरणस्स पढमसमयट्ठिदिसंत-ट्ठिदिबंधेहिंतो अपुव्वकरणस्स चरिमसमयट्ठिदिसंत-ट्ठिदिबंधाणं दीहत्तं संखेज्जगुणहीणं होदि। अपुव्वकरणपढमसमयअणुभागसंतादो चरिमसमये अप्पसत्थपयडीणमणुभागसंतकम्ममणंतगुणहीणं, पसत्थाणमणंतगुणं होदि। एवमपुव्वपरिणामकज्जपरूवणा कदा। तदणंतरउवरिमसमए अणियट्टिकरणं पारभदि। ताधे चेव अण्णो ट्ठिदिखंडओ, अण्णो अणुभागखंडओ, अण्णो ट्ठिदिबंधो च आढत्तो। पुव्वोकड्डिदपदेसग्गादो असंखेज्जगुणं पदेसमोकड्डिदूण अपुव्वकरणो व्व गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि। सुत्ते ट्ठिदिबंधोसरणमेव परूविदं, ठिदि-अणुभाग-पदेसघादा ण परूविदा, तेसिं परूवणा ण एत्थ जुज्जदि त्ति ? ण, तालपलंबसुत्तं व तस्स देसामासियत्तादो। एवं ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिखंडय-अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु अणियट्टि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्धाए चरिमसमयं पावदि। संपहि केवचिरेण कालेणेत्ति पुच्छाए अत्थं परूवयंतो अणियट्टिपरिणामाणं कज्जविसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पढमसम्मत्तमुप्पादेंतो अंतोमुहुत्तमोहट्टेदि ॥ ६ ॥

एदं सुत्तमंतरकरणं परूवेदि। कस्स अंतरं कीरदि ? मिच्छत्तस्स, अणादियमिच्छाइट्ठिणो अधियारादो। अण्णहा पुण जमत्थि दंसणमोहणीयं तस्स सव्वस्स अंतरं कीरदि। कम्हि अंतरं करेदि ? अणियट्टिअद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण। अंतरकरणस्स पढमसमए अण्णं ट्ठिदिखंडयं अण्णमणुभागखंडयं च आगाएदि, अण्णं ट्ठिदिबंधं च आढवेदि। जत्तिओ ट्ठिदिबंधकालो तत्तिएण कालेण अंतरं करेमाणो गुणसेढिणिक्खेवस्स अग्गग्गादो संखेज्जदिभागं खंडेदि। गुणसेढीसीसयादो संखेज्जगुणाओ उवरिमट्ठिदीओ खंडेदि, अंतरट्ठं तत्थुक्किण्णपदेसग्गं विदियट्ठिदीए आबाधूणियाए बंधे उक्कड्डदि, पढमट्ठिदीए च देदि, अंतरट्ठिदीसु हंद णियमा ण देदि त्ति। एवमंतरमुक्कीरमाणमुक्किण्णं। तदो पहुडि उवसामओ त्ति भण्णदि। जदि एवं तो पुव्वमुवसामयत्तस्स अभावो पावेदि ? पुव्वं पि उवसामओ चेव, किंतु मज्झदीवयं कादूण सिस्सपडिबोहणट्ठं एसो दंसणमोहणीयउवसामओ त्ति जइवसहेण भणिदं। तदो णेदं वयणं तीदभागस्स उवसामयत्तपडिसेहयं। पढमट्ठिदीदो विदियट्ठिदीदो च ताव आगाल-पडिआगाला जाव आवलिया पडिआवलिया च सेसा त्ति। तदो पहुडि मिच्छत्तस्स गुणसेडी णत्थि, उदायावलियबाहिरे णिक्खेवाभावा। सेसाणं अयुगवज्जाणं गुणसेडी अत्थि। पडिआवलियादो चेव उदीरणा। पडिआवलियाए सेसाए मिच्छत्तस्स उदीरणा णत्थि। तदो चरिमसमयमिच्छाइट्ठी जादो। अथवा णेदेण सुत्तेण अंतरघादो चेव परूविदो, किंतु ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेढिकमेण पदेसघादो अंतरट्ठिदीणं घादो च परूविदो। पुव्विल्लसुत्तं पि ण देसामासियं, ट्ठिदिबंधोसरणाए एक्किस्से चेव परूवणादो। लब्भदि त्ति जं पदं तस्स अत्थो समत्तो। 'कदि भाए वा करेदि मिच्छत्तं' एदिस्से पुच्छाए अत्थपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओहट्टेदूण मिच्छत्तं तिण्णि भागं करेदि सम्मत्तं मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं ॥ ७ ॥

एदेण सुत्तेण मिच्छत्तपढमट्ठिदिं गालिय सम्मत्तं पडिवण्णपढमसमयप्पहुडि उवरिमकालम्मि जो वावारो सो परूविदो। ओहट्टेदूणेत्ति पुव्वं ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसेहि पत्तघादं मिच्छत्तं अणुभागेण पुणो वि घादिय तिण्णि भागे करेदि। कुदो ? 'मिच्छत्ताणुभागादो सम्मामिच्छत्ताणुभागो अणंतगुणहीणो, तत्तो सम्मत्ताणुभागो अणंतगुणहीणो' त्ति पाहुडसुत्ते णिद्दिट्ठत्तादो। ण च उवसम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मत्तकालब्भंतरे अणंताणुबंधिविसंजोयणकिरियाए विणा मिच्छत्तस्स ट्ठिदिघादो वा अणुभागघादो वा अत्थि, तथोवदेसाभावा। तेण ओहट्टेदूणेत्ति उत्ते खंडयघादेण विणा मिच्छत्ताणुभागं घादिय सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तअणुभागायारेण परिणामिय पढमसम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए चेव तिण्णि कम्मंसे उप्पादेदि। पढमसमयउवसमसम्माइट्ठी मिच्छत्तादो पदेसग्गं घेत्तूण सम्मामिच्छत्ते बहुगं देदि, तत्तो असंखेज्जगुणहीणं सम्मत्ते देदि। पढमसमए सम्मामिच्छत्ते दिण्णपदेसेहिंतो विदियसमए सम्मत्ते असंखेज्जगुणे देदि। तम्हि चेव समए सम्मत्तम्हि छुद्धपदेसेहिंतो सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणे देदि। एवं अंतोमुहुत्तकालं गुणसेडीए सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि आऊरेदि जाव गुणसंकमचरिसमओ त्ति। तेण परं अंगुलस्स असंखेज्जदिभागपडिभागिओ विज्झादसंकमो होदि। जाव गुणसंकमो ताव आयुगवज्जाणं कम्माणं ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेडी च अत्थि। एत्थ पणुवीसपडिगो दंडओ कादव्वो। तं जहा— चरिमस्स अणुभागखंडयस्स उक्कीरणद्धा थोवा। अपुव्वकरणस्स पढमसमए अणुभागखंडयउक्कीरणद्धा विसेसाहिया। अणियट्टिस्स चरिमट्ठिदिबंधगद्धा चरिमट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा च दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा। अंतरकरणद्धा तत्थतणट्ठिदिबंधगद्धा ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा च तिण्णि वि तुल्ला विसेसाहिया। अपुव्वकरणस्स पढमट्ठिदिखंडयस्स उक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च दो वि तुल्ला विसेसाहिया। गुणसंकमेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं पूरणकालो संखेज्जगुणो। पढमसमयउवसामयस्स गुणसेडीसीसयं संखेज्जगुणं। पढमट्ठिदी संखेज्जगुणा। उवसामगद्धा विसेसाहिया। विसेसो पुण वे आवलियाओ समऊणाओ। अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा। अपुव्वद्धा संखेज्जगुणा। गुणसेडीणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसंतद्धा संखेज्जगुणा। अंतरं संखेज्जगुणं। जहण्णियाबाधा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाधा संखेज्जगुणा। अपुव्वकरणस्स पढमसमए जहण्णओ ट्ठिदिखंडओ असंखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो। जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। उक्कस्सयं संखेज्जगुणं।

दंसणमोहणीयं कम्मं उवसामेदि ॥ ८ ॥

एदेण पुव्वुत्तपयारेण दंसणमोहणीयं उवसामेदि त्ति पुव्वुत्तत्थो चेव एदेण सुत्तेण संभालिदो।

उवसामेंतो कहिं उवसामेदि, चदुसु वि गदीसु उवसामेदि। चदुसु वि गदीसु उवसामेंतो पंचिंदिएसु उवसामेदि, णो एइंदियविगलिंदियेसु। पंचिंदिएसु उवसामेंतो सण्णीसु उवसामेदि, णो असण्णीसु। सण्णीसु उवसामेंतो गब्भोवक्कंतिएसु उवसामेदि, णो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मुच्छिमेसु । गब्भोवक्कंतिएसु उवसामेंतो पज्जत्तएसु उवसामेदि, णो अपज्जत्तएसु । पज्जत्तएसु उवसामेंतो संखेज्जवस्साउगेसु वि उवसामेदि, असंखेज्जवस्साउगेसु वि ॥ ९ ॥

सुगममेदं । एत्थुवउज्जंतीओ गाहाओ—दंसणमोहस्सुवसामओ दु चदुसु वि गदीसु बोद्धव्वो । पंचिंदिओ य सण्णी णियमा सो होदि पज्जत्तो ॥ २ ॥ सव्वणिरय-भवणेसु य समुद्द-दीव-गुह-जोइस-विमाणे । अहिजोग्ग-अणहिजोग्गे उवसामो होदि णायव्वो ॥ ३ ॥ उवसामगो य सव्वो णिव्वाघादो तहा णिरासाणो । उवसंते भजियव्वो णिरासणो चेव खीणम्हि ॥ ४ ॥ सायारे पट्ठवओ णिट्ठवओ मज्झिमो य भयणिज्जो । जोगे अण्णदरम्मि दु जहण्णए तेउलेस्साए ॥ ५ ॥ मिच्छत्तवेदणीयं कम्मं उवसामगस्स बोद्धव्वं । उवसंते आसाणे तेण परं होइ भयणिज्जं ॥ ६ ॥ सव्वम्हि ट्ठिदिविसेसे उवसंता तिण्णि होंति कम्मंसा । एक्कम्हि य अणुभागे णियमा सव्वे ट्ठिदिविसेसा ॥ ७ ॥ मिच्छत्तपच्चओ खलु बंधो उवसामयस्स बोद्धव्वो । उवसंते आसाणे तण्ण परं होदि भयणिज्जो ॥ ८ ॥ अंतोमुहुत्तमद्धं सव्वोवसमेण होइ उवसंतो । तेण परं उदओ खलु तिण्णेक्कदरस्स कम्मस्स ॥ ९ ॥ सम्मामिच्छाइट्ठी दंसणमोहस्सबंधगो भणिदो । वेदगसम्माइट्ठी खइओ व अबंधगो होदि ॥ १० ॥ सम्मत्तपढमलंभो सव्वोवसमेण तह वियट्ठेण । भजिदव्वो य अभिक्खं सव्वोवसमेण देसेण ॥ ११ ॥ सम्मत्तपढमलंभस्सणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं । लंभस्स अपढमस्स दु भजिदव्वं पच्छदो होदि ॥ १२ ॥ कम्माणि जस्स तिण्णि दु णियमा सो संकमेण भजिदव्वो । एयं जस्स दु कम्मं ण य संकमणेण सो भज्जो ॥ १३ ॥ सम्माइट्ठी सद्दहदि पवयणं णियमसा दु उवइट्ठं । सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणिओगा ॥ १४ ॥ मिच्छाइट्ठी णियमा उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि । सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥ १५ ॥ सम्मामिच्छाइट्ठी सागारो वा तहा अणागारो । तह वंजणोग्गहम्मि दु सागारो होदि बोद्धव्वो ॥ १६ ॥ 'कदि भागे वा करेदि मिच्छत्तं' एदस्स सुत्तस्स अत्थो समत्तो ।

उवसामणा वा केसु व खेत्तेसु कस्स व मूले ॥ १० ॥

एदस्स पुच्छासुत्तस्स विभासा पुव्वं परूविदा, खेत्तणियमो णत्थि त्ति । कस्स व मूले त्ति उत्ते एत्थ वि णत्थि णियमो, सव्वत्थ सम्मत्तग्गहणसंभवादो ।

दंसणमोहणीयं कम्मं खवेदुमाढवेंतो कम्हि आढवेदि ? अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु पण्णारसकम्मभूमीसु जम्हि जिणा केवली तित्थयरा तम्हि आढवेदि ॥ ११ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दंसणमोहणीयस्स कम्मस्स खवणपदेसं पुच्छिदस्स सिस्सस्स तप्पदेसपरूवणट्ठमेदं सुत्तमागयं। अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु त्ति भणिदे जंबूदीवो धादइखंडो पोक्खरद्धमिदि अड्ढाइज्जा दीवा घेत्तव्वा। एदेसु चेव दीवेसु दंसणमोहणीयकम्मस्स खवणमाढवेदि त्ति, णो सेसदीवेसु। कुदो? सेसदीवट्ठिदजीवाणं तक्खवणसत्तीए अभावादो। लवण-कालोदयसण्णिदेसु दोसु समुद्देसु दंसणमोहणीयं कम्मं खवेंति, णो सेससमुद्देसु, तत्थ सहकारिकारणाभावा। अड्ढाइज्जसद्देण समुद्दो किण्ण विसेसिदो? ण एस दोसो 'जहासंभवं विसेसण-विसेसियभावो' त्ति णायादो संभवाभावा अड्ढाइज्जसंखाए ण समुद्दो विसेसिज्जदे। ण च अड्ढाइज्जदीवाणं मज्झे अड्ढाइज्जसमुद्दा अत्थि, विरोहादो। ण च अड्ढाइज्जदीवेहिंतो बज्झसमुद्दे दंसणमोहणीयक्खवणं संभवदि, उवरि उच्चमाण—'जम्हि जिणा तित्थयरा' त्ति विसेसणेण पडिसिद्धत्तादो। ण माणुसुत्तरगिरिपरभाए जिणा तित्थयरा अत्थि, विरोहादो। अड्ढाइज्जदीव-समुद्दट्ठिदसव्वजीवेसु दंसणमोहक्खवणे पसंगे तप्पडिसेहट्ठं पण्णारसकम्मभूमीसु त्ति भणिदं। पण्णारसकम्मभूमिसु त्ति भणिदे भोगभूमीओ पडिसिद्धाओ। कम्मभूमीसु ट्ठिद-देव-मणुस-तिरिक्खाणं सव्वेसिं पि गहणं किण्ण पावेदि त्ति भणिदे ण पावेदि, कम्मभूमीसुप्पण्णमणुस्साणमुवयारेण कम्मभूमिववदेसादो। तो वि तिरिक्खाणं गहणं पावेदि, तेसिं तत्थ वि उप्पत्तिसंभवादो? ण, जेसिं तत्थेव उप्पत्ती, ण अण्णत्थ संभवो अत्थि, तेसिं चेव मणुस्साणं पण्णारसकम्मभूमिववएसो; ण तिरिक्खाणं सयंपहपव्वदपरभागे उप्पज्जणेण सव्वहिचाराणं। उत्तं च—दंसणमोहक्खवणापट्ठवओ कम्मभूमिजादो दु। णियमा मणुसगदीए णिट्ठवओ चावि सव्वत्थ ॥ १७ ॥ मणुसेसुप्पण्णा कथं समुद्देसु दंसणमोहक्खवणं पट्ठवेंति? ण, विज्जादिवसेण तत्थागदाणं दंसणमोहक्खवणसंभवादो। दुस्सम-(दुस्समदुस्सम-) सुस्समासुस्समा-सुसमासुसमादुस्समाकालुप्पण्णमणुसाणं खवणणिवारणट्ठं 'जम्हि जिणा' त्ति वयणं। जम्हि काले जिणा संभवंति तम्हि चेव खवणाए पट्ठवओ होदि, ण अण्णकालेसु। देसजिणाणं पडिसेहट्ठं केवलिगहणं। जम्हि केवलणाणिणो अत्थि तत्थेव खवणा होदि, ण अण्णत्थ। तित्थयरकम्मुदयविरहिदकेवलिपडिसेहट्ठं तित्थयरगहणं। तित्थयरपादमूले दंसणमोहणीयखवणं पट्ठवेंति, ण अण्णत्थेत्ति। अथवा जिणा त्ति उत्ते चोद्दसपुव्वहरा घेत्तव्वा, केवलि त्ति भणिदे केवलणाणिणो तित्थयरकम्मुदयविरहिदा घेत्तव्वा, तित्थयरा त्ति उत्ते तित्थयरणामकम्मुदयजणिदअट्ठमहापाडिहेर-चोत्तिसदिसयसहियाणं गहणं। एदाणं तिण्हं पि पादमूले दंसणमोहक्खवणं पट्ठवेंति त्ति। एत्थ जिणसद्दस्स आवत्तिं काऊण जिणा दंसणमोहक्खवणं पट्ठवेंति त्ति वत्तव्वं, अण्णहा तइयपुढवीदो विणिग्गयाणं कण्हादीणं तित्थयरत्ताणुववत्तीदो त्ति केसिंचि वक्खाणं। एदेण वक्खाणाभिप्पाएण दुस्सम-अइदुस्सम-सुसमसुसम-सुसमकालेसुप्पण्णाणं चेव दंसणमोहणीयक्खवणा णत्थि, अवसेसदोसु वि कालेसुप्पण्णाणमत्थि। कुदो? एइंदियादो आगंतूण तदियकालुप्पण्णबद्धणकुमारादीणं दंसणमोहक्खवणदंसणादो। एदं चेवेत्थ वक्खाणं पधाणं कादव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिट्ठवओ पुण चदुसु वि गदीसु णिट्ठवेदि ॥ १२ ॥

कदकरणिज्जपढमसमयप्पहुडि उवरि णिट्ठवगो उच्चदि । सो आउअवंधवसेण चदुसु वि गदीसु उप्पज्जिय दंसणमोहणीयक्खवणं समाणेदि, तासु तासु गदीसु उप्पत्तीए कारणलेस्सापरिणामाणं तत्थ विरोहाभावा । दंसणमोहक्खवणविधी एत्थ किण्ण परूविदा ? ण, पढमसम्मत्तुप्पायणविधीदो तिण्णिकरणादिकिरियाहि दंसणमोहक्खवणविधीए भेदाभावेण तत्तो चेव अवगमादो । तम्हा परूविदा चेव । अध कोइ विसेसो अत्थि सो वि वक्खाणादो अवगम्मदे । तदो दंसणमोहक्खवणगयविसेसपरूवणा कीरदे । तं जधा—तत्थ ताव दंसणमोहणीयं खवेंतो पढममणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोएदि अधापवत्तापुव्व-अणियट्टिकरणाणि काऊण । एदेसिं करणाणं लक्खणाणि जधा पढमसम्मत्तुप्पत्तीए तिण्हं करणाणं लक्खणाणि परूविदाणि तधा परूवेदव्वाणि । अधापवत्तकरणे ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेडी गुणसंकमो च णत्थि । केवलमणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झंतो गच्छदि जाव अधापवत्तकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति । णवरि अण्णं ट्ठिदिं बंधंतो पुव्विल्लट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणियं ट्ठिदिं बंधदि । एदस्स करणस्स पढमट्ठिदिबंधादो चरिमट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो । अपुव्वकरणपढमसमए पुव्वट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेणूणो अण्णो ट्ठिदिबंधो होदि । तम्हि चेव समए पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तायामं सागरोवमपुधत्तायामं वा आउगवज्जाणं कम्माणं ठिदिखंडयमाढवेदि । अप्पसत्थाणं कम्माणं अणुभागस्स अणंताभागमेत्तमणुभागखंडयं च तत्थेव आढवेदि । तत्थेव अणंताणुबंधीणं गुणसंकमं पि आढवेदि । तं जहा—पढमसमए पुव्वं संकामिददव्वादो असंखेज्जगुणं संकामेदि । विदियसमए तत्तो असंखेज्जगुणं संकामेदि । एवं णेदव्वं जाव सव्वसंकमपढमसमओ त्ति । उदयावलियबाहिरट्ठिदिट्ठिदपदेसग्गमोकड्डणभागहारेण खंडिदेयखंडं घेत्तूण उदयावलियबाहिरे आउगवज्जाणं कम्माणं गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि जाव अपुव्व-अणियट्टीअद्धाहिंतो विसेसाहियमद्धाणं गच्छदि त्ति । तदो उवरिमाणंतराए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं देदि । उवरि सव्वत्थ विसेसहीणं चेव देदि जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियमपत्तमिदि । एवं सव्विसे अपुव्वकरणद्धाए गुणसेढीकरणविधी वत्तव्वा । णवरि पढमसमए ओकड्डिदपदेसेहिंतो विदियसमए असंखेज्जगुणे ओकड्डदि । तत्तो असंखेज्जगुणे तदियसमए ओकड्डदि । एवं णेयव्वं जाव अणियट्टीकरणचरिमसमओ त्ति । पढमसमए दिज्जमाणपदेसग्गादो विदियसमए गुणसेडीए दिज्जमाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणं । एवं णेदव्वं जाव अणियट्टीकरणचरिमसमओ त्ति । एत्थ ट्ठिदिबंधकालो ट्ठिदिखंडयउक्कीरणकालो च एगकालिया दो वि सरिसा अंतोमुहुत्तमेत्ता, तत्थतणअणुभागखंडयउक्कीरणद्धादो संखेज्जगुणा । एवं णेदव्वं जाव ट्ठिदि-अणुभागखंडयाणं अपच्छिमघादो त्ति । णवरि पढमट्ठिदिअणुभागखंडयउक्कीरणद्धाहिंतो विदियट्ठिदि-अणुभागखंडयउक्कीरणद्धाओ विसेसहीणाओ । एवमणंतरहेट्ठि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माहिंतो अणंतरउवरिमाओ सव्वत्थ विसेसहीणाओ। एवमणेण विहाणेण अपुव्वकरणद्धा समत्ता। एत्थ अपुव्वकरणपढमट्ठिदिसंतादो ट्ठिदिबंधादो च चरिमट्ठिदिसंत-ट्ठिदिबंधा संखेज्जगुणहीणा। अणुभागसंतकम्मादो पुण अणुभागसंतकम्ममणंतगुणहीणं। अणियट्टीकरण-पढमसमए अण्णो ट्ठिदिबंधो, अण्णो ट्ठिदिखंडओ, अण्णो अणुभागखंडओ, अण्णा च गुणसेडी एक्कसराहेण आढत्ता। एवमणियट्टि-अद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु विसेसघादेण घादिज्जमाणअणंताणुबंधिचउक्कट्ठिदिसंतकम्ममसण्णिट्ठिदिबंधसमाणं जादं। तदो ट्ठिदि-खंडयसहस्सेसु गदेसु चदुरिंदियट्ठिदिबंधसमाणं जादं। एवं तीइंदिय-बीइंदिय-एइंदियबंधसमाणं होदूण पलिदोवमपमाणं ट्ठिदिसंतकम्मं जादं। तदो अणंताणुबंधिचदुक्कट्ठिदिखंडयपमाणं वि ट्ठिदिसंतस्स संखेज्जा भागा। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिखंडगो पलिदोवमस्स संखेज्ज-दिभागो चेव। एवं ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु दूरावकिट्टीसण्णिदे ट्ठिदिसंतकम्मे अवसेसे तदो प्पहुडि सेसस्स असंखेज्जे भागे हणदि। एवमुवरि सव्वत्थ सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स असंखेज्जभागमेत्तो चेव ट्ठिदिखंडगो पददि। तदो चरिमट्ठिदिखंडयं पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागायामं अंतोमुहुत्तमेत्तुक्कीरणकालेण छिंदंतो अणियट्टिकरणचरिमसमए उदयावलियबाहिरसव्वट्ठिदिसंतकम्मं परसरूवेण संकामिय अंतोमुहुत्तकाले अदिक्कंते दंसणमोहणीयक्खवणं पट्ठवेदि। दंसणमोहणीयक्खवणपरिणामा वि अधापवत्तापुव्व-अणियट्टिभेदेण तिविहा होंति। एदेसिं लक्खणं जधा सम्मत्तुप्पत्तीए उत्तं तथा वत्तव्वं। अधापवत्तकरणे णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेडी गुणसंकमो वा। केवलमणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झंतो अप्पसत्थपयडीणमणुभागमणंतगुणहीणं पसत्थाणमणंतगुणं ट्ठिदिबंधादो अण्णं ट्ठिदिबंधं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणयं बंधंतो गच्छदि जाव अधापवत्तकरणचरिमसमओ त्ति। अपुव्वकरणपढमसमए जहण्णट्ठिदिसंत-कम्मेण उवट्ठिदस्स ट्ठिदिखंडगं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, उक्कस्सेण उवट्ठिदस्स सागरोवमपुधत्तमेत्तो ट्ठिदिखंडगो। पुव्वट्ठिदिबंधादो जाओ ओसरिदाओ ट्ठिदीओ ताओ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो। अप्पसत्थाणं कम्माणमणुभागखंडयपमाणमणंता भागा अणुभाग-संतकम्मस्स। गुणसेडी उदयावलियादो बाहिरा गलिदसेसा। विदियसमए एसो चेव ट्ठिदिखंडओ, सो चेव अणुभागखंडओ, सो चेव ट्ठिदिबंधो, गुणसेडी अण्णा। एवमंतोमुहुत्तं जाव अणुभागखंडओ पुण्णो। एवमणुभागखंडयसहस्सेसु पुण्णेसु अण्णं ट्ठिदिखंडयं ट्ठिदिबंधमणुभागखंडयं च पट्ठवेदि। पढमट्ठिदिखंडगो बहुओ, विदियट्ठिदिखंडगो विसेसहीणो, तदियट्ठिदिखंडगो विसेसहीणो। एवं पढमादो ट्ठिदिखंडयादो अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जगुणहीणो वि ट्ठिदिखंडओ अत्थि। एदेण कमेण ट्ठिदिखंडयसहस्सेहि बहूहि गदेहि अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयम्हि चरिमाणुभागखंडयउक्कीरणकालो ट्ठिदिखंडयउक्कीरणकालो ट्ठिदिबंधकालो च समगं समत्तो। चरि-मसमयअपुव्वकरणे ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं, पढमसमयअपुव्वकरणे ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। ट्ठिदिबंधो वि पढमसमयअपुव्वकरणे बहुओ, चरिमसमयअपुव्वकरणे संखेज्जगुणहीणो। अणियट्टीकरणं पविट्ठपढमसमए अपुव्वो ट्ठिदिखंडगो, अपुव्वो अणुभागखंडगो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपुव्वो ट्ठिदिबंधो, तहा चेव गुणसेडी। अणियट्टीकरणस्स पढमसमए दंसणमोहणीयं अप्पसत्थुवसामणाए अणुवसंतं; सेसाणि कम्माणि उवसंताणि च अणुवसंताणि च। अणियट्टीकरणस्स पढमसमए दंसणमोहणीयट्ठिदिसंतकम्मं सागरोवमसदसहस्सपुधत्तमंतोकोडीए, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं कोडिसदसहस्सपुधत्तमंतोकोडाकोडीए जादं। तदो ट्ठिदिखंडयसहस्सेहि अणियट्टीअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु दंसणमोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं असण्णिट्ठिदिबंधेण सरिसं जादं। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण चउरिंदियट्ठिदिबंधेण समगं जादं। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण ट्ठिदिसंतकम्मं तीइंदियट्ठिदिबंधेण सरिसं होदि। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण दंसणमोहट्ठिदिसंतकम्मं बीइंदियट्ठिदिबंधेण समगं होदि। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण दंसणमोहट्ठिदिसंतकम्मं एइंदियट्ठिदिबंधेण समगं होदि। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण दंसणमोहणीयट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमट्ठिदिगं जादं। जाव पलिदोवमट्ठिदिगं संतकम्मं ताव पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो ठिदिखंडगो। पुणो पलिदोवमस्स संखेज्जा भागा आगाइदा। तम्हि ठिदिखंडगे णिट्ठिदे तत्तो पहुडि सेसट्ठिदिसंतकम्मस्स संखेज्जे भागे आगाएदि। एवं ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागे ट्ठिदिसंतकम्मे सेसे सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु हदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागम्मि अवट्ठाणजोगे दूरावकिट्टीणाम ट्ठिदी होदि। तदो सेसस्स असंखेज्जे भागे आगाएदि। एत्तो पहुडि सेसस्स असंखेज्जे भागे चेव आगाएदि जाव सम्मत्तट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जदिवाससहस्समेत्तं ण पत्तं ति। एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिदेसु ट्ठिदिखंडएसु गदेसु तदो सम्मत्तस्स असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा। तदो बहुसु ट्ठिदिखंडएसु गदेसु मिच्छत्तमावलियबाहिरं सव्वमागाइदं। सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं मोत्तूण असंखेज्जा भागा आगाइदा। तम्हि ट्ठिदिखंडए णिट्ठिज्जमाणे णिट्ठिदे मिच्छत्तस्स जहण्णगो ट्ठिदिसंकमो। जदि गुणिदकम्मंसिओ तो उक्कस्सओ पदेससंकमो, अण्णहा अणुक्कस्सओ। ताधे सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सयं पदेससंतकम्मं होदि। जदि गुणिदखविदघोलमाणो खविदकम्मंसिओ वा तो अणुक्कस्सं। तदो आवलियाए दुसमऊणाए गदाए मिच्छत्तस्स जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं। मिच्छत्ते पढमसमयसंकंते सम्मत्तसम्मामिच्छत्ताणं असंखेज्जा भागा सेसस्स आगाइदा। एवं संखेज्जेहि ट्ठिदिखंडएहि गदेहि सम्मामिच्छत्तमावलियबाहिरसव्वमागाइदं। ताधे सम्मत्तम्हि अट्ठवस्साणि मोत्तूण सव्वमागाइदं। संखेज्जाणि वाससहस्साणि मोत्तूण आगाइदमिदि भणंता वि अत्थि। एदम्हि ट्ठिदिखंडए णिट्ठिदे ताधे सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णओ ट्ठिदिसंतकमो। जदि गुणिदकम्मंसिओ तो उक्कस्सओ पदेससंकमो, सम्मत्तस्स उक्कस्सयं पदेससंतकम्मं। एत्तो पाए अंतोमुहुत्तिओ ट्ठिदिखंडगो। अपुव्वकरणस्स पढमसमयदो जाव चरिमट्ठिदिखंडओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिगो त्ति एदम्हि काले जं पदेसग्गं ओकड्डमाणो उदयावलियबाहिरसव्वरहस्सट्ठिदीए देदि तं थोवं। समउत्तराए ट्ठिदीए जं पदेसग्गं देदि तमसंखेज्जगुणं। दुसमउत्तराए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं देदि। एवं जाव गुणसेडीसीसयं ताव असंखेज्जगुणं। तदो गुणसेडीसीसयादो उवरिमाणंतराए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं देदि। तत्तो उवरि सव्वत्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विसेसहीणं चेव देदि। जावे अट्ठवासियट्ठिदिसंतकम्मं चेट्ठिदं तदोप्पहुडि उवरि अंतोमुहुत्तिगं ट्ठिदिखंडयमागाएदि। सम्मत्तअणुभागस्स उदयावलियपविसमाणअणुभागस्स उदयावलियबाहिरअणुभागस्स य अणुसमयओवट्टणमणंतगुणहीणाए सेडीए करेदि। पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागियं चरिमट्ठिदिखंडयचरिमफालिपदेसग्गमट्ठवस्सम्मि णिक्खिवमाणो उदयादिअवट्ठिदगुणसेडिं करेदि। तं जहा— उदए थोवं पदेसग्गं देदि। से काले असंखेज्जगुणं देदि। एवं जाव गुणसेडीसीसयं ताव असंखेज्जगुणं। तदो उवरिमाणंतरट्ठिदीए वि असंखेज्जगुणं देदि। तदो विसेसहीणं देदि। पुणो अणेण विधिणा सेसअट्ठवस्समेत्तट्ठिदिसंतकम्मम्मि विसेसहीणं चेव देदि। पुव्विल्लगोउच्छदव्वादो ट्ठिदिं पडि संपडि दिज्जमाणदव्वमसंखेज्जगुणं। विदियसमए उदयावलियबाहिरट्ठिदीसु ट्ठिदपदेसग्गमोकड्डणभागहारेण खंडिदेयखंडं घेत्तूणुदये थोवं देदि। उवरिमट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि। एवं जाव गुणसेडीसीसयं ताव असंखेज्जगुणं चेव देदि। तदो उवरिमाणंतराए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणं देदि। पुणो उवरि सव्वत्थ विसेसहीणं चेव देदि। संपदि पुव्विल्लगुणसेढीसीसयादो संपदिगुणसेढिसीसयदव्वम-संखेज्जगुणं ण होदि। विसेसाहियं चेव दिस्समाणं होदि। कुदो? विदियसमयओकड्डिददव्वस्स अट्ठवस्सेगट्ठिदिणिसित्तस्स अट्ठवस्सेगट्ठि-दिदव्वं णिसेगभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्तगोउच्छविसेसादो असंखेज्जगुणस्स अट्ठवस्सेगट्ठिदिपदेसग्गं पेक्खिऊण असंखेज्जगुणहीणत्तादो। एस कमो जाव पढमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति। पुणो चरिमफालीए पदेसग्गे गुणसेडीआगारेण ट्ठइदे वि पुव्विल्लगुणसेडीसीसय-पदेसग्गादो संपधियगुणसेढीसीसए दिस्समाणपदेसग्गं विसेसाहियं चेव, चरिमफालिदव्वादो अट्ठवस्सेगट्ठिदपदेसग्गस्स संखेज्जदिभाग-मेत्तपदेसाणमागमदंसणादो। एवं णेयव्वं जाव दुचरिमट्ठिदिखंडगो त्ति। सम्मत्तस्स चरिमट्ठिदिखंडगे णिट्ठिदे जाओ ट्ठिदीओ सम्मत्तस्स सेसाओ ताओ ट्ठिदीओ थोवाओ। दुचरिमट्ठिदिखंडयं संखेज्जगुणं। चरिमट्ठिदिखंडयं संखेज्जगुणं। सम्मत्तचरिमट्ठिदिमागाएंतो गुणसेडीए संखेज्जे भागे आगाएदि, अण्णाओ च उवरि संखेज्जगुणाओ ट्ठिदीओ। सम्मत्तस्स चरिमट्ठिदिखंडगे पढमसमयआगाइदे ओवट्टियमाणासु ट्ठिदीसु जं पदेसग्गमुदए दिज्जदि तं थोवं, से काले असंखेज्जगुणं। ताव असंखेज्जगुणं जाव ट्ठिदिखंडयस्स जहण्णियाए वि ट्ठिदीए चरिम-समयं अपत्तं ति। सा चेव ट्ठिदी गुणसेडीसीसयं जादा। जं संपहि गुणसेडीसीसयं तत्तो उवरिमाणंतराए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं। तदो विसेसहीणं जाव हेट्ठा ण गुणसेडीसीसयं ताव। तदो उवरिमाणंतराए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणहीणं, तदो विसेसहीणं। एवं सेसासु वि ट्ठिदीसु विसेसहीणं दिज्जदि। जं विदियसमए उक्कीरदि पदेसग्गं तं पि एदेणेव कमेण दिज्जदि। एवं ताव जाव ट्ठिदिखंडयस्स उक्कीरण-द्धाए दुचरिमसमओ त्ति। ट्ठिदिखंडयस्स चरिमसमए ओकड्डमाणो उदए पदेसग्गं थोवं देदि, से काले असंखेज्जगुणं। एवं जाव गुण-सेडीसीसयं ताव असंखेज्जगुणं। गुणगारा वि दुचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गादो चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गस्स असंखेज्जाणि पलिदोवम-वग्गमूलाणि। चरिमे ट्ठिदिखंडए णिट्ठिदे कदकरणिज्जो त्ति भण्णदि। कदकरणिज्जकालब्भंतरे तस्स मरणं पि होज्ज, काउ-तेउ-पम्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुक्कलेस्साणमण्णदराए लेस्साए वि परिणामेज्ज, संकिलिस्सदु वा विसुज्झदु वा, तो वि असंखेज्जगुणाए सेडीए जाव समयाहियावलिया सेसा ताव असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा, उक्कस्सिया वि उदीरणा उदयस्स असंखेज्जदिभागो । पढमसमयअपुव्वकरणमादिं काद्ण जाव पढमसमयकदकरणिज्जो त्ति एदम्हि अंतरे अणुभागखंडय-ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धाणं जहण्णुक्कस्सट्ठिदिखंड-ट्ठिदिसंतकम्माण-मण्णेसिं च पदाणमप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा—सव्वत्थोवा जहण्णिया अणुभागखंडयउक्कीरणद्धा । सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया । ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च जहण्णिया दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ । उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ । कदकरणिज्जस्स अद्धा संखेज्जगुणा । सम्मत्तखवणद्धा संखेज्जगुणा । अणियट्टीअद्धा संखेज्जगुणा । अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा । गुण-सेडीणिक्खेवो विसेसाहिओ । सम्मत्तस्स दुचरिमट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । तस्सेव चरिमट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । अट्ठवस्सट्ठिदिसंत-कम्मे सेसे जो पढमो ट्ठिदिखंडगो सो संखेज्जगुणो । जहण्णिया आबाधा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाधा संखेज्जगुणा । अणुभाग-मणुसमयं ओहट्टमाणस्स पढमसमए अट्ठवासट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । सम्मत्तस्स चरिमट्ठिदिखंडओ असंखेज्जवस्सिओ असंखेज्ज-गुणो । सम्मामिच्छत्तस्स चरिमट्ठिदिखंडओ विसेसाहिओ । अट्ठवस्समेत्तेण मिच्छत्ते खविदे सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं पढमट्ठिदिखंडओ असंखेज्जगुणो । मिच्छत्तसंतकम्मियस्स सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं चरिमट्ठिदिखंडओ असंखेज्जगुणो । मिच्छत्तस्स चरिमट्ठिदिखंडओ विसेसाहिओ । हेट्ठिमपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिसंतकम्मेण असंखेज्जगुणहाणिखंडयाणं पढमट्ठिदिखंडओ मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमसंखेज्जगुणो । संखेज्जगुणहाणिखंडयाणं चरिमट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । पलिदोवमसंतकम्मादो विदिओ ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । जम्हि ट्ठिदिखंडए अवगए दंसणमोहणीयस्स पलिदोवममेत्तट्ठिदिसंतकम्मं होदि सो ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । अपुव्व-करणे पढमो जहण्णओ ट्ठिदिखंडगो संखेज्जगुणो । पलिदोवममेत्ते ट्ठिदिसंतकम्मे जादे तदो पढमो ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । पलिदो-वमट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं । अपुव्वकरणे पढमस्स उक्कस्सट्ठिदिखंडयस्स विसेसो संखेज्जगुणो । दंसणमोहणीयस्स अणियट्टिपढमसमए पविट्ठस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । दंसणमोहणीयवज्जाणं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तेसिं चेव उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । दंसणमोहणीयवज्जाणं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तेसिं चेवुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं ।

सम्मत्तं पडिवज्जंतो तदो सत्तकम्माणमंतोकोडाकोडिं ठवेदि णाणावरणीयं दंसणावरणीयं वेदणीयं मोहणीयं णामं गोदं अंतराइयं चेदि ॥ १३ ॥

सम्मत्तुप्पत्तीए परूविज्जमाणाए सत्तण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्माणं पमाणं पुव्वं चेव परूविदं तदो तमेत्थ ण वत्तव्वं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ? ण एस दोसो, सम्मत्तं पडिवज्जंतस्स ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्माणं पुव्वं परूविदपमाणं संभालिय चारित्तं पडिवज्जंतस्स ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्माणं पमाणपरूवणट्ठमेदस्स परूवणादो । तदो इदि उत्ते सव्वविसुद्धमिच्छाइट्ठिणा ट्ठिदिबंधोसरण-ट्ठिदिखंडयघादेहि घादिय ट्ठविदट्ठिदिसंतकम्माणं गहणं । तदो तत्तो एदेसिं सत्तण्हं कम्माणमंतोकोडाकोडिं संखेज्जगुणहीणं ट्ठवेदि उप्पादेदि त्ति उत्तं होदि । एत्थ संखेज्जगुणहीणत्तं सुत्ते असंतं कुदो लब्भदे ? अज्झाहारादो । मिच्छाइट्ठिट्ठिदिबंधं ट्ठिदिसंतं च अपुव्व-अणियट्टीकरणेहिं घादिय संखेज्जगुणहीणं कादूण पढमसम्मत्तं पडिवज्जदि त्ति एदेण जाणाविदं । एत्थतणट्ठिदिबंधादो ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं, विसोहिणा संतादो ट्ठिदिबंधस्स भूओ घादोवदेसा ।

चारित्तं पडिवज्जंतो तदो सत्तकम्माणमंतोकोडाकोडिं ट्ठिदिं ट्ठवेदि णाणावरणीयं दंसणावरणीयं वेदणीयं मोहणीयं णामं गोदं अंतराइयं चेदि ॥ १४ ॥

तं चारित्तं दुविहं देसचारित्तं सयलचारित्तं चेदि । तत्थ देसचारित्तं पडिवज्जमाणा मिच्छाइट्ठिणो दुविहा होंति वेदगसम्मत्तेण सहिदसंजमासंजमाभिमुहा उवसमसम्मत्तेण सहिदसंजमासंजमाभिमुहा चेदि । संजमं पडिवज्जंता वि एवं चेव दुविहा होति । एदेसु संजमासंजमं पडिवज्जमाणचरिमसमयमिच्छाइट्ठी तदो पढमसम्मत्ताभिमुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिबंधादो दिट्ठिसंतकम्मादो च सत्तण्हं कम्माणं अंतोकोडाकोडिं ट्ठिदिं ठवेदि । एदस्स भावत्थो— पढमसम्मत्ताभिमुहमिच्छाइट्ठिट्ठिदिबंधादो संजमासंजमाभिहुहचरिमसमयमिच्छाइट्ठिट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं । कुदो ? पढमसम्मत्ततिकरणपरिणामेहिंतो अणंतगुणेहिं पढमसम्मत्ताणुविद्धसंजमासंजमपाओग्गतिकरणपरिणामेहिं पत्तघादत्तादो । वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवज्जंतस्स दो चेव करणाणि, तत्थ अणियट्टिकरणस्स अभावादो । एदस्स अपुव्वकरणचरिमसमए वट्टमाणमिच्छाइट्ठिस्स ट्ठिदिसंतकम्मं पढमसमत्ताभिमुहअणियट्टीकरणचरिमसमयट्ठिदमिच्छाइट्ठिट्ठिदिसंतकम्मादो कधं संखेज्जगुणहीणं ? ण, ट्ठिदिसंतमोवट्टियं काऊण संजमासंजमं पडिवज्जमाणस्स संजमासंजमचरिममिच्छाइट्ठिस्स तदविरोधादो । तत्थतणअणियट्टीकरणट्ठिदिघादादो वि एत्थतणअपुव्वकरणट्ठिदिघादस्स बहुवयरत्तादो वा । ण चेदमपुव्वकरणं पढमसमत्ताभिमुहमिच्छाइट्ठिअपुव्वकरणेण तुल्लं, सम्मत्त-संजम-संजमासंजमफलाणं तुल्लत्तविरोहा । ण चापुव्वकरणाणि सव्वअणियट्टीकरणेहिंतो अणंतगुणहीणाणि त्ति वोत्तुं जुत्तं, तप्पदुप्पायणसुत्ताभावा । एदस्स पक्खस्स कुदो सिद्धी ? 'तदो अंतोकोडाकोडिट्ठिदिं ट्ठवेदि' त्ति सुत्तादो । ण चेदं पढमसम्मत्तसहिददेससंजममहिकिच्च परूविदं, देससंजममेत्तस्स एत्थ अहियारादो । संजमासंजमं पडिवज्जमाणस्स चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स ट्ठिदिबंधादो सगट्ठिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण संखेज्जगुणहीणादो संजमा-

भिमुहमिच्छाइट्ठिचरिमसमयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं। कुदो ? संजमासंजमफलअपुव्वकरणघादादो संजमफलअपुव्वकरणघादस्स अइबहुत्तादो। संजमासंजमं पडिवज्जमाणमिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं ट्ठिदिसंतकम्मं अपुव्वकरणचरिमसमए समाणं हि होदि, समाणपरिणामेहि पत्तघादत्तादो। एवं संजमं पडिवज्जमाणमिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदाणं पि वत्तव्वं। एदं देसामासियसुत्तं। कुदो ? एगदेसपदुप्पायणेण एत्थतणसयलत्थस्स सूचयत्तादो। तेणेत्थ ताव संजमासंजमपडिवज्जमाणविहाणं उच्चदे। तं जहा—पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च अक्कमेण पडिवज्जमाणो तिण्णि वि करणाणि कुणदि। तेसिं करणाणं लक्खणाणि जधा सम्मत्तुप्पत्तीए परूविदाणि तधा परूवेदव्वाणि। असंजदसम्मादिट्ठी अट्ठावीससंतकम्मियवेदगसम्मत्तपाओग्गमिच्छादिट्ठी वा जदि संजमासंजमं पडिवज्जदि तो दो चेव करणाणि, अणियट्टीकरणस्स अभावादो। संजमासंजममंतोमुहुत्तेण लभिहिदि त्ति तदो पहुडि सव्वो जीवो आयुगवज्जाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधं ट्ठिदिसंतकम्मं च अंतोकोडाकोडीए करेदि। सुभाणं कम्माणमणुभागबंधमणुभागसंतकम्मं च चउट्ठाणियं करेदि। असुहकम्माणमणुभागबंधमणुभागसंतकम्मं च वेट्ठाणियं करेदि। तदो अधापवत्तकरणणामाए अणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झदि। एत्थ णत्थि ट्ठिदिखंडओ वा अणुभागखंडओ वा गुणसेडी वा। केवलं ट्ठिदिबंधे पुण्णे पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागहीणेण ट्ठिदिबंधेण ट्ठिदिओ बंधदि। जे सुहकम्मंसा ते अणुभागेहि अणंतगुणेहि बंधदि। जे असुहकम्मंसा ते अणंतगुणहीणेहि अणुभागेहि बंधदि। विसोहीए तिव्व-मंदत्तं वत्तइस्सामो—अधापवत्तकरणस्स जदो पहुडि विसुद्धो तस्स पढमसमए जहण्णिया विसोही थोवा। विदियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा। तदियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा। एवमंतोमुहुत्तं जहण्णिया चेव विसोही अणंतगुणेण गच्छदि। तदो पढमसमए उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा। सेसअधापवत्तविसोहीणं जधा दंसणमोहुवसामगअधापवत्तकरणे विसोहीणमप्पाबहुगं कयं, तहा चेव एत्थ वि कायव्वं। अपुव्वकरणविसोहीणं पि तथा चेव कायव्वं। अपुव्वकरणस्स पढमसमए जहण्णओ ट्ठिदिखंडओ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, उक्कस्सगो ट्ठिदिखंडओ सागरोवमपुधत्तं। अणुभागखंडगो असुहाणं कम्माणमणुभागस्स अणंता भागा। सुभाणं कम्माणमणुभागघादो णत्थि। एत्थ पदेसग्गस्स गुणसेढीणिज्जरा वि णत्थि। कुदो ? जच्चंतरीभूदअपुव्वपरिणामादो। ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण हीणो। अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु ट्ठिदिखंडयउक्कीरणकालो ट्ठिदिबंधकालो च अण्णो अणुभागखंडयउक्कीरणकालो च समगं समप्पंति। तदो अण्णं ट्ठिदिखंडयं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागियं अण्णं ट्ठिदिबंधं अण्णमणुभागखंडयं च पट्ठवेदि। एवं ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु अपुव्वकरणद्धा समत्ता होदि। तदो से काले पढमसमयसंजदासंजदो। तावे अपुव्वं ट्ठिदिखंडयं अपुव्वमणुभागखंडयं अपुव्वं ट्ठिदिबंधं च पट्ठवेदि। असंखेज्जसमयपबद्धे ओकड्डिदूण गुणसेढिमुदयावलियबाहिरे रचेदि। से काले (सो चेव ठिदिखंडओ) सो चेव अणुभागखंडओ सो चेव ट्ठिदिबंधो। गुणसेडी असंखेज्जगुणा।

गुणसेडीणिक्खेवो तत्तिओ चेव, संजदासंजदम्मि अवट्ठिदगुणसेडीणिक्खेवं मुच्चा अण्णस्सासंभवादो। एवं जाव एगंताणुवड्ढिकालचरिमसमओ त्ति अणंतगुणाए विसोहीए विसुज्झंतो समए समए असंखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिदूण अवट्ठिदगुणसेडिं करेदि। एवं ट्ठिदिखंडएसु बहुएसु गदेसु तदो अधापवत्तसंजदासंजदो होदि। अधापवत्तसंजदासंजदस्स अणुभागघादो ट्ठिदिघादो वा णत्थि। जदि संजमासंजमादो परिणामपच्चएण णिग्गदो संतो पुणरवि अंतोमुहुत्तेण परिणामपच्चएण आणीदो संजमासंजमं पडिवज्जदि, दोण्हं करणाणमभावादो तत्थ णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो वा। कुदो? पुव्वं दोहि करणेहि घादिदट्ठिदि-अणुभागाणं वड्ढीहि विणा संजमासंजमस्स पुणरागदत्तादो। जाव संजदासंजदो ताव समए समए गुणसेडिं करेदि। विसुज्झंतो असंखेज्जगुणं संखेज्जगुणं वा संखेज्जभागुत्तरं असंखेज्जभागुत्तरं वा दव्वमोकड्डिय अवट्ठिदगुणसेडिं करेदि। संकिलेसंतो एवं चेव गुणहीणं विसेसहीणं वा गुणसेडिं करेदि। संपहि अपुव्वकरणादो जाव संजदासंजदो एगंताणुवड्ढीए चरित्ताचरित्तलद्धीए वड्ढदि ताव एदम्हि काले ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्म ट्ठिदिखंडयाणं जहण्णुक्कस्सियाणमाबाहाणं जहण्णुक्कस्सियाणमुक्कीरणद्धाणं अण्णेसिं च पदाणं अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा– सव्वत्थोवा एगंताणुवड्ढीए चरिमाणुभागखंडयउक्कीरणद्धा। अपुव्वकरणपढमाणुभागखंडयउक्कीरणद्धा विसेसाहिया। एगंताणुवड्ढीए चरिमट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च दो वि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ। अपुव्वकरणपढमट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च दो वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ। पढमसमयसंजदासंजदप्पहुडि एगंतवड्ढावड्ढीए चरित्ताचरित्तपज्जाएहि वड्ढदि ताव एसो वड्ढिकालो संखेज्जगुणो। अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा। जहण्णिया संजमासंजमद्धा सम्मत्तद्धा मिच्छत्तद्धा संजमद्धा असंजमद्धा सम्मामिच्छत्तद्धाओ एदाओ छप्पि अद्धाओ तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ। पढमसमयसंजदासंजदेण कदगुणसेडीणिक्खेवो संखेज्जगुणो। एगंतवड्ढावड्ढीए चरिमट्ठिदिबंधस्स आबाधा संखेज्जगुणा। अपुव्वकरणपढमट्ठिदिबंधस्स आबाधा संखेज्जगुणा। एगंतवड्ढावड्ढीए चरिमसमयट्ठिदिखंडओ असंखेज्जगुणो। कुदो? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागत्तादो। अपुव्वकरणस्स पढमो जहण्णओ ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो। पलिदोवमं संखेज्जगुणं। अपुव्वस्स पढमो उक्कस्सओ ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो। एगंतवड्ढावड्ढीए चरिमट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। अपुव्वकरणस्स पढमो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। एगंताणुवड्ढावड्ढीए चरिमसमयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। पढमसमयअपुव्वकरणस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। एत्थ तिव्व-मंददाए सामित्तमप्पाबहुगं च वत्तइस्सामो। तत्थ सामित्तं– उक्कस्सिया लद्धी कस्स? संजदासंजदस्स सव्वविसुद्धस्स से काले संजमगाहयस्स। जहण्णिया लद्धी कस्स? तप्पाओग्गस्स संकिलिट्ठस्स से काले मिच्छत्तं गाहयस्स। अप्पाबहुगं। तं जहा– जहण्णिया संजमासंजमलद्धी थोवा। उक्कस्सिया संजमासंजमलद्धी अणंतगुणा। एत्तो संजमासंजमलद्धीए ट्ठाणाणि वत्तइस्सामो। तं जहा– जहण्णए संजमासंजमलद्धिट्ठाणे अणंताणि फद्दयाणि। तदो विदियलद्धिट्ठाणं अणंतभागुत्तरं। एवं छट्ठाणपदिदाणं लद्धिट्ठाणाणं पमाणमसंखेज्जा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगा। आदीदो प्पहुडि तिरिक्ख-मणुससंजदासंजदाणं पडिवादट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि हवंति। तदो अंतरं होदूण तिरिक्खमणुससंजदासंजदाणं पडिवज्जट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि होंति। तदो अंतरं होदूण तिरिक्ख-मणुससंजदासंजदाणं अपडिवाद-पडिवज्जमाणट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि होंति। एदेसिं संदिट्ठी एसा ००० एदाणि तिरिक्ख-मणुससंजदासंजदाणं पडिवादट्ठाणाणि। अंतरं। ०० एदाणि संजमासंजमपडिवज्जमाणट्ठाणाणि। अंतरं। ००

एदाणि संजदासंजदाण अपडिवज्जमाण-अपडिवादट्ठाणाणि। एत्थ असंखेज्जलोगमेत्तसंजमासंजमलद्धिट्ठाणेसु जहण्णए लद्धिट्ठाणे संजमासंजमं ण पडिवज्जदि, पडिवादट्ठाणस्स पडिवज्जमाणट्ठाणत्तविरोहादो। ण विदिएण वि पडिवज्जदि। एवं णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि तिरिक्ख-मणुससंजदासंजदाणं पडिवादट्ठाणाणि होंति। तदो अंतरमइच्छिदूण जहण्णं पडिवज्जमाणगस्स संजमासंजमलद्धिट्ठाणं होदि। तदो णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि पडिवज्जमाणट्ठाणाणि हवंति। पुणो अंतरमुल्लंघिय अपडिवाद-अपडिवज्जमाणसंजमासंजमलद्धिट्ठाणाणं जहण्णं लद्धिट्ठाणं होदि। तदो णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि अपडिवाद-अपडिवज्जमाणदेससंजमलद्धिट्ठाणाणि होंति। एदेसिं तिव्व-मंददाए अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा—सव्वमंदाणुभागं जहण्णयं संजमासंजमलद्धिट्ठाणं। मणुसस्स संजदासंजदस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स मिच्छत्तं गच्छमाणस्स चरिमसमए जहण्णं देससंजमलद्धिट्ठाणं तत्तियं चेव, दोण्हमेगत्तादो। तिरिक्खजोणियस्स देससंजमादो पडिवदिय मिच्छत्तं गच्छमाणस्स सव्वसंकिलिट्ठस्स चरिमसमए जहण्णमपच्चक्खाणलद्धिट्ठाणमणंतगुणं। कुदो? मणुस्सजहण्णापच्चक्खाणपडिवादिट्ठाणादो छवड्ढीए असंखेज्जलोगमेत्तमणुस्सापच्चक्खाणपडिवादट्ठाणाणि गंतूण एदस्सुप्पत्तीदो। तिरिक्खजोणियस्स अपच्चक्खाणादो पडिवदिय तप्पाओग्गसंकिलेसेण असंजमं गच्छमाणस्स चरिमसमए उक्कस्समपच्चक्खाणपडिवादट्ठाणमणंतगुणं, तिरिक्खजहण्णपडिवादट्ठाणादो छवड्ढीए असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणाणि गंतूण एदस्सुप्पत्तीदो। मणुस्सस्स संजमासंजमादो पडिवदिय असंजमं गच्छमाणस्स उक्कस्सयं पडिवादलद्धिट्ठाणमणंतगुणं, तिरिक्खउक्कस्सपडिवादलद्धिट्ठाणादो छवड्ढीए असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण उप्पत्तीदो। मणुस्सस्स संजमासंजमं पडिवज्जमाणस्स सव्वविसुद्धस्स मिच्छाइट्ठिस्स संजमासंजमपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णमपच्चक्खाणपडिवज्जमाणट्ठाणमणंतगुणं। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्ता छट्ठाणाणि अंतरिय उप्पत्तीदो। तिरिक्खजोणियस्स मिच्छत्तपच्छायदस्स सव्वविसुद्धस्स संजदासंजदपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णं देसविरदिलद्धिट्ठाणमणंतगुणं। कुदो? मणुस्सजहण्णअपच्चक्खाणपडिवज्जमाण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ट्ठाणादो असंखेज्जलोगमेत्तपडिवज्जमाणलद्धिट्ठाणाणि गंतूण उप्पत्तीए । तिरिक्खजोणियस्स असंजमाणुविद्धवेदगसम्मत्तपच्छायदस्स
पढमसमयसंजदासंजदस्स उक्कस्सलद्धिट्ठाणमणंतगुणं । कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं । मणुसस्स सव्वविसुद्धस्स असंजमाणुविद्धस्स सम्मत्त-
पच्छायदस्स संजमासंजमपढमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सलद्धिट्ठाणमणंतगुणं । मणुसस्स संजमासंजमं पडि अपडिवदमाण-अपडिवज्ज-
माणगस्स मिच्छत्तपच्छायदस्स सव्वविसुद्धस्स संजदासंजदविदियसमए वट्टमाणस्स जहण्णलद्धिट्ठाणमणंतगुणं । कुदो ? असंखेज्जलोग-
मेत्तछट्ठाणाणि अंतरिय समुप्पत्तीदो । तिरिक्खजोणियस्स सव्वविसुद्धस्स मिच्छत्तपच्छायदस्स संजदासंजदविदियसमए वट्टमाणस्स
जहण्णयं लद्धिट्ठाणमणंतगुणं । असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरिगंतूणुप्पत्तीदो । तिरिक्खजोणियस्स अपडिवदमाण-अपडिवज्जमाणयस्स
सव्वविसुद्धस्स सत्थाणसंजदासंजदस्स उक्कस्सयं लद्धिट्ठाणमणंतगुणं । मणुसस्स अपडिवदमाण-अपडिवज्जमाणयस्स सत्थाणसंजदा-
संजदस्स उक्कस्सयं लद्धिट्ठाणमणंतगुणं । सयलचारित्तं तिविहं खओवसमियं ओवसमियं खइयं चेदि । तत्थ खओवसमचारित्तपडिवज्जण-
विहाणं उच्चदे । तं जहा– पढमसम्मत्तं संजमं च जुगवं पडिवज्जमाणो तिण्णि वि करणाणि काऊण पडिवज्जदि । तेसिं करणाणं लक्खणं
जधा सम्मत्तुप्पत्तीए भणिदं, तधा वत्तव्वं । जदि पुण अट्ठावीससंतकम्मिओ मिच्छादिट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदो वा संजमं
पडिवज्जदि तो दो चेव करणाणि, अणियट्टीकरणस्स अभावादो । एदेसिं च करणाणं लक्खणं जधा संजमासंजमं पडिवज्जमाणयस्स
करणाणं परूविदं तधा परूवेदव्वं, णत्थि एत्थ कोच्छि विसेसो । पढमसमयसंजमप्पहुडि अंतोमुहुत्तद्धमणंतगुणाए चरित्तलद्धीए जीवो
वड्ढदि । जाव चरित्तलद्धी एअंतोवड्ढीए वड्ढदि ताव सो जीवो अपुव्वकरणसण्णिदो होदि । एअंतवड्ढीदो से काले चरित्तलद्धीए सिया
वड्ढेज्ज, सिया हाएज्ज, सिया अवट्ठाएज्ज वा । संजमादो णिग्गदो असंजमं गंतूण जदि ट्ठिदिसंतकम्मेण अवट्ठिदेण पुणो संजमं पडिवज्जदि
तस्स संजमं पडिवज्जमाणस्स अपुव्वकरणाभावादो णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो वा । असंजमं गंतूण वड्ढाविदट्ठिदिअणुभागसंत-
कम्मस्स दो वि घादा अत्थि, दोहि करणेहि विणा तस्स संजमग्गहणाभावा । पढमसमयअपुव्वकरणमादिं कादूण जाव अधापवत्त-
संजदो एदम्हि घाले इमेसिं पदाणमप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा– सव्वत्थोवा एयंताणुवड्ढीए चरिमाणुभागखंडयउक्कीरणद्धा । अपुव्व-
करणस्स पढमाणुभागखंडयउक्कीरणद्धा विसेसाहिया । एअंताणुवड्ढीए चरिमट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च दो वि तुल्लाओ संखेज्ज-
गुणाओ । पढमसमयअपुव्वकरणस्स ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा ट्ठिदिबंधगद्धा च विसेसाहियाओ । पढमसमयसंजदमादिं कादूण जम्हि काले
एअंतवड्ढीए वड्ढदि सो कालो संखेज्जगुणो । अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा । जहण्णिया संजमद्धा संखेज्जगुणा । गुणसेडीणिक्खेवो
संखेज्जगुणो । एअंताणुवड्ढीए चरिमट्ठिदिबंधस्स आबाधा संखेज्जगुणा । पढमसमयअपुव्वकरणट्ठिदिबंधस्स आबाधा संखेज्जगुणा ।
एअंताणुवड्ढीए चरिमट्ठिदिखंडओ असंखेज्जगुणो । अपुव्वकरणस्स पढमसमए जहण्णओ ट्ठिदिखंडओ संखेज्जगुणो । पलिदोवमं संखेज्ज-

षट्ख.१९२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गुणं । पढमट्ठिदिविसेसो संखेज्जगुणो । अपुव्वकरणस्स चरिमट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव पढमट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । अपुव्वकरणस्स चरिमट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तस्सेव पढमट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । एत्थ जाणि संजमलद्धिट्ठाणाणि ताणि तिविहाणि होंति । तं जहा– पडिवादट्ठाणाणि उप्पादट्ठाणाणि तव्वदिरित्तट्ठाणाणि त्ति । तत्थ पडिवादट्ठाणं णाम जम्हि ट्ठाणे मिच्छत्तं वा असंजमसम्मत्तं वा संजमासंजमं वा गच्छदि तं पडिवादट्ठाणं । उप्पादट्ठाणं णाम जम्हि ट्ठाणे संजमं पडिवज्जदि तं उप्पादट्ठाणं णाम । सेससव्वाणि चेव चरित्तट्ठाणाणि तव्वदिरित्तट्ठाणाणि णाम । एदेसिं लद्धिट्ठाणाणमप्पाबहुगं । तं जहा– सव्वत्थोवाणि पडिवादट्ठाणाणि । कुदो ? मिच्छत्तं वा असंजमसम्मत्तं वा संजमासंजमं वा गच्छंतस्स चरिमसमयसंजदस्स जहण्णपरिणाममादिं कादूण जा उक्कस्सपडिवादट्ठाणं ति सव्वेसिं गहणादो । उप्पादट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । कुदो ? पडिवादट्ठाणाणि अपडिवाद-अपडिवज्जमाणट्ठाणाणि च मोत्तूण सेससव्वट्ठाणाणं गहणादो । तव्वदिरित्तट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । कुदो ? पडिवादुप्पादट्ठाणाणि मोत्तूण सेससव्वट्ठाणाणं गहणादो । ०००००००००००००००००००००००० । अंतरं । एदाणि संजमस्स पडिवादट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि मिच्छत्तं गच्छमाणस्स संजदस्स चरिमसमए हवंति । एत्थ सव्वजहण्णं पडिवादट्ठाणं उक्कस्ससंकिलेसेण मिच्छत्तं गच्छमाणस्स संजदस्स चरिमसमए होदि । एदेसिं चेव उक्कस्सं जहण्णादो अणंतगुणीभूदं तप्पाओग्गसंकिलेसेण मिच्छत्तं गच्छमाणसंजदचरिमसमए हवदि । ००००००० ००००००००००००००० । अंतरं । एदाणि असंजदसम्मत्तं गच्छमाणसंजदस्स पडिवादट्ठाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि । एत्थ सव्वजहण्णं उक्कस्ससंकिलेसेण असंजदसम्मत्तं गच्छमाणसंजदचरिमसमए । उक्कस्सं तप्पाओग्गसंकिलेसेण चरिमसमए । ०००००००००० ००००००००० । अंतरं । एदाणि संजमासंजमं गच्छंतसंजमपडिवादट्ठाणाणि । एत्थ जहण्णं सव्वसंकिलेसेण संजमासंजमं गच्छंतसंजदचरिमसमए, उक्कस्सं तप्पाओग्गसंकिलेसेण संजदचरिमसमए । ००० । अंतरं । एदाणि संजमं पडिवज्जमाणस्स ट्ठाणाणि । एत्थ जहण्णं भरतखेत्तणिवासिस्स मिच्छत्तपच्छायदसंजदस्स जहण्णं पडिवज्जमाणट्ठाणमणंतगुणं । तस्सेव उक्कस्सं देसविरदिपच्छायदसव्वविसुद्धसंजद पढमसमए तत्तो अणंतगुणं । कम्मभूमिम्हि संजमं पडिवज्जमाणस्स देसविरदिपच्छायदस्स सव्वविसुद्धसंजदस्स पढमसमए उक्कस्सपडिवज्जमाणलद्धिट्ठाणं तत्तो अणंतगुणं होदि । ००००००००००००००००००००००००० । अंतरं । परिहारसंजदस्स एदाणि लद्धिट्ठाणाणि । एत्थ जहण्णं तप्पाओग्गसंकिलेसेण सामाइय-च्छेदोवट्ठावणाभिमुहचरिमसमए होदि । उक्कस्सं सव्वविसुद्धपरिहारसुद्धिसंजदस्स । एत्थ जहण्हं पडिवादट्ठाणं थोवं । उक्कस्सं पडिवज्जमाणट्ठाणमणंतगुणं । उक्कस्सअपडिवाद-अपडिवज्जमाणट्ठाणमणंतगुणं । ००००००००००००००००० । अंतरं । एदाणि सामाइय-छेदोवट्ठावणियाणं संजमट्ठाणाणि । सामाइय-च्छेदोवट्ठावणियाणं उक्कस्सयं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजमट्ठाणमणंतगुणं । तं कस्स ? सव्वविसुद्धस्स से काले सुहुमसांपराइयसंजमं पडिवज्जमाणस्स । एदेसिं जहण्णं मिच्छत्तं गच्छंत-
चरिमसमए होदि । तेणेत्थ तण्ण उत्तं । ००००००००००००००००० । अंतरं । सुहुमसांपराइयस्स एदाणि संजमट्ठाणाणि ।
तत्थ जहण्णं अणियट्टिगुणट्ठाणं से काले पडिवज्जंतस्स सुहुमस्स होदि । उक्कस्सं खीणकसायगुणं पडिवज्जमाणस्स चरिमसमए भवदि ।
|०| एदं जहाक्खादसंजमट्ठाणं उवसंत-खीणकसाय-सजोगि-अजोगीणमेक्कं चेव जहण्णुक्कस्सवदिरित्तं होदि, कसायाभावादो । एदं
संदिट्ठिं ट्ठविय तिव्व-मंददाए अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा—सव्वमंदाणुभागं मिच्छत्तं गच्छमाणस्स जहण्णयं संजमट्ठाणं । तस्सेव
उक्कस्सयं संजमट्ठाणं अणंतगुणं, तदो असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण उप्पण्णत्तादो । असंजमसम्मत्तं गच्छमाणस्स जहण्णं संजमट्ठाण-
मणंतगुणं, असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिय उप्पण्णत्तादो । तस्सेव उक्कस्सयं संजमट्ठाणमणंतगुणं, उवरिं असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि
गंतूणुप्पत्तीदो । संजमासंजमं गच्छमाणस्स जहण्णयं संजमट्ठाणमणंतगुणं, अणेयाणि छट्ठाणाणि अंतरिय उप्पत्तीदो । तस्सेव उक्कस्सयं
संजमट्ठाणमणंतगुणं । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरिं गंतूणुप्पत्तीदो । कम्मभूमियस्स संजमं पडिवज्जमाणस्स जहण्णसंजम-
ट्ठाणमणंतगुणं । कुदो ? अणेयाणि छट्ठाणाणि अंतरिय उप्पत्तीदो । अकम्मभूमियस्स संजमं पडिवज्जमाणयस्स जहण्णयं संजमट्ठाण-
मणंतगुणं । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्पत्तीदो । तस्सेव उक्कस्सयं संजमं पडिवज्जमाणस्स संजमट्ठाणमणंतगुणं ।
कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्पत्तीदो । कम्मभूमियस्स संजमं पडिवज्जमाणस्स उक्कस्सयं संजमट्ठाणमणंतगुणं, असं-
खेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्पत्तीदो । परिहारसुद्धिसंजदस्स जहण्णयं संजमट्ठाणं छेदोवट्ठावणसंजमाभिमुहस्स अणंतगुणं,
बहूणि छट्ठाणाणि अंतरिय समुब्भवादो । तस्सेव उक्कस्सयं संजमट्ठाणमणंतगुणं । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्प-
त्तीदो । उवरि सामाइय-च्छेदोवट्ठावणियाणं उक्कस्सयं संजमट्ठाणमणंतगुणं । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिय तत्तियमेत्ताणि
चेव ट्ठाणाणि णिरंतरमुवरि गंतूणुप्पत्तीदो । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदस्स अणियट्टीगुणट्ठाणाभिमुहस्स जहण्णयं संजमट्ठाणमणंतगुणं ।
कुदो ? बहूणि छट्ठाणाणि अंतरिय समुब्भवादो । तस्सेव उक्कसयं संजमट्ठाणमणंतगुणं, अणंतगुणविसोहीए समुप्पत्तीदो । वीदरागस्स
अजहण्णमणुक्कस्सं चरित्तलद्धिट्ठाणमणंतगुणं । संपधि ओवसमियचारित्तपडिवज्जणविहाणं वुच्चदे । तं जहा—जो वेदगसम्माइट्ठी जीवो
सो ताव पुव्वमेव अणंताणुबंधी विसंजोएदि । तस्स जाणि करणाणि ताणि परूवेदव्वाणि । तं जहा—अधापवत्तकरणं अपुव्वकरणं
अणियट्टिकरणं च । अधापवत्तकरणे णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेडी वा । अपुव्वकरणे ट्ठिदिघादो अणुभागघादो
गुणसेडी गुणसंकमो च अत्थि । अणियट्टिकरणे वि एदाणि चेव, अंतरकरणं णत्थि । जो अणंताणुबंधी विसंजोएदि तस्स एसा
ताव समासपरूवणा । तदो अणंताणुबंधी विसंजोइय अंतोमुहुत्तं अधापवत्तो होदूण पुणो पमत्तगुणं पडिवज्जिय असाद-अरदि-सोग-

अजसगित्तिआदीणि कम्माणि अंतोमुहुत्तं बंधिय तदो दंसणमोहणीयमुवसामेदि। जाणि अणंताणुबंधिविसंजोयणाए तिण्णि वि करणाणि परूविदाणि ताणि सव्वाणि इमस्स वि परूवेदव्वाणि। कधं ताणि चेव तिण्णि करणाणि पुध पुध कज्जुप्पायणाणि? ण एस दोसो, लक्खणसमाणत्तेण एयत्तमावण्णाणं भिण्णकम्मविरोहित्तणेण भेदमुवगयाणं जीवपरिणामाणं पुध पुध कज्जुप्पायणे विरोहाभावा। तत्थ ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसेडी च अत्थि। जधा अणंताणुबंधिविसंजोयणाए गलिदसेसा अपुव्वकरणद्धादो अणियट्टिकरणद्धादो च विसेसाहिया गुणसेडी कदा तधा एत्थ वि करेदि। ट्ठिदि-अणुभागकंडयगहणकमो तेसिमुक्कीरणद्धाणं ट्ठिदिबंधगद्धाणं कमो च दंसणमोहणीयक्खवणाए जधा उत्तो तधा वत्तव्वो। णवरि एत्थ गुणसंकमो णत्थि, विज्झादो चेव, अप्पसत्थाणं अधापवत्तो वा। अपुव्वकरणस्स पढमसमयट्ठिदिसंतकम्मादो तस्सेव चरिमसमयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं। पढमसमयअणियट्टीकरणस्स ट्ठिदिसंतकम्मादो चरिमसमयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं। दंसणमोहणीयउवसामणअणियट्टीअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु सम्मत्तस्स असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दंसणमोहणीयस्स अंतरं करेदि। तं जहा— सम्मत्तस्स पढमट्ठिदिमंतोमुहुत्तमेत्तं मोत्तूण अंतरं करेदि, मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुदयावलियं मोत्तूण अंतरं करेदि। अंतरम्हि उक्कीरिज्जमाणपदेसग्गं विदियट्ठिदिम्हि ण संछुहदि, बंधाभावादो सव्वमाणेदूण सम्मत्तपढमट्ठिदिम्हि णिक्खिवदि। सम्मत्तपदेसग्गमप्पणो पढमट्ठिदिम्हि चेव संछुहदि। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-सम्मत्ताणं विदियट्ठिदिपदेसग्गं ओकड्डिदूण सम्मत्तपढमट्ठिदीए देदि, अणुक्कीरिज्जमाणासु ट्ठिदीसु च देदि। सम्मत्तपढमट्ठिदिसमाणासु ट्ठिदीसु ट्ठिदमिच्छत्त-सम्मामिच्छत्तपदेसग्गं सम्मत्तपढमट्ठिदीसु संकामेदि। जाव अंतरदुचरिमफाली पददि ताव इमो कमो होदि। पुणो चरिमफालीए पदमाणाए मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणमंतरट्ठिदिपदेसग्गं सव्वं सम्मत्तपढमट्ठिदीए संछुहदि। एवं सम्मत्त-अंतरट्ठिदिपदेसं पि अप्पणो पढमट्ठिदीए चेव देदि। विदियट्ठिदिपदेसग्गं पि ताव पढमट्ठिदिमेदि जाव आवलिय-पडिआवलियाओ पढमट्ठिदीए सेसाओ त्ति। सम्मत्तस्स पढमट्ठिदीए झीणाए मिच्छत्तपदेसग्गं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेसु गुणसंकमेण ण संकमदि। इमस्स विज्झादसंकमो चेव। पढमदाए सम्मत्तमुप्पादयमाणस्स जो गुणसंकमेण पूरणकालो तदो संखेज्जगुणं कालं इमो उवसंतदंसणमोहणीओ विसोहीए वड्ढदि। तेण परं हायदि वड्ढदि अवट्ठायदि वा। तदो उवसंतदंसणमोहणीओ असाद-अरदि-सोग-अजसकित्तिआदिपयडीणं बंधपरावत्तसहस्सं कादूण कसायाणमुवसामणट्ठमधापवत्तकरणपरिणामेहि परिणमेदि। एत्थ पुव्वं व णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो गुणसंकमो च। संजमगुणसेडिं मुच्चा अधापवत्तपरिणामणिबंधणगुणसेडी वि णत्थि। णवरि विसोहीए अणंतगुणाए पडिसमयं वड्ढदि। अपुव्वकरणपढमसमए उवसंतदंसणमोहणीओ ट्ठिदिखंडयमागाएंतो जहण्णेण पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमुक्कस्सेण सागरोवमपुधत्तमेत्तट्ठिदिखंडयमागाएदि। खीणदंसणमोहणीयस्स पुण अपुव्वकरणपढमट्ठिदिखंडओ जहण्णओ उक्कस्सओ वि पलि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दोवमस्स संखेज्जदिभागो। ट्ठिदिबंधेण जमोसरदि जहण्णेणुक्कस्सेण च सो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो। असुहाणं कम्माणं अणंता भागा अणुभागखंडयपमाणं। अपुव्वकरणपढमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं ट्ठिदिबंधो च अंतोकोडाकोडीए। गुणसेडी पुण अपुव्वकरणद्धादो अणियट्टीकरणद्धादो च विसेसाहिया। अपुव्वकरणपढमसमए गुणसेढी गलिदसेसा उदयावलियबाहिरे आउगवज्जाणं कम्माणं णिक्खित्ता। विदियसमए ट्ठिदिअणुभागखंडय-ट्ठिदिबंधा ते चेव। णवरि पढमसमए ओकड्डिददव्वादो असंखेज्जगुणं दव्वमोकड्डिदूण उदयावलियबाहिरट्ठिदिप्पहुडि गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि। एवमंतोमुहुत्तं गंतूण पढमो अणुभागखंडगो पददि। एवमणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु तदो पढमो ट्ठिदिखंडओ पढमो ट्ठिदिबंधो अण्णेगो अणुभागखंडओ च जुगवं णिट्ठिदाओ। तदो से काले अण्णो ट्ठिदिबंधो, अण्णो ट्ठिदिखंडगो, अण्णो अणुभागखंडओ च आढत्तो। गुणसेडी पुण अपुव्वकरणद्धादो अणियट्टीकरणद्धादो सुहुमसांपराइयअद्धादो च विसेसाहिया होदूण जा पुव्वं कदा सा चेव एत्थ वि। णवरि गलिदसेसा। अणेण आदीदो प्पहुडि ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे णिद्दा-पयलाणं बंधवोच्छेदो भवदि। अपुव्वकरणद्धं सत्त खंडाणि कादूण पढमखंडे वोच्छिण्णा इदि उत्तं होदि। तदो अंतोमुहुत्ते गदे परभवियणामाणं बंधवोच्छेदो, पंच-सत्तभागे गंतूणेत्ति उत्तं होदि। अपुव्वकरणद्धाए जम्हि णिद्दा-पयलाओ वोच्छिण्णाओ सो कालो थोवो। परभवियणामाणं वोच्छिण्णकालो पंचगुणो। अपुव्वकरणद्धा वे-सत्तभागाहिया। तदो अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमए ट्ठिदिखंडयमणुभागखंडयं ट्ठिदिबंधो च समगं णिट्ठिदा। तम्हि चेव समए हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधो वोच्छिण्णो। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाछक्कम्माणमुदओ च तत्थेव वोच्छिण्णो। तदो से काले पढमसमयअणियट्टी जादो। पढमसमयअणियट्टिस्स ट्ठिदिखंडओ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो। अपुव्वो ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण हीणो। अणुभागखंडगो सेसस्स अणंता भागा। असंखेज्जगुणाए सेडीए सेसे सेसे गुणसेढीणिक्खेवो। तिस्से चेव अणियट्टीअद्धाए पढमसमए अप्पसत्थउवसामणाकरण-णिधत्तीकरण-णिकाचणाकरणाणि वोच्छिण्णाणि। एदेसिं करणाणं लक्खणगाहा—उदए संकम-उदए चदुसु वि दादुं कमेण णो सक्कं। उवसंतं च णिधत्तं णिकाचिदं चावि जं कम्मं ॥ १८ ॥ आयुगवज्जाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममंतोकोडाकोडीए, ट्ठिदिबंधो अंतोकोडीए सदसहस्सपुधत्तं। तदो ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु अणियट्टीअद्धाए संखेज्जा भागा गदा। तदो अणियट्टीअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु असण्णिट्ठिदिबंधेण समगो ट्ठिदिबंधो जादो। तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे चउरिंदियट्ठिदिबंधसमगो ट्ठिदिबंधो जादो। तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे तीइंदियट्ठिदिबंधेण समगो ट्ठिदिबंधो। तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे वीइंदियट्ठिदिबंधेण समगो ट्ठिदिबंधो जादो। तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे एइंदियट्ठिदिबंधेण समगो ट्ठिदिबंधो। तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे णामागोदाणं पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं च तावे दिवड्ढपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो, मोहणीयस्स वेपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। एदम्हि ट्ठिदिबंधे समत्ते णामा-

गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिगादो ट्ठिदिबंधादो जमण्णं ट्ठिदिबंधं बंधिहिदि सो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो पुव्वट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण ऊणो । एत्तो पहुडि णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधे पुण्णे संखेज्जगुणहीणो अण्णो ट्ठिदिबंधो होदि । सेसाणं कम्माणं जाव पलिदोवमट्ठिदिगं बंधं ण पावदि ताव पुण्णे ट्ठिदिबंधे जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण हीणो । एवं ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो, मोहणीयस्स तिभागुत्तरपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो । तदो जो अण्णो णाणावरणादिचउण्हं पि ट्ठिदिबंधो सो पुव्वट्ठिदिबंधादो संखेज्जगुणहीणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण हीणो । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्ते गदे मोहणीयस्स वि पलिदोवमट्ठिदिगो ट्ठिदिबंधो जादो । तदो जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो आउगवज्जाणं कम्माणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो होदि । एत्थ ट्ठिदिबंधस्स अप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा- णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । मोहणीयवज्जाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो संखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । एदेण अप्पाबहुगविधिणा बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो चेव । एत्थ अप्पाबहुगं- णामागोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । एदेण अप्पाबहुगविधिणा बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चउण्हं कम्माणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो जादो । तावे अप्पाबहुगं- णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । एदेण अप्पाबहुगविधिणा बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तदो मोहणीयस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो जादो । ताधे अप्पाबहुगं- णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चउण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । एदेण कमेण बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तदो एक्कसराहेण मोहणीयट्ठिदिबंधो कम्मचउक्कट्ठिदिबंधादो असंखेज्जगुणहीणो जादो । तावे अप्पाबहुगं- णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । चउण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । जाव मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो उवरि आसी ताव असंखेज्जगुणो चेव आसी, असंखेज्जगुणादो चेव असंखेज्जगुणहीणो जादो । एदेण अप्पाबहुगविहिणा बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदट्ठिदिबंधादो एक्कसराहेण मोहणीयट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणहीणो जादो । तावे अप्पाबहुगं- मोहणीयट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । चउण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । एदेण कमेण बहुसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु एक्कसराहेण वेदणीयट्ठिदिबंधादो णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो विसेसहीणो वा अहोदूण असंखेज्जगुणहीणो चेव जादो । तावे अप्पाबहुगं- मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखे-

ज्जगुणो । एदेण अप्पाबहुगविधिणा बहुएसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु एक्कसराहेण तिण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधादो असंखेज्जगुणहीणो जादो । वेदणीयट्ठिदिबंधो वि तत्तो विसेसाहिओ जादो । तावे अप्पाबहुगं— मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । वेदणीयट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एदेण अप्पाबहुगविधिणा संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि कादूण उवरि गच्छमाणस्स बज्झमाणपयडीणं ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव । तदो असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा च जादा । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु मणपज्जवणाणावरणीय-दाणंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी होदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधेसु गदेसु ओहिणाणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-लाहंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी होदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधेसु गदेसु सुदणाणावरणीय-अचक्खुदंसणावरणीय-भोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी होदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधेसु गदेसु चक्खुदंसणावरणीयस्स अणुभागो बंधेण देसघादी होदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधेसु गदेसु आभिणिबोहिय-परिभोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी होदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधेसु गदेसु वीरियंतराइयस्स अणुभागो बंधेण देसघादी होदि । एदेसिं कम्माणं सव्वो अक्खवगो अणुवसामगो च सव्वो सव्वघादिअणुभागं बंधदि । एदेसु कम्मेसु बंधेण देसघादित्तं पत्तेसु ट्ठिदिबंधो मोहणीए थोवो । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइएसु ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीए ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तदो देसघादिकरणादो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु अंतरकरणं बारसण्हं कसायाणं णवण्हं णोकसायाणं च करेदि । णत्थि अण्णस्स कम्मस्स अंतरकरणं । जं संजुलणं वेदयदि, जं च वेदं वेदयदि, एदेसिं दोण्हं कम्माणं पढमट्ठिदीओ अंतोमुहुत्तियाओ ठवेदूण अंतरकरणं करेदि । पढमट्ठिदीदो संखेज्जगुणाओ ट्ठिदीओ एदेसिं दोण्हं कम्माणमंतरट्ठमागाइदाओ । सेसाणमेक्कारसण्हं कसायाणमट्ठण्हं णोकसायाणं च उदयावलियं मोत्तूण अंतरं करेदि । उवरि अंतरं समट्ठिदी, हेट्ठा विसमट्ठिदी । जावे अंतरमुक्कीरिदुमाढत्तं ताधे अण्णो ट्ठिदिबंधो, अण्णो ट्ठिदिखंडओ, अण्णो अणुभागखंडओ च आढत्तो । अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णो अणुभागखंडओ, सो च ट्ठिदिखंडओ, सो च ट्ठिदिबंधो, अंतरस्स उक्कीरणद्धा च समगं पुण्णाणि । अंतरं करेमाणस्स जे कम्मंसा बज्झंति, वेदिज्जंति य, तेसिं कम्माणमंतरट्ठिदीओ उक्कीरंतो तासिं ट्ठिदीणं पदेसग्गं बंधपयडीणं पढमट्ठिदीए च देदि, विदियट्ठिदीए च देदि । जे कम्मंसा ण बज्झंति, ण वेदिज्जंति य, तेसिमुक्कीरिज्जमाणपदेसग्गं सट्ठाणे ण देदि, बज्झमाणीणं पयडीणमणुक्कीरमाणीसु ट्ठिदीसु देदि । जे कम्मंसा बज्झंति, ण वेदिज्जंति तेसिमुक्कीरिज्जमाणपदेसग्गं अप्पप्पणोपढमट्ठिदीए देदि, बज्झमाणीणं पयडीणमणुक्कीरमाणीसु ट्ठिदीसु च देदि । एदेण कमेण अंतरमुक्कीरमाणमुक्किण्णं । तावे चेव मोहणीयस्स आणुपुव्वीसंकमो, लोभस्स असंकमो, मोहणीयस्स एगट्ठाणीओ बंधो, णउंसयवेदस्स पढम-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयउवसामगो, छसु आवलियासु गदासु उदीरणा, मोहणीयस्स एगट्ठाणीओ उदओ, मोहणीयस्स संखेज्जवस्सट्ठिदीओ बंधो, एदाणि सत्त करणाणि अंतरकदपढमसमए होंति। जधा संसारावत्थाए आवलियादिक्कंतमुदीरिज्जदि तधा एत्थ छावलियादिक्कमणेण विणा आवलियादिक्कंतं किण्ण उदीरिज्जदि? ण एस दोसो, खवगुवसामयाणं अक्खवग-अणुवसामगेहि साधम्माभावा। जो जाए जाईए पडिवण्णो, सो ताए चेव जाईए होदि त्ति वोत्तुं जुत्तं, ण अण्णत्थ, अणवत्थावत्तीदो। तदो एत्थ बंधसमयप्पहुडि छसु आवलियासु आइच्छिदासु उदीरणा होदि त्ति घेत्तव्वं। अंतरादो पढमसमयकदादो पाएण णउंसयवेदस्स आउत्तकरणउवसामओ, सेसाणं कम्माणं ण किंचि उवसामेदि। जं पढमसमए पदेसग्गमुवसामेदि तं थोवं। जं विदियसमए उवसामेदि तं असंखेज्जगुणं। जं तदियसमए पदेसग्गमुवसामेदि तमसंखेज्जगुणं। एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए उवसामेदि जाव उवसंतमिदि। णउंसयवेदस्स पढमसमयउवसामयस्स जस्स वा तस्स वा कम्मस्स पदेसग्गस्स उदीरणा थोवा, उदओ असंखेज्जगुणो। णउंसयवेदस्स पदेसग्गमण्णपयडिं संकामिज्जमाणयमसंखेज्जगुणं, उवसामिज्जमाणयमसंखेज्जगुणं। एवं जाव चरिमसमयउवसंतेत्ति उवसामिज्जमाणयपदेसमाहप्पजाणावणट्ठमप्पाबहुगं कायव्वं। जावे पाए मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जवस्सट्ठिदिओ जादो ताधे पाए ट्ठिदिबंधे पुण्णे पुण्णे अण्णो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। मोहणीयवज्जाणं पुण कम्माणं णउंसयवेदमुवसामेंतस्स ट्ठिदिबंधे पुण्णे पुण्णे अण्णो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणहीणो। अंतरकरणकदपढमसमयादो पहुडि मोहणीयस्स णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो वा। कुदो? उवसंतपदेसग्गस्स ट्ठिदि-अणुभागेहि चलणाभावा। उवसंतुवसामिज्जमाणमोहपयडीओ मोत्तूण सेसाणं दो घादा किण्ण होंति? ण, पुव्वमुवसंतपयडि-ट्ठिदिसंतकम्मादो पच्छा उवसंतपयडि-ट्ठिदिसंतकम्मस्स संखेज्जगुणहीणत्तप्पसंगादो। एवं संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णउंसयवेदो उवसामिज्जमाणो उवसंतो। णउंसयवेदे उवसंते से काले इत्थिवेदस्स उवसामगो, पुरिसवेदोदएण उवसमसेडीरोहणादो। ताधे चेव अपुव्वो ट्ठिदिखंडओ, अपुव्वो अणुभागखंडओ, अपुव्वो चरिमट्ठिदिबंधो पत्थिदो। जेण कमेण णउंसयवेदो उवसामिदो तेणेव कमेण इत्थिवेदं पि गुणसेडीए उवसामेदि। एवं ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु इत्थिवेदस्स उवसामगद्धाए संखेज्जदिभागे गदे तदो णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं संखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो होदि। जाधे संखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो ताधे चेव एदासिं तिण्हं मूलपयडीणं केवलणाणावरणवज्जाओ सेसाओ जाओ उत्तरपयडीओ तासिमेगट्ठाणिओ बंधो। जत्तो पाए णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं संखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो तम्हि पुण्णे जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जगुणहीणो। तम्हि समए सव्वकम्माणमप्पाबहुअं। तं जहा—सव्वत्थोवो मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एदेण कमेण संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु इत्थिवेदो उवसामिदो। इत्थिवेदे उवसंते से काले सत्तण्हं णोकसायाणमुवसामओ। ताधे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चेव अण्णो ट्ठिदिखंडओ अण्णो अणुभागखंडओ च आगाइदो, अण्णो च ट्ठिदिबंधो पबद्धो। एवं संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु सत्तण्हं णोकसायाणमुवसामणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे तदो णामा-गोद-वेदणीयाणं कम्माणं संखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो। ताधे ट्ठिदिबंधस्स अप्पाबहुगं। तं जहा—सव्वत्थोवो मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एदम्हि ट्ठिदिबंधे पुण्णे जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो सव्वकम्माणं पि अप्पप्पणो ट्ठिदिबंधादो संखेज्जगुणहीणो। एदेण कमेण ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु सत्त णोकसाया उवसामिज्जमाणा उवसंता। णवरि पुरिसवेदस्स समऊणवेआवलियबद्धा अणुवसंता। तस्समए पुरिसवेदस्स ट्ठिदिबंधो सोलस वस्साणि। संजुलणाणं ट्ठिदिबंधो बत्तीस वस्साणि। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। पुरिसवेदस्स पढमट्ठिदीए जाधे वे आवलियाओ सेसाओ ताधे आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो। अंतरकदादो पाए छण्णोकसायाणं पदेसग्गं ण संछुभदि पुरिसवेदे, कोधसंजलणे संछुहदि, आणुपुव्वीसंकमत्तादो। जो पढमसमयअवेदो तस्स पुरिसवेदस्स दुसमऊणदोआवलियासु बद्धा अणुवसंता, तेसिं पदेसग्गमसंखेज्जगुणाए सेडीए उवसामिज्जदि। परपयडीए पुण अधापवत्तसंकमेण संकामिज्जदि। पढमसमयअवेदेण संकामिज्जमाणपदेसग्गं बहुअं। से काले विसेसहीणं। एस कमो जाव सव्वमुवसंतं इदि। जोगसमयपबद्धमधिकिच्च एदं उत्तं, जोगापत्ताणं णाणासमयपबद्धाणं उत्तकमाणुववत्तीदो। पढमसमयअवेदस्स संजलणाणं ट्ठिदिबंधो बत्तीस वस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। पढमसमयअवेदो तिविहं कोहमुवसामेदि। सा चेव हेट्ठाणिया पढमट्ठिदी हवदि। ट्ठिदिबंधे पुण्णे पुण्णे संजलणाणमण्णो ट्ठिदिबंधो विसेसहीणो होदि। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। एदेण कमेण जाधे आवलिय-पडिआवलियाओ कोहसंजलणस्स सेसाओ ताधे विदियट्ठिदीदो आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो, पडिआवलियादो चेव उदीरणा कोधसंजलणस्स। पडिआवलियाए एक्कम्हि समए सेसे कोहसंजलणस्स जहण्णिया ट्ठिदि-उदीरणा। चउण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। पडिआवलिया उदयावलियं पविस्समाणा पविट्ठा। ताधे चेव कोहसंजलणे दो आवलियबंधे दुसमऊणे मोत्तूण सेसतिविहकोहपएसा उवसामिज्जमाणा उवसंता। कोहसंजलणे दुविहो कोहो ताव संछुब्भदि जाव कोहसंजलणस्स पढमट्ठिदीए तिण्णि आवलियाओ सेसाओ त्ति। तिसु आवलियासु समऊणासु सेसासु तत्तो पाए दुविहो कोधो कोधसंजुलणे ण संछुब्भदि, माणसंजुलणे संछुब्भदि। जाधे कोधसंजलणस्स पढमट्ठिदीए समऊणा आवलिया सेसा ताधे चेव कोधसंजलणस्स बंधोदया वोच्छिण्णा। माणसंजुलणस्स पढमसमयवेदगो पढमट्ठिदिकारओ च पढमट्ठिदिं करेमाणो उदए पदेसग्गं थोवं देदि। से काले असंखेज्जगुणं। एवमसंखेज्जगुणाए सेडीए जादि जाव पढमट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदियट्ठिदीए जा आदिट्ठिदी तिस्से असंखेज्जगुणहीणं देदि, तदो विसेसहीणं देदि । एवं जाव अप्पप्पणो अइच्छावणावलियमपत्तमिदि । जाधे कोधस्स बंधोदया वोच्छिण्णा ताधे पाए तिविहस्स माणस्स उवसामओ । ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तेण ऊणया, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । माणसंजलणस्स पढमट्ठिदीए तिसु आवलियासु समऊणासु सेसासु दुविहो माणो माणसंजुलणे ण संछुब्भदि, मायासंजलणे संछुब्भदि । पडिआवलियाए सेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो । पडिआवलियाए एक्कम्हि समए सेसे माणसंजलणस्स समऊणदोआवलियमेत्तबंधे मोत्तूण सेसतिविहस्स माणस्स संतकम्ममुवसंतं । ताधे माण-माया-लोभसंजलणाणं दुमासट्ठिदिओ बंधो । सेसाणं कम्माणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तदो से काले मायासंजलणमोकड्डिदूण मायासंजलणस्स पढमट्ठिदिं करेदि । ताधे पाए तिविहाए मायाए उवसामओ । माया-लोहसंजलणाणं ट्ठिदिबंधो वे मासा अंतोमुहुत्तेण ऊणया । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । ट्ठिदिगो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । जं तं माणसंतकम्मं उदयावलियाए समऊणाए तं मायाए थिउक्कसंकमेण उदए विपच्चिहिदि । जे माणस्स दोण्हमावलियाणं दुसमऊणाणं समयपबद्धा अणुवसंता, ते य गुणसेडीए उवसामिज्जमाणे दोहि आवलियाहि दुसमऊणाहि उवसामेदि । जं पदेसग्गं मायाए संकमदि तं समयं पडि विसेसहीणाए सेडीए संकमदि । एसा परूवणा मायाए पढमसमयउवसामयस्स । एत्तो ट्ठिदिखंडयसहस्साणि बहूणि गदाणि । तदो मायाए पढमट्ठिदीए तिसु आवलियासु समऊणासु सेसासु दुविहा माया मायासंजलणे ण संछुभदि, लोभसंजलणे संछुभदि । पडिआवलियाए सेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो । समयाहियावलियाए सेसाए मायाए चरिमसमयउवसामओ मोत्तूण दोआवलियबंधे समऊणे । ताधे माया-लोहसंजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्साणि । तदो से काले मायासंजुलणस्स बंधोदया वोच्छिण्णा । मायसंजुलणस्स पढमट्ठिदीए जा समऊणा आवलिया सेसा सा थिउक्कसंकमेण लोभे विपच्चिहिदि । ताधे चेव लोभसंजलणमोकड्डिदूण लोभस्स पढमट्ठिदिं करेदि । एत्तो पाए जा लोभवेदगद्धा तिस्से लोभवेदगद्धाए वे-त्तिभागपमाणं । ताधे लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो मासो अंतोमुहुत्तूणो । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्साणि । तदो संखेज्जेहि ट्ठिदिबंधसहस्सेहि गदेहि तिस्से लोभस्स पढमट्ठिदीए अद्धं गदं । तदो तस्स अद्धस्स चरिमसमए लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो दिवसपुधत्तं । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो वस्ससहस्सपुधत्तं । से काले विदिय-तिभागस्स पढमसमए लोभसंजलणअणुभागसंतकम्मस्स जं जहण्णफद्दयं तस्स हेट्ठदो अणुभागकिट्टीओ करेदि । तासिं पमाणमेगफद्दयवग्गणाणमणंतभागो । पढमसमए बहुआओ किट्टीओ कदाओ । से काले अपुव्वाओ असंखेज्जगुणहीणाओ । एवं जाव विदियस्स तिभागस्स चरिमसमओ त्ति असंखेज्जगुणहीणाओ । जं पदेसग्गं पढमसमए किट्टीओ करेंतेण किट्टीसु णिक्खित्तं तं थोवं । से काले असंखेज्जगुणं । एवं जाव चरिमसमओ त्ति असंखेज्जगुणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढमसमए जहण्णिगाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं, विदियाए पदेसग्गं विसेसहीणं। एवं जाव चरिमाए किट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणं। विदियसमए जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं पढमसमयकदपढमकिट्टीए पदेसग्गादो असंखेज्जगुणं, विदियाए विसेसहीणं। एवं जाव ओघुक्कस्सियाए विसेसहीणं। उवरि फद्दयस्स आदिवग्गणाए अणंतगुणहीणं। उवरि सव्वत्थ विसेसहीणं। जधा विदियसमए तधा सेसेसु समएसु। तिव्व-मंददाए जहण्णिया किट्टी थोवा, विदियकिट्टी अणंतगुणा, तदियकिट्टी अणंतगुणा। एवमणंतगुणाए सेडीए गच्छदि जाव चरिमकिट्टी त्ति। एसो विदियतिभागो किट्टीकरणद्धा णाम। किट्टीकरणद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु लोभसंजुलणस्स अंतोमुहुत्तट्ठिदिगो बंधो। तिण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो दिवसपुधत्तं। जाव किट्टीकरणद्धाए दुचरिमो ट्ठिदिबंधो ताव णामा-गोद-वेदणीयाणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ट्ठिदिबंधो। किट्टीकरणद्धाए चरिमो ट्ठिदिबंधो लोभसंजुलणस्स अंतोमुहुत्तिओ। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमहोरत्तस्संतो। णामा-गोद-वेदणीयाणं वेण्हं वस्साणमंतो। तिस्से किट्टीकरणद्धाए तिसु आवलियासु समऊणासु सेसासु दुविहो लोभो लोभसंजुलणे ण संकामिज्जदि, सत्थाणे चेव उवसामिज्जदि। किट्टीकरणद्धाए आवलिय-पडिआवलियाए सेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिणो। पडिआवलियाए एक्कम्हि समए सेसे लोभसंजलणस्स जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। ताधे चेव समऊणदोआवलियमेत्ता लोभसंजलणस्स समयपडिबद्धा अणुवसंता, किट्टीओ सव्वाओ चेव अणुवसंताओ। तव्वदिरित्तं लोभसंजुलणस्स पदेसग्गं सव्वमुवसंतं। दुविहो लोभो सव्वो चेव उवसंतो। एसो चेव चरिमसमयबादरसांपराइगो। तत्तो से काले पढमसमयसुहुमसांपराइगो जादो। तेण पढमसमयसुहुमसांपराइएण अण्णा पढमट्ठिदी कदा। जा पढमसमयलोभवेदगस्स पढमट्ठिदी, तिस्से पढमट्ठिदीए इमा सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदी दुभागो थोवूणओ। पढमसमयसुहुमसांपराइगो किट्टीणमसंखेज्जे भागे वेदयदि। जाओ अपढम-अचरिमेसु समएसु अपुव्वाओ किट्टीओ कदाओ ताओ सव्वाओ पढमसमए उदिण्णाओ। जाओ पढमसमए कदाओ किट्टीओ तासिमग्गग्गादो असंखेज्जदिभागं मोत्तूण, जाओ चरिमसमए कदाओ किट्टीओ तासिं च जहण्णयप्पहुडि असंखेज्जदिभागं मोत्तूण, सेसाओ सव्वाओ किट्टीओ उदिण्णाओ। ताधे चेव सव्वासु किट्टीसु पदेसग्गमुवसामेदि गुणसेडीए। जे दोआवलियबद्धा दुसमऊणा ते वि उवसामेदि। जा उदयावलिया छद्दिदा सा थिउक्कसंकमेण किट्टीसु विपच्चिहिदि। विदियसमए उदिण्णाणं किट्टीणमग्गग्गादो असंखेज्जदिभागं मुंचदि, हेट्ठदो अपुव्वमसंखेज्जदिभागमाकुंददि। एवं जाव चरिमसमयसुहुमसांपराइओ त्ति। चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमंतोमुहुत्तिओ ट्ठिदिबंधो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो सोलस मुहुत्ता। वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो चउवीस मुहुत्ता। से काले सव्वं मोहणीयमुवसंतं। तदो पाए अंतोमुहुत्तमुवसंतकसायवीदरागो। सव्विस्से उवसंतद्धाए अवट्ठिदपरिणामो। गुणसेडीणिक्खेवो उवसंतद्धाए संखेज्जदिभागो। केवलणाणावरण-केवलदंसणावरणीयाणमणुभागुदएण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वउवसंतद्धाए अवट्ठिदवेदगो। णिद्दापयलाणं पि जाव वेदगो ताव अवट्ठिदवेदगो। अंतराइयस्स अवट्ठिद-वेदगो। सेसाणं लद्धिकम्मंसाणं अणुभागुदओ-वड्ढी वा हाणी वा अवट्ठाणं वा। णामा-गोदाणि जाणि परिणामपच्चया तेसिमवट्ठिदवेदगो अणुभागेण। एवमुवसमियचारित्तपडिवज्जणविहाणं भणिदं। एदं चोवसमियं चारित्तं ण मोक्खकारणं, अंतोमुहुत्तकालादो उवरि णिच्छएण मोहोदयणिबंधणत्तादो। कथमवट्ठिदपरिणामो उवसंतकसाओ वीयराओ मोहे णिवदइ ? सहावदो। सो च उवसंतकसायस्स पडिवादो दुविहो, भवक्खयणिबंधणो उवसामणद्धाखयणिबंधणो चेदि। तत्थ भवक्खएण पडिवदिदस्स सव्वाणि करणाणि देवेसुप्पण्णपढमसमए चेव उग्घाडिदाणि। जाणि उदीरिज्जंति कम्माणि ताणि उदयावलियं पवेसिदाणि। जाणि ण उदीरिज्जंति, ताणि वि ओकट्टिदूण आवलियबाहिरे गोवुच्छाए सेडीए णिक्खित्ताणि। उवसंतद्धाए खएण पडिवदणं वत्तइस्सामो। तं जहा—उवसंतो अद्धाखएण पदंतो लोभे चेव पडिवददि, सुहुमसांपराइयगुणमगंतूण गुणंतरगमणाभावा। पढमसमयसुहुमसांपराइएण तिविहं लोभमोकट्टिदूण संजुलणस्स उदयादिगुणसेडीए कदाए जा तस्स किट्टीलोभवेदगद्धा तदो विसेसुत्तरकालो गुणसेडिणिक्खेवो। दुविहस्स लोहस्स तत्तिओ चेव णिक्खेवो, णवरि उदयावलियाए णत्थि। आउगवज्जाणं सेसाणं कम्माणं गुणसेडिणिक्खेओ अणियट्टिअद्धादो अपुव्वकरणद्धादो च विसेसाहिओ। सेसे सेसे च णिक्खेवो। तिविहस्स लोभस्स तत्तिओ तत्तिओ चेव णिक्खेवो। ताधे चेव तिविहो लोभो एगसमएण पसत्थउवसामणाए अणुवसंतो। तावे तिण्हं घादिकम्माणमंतोमुहुत्तट्ठिदिगो बंधो, णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो वत्तीस मुहुत्ता, वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो अडदालीस मुहुत्ता। से काले गुणसेडी असंखेज्जगुणहीणा। ट्ठिदिबंधो सो चेव। अणुभागबंधो अप्पसत्थाणमणंतगुणो, पसत्थाणं कम्माणमणंतगुणहीणो। लोभं वेदयमाणस्स इमाणि आवासयाणि परूवंति। तं जहा—लोभवेदगद्धाए पढम-तिभागे किट्टीणमसंखेज्जा भागा उदिण्णा। पढमसमए उदिण्णाओ किट्टीओ थोवाओ। विदियसमए उदिण्णाओ किट्टीओ विसेसाहियाओ। सव्विस्से सुहुमसांपराइयद्धाए विसेसाहियवड्ढीए किट्टीणमुदओ। किट्टीणं वेदगद्धाए गदाए पढमसमयबादरसांपराइओ जादो। ताधे चेव मोहणीयस्स अणाणुपुव्वीसंकमो। ताधे चेव दुविहो लोभो लोभसंजुलणे संछुहदि। ताधे चेव फद्दयगयलोभं वेदयदि। किट्टीओ सव्वाओ णट्ठाओ। णवरि जाओ उदयावलियब्भंतराओ ताओ त्थिउक्कसंकमेण फद्दएसु विपचिहिंति। पढमसमयबादरसांपराइयस्स लोभसंजुलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तिओ। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो दो अहोरत्ताणि देसूणाणि। वेदणीय-णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि वस्साणि देसूणाणि। एदम्हि ट्ठिदिबंधे पुण्णे जो अण्णो वेदणीय-णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो अहोरत्तपुधत्तिओ। लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो पुव्वबंधादो विसेसाहिओ। लोभवेदगद्धाए विदियस्स तिभागस्स संखेज्जदिभागं गंतूण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो मुहुत्तपुधत्तो। णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससह-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स्साणि। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो अहोरत्तपुधत्तियादो ट्ठिदिबंधादो वस्ससहस्सपुधत्तिओ जादो। एवं ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु लोभवेदगद्धा पुण्णा। से काले तिविहं मायमोकड्डिदूण मायासंजलणस्स उदयादिगुणसेडी कदा। दुविहाए मायाए आवलियबाहिरा गुणसेडी कदा। पढमसमयमायावेदगस्स गुणसेढीणिक्खेवो तिविहस्स लोभस्स तिविहाए मायाए च तुल्लो मायावेदगद्धादो विसेसाहिओ। सव्विस्से मायावेदगद्धाए तत्तिओ तत्तिओ चेव णिक्खेवो। सेसाणं कम्माणं जो पुण पुव्विल्लो णिक्खेवो तस्स सेसे सेसे चेव णिक्खिवदि-गुणसेडिं। मायावेदगस्स लोभो तिविहो दुविहा माया मायासंजलणे संकमदि, माया वि तिविहा लोभो च दुविहो लोभसंजुलणे संकमदि। पढमसमयमायावेदगस्स दोण्हं संजलणाणं दुमासट्ठिदिगो बंधो। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। पुण्णे पुण्णे ट्ठिदिबंधे मोहणीयवज्जाणं कम्माणं संखेज्जगुणो ट्ठिदिबंधो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एदेण कमेण संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चरिमसमयमायावेदगो जादो। तावे दोण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तूणा। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। तदो से काले तिविहं माणमोकड्डिदूण माणसंजलणस्स उदयादिगुणसेडिं करेदि। दुविहस्स माणस्स आवलिय-बाहिरे गुणसेडिं करेदि। णवविहस्स वि कसायस्स गुणसेडीणिक्खेवो। जा तस्स पडिवदमाणयस्स माणवेदगद्धा तत्तो विसेसाहिओ णिक्खेवो। मोहणीयवज्जाणं कम्माणं जो पढमसमयसांपराइयेण णिक्खेवो णिक्खित्तो तस्स णिक्खेवस्स सेसे सेसे णिक्खिवदि। पढमसमयमाणवेदयस्स णवविहो वि कसाओ संकमदि। तावे तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा पडिवुण्णा, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। एवं ट्ठिदिबंधसहस्साणि बहूणि गंतूण माणस्स चरिमसमयवेदगो। तस्स चरिमसमयवेदगस्स तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अट्ठ मासा अंतोमुहुत्तूणा, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। से काले तिविहं कोहमोकड्डिदूण कोहसंजलणस्स उदयादिगुणसेडिं करेदि, दुविहस्स कोहस्स आवलियबाहिरे करेदि। एण्हिं गुणसेडीणिक्खेवो केत्तिओ कायव्वो? पढमसमयकोधवेदगस्स वारसण्हं पि कसायाणं गुणसेडीणिक्खेवो सेसाणं कम्माणं गुणसेडीणिक्खेवेण सरिसो होदि। जहा मोहणीयवज्जाणं कम्माणं सेसे सेसे गुणसेडिं णिक्खिवदि, तथा एत्तो पाए वारसण्हं कसायाणं सेसे सेसे गुणसेडी णिक्खिविदव्वा। पढमसमयकोधवेदगस्स वारसविहस्स वि कसायस्स संकमो होदि। ताधे ट्ठिदिबंधो चदुण्हं संजलणाणं पडिवुण्णा अट्ठ मासा। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। एदेण कमेण संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु मोहणीयस्स चरिमसमयचउव्विहबंधगो जादो। ताधे मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो चउसट्ठिवस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। तदो से काले पुरिसवेदस्स बंधगो जादो। ताधे चेव सत्तण्हं कम्माणं पदेसग्गं पसत्थउवसामणाए सव्वमणुवसंतं। ताधे चेव सत्तकम्मंसे ओकड्डिदूण पुरिसवेदस्स उदयादिगुणसेडिं करेदि। छण्हं कम्मंसाणमुदयावलियबाहिरे गुणसेडिं करेदि। गुणसेडीणिक्खेवो वारसण्हं

कसायाणं सत्तण्हं णोकसायाणं वेदणीयाणं सेसाणं च आयुगवज्जाणं कम्माणं गुणसेडीणिक्खेवेण तुल्लो । सेसे सेसे च णिक्खेवो । ताधे चेव पुरिसवेदस्स ट्ठिदिबंधो बत्तीसवस्साणि पडिवुण्णाणि । संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चदुसट्ठिवस्साणि । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । पुरिसवेदे अणुवसंते जावित्थिवेदो उवसंतो, एदिस्से अद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु णामा-गोद-वेदणीयाणमसंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो । ताधे अप्पाबहुगं कायव्वं–सव्वत्थोवो मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो । तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एत्तो ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु इत्थिवेदमेगसमएण अणुवसंतं करेदि । ताधे चेव तमोकड्डिदूण उदयावलियबाहिरे गुणसेडिं करेदि । इदरेसिं कम्माणं जो गुणसेडीणिक्खेवो तत्तिओ चेव इत्थिवेदस्स वि । सेसे सेसे च णिक्खेवो । इत्थिवेदे अणुवसंते जाव णवुंसयवेदो उवसंतो, एदिस्से अद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो जादो । ताधे मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । जाधे तिण्हं घादिकम्माणमसंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो, ताधे चेव एगसमएण णाणावरणीयं चउव्विहं, दंसणावरणीयं तिविहं, पंचंतराइयाणि, एदाणि दुट्ठाणियाणि बंधेण जादाणि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णउंसयवेदमणुवसंतं करेदि । ताधे चेव णउंसयवेदमोकड्डिदूण उदयावलियबाहिरे गुणसेडीए णिक्खिवदि । इदरेसिं कम्माणं गुणसेडीणिक्खेवेण सरिसो गुणसेडीणिक्खेवो । सेसे सेसे च गुणसेडीणिक्खेवो । णउंसयवेदे अणुवसंते जाव अंतरकदपढमसमयं ण पावदि, एदिस्से अद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु मोहणीयस्स असंखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो जादो । तावे चेव मोहणीयस्स दुट्ठाणिया बंधोदया । सव्वस्स पडिवदमाणयस्स छसु आवलियासु गदासु उदीरणा त्ति णत्थि णियमो, आवलियादिक्कंतमुदीरिज्जदि । अणियट्टिप्पहुडि सव्वस्स ओयरंतस्स मोहणीयस्स अणाणुपुव्वीसंकमो, लोभस्स वि संकमो । जाधे मोहणीयस्स असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो तावे मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एदेण कमेण संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु अणुभागबंधेण वीरियंतराइयं सव्वघादी जादं । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्तेण आभिणिबोहियणाणावरणं परिभोगंतराइयं च सव्वघादीणि जादाणि । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्तेण चक्खुदंसणावरणीयं सव्वघादी जादं । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्तेण सुदणाणावरणीयं अचक्खुदंसणावरणीयं भोगंतराइयं च सव्वघादीणि जादाणि । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्तेण ओहिणाणावरणीयं ओहिदंसणावरणीयं लाहंतराइयं च सव्वघादीणि जादाणि । तदो ट्ठिदिबंधपुधत्तेण मणपज्जवणाणावरणीयं दाणंतराइयं च अणुभागबंधेण सव्वघादीणि जादाणि । तदो ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा पडिहम्मदि । समयपबद्धस्स असंखेज्जलोगभागो उदीरणा पवत्तदि । जाधे समयपबद्धस्स असंखेज्जलोगभागो उदीरणा, ताधे मोहणीयस्स ठिदिबंधो थोवो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घादिकम्माणं ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एदेण कमेण ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तदो एक्कसराहेण मोहणीयट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं तिण्हं पि कम्माणं ठिदिबंधो तुल्लो विसेसाहिओ । वेदणीयस्स ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं संखेज्जाणि ठिदिबंधसहस्साणि कादूण तदो एक्कसराहेण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं ठिदिबंधो तुल्लो विसेसाहिओ । एवं संखेज्जाणि ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो एक्कसराहेण णामा-गोदाणं थोवो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । णाणावरण-दंसणावरण-वेदणीय-अंतराइयाणं ठिदिबंधो तुल्लो विसेसाहिओ । एदेण कमेण ट्ठिदिबंधसहस्साणि बहूणि गदाणि । तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो एक्कसराहेण णामा-गोदाणं थोवो । चउण्हं कम्माणं ठिदिबंधो तुल्लो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । जत्तो पाए असंखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो तत्तो पाए पुण्णे पुण्णे ट्ठिदिबंधे अण्णं ट्ठिदिबंधमसंखेज्जगुणं बंधदि । एदेण कमेण सत्तण्हं पि कम्माणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिगादो ट्ठिदिबंधादो एक्कसराहेण पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगो ठिदिबंधो जादो । तत्तो पाए पुण्णे पुण्णे ठिदिबंधे अण्णं ट्ठिदिबंधं संखेज्जगुणं बंधदि । एवं संखेज्जाणं ट्ठिदिबंधसहस्साणमपुव्वा वड्ढी पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । तदो मोहणीयस्स अण्णस्स ट्ठिदिबंधस्स अपुव्वा वड्ढी पलिदोवमस्स संखेज्जा भागा जादा । ताधे चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधस्स वड्ढी पलिदोवमं चदुभागेण सादिरेगेण ऊणयं । ताधे चेव णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधपरिवड्ढी अद्धपलिदोवमं संखेज्जदिभागूणं । जावे एसा परिवड्ढी ताधे मोहणीयस्स जो ट्ठिदिबंधो पलिदोवमं, चदुण्हं कम्माणं जो ट्ठिदिबंधो पलिदोवमं चदुभागूणं, णामा-गोदाणं जो ट्ठिदिबंधो अद्धपलिदोवमं, एत्तो पाए ट्ठिदिबंधे पुण्णे पुण्णे पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण वड्ढदि । जत्तिया अणियट्टीअद्धा सेसा, अपुव्वकरणद्धा सव्वा च, तत्तियं कालं एदाए पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागपरिवड्ढीए ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु अण्णो एइंदियट्ठिदिबंधसमओ ट्ठिदिबंधो जादो । एवं वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिट्ठिदिबंधसमओ ट्ठिदिबंधो जादो । तदो ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चरिमसमयअणियट्टी जादो । चरिमसमयअणियट्टिस्स ट्ठिदिबंधो सागरोवमसदसहस्सपुधत्तमंतोकोडीए । से काले अपुव्वकरणं पविट्ठो । ताधे चेव अप्पसत्थउवसामणाकरणं णिधत्तीकरणं णिकाचणाकरणं च उग्घाडिदाणि । ताधे चेव मोहणीयस्स णवविहबंधगो जादो । ताधे चेव हस्स-रदि-अरदि-सोगाणमेक्कदरस्स संघादयस्स उदीरगो, सिया भय-दुगुंछाणमुदीरओ । तदो अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे तदो परभवियणामाणं बंधगो जादो । तदो ट्ठिदिबंधसहस्सेहि गदेहि अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु णिद्दा-पयलाओ बंधदि । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चरिमसमयअपुव्वकरणं पत्तो । से काले पढमसमयअधापवत्तो जादो । तदो पढमसमयअधापवत्तस्स अण्णो गुणसेडिणिक्खेवो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पोराणियादो गुणसेडिणिक्खेवादो संखेज्जगुणो। ओयरमाणसुहुमसांपराइयपढमसमयादो अपुव्वकरणो त्ति ताव सेसे सेसे णिक्खेवो। जो पढमसमयअधापवत्तकरणे णिक्खेवो अंतोमुहुत्तिओ तत्तिओ चेव तत्तिओ णिक्खेओ। तेण परं सिया वड्ढदि सिया हायदि सिया अवट्ठायदि। पढमसमय-अधापवत्तकरणे गुणसंकमो वोच्छिण्णो। सव्वकम्माणं अधापवत्तसंकमो जादो। णवरि जेसिं विज्झादसंकमो अत्थि तेसिं विज्झादसंकमो चेव। उवसामगस्स पढमसमयअपुव्वकरणप्पहुडि जाव पडिवदमाणयस्स चरिमसमयअपुव्वकरणेत्ति तदो एत्तो संखेज्जगुणं कालं पडिणियत्तो अधापवत्तकरणेण उवसमसम्मत्तद्धमणुपालेदि। एदिस्से उवसमसम्मत्तद्धाए अब्भंतरादो असंजमं पि गच्छेज्ज, संजमासंजमं पि गच्छेज्ज, छसु आवलियासु सेसासु आसाणं पि गच्छेज्ज। आसाणं पुण गदो जदि मरदि, ण सक्को णिरयगदिं तिरिक्खगदिं मणुसगदिं वा गंतुं, णियमा देवगदिं गच्छदि। एसो पाहुडचुण्णिसुत्ताभिप्पाओ। भूदबलिभयवंतस्सुवएसेण उवसमसेडीदो ओदिण्णो ण सासणत्तं पडिवज्जदि। हंदि तिसु आउएसु एक्केण वि बद्धेण ण सक्को कसाए उवसामेदुं, तेण कारणेण णिरय-तिरिक्ख-मणुसगदीओ ण गच्छदि। एसा सव्वा परूवणा पुरिसवेदयस्स कोहेण उवट्ठिदस्स। पुरिसवेदओ चेव जदि माणेण उवट्ठिदो होज्ज तो जाव सत्त णोकसायाणमुवसामणा, ताव णत्थि णाणत्तं, उवरि णाणत्तं होदि। तं जहा—माणं वेदंतो कोधमुवसामेदि। जद्देही कोहेण उवट्ठिदस्स कोहस्स उवसामणद्धा तद्देही चेव माणेण वि उवट्ठिदस्स कोधस्स उवसामणद्धा। कोधस्स पढमट्ठिदी णत्थि। जद्देही कोहेण उवट्ठिदस्स कोधस्स माणस्स य पढमट्ठिदी तद्देही माणेण उवट्ठिदस्स माणस्स पढमट्ठिदी होदि। माणे उवसंते एत्तो सेसस्स उवसामेदव्वस्स मायाए लोभस्स च जो कोधेण उवट्ठिदस्स उवसामणविधी सो चेव कायव्वो। माणेण उवट्ठिदस्स उवसामेदूण तदो पडिवदिदूण लोभं वेदयमाणस्स जो पुव्वं परूविदो विधी सो चेव कायव्वो। एवं मायं वेदयमाणस्स वि वत्तव्वं। तदो माणं वेदयमाणस्स णाणत्तं। तं जहा—गुणसेडीणिक्खेवो ताव णवण्हं कसायाणं सेसाणं कम्माणं गुणसेडीणिक्खेवेण तुल्लो, सेसे सेसे च णिक्खेवो। कोहेण उवट्ठिदस्स उवसामगस्स पुणो पडिवदमाणयस्स जद्देही माणवेदगद्धा तत्तियमेत्तेणेव कालेण माणवेदगद्धाए अधिच्छिदाए ताधे चेव माणं वेदंतो एगसमएण तिविधं कोधमणुवसंतं करेदि। ताधे चेव ओकड्डिदूण तिविधं पि कोधमावलियबाहिरे गुणसेडीए इदरेसिं कम्माणं गुणसेडीणिक्खेवेण सरिसीए णिक्खिवदि गलिदसेसरूवेण। एदं णाणत्तं माणेण उवट्ठिदस्स उवसामगस्स पुरिसवेदयस्स। मायाए उवट्ठिदस्स उवसामगस्स केद्देही मायाए पढमट्ठिदी ? कोधेण उवट्ठिदस्स कोधस्स माणस्स मायाए च जाओ पढमट्ठिदीओ ताओ तिण्णि वि पिंडिदाओ मायाए उवट्ठिदस्स मायाए पढमट्ठिदी होदि। तदो मायं वेदंतो कोधं माणं मायं च उवसामेदि। तदो लोभमुवसामंतस्स णत्थि णाणत्तं। मायाए उवट्ठिदो उवसामेदूण पुणो पडिवदमाणयस्स लोभं वेदयमाणस्स णत्थि णाणत्तं। मायं वेदंतस्स णाणत्तं। तं जहा—तिविहाए मायाए तिविहस्स लोभस्स च गुणसेडिणिक्खेवो इदरेहि कम्मेहि सरिसो, सेसे सेसे च

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिक्खेवो। सेसे च कसाए मायं वेदंतो ओकट्टिहिदि। तत्थ गुणसेढिणिक्खेवं च इदरकम्मगुणसेडिणिक्खेवेण सरिसं काहिदि। लोभेण उवट्ठिदस्स उवसामगस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–अंतरकरणपढमसमए लोभस्स पढमट्ठिदिं करेदि। जद्देही कोधेण-उवट्ठिदस्स कोधस्स माणस्स मायाए च पढमट्ठिदी बादरसांपराइयपढमट्ठिदी च तद्देही लोभस्स पढमठिदी होदि। तदो सुहुमसांपराइयं पडिवण्णस्स णत्थि णाणत्तं। तस्सेव पडिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयं वेदंतस्स णत्थि णाणत्तं। पढमसमयबादरसांपराइयप्पहुडि णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–तिविहस्स लोभस्स गुणसेडिणिक्खेवो इदरेहि कम्मेहि सरिसो। लोभं वेदयमाणो सेसे कसाए ओकट्टिहिदि। गुणसेडिणिक्खेओ इदरेहि कम्मेहि गुणसेडिणिक्खेवेण सरिसो। सेसे सेसे च णिक्खिवदि। एदाणि णाणत्ताणि कोधेण उवसामेदुमुवट्ठिदउवसामयादो। णवरि जस्स कसायस्स उदयेण चढिदो तम्हि ओकट्टिदे अंतरमाऊरेदि। एदे पुरिसवेदेणोवट्ठिदस्स वियप्पा। इत्थिवेदेण उवट्ठिदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–अवेदो सत्तकम्मंसे उवसामेदि। सत्तण्हं पि उवसामणद्धा तुल्ला। एदं णाणत्तं, सेसा सव्वे वियप्पा पुरिसवेदेण सरिसा। णउंसयवेदेण उवट्ठिदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–अंतरदुसमयकदे णउंसयवेदमुवसामेदि। जा पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स णउंसयवेदस्स उवसामणद्धा तद्देही अद्धा गदा तो वि णवुंसयवेदो ण उवसमिदि। तदो इत्थिवेदमुवसामेदुमाढवेइ, णवुंसयवेदं पि उवसामेदि चेव। तदो इत्थिवेदस्स उवसामणद्धाए पुण्णाए इत्थिवेदो णवुंसयवेदो च उवसामिदा। ताधे चेव चरिमसमए सवेदो भवदि। तदो अवेदो सत्त कम्माणि उवसामेदि। तुल्ला च सत्तण्हं कम्माणमुवसामणा। एदं णाणत्तं णवुंसयवेदेण उवट्ठिदस्स। सेसा वियप्पा ते चेव कायव्वा। एत्तो पुरिसवेदेण सह कोधोदएण उवट्ठिदस्स उवसामगस्स पढमसमयअपुव्वकरणमादिं कादूण जाव पडिवदमाणयस्स चरिमसमयअपुव्वकरणो त्ति, एदिस्से अद्धाए जाणि कालसंजुत्ताणि पदाणि तेसिमप्पाबहुगं वत्तइस्सामो। तं जहा–सव्वत्थोवा जहण्णिया अणुभागखंडयउक्कीरणद्धा। उक्कस्सिया अणुभागखंडयउक्कीरणद्धा विसेसाहिया। जहण्णिया ट्ठिदिबंधगद्धा ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा च तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ। पडिवदमाणयस्स जहण्णिया ट्ठिदिबंधगद्धा विसेसाहिया। अंतरकरणद्धा विसेसाहिया। उक्कस्सिया ट्ठिदिबंधगद्धा ट्ठिदिखंडयउक्कीरणद्धा च विसेसाहिया। चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स गुणसेढिणिक्खेवो संखेज्जगुणो। तं चेव गुणसेडिसीसयं ति भण्णदि। उवसंतकसायस्स गुणसेडिणिक्खेवो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयद्धा संखेज्जगुणा। तस्स चेव पडिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयस्स लोभस्स गुणसेडीणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसामगस्स सुहुमसांपराइयद्धा किट्टीणमुवसामणद्धा सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदी तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ। उवसामगस्स किट्टीकरणद्धा विसेसाहिया। पडिवदमाणयस्स बादरसांपराइयस्स लोभवेदगद्धा संखेज्जगुणा। तस्सेव लोभस्स तिविधस्स वि तुल्लो गुणसेढिणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसामगस्स बादरसांपराइयस्स लोभवेदगद्धा विसेसाहिया। तस्सेव पढमठिदी विसेसाहिया। पडिवदमाणयस्स लोभवेदगद्धा विसेसाहिया। पडि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वदमाणयस्स मायावेदगद्धा विसेसाहिया। तस्सेव मायावेदगस्स छण्हं कम्माणं गुणसेढीणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसामगस्स मायावेदगद्धा विसेसाहिया। मायाए पढमट्ठिदी विसेसाहिया। मायाए उवसामगद्धा विसेसाहिया। उवसामगस्स माणवेदगद्धा विसेसाहिया। माणस्स पढमट्ठिदी विसेसाहिया। माणस्स उवसामगद्धा विसेसाहिया। कोधस्स उवसामगद्धा विसेसाहिया। छण्णोकसायाणमुवसामणद्धा विसेसाहिया। पुरिसवेदस्स उवसामणद्धा विसेसाहिया। इत्थिवेदस्स उवसामणद्धा विसेसाहिया। णउंसयवेदस्स उवसामणद्धा विसेसाहिया। खुद्दाभवग्गहणं विसेसाहियं। उवसंतद्धा दुगुणा। पुरिसवेदस्स पढमट्ठिदी विसेसाहिया। कोधस्स पढमट्ठिदी विसेसाहिया। मोहस्स उवसामणद्धा विसेसाहिया। पडिवदमाणयस्स जाव असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा सो कालो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणकालो विसेसाहिओ। पडिवदमाणयस्स अणियट्टिअद्धा संखेज्जगुणा। उवसामगस्स अणियट्टिअद्धा विसेसाहिया। पडिवदमाणयस्स अपुव्वकरणद्धा संखेज्जगुणा। उवसामगस्स अपुव्वकरणद्धा विसेसाहिया। पडिवदमाणयस्स उक्कस्सओ गुणसेढिणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसामयस्स अपुव्वकरणस्स पढमसमए गुणसेढिणिक्खेवो विसेसाहिओ। उवसामगस्स कोधवेदगद्धा संखेज्जगुणा। अधापवत्तसंजदस्स गुणसेढिणिक्खेवो संखेज्जगुणो। दंसणमोहणीयस्स उवसंतद्धा संखेज्जगुणा। चारित्तमोहणीयस्स उवसामओ अंतरं करेंतो जाओ ट्ठिदीओ उक्कीरदि ताओ संखेज्जगुणाओ। दंसणमोहणीयस्स अंतरट्ठिदीओ संखेज्जगुणाओ। जहण्णिया आबाधा संखेज्जगुणा। उक्कस्सिया आबाधा संखेज्जगुणा। उवसामगस्स मोहणीयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स मोहणीयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। एदेसिं चेव कम्माणं पडिवदमाणयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। अंतोमुहुत्तो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स णामा-गोदाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। वेदणीयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। पडिवदमाणयस्स णामा-गोदाणं जहण्णगो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव वेदणीयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। उवसामगस्स मायासंजलणजहण्णगो ट्ठिदिबंधो मासो। तस्सेव पडिवदमाणयस्स जहण्णगो ट्ठिदिबंधो वे मासा। उवसामगस्स माणसंजलणजहण्णगो ट्ठिदिबंधो वे मासा। पडिवदमाणयस्स तस्सेव जहण्णट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा। उवसामगस्स कोहसंजलणजहण्णट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा। पडिवदमाणयस्स तस्सेव जहण्णट्ठिदिबंधो अट्ठ मासा। उवसामगस्स पुरिसवेदजहण्णट्ठिदिबंधो सोलस वस्साणि। तस्समए चेव संजलणाणं ट्ठिदिबंधो वत्तीस वस्साणि। पडिवदमाणयस्स पुरिसवेदजहण्णट्ठिदिबंधो वत्तीस वस्साणि। तस्समए चेव संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चदुसट्ठी वस्साणि। उवसामगस्स पढमो संखेज्जवस्सिओ मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स चरिमो संखेज्जवस्सिओ मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं पढमो संखेज्जवस्सिओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पडिवदमाणयस्स तिण्हं घादिकम्माणं चरिमो संखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स णामा-गोद-वेदणीयाणं पढमो संखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स णामा-गोद-वेदणीयाणं चरिमो संखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो संखेज्जगुणो। उवसामगस्स चरिमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो मोहणीयस्स असंखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स पढमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो मोहणीयस्सासंखेज्जगुणो। उवसामगस्स घादिकम्माणं चरिमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो असंखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स पढमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो घादिकम्माणमसंखेज्जगुणो। उवसामयस्स णामा-गोद-वेदणीयाणं चरिमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो असंखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स णामा-गोद-वेदणीयाणं पढमो असंखेज्जवस्सट्ठिदिगो बंधो असंखेज्जगुणो। उवसामगस्स णामागोदाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगो पढमो ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। णाणावरण-दंसणावरण-वेदणीय-अंतराइयाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगो पढमो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिओ पढमो ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चरिमट्ठिदिखंडयं संखेज्जगुणं। जाओ ट्ठिदीओ परिहाइदूण पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो ताओ ट्ठिदीओ संखेज्जगुणाओ। पलिदोवमं संखेज्जगुणं। अणियट्टिस्स पढमसमये ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स अणियट्टिस्स चरिमसमए ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। अपुव्वकरणस्स पढमसमए ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स अपुव्वकरणस्स चरिमसमए ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। पडिवदमाणयस्स अपुव्वकरणस्स चरिमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। पडिवदमाणयस्स अपुव्वकरणस्स पढमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। पडिवदमाणयस्स अणियट्टिस्स चरिमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। उवसामगस्स अणियट्टिस्स पढमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। उवसामगस्स अपुव्वकरणस्स चरिमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। उवसामगस्स अपुव्वकरणस्स पढमसमए ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। संपुण्णं चारित्तं पडिवज्जंतस्स सरूवणिरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

संपुण्णं पुण चारित्तं पडिवज्जंतो तदो चत्तारि कम्माणि अंतोमुहुत्तट्ठिदिं ट्ठवेदि णाणावरणीयं दंसणावरणीयं मोहणीयमंतराइयं चेदि ॥ १५ ॥

तदो अंतोकोडाकोडीदो ट्ठिदिबंधादो विसेसहीणा घादिज्जमाणादो चत्तारि कम्माणि अंतोमुहुत्तट्ठिदिं ठवेदि। काणि ताणि चत्तारि कम्माणि त्ति वुत्ते तण्णिण्णयट्ठं णाणावरणादीणं णामणिद्देसो कओ। किमट्ठमंतोमुहुत्तियं ठिदिं ठवेदि ? उवसामयविसोधीदो खवगविसोधीणमाणंतियादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेदणीयं वारसमुहुत्तट्ठिदिं ठवेदि, णामा-गोदाणमट्ठमुहुत्तट्ठिदिं ठवेदि, सेसाणं कम्माणं भिण्णमुहुत्तट्ठिदिं ठवेदि ॥ १६ ॥

किमट्ठमेदासिं पयडीणमेत्तियमेत्तट्ठिदिं ठवेदि ? पयडिविसेसादो । बारस य वेदणिज्जे णामा-गोदे य अट्ठ य मुहुत्ता ॥ ट्ठिदिबंधो दु जहण्णो भिण्णमुहुत्तं तु सेसाणं ॥ १९ ॥ एसा दोसु सुत्तेसु वुत्तद्धाणमुवसंहारगाहा । एदाणि दो वि तीदसुत्ताणि देसामासियाणि । तेण एदेहि सूइदस्स अत्थस्स परूवणा कीरदे । तं जहा—चारित्तमोहणीयस्स खवणाए अधापवत्तकरणद्धा अपुव्वकरणद्धा अणियट्टिकरणद्धा चेदि तिण्णि अद्धाओ हवंति । ताओ तिण्णि वि अद्धाओ एगसंबद्धाओ एगावलियाए ओवट्टिदव्वाओ । तदो जाणि कम्माणि अत्थि तेसिं ट्ठिदीओ ओट्टिदव्वाओ । तेसिं चेव अणुभागफद्दयाणं जहण्णफद्दयप्पहुडि एया फद्दयावलिया ओट्टिदव्वा । एत्थ अधापवत्तकरणे वट्टमाणयस्स णत्थि ट्ठिदिघादो अणुभागघादो वा । केवलमणंतगुणाए विसोहीए वड्ढदि । अपुव्वकरणपढमसमए ट्ठिदिखंडओ अप्पसत्थाणं कम्माणमणुभागखंडओ च आगाइदो । अपुव्वकरणे पढमट्ठिदिखंडयस्स पमाणाणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा—अपुव्वकरणे पढमट्ठिदिखंडयं जहण्णयं थोवं । उक्कस्सयं संखेज्जगुणं । उक्कस्सयं पि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । जहा दंसणमोहणीयस्स उवसामणाए तस्सेव खवणाए अणंताणुबंधीविसंजोयणाए कसायाणमुवसामणाए च अपुव्वकरणपढमट्ठिदिखंडयं जहण्णं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, उक्कस्सयं सागरोवमपुधत्तं, तधा एत्थ णत्थि । एत्थ पुण कसायाणं खवणाए अपुव्वकरणपढमठिदिखंडयं जहण्णमुक्कस्सं पि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, अपुव्वकरणे सव्वत्थ संखेज्जगुणहीणं । संखेज्जगुणहीणट्ठिदिसंतकम्माणं ठिदिखंडयाणि तप्पडिभागियाणि चेव । अपुव्वकरणस्स पढमसमए पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागियं ट्ठिदिखंडयमायुगवज्जाणं कम्माणं गेण्हदि । अप्पसत्थाणं कम्माणमणुभागस्स अणंते भागे खंडयं गेण्हदि । पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागं ट्ठिदिबंधेण ओसरदि । गुणसेडी उदयावलियबाहिरे णिक्खित्ता अपुव्वकरणद्धादो अणियट्टिकरणद्धादो च विसेसाहिया । जे अप्पसत्थकम्मंसा ण बज्झंति तेसिं कम्माणं गुणसंकमो जादो । ट्ठिदिबंधो ट्ठिदिसंतकम्मं च सागरोवमकोडिसदसहस्सपुधत्तं अंतोकोडाकोडीए । बंधादो पुण संतकम्मं संखेज्जगुणं । एसा अपुव्वकरणपढमसमयपरूवणा । एत्तो विदियसमए णाणत्तं । तं जहा—असंखेज्जगुणदव्वमोकट्टिदूण गलिदसेसं गुणसेडिं करेदि । विसोही च अणंतगुणा । सेसेसु आवासएसु णत्थि णाणत्तं । एवं जाव पढमाणुभागखंडओ समत्तो त्ति । तदो से काले अण्णो अणुभागखंडओ आगाइदो सेसस्स अणंता भागा । एवं संखेज्जेसु अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णो अणुभागखंडओ पढमट्ठिदिखंडओ अपुव्वकरणे पढमट्ठिदिबंधो च एदाणि तिण्णि वि समगं णिट्ठिदाणि । एवं ट्ठिदिबंधसहस्सेहि गदेहि अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे णिद्दा-पयलाणं बंधवोच्छेदो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जादो। ताधे चेव ताणि गुणसंकमेण संकमंति। ओवट्टणा जहण्णा आवलिया ऊणिया तिभागेण। एसा ट्ठिदिसु जहण्णा तहाणुभागेसणंतेसु ॥ २० ॥ संकामेदुक्कड्डदि जे अंसे ते अवट्ठिदा होंति। आवलियं से काले तेण परं होंति भजिदव्वा ॥ २१ ॥ ओकड्डदि जे अंसे से काले ते च होंति भजिदव्वा। वड्ढीए अवट्ठाणे हाणीए संकमे उदए ॥ २२ ॥ एक्कं च ठिदिविसेसं तु असंखेज्जेसु ट्ठिदिविसेसेसु। वड्ढेदि रहस्सेदि च तहाणुभागेसणंतेसु ॥ २३ ॥ तदो ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु परभवियणामाणं बंधवोच्छेदो जादो। तदो ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चरिमसमयअपुव्वकरणं पत्तो। से काले पढमसमयअणियट्टिस्स आवासयाणि वत्तइस्सामो। तं जहा—पढमसमयअणियट्टिस्स अण्णो ट्ठिदिखंडओ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो, अण्णो अणुभागखंडओ सेसस्स अणंता भागा, अण्णो ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण हीणो। पढमट्ठिदिखंडओ विसमो, जहण्णादो उक्कस्सओ संखेज्जदिभागुत्तरो। पढमे ट्ठिदिखंडए हदे सव्वस्स तुल्लकाले अणियट्टिं पविट्ठस्स ठिदिसंतकम्मं तुल्लं। ठिदिखंडओ वि सव्वस्स अणियट्टिं पविट्ठस्स विदियट्ठिदिखंडयादो विदियट्ठिदिखंडओ तुल्लो, तदियादो तदियो तुल्लो। एवं सव्वत्थ। ट्ठिदिबंधो सागरोवमसहस्सपुधत्तं अंतोसदसहस्सस्स। ट्ठिदिसंतकम्मं सागरोवमसदसहस्सपुधत्तं अंतोकोडाकोडीए। गुणसेढिणिक्खेवो जो अपुव्वकरणे णिक्खित्तो तस्स सेसे सेसे च भवदि। सव्वकम्माणं पि तिण्णि करणाणि वोच्छिण्णाणि। तं जहा—अप्पसत्थउवसामणाकरणं णिधत्तीकरणं णिकाचणाकरणं च। एदाणि सव्वाणि पढमसमयअणियट्टिस्स अवासयाणि परूविदाणि। से काले एदाणि चेव। णवरि गुणसेडी असंखेज्जगुणा। सेसे सेसे च णिक्खेवो। विसोही च अणंतगुणा। एवं संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो असण्णिट्ठिदिबंधसमगो जादो। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चउरिंदियट्ठिदिबंधसमगो जादो। एवं तीइंदियसमगो बीइंदियसमगो एवमेइंदियट्ठिदिबंधसमगो जादो। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिबंधो जादो। ताधे णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं दिवड्ढपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। मोहणीयस्स वेपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं सागरोवमसदसहस्सपुधत्तं। जाधे णामा-गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो ताधे अप्पाबहुगं। तं जहा—णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो। णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। अदिक्कंता सव्वे ट्ठिदिबंधा एदेण अप्पाबहुअविधिणा आगदा। तदो णामा-गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिबंधे पुण्णे जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जगुणहीणो। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो विसेसहीणो। ताधे अप्पाबहुअं—णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो। चदुण्हं कम्माणं ठिदिबंधो तुल्लो संखेज्जगुणो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि। तदो णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। ताधे मोहणीयस्स तिभागुत्तरपलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो। तदो जो अण्णो ट्ठिदिबंधो चदुण्हं कम्माणं सो संखेज्जगुणहीणो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताधे अप्पाबहुगं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । एदेण कमेण संखेज्जाणिं ट्ठिदिबंधसहस्साणिं गदाणिं । तदो मोहणीयस्स पलिदोवमट्ठिदिगो बंधो जादो । सेसाणं कम्माणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो । एदम्हि ट्ठिदिबंधे पुण्णे मोहणीयस्स जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिओ । तदो सव्वेसिं कम्माणं ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो चेव । ताधे अप्पाबहुअं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । णाणावरण-दंसणावरण-वेदणीय-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो जो अण्णो ट्ठिदिबंधो सो णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिगो जादो । ताधे सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । एत्थ अप्पाबहुअं–णामा-गोदाणं ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तिण्हं घादिकम्माणं वेदणीयस्स च पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिओ ट्ठिदिबंधो जादो । ताधे अप्पाबहुअं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु मोहणीयस्स वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिओ ट्ठिदिबंधो जादो । ताधे सव्वेसिं कम्माणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो जादो । ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं सागरोवमसहस्सपुधत्तं अंतोसदसहस्सस्स । जाधे पढमदाए मोहणीयस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो जादो ताधे अप्पाबहुअं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । एवं संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो एक्कसराहेण मोहणीयस्स थोवो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो ट्ठिदिसंतकम्मं असण्णिट्ठिदिबंधेण समगं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चउरिंदियट्ठिदिबंधेण समगं जादं । एवं तीइंदिय-बीइंदियट्ठिदिबंधेण समगं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु एइंदियट्ठिदिबंधेण समगं ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंड-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

यसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिगं संतकम्मं जादं । ताधे चदुण्हं कम्माणं दिवड्ढपलिदोवमट्ठिदिसंतकम्मं, मोहणीयस्स बेपलिदोवमट्ठिदिसंतकम्मं । एदम्हि ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगं ट्ठिदिसंतकम्मं । ताधे अप्पाबहुगं- सव्वत्थोवं णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लं संखेज्जगुणं । मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं । एदेण कमेण ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे तदो चदुण्हं कम्माणं पलिदोवमट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे मोहणीयस्स तिभागुत्तरपलिदोवमं ट्ठिदि-संतकम्मं । तदो ट्ठिदिखंडए पुण्णे चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । ताधे अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवं णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लं संखेज्जगुणं । मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपु-धत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमं जादं । तदो ट्ठिदिखंडए पुण्णे सत्तण्हं कम्माणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे अप्पाबहुअं— सव्वत्थोवं णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो जादो । ताधे अप्पाबहुअं—णामा-गोदाणं ट्ठिदिसं-तकम्मं थोवं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहणीयस्स वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे अप्पाबहुगं—णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदि-संतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिखंडयसहस्साणि गदाणि । तदो णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । मोहट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे एक्कसराहेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । णामा-गोदाणं ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्ज-गुणं । वेदणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मम-संखेज्जगुणं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । वेदणीयट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिखंडयसहस्साणि गदाणि । तदो असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु अट्ठण्हं कसायाणं संकामओ । तदो अट्ठ कसाया ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण संकामिज्जंति । अट्ठण्हं कसायाणमपच्छिमे ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे तेसिं संतकम्मं सेसमावलियं पविट्ठं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं णिरयगदि-तदाणुपुव्वी-तिरिक्खगदिपाओग्गणामाणं संतकम्मंसे संकामगो जादो । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण अपच्छिमे ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे एदेसिं सोलसण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं सेसमावलियं पविट्ठं । तदो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मणपज्जवणाणावरणीय-दाणंतराइयाणं च अणुभागो बंधेण देसघादी जादो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण ओहिणाणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-लाहंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी जादो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण सुदणाणावरणीय-अचक्खुदंसणावरणीय-भोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी जादो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण चक्खुदंसणावरणीयमणुभागबंधेण देसाघादी जादं। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण आभिणिबोहियणाणावरणीय-परिभोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी जादो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण वीरियंतराइस्स अणुभागो बंधेण देसघादी जादो। तदो ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णं ट्ठिदिखंडयमण्णमणुभागखंडयमण्णं ट्ठिदिबंधं अंतरट्ठिदिउक्कीरणं च समगमाढवेदि। चदुण्हं संजलणाणं णवण्हं णोकसायाणं च अंतरं करेदि। सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं। पुरिसवेदस्स कोहसंजलणस्स य पढमट्ठिदिमंतोमुहुत्तमेत्तं मोत्तूण अंतरं करेदि, सोदयत्तादो। सेसाणं कम्माणमावलियं मोत्तूण अंतरं करेदि, उदयाभावादो। जाओ अंतरट्ठिदीओ उक्कीरिज्जंति तासिं पदेसग्गमुक्कीरिज्जमाणियासु ट्ठिदीसु ण दिज्जदि। जासिं पयडीणं पढमट्ठिदी अत्थि, तिस्से पढमट्ठिदीए जाओ संपहिट्ठिदीओ उक्कीरिज्जंति तं उक्कीरिज्जमाणं पदेसग्गं संछुहदि। जाओ बज्झंति पयडीओ तासिमावाहमहिच्छिदूण जा जहण्णिया णिसेयट्ठिदी तमादिं कादूण बज्झमाणियासु ट्ठिदीसु उक्कड्डिज्जदि। तदो अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णो अणुभागखंडओ जो अंतरे उक्कीरिज्जमाणे ट्ठिदिबंधो पबद्धो तत्थतणट्ठिदिखंडगो अंतरकरणद्धा च एदाणि समगं णिट्ठियमाणाणि णिट्ठिदाणि। से काले अंतरकदपढमसमए णवुंसयवेदस्स आउत्तकरणसंकामगो जादो। ताधे चेव मोहणीयस्स संखेज्जवस्सिओ ट्ठिदिबंधो, मोहणीयस्स एगट्ठाणिया बंधोदया, जाणि कम्माणि बज्झंति तेसिं छसु आवलियासु गदासु उदीरणा, मोहणीयस्स आणुपुव्वीसंकमो, लोभसंजलणस्स असंकमो च जादो। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु णउंसयवेदो संकामिज्जमाणो संकामिदो पुरिसवेदे। कुदो? आणुपुव्विसंकमत्तादो। एत्थुवउज्जंती गाहा—संछुहइ पुरिसवेदे इत्थीवेदं णवुंसयं चेव। सत्तेव णोकसाए णियमा कोहम्मि संछुहइ ॥ २४ ॥ संकामिज्जमाणदव्वमाहप्पपरूवणा गाहा—बंधेण होदि उदओ अहिओ उदएण संकमो अहिओ। गुणसेडि असंखेज्जा पदेसअग्गेण बोद्धव्वा ॥ २५ ॥ णवुंसयवेदं संकामेंतो पढमसमए थोवं पदेसग्गं संकामेदि। विदियसमए असंखेज्जगुणं। एवं जाव संकामगचरिमसमओ त्ति। णवुंसयवेदोदएण चडिदस्स समए समए असंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्गस्स णिज्जरा होदि। वुत्तं च—गुणसेडिअसंखेज्जा पदेसअग्गेण संकमो उदओ। से काले से काले भज्जो बंधो पदेसग्गे ॥ २६ ॥ एवं णवुंसयवेदं संकामिय तदो से काले इत्थिवेदस्स पढमसमयसंकामगो जादो। ताधे अण्णो ट्ठिदिखंडओ, अण्णो अणुभागखंडओ, अण्णो ट्ठिदिबंधो च पारद्धो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण इत्थिवेदखवणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं संखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो जादो। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण इत्थिवेदस्स जं ट्ठिदिसंतकम्मं तं सव्वमागाइदं। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मस्स असंखेज्जा भागा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगाइदा। तम्हि ट्ठिदिखंडए पुण्णे इत्थिवेदो संछुहमाणो संछुद्धो। ताधे चेव मोहणीयस्स संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ट्ठिदिसंतकम्मं जादं। से काले सत्तण्हं णोकसायाणं पढमसमयसंकामओ। सत्तण्हं णोकसायाणं पढमसमयसंकामयस्स ट्ठिदिबंधो मोहणीयस्स थोवो। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं मोहणीयस्स थोवं। तिण्हं घादिकम्माणमसंखेज्जगुणं। णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जगुणं। वेदणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं। पढमट्ठिदिखंडए पुण्णे मोहणीयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणहीणं। ट्ठिदिबंधो णामा-गोद-वेदणीयाणं असंखेज्जगुणहीणो, घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो,। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे सत्तण्हं णोकसायाणं खवणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे णामा-गोद-वेदणीयाणं संखेज्जाणि वस्साणि ट्ठिदिबंधो जादो। तदो ट्ठिदिखंडय-पुधत्ते गदे सत्तण्हं णोकसायाणं खवणद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं संखेज्जवस्सट्ठिदिगं संतकम्मं जादं। तत्तो पाएण घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधे ट्ठिदिखंडए च पुण्णे पुण्णे ट्ठिदिबंध-ट्ठिदिसंतकम्माणि संखेज्जगुणहीणाणि। णामा-गोदवेदणीयाणं पुण्णे ट्ठिदिखंडए असंखेज्जगुणहीणं ट्ठिदिसंतकम्मं। एदेसिं चेव ट्ठिदिबंधे पुण्णे अण्णो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। एदेण कमेण ताव जाव सत्तण्हं णोकसायाणं संकामगस्स चरिमट्ठिदिबंधो त्ति। अणुभागबंधो अणुभागुदओ च समयं पडि असुहाणं कम्माणमणंतगुणहीणो। वुत्तं च—उदओ च अणंतगुणो संपहिबंधेण होदि अणुभागे। से काले उदयादो संपदिबंधो अणंतगुणो ॥ २७ ॥ बंधेण होदि उदओ अहिओ उदएण संकमो अहिओ। गुणसेडि अणंतगुणा बोद्धव्वा होदि अणुभागे ॥ २८ ॥ गुणसेडि अणंतगुणेणूणाए वेदगो दु अणुभागे। गणणादियंतसेडी पदेसअग्गेण बोद्धव्वा ॥ २९ ॥ बंधोदएहि णियमा अणुभागो होदि णंतगुणहीणो। से काले से काले भज्जो पुण संकमो होदि ॥ ३० ॥ सत्तण्हं णोकसायाणं संकामगस्स चरिमो ट्ठिदिबंधो पुरिसवेदस्स अट्ठ वस्साणि, संजलणाणं सोलस वस्साणि, सेसाणं कम्माणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। ट्ठिदिसंतकम्मं पुण घादिकम्माणं चदुण्हं पि संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, णामा-गोद-वेदणीयाणमसंखेज्जाणि वस्साणि। अंतरादो पढमसमयकदादो पाए छण्णोकसाए कोहे संछुहदि, ण अण्णम्हि कम्हि वि। पुरिसवेदस्स पढमट्ठिदीए दोआवलियासु सेसासु आगाल-पडिआगलो वोच्छिण्णो। पढमट्ठिदीदो चेव उदीरणा। समयाहियाए आवलियाए सेसाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। तदो चरिमसमयपुरिसवेदओ जादो। ताधे छण्णोकसाया संछुद्धा। पुरिसवेदस्स जाओ दोआवलियाओ समऊणाओ एत्तियसमयपबद्धा विदियट्ठिदीए अत्थि, उदयट्ठिदी च अत्थि, सेसं पुरिसवेदस्स संतकम्मं सव्वं संछुद्धं। से काले अस्सकण्णकरणं पव्वत्तिहिदि। अस्सकण्णकरणेत्ति वा आदोलकरणेत्ति वा ओवट्टण-उव्वट्टणकरणेत्ति वा तिण्णि णामाणि अस्सकण्णकरणस्स। छसु कम्मेसु संछुद्धेसु से काले पढमसमयअवेदो होदि। ताधे चेव पढमसमयस्सकण्णकरणकारओ च। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं संजलणाणं संखेज्जाणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्ससहस्साणि, ठिदिबंधो सोलस वस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि। अणुभागसंतकम्मं आगाइदेण सह माणे थोवं, कोधे विसेसाहियं, मायाए विसेसाहियं, लोभे विसेसाहियं। बंधो वि एरिसो चेव। अणुभागखंडगो पुण जो आगाइदो तस्स कोधे फद्दयाणि थोवाणि, माणे फद्दयाणि विसेसाहियाणि, मायाए फद्दयाणि विसेसाहियाणि, लोभे फद्दयाणि विसेसाहियाणि। आगाइदसेसाणि फद्दयाणि लोभे थोवाणि, मायाए अणंतगुणाणि, माणे अणंतगुणाणि, कोधे अणंतगुणाणि। एसा परूवणा पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स। तम्हि चेव पढमसमए चदुण्हं संजलणाणमपुव्वफद्दयाणि करेदि। तेसिं परूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा—सव्वस्स अक्खवगस्स सव्वकम्माणं देसघादिफद्दयाणमादिवग्गणा तुल्ला। सव्वघादीणं पि मिच्छत्तं मोत्तूण सेसाणं कम्माणं सव्वघादिआदिवग्गणा तुल्ला। एत्थ चदुण्हं संजलणाणं अपुव्वफद्दयाणि करेदि। ताणि कधं करेदि? लोभस्स ताव, लोभसंजलणस्स पुव्वफद्दएहिंतो पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागं घेत्तूण पढमस्स देसघादिफद्दयस्स हेट्ठा अणंतभागे अण्णाणि अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तयदि। ताणि पगणणादो अणंताणि, पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो। एत्तियाणि ताणि अपुव्वफद्दयाणि। तत्थ पढमस्स फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं थोवं। विदियस्स फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गमणंतभागुत्तरं। विदियादो तदियं दुभागुत्तरं। तदियादो चउत्थं तिभागुत्तरं। एवं कमेण संखेज्जदिभागुत्तरं गंतूण पुणो असंखेज्जदिभागुत्तरं होदि। पुणो असंखेज्जदिभागुत्तरं गंतूण पुणो अणंतभागुत्तरं होदि। एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमस्स वि फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं विसेसाहियमणंतभागेण। जाणि पढमसमए अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तिदाणि तत्थ पढमस्स फद्दयस्स आदिवग्गणा थोवा। चरिमस्स अपुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणा अणंतगुणा। पुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणा अणंतगुणा। जहा लोभस्स अपुव्वफद्दयाणि परूविदाणि पढमसमए, तधा मायाए माणस्स कोधस्स य परूवेदव्वाणि। पढमसमए जाणि अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तिदाणि तत्थ कोधस्स थोवाणि। माणस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। मायाए अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। लोभस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। विसेसो अणंतभागो। तेसिं चेव पढमसमए णिव्वत्तिदाणमपुव्वफद्दयाणं लोभस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं थोवं। मायाए आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं विसेसाहियं। माणस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं विसेसाहियं। कोधस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं विसेसाहियं। चदुण्हं पि कसायाणं जाणि अवुव्वफद्दयाणि तत्थ चरिमस्स अपुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं चदुण्हं पि कसायाणं तुल्लमणंतगुणं। कोहादिचदुण्हं संजलणाणं जाओ आदिवग्गणाओ, तासिं परिवाडीए जहाकमेणेसा संदिट्ठी—२१०। १६८। १४०। १२०। कोहादीणं जहाकमेण अपुव्वफद्दयसलागाओ एदाओ—१२। १५। १८। २१। पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स जं पदेसग्गमोकड्डिज्जदि तेण कम्मस्स अवहारकालो थोवो। अपुव्वफद्दएहि पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरस्स अवहारकालो असंखेज्जगुणो। पलिदोवम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वग्गमूलमसंखेज्जगुणं। पढमसमए णिव्वत्तिज्जमाणएसु अपुव्वफद्दएसु पुव्वफद्दएहिंतो ओकड्डिदूण पदेसग्गमपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए बहुगं देदि। विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं देदि। एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमाए अपुव्वफद्दयवग्गणाए विसेसहीणं देदि। तदो चरिमादो अपुव्वफद्दयवग्गणादो पढमस्स पुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणाए असंखेज्जगुणहीणं देदि। तदो विदियाए पुव्वफद्दयवग्गणाए विसेसहीणं देदि। सेसासु सव्वासु पुव्वफद्दयवग्गणासु विसेसहीणं देदि। तम्हि चेव पढमसमए जं दिस्सदि पदेसग्गं तमपुव्वफद्दयाणं पढमाए वग्गणाए बहुअं, पुव्वफद्दयआदिवग्गणाए विसेसहीणं। जहा लोभस्स तहा मायाए माणस्स कोधस्स च। उदयपरूवणा। तं जहा—पढमसमए चेव अपुव्वफद्दयाणि उदिण्णाणि च अणुदिण्णाणि च। पुव्वफद्दयाणं पि आदीदो अणंतभागो उदिण्णो च अणुदिण्णो च, उवरिमअणंता भागा अणुदिण्णा। बंधेण णिव्वत्तिज्जंति अपुव्वफद्दयमादिं कादूण जाव लदासमाणफद्दयाणमणंतिमभागो त्ति। एसा सव्वा परूवणा पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स। एत्तो विदियसमए तं चेव ट्ठिदिखंडयं, तं चेव अणुभागखंडयं, सो चेव ट्ठिदिबंधो। अणुभागबंधो अणंतगुणहीणो। गुणसेडी असंखेज्जगुणा। अपुव्वफद्दयाणि जाणि पढमसमए णिव्वत्तिदाणि विदियसमए ताणि च णिव्वत्तयदि अण्णाणि च अपुव्वफद्दयाणि तदो असंखेज्जगुणहीणाणि। विदियसमए अपुव्वफद्दएसु दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेडिपरूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा—विदियसमए अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए पदेसग्गं बहुअं दिज्जदि, विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं दिज्जदि। एवमणंतरोवणिधाए विसेसहीणं दिज्जदि ताव जाव जाणि विदियसमए अपुव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि कदाणि तेसिं चरिमादो वग्गणादो त्ति। तदो चरिमादो वग्गणादो पढमसमए जाणि अपुव्वाणि फद्दयाणि कदाणि तेसिमादिवग्गणाए दिज्जदि पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं। तदो विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं दिज्जदि। तत्तो पाए अणंतरोवणिधाए सव्वत्थ विसेसहीणं दिज्जदि। पुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए विसेसहीणं चेव दिज्जदि। सेसासु विसेसहीणं दिज्जदि। विदियसमए अपुव्वफद्दएसु वा पुव्वफद्दएसु वा एक्केक्किस्से वग्गणाए जं दिस्सदि पदेसग्गं तमपुव्वफद्दयआदिवग्गणाए बहुअं, सेसासु अणंतरोवणिधाए सव्वासु विसेसहीणं। तदियसमए वि एसेव कमो। णवरि अपुव्वफद्दयाणि ताणि च अण्णाणि च णिव्वत्तयदि। तदियसमए जाणि अपुव्वाणि फद्दयाणि णिव्वत्तिदाणि तेसिमसंखेज्जदिभागे तत्थ वि पदेसग्गस्स दिज्जमाणस्स सेडिपरूवणं—तदियसमए अपुव्वाणमपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए पदेसग्गं बहुअं दिज्जदि। विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं। एवमणंतरोवणिधाए विसेसहीणं ताव जाव जाणि तदियसमए अपुव्वाणमपुव्वफद्दयाणं चरिमादो वग्गणादो त्ति। तदो विदियसमए अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं। तत्तो पाए सव्वत्थ विसेसहीणं। जं दिस्सदि पदेसग्गं तमादिवग्गणाए बहुगं, उवरिममणंतरोवणिधाए सव्वत्थ विसेसहीणं। जधा तदियसमए तथा सेसेसु उवरिमसमएसु वत्तव्वं जाव पढममणुभागखंडयं चरिमसमयअणुक्किण्णं ति। तदो से काले अणुभागसंतकम्मे णाणत्तं।

तं जहा—लोभे अणुभागसंतकम्मं थोवं। मायाए अणुभागसंतकम्ममणंतगुणं। माणस्स अणुभागसंतकम्ममणंतगुणं। कोधस्स अणुभागसंतकम्ममणंतगुणं। तेण परं सव्वम्हि अस्सकण्णकरणे एस कमो। अस्सकण्णकरणस्स पढमसमए णिव्वत्तिदाणि अपुव्वफद्दयाणि बहुवाणि। विदियसमए जाणि अपुव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि कदाणि ताणि असंखेज्जगुणहीणाणि। तदियसमए जाणि अपुव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि कदाणि ताणि असंखेज्जगुणहीणाणि। एवं समए समए जाणि अपुव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि कदाणि ताणि असंखेज्जगुणहीणाणि। गुणगारो पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो। अस्सकण्णकरणस्स चरिमसमए लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं थोवं। विदियस्स अपुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं दुगुणं। तदियस्स फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं तिगुणं। एवं पढमस्स आदिवग्गणाए अविभागच्छेदग्गादो जदिएत्थ फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गमुद्दिस्सदि तदित्थफद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागच्छेदग्गादो पडिच्छेदग्गं तदित्थ-गुणं। एवं मायाए माणस्स कोधस्स य। अस्सकण्णकरणस्स पढमअणुभागखंडए हदे अणुभागस्स अप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा—सव्वत्थोवाणि कोधस्स अपुव्वफद्दयाणि। माणस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। मायाए अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। लोभस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरफद्दयाणि असंखेज्जगुणाणि। एगफद्दयवग्गणाओ अणंतगुणाओ। कोधस्स अपुव्वफद्दयवग्गणाओ अणंतगुणाओ। माणस्स अपुव्वफद्दयवग्गणाओ विसेसाहियाओ। मायाए अपुव्वफद्दयवग्गणाओ विसेसाहियाओ। लोभस्स अपुव्वफद्दयवग्गणाओ विसेसाहियाओ। लोभस्स पुव्वफद्दयाणि अणंतगुणाणि। तेसिं चेव वग्गणाओ अणंतगुणाओ। मायाए पुव्वफद्दयाणि अणंतगुणाणि। तेसिं चेव वग्गणाओ अणंतगुणाओ माणस्स पुव्वफद्दयाणि अणंतगुणाणि। तेसिं चेव वग्गणाओ अणंतगुणाओ। कोधस्स पुव्वफद्दयाणि अणंतगुणाणि। तेसिं चेव वग्गणाओ अणंतगुणाओ। एवमंतोमुहुत्तमस्सकण्णकरणं। अस्सकण्णकरणस्स चरिमसमए संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अट्ठ वस्साणि। सेसाणं कम्माणं ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जाणि वस्साणि। चदुण्हं घादिकम्माणं ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। एवमस्सकण्णकरणद्धा समत्ता भवदि। एत्तो सेकालप्पहुडि किट्टीकरणद्धा। छसु कम्मेसु संछुद्धेसु जा कोधवेदगद्धा तिस्से कोधवेदगद्धाए तिण्णि भागा। जो तत्थ पढमतिभागो अस्सकण्णकरणद्धा, विदियतिभागो किट्टीकरणद्धा, तदियतिभागो किट्टीवेदगद्धा। अस्सकण्णकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अण्णो ट्ठिदिबंधो। अण्णो अणुभागखंडओ अस्सकण्णकरणेणेव आगाइदो। अण्णो ट्ठिदिखंडगो चदुण्हं घादिकम्माणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा-गोद-वेदणीयाणमसंखेज्जा भागा। पढमसमयकिट्टीकारओ कोधपुव्वापुव्वफद्दएहिंतो पदेसग्गमोकट्टिदूण कोधकिट्टीओ करेदि। माणादो ओकट्टिदूण माणकिट्टीओ करेदि। मायादो ओकट्टिदूण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मायाकिट्टीओ करेदि । लोभादो ओकड्डिदूण लोभकिट्टीओ करेदि । एदाओ सव्वाओ वि चउव्विहाओ किट्टीओ एगफद्दयवग्गणाणमणंतभागो पगणणादो। पढमसमयणिव्वत्तिदाणं किट्टीणं तिव्वमंददाए अप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा–लोभस्स जहण्णिया किट्टी थोवा। विदियकिट्टी अणंतगुणा। एवमणंतगुणाए सेडीए णेयव्वं जाव पढमाए संगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति । तदो विदियाए संगहकिट्टीए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा । एसो गुणगारो बारसण्हं पि संगहकिट्टीणं सत्थाणगुणगारेहिंतो अणंतगुणो । विदियाए संगहकिट्टीए सो चेव कमो जो पढमाए संगहकिट्टीए । तदो पुण विदियाए तदियाए च संगहकिट्टीणमंतरं तारिसं चेव । एवमेदाओ लोभस्स तिण्णि संगहकिट्टीओ । लोभस्स तदियाए संगहकिट्टीए जा चरिमकिट्टी तदो मायाए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा। मायाए वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ। मायाए जा तदियसंगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो माणस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा। माणस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ। माणस्स जा तदिया संगहकिट्टी तिस्से चरिमादो किट्टीदो कोधस्स जहण्णिया किट्टी अणंतगुणा। कोधस्स वि तेणेव कमेण तिण्णि संगहकिट्टीओ। कोधस्स तदियाए संगहकिट्टीए जा चरिमा किट्टी तदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणा अणंतगुणा। किट्टीए अंतराणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा–लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए जहण्णयं किट्टीअंतरं थोवं । विदियकिट्टीअंतरमणंतगुणं । एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमकिट्टीअंतरमणंतगुणं । लोभस्स चेव विदियाए संगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं । एवमणंतराणंतरेण णेदव्वं जाव चरिमकिट्टीअंतरो त्ति । तदो लोभस्स चेव तदियाए संगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं। एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमकिट्टीअंतरमणंतगुणं। एत्तो मायाए पढमसंगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं। एवमणंतराणंतरेण मायाए वि तिण्हं संगहकिट्टीणं किट्टीअंतराणि जहाकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वाणि। एत्तो माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं। माणस्स वि तिण्हं संगहकिट्टीणं किट्टीअंतराणि जहाकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वाणि। एत्तो कोधस्स पढमसंगहकिट्टीए पढमकिट्टीअंतरमणंतगुणं। एवं कोधस्स वि तिण्हं संगहकिट्टीणं अंतराणि जहाकमेण जाव चरिमादो अंतरादो अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वाणि। तदो लोभस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। लोभस्स मायाए च अंतरमणंतगुणं । मायाए पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। मायाए माणस्स च अंतरमणंतगुणं। माणस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। माणस्स कोधस्स य अंतरमणंतगुणं। कोधस्स पढमसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। विदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। तदियसंगहकिट्टीअंतरमणंतगुणं। कोधस्स चरिमादो किट्टीदो लोभस्स अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अंतरमणंतगुणं। पढमसमए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किट्टीसु पदेसग्गस्स सेडिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा–लोभस्स जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं । विदियाए किट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणमणंतभागेण । एवं अणंतरोवणिधाए विसेसहीणमणंतभागेण जाव कोधस्स चरिमकिट्टि त्ति । परंपरोवणिधाए जहण्णियादो लोभकिट्टीदो उक्कस्सियाए कोधकिट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणमणंतभागेण । विदियसमए अण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ करेदि पढमसमए णिव्वत्तिदकिट्टीणमसंखेज्जदिभागमेत्ताओ । एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए हेट्ठा अपुव्वाओ किट्टीओ करेदि । विदियसमए दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेडिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा–लोभस्स जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं दिज्जदि । विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण । ताव अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । तदो पढमसमयणिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किट्टीए विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण । तदो विदियाए अणंतभागहीणं । तेण परं पढमसमयणिव्वत्तिदासु लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए किट्टीसु अणंतराणंतरेण अणंतभागहीणं दिज्जदि जाव पढमसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति । तदो लोभस्स चेव विदियसमए विदियसंगहकिट्टीए तिस्से जहण्णियाए किट्टीए दिज्जमाणं विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण । तेण परमणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । तदो पढमसमयणिव्वत्तिदाणं जहण्णियाए किट्टीए विसेसहीणमसंखेज्जदिभागेण । तेण परं विसेसहीणमणंतभागेण जाव विदियसंगहकिट्टीए चरिमकिट्टि त्ति । तदो जहा विदियसंगहकिट्टीए विही तहा चेव तदियसंगहकिट्टीए विही वि । तदो लोभस्स चरिमादो किट्टीदो मायाए जा विदियसमए जहण्णिया किट्टी तिस्से दिज्जदि पदेसग्गं विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण । तदो पुण अणंतभागहीणं जाव अपुव्वाणं चरिमादो त्ति । एवं जम्हि अपुव्वाणं जहण्णिया किट्टी तम्हि विसेसाहियमसंखेज्जदिभागेण । अपुव्वाणं चरिमादो असंखेज्जदिभागहीणं । एदेण कमेण विदियसमए णिक्खिवमाणयस्स पदेसग्गस्स बारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागहीणं, एक्कारससु किट्टिट्ठाणेसु असंखेज्जदिभागुत्तरं दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स । सेसेसु किट्टिट्ठाणेसु अणंतभागहीणं दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स । विदियसमए दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स एसा उंटकूडसेडी । जं पुण विदियसमए दिस्सदि किट्टीसु पदेसग्गं तं जहण्णियाए किट्टीए बहुअं । सेसासु सव्वासु अणंतरोवणिधाए अणंतभागहीणं । जहा विदियसमए किट्टीसु पदेसग्गं परूविदं तहा सव्विस्से किट्टीकरणद्धाए दिज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स तेवीसं उंटकूडाणि । दिस्समाणगं सव्वम्हि अणंतभागहीणमिदि वत्तव्वं । जं पदेसग्गं सव्वसमासेण पढमसमए किट्टीसु दिज्जदि तं थोवं । विदियसमए असंखेज्जगुणं । तदियसमए असंखेज्जगुणं । एवं जाव किट्टीकरणद्धाए चरिमादो त्ति असंखेज्जगुणं । किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तब्भहिया । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तम्हि चेव किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि हाइदूण अट्ठवस्सियं अंतोमुहुत्तब्भहियं जादं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जाणि वस्ससह-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्साणि। एत्थुववउज्जंतीओ गाहाओ—बारस णव छ त्तिण्णि य किट्टीओ होंति तह अणंताओ। एक्केक्कम्हि कसाए तिग तिग अहवा अणंताओ ॥ ३१ ॥ किट्टी करेदि णियमा ओवट्टेंतो ठिदी य अणुभागे। वड्ढेंतो किट्टीए अकारगो होदि बोद्धव्वो ॥ ३२ ॥ गुणसेडि अणंतगुणा लोभादीकोधपच्छिमपदादो। कम्मस्स य अणुभागे किट्टीए लक्खणं एदं ॥ ३३ ॥ किट्टीओ करेंतो पुव्वफद्दयाणि अपुव्वफद्दयाणि च वेदयदि, किट्टीओ ण वेदयदि। पढमट्ठिदीए आवलियाए सेसाए किट्टीकरणद्धा णिट्ठायदि। से काले किट्टीओ पवेदेदि। ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो चत्तारि मासा। ट्ठिदिसंतकम्ममट्ठ वस्साणि। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो ट्ठिदिसंतकम्मं च संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि। ट्ठिदिबंधो पुण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। अणुभागसंतकम्मं कोधसंजलणस्स जं समऊणाए उदयावलियाए छद्दिदट्ठियाए संतकम्मं तं सव्वघादि। संजलणाणं जे दो आवलियबंधा दुसमऊणा ते देसघादी। तं पुण फद्दयगदं। अवसेसं सव्वं किट्टीगदं। तम्हि चेव पढमसमए कोधस्स पढमसंगहकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि। एत्थुववउज्जंतीओ गाहाओ—किट्टी च ठिदिविसेसेसु असंखेज्जेसु णियमसा होदि। णियमा अणुभागेसु च होदि हु किट्टी अणंतेसु ॥ ३४ ॥ सव्वाओ किट्टीओ विदियट्ठिदिए दु होंति सव्विस्से। जं किट्टिं वेदयदे तिस्से अंसा य पढमाए ॥ ३५ ॥ ताधे कोधस्स पढमाए संगहकिट्टीए असंखेज्जा भागा उदिण्णा। एदिस्से चेव कोधस्स पढमाए संगहकिट्टीए असंखेज्जा भागा बज्झंति। सेसाओ दो संगहकिट्टीओ ण बज्झंति ण वेदिज्जंति। पढमाए संगहकिट्टीए हेट्ठदो जाओ किट्टीओ ण बज्झंति ण वेदिज्जंति ताओ थोवाओ। जाओ किट्टीओ वेदिज्जंति, ण बज्झंति ताओ विसेसाहियाओ। तिस्से चेव पढमाए संगहकिट्टीए उवरिं जाओ किट्टीओ ण बज्झंति, ण वेदिज्जंति ताओ विसेसाहियाओ। उवरिं जाओ वेदिज्जंति, ण बज्झंति ताओ विसेसाहिओ। मज्झे जाओ किट्टीओ बज्झंति वेदिज्जंति च, ताओ असंखेज्जगुणाओ। किट्टीणं पढमसमयवेदगप्पहुडि मोहणीयस्स अणुभागाणमणुसमयओवट्टणा। पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोधकिट्टी उदए उक्कस्सिया बहुगी। बंधे उक्कस्सिया किट्टी अणंतगुणहीणा। विदियसमए उदए उक्कस्सिया किट्टी अणंतगुणहीणा। बंधे उक्कस्सिया किट्टी अणंतगुणहीणा। एवं सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए। पढमसमए बंधेण जहण्णिया किट्टी तिव्वाणुभागा, उदए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणहीणा। विदियसमए बंधे जहण्णिया किट्टी अणंतगुणहीणा, उदए जहण्णिया किट्टी अणंतगुणहीणा। एवं सव्विस्से किट्टीवेदगद्धाए समए समए णिव्वग्गणाओ जहण्णियाओ वि। एसा कोधकिट्टीए परूवणा। किट्टीणं पढमसमयवेदगस्स माणस्स पढमाए संगहकिट्टीणं किट्टीणमसंखेज्जा भागा बज्झंति, सेसाओ संगहकिट्टीओ ण बज्झंति। एवं माया-लोभाणं पि वत्तव्वं। किट्टीणं पढमसमयवेदगो बारसण्हं पि संगहकिट्टीणमग्गकिट्टिमादिं कादूणमेक्केक्किस्से संगहकिट्टीए असंखेज्जदिभागमणुसमयं विणासेदि। कोधस्स पढमकिट्टिं मोत्तूण सेसाणमेक्कारसण्हं संगहकिट्टीणमण्णाओ अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि। ताओ अपुव्वाओ किट्टीओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कदमादो पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि ? बज्झमाणियादो संकामिज्जमाणियादो च पदेसग्गादो णिव्वत्तेदि । बज्झमाणियादो थोवाओ णिव्वत्तेदि । संकामिज्जमाणियादो असंखेज्जगुणाओ । जाओ बज्झमाणियादो णिव्वत्तिज्जंति ताओ चदुसु पढमकिट्टीसु । ताओ कदमम्हि ओगासे ? एक्केक्किस्से संगहकिट्टीए किट्टीअंतरेसु । किं सव्वेसु किट्टीअंतरेसु, आहो ण सव्वेसु ? ण सव्वेसु । जदि ण सव्वेसु, कदमेसु अंतरेसु अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि ? वुच्चदे— बज्झमाणियाणं किट्टीणं जं पढमकिट्टीअंतरं तत्थ णत्थि । एवमसंखेज्जाणि किट्टीअंतराणि असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्ताणि अदिच्छिदूण अपुव्वकिट्टी णिव्वत्तिज्जदि । पुणो एत्तियाणि चेव किट्टीअंतराणि गंतूण अपुव्वा किट्टी णिव्वत्तिज्जदि । बज्झमाणयस्स पदेसग्गस्स णिसेयसेडीपरूवणं वत्तइस्सामो— तत्थ जहण्णियाए किट्टीए बज्झमाणियाए बहुगं, विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण, तदियाए विसेसहीणमणंतभागेण, चउत्थीए विसेसहीणमणंतभागेण । एवमणंतरोवणिधाए ताव विसेसहीणं जाव अपुव्वकिट्टिमपत्तो त्ति । पुणो अपुव्वाए किट्टीए अणंतगुणं । अपुव्वादो किट्टीदो जा अणंतरकिट्टी तत्थ अणंतगुणहीणं । तदो पुणो अणंतभागहीणं । एवं सेसासु सव्वासु किट्टीसु । जाओ संकामिज्जमाणियादो पदेसग्गादो अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तिज्जंति ताओ दुसु ओगासेसु । तं जहा— किट्टी-अंतरेसु च संगहकिट्टी-अंतरेसु च । जाओ संगहकिट्टीअंतरेसु ताओ थोवाओ, जाओ किट्टी-अंतरेसु ताओ असंखेज्जगुणाओ । जाओ संगहकिट्टी-अंतरेसु तासिं जहा किट्टीकरणे अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाणं किट्टीणं विधी तहा कायव्वो । जाओ किट्टी-अंतरेसु तासिं जहा बज्झमाणएण पदेसग्गेण अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाणं किट्टीणं विधी तहा कायव्वो । णवरि थोवयराणि किट्टीअंतराणि गंतूण संछुब्भमाणपदेसग्गेण अपुव्वाओ किट्टीओ णिव्वत्तेदि । ताणि किट्टी-अंतराणि पगणणादो पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमसमयकिट्टीवेदगस्स जा कोधपढमकिट्टी तिस्से असंखेज्जदिभागो अणुसमयं विणासिज्जदि । जाओ किट्टीओ पढमसमए विणासिज्जंति ताओ बहुगाओ । जाओ विदियसमए विणासिज्जंति ताओ असंखेज्जगुणहीणाओ । एवं णेदव्वं जाव दुचरिमसमयअविणट्ठकोधपढमकिट्टि त्ति । एदेण सव्वेण वि कालेण जाओ किट्टीओ विणट्ठाओ ताओ पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोधस्स पढमसंगहकिट्टीए अबज्झमाणियाणं किट्टीणमसंखेज्जदिभागो । कोधस्स पढमकिट्टिवेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए एदम्हि समए जो विधी तं विधिं वत्तइस्सामो । तं जहा— ताधे चेव कोधस्स जहण्णट्ठिदिउदीरगो (१) । कोधपढमकिट्टीए चरिमसमयवेदगो च (२) । जा पुव्वपवत्ता संजलणाणुभागसंतकम्मस्स अणुसमयओवट्टणा सा तहा चेव (३) । चदुसंजलणाणं ठिदिबंधो वे मासा चत्तालीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा (४) । संजलणाणं ट्ठिदिसंतकम्मं छ वस्साणि अट्ठ मासा अंतोमुहुत्तूणा (५) । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो दस वस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि (६) । घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्साणि (७) । सेसाणं कम्माणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जाणि वस्साणि (८)। से काले कोधस्स विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकड्डिदूण कोधस्स पढमट्ठिदिं करेदि। ताधे कोधस्स पढमकिट्टीणं संतकम्मं दोआवलियबंधा दुसमऊणा, जमुदयावलियं पविट्ठं तं च सेसं पढमकिट्टीए। ताधे कोधस्स पढमसमय-विदियकिट्टीवेदगो। जो कोधस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो कोधस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी कायव्वो। तं जहा— उदिण्णाणं किट्टीणं बज्झमाणियाणं किट्टीणं विणासिज्जमाणीणं किट्टीणं अपुव्वाणं णिव्वत्तिज्जमाणियाणं बज्झमाणेण पदेसग्गेण संछुब्भमाणेण च पदेसग्गेण णिव्वत्तिज्जमाणियाणं। एत्थ संकममाणस्स पदेसग्गस्स विधिं वत्तइस्सामो। तं जहा—कोधविदियकिट्टीणं पदेसग्गं कोधतदियं च माणपढमं च गच्छदि। कोधस्स तदियादो माणस्स पढमं चेव गच्छदि। माणस्स पढमादो किट्टीदो माणस्स विदियं तदियं च मायाए पढमं च गच्छदि। माणस्स विदियकिट्टीदो माणस्स तदियं च मायाए पढमं च गच्छदि। माणस्स तदियकिट्टीदो मायाए पढमं गच्छदि। मायाए पढमादो किट्टीदो पदेसग्गं मायाए विदियं तदियं च लोभस्स पढमं किट्टिं च गच्छदि। मायाए विदियादो किट्टीदो पदेसग्गं मायाए तदियं लोभस्स पढमं च गच्छदि। मायाए तदियादो किट्टीदो लोभस्स पढमं चेव गच्छदि। लोभस्स पढमादो किट्टीदो पदेसग्गं लोभस्स विदियं तदियं च गच्छदि। लोभस्स विदियादो किट्टीदो पदेसग्गं लोभस्स तदियं चेव गच्छदि। जहा कोधस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणो चदुण्हं कसायाणं पढमकिट्टीओ बंधदि तहा कोधस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणो चदुण्हं कसायाणं विदियकिट्टीओ किं बंधदि उदाहो ण बंधदि त्ति? वुच्चदे—जस्स कसायस्स जं किट्टिं वेदयदि तस्स कसायस्स तं किट्टिं बंधदि। सेसाणं कसायाणं पढमकिट्टीओ बंधदि। कोधविदियकिट्टिं पढमसमयवेदगस्स एक्कारससु संगहकिट्टीसु अंतरकिट्टीणमप्पाबहुअं वत्तइस्सामो। तं जहा—सव्वत्थोवाओ माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। तदियाए संगहकिट्टीए अंतर-किट्टीओ विसेसाहियाओ। कोधस्स तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। मायाए पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। विदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। तदियाए संगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहिओ। कोधस्स विदियसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ संखेज्जगुणाओ। पदेसग्गस्स वि एवं चेव अप्पाबहुअं। कोधस्स विदियकिट्टीवेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियपडिआवलियाए सेसाए आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो। तिस्से चेव पढमट्ठिदीए समयाहियाए आवलियाए सेसाए ताधे कोधस्स विदियकिट्टीए चरिमसमयवेदगो। ॥७९७ ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो वे मासा वीसं च दिवसा देसूणा। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो वासपुधत्तं। सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। संजलणाणं ठिदिसंतकम्मं पंच वस्साणि चत्तारि मासा अंतोमुहुत्तूणा। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि। तदो से काले कोधस्स तदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि। ताधे कोधस्स तदियसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसंखेज्जा भागा उदिण्णा। तासिं चेव असंखेज्जा भागा बज्झंति। जो विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स विधी सो चेव विधी तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स वि कादव्वो। तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए कोधस्स चरिमसमयवेदगो जहण्णट्ठिदीए उदीरगो च। ताधे ट्ठिदिबंधो संजलणाणं दो मासा पडिवुण्णा। संतकम्मं चत्तारि वस्साणि पुण्णाणि। से काले माणस्स पढमकिट्टिमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि। जा एत्थ सव्वमाणवेदगद्धा तिस्से वेदगद्धाए तिभागमेत्ता पढमट्ठिदी। तदो माणस्स पढमकिट्टिं वेदयवाणो तिस्से पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीणमसंखेज्जे भागे वेदयदि। तदो उदिण्णाहिंतो विसेसहीणाओ बंधदि। सेसाणं कसायाणं पढमकिट्टीओ चेव बंधदि। जेणेव विहिणा कोहस्स पढमकिट्टी वेदिदा तेणेव विहिणा माणस्स पढमकिट्टिं वेदयदि। किट्टीविणासणे बज्झमाणएण संकामिज्जमाणएण च पदेसग्गेण अपुव्वाणं किट्टीणं करणे किट्टीणं बंधोदयणिव्वग्गणकरणेसु णत्थि णाणत्तं अण्णेसु च अभणिदेसु। एदेण कमेण माणपढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए जाधे समयाहिआवलिया सेसा ताधे तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो वीसं च दिवसा अंतोमुहुत्तूणा; संतकम्मं तिण्णि वस्साणि चत्तारि मासा च अंतोमुहुत्तूणा। से काले माणस्स विदियसंगहकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि तेणेव विधिणा संपत्तो। माणस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलिया सेसा त्ति। ताधे संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो दस च दिवसा देसूणा; संतकम्मं दो वस्साणि अट्ठ च मासा देसूणा। से काले माणतदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि तेणेव विहिणा संपत्तो। माणस्स तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से आवलिया समयाहियमेत्ता सेसा त्ति। ताधे माणस्स चरिमसमयवेदगो। ताधे तिण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो मासो पडिवुण्णो; संतकम्मं वे वस्साणि पडिवुण्णाणि। तदो से काले मायाए पढमकिट्टीए पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि तेणेव विहिणा संपत्तो। मायापढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से समयाहियावलिया सेसा त्ति। ताधे ट्ठिदिबंधो दोण्हं संजलणाणं पणुवीसदिवसा देसूणा; ट्ठिदिसंतकम्मं वस्सं अट्ठ च मासा देसूणा। से काले मायाए विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि। सो वि मायाए विदियकिट्टिवेदगो तेणेव विहिणा संपत्तो। मायाए विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलिया समयाहिया सेसा त्ति। ताधे ट्ठिदिबंधो वीसं दिवसा देसूणा; ट्ठिदिसंतकम्मं सोलस मासा देसूणा। से काले मायाए तदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि तेणेव विहिणा संपत्तो। मायाए तदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति। ताधे मायाए चरिमसमयवेदगो। ताधे दोण्हं संजलणाणं ट्ठिदिबंधो अद्ध-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मासो पडिवुण्णो; ट्ठिदिसंतकम्ममेक्कं वस्सं पडिवुण्णं। तिण्हं घादिकम्माणं ठिदिबंधो मासपुधत्तं। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। इदरेसिं कम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जाणि वस्साणि; ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि। तदो से काले लोभस्स पढमसंगहकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि तेणेव विहिणा संपत्तो। लोभस्स पढमकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति। ताधे लोभसंजलणट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं; ठिदिसंतकम्मं पि अंतोमुहुत्तं। तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो दिवसपुधत्तं। सेसाणं कम्माणं ठिदिबंधो वासपुधत्तं। घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि; सेसाणं कम्माणं असंखेज्जाणि वस्साणि। तदो से काले लोभस्स विदियकिट्टीदो पदेसग्गमोकट्टिदूण पढमट्ठिदिं करेदि। ताधे चेव लोभस्स विदियसंगहकिट्टीदो तदियसंगहकिट्टीदो च पदेसग्गमोकट्टिदूण सुहुमसांपराइयकिट्टीओ करेदि। तासिं सुहुमसांपराइयकिट्टीणं कम्हि अवट्ठाणं? तासिं लोभस्स तदियाए संगहकिट्टीए हेट्ठदो अवट्ठाणं। जारिसी कोधस्स पढमसंगहकिट्टी तारिसी एसा सुहुमसांपराइयकिट्टी। कोधस्स पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ थोवाओ। कोधे संछुद्धे माणस्स पढमसंगहकिट्टीएं अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। माणे संछुद्धे मायाए पढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। मायाए संछुद्धे लोभपढमसंगहकिट्टीए अंतरकिट्टीओ विसेसाहियाओ। सुहुमसांपराइयकिट्टीओ वि जाओ पढमसमए कदाओ ताओ विसेसाहियाओ। एसो विसेसो अणंतराणंतरेण संखेज्जदिभागो। सुहुमसांपराइयकिट्टीओ जाओ पढमसमए कदाओ ताओ बहुआओ; जाओ विदियसमए अपुव्वाओ कीरंति ताओ असंखेज्जगुणहीणाओ। अणंतरोवणिधाए सव्विस्से सुहुमसांपराइयकिट्टीकरणद्धाए अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए कीरंति। सुहुमसांपराइयकिट्टीसु जं पढमसमए पदेसग्गं दिज्जदि तं थोवं; विदियसमए असंखेज्जगुणं। एवं जाव चरिमसमयादो त्ति असंखेज्जगुणं। सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमए दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेडीपरूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा— जहण्णियाए किट्टीए पदेसग्गं बहुअं। विदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण। तदियाए किट्टीए विसेसहीणमणंतभागेण। एवमणंतरोवणिधाए गंतूण चरिमाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं विसेसहीणं। चरिमादो सुहुमसांपराइयकिट्टीदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए दिज्जमाणपदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं; तदो विसेसहीणं। सुहुमसांपराइयकिट्टीकारओ विदियसमए अपुव्वाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाओ। ताओ दोसु ट्ठाणेसु करेदि। तं जहा— पढमसमए कदाणं हेट्ठा च अंतरे च। हेट्ठा थोवाओ, अंतरेसु असंखेज्जगुणाओ। विदियसमए दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेडीपरूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा— जा विदियसमए जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तिस्से पदेसग्गं दिज्जदि बहुअं। विदियाए किट्टीए अणंतभागहीणं। एवं गंतूण पढमसमए जा जहण्णिया सुहुमसांपराइयकिट्टी तत्थ असंखेज्जभागहीणं, तत्तो अणंतभागहीणं जाव अपुव्वं णिव्वत्तिज्जमाणियं ण पावेदि। अपुव्वाए णिव्वत्तिज्जमाणियाए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

किट्टीए असंखेज्जदिभागुत्तरं । पुव्वणिव्वत्तिदं पडिवज्जमाणयस्स पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागहीणं । परं परं पडिवज्जमाणयस्स अणंतभागहीणं । जो विदियसमए दिज्जमाणयस्स विधी सो चेव विधी सेसेसु वि समएसु जाव चरिमसमयबादरसांपराइओ त्ति । सुहुमसांपराइयकिट्टीकारयस्स किट्टीसु दिस्समाणपदेसग्गस्स सेडीपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा– जहण्णियाए सुहुमसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गं बहुगं । तत्तो अणंतभागहीणं ताव जाव चरिमसुहुमसांपराइयकिट्टि त्ति । तदो जहण्णियाए बादरसांपराइयकिट्टीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । एसा सेडीपरूवणा जाव चरिमसमयबादरसांपराइओ त्ति । सुहुमसांपराइयकिट्टीसु कीरमाणेसु लोभस्स चरिमादो बादरसांपराइयकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं । लोभस्स विदियकिट्टीदो चरिमबादरसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं । लोभस्स विदियकिट्टीदो सुहुमसांपराइयकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं । पढमसमयकिट्टीवेदगस्स कोधस्स विदियकिट्टीदो माणस्स पढमकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं थोवं । कोधस्स तदियकिट्टीदो माणस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । माणस्स पढमादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । माणस्स विदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । माणस्स तदियादो संगहकिट्टीदो मायाए पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । मायाए पढमसंगहकिट्टीदो लोभस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । मायाए विदियसंगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । मायाए तदियादो संगहकिट्टीदो लोभस्स पढमाए संगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । लोभस्स पढमकिट्टीदो लोभस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । लोभस्स पढमसंगहकिट्टीदो तस्स चेव तदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । कोधस्स पढमसंगहकिट्टीदो माणस्स पढमसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं । कोधस्स चेव पढमसंगहकिट्टीदो कोधस्स तदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं । कोहस्स पढमसंगहकिट्टीदो कोधस्स चेव विदियसंगहकिट्टीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं । एसो पदेससंकमो अदिक्कंतो वि उक्खेदिदो सुहुमसांपराइयकिट्टीणं कीरमाणीणं आसओ त्ति कादूण । सुहुमसांपराइयकिट्टीसु पढमसमए दिज्जदि पदेसग्गं थोवं । विदियसमए असंखेज्जगुणं । एवं जाव चरिमसमयादो त्ति ताव असंखेज्जगुणं । एदेण कमेण लोभस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति । तम्हि समए चरिमसमयबादरसांपराइओ । तम्हि चेव समए लोभस्स चरिमबादरसांपराइयकिट्टी संछुब्भमाणा संछुद्धा । लोभस्स विदियकिट्टीए दो आवलियबंधे समऊणे मोत्तूण उदयावलियपविट्ठं च मोत्तूण सेसाओ विदियकिट्टीए अंतरकिट्टीओ संछुब्भमाणीओ संछुद्धाओ । तम्हि चेव लोभसंजलणस्स ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं, तिण्हं घादिकम्माणं अहोरत्तस्स अंतो, णामा-गोद-वेदणीयाणं बादरसांपराइयस्स जो चरिमो ट्ठिदिबंधो सो संखेज्जेहि वस्ससहस्सेहि हाइदूण वस्सस्स अंतो जादो । चरिमसमय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरसांपराइयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं अंतोमुहुत्तं, तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि। से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयो जादो। ताधे चेव सुहुमसांपराइयकिट्टीणं जाओ ट्ठिदीओ तदो ट्ठिदिखंडयमागाइदं। तदो पदेसग्गमोकट्टिदूण उदये थोवं दिण्णं। एवमंतोमुहुत्तद्धमेत्तमसंखेज्जगुणाए सेडीए देदि। गुणसेडिणिक्खेवो सुहुमसांपराइयद्धादो विसेसुत्तरो। गुणसेडीसीसयादो जा अणंतरट्ठिदी तत्थ असंखेज्जगुणं। तत्तो विसेसहीणं ताव जाव पुव्वसमए अंतरमासि तस्स अंतरस्स चरिमादो त्ति। चरिमादो अंतरट्ठिदीदो पुव्वसमए जा विदियट्ठिदी तिस्से आदिट्ठिदीए दिज्जमाणं पदेसग्गं संखेज्जगुणहीणं। तत्तो विसेसहीणं। पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जमोकट्टिज्जदि पदेसग्गं तमेदाए सेडीए णिक्खिवदि। विदियसमए वि तदियसमए वि एसो चेव कमो ओकट्टिदूण णिसिंचमाणपदेसग्गस्स ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदिखंडओ णिल्लेविदो त्ति। विदियादो ट्ठिदिखंडयादो ओकट्टिदूण जं पदेसग्गमुदए दिज्जदि तं थोवं। तदो असंखेज्जगुणाए सेडीए दिज्जदि ताव जाव गुणसेडीसीसयादो उवरिमाणंतरा एक्का ट्ठिदि त्ति। तदो विसेसहीणं। एत्तो पाए सुहुमसांपराइयस्स जाव मोहणीयस्स ट्ठिदिघादो ताव एस कमो। पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जं दिस्सदि पदेसग्गं तस्स सेडीपरूवणं वत्तइस्सामो। तं जहा—पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स उदए दिस्सदि पदेसग्गं थोवं। विदियाए ट्ठिदीए असंखेज्जगुणं। एवं ताव जाव गुणसेडीसीसयं ति गुणसेडीसीसयादो अण्णा च एक्का ट्ठिदि त्ति। तदो विसेसहीणं जाव चरिमअंतरट्ठिदि त्ति। तदो असंखेज्जगुणं, तत्तो विसेसहीणं। एस कमो ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदिखंडगो चरिमसमयअणिल्लेविदो त्ति। पढमट्ठिदिखंडए णिल्लेविदे जमुदए पदेसग्गं दिस्सदि तं थोवं। विदियाए ट्ठिदीए जं दिस्सदि तमसंखेज्जगुणं। एवं ताव जाव गुणसेडीसीसयादो अण्णा च एक्का ट्ठिदि त्ति असंखेज्जगुणं दिस्सदि। तत्तो विसेसहीणं जाव उक्कस्सिया मोहणीयट्ठिदि त्ति। सुहुमसांपराइयस्स पढमट्ठिदिखंडए पढमसमयणिल्लेविदे गुणसेडिं मोत्तूण सेसियासु ट्ठिदीसु केण कारणेण गोवुच्छा सेडी जादा त्ति एदस्स साहणट्ठं इमाणि अप्पाबहुअपदाणि। तं जहा—सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयद्धा। पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स मोहणीयस्स गुणसेडीणिक्खेवो विसेसाहिओ। अंतरट्ठिदीओ संखेज्जगुणाओ। सुहुमसांपराइयस्स पढमो ट्ठिदिखंडओ मोहणीये संखेज्जगुणो। पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं। लोभस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए जाव तिण्णि आवलियाओ सेसाओ ताव लोभस्स विदियकिट्टीदो लोभस्स तदियकिट्टीए संछुहदि पदेसग्गं। तेण परं ण संछुहदि; सव्वं सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संछुहदि। लोभस्स विदियकिट्टिं वेदयमाणस्स जा पढमट्ठिदी तिस्से पढमट्ठिदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए ताधे जा लोभस्स तदियकिट्टी सा सव्वा णिरवयवा सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संकंता। जा विदियकिट्टी तिस्से दोआवलियसमऊणे बंधे मोत्तूण उदयावलियपविट्ठं च सेसं सव्वं सुहुमसांपराइयकिट्टीसु संकंतं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताधे चरिमसमयबादरसांपराइओ मोहणीयस्स चरिमसमयबंधगो जादो। से काले पढमसमयसुहुमसांपराइओ जादो। ताधे सुहुमसांपराइयकिट्टीणमसंखेज्जा भागा उदिण्णा। हेट्ठा अणुदिण्णाओ थोवाओ, उवरि अणुदिण्णाओ विसेसाहियाओ। मज्झे उदिण्णाओ सुहुमसांपराइयकिट्टीओ असंखेज्जगुणाओ। सुहुमसांपराइयस्स संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु जमपच्छिमट्ठिदिखंडयं मोहणीयस्स तम्हि ट्ठिदिखंडए उक्कीरमाणे जो मोहणीयस्स गुणसेडीणिक्खेवो तस्स गुणसेडीणिक्खेवस्स अग्गग्गादो संखेज्जदिभागो आगाइदो। तम्हि ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे तदो प्पहुडि मोहणीयस्स णत्थि ट्ठिदिघादो। सुहुमसांपराइयद्धाए जत्तियं सेसं तत्तियं मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं सेसं। एसा परूवणा पुरिसवेदयस्स कोधेण उवट्ठिदस्स। पुरिसवेदयस्स चेव माणेण उवट्ठिदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–अंतरे अकदे णत्थि णाणत्तं। अंतरकदे अत्थि णाणत्तं। अंतरे कदे कोधस्स पढमट्ठिदी णत्थि, माणस्स अत्थि। सा केम्महंती? जद्देही कोधेण उवट्ठिदस्स कोधस्स पढमकिट्टी, कोधस्स चेव खवणद्धा च, एम्महंती माणेण उवट्ठिदस्स माणस्स पढमट्ठिदी। जम्हि कोधेण उवट्ठिदो अस्सकण्णकरणं करेदि, माणेण उवट्ठिदो तम्हि काले कोधं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदस्स जा किट्टीकरणद्धा, माणेण उवट्ठिदस्स तम्हि काले अस्सकण्णकरणद्धा। कोधेण उवट्ठिदस्स जा कोधस्स खवणद्धा, माणेण उवट्ठिदस्स तम्हि काले किट्टीकरणद्धा। कोधेण उवट्ठिदस्स माणस्स जा खवणद्धा, माणेण उवट्ठिदस्स तम्हि चेव काले माणस्स खवणद्धा। एत्तो पाए जहा कोधेण उवट्ठिदस्स विही तहा माणेण वि उवट्ठिदस्स पुरिसवेदयस्स। मायाए उवट्ठिदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो। तं जहा–कोधेण उवट्ठिदस्स जम्महंती कोधस्स पढमट्ठिदी, कोधस्स चेव खवणद्धा, माणस्स खवणद्धा च, मायाए उवट्ठिदस्स एम्महंती मायाए पढमट्ठिदी। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि, मायाए उवट्ठिदो तम्हि कोधं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि किट्टीओ करेदि, मायाए उवट्ठिदो तम्हि माणं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि कोधं खवेदि, मायाए उवट्ठिदो तम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि माणं खवेदि, मायाए उवट्ठिदो तम्हि किट्टीओ करेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि मायं खवेदि, तम्हि चेव मायाए उवट्ठिदो मायं खवेदि। एत्तो पाए लोभं खवेमाणस्स णत्थि णाणत्तं। पुरिसवेदयस्स लोभेण उवट्ठिदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो–जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं। अंतरं करेमाणो लोभस्स पढमट्ठिदिं ट्ठवेदि। सा केम्महंती? जद्देही कोधेण उवट्ठिदस्स कोधस्स पढमट्ठिदी, कोध-माण-मायाणं खवणद्धा च, तद्देही लोभेण उवट्ठिदस्स लोभस्स पढमट्ठिदी। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि, लोभेण उवट्ठिदो तम्हि कोधं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि किट्टीओ करेदि, लोभेण उवट्ठिदो तम्हि माणं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि कोधं खवेदि, लोभेण उवट्ठिदो तम्हि मायं खवेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि माणं खवेदि, लोभेण उवट्ठिदो तम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि। कोधेण उवट्ठिदो जम्हि मायं खवेदि लोभेण उवट्ठिदो तम्हि किट्टीओ करेदि। कोधेण उवट्ठिदस्स जम्हि लोभं खवेदि, तम्हि चेव लोभेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवट्ठिदो लोभं खवेदि । एसा सव्वा सण्णियासपरूवणा पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स । इत्थिवेदेण उवट्ठिदस्स खवयस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो । तं जहा—जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं । अंतरं करेमाणो इत्थिवेदस्स पढमट्ठिदिं ट्ठवेदि । जद्देही पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदस्स खवणद्धा, तद्देही इत्थिवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदस्स पढमट्ठिदी । णवुंसयवेदं खवेमाणस्स णत्थि णाणत्तं । णवुंसयवेदे खीणे इत्थिवेदं खवेदि । जम्महंती पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदखवणद्धा, तम्महंती इत्थिवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदस्स खवणद्धा । तदो अवगदवेदो सत्त कम्मंसे खवेदि । सत्तण्हं हि कम्माणं तुल्ला खवणद्धा । सेसेसु पदेसु णत्थि णाणत्तं । एत्तो णवुंसयवेदेण उवट्ठिदस्स खवगस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो—जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं । अंतरं करेमाणो णवुंसयवेदस्स पढमट्ठिदिं ठवेदि । जम्महंती इत्थीवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थीवेदस्स पढमट्ठिदी, तम्महंती णवुंसयवेदेण उवट्ठिदस्स णवुंसयवेदस्स पढमट्ठिदी । तदो अंतरदुसमयकदे णवुंसयवेदं खवेदुमाढत्तो । जद्देही पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स णवुंसयवेदस्स खवणद्धा तद्देही णवुंसयवेदेण उवट्ठिदस्स णवुंसयवेदस्स खवणद्धा गदा ण ताव णवुंसयवेदो खीयदि । तदो से काले इत्थिवेदं खवेदुमाढत्तो, णवुंसयवेदं हि खवेदि । जम्हि पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदो खीणो तम्हि चेव णवुंसयवेदेण उवट्ठिदस्स इत्थिवेदो णवुंसयवेदो च दो वि सह खीयंति । तदो अवगदवेदो सत्त कम्मंसे खवेदि । सत्तण्हं हि कम्माणं तुल्ला खवणद्धा । सेसेसु पदेसु जहा पुरिसवेदेण उवट्ठिदस्स उत्तं तधा वत्तव्वं । जाधे चरिमसमयसुहुमसांपराइयो जादो ताधे णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो अट्ठ मुहुत्ता । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो बारस मुहुत्ता । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो अंतोमुहुत्तं । तेसिं चेव तिण्हं ट्ठिदिसंतकम्मं पि अंतोमुहुत्तं । णामा-गोद-वेदणीयाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं तत्थ णस्सदि । तदो से काले पढमसमयखीणकसाओ जादो । ताधे चेव ट्ठिदि-अणुभागाणमबंधगो । एवं जाव चरिमसमयाहियावलियछदुमत्थो ताव तिण्हं घादिकम्माणमुदीरगो । तदो दुचरिमसमए णिद्दा-पयलाणमुदयसंतवोच्छेदो । तदो णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणमेगसमएण संतोदयवोच्छेदो । तदो अणंतकेवलणाण-दंसण-वीरियजुत्तो जिणो केवली सव्वण्हू सव्वदरिसी सजोगिजिणो असंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्गं णिज्जरेमाणो विहरदि त्ति । तदो अंतोमुहुत्ते आउगे सेसे केवलिसमुग्घादं करेदि । पढमसमए दंडं करेदि । तम्हि ट्ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि । सेसस्स च अणुभागस्स अप्पसत्थाणमणंते भागे हणदि । विदियसमए कवाडं करेदि । तम्हि सेसिगाए ट्ठिदीए असंखेज्जे भागे हणदि । सेसस्स च अणुभागस्स अप्पसत्थाणमणंते भागे हणदि । तदो तदियसमए मंथं करेदि । ट्ठिदि-अणुभागे तहेव णिज्जरयदि । तदो चउत्थसमए लोगमावूरेदि । लोगे पुण्णे एक्का वग्गणा जोगस्स समजोगजादसमए । ट्ठिदि-अणुभागे तहेव णिज्जरयदि । लोगे पुण्णे अंतोमुहुत्तट्ठिदिं ठवेदि संखेज्जगुणमाउआदो । एदेसु चदुसु समएसु अप्पसत्थकम्मंसाणमणुभागस्स अणुसमयओवट्टणा, एगसमइयो ट्ठिदिखंडयस्स घादो । एत्तो सेसियाए ट्ठिदीए संखेज्जे भागे हणदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सेसस्स च अणुभागस्स अणंते भागे हणदि। एत्तो पाए ट्ठिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तिया उक्कीरणद्धा। एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरकायजोगेण बादरमणजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरवचिजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरउस्सासणिस्सासं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण तमेव बादरकायजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुममणजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमवचिजोगं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुमउस्सासं णिरुंभदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुमकायजोगं णिरुंभमाणो इमाणि करणाणि करेदि– पढमसमए अपुव्वफद्दयाणि करेदि पुव्वफद्दयाण हेट्ठादो। आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डदि, जीवपदेसाणं च असंखेज्जदिभागमोकड्डदि। एवमंतोमुहुत्तमपुव्वफद्दयाणि करेदि। असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवपदेसाणं च असंखेज्जगुणाए सेडीए। अपुव्वफद्दयाणि सेडीए असंखेज्जदिभागो, सेडीवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो, पुव्वफद्दयाणं पि असंखेज्जदिभागो सव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि। एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि। अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्डदि। जीवपदेसाणं असंखेज्जदिभागमोकड्डदि। एत्थ अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए। जीवपदेसाणमसंखेज्जगुणाए सेडीए ओकड्डदि। किट्टीगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। किट्टीओ सेडीए असंखेज्जदिभागो, अपुव्वफद्दयाणं पि असंखेज्जदिभागो। किट्टीकरणे णिट्ठिदे तदो से काले पुव्वफद्दयाणि अपुव्वफद्दयाणि च णासेदि। अंतोमुहुत्तं किट्टीगदजोगो होदि। सुहुमकिरियं अप्पडिवादि ज्झाणं ज्झायदि। किट्टीणं च चरिमसमए असंखेज्जे भागे णासेदि। जोगम्हि णिरुद्धम्हि आउसमाणि कम्माणि भवंति। तदो अंतोमुहुत्तं जोगाभावेण णिरुद्धासवत्तादो सेलेसिं पडिवज्जदि, समुच्छिण्णकिरियं अणियट्टिसुक्कज्झाणं झायदि। देवगदीए पंचण्हं सरीराणं पंचसरीरबंधणाणं पंचसरीरसंघादाणं छण्हं संठाणाणं तिण्णमंगोवंगाणं छण्हं संघडणाणं पंचण्हं वण्णाणं दोण्हं गंधाणं पंचण्हं रसाणं अट्ठण्हं पासाणं मणुस-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीए अगुरुगलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासाणं पसत्थापसत्थविहायगदीणं पत्तेयसरीर-अपज्जत्ताणं थिराथिर-सुभासुभ-सुस्सरदुस्सराणं दुभग-अणादेज्जाणं अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदाणं अण्णदरवेदणीयाणं संतस्स सेलेसिं अद्धाए दुचरिमसमए वोच्छेदो। अण्णदरवेदणीय-मणुसगदि-मणुसाउ-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयर-उच्चागोदं ति एदाओ पयडीओ सेलेसिं चरिमसमए वोच्छिण्णाओ। सव्वकम्मविप्पमुक्को एगसमएण सिद्धिं गच्छदि। एवं दोहि सुत्तेहि सूइदत्थस्स परूवणाए कदाए संपुण्णं चारित्तप्पडिवज्जणविहाणं परूविदं होदि। एवं अट्ठमी महल्लचूलिया समत्ता।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णवमी चूलिया

संपहि वासद्दसूइयं णवमं चूलियं वत्तइस्सामो । तत्थ ताव पुव्वपरूविदस्स अत्थस्स संभालणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णेरइया मिच्छाइट्ठी पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ १ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, चदुसु वि गदीसु पढमसम्मत्तमुप्पादेंति त्ति पुव्वं परूविदत्तादो ।

उप्पादेंता कम्हि उप्पादेंति ? ॥ २ ॥

आसंकाए कारणाभावा णेदं सुत्तं वत्तव्वं । कुदो ? 'णेरइएसु पढमसम्मत्तमुप्पाएंता पज्जत्ता चे उप्पाएंति, णो अपज्जत्तेसु' त्ति पुव्वं पडिसिद्धत्तादो ? ण एस दोसो । अपज्जत्तणामकम्मोदएण अपज्जत्ता भण्णंति । णेरइया पुण पज्जत्ता चेय, तत्थ अपज्जत्तणामकम्मस्सुदयाभावा । ते च णेरइया पज्जत्तणामकम्मोदयं पडुच्च पज्जत्ता वि संता पज्जत्तणिव्वत्तिं पडुच्च पज्जत्ता य होंति । एत्थ किं पज्जत्तकाले पढमसम्मत्तमुप्पादेंति, आहो अपज्जत्तकाले उप्पादेंति त्ति पुच्छा कदा । तदो णिच्छयसमुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पज्जत्तएसु उप्पादेंति, णो अप्पज्जत्तएसु ॥ ३ ॥

सुगममेदं ।

पज्जत्तएसु उप्पादेंता अंतोमुहुत्तप्पहुडि जाव तप्पाओग्गंतोमुहुत्तं उवरिमुप्पादेंति, णो हेट्ठा ॥ ४ ॥

पज्जत्ताणं सव्वत्थ सम्मत्तुप्पत्तीए पत्ताए तप्पडिसेहट्ठमेदं सुत्तमागदं । तं जहा—पज्जत्तपढमसमयप्पहुडि जाव तप्पाओग्गंतोमुहुत्तं ताव णिच्छएण पढमसम्मत्तं णो उप्पादेंति, अंतोमुहुत्तेण विणा पढमसम्मत्तपाओग्गविसोहीणमुप्पत्तीए अभावादो । आउए अंतोमुहुत्तावसेसे वि णेरइया पढमसम्मत्तं ण पडिवज्जंति, तेण तत्थ पडिसेहो वत्तव्वो ? ण, पज्जवट्ठियणयावलंबणेण पडिसमयं पुध पुध सम्मत्तभावे जीविदुचरिमसमओ त्ति पडिवज्जंतस्स तदुवलंभा । चरिमसमए वि ण पडिसेहो वत्तव्वो, दंसणमोहोदएण विणा उप्पण्णचरिमसमयसासणभावस्स वि उवयारेण पढमसम्मत्तववदेसादो । अधवा देसामासिगसुत्तमेदं, तेण अवसाणे वि पढमसम्मत्तगहणस्स पडिसेहो सिद्धो होदि ।

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ५ ॥

सुगममेदं सुत्तं । किंतु पुव्विल्लसुत्तं सत्तमपुढवीए देसामासियं चेव, सत्तमपुढविम्हि पढमवक्खाणस्स अणुववत्तीए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णेरइया मिच्छाइट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ? ॥ ६ ॥

उप्पज्जमाणं सव्वं हि कज्जं कारणादो चेव उप्पज्जदि, कारणेण विणा कज्जुप्पत्तिविरोहादो । एवं णिच्छिदकारणस्स तस्संखाविसयमिदं पुच्छासुत्तं ।

तीहिं कारणेहिं पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ ७ ॥

कधमेयं कज्जं तीहि कारणेहि समुप्पज्जदि ? ण, अविरुद्धेहि मोग्गर-लउडि-डंगा-थंभ-सिला-भूमि-घडेहिंतो उप्पज्जमाणखप्पराणमुवलंभा । काणि ताणि तिण्णि कारणाणि त्ति उत्ते उत्तरसुत्तं भणदि—

केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण, केइं वेदणाहिभूदा ॥ ८ ॥

सव्वे णेरइया विभंगणाणेण एक्क-दो-तिण्णिआदिभवग्गहणाणि जेण जाणंति तेण सव्वेसिं जाइंसरत्तमत्थि त्ति सव्वणेरइएहि सम्मादिट्ठीहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, भवसामण्णसरणेण सम्मत्तुप्पत्तीए अणब्भुवगमादो । किंतु धम्मबुद्धीए पुव्वभवम्हि कयाणुट्ठाणाणं विहलत्तदंसणस्स पढमसम्मत्तुप्पत्तीए कारणत्तमिच्छिज्जदे, तेण ण पुव्वुत्तदोसो ढुक्कदि त्ति । ण च एवंविहा बुद्धी सव्वणेरइयाणं होदि, तिव्वमिच्छत्तोदएण ओट्टद्धणेरइयाणं जाणंताणं पि एवंविहउवजोगाभावादो । तम्हा जाइस्सरणं पढमसम्मत्तुप्पत्तीए कारणं । कधं तेसिं धम्मसुणणं संभवदि, तत्थ रिसीणं गमणाभावा ? ण, सम्माइट्ठिदेवाणं पुव्वभवसंबंधीणं धम्मपदुप्पायणे वावदाणं सयलबाधाविरहियाणं तत्थ गमणदंसणादो । वेयणाणुहवणं सम्मत्तुप्पत्तीए कारणं ण होदि, सव्वणेरइयाणं साहारणत्तादो । जइ होइ, तो सव्वे णेरइया सम्माइट्ठिणो होंति । ण चेवं, अणुवलंभा । परिहारो वुच्चदे—ण वेयणासामण्णं सम्मत्तुप्पत्तीए कारणं । किंतु जेसिमेसा वेयणा एदम्हादो मिच्छत्तादो इमादो असंजमादो वा उप्पण्णेत्ति उवजोगो जादो, तेसिं चेव वेयणा सम्मत्तुप्पत्तीए कारणं, णावरजीवाणं वेयणा, तत्थ एवंविहउवजोगाभावा ।

एवं तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेरइया ॥ ९ ॥

सुगममेदं ।

चदुसु हेट्ठिमासु पुढवीसु णेरइया मिच्छाइट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ १० ॥

सुगममेदं हि पुच्छासुत्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ ११ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं ।

केइं जाइस्सरा, केइं वेयणाहिभूदा ॥ १२ ॥

धम्मसवणादो पढमसम्मत्तस्स तत्थ उप्पत्ती णत्थि, देवाणं तत्थ गमणाभावा । तत्थतणसम्माइट्ठिधम्मसवणादो पढमसम्मत्तस्स उप्पत्ती किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, तेसिं भवसंबंधेण पुव्ववेरसंबंधेण वा परोप्परविरुद्धाणं अणुगेज्झणुग्गाहयभावाणमसंभवादो ।

तिरिक्खमिच्छाइट्ठी पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ १३ ॥

तत्थ पढमसम्मत्तकारणतिविहकरणाणं संभवादो । सेसं सुगमं ।

उप्पादेंता कम्हि उप्पादेंति ? ॥ १४ ॥

किमेइंदिएसु किं वा बादरेइंदिएसु किं सुहुमेइंदिएसु किं वि-ति-चउ-पंचिंदिएसु त्ति वुत्तं होदि ।

पंचिंदिएसु उप्पादेंति, णो एइंदिय-विगलिंदिएसु ॥ १५ ॥

कुदो ? एइंदिय-विगलिंदिएसु तिविहकरणपरिणामाभावा । किमट्ठं तेसिमभावो ? सहावदो ।

पंचिंदिएसु उप्पादेंता सण्णीसु उप्पादेंति, णो असण्णीसु ॥ १६ ॥

किमट्ठमसण्णिणो पढमसम्मत्तं णो उप्पादेंति ? ण, अच्चंताभावेण कयणिसेहादो ।

सण्णीसु उप्पादेंता गब्भोवक्कंतिएसु उप्पादेंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १७ ॥

एत्थ वि अच्चंताभावो चेव, पढमसम्मत्तुप्पत्तीए पडिसेहादो ।

गब्भोवक्कंतिएसु उप्पादेंतो पज्जत्तएसु उप्पादेंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १८ ॥

एत्थ वि तं चेव कारणं । को अच्चंताभावो ? करणपरिणामाभावो । सेसं सुगमं ।

पज्जत्तएसु उप्पादेंता दिवसपुधत्तप्पहुडि जावमुवरिमुप्पादेंति, णो हेट्ठादो ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दिवसपुधत्तमिदि वुत्ते सत्तट्ठ दिवसा एत्थ ण घेप्पंति । एसो पुधत्तसद्दो वइपुल्लियवायओ त्ति बहुएसु दिवसपुधत्तेसु गदेसु पढमसम्मत्तमुप्पादेंति त्ति वत्तव्वं ।

एवं जाव सव्वदीव-समुद्देसु ॥ २० ॥

णत्थि मच्छा वा मगरा वा त्ति जेण तसजीवपडिसेहो भोगभूमिपडिभागिएसु समुद्देसु कदो, तेण तत्थ पढमसम्मत्तस्स उप्पत्ती ण जुज्जदि त्ति ? ण एस दोसो, पुव्ववइरियदेवेहि खित्तपंचिंदियतिरिक्खाणं तत्थ संभवादो ।

तिरिक्खा मिच्छाइट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तं उप्पादेंति ? ॥ २१ ॥

पुव्विल्लसुत्तेहि पंचिंदियतिरिक्खेसु पढमसम्मत्तस्स उप्पत्तीए णिच्छिदाए उप्पत्तिकारणाणं संखापुच्छा अणेण कदा ।

तीहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति–केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण, केइं जिणबिंबं दट्ठूण ॥ २२ ॥

कधं जिणबिंबदंसणं पढमसम्मत्तुप्पत्तीए कारणं ? जिणबिंबदंसणेण णिधत्तणिकाचिदस्स वि मिच्छत्तादिकम्मकलावस्स खयदंसणादो । तथा चोक्तं–दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम् । शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा ॥ १ ॥ सेसं सुगमं ।

मणुस्सा मिच्छादिट्ठी पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ २३ ॥

मणुसेसु पढमसम्मत्तुप्पत्तीणिमित्ततिविहकरणपरिणामाणं संभवादो । सेसं सुगमं ।

उप्पादेंता कम्हि उप्पादेंति ॥ २४ ॥

गब्भोवक्कंतियादिभेदमवेक्खिय एदस्स पुच्छासुत्तस्स अवयारो ।

गब्भोवक्कंतिएसु पढमसम्मत्तमुप्पादेंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ २५ ॥

पढमसम्मत्तस्स अच्चंताभावस्स अवट्ठाणादो । सेसं सुगमं ।

गब्भोवक्कंतिएसु उप्पादेंता पज्जत्तएसु उप्पादेंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ २६ ॥

कुदो ? अपज्जत्तभावस्स पढमसम्मत्तुप्पत्तीए अच्चंताभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पज्जत्तएसु उप्पादेंता अट्ठवासप्पहुडि जाव उवरिमुप्पादेंति, णो हेट्ठादो ॥ २७ ॥

कुदो ? पज्जत्तपढमसमयप्पहुडि जाव अट्ठ वस्साणि त्ति ताव एदिस्से अवत्थाए पढमसम्मत्तुप्पत्तीए अच्चंताभावस्स अवट्ठाणादो ।

एवं जाव अड्डाइज्जदीव-समुद्देसु ॥ २८ ॥

सुगममेदं ।

मणुस्सा मिच्छाइट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ? ॥ २९ ॥

एदं कारणसंखाविसयं पुच्छासुत्तं सुगमं ।

तीहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति–केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण, केइं जिणबिंबं दट्ठूण ॥ ३० ॥

जिणमहिमं दट्ठूण वि केइं पढमसम्मत्तं पडिवज्जंता अत्थि तेण चदुहि कारणेहि पढमसम्मत्तं पडिवज्जंति त्ति वत्तव्वं ? ण एस दोसो, एदस्स जिणबिंबदंसणे अंतब्भावादो । अधवा मणुसमिच्छाइट्ठीणं गयणगमणविरहियाणं चउव्विहदेवणिकाएहि णंदीसरजिणवर-पडिमाणं कीरमाणमहामहिमावलोयणे संभवाभावा । मेरुजिणवरमहिमाओ विज्जाधरमिच्छादिट्ठिणो पेच्छंति त्ति एस अत्थो ण वत्तव्वओ त्ति केइं भणंति । तेण पुव्वुत्तो चेव अत्थो घेत्तव्वो । लद्धिसंपण्णरिसिदंसणं पि पढमसम्मत्तुप्पत्तीए कारणं होदि, तमेत्थ पुध किण्ण भण्णदे ? ण, एदस्स वि जिणबिंबदंसणे अंतब्भावादो । उज्जंत-चंपा-पावाणयरादिदंसणं पि एदेणेव घेत्तव्वं । कुदो ? तत्थतण-जिणबिंबदंसण-जिणणिव्वुइगमणकहणेहि विणा पढमसम्मत्तगहणाभावा । णइसग्गियमवि पढमसम्मत्तं तच्चट्ठे उत्तं, तं हि एत्थेव दट्ठव्वं, जाइस्सरण-जिणबिंबदंसणेहि विणा उप्पज्जमाणणइसग्गियपढमसम्मत्तस्स असंभवादो ।

देवा मिच्छाइट्ठी पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ ३१ ॥

कुदो ? तत्थ पढमसम्मत्तजोग्गतिविहकरणपरिणामाणमुवलंभा ।

उप्पादेंता कम्हि उप्पादेंति ? ॥ ३२ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

पज्जत्तएसु उप्पादेंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ ३३ ॥

कुदो ? अपज्जत्तएसु पढमसम्मत्तुप्पत्तीए अच्चंताभावेसु तदुप्पत्तिविरोहादो ।

पज्जत्तएसु उप्पाएंता अंतोमुहुत्तप्पहुडि जाव उवरि उप्पाएंति, णो हेट्ठदो ॥ ३४ ॥

कुदो ? पज्जत्तपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तम्हि तिविहकरणपरिणामाभावादो ।

एवं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा त्ति ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

देवा मिच्छाइट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ? ॥ ३६ ॥

पढमसम्मत्तं कज्जं । कुदो ? अण्णहा तस्सुप्पत्तिविरोहादो । कज्जं च कारणादो उप्पज्जदि, णिक्कारणस्स उप्पत्तिविरोहादो । तं च कारणादो उप्पज्जमाणं पढमसम्मत्तं कदिहि कारणेहि उप्पज्जदि त्ति पुच्छा कदा ।

चदुहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पाएंति–केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण, केइं जिणमहिमं दट्ठूण, केइं देविद्धिं दट्ठूण ॥ ३७ ॥

जिणबिंबदंसणं पढमसम्मत्तस्स कारणत्तेण एत्थ किण्ण उत्तं ? ण एस दोसो, जिणमहिमदंसणम्मि तस्स अंतब्भावादो, जिणबिंबेण विणा जिणमहिमाए अणुववत्तीदो । सग्गोयरण-जम्माहिसेय-परिणिक्खमणजिणमहिमाओ जिणबिंबेण विणा कीरमाणीओ दिस्संति त्ति जिणबिंबदंसणस्स अविणाभावो णत्थि त्ति णासंकणिज्जं, तत्थ वि भाविजिणबिंबस्स दंसणुवलंभा । अधवा एदासु महिमासु उप्पज्जमाणपढमसम्मत्तं ण जिणबिंबदंसणणिमित्तं, किंतु जिणगुणसवणणिमित्तमिदि । देविद्धिदंसणं जाइस्सरणम्मि किण्ण पविसदि ? ण पविसदि, अप्पणो अणिमादिरिद्धीओ दट्ठूण एदाओ रिद्धीओ जिणपण्णत्तधम्माणुट्ठाणादो जादाओ त्ति पढमसम्मत्तपडिवज्जणं जाइस्सरणणिमित्तं । सोहम्मिंदादिदेवाणं महिड्ढीओ दट्ठूण एदाओ सम्मइंसणसंजुत्तसंजमफलेण जादाओ, अहं पुण सम्मत्तविरहिदव्वसंजमफलेण वाहणादिणीचदेवेसु उप्पण्णो त्ति णादूण पढमसम्मत्तग्गहणं देविद्धिदंसणणिबंधणं । तेण ण दोण्हमेयत्तमिदि । किं च जाइस्सरणमुप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तकालब्भंतरे चेव होदि । देविद्धिदंसणं पुण कालंतरे चेव होदि, तेण ण दोण्हमेयत्तं । एसो अत्थो णेरइयाणं जाइस्सरण-वेयणाभिभवणाणं पि वत्तव्वो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सदार-सहस्सार-कप्पवासियदेवा त्ति ॥ ३८ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आणद-पाणद-आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठी कदिहि कारणेहिं पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ? ॥ ३९ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

तीहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति—केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण, केइं जिणमहिमं दट्ठूण ॥ ४० ॥

देविद्धिदंसणेण चत्तारि कारणाणि किण्ण वुत्ताणि ? तत्थ महिद्धिसंजुत्तुवरिमदेवाणमागमाभावा । ण तत्थट्ठिददेवाणं महिद्धिदंसणं पढमसम्मत्तुप्पत्तीए णिमित्तं, भूयोदंसणेण तत्थ विम्हयाभावा, सुक्कलेस्साए महिद्धिदंसणेण संकिलेसाभावादो वा । सोऊण जं जाइस्सरणं, देविद्धिं दट्ठूण जं च जाइस्सरणं, एदाणि दो वि जदि वि पढमसम्मत्तुप्पत्तीए णिमित्तं होंति, तो वि तं सम्मत्तं जाइस्सरणणिमित्तमिदि एत्थ ण घेप्पदि, देविद्धिदंसणसुणणपच्छायदजाइस्सरणणिमित्तत्तादो । किंतु सुणण-देविद्धिदंसणणिमित्तमिदि घेत्तव्वं ।

णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छादिट्ठी कदिहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ? ॥ ४१ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

दोहि कारणेहि पढमसम्मत्तमुप्पादेंति—केइं जाइस्सरा, केइं सोऊण ॥ ४२ ॥

एत्थ महिद्धिदंसणं णत्थि, उवरिमदेवाणमागमाभावा । जिणमहिमदंसणं पि णत्थि, णंदीसरादिमहिमाणं तेसिमागमणाभावा । ओहिणाणेण तत्थट्ठिया चेव जिणमहिमाओ पेच्छंति त्ति जिणमहिमादंसणं वि तेसिं सम्मत्तुप्पत्तीए णिमित्तमिदि किण्ण उच्चदे ? ण, तेसिं वीयरायाणं जिणमहिमादंसणेण विंभयाभावा । कथं तेसिं धम्मसुणणसंभवो ? ण-तेसिं अण्णोण्णसल्लावे संते अहमिंदत्तस्स विरोहाभावा ।

अणुद्दिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्वे ते णियमा सम्माइट्ठि त्ति पण्णत्ता ॥ ४३ ॥

सुगममेदं ।

णेरइया मिच्छत्तेण अधिगदा केइं मिच्छत्तेण णींति ॥ ४४ ॥

अधिगदा पइट्ठा गदा इदि एयट्ठा । णींति णिस्सरंति णिग्गच्छंति णिप्पीडंति इदि एयट्ठो । केइं केचिदित्यर्थः । मिच्छत्तेण सह णिरयगदिं पइस्सिय पुणो तत्थ मिच्छत्तेण वा सम्मत्तेण वा अच्छिय अवसाणे मिच्छत्तेण सह केइं णिप्पीडंति त्ति उत्तं होई ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ४५ ॥

कुदो ? मिच्छत्तेण णिरयगदिं पविस्सिय सगट्ठिदिमणुपालिय पुणो अवसाणे पढमसम्मत्तं पडिवज्जिय आसाणं गंतूण णिप्फीड-माणजीवाणमुवलंभा ।

केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ४६ ॥

कुदो ? मिच्छत्तेण सह णिरयगदिं गंतूण तत्थ सम्मत्तं पडिवज्जिय तेण सम्मत्तेण सह णिप्पीडमाणजीवाणमुवलंभा ।

सम्मत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण चेव णींति ॥ ४७ ॥

कुदो ? तत्थुप्पण्णखइयसम्माइट्ठीणं कदकरणिज्जवेदगसम्माइट्ठीणं वा गुणंतरसंकमणाभावा । सासणसम्माइट्ठीणं च णिरयगदिम्हि पवेसो णत्थि, एत्थ पवेसापदुप्पायणअण्णहाणुववत्तीदो ।

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ ४८ ॥

सुगममेदं ।

विदियाए जाव छट्ठीए पुढवीए णेरइया मिच्छत्तेण अधिगदा केइं मिच्छत्तेण णींति ॥ ४९ ॥

णिरयगदिगयाणं मिच्छत्तेण सह णिस्सरणे विरोहाभावा ।

मिच्छत्तेण अधिगदा केइं सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ५० ॥

कुदो ? मिच्छत्तेण सह विदियादिपंचपुढवीउववगयाणं अवसाणे पढमसम्मत्तं पडिवज्जिय आसाणं गंतूण णिप्पीडणे विरोहाभावा ।

मिच्छत्तेण अधिगदा केइं सम्मत्तेण णींति ॥ ५१ ॥

कुदो ? मिच्छत्तेण णिरयगइं गयाणं तत्थ सम्मत्तं पडिवज्जिय तेण सम्मत्तेण सह णिग्गमणे विदियादिपंचसु पढवीसु विरोहा-भावा । सम्मामिच्छादिट्ठि-आसाणाणं सम्मादिट्ठीणं व विदियादिपंचसु पुढवीसु अधिगमो णत्थि । कुदो ? तेसिमेत्थ अधि-गमापदुप्पायणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्तमाए पुढवीए णेरइया मिच्छत्तेण चेव णींति ॥ ५२ ॥

कुदो ? सम्मत्त-सासण-सम्मामिच्छत्ताइं गयाणं पि तत्थतणजीवाणं णियमेण मरणकाले मिच्छत्तपडिवज्जणादो । किं कारणं ? तत्थ तेसिं अच्चंताभावस्स अवट्ठाणादो ।

तिरिक्खा केइं मिच्छत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ५३ ॥

सुगममेदं ।

केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ५४ ॥

एदं पि सुगमं ।

केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ५५ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ५६ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ५७ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ५८ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सम्मत्तेण अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति ॥ ५९ ॥

खइयसम्माइट्ठीणं कदकरणिज्जवेदगसम्माइट्ठीणं वा तिरिक्खगइगयाणं गुणंतरसंकमणाभावा ।

एवं पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता ॥ ६० ॥

सुगममेदं ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीयो मणुसिणीयो भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवीओ च मिच्छत्तेण अधिगदा केइं मिच्छत्तेण णींति ॥ ६१ ॥ केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ६२ ॥ केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ६३ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । सव्वत्थ सम्मामिच्छत्तेण णिग्गमो पवेसो वा णत्थि, तस्स मरणुप्पत्तीणमसंभवादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ६४ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ६५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । एदेसु सम्मत्तेण अधिगमो णत्थि । कुदो ? एदस्स अच्चंताभावादो ।

मणुसा मणुसपज्जत्ता सोधम्मीसाणप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु केइं मिच्छत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ६६ ॥ केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ६७ ॥ केइं मिच्छत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ६८ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ६९ ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ७० ॥ केइं सासणसम्मत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ७१ ॥ केइं सम्मत्तेण अधिगदा मिच्छत्तेण णींति ॥ ७२ ॥ केइं सम्मत्तेण अधिगदा सासणसम्मत्तेण णींति ॥ ७३ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । मणुस-मणुसपज्जत्तएसु संखेज्जवस्साउएसु सम्मत्तेण पविट्ठदेव-णेरइयाणं कधं सासणसम्मत्तेण णिग्गमो होदि त्ति उत्ते उच्चदे । तं जहा– देव-णेरइयसम्मादिट्ठीणं मणुसेसुप्पज्जिय उवसमसेडिमारुहिय पुणो हेट्ठा ओयरिय सासणं गंतूण मदाणं सासणगुणेण णिग्गमो होदि । एवं सासणसम्मागुणेण मणुस्सेसु पविसिय सासणगुणेण णिग्गमो वत्तव्वो, अण्णहा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण कालेण विणा सासणगुणाणुप्पत्तीदो । एदं पाहुडसुत्ताभिप्पाएण भणिदं । जीवट्ठाणाभिप्पाएण पुण संखेज्जवस्साउएसु ण संभवदि, उवसमसेडीदो ओदिण्णस्स सासणगुणगमणाभावा । एत्थ पुण संखेज्जासंखेज्जवस्साउए मोत्तूण जेण भणिदं तेणेदं घडदे ।

केइं सम्मत्तेण अधिगदा सम्मत्तेण णींति ॥ ७४ ॥

सुगममेदं ।

अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु सम्मत्तेण अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति ॥ ७५ ॥

सुगममेदं । पंचिंदियतिरिक्ख-मणुसअपज्जत्ताणं किमट्ठं णिग्गमण-पवेसा ण उत्ता ? ण, मिच्छादिट्ठी मोत्तूण अण्णेसिं तत्थ णिग्गम-पवेसाभावादो । तस्स वि उत्तेण विणा अवगमादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णेरइयमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी णिरयादो उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ ७६ ॥

सुगममेदं ।

दो गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं चेव मणुसगदिं चेव ॥ ७७ ॥

देव-णेरइयगदीओ ण गच्छंति । किं कारणं ? सभावादो । सो वि तेसिं सहाओ कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

तिरिक्खेसु आगच्छंता पंचिंदिएसु आगच्छंति, णो एइंदियविगलिंदिएसु ॥ ७८ ॥

एइंदिया वियलिंदिया चेव, पंचण्हमिंदियाणं संपुण्णत्ताभावादो । तदो विगलिंदियग्गहणमेव पहुप्पदि, एइंदियग्गहणं ण कायव्वमिदि ? ण, विगलिंदियग्गहणेण एइंदियाणं गहणे कीरमाणे उवरि देवगदिम्हि वीइंदियादीणं पुध पुध पडिसेहो कायव्वो होदि । एवं कीरमाणे गंथबहुत्तं पावेदि । तेण पुध एइंदियणिद्देसो कदो । सेसं सुगमं ।

पंचिंदिएसु आगच्छंता सण्णीसु आगच्छंति, णो असण्णीसु ॥ ७९ ॥

कुदो ? सहावदो । ण सहावो परपज्जणिओगजोगो ।

सण्णीसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ ८० ॥

केण कारणेण सम्मुच्छिमेसु णागच्छंति ? चक्खिदिएण सद्दो किण्ण घेप्पदि ? सहावदो चेव । एत्थ वि सहावदो चेव णागच्छंति त्ति किण्ण इच्छिज्जदि । किं च सुत्तं णाम पमाणं बाहाइक्कंतं, इंदियणोइंदियणाणाणीव । ण च इंदिएहि बाहाइक्कंतेहि दिट्ठत्थम्मि पमाणाणुसारिणो संदेहं कुणंता अत्थि ? सच्चं पमाणेण दिट्ठत्थम्हि पमाणंतरेण ण परिक्खा पयट्टइ, किंतु एदस्स वयणस्स पमाणत्तं ण णव्वदि त्ति चे ण, असच्चकारणसव्वविजुत्तजिणवयणविणिग्गयस्स वयणस्स अप्पमाणत्तविरोहादो । तदो पमाणमेदं । तेणेव कारणेण ण पमाणंतरेण परिक्खणिज्जमिदि ।

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ ८१ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवस्साउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवस्साउएसु ॥ ८२ ॥

किमट्ठमसंखेज्जवस्साउएसु णागच्छंति त्ति ? णेरइएसु दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो ।

मणुस्सेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ ८३ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ ८४ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवस्साउएसु आगच्छंति णो असंखेज्जवस्साउएसु ॥ ८५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णेरइया सम्मामिच्छाइट्ठी सम्मामिच्छत्तगुणेण णिरयादो णो उव्वट्टंति ॥ ८६ ॥

कुदो ? सहावदो । एदेण अधिगमो वि पडिसिद्धो, उव्वट्टणपडिसेहस्स अधिगमपडिसेहाविणाभावादो ।

णेरइया सम्माइट्ठी णिरयादो उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ ८७ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

एक्कं मणुसगदिं चेव आगच्छंति ॥ ८८ ॥

कुदो ? णेरइयसम्माइट्ठीणं मणुस्साउअं मोत्तूण अण्णाउवसंतकम्मियाणं सम्मत्तेणुव्वट्टणाभावा ।

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ ८९ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति णो अपज्जत्तएसु ॥ ९० ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ ९१ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एवं छसु उवरिमासु पुढवीसु णेरइया ॥ ९२ ॥

एदं पि सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइया मिच्छाइट्ठी णिरयादो उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ ९३ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

एक्कं तिरिक्खगदिं चेव आगच्छंति ॥ ९४ ॥

कुदो ? तेसिं तिरिक्खाउअं मोत्तूण सेसाउआणं बंधाभावादो ।

तिरिक्खेसु आगच्छंता पंचिंदिएसु आगच्छंति णो एइंदियविगलिंदिएसु ॥ ९५ ॥ पंचिंदिएसु आगच्छंता सण्णीसु आगच्छंति, णो असण्णीसु ॥ ९६ ॥ सण्णीसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ ९७ ॥ गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ ९८ ॥ पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवस्साउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ ९९ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी अप्पप्पणो गुणेण णिरयादो णो उव्वट्टिंति ॥ १०० ॥

कुदो सहावदो ।

तिरिक्खा सण्णी मिच्छाइट्ठी पंचिंदियपज्जत्ता संखेज्जवासाउआ तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १०१ ॥

ओवयारियतिरिक्खपडिसेहट्ठं विदियतिरिक्खगहणं । तिरिक्खेहि तिरिक्खपज्जाएहि, कालगदसमाणा विणट्ठा संता त्ति घेत्तव्वं । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चत्तारि गदीओ गच्छंति णिरयगदिं तिरिक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ १०२ ॥

सुगममेदं ।

णिरएसु गच्छंता सव्वणिरएसु गच्छंति ॥ १०३ ॥

कुदो ? विरोहाभावा ।

तिरिक्खेसु गच्छंता सव्वतिरिक्खेसु गच्छंति ॥ १०४ ॥ मणुसेसु गच्छंता सव्वमणुसेसु गच्छंति ॥ १०५ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

देवेसु गच्छंता भवणवासियप्पहुडि जाव सयार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १०६ ॥

कुदो ? तत्तो उवरि सम्मत्ताणुव्वएहि विणा गमणाभावा ।

पंचिंदियतिरिक्खअसण्णिपज्जत्ता तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १०७ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

चत्तारि गदीओ गच्छंति णिरयगदिं तिरिक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ १०८ ॥

सुगममेदं ।

णिरएसु गच्छंता पढमाए पुढवीए णेरइएसु गच्छंति ॥ १०९ ॥

कुदो ? हेट्ठिमणेरइएसु उप्पत्तिणिमित्तपरिणामाभावा ।

तिरिक्ख-मणुस्सेसु गच्छंता सव्वतिरिक्ख-मणुस्सेसु गच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु गच्छंति ॥ ११० ॥

कुदो ? असण्णीसु दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो ।

देवेसु गच्छंता भवणवासिय-वाणवेंतरदेवेसु गच्छंति ॥ १११ ॥

कुदो ? असण्णीणं तत्तो उवरिमदेवेसु उप्पत्तिणिमित्तपरिणामाभावा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचिंदियतिरिक्खसण्णी असण्णी अपज्जत्ता पुढवीकाइया आउकाइया वा वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा बादरवणप्फदिकाइया पत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय चउरिंदिय-पज्जत्तापज्जत्ता तिरिक्खा तिरिक्खेहिं कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ ११२ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

दुवे गदीओ गच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेदि ॥ ११३ ॥

कुदो ? देव-णिरयगदिगमणपरिणामाभावा ।

तिरिक्ख-मणुस्सेसु गच्छंता सव्वतिरिक्ख-मणुस्सेसु गच्छंति, णो असंखेज्जवस्साउएसु गच्छंति ॥ ११४ ॥

कुदो ? तेसिं दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो ।

तेउक्काइया वाउक्काइया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ ११५ ॥

सुगममेदं ।

एक्कं चेव तिरिक्खगदिं गच्छंति ॥ ११६ ॥

कुदो ? सव्वतेउ-वाउकाइयाणं संकिलिट्ठाणं सेसगइजोग्गपरिणामाभावा ।

तिरिक्खेसु गच्छंता सव्वतिरिक्खेसु गच्छंति, णो असंखेज्जवस्साउएसु गच्छंति ॥ ११७ ॥

सुगममेदं ।

तिरिक्खसासणसम्माइट्ठी संखेज्जवस्साउआ तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ ११८ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिण्णि गदीओ गच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ ११९ ॥

णिरयगदी णत्थि । कुदो ? तिरिक्ख-मणुससासणाणं णिरयगइगमणपरिणामाभावा ।

तिरिक्खेसु गच्छंता एइंदिय-पंचिंदिएसु गच्छंति, णो विगलिंदिएसु ॥ १२० ॥

जदि एइंदिएसु सासणसम्माइट्ठी उप्पज्जदि तो पुढवीकायादिसु दो गुणट्ठाणाणि होंति त्ति चे ण, छिण्णाउअपढमसमए सासणगुणविणासादो ।

एइंदिएसु गच्छंता बादरपुढवीकाइय-बादरआउक्काइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तेसु ॥ १२१ ॥ पंचिंदिएसु गच्छंता सण्णीसु गच्छंति, णो असण्णीसु ॥ १२२ ॥ सण्णीसु गच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १२३ ॥ गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंता पज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १२४ ॥ पज्जत्तएसु गच्छंता संखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति, असंखेज्जवासाउवेसु वि ॥ १२५ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

मणुसेसु गच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १२६ ॥ गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंता पज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १२७ ॥ पज्जत्तएसु गच्छंता संखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति, असंखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति ॥ १२८ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

देवेसु गच्छंता भवणवासियप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १२९ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खा सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जवस्साउआ सम्मामिच्छत्तगुणेण तिरिक्खा तिरिक्खेसु णो कालं करेंति ॥ १३० ॥

कुदो ? सम्मामिच्छत्तगुणम्मि चदुसु वि गदीसु आउकम्मस्स सव्वत्थ बंधाभावा। ण सत्तमपुढवीअसंजदसम्मादिट्ठि सासणसम्माइट्ठीहि विउचारो, तत्थ वि आउअकम्मस्स तेसिं बंधाभावा। हंदि जिस्से गदीए जम्हि गुणट्ठाणे आउकम्मबंधो णत्थि, ण तेण गुणेण ताए गदीए णिग्गमो त्ति मोत्तूण कसायउवसामए।

तिरिक्खा असंजदसम्मादिट्ठी संखेज्जवस्साउआ तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १३१ ॥

सुगममेदं।

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १३२ ॥

कुदो ? देवाउअं मोत्तूण अण्णेसिमाउआणं तत्थ बंधाभावा। णवाउवबंधेण विणा उप्पाओ अत्थि, तहाणुवलंभा।

देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव आरणच्चुदकप्पवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १३३ ॥

उवरि किण्ण गच्छंति ? ण, तिरिक्खसम्माइट्ठीसु संजमाभावा। संजमेण विणा ण च उवरि गमणमत्थि। ण मिच्छाइट्ठीहि तत्थुप्पज्जंतेहि विउचारो, तेसिं पि भावसंजमेण विणा दव्वसंजमस्स संभवा।

तिरिक्खमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंखेज्जवासाउवा तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १३४ ॥

सुगममेदं।

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १३५ ॥

कुदो ? मंदकसायत्तादो, तत्थ देवाउअं मोत्तूण अण्णेसिमाउआणं बंधाभावादो वा। कधमेक्कंहि देवगइमिदि एदेसिं दोण्हं पदाणं

समाणाहिअरणत्तं ? ण, देवगदीए छक्कारयरूवाए समाणाहिअरणत्तस्स विरोहाभावा। अथवा एक्कं हि चेवेत्ति एत्थतण 'हि' सद्दो पुधत्थे दट्ठव्वो, ण भाए। तेणेसत्थो हवइ– एक्कं चेव हि पुधं देवगइं गच्छंति। ण पुव्वुत्तदोसप्पसंगो। चेव सद्दो सेसगइणिसेहट्ठो।

देवेसु गच्छंता भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु गच्छंति ॥ १३६ ॥

किं कारणं ? सोहम्मादिउवरिमदेवेसु गमणजोग्गपरिणामाभावा।

तिरिक्खा सम्मामिच्छाइट्ठी असंखेज्जवासाउआ सम्मामिच्छत्तगुणेण तिरिक्खा तिरिक्खेहि णो कालं करेंति ॥ १३७ ॥

कुदो ? तत्थ आउअकम्मस्स बंधाभावादो।

तिरिक्खा असंजदसम्माइट्ठी असंखेज्जवासाउआ तिरिक्खा तिरिक्खेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १३८ ॥

सुगममेदं।

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १३९ ॥

एदं पि सुगमं।

देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १४० ॥

तेसिं तदो उवरि तत्तो हेट्ठा वा उप्पज्जणपरिणामाभावा।

मणुसा मणुसपज्जत्ता मिच्छाइट्ठी संखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १४१ ॥

सुगममेदं।

चत्तारि गदीओ गच्छंति णिरयगई तिरिक्खगई मणुसगई देवगई चेदि ॥ १४२ ॥

एदं पि सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिरएसु गच्छंता सव्वणिरएसु गच्छंति ॥ १४३ ॥ तिरिक्खेसु गच्छंता सव्वतिरिक्खेसु गच्छंति ॥ १४४ ॥ मणुसेसु गच्छंता सव्वमणुस्सेसु गच्छंति ॥ १४५ ॥ देवेसु गच्छंता भवणवासियप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १४६ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

मणुसा अपज्जत्ता मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १४७ ॥

सुगममेदं ।

दुवे गदीओ गच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ १४८ ॥

कुदो ? मणुस्सअपज्जत्ताणं तिरिक्ख-मणुस्साउअं मोत्तूण अण्णेसिं आउआणं बंधाभावा ।

तिरिक्ख-मणुसेसु गच्छंता सव्वतिरिक्ख-मणुसेसु गच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु गच्छंति ॥ १४९ ॥

कुदो ? एदेसिं दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो ।

मणुस्ससासणसम्माइट्ठी संखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १५० ॥

सुगममेदं ।

तिण्णि गदीओ गच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ १५१ ॥

सुगममेदं ।

तिरिक्खेसु गच्छंता एइंदिय-पंचिंदिएसु गच्छंति, णो विगलिंदिएसु गच्छंति ॥ १५२ ॥

जदि एइंदिएसु सासणसम्माइट्ठी उप्पज्जंति तो एइंदिएसु दोहि गुणट्ठाणेहि होदव्वमिदि । होदु चे ण, एइंदियसासणदव्वस्स दव्वाणिओगद्दारे पमाणपरूवणाभावा ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा—सासणसम्माइट्ठी एइंदिएसु उप्पज्जमाणा जेण अप्पणो आउ-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अस्स चरिमसमए सासणपरिणामेण सहिया होदूण तदो उवरिमसमए मिच्छत्तं पडिवज्जंति तेण एइंदिएसु ण दोण्णि गुणट्ठाणाणि, मिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणमेक्कं चेव ।

एइंदिएसु गच्छंता बादरपुढवी-बादरआउ-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तेसु ॥ १५३ ॥ पंचिंदिएसु गच्छंता सण्णीसु गच्छंति, णो असण्णीसु ॥ १५४ ॥ सण्णीसु गच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु गब्भोवक्कंतिएसु ॥ १५५॥ गच्छंता पज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १५६ ॥ पज्जत्तएसु गच्छंता संखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति, असंखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति ॥ १५७ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

मणुसेसु गच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १५८ ॥

मणुस्सा सण्णिणो चेव, तेण सण्णि-असण्णिवियप्पो ण कदो ।

गब्भोवक्कंतिएसु गच्छंता पज्जत्तएसु गच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १५९ ॥ पज्जत्तएसु गच्छंता संखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति, असंखेज्जवासाउएसु वि गच्छंति ॥ १६० ॥ देवेसु गच्छंता भवणवासियप्पहुडि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १६१ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । कधं मणुससासणसम्माइट्ठीणं सम्मत्त-संजम-रहियाणं णवगेवज्जेसु उप्पत्ती ? ण एस दोसो, दव्वसंजमस्स वि तप्फलत्तुवलंभादो ।

मणुसा सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जवासाउआ सम्मामिच्छत्तगुणेण मणुसा मणुसेहि णो कालं करेंति ॥ १६२ ॥

कुदो ? एदस्स सव्वाउआणं बंधाभावादो ।

मणुससम्माइट्ठी संखेज्जवासाउआ मणुस्सा मणुस्सेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १६३ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १६४ ॥

एत्थ चत्तारि गदीओ गच्छंति त्ति वत्तव्वं, मणुससम्माइट्ठीणं चउग्गइगमणुवलंभादो । तं जहा–देवगदिं ताव मणुससम्माइट्ठिणो गच्छंति चेव, एत्थेव सुत्ते उत्तत्तादो । णिरयगदिं पि गच्छंति, 'णेरइया सम्मत्तेण अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति' त्ति सुत्तवयणादो । ण तिरिक्खसम्माइट्ठिणो णिरयगदिमधिगच्छंति, तत्थ दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो खइयसम्मत्ताभावा । ण तत्थतणवेदगसम्माइट्ठिणो णिरयगदिमधिगच्छंति, तेसिं मरणकाले णिरयाउअसंतस्साभावादो । ण देव-णेरइय-सम्माइट्ठिणो णिरयगदिमधिगच्छंति, जिणाणाभावादो । तम्हा परिसेसादो सम्मादिट्ठिणो मणुसा चेव णिरयगदिमधिगच्छंति त्ति सिद्धं । तिरिक्खगदिं (पि गच्छंति), 'सम्मत्तेण अधिगदा णियमा सम्मत्तेण चेव णींति' त्ति जिणाणादो । एत्थ ण देव-णेरइय-तिरिक्खसम्माइट्ठिणो उप्पज्जंति, एदेसिमेत्थुप्पत्तीए पदुप्पायणजिणाणाभावादो । तम्हा तिरिक्खेसु सम्माइट्ठिणो मणुस्सेव उप्पज्जंति । एवं मणुस्सेसु मणुससम्माइट्ठीणं उप्पत्ती साहेदव्वा त्ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा–जेहि मिच्छाइट्ठीहि देवाउअं मोत्तूण अण्णमाउअं बंधिय पच्छा सम्मत्तं गहियं ते एत्थ ण परिगहिया । तेण एक्कं चेव देवगदिं गच्छंति मणुससम्माइट्ठिणो त्ति भणिदं । देवगइं मोत्तूणण्णगईणमाउअं बंधिदूण जेहि सम्मत्तं पच्छा पडिवण्णं ते एत्थ किण्ण गहिदा ? ण, तेसिं मिच्छत्तं गंतूणप्पणो बंधाउअवसेण उप्पज्जमाणाणं सम्मत्ताभावा । सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय णिरयादिसु उप्पज्जमाणा वि मणुससम्माइट्ठिणो अत्थि, ते किण्ण गहिदा ? सम्मत्तमाहप्पपदुप्पायणट्ठं पुव्वंबद्धआउअकम्ममाहप्पपदुप्पायणट्ठं च ।

देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १६५ ॥

सुगममेदं ।

मणुसा मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १६६ ॥

सुगममेदं ।

एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १६७ ॥ देवेसु गच्छंता भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु गच्छंति ॥ १६८ ॥ मणुसा सम्मामिच्छाइट्ठी असंखेज्जवासाउआ सम्मामिच्छत्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गुणेण मणुसा मणुसेहि णो कालं करेंति ॥ १६९ ॥ मणुसा सम्माइट्ठी असंखेज्जवासाउआ मणुसा मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ १७० ॥ एक्कं हि चेव देवगदिं गच्छंति ॥ १७१ ॥ देवेसु गच्छंता सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु गच्छंति ॥ १७२ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

देवा मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी देवा देवेहि उवट्टिद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ १७३ ॥

सुगममेदं ।

दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ १७४ ॥

कुदो ? देव-णिरयाउआणं बंधाभावादो ।

तिरिक्खेसु आगच्छंता एइंदिय-पंचिंदिएसु आगच्छंति, णो विगलिंदिएसु ॥ १७५ ॥

कुदो ? सहावदो ?

एइंदिएसु आगच्छंता बादरपुढवीकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १७६ ॥ पंचिंदिएसु आगच्छंता सण्णीसु आगच्छंति, णो असण्णीसु ॥ १७७ ॥ सण्णीसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १७८ ॥ गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १७९ ॥ पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १८० ॥

कुदो ? दाण-दाणाणुमोदाणमभावादो, सभावदो वा । सेसं सुगमं ।

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १८१ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १८२ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १८३ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

देवा सम्मामिच्छाइट्ठी सम्मामिच्छत्तगुणेण देवा देवेहिं णो उव्वट्टंति, णो चयंति ॥ १८४ ॥

सुगममेदं ।

देवा सम्माइट्ठी देवा देवेहि उव्वट्टिद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ १८५ ॥ एक्कं हि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ १८६ ॥

कुदो ? देवसम्माइट्ठीणं मणुसाउअं मोत्तूण अण्णाउआणं बंधाभावादो ।

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १८७ ॥

गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १८८ ॥

पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवस्साउएसु ॥ १८९ ॥

सव्वं सुगममेदं ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगदिभंगो ॥ १९० ॥

एदं पि सुगमं ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु पढमपुढवीभंगो । णवरि चुदा त्ति भाणिदव्वं ॥ १९१ ॥

एदं पि सुगमं ।

आणदादि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी देवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ १९२ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एक्कं हि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ १९३ ॥

कुदो ? सुक्कलेस्सियाणं तेसिं मणुसाउएण विणा अण्णाउआणं बंधाभावा ।

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ १९४ ॥
गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ १९५ ॥
पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ १९६ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

आणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवा सम्मामिच्छाइट्ठी सम्मामिच्छत्तगुणेण देवा देवेहि णो चयंति ॥ १९७ ॥ अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा असंजदसम्माइट्ठी देवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ १९८ ॥ एक्कं हि मणुसगदिमागच्छंति ॥ १९९ ॥

एक्कं हि मणुसगदिमागच्छंति, सुक्कलेस्सियत्तादो सम्माइट्ठित्तादो वा ।

मणुसेसु आगच्छंता गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंति, णो सम्मुच्छिमेसु ॥ २०० ॥
गब्भोवक्कंतिएसु आगच्छंता पज्जत्तएसु आगच्छंति, णो अपज्जत्तएसु ॥ २०१ ॥
पज्जत्तएसु आगच्छंता संखेज्जवासाउएसु आगच्छंति, णो असंखेज्जवासाउएसु ॥ २०२ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २०३ ॥ एक्कं हि चेव तिरिक्खगदिमागच्छंति त्ति ॥ २०४ ॥

पुणरुत्तत्तादो णेदं सुत्तं वत्तव्वं ? ण एस दोसो, जडमइसिस्साणुग्गहहेदुत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा छण्णो उप्पाएंति–आभिणिबोहियणाणं णो उप्पाएंति, सुदणाणं णो उप्पाएंति, ओहिणाणं णो उप्पाएंति, सम्मामिच्छत्तं णो उप्पाएंति, सम्मत्तं णो उप्पाएंति, संजमासंजमं णो उप्पाएंति ॥ २०५ ॥

तित्थयरादीणं पडिसेहो एत्थ किण्ण कदो ? ण, तिरिक्खेसु तेसिं संभवाभावा, सव्वस्स पडिसेहस्स पत्तिपुव्वस्सुवलंभादो । सासणगुणपडिसेहो किण्ण कदो ? ण, सम्मत्ते पडिसिद्धे तत्तो उप्पज्जमाणसासणसम्मत्तगुणपडिसेहस्स अणुत्तसिद्धीदो ।

छट्ठीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २०६ ॥

एत्थ 'छट्ठीए पुढवीए णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति' त्ति वत्तव्वं, ण 'णिरयादो णेरइया' त्ति, तस्स फलाभावा ? ण एस दोसो, छट्ठीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णिरयपज्जायादो उव्वट्टिदसमाणा विणट्ठा संता णेरइया दव्वट्ठियणयावलंबणेण णेरइया होदूण कदि गदीओ आगच्छंति त्ति तदुच्चारणाए फलोवलंभा । सेसं सुगमं ।

दुवे गदीयो आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ २०७ ॥

एदं पि सिस्ससंभालणट्ठं परूविदं ।

तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा मणुसा केइं छ उप्पाएंति–केइं आभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति ॥ २०८ ॥

सासणसम्मत्तं सम्मत्ते पविसदि त्ति पुध ण उत्तं । सेसं संजमादिं णो उप्पाएंति त्ति कधं णव्वदे ? विहीए अभावादो । ण च होंतं ण भणइ तित्थयरो, विरोहादो ।

पंचमीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीयो आगच्छंति ? ॥ २०९ ॥ दुवे गदीयो आगच्छंति तिरिक्खगदिं चेव मणुसगदिं चेव ॥ २१० ॥ तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २११ ॥

तिरिक्खभवमछंडिऊणेत्ति जाणावणट्ठं विदियतिरिक्खगहणं । ताणि छ पुव्वं परूविदाणि त्ति णेह कहियाइं ।

मणुस्सेसु उववण्णल्लया मणुसा केइमट्ठमुप्पाएंति—केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति ॥ २१२ ॥

कुदो ? पंचमीए आगदस्स तिव्वसंकिलेसाभावादो । सेसं सुगमं ।

चउत्थीए पुढवीए णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २१३ ॥ दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगइं चेव मणुसगइं चेव ॥ २१४ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २१५ ॥

ताणि वि सुपसिद्धाणि त्ति णेह परूवियाइं ।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं दस उप्पाएंति—केइमाहिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति । णो बलदेवत्तं णो वासुदेवत्तं णो चक्कवट्टित्तं णो तित्थयरत्तं । केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुक्खाणमंतं परिविजाणंति ॥ २१६ ॥

अष्टकर्मणामंतं विनाशं कुर्वन्तीति अन्तकृतः । अंतकृतो भूत्वा सिज्झंति सिद्ध्यन्ति निस्तिष्ठंति निष्पद्यन्ते स्वरूपेणेत्यर्थः । बुज्झंति त्रिकालगोचरानन्तार्थव्यंजनपरिणामात्मकाशेषवस्तुतत्त्वं बुद्ध्यन्ति अवगच्छन्तीत्यर्थः । केवलज्ञाने समुत्पन्नेऽपि सर्वं न जानातीति कपिलो ब्रूते । तन्न, तन्निराकरणार्थं बुद्ध्यन्त इत्युच्यते । मोक्षो हि नाम बन्धपूर्वकः, बन्धश्च न जीवस्यास्ति, अमूर्तत्वान्नित्यत्वाच्चेति । तस्माज्जीवस्य न मोक्ष इति नैयायिक-वैशेषिक-सांख्य-मीमांसकमतम् । एतन्निराकरणार्थं मुच्चंतीति प्रतिपादितम् । परिणिव्वाणयंति—अशेषबन्धमोक्षे सत्यपि न परिनिर्वान्ति, सुख-दुःखहेतुशुभाशुभकर्मणां तत्रासत्वादिति तार्किकयोर्मतं । तन्निराकरणार्थं परिनिर्वान्ति

अनन्तसुखा भवन्तीत्युच्यते । यत्र सुखं तत्र निश्चयेन दुःखमप्यस्ति, दुःखाविनाभावित्वात्सुखस्येति तार्किकयोरेव मतं, तन्निराकरणार्थं सव्वदुःखाणमंतं परिविजाणंतीति उच्यते । सर्वदुःखानामन्तं पर्यवसानं परिविजानन्ति गच्छन्तीत्यर्थः । कुतः ? दुःखहेतुकर्मणां विनष्टत्वात्, स्वास्थ्यलक्षणस्य सुखस्य जीवस्य स्वाभाविकत्वादिति ।

तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेरइया णिरयादो णेरइया उव्वट्टिदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २१७ ॥ दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ २१८ ॥ तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २१९ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुस्सा केइमेक्कारस उप्पाएंति–केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति । णो बलदेवत्तं णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति, णो चक्कवट्टित्तमुप्पाएंति । केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुःखाणमंतं परिविजाणंति ॥ २२० ॥

सुगममेदं ।

तिरिक्खा मणुसा तिरिक्ख-मणुसेहि कालगदसमाणा कदि गदीओ गच्छंति ? ॥ २२१ ॥ चत्तारि गदीओ गच्छंति णिरयगदिं तिरिक्खगदिं मणुसगदिं देवगदिं चेदि ॥ २२२ ॥ णिरय-देवेसु उववण्णल्लया णिरय-देवा केइं पंचमुप्पाएंति–केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति ॥ २२३ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा मणुसा केइं छ उप्पाएंति ॥ २२४ ॥

एदं पि सुगमं ।

मणुसेसु उववण्णल्लया तिरिक्ख-मणुस्सा जहा चउत्थपुढवीए भंगो ॥ २२५ ॥

एदं पि सुगमं ।

देवगदीए दवा देवेहि उव्वट्टिदचुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २२६ ॥ दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेदि ॥ २२७ ॥ तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २२८ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं सव्वं उप्पाएंति—केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजमं उप्पाएंति, केइं बलदेवत्तमुप्पाएंति, केइं वासुदेवत्तमुप्पाएंति, केइं चक्कवट्टित्तमुप्पाएंति, केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुःखाणमंतं परिविजाणंति ॥२२९॥

सुगममेदं ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा देवीओ सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवीओ च देवा देवेहि उव्वट्टिद-चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २३० ॥ दुवे गदीओ आगच्छंति तिरिक्खगदिं मणुसगदिं चेव ॥ २३१ ॥ तिरिक्खेसु उववण्णल्लया तिरिक्खा केइं छ उप्पाएंति ॥ २३२ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा केइं दस उप्पाएंति—केइमाभिणिबोहियणाणमुप्पाएंति, केइं सुदणाणमुप्पाएंति, केइमोहिणाणमुप्पाएंति, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति केइं केवलणाणमुप्पाएंति, केइं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छत्तमुप्पाएंति, केइं सम्मत्तमुप्पाएंति, केइं संजमासंजममुप्पाएंति, केइं संजममुप्पाएंति। णो बलदेवत्तं उप्पाएंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति, णो चक्कवट्टित्तमुप्पाएंति, णो तित्थयरत्तमुप्पाएंति। केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुःखाणमंतं परिविजाणंति ॥ २३३ ॥

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम्। दिशन्न कांचिद्विदिशन्न कांचित्स्नेहक्षयात्केवलमेति शान्तिम् ॥ २ ॥
जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेतो नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम्। दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्क्लेशक्षयात्केवलमेति शान्तिम् ॥ ३ ॥
इति स्वरूपविनाशो मोक्ष इति बौद्धैरभाणि, तन्मतनिरासार्थं सिद्ध्यन्तीत्युच्यते। सेसं सुगमं।

सोहम्मीसाण जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा जधा देवगदिभंगो ॥ २३४ ॥

सुगममेदं।

आणदादि जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २३५ ॥ एक्कं हि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ २३६ ॥

सुगममेदं।

मणुस्सेसु उववण्णल्लया मणुस्सा केइं सव्वे उप्पाएंति ॥ २३७ ॥

कुदो ? विरोहाभावादो। सेसं सुगमं।

अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीयो आगच्छंति ? ॥ २३८ ॥ एक्कं हि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ २३९ ॥ मणुसेसु उववण्णल्लया मणुस्सा तेसिमाभिणिबोहियणाणं सुदणाणं णियमा अत्थि, ओहिणाणं सिया अत्थि, सिया णत्थि। केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केवलणाणमुप्पाएंति। सम्मामिच्छत्तं णत्थि, सम्मत्तं णियमा अत्थि। केइं संजमासंजममुप्पाएंति, संजमं णियमा उप्पाएंति। केइं बलदेवत्तमुप्पा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति। केइं चक्कवट्टित्तमुप्पाएंति, केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति, केइमंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुःखाणमंतं परिजाणंति ॥ २४० ॥

मदि-सुदणाणं व ओहिणाणं णियमा किण्ण होदि त्ति ? ण एस दोसो, अणणुगामिणो ओहिणाणस्स अणुगमाभावादो। ण च तत्थ सव्वेसिमोहिणाणमणुगामी चेव, अणणुगामिणो वि ओहिणाणस्स तत्थ संभवादो। देवा देवभावादो, देवेहिंतो देवणिकायादो। सेसं सुगमं।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा देवेहि चुदसमाणा कदि गदीओ आगच्छंति ? ॥ २४१ ॥ एक्कं हि चेव मणुसगदिमागच्छंति ॥ २४२ ॥ मणुसेसु उववण्णल्लया मणुसा तेसिमाभिणिबोहियाणं सुदणाणं ओहिणाणं च णियमा अत्थि, केइं मणपज्जवणाणमुप्पाएंति, केवलणाणं णियमा उप्पाएंति। सम्मामिच्छत्तं णत्थि, सम्मत्तं णियमा अत्थि। केइं संजमासंजममुप्पाएंति। संजमं णियमा उप्पाएंति। केइं बलदेवत्तमुप्पाएंति, णो वासुदेवत्तमुप्पाएंति। केइं चक्कवट्टित्तमुप्पाएंति, केइं तित्थयरत्तमुप्पाएंति। सव्वे ते णियमा अंतयडा होदूण सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुःखाणमंतं परिविजाणंति ॥ २४३ ॥

किमट्ठं ण तेसिं वासुदेवत्तं ? ण, तस्स मिच्छत्ताविणाभाविणिदाणपुरंगमत्तादो। ओहिणाणं णियमा अत्थि त्ति कधं ? ण, तेसिं अणणुगामि-हायमाण-पडिवादिओहिणाणाणमभावादो। समत्तसयलकज्जादो पत्तप्पसरूवा सिज्झंति। अणवगयत्थाभावादो अण्णाणकणस्स वि अभावादो वा, सिद्धाणं बुद्धिअभावपदुप्पायअदुण्णयणिवारणट्ठं वा, अप्पाणं चेव जाणइ सिद्धो ण बज्झट्ठमिदि दुण्णयणिवारणट्ठं वा बुज्झंति त्ति उत्तं। अमुत्तस्स मुत्तेहि अमुत्तेहि वा बंधो णत्थि त्ति मोक्खाभावमिच्छंतदुण्णयणिवारणट्ठं मुच्चंतित्ति उत्तं। असरीरस्स इंदियाणमभावादो विसयसेवा णत्थि तदो तेसिं सुहं णत्थि त्ति भणंतदुण्णयणिवारणट्ठं परिणिव्वाणयंति त्ति उत्तं। संते सुहे दुक्खेण वि होदव्वं, अण्णहा सुहाणुववत्तीए इदि भणंतदुण्णयणिवारणट्ठं सव्वदुक्खाणमंतं परिविजाणंति त्ति उत्तं। एवं चूलिया समत्ता। जीवट्ठाणं समत्तं।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां प्रथमखण्डे जीवस्थाने चूलिकाधिकारः समाप्तः।

समाप्तं जीवस्थानम्

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति श्रीधवलाटीकासमन्विते षट्खण्डागमे खण्डसिद्धान्ते

"जीवट्ठाण"नामा

प्रथमः खण्डः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ इति जीवट्ठाणं समत्तं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अथ श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टः, श्री १०८ भगवत्पुष्पदन्तभूतवलिप्रणीतः, श्री १०८ वीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकासमन्वितः,—

षट्खण्डागमः ।

(तस्यायं द्वितीयः खण्डः)

क्षुद्रबन्धः

बंधग - संतपरूवणा

जयउ धरसेणणाहो जेण महाकम्मपयडिपाहुडसेलो । बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥

जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देसो ॥ १ ॥

'जे ते बंधगा णाम' इदि वयणं बंधगाणं पुव्वपसिद्धत्तं सूचेदि । पुव्वं कम्हि पसिद्धे बंधगे सूचेदि ? महाकम्मपयडिपाहुडम्मि । तं जहा—महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणादिगेसु चदुवीसअणियोगद्दारेसु छट्ठस्स बंधणेत्ति अणियोगद्दारस्स बंधो बंधगो बंधणिज्जं बंधविहाणमिदि चत्तारि अधियारा । तेसु बंधगेत्ति विदिओ अधियारो, सो एदेण वयणेण सूचिदो । जे ते महाकम्मपयडिपाहुडम्मि बंधगा णिद्दिट्ठा तेसिमिमो णिद्देसो त्ति वुत्तं होदि । बंधया णाम जीवा चेव । कुदो ? अजीवस्स मिच्छत्तादिपच्चएहि चत्तस्स बंधगत्ताणुववत्तीदो । ते च जीवा जीवट्ठाणे चोद्दसगुणट्ठाणविसिट्ठा चोद्दसमग्गणट्ठाणेसु संतादिअट्ठहि अणियोगद्दारेहि मग्गिदा । संपहि तेसिं जीवाणं संतादिणा अवगदाणं पुणरवि परूवणे कीरमाणे पुणरुत्तदोसो ढुक्कदि त्ति ? ढुक्कदि पुणरुत्तदोसो जदि तेसिं जीवाणं तेहि चेव ॥ १ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गुणट्ठाणेहि विसेसियाणं चोद्दससु मग्गणट्ठाणेसु तेहिं चेव अट्ठहि अणियोगद्दारेहि मग्गणा कीरदे। णवरि एत्थ चोद्दसगुणट्ठाणविसेसणमवणिय चोद्दससु मग्गणट्ठाणेसु एक्कारसेहि अणियोगद्दारेहि पुव्वुत्तजीवोणं परूवणा कीरदे। तेण पुणरुत्तदोसो ण ढुक्कदि त्ति। जीवट्ठाणम्मि कदपरूवणादो चेव एत्थ परूविज्जमाणो अत्थो जेण णव्वदि, तेण एदीए परूवणाए ण किंचि फलं पेच्छामो ? ण, मग्गणट्ठाणेसु चोद्दसगुणट्ठाणाणं संतादिपरूवणादो मग्गणट्ठाणविसेसिदजीवपरूवणाए एगत्ताणुवलंभादो। जदि तत्तो एयत्तमत्थि तो अवगम्मदे, ण च एयत्तं पेच्छामो। एदेण कमेण ट्ठिदव्वादिअणियोगद्दाराणि घेत्तूण जीवट्ठाणं कयमिदि जाणावणट्ठं वा बंधयाणं परूवणा आगदा। तम्हा बंधयाणं परूवणं णायपत्तमिदि। णामबंधया ठवणबंधया दव्वबंधया भावबंधया चेदि चउव्विहा बंधया। तत्थ णामबंधया णाम 'बंधया' इदि सद्दो जीवाजीवादिअट्ठभंगेसु पयट्टंतो। एसो णामणिक्खेवो दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदो। कुदो ? णामस्स सामण्णे पउत्तिदंसणादो, दिट्ठाणंतरसमए णट्ठदव्वेसु संकेयगहणाणुववत्तीदो। कट्ठ-पोत्त-लेप्पकम्मादिसु सब्भावासब्भावभेएण जे ठविदा बंधया त्ति ते ठवणबंधया णाम। एसो णिक्खेवो दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदो। कुदो ? 'सो एसो' त्ति एयत्तज्झवसाएण विणा ट्ठवणाए अणुववत्तीदो। जे ते दव्वबंधया णामा ते दुविहा आगम-णोआगमभेएण। बंधयपाहुडजाणया अणुवजुत्ता आगमदव्वबंधया णाम। कधमागमेण विप्पमुक्कस्स जीवदव्वस्स आगमववएसो ? ण एस दोसो, आगमाभावे वि आगमसंसकारसहियस्स पुव्वं लद्धागमववएसस्स जीवदव्वस्स आगमववएसुवलंभा। एदेणेव भट्ठसंसकारजीवदव्वस्स वि गहणं कायव्वं, तत्थ वि आगमववएसुवलंभा। णोआगमादो दव्वबंधया तिविहा, जाणुअसरीर-भविय-तव्वदिरित्तबंधयभेदेण। जाणुगसरीर-भवियदव्वबंधया सुगमा। तव्वदिरित्तदव्वबंधया दुविहा—कम्मबंधया णोकम्मबंधया चेदि। तत्थ जे णोकम्मबंधया ते तिविहा—सचित्तणोकम्मदव्वबंधया अचित्तणोकम्मदव्वबंधया मिस्सणोकम्मदव्वबंधया चेदि। तत्थ सचित्तणोकम्मदव्वबंधया जहा हत्थीणं बंधया, अस्साणं बंधया इच्चेवमादि। अचित्तणोकम्मदव्वबंधया जहा कट्ठाणं बंधया, सुप्पाणं बंधया, कडयाणं बंधया, इच्चेवमादि। मिस्सणोकम्मदव्वबंधया जहा साहरणाणं हत्थीणं बंधया इच्चेवमादि। जे कम्मबंधया ते दुविहा—इरियावहबंधया सांपराइयबंधया चेदि। तत्थ जे इरियावहबंधया ते दुविहा—छदुमत्था केवलिणो चेदि। जे छदुमत्था ते दुविहा—उवसंतकसाया खीणकसाया चेदि। जे सांपराइयबंधया ते दुविहा—सुहुमसांपराइया बादरसांपराइया चेदि। जे सुहुमसांपराइया बंधया ते दुविहा—असंपराइयादिया बादरसांपराइयादिया चेदि। जे बादरसांपराइया ते तिविहा—असंपराइयादिया सुहुमसांपराइयादिया अणादिबादरसांपराइया चेदि। तत्थ जे अणादिबादरसांपराइया ते तिविहा—उवसामया खवया अक्खवयाणुवसामया चेदि। तत्थ जे उवसामया ते दुविहा—अपुव्वकरणउवसामया अणियट्टिकरणउवसामया चेदि। जे खवया ते दुविहा—अपुव्वकरणखवया अणियट्टिकरणखवया चेदि। तत्थ जे अक्खवयअणुवसामगा ते दुविहा—अणादिअपज्जवसिदबंधा च अणादिसपज्जवसिदबंधा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

चेदि । तत्थ जे भावबंधया ते दुविहा—आगम-णोआगमभावबंयधभेदेण । तत्थ जे बंधपाहुडजाणया उवजुत्ता आगमभावबंधया णाम । णोआगमभावबंधया जहा कोह-माण-माया-लोह-पेम्माइं अप्पणाइं करेंता । एदेसु बंधगेसु कम्मबंधएहि एत्थ अधियारो । एदेसिं बंधयाणं णिद्देसे कीरमाणे चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि आधारभूदाणि होंति । काणि ताणि मग्गणट्ठाणाणि त्ति वुत्ते उत्तरसुत्तं भणदि—

गइ इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे लेस्साए भविए सम्मत्त सण्णि आहारए चेदि ॥ २ ॥

गम्यत इति गतिः । एदीए णिरुत्तीए गाम-णयर-खेड-कव्वडादीणं पि गदित्तं पसज्जदे ? ण, रूढिबलेण गदिणामकम्मणिप्पाइयपज्जायम्मि गदिसद्दपवुत्तीदो । गदिकम्मोदयाभावा सिद्धिगदी अगदी । अथवा, भवाद् भवसंक्रांतिर्गतिः, असंक्रांतिः सिद्धिगतिः । स्वविषयनिरतानीन्द्रियाणि, स्वार्थनिरतानीन्द्रियाणीत्यर्थः । अथवा, इन्द्र आत्मा, इन्द्रस्य लिङ्गमिन्द्रियम् । आत्मप्रवृत्त्युपचितपुद्गलपिंडः कायः, पृथ्वीकायादिनामकर्मजनितपरिणामो वा कार्य-कारणोपचारेण कायः, चीयन्ते अस्मिन् जीवा इति व्युत्पत्तेर्वा कायः । आत्मप्रवृत्तेस्संकोचविकोचो योगः, मनोवाक्कायावष्टंभबलेन जीवप्रदेशपरिस्पन्दो योग इति यावत् । आत्मप्रवृत्तेर्मैथुनसंमोहोत्पादो वेदः । सुख-दुःखबहुसस्यं कर्मक्षेत्रं कृषन्तीति कषायाः । भूतार्थप्रकाशकं ज्ञानं तत्त्वार्थोपलंभकं वा । व्रत-समिति-कषाय-दण्डेन्द्रियाणां रक्षण-पालन-निग्रह-त्याग-जयाः संयमः, सम्यक् यमो वा संयमः । प्रकाशवृत्तिर्दर्शनम् । आत्मप्रवृत्तिसंश्लेषणकरी लेश्या, अथवा लिम्पतीति लेश्या । निर्व्वाणपुरस्कृतो भव्यः, तद्विपरीतोऽभव्यः । तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्, अथवा तत्त्वरुचिः सम्यक्त्वम्, अथवा प्रशम-संवेगानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणं सम्यक्त्वम् । शिक्षाक्रियोपदेशालापग्राही संज्ञी, तद्विपरीतः असंज्ञी । शरीरप्रायोग्यपुद्गलपिंडग्रहणमाहारः, तद्विपरीतमनाहारः । एदेसु जीवा मग्गिज्जंति त्ति एदेसिं मग्गणाओ इदि सण्णा ।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया बंधा ॥ ३ ॥

बंधया त्ति वुत्तं होदि । कुदो ? दोण्हं पि पदाणमेक्कारये णिप्पत्तीदो ।

तिरिक्खा बंधा ॥ ४ ॥ ॥ ३ ॥

कुदो ? मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगाणं बंधकारणाणं तत्थुवलंभादो । एत्थ तिरिक्खगदीए इदि किण्ण वुत्तं ? ण एस दोसो, अत्थावत्तीए तदुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवा बंधा ॥ ५ ॥

सुगममेदं ।

मणुसा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ ६ ॥

मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगाणं बंधकारणाणं सव्वेसिमजोगिम्हि अभावा अजोगिणो अबंधया । सेसा सव्वे मणुस्सा बंधया, मिच्छत्तादिबंधकारणसंजुत्तत्तादो ।

सिद्धा अबंधा ॥ ७ ॥

कुदो ? बंधकारणवदिरित्तमोक्खकारणेहि संजुत्तत्तादो । काणि पुण बंधकारणाणि, बंध-बंधकारणावगमेण विणा मोक्खकारणावगमाभावा । वुत्तं च—जे बंधयरा भावा मोक्खयरा चावि जे दु अज्झप्पे । जे चावि बंधमोक्खे अकारया ते वि विण्णेया ॥ १ ॥ तदो बंधकारणाणि वत्तव्वाणि ? मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा बंधकारणाणि । सम्मदंसण-संजमाकसायाजोगा मोक्खकारणाणि । वुत्तं च—मिच्छत्ताविरदी वि य कसायजोगा य आसवा होंति । दंसण-विरमण-णिग्गह-णिरोहया संवरा होंति ॥ २ ॥ जदि चत्तारि चेव मिच्छत्तादीणि बंधकारणाणि होंति तो—ओदइया बंधयरा उवसम-खय-मिस्सया य मोक्खयरा । भावो दु पारिणामिओ करणोभयवज्जियो होदि ॥ ३ ॥ एदीए सुत्तगाहाए सह विरोहो होदि त्ति वुत्ते ण होदि, ओदइया बंधयरा त्ति वुत्ते ण सव्वेसिमोदइयाणं भावाणं गहणं, गदि-जादिआदीणं पि ओदइयभावाणं बंधकारणत्तप्पसंगा । देवगदीउदएण वि काओ वि पयडीयो वज्झमाणियाओ दीसंति, तासिं देवगदिउदओ किण्ण कारणं होदि त्ति वुत्ते ण होदि, देवगदिउदयाभावेण तासिं णियमेण बंधाभावाणुवलंभादो । 'जस्स अण्णय-वदिरेगेहि णियमेण जस्सण्णय-वदिरेगा उवलंभंति तं तस्स कज्जमियरं च कारणं' इदि णायादो मिच्छत्तादीणि चेव बंधकारणाणि । तत्थ मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चदुरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं सोलसण्हं पयडीणं बंधस्स मिच्छत्तुदओ कारणं, तदुदयण्णय-वदिरेगेहि सोलसपयडीबंधस्स अण्णय-वदिरेगाणमुवलंभादो । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धी-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभा-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगदी-णग्गोह-सादि-खुज्ज-वामणसरीरसंठाण-वज्जणारायण-णारायण-अद्धणारायण-खीलियसरीरसंघडण-तिरिक्खगदीपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधस्स अणं- ॥ ४ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ताणुबंधिचउक्कस्स उदयो कारणं । कुदो ? तदुदयअण्णय-वदिरेगेहिमेदासिं पयडीणं बंधस्स अण्णय-वदिरेगाणं उवलंभादो । अपच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ-मणुस्साउ-मणुस्सगदी-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्सगदीपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधस्स अपच्चक्खाणावरणचदुक्कस्स उदओ कारणं, तेण विणा एदासिं बंधाणुवलंभा । पच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभाणं बंधस्स एदासिं चेव उदओ कारणं, सोदएण विणा एदासिं बंधाणुवलंभा । असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तीणं बंधस्स पमादो कारणं, पमादेण विणा एदासिं बंधाणुवलंभा । को पमादो णाम ? चदुसंजलण-णवणोकसायाणं तिव्वोदओ । चदुण्हं बंधकारणाणं मज्झे कत्थ पमादस्संतब्भावो ? कसायेसु, कसायवदिरित्तपमादाणुवलंभादो । देवाउवबंधस्स वि कसाओ चेव कारणं, पमादहेदुकसायस्स उदयाभावेण अप्पमत्तो होदूण मंदकसाउदएण परिणदस्स देवाउअबंधविणासुवलंभा । णिद्दा-पयलाणं पि बंधस्स कसाउदओ चेव कारणं, अपुव्वकरणद्धाए पढमसत्तमभाए संजलणाणं तप्पाओग्गतिव्वोदए एदासिं बंधुवलंभादो । देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससरीरसंठाण-वेउव्विय-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयराणं पि बंधस्स कसाउदओ चेव कारणं, अपुव्वकरणद्धाए छसत्तभागचरिमसमए मंदयरकसाउदएण सह बंधुवलंभादो । हस्स-रदि-भय-दुगंछाणं बंधस्स अधापवत्तापुव्वकरणणिबंधणकसाउदओ कारणं, तत्थेव एदासिं बंधुवलंभादो । चदुसंजलण-पुरिसवेदाणं बंधस्स बादरकसाओ कारणं, सुहुमकसाए एदासिं बंधाणुवलंभा । पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-जसगित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं सामण्णो कसाउदओ कारणं, कसायाभावे एदासिं बंधाणुवलंभा । सादावेदणीयबंधस्स जोगो चेव कारणं, मिच्छत्तासंजम-कसायाणमभावे वि जोगेणेक्केण चेवेदस्स बंधुवलंभादो, तदभावे तदणुवलंभादो । ण च एदाहिंतो वदिरित्ताओ अण्णाओ बंधपयडीओ अत्थि जेण तासिमण्णं पच्चयंतरं होज्ज । असंजमो वि पच्चओ पदिदो, सो काणं पयडीणं बंधस्स कारणमिदि ? ण, संजमघादिकम्मोदयस्सेव असंजमववदेसादो । असंजमो जदि कसाएसु चेव पददि तो पुध तदुवदेसो किमट्ठं कीरदे ? ण एस दोसो, ववहारणयं पडुच्च तदुवदेसादो । एसा पज्जवट्ठियणयमस्सिऊण पच्चयपरूवणा कदा । दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे बंधकारणमेगं चेव, चदुपच्चयसमूहादो बंधकज्जुप्पत्तीए । तम्हा एदे बंधपच्चया । एदेसिं पडिवक्खा सम्मत्तुप्पत्ती-देससंजम-संजम-अणंताणुबंधिविसंजोयण-दंसणमोहक्खवण-चरित्तमोहुवसामणुवसंतकसाय-चरित्तमोहक्खवण-खीणकसाय-सजोगिकेवलीपरिणामा मोक्खपच्चया, एदेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणसेडीए कम्मणिज्जरुवलंभादो । जे पुण पारिणामियभावा जीव-भव्वाभव्वादओ, ण ते बंध-मोक्खाणं कारणं, तेहिंतो तदणुवलंभा । एदस्स कम्मस्स खएण सिद्धाणमेसो गुणो समुप्पण्णो त्ति जाणावणट्ठमेदाओ गाहाओ एत्थ परूविज्जंति— दव्व-गुण-

पज्जए जे जस्सुदएण य ण जाणदे जीवो । तस्स क्खएण सो च्चिय जाणदि सव्वं तयं जुगवं ॥ ४ ॥ दव्व-गुण-पज्जए जे जस्सुदएण य ण पस्सदे जीवो । तस्स क्खएण सो च्चिय पस्सदि सव्वं तयं जुगवं ॥ ५ ॥ जस्सोदएण जीवो सुहं व दुक्खं व दुविहमणुहवइ । तस्सोदयक्खएण दु जायदि अप्पत्थणंतसुहो ॥ ६ ॥ मिच्छत्त-कसायासंजमेहि जस्सोदएण परिणमइ । जीवो तस्सेव खया तव्विवरीदे गुणे लहइ ॥ ७ ॥ जस्सोदएण जीवो अणुसमयं मरदि जीवदि वराओ । तस्सोदयक्खएण दु भव-मरणविवज्जियो होइ ॥ ८ ॥ अंगोवंग-सरीरिंदिय-मणुस्सासजोगणिप्फत्ती । जस्सोदएण सिद्धो तण्णामखएण असरीरो ॥ ९ ॥ उच्चुच्च उच्च तह उच्चणीच णीचुच्च णीच णीचं च । जस्सोदएण भावो णीचुच्चविवज्जिदो तस्स ॥ १० ॥ विरियोवभोग-भोगे दाणे लाभे जदुदयदो विग्घं । पंचविहलद्धि-जुत्तो तक्कम्मखया हवे सिद्धो ॥ ११ ॥ जयमंगलभूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं । तेलोक्कसेहराणं णमो सिया सव्वसिद्धाणं ॥ १२ ॥

इंदियाणुवादेण एइंदिया बंधा वीइंदिया बंधा तीइंदिया बंधा चदुरिंदिया बंधा ॥ ८ ॥

कुदो ? एदेसु मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगाणमण्णयं मोत्तूण वदिरेगाभावा ।

पंचिंदिया बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ ९ ॥

कुदो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलित्ति बंधा चेव, तत्थ बंधकारणमिच्छत्तादीणमुवलंभादो । अजोगिकेवली अबंधा चेव, मिच्छत्तादिबंधकारणाणं सव्वेसिमभावा । तेण पंचिंदिया बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि त्ति भणिदं । सजोगिअजोगिकेवलीणं केवलणाण-दंसणेहि दिट्ठासेसपमेयाणं करणवावारविरहियाणं कधं पंचिंदियत्तं ? ण एस दोसो, पंचिंदियणामकम्मोदयं पडुच्च तेसिं तव्ववएसादो ।

अणिंदिया अबंधा ॥ १० ॥

कुदो ? सिद्धेसु णिरंजणेसु सयलबंधाभावादो, णिरामएसु बंधकारणाभावा ।

कायाणुवादेण पुढवीकाइया बंधा आउकाइया बंधा तेउकाइया बंधा वाउकाइया बंधा वणप्फदिकाइया बंधा ॥ ११ ॥ ॥ ६ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाइया बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ १२ ॥

कुदो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलित्ति तसकाइएसु बंधकारणुवलंभा, अजोगिकेवलिम्हि तदणुवलंभादो ।

अकाइया अबंधा ॥ १३ ॥

सुगममेदं ।

जोगाणुवादेण मणजोगि-वचिजोगि-कायजोगिणो बंधा ॥ १४ ॥

एदं पि सुगमं ।

अजोगी अबंधा ॥ १५ ॥

जोगो णाम किं ? मण-वयण-कायपोग्गलालंबणेण जीवपदेसाणं परिप्फंदो । जदि एवं तो णत्थि अजोगिणो, सरीरयस्स जीवदव्वस्स अकिरियत्तविरोहादो । ण एस दोसो, अट्ठकम्मेसु खीणेसु जा उड्ढगमणुवलंबिया किरिया सा जीवस्स साहाविया, कम्मोदएण विणा पउत्तत्तादो । सट्ठिददेसमछंडिय छद्दित्ता वा जीवदव्वस्स सावयवेहि परिप्फंदो अजोगो णाम, तस्स कम्मक्खयत्तादो । तेण सकिरिया वि सिद्धा अजोगिणो, जीवपदेसाणमद्दहिदजलपदेसाणं व उव्वत्तण-परियत्तणकिरियाभावादो । तदो ते अबंधा त्ति भणिदा ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा बंधा, पुरिसवेदा बंधा, णवुंसयवेदा बंधा ॥ १६ ॥

सुगममेदं ।

अवगदवेदा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ १७ ॥

सकसायजोगेसु अकसायजोगेसु च अवगयवेदत्तुवलंभा ।

सिद्धा अबंधा ॥ १८ ॥

अवगदवेदत्तं सिद्धेसु वि अत्थि जेण कारणेण तेण अवगदवेदपरूवणाए चेव सिद्धा वि परूविदा त्ति सिद्धाणं पुधपरूवणा णिप्फला किण्ण होदि त्ति वुत्ते, ण होदि, अवगदवेदत्तेण बंधगाबंधगा दो वि रासीओ पडिग्गहिदाओ जेण संदेहो सिद्धेसु वि बंधगाबंधगविसओ समुप्पज्जदि । तण्णिराकरणट्ठं सिद्धा अबंधा त्ति पुधपरूवणा कदा । सेसं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई बंधा ॥ १९ ॥

सुगममेदं ।

अकसाई बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ २० ॥

कुदो ? सजोगाजोगेसु अकसायत्तस्सुवलंभा ।

सिद्धा अबंधा ॥ २१ ॥

एदस्स सुत्तारंभस्स कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहियणाणी सुदणाणी ओधिणाणी मणपज्जवणाणी बंधा ॥ २२ ॥

सुगममेदं ।

केवलणाणी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ २३ ॥ सिद्धा अबंधा ॥ २४ ॥

एत्थ अबंधा चेवेत्ति एवकारो किण्ण कदो ? ण, सुत्तारंभादो चेव तदुवलद्धीदो । सेसं सुगमं ।

संजमाणुवादेण असंजदा बंधा, संजदासंजदा बंधा ॥ २५ ॥ संजदा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ २६ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अबंधा ॥ २७ ॥

विसएसु दुविहासंजमसरूवेण पवुत्तीए अभावा असंजदा ण होंति सिद्धा । संजदा वि ण होंति, पवुत्तिपुरस्सरं तण्णिरोहाभावा । तदो णोभयसंजोगो वि । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओधिदंसणी बंधा ॥ २८ ॥ केवलदंसणी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ २९ ॥ सिद्धा अबंधा ॥ ३० ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया बंधा ॥ ३१ ॥

सुगममेदं ।

अलेस्सिया अबंधा ॥ ३२ ॥

सिद्धा अबंधा त्ति एत्थ पुधणिद्देसो किण्ण कदो ? ण, अलेस्सिएसु बंधाबंधोभयभंगाभावेण संदेहाणुप्पत्तीदो । सेसं सुगमं ।

भवियाणुवादेण अभवसिद्धिया बंधा, भवसिद्धिया बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि ॥ ३३ ॥ णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अबंधा ॥ ३४ ॥

सव्वमेदं सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण मिच्छादिट्ठी बंधा, सासणसम्मादिट्ठी बंधा, सम्मामिच्छादिट्ठी बंधा ॥ ३५ ॥

कुदो ? सयलासवसंजुत्तत्तादो ।

सम्मादिट्ठी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ ३६ ॥

कुदो ? सासवाणासवेसु सम्मदंसणुवलंभा ।

सिद्धा अबंधा ॥ ३७ ॥

सुगममेदं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी बंधा, असण्णी बंधा ॥ ३८ ॥ णेव सण्णी णेव असण्णी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ ३९ ॥

विणट्ठणोइंदियखओवसमादो केवलणाणी णो सण्णिणो; तत्थ इंदियावट्ठंभबलेणाणुप्पण्णबोधुवलंभादो णो असण्णिणो । तदो ते बंधा वि अबंधा वि, बंधाबंधकारणजोगाजोगाणमुवलंभा ।

सिद्धा अबंधा ॥ ४० ॥

सुगममेदं ।

आहाराणुवादेण आहारा बंधा ॥ ४१ ॥ अणाहारा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ ४२ ॥ सिद्धा अबंधा ॥ ४३ ॥

सुगममेदं । एसो बंधगसंताहियारो पुव्वमेव किमट्ठं परूविदो ? 'सति धर्मिणि धर्माश्चिन्त्यन्त' इति न्यायात् बंधयाणमत्थित्ते सिद्धे संते पच्छा तेसिं विसेसपरूवणा जुज्जदे । तम्हा संतपरूवणं पुव्वमेव कादव्वमिदि । एवमत्थित्तेण सिद्धाणं बंधयाणमेक्कारसअणियोगद्दारेहि विसेसपरूवणट्ठमुत्तरगंथो अवइण्णो । एवं बंधगसंतपरूवणा समत्ता ।

सामित्ताणुगमो

एदेसिं बंधयाणं परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि एक्कारस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

अणद्धेसु बंधएसु कधमेदेसिं बंधयाणमिदि पच्चक्खणिद्देसो उववज्जदे ? ण एस दोसो, बंधगविसयबुद्धीए पच्चक्खत्तमवेक्खिय पच्चक्खणिद्देसुववत्तीदो । संताणियोगद्दारं पुव्वमपरूविय तेण सह बारसअणियोगद्दारेहि बंधगाणं किण्ण परूवणा कीरदे ? ण, बंधत्तेण असिद्धाणं तस्सिद्धिपरूवणाए बंधगपरूवणत्ताणुववत्तीदो । तेसिमेक्कारसअणियोगद्दाराणं णामणिद्देसट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एगजीवेण सामित्तं, एगजीवेण कालो, एगजीवेण अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ, दव्वपरूवणाणुगमो, खेत्ताणुगमो, फोसणाणुगमो, णाणाजीवेहि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कालो, णाणाजीवेहि अंतरं, भागाभागाणुगमो, अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥ २ ॥

अंतिल्लो चसद्दो समुच्चयत्थो । इदिसद्दो एदेसिं बंधगाणं परूवणाए एत्तियाणि चेव अणियोगद्दाराणि होंति ण वड्डिमाणि त्ति अवहारणट्ठं कदो । एगजीवेण सामित्तं पुव्वमेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण, उवरिल्लसव्वयाणिओगद्दाराणं कारणत्तेण सामित्ताणियोगद्दारस्स अवट्ठाणादो । कुदो ? चोद्दसमग्गणट्ठाणं ओदइयादिपंचसु भावेसु को भावो कस्स मग्गणट्ठाणस्स सामिओ णिमित्तं होदि ण होदि त्ति सामित्ताणिओगद्दारं परूवेदि, पुणो तेण भावेण उवलक्खियमग्गणाए बंधएसु सेसाणिओगद्दारपवुत्तीदो । सेसाणिओगद्दारेसु कालो च्चेव किमट्ठं पुव्वं परूविज्जदि ? ण, कालपरूवणाए विणा अंतरपरूवणाणुववत्तीदो । पुणो अंतरमेव वत्तव्वं, एगजीवसंबंधिणो अण्णस्स अणिओग्गद्दारस्साभावा । णाणाजीवसंबंधिएसु सेसाणिओगद्दारेसु पढमं णाणाजीवेहि भंगविचओ किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एदस्स मग्गणट्ठाणपवाहस्स विसेसो अणादिअपज्जवसिदो, एदस्स सादिसपज्जवसिदो त्ति सामण्णेण अवगदे सेसाणिओगद्दाराणं पदणसंभवादो । दव्वपमाणे अणवगदे खेत्तादिअणियोगद्दाराणमधिगमोवाओ णत्थि त्ति दव्वाणिओगद्दारस्स पुव्वणिवेसो कदो । वट्टमाणपासपरूवणाए विणा अदीद-वट्टमाणफासपरूवयफोसणाणिओगद्दाराधिगमोवाओ णत्थि त्ति खेत्ताणिओगद्दारस्स पुव्वं णिवेसो कदो । मग्गणाणमच्छिदखेत्ते अवगदे तेसिं दव्वसंखाए च अवगदाए पच्छा तीदकालफासपरूवणा णायागदेत्ति णिवेसिदा । मग्गणकाले अणवगदे तेसिमंतरादिपरूवणा ण घडदि त्ति पुव्वं कालाणिओगद्दारं परूविदं । कालजोणि अंतरमिदि कट्टु अंतरं तदणंतरे परूविदं । पुरदो वुच्चमाणअप्पाबहुअस्स साहणो इदि कट्टु भागाभागो परूविदो । एदेसिं पच्छा अप्पाबहुगाणुगमो परूविदो, सव्वाणिओगद्दारेसु पडिबद्धत्तादो । णाणाजीवेहि काल-भंगविचयाणं को विसेसो ? ण, णाणाजीवेहि भंगविचयस्स मग्गणाणं विच्छेदाविच्छेदत्थित्तपरूवयस्स मग्गणकालंतरेहि सह एयत्तविरोहादो ।

एयजीवेण सामित्तं ॥ ३ ॥

जहा उद्देसो तहा णिद्देसो त्ति णायाणुसरणट्ठमेगजीवेण सामित्तं भणिस्सामो इदि वुत्तं ।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरईओ णाम कधं भवदि ? ॥ ४ ॥

एदं पुच्छासुत्तं किण्णिबंधणं ? णयसमूहणिबंधणं । जदि एको चेव णयो होज्ज तो संदेहो वि ण उप्पज्जेज्ज । किंतु णया बहुआ अत्थि । तेण संदेहो समुप्पज्जदे कस्स णयस्स विसयमस्सिदूण ट्ठिदणेरईओ एत्थ पडिग्गहिदो त्ति । णयाणमभिप्पाओ एत्थ उच्चदे ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तं जहा—कं पि णरं दट्ठूण य पावजणसमागमं करेमाणं। णेगमणएण भण्णइ णेरइओ एस पुरिसो त्ति ॥ १ ॥ ववहारस्स दु वयणं जइया कोदंड-कंडगयहत्थो। भमइ मए मग्गंतो तइया सो होइ णेरइओ ॥ २ ॥ उज्जुसुदस्स दु वयणं जइआ इर ठाइदूण ठाणम्मि। आहणदि मए पावो तइया सो होइ णेरइओ ॥ ३ ॥ सद्दणयस्स दु वयणं जइया पाणेहि मोइदो जंतू। तइया सो णेरइयो हिंसा-कम्मेण संजुत्तो ॥ ४ ॥ वयणं तु समभिरूढं णारयकम्मस्स बंधगो जइया। तइया सो णेरइओ णारयकम्मेण संजुत्तो ॥ ५ ॥ णिरय-गइं संपत्तो जइया अणुहवइ णारयं दुक्खं। तइया सो णेरइओ एवंभूदो णओ भणदि ॥ ६ ॥ एदं सव्वणयविसयं णेरइयसमूहं बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा। अधवा णाम-ट्ठवण-दव्व-भावभेएण णेरइया चउव्विहा होंति। णामणेरइयो णाम णेरइयसद्दो। सो एसो त्ति बुद्धीए अप्पिदस्स अणप्पिदेण एयत्तं काऊण सब्भावासब्भावसरूवेण ठविदं ठवणणेरइओ। णेरइयपाहुड-जाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वणेरइओ। अणागमदव्वणेरइओ तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तभेएण। जाणुगसरीर-भवियं गदं। तव्वदिरित्तणोआगमदव्वणेरइओ णाम दुविहो कम्म-णोकम्मभेएण। कम्मणेरइओ णाम णिरयगदिसहगदकम्मदव्वसमूहो। पास-पंजर-जंतादीणि णोकम्मदव्वाणि णेरइयभावकारणाणि णोकम्मदव्वणेरइओ णाम। णेरइयपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभाव-णेरइओ णाम। णिरयगदिणामाए उदएण णिरयभावमुवगदो णोआगमभावणेरइओ णाम। एदं णेरइयसमूहं बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा। अधवा णेरइओ णाम किमोदइएण भावेण, किमुवसमिएण, किं खइएण, किं खओवसमिएण, किं पारिणामिएण भावेण होदि त्ति बुद्धीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति वुत्तं। एदस्स संदेहस्स णिराकरणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

णिरयगदिणामाए उदएण ॥ ५ ॥

एवंभूदणयविसएण णोआगमभावणिक्खेवेण णिरयगदिणामाए उदएण णेरइओ णाम भवदि।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो णाम कधं भवदि ? ॥ ६ ॥

एत्थ वि णए णिक्खेवे ओदइयादिपंचविहभावे च अस्सिदूण पुव्वं व संदेहस्सुप्पत्ती परूवेदव्वा।

तिरिक्खगदिणामाए उदएण ॥ ७ ॥

तिरिक्खगदिणामकम्मोदएणुप्पण्णपज्जायपरिणदम्मि जीवे तिरिक्खाभिहाणववहार-पच्चयाणमुवलंभादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणुसगदीए मणुसो णाम कधं भवदि ? ॥ ८ ॥

एत्थ वि पुव्वं व णय-णिक्खेवादीहि संदेहुप्पत्ती परूवेदव्वा।

मणुसगदिणामाए उदएण ॥ ९ ॥

कुदो ? मणुसगदिणामकम्मोदयजणिदपज्जायपरिणयजीवम्मि मणुस्साहिहाणववहार-पच्चयाणमुवलंभा।

देवगदीए देवो णाम कधं भवदि ? ॥ १० ॥

सुगममेदं।

देवगदिणामाए उदएण ॥ ११ ॥

कुदो ? देवगदिणामकम्मोदयजणिदअणिमादिपज्जयपरिणदजीवम्मि देवाहिहाणववहार-पच्चयाणमुवलंभा। णिरय-तिरिक्ख-मणुस-देवगदीओ जदि केवलाओ उदयमागच्छंति तो णिरयगदिउदएण णेरइओ, तिरिक्खगदिउदएण तिरिक्खो, मणुस्सगदिउदएण मणुस्सो, देवगदिउदएण देवो त्ति वोत्तुं जुत्तं। किं तु अण्णाओ वि पयडीओ तत्थ उदयमागच्छंति, ताहि विणा णिरय-तिरिक्ख-मणुस्स-देवगदिणामाणमुदयाणुवलंभादो। तं जहा— णेरइयाणं पंच उदयट्ठाणाणि होंति एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीसं ति। २१। २५। २७। २८। २९। तत्थ इगवीसपयडिउदयट्ठाणं वुच्चदे। तं जहा— णिरयगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगदिपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एत्तियाओ पयडीओ घेत्तूण इगिवीसाए ठाणं होदि। एत्थ भंगो एक्को चेव [१]। एदमुदयट्ठाणं कस्स होदि ? विग्गहगदीए वट्टमाणस्स णेरइयस्स। तं केवचिरं कालं होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। तत्थ इमं पणुवीसाए ट्ठाणं। एदाओ चेव पयडीओ। णवरि आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीराणि पुव्वुत्त-पयडीसु पक्खित्ते पणुवीसण्हं ठाणं होदि। तं कस्स ? सरीरंगहिदणेरइयस्स। तं केवचिरं कालं होदि ? सरीरंगहिदपढमसमयमादिं ॥ १३ ॥ कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति, अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि। भंगा वि पुव्विल्लभंगेण सह दोण्णि [२]। पर-घादमप्पसत्थविहायगदिं च पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्ते सत्तावीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि होदि ? सरीरपज्जत्तीणिव्वत्ति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तिअणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि काले होदि । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ भंगसमासो तिण्णि [३] । पुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि । तं कम्हि होदि ? आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भासापज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे होदि । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ भंगसमासो चत्तारि [४] । पुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगूणत्तीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि । तं कम्हि ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउअट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति एदम्हि अद्धाणे होदि । तं केवचिरं ? जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि । एत्थ भंगसमासो पंच [५] । तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चदुवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणत्तीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति णव उदयट्ठाणाणि । २१ । २४ । २५ २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । संपदि सामण्णेण एइंदियाणं एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस त्ति पंच उदयट्ठाणाणि । आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदयट्ठाणाणि । आदावुज्जोवाण उदएण सहिदएइंदियस्स पणुवीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदयट्ठाणाणि होंति । तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगदी-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुअ-थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दुब्भगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमिदि एदासिं एक्कवीसपयडीण उदओ विग्गहगदीए वट्टमाणस्स एइंदियस्स होदि । केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । एत्थ अक्खपरावत्तं काऊण भंगा उप्पाएदव्वा । तत्थ अजसकित्तिउदएण चत्तारि भंगा । जसकित्तिउदएण एक्को चेव । कुदो ? सुहुम-अपज्जत्तेहि सह जसकित्तीए उदयाभावा, जसगित्तीए सह सहुम-अपज्जत्ताणं उदयाभावादो वा । तेणेत्थ भंगा पंचेव होंति [५] । पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमवणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेय-साधारणसरीराणमेक्कदरं पक्खित्ते चदुवीस-पयडीणं उदयट्ठाणं होदि । तं कम्हि होदि ? गहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे । केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ अजसगित्तीए उदएण अट्ठ भंगा । जसकित्तीए उदएण एक्को चेव । कुदो ? जसकित्तीए सह सुहुम-अप्पज्जत्त-साहारणाणं उदयाभावा । तेण सव्वभंगसमासो णव [९] । पुणो अपज्जत्तमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि । एत्थ भंगा अजसकित्तीउदएण चत्तारि । कुदो ? अपज्जत्तउदयस्स अभावादो । जसकित्तिउदएण एक्को चेव । तेण भंगसमासो पंच [५] । तं कम्हि ? सरीरपज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे । तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तस्सेव आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तं कस्स ? आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । केवचिरं ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्साणि । एत्थ भंगा पुव्वं व पंचेव होंति [५]। आदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे– एक्कवीस-चदुवीसपयडिउदयट्ठाणाणं पुव्वं व परूवणा कादव्वा । णवरि दोण्हं पि उदयट्ठाणाणं जसकित्ति-अजसकित्तिउदएण दोण्णि दोण्णि चेव भंगा होंति । कुदो ? आदावुज्जोवुदयभावीणं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं उदयाभावा । पुणो एदे पुव्वुत्तएक्कवीसचउवीसपयडिउदयट्ठाणाणं भंगेसु लद्धा त्ति अवणेदव्वा । पुणो सरीर-पज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादे आदावुज्जोवाणमेक्कदरं च पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्ते पणुवीसपयडिट्ठाणमुल्लंघिय छव्वीसपयडिट्ठाणमुप्पज्जदि । एदं कस्स ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ भंगा चत्तारि हवंति । एदे चत्तारि भंगे पढमछव्वीसभंगेसु पक्खित्ते णव भंगा होंति । तस्सेव आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स छव्वीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते सत्तावीसपयडीणं उदयट्ठाणं होदि । एत्थ भंगा चत्तारि चेव । सव्वेइंदियाणं सव्वभंगसमासो बत्तीस [३२]। विगलिंदियाणं सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-एऊणत्तीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति छ उदयट्ठाणाणि । २१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । उज्जोवुदयविरहिदविगलिंदियस्स पंच वुदयट्ठाणाणि होंति, एक्कत्तीसुदयट्ठाणाभावा । वुज्जोवुदयसंजुत्तविगलिंदियस्स वि पंचेवुदयट्ठाणाणि, परघादुज्जोव-अप्पसत्थविहायगदीणमक्कमप्पवेसेण अट्ठावीसट्ठाणाणुप्पत्तीदो । उज्जोवुदयविरहिदबेइंदियस्स ताव उच्चदे– तत्थ इमं इगिवीसाए ट्ठाणं, तिरिक्खगदि-बेइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज-जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च, एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं ठाणं । तं कस्स ? बेइंदियस्स विग्गहगदीए वट्टमाणस्स । तं केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया । जसगित्तिउदएण एक्को भंगो । कुदो ? अपज्जत्तोदएण सह जसकित्तीए उदयाभावा । अजसगित्तिउदएण बे भंगा । कुदो ? पज्जत्तापज्जत्ताणमुदएहि सह अजसगित्तिउदयस्स संभवुवलंभा । एत्थ सव्वभंगसमासो तिण्णि [३]। एदासु एक्कवीसपयडीसु आणुपुव्विमवणेदूण गहिदसरीरपढमसमए ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ भंगसमासो तिण्णि [३]। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु अपज्जत्तमवणिय परघादअप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ जसकित्तिउदएण एक्को भंगो, अजसकित्तिउदएण वि एक्को चेव । कुदो ? पडिवक्खपयडीणमभावादो । एत्थ सव्वभंगा दो चेव [२]। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं भवदि । एत्थ वि भंगा दो चेव [२]। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पुव्वुत्तपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ भंगा दो चेव [२]। संपदि उज्जोवुदयसंजुत्तबेइंदियस्स भण्णमाणे एक्कवीस-छव्वीसाओ जधा पुव्वं वुत्ताओ तधा वत्तव्वं । पुणो छव्वीसाए उवरि परघादु- ॥ १५ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जीव-अप्पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि । जसकित्तिउदएण एक्को भंगो, अजसकित्ति उदएण एक्को । एत्थ भंगसमासो दोण्णि [२] । पुणो एदेसु दोसु पढमेगूणत्तीसभंगेसु पक्खित्तेसु चत्तारि भंगा होंति । आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते त्तीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ वि भंगा दो चेव । एदेसु पढमतीसभंगेसु पक्खित्तेसु चत्तारि भंगा होंति । भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स दुस्सरे पक्खित्ते एक्कतीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ भंगा दोण्णि । सव्वभंगसमासो अट्ठारस । तिण्हं विगलिंदियाणं भंगसमासमिच्छामो त्ति अट्ठारससु तिगुणिदेसु चउप्पण्णभंगा होंति [५४] । एत्थ सामित्तादिवियप्पा णेरइयाणं व वत्तव्वा । णवरि बेइंदियादीणं तीस एक्कत्तीसाणं कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण जहाकमेण बारस वस्साणि, एगुणवण्णरादिंदियाणि, छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा । पंचिंदियतिरिक्खस्स सामण्णेण एक्कवीस-छव्वीस-अट्ठावीस-गुणतीस-तीस-एक्कत्तीसेत्ति छउदयट्ठाणाणि । २१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । वुज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स पंच उदयट्ठाणाणि होंति । कुदो ? तत्थेक्कत्तीसाए उदयाभावा । वुज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स वि पंचेवुदयट्ठाणाणि होंति । कुदो ? तत्थट्ठवीसुदयट्ठाणाभावादो । वुज्जोवुदयविरहिदपंचिंदियतिरिक्खस्स भण्णमाणे तत्थ इदमेक्कवीसाए ट्ठाणं होदि– तिरिक्खगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-तस-बादर-पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिमेक्कवीसपयडीणमेक्कं चेव ट्ठाणं । एत्थ पज्जत्तउदएण अट्ठ भंगा, अपज्जत्तउदएण एक्को । कुदो ? सुभग-आदेज्ज-जसकित्तीहि सह एदस्सुदयाभावा । सव्वभंगसमासो णव [९] । सरीरे गहिदे आणुपुव्विमवणिय ओरालियसरीरं छण्हं संठाणाणं एक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंग छण्हं संघडणाणमेक्कदरं उवघाद-पत्तेयसरीरमिदि एदेसु कम्मेसु पक्खित्तेसु छव्वीसाए ट्ठाणं होदि । एत्थ पज्जत्तउदएण अट्ठासीदा बे सदा भंगा होंति । अपज्जत्तउदएण एक्को चेव । कुदो ? सुहेहि सह अपज्जत्तस्स उदयाभावा । एत्थ सव्वभंगसमासो एक्कारसूणतिसदमेत्तो [२८९] । एत्थ भंगविसयणिच्छयसमुप्पायणट्ठमेदाओ गाहाओ वत्तव्वाओ । तं जहा—

संखा तह पत्थारो परियट्टण णट्ठ तह समुद्दिट्ठं । एदे पंच वियप्पा ट्ठाणसमुक्कित्तणा णेया ॥ ७ ॥ सव्वे वि पुव्वभंगा उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु । मेलंति त्ति य कमसो गुणिदे उप्पज्जदे संखा ॥ ८ ॥ पढमं पयडिपमाणं कमेण णिक्खिविय उवरिमाणं च । पिंडं पडि एक्केक्के णिक्खित्ते होदि पत्थारो ॥ ९ ॥ णिक्खित्तु बिदियमेत्तं पढमं तस्सुवरि बिदियमेक्केक्कं । पिंडं पडि णिक्खित्ते एवं सेसा वि कायव्वा ॥ १० ॥ पढमक्खो अंतगओ आदिगदे संकमेदि बिदियक्खो । दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो ॥ ११ ॥ सगमाणेण विहत्ते सेसं लक्खित्तु पक्खिवे रूवं । लक्खिज्जंते सुद्धे एवं सव्वत्थ कायव्वं ॥ १२ ॥ संठाविदूण रूवं उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे । अवणेज्जो णंकिदयं कुज्जा पढमंतियं जाव ॥ १३ ॥ सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघादे दोण्हं विहायगदीणमेक्कदरे च पक्खित्ते

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा पंच सदा छावत्तरा होंति |५७६|। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा तेत्तिया चेव |५७६|। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा एक्कारस सदाणि बावण्णाहियाणि |११५२|। उज्जोवुदयसंजुत्तपंचिंदियतिरिक्खस्स एक्कवीस-छव्वीसुदयट्ठाणाइं पुव्वं व वत्तव्वाइं। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघादुज्जोवेसु पसत्थापसत्थाण विहायगदीणमेक्कदरे च पविट्ठेसु एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा पंच सदा छावत्तरा |५७६|। पुणो एदेसु पढमेगुणतीसाए भंगेसु पक्खित्तेसु सव्वभंगपमाणं एक्कारस सदाणि बावण्णाणि होदि |११५२|। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। एत्थ पंच सदा छावत्तरि भंगा। |५७६|। पुणो एदेसु पढमतीसाए भंगेसु छुद्धेसु सत्तारस सयाइमट्ठावीसाइं तीसाए सव्वभंगा होंति |१७२८|। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे छुद्धे एक्कत्तीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा एक्कारस सदाणि बावण्णाणि |११५२|। पंचिंदियतिरिक्खाणं सव्वभंगसमासो चत्तारि सहस्साइं णव सयाइं छच्चेव होइ |४९०६|। तिरिक्खाणं सव्वभंगसमासो पंच सहस्साणि अट्ठूणाणि |४९९२|। पंचिंदियतिरिक्खुदयट्ठाणाणं सामित्तं कालो च पुव्वं व वत्तव्वो। णवरि तीसेक्कतीसाणं कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तमुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणाणि तिण्णि पलिदोवमाणि।

मणुस्साणं सामण्णेण एक्कारसुदयट्ठाणाणि वीस-एक्कवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कतीस-णव-अट्ठ होंति। २०। २१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ९। ८। सामण्णमणुस्सा विसेसमणुस्सा विसेसविसेसमणुस्सा त्ति तिविहा मणुस्सा। सामण्णमणुस्साणं भण्णमाणे तत्थ इमं एक्कवीसाए ट्ठाणं— मणुस्सगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुस्सगदिपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुगलहुग-तस-बादर पज्जत्तापज्जत्ताण-मेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं सुभग-दुभगाणमेक्कदरं आदेज्ज-अणादेज्जाणमेक्कदरं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणणामं च एदासिं पयडीणमेक्कमुदयट्ठाणं। पज्जत्तउदएण अट्ठ भंगा, अपज्जत्तउदएण एक्को, तेसिं समासो णव |९|। गहिदसरीरस्स मणुस्साणुपुव्विमवणेदूण ओरालियसरीर-छसंठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंगं छण्णं संघडणाणमेक्कदरं उवघादं पत्तेयसरीरं च घेत्तूण पक्खित्ते छव्वीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा एक्कारसूणतिसदमेत्ता |२८९|। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परघाद पसत्थापसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा चउवीसूणछसदमेत्ता |५७६|। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्सं उस्सास घेत्तूण पक्खित्ते एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा तत्तिया चेव |५७६|। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे पक्खित्ते तीसाए ट्ठाणं होदि। भंगा अट्ठेदालीसूणबारससदमेत्ता |११५२|। संपहि आहारसरीरोदइल्लाणं विसेस-मणुस्साणं भण्णमाणे तेसिं पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीस त्ति चत्तारि उदयट्ठाणाणि। २५। २७। २८। २९। मणुस्सगदि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियजादि-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-आहारसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणणामाणि एदासिं पणुवीसपयडीणमेक्कमुदयट्ठाणं। भंगो एक्को [१]। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को [१]। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे संछुद्धे अट्ठावीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को [१]। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पक्खित्ते एगूणतीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को [१]। सव्वभंगसमासो चत्तारि [४]। विसेसविसेसमणुस्साणं पणुवीसं मोत्तूण दस उदयट्ठाणाणि होंति। २०। २१। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ९। ८। मणुस्सगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणणामाणि एदासिं वीसण्हं पयडीणं पदरलोकपूरणगदसजोगिकेवलिस्स उदओ होदि। भंगो एक्को [१]। जदि तित्थयरो तो तित्थयरोदएण एक्कवीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को। कवाडं गदस्स एदाओ चेव पयडीओ। णवरि ओरालियसरीर-समचउरससंठाणं। तित्थयरुदयविरहियाणं छण्णं संठाणाणमेक्कदरं ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीरं च घेत्तूण छव्वीसाए वा सत्तवीसाए वा ट्ठाणं होदि। भंगा दोण्हं पि छ एक्को। ६। १। तित्थयरुदएण वा अणुदएण वा दंडगदस्स परघादं पसत्था-पसत्थविहायगदीणमेक्कदरं च घेत्तूण पक्खित्ते अट्ठावीसाए वा एगुणतीसाए वा ठाणं होदि। णवरि तित्थयराणं पसत्थविहायगदी एक्का चेव उप्पज्जदि। भंगा अट्ठावीसाए बारस, एगुणतीसाए एक्को। १२। १। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासे पक्खित्ते तीसाए एगुणतीसाए वा ठाणं होदि। भंगा एगुणतीसाए बारस, तीसाए एक्को। १२। १। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एक्कदरम्मि पविट्ठे तीसाए एक्कतीसाए वा ट्ठाणं होदि। भंगा तीसाए चउवीस [२४]। एक्कत्तीसाए एक्को, तित्थयराणं दुस्सर-अप्पसत्थविहायगदीणं उदयाभावा [१]। एक्कत्तीसपयडीणं णामणिद्देसो कीरदे—मणुस्सगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससरीरसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयराणि त्ति एदाओ एक्कत्तीसपयडीओ उदेंति तित्थयरस्स। एदस्स कालो जहण्णेण वासपुधत्तं। कुदो ? तित्थयरोदइल्लसजोगिजिणविहारकालस्स सव्वजहण्णस्स वि वासपुधत्तादो हेट्ठदो अणुवलंभा। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तब्भहियगब्भादि-अट्ठवस्सेणूणा पुव्वकोडी। सेसाणं ट्ठाणाणं कालो जाणिदूण वत्तव्वो। अजोगिभयवंतस्स भण्णमाणे—मणुस्सगदि-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयरमिदि एदाओ णव। भंगो एक्को [१]। तित्थयरविरहिदाओ अट्ठ। भंगो एक्को [१]।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुस्साणं सव्वभंगसमासो बत्तीसूणसत्तावीससदमेत्तो |२६६८|। देवगदीए एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगुणतीसउदयट्ठाणाणि होंति । २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । तत्थ इमं एक्कवीसाए उदयट्ठाणं— देवगदि-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-मिदि-एदासिं पयडीणं एक्कट्ठाणं। भंगो एक्को |१|। सरीरं गहिदे आणुपुव्विमवणेदूण वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीरेसु पविट्ठेसु पणुवीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को |१|। सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स परघाद-पसत्थविहायगदीसु पक्खित्तासु सत्तावीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को |१|। आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासो पविट्ठो। ताधे अट्ठावीसाए ट्ठाणं। भंगो एक्को |१|। भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सुस्सरे पविट्ठे एगुणतीसाए ट्ठाणं होदि। भंगो एक्को |१|। तं केवचिरं? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयप्पहुडि जाव आउअचरिमसमओ त्ति। तस्स पमाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तूणदसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूण तेत्तीससागरोवमाणि। एत्थ सव्वभंगसमासो पंच |५|। चदुगदिभंगसमासो सत्तसहस्सछस्सदसत्तरिपमाणं होदि |७६७०|। तम्हा णिरयगदि-तिरिक्खगदि-मणुस्सगदि-देवगदीणमुदएणेव णेरइओ तिरिक्खो मणुस्सो देवो होदि त्ति ण घडदे? विसमो उवण्णासो। कुदो? णिरयगदिआदिचदुगदिउदयाणं व सेसकम्मोदयाणं तत्थ अविणाभावाणुवलंभादो। जिस्से पयडीए उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमसमओ त्ति णियमेण उदओ होदूण अप्पिदगइं मोत्तूण अण्णत्थ उदयाभावणियमो दिस्सइ तिस्से उदएण णेरइओ तिरिक्खो मणुस्सो देवो त्ति णिद्देसो कीरदे अण्णहा अणवट्ठाणादो।

सिद्धिगदीए सिद्धो णाम कधं भवदि ? ॥ १२ ॥

एत्थ वि पुव्वं व णय-णिक्खेवे अस्सिदूण चालणा कायव्वा उदयादिपंचभावे वा।

खइयाए लद्धीए ॥ १३ ॥

कम्माणं णिम्मूलखएणुप्पण्णपरिणामो खओ णाम, तस्स लद्धीए खइयलद्धीए सिद्धो होदि। अण्णे वि सत्त-पमेयत्तादओ तत्थ परिणामा अत्थि, तेहि किण्ण सिद्धो होदि? ण, जदि ते सिद्धत्तस्स कारणं तो सव्वे जीवा सिद्धा होज्ज, तेसिं सव्वजीवेसु संभवोवलंभा। तम्हा खइयाए लद्धीए सिद्धो होदि त्ति घेत्तव्वं।

इंदियाणुवादेण एइंदिओ बीइंदिओ तीइंदिओ चउरिंदिओ पंचिंदिओ णाम कधं भवदि ? ॥ १४ ॥

एत्थ णामादिणिक्खेवे णेगमादिणए ओदइयादिभावे च अस्सिदूण पुव्वं व इंदियस्स चालणा कायव्वा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदस्स लिंगमिंदियं । इंदो जीवो, तस्स लिंगं जाणावयं सूचयं जं तमिंदियमिदि वुत्तं होदि । कधमेइंदियत्तं खओवसमियं ? उच्चदे—पस्सिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण चक्खु-सोद-घाण-जिब्भिंदियावरणाणं देसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण तेसिं सव्वघादिफद्दयाणमुदएण जो उप्पण्णो जीवपरिणामो सो खओवसमिओ वुच्चदे । कुदो ? पुव्वुत्ताणं फद्दयाणं खओवसमेहि उप्पण्णत्तादो । तस्स जीवपरिणामस्स एइंदियमिदि सण्णा । एदेण एक्केण इंदिएण जो जाणदि पस्सदि सेवदि जीवो सो एइंदिओ णाम । सव्वघादि-देसघादित्तं णाम किं ? वुच्चदे—दुविहाणि कम्माणि घादिकम्माणि अघादिकम्माणि चेव । णाणावरण-दंसणावरण-मोहणीय-अंतराइयाणि घादिकम्माणि; वेदणीय-आउ-णाम-गोदाणि आघादिकम्माणि । णाणावरणादीणं कधं घादिववदेसो ? ण, केवलणाण-दंसण-सम्मत्त-चरित्त-वीरियाणमणेयभेयभिण्णाणं जीवगुणाणं विरोहित्तणेण तेसिं घादिववदेसादो । सेसकम्माणं घादिववदेसो किण्ण होदि ? ण, तेसिं जीवगुणविणासणसत्तीए अभावा । कुदो ? ण आउअं जीवगुणविणासयं, तस्स भवधारणम्मि वावारादो । ण गोदं जीवगुणविणासयं, तस्स णीचुच्चकुलसमुप्पायणम्मि वावारादो । ण खेत्तपोग्गलविवाइणामकम्माइं पि, तेसिं खेत्तादिसु पडिबद्धाणमण्णत्थ वावारविरोहादो । जीवविवाइणामकम्मवेयणियाणं घादिकम्मववएसो किण्ण होदि ? ण, जीवस्स अणप्पभूद-सुभग-दुभगादिपज्जयसमुप्पायणे वावदाणं जीवगुणविणासयत्तविरोहादो । जीवस्स सुहं विणासिय दुक्खुप्पाययं असादवेदणीयं घादिववएसं किण्ण लहदे ? ण, तस्स घादिकम्मसहायस्स घादिकम्मेहि विणा सकज्जकरणे असमत्थस्स सदो तत्थ पउत्ती णत्थि त्ति जाणावणट्ठं तव्ववएसाकरणादो । तत्थ घादीणमणुभागो दुविहो सव्वघादओ देसघादओ त्ति । वुत्तं च—सव्वावरणीयं पुण उक्कस्सं होदि दारुगसमाणे ॥ हेट्ठा देसावरणं सव्वावरणं च उवरिल्लं ॥ १४ ॥ णाणावरणचदुक्कं दंसणतिगमंतराइगा पंच । ता होंति देसघादी संजलणा णोकसाया य ॥ १५ ॥ फासिंदियावरणसव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा देसघादिफद्दयाणमुदएण जिब्भिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा देसघादिफद्दयाणमुदएण चक्खु-सोद-घाणिंदियावरणाणं देसघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सव्वघादिफद्दयाणमुदएण खओवसमियं जिब्भिंदियं समुप्पज्जदि । पस्सिंदियाविणाभावेण त्तं चेव जिब्भिंदियं बीइंदियं ति भण्णदि बीइंदियजादिणामकम्मोदयाविणाभावादो वा । तेण बेइंदिएण बेइंदिएहि वा जुत्तो जेण बीइंदिओ णाम तेण खओवसमियाए लद्धीए बीइंदिओ त्ति सुत्ते भणिदं । पस्सिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण जिब्भा-घाणिंदियावरणाणं सव्वघादिफद्दयाण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा देसघादिफद्दयाणमुदएण चक्खु-सोदिंदियाणं देसघादि-फद्दयाणं उदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सव्वघादिफद्दयाणमुदएण घाणिंदियमुप्पज्जदि । तं चेव घाणिंदियं पास-जिब्भिदियाविणाभावेण तेइंदियजादिणामकम्मोदयाविणाभावेण वा तेइंदियं णाम । तेण जुत्तो जीवो वि तेइंदियो होदि । एदेण कारणेण खओवसमियाए लद्धीए तेइंदिओ होदि त्ति सुत्ते उत्तं । पस्सिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण चक्खुघाण-जिब्भिंदियावरणाणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा देसघादिफद्दयाणमुदएण सोइंदियावरणस्स देसघादिफद्दयाणं उदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सव्वघादिफद्दयाणमुदएण चक्खिंदियं उप्पज्जदि । फास-जिब्भा-घाणिंदियाविणाभावेण चक्खिंदियं ति भण्णदि । तेण जुत्तो जीवो चउरिंदियो । चउरिंदियजादिणामकम्मोदयाविणाभावेण वा चक्खु चउरिंदियं ति वत्तव्वं । फासिंदियादिचउहि इंदिएहि जुत्तो त्ति वा जीवो चउरिंदिओ णाम । तेण कारणेण खओवसमियाए लद्धीए चउरिंदिओ होदि त्ति उत्तं । फासिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण चदुण्णमिंदियाणं सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण जेण सोदिंदियमुप्पज्जदि तेण तं खओवसमियं । सेसचउरिंदियाविणाभावादो पंचिंदियजादिणामकम्मोदयाविणाभावादो वा तं पंचिंदियं । तेण पंचिंदिएण पंचहि इंदिएहि वा जुत्तो जीवो पंचिंदिओ णाम । फास-जिब्भा-घाण-चक्खु-सोदिंदियावरणाणि पयडिसमुक्कित्तणाए णोवइट्ठाणि, कधं तेसिमिह णिद्देसो ? ण, फासिंदियावरणादीणं मदिआवरणे अंतब्भावादो । ण च पंचिंदियखओवसमं तत्तो समुप्पण्णणाणं वा मुच्चा अण्णं मदिणाणमत्थि जेणिंदियावरणेहिंतो मदिणाणावरणं पुधभूदं होज्ज । ण च एदेहिंतो पुधभूदं णोइंदियमत्थि जेण णोइंदियणाणस्स मदिणाणत्तं होज्ज । णोइंदियावरणखओवसमजणिदं णोइंदियमिदि तदो पुधभूदं चेव ? जदि एवं तो ण तदो समुप्पण्णणाणं मदिणाणं, मदिणाणावरण, खओवसमेणा णुप्पण्णत्तादो । तदो मदिणाणाभावेण मदिणाणावरणस्स वि अभावो होज्ज । तम्हा छण्णमिंदियाणं खओवसमो तत्तो समुप्पण्णणाणं वा मदिणाणं, तस्सावरणं मदिणाणावरणमिदि इच्छिदव्वमण्णहा मदिआवरणस्साभावप्पसंगा । एइंदियादीणमोदइओ भावो वत्तव्वो, एइंदियजादिणामकम्मोदएण एइंयादिभावोवलंभा । जदि एवं ण इच्छिज्जदि तो सजोगि-अजोगिजिणाणं पंचिंदियत्तं ण लब्भदे, खीणावरणे पंचण्हमिंदियाणं खओवसमाभावा । ण च तेसिं पंचिंदियत्ताभावो, पंचिंदिएसु समुग्घादपदेण असंखेज्जेसु भागेसु सव्वलोगे वा त्ति सुत्तविरोहादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—एइंदियादीणं भावो ओदईओ होदि चेव, एइंदियजादिआदिणामकम्मोदएण तेसिमुप्पत्तीदंसणादो । एदम्हादो चेव सजोगि-अजोगिजिणाणं पंचिंदियत्तं जुज्जदि त्ति जीवट्ठाणे पि उववण्णं । किंतु खुद्दाबंधे सजोगि-अजोगिजिणाणं सुद्धणएणाणिंदियाणं पंचिंदियत्तं जदि इच्छिज्जदि तो ववहारणएण वत्तव्वं । तं जहा—पंचसु जाईसु जाणि पडिबद्धाणि पंच ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदियाणि ताणि खओवसमियाणि त्ति काऊण उवयारेण पंच वि जादीओ खओवसमियाओ त्ति कट्टु सजोगि-अजोगिजिणाणं खओवसमियं पंचिंदियत्तं जुज्जदे । अधवा खीणावरणे णट्ठे वि पंचिंदियखओवसमे खओवसमजणिदाणं पंचण्हं बज्झिंदियाणमुवयारेण लद्ध-खओवसमसण्णाणमत्थित्तदंसणादो सजोगिअजोगिजिणाणं पंचिंदियत्तं साहेयव्वं ।

अणिंदिओ णाम कधं भवदि ? ॥ १६ ॥

एत्थ पुव्वं व णय-णिक्खेवे अस्सिदूण चालणा कायव्वा ।

खइयाए लद्धीए ॥ १७ ॥

एत्थ चोदगो भणदि—इंदियमए सरीरे विणट्ठे इंदियाणं पि णियमेण विणासो, अण्णहा सरीरिंदियाणं पुधभावप्पसंगादो । इंदिएसु विणट्ठेसु णाणस्स विणासो, कारणेण विणा कज्जुप्पत्तीविरोहादो । णाणाभावे जीवविणासो, णाणाभावेण णिच्चेयणत्त-जुत्तस्स जीवत्तविरोहादो । जीवाभावे ण खइया लद्धी वि, परिणामिणा विणा परिणामाणमत्थित्तविरोहादो त्ति । णेदं जुज्जदे । कुदो ? जीवो णाम णाणसहावो, अण्णहा जीवाभावप्पसंगादो । होदु चे ण, पमाणाभावे पमेयस्स वि अभावप्पसंगा । ण चेवं, तहाणुवलंभादो । तम्हा णाणस्स जीवो उवायाणकारणमिदि घेत्तव्वं । तं च उवादेयं जावदव्वभावि, अण्णहा दव्वणियमाभावादो । तदो इंदियविणासे ण णाणस्स विणासो । णाणसहकारिकारणइंदियाणमभावे कधं णाणस्स अत्थित्तमिदि चे ण, णाणसहावपोग्गल-दव्वाणुप्पण्णउप्पाद-व्वय-धुअत्तुवलक्खियजीवदव्वस्स विणासाभावा । ण च एक्कं कज्जं एक्कादो चेव कारणादो सव्वत्थ उप्पज्जदि, खइर-सिंसव-धव-धम्मण-गोमय-सूरयर-सुज्जकंतेहिंतो समुप्पज्जमाणेक्कग्गिकज्जुवलंभा । ण च छदुमत्थावत्थाए णाणकारणत्तेण पडिवण्णिंदियाणि खीणावरणे भिण्णजादीए णाणुप्पत्तिम्हि सहकारिकारणं होंति त्ति णियमो, अइप्पसंगादो, अण्णहा मोक्खाभाव-प्पसंगा । ण च मोक्खाभावो । बंधकारणपडिवक्खतिरयणाणमुवलंभा । ण च कारणं सकज्जं सव्वत्थ ण करेदि त्ति णियमो अत्थि, तहाणुवलंभा । तम्हा अणिंदिएसु करणक्कमव्ववहाणादीदं णाणमत्थि त्ति घेत्तव्वं । ण च तण्णिक्कारणं अप्पट्ठसण्णिहाणेण तदुप्पत्तीदो । सव्वकम्माणं खएणुप्पण्णत्तादो खइयाए लद्धीए अणिंदियत्तं होदि ।

कायाणुवादेण पुढविकाइओ णाम कधं भवदि ? १८ ॥ ॥ २२ ॥

पुढविकायादो किण्णिग्गदो भूदपुव्वो त्ति पुढविकाइओ वुच्चदि, किं पुढविकाइयाणमहिमुहो णेगमणयावलंबणेण पुढविकाइओ वुच्चदि, किं पुढविकाइयणामकम्मोदएणेत्ति बुद्धीए काऊण कधं होदि त्ति वुत्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुढविकाइयणामाए उदएण ॥ १९ ॥

णामपयडीसु पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फदिसण्णिदाओ पयडीओ ण णिद्दिट्ठाओ, तेण पुढविकाइयणामाए उदएण पुढविकाइओ त्ति णेदं घडदे ? ण, एइंदियजादिणामाए एदासिमंतब्भावादो। ण च कारणेण विणा कज्जाणमुप्पत्ती अत्थि। दीसंति च पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फदि-तसकाइयादिसु अणेगाणि कज्जाणि। तदो कज्जमेत्ताणि चेव कम्माणि वि अत्थि त्ति णिच्छओ कायव्वो। जदि एवं तो भमर-महुवर-सलह-पयंग-गोम्हिंदगोव-संख-मंकुण-णिंबंब-जंबु-जंबीर-कयंबादिसण्णिदेहि वि णामकम्मेहि होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, इच्छिज्जमाणादो। पुढविकाइयाणं एक्कवीसाए चउवीसाए पंचवीसाए छव्वीसाए सत्तवीसाए त्ति पंच उदयट्ठाणाणि। २१। २४। २५। २६। २७। एदेसिं ठाणाणं पयडीओ उच्चारिय घेत्तव्वाओ। एवमेदासु बहुसु पयडीसु उदयमागच्छमाणासु कधं पुढविकाइयणामाए उदएण पुढविकाइओ त्ति जुज्जदे ? ण, इदरपयडीणमुदयस्स साहारणत्तुवलंभादो। ण च पुढविकाइयणामकम्मोदओ तहा साहारणो, अण्णत्थेदस्साणुवलंभा।

आउकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २० ॥ आउकाइयणामाए उदएण ॥ २१ ॥

तेउकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २२ ॥ तेउकाइयणामाए उदएण ॥ २३ ॥

वाउकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २४ ॥ वाउकाइयणामाए उदएण ॥ २५ ॥

वणप्फइकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २६ ॥ वणप्फइकाइयणामाए उदएण ॥ २७ ॥

एदेसिं सुत्ताणमत्थो सुगमो। णवरि आउकायादीणं एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीसमिदि चत्तारि उदयट्ठाणाणि। सत्तावीसाए ट्ठाणं णत्थि, आदावुज्जोवाणमुदयाभावा। णवरि आउ-वणप्फदिकाइयाणं सत्तावीसाए सह पंच उदयट्ठाणाणि, आदावेण विणा तत्थ उज्जोवस्स कत्थ वि उदयदंसणादो।

तसकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २८ ॥

सुगममेदं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तसकाइयणामाए उदएण ॥ २९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं । णवरि वीसाए एक्कवीसाए पणुवीसाए छव्वीसाए सत्तावीसाए अट्ठावीसाए एगुणतीसाए तीसाए एक्कत्तीसाए णवण्णमट्ठण्णमुदयट्ठाणमिदि एक्कारस उदयट्ठाणाणि होंति । एदाणि जाणिदूण वत्तव्वाणि ।

अकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ ३० ॥

छक्काइयणामाणं विणासो णत्थि, मिच्छत्तादिआसवाणं विणासाणुवलंभादो । ण चाणादित्तणेण णिच्चं मिच्छत्तं विणस्सदि, णिच्चस्स विणासविरोहादो । ण मिच्छत्तादिआसवो सादी, संवरेण णिम्मूलदो ओसरिदासवस्स पुणरुप्पत्तिविरोहादो । एदं सव्वं मणेण अवहारिय अकाइओ णाम कधं होदि त्ति वुत्तं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ३१ ॥

ण च अणादित्तादो णिच्चो आसवो, कूडत्थाणादिं मुच्चा पवाहाणादिम्हि णिच्चत्ताणुवलंभादो । उवलंभे वा ण बीजादीणं विणासो, पवाहसरूवेण तेसिमणादित्तदंसणादो । तदो णाणादित्तं साहणं, अणेयंतियादो । ण चासवो कूडत्थाणादिसहावो, मिच्छत्तासंजमकसायासवाणं पवाहाणादिसरूवेण समागदाणं वट्टमाणकाले वि कत्थ वि जीवे विणासदंसणादो ।

जोगाणुवादेण मणजोगी वचिजोगी कायजोगी णाम कधं भवदि ? ॥ ३२ ॥

किमोदइओ किं खओवसमिओ किं पारिणामिओ किं खइओ किमुवसमिओ त्ति ? ण ताव खइओ, संसारिजीवेसु सव्वकम्माणं उदएण वट्टमाणेसु जोगाभावप्पसंगादो, सिद्धेसु सव्वकम्मोदयविरहिदेसु जोगस्स अत्थित्तप्पसंगादो च । ण पारिणामिओ, खइयम्मि वुत्तासेसदोसप्पसंगादो । णोवसमिओ, ओवसमियभावेण मुक्कमिच्छाइट्ठिगुणम्मि जोगाभावप्पसंगादो । ण घादिकम्मोदयसमुब्भूदो, केवलिम्हि खीणघादिकम्मोदए जोगाभावप्पसंगादो । णाघादिकम्मोदयसमुब्भूदो, अजोगिम्हि वि जोगस्स सत्तपसंगादो । ण घादिकम्माणं खओवसमजणिदो, केवलिम्हि जोगाभावप्पसंगा । णाघादिकम्मक्खओवसमजणिदो, तत्थ सव्व-देसघादिफद्दयाभावादो खओवसमाभावा । एदं सव्वं बुद्धिम्हि काऊण-मण-वचि-कायजोगी कधं होदि त्ति वुत्तं । ॥ २४ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जोगो णाम जीवपदेसाणं परिप्फंदो संकोच-विकोचलक्खणो । सो च कम्माणं उदयजणिदो, कम्मोदयविरहिदसिद्धेसु तदणुवलंभा । अजोगिकेवलिम्हि जोगाभावा जोगो ओदइओ ण होदि त्ति वोत्तुं ण जुत्तं, तत्थ सरीरणामकम्मोदयाभावा । ण च सरीरणामकम्मोदएण जायमाणो जोगो तेण विणा होदि, अइप्पसंगादो । एवमोदइयस्स जोगस्स कधं खओवसमियत्तं उच्चदे ? ण, सरीरणामकम्मोदएण सरीरपाओग्गपोग्गलेसु बहुसु संचयं गच्छमाणेसु विरियंतराइयस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण तेसिं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण समुब्भवादो लद्धखओवसमववएसं विरियं वड्ढदि, तं विरियं पप्प जेण जीवपदेसाणं संकोच-विकोचो वड्ढदि तेण जोगो खओवसमिओ त्ति वुत्तो । विरियंतराइयखओवसमजणिदबलवड्ढि-हाणीहिंतो जदि जीवपदेसपरिप्फंदस्स वड्ढि-हाणीओ होंति तो खीणंतराइयम्मि सिद्धे जोगबहुत्तं पसज्जदे ? ण, खओवसमियबलादो खइयस्स बलस्स पुधत्तदंसणादो । ण च खओवसमियबलवड्ढि-हाणीहिंतो वड्ढि-हाणीणं गच्छमाणो जीवपदेसपरिप्फंदो खइयबलादो वड्ढि-हाणीणं गच्छदि, अइप्पसंगादो । जदि जोगो वीरियंतराइयखओवसमजणिदो तो सजोगिम्हि जोगाभावो पसज्जदे ? ण, उवयारेण खओवसमियं भावं पत्तस्स ओदइयस्स जोगस्स तत्थाभावविरोहादो । सो च जोगो तिविहो मणजोगो वचिजोगो कायजोगो त्ति । मणवग्गणादो णिप्फण्णदव्वमणमवलंबिय जो जीवस्स संकोच-विकोचो सो मणजोगो । भासावग्गणापोग्गलखंधे अवलंबिय जो जीवपदेसाणं संकोच-विकोचो सो वचिजोगो णाम । जो चउव्विह सरीराणि अवलंबिय जीवपदेसाणं संकोच-विकोचो सो कायजोगो णाम । दो वा तिण्णि वा जोगा जुगवं किण्ण होंति ? ण, तेसिं णिसिद्धाकमवुत्तीदो । तेसिमक्कमेण वुत्ती वुवलंभदे चे ? ण, इंदियविसयमइक्कंतजीवपदेसपरिप्फंदस्स इंदिएहि उवलंभविरोहादो । ण जीवे चलंते जीवपदेसाणं संकोच-विकोचणियमो, सिज्झंतपढमसमए एत्तो लोअग्गं गच्छंतम्मि जीवपदेसाणं संकोच-विकोचाणुवलंभा । कधं मणजोगो खओवसमियो ? वुच्चदे । वीरियंतराइयस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण मणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स जेण मणजोगो समुप्पज्जदि तेणेसो खओवसमिओ । वीरियंतराइयस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण जिब्भिंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स सरणामकम्मोदइल्लस्स वचिजोगस्सुवलंभा खओवसमिओ वचिजोगो । वीरियंतराइयस्स सव्वघादिफद्दयाणं संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएण कायजोगुवलंभादो खओवसमिओ कायजोगो । ॥ २५ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अजोगी णाम कधं भवदि ? ॥ ३४ ॥

एत्थ णय-णिक्खेवेहि अजोगित्तस्स पुव्वं व चालणा कायव्वा।

खइयाए लद्धीए ॥ ३५ ॥

जोगकारणसरीरादिकम्माणं णिम्मूलखएणुप्पण्णत्तादो खइया लद्धी अजोगस्स।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदो पुरिसवेदो णवुंसयवेदो णाम कधं भवदि ? ॥ ३६ ॥

किमोदइएण भावेण किमुवसमिएण किं खइएण किं पारिणामिएण भावेणेत्ति बुद्धीए काऊण इत्थिवेदादओ कधं होदि त्ति वुत्तं। एवंविहसंसयविणासणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

चरित्तमोहणीयस्स कम्मस्स उदएण इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदा ॥ ३७ ॥

चरित्तमोहणीयस्स उदएण होंति त्ति सामण्णेण वुत्ते सव्वस्स चरित्तमोहणीयस्स उदएण तिण्हं वेदाणमुप्पत्ती पसज्जदे। ण च एवं, विरुद्धाणं तिण्हमेक्कदो उप्पत्तिविरोहादो। तदो णेदं सुत्तं घडदि त्ति ? ण, 'सामान्यचोदनाश्च विशेषेष्ववतिष्ठंत' इति न्यायात् जइवि सामण्णेण वुत्तं तो वि विसेसोवलद्धी होदि त्ति, सामण्णादो चरित्तमोहणीयादो तिण्हं विरुद्धाणमुप्पत्तिविरोहादो। तदो इत्थिवेदोदएण इत्थिवेदो, पुरिसवेदोदएण पुरिसवेदो, णवुंसयवेदोदएण णवुंसयवेदो होदि त्ति सिद्धं। इत्थिवेददव्वकम्मजणिदपरिणामो किमित्थिवेदो वुच्चदि णामकम्मोदयजणिद-थण-जहण-जोणिविसिट्ठसरीरं वा। ण ताव सरीरमेत्थित्थिवेदो, 'चारित्तमोहोदएण वेदाणमुप्पत्तिं परूवेमो' त्ति एदेण सुत्तेण सह विरोहादो, सरीरीणमवगदवेदत्ताभावादो वा। ण पढमपक्खो, एक्कम्हि कज्जकारणभावविरोहादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे। ण विदियपक्खो, अणब्भुवगमादो। ण च पढमपक्खम्मि वुत्तदोसो संभवदि, परिणामादो परिणामिणो कथंचिभेदेण एयत्ताभावादो। कुदो ? चारित्तमोहणीयस्स उदओ कारणं, कज्जं पुण तदुदयविसिट्ठो इत्थिवेदसण्णिदो जीवो। तेण पज्जाएण तस्सुप्पज्जमाणत्तादो ण कारण-कज्जभावो एत्थ विरुज्झदे। एवं सेसवेदाणं पि वत्तव्वं। सेसा वि भावा एत्थ संभवंति, ॥ २६ ॥
तेहि भावेहि वेदाणं णिद्देसो किण्ण कदो ? ण, वेदणिबंधणपरिणामस्स खओवसमियादिपरिणामाभावा वेदविसिट्ठजीवदव्वट्ठियसेसभावाणं पि तिवेयसाहारणाणं तद्धेतुत्तविरोहादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अवगदवेदो णाम कधं भवदि ? ३८ ॥

एत्थ णय-णिक्खेव-भावे अस्सिदूण पुव्वं व चालणा कायव्वा ।

उवसमियाए खइयाए लद्धीए ॥ ३९ ॥

अप्पिदवेदोदएण उवसमसेडिं चढिय मोहणीयस्स अंतरं करिय जहाजोग्गट्ठाणम्मि अप्पिदवेदस्स उदय-उदीरणा-ओकड्डुक्कड्डण-परपयडिसंकम-ट्ठिदि-अणुभागखंडएहि विणा जीवम्मि पोग्गलखंधाणमच्छणमुवसमो । तत्थ जा जीवस्स वेदाभावसरूवा लद्धी तीए अवगदवेदो जेण होदि तेण उवसमियाए लद्धीए अवगदवेदो होदि त्ति वुत्तं । अप्पिदवेदोदएण खवगसेडिं चढिय अंतरकरणं करिय जहाजोगट्ठाणे अप्पिदवेदस्स पोग्गलखंधाणं ट्ठिदि-अणुभागेहि सह जीवपदेसेहिंतो णिस्सेसोसरणं खओ णाम । तत्थुप्पण्णजीवपरिणामो खइओ, तस्स लद्धी खइया लद्धी, त्तीए खइयाए लद्धीए वा अवगदवेदो होदि । वेदाभाव-लद्धीणं एक्ककालम्मि चेव उप्पज्जमाणीणं कधमाहाराहेयभावो, कज्ज-कारणभावो वा ? ण, समकालेणुप्पज्जमाणच्छायंकुराणं कज्ज-कारणभावदंसणादो, घडुप्पत्तीए कुसूलाभाव-दंसणादो च । होदु णाम तिवेददव्वकम्मक्खएण भाववेदाभावो, कारणाभावादो कज्जाभावस्स णाइयत्तादो । किंतु उवसमसेडिम्हि संतेसु दव्वकम्मक्खंधेसु भाववेदाभावो ण घडदे, संते कारणे कज्जाभावविरोहादो ? ण, ओसहीणं दिट्ठसत्तीणं सामजीवे पवुत्ताणं आमेण पडिहयसत्तीणं सकज्जकरणाणुवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई णाम कधं भवदि ? ॥ ४० ॥

कोधो दुविहो दव्वकोधो भावकोधो चेदि । दव्वकोधो णाम भावकोधुप्पत्तिणिमित्तदव्वं । तं दुविहं कम्मदव्वं णोकम्मदव्वं चेदि । जं तं कम्मदव्वं तं तिविहं बंधुदय-संतभेएण । जं तं कोहणिमित्तणोकम्मदव्वं णेगमणयाहिप्पाएण लद्धकोहववएसं तं दुविहं सचित्तमचित्तं चेदि । एदे कोधकसाया जस्स अत्थि सो कोधकसाई । एत्थ अप्पिदकोधकसाई कधं भवदि केण पयारेण होदि त्ति पुच्छा कदा । एवं सेसकसायाणं पि वत्तव्वं । अणप्पिदकसाए णिवारिय अप्पिदकसायजाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

चरित्तमोहणीयस्स कम्मस्स उदएण ॥ ४१ ॥

सामण्णेण णिद्देसे कदे वि एत्थ विसेसोवलद्धी होदि, 'सामान्यचोदनाश्च विशेषेष्ववतिष्ठन्ते' इति न्यायात् । तेण कोध-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कसायस्स उदएण कोधकसाई, माणकसायस्स उदएण माणकसाई, मायाकसायस्स उदएण मायकसाई, लोभकसायस्स उदएण लोभकसाई त्ति सिद्धं।

अवसाई णाम कधं भवदि ? ॥ ४२ ॥

पुव्वुत्तकसायाणं कस्स अभावेण अकसाई होदि त्ति पुच्छा कदा होदि। अप्पिदअकसाइगहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

उवसमियाए खइयाए लद्धीए ॥ ४३ ॥

चरित्तमोहणीयस्स उवसमेण खएण च जा उप्पण्णलद्धी तीए अकसायत्तं होदि, ण सेसकम्माणं खएणुवसमेण वा, तत्तो जीवस्स उवसमिय-खइयलद्धीणमणुप्पत्तीदो।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहियणाणी सुदणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी णाम कधं भवदि ? ॥ ४४ ॥

तत्थ ताव मदिअण्णाणस्स उच्चदे—मदिअण्णाणकारणं दुविहं दव्वकारणं भावकारणं चेदि। तत्थ दव्वकारणं मदिअण्णाणणिमित्तदव्वं। तं दुविहं कम्म-णोकम्मभेएण। कम्मं तिविहं बंधुदय-संतमिदि, ओग्गहावरणादिभेएण अणेयविहं वा। णोकम्मदव्वं तिविहं सचित्त-अचित्त-मिस्समिदि। एदेसिं दव्वाणं जा मदिअण्णाणुप्पायणसत्ती तं जाव कारणं। एदेहिंतो उप्पण्णमदिअण्णाणी सो कधं भवदि केण पयारेण होदि त्ति वुत्तं होदि। एवं सेसणाणाणं पि वत्तव्वं। एत्थ चोदओ भणदि—अण्णाणमिदि वुत्ते किं णाणस्स अभावो घेप्पदि आहो ण घेप्पदि त्ति ? णाइल्लो पक्खो मदिणाणाभावे मदिपुव्वं सुदमिदि कट्टु सुदणाणस्स वि अभावप्पसंगादो। ण चेदं पि, ताणमभावे सव्वणाणाणमभावप्पसंगा। णाणाभावे ण दंसणं पि दोण्णमण्णोण्णाविणाभावादो। णाण-दंसणाणमभावे ण जीवो वि, तस्स तल्लक्खणत्तादो त्ति। ण विदियपक्खो वि, पडिसेहस्स फलाभावप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—ण पढमपक्खवुत्तदोससंभवो, पसज्जपडिसेहेण एत्थ पओजणाभावा। ण विदियपक्खुत्तदोसो वि, अप्पेहिंतो वदिरित्तासेसदव्वेसु सविहिवहसंठिएसु पडिसेहस्स फलभावुवलंभादो। किमट्ठं पुण सम्माइट्ठीणाणस्स पडिसेहो ण कीरदे, विहि-पडिसेह-भावेण दोण्हं णाणाणं विसेसाभावा ? ण परदो वदिरित्तभावसामण्णमवेक्खिय एत्थ पडिसेहो कदो जेण सम्माइट्ठिणाणस्स वि पडिसेहो होज्ज, किंतु अप्पणो अवगयत्थे जम्हि जीवे सद्दहणं ण वुप्पज्जदि अवगयत्थविवरीयसद्धुप्पायणमिच्छत्तुदयबलेण तत्थ जं णाणं तमण्णाणमिदि भण्णइ, णाणफलाभावादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घड-पडत्थंभादिसु मिच्छाइट्ठीणं जहावगमं सद्दहणमुवलब्भदे चे ? ण, तत्थ वि तस्स अणज्झवसायदंसणादो। ण चेदमसिद्धं 'इदमेवं चेवेत्ति' णिच्छयाभावा। अधवा जहा दिसामूढो वण्ण-गंध-रस-फासजहावगमं सद्दहंतो वि अण्णाणी वुच्चदे जहावमदिससद्दहणाभावादो, एवं थंभादिपयत्थे जहावगमं सद्दहंतो वि अण्णाणी वुच्चदे जिणवयणेण सद्दहणाभावादो।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ४५ ॥

कधं मदिअण्णाणिस्स खओवसमिया लद्धी ? मदिअण्णाणावरणस्स देशघादिफद्दयाणमुदएण मदिअण्णाणित्तुवलंभादो। जदि देसघादिफद्दयाणमुदएण अण्णाणित्तं होदि तो तस्स ओदइयत्तं पसज्जदे ? ण, सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावा। कधं पुण खओवसमियत्तं ? आवरणे संते वि आवरणिज्जस्स णाणस्स एगदेसो जम्हि उदए उवलब्भदे तस्स भावस्स खओवसमववएसादो खओवसमियत्तमण्णाणस्स ण विरुज्झदे। अधवा णाणस्स विणासो खओ णाम, तस्स उवसमो एगदेसक्खओ, तस्स खओवसमसण्णा। तत्थ णाणमण्णाणं वा उप्पज्जदि त्ति खओवसमिया लद्धी वुच्चदे। एवं सुदअण्णाण-विभंगणाण-आभिणिबोहियणाण-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणाणं पि खओवसमिओ भावो वत्तव्वो। णवरि अप्पप्पणो आवरणाणं देसघादिफद्दयाणमुदएण खओवसमिया लद्धी होदि त्ति वत्तव्वं। सत्तण्हं णाणाणं सत्त चेव आवरणाणि किण्ण होदि त्ति चे ? ण, पंचणाणवदिरित्तणाणाणुवलंभा। मदिअण्णाण-सुदअण्णाण-विभंगणाणाणमभावो वि णत्थि, जहाकमेण आभिणिबोहिय-सुद-ओधिणाणेसु तेसिमंतब्भावादो। पुव्वमिंदिय-जोगमग्गणासु खओवसमियभावपरूवणाए सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण तेसिं चेव संतोवसमेण देसघादिफद्दयाणमुदएणेत्ति परूविदं। संपहि दोण्हं पडिसेहं कादूण देसघादिफद्दयाणमुदएणेव खओवसमियभावो होदि त्ति परूवेंतस्स सुववयणविरोहो किण्ण जायदे ? ण, जदि सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण संजुत्तमुदएणेव खओवसमियो भावो इच्छिज्जदि तो फासिंदिय-कायजोगो-मदि-सुदणाणाणं खओवसमिओ भावो ण पावदे, पासिंदियावरण-वीरियंतराइय-मदि-सुदणाणावरणाणं सव्वघादिफद्दयाणं सव्वकालमुदयाभावा। ण च सुववयणविरोहो वि, इंदिय-जोगमग्गणासु अण्णेसिमाइरियाणं वक्खाणकमजाणावणट्ठं तत्थ तधापरूवणादो। जं जदो णियमेण उप्पज्जदि तं तस्स कज्जमियरं च कारणं। ण च देसघादिफद्दयाणमुदओ व्व सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खओ णियमेण अप्पप्पणो णाणजणओ, खीणकसायचरिमसमए ओहिमणपज्जवणाणावरणसव्वघादिफद्दयाणं खएण समुप्पज्जमाणओहि-मणपज्जवणाणाणमणुवलंभादो। ॥ २९ ॥

केवलणाणी णाम कधं भवदि ? ॥ ४६ ॥

किमोदइएणोवसमिएण खओवसमिएण पारिणामिएणेत्ति ? ण पारिणामिएण भावेण होदि, सव्वजीवाणं केवलणाणुप्पत्तिप्प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संगादो। णोदइएण, केवलणाणपडिबंधिकम्मोदयस्स तदुप्पायणविरोहादो। णोवसमियं, णाणावरणस्स मोहणीयस्सेवुवसमाभावा। ण खओवसमियं, असहायस्स करण-कम-व्ववहाणादीदस्स खओवसमियत्तविरोहादो। सव्वं पि णाणं केवलणाणमेव आवरणविगमवसेण तत्तो विणिग्गयणाणकणाणमुवलंभादो। ण च एसो णाणकणो केवलणाणादो अण्णो, जीवे पंचण्हं णाणाणमभावादो। तेसिमभावो कुदोवगम्मदे ? केवलणाणेण तिकालगोयरासेसदव्व-पज्जयविसएणाक्कमेण इंदियालोआदिसहेज्जाणवेक्खेण सुहुम-दूर-समिवादिविग्घसंघुम्मुक्केणक्कंतासेसजीवपदेसेसु सक्कम-ससहेज्ज-सपडिवक्ख-परिमिय-अविसदणाणाणमत्थित्तविरोहादो। किं च ण केवलणाणेण अवगयत्थे सेसणाणाणं पवुत्ती, विसदाविसदाणमेक्कत्थेक्ककालम्मि पवुत्तीविरोहादो, अवगदावगमे फलाभावादो च। णाणवगदे वि पवुत्ती तदणवगदत्थाभावादो। तदो जीवे ण पंच णाणाणि, केवलणाणमेक्कं चेव। ण चावरणाणि णाणमुप्पाइयंति विणासयाणं तदुप्पायणविरोहादो। तदो केवलणाणं खओवसमियं भावं लहदि त्ति ण, एदस्स ससहेज्जस्स केवलत्तविरोहादो। ण च छारेणोट्टद्धग्गिविणिग्गयबप्फाए अग्गिववएसो अग्गिबुद्धी वा अग्गिववहारो वा अत्थि, अणुवलंभादो। तदो णेदाणि णाणाणि केवलणाणं। तेण कारणेण केवलणाणं ण खओवसमियमिदि। ण खइयं पि, खओ णाम अभावो तस्स कारणत्तविरोहादो। एदं सव्वं बुद्धीए काऊण केवलणाणी कधं होदि त्ति भणिदं।

खइयाए लद्धीए ॥ ४७ ॥

ण च केवलणाणावरणक्खओ तुच्छो त्ति ण कज्जयरो, केवलणाणावरणबंध-संतोदयाभावस्स अणंतवीरिय-वेरग्ग-सम्मत्त-दंसणादिगुणेहि जुत्तजीवदव्वस्स तुच्छत्तविरोहादो। भावस्स अभावत्तं ण विरुज्झदे, भावाभावाणमण्णोण्णं विस्ससेणेव सव्वप्पणा आलिंगिऊण ट्ठिदाणमुवलंभादो। ण च उवलंभमाणे विरोहो अत्थि, अणुवलद्धिविसयस्स तस्स उवलद्धीए अत्थित्तविरोहादो।

संजमाणुवादेण संजदो सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदो णाम कधं भवदि ? ॥ ४८ ॥

णामसंजमो ठवणसंजमो दव्वसंजमो भावसंजमो चेदि चउव्विहो संजमो। णाम-ट्ठवणसंजमा गदा। दव्वसंजमो दुविहो आगम-णोआगमभेएण। आगमो गदो। णोआगमो तिविहो जाणुगसरीरणोआगमदव्वसंजम-भवियणोआगमदव्वसंजम-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वसंजमभेएण। जाणुग-भवियाणि गदाणि। तव्वदिरित्तदव्वसंजमो संजमसाहणपिच्छाहार-कवली-पोत्थयादीणि। भावसंजमो दुविहो आगम-णोआगमभेएण। आगमो गदो। णोआगमो तिविहो खइओ खओवसमिओ उवसमिओ चेदि। एदेसु संजम-पयारेसु केण पयारेण संजमो होदि त्ति पुच्छा कदा। एवं सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं पि णिक्खेवो कायव्वो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ३१ ॥ उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लद्धीए ॥ ४९ ॥

संजमस्स ताव उच्चदे—चरित्तावरणस्स सव्वोवसमेण उवसंतकसायम्मि संजमो होदि त्ति उवसमियाए लद्धीए संजमस्सुप्पत्ती उत्ता। कधं तस्स खइया लद्धी? चरित्तावरणस्स खएण संजमुप्पत्तीदो। कधं खओवसमिया लद्धी? चदुसंजलण-णवणोकसायाणं देसघादिफद्दयाणमुदएण संजमुप्पत्तीदो। कधमेदेसिं उदयस्स खओवसमववएसो? सव्वघादिफद्दयाणि अणंतगुणहीणाणि होदूण देसघादिफद्दयत्तणेण परिणमिय उदयमागच्छंति, तेसिमणंतगुणहीणत्तं खओ णाम। देसघादिफद्दयसरूवेणवट्ठाणमुवसमो। तेहि खओवसमेहि संजुत्तोदओ खओवसमो णाम। तदो समुप्पण्णो संजमो वि तेण खओवसमिओ। एवं सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं पि वत्तव्वं। होदु णाम एदेसिं खओवसमलद्धी, णोवसमिया खइया च, अणियट्टीगुणट्ठाणादो उवरि एदेसिमभावा। ण च हेट्ठिमखवगुवसामगदोगुणट्ठाणेसु चरित्तमोहणीयस्स खवणा उवसामणा वा अत्थि जेणेदेसिं खइया उवसमिया वा लद्धी होज्ज? ण, खवगुवसामगअणियट्टीगुणट्ठाणे वि लोभसंजलणवदिरित्तासेसचरित्तमोहणीयस्स खवणुवसामणदंसणेण तत्थ खइयउवसमियलद्धीणं संभवुवलंभा। अधवा खवगुवसामगअपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि उवरि सव्वत्थ खइय-उवसमियसंजमलद्धीओ अत्थि चेव। कुदो? पारद्धपढमसमयप्पहुडि थोवथोवखवणुवसामणकज्जणिप्पत्तिदंसणादो। पडिसमयं कज्जणिप्पत्तीए विणा चरिमसमए चेव णिप्पज्जमाणकज्जाणुवलंभादो च। कधमेक्कस्स चरित्तस्स तिण्णि भावा? ण, एक्कस्स वि चित्तपयंगस्स बहुवण्णदंसणादो।

परिहारसुद्धिसंजदो संजदासंजदो णाम कधं भवदि? ॥ ५० ॥

एत्थ वि णय-णिक्खेवे अस्सिदूण पुव्वं व चालणा कायव्वा।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ५१ ॥

चदुसंजलण-णवणोकसायाणं सव्वघादिफद्दयाणमणंतगुणहाणीए खयं गंतूण देसघादित्तणेणुवसंतफद्दयाणमुदएण परिहारसुद्धिसंजमुप्पत्तीदो खओवसमियाए लद्धीए परिहारसुद्धिसंजमो। चदुसंजलण-णवणोकसायाणं खओवसमसण्णिददेसघादिफद्दयाणमुदएण संजमासंजमुप्पत्तीदो खओवसमलद्धीए संजमासंजमो। तेरसण्हं पयडीणं देसघादिफद्दयाणमुदओ संजमलंभणिमित्तो कधं संजमासंजमणिमित्तं पडिवज्जदे? ण, पच्चक्खाणावरणसव्वघादिफद्दयाणमुदएण पडिहयचदुसंजलणादिदेसघादिफद्दयाणमुदयस्स संजमासंजमं मोत्तूण संजमुप्पायणे असमत्थत्तादो। ॥ ३१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदो णाम कधं भवदि ? ॥ ५२ ॥

सुगममेदं ।

उवसमियाए खइयाए लद्धीए ॥ ५३ ॥

उवसामग-क्खवगसुहुमसांपराइयगुणट्ठाणेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमस्सुवलंभादो उवसमियाए खइयाए लद्धीए सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो । उवसंत-खीणकसायादिसु जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमुवलंभादो उवसमियाए खइयाए लद्धीए जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो ।

असंजदो णाम कधं भवदि ? ॥ ५४ ॥

सुगममेदं ।

संजमघादीणं कम्माणमुदएण ॥ ५५ ॥

अपच्चक्खाणावरणस्स उदओ चेव असंजमस्स हेदू, संजमासंजमपडिसेहमुहेण सव्वसंजमघादित्तादो । तदो संजमघादीणं कम्माणमुदएणेत्ति कधं घडदे ? ण, इदरेसिं पि चरित्तावरणीयाणं कम्माणमुदएण विणा अपच्चक्खाणावरणस्स देससंजमघायणे सामत्थियाभावादो । संजमो णाम जीवसहावो, तदो ण सो अण्णेहि विणासिज्जदि तव्विणासे जीवदव्वस्स वि विणासप्पसंगादो ? ण, उवजोगस्सेव संजमस्स जीवस्स लक्खणत्ताभावादो । किं लक्खणं ? जस्साभावे दव्वस्साभावो होदि तं तस्स लक्खणं, जहा पोग्गलदव्वस्स रूव-रस-गंध फासा, जीवस्स उवजोगो । तम्हा ण संजमाभावेण जीवदव्वस्साभावो इदि ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी णाम कधं भवदि ? ॥ ५६ ॥

एत्थ पुव्वं व णिक्खेवो कायव्वो । ण दंसणमत्थि विसयाभावादो । ण बज्झत्थसामण्णग्गहणं दंसणं, केवलदंसणस्स अभावप्पसंगादो । कुदो ? केवलणाणेण तिकालगोयराणंतत्थ-वेंजणपज्जयसरूवेसु सव्वदव्वेसु अवगएसु केवलदंसणस्स विसयाभावा । ण च गहिदमेव गेण्हदि केवलदंसणं, गहिदग्गहणे फलाभावा । ण चासेसविसेसमेत्तग्गाही केवलणाणं जेण सयलत्थसामण्णं केवलदंसणस्स विसओ होज्ज, संसारावत्थाए आवरणवसेण कमेण पयट्टमाणणाण-दंसणाणं दव्वावगमाभावप्पसंगादो । कुदो ? ण णाणं दव्वपरिच्छेदयं, सामण्णवदिरित्तविसेसेसु तस्स वावारादो । ण दंसणं पि दव्वपरिच्छेदयं तस्स विसेसवदिरित्तसामण्णम्मि वावारादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण केवलं संसारावत्थाए चेव दव्वग्गहणाभावो, किंतु ण केवलिम्हि वि दव्वग्गहणमत्थि, सामण्ण-विसेसेसु एयंत-दुरंतपंथसंठिएसु वावदाणं केवलदंसण-णाणाणं दव्वम्मि वावारविरोहादो । ण च एयंते सामण्ण-विसेसा अत्थि जेण ते तेसिं विसओ होज्ज । असंतस्स पमेयत्ते इच्छिज्जमाणे गद्दहसिंगं पि पमेयत्तमल्लिएज्ज, अभावं पडि विसेसाभावादो । पमेयाभावे ण पमाणं पि, तस्स तण्णिबंधणत्तादो । तम्हा ण दंसणमत्थि त्ति सिद्धं ? एत्थ परिहारो उच्चदे– अत्थि दंसणं, सुत्तम्मि अट्ठकम्मणिद्देसादो । ण चासंते आवरणिज्जे आवारयमत्थि, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो । ण चोवयारेण दंसणावरणणिद्देसो, मुहियस्साभावे उवयाराणुववत्तीदो । ण चावरणिज्जं णत्थि, "चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी खओवसमियाए, केवलदंसणी खइयाए लद्धीए" त्ति तदत्थित्तपदुप्पायणजिणवयणदंसणादो । एओ मे सस्सदो अप्पा णाण-दंसणलक्खणो । सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १६ ॥ असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य । सायारमणायारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ १७ ॥ इच्चादिउवसंहारसुत्तदंसणादो च । आगमपमाणेण होदु णाम दंसणस्स अत्थित्तं, ण जुत्तीए चे ? ण, जुत्तीहि आगमस्स बाहाभावादो । आगमेण वि जच्चा जुत्ती ण बाहिज्जदि त्ति चे ? सच्चं ण बाहिज्जदि जच्चा जुत्ती, किंतु इमा बाहिज्जदि जच्चत्ताभावादो । तं जहा– ण णाणेण विसेसो चेव घेप्पदि सामण्ण-विसेसप्पयत्तणेण पत्तजच्चंतरदव्वुवलंभादो । ण च णयदुवविसयमगेण्हंतस्स णाणस्स सायारत्तमत्थि, विरोहादो । तहा समंतभद्दसामिणा वि उत्तं— विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः प्रमाणमत्रान्यतरत्प्रधानं । गुणो परो मुख्यनियामहेतुर्नयः स दृष्टांतसमर्थनस्ते ॥ इति ॥ १८ ॥ ण च एवं संते दंसणस्स अभावो, बज्झत्थे मोत्तूण तस्स अंतरंगत्थे वावारादो । ण च केवलणाणमेव सत्तिदुवसंजुत्तत्तादो बहिरंतरंगत्थपरिच्छेदयं णाणस्स पज्जयस्स पज्जायाभावादो । भावे वा अणवत्था ढुक्कदे, अवट्ठाणकारणाभावादो । तम्हा अंतरंगोवजोगादो बहिरंगुवजोगेण पुधभूदेण होदव्वमण्णहा सव्वण्हुत्ताणुववत्तीदो । अंतरंगबहिरंगुवजोगसण्णिददुसत्तीजुत्तो अप्पा इच्छिदव्वो । जं सामण्णग्गहणं भावाणं णेव कट्टु आयारं । अविसेसिदूण अत्थे दंसणमिदि भण्णदे समए ॥ १९ ॥ ण च एदेण सुत्तेणेदं वक्खाणं विरुज्झदे, अप्पत्थम्मि पउत्तसामण्णसद्दग्गहणादो । ण च जीवस्स सामण्णत्तमसिद्धं णियमेण विणा विसईकयतिकालगोयराणंतत्थ-वेंजणपज्जओवचियबज्झंतरंगाणं तत्थ सामण्णत्ताविरोहादो । होदु णाम सामण्णेण दंसणस्स सिद्धी केवलदंसणस्स सिद्धी च, ण सेसदंसणाणं;– चक्खूण जं पयासदि दिस्सदि तं चक्खुदंसणं वेंति । दिट्ठस्स य जं सरणं णायव्वं तं अचक्खु त्ती ॥ २० ॥ परमाणुआदियाइं अंतिमखंधं ति मुत्तिदव्वाइं । तं ओहिदंसणं पुण जं पस्सदि ताणि पच्चक्खं ॥ २१ ॥ इदि बज्झत्थविसयदंसणपरूवणादो ? ण, एदाणं गाहाणं परमत्थत्थाणुवगमादो । को सो परमत्थत्थो ? ॥ ३३ ॥
वुच्चदे– जं यत् चक्खूणं चक्षुषां पयासदि प्रकाशते दिस्सदि चक्षुषा दृश्यते वा तं तत् चक्खुदंसणं चक्षुर्दर्शनमिति वेंति ब्रुवते । चक्खिंदियणाणादो जो पुव्वमेव सुवसत्तीए सामण्णाए अणुहओ चक्खुणाणुप्पत्तिणिमित्तो तं चक्खुदंसणमिदि उत्तं होदि । कधमंतरंगाए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्खिदियविसयपडिबद्धाए सत्तीए चक्खिदियस्स पउत्ती ? ण, अंतरंगे बहिरंगत्थोवयारेण बालजणबोहणट्ठं चक्खूणं जं दिस्सदि तं चक्खुदंसणमिदि परूवणादो। गाहाए गलभंजणमकाऊण उज्जुवत्थो किण्ण घेप्पदि ? ण, तत्थ पुव्वुत्तासेसदोसप्पसंगादो। दिट्ठस्स शेषेन्द्रियैः प्रतिपन्नस्यार्थस्य जं यस्मात् सरणं अवगमनं णायव्वं ज्ञातव्यं तं तत् अचक्खु त्ति अचक्षुर्दर्शनमिति। सेसिंदियणाणुप्पत्तीदो जो पुव्वमेव सुवसत्तीए अप्पणो विसयम्मि पडिबद्धाए सामण्णेण संवेदो अचक्खुणाणुप्पत्तिणिमित्तो तमचक्खुदंसणमिदि उत्तं होदि। परमाणुआदियाइं परमाण्वादिकानि अंतिमखंधं ति आ पश्चिमस्कंधादिति मुत्तिदव्वाइं मूर्तिद्रव्याणि जं यस्मात् पस्सदि पश्यति जानीते ताणि तानि पच्चक्खं साक्षात् तं तत् ओहिदंसणं अवधिदर्शनमिति द्रष्टव्यम्। परमाणुमादिं कादूण जाव पच्छिमखंधो त्ति ट्ठिदपोग्गलदव्वाणमवगमादो पच्चक्खादो जो पुव्वमेव सुवसत्तीविसयउवजोगो ओहिणाणुप्पत्तिणिमित्तो तं ओहिदंसणमिदि घेत्तव्वं, अण्णहा णाणदंसणाणं भेदाभावादो। कधं केवलणाणेण केवलदंसणं समाणं ? ण, णेयप्पमाणकेवलणाणभेएण भिण्णप्पविसयउवजोगस्स वि तत्तियमेत्तत्ताविरोहादो।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ५७ ॥

चक्खुदंसणावरणस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण समुप्पण्णत्तादो चक्खुदंसणं खओवसमियं। कधमुदयगददेसघादिफद्दयाणं खओवसमियत्तं ? उच्चदे–उदयम्मि पदणकाले सव्वघादिफद्दयाणं जमणंतगुणहीणत्तं सो तेसिं खओ णाम; देसघादिफद्दयाणं सरूवेण जमवट्ठाणं सो उवसमो; तदुभयगुणसमण्णिदचक्खुदंसणावरणीयकम्मक्खंधविवागजणिदजीवपरिणामो लद्धि त्ति घेत्तव्वो। अचक्खुदंसणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण अचक्खुदंसणं होदि त्ति कट्टु खओवसमियाए लद्धीए अचक्खुदंसणमिदि उत्तं। ओधिदंसणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदयजणिदलद्धीदो ओधिदंसणी होदि त्ति खओवसमियाए लद्धीए ओधिदंसणी णिद्दिट्ठो।

केवलदंसणी णाम कधं भवदि ? ॥ ५८ ॥

सुगममेदं।

खइयाए लद्धीए ॥ ५९ ॥

दंसणावरणीयस्स णिम्मूलविणासो खओ णाम। तत्तो जादजीवपरिणामो खइया लद्धी। तत्तो केवलदंसणी होदि। एत्थुवउज्जंती गाहा—एवं सुत्तपसिद्धं भणंति जे केवलं ण चत्थि त्ति। मिच्छादिट्ठी अण्णो को तत्तो एत्थ जियलोए ॥ २२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिओ णीललेस्सिओ काउलेस्सिओ तेउलेस्सिओ पम्मलेस्सिओ सुक्कलेस्सिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६० ॥

एत्थ पुव्वं व णिक्खेवे अस्सिदूण चालणा परूवेदव्वा । एत्थ णोआगमभावलेस्साए अहियारो ।

ओदइएण भावेण ॥ ६१ ॥

कसायाणुभागफद्दयाणमुदयमागदाणं जहण्णफद्दयप्पहुडि जाव उक्कस्सफद्दया त्ति ठइदाणं छब्भागविहत्ताणं पढमभागो मंदतमो, तदुदएण जादकसाओ सुक्कलेस्सा णाम । बिदियभागो मंदतरो, तदुदएण जादकसाओ पम्मलेस्सा णाम । तदियभागो मंदो, तदुदएण जादकसाओ तेउलेस्सा णाम । चउत्थभागो तिव्वो, तदुदएण जादकसाओ काउलेस्सा णाम । पंचमभावो तिव्वयरो, तस्सुदएण जादकसाओ णीललेस्सा णाम । छट्ठो तिव्वतमो, तस्सुदएण जादकसाओ किण्हलेस्सा णाम । जेणेदाओ छप्पि लेस्साओ कसायाणमुदएण होंति तेण ओदइयाओ । जदि कसाओदएण लेस्साओ उच्चंति तो खीणकसायाणं लेस्साभावो पसज्जदे ? सच्चमेदं जदि कसाओदयादो चेव लेस्सुप्पत्ती इच्छिज्जदि । किंतु सरीरणामकम्मोदयजणिदजोगो वि लेस्सा त्ति इच्छिज्जदि, कम्मबंधणिमित्तत्तादो । तेण कसाए फिट्टे वि जोगो अत्थि त्ति खीणकसायाणं लेस्सत्तं ण विरुज्झदे । जदि बंधकारणाणं लेस्सत्तं उच्चदि तो पमादस्स वि लेस्सत्तं किण्ण इच्छिज्जदि ? ण, तस्स कसाएसु अंतब्भावादो । असंजमस्स किण्ण इच्छिज्जदि ? ण, तस्स वि लेस्सायम्मे अंतब्भावादो । मिच्छत्तस्स किण्ण इच्छिज्जदि ? होदु तस्स लेस्साववएसो, विरोहाभावादो । किंतु कसायाणं चेव एत्थ पहाणत्तं हिंसादिलेस्सायम्मकारणादो, सेसेसु तदभावादो ।

अलेस्सिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६२ ॥

एत्थ वि णिक्खेवमस्सिदूण परूवणा कादव्वा ।

खइयाए लद्धीए ॥ ६३ ॥

लेस्साए कारणकम्माणं खएणुप्पण्णजीवपरिणामो खइया लद्धी, तीए अलेस्सिओ होदि त्ति उत्तं होदि । ण सरीरणामकम्मसंतस्स अत्थित्तं पडुच्च खइयत्तं विरुज्झदे, तस्स तंतत्ताभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवियाणुवादेण भवसिद्धिओ अभवसिद्धिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६४ ॥

सुगममेदं ।

पारिणामिएण भावेण ॥ ६५ ॥

एदं पि सुगमं ।

णेव भवसिद्धिओ णेव अभवसिद्धिओ णाम कधं भवदि ? ॥ ६६ ॥

एदं पि सुगमं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ६७ ॥

सुगममेदं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ६८ ॥

किमोदइएण किमुवसमिएण किं खइएण किं खओवसमिएण किं पारिणामिएणेत्ति बुद्धीए काऊणेदं कधं होदि त्ति वुत्तं ।

उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लद्धीए ॥ ६९ ॥

दंसणमोहणीयस्स उवसमेण उवसमसम्मत्तं होदि, खएण खइयं होदि, खओवसमेण वेदगसम्मत्तं । एदेसिं तिण्हं सम्मत्ताण जमेयत्तं तं सम्माइट्ठी णाम । तिस्से इमे तिण्णि भावा जेण अत्थि तेण सम्माइट्ठी उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लद्धीए होदि-त्ति उत्तं । कधमेयस्स तिण्णि भावा ? ण, पुधसामण्णस्स एक्कस्स अक्कमेणाणेयवण्णाणं जहा विरोहो णत्थि तहा एयस्स बहुपरिणामेहि विरोहाभावादो ।

खइयसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७० ॥

सुगममेदं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ७१ ॥

दंसणमोहणीयस्स णिस्सेसविणासो खओ णाम । तम्हि उप्पण्णजीवपरिणामो लद्धी णाम । तीए लद्धीए खइयसम्मादिट्ठी होदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदगसम्मादिट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७२ ॥

सुगममेदं ।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ७३ ॥

तं जहा—सम्मत्तदेसघादिफद्दयाणमणंतगुणहाणीए उदयमागदाणमइदहरदेसघादित्तणेण उवसंताणं जेण खओवसमसण्णा अत्थि तेण तत्थुप्पण्णजीवपरिणामो खओवसमलद्धीसण्णिदो । तीए खओवसमलद्धीए वेदगसम्मत्तं होदि ।

उवसमसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७४ ॥

सुगमं ।

उवसमियाए लद्धीए ॥ ७५ ॥

कुदो ? दंसणमोहणीयस्स उवसमेणेदस्सुप्पत्तिदंसणादो ।

सासणसम्माइट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७६ ॥

एत्थ पुव्वं व णिक्खेवे काऊण णोआगमदो भावसासणसम्माइट्ठी घेत्तव्वो । सो कधं होदि केण पयारेण होदि त्ति पुच्छा ।

पारिणामिएण भावेण ॥ ७७ ॥

एसो सासणपरिणामो खईओ ण होदि, दंसणमोहक्खएणाणुप्पत्तीदो । ण खओवसमिओ वि, देसघादिफद्दयाणमुदएण अणुप्पत्तीए । उवसमिओ वि ण होदि, दंसणमोहुवसमेणाणुप्पत्तीदो । ओदइओ वि ण होदि, दंसणमोहस्सुदएणाणुप्पत्तीदो । पारिसेसादो पारिणामिएण भावेण सासणो होदि । अणंताणुबंधीणमुदएण सासणगुणस्सुवलंभादो ओदइओ भावो किण्ण उच्चदे ? ण, दंसणमोहणीयस्स उदय-उवसम-खय-खओवसमेहि विणा उप्पज्जदि त्ति सासणगुणस्स कारणं चरित्तमोहणीयं तस्स दंसणमोहणीयत्तविरोहादो । अणंताणुबंधीचदुक्कं तदुभयमोहणं चे ? होदु णाम, किंतु णेदमेत्थ विवक्खियं । अणंताणुबंधीचदुक्कं चरित्तमोहणीयं चेवेत्ति विवक्खाए सासणगुणो पारिणामिओ त्ति भणिदो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मामिच्छादिट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ७८ ॥

सुगमं ।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ७९ ॥

सम्मामिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण सम्मामिच्छादिट्ठी जदो होदि तेण तस्स खओवसमिओ भावो त्ति ण जुज्जदे ? होदु णाम सम्मत्तं पडुच्च सम्मामिच्छत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तं, किंतु असुद्धणए विवक्खिए ण सम्मामिच्छत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तमत्थि, तेसिमुदए संते वि मिच्छत्तसंवलिदसम्मत्तकणस्सुवलंभादो । ताणि सव्वघादिफद्दयाणि उच्चंति जेसिमुदएण सव्वं घादिज्जदि । ण च एत्थ सम्मत्तस्स णिम्मूलविणासं पेच्छामो, सब्भूदासब्भूदत्थेसु तुल्लसद्दहणदंसणादो । तदो जुज्जदे सम्मामिच्छत्तस्स खओवसमिओ भावो त्ति ।

मिच्छादिट्ठी णाम कधं भवदि ? ॥ ८० ॥

सुगमं ।

मिच्छत्तकम्मस्स उदएण ॥ ८१ ॥

एदं पि सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८२ ॥

सुगमं ।

खओवसमियाए लद्धीए ॥ ८३ ॥

णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणं जादिवसेण अणंतगुणहाणीए हाइदूण देसघादित्तं पाविय उवसंताणमुदएण सण्णित्तदंसणादो । ॥ ३८ ॥

असण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८४ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओदइएण भावेण ॥ ८५ ॥

णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण असण्णित्तस्स दंसणादो । ण च णोइंदियावरणमसिद्धं कज्जण्णय-वदिरेगेहि कारणस्स अत्थित्तसिद्धीदो ।

णेव सण्णी णेव असण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८६ ॥

सुगममेदं ।

खइयाए लद्धीए ॥ ८७ ॥

णाणावरणस्स णिम्मूलक्खएणुप्पण्णपरिणामो इंदियणिरवेक्खलक्खणो खइया लद्धी णाम । तीए खइयाए लद्धीए णेव-सण्णी-णेव-असण्णित्तं होदि ।

आहाराणुवादेण आहारो णाम कधं भवदि ? ॥ ८८ ॥

सुगममेदं ।

ओदइएण भावेण ॥ ८९ ॥

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमुदएण चाहारो होदि । तेजा-कम्मइयाणमुदएण आहारो किण्ण वुच्चदे ? ण, विग्गहगदीए वि आहारित्तप्पसंगादो । ण च एवं, विग्गहगदीए अणाहारित्तदंसणादो ।

अणाहारो णाम कधं भवदि ? ॥ ९० ॥

सुगममेदं ।

ओदइएण भावेण पुण खइयाए लद्धीए ॥ ९१ ॥ ॥ ३९ ॥

अजोगिभयवंतस्स सिद्धाणं च अणाहारत्तं खइयं घादिकम्माणं सव्वकम्माणं च खएण । विग्गहगदीए पुण ओदइएण भावेण, तत्थ सव्वकम्माणमुदयदंसणादो । एवमेगजीवेण सामित्तं णाम अणियोगद्दारं समत्तं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगजीवेण कालाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १ ॥

एत्थ मूलोहो किण्ण परूविदो ? ण, चउग्गइपरूवणेण तदवगमादो । णिरयगइणिद्देसो सेसगइणिसेहट्ठो ।

जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि ॥ २ ॥

तिरिक्खस्स वा मणुस्सस्स वा दसवस्ससहस्साउट्ठिदीएसु णेरइएसु उप्पज्जिदूण णिप्फिडिदस्स दसवस्ससहस्समेत्तट्ठिदिदंसणादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३ ॥

तिरिक्खस्स वा मणुस्सस्स वा सत्तमाए पुढवीए तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिं बंधिऊण तत्थुप्पज्जिय सगट्ठिदिमणुपालिय णिप्फिडिदस्स तेत्तीससागरोवममेत्तणिरयभावुवलंभादो ।

पढमाए पुढवीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४ ॥

'केवचिरं' सद्दो समय-खण-लव-मुहुत्त-दिवस-पक्ख-मास-उडु-अयण-संवच्छर-जुग-पुव्व-पल्ल-सागरोवमादीणि अवेक्खदे । सेसं सुगमं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ ५ ॥

सुगममेदं, णिरओघम्मि परूविदत्तादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमं ॥ ६ ॥

पढमाए पुढवीए सागरोवमाउट्ठिदिं बंधिदूण पढमाए पुढवीए उप्पज्जिय सगट्ठिदिमणुपालिय णिप्फिडिदतिरिक्ख-मणुस्सेसु तदुवलंभादो । एदं पढमाए पुढवीए वुत्तजहण्णुक्कस्साउअं सीमंत-णिरय-रोरुअ-भंत-उब्भंत-संभंत-असंभंत-विब्भंत-तत्त-तसिद-वक्कंत-अवक्कंत-विक्कंतसण्णिदतेरसण्हमिंदयाणं ससेडीबद्ध-पइण्णयाणं किमेवं चेव होदि आहो ण होदि त्ति ? एदेसिं सव्वेसिं एदं चेव जहण्णुक्कस्साउअं ण होदि, किंतु सव्वेसिं पुध पुध जहण्णुक्कस्साउअं होदि । तं जहा—सीमंतम्मि ससेडीबद्ध-पइण्णयम्मि जहण्णमाउअं दसवस्ससहस्साणि, उक्कस्सं णउदिवस्ससहस्साणि १००००।९०००० । बिदियपत्थडे णउदिवस्ससहस्साणि समयाहियाणि जहण्णमाउअं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सं पुण णवुदिवस्ससदसहस्साणि । ९००००० । तदियपत्थडे जहण्णमाउअं णउदिवस्ससदसहस्साणि समयाहियाणि । ९००००० । उक्कस्समसंखेज्जाओ पुव्वकोडीओ । चउत्थपत्थडे जहण्णमसंखेज्जाओ पुव्वकोडीओ समयाहियाओ, उक्कस्सं सागरोवमस्स दसमभागो । इमं मुहं होदि अप्पत्तादो, सागरोवमं भूमी होदि बहुदरत्तादो । भूमिदो कयसरिसच्छेदादो मुहमवणिय ट्ठविदे सुद्धसेसमेत्तियं होदि $\frac{९}{१०}$ । पुणो उस्सेधो दस होदि, दससु अवट्ठिदवड्ढिहाणिदंसणादो । तत्थ दससु पढमस्स वड्ढी णत्थि त्ति एगरूवमवणिय सुद्धसेसण-ओवट्टिदे लद्धं वड्ढि-हाणिपमाणं होदि $\frac{१}{१०}$ । एत्थ उवउज्जंती करणगाहा— मुह-भूमीण विसेसो उच्छयभजिदो दु जो हवे वड्ढी । वड्ढी इच्छागुणिदा मुहसहिया होइ वड्ढिफलं ॥ १ ॥ पुणो एवमाणिदवड्ढिं दससु ठाणेसु ठविय एगादिएगुत्तरसलागाहि गुणिय मुहपक्खेवे कदे इच्छिद-इच्छिदपत्थडाणमाउअं होदि । तस्स पमाणमेदं $\frac{१}{१०}$ | $\frac{१}{५}$ | $\frac{३}{१०}$ | $\frac{२}{५}$ | $\frac{१}{२}$ | $\frac{३}{५}$ | $\frac{७}{१०}$ | $\frac{४}{५}$ | $\frac{९}{१०}$ | १ । एसो अत्थो सुत्ते अवुत्तो कधं णव्वदे ? किमिदि ण वुत्तो, वुत्तो चेव देसामासियभावेण । एदं सुत्तं देसामासियमिदि कुदो णव्वदे ? गुरूवदेसादो ।

बिदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण एक्क तिण्णि सत्त दस सत्तारस बावीस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ८ ॥

बिदियाए पुढवीए समयाहियमेक्कं सागरोवमं । तदियाए पुढवीए तिण्णि सागरोवमाणि समयाहियाणि । चउत्थीए पुढवीए सत्त सागरोवमाणि समयाहियाणि । पंचमीए पुढवीए दस सागरोवमाणि समयाहियाणि । छट्ठीए पुढवीए सत्तारस सागरोवमाणि समयाहियाणि । सत्तमीए पुढवीए बावीस सागरोवमाणि समयाहियाणि । सादिरेयमिदि वुत्ते एक्को चेव समओ अहिओ त्ति कधं णव्वदे ? 'उवरिल्लुक्कस्सट्ठिदी समयाहिया हेट्ठिमपुढवीणं जहण्णा' त्ति वयणादो णव्वदे ।

उक्कस्सेण तिण्णि सत्त दस सत्तारस बावीस तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ९ ॥

एत्थ जहासंखणाओ अल्लिएदव्वो । एदाणि दोवि सुत्ताणि देसामासियाणि, पादेक्कं पुढवीणं जहण्णुक्कस्सट्ठिदीपरूवणामुहेण सव्व-पत्थडाणमाउट्ठिदिसूचणादो । एदेहि दोहि वि सुत्तेहि सूचिदत्थस्स परूवणं कस्सामो । तं जहा– तणओ थणओ वणओ मणओ घादो संघादो जिब्भो जिब्भओ लोलो लोलुवो थणलोलुवो चेदि एदे बिदियपुढवीए इंदया । एदेसिमाउट्ठिदीए आणिज्जमाणाए पढमपुढवि-उक्कस्साउअं मुहं काऊण बिदियाए पुढवीए उक्कस्साउअं तिण्णिसागरोवमपमाणं भूमिं काऊण एक्कारस इंदए उस्सेहं काऊण पुव्विल्ल-

करणगाहाए बिदियपुढवीएक्कारसपत्थडाणं पादेक्कमाउपमाणमाणेदव्वं । तेसिं पमाणमेदं

१ २/११	१ ४/११	१ ६/११	१ ८/११	१ १०/११	२ १/११	२ ३/११	२ ५/११	२ ७/११	२ ९/११	३

। तदियाए पुढवीए तत्तो तसिदो तवणो तावणो णिदाहो पज्जलिदो उज्जलिदो सुपज्जलिदो संपज्जलिदो त्ति एदे णव इंदया । एदेसिमाउअं पुव्वं व जाणिदूण आणेदव्वं । तेसिं संदिट्ठी एसा

३ ४/९	३ ८/९	४ ३/९	४ ७/९	५ २/९	५ ६/९	६ १/९	६ ५/९	७

। चउत्थीए पुढवीए आरो तारो मारो वंतो तमो खादो खदखदो चेदि सत्त इंदया । एदेसिमाउअपमाणं पुव्वं व आणेदव्वं । तस्स संदिट्ठी एसा

७ ३/७	७ ६/७	८ २/७	८ ५/७	९ १/७	९ ४/७	१०

। पंचमीए पुढवीए तमो भमो झसो अंधो तिमिसो चेदि पंच इंदया । एदेसिमाउअपमाणस्स संदिट्ठी एसा

११ २/५	१२ ४/५	१४ १/५	१५ ३/५	१७

। छट्ठीए पुढवीए हिमो वद्दलो लल्लंको चेदि तिण्णि इंदया । तेसिमाउअपमाणस्स संदिट्ठी एसा

१८ २/३	२० १/३	२२

। सत्तमाए पुढवीए अवहिट्ठाणमिदि एक्को चेव इंदओ । तत्थ जहण्णुक्कस्साउअं च समयाहियं बावीसं तेत्तीसं सागरोवमाणि २२ । २३ ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १० ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११ ॥

मणुस्सेहिंतो आगंतूण तिरिक्खअपज्जत्तेसुप्पज्जिय तत्थ जहण्णाउट्ठिदिमच्छिय णिप्फिडिदूण गदस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्त-जहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १२ ॥

अणप्पिदगदीहिंतो आगंतूण तिरिक्खेसुप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे तिरिक्खेसु परियट्टिदूण अण्णगदिं गदस्स सुत्तुत्तकालुवलंभादो । असंखेज्जपोग्गलपरियट्टेत्ति वुत्ते आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति । वड्ढिया ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? ण, आइरियपरंपरागदुवदेसादो ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १३ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं ॥ १४ ॥

पंचिंदियतिरिक्खाणं खुद्दाभवग्गहणं, तत्थ अपज्जत्ताणं संभवादो। सेसेसु अंतोमुहुत्तं, तत्थ अपज्जत्ताणमभावादो। ण च पज्जत्तेसु जहण्णाउट्ठिदिपमाणं खुद्दाभवग्गहणं होदि, अंतोमुहुत्तुवदेसस्स एदस्स अणत्थयत्तप्पसंगादो।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ १५ ॥

अण्णिदिएहिंतो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु उप्पज्जिय जहाकमेण पंचाणउदि-सत्तत्तालीस-पण्णारसपुव्वकोडीओ परिभमिय दाणेण दाणाणुमोदणेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु तिरिक्खेसु उप्पज्जिय सगआउट्ठिदिमच्छिय देवेसु उप्पण्णस्स एत्तियमेत्तकालस्सुवलंभादो। कधं तिरिक्खेसु दाणस्स संभवो ? ण, तिरिक्खसंजदासंजदाणं सचित्तभंजणे गहिदपच्चक्खाणाणं सल्लइपल्लवादिं देंततिरिक्खाणं तदविरोधादो। इत्थि-पुरिस-णवुंसयवेदेसु अट्ठट्ठपुव्वकोडीओ अच्छदि त्ति कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागयउवदेसादो।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १६ ॥

सुगममेदं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १७ ॥

अणप्पिदेहिंतो आगंतूण पंचिंदिय-तिरिक्ख-अपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णकालेण भुंजमाणाउअं कदलीघादेण घादिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय णिप्पिडिदस्स एतदुवलंभादो। पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु कदलीघादेण घादिदभुंजमाणाउएसु खुद्दाभवग्गहणकालो किमिदि णोवलब्भदे ? ण, तत्थ अइसुट्ठुघादं पत्तस्स वि भुंजमाणाउअस्स अंतोमुहुत्तस्स हेट्ठदो पदणाभावा। देव-णेरइएसु खुद्दाभवग्गहणमेत्ता अंतोमुहुत्तमेत्ता वा आउट्ठिदी किण्ण लब्भदे ? ण, तत्थ दसण्हं वस्ससहस्साणं हेट्ठदो आउअस्स बंधाभावा, तत्थतणभुंजमाणाउअस्स कदलीघादाभावादो च।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वुक्कस्सियं भवट्ठिदिमच्छिय णिप्पिडिदस्स वि अंतोमुहुत्तादो अहियकालस्साणुवलंभा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १९ ॥

एगजीवस्स कालाणुगमे कीरमाणे 'मणुसो केवचिरं कालादो होदि' त्ति एगजीवविसयपुच्छाए होदव्वमिदि ? ण, एक्कम्हि वि जीवे एयाणेयसंखोवलक्खिए असुद्धदव्वट्ठियविवक्खाए अणेयत्तस्स अविरोहादो । सव्वत्थ पुच्छापुव्वो चेव अत्थणिद्देसो किमट्ठं कीरदे ? ण, वयणपवुत्तीए परट्ठत्तपदुप्पायणफलत्तादो ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ २० ॥

सामण्णमणुस्साणं जहण्णाउट्ठिदिपमाणं खुद्दाभवग्गहणं होदि, तत्थ अपज्जत्ताणं संभवादो । पज्जत्त-मणुसिणीसु जहण्णाउट्ठिदिपमाणमंतोमुहुत्तं, तत्थ तत्तो हेट्ठिमआउट्ठिदिवियप्पाणमणुवलंभादो । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ २१ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण अप्पिदमणुसेसुववज्जिय सत्तेतालीस-तेवीस-सत्तपुव्वकोडीओ जहाकमेण परिभमिय दाणेण दाणाणुमोदेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिमणुस्सेसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

मणुस्सअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २२ ॥

कधमेत्थ बहुवयणणिद्देसो जुज्जदे ? ण, पुव्वुत्तकमेण एक्कम्हि बहुत्तणिद्देसस्स अविरोधादो । अधवा ण एत्थ एक्केण चेव जीवेण अहियारो, किंतु पादेक्कं सव्वजीवेहि अहियारो त्ति काऊण बहुवयणणिद्देसो उववज्जदे ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ २३ ॥

कुदो ? अणप्पिदेहिंतो आगंतूण तत्थुप्पज्जिय घादखुद्दाभवग्गहणमच्छिय णिप्फिडिदूण अणप्पिएसु उप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २४ ॥

कुदो ? अइबहुवारमेदेसु अइदीहाउओ होदूण उप्पण्णस्स वि दोघडियामेत्तभवट्ठिदीए अभावादो ।

देवगदीए देवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २५ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ २६ ॥

तिरिक्ख-मणुस्सेहिंतो जहण्णाउट्ठिदिदेवेसुप्पज्जिय णिग्गयस्स एत्तियमेत्तकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ २७ ॥

सव्वट्ठसिद्धिदेवेसु आउअं बंधिय कमेण तत्थुप्पज्जिय तेत्तीससागरोवमाणि तत्थच्छिदूण णिग्गयस्स तदुवलंभादो । सत्तट्ठभवग्गहणाणि दीहाउट्ठिदिएसु देवेसु उप्पाइदे कालो बहुओ लब्भदि त्ति वुत्ते ण, देव-णेरइयाणं भोगभूमितिरिक्ख-मणुस्साणं च मुदाणं पुणो तत्थेवाणंतरमुप्पत्तीए अभावादो । कुदो ? अच्चंताभावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २८ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि, दसवाससहस्साणि, पलिदोवमस्स अट्ठमभागो ॥ २९ ॥

भवणवासिय-वाणवेंतराणं दसवाससहस्साणि जहण्णाउट्ठिदी, जोदिसियाणं पलिदोवमस्स अट्ठमो भागो । वियच्चासो किण्ण होदि ? ण, समेसु उद्देसाणुद्देसीसु जहासंखं मोत्तूण अण्णस्सासंभवादो । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमं सादिरेयं, पलिदोवमं सादिरेयं, पलिदोवमं सादिरेयं ॥ ३० ॥

भवणवासिएसु सागरोवममद्धसागरोवमहियं । वाणवेंतर-जोदिसिएसु पलिदोवमं अद्धपलिदोवमहियं उक्कस्सट्ठिदिपमाणं होदि । ण च बंधसुत्तेण सह विरोहो, उवरिमआउवमोवट्टणाघादेण घादिय उप्पण्णेसु एदेसिमाउवाणमुवलंभादो । एत्थ सव्वत्थ किंचूणपमाणं जाणिदूण वत्तव्वं । एदेसु तिसु वि देवलोएसु जहण्णाउअप्पहुडि जावुक्कस्साउवं त्ति समउत्तरवड्डीए आउवं वड्ढदि, पत्थडाणमभावा । सेसं सुगमं ।

सोहम्मीसाणप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ३१ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण पलिदोवमं वे सत्त दस चोद्दस सोलस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३२ ॥

सोधम्मीसाणेसु दिवड्ढपलिदोवमं जहण्णाउअं, सणक्कुमार-माहिंदेसु अड्डाइज्जसागरोवमाणि, बम्ह-बम्होत्तरेसु साद्धसत्तसागरोवमाणि लांतव-काविट्ठेसु साद्धदससागरोवमाणि, सुक्क-महासुक्केसु साद्धचोद्दससागरोवमाणि, सदर-सहस्सारकप्पेसु साद्धसोलससागरोवमाणि जहण्णाउवं।

उक्कस्सेण वे सत्त दस चोद्दस सोलस अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३३ ॥

सोहम्मीसाणेसु अड्डाइज्जसागरोवमाणि देसूणाणि, सणक्कुमार-माहिंदेसु साद्धसत्तसागरोवमाणि देसूणाणि, बम्ह-बम्होत्तरेसु साद्धदससागरोवमाणि देसूणाणि, लांतव-कापिट्ठेसु साद्धचोद्दससागरोवमाणि देसूणाणि, सुक्क-महासुक्केसु साद्धसोलससागरोवमाणि देसूणाणि, सदर-सहस्सारेसु साद्धअट्ठारससागरोवमाणि देसूणाणि। एत्थ देसूणपमाणं जाणिदूण वत्तव्वं। एदाणि दो वि सुत्ताणि देसामासयाणि। तेणेदेहि सूइदत्थस्स परूवणं कस्सामो। तं जहा–उदू विमलो चंदो वग्गू वीरो अरुणो णंदणो णलिणो कांचणो रुहिरो चंचो मरुदिड्ढिसो वेलुरिओ रुजगो रुचिरो अंको फलिहो तवणीओ मेहो अब्भं हरिदो पउमं लोहिदंको वरिट्ठो णंदावत्तो पहंकरो पिट्ठओ गजो मित्तो पभा चेदि सोधम्मीसाणे एक्कतीस पत्थडा होंति। एत्थ उदुम्हि पढमपत्थडे जहण्णमाउअं दिवड्ढपलिदोवमं उक्कस्समद्धसागरोवमं। एत्तो तीसण्हं इंदियाणं वड्ढी वुच्चदे। तत्थ अद्धसागरोवमं मुहं होदि, भूमी अड्डाइज्जसागरोवमाणि। भूमीदो मुहमवणिय उच्छएण भागे हिदे सागरोवमस्स पण्णारसभागो वड्ढी होदि [१/१५]। एदमिच्छिदपत्थडसंखाए गुणिय मुहे पक्खित्ते विमलादीणं तीसण्हं पत्थडाणमाउआणि होंति। तेसिमेसा संदिट्ठी—

१७/३०	१९/३०	७/१०	२३/३०	५/६	९/१०	२९/३०	३१/३०	११/१०	७/६	३७/३०	१३/१०	४१/३०	४३/३०	३/२	४७/३०	४९/३०	१७/१०	५३/३०	११/६	१९/१०	५९/३०	६१/३०	२१/१०	१३/६	६७/३०	२३/१०	७१/३०	७३/३०	५/२

सोधम्मीसाणे एक्कत्तीसं पत्थडाणि त्ति कधं णव्वदे? इगितीस सत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क एक्काए। उदुआदिविमाणिंदा तिरधियसट्ठी मुणेयव्वा ॥ २ ॥ इदि आरिसवयणादो। अंजणो वणमालो णागो गरुडो लंगलो बलहद्दो चक्कमिदि एदे सणक्कुमारमाहिंदेसु सत्त पत्थडा। एदेसिमाउअप्पमाणे आणिज्जमाणे मुहमड्डाइज्जसागरोवमाणि, भूमी साद्धसत्तसागरोवमाणि, सत्त उस्सेहो होदि। तेसिं संदिट्ठी—

३ ३/१४	३ १३/१४	४ ९/१४	५ ५/१४	६ १/१४	६ ११/१४	७ १/२

। अरिट्ठो देवसमिदो बम्हो बम्हुत्तरो त्ति चत्तारि बम्ह-बम्हुत्तरकप्पेसु पत्थडा। एदेसिमाउआणं संदिट्ठी एसा—

८ १/४	९ ०/०	९ ३/४	१० १/२

। बम्हणिलओ लंतओ त्ति लांतय-काविट्ठेसु दोण्णि पत्थडा। तेसिमाउआणमेसा संदिट्ठी—

१२ १/२	१४ १/२

। महासुक्को त्ति एक्को चेव पत्थडो सुक्क-महासुक्ककप्पेसु। तम्हि आउअस्स एसा संदिट्ठी [१६ १/२]। सहस्सारो त्ति एक्को चेव पत्थडो सदर-सहस्सारकप्पेसु। तस्स आउअस्स संदिट्ठी [१८ १/२]।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३४ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण अट्ठारस वीसं बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणत्तीसं तीसं एक्कत्तीसं बत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३५ ॥

आणद-पाणदकप्पे साद्धअट्ठारससागरोवमाणि । आरण-अच्चुदकप्पे समयाहियवीसं सागरोवमाणि । उवरि जहाकमेण णवगेवज्जेसु बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणत्तीसं तीसं सागरोवमाणि समयाहियाणि । णवाणुद्दिसेसु एक्कत्तीससागरोवमाणि समयाहियाणि । चदुसु अणुत्तरेसु बत्तीसं सागरोवमाणि समयाहियाणि । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण वीसं बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणतीसं तीसं एक्कत्तीसं बत्तीसं तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३६ ॥

एदाणि उक्कस्साउआणि जहण्णाउअविहाणेण जोजेयव्वाणि । एदेहि जहण्णुक्कस्ससुत्तेहि देसामासिएहि सूइदत्थस्स परूवणा कीरदे । तं जहा—आणदो पाणदो पुप्फओ त्ति आणद-पाणदकप्पेसु तिण्णि पत्थडा । तेसिमाउअस्स पुव्वुत्तकमेण आणिदसंदिट्ठी एसा—| १९ | १९ १/२ | २० | । सादंकरो आरणो अच्चुदो त्ति आरण-अच्चुदकप्पेसु तिण्णि पत्थडा । एदेसिमाउआणं संदिट्ठी—| २० २/३ | २१ १/३ | २२ | । एत्तो उवरि सुदंसणो अमोघो सुप्पबुद्धो जसोहरो सुभद्दो सुविसालो सुमणसो सोमणसो पीदिंकरो त्ति एदे णव पत्थडा णवगेवज्जेसु । एदेसिमाउवाणं वड्ढि-हाणीओ णत्थि, पादेक्कमेक्केक्कपत्थडस्स पाहण्णियादो । तेसिमाउआणं संदिट्ठी एसा—| २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | । णवाणुद्दिसेसु आइच्चो णाम एक्को चेव पत्थडो । तम्हि आउअं एत्तियं होदि | ३२ | । पंचाणुत्तरेसु सव्वट्ठसिद्धिसण्णिदो एक्को चेव पत्थडो । विजय-वैजयंत-जयंत-अवराजिदाणं जहण्णाउअं समयाहियबत्तीससागरोवममेत्तमुक्कस्सं तेत्तीससागरोवमाणि । जहण्णुक्कस्सभेदाभावादो सव्वट्ठसिद्धिविमाणस्स पुध परूवणा कीरदे— ॥ ४७ ॥

सव्वट्ठसिद्धियविमाणवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३७ ॥

गयत्थमेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णुक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३८ ॥

एदं पि सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३९ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४० ॥

कुदो ? अणप्पिदिंदिएहिंतो एइंदिएसुप्पज्जिय घादखुद्दाभवग्गहणमेत्तकालमच्छिय अण्णिंदियं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ४१ ॥

कुदो ? अणप्पिदिंदिएहिंतो एइंदिएसुप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे कुंभारचक्कं व परियट्टिय अण्णिंदियं गयस्स तदुवलंभादो ।

बादरेइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४२ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ ॥ ४४ ॥

अणप्पिदिंदिएहिंतो बादरेइंदिएसुप्पज्जिय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमसंखेज्जासंखेज्ज-ओसप्पिणीउवसप्पिणीमेत्तकालं कुलालचक्कं व तत्थेव परिभमिय णिग्गयस्स एदस्स संभवुवलंभा ।

बादरएइंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४५ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४६ ॥

पज्जत्तएसु अंतोमुहुत्तं मोत्तूण अण्णस्स जहण्णाउअस्स अणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ४७ ॥

अणप्पिदिंदिएहिंतो बादरेइंदियपज्जत्तएसुप्पज्जिय संखेज्जाणि वाससहस्साणि तत्थेव परिभमिय णिग्गयस्स तदुवलंभादो । बहुवं कालं तत्थ किण्ण हिंडदे ? ण, केवलणाणादो विणिग्गयजिणवयणस्सेदस्स सयलपमाणेहिंतो अहियस्स विसंवादाभावा ।

बादरेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५० ॥

अणेयसहस्सवारं तत्थेव पुणो पुणो उप्पण्णस्स वि अंतोमुहुत्तं मोत्तूण उवरि आउठिदीणमणुवलंभादो ।

सुहुमेइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५२ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ५३ ॥

अणिंदिएहिंतो आगंतूण सुहुमेइंदिएसुप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तकालमहिहिदजलं व तत्थेव परिभमिय णिग्गयम्मि तदुवलंभादो । ॥ ४९ ॥ बादरट्ठिदीदो किमट्ठं सुहुमट्ठिदी ण अब्भहिया जादा ? ण, बादरेइंदिएसु आउवबंधमाणवारेहिंतो सुहुमेइंदिएसु आउवबंधमाणवाराणमसंखेज्जगुणत्तादो । तं कधं णव्वदे ? एदम्हादो जिणवयणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमेइंदिया पज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५५ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५६ ॥

अणेयसहस्सवारं तत्थुप्पण्णे वि अंतोमुहुत्तादो अहियभवट्ठिदीए अणुवलंभा ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५९ ॥

सुहुमेइंदियपज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च उक्कस्सभवट्ठिदिपमाणमंतोमुहुत्तमेव, सुहुमाणं पुण भवट्ठिदी असंखेज्जा लोगा, कधमेदं ण विरुज्झदे ? ण, पज्जत्तापज्जत्तएसु असंखेज्जालोगमेत्तवारगदिमागदिं च करेंतस्स तदविरोधादो ।

बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ ६१ ॥

एत्थ जहाकमेण बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियाणं सगंतब्भूदअपज्जत्तसंभवादो खुद्दाभवग्गहणमेदेसिं चेव पज्जत्ताणमंतोमुहुत्तं, तत्थ अपज्जत्ताणमभावादो ।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ६२ ॥

अणप्पिदिंदिएहिंतो आगंतूण बारसवास-एगुणवण्णरादिंदिय-छम्मासाउएसु बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिएसुप्पज्जिय बहुवारं तत्थेव परियट्टिय णिग्गयस्स वुत्तकालसंभवादो ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ६४ ॥ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६५ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ ६७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ६८ ॥

पंचिंदियाणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियसागरोवमसहस्साणि । एत्थ सागरोवमसहस्समिदि एगवयणेण होदव्वं, बहूणं सहस्साणमभावादो ? ण, सागरोवमेसु बहुत्तदंसणादो । ण सहस्ससद्दस्स पुव्वणिवादो होदि त्ति आसंकणिज्जं, लक्खाणुसारेण लक्खणस्स पुवुत्तिदंसणादो । पज्जत्ताण पुण सागरोवमसदपुधत्तं । कधमेदं णव्वदे ? जहासंखणायादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७० ॥ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७१ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७२ ॥

एदं पि सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ७४ ॥

अणप्पिदकायादो आगंतूण अप्पिदकायम्मि समुप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तकालं तत्थ परियट्टिय णिग्गयम्मि तदुवलंभादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७६ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी ॥ ७७ ॥

कम्मट्ठिदि त्ति वुत्ते सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता घेत्तव्वा, कम्मविसेसट्ठिदिं मोत्तूण कम्मस्साउट्ठिदिगहणादो । के वि आइरिया सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे बादरपुढविकायादीणं कायट्ठिदी होदि त्ति भणंति । तेसिं कम्मट्ठिदिववएसो कज्जे कारणोवयारादो । एदं वक्खाणमत्थि त्ति कधं णव्वदे ? कम्मट्ठिदिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे बादरट्ठिदी होदि त्ति परियम्मवयणण्णहाणुववत्तीदो । तत्थ सामण्णेण बादरट्ठिदी होदि त्ति जदि वि उत्तं तो वि पुढविकायादीणं बादराणं पत्तेयकायट्ठिदी घेत्तव्वा, असंखेज्जासंखेज्जाओ ओस्सप्पिणी-उस्सप्पिणीओ त्ति सुत्तम्मि बादरट्ठिदिपरूवणादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ८० ॥

अणप्पिदकायादो आगंतूण बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु जहाकमेण बावीस-वस्ससहस्स-सत्तवस्ससहस्स-तिण्णिदिवस-तिण्णिवस्ससहस्स-दसवस्ससहस्साउएसु उप्पज्जिय संखेज्जवस्ससहस्साणि तत्थच्छिय णिग्गदस्स तदुवलंभादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-अपज्जता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८२ ॥ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८३ ॥

एदाणि वि सुगमाणि ।

सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणं भंगो ॥ ८४ ॥ ॥ ५३ ॥

जहा सुहुमेइंदियाणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा तधा एदेसिं सुहुमपुढविआदीणं छण्हं जहण्णुक्कस्सकाला होंति । जहा सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं जहण्णकालो उक्कस्सकालो वि अंतोमुहुत्तं होदि तहा सुहुमपुढविकायादीणं छण्हं पज्जत्ताणं जहण्णुक्क-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

स्सकाला होंति । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्ताणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सो अंतोमुहुत्तं तहा एदेसिं छण्हमपज्जत्ताणं जहण्णुक्कस्सकाला होंति त्ति भणिदं होदि । सुहुमणिगोदग्गहणमणत्थयं, सुहुमवणप्फदिकाइयग्गहणेणेव सिद्धीदो । ण च सुहुमवणप्फदिकाइयवदिरित्ता सुहुमणिगोदा अत्थि, तहाणुवलंभादो ? णेदं जुज्जदे, जत्थ सुत्तं णत्थि तत्थ आइरियवयणाणं वक्खाणाणं च पमाणत्तं होदि । जत्थ पुण जिणवयणविणिग्गयं सुत्तमत्थि ण तत्थ एदेसिं पमाणत्तं । सुहुमवणप्फदिकाइए भणिदूण सुहुमणिगोदजीवा सुत्तम्मि परूविदा, तदो एदेसिं पुध परूवणण्णहाणुववत्तीदो सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदाणं विसेसो अत्थि त्ति णव्वदे ।

वणप्फदिकाइया एइंदियाणं भंगो ॥ ८५ ॥

जहा एइंदियाणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सो अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तहा वणप्फदिकाइयाणं जहण्णकालो उक्कस्सकालो च होदि त्ति उत्तं होइ ।

णिगोदजीवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ८८ ॥

अणिगोदजीवस्स णिगोदेसु उप्पण्णस्स उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टेहिंतो उवरि पविभवणाभावादो ।

बादरणिगोदजीवा बादरपुढविकाइयाणं भंगो ॥ ८९ ॥

जहा बादरपुढविकाइयाणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सो कम्मट्ठिदी तहा एदेसिं जहण्णुक्कस्सकाला होंति । जहा बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं कालो तहा बादरणिगोदपज्जत्ताणं होदि । णवरि बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं उक्कस्साउट्ठिदी संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, बादरणिगोदपज्जत्ताणं पुण उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं । जहा बादरपुढविकाइयअपज्जत्ताणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं तहा बादरणिगोदअपज्जत्ताणं जहण्णुक्कस्सकालो त्ति भणिदं होदि ।

तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं ॥ ९१ ॥

सुगममेदं पि ।

उक्कस्सेण बे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि बे सागरोवमसहस्साणि ॥ ९२ ॥

तसकाइयाणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि बे सागरोवमसहस्साणि, तेसिं पज्जत्ताणं बे सागरोवमसहस्सं चेव । कुदो ? जहा-संखणायादो ।

तसकाइयअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ९४ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९५ ॥

एदं पि सुगमं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९६ ॥

'जोगिणो' इदि वयणादो बहुवयणणिद्देसो किण्ण कदो ? ण, पंचण्हं पि एयत्ताविणाभावेण एयवयणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ ९७ ॥

मणजोगस्स ताव एगसमयपरूवणा कीरदे । तं जहा–एगो कायजोगेण अच्छिदो कायजोगद्धाए खएण मणजोगे आगदो, तेणेगसमयमच्छिय बिदियसमये मरिय कायजोगी जादो । लद्धो मणजोगस्स एगसमओ । अधवा कायजोगद्धाखएण मणजोगे आगदे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदियसमए वाघादिदस्स पुणरवि कायजोगो चेव आगदो । लद्धो विदियपयारेण एगसमओ । एवं सेसाणं चदुण्हं मणजोगाणं पंचण्हं वचिजोगाणं च एगसमयपरूवणा दोहि पयारेहि णादूण कायव्वा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९८ ॥

अणप्पिदजोगादो अप्पिदजोगं गंतूण उक्कस्सेण तत्थ अंतोमुहुत्तावट्ठाणं पडि विरोहाभावादो ।

कायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ९९ ॥

किमट्ठमेत्थ एगवयणणिद्देसो कदो ? ण एस दोसो, एगजीवं मोत्तूण बहूहि जीवेहि एत्थ पओजणाभावादो ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०० ॥

अणप्पिदजोगादो कायजोगं गदस्स जहण्णकालस्स वि अंतोमुहुत्तपमाणं मोत्तूण एगसमयादिपमाणाणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १०१ ॥

अणप्पिदजोगादो कायजोगं गंतूण तत्थ सुट्ठु दीहद्धमच्छिय कालं करिय एइंदियेसु उप्पण्णस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिदस्स कायजोगुक्कस्सकालुवलंभादो ।

ओरालियकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १०३ ॥

मणजोगेण वचिजोगेण वा अच्छिय तेसिमद्धाखएण ओरालियकायजोगंगदबिदियसमए कालं कादूण जोगंतरं गदस्स एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सेण बावीसं वाससहस्साणि देसूणाणि ॥ १०४ ॥

बावीसवाससहस्साउअपुढवीकाइएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णेण कालेण ओरालियमिस्सद्धं गमिय पज्जत्तिंगदपढमसमयप्पहुडि जाव अंतोमुहुत्तूणबावीसवाससहस्साणि ताव ओरालियकायजोगुवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी आहारकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०५ ॥ जहण्णेण एगसमओ ॥ १०६ ॥

ओरालियकायजोगाविणाभाविदंडादो कवाडंगदसजोगिजिणम्हि ओरालियमिस्सस्स एगसमओ लब्भदे, तत्थ ओरालियमिस्सेण विणा अण्णजोगाभावादो । मण-वचिजोगेहिंतो वेउव्वियजोगंगदबिदियसमए मदस्स एगसमओ वेउव्वियकायजोगस्स उवलब्भदे, मुदपढमसमए कम्मइय-ओरालिय-वेउव्वियमिस्सकायजोगे मोत्तूण वेउव्वियकायजोगाणुवलंभादो । मण-वचिजोगेहिंतो आहारकायजोगंगदबिदियसमए मुदस्स मूलसरीरं पविट्ठस्स वा आहारकायजोगस्स एगसमओ लब्भदे, मुदाणं मूलसरीरपविट्ठाणं च पढमसमए आहारकायजोगाणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०७ ॥

मणजोगादो वचिजोगादो वा वेउव्विय-आहारकायजोगं गंतूण सव्वुक्कस्सं अंतोमुहुत्तमच्छिय अण्णजोगं गदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो, अणप्पिदजोगादो ओरालियमिस्सजोगं गंतूण सव्वुक्कस्सकालमच्छिय अण्णजोगं गदस्स ओरालियमिस्सस्स अंतोमुहुत्तमेत्तुक्कस्सकालुवलंभादो । सुहुमेइंदियअपज्जत्तएसु बादरेइंदियअपज्जत्तएसु च सत्तट्ठभवग्गहणाणि णिरंतरमुप्पण्णस्स बहुओ कालो किण्ण लब्भदे ? ण, ताओ सव्वाओ ट्ठिदीओ एक्कदो कदे वि अंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०९ ॥

एगसमओ किण्ण लब्भदे ? ण, एत्थ मरण-जोगपरावत्तीणमसंभवादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११० ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कम्मइयकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १११ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ११२ ॥

एगविग्गहं कादूण उप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तिण्णि समया ॥ ११३ ॥

तिण्हं समयाणमुवरि विग्गहाणुवलंभादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ११४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ११५ ॥

उवसमसेडीदो ओदरिय सवेदो होदूण बिदियसमए मुदस्स पुरिसवेदेण परिणयस्स एगसमओवलंभादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं ॥ ११६ ॥

अणप्पिदवेदादो इत्थिवेदं गंतूण पलिदोवमसदपुधत्तं तत्थेव परिभमिय पच्छा अण्णवेदं गदो । सदपुधत्तमिदि किं ? तिसदप्पहुडि जाव णवसदाणि त्ति एदे सव्ववियप्पा सदपुधत्तमिदि वुच्चंति ।

पुरिसवेदा केवचिरं कालादो होंति ? ११७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११८ ॥

पुरिसवेदोदएण उवसमसेडिं चढिय अवगदवेदो होदूण पुणो उवसमसेडीदो ओदरमाणो सवेदो होदूण वेदस्स आदिं करिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमद्धमच्छिय पुणो उवसमसेढिं चढिय अवगदवेदभावं गदम्मि पुरिसवेदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालस्सुवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ११९ ॥

णवुंसयवेदम्मि अणंतकालमसंखेज्जलोगमेत्तं वा अच्छिय पुरिसवेदं गंतूण तमछंडिय सागरोवमसदपुधत्तं तत्थेव परिभमिय अण्णवेदं गदस्स तदुवलंभादो । [९००] एदमेत्थ सदपुधत्तमिदि गहिदं

णवुंसयवेदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १२० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १२१ ॥

णवुंसयवेदोदएण उवसमसेढिं चडिय ओदरिय सवेदो होदूण विदियसमए कालं करिय पुरिसवेदं गदस्स एगसमयदंसणादो । पुरिसवेदस्स एगसमओ किण्ण लद्धो ? ण, अवगदवेदो होदूण सवेदजादविदियसमए कालं करिय देवेसुप्पण्णो वि पुरिसवेदं मोत्तूण अण्णवेदस्सुदयाभावेण एगसमयाणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १२२ ॥

अणप्पिदवेदा णवुंसयवेदयं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे परियट्टिदूण अण्णवेदं गदस्स तदुवलद्धीदो ।

अवगदवेदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १२३ ॥

सुगमं ।

उवसमं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १२४ ॥

उवसमसेडिं चडिय अवगदवेदो होदूण एगसमयमच्छिय विदियसमए कालं कादूण वेदभावं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२५ ॥

इत्थिवेदोदएण णवुंसयवेदोदएण वा उवसमसेडिं चडिय अवगदवेदो होदूण सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय वेदभावं गदस्स तदुवलंभादो । ॥ ५९ ॥

खवगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२६ ॥

खवगसेडिं चढिय अवगदवेदो होदूण सव्वजहण्णेण कालेण परिणिव्वुदस्स तदुवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ १२७ ॥

देवस्स णेरइयस्स वा खइयसम्माइट्ठिस्स पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववज्जिय अट्ठवस्साणि गमिय संजमं पडिवज्जिय सव्वजहण्णकालेण खवगसेडिं चडिय अवगदवेदो होदूण केवलणाणं समुप्पाइय देसूणपुव्वकोडिं विहरिय अबंधगभावं गदस्स तदुवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ १२९ ॥

अणप्पिदकसायादो कोधकसायं गंतूण एगसमयमच्छिय कालं करिय णिरयगइं मोत्तूणण्णगईसुप्पण्णस्स एगसमओवलंभादो । कोधस्स वाघादेण एगसमओ णत्थि, वाघादिदे वि कोधस्सेव समुप्पत्तीदो । एवं सेसतिण्हं कसायाणं पि एगसमयपरूवणा कायव्वा । णवरि एदेसिं तिण्हं कसायाणं वाघादेण वि एगसमयपरूवणा कायव्वा । मरणेण एगसमए भण्णमाणे माणस्स मणुसगइं, मायाए तिरिक्खगइं, लोभस्स देवगइं मोत्तूण सेसासु तिसु गईसु उप्पाएअव्वो । कुदो ? णिरय-मणुस-तिरिक्ख-देवगईसु उप्पण्णाणं पढमसमए जहाक्कमेण कोध-माण-माया-लोभाणं चेवुदयदंसणादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १३० ॥

अणप्पिदकसायादो अप्पिदकसायं गंतूणुक्कस्सकालं तत्थ ट्ठिदस्स वि अंतोमुहुत्तादो अधियकालाणुवलंभादो ।

अकसाई अवगदवेदभंगो ॥ १३१ ॥

जहा अवगदवेदाणं उवसमसेडिं खवगसेडिं च पडुच्च जहण्णेण एगसमयअंतोमुहुत्तपरूवणा, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त-देसूणपुव्वकोडिपरूवणा च कदा तधा अकसायाणं पि जहण्णुक्कस्सेहि कालपरूवणा कादव्वा त्ति भणिदं होदि । ॥ ६० ॥

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३२ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १३३ ॥

अभवियं पडुच्च एसो णिद्देसो, अभव्वसमाणभव्वं वा ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १३४ ॥

एसो भवियजीवं पडुच्च णिद्देसो कदो ।

सादिओ सपज्जवसिदो ॥ १३५ ॥

एसो णिद्देसो णाणादो अण्णाणंगदभवियजीवं पडुच्च कदो ।

जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो णिद्देसो–जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १३६ ॥

सम्माइट्ठिस्स मिच्छत्तं गंतूण मदि-सुदअण्णाणाणि पडिवज्जिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय सम्मत्तं गंतूण पडिवण्णमदि-सुदणाणस्स जहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १३७ ॥

अणादियमिच्छाइट्ठिस्स तिण्णि वि करणाणि अद्धपोग्गलपरियट्टस्स बाहिं काऊण पोग्गलपरियट्टादिसमए उवसमसम्मत्तं घेत्तूण आभिणिबोहिय-सुदणाणाणि पडिवज्जिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय छआवलियाओ अत्थि त्ति सासणं गंतूण मदि-सुद-अण्णाणमादिं करिय मिच्छत्तं गंतूण पोग्गलपरियट्टस्स अद्धं देसूणं परिभमिय पुणो अपच्छिमे भवे मदि-सुदणाणाणि उप्पाइय अंतोमुहुत्तेण अबंधगत्तं गदस्स देसूणपोग्गलपरियट्टस्स अद्धुवलंभादो ।

विभंगणाणी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १३९ ॥

देवस्स णेरइयस्स वा उवसमसम्माइट्ठिस्स उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए सासणं गंतूण विभंगणाणेण सह एगसमयमच्छिय विदियसमए मदस्स तदुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ १४० ॥

तिरिक्खस्स मणुसस्स वा तेत्तीसाउट्ठिदिएसु सत्तमपुढविणेरइएसु उप्पज्जिय छपज्जत्तीओ समाणिय विभंगणाणी होदूण अंतोमुहुत्तेणूणतेत्तीसाउट्ठिदिमच्छिय णिग्गदस्स तदुवलंभादो ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १४१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४२ ॥

देवस्स णेरइयस्स वा मदि-सुद-विभंगअण्णाणेहि अच्छिदस्स सम्मत्तं घेत्तूणुप्पाइदमदिसुदोहिणाणस्स जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गयस्स तद्दंसणादो ।

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १४३ ॥

देवस्स णेरइयस्स वा पडिवण्णउवसमसम्मत्तेण सह समुप्पण्णमदि-सुद-ओहिणाणस्स वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय अविणट्ठतिणाणेहि अंतोमुहुत्तमच्छिय एदेणंतोमुहुत्तेणूणपुव्वकोडाउअमणुस्सेसुववज्जिय पुणो वीसंसागरोवमिएसु देवेसुववज्जिय पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसुववज्जिय बावीसंसागरोवमट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिदूण पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसुववज्जिय खइयं पट्ठविय चउवीसंसागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिदूण पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसुववज्जिय थोवावसेसे जीविए केवलणाणी होदूण अबंधगत्तं गदस्स चदुहि पुव्वकोडीहि सादिरेयछावट्ठिसागरोवमाणमुवलंभादो । वेदगसम्मत्तेण छावट्ठिसागरोवमाणि भमाविय खइयं पट्ठविय तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पाइय अबंधओ किण्ण कओ ? ण, सम्मत्तेण सह जदि संसारे सुट्ठु बहुअं कालं परिभमइ तो चदुहि पुव्वकोडीहि सादिरेयछावट्ठिसागरोवमाणि चेव परिभमदि त्ति वक्खाणंतरदंसणट्ठमुवदेसणादो । अंतोमुहुत्ताहियछावट्ठिसागरोवमाणि किण्ण वुत्ताणि ? ण, केवलवेदगसम्मत्तेण छावट्ठिसागरोवमाणि संपुण्णाणि परिभमिय खइयभावं गदस्स तदुवलंभादो । ॥ ६२ ॥

मणपज्जवणाणी केवलणाणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १४४ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४५ ॥

दोसु संजदेसु परिणामपच्चएणुप्पाइदकेवल-मणपज्जवणाणेसु सव्वजहण्णं कालं तेहि सह अच्छिय असंजममबंधयभावं गदेसु एदस्सुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ १४६ ॥

कुदो ? गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवज्जिय आभिणिबोहिय-सुदणाणाणि उप्पाइय अंतोमुहुत्तेण मणपज्जवणाणमुप्पाइय पुव्वकोडिं विहरिय देवेसुप्पण्णस्स देसूणपुव्वकोडिकालोवलंभादो । एवं केवलणाणिस्स वि उक्कस्सकालो वत्तव्वो । णवरि देवेहिंतो णेरइएहिंतो वा आगंतूण पुव्वकोडाउएसु खइयसम्मत्तेण सह उप्पज्जिय गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवज्जिय अंतोमुहुत्तमच्छिय केवलणाणमुप्पाइय देसूणपुव्वकोडिं विहरिय अबंधगत्तं गदस्स वत्तव्वं ।

संजमाणुवादेण संजदा परिहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १४७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १४८ ॥

कुदो ? संजमं परिहारसुद्धिसंजमं संजमासंजमं च गंतूण जहण्णकालमच्छिय अण्णगुणं गदेसु तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ १४९ ॥

कुदो ? मणुस्सस्स गब्भादिअट्ठवस्सेहि संजमं पडिवज्जिय देसूणपुव्वकोडिं संजममणुपालिय कालं काऊण देवेसुप्पण्णस्स देसूण-पुव्वकोडिमेत्तसंजमकालुवलंभादो । एवं परिहारसुद्धिसंजदस्स वि उक्कस्सकालो वत्तव्वो । णवरि सव्वसुही होदूण तीसं वस्साणि गमिय तदो वासपुधत्तेण तित्थयरपादमूले पच्चक्खाणणामधेयपुव्वं पढिदूण पुणो पच्छा परिहारसुद्धिसंजमं पडिवज्जिय देसूणपुव्वकोडिकाल-मच्छिदूण देवेसुप्पण्णस्स वत्तव्वं । एवमट्ठतीसवस्सेहि ऊणिया पुव्वकोडी परिहारसुद्धिसंजमस्स कालो वुत्तो । के वि आइरिया सोलस-वस्सेहि के वि बावीसवस्सेहि ऊणिया पुव्वकोडि त्ति भणंति । एवं संजदासंजदस्स वि उक्कस्सकालो वत्तव्वो । णवरि अंतोमुहुत्तपुधत्तेण ऊणिया पुव्वकोडी संजमासंजमस्स कालो त्ति वत्तव्वं । ॥ ६३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १५१ ॥

उवसमसेडीदो ओयरमाणस्स सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमादो सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमं पडिवज्जिय तत्थ एगसमयमच्छिय विदियसमए मुदस्स एगसमओवलंभादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ १५२ ॥

पुव्वकोडाउअमणुसस्स गब्भादिअट्ठवस्सेहि सामाइय-च्छेदोवट्ठाणियसुद्धिसंजमं पडिवज्जिय अट्ठवस्सूणपुव्वकोडिं विहरिय देवेसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १५३ ॥

सुगमं ।

उवसमं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १५४ ॥

कुदो ? चडंतो वा अणियट्टी उवसमओ उवसंतकसाओ वा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदो जादो, तत्थ एगसमयमच्छिय विदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५५ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणम्मि अंतोमुहुत्तादो अहियकालमवट्ठाणाभावा ।

खवगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५६ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयखवगस्स मरणाभावादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५७ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १५८ ॥

सुगमं ।

उवसमं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १५९ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदस्स उवसंतकसायत्तं पडिवज्जिय एगसमयमच्छिय विदियसमए मुदस्स एगसमओवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १६० ॥

कुदो ? उवसंतकसायस्स अंतोमुहुत्तादो अहियकालाभावा ।

खवगं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १६१ ॥

कुदो ? खवगसेडिं चडिय खीणकसायट्ठाणे जहाक्खादसंजमं पडिवज्जिय सजोगी होदूण अंतोमुहुत्तेण अबंधगत्तं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा ॥ १६२ ॥

कुदो ? गब्भादिअट्ठवस्साणि गमिय संजमं घेत्तूण सव्वलहुएण कालेण मोहणीयं खविय जहाक्खादसंजदो होदूण देसूणपुव्वकोडिं विहरिय अबंधगत्तं गदस्स तदुवलंभादो ।

असंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १६३ ॥

सुगमं ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १६४ ॥

अभवियं पडुच्च एसो णिद्देसो ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १६५ ॥

भवियं पडुच्च एसो णिद्देसो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सादिओ सपज्जवसिदो ॥ १६६ ॥

सादि-सांतमसंजमं पडुच्च एसो णिद्देसो ।

जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो णिद्देसो-जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १६७ ॥

कुदो ? संजदस्स परिणामपच्चएण असंजमं गंतूण तत्थ सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय संजमं गदस्स जहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १६८ ॥

कुदो ? अद्धपोग्गलपरियट्टस्स आदिसमए संजमं घेत्तूण उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए असंजमं गंतूण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं परियट्टिदूण पुणो तिण्णि करणाणि कादूण संजमं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १६९ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७० ॥

कुदो ? अचक्खुदंसणेण ट्ठिदस्स चक्खुदंसणं गंतूण जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो अचक्खुदंसणं गदस्स तदुवलंभादो । चउरिंदियअपज्जत्तएसु उप्पाइय खुद्दाभवग्गहणं जहण्णकालो त्ति किण्ण परूविदं ? ण, चक्खुदंसणीअपज्जत्तएसु खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णकालाणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि ॥ १७१ ॥

एइंदिओ बेइंदिओ तेइंदिओ चउरिंदियादिसु उप्पज्जिय बेसागरोवमसहस्साणि परिभमिय अचक्खुदंसणीसु उप्पण्णस्सुवलंभादो । चक्खुदंसणक्खओवसमस्स एसो कालो णिद्दिट्ठो । उवजोगं पुण पडुच्च जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव ।

अचक्खुदंसणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १७२ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १७३ ॥

अभवियमभवियसमाणभवियं वा पडुच्च एसो णिद्देसो । कुदो ? अचक्खुदंसणक्खओवसमरहिदछदुमत्थाणमणुवलंभादो ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १७४ ॥

णिच्छएण सिज्झमाणभवियजीवं पडुच्च एसो णिद्देसो । अचक्खुदंसणस्स सादित्तं णत्थि, केवलदंसणादो अचक्खुदंसणमागच्छंताणमभावादो ।

ओधिदंसणी ओधिणाणीभंगो ॥ १७५ ॥

कुदो ? ओहिणाणिस्सेव जहण्णेण अंतोमुहुत्तस्स, उक्कस्सेण सादिरेयछावट्ठिसागरोवमाणमुवलंभादो ।

केवलदंसणी केवलणाणीभंगो ॥ १७६ ॥

कुदो ? केवलणाणीणं व जहण्णुक्कस्सपदेहि अंतोमुहुत्त-देसूणपुव्वकोडीणं केवलदंसणीणमुवलंभादो ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १७७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १७८ ॥

कुदो ? अणप्पिदलेस्सादो अविरुद्धादो अप्पिदलेस्समागंतूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अविरुद्धलेस्संतरं गयस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १७९ ॥

कुदो ? तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा किण्ह-णील-काउलेस्साहि सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो तेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवमाउट्ठिदिणेरइएसु उपज्जिय किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह अप्पप्पणो आउट्ठिदिमच्छिय तत्तो णिप्फिडिदूण अंतोमुहुत्तकालं ताहि चेव लेस्साहि गमेदूण अविरुद्धलेस्संतरं गदस्स दोहि अंतोमुहुत्तेहि समहियतेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवममेत्ततिलेस्साकालुवलंभादो । ॥ ६७ ॥

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८० ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८१ ॥

कुदो ? अणप्पिदलेस्सादो अविरुद्धादो अप्पिदलेस्सं गंतूण तत्थ जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अविरुद्धलेस्संतरं गयस्स जहण्णकालदंसणादो ।

उक्कस्सेण बे-अट्ठारस-तेत्तीससागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १८२ ॥

कुदो ? तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सव्वुक्कस्समंतोमुहुत्तमेत्तमच्छिय पुणो जहाकमेण अड्ढाइज्ज-साद्धट्ठारस-तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पज्जिय अवट्ठिदलेस्साहि सगसगाउट्ठिदिमणुपालिय तत्तो चविय अंतोमुहुत्तकालं ताहि चेव लेस्साहि अच्छिय अविरुद्धलेस्संतरं गयस्स सगसगुक्कस्सकालाणमुवलंभादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८३ ॥

सुगमं ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १८४ ॥

कुदो ? अणाइसरूवेणागयस्स भवियभावस्स अजोगिचरिमसमए विणासुवलंभादो । अभवियसमाणो वि भवियजीवो अत्थि त्ति अणादिओ अपज्जवसिदो भवियभावो किण्ण परूविदो ? ण, तत्थ अविणाससत्तीए अभावादो । सत्तीए चेव एत्थ अहियारो, वत्तीए णत्थि त्ति कधं णव्वदे ? अणादि-सपज्जवसिदसुत्तण्णहाणुववत्तीदो ।

सादिओ सपज्जवसिदो ॥ १८५ ॥

अभविओ भवियभावं ण गच्छदि, भवियाभवियभावाणमच्चंताभावपडिग्गहियाणमेयाहियरणत्तविरोहादो । ण सिद्धो भविओ होदि, णट्ठासेसासवाणं पुणरुप्पत्तिविरोहादो । तम्हा भवियभावो ण सादि त्ति ? ण एस दोसो, पज्जवट्ठियणयावलंबणादो अप्पडिवण्णे सम्मत्ते अणादि-अणंतो भवियभावो अंतादीदसंसारादो; पडिवण्णे सम्मत्ते अण्णो भवियभावो उप्पज्जइ, पोग्गलपरियट्टस्स अद्धमेत्तसंसारावट्ठाणादो । एवं समऊण-दुसमऊणादिउवड्ढपोग्गलपरियट्टसंसाराणं जीवाणं पुध पुध भवियभावो वत्तव्वो । तदो सिद्धं भवियाणं सादि-सांतत्तमिदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अभवियसिद्धिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८६ ॥

सुगमं ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १८७ ॥

अभवियभावो णाम वियंजणपज्जाओ, तेणेदस्स विणासेण होदव्वमण्णहा दव्वत्तप्पसंगादो त्ति ? होदु वियंजणपज्जाओ, ण च वियंजणपज्जायस्स सव्वस्स विणासेण होदव्वमिदि णियमो अत्थि, एयंतवादप्पसंगादो । ण च ण विणस्सदि त्ति दव्वं होदि, उप्पाय-ट्ठिदि-भंगसंगयस्स दव्वभावब्भुवगमादो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १८९ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिस्स बहुसो सम्मत्तपज्जाएण परिणमियस्स सम्मत्तं गंतूण जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गयस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १९० ॥

कुदो ? तिण्णि करणाणि कादूण पढमसम्मत्तं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय तत्थ तीहि पुव्वकोडीहि समहियबादालीससागरोवमाणि गमिय खइयं पट्ठविय चउवीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडिआउट्ठिदिमणुस्सेसुपज्जिय अवसाणे अबंधगत्तं गयस्स तदुवलंभादो ।

खइयसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १९१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९२ ॥

कुदो ? वेदगसम्मादिट्ठिस्स दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मत्तं पडिवज्जिय जहण्णकालेण अबंधगत्तं गयस्स तदुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १९३ ॥

कुदो ? चउवीससंतकम्मियसम्माइट्ठिदेवस्स णेरइयस्स वा पुव्वकोडाउअमणुस्सेसुप्पण्णस्स गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणं उवरि खइयं पट्ठविय देसूणपुव्वकोडिमच्छिय तेत्तीसाउट्ठिदिदेवेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडिआउट्ठिदिमणुस्सेसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अबंधभावं गयस्स दोअंतोमुहुत्ताहियअट्ठवस्सूणदोपुव्वकोडीहि साहियतेत्तीससागरोवमाणमुवलंभादो ।

वेदगसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १९४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९५ ॥

मिच्छाइट्ठिस्स दिट्ठमग्गस्स सम्मत्तं घेत्तूण जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गयस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि ॥ १९६ ॥

कुदो ? उवसमसम्मत्तादो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जिय सेसभुंजमाणाउएणूणवीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिय तदो मणुस्सेसुववज्जिय पुणो मणुस्साउएणूणबावीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पज्जिय पुणो मणुस्सगदिं गंतूण भुंजमाणमणुस्साउएण दंसणमोहक्खवणपेरंतभुंजिस्समाणमणुसाउएण च ऊणचउवीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पज्जिय मणुस्सगदिमागंतूण तत्थ वेदगसम्मत्तकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो अत्थि त्ति दंसणमोहक्खवणं पट्ठविय कदकरणिज्जो होदूण कदकरणिज्जचरिमसमए ट्ठिदस्स छावट्ठिसागरोवममेत्तकालुवलंभादो।

उवसमसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १९७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९८ ॥

कुदो ? मिच्छादिट्ठिस्स पढमसम्मत्तं पडिवज्जिय छावलियावसेसे सासणं गदस्स तदुवलंभादो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स वि जहण्णकालो वत्तव्वो । णवरि मिच्छत्तादो वेदगसम्मत्तादो वा सम्मामिच्छत्तं गंतूण जहण्णकालमच्छिय गुणंतरं गदो त्ति वत्तव्वं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९९ ॥

सुगममेदं ।

सासणसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २०० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ २०१ ॥

उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसे सासणं गदस्स सासणगुणस्स एगसमयकालोवलंभादो । जेत्तिया उवसमसम्मत्तद्धा एगसमयमादिं कादूण जावुक्कस्सेण छावलियाओ त्ति अवसेसा अत्थि तत्तिया चेव सासणगुणद्धावियप्पा होंति । उवसमसम्मत्तकालं संपुण्णमच्छिदो सासणगुणं ण पडिवज्जदित्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, आइरियपरंपरागदुवदेसादो च ।

उक्कस्सेण छावलियाओ ॥ २०२ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठी मदिअण्णाणीभंगो ॥ २०३ ॥

जहा मदिअण्णाणिस्स अणादिअपज्जवसिद-अणादिसपज्जवसिद-सादिसपज्जवसिदवियप्पा वुत्ता तधा एदस्स वि वत्तव्वा । सादिसपज्जवसिदअण्णाणस्स कालो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं जधा वुत्तं तधा मिच्छत्तस्स वि वत्तव्वं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २०४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ २०५ ॥

कुदो ? असण्णीहिंतो सण्णिअपज्जत्तएसुप्पज्जिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय असण्णित्तं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ २०६ ॥

असण्णीहिंतो सण्णीसुप्पज्जिय सागरोवमसदपुधत्तं तत्थेव परिभमिय णिग्गयस्स तदुवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असण्णी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २०७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ २०८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २०९ ॥

एदं पि सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २१० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमयूणं ॥ २११ ॥

तिण्णि विग्गहे काऊण सुहुमेइंदिएसुप्पज्जिय चउत्थसमए आहारी होदूण भुंजमाणाउअं कदलीघादेण घादिय अवसाणे विग्गहं करिय णिग्गयस्स तिसमऊणखुद्दाभवग्गहणमेत्ताहारकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ ॥ २१२ ॥

कुदो ? विग्गहं काऊण आहारी होदूण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमसंखेज्जासंखेज्जाओसप्पिणि-उस्सप्पिणिकालमेत्तं परिभमिय कयविग्गहस्स तदुवलंभादो ।

अणाहारा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २१३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेणेगसमओ ॥ २१४ ॥

एदं पि सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण तिण्णि समया ॥ २१५ ॥

समुग्घादगयसजोगिम्हि तिण्णिविग्गहकयजीवे वा तदुवलंभादो ।

अंतोमुहुत्तं ॥ २१६ ॥

अजोगिम्हि अणाहारिस्स अंतोमुहुत्तकालुवलंभादो । बंधगाणमेसो कालो वुत्तो, ण च अजोगी भवयंतो बंधओ, तत्थ आसवाभावादो । ण च अण्णत्थ अणाहारिस्स अंतोमुहुत्तमेत्तो कालो लब्भदि । तदो णेदं घडदि त्ति ? ण एस दोसो, अघाइचउक्ककम्मपोग्गलक्खंधाणं लोगमेत्तजीवपदेसाणं च अण्णोण्णबंधमवेक्खिय अजोगीणं पि बंधगत्तब्भुवगमादो । ण च 'मणुस्सा अबंधा वि अत्थि' त्ति एदेण सुत्तेण सह विरोहो, जोग-कसायादीहिंतो जायमाणपच्चग्गबंधाभावं पडुच्च तत्थ तधोवदेसादो । एगजीवेण कालो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

एगजीवेण अंतराणुगमो

एगजीवेण अंतराणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १ ॥

मूलोघविसयपुच्छा किण्ण कया ? ण, मूलोघपडिबद्धकालपरूवणाभावादो । किमिदि तस्स कालो ण वुत्तो ? ण, तस्साणुत्तसिद्धीदो । केवचिरमिदि वुत्ते एग-बे-तिण्णि जाव अणंतमिदि अंतरपुच्छा कदा होदि । सेसं सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २ ॥

कुदो ? णेरइयस्स णिरयादो णिग्गयस्स तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा गब्भोवक्कंतियपज्जत्तएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णाउअकालब्भंतरे णिरयाउअं बंधिय कालं करिय पुणो णिरएसुववण्णस्स जहण्णेणंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ३ ॥

णेरइयस्स णिरयादो णिग्गंतूण अणप्पिदगदीसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे परियट्टिदूण पच्छा णिरएसुववण्णस्स वुत्तंतरुवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ४ ॥

णेरइया इदि वुत्ते णेरइयाणं ति घेत्तव्वं । सत्तसु पुढवीसु णेरइयाणं तिरिक्खमणुस्सगब्भोवक्कंतियपज्जत्तएसुप्पज्जिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय अप्पिदणिरएसुप्पण्णस्स अंतरकालो सरिसो त्ति वुत्तं होदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ६ ॥

तिरिक्खेहिंतो मणुस्सेसुप्पज्जिय घादखुद्दाभवग्गहणमेत्तकालमच्छिय पुणो तिरिक्खेसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ७ ॥

तिरिक्खस्स तिरिक्खेहिंतो णिग्गयस्स सेसगदीसु सागरोवमसदपुधत्तादो उवरि अवट्ठाणाभावादो ।

पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता मणुसगदीए मणुस्सा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी मणुसअपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ९ ॥

कुदो ? अप्पिदगदीदो णिग्गंतूण अणप्पिदगदीसुप्पज्जिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय पुणो अप्पिदगदिमागयस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ॥ १० ॥

कुदो ? अप्पिदगदीदो णिग्गंतूण एइंदिय-विगलिंदियादिअणप्पिदगदीसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे भमिय अप्पिदगदिमागदस्स तदुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवगदीए देवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२ ॥

कुदो ? देवगदीदो आगंतूण तिरिक्ख-मणुस्सगब्भोवक्कंतियपज्जत्तएसुप्पज्जिय पज्जत्तीओ समाणिय देवाउअं बंधिय देवेसुप्पण्णस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ॥ १३ ॥

कुदो ? देवगदीदो ओयरिय सेसतिसु गदीसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे उक्कस्सेण परियट्टिदूण पुणो देवगदीए आगमणे विरोहाभावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-सोधम्मीसाणकप्पवासियदेवा देवगदिभंगो ॥ १४ ॥

जधा देवगदीए जहण्णेण अंतोमुहुत्तमुक्कस्सेण असंखेज्जपोग्गलपरियट्टमेत्तं अंतरं वुत्तं तधा एदेसिं पि जहण्णुक्कस्संतराणि । देवा इदि वुत्ते देवाणमिदि घेत्तव्वं, 'आई-मज्झंतवण्णसरलोओ' त्ति एदेण लक्खणेण लुत्त-णं सद्दादो ।

सणक्कुमार-माहिंदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण मुहुत्तपुधत्तं ॥ १६ ॥

कुदो ? सणक्कुमार-माहिंददेवाणं तिरिक्ख-मणुस्साउअं बंधमाणाणमाउअस्स जहण्णट्ठिदीए मुहुत्तपुधत्तपमाणत्तादो । तिरिक्ख-मणुस्साउअं जहण्णेण मुहुत्तपुधत्तमेत्तं बंधिय तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा उप्पज्जिय परिणामपच्चएण पुणो सणक्कुमार-माहिंदेसु आउअं बंधिय सणक्कुमार-माहिंदेसुप्पण्णाणं जहण्णमंतरं होदि त्ति वुत्तं होदि । ॥ ७५ ॥

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १७ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बम्हबम्हुत्तर-लांतवकाविट्ठकप्पवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण दिवसपुधत्तं ॥ १९ ॥

कुदो ? एदेहि वज्झमाणआउअस्स दिवसपुधत्तादो हेट्ठा ट्ठिदिबंधाभावादो । अणुवय-महव्वएहि विणा तिरिक्ख-मणुस्सा गब्भादो अणिक्खंता चेव कधं देवेसुप्पज्जंति ? ण, परिणामपच्चएण तिरिक्ख-मणुस्सपज्जत्ताणं दिवसपुधत्तजीवियाणं तत्थुप्पत्तीए विरोहाभावादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २० ॥

सुगमं ।

सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सारकप्पवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण पक्खपुधत्तं ॥ २२ ॥

कुदो ? एदेहि बज्झमाणआउअस्स पक्खपुधत्तादो हेट्ठा जहण्णट्ठिदिबंधाभावादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २३ ॥

सुगमं ।

आणदपाणद-आरणअच्चुदकप्पवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण मासपुधत्तं ॥ २५ ॥

कुदो ? एदेहि बज्झमाणमणुस्साउअस्स मासपुधत्तादो हेट्ठा जहण्णट्ठिदिबंधाभावादो । एदे मणुस्सोववाइणो मणुस्सा वि गब्भादि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठवस्सेसु गदेसु अणुव्वय-महव्वयाणं गाहिणो । ण च अणुव्वय-महव्वएहि विणा एदेसुप्पत्ती अत्थि, तहोवदेसाभावादो । तदो ण मासपुधत्तंतरं जुज्जदे, किंतु वासपुधत्तंतरेण होदव्वमिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा–ण च अणुव्वद-महव्वदेहि संजुत्ता चेव तिरिक्ख-मणुस्सा आणद-पाणददेवेसुप्पज्जंति त्ति णियमो अत्थि, तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठीणं छरज्जुपोसणसुत्तेण सह विरोहादो । ण च आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो मणुस्साउअस्स जहण्णट्ठिदिं बंधमाणा वासपुधत्तादो हेट्ठा बंधंति, महाबंधे जहण्णट्ठिदिबंधद्धाछेदे सम्मादिट्ठीणमाउअस्स वासपुधत्तमेत्तट्ठिदिपरूवणादो । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिस्स मणुस्साउअं मासपुधत्तमेत्तं बंधिय पुणो मणुस्सेसुप्पज्जिय मासपुधत्तं जीविदूण पुणो सण्णिपंचिंदियतिरिक्खसम्मुच्छिमपज्जत्तएसु अंतोमुहुत्ताउएसुववज्जिय पज्जत्तयदो होदूण संजमासंजमं पडिवज्जिय आणदादिसु आउअं बंधिय उप्पण्णस्स जहण्णमंतरं होदि त्ति वत्तव्वं ।

उक्कस्समणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २६ ॥

सुगमं ।

णवगेवज्जविमाणवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण वासपुधत्तं ॥ २८ ॥

कुदो ? वासपुधत्तादो हेट्ठा आउअस्स जहण्णट्ठिदिबंधाभावादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २९ ॥

मिच्छादिट्ठीणमणंतसंसाराणमेत्थ संभवादो ।

अणुदिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण वासपुधत्तं ॥ ३१ ॥

कुदो ? सम्मादिट्ठीणं वासपुधत्तादो हेट्ठा आउअस्स जहण्णट्ठिदिबंधाभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण बे सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ३२ ॥

कुदो ? अणुदिसादिदेवस्स पुव्वकोडाउअमणुस्सेसुप्पज्जिय पुव्वकोडिं जीविदूण सोहम्मीसाणं गंतूण तत्थ अड्डाइज्जसागरोवमाणि गमिय पुणो पुव्वकोडाउअमणुस्सेसुप्पज्जिय संजमं घेत्तूण अप्पप्पणो विमाणम्मि उप्पण्णस्स सादिरेयबेसागरोवममेत्तंतरुवलंभादो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ ३४ ॥

कुदो ? सव्वट्ठसिद्धीदो मणुसगइमोइण्णस्स मोक्खं मोत्तूणण्णत्थ गमणाभावादो । 'णत्थि अंतरं णिरंतरं' इदि पुणरुत्तदोसप्पसंगादो दोण्णमेक्कदरस्स संगहो कायव्वो । ण एस दोसो, दो णए अवलंबिय ट्ठिददोण्हं पि सिस्साणमणुग्गहट्ठं परूवयंतस्स पुणरुत्तदोसाभावादो । णत्थि अंतरमिदि वयणं पज्जवट्ठियणयट्ठिदसिस्साणमणुग्गहकारयं, विहिदो वदिरित्तपडिसेहे चेव वावदत्तादो । णिरंतरमिदि वयणं दव्वट्ठियसिस्साणुगाहयं, पडिसेहवदिरित्तविहीए पदुप्पायणादो । सेसं सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३५ ॥

एगवारपुच्छादो चेव सयलत्थपरूवणासंभवादो किमट्ठं पुणो पुणो पुच्छा कीरदे ? ण इमाणि पुच्छासुत्ताणि, किंतु आइरियाणमासंकियवयणाणि उत्तरसुत्तुप्पत्तिणिमित्ताणि, तदो ण दोसो त्ति ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३६ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ॥ ३७ ॥

कुदो ? एइंदिएहिंतो णिग्गयस्स तसकाइएसु चेव भमंतस्स पुव्वकोडिपुधत्तब्भहियबेसागरोवमसहस्समेत्ततसट्ठिदीदो उवरि तत्थ अवट्ठाणाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरएइंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३८ ॥

सुगममेदमासंकासुत्तं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ४० ॥

कुदो ? बादरेइंदिएहिंतो णिग्गंतूण सुहुमेइंदिएसु असंखेज्जलोगमेत्तकालादो उवरि अवट्ठाणाभावादो । होदु णाम एदमंतरं बादरेइंदियाणं, ण तेसिं पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च, सुहुमेइंदिएसु अणप्पिदबादरेइंदिएसु च परियट्टंतस्स पुव्विल्लंतरादो अइमहल्लंतरुवलंभादो । होदु णाम पुव्विल्लंतरादो इमस्स अंतरस्स अइमहल्लत्तं, तो वि एदेसिमंतरकालो पुव्विल्लंतरकालोव्व असंखेज्जलोगमेत्तो चेव, णाणंतो । कुदो ? अणंततरुवदेसाभावादो ।

सुहुमेइंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४२ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ ॥ ४३ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदिएहिंतो णिग्गयस्स बादरेइंदिएसु चेव भमंतस्स बादरेइंदियट्ठिदीदो उवरि अवट्ठाणाभावादो । तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि एदम्हादो अंतरादो अहियमंतरं होदि, अणप्पिदसुहुमेइंदिएसु वि संचारोवलंभादो । किंतु तो वि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव अंतरं होदि, अण्णोवएसाभावादो । ॥ ७९ ॥

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ॥ ४४ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४५ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ४६ ॥

कुदो ? अप्पिदइंदिएहिंतो णिग्गयस्स अणप्पिदएइंदियादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परियट्टणे विरोहाभावादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ४९ ॥

कुदो ? अप्पिदकायं मोत्तूण अणप्पिदेसु वणप्फदिकायादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिदुं संभवोवलंभादो ।

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवबादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५१ ॥

एदं पि सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ५२ ॥

कुदो ? अप्पिदवणप्फदिकायादो णिग्गयस्स अणप्पिदपुढवीकायादिसु चेव हिंडंतस्स असंखेज्जलोगं मोत्तूण अण्णस्स अंतरस्स असंभवादो। सेसं सुगमं।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५३ ॥

सुगमं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५४ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ५५ ॥

कुदो ? अप्पिदवणप्फदिकाइएहिंतो णिग्गयस्स अणप्पिदणिगोदजीवादिसु भमंतस्स अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टेहिंतो अहियअंतराणुवलंभादो।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५६ ॥

सुगमं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५७ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ५८ ॥

कुदो ? अप्पिदतसकाइएहिंतो णिग्गंतूण अणप्पिदवणप्फदिकाइयादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणमंतरसण्णियाणमुवलंभादो।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५९ ॥

सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६० ॥

कुदो ? मणजोगादो कायजोगं वचिजोगं वा गंतूण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो मणजोगमागदस्स जहण्णेणंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो । सेसचत्तारिमणजोगीणं पंचवचिजोगीणं च एवं चेव अंतरं परूवेयव्वं, भेदाभावादो । एत्थ एगसमओ किण्ण लब्भदे ? ण, वाघादिदे मुदे वा मण-वचिजोगाणमणंतरसमए अणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ६१ ॥

कुदो ? मणजोगादो वचिजोगं गंतूण तत्थ सव्वुक्कस्समद्धमच्छिय पुणो कायजोगं गंतूण तत्थ वि सव्वचिरं कालं गमिय एइंदिएसुप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टणाणि परियट्टिय पुणो मणजोगं गदस्स तदुवलंभादो । सेसचत्तारिमणजोगीणं पंचवचिजोगीणं च एवं चेव अंतरं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो ।

कायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ६३ ॥

कुदो ? कायजोगादो मणजोगं वचिजोगं वा गंतूण एगसमयमच्छिय विदियसमए मुदे वाघादिदे वा कायजोगं गदस्स एगसमयअंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६४ ॥

कुदो ? कायजोगादो मणजोगं वचिजोगं च परिवाडीए गंतूण दोसु वि सव्वुक्कस्सकालमच्छिय पुणो कायजोगमागदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तंतरुवलंभादो । ॥ ८२ ॥

ओरालियकायजोगी-ओरालियमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण एगसमओ ॥ ६६ ॥

कुदो ? ओरालियकायजोगादो मणजोगं वचिजोगं वा गंतूण एगसमयमच्छिय विदियसमए वाघादवसेण ओरालियकायजोगं गदस्स एगसमयअंतरुवलंभादो । ओरालियमिस्सकायजोगिस्स अपज्जत्तभावेण मणवचिजोगविरहियस्स कधमंतरस्स एगसमओ ? ण, ओरालियमिस्सकायजोगादो एगविग्गहं करिय कम्मइयजोगम्मि एगसमयमच्छिय बिदियसमए ओरालियमिस्सं गदस्स एगसमयअंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ६७ ॥

कुदो ? ओरालियकायजोगादो चत्तारिमण-चत्तारिवचिजोगेसु परिणमिय कालं करिय तेत्तीसाउट्ठिदिएसु देवेसुववज्जिय सगट्ठिदिमच्छिय दो विग्गहे कादूण मणुस्सेसुप्पज्जिय ओरालियमिस्सकायजोगेण दीहकालमच्छिय पुणो ओरालियकायजोगं गदस्स णवहि अंतोमुहुत्तेहि वेहि समएहि सादिरेयतेत्तीससागरोवममेत्तंतरुवलंभादो । एवमोरालियमिस्सकायजोगस्स वि अंतरं वत्तव्वं । णवरि अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतरं होदि, णेरइएहिंतो पुव्वकोडाउअमणुस्सेसुप्पज्जिय ओरालियमिस्सकायजोगस्स आदिं करिय सव्वलहुं पज्जत्तीओ समाणिय ओरालियकायजोगेणंतरिय पुव्वकोडिं देसूणं गमिय तेत्तीसाउट्ठिदिदेवेसुप्पज्जिय पुणो विग्गहे कादूण ओरालियमिस्सकायजोगं गदस्स तदुवलंभादो ।

वेउव्वियकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ६९ ॥

वेउव्वियकायजोगादो मणजोगं वचिजोगं वा गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय विदियसमए वाघादवसेण वेउव्वियकायजोगं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ७० ॥

अंतरस्स पाहण्णियादो एगवयणं णवुंसयत्तं च जुज्जदे । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि ॥ ७२ ॥

कुदो ? तिरिक्खेहिंतो मणुस्सेहिंतो वा देवेसु णेरइएसु वा उप्पज्जिय दीहकालेण छप्पज्जत्तीओ समाणिय वेउव्वियकायजोगेण अंतरिय देसूणदसवाससहस्साणि अच्छिय तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा उप्पज्जिय सव्वजहण्णेण कालेण पुणो आगंतूण वेउव्वियमिस्सं गदस्स सादिरेयदसवस्ससहस्समेत्तंतरुवलंभादो । कधमेदेसिं सादिरेयत्तं ? ण, वेउव्वियमिस्सद्धादो तिरिक्ख-मणुस्सपज्जत्ताणं गब्भजाणं जहण्णाउवस्स बहुत्तुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ७३ ॥

कुदो ? वेउव्वियमिस्सकायजोगादो वेउव्वियकायजोगं गंतूणंतरिय असंखेज्जपोग्गलपरियट्टणाणि परियट्टिय वेउव्वियमिस्सं गदस्स तदुवलंभादो ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ७४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७५ ॥

कुदो ? आहारकायजोगादो अण्णजोगं गंतूण सव्वलहुमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो आहारकायजोगं गदस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो । एगसमओ किण्ण लब्भदे ? ण, आहारकायजोगस्स वाघादाभावादो । एवमाहारमिस्सकायजोगस्स वि वत्तव्वं । णवरि आहारसरीरमुट्ठाविय सव्वजहण्णेण कालेण पुणो वि उट्ठावेंतस्स पढमसमए अंतरपरिसमत्ती कायव्वा ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ७६ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छादिट्ठिस्स अद्धपोग्गलपरियट्टादिसमए उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) अप्पमत्तो होदूण (२) आहारसरीरं बंधिय (३) पडिभग्गो होदूण (४) आहारसरीरमुट्ठाविय अंतोमुहुत्तमच्छिय (५)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आहारकायजोगी होदूण आदिं करिय एगसमयमच्छिय कालं काऊण अंतरिय उवड्ढपोग्गलपरियट्टं भमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अद्धमंतरं करिय (६) अंतोमुहुत्तमच्छिय (७) अबंधभावं गयस्स जहाकमेण अट्ठहि सत्तहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणअद्धपोग्गलपरियट्टमेत्तंतरुवलंभादो ।

कम्मइयकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ७७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं ॥ ७८ ॥

तिण्णि विग्गहे काऊण खुद्दाभवग्गहणम्मि उप्पज्जिय पुणो विग्गहं काऊण णिग्गयस्स तिसमऊणखुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥ ७९ ॥

कुदो ? कम्मइयकायजोगादो ओरालियमिस्सं वेउव्वियमिस्सं वा गंतूण असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणी-उस्सप्पिणीपमाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकालमच्छिय विग्गहं गदस्स तदुवलंभादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ८२ ॥

कुदो ? इत्थिवेदादो णिग्गयस्स पुरिस-णवुंसयवेदेसु चेव भमंतस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणमंतर-सरूवेणुवलंभादो । ॥ ८५ ॥

पुरिसवेदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण एगसमओ ॥ ८४ ॥

कुदो ? पुरिसवेदेणुवसमसेडिं चढिय अवगदवेदो होदूण एगसमयमंतरियविदियसमए कालं काऊण पुरिसवेदेसुप्पण्णस्स एगसमयमेत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ८५ ॥

सुगमं ।

णवुंसयवेदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८७ ॥

खुद्दाभवग्गहणं किण्ण लब्भदे ? ण, अपज्जत्तएसु खुद्दाभवग्गहणमेत्ताउट्ठिदिएसु णवुंसयवेदं मोत्तूण इत्थि-पुरिसवेदाणमणुवलंभादो, पज्जत्तएसु वि अंतोमुहुत्तं मोत्तूण खुद्दाभवग्गहणस्स अणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ८८ ॥

कुदो ? णवुंसयवेदादो णिग्गयस्स इत्थि-पुरिसवेदेसु चेव हिंडंतस्स सागरोवमसदपुधत्तादो उवरि तत्थावट्ठाणाभावादो ।

अवगदवेदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८९ ॥

सुगमं ।

उवसमं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९० ॥

कुदो ? उवसमसेडीदो ओयरिय सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तं सवेदी होदूणंतरिय पुणो उवसमसेडिं चडिय अवेदत्तं गयस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ९१ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाइट्ठिस्स तिण्णि वि करणाणि काऊण अद्धपोग्गलपरियट्टस्सादिसमए सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय उवसमसेडिं चडिय अवगदवेदो होदूण हेट्ठा ओयरिय सवेदो होदूण अंतरिय उवड्ढपोग्गलपरियट्टं भमिय पुणो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे उवसमसेडिं चढिय अवगदवेदो होदूण अंतरं समाणिय पुणो तत्तो ओयरिय खवगसेडिं चडिय अबंधभावं गयस्स तदुवलंभादो ।

खवगं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ ९२ ॥

कुदो ? खवगाणमवगदवेदाणं पुणो वेदपरिणामाणुप्पत्तीदो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई-माणकसाई-मायकसाई-लोभकसाईणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ९४ ॥

कुदो ? कोधेण अच्छिय माणादिगदबिदियसमए वाघादेण, कालं कादूण णेरइएसु उप्पादेण वा, आगदकोधोदयस्स एगसमयअंतरुवलंभादो । एवं चेव सेसकसायाणमेगसमयअंतरपरूवणा कायव्वा । णवरि वाघादे अंतरस्स एगसमओ णत्थि, वाघादे कोधस्सेव उदयदंसणादो । किंतु मरणेण एगसमओ वत्तव्वो, मणुस्स-तिरिक्ख-देवेसुप्पण्ण-पढमसमए माण-माया-लोहाणं णियमेणुदयदंसणादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९५ ॥

अप्पिदकसायादो अणप्पिदकसायं गंतूणुक्कस्समंतोमुहुत्तमच्छिय अप्पिदकसायमागदस्स तदुवलंभादो ।

अकसाई अवगदवेदाण भंगो ॥ ९६ ॥

कुदो ? उवसमं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं; खवगं पडुच्च णत्थि अंतरमिच्चेदेहि तत्तो भेदाभावादो । ॥ ८७ ॥

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी-सुदअण्णाणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ९७ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९८ ॥

कुदो ? मदि-सुदअण्णाणेहिंतो सम्मत्तं घेत्तूण सण्णाणेसु जहण्णकालमंतरिय पुणो मदि-सुदअण्णाणी गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि ॥ ९९ ॥

कुदो ? मदि-सुदअण्णाणिस्स सम्मत्तं घेत्तूण सण्णाणेसु छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि अंतरिय पुणो सम्मामिच्छत्तं गंतूण मिस्सणाणेहि अंतरिय पुणो सम्मत्तं घेत्तूण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि भमिय मिच्छत्तं गदस्स तदुवलंभादो । कुदो देसूणत्तं ? उवसमसम्मत्तकालादो बेछावट्ठिअब्भंतरमिच्छत्तकालस्स बहुत्तुवलंभादो । सम्मामिच्छाइट्ठीणाणं मदि-सुदअण्णाणमिदि कट्टु केइमाइरिया सम्मामिच्छत्तेण णांतरावेंति । तण्ण घडदे, सम्मामिच्छत्तभावायत्तणाणस्स सम्मामिच्छत्तं व पत्तजच्चंतरस्स मदि-सुद-अण्णाणत्तविरोहादो ।

विभंगणाणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०१ ॥

कुदो ? देवस्स णेरइयस्स वा विभंगणाणिस्स दिट्ठमग्गस्स सम्मत्तं घेत्तूण ओहिणाणेण सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय विभंगणाणं मिच्छत्तं च जुगवं पडिवण्णस्स जहण्णंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १०२ ॥

कुदो ? विभंगणाणादो मदिअण्णाणं गंतूणंतरिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे परियट्टिदूण विभंगणाणं गदस्स तदुवलंभादो ।

आभिणिबोहिय-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०४ ॥

कुदो ? मदि-सुद-ओहिणाणेसु ट्ठिददेवस्स णेरइयस्स वा मिच्छत्तं गंतूण मदि-सुद-विभंगअण्णाणेहि अंतरिय पुणो मदि-सुद-ओहिणाणमागदस्स जहण्णेणंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो । एवं मणपज्जवणाणस्स वि । णवरि मणपज्जवणाणी संजदो तण्णाणं विणासिय अंतोमुहुत्तमच्छिय तस्सेव णाणस्स पुणो आणेदव्वो ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १०५ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाइट्ठिस्स अद्धपोग्गलपरियट्टस्स पढमसमए उवसमसम्मत्तं पडिवज्जिय तत्थेव देव-णेरइएसु विरोधाभावादो मदि-सुद-ओहिणाणाणि उप्पाइय छावलियाओ उवसमसम्मत्तद्धा अत्थि त्ति सासणं गंतूणंतरिय पुणो मिच्छत्तेण अद्धपोग्गलपरियट्टं भमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे सम्मत्तं पडिवज्जिय मदि-सुदणाणाणमंतरं समाणिय पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण ओहिणाणमुप्पाइय तत्थेव तदंतरं पि समाणिय अंतोमुहुत्तेण केवलणाणमुप्पाइय अबंधभावं गदस्स उवड्ढपोग्गलपरियट्टंतरुवलंभादो । एवं मणपज्जवणाणस्स वि । णवरि उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणस्स विरोहादो पढमसम्मत्तद्धं वोलाविय मुहुत्तपुधत्ते गदे मणपज्जवणाणमादीए अंतरस्स अवसाणे च उप्पाएदव्वं ।

केवलणाणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०६ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ १०७ ॥

कुदो ? केवलणाणे समुप्पण्णे पुणो तस्स विणासाभावादो ।

संजमाणुवादेण संजद-सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजद-परिहारसुद्धिसंजद-संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०८ ॥ ॥ ८९ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०९ ॥

कुदो ? अप्पिदसंजमट्ठिदिजीवमसंजमं णेदूण पुणो अप्पिदसंजमस्स जहण्णकालेण णीदे जहण्णमंतरं होदि । णवरि सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसंजदो उवसमसेडिं चडिय सुहुमसंजम-जहाक्खादसंजमेसु अंतरिय पुणो हेट्ठा ओयरियस्स सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धि-संजमेसु पदिदस्स जहण्णमंतरं होदि । परिहारसुद्धिसंजमादो सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमं णेदूण जहण्णेण अंतोमुहुत्तेण पुणो परिहारसुद्धिसंजममागदस्स जहण्णमंतरं होदि ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ११० ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाइट्ठिस्स अद्धपोग्गलपरियट्टस्स आदिसमए पढमसम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूणंतरिय उवड्ढपोग्गलपरियट्टं भमिय पुणो अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे संजमं पडिवज्जिय अंतरं समाणिय अंतोमुहुत्तमच्छिय अबंधगत्तं गदस्स उवड्ढपोग्गलपरियट्टमेत्तंतरुवलंभादो । एवं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं, भेदाभावादो । एवं परिहारसुद्धिसंजदस्स वि । णवरि अणादियमिच्छादिट्ठी अद्धपोग्गलपरियट्टस्स आदिसमए उवसमसम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण वासपुधत्तमच्छिय पच्छा परि-हारसुद्धिसंजमं गंतूण मिच्छत्तं पुणो गमिय अंतरावेदव्वो, संजमग्गहणपढमसमयादो वासपुधत्तेण विणा परिहारसुद्धिसंजमग्गहणा-भावादो । अवसाणे वि परिहारसुद्धिसंजमं गेण्हाविय पच्छा सामाइयच्छेदोवट्ठावण-सुहुम-जहाक्खादसंजमाणं णेदूण अबंधगो कायव्वो । एवं संजदासंजदस्स वि । णवरि अवसाणे तिण्णि वि करणाणि काऊणुवसमसम्मत्तं संजमासंजमं च गहिदपढमसमए अंतरं समाणिय अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमं घेत्तूण अबंधगत्तं गदो त्ति वत्तव्वं ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १११ ॥

सुगमं ।

उवसमं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११२ ॥

कुदो ? चडमाणस्स सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदस्स उवसंतकसाओ होदूण जहाक्खादेणंतरिय पुणो सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदे पदिदस्स तदुवलंभादो । जहाक्खादसंजमादो हेट्ठा पदिय जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो कमेणुवरि चढिय उवसंतकसाओ होदूण जहा-क्खादसंजमं गदस्स जहण्णंतरुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ११३ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाइट्ठिस्स तिण्णि वि करणाणि कादूण अद्धपोग्गलपरियट्टस्स आदिसमए पढमसम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण अंतोमुहुत्तेण सव्वजहण्णेण उवसमसेडिं चडिय सुहुमसांपराइओ होदूण तत्थ जहण्णंतोमुहुत्तमच्छिय उवसंतकसाओ होदूण सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदो पुणो होदूण तस्स पढमसमए जहाक्खादसुद्धिसंजमंतरस्सादिं करिय पुणो अंतोमुहुत्तेण अणियट्टि-गुणट्ठाणे णिवदिय सामाइय-छेदोवट्ठावणं पदिदपढमसमए सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमंतरस्स आदिं करिय कमेण हेट्ठा ओयरिय उवड्ढपोग्गलपरियट्टं भमिय अवसाणे सम्मत्तं संजमं च घेत्तूणुवसमसेडिं चडिय सुहुमसांपराइओ उवसंतकसाओ च होदूण सुहुमसांपरा-इयसुद्धिसंजदो पुणो होदूण कमेण अंतराणि समाणिय हेट्ठा ओयरिय पुणो खवगसेडिं चडिय अबंधगत्तं गदस्स उवड्ढपोग्गलपरियट्टंतर-स्सुवलंभादो । खवगसेडीए दोण्हमंतराणं परिसमत्ती किण्ण कदा ? ण, उवसामगेहि एत्थ अहियारादो ।

खवगं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ ११४ ॥

कुदो ? खवगाणं पुणो आगमणाभावादो ।

असंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११६ ॥

कुदो ? असंजदस्स संजमं घेत्तूण जहण्णमंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो असंजमं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणं ॥ ११७ ॥

कुदो ? सण्णिपंचिंदियसम्मुच्छिमपज्जत्तयस्स छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स विस्समिय विसुद्धो होदूण संजमासंजमं घेत्तूणंतरिय देसूणपुव्वकोडिं जीविय कालं काऊण देवेसुप्पण्णपढमसमए समाणिदंतरस्स अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडिमेत्तंतरुवलंभादो । ॥ ९१ ॥

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११८ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११९ ॥

कुदो ? जो जीवो चक्खुदंसणी एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदियलद्धिअपज्जत्तएसु खुद्दाभवग्गहणमेत्ताउट्ठिदिएसु अण्णदरेसु अचक्खुदंसणी होदूणुप्पज्जिय खुद्दाभवग्गहणमंतरिय पुणो चउरिंदियादिसु चक्खुदंसणी होदूणुप्पण्णो तस्स खुद्दाभवग्गहणमेत्तंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १२० ॥

कुदो ? चक्खुदंसणीहिंतो णिप्पिडिय अचक्खुदंसणीसु समुप्पज्जिय अंतरिदूण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टे गमिय पुणो चक्खुदंसणीसुप्पण्णस्स तदुवलंभादो ।

अचक्खुदंसणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १२१ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ १२२ ॥

केवलदंसणिस्स पुणो अचक्खुदंसणुप्पत्तीए अभावादो ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ १२३ ॥

जहण्णेण अंतोमुहुत्तमुक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टमिच्चेदेहि दोण्हं भेदाभावादो ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १२४ ॥

अंतराभावं पडि दोण्हं भेदाभावादो ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १२५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२६ ॥ ॥ ९२ ॥

कुदो ? किण्हलेस्सियस्स णीललेस्सं, णीललेस्सियस्स काउलेस्सं, काउलेस्सियस्स तेउलेस्सं गंतूण अप्पणो लेस्साए जहण्णकालेणागदस्स अंतोमुहुत्तंतरुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १२७ ॥

कुदो ? पुव्वकोडाउओ मणुस्सो गब्भादिअट्ठवस्साणमब्भंतरे छअंतोमुहुत्तमत्थि त्ति किण्हलेस्साए परिणमिय आदिं करिय पुणो णील-काउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सासु परिवाडीए अंतरिय संजमं घेत्तूण तिसु सुहलेस्सासु देसूणपुव्वकोडिमच्छिय पुणो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुप्पज्जिय तत्तो आगंतूण मणुस्सेसुप्पज्जिय सुक्क-पम्म-तेउ-काउ-णीललेस्साओ कमेण परिणामिय किण्णलेस्साए परिणामयस्स दसअंतोमुहुत्तूणअट्ठवस्सेहि ऊणियाए पुव्वकोडियाए सादिरेयाणं तेत्तीसं सागरोवमाणं अंतरत्तेणुवलंभादो । एवं चेव णील-काउलेस्साणं पि वत्तव्वं । णवरि अट्ठ-छअंतोमुहुत्तूणट्ठवस्सेहि ऊणियाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीससागरोवमाणि त्ति वत्तव्वं ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२९ ॥

कुदो ? तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहिंतो अविरुद्धमण्णलेस्सं गंतूण जहण्णकालेण पडिणियत्तिय अप्पप्पणो लेस्साणमागदस्स जहण्णंतरुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १३० ॥

कुदो ? अप्पिदलेस्सादो अविरुद्धाणप्पिदलेस्साणं गंतूण अंतरियावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टेसु किण्ण-णील-काउलेस्साहि अदिक्कंतेसु अप्पिदलेस्समागदस्स सुत्तुक्कस्संतरुवलंभादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३१ ॥

सुगमं । ॥ ९३ ॥

णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ १३२ ॥

कुदो ? भवियाणमभवियाणं च अण्णोण्णसरूवेण परिणामाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठि-वेदगसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेणंतोमुहुत्तं ॥ १३४ ॥

कुदो ? सम्माइट्ठिस्स मिच्छत्तं गंतूण जहण्णेण कालेण पुणो सम्मत्तमागदस्स जहण्णंतरुवलंभादो । एवं वेदगसम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं, विसेसाभावादो । एवं उवसमसम्माइट्ठिस्स वि । णवरि उवसमसेडीदो ओदिण्णस्स आदिं करिय वेदगसम्मत्तेण जहण्णद्धमंतरिय पुणो उमसमसेडिं समारुहणट्ठं दंसणमोहणीयमुवसमिय उवसमसम्मत्तं गयस्स जहण्णमंतरं वत्तव्वं ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १३५ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छादिट्ठिस्स अद्धपोग्गलपरियट्टादिसमए सम्मत्तं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गंतूणुवड्ढपोग्गलपरियट्टमंतरिय अवसाणे सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूणंतरं समाणिय अंतोमुहुत्तेण अबंधगत्तं गदस्स उवड्ढपोग्गलपरियट्टंतरुवलंभादो । एवं वेदगसम्माइट्ठिस्स वि वत्तव्वं । णवरि अणादियमिच्छादिट्ठी उवसमसम्मत्तं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो वेदगसम्मत्तं घेत्तूण तत्थ वि अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो मिच्छत्तेण अंतरिदो त्ति वत्तव्वं । अवसाणे वि उवसमसम्मत्तादो वेदगसम्मत्तं पडिवण्णपढमसमए अंतरं समाणेदव्वं । एवमुवसमसम्माइट्ठिस्स वि वत्तव्वं, सामण्णसम्माइट्ठीहिंतो भेदाभावादो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स वि । णवरि उवसमसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छत्तं णेदूण मिच्छत्तं गमिय अंतरावेदव्वो । अवसाणे वि उवसमसम्मत्तादो सम्मामिच्छत्तंगदपढमसमए अंतरं समाणिय अंतोमुहुत्तमच्छिय अबंधभावं णेयव्वो ।

खइयसम्माइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३६ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ॥ १३७ ॥

खइयसम्माइट्ठीणं सम्मत्तंतरगमणाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सासणसम्माइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३९ ॥

कुदो ? पढमसम्मत्तं घेत्तूण अंतोमुहुत्तमच्छिय सासणगुणं गंतूणादिं करिय मिच्छत्तं गंतूणंतरिय सव्वजहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तूव्वेलणकालेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं पढमसम्मत्तपाओग्गसागरोवमपुधत्तमेत्तट्ठिदिसंतकम्मं ठविय तिण्णि वि करणाणि काऊण पुणो पढमसम्मत्तं घेत्तूण छावलियावसेसाए उवसमसम्मत्तद्धाए सासणं गदस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तंतरुवलंभादो । उवसमसेडीदो ओयरिय सासणं गंतूण अंतोमुहुत्तेण पुणो वि उवसमसेडिं चडिय ओदरिदूण सासणं गदस्स अंतोमुहुत्तमेत्तमंतरं उवलब्भदे, एदमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण च उवसमसेडीदो ओदिण्णउवसमसम्माइट्ठिणो सासणं ण गच्छंति त्ति णियमो अत्थि, 'आसाणं पि गच्छेज्ज' इदि कसायपाहुडे चूण्णिसुत्तदंसणादो । एत्थ परिहारो उच्चदे–उवसमसेडीदो ओदिण्णउवसमसम्माइट्ठी दोवारमेक्को ण सासणगुणं पडिवज्जदि त्ति । तम्हि भवे सासणं पडिवज्जिय उवसमसेडिमारुहिय तत्तो ओदिण्णो वि ण सासणं पडिवज्जदि त्ति अहिप्पाओ एदस्स सुत्तस्स । तेणंतोमुहुत्तमेत्तं जहण्णंतरं णोवलब्भदे ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ १४० ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाइट्ठिस्स अद्धपोग्गलपरियट्टादिसमए गहिदसम्मत्तस्स सासणं गंतूण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं भमिय अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे पढमसम्मत्तं घेत्तूण एगसमयं सासणो होदूण अंतरं समाणिय पुणो मिच्छत्तं सम्मत्तं च कमेण गंतूण अबंधभावं गदस्स उवड्ढपोग्गलपरियट्टंतरुवलंभादो ।

मिच्छाइट्ठी मदिअण्णाणिभंगो ॥ १४१ ॥

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि, इच्चेदेहि जहण्णुक्कस्संतरेहि दोण्हमभेदादो । ॥ ९५ ॥

सण्णियाणुवादेण सण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १४२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १४४ ॥

सण्णीहिंतो असण्णीणं गंतूण असण्णिट्ठिदिमच्छिय सण्णीसुप्पण्णस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टंतरुवलंभादो ।

असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १४५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १४६ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १४७ ॥

असण्णीहिंतो सण्णीणं गंतूण सण्णिट्ठिदिं भमिय असण्णीसुप्पण्णस्स सागरोवमसदपुधत्तमेत्तंतरुवलंभादो ।

आहाराणुवादेण आहाराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ १४९ ॥

एगविग्गहं काऊण गहिदसरीरम्मि तदुवलंभादो । ॥ ९६ ॥

उक्कस्सेण तिण्णिसमयं ॥ १५० ॥

तिण्णि विग्गहे काऊण गहिदसरीरम्मि तिसमयंतरुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १५१ ॥

जहण्णेण तिसमऊणखुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ, इच्चेदेहि जहण्णुक्कस्संतरेहि दोण्हमभेदा। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमो

णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया णियमा अत्थि ॥ १ ॥

विचयो विचारणा। केसिं ? अत्थि णत्थि त्ति भंगाणं। कुदोवगम्मदे ? 'णेरइया णियमा अत्थि' त्ति सुत्तणिद्देसादो। ण बंधगाहियारे एदस्संतब्भावो, सव्वद्धं णियमेण पुणो अणियमेण च मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च अत्थित्तपरूवणाए एदिस्से सामण्णत्थित्तपरूवणम्मि अंतब्भावविरोहादो।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ २ ॥

कुदो ? णियमा अत्थित्तणेण भेदाभावादो। सामण्णपरूवणादो चेव विसेसपरूवणाए सिद्धाए किमट्ठं पुणो परूवणा कीरदे ? ण, सत्तण्हं पुढवीणं णियमेणत्थित्ताभावे वि सामण्णेण णियमा अत्थित्तस्स विरोहाभावादो।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ णियमा अत्थि ॥ ३ ॥

कुदो ? तीदाणागद-वट्टमाणकालेसु एदासिं मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च गंगापवाहस्सेव वोच्छेदाभावादो।

मणुसअपज्जत्ता सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ४ ॥

मणुसअपज्जत्ताणं कयावि अत्थित्तं होदि कयावि ण होदि। कुदो ? सहावदो। को सहावो णाम ? अच्चंताभावो।

देवगदीए देवा णियमा अत्थि ॥ ५ ॥

कुदो ? तिसु वि कालेसु देवाणं विरहाभावादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु ॥ ६ ॥

कुदो ? सव्वकालेसु अत्थित्तणेण तेहिमेदेसिं भेदाभावादो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ७ ॥

कुदो ? एदेसिं पवाहस्स तिसु वि कालेसु वोच्छेदाभावादो ।

बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय पज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ८ ॥

सुगमं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ९ ॥

एदासिं मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च पवाहस्स वोच्छेदाभावादो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी कायजोगी ओरालियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्मइयकायजोगी णियमा अत्थि ॥ १० ॥

सुगमं ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी आहारकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ११ ॥

कुदो ? सांतरसहावादो । ण च सहावो परपज्जणुजोगारुहो, अइप्पसंगादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदा णियमा अत्थि ॥ १२ ॥

गंगापवाहस्सेव विच्छेदाभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई णियमा अत्थि ॥ १३ ॥

सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहिय-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणी केवलणाणी णियमा अत्थि ॥ १४ ॥

णाणिणो इदि बहुवयणणिद्देसो किण्ण कओ ? ण, इकारांतपुरिस-णवुंसयलिंगसद्देहिंतो उप्पण्णपढमाबहुवयणस्स विहासाए लोवुवलंभादो । जहा–पव्वए अग्गी जलंति, मत्ता हत्थी एंति त्ति । सेसं सुगमं ।

संजमाणुवादेण सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदा णियमा अत्थि ॥ १५ ॥

सुगमं ।

सुहुमसांपराइयसंजदा सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ १६ ॥

एदं पि सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी णियमा अत्थि ॥ १७ ॥

एदं पि सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया णियमा अत्थि ॥ १८ ॥

सुगमं ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णियमा अत्थि ॥ १९ ॥

॥ ९९ ॥

सिद्धिपुरक्कदा भविया णाम, तव्विवरीया अभविया णाम । सिद्धा पुण ण भविया ण च अभविया, तव्विवरीयसरूवत्तादो । तहा ते वि णियमा अत्थि त्तिं किण्ण वुत्तं ? ण, बंधयाहियारे सिद्धाणमबंधयाणं संभवाभावादो । सेसं सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी खइय-वेदगसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी णियमा अत्थि ॥ २० ॥

सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी सिया अत्थि, सिया णत्थि ॥ २१ ॥

कुदो ? एदेसिं तिण्हं मग्गणावयणाणं सांतरसरूवत्तदंसणादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी णियमा अत्थि ॥ २२ ॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा अणाहारा णियमा अत्थि ॥ २३ ॥

एदं पि सुगमं । एवं णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमो समत्तो ।

दव्वपमाणाणुगमो

दव्वपमाणाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १ ॥

एदाओ मग्गणाओ सव्वकालमत्थि एदाओ च सव्वकालं णत्थि त्ति णाणाजीवभंगविचयाणुगमेण जाणाविय संपहि तासु मग्गणासु ट्ठिदजीवाणं पमाणपरूवणट्ठं दव्वाणिओगद्दारमागदं । णिरयगदिवयणेण सेसगदीणं पडिसेहो कओ । णेरइया त्ति वयणेण णिरयगइसंबद्धणेरइयवदिरित्तदव्वादीणं पडिसेहो कओ । दव्वपमाणेण त्ति वयणेण खेत्तपमाणादीणं पडिसेहो कओ । केवडिया इदि आसंका आइरियस्स ।

असंखेज्जा ॥ २ ॥

संखेज्जाणंताणं पडिसेहट्ठमसंखेज्जवयणं । एदं पि असंखेज्जं तिविहं । तत्थ एदम्हि असंखेज्जे णेरइयरासी ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि-अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि त्ति वयणेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव उवलद्धी जादो, 'असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि समयभावसलागभूदाहि णेरइया अवहिरंति' त्ति वयणादो । तं पि असंखेज्जासंखेज्जयं जहण्णमुक्कस्सं तव्वदिरित्तमिदि तिविहं । तत्थ एदम्हि असंखेज्जासंखेज्जे णेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठं खेत्तपरूवणमागदं—

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ ॥ ४ ॥

'असंखेज्जाओ सेडीओ' त्ति सुत्तेण जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जाणं सेडीणमभावादो । उक्कस्स-मज्झिमअसंखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो ण होदि, तत्थ असंखेज्जाणं सेडीणं संभवादो । एदेसु दोसु असंखेज्जासंखेज्जेसु णेरइया कम्हि अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

पदरस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५ ॥

एदेण सुत्तेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, पदरस्सासंखेज्जदिभागस्स उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जत्तविरोहादो । तं पि मज्झिममसंखेज्जासंखेज्जयमणेयपयारमिदि तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तासिं सेडीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं बिदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ६ ॥

सूचिअंगुलपढमवग्गमूले सूचिअंगुलस्स बिदियवग्गमूलेण गुणिदे तासिं सेडीणं विक्खंभसूची होदि । गुणिदेणेत्ति णेदं तदियाए एगवयणं, किंतु सत्तमीए एगवयणेण पढमाए एगवयणेण वा होदव्वमण्णहा सुत्तट्ठसंबंधाभावादो । एत्थ सामण्णणेरइयाणं वुत्त-विक्खंभसूची चेव णेरइयमिच्छाइट्ठीणं जीवट्ठाणे परूविदा, कधं तेणेदं ण विरुज्झदे ? ण विरुज्झदे, आलावभेदाभावादो । अत्थदो पुण भेदो अत्थि चेव, सामण्ण-विसेसविक्खंभसूचीणं समाणत्तविरोहादो । मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची संपुण्णघणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्ता किण्ण घेप्पदे ? ण, सामण्णणेरइयाणं परूविदघणंगुलबिदियवग्गमूलविक्खंभसूचिणा एदेण खुद्दाबंधसुत्तेण सह विरोहादो । ण तं पि सुत्तमिदि पच्चवट्ठादुं जुत्तं, खुद्दाबंधुवसंघारस्स तस्स एदम्हादो पहाणत्ताभावादो । तम्हा एत्थतणविक्खंभसूची संपुण्णघणंगुलबिदिय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वग्गमूलमेत्ता, मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची पुण किंचूणघणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्ता त्ति घेत्तव्वं । एत्थ विक्खंभसूची-अवहारकालदव्वाणं खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि परूवणा कायव्वा

एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ॥ ७ ॥

सामण्णणेरइयाणं पमाणं कधं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं होदि ? ण, दोण्हमालावाणं भेदाभावादो । अत्थदो पुण अत्थि भेदो, अण्णहा छण्णं पुढवीणं णेरइयाणमभावप्पसंगादो । तम्हा पुव्विल्लविक्खंभसूची एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणा पढमपुढविणेरइयाणं विक्खंभसूची होदि । सेसं जाणिदूण वत्तव्वं ।

बिदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ८ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंतसंखाणमवेक्खदे । एत्थ तिसु वि संखासु एदीए संखाए बिदियादिछप्पुढविणेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि । अधवा, बिदियादिछप्पुढविणेरइया णाणंता, ओघणेरइयाणमणंतसंखाभावादो । तदो दोण्णं संखाणं मज्झे एदीए संखाए छप्पुढविणेरइया अवट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं–

असंखेज्जा ॥ ९ ॥

असंखेज्जवयणेण संखेज्जस्स पडिसेहो कदो । असंखेज्जं पि परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं । एत्थ एदम्हि असंखेज्जे छप्पुढविदव्वमवट्ठिदमिदि जाणावणट्ठं कालपमाणपरूवणसुत्तमागदं—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १० ॥

एदेण असंखेज्जासंखेज्जवयणेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । एदं पि असंखेज्जासंखेज्जं जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहं । एत्थ एदम्हि संखाविसेसे छप्पुढविदव्वं होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरं खेत्तपमाणपरूवणसुत्तमागदं—

खेत्तेण सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥ ११ ॥

एदेण जगसेडीदो उवरिमवियप्पाणं पडिसेहो कदो । अवसेसदोसंखाणं मज्झे एदीए संखाए ट्ठिदमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिस्से सेडीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥ १२ ॥

एदेण सूचिअंगुलादिहेट्ठिमवियप्पाणं पडिसेहो कदो, सूचिअंगुलादिहेट्ठिमसंखाए असंखेज्जजोयणत्ताभावादो। तं पि तव्वदिरित्त-असंखेज्जासंखेज्जमसंखेज्जजोयणकोडिमेत्तं होदूण अणेयवियप्पं। तण्णिण्णयकरणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पढमादियाणं सेडिवग्गमूलाणं संखेज्जाणमण्णोण्णब्भासो ॥ १३ ॥

सेडिपढमवग्गमूलमादिं कादूण जाव बारसम-दसम-अट्ठम-छट्ठ-तदिय-विदियवग्गमूलो त्ति पुध पुध गुणगारगुणिज्जमाणं कमेणावट्ठिदछण्हं वग्गपत्तीणमण्णोण्णब्भासे कदे जहाकमेण विदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढविदव्वपमाणं होदि। कधमेत्तियाणं चेव सेडिवग्गमूलाणमण्णोण्णब्भासादो एदिस्से एदिस्से पुढवीए दव्वं होदि त्ति णव्वदे? ण, आइरियपरंपरागदअविरुद्धोवदेसेण तदवगमादो। उत्तं च— बारस दस अट्ठेव य मूला छ त्तिग दुगं च णिरएसु। एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ १ ॥

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा दव्वपमाणेण केवडिया? ॥ १४ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंताणि अवेक्खदे।

अणंता ॥ १५ ॥

एदेण संखेज्ज-असंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। तं च अणंतं परित्त-जुत्त-अणंताणंतभेएण तिवियप्पं। तत्थ एदम्हि अणंते तिरिक्खा ट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुवरिल्लसुत्तमागदं—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १६ ॥

किमट्ठमणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि तिरिक्खा ण अवहिरिज्जंति? अतीदकालग्गहणादो। अवहरिदे संते को दोसो? ण, भव्वजीवाणं सव्वेसिं वोच्छेदप्पसंगादो। एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं पडिसेहो कदो। अणंताणंतं पि जहण्णुक्कस्सतव्वदिरित्तभेएण तिविहं होदि। तत्थ एदम्हि अणंताणंते तिरिक्खा ट्ठिदा त्ति जाणावणट्ठमुवरिल्लसुत्तमागदं—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १७ ॥

एदेण जहण्णअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो। कुदो? तत्थ अणंताणंतलोगाणमभावादो। एदं पि कधं णव्वदे? लोगेण जहण्णे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणंताणंते भागे हिदे लद्धम्मि अणंताणंतसंखाभावादो । उक्कस्साणंताणंतस्स वि पडिसेहो कदो, अणंताणंताणि सव्वपज्जयपढमवग्गमूलाणि त्ति अभणिदूण अणंताणंता लोगा त्ति णिद्देसादो ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १८ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्ज-अणंताणि अवेक्खदे ।

असंखेज्जा ॥ १९ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, असंखेज्जम्मि तदुभयसंभवविरोहादो । तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं । तत्थ इमम्मि असंखेज्जे एदेसिमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २० ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । एदेण चेव जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जस्स वि पडिसेहो कदो । कुदो ? तत्थ वि असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । अवसेसेसु दोसु असंखेज्जासंखेज्जेसु कम्मि असंखेज्जासंखेज्जे इमं होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण संखेज्जगुणहीणेण कालेण संखेज्जगुणेण कालेण असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ २१ ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गपमाणदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदे पंचिंदियतिरिक्खाणं अवहारकालो होदि । तम्हि चेव देवअवहारकाले तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि । सो पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । देवावहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि । देवअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । सो पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । एदे

अवहारकाले जहाकमेण सलागभूदे ट्ठविय पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपमाणेण जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाओ जगपदरं च जुगवं समप्पंति। तत्थ एगवारमवहिरिदपमाणं जहाकमेण पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता च होंति त्ति वुत्तं होदि। एदेण एदेसिं जगपदरस्स अंसंखेज्जदिभागत्तपरूवएण सुत्तेण उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो। ण च तव्वदिरित्तस्स असंखेज्जासंखेज्जस्स सव्वस्स गहणं, तत्थतणसव्ववियप्पाणं पडिसेहं काऊण तत्थेक्कवियप्पस्सेव णिण्णयसरूवेण परूविदत्तादो।

मणुसगदीए मणुस्सा मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ २२ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्ज-अणंतावेक्खं। सेसं सुगमं।

असंखेज्जा ॥ २३ ॥

एदेण वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, पडिवक्खणिराकरणेण सवक्खपदुप्पायणादो। तं पि असंखेज्जं तिवियप्पमिदि कट्टु इदमिदि णिण्णओ णत्थि। इदं चेव होदि त्ति णिण्णयउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ २४ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, पडिवक्खणिसेहं काऊण असंखेज्जासंखेज्जवयणस्स सवक्खपदुप्पायणादो। तं पि जहण्णुक्कस्स-तव्वदिरित्तभेएण तिविहमिदि कट्टु ण तत्थ णिच्छओ अत्थि। तत्थ णिच्छउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥ २५ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, सेडीए असंखेज्जदिभागस्स रूवूणपरित्ताणंतत्तविरोहादो। सेसेसु दोसु एक्कस्स अवणयणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तिस्से सेडीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥ २६ ॥ ॥१०५॥

एदेण जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो। कुदो ? तत्थ असंखेज्जाणं जोयणकोडीणमभावादो। असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ वि अणेयवियप्पाओ त्ति काऊण णिच्छयाभावादो तत्थ सुट्ठ णिच्छयुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणुस-मणुसअपज्जत्तएहि रूवं रूवापक्खित्तएहि सेडी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ २७ ॥

सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं तस्सेव तदियवग्गमूलेण गुणिय सलागभूदं ठविय रूवाहियमणुस्सरासिपमाणेण सेडी अवहिरिज्जदि। किमट्ठं रूवस्स पक्खेवो कीरदे ? कदजुम्माए सेडीए तेजोजमणुसरासिम्हि अवहिरिज्जमाणे अवहारसलागमेत्तरूवाणमुव्वरंताणमवणयणट्ठं। तं चेव सलागरासिं ठविय रूवाहियमणुस्सपज्जत्तब्भहियमणुसअपज्जत्तरासिणा अवहिरदि। किमट्ठं रूवाहियमणुस्सपज्जत्तरासी पक्खिप्पदे ? मणुसअपज्जत्तरासिपमाणेण जगसेडीए अवहिरिज्जमाणाए सलागरासिमेत्तरूवाहियमणुसपज्जत्तरासिस्स उव्वरंतस्स अवणयणट्ठं।

मणुस्सपज्जत्ता मणुसिणीओ दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ २८ ॥

सुगमं।

कोडाकोडाकोडीए उवरिं कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्ठदो ॥ २९ ॥

एवं सामण्णेण जदि वि सुत्ते वुत्तं तो वि आइरियपरंपरागदेण गुरूवदेसेण अविरुद्धेण पंचमवग्गस्स घणमेत्तो मणुसपज्जत्तरासी होदि त्ति घेत्तव्वो। तस्स पमाणमेदं—७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६। एत्थ गाहा—तललीनमधुगविमलं धूमसिलागाविचारभयमेरू। तटहरिखझसा होंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका ॥ २ ॥ एसो उवदेसो कोडाकोडाकोडाकोडिए हेट्ठदो त्ति सुत्तेण कधं ण विरुज्झदे ? ण, एगकोडाकोडाकोडाकोडिमादिं कादूण जाव रूवूणदसकोडाकोडाकोडाकोडि त्ति एदं सव्वं पि कोडाकोडाकोडाकोडि त्ति गहणादो। ण च एदस्स ट्ठाणस्सुक्कस्सं वोलेदूण मणुसपज्जत्तरासी ट्ठिदा, अट्ठण्हं कोडाकोडाकोडाकोडीणं हेट्ठदो तस्स अवट्ठाणदंसणादो। एदस्स तिण्णि चदुब्भागा मणुसिणीओ, एगो चदुब्भागो पुरिस-णवुंसयरासी होदि। सहीणबुद्धीए पुण जोइज्जमाणे एदेण सुत्तेण सह वक्खाणाइरिएहि परूविदमणुसपज्जत्तरासिपमाणं णियमेण विरुज्झदे, कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्ठदो त्ति सुत्तम्मि एगवयणणिद्देसादो। ण च ट्ठाणसण्णा संखेज्जे वट्टदे जेण णवण्हं कोडाकोडाकोडाकोडीणं कोडाकोडाकोडाकोडित्तं होज्ज, विरोहादो। किं च ण वक्खाणाइरियपरूविदं मणुस्सपज्जत्तरासिपमाणं होदि, मणुसखेत्तम्मि तस्स वत्तीए अभावादो, एदम्हादो सत्तगुणसव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवाणं पि जोयणलक्खम्मि अवट्ठाणाभावादो च। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवगदीए देवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ३० ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंतालंबणं।

असंखेज्जा ॥ ३१ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो; "निरस्यति परस्यार्थं स्वार्थं कथयति श्रुतिः। तमो विधुन्वती भास्यं यथा भासयति प्रभा" ॥ ३ ॥ इदि वयणादो। तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं। तत्थ एदम्हि असंखेज्जे देवाणमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३२ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। पदरावलियाए असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीण सब्भावादो जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जस्स वि पडिसेहो कदो। इदरेसु दोसु एक्कस्स ग्गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण पदरस्स बेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभाएण ॥ ३३ ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गो पंचसट्ठिसहस्स-पंचसद-छत्तीसपदरंगुलाणि। जगपदरस्स एदेण पडिभाएण देवरासी होदि। एदेण वय-णेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहं काऊण विसिट्ठस्स अजहण्णाणुक्कस्सस्स परूवणा कदा।

भवणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ३४ ॥

सुगमं।

असंखेज्जा ॥ ३५ ॥

पडिवक्खपडिसेहं काऊण सपक्खपदुप्पायणादो एदेण सुत्तेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो। तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असं-खेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं होदि। तत्थ वि अणप्पिदस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३६ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जं पि पडिसिद्धं, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । संपहि अवसेसेसु दोसु अणप्पिदपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ ॥ ३७ ॥

एदेण सुत्तेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, लोगाणमणिद्देसादो । असंखेज्जाओ सेडीओ वि अणेयभेयभिण्णाओ, तण्णिण्णयउप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पदरस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३८ ॥

एदेण जगपदरस्स दुभाग-तिभागादीणं पडिसेहो कदो । जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयभेयभिण्णाओ त्ति तत्थ णिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तासिं सेडीणं विक्खंभसूची अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ॥ ३९ ॥

सूचिअंगुलं तस्सेव पढमवग्गमूलेण गुणिदं सेडीणं विक्खंभसूची होदि । सेसं सुगमं ।

वाणवेंतरदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ४० ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा ॥ ४१ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । असंखेज्जं पि परित्त-जुत्त असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं । तत्थ अणप्पिदपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४२ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । इदरेसु दोसु अणप्पिदपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ४३ ॥

तप्पाओग्गसंखेज्जजोयणसदं वग्गिय तेण जगपदरे ओवट्टिदे वाणवेंतरदेवाणं पमाणं होदि। सेसं सुगमं।

जोदिसिया देवा देवगदिभंगो ॥ ४४ ॥

कुदो ? पदरस्स बेछप्पण्णंगुलसदवग्गपडिभागत्तणेण तदो विसेसाभावादो। णवरि अत्थदो विसेसो अत्थि, सो जाणिय वत्तव्वो।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ४५ ॥

सुगमं।

असंखेज्जा ॥ ४६ ॥

एदेण संखेज्जस्स पडिसेहो कदो। अणंतस्स पुण पडिसेहो देवोघपरूवणादो चेव सिद्धो। असंखेज्जं पि पुव्वुत्तकमेण तिविहं। तत्थेकस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ४७ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, तत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। अवसेसेसु दोसु एक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेडीओ ॥ ४८ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, लोगादिणिदेसाणमभावादो। असंखेज्जाओ सेडीओ अणेयवियप्पाओ। तासिं णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पदरस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४९ ॥

एदेण जगपदरस्स दुभाग-तिभागादिपडिसेहो कदो। पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो त्ति जादसंदेहविणासणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तासिं सेडीणं विक्खंभसूची अंगुलस्स वग्गमूलं बिदियं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५० ॥

सूचिअंगुलबिदियवग्गमूलं तस्सेव तदियवग्गमूलगुणिदं सेडीणं विक्खंभस्स सूची होदि । घणंगुलतदियवग्गमूलमेत्तसेडीओ सोधम्मीसाणकप्पेसु देवा होंति त्ति वुत्तं होदि ।

सणक्कुमार जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा सत्तमपुढवीभंगो ॥ ५१ ॥

कुदो ? सेडीए असंखेज्जभागत्तणेण एदेसिं तत्तो भेदाभावादो । विसेसदो पुण भेदो अत्थि, सेडीए एक्कारस-णवम-सत्तम-पंचम-चउत्थवग्गमूलाणं जहाकमेण सेडीभागहाराणमेत्थुवलंभादो । एदे भागहारा एत्थ होंति त्ति कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदअविरुद्धुवदेसादो ।

आणद जाव अवराइदविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ५२ ॥

सुगमं ।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५३ ॥

एदेण संखेज्जस्स पडिसेहो कदो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयपयारो, तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ५४ ॥

एदेहि पुव्वुत्तदेवेहि पलिदोवमे अवहिरिज्जमाणे अंतोमुहुत्तेण पलिदोवममवहिरदि । एत्थ अंतोमुहुत्तपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो । संखेज्जावलियासु संखेज्जाणं जीवाणमुवक्कमे संते कधं पलिदोवमस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो भागहारो होदि ? ण एत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो संखेज्जावलियाओ वा अंतोमुहुत्तं, किंतु असंखेज्जावलियाओ एत्थ अंतोमुहुत्तमिदि घेत्तव्वाओ । कधमसंखेज्जावलियाणमंतोमुहुत्तत्तं ? ण, कज्जे कारणोवयारेण तासिं तदविरोहादो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जा ॥ ५६ ॥

एदं पि सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ५७ ॥

एदमासंकासुत्तं संखेज्जासंखेज्जाणंतालंबणं । सेसं सुगमं ।

अणंता ॥ ५८ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तं पि अणंतं परित्त-जुत्ताणंताणंतभेएण तिविहं । तत्थेक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ५९ ॥

एदेण जहण्णअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो, अदीदकालादो अणंतगुणस्स जहण्णअणंताणंतत्तविरोहादो । अजहण्णअणुक्कस्स-उक्कस्सअणंताणंताणं दोण्हं पि गहणप्पसंगे तत्थेक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ६० ॥

एदेण उक्कस्सअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो, अणंताणंतसव्वपज्जयपढमवग्गमूलस्स उक्कस्सअणंताणंतस्स अणंताणंतलोगत्तविरोहादो । सेसं जीवट्ठाणभंगो ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा ॥ ६२ ॥

एदेण संखेज्जाणंतपडिसेहो कदो । तं पि असंखेज्जं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण तिविहं । तत्थ दोण्हमवणयणट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६३ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु तिसु असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमत्थित्तविरोहादो । अजहण्णुक्कस्सुक्कस्सअसंखेज्जाणं दोण्हं पि गहणप्पसंगे तत्थेक्कस्स अवणयणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय तस्सेव पज्जत्तअपज्जत्तेहि पदरं अवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ६४ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, रूवूणजहण्णपरित्ताणंतस्स पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तविरोहादो । सूचिअंगुले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं वग्गिदे बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणमवहारकालो होदि । तम्हि चेव विसेसाहिए कदे एदेसिमपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागे वग्गिदे एदेसिं पज्जत्ताणमवहारकालो होदि । सेसं जीवट्ठाणम्मि वुत्तविहाणं णाऊण वत्तव्वं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय-सुहुमआउकाइय-सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइय तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा लोगा ॥ ६६ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जाणं च पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जा ॥ ६८ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । तं पि असंखेज्जं तिविहं । तत्थेक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ६९ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, तेसु असंखेज्जासंखेज्जोसप्पिणी-उस्सप्पिणीणमभावादो । उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ७० ॥

एत्थ सूचिअंगुलस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो होदि । सेसं सुगमं ।

बादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा ॥ ७२ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । असंखेज्जं पि तिविहं परित्त-जुत्त-असंखेज्जासंखेज्जभेएण । तत्थ परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जाणं च पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जावलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ॥ ७३ ॥

असंखेज्जावलियवग्गो त्ति वुत्ते पदरावलियप्पहुडिउवरिमवग्गाणं गहणं पत्ते तण्णिवारणट्ठमावलियघणस्स अंतो इदि वुत्तं । सेसं सुगमं ।

बादरवाउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ७४ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जा ॥ ७५ ॥

संखेज्जाणंताणं पडिसेहो एदेण कदो । तिविहेसु असंखेज्जेसु एदम्हि असंखेज्जे बादरवाउपज्जत्तरासी ट्ठिदो त्ति जाणावट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ७६ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, तेसु असंखेज्जासंखेज्जाणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । अजहण्णुक्कस्स-उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जाण गहणप्पसंगे उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि पदराणि ॥ ७७ ॥

एदेण अजहण्णुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स सिद्धी कदा। असंखेज्जाणि जगपदराणि अणेयविहाणि त्ति तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ७८ ॥

घणलोगे तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे हिदे बादरवाउकाइयपज्जत्तरासी होदि । सेसं सुगमं ।

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ७९ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ ८० ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो।अणंतं पि तिविहं। तत्थ एदम्हि अणंते एदेसिमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो । एदेसिं अणंताणंताणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । अजहण्णुक्कस्सअणंताणंतस्स गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ८२ ॥

एदेण उक्कस्सअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ता पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणं भंगो ॥ ८३ ॥

तसकाइयाणं पंचिंदियभंगो, तसकाइयपज्जताणं पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो, तसकाइयअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो । कुदो ? समाणाणं जहासंखाए संबंधादो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण संखेज्जदिरूवेहि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण च पुध पुध ओवट्टिदपदरंगुलेहि जगपदरम्मि भागे हिदे पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-पंचिंदियअपज्जत्ताणं रासीओ होंति त्ति वुत्तं होदि । सेसं जहा जीवट्ठाणे वुत्तं तहा वत्तव्वं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी तिण्णिवचिजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ८४ ॥

सुगमं ।

देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥

देवाणमवहारकाले वेछप्पण्णंगुलसदवग्गे तप्पाओग्गसंखेज्जरूवेहि गुणिदे एदेसिमवहारकाला होंति । एदेहि जगपदरम्हि भागे हिदे पुव्वुत्तट्ठरासीओ होंति । सेसं सुगमं ।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा ॥ ८७ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । कुदो ? उभयसत्तिसंजुत्तत्तादो । असंखेज्जं पि तिविहं । तत्थेदम्हि एदेसिमवट्ठाणमिदि जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८८ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । सेसदोअसंखेज्जासंखेज्जेसु एक्कस्सावहारणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८९ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो, तस्स पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तविरोहादो । संखेज्जरूवेहि ओवट्टिदपदरंगुलेण जगपदरे भागे हिदे दो वि रासीओ आगच्छंति । सेसं सुगमं ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगि-कम्मइयकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९० ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ ९१ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । अणंतं पि तिविहं । तत्थ एदम्हि अणंते एदाओ रासीओ ट्ठिदाओ त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ९२ ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो, तेसु अणंताणंताणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । संपहि दोसु अणंताणंतेसु एक्कस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ९३ ॥

एदेण उक्कस्साणंताणंतस्स पडिसेहो कदो, लोगवयणण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेउव्वियकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९४ ॥

सुगमं।

देवाणं संखेज्जदिभागूणो ॥ ९५ ॥

देवेसु पंचमण-पंचवचि-वेउव्वियमिस्सकायजोगिरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागमेत्ताओ देवरासीदो अवणिदे अवसेसं वेउव्वियकायजोगिपमाणं होदि।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९६ ॥

सुगमं।

देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

देवरासिं संखेज्जवाससहस्सुवक्कमणकालसंचिदसंखेज्जखंडे कदे एगखंडं वेउव्वियमिस्सरासिपमाणं होदि।

आहारकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९८ ॥

सुगमं।

चदुवण्णं ॥ ९९ ॥

एदं पि सुगमं।

आहारमिस्सकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०० ॥

सुगमं।

संखेज्जा ॥ १०१ ॥

संखेज्जा त्ति वयणेण असंखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो। संखेज्जं जदि वि अणेयपयारं तो वि चदुवण्णब्भंतरे चेव ते होंति, णो बहिद्धा, आहारमिस्सकालम्मि तिजोगावरुद्धपज्जत्ताहारसरीरकालादो संखेज्जगुणहीणम्मि संचिदाणं जीवाणं चदुवण्णसंखाविरोहादो। आइरियपरंपरागदउवदेसेण पुण सत्तावीस जीवा होंति। ॥११७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०२ ॥

सुगमं ।

देवीहि सादिरेयं ॥ १०३ ॥

देवरासिं तेत्तीसखंडाणि काऊणेगखंडमवणिदे देवीणं पमाणं होदि । पुणो तत्थ तिरिक्ख-मणुस्साण इत्थिवेदरासिं पक्खित्ते सव्वित्थिवेदरासी होदि त्ति देवीहि सादिरेयमिदि वुत्तं ।

पुरिसवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०४ ॥

सुगमं ।

देवेहि सादिरेयं ॥ १०५ ॥

देवरासिं तेत्तीसखंडाणि कादूण तत्थेगखंडं देवाणं पुरिसवेदपमाणं । पुणो तत्थ तिरिक्ख-मणुस्सपुरिसवेदरासिम्हि पक्खित्ते सव्वपुरिसवेदपमाणं होदि त्ति देवेहि सादिरेयपमाणं होदि त्ति वुत्तं ।

णवुंसयवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०६ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ १०७ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तिविहे अणंते दोण्हमणंताणं पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १०८ ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु अणंताणंताणमोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । दोसु अणंताणंतेसु एक्कस्सावहारणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १०९ ॥

एदेण उक्कस्साणंताणंतस्स पडिसेहो कदो । कुदो ? लोगणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवगदवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ११० ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ १११ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तिविहे अणंते कम्हि अवगदवेदाणं पमाणं होदि ? अणंताणंते । कुदो ? अदीदकालस्स उक्कस्सजुत्ताणंतं जहण्णमणंताणंतं च उल्लंघिय अजहण्णाणुक्कस्साणंताणंतम्मि अवट्ठिदस्स असंखेज्जदिभागभूदअवगदवेदरासी अणंताणंतो होदि त्ति अविरुद्धाइरियउवदेसादो । सेसं सुगमं ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ११२ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ ११३ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तिविहे अणंते एक्कस्सावहारणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ११४ ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु अणंताणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । दोसु अणंताणंतेसु एक्कस्सावहारणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ११५ ॥

एदेण वुक्कस्सअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो, लोगणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

अकसाई दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ११६ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ ११७ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । णवविधेसु अणंतेसु कम्हि अकसाइरासी होदि ? अजहण्णाणुक्कस्सअणंताणंते । कुदो ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णाणुक्कस्समणंताणंतयं घेत्तव्वं इदि परियम्मवयणादो। जदि अणंताणंतयस्स गहणं तो 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि णावहिरंति कालेणेत्ति' किण्ण वुच्चदे ? ण, अदीदकालादो असंखेज्जगुणहीणाण-मणवहरणविरोहादो। अणंताणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ त्ति किण्ण वुच्चदे ? ण, ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिपमाणेण कीरमाणे अणंताणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ होंति त्ति जुत्तिसिद्धत्तादो।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी णवुंसयभंगो ॥ ११८ ॥

जधा णवुंसयवेदस्स पमाणपरूवणा कदा तधा कादव्वा, विसेसाभावादो।

विभंगणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ११९ ॥

सुगमं।

देवेहि सादिरेयं ॥ १२० ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गेण सादिरेगेण जगपदरम्मि भागे हिदे देवविभंगणाणिपमाणं होदि। पुणो एत्थ तिगदिविभंगणाणिपमाणे पक्खित्ते सव्वविभंगणाणिपमाणं होदि त्ति देवेहि सादिरेयमिदि पमाणपरूवणं कदं। सेसं सुगमं।

आभिणिबोहिय-सुद-ओधिणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२१ ॥

सुगमं।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२२ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, परित्त-जुत्तासंखेज्जाणमुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स वि। जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १२३ ॥

एत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो अंतोमुहुत्तमिदि घेत्तव्वो। कुदो ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणपज्जवणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२४ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा ॥ १२५ ॥

एदेण असंखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

केवलणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२६ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ १२७ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

कोडिपुधत्तं ॥ १२९ ॥

एदं पि सुगमं ।

परिहारसुद्धिसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३० ॥

सुगमं ।

सहस्सपुधत्तं ॥ १३१ ॥

एदस्स परूवणाए जीवट्ठाणभंगो ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३२ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदपुधत्तं ॥ १३३ ॥

एदं पि सुगमं ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३४ ॥

सुगमं ।

सदसहस्सपुधत्तं ॥ १३५ ॥

एदस्स परूवणाए जीवट्ठाणभंगो ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३६ ॥

सुगमं ।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३७ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणमुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, एदेसिं पडिवक्खसंखाणिद्देसादो । जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जाओ हेट्ठिमसंखेज्जाणं पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १३८ ॥

एत्थ अंतोमुहुत्तमिदि वुत्ते असंखेज्जावलियाओ त्ति घेत्तव्वं । कुदो ? वइपुल्लवाइयस्स अंतोमुहुत्तस्स गहणादो । एदेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजददव्वमागच्छदि । सेसं सुगमं ।

असंजदा मदिअण्णाणिभंगो ॥ १३९ ॥

पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे जदि वि असंजदाणं तेहिंतो भेदो अत्थि तो वि असंजदा मदिअण्णाणिभंगो त्ति वुच्चदे, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे भेदाभावादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १४० ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जा ॥ १४१ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, तेसिं विरुज्झणिद्देसा । असंखेज्जं पि तिविहं । तत्थ अणहियय असंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १४२ ॥

एदेण परित्त-जुत्तासंखेज्जाणं जहण्णासंखेज्जासंखेज्जस्स य पडिसेहो कदो, एत्थ असंखेज्जासंखेज्जोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो । इच्छिदअसंखेज्जासंखेज्जस्स जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण चक्खुदंसणीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १४३ ॥

सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागं वग्गिय एदेण जगपदरम्मि भागे हिदे चक्खुदंसणिरासी होदि । एत्थ चउरिंदियादिअपज्जत्तरासी चक्खुदंसणक्खओवसमलक्खिओ जदि घेप्पदि तो जगपदरस्स पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो होदि । णवरि सो एत्थ ण गहिदो, पज्जत्तरासिम्हि वा चक्खुदंसणुवजोगाभावादो, दव्वचक्खुदंसणाभावादो वा । एदेण उक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्स पडिसेहो कदो ।

अचक्खुदंसणी असंजदभंगो ॥ १४४ ॥

कुदो ? दव्वट्ठियणयावलंबणे भेदाभावादो । सेसं सुगमं ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १४५ ॥

सुगमं ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १४६ ॥

एदं पि सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिया असंजदभंगो ॥ १४७ ॥

कुदो ? दव्वट्ठियणयावलंबणादो । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो, सो जाणिय वत्तव्वो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेउलेस्सिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

जोदिसियदेवेहि सादिरेयं ॥ १४९ ॥

बेछप्पण्णंगुलसदवग्गेण सादिरेगेण जगपदरम्मि भागे हिदे जोदिसियदेवा तेउलेस्सिया होंति । पुणो तत्थ भवणवासिय-वाणवेंतर-तिरिक्ख-मणुस्सतेउलेस्सियरासिम्हि पक्खित्ते सव्वा तेउलेस्सियरासी होदि । तेण जोदिसियदेवेहि सादिरेयमिदि वुत्तं । सेसं सुगमं ।

पम्मलेस्सिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १५१ ॥

संखेज्जपदरंगुलेहि तप्पाओग्गेहि जगपदरम्मि भागे हिदे पम्मलेस्सियरासी होदि । सेसं सुगमं ।

सुक्कलेस्सिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५२ ॥

सुगमं ।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५३ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो । कुदो ? एदेसिं विरुद्धसंखाणिदेसादो । अणिच्छिदअसंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १५४ ॥

एत्थ अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो । एदेण पलिदोवमे भागे हिदे सुक्कलेस्सियरासी होदि । सेसं सुगमं । ॥१२४॥

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५५ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणंता ॥ १५६ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो, सव्वस्स वयणस्स सपडिवक्खुक्खणणेण अप्पणो अत्थस्स पदुप्पायणादो। अणिच्छिदाणंतेसु भवियरासिस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १५७ ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु अणंताणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। अणवहरणं पि अदीदकालग्गहणादो। सेसं सुगमं। अणिच्छिदाणंताणंतपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १५८ ॥

एदेण उक्कस्सअणंताणंतस्स पडिसेहो कदो, अणंताणंताणि सव्वपज्जयपढमवग्गमूलाणि त्ति अभणिय अणंताणंतलोगवयणादो। सेसं सुगमं।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५९ ॥

सुगमं।

अणंता ॥ १६० ॥

जहण्णजुत्ताणंतमिदि घेत्तव्वं। कुदो ? आइरियपरंपरागयउवदेसादो। कधं एदस्स अव्वए संते अव्वोच्छिज्जमाणस्स अणंतववएसो ? ण, अणंतस्स केवलणाणस्स चेव विसए अवट्ठिदाणं संखाणमुवयारेण अणंतत्तविरोहाभावादो।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्मादिट्ठी उवसमसम्मादिट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १६१ ॥ ॥१२५॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥

एदेण संखेज्जाणंताणं पडिसेहो कदो, उक्कस्सअसंखेजासंखेजस्स वि । अणिच्छिदअसंखेज्जपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ १६३ ॥

एत्थ सम्मादिट्ठी - वेदगसम्मादिट्ठीणमवहारकालो आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति घेत्तव्वो । कुदो ? सुत्ताविरुद्धगुरूवदेसादो । खइयसम्माइट्ठीणं पुण संखेज्जावलियाओ, अवसेसाणमसंखेज्जावलियाओ त्ति घेत्तव्वं । सेसं सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ १६४ ॥

कुदो ? दव्वट्ठियणयावलंबणे दोण्हं रासीणं भेदाणुवलंभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १६५ ॥

सुगमं ।

देवेहि सादिरेयं ॥ १६६ ॥

कुदो ? देवा सव्वे सण्णिणो, तत्थ णेरइय - मणुस्सरासिमसंखेज्जसेडिमेत्तं पुणो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ततिरिक्खसण्णिरासिं च पक्खित्ते सयलसण्णीणं पमाणुप्पत्तीदो । सेसं सुगमं ।

असण्णी असंजदभंगो ॥ १६७ ॥

एदं पि सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा अणाहारा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १६८ ॥

सुगमं ।

अणंता ॥ १६९ ॥

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । तिविहेसु अणंतेसु अणिच्छिदाणंतपडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ १७० ॥

एदेण परित्त-जुत्ताणंताणं जहण्णअणंताणंतस्स य पडिसेहो कदो, एदेसु अणंताणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणीणमभावादो। उक्कस्स-अणंताणंतस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १७१ ॥

एदं पि सुगमं। एवं दव्वपमाणाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

खेत्ताणुगमो

खेत्ताणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १ ॥

तत्थ सत्थाणं दुविहं सत्थाणसत्थाणं विहारवदिसत्थाणमिदि। वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियभेएण समुग्घादो चउव्विहो। एत्थ णेरइएसु अहारसमुग्घादो णत्थि, महिड्ढिपत्ताणमिसीणमभावादो। केवलिसमुग्घादो वि णत्थि, तत्थ सम्मत्तं मोत्तूण वयगंधस्स वि अभावादो। तेजइयसमुग्घादो वि तत्थ णत्थि, विणा महव्वएहि तदभावादो। उववादो एगविहो। तत्थ वेदणावसेण ससरीरादो बाहिरेगपदेसमादिं कादूण जावुक्कस्सेण ससरीरतिगुणविपुंजणं वेयणसमुग्घादो णाम। कसायतिव्वदाए ससरीरादो जीवपदेसाणं तिगुणविपुंजणं कसायसमुग्घादो णाम। विविहिद्धिस्स माहप्पेण संखेज्जासंखेज्जजोयणाणि सरीरेण ओट्ठहिय अवट्ठाणं वेउव्वियसमुग्घादो णाम। अप्पप्पणो अच्छिदपदेसादो जाव उप्पज्जमाणखेत्तं ति आयामेण एगपदेसमादिं कादूण जावुक्कस्सेण सरीरतिगुणबाहल्लेण कंडेक्कखंभट्ठियत्तोरण-हल-गोमुत्तायारेण अंतोमुहुत्तावट्ठाणं मारणंतियसमुग्घादो णाम। उववादो दुविहो—उजुगदिपुव्वओ विग्गहगदिपुव्वओ चेदि। तत्थ एक्केक्कओ दुविहो—मारणंतियसमुग्घादपुव्वओ तव्विवरीदओ चेदि। तेजासरीरं दुविहं पसत्थमप्पसत्थं चेदि। अणुकंपादो दक्खिणंसविणिग्गयं डमर-मारीदिपसमक्खमं दोसयरहिदं सेदवण्णं णव-बारहजोयणरुंदायामं पसत्थं णाम, तव्विवरीदमियरं। आहारसमुग्घादो णाम हत्थपमाणेण सव्वंगसुंदरेण समचउरससंठाणेण हंसधवलेण रस-रुधिर-मांस-मेदट्ठि-मज्ज-सुक्कसत्तधाउववज्जिएण विसग्गि-सत्थादिसयलबाहामुक्केण वज्ज-सिला-थंभ-जलपव्वयगमणदच्छेण सीसादो उग्गएण देहेण तित्थयरपादमूलगमणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणाणि केवलिसमुग्घादो णाम । अप्पप्पणो उप्पण्णगामाईणं सीमाए अंतो परिभमणं सत्थाणसत्थाणं णाम । तत्तो बाहिरपदेसे हिंडणं विहारवदिसत्थाणं णाम । तत्थ 'णेरइया अप्पणो पदेहि केवडिखेत्ते होंति' त्ति आसंकासुत्तं । एवमासंकिय उत्तरसुत्तं भणदि—

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २ ॥

एत्थ लोगो पंचविहो—उड्ढलोगो अधोलोगो तिरियलोगो मणुसलोगो सामण्णलोगो चेदि । एदेसिं पंचण्हं पि लोगाणं लोगग्गहणेण गहणं कादव्वं । कुदो ? देसामासियत्तादो । णेरइया सव्वपदेहि चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागे होंति, माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे । तं जहा—सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा, विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागो । एदमत्थपदं सव्वत्थ वत्तव्वं । पुणो सत्थाणसत्थाणादिणेरइयरासीओ ठविय अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तओगाहणाहि गुणिय तेरासियकमेण पंचहि लोगेहि ओवट्टिदे चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसलोगादो असंखेज्जगुणमागच्छदि । णवरि वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेसु ओगाहणा णवगुणा कायव्वा । मारणंतियखेत्ते आणिज्जमाणे विदियपुढविदव्वादो आणेदव्वं, तत्थ रज्जुमेत्तायामुवलंभादो । पढमपुढविमारणंतियखेत्तं घेत्तूण ओवट्टणा किण्ण कीरदे, असंखेज्जगुणदव्वदंसणादो, आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो च ? ण, तत्थ संखेज्जजोयणमेत्तमारणंतियखेत्तायामदंसणादो । पढमपुढवीए वि विग्गहगईए कधं मारणंतियजीवाणमसंखेज्जजोयणायामं मारणंतियखेत्तमुवलब्भदे ? ण, असंखेज्जसेडिपढमवग्गमूलमेत्तायाममारणंतियखेत्तजीवाणं बहुआणमणुवलंभादो । तेण विदियपुढविदव्वे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमएण मरंतजीवाण पमाणं होदि । पुणो एदेसिमसंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा कालं करेदि, बहुआणं सुहपाणीणमभावादो असंखेज्जा भागा मारणंतियं करेंति । मारणंतियं करेंताणमसंखेज्जदिभागो उजुगदीए मारणंतियं करेदि, अप्पणो ट्ठिदपदेसादो कंडुज्जुवखेत्तम्हि उप्पज्जमाणाणं बहुआणमणुवलंभादो । विग्गहगदीए मारणंतियं करेंताणमसंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा विग्गहगदीए उप्पज्जमाणरासी होदि, तेण मरंतजीवाणं असंखेज्जे भागे मारणंतियकालब्भंतरउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण गुणिदे मारणंतियकालम्हि संचिदरासिपमाणं होदि । पुणो तम्मुहवित्थारेण णवरज्जुगुणेण गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि । एत्थ वि पंचलोगोवट्टणं पुव्वं व कायव्वं । उववादखेत्ते आणिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण विदियपुढविदव्वे भागे हिदे तिरिक्खेहिंतो बिदियपुढवीए उप्पज्जमाणरासी होदि । एदस्स असंखेज्जदिभागो चेव उजुगदीए उप्पज्जदि, कंडुज्जुएण मग्गेण सगउप्पत्तिट्ठाणमागच्छमाणजीवाणं बहुयाणमणुवलंभादो । तेणेदस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उप्पज्जमाणतिरिक्खरासी होदि । पुणो एदं दव्वं तिरिक्खोगाहणमुहवित्थारेण तप्पाओग्गअसंखेज्ज-जोयणगुणेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि । ओवट्टणा पुव्वं व कायव्वा । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

कुदो ? सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि लोगस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो । एसो दव्वट्ठियणयं पडुच्च णिद्देसो । पज्जवट्ठियणयं पडुच्च परूविज्जमाणे सत्तण्हं पुढवीणं दव्वविसेसो ओगाहणविसेसो मारणंतिय-उववादखेत्ताणमायामविसेसो च अत्थि । णवरि सो जाणिय वत्तव्वो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ॥ ४ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपदाणि तिरिक्खेसु अत्थि, अवसेसाणि णत्थि । एदेहि पदेहि तिरिक्खा केवडिखेत्ते होंति त्ति आसंकिय परिहारं भणदि—

सव्वलोए ॥ ५ ॥

कुदो ? आणंतियादो । ण च ण सम्मांति त्ति आसंकणिज्जं, लोगागासम्मि अणंतोगाहणसत्तिसंभवादो । विहारवदिसत्थाणखेत्तं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं । कुदो ? तसपज्जत्ताणं तिरिक्खाणं संखेज्जदिभागम्मि विहारुवलंभादो । तदो एदं पुध परूवेदव्वं ? ण, सत्थाणम्मि एदस्संतब्भूदत्तणेण पुध परूवणाभावादो । वेउव्वियसमुग्घादखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं । कुदो ? तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदसेडीमेत्तो त्ति गुरूवदेसादो । तम्हा एदस्स पुधपरूवणा कादव्वा ? ण, एदस्स समुग्घादे अंतब्भावादो । सेसं सुगमं ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ६ ॥ ॥ १२९ ॥

एदमासंकासुत्तं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७ ॥

एदं देसामासियं सुत्तं, देसपदुप्पायणमुहेण सूचिदाणेयत्थादो। एत्थ ताव पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं वुचदे। तं जहा—एदे तिण्णि वि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो? एदेसिं संखेज्जघणंगुलोगाहणत्तादो। पंचिंदियतिरिक्खेसु अपज्जत्तरासी होदि बहुओ, तक्खेत्तेण किण्ण ओवट्टणा कीरदे? ण, तत्थ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागोगाहणम्मि बहुवखेत्ताणुवलंभादो। विहारपाओग्गरासिस्स संखेज्जा भागा सत्थाणसत्थाणरासीए एत्थ संखेज्जदिभागमेत्ता सेसरासीओ त्ति घेत्तव्वं। वेउव्वियसमुग्घादखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणं। कुदो? तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासिस्स असंखेज्जघणंगुलेहि गुणिदसेडिमेत्तपमाणुवलंभादो। एदे तिण्णि वि मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति। कुदो? एदेसिं तिण्हं पंचिंदियतिरिक्खाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारुवलंभादो। तं जहा—एदाओ तिण्णि वि रासीओ पहाणीभूदसंखेज्जवस्साउअतिरिक्खोवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगसमएण मरंतजीवाणं पमाणं होदि। एदेसिमसंखेज्जदिभागो चेव मारणंतिएण विणा णिप्फिडमाणरासी त्ति कट्टु एदस्स असंखेज्जे भागे मारणंतियउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गुणगारुवक्कमणकालादो भागहारुवक्कमणकालो संखेज्जगुणो त्ति उवरिमगुणगारेण हेट्ठिमभागहारमावलियाए असंखेज्जदिभागमोवट्टिय सेसेण भागे हिदे सग-सगरासीणं संखेज्जदिभागो आगच्छदि। पुणो असंखेज्जजोयणाण मुक्कमारणंतियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो। पुणो एदं रासिं रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि। एदेण तिसु लोगेसु भागे हिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति वुत्तं। णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। तिण्हं रासीणमुववादखेत्तं पि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणं। एदस्स खेत्तस्स पमाणे आणिज्जमाणे मारणंतियभंगो। णवरि एगसमयसंचिदो एसो रासि त्ति कट्टु आवलियअसंखेज्जदिभागो गुणगारो अवणेदव्वो। पढमदंडमुवसंहरिय बिदियदंडट्ठिदजीवे इच्छिय अवरो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो? उस्सेधघणंगुले पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगखंडमेत्तोगाहणादो। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो? दो-तिण्णि-पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहाराणं जहाकमेण मारणंतिय-उववादखेत्तेसु उवलंभादो। सेसं सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी सत्थाणेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८ ॥

एत्थ सत्थाणणिद्देसेण सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणाणं गहणं, सत्थाणत्तणेण दोण्हं भेदाभावादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

एत्थ लोगणिद्देसो देसामासियो, तेण पंचण्हं लोगाणं गहणं होदि । एदेण सूचिदत्थस्स परूवणं कस्सामो । तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणट्ठिदतिविहा मणुसा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति । कुदो ? मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं संखेज्जजीवाणं खेत्तग्गहणादो । सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तमणुसअपज्जत्ताणं सत्थाणखेत्तस्स गहणं किण्ण कीरदे ? ण, तस्स अंगुलस्स संखेज्जदिभागे संखेज्जंगुलेसु वा णिचियक्कमेण अवट्ठाणादो । उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तउववादखेत्तादो । णवरि मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणमुववादखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं । मणुसाणमुववादखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा– मणुसअपज्जत्तरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण दोहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेहि य ओवट्टिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवट्टिदपदरंगुलेण गुणिदसेडीसत्तमभागेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि । एत्थ पंचलोगोवट्टणं जाणिय कायव्वं । सेसं सुगमं ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १० ।

एत्थ समुग्घादणिद्देसो दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदो, संगहिदवेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-तेजाहार-दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणत्तादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११ ॥

जेण एदं देसामासियं सुत्तं तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा– वेदण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहारसमुग्घादगदा तिविहा मणुसा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । णवरि मणुसिणीसु तेजाहारं णत्थि । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तखेत्तादो । णवरि मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं मारणंतियखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं । एवं दंड-कवाडखेत्ताणं पि वत्तव्वं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवरि कवाडखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । संपहि पदर-लोगपूरणसमुग्घादे पडुच्च खेत्तपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जसु वा भाएसु सव्वलोगे वा ॥ १२ ॥

पदरसमुग्घादे लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु अवट्ठाणं होदि, वादवलएसु जीवपदेसाणमभावादो । लोगपूरणसमुग्घादे सव्वलोगे अवट्ठाणं होदि, जीवपदेसविरहिदलोगागासपदेसाभावादो । अधवा सव्वमेदमेक्कं चेव सुत्तमेक्कस्स समुग्घादगदस्स तिसु अवट्ठाणेसु खेत्त-भेदपदुप्पायणादो ।

मणुसअपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १३ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १४ ॥

एदं देसामासियसुत्तं तेणेदेण सूचिदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा—सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्ज-दिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे णिचियक्कमेण । विण्णासक्कमेण पुण असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणाओ । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । मारणंतियखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे—सूचिअंगुलपढम-तदियवग्गमूले गुणेदूण जगसेडिम्हि भागे हिदे दव्वं होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तउवक्कम-णकालेण भागे हिदे एगसमयसंचिदमरंतरासी होदि । एदस्स असंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा णिप्फिडमाणरासी होदि । पुणो मारणंतियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण मारणंतियउवक्कमणकालेण गुणिदे मारणंतियकालब्भंतरे संचिदरासी होदि । पुणो अवरेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुआयामेण पलिदोवमअसंखेज्जदिभागेणोवट्टिदपदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण विक्खंभेण मुक्कमारणंतियरासी होदि । पुणो एदस्स ओगाहणगुणगारे ठविदे मारणंतियखेत्तं होदि । एत्थ ओवट्टणं जाणिय कायव्वं । उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एत्थ उववादखेत्तं मारणंतियखेत्तं व ठवेदव्वं । णवरि एसो रासी एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणगारो ण दादव्वो । पढमदंडमुवसंहरिय बिदियदंडेण सेडीए संखेज्जदिभागायामेण मुक्कमारणंतियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । एत्थ ओवट्टणा पुव्वं व कायव्वा ।

देवगदीए देवा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १५ ॥

एत्थ तेजाहार-केवलिसमुग्घादा णत्थि, देवेसु तेसिमत्थित्तविरोहादो। किं सव्वलोगे किं लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु किं वा संखेज्जदिभागे किमसंखेज्जदिभागे किमणंतिमभागे किं वा संखेज्जासंखेज्जाणंतलोगेसु त्ति पुच्छिदे उत्तरसुत्तं भणदि। अधवा आसंकिद-सुत्तमेदं। वासद्देण विणा कधमासंकावगम्मदे ? तेण विणा वि तदट्ठावगदीदो।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

देसामासियसुत्तमिदं, तेणेदेण सूचिदत्थस्स परूवणं कीरदे। तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-समुग्घादगदा देवा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो ? पहाणी-कदजोइसियक्खेत्तादो। विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियरासीओ सग-सगरासीणं सव्वत्थ संखेज्जदिभागमेत्ताओ, सत्थाण-सत्थाणरासी सगरासिस्स सव्वत्थ संखेज्जाभागमेत्ता त्ति कधं णव्वदे ? ण, गुरूवदेसादो, एदेसु पदेसु ट्ठिददेवा तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति वक्खाणादो वा णव्वदे। मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एदस्स खेत्तस्स ट्ठवणविहाणं वुच्चदे। तं जहा— एत्थ वाणवेंतरखेत्तं पहाणं, तत्थतणसंखेज्जवासाउएसु तत्थ ट्ठियअसंखेज्जवासाउएहिंतो असंखेज्जगुणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो। तेण वेंतररासिं ठ्विय मारणंतियउवक्कमणकालेणोवट्टिद-सगुवक्कमणकालसंखेज्जरूवेहि भागे हिदे मुक्कमारणंतियजीवा होंति। तेसिमसंखेज्जदिभागो ईसिपब्भारादिउवरिमपुढवीसु उप्पज्जदि त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो दादव्वो। तिरिक्खेसु रज्जुमेत्तं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणमागमणट्ठं च पुणो पदरंगुलस्स संखेज्ज-दिभागेणब्भत्थसंखेज्जरज्जूहि गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि। उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्ज-गुणे अच्छंति। एदस्स खेत्तस्स विण्णासो मारणंतियभंगो। णवरि तिरिक्खरासिं तिरिक्खाणमुवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदि-भागेणोवट्टिय पुणो देवेसुप्पज्जमाणरासिमिच्छिय तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवेहि ओवट्टिय रज्जुमेत्तं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणं पमाणागमणट्ठं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो दादव्वो। पुणो बिदियदंडेण रज्जुसंखेज्जदिभागमेत्तायदजीवाणं पउर संभवाभावादो पुणो अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो दादव्वो। पुणो संखेज्जपदरंगुलगुणिदजगसेडिसंखेज्जभागेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि। एत्थ पंचलोगोवट्टणं जाणिय कायव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदिभंगो ॥ १७ ॥

एसो दव्वट्ठियणयं पडुच्च णिद्देसो, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो। तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा भवणवासियदेवा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ खेत्तविण्णासो जाणिय कायव्वो। उववादगदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। तिरिक्खमणुसाणं बे विग्गहे कादूण भवणवासियदेवेसु सेडीए संखेज्जदिभागायामेण बिदियदंडे विवादाणमुववादखेत्तं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं किण्ण लब्भदे? णेदमसंभवादो। एगविग्गहं काऊण तत्थुप्पण्णाणमुववादखेत्तायामो ण ताव असंखेज्जजोयणमेत्तो 'सोलस दु खरो भागो पंकबहुलो य तह चुलासीदि। आवबहुलो असीदि-' त्ति सुत्तेण सह विरोहादो। लोगंते ठाइदूण हेट्ठा गंतूण एगविग्गहं करिय तिरिच्छेण रज्जूए संखेज्जदिभागं गंतूणुप्पण्णाणं बिदियदंडायामो सेडीए संखेज्जदिभागमेत्तो लब्भदि त्ति णेदं पि घडदे, तेसिं सुट्ठु थोवत्तादो। तं कुदो वगम्मदे? तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वक्खाणाइरियवयणादो। ण दोण्णि विग्गहे काऊणुप्पण्णाणं बिदिय-तदियदंडाणं संजोगो सेडीए संखेज्जदिभागायामो सेडिं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदएगखंडायामो वा लब्भदि त्ति वोत्तुं जुत्तं, कंडुज्जुववट्ठाए सव्वदिसाहिंतो आगंतूण एगविग्गहं काऊण उप्पज्जमाणजीवेहिंतो दो विग्गहे कादूण उप्पज्जमाणजीवाणमसंखेज्जदिभागत्तादो। तदो भवणवासियाणमुववादखेत्तं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धं। मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो? सत्थाणादो अद्धरज्जुमेत्तं तिरिच्छेण गंतूण एगविग्गहं करिय संखेज्जरज्जूओ उड्ढं गंतूण सगउप्पत्तिट्ठाणं पत्ताणं तदुवलंभादो। वाणवेंतर-जोदिसियाणं देवगदिभंगो ण विरुज्झदे, सत्थाणादिसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागुवलंभादो। णवरि जोदिसिएसु उवक्कमणकालो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, संखेज्जवासाउआणमभावादो। सोहम्मीसाणा सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ सग-सग-खेत्तविण्णासो कायव्वो। अप्पणो ओहिक्खेत्तमेत्तं देवा विउव्वंति त्ति जं वयणं तण्ण घडदे, लोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवेउव्वियखेत्तप्पहुडिप्पसंगादो। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ ताव उववादखेत्तविण्णासो कीरदे। तं जहा—सगविक्खंभसूचिगुणिदसेडिं ठविय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सोहम्मीसाणुवक्कमणकालेण ओवट्टिदे उप्पज्जमाणजीवा होंति। पहापत्थडे उप्पज्जमाणजीवाणमागमणट्ठमवरेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो। पुणो एदस्स पदरंगुलगुणिदसेडीए संखेज्जदिभागे गुणगारेण ठविदे उववादखेत्तं होदि। एवं चेव मारणंतियखेत्तपरिक्खा कायव्वा। सणक्कुमारप्पहुडिउवरिमदेवा सव्वपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखे-

जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । णवरि सव्वट्ठदेवा सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदा माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे अच्छंति । कधं ? सव्वट्ठे वेयण-कसायसमुग्घादाण तेहिंतो समुप्पज्जमाणथोवविपुंजणं पडुच्च तथोवदेसादो, कारणे कज्जोवयारादो वा । एत्थ देवाणमोगाहणाणयणे उववुज्जंतीओ गाहाओ—पणुवीसं असुराणं सेसकुमाराण दस धणू होंति । वेंतर-जोदिसियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा ॥ १ ॥ सोहम्मीसाणेसु य देवा खलु होंति सत्तरयणीया । छच्चेव य रयणीयो सणक्कुमारे य माहिंदे ॥ २ ॥ बम्हे य लांतवे वि य कप्पे खलु होंति पंच रयणीयो । चत्तारि य रयणीयो सुक्क-सहस्सारकप्पेसु ॥ ३ ॥ आणद-पाणदकप्पे आहुट्ठाओ हवंति रयणीयो । तिण्णेव य रयणीओ तहारणे अच्चुदे चेय ॥ ४ ॥ हेट्ठिमगेवज्जेसु अ अड्ढाइज्जाओ होंति रयणीओ । मज्झिमगेवज्जेसु अ रयणीओ होंति दो चेय ॥ ५ ॥ उवरिमगेवज्जेसु अ दिवड्ढरयणीओ होदि उस्सेहो । अणुत्तरविमाणवासीणेया रयणी मुणेयव्वा ॥ ६ ॥ सेसं सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १८ ॥

एत्थ एइंदिएसु विहारवदिसत्थाणं णत्थि, थावराणं विहारभावविरोहादो । तेजाहार-केवलिसमुग्घादा णत्थि । सुहुमेइंदिएसु वेउव्वियसमुग्घादो वि णत्थि । सेसं सुगमं ।

सव्वलोगे ॥ १९ ॥

एसो लोयसद्दो सेसलोगाणं सूचओ, देसामासियत्तादो । तेणेदेण सूचिदत्थस्स परूवणं कस्सामो । सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदा एइंदिया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता य सव्वलोगे, आणंतियादो । वेउव्वियसमुग्घादगदा एइंदिया चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । माणुसखेत्तं ण विण्णायदे । तं जहा—वेउव्वियमुट्ठावेंता सव्वसुहुमेइंदिएसु णत्थि, साभावियादो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु चेव अत्थि । ते वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । तत्थेकजीवोगाहणा उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । जदि वेउव्वियरासीदो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो होज्ज तो वेउव्वियखेत्तं माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, अह असंखेज्जगुणो तो असंखेज्जदिभागो, अह सरिसो माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, अह भागहारादो वेउव्वियरासी संखेज्जगुणो होदूण वेउव्वियखेत्तं माणुसखेत्तपमाणं होज्ज तो दो वि सरिसाणि, अह असंखेज्जगुणो होज्ज तो माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं वेउव्वियखेत्तं । ण च एत्थ एदं चेव होदि त्ति णिच्छओ अत्थि । तेण माणुसखेत्तं ण विण्णायदे ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ २० ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ २१ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थस्स परूवणं कस्सामो । तं जहा— तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति त्ति वत्तव्वं । किं कारणं ? जेण मंदरमूलादो उवरि जाव सदर-सहस्सारकप्पो त्ति पंचरज्जुउस्सेहेण समचउरस्सा लोगणाली वादेण आउण्णा । तम्मि एगूणवंचासरज्जुपदराणं जदि एगं जगपदरं लब्भदि तो पंचरज्जुमेत्तपदराणं किं लभामो त्ति फलगुणिदमिच्छं पमाणेणोवट्टिदे वे पंचभागूणएगूणसत्तरिरूवेहि घणलोगे भागे हिदे एगभागो आगच्छदि । पुणो तम्मि लोगपेरंत-ट्ठिदवादक्खेत्तं संखेज्जजोयणबाहल्लजगपदरं अट्ठपुढविखेत्तं बादरजीवाहारं संखेज्जजोयणबाहल्लजगपदरमेत्तं अट्ठपुढवीणं हेट्ठा ट्ठिदसंखेज्ज-जोयणबाहल्लजगपदरवादखेत्तं च आणेदूण पक्खित्ते लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं अणंताणंतबादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदिय-अपज्जत्तजीवावूरिदं खेत्तं जादं । तेणेदे तिण्णि वि बादरेइंदिया सत्थाणेण तिण्हं लोगाणं वा संखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति वुत्तं ।

समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ २२ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोए ॥ २३ ॥

एदे तिण्णि वि बादरेइंदिया मारणंतिय-उववादपदेहि चेव सव्वलोए होंति । वेयण-कसायसमुग्घादेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदि-भागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । वेउव्वियपदेण बादरेइंदियअपज्जत्तवदिरित्तबादरेइंदिया चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे होंति । तदो समुग्घादेण सव्वलोगे इदि वयणं ण घडदे । ण एस दोसो, देसामासियत्तादो ।

बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ २४ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २५ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-समुग्घादगदा एदे बीइंदियादि छप्पि वग्गा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, पज्जत्तखेत्तस्स पाधण्णियादो । एदेसिं चेव तिण्णि अपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदुस्सेहघणंगुलमेत्तोगाहणत्तादो । मारणंतिय-उववादगदा णव वि वग्गा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एत्थ ताव मारणंतियखेत्तविण्णासो वुच्चदे—बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्तदव्वं ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण सगसगुवक्कमणकालेण सगसगदव्वम्मि भागे हिदे सगसगरासिम्हि मरंतजीवपमाणमागच्छदि । तस्स असंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा मरदि त्ति एदस्स असंखेज्जे भागे घेत्तूण मारणंतिय-उवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सगसगमारणंतियदव्वं होदि । रज्जुमेत्तायामेण-मुक्कमारणंतियदव्वमिच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । पुणो अप्पप्पणो विक्खंभवग्गगुणिदरज्जुए गुणिदे बीइंदियादीणं णवण्णं मारणंतियखेत्तं होदि । एत्थ ओवट्टणं जाणिय कायव्वं । उववादखेत्तविण्णासो वुच्चदे । तं जहा—पुव्वुत्तदव्वाणि ठविय सगसगुवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमएण मरंतजीवाणं पमाणं होदि । एदस्स असंखेज्जभागो चेव उजुगदीए उप्पज्जदि, असंखेज्जा भागा पुण विग्गहगदीए त्ति कट्टु एदस्स असंखेज्जे भागे घेत्तूण पुणो तेसिं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ते भागहारे ठविदे पढमदंडेण अद्धरज्जुमेत्तं रज्जूए संखेज्जदिभागं वा विसप्पिय ट्ठिदजीवपमाणं होदि । पुणो तम्हि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे उप्पण्णपढमसमए पढमदंडमुवसंहरिय विदियदंडेण सेढीए संखेज्जदिभागं तप्पाओग्गमसंखेज्जदिभागं वा विसप्पिय ट्ठिदजीवपमाणं होदि । पुणो तमप्पप्पणो विक्खंभवग्गेण गुणिदसगायामेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि । विगलिंदिएसु वेउव्वियपदं णत्थि, साभावियादो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता सत्थाणेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ २६ ॥

एत्थ सत्थाणणिद्देसो दोण्हं सत्थाणाणं गाहओ, दव्वट्ठियणयावलंबणादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २७ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थो वुच्चदे—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणपज्जाएण परिणदा तिण्हं लोगाणम-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, पहाणीकयपज्जत्तरासिस्स संखेज्जभागत्तादो संखेज्जदिभागत्तादो च । उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एदस्स खेत्तस्साणयणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ २८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ॥ २९ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, पहाणीकदपज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तेजाहारसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । दंडगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । कवाडगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एदेसिं खेत्तविण्णासो कायव्वो । लोयस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसेण सूइदत्था एदे । अधवा लोगस्स असंखेज्जभागा, वादवलयं मोत्तूण पदरसमुग्घादे सेसासेसलोगमेत्तागासपदेसे विसप्पिय ट्ठिदजीवपदेसुवलंभादो । सव्वलोगे वा, लोगपूरणे सव्वलोगागासं विसप्पिय ट्ठिदजीवपदेसाणमुवलंभादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ३० ॥

एत्थ विहारवदिसत्थाणं वेउव्वियसमुग्घादो च णत्थि । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३१ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाण-वेयण-कसायसमुग्घादगदा पंचिंदियअपज्जत्ता चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? उस्सेहघणंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तोगाहणत्तादो । सव्वत्थ अपज्जत्तोगाहणट्ठं भागहारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एत्थ खेत्तविण्णासो जाणिय कायव्वो । ॥ १३८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय तेउकाइय वाउकाइय सुहुमपुढविकाइय सुहुमआउकाइय सुहुम-तेउकाइय सुहुमवाउकाइय तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ३२ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोगे ॥ ३३ ॥

सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा एदे पुढविकाइयादिसोलस वि वग्गा सव्वलोगे । कुदो ? असंखेज्जलोगपरिमाणत्तादो । तेउकाइएसु वेउव्वियसमुग्घादगदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तोगाहणादो । वाउकाइएसु वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । माणुसखेत्तं ण णव्वदे ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ३४ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३५ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण आमासियत्थेण अणामासियत्थो वुच्चदे । तं जहा—बादरपुढविआदिअट्ठवग्गा सत्थाणगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? सापज्जत्ताणं पुढविकाइयाणं पुढवीओ चेवस्सिदूण अवट्ठाणादो । एदेहि रुद्धखेत्तजाणावणट्ठमट्ठपुढवीओ जगपदरपमाणेण कस्सामो—तत्थ पढमपुढवी एगरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुदीहा वीससहस्सूणबेजोयणलक्खबाहल्ला; एसा अप्पणो बाहल्लस्स सत्तमभागबाहल्लं जगपदरं होदि । बिदियपुढवी सत्तमभागूणबेरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा बत्तीसजोयणसहस्सबाहल्ला सोलससहस्ससमहियचउण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । तदियपुढवी बेसत्तभागूणतिण्णिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा अट्ठावीसजोयणसहस्सबाहल्ला; इमं जगपदरपमाणेण कीरमाणे बत्तीस-सहस्साहियपंचलक्खजोयणाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । चउत्थपुढवी तिण्णिसत्तभागूणचत्तारिरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा चउवीसजोयणसहस्सबाहल्ला; इमं जगपदरपमाणेण कीरमाणे छज्जोयणलक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । पंचमपुढवी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारिसत्तभागूणपंचरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा वीसजोयणसहस्सबाहल्ला; इमं जगपदरपमाणेण कीरमाणे वीससहस्साहियछण्णं लक्खाणं एगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । छट्ठपुढवी पंचसत्तभागूणछरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा सोलसजोयणसहस्सबाहल्ला बाणउदिसहस्साहियपंचण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । सत्तमपुढवी छसत्तभागूणसत्तरज्जुविक्खंभा सत्तरज्जुआयदा अट्ठजोयणसहस्सबाहल्ला चउदालसहस्साहियतिण्हं लक्खाणमेगूणवंचासभागबाहल्लं जगपदरं होदि । अट्ठमपुढवी सत्तरज्जुआयदा एगरज्जुरुंदा अट्ठजोयणबाहल्ला सत्तमभागाहियएगजोयणबाहल्लं जगपदरं होदि । एदाणि सव्वखेत्ताणि एगट्ठे कदे तिरियलोगबाहल्लादो संखेज्जगुणबाहल्लं जगपदरं होदि । मेरु-कुलसेल-देविंदय-सेडीबद्ध-पइण्णयविमाणखेत्तं च एत्थेव दट्ठव्वं, सव्वत्थ तत्थपुढविकाइयाणं संभवादो । बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवणप्फदिकाइया पत्तेयसरीरा एदेसिं चेव अपज्जत्ता य भवणविमाणट्ठपुढवीसु णिचियकमेण णिवसंति । तेउ-आउ-रुक्खाणं कधं तत्थ संभवो ? ण, इंदिएहि अगेज्झाणं सुहुसण्हाणं पुढविजोगियाणमत्थित्तस्स विरोहाभावादो ।

समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ३६ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोगे ॥ ३७ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, तेणेदेण सूइदत्थो वुच्चदे— वेयण-कसायपरिणदा एदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति, एदेसिं पुढवीसु चेव अवट्ठाणादो । बादरतेउकाइया वेउव्वियं गदा पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोगे । कुदो ? असंखेज्जलोगपरिमाणादो । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं तेसिमपज्जत्ताणं च वत्तव्वं । सुत्ते बादरणिगोदपदिट्ठिदा किण्ण परूविदा ? ण, बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरेसु तेसिमंतब्भावादो । कुदो ? पत्तेयसरीरत्तणेण तदो एदेसिं भेदाभावादो ।

बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ३८ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३९ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— बादरपुढविपज्जत्ता सत्थाण-वेयण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो ? एदेसिं अवहारकालट्ठं पदरंगुलस्स ट्ठविदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागादो एदेसिमोगाहणट्ठं घणंगुलस्स ट्ठविदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागस्स असंखेज्जगुणत्तादो। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एत्थ ओवट्टणा जाणिय ओवट्टेदव्वा। एवं बादरआउकाइय-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणं। णवरि बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरा पज्जत्ता सत्थाण-वेयण-कसायपदेसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे। कधं ? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा घणंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, घणंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तबीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए असंखेज्जगुणत्तणहाणुववत्तीदो। जदि पत्तेयसरीरपज्जत्ताणमोगाहणभागहारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होज्ज तो वि पदरंगुलभागहारादो घणंगुलभागहारो संखेज्जगुणो त्ति तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ण विरुज्झदे। एवं बादरतेउकाइयपज्जत्ता। णवरि सत्थाण-वेयण-कसायएहिं पंचण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, मारणंतिय-उववादेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। वेउव्वियपदस्स सत्थाणभंगो।

बादरवाउकाइया तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४० ॥

सुगमं।

लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ ४१ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा— तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो ? समचउरस्सलोगणालिं पंचरज्जुआयदमावूरिय तेसिं सव्वकालमवट्ठाणादो।

समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? सव्वलोगे ॥ ४२ ॥

वेयण-कसायसमुग्घादे तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। वेउव्वियसमुग्घादेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। माणुसखेत्तादो ण णव्वदे। मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगे, असंखेज्जलोगपरिमाणत्तादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरवाउपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४३ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ ४४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—सत्थाण-वेयण-कसायपदेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? एदेसिं पंचरज्जुआयद-एगरज्जुसमंतदोबाहल्लसमचउरसलोगणालीए अवट्ठाणादो । वेउव्वियपदेण चउण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । माणुसखेत्तादो ण णव्वदे । मारणंतिय-उववादेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । सव्वलोगो किण्ण लब्भदे ? ण, अण्णेहिंतो आगंतूण एत्थुप्पज्जमाणजीवाणं एदेहिंतो अण्णत्थुप्पज्जणट्ठं मारणंतियं करेमाणजीवाणं च बहुत्ताभावादो, बादरवाउकाइयपज्जत्ताणं पाएण पंचरज्जुखेत्तब्भंतरे चेव मारणंतिय-उववादाणमुवलंभादो ।

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीवा सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४५ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोए ॥ ४६ ॥

कुदो ? सव्वलोगं णिरंतरेण वाविय अवट्ठाणादो । बादराणं व सुहुमाणं लोगस्सेगदेसे अवट्ठाणं किण्ण होज्ज ? ण, 'सुहुमा सव्वत्थ जल-थलागासेसु होंति' त्ति वयणेण सह विरोहादो ।

बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४८ ॥

देसामासियस्सेदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगादो संखेज्जगुणे । कुदो ? पुढवीओ चेवस्सिदूण बादराणमवट्ठाणादो । माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

सव्वलोए ॥ ५० ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— वेयण-कसायसमुग्घादेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगादो संखेज्जगुणे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगे । कुदो ? आणंतियादो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ता पंचिंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं भंगो ॥ ५१ ॥

जेण दोण्हं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणं असंखेज्जदिभागत्तणेण, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तणेण, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणत्तणेण; उववाद-मारणंतिएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणत्तणेण; केवलिसमुग्घादेण तेजाहारपदेहि य अपज्जत्तजोग्गपदेहि य भेदो णत्थि । तेण पंचिदियाणं भंगो त्ति ण विरुज्झदे ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी सत्थाणेण समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ५२ ॥

एत्थ सत्थाणे दो वि सत्थाणाणि अत्थि, समुग्घादे वेयण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहार-मारणंतियसमुग्घादा अत्थि, उट्ठाविदउत्तरसरीराणं मारणंतियगदाणं पि मण-वचिजोगसंभवस्स विरोहाभावादो । उववादो णत्थि, तत्थ कायजोगं मोत्तूणण्णजोगाभावादो ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५३ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा एदे दस वि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे; तेजाहारसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जस्स संखेज्जदिभागे; मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । उववादं णत्थि, मणजोगवचिजोगाणं विवक्खादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगी सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ५४ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोए ॥ ५५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगे । कुदो ? आणंतियादो । विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि कायजोगिणो तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ततसरासिस्स गहणादो । तेजाहारपदेहि कायजोगिणो चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जस्स संखेज्जदिभागे । दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणेहि कायजोगिणो ओघभंगो ।

ओरालियकायजोगी सत्थाणेण समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ५६ ॥

सुगमं ।

सव्वलोए ॥ ५७ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतियेहि सव्वलोगे । कुदो ? सव्वत्थावट्ठाणाविरोहिजीवाणमोरालियकायजोगीणं मारणंतियादो । विहारपदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? तसणालिं मोत्तूणण्णत्थ विहाराभावादो । वेउव्विय-तेजा-दंडसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । णवरि तेजासमुग्घादगदा माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । कवाड-पदर-लोगवूरणाहारपदाणि णत्थि, ओरालियकायजोगेण तेसिं विरोहादो ।

उववादं णत्थि ॥ ५८ ॥

ओरालियकायजोगेण सह एदस्स विरोहादो ।

वेउव्वियकायजोगी सत्थाणेण समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६० ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि वेउव्वियकायजोगिणो तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? पहाणीकयजोइसियरासित्तादो । मारणंतियसमुग्घादेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एत्थ ओवट्टणं जाणिय कायव्वं ।

उववादो णत्थि ॥ ६१ ॥

वेउव्वियकायजोगेण उववादस्स विरोहादो ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ६२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६३ ॥

एदस्स अत्थो— तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे । कुदो ? देवरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तवेउव्वियमिस्सकायजोगिदव्वुवलंभादो ।

समुग्घाद-उववादा णत्थि ॥ ६४ ॥

वेउव्वियमिस्सेण सह एदेसिं विरोहादो । होदु मारणंतिय-उववादेहि सह विरोहो, ण वेयण-कसायसमुग्घादेहि । तम्हा वेउव्वियमिस्सम्मि समुग्घादो णत्थि त्ति ण घडदे ? एत्थ परिहारो वुच्चदे— सत्थाणखेत्तादो वाचयदुवारेण लोगस्स असंखेज्जदिभागेण वेयण-कसाय-वेउव्विय-विहारवदिसत्थाण-तेजाहारखेत्ताणि अपुधभूदत्तादो तत्थेव लीणाणि त्ति एदाणि एत्थ खुद्दाबंधे ण परिग्गहिदाणि । तदो मारणंतियमेक्कं चेव केवलिसमुग्घादेण सहिदं एत्थ समुग्घादणिद्देसेण घेप्पदि । सो च समुग्घादो एत्थ णत्थि, तेणेसो ण दोसो त्ति । अधवा वेयण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहाराणं पि एत्थ खुद्दाबंधे अत्थि समुग्घादववएसो, किंतु ण ते पहाणं, मारणंतियखेत्तादो तेसिमहियखेत्ताभावादो । तदो पहाणं मारणंतियपदं जत्थ अत्थि, तत्थ समुग्घादो वि अत्थि । जत्थ तं णत्थि, ण तत्थ समुग्घादो त्ति वुच्चदि । तदो दोहि पयारेहि 'समुग्घादो णत्थि' त्ति ण विरुज्झदे ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आहारकायजोगी वेउव्वियकायजोगिभंगो ॥ ६५ ॥

एसो दव्वट्ठियणिद्देसो। पज्जवट्ठियणयं पडुच्च भण्णमाणे अत्थि तदो विसेसो। तं जहा– सत्थाण-विहारवदिसत्थाणपरिणदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे त्ति।

आहारमिस्सकायजोगी वेउव्वियमिस्सभंगो ॥ ६६ ॥

एसो वि दव्वट्ठियणिद्देसो, लोगस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण दोण्हं खेत्ताणं समाणत्तं पेक्खिय पउत्तीदो। पज्जवट्ठियणयं पडुच्च भेदो अत्थि। तं जहा– आहारमिस्सकायजोगी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे त्ति।

कम्मइयकायजोगी केवडिखेत्ते ? ॥ ६७ ॥

सुगमं।

सव्वलोगे ॥ ६८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं ण होदि, वुत्तत्थं मोत्तूणेदेण सूइदत्थाभावादो। कधं कम्मइयकायजोगिरासी सव्वलोए ? ण, तस्स अणंतस्स सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण तदविरोहादो।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ६९ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७० ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थो वुच्चदे। तं जहा– सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा इत्थिवेदजीवा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो ? पहाणीकयदेवित्थिवेदरासित्तादो। मारणंतिय-उववादगदा तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। एत्थ मारणंतिय-उववादखेत्तविण्णासो जाणिदूण कायव्वो। एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं। णवरि एत्थ तेजाहारपदाणि अत्थि। तेसु वट्टंता चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे त्ति वत्तव्वं।

णवुंसयवेदा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ७१ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोए ॥ ७२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा सव्वलोए । कुदो ? आणंतियादो । विहारवदि-सत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । णवरि वेउव्वियसमुग्घादगदा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे । कुदो ? तसरासिग्गहणादो ।

अवगदवेदा सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ७३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । कुदो ? संखेज्जुवसामग-खवगजीवग्गहणादो ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ७५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ॥ ७६ ॥

मारणंतियसमुग्घादगदा उवसामगा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एवं दंडगदा वि । कवाडगदा वि एवं चेव । णवरि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे त्ति वत्तव्वं । पदरगदा लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कुदो ? वादवलएसु जीवपदेसाभावादो । लोगपूरणे सव्वलोगे, जीवपदेसेहि अणोट्ठद्धलोगपदेसाभावादो ।

उववादं णत्थि ॥ ७७ ॥

तत्थुप्पज्जमाणजीवाभावादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई णवुंसयवेदभंगो ॥ ७८ ॥

कुदो ? सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगावट्ठाणेण; वेउव्वियाहारपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागत्तणेण, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तणेण, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणत्तणेण दोण्हं भेदाभावादो । णवरि वेउव्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तणेण भेदो अत्थि, तमेत्थ ण पहाणं । णवरि एत्थ तेजाहारपदाणि अत्थि, णवुंसए णत्थि अप्पसत्थत्तणेण ।

अकसाई अवगदवेदभंगो ॥ ७९ ॥

सुगममेदं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी णवुंसयवेदभंगो ॥ ८० ॥

णवरि वेउव्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तणेण भेदो अत्थि, तमेत्थ अप्पहाणं ।

विभंगणाणि-मणपज्जवणाणी सत्थाणेण समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८१ ॥

सुगमं

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

एत्थ ताव विभंगणाणीणं वुच्चदे— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? पहाणीकददेवपज्जत्तरासित्तादो । मारणंतियसमुग्घादगदा एवं चेव । णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं । मणपज्जवणाणीणं वुच्चदे— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जस्स संखेज्जदिभागे । मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । सेसं सुगमं ।

उववादं णत्थि ॥ ८३ ॥

एदेसिं दोण्हं णाणाणमपज्जत्तकाले संभवाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आभिणिबोहिय-सुद-ओधिणाणी सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदा एदे चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एवं तेजाहारपदेसु वि । णवरि माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे ।

केवलणाणी सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८७ ॥

सत्थाण-विहारवदिसत्थाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागं माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागं च मोत्तूणुवरि पुसणस्साभावादो ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ॥ ८९ ॥

दंडगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कवाडगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे । पदरगदा लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु । लोगपूरणे सव्वलोगे ।

उववादं णत्थि ॥ ९० ॥

अपज्जत्तकाले केवलणाणाभावादो ।

संजमाणुवादेण संजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा अकसाईभंगो ॥ ९१ ॥

एसो दव्वट्ठियणिद्देसो । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि त्तं वत्तइस्सामो । तं जहा— सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेयण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहारसमुग्घादगदा संजदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे। केवलिसमुग्घादगदा लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। एवं जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं वत्तव्वं। णवरि तेजाहारपदाणि णत्थि।

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा संजदासंजदा मणपज्जवणाणिभंगो ॥ ९२ ॥

एसो दव्वट्ठियणिद्देसो। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे पुण अत्थि विसेसो। तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहारपदेहि सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियपदेण एवं चेव। णवरि माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। एवं परिहारसुद्धिसंजदाणं। णवरि तेजाहारं णत्थि। एवं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं। णवरि विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणि वि णत्थि। सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदेहि संजदासंजदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे त्ति भेदुवलंभादो।

असंजदा णवुंसयभंगो ॥ ९३ ॥

णवरि वेउव्वियस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे। सेसं सुगमं।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी सत्थाणेण समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ९४ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९५ ॥

एत्थ विवरणं कस्सामो। तं जहा— सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि चक्खुदंसणी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे। तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियपदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति त्ति संबंधो कायव्वो। ॥ १५० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उववादं सिया अत्थि, सिया णत्थि। लद्धिं पडुच्च अत्थि, णिव्वत्तिं पडुच्च णत्थि। जदि लद्धिं पडुच्च अत्थि, केवडिखेत्ते ॥ ९६ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे। तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे।

अचक्खुदंसणी असंजदभंगो ॥ ९८ ॥ ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगो ॥ ९९ ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १०० ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया असंजदभंगो ॥ १०१ ॥

कुदो ? सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगे अवट्ठाणेण; विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अवट्ठाणेण च साधम्मियादो। णवरि वेउव्विय तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे। तमेत्थ अप्पहाणं।

तेउलेस्सिया-पम्मलेस्सिया सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १०२ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १०३ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि तेउलेस्सिया तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे। कुदो ? पहाणीकयदेवरासित्तादो। मारणंतियपदेण वि एवं चेव। णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं। एवं चेव उववादेण वि। एत्थ ओवट्टणे ठविज्जमाणे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोधम्मरासिं ठविय अप्पणो उवक्कमणकालेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगसमएण तत्थुप्पज्जमाणजीवपमाणं होदि । पुणो पभापत्थडे उप्पज्जमाणजीवाणं पमाणागमणट्ठमवरेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । एवं ठविदे दिवड्ढरज्जु-आयामेण उववादगदजीवपमाणं होदि । पुणो संखेज्जपदरंगुलमेत्तरज्जूहि गुणिदे उववादखेत्तं होदि । एत्थ ओवट्टणं जाणिय कायव्वं । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसायपदेहि पम्मलेस्सिया तिण्हं लोगाणं असंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? पहाणीकदतिरिक्खरासीदो । वेउव्विय-मारणंतिय-उववादेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? सणक्कुमार-माहिंदजीवाणं पाहण्णियादो ।

सुक्कलेस्सिया सत्थाणेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १०४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १०५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-उववादेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्ज-गुणे । एत्थ उववादजीवा संखेज्जा चेव । कुदो ? मणुस्सेहिंतो चेव आगमणादो ।

समुग्घादेण लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ॥ १०६ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— वेयण-कसाय-वेउव्विय-दंड-मारणंतियपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एवं तेजाहारपदाणं पि । णवरि माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे त्ति वत्तव्वं । सेसकेवलिपदाणि सुगमाणि ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ॥ १०७ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगे ॥ १०८ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि अभवसिद्धिया सव्वलोगे । कुदो ? आणंतियादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? 'सव्वत्थोवा धुवबंधगा, सादियबंधगा असंखेज्जगुणा, अणादियबंधगा असंखेज्जगुणा, अद्धुवबंधगा विसेसाहिया धुवबंधगेणूणसादियबंधगेणेत्ति' तसरासिमस्सिदूण वुत्तबंधप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । तसकाइएसु अभवसिद्धिया पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । कधमेदं णव्वदे ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ततससादियबंधगेहिंतो तसधुवबंधगाणमसंखेज्जगुणहीणत्तण्णहाणुववत्तीदो । भवसिद्धियाणमोघभंगो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी खइयसम्मादिट्ठी सत्थाणेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १०९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११० ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-उववादेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तरासित्तादो ।

समुग्घादेण लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ॥ १११ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिएहि सम्मादिट्ठी खइयसम्मादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । एवं केवलिदंडखेत्तं पि । एवं तेजाहारपदाणं । णवरि माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे त्ति वत्तव्वं । सेसतिण्णि वि केवलिपदाणि सुगमाणि ।

वेदगसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठी सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ११२ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जाणिय वत्तव्वो । णवरि उवसमसम्माइट्ठीसु मारणंतियउववादपदट्ठिदजीवा संखेज्जा चेव ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ १५४ ॥ सम्मामिच्छाइट्ठी सत्थाणेण केवडिखेत्ते ? ॥ ११४ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठिस्स वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेसु संतेसु वि समुग्घादस्स अत्थित्तमभणिय सत्थाणपदस्स एक्कस्स चेव परूवणादो णज्जदि जधा वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणि समुग्घादपदम्हि ण गहिदाणि त्ति । जदि एदम्हि गंथे ण गहिदाणि तो वि किमट्ठं एत्थ परूवणा कीरदे ? जेसिमेरिसो अहिप्पाओ ण ते तेहि परूवेंति । जेसिं पुण समुग्घादपदस्संतो वेदणादिपदाणि अत्थि ते तेहि परूवणं करेंति । जदि एवं तो सम्मामिच्छादिट्ठिम्हि समुग्घादपदेण होदव्वं ? ण एस दोसो, जत्थ मारणंतियमत्थि तत्थेव तेसिमत्थित्तस्स अब्भुवगमादो । किमट्ठमेवंविहअब्भुवगमो कीरदे ? ण, मारणंतिएण विणा वेदणादिखेत्ताणं पहाणत्ताभावपदुप्पायणट्ठं तहाब्भुवगमकरणे दोसाभावादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११५ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि सम्मामिच्छादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे त्ति एसो सुत्तस्सत्थो ।

मिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ ११६ ॥

सुगममेदं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ११७ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११८ ॥

एदेण सूचिदत्थो वुचदे । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि सण्णी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एवं मारणंतिय-उववादेसु वि वत्तव्वं । णवरि तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे त्ति वत्तव्वं । ॥ १५४ ॥

असण्णी सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ११९ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वलोगे ॥ १२० ॥

एदस्सत्थो—सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि असण्णी सव्वलोगे। विहारवदिस थाण-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । णवरि वेउव्वियं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे ।

आहाराणुवादेण आहारा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १२१ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोगे ॥ १२२ ॥

एदस्सत्थो—सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि-सव्वलोए, आणंतियादो । विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे ।

अणाहारा केवडिखेत्ते ? ॥ १२३ ॥

सुगमं ।

सव्वलोए ॥ १२४ ॥

कुदो ? आणंतियादो । एत्थ भवस्स पढमसमए अवट्ठिदाणं उववादं होदि, विदियादिदोसु समएसु ट्ठिदाणं सत्थाणं होदि । एवं दोसु पदेसु लब्भमाणेसु किमट्ठं ताणि दो पदाणि ण वुत्ताणि ? ण, तत्थ खेत्तभेदाणुवलंभादो । एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

फोसणाणुगमो

फोसणाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएहि सत्थाणेहि केवडिखेत्तं फोसिदं ? ॥ १ ॥

एत्थ णिरयगदीए त्ति चेवकारो अज्झाहारेयव्वो। तेण किं लद्धं ? णिरयगदीए चेव णेरइया, ण अण्णत्थ कत्थ वि त्ति पडिसेहो उवलद्धो। तेहि णेरइएहि सत्थाणत्थेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं—किं सव्वलोगो, किं लोगस्स असंखेज्जा भागा, किं लोगस्स संखेज्जदिभागो, किमसंखेज्जदिभागो त्ति एदमाइरियासंकिदं । वा सद्देण विणा कधमासंकावगम्मदे ? ण, अवुत्तस्स वि पयरणवसेण कत्थ वि अवगमुवलंभादो। सेसं सुगमं। एत्थ ओघाणुगमो किण्ण परूविदो ? ण, चोद्दसमग्गणाविसिट्ठजीवाणं फोसणावगमेण तस्स वि अवगमादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २ ॥

होदु णाम वट्टमाणकाले णेरइएहि सत्थाणेहि छुत्तं खेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं । किंतु णादीदकाले एदं होदि, तत्थ तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागमेत्तछुत्तखेत्तुवलंभादो । तं कधं ? णेरइया लोगणालिं समचउरसरज्जुमेत्तायाम-विक्खंभ-छरज्जुआयदं सव्वमदीदकाले सट्ठाणट्ठिया फुसंति त्ति ? ण, संखेज्जजोयणबाहल्लसत्तपुढवीओ मोत्तूण तेसिमदीदकाले अण्णत्थ अवट्ठाणाभावादो । जदि वि एवं तो वि तीदकाले तिरियलोगादो संखेज्जगुणेण होदव्वं, संखेज्जसूचिअंगुलबाहल्लतिरियपदरमेत्तखेत्तुवलं-भादो ? ण, पुढवीणमसंखेज्जदिभागे चेव णेरइया होंति त्ति गुरूवदेसादो, सत्थाणेहि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव पोसिदो त्ति वक्खाणादो वा ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४ ॥

एदं सुत्तं वट्टमाणकालमस्सिदूण उवइट्ठं । ण च एत्थ पुणरुत्तदोसो, मंदबुद्धीणं पुणरुत्तपुव्वुत्तत्थसंभालणेण फलोवलंभादो । अहवा वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणमतीदकालफोसणं पडुच्च एदं वुत्तं । तत्थ चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागस्स माणुसखेत्तादो असंखेज्ज-गुणस्स फोसिदखेत्तस्सुवलंभादो ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ५ ॥

एदं मारणंतिय-उववादपदाणमदीदकालमस्सिदूण वुत्तं । मारणंतियस्स छचोद्दसभागा संखेज्जजोयणसहस्सेण ऊणा । अधवा एत्थ ऊणपमाणमेत्तियमिदि ण णव्वदे, पासेसु मज्झेसु एत्तियं खेत्तमूणमिदि विसिट्ठुवएसाभावादो । उववादपदे वि ऊणपमाणं पुव्वं व जाणिदूण वत्तव्वं । कधं छचोद्दसभागा मारणं जुज्जदे ? ण, तिरिक्ख-णेरइयाणं सव्वदिसाहिंतो आगमण-गमणसंभवादो ।

पढमाए पुढवीए णेरइया सत्थाण-समुग्घाद-उववादपदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६ ॥

एत्थ चेवकारो ण अज्झाहारेयव्वो, अवहारणाभावादो । जे पढमाए पुढवीए णेरइया तेहि सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदमिदि एत्थ संबंधो कायव्वो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थो वुच्चदे । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपदेहि वट्टमाणकालमस्सिदूण परूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि णेरइएहि तीदे काले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? असंखेज्जजोयणविक्खंभणिरयावासखेत्तफलं ठविय णेरइयाणमुस्सेहेण गुणिय लद्धं तप्पाओग्गसंखेज्जबिलसलागाहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तुवलंभादो । अदीदकाले मारणंतिय-उववादपरिणदेहि पढमपुढविणेरइयेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? असीदिसहस्साहियजोयणलक्खपढमपुढविबाहल्लम्मि हेट्ठिमजोयणसहस्सं णेरइएहि सव्वकालं ण छुप्पदि त्ति काऊण एत्थ जोयणसहस्समवणिय सेसजोयणसहस्सबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उस्सेहेण एगूणवंचासमेत्तखंडाणि काऊण पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । कुदो ? एक्करज्जुरुंदो सत्तरज्जुआयदो जोयणलक्खबाहल्लो तिरियलोगो त्ति गुरूवएसादो । जे पुण जोयणलक्खबाहल्लं रज्जुविक्खंभं झल्लरीसमाणं तिरियलोगं भणंति तेसिं मारणंतिय-उववादखेत्ताणि तिरियलोगादो सादिरेयाणि होंति । ण चेदं घडदे, एदम्हि उवदेसे घेप्पमाणे लोगम्मि तिण्णिसदतेदालमेत्तघणरज्जूणमणुप्पत्तीदो । ण च एदाओ घणरज्जू असिद्धाओ, रज्जू सत्तगुणिदा जगसेडी, सा वग्गिदा जगपदरं, सेडीए गुणिदजगपदरं घणलोगो होदि त्ति सयलाइरियसम्मदपरियम्मसिद्धत्तादो । ण च सव्वदो हेट्ठिम-मज्झिम-उवरिमभागेहि वेत्तासण-झल्लरी-मुइंगसमाणे लोगे घेप्पमाणे सेढी-पदरघणलोगा वग्गसमुट्ठिदा होंति, तधा संभवाभावादो । ण च एदेसिमवग्गसमुट्ठिदत्तमब्भुवगंतुं जुत्तं, कदजुम्मेहि पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-जोणिणि-जोदिसिय-वेंतरदेवअवहारकालेहि सुत्तसिद्धेहि अकदजुम्मजगपदरे भागे हिदे सच्छेदस्स जीवरासिस्स आगमणप्पसंगादो । ण च एवं, जीवाणं छेदाभावादो, दव्वाणिओगद्दारवक्खाणम्मि वुत्तहेट्ठिमउवरिमवियप्पाणमभावप्पसंगादो च । तिण्णिसदतेदालघणरज्जुपमाणो उवमालोओ, एदम्हादो अण्णो पंचदव्वाहारो लोगो त्ति के वि आइरिया भणंति । तं पि ण घडदे, उवमेएण विणा उवमाए अण्णत्थ घणंगुल-पलिदोवम-सागरोवमादिसु अणुवलंभादो । तम्हा-एत्थ वि उवमेएण लोगेण पमाणदो उवमालोगाणुसारिणा पंचदव्वाहारेण अण्णेण होदव्वमण्णहा एदस्स उवमालोगत्ताणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

बिदियाए जाव सत्तमीए पुढवीए णेरइया सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९ ॥

एदस्सत्थो—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणपदपरिणदेहि अदीद-वट्टमाणकालेसु णेरइएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? छण्णं पुढवीणं लोगणालीए रुद्धखेत्तस्स असंखेज्जदिभागे चेव णेरइयावासाणमुवलंभादो ।

समुग्घाद-उववादेहि य केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो एग-बे-तिण्णि-चत्तारि-पंच-छ-चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ११ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि तीदे काले लोगस्स असंखेज्जदिभागो फोसिदो । वट्टमाणकाले पुण छपुढविणेरइएहि वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तीदे काले मारणंतिय-उववादेहि विदियादिछपुढविणेरइएहि जहाकमेण देसूणएग-बे-तिण्णि चत्तारि-पंचचोद्दसभागा । कुदो ? तिरिक्खाणं णेरइयाणं तीदे काले सव्वदिसाहि आगमणगमणसंभवादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १२ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोगो ॥ १३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि तीदे काले सव्वलोगो फोसिदो । कुदो ? वट्टमाणे व सव्वलोगे अवट्ठाणुवलंभादो । विहारेण तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । असंखेज्जेसु समुद्देसु तसजीवविरहिएसु संतेसु कधं विहरंताणं तिरिक्खाणं तत्थ संभवो ? ण, तत्थ पुव्ववइरियदेवाणं पओएण विहारे विरोहाभावादो । तीदे काले विहरंततिरिक्खेहि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुट्ठखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे । तं जहा—लक्खजोयणबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय उड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं खेत्तं होदि । जदि वि जोयणलक्खबाहल्लेण विणा संखेज्जजोयणबाहल्लं तिरियपदरं लब्भदि, तो वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो चेव होदि । वेउव्वियसमुग्घादगदाणं वट्टमाणे खेत्तं, तीदे काले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, दोहि लोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? वाउकाइयजीवाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं विउव्वणखमाणं पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमेत्तफोसणुवलंभादो ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणि-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाणेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १४ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—एदेसिं वट्टमाणं खेत्तं । आदिल्लेहि तिहि वि तिरिक्खेहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरिक्खलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदम्हि खेत्ते आणिज्जमाणे भोगभूमिपडिभागदीवाणमंतरेसु ट्ठिदअसंखेज्जेसु समुद्देसु सत्थाणपदट्ठिदतिरिक्खा णत्थि त्ति एदं खेत्तमाणिय रज्जुपदरम्मि अवणिय सेसं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स सत्थाणखेत्तं होदि । विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियचउक्केण परिणदतिविहपंचिंदियतिरिक्खेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? मित्तामित्तदेवाणं वसेण एदेसिं सव्वदीव-समुद्देसु संचरणं पडि विरोहाभावादो । तेणेत्थ संखेज्जंगुलबाहल्लतिरियपदरमुड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स विहारादिचउक्कखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि । एसो वासदेण सूइदट्ठो । विहारवदिसत्थाणखेत्तपरूवणाए चेव वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि परूवणा कदा गंथलाघवकरणट्ठं ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १६ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ १७ ॥

॥ १६० ॥ एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । वेयण-कसाय-वेउव्वियपदाणं पि तीदकालपरूवणा पुव्वमेव परूविदा । मारणंतिय-उववादपरिणयपंचिंदियतिरिक्खतिएहि तीदकाले सव्वलोगो फोसिदो । लोगणालीए बाहिं तसकाइयाणं सव्वकालसंभवाभावादो सव्वलोगो त्ति वयणं ण जुज्जदे । ण एस दोसो, मारणंतिय-उववादपरिणयतसजीवे मोत्तूण सेसतसाणं बाहिमत्थित्तपडिसेहादो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । संपदि तीदकालपरूवणं कस्सामो । तं जहा—सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसायपदपरिणएहि पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? कम्मभूमिपडिभागे सयंपहपव्वयपरभागे अड्ढाइज्जदीव-समुद्देसु च अदीदकाले तत्थ सव्वत्थ संभवादो । तेण तेहि फोसिदखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तस्साणयणविहाणं वुच्चदे—सयंपहपव्वदब्भंतरखेत्तं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो । तं रज्जुपदरम्मि अवणिदे सेसं जगपदरस्स संखेज्जदिभागो । तं संखेज्जसूचिअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । अपज्जत्ताणमंगुलस्सासंखेज्जदिभागोगाहणाणं कधं संखेज्जंगुलुस्सेहो लब्भदे ? ण, मुदपंचिंदियादितसकाइयाणं कलेवरेसु अंगुलस्स संखेज्जदिभागमादिं काऊण जाव संखेज्जजोयणा त्ति कमवड्ढीए ट्ठिदेसु उप्पज्जमाणाणमपज्जत्ताणं संखेज्जंगुलुस्सेहुवलंभादो । अधवा सव्वेसु दीव-समुद्देसु पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । कुदो ? पुव्ववइरियदेवसंबंधेण कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णपंचिंदियतिरिक्खाणं एगबंधणबद्धछज्जीवणिकाओगाढओरालियदेहाणं सव्वदीव-समुद्देसु अवट्ठाणदंसणादो । मारणंतिय-उववादेहि पुण सव्वलोगो फोसिदो । कुदो ? मारणंतिय-उववादाणं सव्वलोगे पडिसेहाभावादो ।

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो, तीदे काले पुव्ववइरियदेव- ॥ १६० ॥
संबंधेण वि माणुसुत्तरसेलादो परदो मणुसाणं गमणाभावादो । माणुसखेत्तस्स पुण संखेज्जदिभागो फोसिदो, उवरिगमणाभावादो । अधवा विहारेण माणुसलोगो देसूणो फोसिदो त्ति केइं भणंति, पुव्ववइरियदेवसंबंधेण उड्ढं देसूणजोयणलक्खुप्पायणसंभवादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जा वा भागा सव्वलोगो वा ॥ २१ ॥

वेदण-कसाय-वेउव्वियपदाणं विहारवदिसत्थाणभंगो । तेजाहारपदाणं सत्थाणसत्थाणभंगो । मारणंतिएण सव्वलोगो फोसिदो, तीदे काले सव्वम्हि लोगखेत्ते माणुसाणं मारणंतिएण गमणुवलंभादो । दंड-कवाड-लोगपूरणपरूवणा सुगमेत्ति ण परूविज्जदे ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ २३ ॥

लोगस्सासंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणकालावेक्खो । एदेण जाणिज्जदे वट्टमाणातीदकालसंबंधिखेत्ताणि दो वि फोसणे परूविज्जंति त्ति । अदीदे घणसव्वलोगो फोसिदो, सुहुमेहि सव्वलोगावट्ठिएहि आगंतूण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणेहि आवूरिज्जमाणलोगदंसणादो । कधं पंचेचालीसजोयणलक्खबाहल्लतिरियपदरमेत्तागासपदेसट्ठिदमणुस्सेहि सव्वलोगो आवूरिज्जदि ? ण, मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विविवागजोग्गागासपदेसेहि सव्वलोगपेरंतेसु मज्झे च समयाविरोहेण अवट्ठिएहि णिग्गंतूण संखेज्जासंखेज्जजोयणायामेण मणुसगइमुवगएहि सव्वादीदकालम्मि सव्वलोगावूरणं पडि विरोहाभावादो ।

मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो ॥ २४ ॥

वट्टमाणं खेत्तं । सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो तीदे काले फोसिदो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो । तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो ण होदि त्ति ? ण, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे दोसाभावादो ।

देवगदीए देवा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा ॥ २६ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे–वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणेण देवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? ण एस दोसो, चंदाइच्च-बुह-भेसइ-कोण-सुक्कंगार-णक्खत्त-तारागण-अट्ठविहवेंतरविमाणेहि य रुद्धखेत्ताणं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणमुवलंभादो । विहारेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । मेरुमूलादो उवरि छरज्जुमेत्तो हेट्ठा दोरज्जुमेत्तो देवाणं विहारो, तेण अट्ठचोद्दसभागो त्ति वुत्तो । केण ते ऊणा ? तदियपुढवीए हेट्ठिमजोयणसहस्सेण ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठ-णवचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणक्खेत्तपरूवणाओ, तेण एत्थ खेत्ताणिओगद्दारपरूवणा जा जोग्गा सा सव्वा परूवेदव्वा । संपहि तीदकालखेत्तपरूवणा कीरदे–वेयण-कसाय-वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । कुदो ? विहरमाणाणं देवाणं सगविहारखेत्तस्संतरे वेयण-कसाय-विउव्वणाणमुवलंभादो । मारणंतिएण णवचोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो उवरि सत्त हेट्ठा दोरज्जुमेत्तखेत्तब्भंतरे तीदे काले सव्वत्थ कयमारणंतियदेवाणमुवलंभादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३० ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वट्टमाणखेत्तं पडुच्च णिद्देसो कदो । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा सव्वा कायव्वा । तीदकालखेत्तपरूवणं कस्सामो–छचोद्दस्सभागा देसूणा । कुदो ? आरणच्चुदकप्पो त्ति तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीणं संजदासंजदाणं च उववादुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अद्धुट्ठा वा अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा ॥ ३२ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणं पडुच्च वुत्तो । तेण एत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा । तीदकालं पडुच्च परूवणं कस्सामो— सत्थाणेण वाणवेंतर-जोदिसियदेवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? वट्टमाणकाले व तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमोट्ठहिय अवट्ठाणादो । भवणवासियदेवेहि सत्थाणेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणेण आहुट्ठचोद्दसभागा । कुदो ? भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं मेरुमूलादो अधो दोण्णि, उवरि जाव सोहम्मविमाणसिहरधयदंडो त्ति दिवड्ढरज्जुमेत्तसगणिमित्तविहारस्सुवलंभादो । परपच्चएण पुण अट्ठचोद्दस भागा देसूणा । कुदो ? उवरिमदेवेहि णिज्जमाणाणं अद्धवंचमरज्जूओ सगपच्चएण अद्धुट्ठरज्जूओ गच्छंति त्ति देवाणमट्ठचोद्दसभागफोसणं होदि ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अद्धुट्ठा वा अट्ठ-णवचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वयणं वट्टमाणखेत्तपरूवणट्ठं भणिदं । तेण एत्थ खेत्तपरूवणा सव्वा कायव्वा । संपदि उवरिल्लेहि सुत्तावयवेहि अदीदकालखेत्तपरूवणा कीरदे— वेयण-कसाय-वेउव्विएहि आहुट्ठचोद्दसभागा अट्ठचोद्दसभागा वा फोसिदा । कुदो ? सग-परपच्चएहि हिंडंताणं भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं वेयण-कसाय-वेउव्विएहि सह परिणयाणमेत्तियवुत्तखेत्तुवलंभादो । मारणंतिएण णवचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? मेरुमूलादो हेट्ठदो दोरज्जुमेत्तमद्धाणं गंतूण ट्ठिदभवणादिदेवाणं घणोदहिट्ठिदआउकाइयजीवेसु मुक्कमारणंतियाणं णवचोद्दसभागमेत्तफोसणुवलंभादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ३६ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । संपदि तीदकालखेत्तपरूवणं कस्सामो । तं जहा— उववादपरिणदेहि भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। जोइसियाणं णवजोयणसदबाहल्लं तिरियपदरं ठविय उड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं उववादखेत्तं होदि । वाणवेंतराणं जोयणलक्खबाहल्लं तिरियपदरं ठविय उड्ढमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तमुववादखेत्तं होदि । भवणवासियाणं पि जोयणलक्खबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय पुव्वं व खंडिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तमुववादखेत्तं होदि ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवा सत्थाण-समुग्घादं देवगदिभंगो ॥ ३७ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । अदीदकालमस्सिदूण परूवणाए वि दव्वट्ठियणयावलंबणेण देवगदिभंगो होदि, ण पज्जवट्ठियणयावलंबणम्मि । कुदो ? सत्थाणेण सोधम्मीसाणदेवेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, विहार-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणएहि अट्ठ-णवचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा त्ति णिद्दिट्ठत्तादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो दिवड्ढ-चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ३८ ॥

वट्टमाणकालं पडुच्च लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदकालं पडुच्च दिवड्ढचोद्दसभागा देसूणा । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्साणं तीदे काले पहापत्थडे उप्पज्जंताणं दिवड्ढरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमेत्तफोसणुवलंभादो ।

सणक्कुमार जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४० ॥

वट्टमाणकालं पडुच्च लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्दिट्ठं । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा सव्वा कायव्वा । तीदकाले सत्थाणेण लोगस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जदिभागो फोसिदो। कुदो ? विमाणरुद्धखेत्तस्स चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागमेत्तपमाणत्तादो। विहार-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदपरिणएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। कुदो ? तसजीवे मोत्तूणण्णत्थ एदेसिमुप्पत्तीए अभावादो।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ॥ ४१ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो तिण्णि-अद्धुट्ठ-चत्तारि अद्धवंचमपंचचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४२ ॥

एदस्स अत्थो—वट्टमाणकालं पडुच्च लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो। तेणेत्थ खेत्तपरूवणा सयला कायव्वा। अदीदेण तिण्णि-आहुट्ठ-चत्तारि-अद्धवंचम-पंचचोद्दसभागा जहाकमेण फोसिदा। कुदो ? मेरुमूलादो तिण्णिरज्जूओ उवरि चडिय सणक्कुमार-माहिंदकप्पाणं परिसमत्ती, तदो उवरिमद्धरज्जुं गंतूण बम्ह-बम्हुत्तरकप्पाणं परिसमत्ती, तदो तत्तो उवरिमद्धरज्जुं गंतूण लंतय-काविट्ठकप्पाणं परिसमत्ती, तदो अद्धरज्जुं गंतूण सुक्क-महासुक्कप्पाणमवसाणं, तत्तो अद्धरज्जुं गंतूण सदर-सहस्सारकप्पाणं परिसमत्ती होदि त्ति।

आणद जाव अच्चुदकप्पवासियदेवा सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ४३ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४४ ॥

वट्टमाणं खेत्तभंगो। अदीदेण सत्थाणपरिणदेहि लोगस्स असंखेज्जदिभागो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणएहि छचोद्दसभागा फोसिदा। कुदो मेरुमूलादो अधो तेसिं गमणाभावेण वेउव्वियादीणमभावादो।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ४५ ॥

सुगमं। ॥ १६५॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अद्धछट्ठ-छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ४६ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। अदीदेण आणद-पाणदकप्पे अद्धछट्ठचोद्दसभागा, आरणच्चुदकप्पे छच्चोद्दसभागा। सेसं सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवगेवज्ज जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादेहि अदीद-वट्टमाणेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । णवरि सव्वट्ठसिद्धिम्हि मारणंतिय-उववादविरहिदसेसपदेहि माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो त्ति वत्तव्वं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ ५० ॥

एत्थ वट्टमाणपरुवणाए खेत्तभंगो । तीदेण सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो । वेउव्वियपदेण लोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । णवरि सुहुमाणं वेउव्वियं णत्थि ।

बादरेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ५२ ॥

कुदो ? पंचरज्जुबाहल्लं रज्जुपदरं वाउक्काइयजीवावूरिदं बादरएइंदियजीवावूरिदसत्तपुढवीओ च, तासिं पुढवीणं हेट्ठा ट्ठिदवीसवीस- ॥ १६६ ॥
जोयणसहस्सबाहल्लं तिण्णि तिण्णि वादवयलखेत्ताणि लोगंतट्ठिदवाउक्काइयखेत्तं च एगट्ठं कदे तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो णरतिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो खेत्तविसेसो उप्पज्जदि । तेण लोगस्स संखेज्जदिभागो अदीद-वट्टमाणेसु कालेसु लब्भदि ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ ५४ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । वेदण-कसाएहि तीदे काले तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एवं वेउव्विएण वि, पंचरज्जुआयदतिरियपदरम्मि सव्वत्थ विउव्वमाणवाउक्काइयाणं तीदे काले उवलंभादो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणेहि तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ सत्थाणखेत्ते आणिज्जमाणे सयंपहपव्वदादो परभागट्ठियखेत्तमाणिय संखेज्जसूचीअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं सत्थाणखेत्तं होदि । विहारवदिसत्थाणखेत्ते आणिज्जमाणे तिरियपदरं ठविय संखेज्जजोयणाणि बाहल्लं होंति त्ति संखेज्जजोयणेहि गुणिय पुणो एदं बाहल्लमेगुणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । अपज्जत्ताणं विहारवदिसत्थाणं णत्थि ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ ५८ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वट्टमाणकालावेक्खो णिद्देसो । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा । वेयण-कसायपदेहि तीदे काले तिण्हं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? पुव्ववेरियसंबंधेण तिरियपदरं सव्वं हिंडमाण-विगलिंदियाणं सव्वत्थ तीदे कसाय-वेयणाणमुवलंभादो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणविरोहाभावादो । विगलिंदियअपज्जत्ताणं वेयण-कसायखेत्ताणं सत्थाणभंगो, तत्थ विहारवदिसत्थाणस्स अभावादो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ६० ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणावेक्खो । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा । संपदि वासद्दत्थो ताव उच्चदे— सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदम्मि खेत्ते आणिज्जमाणे रज्जुपदरं ठविय संखेज्जंगुलेहि गुणिय तसजीववज्जियसमुद्देहि ओट्टद्धखेत्तमवणिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं विगलिंदियअपज्जत्ताणं च सत्थाणखेत्तं पुण सयंपहपव्वयस्स परदो चेव होदि, भोगभूमिपडिभागम्मि तेसिमुप्पत्तीए अभावादो । अधवा पुव्ववेरियदेवपओगेण भोगभूमिपडिभागदीव-समुद्दे पदिदतिरिक्खकलेवरेसु तस-अपज्जत्ताणमुप्पत्ती अत्थि त्ति भणंताणमहिप्पाएण खेत्ते आणिज्जमाणे संखेज्जंगुलबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय एगुणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे अपज्जत्तसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । एवं विहारसत्थाणेण वि, मित्तामित्तदेवप्पओएण सव्वदीव-समुद्देसु विहारस्स विरोहाभावादो । णवरि देवाणं विहारमस्सिदूण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा होंति ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा असंखेज्जा वा भागा सव्वलोगो वा ॥ ६२ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणावेक्खो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा । वेयण-कसाय-वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, विहरंतदेवाणं सव्वत्थ वेयण-कसाय-विउव्वणाणं विरोहाभावादो । तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेत्तस्स संखेज्जदिभागो । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो । एवं कवाडगदेहि वि । णवरि तिरियलोगादो संखेज्जगुणो । एसो वासद्दत्थो । पदरगदेहि असंखेज्जा भागा, वादवलए मोत्तूण सव्वत्थावूरणादो । मारणंतिय-लोगपूरणेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ॥ ६४ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणावेक्खो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा । सव्वलोगट्ठिदसुहुमेइंदिएहिंतो पंचिंदिएसु आगंतूण उप्पण्णपढमसमयजीवाणं सव्वलोगे वावित्तदंसणादो उववादेण सव्वलोगो फोसिदो । सत्थाण-समुग्घाद-उववादेसु एयवियप्पेसु कधं सव्वत्थ बहुवयणणिद्देसो ? ण, तेसु सगदाणेयवियप्पसंभवादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता सत्थाणेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६६ ॥

एदस्स अत्थं भण्णमाणे वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदस्स कारणं पुव्वमेव परूविदं ।

समुग्घादेहि उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ६७ ॥

॥ १६९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६८ ॥

एत्थ खेत्तपरूवणं कायव्वं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वलोगो वा ॥ ६९ ॥

वेयण-कसायपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय तेउकाइय वाउकाइय सुहुमपुढविकाइय सुहुमआउकाइय सुहुमतेउकाइय सुहुमवाउकाइय तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ७० ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ ७१ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । अदीदेण सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो । तेउकाइएहि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कम्मभूमिपडिभागसयंभूरमणदीवद्धे चेव किर तेउकाइया होंति, ण अण्णत्थेत्ति के वि आइरिया भणंति । तेसिमहिप्पाएण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । अण्णे के वि आइरिया सव्वेसु दीव-समुद्देसु तेउकाइयबादरपज्जत्ता संभवंति त्ति भणंति । कुदो ? सयंभूरमणदीव-समुद्दुप्पण्णाणं बादरतेउपज्जत्ताणं वाएण हिरिज्जमाणाणं कीडणसीलदेवपरतंताणं वा सव्वदीव-समुद्देसु सविउव्वणाणं गमणसंभवादो । केइ-मारिया तिरियलोगादो संखेज्जगुणो फोसिदो त्ति भणंति । कुदो ? सव्वपुढवीसु बादरतेउपज्जत्ताणं संभवादो । तिसु वि उवदेसेसु को एत्थ गेज्झो ? तइज्जो घेत्तव्वो, जुत्तीए अणुग्गहिदत्तादो । ण च सुत्तं तिण्हमेकस्स वि मुक्ककंठं होऊण परूवयमत्थि । पहिल्लओ उवएसो वक्खाणेहि वक्खाणाइरियेहि य संमदो त्ति एत्थ सो चेव णिद्दिट्ठो । वाउकाइएहि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? पंचरज्जुबाहल्लं तिरियपदरमावूरिय तीदे काले अवट्ठाणादो ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवणप्फदिकाइय पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ७२ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७३ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । तीदे काले एदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? सव्वकालमट्टपुढवीओ भवणविमाणाणि च अस्सिदूण अवट्ठाणादो ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ७४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणे फोसिदो । सेसं खेत्तभंगो ।

सव्वलोगो वा ॥ ७६ ॥

एत्थ वासद्दत्थो वुच्चदे— वेयण-कसायपदपरिणदेहि वेउव्वियपदपरिणदेहि य तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वेउव्वियपदस्स पुव्वं व तिविहं वक्खाणं कायव्वं । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, वट्टमाणातीदकालदंसणादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ७७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ७८ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणप्पणादो । तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? अपज्जत्ताणं व पज्जत्ताणं पि सव्वपुढवीसु अवट्ठाणविरोहाभावादो । ण च अट्ठसु पुढवीसु पुढवि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आउ-तेउ-वाउबादराणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीराणं च अपज्जत्ता चेव होंति त्ति जुत्ती अत्थि। अण्णाइरियवक्खाणं पुण एवं ण होदि। तं कधं? बादरआउपज्जत्तबादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि सत्थाण-वेयण-कसायपरिणएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो, चित्ताए उवरिमभागं मोत्तूण बादरआउपज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ताणमण्णत्थ अवट्ठाणाभावादो। एवं बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं, पत्तेयसरीरत्तं पडि भेदाभावादो। एवं बादरतेउकाइयपज्जत्ताणं पि। कुदो? सयंपहपव्वयस्स परभागे चेव एदेसिमवट्ठाणादो। एदं च अण्णाइरियवक्खाणं चक्खिंदियपमाणबलपयट्टं। पुढविकाइया सव्वपुढवीसु होंति त्ति एदं पि चक्खिंदियबलपयट्टं चेव। ण च पुढविकाइयादओ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसरीरा इंदियगेज्झा, जेण इंदियबलेण विहि-पडिसेहो होज्ज। तम्हा सव्वपुढवीओ अस्सिदूण एदेसिं बादरअपज्जत्ताणं व पज्जत्ताणं पि अवट्ठाणेण होदव्वं, विरोहाभावादो। तत्थ जलंता णिरयपुढवीसु अग्गिणो वहंतीओ णईओ च णत्थि त्ति जदि अभावो वुच्चदे, तं पि ण घडदे, "षष्ठ-सप्तमयोः शीतं शीतोष्णं पंचमे स्मृतम्। चतुर्ष्वत्युष्णमुद्दिष्टंस्तासामेव महीगुणाः" ॥ १ ॥ इदि तत्थ वि आउ-तेऊणं संभवादो। कधं पुढवीणं हेट्ठा पत्तेयसरीराणं संभवो? ण, सीएण वि सम्मुच्छिज्जमाणपणग-कुहुणादीणमुवलंभादो। कधमुण्हम्हि संभवो? ण, अच्चुण्हे वि समुप्पज्जमाणजवासपाईणमुवलंभादो।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? ॥ ७९ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८० ॥

एत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणप्पणादो।

सव्वलोगो वा ॥ ८१ ॥

एत्थ ताव वासद्दत्थो उच्चदे। तं जहा—वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, एदेसिं सव्वत्थ गमणागमणं पडि विरोहाभावादो। ॥१७२॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरवाउक्काइया तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ८३ ॥

कुदो ? पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमावूरिय अवट्ठाणादो । लोगंते अट्ठपुढवीणं हेट्ठा वि अवट्ठाणमत्थि किंतु तमेदस्स असंखेज्जदिभागो ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८४ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो वा ॥ ८५ ॥

एत्थ वासदत्थो वुच्चदे—वेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासदत्थो । णवरि वेउव्वियं वट्टमाणेण खेत्तभंगो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

बादरवाउपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ८७ ॥

अदीद-वट्टमाणेहि पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमावूरिय अवट्ठाणादो ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ८८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥ ८९ ॥

इदं वट्टमाणमस्सिदूण परूविदं । तेण वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो वट्टमाणे किण्ण पुसिज्जदि ? ण, पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरं मोत्तूण अण्णत्थ मारणंतिय-उववादे करेमाणजीवाणं सुट्ठु त्थोवत्तुवलंभादो । वेउव्वियपदेण खेत्तभंगो ।

सव्वलोगो वा ॥ ९० ॥

वेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, तीदकालप्पणादो ।

वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ९१ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ ९२ ॥

कुदो ? आणंतियादो, सव्वत्थ जल-थलागासेसु अवट्ठाणं पडि विरोहाभावादो च ।

बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९४ ॥

कुदो ? अट्ठपुढवीओ चेवमस्सिदूण अवट्ठाणादो । तदो एदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो अदीदवट्टमाणेहि फोसिदो । ॥१७४॥

समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ९५ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वलोगो ॥ ९६ ॥

तीदवट्टमाणेसु मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगावूरणादो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-अपज्जत्तभंगो ॥ ९७ ॥

सुगममेदं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९९ ॥

एसो वट्टमाणणिद्देसो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १०० ॥

एत्थ ताव वासद्दत्थो वुच्चदे—सत्थाणेण अप्पिदजीवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? अट्ठरज्जुबाहल्ल-लोगणालीए मण-वचिजोगीणं विहारुवलंभादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १०१ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०२ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १०३ ॥

आहार-तेजइयपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो, फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । वेयण-कसाय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अट्ठरज्जुआयदलोगणालीए सव्वत्थ तीदे काले वेयण-कसाय-विउव्वणाणमुवलंभादो। मारणंतिएण सव्वलोगो।

उववादो णत्थि ॥ १०४ ॥

तत्थ मण-वचिजोगाणमभावादो।

कायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगी सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १०५ ॥

सुगमं।

सव्वलोगो ॥ १०६ ॥

एदस्स अत्थो—सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि वट्टमाणादीदेसु सव्वलोगो फोसिदो। कुदो ? सव्वत्थ गमणागमणावट्ठाणं पडि विरोहाभावादो। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि वट्टमाणं खेत्तं। अदीदेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो। तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। एत्थ वासदेण विणा कथमेसो अत्थो एत्थ वक्खाणिज्जदि ? ण एस दोसो, एदस्स सुत्तस्स देसामासियत्तादो। विहारवदिसत्थाण-वेउव्विय-तेजाहारपदाणि ओरालियमिस्से णत्थि

ओरालियकायजोगी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १०७ ॥

सुगमं।

सव्वलोगो ॥ १०८ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिएहि वट्टमाणातीदेसु सव्वलोगो फोसिदो विहारवदिसत्थाणेण वट्टमाणं खेत्तं। अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। वेउव्वियपदेण वट्टमाणं खेत्तं। अदीदेण तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एदं सुत्तं देसामासियं काऊण सव्वभेदं वक्खाणं सुत्तारूढं कायव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उववादं णत्थि ॥ १०९ ॥

उववादकाले ओरालियकायजोगस्स अभावादो ।

वेउव्वियकायजोगी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ११० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १११ ॥

एदस्स अत्थो— तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ॥ ११२ ॥

वेउव्वियकायजोगीहि सत्थाणेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्ललोगणालीए वेउव्वियकायजोगेण देवाणं विहारुवलंभादो ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ११३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११४ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठ-तेरहचोद्दसभागा देसूणा ॥ ११५ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । मारणंतिएण तेरहचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? मेरुमूलादो उवरि सत्त हेट्ठा छरज्जुआयामलोगणालिमावूरिय वेउव्वियकायजोगेण तीदे कयमारणंतियजीवाणमुवलंभादो ।

उववादं णत्थि ॥ ११६ ॥

तत्थ वेउव्वियकायजोगाभावादो ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ ११७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११८ ॥

एत्थ वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणं णत्थि ।

समुग्घाद-उववादं णत्थि ॥ ११९ ॥

होदु णाम मारणंतिय-उववादाणमभावो, एदेसिं दोण्हं वेउव्वियमिस्सकायजोगेण सह विरोहादो । वेउव्वियस्स वि तत्थ अभावो होदु णाम, अपज्जत्तकाले तदसंभवादो । ण पुण वेयण-कसायाणं तत्थ असंभवो, णेरइएसु अपज्जत्तकाले चेव ताणमुवलंभादो । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा—होदु णाम तेसिं संभवो, किंतु तत्थ सत्थाणखेत्तादो अहियं खेत्तं ण लब्भदि त्ति तेसिं पडिसेहो कदो । किमिदि ण लब्भदे ? जीवपदेसाणं तत्थ सरीरतिगुणविप्फुज्जणाभावादो ।

आहारकायजोगी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १२० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२१ ॥ ॥१७८॥

एत्थ वट्टमाणस्स खेत्तभंगो । अदीदेण सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसायपदेहि चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । मारणंतिएण चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उववादं णत्थि ॥ १२२ ॥

कुदो ? अच्चंताभावेण ओसारिदत्तादो

आहारमिस्सकायजोगी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १२३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२४ ॥

एत्थ वट्टमाणस्स खेत्तभंगो । अदीदेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणं णत्थि ।

समुग्घाद-उववादं णत्थि ॥ १२५ ॥

कुदो ? अच्चंताभावेण ओसारिदत्तादो ।

कम्मइयकायजोगीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १२६ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ १२७ ॥

एदं पि सुगमं ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १२९ ॥

एत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ॥ १३० ॥

एदं देसामासियसुत्तं । तेणेदेण सूइदत्थस्स ताव परूवणं कस्सामो । तं जहा—सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो,

तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वाणवेंतर-जोदिसियाणं विमाणेहि रुद्धखेत्तं घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो साहेयव्वो । एसो सुत्तत्थो । विहारवदिसत्थाणेहि पुण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, देवीहि सह देवाणमट्ठचोद्दसभागेसु तीदे काले संचारुवलंभादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३२ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १३३ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियपदपरिणदेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? देवीहि सह अट्ठचोद्दसभागे भमंताणं देवाणं सव्वत्थ वेयण-कसाय-विउव्वणाणमुवलंभादो । तेजाहारसमुग्घादगदा ओघभंगो । णवरि इत्थिवेदे तदुभयं णत्थि । मारणंतियसमुग्घादेण सव्वलोगो, तिरिक्ख-मणुस्सपुरिसित्थिवेदाणं सव्वलोगे मारणंतियसंभवादो । वासद्दो किमट्ठं ? समुच्चयट्ठो । देव-देवीणं मारणंतियं घेप्पमाणे णवचोद्दसभागा होंति त्ति फोसणविसेसजाणावणट्ठं वा वासद्दो परूविदो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १३४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३५ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

सव्वलोगो वा ॥ १३६ ॥ ॥ १८० ॥

कुदो ? सव्वदिसादो आगंतूण इत्थि-पुरिसवेदेसु उप्पज्जमाणाणमुवलंभादो । देवदेवीओ च अस्सिदूण भण्णमाणे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो छचोद्दसभागा तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो त्ति जाणावणट्ठं वासद्दग्गहणं कयं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णवुंसयवेदा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १३७ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ १३८ ॥

एदस्स अत्थो—सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियसमुग्घादेहि वट्टमाणे खेत्तं । अदीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । णवरि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? वाउक्काइयाणं विउव्वमाणाणं पंचचोद्दसभागमेत्तफोसणस्सुवलंभादो । तेजाहारसमुग्घादा णत्थि ।

अवगदवेदा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १३९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १४० ॥

सुगमं ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १४१ ॥

एदं पि सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १४२ ॥

दंड-कवाड-मारणंतियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो अदीद-वट्टमाणेण फोसिदो । णवरि कवाडगदेहि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो संखेज्जगुणो वा फोसिदो । ॥१८१॥

असंखेज्जा वा भागा ॥ १४३ ॥

एदं पदरगदाणं फोसणं, वादवलएसु जीवपदेसाणं पवेसाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वलोगो वा ॥ १४४ ॥

एदं लोगपूरणफोसणं । सेसं सुगमं ।

उववादं णत्थि ॥ १४५ ॥

अच्चंताभावेण ओसारिदत्तादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई णवुंसयवेदभंगो ॥ १४६ ॥

जहा णवुंसयवेदस्स अदीद-वट्टमाणकाले अस्सिदूण परूविदं तथा एत्थ वि परूवेदव्वं, णत्थि एत्थ विसेसो । णवरि पदविसेसो जाणिय वत्तव्वो । वेउव्वियं वट्टमाणेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अदीदेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ।

अकसाई अवगदवेदभंगो ॥ १४७ ॥

सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ १४९ ॥

सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो फोसिदो । कुदो ? विस्ससादो । विहारवदिसत्थाण-पदेण अदीद-वट्टमाणेण जहाकमेण अट्ठचोद्दसभागा तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । वेउव्वियपदस्स वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण अट्ठ-चोद्दसभागो फोसिदो ।

विभंगणाणी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५१ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ॥ १५२ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, तेणेदेण सूइदत्थो वुच्चदे — सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो सूइदत्थो । विहारवदिसत्थाणेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १५३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५४ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणेण अहियारादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ॥ १५५ ॥

एदस्स अत्थो — वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, विहरंताणं सव्वत्थ वेयण-कसाय-वेउव्वियाणं संभवादो ।

सव्वलोगो वा ॥ १५६ ॥

एदं मारणंतियपदमस्सिदूण वुत्तं । कुदो ? विभंगणाणितिरिक्ख-मणुस्साणं मारणंतियस्स तीदे काले सव्वलोगुवलंभादो । देव-णेरइयाणं मारणंतियमस्सिदूण तेरहचोद्दसभागा होंति त्ति जाणावणट्ठं वासद्दणिद्देसो कदो ।

उववादं णत्थि ॥ १५७ ॥

कुदो ? विस्ससादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १५८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५९ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणावलंबणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ॥ १६० ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थो ताव उच्चदे । तं जहा— सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । तेजाहारपदाणं खेत्तं । एसो सूइदत्थो । विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥

एदस्स अत्थपरूवणाए खेत्तभंगो । कुदो ? वट्टमाणप्पणादो ।

छचोद्दसभागा देसूणा ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणमारणादिदेवेसुप्पज्जमाणाणं छचोद्दसभागा । हेट्ठा दोरज्जुमेत्त-द्धाणं गंतूण ट्ठिदावत्थाए छिण्णाउआणं मणुस्सेसुप्पज्जमाणाण देवाणं उववादखेत्तं किण्ण घेप्पदे ? ण, तस्स पढमदंडेणूणस्स छचोद्दस-भागेसु चेव अंतब्भावादो, तेसिं मूलसरीरपवेसमंतरेण तदवत्थाए मरणाभावादो च । ॥१८४॥

मणपज्जवणाणी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १६४ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६५ ॥

एदस्स अत्थे भण्णमाणे वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

उववादं णत्थि ॥ १६६ ॥

कुदो ? विस्ससादो ।

केवलणाणी अवगदवेदभंगो ॥ १६७ ॥

णवरि मारणंतियपदं णत्थि, केवलणाणिम्हि तस्सत्थित्तविरोहादो ।

संजमाणुवादेण संजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा अकसाइभंगो ॥ १६८ ॥

एसो सुत्तणिद्देसो दव्वट्ठियणयावलंबणो । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंविज्जमाणे संजदा अकसाइतुल्ला ण होंति, संजदेसु अकसाइजीवेसु अविज्जमाणवेउव्विय-तेजाहार-पदाणमुवलंभादो । सेसं सुगमं ।

सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइयसंजदाणं मणपज्जवणाणिभंगो ॥ १६९ ॥

एसो दव्वट्ठियणिद्देसो । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंविज्जमाणे सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा पुण मणपज्जवणाणितुल्ला होंति, मणपज्जवणाणिसु तेजाहारपदाणमभावादो । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा पुण मणपज्जवणाणितुल्ला ण होंति, सुहुमसांपराइयसंजदेसु वेउव्वियपदाभावादो । सेसं सुगमं ।

संजदासंजदा सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १७० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७१ ॥

एदस्सत्थो—वट्टमाणे खेत्तभंगो । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । होदु णाम विहारवदिसत्थाणस्सेदं, सव्वदीव-समुद्देसु वइरियदेवसंबंधेण तीदे काले संजदासंजदाणं संभवादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण सत्थाणस्स, सव्वदीव-समुद्देसु सत्थाणत्थसंजदासंजदाणमभावादो ? ण एस दोसो, जदि वि सव्वत्थ णत्थि तो वि सयंपहपव्वयस्स परभाए तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे सत्थाणत्थियसंजदासंजदाणमुवलंभादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १७२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७३ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १७४ ॥

एत्थ ताव वासद्दत्थो वुच्चदे । तं जहा—वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतियेण पुण छचोद्दसभागा फोसिदा, तिरिक्खेहिंतो जाव अच्चुदकप्पो त्ति मारणंतियं मेल्लमाणसंजदासंजदाणं तदुवलंभादो ।

उववादं णत्थि ॥ १७५ ॥

संजदासंजदगुणेण उववादस्स विरोहादो ।

असंजदाणं णवुंसयभंगो ॥ १७६ ॥

सुगममेदं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १७७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १७८ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणपरूवणादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठचोद्दभागा वा देसूणा ॥ १७९ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा चक्खुदंसणीहि फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्लरज्जुपदरब्भंतरे चक्खुदंसणीणं विहारस्स विरोहाभावादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १८० ॥

सुगमं

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८१ ॥

एत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा, वट्टमाणकालेण अहियारादो ।

अट्ठचोद्दसभागा देसूणा ॥ १८२ ॥

कुदो ? वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि विहरंतदेवेसु समुप्पण्णेहि अट्ठचोद्दसभागखेत्तस्स पुसिज्जमाणस्स दंसणादो । मारणंतियफोसणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वलोगो वा ॥ १८३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— देव-णेरइएहि मारणंतियसमुग्घादेहि तेरहचोद्दसभागा फोसिदा, लोगणालीए बाहिमेदेसिं उववादाभावेण मारणंतिएण गमणाभावादो । एसो वासद्दत्थो । तिरिक्ख-मणुस्सेहि पुण सव्वलोगो फोसिदो, तेसिं लोगणालीए बाहिमब्भंतरे च मारणंतिएण गमणुवलंभादो ।

उववादं सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ १८४ ॥

अत्थित्त-णत्थित्ताणं चक्खुदंसणविसयाणं एक्कम्हि जीवे एक्ककालम्हि परोप्परपरिहारलक्खणविरोहो व्व सहअणवट्ठाणलक्खण-विरोहाभावपदुप्पायणट्ठं सियासद्दो ठविदो । कथमविरोहो त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लद्धिं पडुच्च अत्थि, णिव्वत्तिं पडुच्च णत्थि ॥ १८५ ॥

लद्धी चक्खिंदियावरणखओवसमो, सोअपज्जत्तकाले वि अत्थि, तेण विणा बज्झिंदियणिव्वत्तीए अभावादो। णिव्वत्ती णाम-चक्खुगोलियाए णिप्पत्ती, सा अपज्जत्तकाले णत्थि, अणिप्पत्तीए णिप्पत्तिविरोहादो। जेण सरूवेण चक्खुदंसणमत्थि तेणेव सरूवेण जदि तस्स णत्थित्तं परूविज्जदि तो विरोहो पसज्जदे। ण च एवं, तम्हा सहअणवट्ठाणलक्खणो विरोहो णत्थि त्ति।

जदि लद्धिं पडुच्च अत्थि, केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १८६ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १८७ ॥

एदं सुगमं, वट्टमाणप्पणादो।

सव्वलोगो वा ॥ १८८ ॥

एदस्स अत्थो—देव-णेरइएहि सचक्खुतिरिक्ख-मणुस्सेहिंतो चक्खुदंसणीसुप्पण्णेहि बारहचोद्दसभागा फोसिदा, लोगणालीए बाहिं चक्खुदंसणीणमभावादो, आणदादिउवरिमदेवाणं तिरिक्खेसुप्पादाभावादो च। एसो वासद्दत्थो। एइंदिएहिंतो सचक्खिंदिएसु उप्पण्णेहि पढमसमए सव्वलोगो फोसिदो, आणंतियादो सव्वपदेसेहिंतो आगमणसंभवादो च।

अचक्खुदंसणी असंजदभंगो ॥ १८९ ॥

एसो दव्वट्ठियणिद्देसो। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अचक्खुदंसणिणो असंजदतुल्ला ण होंति, अचक्खुदंसणीसु तेजाहारपदाणमुवलंभादो।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १९० ॥

सुगमं।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १९१ ॥

एदं पि सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाणं असंजदभंगो ॥ १९२ ॥

सुगममेदं ।

तेउलेस्सियाणं सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १९३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९४ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा वट्टमाणविवक्खाए ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १९५ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासदृत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, तेउलेस्सियदेवाणं विहरमाणाणमेदस्सुवलंभादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १९६ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १९७ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १९८ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, विहरंताणं देवाणमेदेसिं तिण्हं पदाणं सव्वत्थुवलंभादो । मारणंतिएण णवचोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो हेट्ठिम दोहि रज्जूहि सह उवरि सत्तरज्जुफोसणुवलंभादो । ॥१८९॥

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ १९९ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०० ॥

सुगमं, वट्टमाणकाले पडिवद्धत्तादो ।

दिवड्ढचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २०१ ॥

कुदो ? मेरुमूलादो पहापत्थडस्स दिवड्ढरज्जुमेत्तमुवरि चडिदूण अवट्ठाणादो । सणक्कुमार-माहिंदाणं पढमिंदयदेवेसु तेउलेस्सिएसु उप्पाइज्जमाणे सादिरेयदिवड्ढरज्जुखेत्तं किण्ण लब्भदे ? ण, सोहम्मादो थोवं चेव ट्ठाणमुवरि गंतूण सणक्कुमारादिपत्थडस्स अवट्ठादो । कधमेदं णव्वदे ? अण्णहा देसूणत्ताणुववत्तीदो । मारणंतिय-उववादट्ठिदवासद्दा वुत्तसमुच्चयत्था दट्ठव्वा ।

पम्मलेस्सिया सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २०२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०३ ॥

सुगमं, वट्टमाणणिरोहादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २०४ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दसूइदत्थो । विहार-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? पम्मलेस्सियदेवाणमेइंदिएसु मारणंतियाभावादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २०५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०६ ॥

एदं दि सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २०७ ॥

कुदो ? मेरुमूलादो उवरि पंचरज्जुमेत्तद्धाणं गंतूण सहस्सारकप्पस्स अवट्ठाणादो । एत्थ वासद्दो वुत्तसमुच्चयट्ठो ।

सुक्कलेस्सिया सत्थाण-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २०८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०९ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २१० ॥

एदस्सत्थो—सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्देण समुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाण-उववादेहि छचोद्दसभागा फोसिदा, तिरियलोगादो आरणच्चुदकप्पे समुप्पज्जमाणाणं छरज्जुअब्भंतरे विहरंताणं च एत्तियमेत्तफोसणुवलंभादो ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २११ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २१२ ॥

एत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २१३ ॥

आरणच्चुददेवेसु कयमारणंतियतिरिक्ख-मणुस्साणमुवलंभादो । वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादाणं विहारवदिसत्थाणभंगो । ॥१९१॥

असंखेज्जा वा भागा ॥ २१४ ॥

एदं पदरगदकेवलिमस्सिदूण भणिदं, वादवलए मोत्तूण तत्थ सव्वलोगंगदजीवपदेसाणमुवलंभादो । दंडगदेहि चदुण्हं लोगा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एवं कवाडगदेहि वि । णवरि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो तत्तो संखेज्जगुणो वा फोसिदो त्ति वत्तव्वं । एसो वासद्देण अउत्तसमुच्चओ । पुव्वसुत्तट्ठिय वासद्देण वि अउत्तसमुच्चओ पुव्वसुत्ते चेव कदो, सुक्कलेस्सियदेवेहि कयमारणंतिएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो त्ति एदस्स सूचयत्तादो ।

सव्वलोगो वा ॥ २१५ ॥

एदं लोगपूरणगदकेवलिं पडुच्च समुद्दिट्ठं । एत्थ वासद्दो उत्तसमुच्चयत्थो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय अभवसिद्धिय सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ॥ २१६ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ २१७ ॥

सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि अदीद-वट्टमाणे सव्वलोगो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणेण वट्टमाणे खेत्तं; अदीदेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । भवसिद्धिएसु सेसपदाणमोघभंगो । कथमेदं समुवलद्धं ? देसामासियत्तादो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २१८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २१९ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २२० ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, सम्माइट्ठीणं मेरुमूलादो हेट्ठा दोरज्जुमेत्तद्धाणगमणस्स दंसणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २२१ ॥

॥१९३॥ सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२२ ॥

एत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणवेयण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहार-केवलिसमुग्घाद-मारणंतियखेत्तप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २२३ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । एदं देवसम्माइट्ठिणो अस्सिदूण उत्तं । वासद्दो किमट्ठं वुत्तो ? तिरिक्ख-मणुससम्माइट्ठिखेत्तसमुच्चयट्ठं । तं जहा—वेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो; तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जस्स संखेज्जदिभागो; मारणंतिएण छचोद्दसभागा फोसिदा । एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो ।

असंखेज्जा वा भागा वा ॥ २२४ ॥

एदं पदरगदकेवलिमस्सिदूण उत्तं । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो पढमवासद्देण समुच्चिदत्थो । कवाडगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो तत्तो संखेज्जगुणो वा, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो बिदियवासद्दसमुच्चिदत्थो । एवं सव्वत्थ पदरगदकेवलिसुत्तट्ठियदोण्हं वासद्दाणमत्थो परूवेदव्वो ।

सव्वलोगो वा ॥ २२५ ॥

एदं लोगपूरणमस्सिदूण भणिदं । वासद्दो उत्तसमुच्चयत्थो । ॥१९३॥

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २२६ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२७ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २२८ ॥

देव-णेरइएहि मणुस्सेसुप्पज्जमाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, एक्कारहरज्जुदीह-पणदालीसजोयणलक्खरुंदखेत्तस्स उवलंभादो । ण च एत्तियमेत्तं चेवेत्ति णियमो अत्थि, अण्णस्स वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभाग-मेत्तस्स उवलंभादो । एसो वासद्दत्थो । तिरिय-मणुस्सेहिंतो देवेसुप्पण्णेहि छचोद्दसभागा फोसिदा ।

खइयसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २२९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३० ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २३१ ॥

सत्थाणत्थेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वास-द्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३३ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २३४ ॥

तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो संखेज्जदिभागो फोसिदो । तिरिक्ख-मणुस्सेहि वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । देवेहि पुण वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

असंखेज्जा वा भागा वा ॥ २३५ ॥

एदं पदरगदकेवलिखेत्तं पडुच्च भणिदं, तत्थ वादवलयं मोत्तूण सेसासेसलोगगदजीवपदेसाणमुवलंभादो । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो पढमवासद्देण सूइदत्थो । कवाडगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो तत्तो संखेज्जगुणो वा, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो विदियवासद्दसमुच्चिदत्थो ।

सव्वलोगो वा ॥ २३६ ॥

एदं लोगपूरणगदकेवलिं पडुच्च परूविदं । एत्थ वासद्दो उत्तसमुच्चयत्थो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३८ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । अदीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

वेदगसम्मादिट्ठी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४० ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २४१ ॥

सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो वासद्देण समुच्चिदत्थो। विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २४२ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४३ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २४४ ॥

देव-णेरइएहिंतो आगंतूण वेदगसम्मादिट्ठिमणुस्सेसुप्पण्णेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। णवरि देवेहि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो। तिरिक्ख-मणुस्सेहिंतो देवेसुप्पज्जमाण-वेदगसम्माइट्ठीहि छचोद्दसभागा फोसिदा।

उवसमसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २४५ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४६ ॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो। ॥ १९६ ॥

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २४७ ॥

सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वासद्दसमुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, उवसमसम्माइट्ठीणं देवाणमट्ठचोद्दसभागंतरे विहारं पडि विरोहाभावादो ।

समुग्घादेहि उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २४८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४९ ॥

एत्थ अदीद-वट्टमाणकालेसु मारणंतिय-उववादपरिणएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, माणुसखेत्तम्मि चेव मरंताणं उवसमसम्माइट्ठीणमुवलंभादो । वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादाणमुवसमसम्माइट्ठीणं देवाणमट्ठचोद्दसभागा किण्ण परूविदा ? ण, एवं परूविज्जमाणे सासणस्स मारणंतियसमुग्घादस्स वि अट्ठचोद्दसभागा होंति त्ति संदेहो मा होहदि त्ति तण्णिराकरणट्ठं ण परूविदा ।

सासणसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५१ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५२ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाणपरिणएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५४ ॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठ-बारहचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५५ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा। मारणंतियसमुग्घादेहि बारहचोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो हेट्ठोवरि पंच-सत्तरज्जुआयामेण मारणंतियस्सुवलंभादो।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५६ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५७ ॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो।

एक्कारहचोद्दसभागा देसूणा ॥ २५८ ॥

कुदो ? छट्ठिपुढविणेरइयाणं सासणगुणेण पंचिंदियतिरिक्खेसु उप्पज्जमाणाणं पंचचोद्दसभागा उववादेण लब्भंति, देवेहिंतो पंचिंदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणाणं छचोद्दसभागा लब्भंति, एदेसिं समासो एक्कारहचोद्दसभागा सासणोववादफोसणखेत्तं होदि त्ति। उवरि सत्त चोद्दसभागा किण्ण लद्धा ? सासणाणमेइंदिएसु उववादाभावादो। मारणंतियमेइंदिएसु गदसासणा तत्थ किण्ण उप्पज्जंति ? ण, मिच्छत्तमागंतूण सासणगुणेण उप्पत्तिविरोहादो।

सम्मामिच्छाइट्ठीहि सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५९ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६० ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २६१ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो वासद्दत्थो। विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा वा फोसिदा। सेसं सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुग्घाद-उववादं णत्थि ॥ २६२ ॥

कुदो? सम्मामिच्छत्तगुणेण मरणाभावादो। वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादाणमेत्थ परूवणं किण्ण कदं? ण, तेसिं पहाण-त्ताभावादो।

मिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ २६३ ॥

सुगममेदं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २६४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६५ ॥

सुगमं, वट्टमाणविवक्खादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ २६६ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २६७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६८ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २६९ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, देवाणं विहरंताणं तिण्हमेदेसिमुवलंभादो ।

सव्वलोगो वा ॥ २७० ॥

मारणंतियसमुग्घादं पडुच्च एसो णिद्देसो । तसकाइएसु सण्णीसु मुक्कमारणंतियसण्णी जीवे पडुच्च बारहचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । एसो वासदत्थो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७१ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २७२ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो।

सव्वलोगो वा ॥ २७३ ॥

सण्णीसुप्पण्णअसण्णीणं सव्वलोगोवलंभादो। सण्णीणं सण्णीसुप्पज्जमाणाणं बारहचोद्दसभागा होंति। सम्माइट्ठीणं छचोद्दसभागा। एसो वासद्दत्थो। एवमण्णत्थ वि अउत्तट्ठाणे वासद्दाणमत्थो वत्तव्वो।

असण्णी मिच्छाइट्ठिभंगो ॥ २७४ ॥

सुगमं।

आहाराणुवादेण आहारा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७५ ॥

सुगमं।

सव्वलोगो ॥ २७६ ॥

एदं देसामासियसुत्तं। तेण विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा। वेउव्विएण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो फोसिदो। सेसं सुगमं।

अणाहारा केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७७ ॥

सुगमं।

सव्वलोगो वा ॥ २७८ ॥

एदं पि सुगमं। एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णाणाजीवेण कालाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १ ॥

णाणाजीवग्गहणमेगजीवपडिसेहट्ठं । कालाणुगमग्गहणं सेसाणिओगद्दारपडिसेहट्ठं । गदिग्गहणं सेसमग्गणापडिसेहफलं । णिरयगइणिद्देसो सेसगइपडिसेहफलो । णेरइयणिद्देसो तत्थट्ठियपुढविकाइयादिपडिसेहफलो । केवचिरं कालादो होंति त्ति एदस्सत्थो— णिरयगदीए णेरइया किमणादि-अपज्जवसिदा, किमणादि-सपज्जवसिदा, किं सादि-अपज्जवसिदा, किं सादि-सपज्जवसिदा त्ति सिस्सस्स आसंकुद्दीवणमेदेण कयं । अथवा णासंकियसुत्तमिदं, किंतु पुच्छासुत्तमिदि वत्तव्वं । एसो अत्थो सव्वसंकासुत्तेसु जोजेयव्वो ।

सव्वद्धा ॥ २ ॥

अणादि-अपज्जवसिदा होंति, सेसतिसु वियप्पेसु णत्थि । कुदो ? सहावदो चेव । ण च सव्वं सहेउअं चेवेत्ति णियमो अत्थि, एयंतवादप्पसंगादो । तम्हा 'ण अण्णहावाइणो जिणा' इदि एदं सद्दहेयव्वं ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

जहा णेरइयाणं सामण्णेण अणादिओ अपज्जवसिदो संताणकालो वुत्तो तथा सत्तसु पुढवीसु णेरइयाणं पि । पादेक्कं संताणस्स वोच्छेदो ण होदि त्ति वुत्तं होदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी केवचिरं कालादो होंति ॥४॥ ॥२०१॥

एदे सुत्तम्मि वुत्तजीवा संताणं पडुच्च किमणादि-अपज्जवसिदा, किमणादिसपज्जवसिदा, किं सादि-अपज्जवसिदा, किं सादि-सपज्जवसिदा; सादि-सपज्जवसिदा वि संता तत्थ किमेगसमयावट्ठाइणो किं दुसमया किं तिसमया, एवमावलिय-खण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लव-मुहुत्त-दिवस-पक्ख-मास-उदु-अयण-संवच्छर-पुव्व-पव्व-पल्ल-सागरुस्सप्पिणि-कप्पादिकालावट्ठाइणो त्ति आसंकिय तस्स उत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वद्धा ॥ ५ ॥

सव्वा अद्धा कालो जेसिं ते सव्वद्धा, संताणं पडि तत्थ सव्वकालावट्ठाइणो त्ति वुत्तं होदि।

मणुसअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६ ॥

सुगमं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७ ॥

कुदो ? अणप्पिदगदीदो आगंतूण मणुसअपज्जत्तेसुप्पज्जिय अंतरं विणासिय खुद्दाभवग्गहणमच्छिय णिस्सेसमणप्पिदगदिं गदाणं खुद्दाभवग्गहणमेत्तजहण्णकालुवलंभादो।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८ ॥

तं जहा—मणुसअपज्जत्तएसु अंतरिय ट्ठिदेसु अणप्पिदगदीदो थोवा जीवा मणुसअपज्जत्तएसु आगंतूण उप्पण्णा। णट्ठमंतरं। तेसिं जीवाणं जीविदद्दुचरिमसमओ त्ति पुणो वि उप्पत्तिं पडुच्च अंतरं करिय पुणो अण्णे उप्पाएयव्वा। तत्थ वि उप्पत्तिं पडुच्च अप्पिदजीवाणं जीविदद्दुचरिमसमयो त्ति अंतरं करिय पुणो अण्णे उप्पाएयव्वा। तत्थ वि उप्पत्तिं पडुच्च अप्पिदजीवाणं जीविदद्दुचरिमसमओ त्ति अंतरं करिय अण्णे उप्पाएयव्वा। अणेण पयारेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवारेसु गदेसु तदो णियमा अंतरं होदि। एदम्हि काले आणिज्जमाणे एक्किस्से वारसलागाए जदि संखेज्जावलियमेत्तो कालो लब्भदि, तो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसलागासु किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेणोवट्टिदे मणुसअपज्जत्ताणं संताणस्स कालो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो जादो। केइमेगमाउट्ठिदिं ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिरंतरुवक्कमणकालेण गुणिय पमाणेणोवट्टंति। तेसिमेसो कालो णागच्छदि। ॥२०२॥

देवगदीए देवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वद्धा ॥ १० ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा ॥ ११ ॥

सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १२ ॥

णत्थि एत्थ किं पि वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

सव्वद्धा ॥ १३ ॥

एदं दि सुगमं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ता तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १४ ॥

एत्थ वि णत्थि वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

सव्वद्धा ॥ १५ ॥

सुगमं ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी कायजोगी ओरालियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्मइयकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १६ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणजोगि-वचिजोगीणमद्धा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। मणुसअपज्जत्ताणं पुण जहण्णओ उक्कस्सओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव। जदि एवंविहमणुसअपज्जत्ताणं संताणो सांतरो होज्ज तो मण-वचिजोगीणं संताणो सांतरो किण्ण हवे, विसेसाभावादो। ण दव्वपमाणकओ विसेसो, देवाणं संखेज्जभागमेत्तदव्वुवलक्खियवेउव्वियमिस्सकायजोगिसंताणस्स वि सव्वद्धप्पसंगादो। एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा—ण दव्वबहुत्तं संताणाविच्छेदस्स कारणं, संखेज्जमणुसपज्जत्ताणं संताणस्स वि वोच्छेदप्पसंगादो। ण सगद्धाथोवत्तं संताणवोच्छेदस्स कारणं, वेउव्वियमिस्सद्धादो संखेज्जगुणहीणद्धुवलक्खियमणजोगिसंताणस्स वि सांतरत्तप्पसंगादो। किंतु जस्स गुणट्ठाणस्स मग्गणट्ठाणस्स वा एगजीवावट्ठाणकालादो पवेसंतरकालो बहुगो होदि तस्सण्णयवोच्छेदो। जस्स पुण कयावि ण बहुओ तस्स ण संताणस्स वोच्छेदो त्ति घेत्तव्वं। मणजोगि-वचिजोगीणं पुण एगसमओ सुट्ठु पविरलो त्ति एत्थ जहण्णकालत्तणेण ण गहिदो।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १८ ॥

सुगमं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १९ ॥

कुदो ? ओरालियकायजोगट्ठिदतिरिक्ख-मणुस्साणं बे विग्गहे कादूण देवेसुप्पज्जिय सव्वजहण्णेण कालेण पज्जत्तीओ समाणिय अंतोमुहुत्तमेत्तजहण्णकालुवलंभादो।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

मणुसअपज्जत्ताणं जधा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो संताणकालो परूविदो तथा एत्थ वि परूवेदव्वो।

आहारकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २१ ॥

सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण एगसमयं ॥ २२ ॥

कुदो ? मणजोग-वचिजोगेहिंतो आहारकायजोगं गंतूण विदियसमए कालं करिय जोगंतरं गयस्स एगसमय-कालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३ ॥

एत्थ आहारकायजोगीणं दुचरिमसमओ जाव आहारकायजोगप्पवेसस्स अंतरं करिय पुणो उवरिमसमए अण्णे जीवे पवेसियव्वा । एवं संखेज्जवारसलागासु उप्पण्णासु तदो णियमा अंतरं होदि । एवं संखेज्जंतोमुहुत्तसमासो वि अंतोमुहुत्तमेत्तो चेव । कथं णव्वदे ? उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो त्ति सुत्तवयणादो ।

आहारमिस्सकायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २४ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २५ ॥

कुदो ? आहारमिस्सकायजोगचरस्स आहारमिस्सकायजोगं गंतूण सुट्ठु जहण्णेण कालेण पज्जत्तीओ समाणिदस्स जहण्णकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २६ ॥

एत्थ वि पुव्वं व संखेज्जंतोमुहुत्ताणं संकलणा कायव्वा ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ २८ ॥

एदं पि सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई केवचिरं कालादो होंति ? ॥ २९ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३० ॥

एदं पि सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणी- मणपज्जवणाणी केवलणाणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३२ ॥

णत्थि एत्थ वत्तव्वं, सुगमत्तादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३४ ॥

एदं पि सुगमं ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहण्णेण एगसमयं ॥ ३६ ॥

कुदो ? उवसंतकसायस्स अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठस्स वा सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणं पडिवण्णबिदियसमए कालं करिय देवेसुववण्णस्स एगसमयस्सुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३७ ॥

एत्थ संखेज्जंतोमुहुत्तसमाससमुब्भूदो अंतोमुहुत्तकालो परूवेदव्वो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३८ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ३९ ॥

एदं पि सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिय-तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४० ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ४१ ॥

एदं पि सुगमं ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४२ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४४ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ४५ ॥

एदं पि सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४७ ॥

कुदो ? दिट्ठमग्गाणं सम्मामिच्छत्तुवसमसम्मत्ताणि पडिवज्जिय सव्वजहण्णकालं तेसु अच्छिय गुणंतरगदाणं सुट्ठु जहण्णंतोमुहुत्तमेत्तकालुवलंभादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

एत्थ एदम्हि काले आणिज्जमाणे अप्पिदगुणट्ठाणकालमेत्तम्हि एगपवेसणकालसलागं करिय एरिसासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसलागासुप्पण्णासु तदो णियमा अंतरं होदि । एत्थ सव्वकालसलागाहि गुणकाले गुणिदे उक्कस्सकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठी केवचिरं कालादो होंति ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ५० ॥

कुदो ? उवसमसम्मत्तद्धाए एगसमयावसेसाए सासणं गंतूण एगसमयमच्छिय विदियसमए मिच्छत्तं गदस्स एगसमयदंसणादो । ॥२०८॥

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ५१ ॥

सुगममेदं, सम्मामिच्छत्तकालसमासविहाणेण एदस्स कालस्स समुप्पत्तीदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५२ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

आहारा अणाहारा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५४ ॥

सुगमं ।

सव्वद्धा ॥ ५५ ॥

सुगमं । एवं णाणाजीवेण कालाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

णाणाजीवेण अंतराणुगमो

णाणाजीवेहि अंतराणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १ ॥

णाणाजीवणिद्देसो एगजीवपडिसेहफलो । अंतरणिद्देसो सेसाणिओगद्दारपडिसेहफलो । णेरइयणिद्देसो तत्थट्ठियपुढविकाइयादि-पडिसेहफलो । केवचिरं-णिद्देसो समयावलिय-खण-लव-मुहुत्तादिफलो । अवसेसं सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ २ ॥

कुदो ? सव्वद्धासु अवट्ठाणादो । णाणाजीवेहि कालणिरूवणाए चेव एदेसिमंतरमत्थि एदेसिं च णत्थि त्ति णव्वदे । तदो अंतर-परूवणा ण कादव्वेत्ति । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा— कालाणिओगद्दारे जेसिमंतरमत्थि त्ति अवगदं तेसिमंतराणं पमाणपरूव- ॥२०९॥
णट्ठमिदमणिओगद्दारमागदं । जदि एवं तो सांतररासीणमेव परूवणा कीरउ वंतरविसिट्ठाणं, ण सव्वद्धरासीणमिदि ? तो क्खहि एवं घेत्तव्वं दव्वट्ठियणयसिस्साणुग्गहट्ठं कालाणिओगद्दारं भणिय संपहि पज्जवट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठमंतराणिओगद्दारपरूवणा आगदा त्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिरंतरं ॥ ३ ॥

निर्गतमंतरमस्माद्राशेरिति णिरंतरं । तं जेण सिद्धं तेण एसो पज्जुवासपडिसेहो, एसो रासी अंतरादो पुधभूदो वदिरित्तो त्ति वुत्तं होदि । जदि एवं तो पुणरुत्तदोसो पावदे, पुव्वसुत्तप्पसिद्धत्थपरूवणादो । ण एस दोसो, पुव्विल्लसुत्तं जेण अभावपहाणं तेण पसज्जपडिसेहपडिबद्धं । तदो तेण अभावं पत्त विहीए परूवणट्ठमेदस्स अवयारादो ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ४ ॥

कुदो ? अंतराभावं पडि विसेसाभावादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्ता, मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीणमंतरं केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५ ॥

दोण्णं गईणमेगवारेण णिद्देसो किमट्ठं कओ ? देव-णेरइयाणं व एदेसिं पुधखेत्तावासो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं । सेसं सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ६ ॥

एसो पसज्जपडिसेहो, विहीए पहाणत्ताभावादो ।

णिरंतरं ॥ ७ ॥

एसो पज्जुवासपडिसेहो, पडिसेहस्स पहाणत्ताभावादो ।

मणुसअपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ९ ॥

सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु मणुसअपज्जत्तएसु कालं काऊण अण्णगइं गएसु एगसमयमंतरं होऊण बिदियसमए अण्णेसु तत्थुप्पण्णेसु लद्धमेगसमयमंतरं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १० ॥

कुदो ? मणुसअपज्जत्तएसु कालं काऊण अण्णगइं गएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तकाले अइक्कंते पुणो णियमेण मणुस-अपज्जत्तएसु उप्पज्जमाणजीवाणमुवलंभादो ।

देवगदीए देवाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ १२ ॥

एदं पि सुगमं ।

णिरंतरं ॥ १३ ॥

सुगमं ।

भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदिभंगो ॥ १४ ॥

सुगमं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ १६ ॥

एदं पज्जवट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं परूविदं ।

णिरंतरं ॥ १७ ॥

एदं सुत्तं दव्वट्ठियसिस्साणुग्गहट्ठं परूविदं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुम-पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ १९ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ २० ॥

सुगमं । दुणयाणुग्गहट्ठं परूविद-दोसुत्ताणि जाणावेंति सुत्तकत्तारस्स वीयरायत्तं जीवदयावरत्तं च ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगि-ओरालियकायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगि वेउव्वियकायजोगि-कम्मइयकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ २२ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ २३ ॥

सुगमं ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २४ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

जहण्णेण एगसमयं ॥ २५ ॥

कुदो ? वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु सव्वेसु पज्जत्तीओ समाणिदेसु एगसमयमंतरिदूण विदियसमए देवेसु णेरइएसु उप्पण्णेसु वेउव्वियमिस्सकायजोगीणमंतरं एगसमयं होदि ।

उक्कस्सेण बारसमुहुत्तं ॥ २६ ॥

देवेसु णेरइएसु वा अणुप्पज्जमाणा जीवा जदि सुट्ठु बहुअं कालमच्छंति तो बारस मुहुत्ताणि चेव । कधमेदं णव्वदे ? जिण-वयणविणिग्गयवयणादो ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ २८ ॥

कुदो ? आहार-आहारमिस्सजोगेहि विणा तिहुवणजीवाणमेगसमयमुवलंभादो ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥ २९ ॥

कुदो ? दोहि वि जोगेहि विणा सव्वपमत्तसंजदाणं वासपुधत्तावट्ठाणदंसणादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३० ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३२ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाईणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ३४ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणि-आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणि-मणपज्जवणाणि-केवलणाणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३६ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ३७ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ३८ ॥

सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णत्थि अंतरं ॥ ४० ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ४१ ॥

सुगमं ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं अंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ४३ ॥

कुदो ? सुहुमसांपराइयसंजदेहि विणा एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सेण छम्मासाणि ॥ ४४ ॥

कुदो ? खवगसेडीसमारोहणस्स छम्मासाणमुवरिमुक्कस्संतरस्स अणुवलंभादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-केवलदंसणीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४५ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ४६ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिय-तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सियाण-मंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४८ ॥

सुगमं।

णत्थि अंतरं ॥ ४९ ॥

सुगमं।

णिरंतरं ॥ ५० ॥

सुगमं।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५१ ॥

सुगमं।

णत्थि अंतरं ॥ ५२ ॥

सुगमं।

णिरंतरं ॥ ५३ ॥

सुगमं।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठि-वेदगसम्माइट्ठि-मिच्छाइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५४ ॥

सुगमं।

णत्थि अंतरं ॥ ५५ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिरंतरं ॥ ५६ ॥

सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ५८ ॥

कुदो ? तिसु वि लोएसु उवसमसम्मादिट्ठीणमेक्कम्हि समए अभावदंसणादो ।

उक्कस्सेण सत्तरादिंदियाणि ॥ ५९ ॥

रादिंदियमिदि दिवसस्स सण्णा, अहोरत्तेहि मिलिएहि दिवसववहारदंसणादो । उवसमसम्मत्तस्स सत्तदिवसमेत्तमंतरं होदि त्ति वुत्तं होदि । एत्थ उवसंहारगाहा—सम्मत्ते सत्त दिणा विरदाविरदीए चोद्दस हवंति । विरदीसु अ पण्णरसा विरहिदकालो मुणेयव्वो ॥ १ ॥

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमयं ॥ ६१ ॥

कुदो ? सासणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तगुणाणं जहण्णेण एगसमयं अंतरं पडि विरोहाभावादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ६२ ॥

सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णि-असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णत्थि अंतरं ॥ ६४ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहार-अणाहाराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६६ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतरं ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

णिरंतरं ॥ ६८ ॥

सुगमं । एवं णाणाजीवेण अंतराणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

भागाभागाणुगमो

भागाभागाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १ ॥

एदस्स अत्थो वुचदे—अणंतभाग-असंखेज्जदिभाग-संखेज्जदिभागाणं भागसण्णा, अणंताभागा असंखेज्जाभागा संखेज्जाभागा एदेसिमभागसण्णा । भागो च अभागो च भागाभागा, तेसिमणुगमो भागाभागाणुगमो, तेण भागाभागाणुगमेण एत्थ अहियारो त्ति भणिदं होदि । भागाभागणिद्देसो सेसाणियोगद्दारपडिसेहफलो । णेरइयणिद्देसो तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेहफलो । सव्वजीवाणं कइत्थओ णिरयगईए णिरंतरं वसदि त्ति पुच्छा कदा होदि । किमणंतिमभागो किमणंता भागा किमसंखेज्जा भागा किमसंखेज्जदिभागो किं संखेज्जा भागा होंति त्ति भणिदे तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणंतभागो ॥ २ ॥

तं कथं ? णेरइएहि घणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्तसेडिपमाणेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । लद्धं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं काऊण रूवं पडि दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं णेरइयपमाणं होदि । तेण णेरइया सव्वजीवाणमणंतभागो त्ति वुत्तं होदि ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

सत्तण्हं पुढवीणं णेरइएहि पुध पुध सव्वजीवरासिम्हि भागं घेत्तूण लद्धं विरलिय पुणो सव्वजीवरासिं सत्तण्णं विरलणाणं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं जहाकमेण पढमादीणं सत्तण्णं पुढवीणं दव्वं जेण होदि तेण णेरइयभंगो सत्तण्णं पुढवीणं जुज्जदे ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४ ॥

एदस्स अत्थो—तिरिक्खा सव्वजीवाणं किमणंतिमभागो किमणंता भागा किमसंखेज्जदिभागो किमसंखेज्जा भागा किं संखेज्जा भागा होंति त्ति पुच्छा कदा । तत्थ छसु वियप्पेसु एक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

अणंता भागा ॥ ५ ॥

तं जहा—सिद्ध-तिगदिजीवेहि सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय रूवं पडि दिण्णे एगरूवधरिदं सिद्ध-तिगदिजीवपमाणं होदि । तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागा जेण तिरिक्खाणं पमाणं होदि तेण तिरिक्खा सव्वजीवाणमणंता भागा त्ति सुत्ते उत्तं ।

पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता, मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी मणुसअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६ ॥

सुगममेदं, पुव्वं परूविदत्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणंतभागो ॥ ७ ॥

पुव्वुत्तछव्वियप्पेसु एदे जीवा अणंतभागवियप्पे चेव अत्थि, अण्णत्थ णत्थि त्ति एदेण सुत्तेण परूविदं। एत्थ पुव्वुत्तअट्ठ-वियप्पजीवपमाणेण दव्वाणिओगद्दारादो अवगएण पुध पुध सव्वजीवे अवहारिय लद्धसलागमेत्तखंडाणि सव्वजीवरासिं करिय तत्थ एगभागपमाणमप्पप्पणो जीवपमाणं होदि त्ति अवहारिय एदे अट्ठ जीवभेदा सव्वजीवाणमणंतिमभागो होदि त्ति णिच्छओ कायव्वो।

देवगदीए देवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८ ॥

देवगदीए पुढविकाइयादिया अण्णे वि जीवा अत्थि, देवा त्ति वयणेण तेसिं पडिसेहो कदो। सेसं सुगमं।

अणंतभागो ॥ ९ ॥

सुगममेदं, अणप्पिदपंचभंगे ओसारिय अप्पिदेकभंगम्मि उप्पादिदणिच्छयादो गहिदगहिदगणिएण पुव्वमेव जणिदप्पसंसकारादो।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा ॥ १० ॥

णवरि अप्पप्पणो जीवाणं पमाणमवहारिय तेण सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धेण सव्वजीवरासिस्स अणंतभागत्तमेदेसिं साहेयव्वं।

इंदियाणुवादेण एइंदिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ११ ॥

सुगमं।

अणंता भागा ॥ १२ ॥

तं जहा— सिद्ध-तसजीवेहि सव्वजीवरासिमवहारिय लद्धसलागमेत्तखंडाणि सव्वजीवरासिं कादूण तत्थ एगभागं मोत्तूण सेस-बहुभागेसु गहिदेसु जेण एइंदियपमाणं होदि तेण सव्वजीवाणमणंताभागा एइंदिया होंति त्ति सुत्ते उत्तं। ॥२२०॥

बादरेइंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १३ ॥

सुगमं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जदिभागो ॥ १४ ॥

तं जहा—अप्पिदबादरएइंदिएहि सव्वजीवरासिमोवट्टिदे असंखेज्जा लोगा आगच्छंति । ते विरलिय सव्वजीवरासिं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे इच्छियबादरेइंदियपमाणं होदि । तम्हि तिण्णि वि बादरेइंदिया सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति परूविदा ।

सुहुमेइंदिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ १६ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियवदिरित्तासेसजीवेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जा लोगा आगच्छंति । ते विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुभागेसु सुहुमेइंदियप्पहुडिउत्तपमाणुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १७ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा भागा ॥ १८ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियपज्जत्तवदिरित्तजीवेहि सव्वजीवरासिमोवट्टिय तत्थुवलद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागे सुहुमेइंदियपज्जत्तपमाणुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १९ ॥

सुगमं ।

संखेज्जदिभागो ॥ २० ॥ ॥ २२१ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्मि भागे हिदे लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवस्सुवरि सुहुमेइंदियअपज्जत्तपमाणत्तदंसणादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ २२ ॥

कुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थुवलद्धस्स अणंतियत्तादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २३ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ २४ ॥

कुदो ? एदेहि असंखेज्जलोगमेत्तपमाणेहि पदरस्स असंखेज्जदिभागेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवाणमुवलंभादो ।

वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ २६ ॥

कुदो ? अप्पिददव्ववदिरित्तसव्वदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहारिय लद्धसलागाओ अणंताओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय रूवं पडि दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुभागेसु समुदिदेसु अप्पिदजीवपमाणदंसणादो ।

बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंखेज्जदिभागो ॥ २८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगपमाणुवलंभादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २९ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा भागा ॥ ३० ॥

कुदो ? अप्पिदव्वदिरित्तदव्वेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थुवलद्धअसंखेज्जलोगमेत्तसलागाओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं मोत्तूण बहुखंडेसु समुदिदेसु अप्पिददव्वपमाणुवलंभादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा भागा ॥ ३२ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वदिरित्तदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहारिय लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागेसु समुदिदेसु अप्पिददव्वपमाणुवलंभादो । सुहुमवणप्फदिकाइए भणिदूण पुणो सुहुमणिगोदजीवे वि पुध भणदि, एदेण णव्वदि जथा सव्वे सुहुमवणप्फदिकाइया चेव सुहुमणिगोदजीवा ण होंति त्ति । जदि एवं तो सव्वे सुहुमवणप्फदिकाइया णिगोदा चेवेत्ति एदेण वयणेण विरुज्झदि त्ति भणिदे ण विरुज्झदे, सुहुमणिगोदा सुहुमवणप्फदिकाइया चेवेत्ति अवहारणाभावादो । के पुण ते अण्णे सुहुमणिगोदा सुहुमवणप्फदिकाइये मोत्तूण ? ण, सुहुमणिगोदेसु व तदाधारेसु वणप्फदिकाइएसु वि सुहुमणिगोदजीवत्तसंभवादो । तदो सुहुमवणप्फदिकाइया चेव सुहुमणिगोदजीवा ण होंति त्ति सिद्धं । सुहुमकम्मोदएण जहा जीवाणं वणप्फदिकाइयादीणं सुहुमत्तं होदि तहा णिगोदणामकम्मोदएण णिगोदत्तं होदि । ण च णिगोदणामकम्मोदओ बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमत्थि जेण तेसिं णिगोदसण्णा होदि त्ति भणिदे—ण, तेसिं पि आहारे आहेओवयारेण णिगोदत्ताविरोहादो । कथमेदं णव्वदे ? णिगोदपदिट्ठिदाणं बादरणिगोदजीवा त्ति णिद्देसादो, बादरवणप्फदिकाइयाणमुवरि 'णिगोदा विसेसाहिया' त्ति भणिदवयणादो च णव्वदे । ॥२२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

संखेज्जदिभागो ॥ ३४ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणमुवलंभादो । एत्थ वि सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तेहिंतो पुव्वं सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं भेदो वत्तव्वो । णिगोदेसु जीवंति णिगोदभावेण वा जीवंति त्ति णिगोदजीवा एवं तत्तो भेदो वत्तव्वो । णिगोदा सव्वे वणप्फदिकाइया चेव ण अण्णे, एदेण अहिप्पाएण काणि वि भागाभागसुत्ताणि ट्ठिदाणि । कुदो ? सुहुमवणप्फदिकाइयभागाभागस्स तिसु वि सुत्तेसु णिगोदजीवणिद्देसाभावादो । तदो तेहि सुत्तेहि एदेसिं सुत्ताणं विरोहो होदि त्ति भणिदे जदि एवं तो उवदेसं लद्धूण इदं सुत्तं इदं चासुत्तमिदि आगमणिउणा भणंतु । ण च अम्हे एत्थ वोत्तुं समत्था, अलद्धोवदेसत्तादो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

अणंतो भागो ॥ ३६ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

कायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३७ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ३८ ॥

कुदो ? अप्पिददव्ववदिरित्तसव्वदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहिरिज्जमाणे लद्धअणंतसलागाओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागेसु समुदिदेसु कायजोगिदव्वपमाणुवलंभादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओरालियकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा भागा ॥ ४० ॥

कुदो ? अणप्पिदसव्वदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणमुवलंभादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४१ ॥

सुगमं

संखेज्जदिभागो ॥ ४२ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणमुवलंभादो ।

कम्मइयकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४३ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जरूवोवलंभादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा अवगदवेदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४५ ॥

सुगमं

अणंतो भागो ॥ ४६ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

णवुंसयवेदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ॥ ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणंता भागा ॥ ४८ ॥

कुदो ? अणप्पिदसव्वदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

चदुब्भागो देसूणा ॥ ५० ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सादिरेयचत्तारिरूवोवलंभादो ।

लोभकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

चदुब्भागो सादिरेगो ॥ ५२ ॥

कुदो ? लोभकसाइदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे किंचूणचत्तारिरूवोवलंभादो ।

अकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

अणंतो भागो ॥ ५४ ॥

कुदो ? अकसाइदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ५६ ॥

कुदो ? अणप्पिदणाणेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभंगणाणी आभिणिबोहियणाणी सुदणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ५८ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ६० ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

असंजदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ६२ ॥

कुदो ? अणप्पिदसव्वसंजदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ६४ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिमवहिरदे अणंतभागोवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अचक्खुदंसणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ६६ ॥

कुदो ? अचक्खुदंसणीहि सव्वरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतिमभागसहिदएगरूवोवलंभादो ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

तिभागो सादिरेगो ॥ ६८ ॥

कुदो ? किण्हलेस्सिएहि सव्वजीवरासिम्मि भागे हिदे किंचूणतिण्णिरूवोवलंभादो ।

णीललेस्सिया काउलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

तिभागो देसूणो ॥ ७० ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सादिरेयतिण्णिरूवोवलंभादो ।

तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ७२ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७३ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणंता भागा ॥ ७४ ॥

कुदो ? भवसिद्धिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतभागसहिदएगरूवोवलंभादो ।

अभवसिद्धिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७५ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ७६ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७७ ॥

सुगमं ।

अणंतो भागो ॥ ७८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

मिच्छाइट्ठी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ७९ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ८० ॥

कुदो ? मिच्छाइट्ठीहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतभागसहिदएगरूवोवलंभादो । ॥२२९॥

सण्णियाणुवादेण सण्णी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ८२ ॥

कुदो ? एदेहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

असण्णी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ८४ ॥

कुदो ? असण्णीहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सगअणंतभागसहिदएगसलागोवलंभादो ।

आहाराणुवादेण आहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा भागा ॥ ८६ ॥

कुदो ? एदेहि फलगुणिदसव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सगअसंखेज्जदिभागसहिदएगसलागोवलंभादो ।

अणाहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८७ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ ८८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जसलागोवलंभादो । एवं भागाभागाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

अप्पाबहुगाणुगमो

अप्पाबहुगाणुगमेण गदियाणुवादेण पंचगदीओ समासेण ॥ १ ॥

अप्पाबहुगणिद्देसो सेसाणिओगद्दारपडिसेहफलो । गदिणिद्देसो सेसमग्गणट्ठाणपडिसेहफलो । गई सामण्णेण एगविहा । सा चेव

सिद्धगई असिद्धगई चेदि दुविहा । अहवा देवगई अदेवगई सिद्धगई चेदि तिविहा । अहवा णिरयगई तिरिक्खगई मणुसगई देवगई चेदि चउव्विहा । अहवा सिद्धगईए सह पंचविहा । एवं गइसमासो अणेयभेयभिण्णो । तत्थ समासेण पंचगदीओ जाओ तत्थ अप्पाबहुगं भणामि त्ति भणिदं होदि ।

सव्वत्थोवा मणुसा ॥ २ ॥

सव्वसद्दो अप्पिदपंचगइजीवावेक्खो । तेसु पंचगइजीवेसु मणुस्सा चेव थोवा त्ति भणिदं होदि । कुदो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण तस्सेव तदियवग्गमूलब्भत्थेण च्छिण्णजगसेडिमेत्तप्पमाणत्तादो ।

णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ ३ ॥

गुणगारो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । कुदो ? मणुसअवहारकालगुणिदणेरइयविक्खंभसूचिपमाणत्तादो । कधमेदस्स आगमो ? पमाणरासिणोवट्टिदफलगुणिदिच्छादो ।

देवा असंखेज्जगुणा ॥ ४ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? णेरइयविक्खंभसूचिगुणिददेवअवहारकालेण भजिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

सिद्धा अणंतगुणा ॥ ५ ॥

कुदो ? देवोवट्टिदसिद्धेसु अणंतसलागोवलंभादो ।

तिरिक्खा अणंतगुणा ॥ ६ ॥

कुदो ? सिद्धेहि ओवट्टिदतिरिक्खेसु जीववग्गमूलादो सिद्धेहिंतो च अणंतगुणसलागोवलंभादो । एदाओ पुण लद्धगुणगारसलागाओ भवसिद्धियाणमणंतभागो । कुदो ? तिरिक्खेसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवपक्खेवे कदे भवसिद्धियरासिपमाणुप्पत्तीदो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अट्ठ गदीओ समासेण ॥ ७ ॥

ताओ चेव गदीओ मणुस्सिणीओ मणुस्सा णेरइया तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ देवा देवीओ सिद्धा त्ति अट्ठ हवंति। तासिमप्पाबहुगं भणामि त्ति वुत्तं होदि ।

सव्वत्थोवा मणुस्सिणीओ ॥ ८ ॥

अट्ठण्हं गईणं मज्झे मणुस्सिणीओ थोवाओ । कुदो ? संखेज्जपमाणत्तादो ।

मणुस्सा असंखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

एत्थ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? मणुस्सअवहारकालगुणिदमणुस्सिणीहि ओवट्टिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ १० ॥

एत्थ गुणगारपमाणं पुव्वं परूविदमिदि ण पुणो वुच्चदे ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ११ ॥

एत्थ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? णेरइयविक्खंभसूचिगुणिदपंचिंदियतिरिक्खजोणिणिअवहारकालोवट्टिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

देवा संखेज्जगुणा ॥ १२ ॥

एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गसंखेज्जरूवाणि । कुदो ? देवअवहारकालेण तेत्तीसरूवगुणिदेण पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकाले भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

॥२३२॥

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ १३ ॥

एत्थ गुणगारो बत्तीसरूवाणि संखेज्जरूवाणि वा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सिद्धा अणंतगुणा ॥ १४ ॥

कुदो ? देवीहि ओवट्टिदसिद्धेहिंतो अणंतरूवोवलंभादो ।

तिरिक्खा अणंतगुणा ॥ १५ ॥

कुदो ? अभवसिद्धिएहि सिद्धेहि जीववग्गमूलादो च अणंतगुणरूवाणं सिद्धेहि भजिदतिरिक्खेसुवलंभादो ।

इंदियाणुवादेण सव्वत्थोवा पंचिंदिया ॥ १६ ॥

कुदो ? पंचण्हमिंदियाणं खओवसमोवलद्धीए सुट्ठु दुल्लभत्तादो ।

चउरिंदिया विसेसाहिया ॥ १७ ॥

कुदो ? पंचण्हमिंदियाणं सामग्गीदो चदुण्हमिंदियाणं सामग्गीए अइसुलभत्तादो । एत्थ विसेसो पदरस्स असंखेज्जदि-भागो । तस्स को पडिभागो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो पडिभागो । पंचिंदियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे विसेसो आगच्छदि । तं पंचिंदिएसु पक्खित्ते चउरिंदिया होंति । एत्तिओ चेव विसेसो होदि त्ति कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदुवदेसादो ।

तीइंदिया विसेसाहिया ॥ १८ ॥

कुदो ? चउण्हमिंदियाणं सामग्गीदो तिण्हमिंदियाणं सामग्गीए अइसुलभत्तादो । एत्थ विसेसो चउरिंदियाणं असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदिया विसेसाहिया ॥ १९ ॥

कुदो ? तिण्हमिंदियाणं सामग्गीदो दोण्हमिंदियाणं सामग्गीए पाएणुवलंभादो । एत्थ विसेसपमाणं तीइंदियाणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणिंदिया अणंतगुणा ॥ २० ॥

कुदो ? अणंतादीदकालसंचिदा होदूण वयवदिरित्तत्तादो । एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? बीइंदियदव्वोवट्टिदअणिंदियप्पमाणत्तादो ।

एइंदिया अणंतगुणा ॥ २१ ॥

कुदो ? एइंदियउवलद्धिकारणाणं बहूणमुवलंभादो । एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? अणिंदिओवट्टिदअणंतभागहीणसव्वजीवरासिपमाणत्तादो । अण्णेण वि पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

सव्वत्थोवा चउरिंदियपज्जत्ता ॥ २२ ॥

कुदो ? विस्ससादो ।

पंचिंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २३ ॥

कारणं पुव्वभणिदं । एत्थ विसेसो चउरिंदियाणं असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २४ ॥

कारणं पुव्वमेव परूविदं । एत्थ विसेसपमाणं पंचिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तीइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २५ ॥

कुदो ? विस्ससादो । एत्थ विसेसपमाणं बीइंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ २६ ॥

कुदो ? पावाहियाणं जीवाणं बहूणं संभवादो । एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कधं णव्वदे ? आइरियपरंपरा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गदअविरुद्धुवदेसादो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण जगपदरे भागे हिदे तीइंदियपज्जत्तपमाणं होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदजगपदरपमाणं पंचिंदियअपज्जत्तदव्वं होदि ।

चउरिंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २७ ॥

कुदो ? पावेण विणट्ठसोइंदियाणं बहूणं संभवादो । एत्थ विसेसपमाणं पंचिंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तीइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २८ ॥

कुदो ? पावभरेण बहुआणं चक्खिदियाभावादो । एत्थ विसेसपमाणं चउरिंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बीइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २९ ॥

कारणं,—पावेण णट्ठघाणिंदियाणं बहुआणं संभवादो । एत्थ विसेसपमाणं तीइंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अणिंदिया अणंतगुणा ॥ ३० ॥

कुदो ? अणंतकालसंचिदा होदूण वयविरहिदत्तादो । एत्थ गुणगारो पुव्वं परूविदो ।

बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा ॥ ३१ ॥

कुदो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागत्तादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥ ॥२३५॥

कुदो ? अपज्जत्तुप्पत्तिपाओग्गअसुहपरिणामाणं बहुत्तादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कधमेदं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदअविरुद्धोवदेसादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरेइंदिया विसेसाहिया ॥ ३३ ॥

केत्तियो विसेसो ? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदिएसु उप्पत्तिणिमित्तपरिणामबाहुल्लियादो । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो एदमवगम्मदे ? गुरूवदेसादो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

कुदो ? मज्झिमपरिणामेसु बहूणं जीवाणं संभवादो । किमट्ठं संखेज्जगुणं ? विस्ससादो ।

सुहुमेइंदिया विसेसाहिया ॥ ३६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तमेत्तो ।

एइंदिया विसेसाहिया ॥ ३७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरेइंदियमेत्तो ।

कायाणुवादेण सव्वत्थोवा तसकाइया ॥ ३८ ॥

कुदो ? तसेसुप्पत्तिपाओग्गपरिणामेसु जीवाणं अदीव तणुत्तादो । ण च सुहपरिणामेसु बहुआ जीवा संभवंति, सुहपरिणामाणं पाएण असंभवादो ।

तेउकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? तसजीवेहि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि ओवट्टिदतेउकाइयपमाणत्तादो ।

पुढविकाइया विसेसाहिया ॥ ४० ॥

एत्थ विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा तेउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आउक्काइया विसेसाहिया ॥ ४१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा पुढविकाइयाणमसंखेज्जदिभागो। तेसिं को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा।

वाउक्काइया विसेसाहिया ॥ ४२ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा आउक्काइयाणमसंखेज्जदिभागो। तेसिं को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ४३ ॥

एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो। कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तवाउक्काइयभजिदअकाइयप्पमाणत्तादो।

वणप्फदिकाइया अणंतगुणा ॥ ४४ ॥

एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो। कुदो ? अकाइएहि भजिदसग-अणंतभागहीणसव्वजीवरासिपमाणादो। अण्णेण पयारेण छण्हं कायाणमप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा तसकाइयपज्जत्ता ॥ ४५ ॥

कुदो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदजगपदरपमाणत्तादो।

तसकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ४६ ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदजगपदरमेत्ता तसकाइयअपज्जत्ता त्ति दव्वाणिओगद्दारे परूविदत्तादो।

तेउक्काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा, तसकाइयअपज्जत्तएहि तेउक्काइयअपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगुवलंभादो। ॥२३७॥

पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४८ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा तेउक्काइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा।

आउक्काइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा पुढविकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

वाउक्काइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५० ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा आउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

तेउक्काइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ५१ ॥

कुदो ? विस्ससादो । एत्थ तप्पाओग्गसंखेज्जरूवाणि गुणगारो ।

पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५२ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा तेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

आउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५३ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा पुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

वाउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५४ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा आउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ५५ ॥

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तवाउकाइयपज्जत्तएहि अकाइएसु ओवट्टिदेसु अणंतरूवोवलंभादो ।

वणप्फदिकाइयअपज्जत्ता अणंतगुणा ॥ ५६ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? अकाइएहि ओवट्टिदकिंचूण-सव्वजीवरासिसंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

वणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ५७ ॥

एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गसंखेज्जसमया ।

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ५८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? वणप्फदिकाइयअपज्जत्तमेत्तो ।

णिगोदा विसेसाहिया ॥ ५९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरबादरणिगोदपदिट्ठिदमेत्तो । अण्णेणेक्केण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा तसकाइया ॥ ६० ॥

कुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

कुदो ? तसकाइएहि बादरतेउकाइएसु ओवट्टिदेसु असंखेज्जलोगुवलंभादो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धछेदणसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदं कुदो वगम्मदे ? गुरूवदेसादो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा असंखेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तस्सद्धछेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६४ ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धछेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तस्सद्धछेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६६ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धछेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बादरवाउकाइयाणं पुण अद्धछेदणयसलागा संपुण्णं सागरोवमं ।

सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६७ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धछेदणयसलागाओ वि असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया ॥ ६८ ॥

एत्थ विसेसपमाणं असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइया विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया ॥ ७० ॥

को विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ७१ ॥

एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

बादरवणप्फदिकाइया अणंतगुणा ॥ ७२ ॥

एत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? गुणगारस्स सव्वजीवरासि-असंखेज्जदिभागत्तादो । ण च अकाइया सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलमेत्ता अत्थि, तस्स पढमवग्गमूलस्स अणंतभागत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमवणप्फदिकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ७३ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सेसं सुगमं ।

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो । अण्णेसु सुत्तेसु सव्वाइरियसंमदेसु एत्थेव अप्पाबहुगसमत्ती होदि, पुणो उवरिमअप्पाबहुगपयारस्स प्रारंभो । एत्थ पुण सुत्तेसु अप्पाबहुगसमत्ती ण होदि ।

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ ७५ ॥

एत्थ चोदगो भणदि—णिप्फलमेदं सुत्तं, वणप्फदिकाइएहिंतो पुधभूदणिगोदाणमणुवलंभादो । ण च वणप्फदिकाइएहिंतो पुधभूदा पुढविकाइयादिसु णिगोदा अत्थि त्ति आइरियाणमुवदेसो जेणेदस्स वयणस्स सुत्तत्तं पसज्जदे इदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे- होदु णाम तुब्भेहि वुत्तस्स सच्चत्तं, बहुएसु सुत्तेसु वणप्फदीणं उवरि णिगोदपदस्स अणुवलंभादो णिगोदाणमुवरि वणप्फदिकाइयाणं पढणस्सुवलंभादो बहुएहि आइरिएहि संमदत्तादो च । किं तु एदं सुत्तमेव ण होदि त्ति णावहारणं काउं जुत्तं । सो एवं भणदि जो चोद्दसपुव्वधरो केवलणाणी वा । ण च वट्टमाणकाले ते अत्थि, ण च तेसिं पासे सोदूणागदा वि संपहि उवलब्भंति । तदो थप्पं काऊण बे वि सुत्ताणि सुत्तासायणभीरूहि आइरिएहि वक्खाणेयव्वाणि त्ति । णिगोदाणमुवरि वणप्फदिकाइया विसेसाहिया होंति बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण, वणप्फदिकाइयाणं उवरि णिगोदा पुण केण विसेसाहिया होंति त्ति भणिदे वुच्चदे । तं जहा—वणप्फदिकाइया त्ति वुत्ते बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदजीवा ण घेत्तव्वा । कुदो ? आधेयादो आधारस्स भेददंसणादो । वणप्फदिणामकम्मोदइल्लत्तणेण सव्वेसिमेगत्तमत्थि त्ति भणिदे होदु तेण एगत्तं, किंतु तमेत्थ अविवक्खियं, आहार-अणाहारत्तं चेव विवक्खियं । तेण वणप्फदिकाइएसु बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदा ण गहिदा । वणप्फदिकाइयाणमुवरि 'णिगोदा विसेसाहिया' त्ति भणिदे बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरेहि बादरणिगोदपदिट्ठिदेहि य विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदाणं कथं णिगोद-ववएसो ? ण, आहारे आहेओवयारादो तेसिं णिगोदत्तसिद्धीदो । वणप्फदिणामकम्मोदइल्लाणं सव्वेसिं वणप्फदिसण्णा सुत्ते दिस्सदि । ॥२४१॥
बादरणिगोदपदिट्ठिदअपदिट्ठिदाणमेत्थ सुत्ते वणप्फदिसण्णा किण्ण णिद्दिट्ठा ? गोदमो एत्थ पुच्छेयव्वो । अम्हेहि गोदमो बादरणिगोद-पदिट्ठिदाणं वणप्फदिसण्णं णेच्छदि त्ति तस्स अहिप्पाओ कहिओ । पुणो अण्णेण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सव्वत्थोवा बादरतेउकाइयपज्जत्ता ॥ ७६ ॥

कुदो ? असंखेज्जपदरावलियपमाणत्तादो ।

तसकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

एत्थ गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? असंखेज्जपदरंगुलेहि ओवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

तसकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७८ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? तसअपज्जत्तअवहारकालेण तसपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७९ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालेण तसकाइयअवहारकाले भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

बादरणिगोदजीवणिद्देसो किमट्ठं कदो, बादरणिगोदपदिट्ठिदा त्ति वत्तव्वं ? ण, बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं णिगोदजीवाधाराणं सयं पत्तेयसरीराणमुवयारबलेण णिगोदजीवसण्णा एत्थ होदु त्ति जाणावणट्ठं कदो । गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदअवहारकालेण बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअवहारकाले भागे हिदे अवलियाए असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

बादरपुढविकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८१ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

बादरआउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८२ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरवाउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

गुणगारो असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिमोवट्टिय सव्वत्थ गुणगारो उप्पाएदव्वो ।

बादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणयं ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८५ ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८६ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरआउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरवाउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८९ ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ९० ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि वि असंखेज्जा लोगा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९२ ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९३ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमतेउकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ९४ ॥

एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गसंखेज्जसमया ।

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९५ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । पडिभागो असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९६ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९७ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ९८ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? सुहुमवाउकाइयपज्जत्तेहि ओवट्टिदअकाइयपमाणत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता अणंतगुणा ॥ ९९ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणहीणेहि अकाइएहि असंखेज्जलोगगुणेहि ओवट्टिदसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १०० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

बादरवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तमेत्तो ।

सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १०२ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १०३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तमेत्तो ।

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो । बादरवणप्फदिकाइएसु बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदा ण अत्थि, तेसिं वणप्फदिकाइयववएसाभावादो । ॥ २४५ ॥

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ १०६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरेहि बादरणिगोदपदिट्ठिदेहि य पज्जत्तमेत्तो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जोगाणुवादेण सव्वत्थोवा मणजोगी ॥ १०७ ॥

कुदो ? देवाणं संखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

वचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १०८ ॥

कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण वचिजोगिअवहारकालेण संखेज्जपदरंगुलमेत्ते मणजोगिअवहारकाले भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

अजोगी अणंतगुणा ॥ १०९ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

कायजोगी अणंतगुणा ॥ ११० ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । अण्णेण पयारेण जोगप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगी ॥ १११ ॥

सुगमं ।

आहारकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११२ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी असंखेज्जगुणा ॥ ११३ ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो ।

सच्चमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११४ ॥

कुदो ? विस्ससादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११५ ॥

कुदो ? सच्चमणजोगअद्धादो मोसमणजोगअद्धाए संखेज्जगुणत्तादो सच्चमणजोगपरिणमणवारेहिंतो मोसमणजोगपरिणमणवाराणं संखेज्जगुणत्तादो वा ।

सच्च-मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११६ ॥

एत्थ पुव्वं व दोहि पयारेहि संखेज्जगुणत्तस्स कारणं वत्तव्वं ।

असच्च-मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११७ ॥

एत्थ वि पुव्विल्लं दुविहकारणं वत्तव्वं ।

मणजोगी विसेसाहिया ॥ ११८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सच्च-मोस-सच्चमोसमणजोगिमेत्तो विसेसो ।

सच्चवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११९ ॥

कारणं ? मणजोगिअद्धादो वचिजोगिअद्धाए संखेज्जगुणत्तादो मणजोगवारेहिंतो सच्चवचिजोगवाराणं संखेज्जगुणत्तादो वा ।

मोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२० ॥

एत्थ वि पुव्वं व दुविहकारणं वत्तव्वं ।

सच्चमोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२१ ॥

एत्थ वि तं चेव कारणं ।

वेउव्वियकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२२ ॥

कुदो ? मण-वचिजोगद्धाहिंतो कायजोगद्धाए संखेज्जगुणत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असच्चमोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२३ ॥

कुदो ? बीइंदियपज्जत्तजीवाणं गहणादो ।

वचिजोगी विसेसाहिया ॥ १२४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सच्च-मोस-सच्चमोसवचिजोगिमेत्तेण ।

अजोगी अणंतगुणा ॥ १२५ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

कम्मइयकायजोगी अणंतगुणा ॥ १२६ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? अंतोमुहुत्तगुणिदअजोगिरासिपमाणेणोवट्टिदसव्वजीवरासिमेत्तत्तादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी असंखेज्जगुणा ॥ १२७ ॥

को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं ।

ओरालियकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

कायजोगी विसेसाहिया ॥ १२९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सेसकायजोगिमेत्तो ।

वेदाणुवादेण सव्वत्थोवा पुरिसवेदा ॥ १३० ॥

कुदो ? संखेज्जपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थिवेदा संखेज्जगुणा ॥ १३१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

अवगदवेदा अणंतगुणा ॥ १३२ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

णवुंसयवेदा अणंतगुणा ॥ १३३ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणो । वेदमग्गणाए अण्णेण पयारेण अप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पयदं । सव्वत्थोवा सण्णिणवुंसयवेदगब्भोवक्कंतिया ॥ १३४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलेहि जगपदरम्मि भागे हिदे सण्णिणवुंसयवेदगब्भोवक्कंतिया जेण होंति तेण थोवा ।

सण्णिपुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १३५ ॥

कुदो ? सण्णीसु गब्भजेसु णवुंसयवेदाणं पाएण संभवाभावादो ।

सण्णिइत्थिवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १३६ ॥

कुदो ? सण्णिगब्भजेसु पुरिसवेदएहिंतो बहुआणं इत्थिवेदयाणमुवलंभादो ।

सण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १३७ ॥

कुदो ? सण्णिगब्भजेहिंतो सण्णिसम्मुच्छिमाणं संखेज्जगुणत्तादो । सम्मुच्छिमेसु इत्थि-पुरिसवेदा णत्थि । कुदो वगम्मदे ? इत्थि-पुरिसवेदाणं सम्मुच्छिमाधियारे अप्पाबहुगपरूवणाभावादो ।

सण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १३८ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो वगम्मदे ? परमगुरूवदेसादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सण्णिइत्थि-पुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया असंखेज्जवासाउआ दो वि तुल्ला असंखेज्जगुणा ॥ १३९ ॥

कधं दोण्हं समाणत्तं ? असंखेज्जवासाउएसु इत्थि-पुरिसजुगलाणं चेव समुप्पत्तीदो । णवुंसयवेदा सम्मुच्छिमा च असण्णिणो च सुविणंतरे वि ण तत्थ संभवंति, अच्चंताभावेण अवहत्थियत्तादो । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो वगम्मदे ? आइरियपरंपरागयउवएसादो । एदम्हादो अइक्कंतरासीणं सव्वेसिं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलाणि जगपदरभागहारो होदि । एत्थ पुण संखेज्जाणि पदरंगुलाणि भागहारो ।

असण्णिणवुंसयवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४० ॥

कुदो ? णोइंदियावरणखओवसमस्स पंचिंदिएसु बहुआणमभावादो ।

असण्णिपुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४१ ॥

सुगममेदं ।

असण्णिइत्थिवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४२ ॥

असंखेज्जवासाउअइत्थि-पुरिसवेदरासिप्पहुडि जाव असण्णिइत्थिवेदगब्भोवक्कंतियरासि त्ति ताव जगपदरभागहारो संखेज्जाणि पदरंगुलाणि । सेसं सुगमं ।

असण्णी णवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १४३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । एत्थ जगपदरभागहारो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो ।

असण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १४४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

कसायाणुवादेण सव्वत्थोवा अकसाई ॥ १४५ ॥

सुगममेदं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

माणकसाई अणंतगुणा ॥ १४६ ॥

गुणगारो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणा। सेसं सुगमं।

कोधकसाई विसेसाहिया ॥ १४७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अणंतो माणकसाईणं असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

मायकसाई विसेसाहिया ॥ १४८ ॥

एत्थ विसेसपमाणं पुव्वं व वत्तव्वं।

लोभकसाई विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

सुगमं।

णाणाणुवादेण सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणी ॥ १५० ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो।

ओहिणाणी असंखेज्जगुणा ॥ १५१ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि। कुदो ? संखेज्जरूवगुणिदआवलियाए असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो।

आभिणिबोहिय-सुदणाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया ॥ १५२ ॥

को विसेसो ? ओहिणाणीणं असंखेज्जदिभागो ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख-मणुससम्माइट्ठिरासी।

विभंगणाणी असंखेज्जगुणा ॥ १५३ ॥ ॥२५१॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ। कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलेहि ओवट्टिदजगपदरपमाणत्तादो।

केवलणाणी अणंतगुणा ॥ १५४ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो ।

मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥ १५५ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? केवलणाणीहि ओवट्टिदे देसूणसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

संजमाणुवादेण सव्वत्थोवा संजदा ॥ १५६ ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? संखेज्जरूवगुणिदअसंखेज्जावलिओवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ॥ १५८ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? असंखेज्जोवट्टिदसिद्धप्पमाणत्तादो ।

असंजदा अणंतगुणा ॥ १५९ ॥

गुणगारो अणंताणि सव्वजीवपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सिद्धोवट्टिददेसूणसव्वजीवरासित्तादो । अण्णेण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा ॥ १६० ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १६१ ॥

गुणगारो संखेज्जसमया ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा ॥ १६२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

संजदा विसेसाहिया ॥ १६४ ॥

सुगमं ।

संजदासंजदा असंखेज्जगुणा ॥ १६५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अणंतगुणा ॥ १६६ ॥

को गुणगारो ? पुव्वं परूविदो ।

असंजदा अणंतगुणा ॥ १६७ ॥

सुगमं । संजमट्ठिदजीवाणमप्पाबहुअं भणिय तिव्व-मंद-मज्झिमभेएण ट्ठिदसंजमस्स अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी ॥ १६८ ॥ ॥२५३॥

एदं सव्वजहण्णं सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमस्स लद्धिट्ठाणं कस्स होदि ? मिच्छत्तं पडिवज्जमाणसंजदस्स चरिमसमए । एदं सव्वजहण्णं पडिवादट्ठाणमादिं कादूण छवड्ढिकमेण असंखेज्जलोगमेत्तेसु सामाइयच्छेदोवट्ठावणलद्धिट्ठाणेसु गदेसु तदो परिहारसुद्धि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजदस्स पडिवादजहण्णलद्धिट्ठाणेण समाणं सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं होदि। तदो दोण्हं संजमाणं ठाणाणि छवड्ढीए णिरंतरमसंखेज्जलोगमेत्ताणि संजमलद्धिट्ठाणाणि गंतूण परिहारसुद्धिसंजमस्स लद्धिट्ठाणमुक्कस्सं होदि। तदो तेसु तत्थेव थक्केसु पुणो उवरि णिरंतरछवड्ढिकमेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणाणि गच्छंति। तदो असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि अंतरिदूण सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमस्स जहण्णं पडिवादलद्धिट्ठाणं होदि। तदो अणंतगुणाए वड्ढीए सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तं गंतूण थक्कंति। किमट्ठमेदाणि अंतोमुहुत्तमेत्ताणि? सगद्धाए पढमादिसमएसु ट्ठिदाणं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं समाणकालाणं विसरिसपरिणामाभावादो। तदो असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूण जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं णिव्वियप्पत्तादो अजहण्णमणुक्कस्समेक्कं चेव होदि। तेसिं संदिट्ठी एसा ७ ७ ७ ७ ७ ७ ० अंतरं। एत्थ उवरिमपंती सामाइयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमाणं, हेट्ठिमा परिहारसुद्धिसंजमस्स ० अंतरं। एसा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणाण पंत्ती। अ। एदं जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमलद्धिट्ठाणं। एत्थ सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमाणं जहण्णचरित्तलद्धिट्ठाणं सव्वसंकिलिट्ठसामाइयछेदोवट्ठावणमिच्छत्ताभिमुहचरिमसमयसंजदस्स वुत्तं। तं संदिट्ठीए पढमसुण्णं ति घेत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १६९ ॥

कुदो? जहण्णचरित्तलद्धिट्ठाणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूणुप्पत्तीए। एसा परिहारसुद्धिसंजमलद्धी जहण्णिया कस्स होदि? सव्वसंकिलिट्ठस्स सामाइयछेदोवट्ठावणाभिमुहचरिमसमयपरिहारसुद्धिसंजदस्स।

तस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७० ॥

कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि गंतूणुप्पत्तीए।

सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदस्स उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७१ ॥

कुदो? तत्तो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि गंतूण सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमस्स उक्कस्सलद्धीए समुप्पत्तीदो। एसा कस्स होदि? चरिमसमयअणियट्टिस्स।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमस्स जहण्णिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७२ ॥

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूणुप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? उवसमसेडीदो ओयरमाणचरिमसमय-सुहुमसांपराइयस्स ।

तस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७३ ॥

कुदो ? अणंतगुणाए सेडीए जहण्णादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूणुप्पत्तीदो । एसा कस्स होदि ? चरिमसमयसुहुमसांपराइयखवगस्स ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदस्स अजहण्णअणुक्कस्सिया चरित्तलद्धी अणंतगुणा ॥ १७४ ॥

कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि अंतरिदूण समुप्पत्तीदो । किमट्ठमेसा लद्धी एयवियप्पा ? कसायाभावेण वड्ढि-हाणिकारणाभावादो । तेणेव कारणेण अजहण्णा अणुक्कस्सा च । एत्थ केण कारणेण संजमलद्धिट्ठाणप्पाबहुअं भणिदं ? वुच्चदे—संजदाणं जीवप्पाबहुगसाहणट्ठमागदं । जस्स संजमस्स लद्धिट्ठाणाणि बहुआणि तत्थ जीवा वि बहुआ चेव, जत्थ थोवाणि तत्थ थोवा चेव होंति त्ति । जदि एवं जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं सव्वत्थोवत्तं पसज्जदे, णिव्वियप्पेगसंजमलद्धिट्ठाणत्तादो ? ण एस दोसो, अद्धमस्सिदूण तेसिं बहुत्तुवदेसादो ।

दंसणाणुवादेण सव्वत्थोवा ओहिदंसणी ॥ १७५ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा ॥ १७६ ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? असंखेज्जपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

केवलदंसणी अणंतगुणा ॥ १७७ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदसिद्धप्पमाणत्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥ १७८ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

लेस्साणुवादेण सव्वत्थोवा सुक्कलेस्सिया ॥ १७९ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो । तं पि कुदो ? सुट्ठु सुभलेस्साणं समवाएण कत्थ वि केसिं पि संभवादो ।

पम्मलेस्सिया असंखेज्जगुणा ॥ १८० ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेडीओ । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदपदरंगुलोवट्टिद-जगपदरप्पमाणत्तादो ।

तेउलेस्सिया संखेज्जगुणा ॥ १८१ ॥

कुदो ? पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागेण पम्मलेस्सियदव्वेण तेउलेस्सियदव्वे भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

अलेस्सिया अणंतगुणा ॥ १८२ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

काउलेस्सिया अणंतगुणा ॥ १८३ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

णीललेस्सिया विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

केत्तियो विसेसो ? अणंतो काउलेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

किण्णलेस्सिया विसेसाहिया ॥ १८५ ॥

केत्तियो विसेसो ? अणंतो णीललेस्सियाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवियाणुवादेण सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया ॥ १८६ ॥

कुदो ? जहण्णजुत्ताणंतप्पमाणत्तादो ।

णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ १८७ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ १८८ ॥

सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण सव्वत्थोवा सम्मामिच्छाइट्ठी ॥ १८९ ॥

सासणसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा त्ति किण्ण परूविदं ? ण, विवरीयाहिणिवेसेण तेसिं समाणत्तं पडुच्च मिच्छाइट्ठीणमंतब्भावादो, भूदपुव्वियं णयं पडुच्च सम्माइट्ठीणमंतब्भावादो वा । सेसं सुगमं ।

सम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९० ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं सुगमं ।

सिद्धा अणंतगुणा ॥ १९१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ॥ १९२ ॥

एदं पि सुगमं । अण्णेण पायारेण सम्मत्तप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वत्थोवा सासणसम्माइट्ठी ॥ १९३ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ॥ १९४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उवसमसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

वेदगसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा ॥ १९७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सम्माइट्ठी विसेसाहिया ॥ १९८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? उवसम - खइयसम्माइट्ठिमेत्तो ।

सिद्धा अणंतगुणा ॥ १९९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ॥ २०० ॥

सुगमं ।

सण्णियाणुवादेण सव्वत्थोवा सण्णी ॥ २०१ ॥

कुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

णेव सण्णी णेव असण्णी अणंतगुणा ॥ २०२ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कारणं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असण्णी अणंतगुणा ॥ २०३ ॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण सव्वत्थोवा अणाहारा अबंधा ॥ २०४ ॥

कुदो ? सिद्धाजोगीणं गहणादो ।

बंधा अणंतगुणा ॥ २०५ ॥

गुणगारो अणंताणि सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलाणि । कुदो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागस्स अणंतभागत्तादो ।

आहारा असंखेज्जगुणा ॥ २०६ ॥

गुणगारो अंतोमुहुत्तं । कुदो ? बंधगअणाहारदव्वेण आहारदव्वे भागे हिदे अंतोमुहुत्तुवलंभादो । एवमप्पाबहुगेत्ति समत्तमणिओगद्दारं ।

महादंडओ

एत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कादव्वो भवदि ॥ १ ॥

समत्तेसु एक्कारसअणियोगद्दारेसु किमट्ठमेसो महादंडओ वोत्तुमाढत्तओ ? वुच्चदे— खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणियोगद्दारणिबद्धस्स चूलियं काऊण महादंडओ वुच्चदे । चूलिया णाम किं ? एक्कारसअणिओगद्दारेसु सूइदत्थस्स विसेसियूण परूवणा चूलिया । जदि एवं तो णेसो महादंडओ चूलिया, अप्पाबहुगणिओगद्दारसूइदत्थं मोत्तूणण्णत्थ वुत्तत्थाणमपरूवणादो त्ति वुत्ते वुच्चदे— ण च एसो णियमो अत्थि सव्वाणिओगद्दारसूइदत्थाणं विसेसपरूविया चेव चूलिया त्ति, किंतु एक्केण दोहि सव्वेहि वा अणिओगद्दारेहि सूइदत्थाणं विसेसपरूवणा चूलिया णाम । तेणेसो महादंडओ चूलिया चेव, अप्पाबहुगसूइदत्थस्स विसेसिऊण परूवणादो । एवं पओजणसुत्तं परूविय पयदत्थपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि— ॥२५९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वत्थोवा मणुसपज्जत्ता गब्भोवक्कंतिया ॥ २ ॥

गब्भजा मणुस्सा पज्जत्ता उवरि वुच्चमाणसव्वरासीओ पेक्खिऊण थोवा होंति । कुदो ? विस्ससादो । एदे केत्तिया गब्भोवक्कंतिया ? मणुस्साणं चदुब्भागो ।

मणुसिणीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३ ॥

को गुणगारो ? तिण्णि रूवाणि । कुदो ? मणुस्सगब्भोवक्कंतियचदुब्भागेण पज्जत्तदव्वेण तस्सेव तिसु चदुब्भागेसु ओवट्टिदेसु तिण्णिरूवोवलंभादो ।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । के वि आइरिया सत्त रूवाणि, के वि पुण चत्तारि रूवाणि, के वि सामण्णेण संखेज्जाणि रूवाणि गुणगारो त्ति भणंति । तेणेत्थ गुणगारे तिण्णि उवएसा । तिण्णं मज्झे एक्को च्चिय जच्चोवएसो, सो वि ण णव्वइ, विसिट्ठोवएसाभावादो । तम्हा तिण्हं पि संगहो कायव्वो ।

बादरतेउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५ ॥

गइमग्गणमुल्लंघिय मग्गणंतरगमणादो असंबद्धमिदं सुत्तं ? ण, अप्पिदमग्गणं मोत्तूण अण्णमग्गणाणमगमणणियमस्स एक्कारसअणिओगद्दारेसु चेव अवट्ठाणादो । एत्थ पुण ण सो णियमो अत्थि, सव्वमग्गणजीवेसु महादंडओ कायव्वो त्ति अब्भुवगमादो । को गुणगारो ? असंखेज्जाओ पदरावलियाओ । कुदो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवेहि बादरतेउपज्जत्तरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणं पदरावलियाणमुवलंभादो ।

अणुत्तरविजय-वैजयंत-जयंत-अवराजितविमाणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ ६ ॥

किमट्ठं देवविसेसणं ? तत्थतणपुढविकाइयादिपडिसेहट्ठं । गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? बादरतेउकाइयपज्जत्तदव्वेण गुणिदतत्थतणअवहारकालेण ओवट्टिदपलिदोवमपमाणत्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणुदिसविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कुदो ? मणुस्सेहिंतो अणुत्तरेसुप्पज्जमाणजीवे पेक्खिदूण तेहिंतो चेव अणुदिसविमाणवासिय देवेसुप्पज्जमाणाणं जीवाणं संखेज्जगुणाणमुवलंभादो, विस्ससादो वा ।

उवरिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं ।

उवरिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।

उवरिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? अप्पपुण्णाणं जीवाणं बहुआणं संभवादो ।

मज्झिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ११ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? अप्पाउआणं जीवाणं बहुआणमुवलंभादो ।

मज्झिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? सव्वत्थ मंदपुण्णजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।

मज्झिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? मंदतवाणं बहुआणमुवलंभादो ।

हेट्ठिमउवरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेट्ठिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

हेट्ठिमहेट्ठिमगेवज्जविमाणवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

आरणच्चुदकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं सुगमं ।

आणद-पाणदकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ १८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ १९ ॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडीपढमवग्गमूलाणि । कुदो ? आणद-पाणदद्व्वेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सेडिबिदियवग्गमूलं गुणेदूण सेडिमोवट्टिदे गुणगारुवलद्धीदो ।

छट्ठीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २० ॥

को गुणगारो ? सेडितदियवग्गमूलं ।

सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २१ ॥

को गुणगारो ? सेडिचउत्थवग्गमूलं ।

सुक्क-महासुक्ककप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २२ ॥

को गुणगारो ? सेडिपंचमवग्गमूलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पंचमपुढविणेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २३ ॥

को गुणगारो ? सेडिछट्ठवग्गमूलं ।

लंतव-काविट्ठकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २४ ॥

को गुणगारो ? सेडिसत्तमवग्गमूलं ।

चउत्थीए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २५ ॥

को गुणगारो ? सेडिअट्ठमवग्गमूलं ।

बम्ह-बम्हुत्तरकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २६ ॥

को गुणगारो ? सेडिनवमवग्गमूलं ।

तदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ २७ ॥

को गुणगारो ? सेडिदसमवग्गमूलं ।

माहिंदकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ २८ ॥

को गुणगारो ? सेडिएक्कारसवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो । सणक्कुमार-माहिंददव्वमेगट्ठं करिय किण्ण परूविदं ? ण, जहा पुव्विल्लाणं दोण्हं दोण्हं कप्पाणमेको चिय सामी होदि, तथा एत्थ दोण्हं कप्पाणमेक्को चेव सामी ण होदि त्ति जाणावणट्ठं पुध णिद्देसादो ।

सणक्कुमारकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ २९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कुदो ? उत्तरदिसं मोत्तूण सेसासु तीसु दिसासु ट्ठिदसेडीबद्ध-पइण्णयसण्णिदविमाणेसु सव्विंदएसु च णिवसंतदेवाणं गहणादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विदियाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ ३० ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलं सुवसंखेज्जदिभागब्भहियं ।

मणुसा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ३१ ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? मणुसअपज्जत्तअवहारकालो पडिभागो ।

ईसाणकप्पवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

को गुणगारो ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागो ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । के वि आइरिया बत्तीस रूवाणि त्ति भणंति ।

सोधम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया, बत्तीस रूवाणि वा ।

पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

को गुणगारो ? सगसंखेज्जदिभागब्भहियघणंगुलतदियवग्गमूलं ।

भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

को गुणगारो ? घणंगुलबिदियवग्गमूलस्स संखेज्जदिभागो ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ३९ ॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियविक्खंभसूचीए संखेज्जेहि भागेहि गुणिदपंचिंदियतिरिक्खजोणिणिअवहारकालो पडिभागो ।

वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एदम्हादो सुत्तादो जीवट्ठाणदव्ववक्खाणं ण घडदि त्ति णव्वदे ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ४१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

जोदिसियदेवा संखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? जोदिसियअवहारकालेण भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ४३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया बत्तीसरूवाणि वा ।

चउरिंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ४४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जसमया । कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालेण जोदिसियदेवीणमवहारकालभूदसंखेज्जपदरंगुलेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो ।

पंचिंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४५ ॥

केत्तियो विसेसो ? चउरिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४६ ॥

केत्तिओ विसेसो ? पंचिंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४७ ॥

केत्तिओ विसेसो ? बीइंदियपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ४८ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पंचिंदियअपज्जत्तअवहारकालेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ततेइंदियपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

चउरिंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? पंचिंदियअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५० ॥

केत्तिओ विसेसो ? चउरिंदियअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५१ ॥

केत्तिओ विसेसो ? तेइंदियअपज्जत्तअसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवट्टिदपदरंगुलेण बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालेण बेइंदियअपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? हेट्ठिमदव्वस्स अवहारकाले उवरिमदव्वस्स अवहारकालेण भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बादरपुढविपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

बादरआउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५५ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

बादरवाउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

बादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५७ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धछेदणाणि सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणयं ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५८ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धछेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरआउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादरवाउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिमद्धछेदणाणि असंखेज्जा लोगा । कधं णव्वदे ? गुरूवदेसादो ।

सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६४ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६५ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६६ ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयअपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमतेउकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ६७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६८ ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ७० ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । सेसं सुगमं ।

बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता अणंतगुणा ॥ ७२ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिदअकाइएहि ओवट्टिदसव्वजीवपमाणत्तादो ।

बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७३ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

बादरवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७४ ॥

केत्तियो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तमेत्तो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७५ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवणप्फदिकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ७६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७७ ॥

केत्तिओ विसेसो ? सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तमेत्तो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो।

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ ७९ ॥

केत्तिओ विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरबादरणिगोदपदिट्ठिदमेत्तो। एवं सव्वजीवेसु महादंडओ समत्तो। एवं खुद्दाबंधो समत्तो।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां खुद्दाबंधनामा द्वितीयः खण्डः समाप्तः।

इति क्षुद्रबन्धः समाप्तः।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ इति द्वितीयः खण्डः क्षुद्रबंधः समाप्तः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टः, श्री १०८ भगवत्पुष्पदन्तभूतवलिप्रणीतः, श्री १०८ वीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकासमन्वितः,—

षट्खण्डागमः ।

(तस्यायं तृतीयः खण्डः)

बंधस्वामित्वविचयः

साहूवज्झाइरिए अरहंते वंदिऊण सिद्धे वि । जे पंच लोगवाले वोच्छं बंधस्स सामित्तं ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिद्देसो, ओघेण अदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्ठमिदं सुत्तं वुच्चदे ? सबंधाभिहेयपओजणपदुप्पायणट्ठं । जो सो बंधसामित्तविचओ णामेत्ति एदेण संबंधो कहिदो । तं-जहा—कदि-वेदणादिचदुवीसअणिओगद्दारेसु तत्थ बंधणमिदि छट्ठमणिओगद्दारं । तं चउव्विहं—बंधो, बंधगा, बंधणिज्जं, बंधविहाणमिदि । तत्थ बंधो णाम जीवस्स कम्माणं च संबंधं णयमस्सिदूण परूवेदि । बंधगो त्ति अहियारो एक्कारसअणिओगद्दारेहि बंधगे परूवेदि । बंधणिज्जं णाम अहियारो तेवीसवग्गणाहि बंधजोग्गमबंधजोग्गं च पोग्गलदव्वं परूवेदि । जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसबंधो चेदि । तत्थ पयडिबंधो दुविहो मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि । जो सो मूलपयडिबंधो सो दुविहो एगेगमूलपयडिबंधो अव्वोगाढमूलपयडिबंधो चेदि । जो सो अव्वोगाढमूलपयडिबंधो सो दुविहो भुजगारबंधो पयडिट्ठाणबंधो चेदि । तत्थ उत्तरपयडिबंधस्स समुक्कित्तणाओ चदुवीसअणिओगद्दाराणि भवंति । तेसु चदुवीसअणिओगद्दारेसु बंधसामित्तं णाम अणिओगद्दारं । तस्सेव बंधसामित्तविचओ त्ति सण्णा । जो सो बंधसामित्तविचओ बंधण-बंधविहाणप्पसिद्धो पवाहसरूवेण अणाइ- ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिहणो जो सो त्ति वयणेण जेण सो संभालिदो तेण एसो णिद्देसो संबंधपरूवओ। एसो चेव अभिहेयपरूओ वि। तं जहा— जीव-कम्माणं मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहि एयत्तपरिणामो बंधो। उत्तं च— "बंधेण य संजोगो पोग्गलदव्वेण होइ जीवस्स। बंधो पुण विण्णेओ बंधविओओ पमोक्खोदु ॥ १॥" एदस्स बंधस्स सामित्तं बंधसामित्तं, तस्स विचओ बंधसामित्तविचओ, विचओ विचारणा मीमांसा परिक्खा इदि एयट्ठो। तस्स बंधसामित्तविचयस्स इमो दुविहो णिद्देसो त्ति। जेणेदं सुत्तं देसामासियं तेणेत्थ पओजणं पि परूवेदव्वं। किट्ठमेत्थ बंधस्स सामित्तं वुच्चदे? संत-दव्व-खेत्त-पोसण-कालंतर-भावप्पाबहुव-गइरागइबंधगत्तेण अवगयाणं चोद्दस-गुणट्ठाणाणं अणवगदे बंधविसेसे बंधगत्तं बंधकारणगइरागईओ च सम्मं ण णव्वंति त्ति काउण चोद्दसगुणट्ठाणाणि अहिकिच्च अप्पाउआण-मणुग्गहट्ठं बंधविसेसो वुच्चदे। तस्स णिद्देसो दुविहो, ओघादेसभेएण। तिविहो किण्ण होदि? ण, वयणपओगो हि णाम परट्ठो। ण च परो वि दुणयवदिरित्तो अत्थि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होज्ज त्ति। ओघणिद्देसो दव्वट्ठियणयाणुग्गहकरो, इयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स।

ओघेण बंधसामित्तविचयस्स चोद्दसजीवसमासाणि णादव्वाणि भवंति ॥ २ ॥

जहा उद्देसो तहा णिद्देसो त्ति जाणावणट्ठमोघेणेत्ति उत्तं। बंधसामित्तविचयस्सेत्ति संबंधे छट्ठी दट्ठव्वा। अथवा बंधसामित्तविचए इदि विसयलक्खणसत्तमीए छट्ठीणिद्देसो कायव्वो। पुव्वमवगया चेव चोद्दसजीवसमासा पुणो ते एत्थ किमट्ठं परूविज्जंते? ण एस दोसो, विस्सरणालुअसिस्ससंभालणट्ठत्तादो।

मिच्छाइट्ठी-सासणसम्माइट्ठी-सम्मामिच्छाइट्ठी-असंजदसम्माइट्ठी-संजदासंजदा-पमत्तसंजदा-अप्पमत्तसंजदा-अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा-खवा-अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा-खवा-सुहुमसांपराइयपइट्ठउवसमा-खवा-उवसंतकसायवीयरायछदुमत्था-खीणकसायवीयरायछदुमत्था-सजोगिकेवली-अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जहा जीवट्ठाणे वित्थरेण परूविदो तहा एत्थ परूवेदव्वो, विसेसाभावादो। एवं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं सरूवं संभालिय बंधसामित्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

एदेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो कादव्वो भवदि ॥ ४ ॥ ॥ २ ॥

जदि जीवसमासाणं पयडिबंधवोच्छेदो चेव उच्चदि तो एदस्स गंथस्स बंधसामित्तविचयसण्णा कथं णव्वदे? कथं घडदे?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ण एस दोसो, एदम्मि गुणट्ठाणे एदासिं पयडीणं बंधवोच्छेदो होदि त्ति कहिदे हेट्ठिल्लगुणट्ठाणाणि तासिं पयडीणं बंधसामियाणि त्ति सिद्धीदो। किं च वोच्छेदो दुविहो–उप्पादाणुच्छेदो अणुप्पादाणुच्छेदो चेदि। उत्पादः सत्वं, अनुच्छेदो विनाशः अभावः नीरूपिता इति यावत्। उत्पाद एव अनुच्छेदः उत्पादानुच्छेदः, भाव एव अभाव इति यावत्। एसो दव्वट्ठियणयववहारो। ण च एसो एयंतेण चप्पलओ, उत्तरकाले अप्पिदपज्जायस्स विणासेण विसिट्ठदव्वस्स पुव्विल्लकाले वि उवलंभादो। दव्वट्ठियणयम्मि संताणं पज्जायाणं कथमभावो? को भणदि तेसिं तत्थाभावो त्ति; किंतु ते तत्थ अप्पहाणा अविवक्खिया अणप्पिया इदि तेसिं दव्वत्तमेव, ण तत्थ पज्जायत्तं। कथमत्थियवसेणादव्वाणं पज्जयाणं दव्वत्तं? ण, दव्वदो एयंतेण तेसिं पुधभूदाणमणुवलंभादो, दव्वसहावाणं चेवुवलंभा। जदि एवं तो भावस्स दुचरिमादिसु समएसु चरिमसमए इव अभावव्ववहारो किण्ण कीरदे? ण एस दोसो, दुचरिमादीणं चरिमसमयस्सेव अभावेण सह पच्चासत्तीए अभावादो। दव्वट्ठियस्स कथमभावव्ववहारो? ण एस दोसो, यदस्ति न तद्द्वयमतिलङ्घ्य वर्तत इति दो वि णए अवलंबिऊण ट्ठिदणेगमणयस्स भावाभावव्ववहारविरोहाभावादो। अनुत्पादः असत्त्वं, अनुच्छेदो विनाशः, अनुत्पाद एव अनुच्छेदः (अनुत्पादानुच्छेदः) असतः अभाव इति यावत्, सतः असत्त्वविरोधात्। एसो पज्जवट्ठियणयव्ववहारो। एत्थ पुण उप्पादाणुच्छेदमस्सिदूण जेण सुत्तकारेण अभावव्ववहारो कदो तेण भावो चेव पयडिबंधस्स परूविदो। तेणेदस्स गंधस्स बंधसामित्तविचयसण्णा घडदि त्ति।

पंचण्हं णाणावरणीयाणं चदुण्हं दंसणावरणीयाणं जसकित्ति-उच्चागोद-पंचण्हमंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ५ ॥

बंधो बंधगो त्ति भणिदं होदि। पयडिसमुक्कित्तणाए णाणावरणादीणं सरूवं परूविदमिदि णेह परूविज्जदे, पउणरुत्तियादो। को बंधो को अबंधओ त्ति णिद्देसादो एदं पुच्छासुत्तमासंकियसुत्तं वा। किं मिच्छाइट्ठी बंधओ, किं सासणसम्माइट्ठी, किं सम्मामिच्छाइट्ठी, किं असंजदसम्माइट्ठी; एवं गंतूण किमजोगी बंधओ, सिद्धो किं बंधओ त्ति तेणेवं पुच्छा कायव्वा। एदं देसामासियसुत्तं। किं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि, किं दो वि समं वोच्छिज्जंति; किं सोदएण एदासिं बंधो, किं परोदएण, किं सपरोदएण; किं सांतरो बंधो, किं णिरंतरो, किं सांतरणिरंतरो; किं सपच्चओ, किमपच्चओ; किं गइसंजुत्तो, किमगइसंजुत्तो; कदिगदिया सामिणो असामिणो; किं वा बंधद्धाणं, किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि, किं पढमसमए, किमपढमअचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि; किं सादिगो बंधो, किमणादिओ; किं धुवो, किमद्धुवो त्ति तेणेदाओ तेवीसपुच्छाओ पुव्विल्लपुच्छाए अंतब्भूदाओ त्ति दट्ठव्वाओ। एत्थुवउज्जंतीओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

आरिसगाहाओ—बंधो बंधविही पुण सामित्तद्धाण पच्चयविही य। एदे पंचणिओगा मग्गणठाणेसु मग्गेज्जा ॥ २ ॥ बंधोदय पुव्वं वा समं व णियएण कस्स व परेण। अण्णदरस्सुदएण व सांतर-णिरंतरं का च ॥ ३ ॥ पच्चयसामित्तविही संजुत्तद्धाणएण तह चेय। सामित्तं णेयव्वं पयडीणं ठाणमासेज्ज ॥ ४ ॥ बंधोदय पुव्वं वा समं व स-परोदए तदुभएण। सांतर-णिरंतरं वा चरिमेदर सादि आदीया ॥ ५ ॥ एत्थ एदासु पुच्छासु विसमपुच्छाणमत्थो वुच्चदे। तं जहा—बंधवोच्छेदो एत्थेव सुत्तसिद्धो त्ति तं मोत्तूण पयडीण-मुदयवोच्छेदं ताव वत्तइस्सामो। मिच्छत्त-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदियं-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं दसण्हं पयडीणं मिच्छाइट्ठिस्स चरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। एसो महाकम्मपयडिपाहुडउवएसो। णमिऊणकत्ताराणमुवएसेण पंचण्णं पयडीणमुदयवोच्छेदो। चदुजादि-थावराणं सासणसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदब्भुवगमादो। अणंताणुबंधिकोह-माण-माया-लोहाणं सासणसम्माइट्ठिचरिमसमए उदयवोच्छेदो। सम्मामिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो। अपच्चक्खाणावरण कोह-माण-माया-लोह-णिरयाउ-देवाउ-णिरयगइ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-चत्तारि आणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्तीणं सत्तारसण्णमेदासिं पयडीणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो। पच्चक्खाणावरणकोह-माण-माया-लोह-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणमट्ठण्णं पयडीणं संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेदो। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-आहारसरीरदुगाणं पंचण्णं पयडीणं पमत्तसंजदम्मि उदयवोच्छेदो। अद्धणारायण-खीलिय-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-वेदगसम्मत्ताणं चदुण्हं अप्पमत्तसंजदम्मि उदयवोच्छेदो। हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं छण्णं पयडीणमपुव्वकरणम्मि उदयवोच्छेदो। इत्थि-णवुंसय-पुरिसवेदो-कोह-माण-मायासंजलणाणं छण्णं पयडीणमणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदो। लोभसंजलणस्स एक्कस्स चेव सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। वज्जणारायण-णारायणसंघडणाणं दोण्णं पयडीणं उवसंतकसायम्मि उदयवोच्छेदो। णिद्दा-पयलाणं दोण्हं पि खीणकसायदुचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं चोद्दसण्णं पयडीणं खीणकसायचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो। ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-दोविहायगदि-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुस्सर-दुस्सर-णिमिणणामेगुणतीसपयडीणं सजोगिकेवलिम्हि उदयवोच्छेदो। दोवेदणीय-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयर-उच्चागोदाणं तेरसण्हं पयडीणमजोगिकेवलिम्हि उदयवोच्छेदो। एत्थ उवसंहारगाहा—दसचदुरिगिसत्तारस अट्ठ य तह पंच चेव चउरो य। छच्छक्कएगदुगदुग चोद्दस उगुतीसतेरसुदयविही ॥ ६ ॥ एवमुदयवोच्छेदं परूविय कासिं पयडीणं बंधो उदये फिट्टेवि होदि, कासिं पयडीणं बंधे फिट्टे वि उदओ होदि, कासिं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति त्ति वुच्चदे। तं जहा—देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देव-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गइपाओग्गाणुपुव्वि-आहारदुग-अजसकित्तीणमट्ठण्णं पयडीणं पढममुदओ वोच्छिज्जदि, पच्छा बंधो। एत्थ उवसंहारगाहा— देवाऊदेवचउक्काहारदुअं च अजसमट्ठण्णं। पढममुदओ विणस्सदि पच्छा बंधो मुणेयव्वो ॥ ७ ॥ मिच्छत्त–अणंताणुबंधिचउक्क–अपच्चक्खाणावरणचउक्क–पच्चक्खाणावरणचउक्क– तिण्णिसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं एक्कत्तीसपयडीणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति। एत्थ उवसंहारगाहाओ— मिच्छत्तभयदुगुंछा हस्सरईपुरिसथावरादावा। सुहुमं जाइचउक्कं साहारणयं अपज्जत्तं ॥ ८ ॥ पण्णरसकसाया विणु लोहणेक्केण आणुपुव्वी य। मणुसाणं एदासिं समगं बंधोदओ च्छेदो ॥ ९ ॥ पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-दोवेयणीय-लोहसंजलण-इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोग-णिरयाउ-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-छसंघडण-वण्णचउक्क-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअचउक्क-उज्जोव-दो विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणमेगासीदिपयडीणं पढमं बंधो वोच्छिज्जदि, पच्छा उदओ। एत्थ उवसंहारगाहा— पुव्वुत्तवसेसाओ एगासीदी हवंति पयडीओ। ताणं बंधुच्छेदो पुव्वं पच्छोदओच्छेदो ॥ १० ॥ सेसाणं जहावसरमत्थं भणिस्सामो।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा– मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयखवगा त्ति एदेण वयणेण अद्धाणं जाणाविदं। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा त्ति एदेण बंधस्स सामित्तं जाणाविदं। सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि त्ति एदेण वि किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि त्ति पुच्छाए पढम(-अपढम-)अचरिमपडिसेहमुहेण पडिउत्तरो दिण्णो। अवसेसाणं पुच्छाणं ण परिच्छेओ कदो। तेणेदं देसामासियसुत्तं। तम्हा एत्थ लीणत्थाणं परूवणं कस्सामो। तं जहा– किं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि, किं दोवि समं वोच्छिज्जंति। एदासिं तिण्हं पुच्छाणं वुत्तरो वुच्चदे— एदासिं सोलसण्हं पयडीणं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि सुहुमसांपराइयचरिमसमए, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि; पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं खीणकसायचरिमसमए, जसकित्ति-उच्चागोदाणमजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेददंसणादो। किं सोदएण, किं परोदएण, किं सोदयपरोदएण एदासिं बंधो त्ति पुच्छमस्सिदूण वुच्चदे। एत्थ ताव एदेण संबंधेण सोदएण परोदएण सोदय-परोदएण बज्झमाणपयडिपरूवणं कस्सामो। तं जहा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिरयाउ - देवाउ - णिरयगइ - देवगइ - वेउव्वियसरीर - आहारसरीर - वेउव्वियआहारसरीरंगोवंग - णिरयगइदेवगइपाओग्गाणुपुव्वि - तित्थयरमिदि एदाओ एक्कारसपयडीओ परोदएणेव बज्झंति । एत्थ उवसंहारगाहा— तित्थयर-णिरय- देवाउअं च वेउव्वियछक्कं - दो वि आहारा । एक्कारसपयडीणं बंधो हु परोदए वुत्तो ॥ ११ ॥ पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयमिदि एदाओ सत्तवीसपयडीओ सोदएण बज्झंति । पंचदंसणावरणीय - दो वेदणीय - सोलसकसाय-णवणोकसाय - तिरिक्खाउ - मणुस्साउ - तिरिक्खगइ - मणुसगइ - एइंदिय - वीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - ओरालियसरीर-छसंठाण ओरालियसरीरंगोवंग - छसंघडण - तिरिक्खगइ - मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वि - उवघाद - परघाद - उस्सास - आदाव - उज्जोव - दो विहायगदि - तस - थावर - बादर - सुहुम - पज्जत्त - अपज्जत्त - पत्तेय - साधारण सरीर - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचुच्चागोदमिदि एदाओ वासीदिपयडीओ सोदय-परोदएण बज्झंति । एत्थ उवसंहारगाहाओ— णाणंतराय-दंसण-थिरादि-चउ - तेजकम्मदेहाइं । णिमिणं अगुरुअलहुअं वण्णचउक्कं च मिच्छत्तं ॥ १२ ॥ सत्तावीसेदाओ बज्झंति हु सोदएण पयडीओ । सोदय - परोदएण वि बज्झंतवसेसियाओ दु ॥ १३ ॥ एत्थ णाणावरणंतराइयदसपयडीओ दंसणावरणस्स चत्तारि पयडीओ च बंधमाणाणि सव्वगुणट्ठाणाणि सोदएण चेव बंधंति, मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाया त्ति एदासिं णिरंतरोदयादो । सोदएण बज्झमाणपयडीणमब्भंतरे पादादो वा । जसकित्तिं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदएण वि परोदएण वि बंधंति, एदेसु दोण्णं एक्कदरस्सुदयत्तादो । उवरिमा सोदएण चेव बंधंति, संजदासंजदप्पहुडि उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु अजसकित्तिउदयाभावादो । उच्चागोदं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति एदे सोदएण परोदएण वि बज्झंति, एत्थ दोण्णं गोदाणमुदयसंभवादो । उवरिमा पुण सोदएण चेव बंधंति, तत्थ णीचागोदस्सुदयाभावादो । तम्हा जसकित्ति - उच्चागोदाणि सोदय - परोदयबंधा इति सिद्धं । एदासिं बंधो किं सांतरो, किं णिरंतरो, किं सांतर - णिरंतरो त्ति एदासिं पुच्छाणं पडिवयणं वुच्चदे । एत्थ एदेण अत्थसंबंधेण ताव सांतर - णिरंतर - सांतरणिरंतरेण बज्झमाणपयडीओ जाणावेमो । तं जहा— पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - आउचउक्क - आहार - तेजा - कम्मइयसरीर - आहारसरीरंगोवंग-वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - तित्थयर - पंचंतराइयमिदि एदाओ चउवण्णपयडीओ णिरंतरं बज्झंति । एत्थ उवसंहारगाहा— सत्तेताल धुवाओ तित्थयराहार - आउचत्तारि । चउवण्णं पयडीओ बज्झंति णिरंतरं सव्वा ॥ १४ ॥ काओ धुवबंधियपयडीओ ? एदाओ चेव आउचउक्कतित्थयराहारदुगविरहिदाओ । एदासिं परूवणगाहाओ - णाणंतरायदसयं दंसणणव - मिच्छ - सोलसकसाया । भयकम्म दुगुंछा वि य तेजाकम्मं च वण्णचदु ॥ १५ ॥ अगुरुअलहु - उवघादं णिमिणं णामं च होंति सगदालं । बंधो चउव्वियप्पो धुव - बंधीणं पयडिबंधो ॥ १६ ॥ णिरंतरबंधस्स धुवबंधस्स को विसेसो ? जिस्से पयडीए पच्चओ जत्थ कत्थ वि जीवे अणादिधुवभावेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लब्भइ सा धुवबंधपयडी। जिस्से पयडीए पच्चओ णियमेण सादि-अद्धुओ अंतोमुहुत्तादिकालावट्ठाई सा णिरंतरबंधपयडी। जिस्से पयडीए अद्धाक्खएण बंधवोच्छेदो संभवइ सा सांतरबंधपयडी। असादावेदणीय-इत्थि-णवुंसयवेद-अरइ-सोग-णिरयगई-जाइचउक्क-हेट्ठिमपंच-संठाण-पंचसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदावुज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ती एदाओ चोत्तीसपयडीओ सांतरं बज्झंति। अवसेसाओ बत्तीसपयडीओ सांतर-णिरंतरं बज्झंति। तासिं णामणिद्देसो कीरदे। तं जहा— सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-सरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइपाओ-ग्गाणुपुव्वि-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णीचुच्चागोदमिदि सांतर-णिरंतरेण बज्झमाणपयडीओ। एत्थ उवसंहारगाहाओ— इत्थि-णवुंसयवेदा जाइचउक्कं असाद-णिरयदुगं। आदावुज्जोवारइ सोगासुहपंचसंठाणा ॥ १७ ॥ पंचासुहसंघडणा विहायगइ-अप्पसत्थिया अण्णे। थावर-सुहुमासुहदस चोत्तीसिह सांतरा बंधा ॥ १८ ॥ सांतर-णिरंतरेण य बत्तीसवसेसियाओ पयडीओ। बज्झंति पच्चयाणं दुपयाराणं वसगयाओ ॥१९॥ एत्थ पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयपयडीओ णिरंतरं बज्झंति, धुवबंधित्तादो। जसकित्ती सांतर-णिरंतरं बज्झदि। कुदो? मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतरणिरंतरं बज्झइ, पडिवक्खअजसकित्तीए बंधसंभवादो। उवरि णिरंतरं बज्झइ जसकित्ती, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो। तेण जसकित्ती बंधेण सांतरणिरंतरा। उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सांतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीए तत्थ बंधसंभवादो। उवरिमा पुण णिरंतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीए तत्थ बंधाभावादो। भोगभूमीसु पुण सव्वगुणट्ठाणजीवा उच्चागोदं चेव णिरंतरं बंधंति, तत्थ पज्जत्तकाले देवगइं मोत्तूण अण्णगईणं बंधाभावादो। तेण उच्चागोदं पि बंधेण सांतर-णिरंतरं। एदासिं पयडीणं किं सपच्चओ बंधो, किमपच्चओत्ति पुच्छिदे वुच्चदे-सपच्चगो बंधो, ण णिक्कारणो। एत्थ ताव पच्चयपरूवणा कीरदे। तं जहा— मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगा इदि एदे चत्तारि मूलपच्चया। संपदि उत्तरपच्चयपरूवणं कस्सामो मिच्छाइट्ठिआदिगुणट्ठाणेसु ढोएदूण। मिच्छत्तं पंचविहं एयंतण्णाण-विवरीय-वेणइय संसइयमिच्छत्त मिदि। तत्थ अत्थि चेव, णत्थि चेव; एगमेव, अणेगमेव; सावयवं चेव, णिरवयवं चेव; णिच्चमेव, अणिच्चमेव; इच्चाइओ एयंताहिणिवेसो एयंत-मिच्छत्तं। विचारिज्जमाणे जीवाजीवादिपयत्था ण संति णिच्चाणिच्चवियप्पेहि, तदो सव्वमण्णाणमेव, णाणं णत्थि त्ति अहिणिवेसो अण्णाण-मिच्छत्तं। हिंसालियवयण-स्तेय-मेहुण-परिग्गह-राग-दोस-मोहण्णाणेहि चेव णिव्वुई होइ त्ति अहिणिवेसो विवरीयमिच्छत्तं। अइहिय-पारत्तियसुहाइं सव्वाइं पि विणयादो चेव, ण णाण-दंसण-तवोववासकिलेसेहिंतो त्ति अहिणिवेसो वेणइयमिच्छत्तं। सव्वत्थ संदेहो चेव, णिच्छओ णत्थि त्ति अहिणिवेसो संसयमिच्छत्तं। एवं मिच्छत्तपच्चया पंच ५। असंजमपच्चओ दुविहो— इंदियासंजम-पाणासंजमभेएण। तत्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इंदियासंजमो छव्विहो—परिस-रस-रूव-गंध-सद्द-णोइंदियासंजमभेएण। पाणासंजमो वि छव्विहो पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फदि-तसासंजमभेएण। असंजमसव्वसमासो बारस १२। कसायपच्चओ पंचवीसविहो—सोलसकसाय-णवणोकसायभेएण। कसायपच्चयसमासो एसो २५। जोगपच्चओ तिविहो—मण-वचि-कायजोगभेएण। सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेएण चउव्विहो मणजोगो। वचिजोगो वि चउव्विहो सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेएण। कायजोगो सत्तविहो-ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-आहार-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगभेएण। एदेसिं सव्वसमासो पण्णारस १५। सव्वपच्चयसमासो सत्तावण्ण ५७। एत्थ आहारदुगमवणिदे मिच्छाइट्ठिपडिवद्धपच्चया पंचवंचास होंति ५५। एदेहि पच्चएहि मिच्छादिट्ठी सुत्तुत्तसोलसपयडीओ बंधदि। एत्थ पंचमिच्छत्तपच्चएसु अवणिदेसु पंचासपच्चया होंति ५०। एदेहि पच्चएहि सासणसम्माइट्ठी सुत्तुत्तसोलसपयडीओ बंधदि। पंचासपच्चएसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-अणंताणुबंधिचउक्केसु अवणिदेसु तेदालपच्चया होंति ४३। एदेहि पच्चएहि सम्मामिच्छाइट्ठी सोलसपयडीओ बंधदि। तेदालपच्चएसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चएसु पक्खित्तेसु छादालं पच्चया ४६। एदेहि पच्चएहि असंजदसम्माइट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि। एदेसु असंजदसम्माइट्ठिपच्चएसु अपच्चक्खाणचउक्क-ओरालियमिस्स-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-तसासंजमेसु अवणिदेसु सत्ततीसपच्चया होंति ३७। एदेहि पच्चयेहि संजदासंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि। एदेसु संजदासंजदस्स सत्ततीसपच्चएसु पच्चक्खाणचउक्क-एक्कारसअसंजमपच्चएसु अवणिदेसु अवसेसा बावीस, तत्थ आहारदुगे पक्खित्ते चउवीसपच्चया होंति २४। एदेहि पच्चएहि पमत्तसंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि। एदेसु चउवीसपच्चएसु आहारदुगमवणिदे बावीसपच्चया होंति २२। एदेहि पच्चएहि अप्पमत्तसंजदो अपुव्वकरणपइट्ठ उवसमा खवा च अप्पिदसोलसपयडीओ बंधंति। एदेसु चेव छण्णोकसाएसु अवणिदेसु सोलस होंति १६। एदेहि पच्चएहि पढमअणियट्टी सोलसपयडीओ बंधदि। एत्थ णउंसयवेदे अवणिदे पण्णारस होंति १५। एदेहि पच्चएहि विदियअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। एदेसु इत्थिवेदे अवणिदे चोद्दस होंति १४। एदेहि पच्चएहि तदियअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। एत्थ पुरिसवेदे अवणिदे तेरह होंति १३। एदेहि पच्चएहि चउत्थअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। पुणो एत्थ कोधसंजलणे अवणिदे बारस होंति १२। एदेहि बारसपच्चएहि पंचमअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। पुणो एत्थ माणसंजलणे अवणिदे एक्कारस होंति ११। एदेहि पच्चएहि छट्ठअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। एदेहिंतो मायासंजलणे अवणिदे दस होंति १०। एदेहि पच्चएहि सत्तमअणियट्टी अप्पिदपयडीओ बंधदि। एदेहि चेव दसहि पच्चएहि सुहुमसांपराइयो वि अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि। दससु लोभसंजलणे अवणिदे णव होंति ९। एदे उवसंतकसाय खीणकसाएहि बज्झमाणपयडीणं पच्चया। एदेहिंतो मज्झिमदोदोमणवचिजोगे अवणिय ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु पक्खित्तेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सत्त होंति ७ । एदेहि सत्तहि पच्चएहिं सजोगिजिणो बंधदि । एत्थ उवसंहारगाहाओ:—चदुपच्चइगो बंधो पढमे उवरिमतिए तिपच्चइगो । मिस्सगविदिओ उवरिमदुगं च सेसेक्कदेसम्हि ॥ २० ॥ उवरिल्लपंचए पुण दुपच्चओ जोगपच्चओ तिण्णं । सामण्णपच्चया खलु अठण्हं होंति कम्माणं ॥ २१ ॥ पणवण्णा इर वण्णा तिदाल छादाल सत्ततीसा य । चदुवीस दु-बावीसा सोलस एगूण जाव णव सत्तं ॥ २२ ॥ संपधि एगसमइयउत्तरुत्तरपच्चए चोद्दसजीवसमासेसु भणिस्सामो । तं जहा:— तत्थ ताव मिच्छाइट्ठिस्स जहण्णेण दस पच्चया । पंचसु मिच्छत्तेसु एक्को । एक्केण इंदिएण एक्कं कायं जहण्णेण विराहेदि त्ति दोण्णि असंजमपच्चया । अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोजिय मिच्छत्तं गयस्स आवलियमेत्तकालमणंताणुबंधिचउक्कस्सुदयाभावादो बारससु कसाएसु तिण्णि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोगदोसु जुगलेसु एक्कदरं जुगलं । दससु जोगेसु एक्को जोगो । एवमेदे सव्वे वि जहण्णेण दसपच्चया १० । पंचसु मिच्छत्तेसु एक्को । एक्केण इंदिएण छक्काए विराहेदि त्ति सत्त असंजमपच्चया । सोलसेसु कसाएसु चत्तारि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग दो जुगलेसु एक्कं जुगलं । भयदुगुंछाओ दोण्णि । तेरससु जोगपच्चएसु एक्को । एवमेदे सव्वे वि अट्ठारस होंति १८ । एवमेदेहि दस-अट्ठारस जहण्णुक्कस्सपच्चएहि मिच्छाइट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधइ । एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दो असंजमपच्चया । सोलस-कसाएसु चत्तारि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को वेदपच्चओ । हस्स-रदि-अरदि-सोग दो जुगलेसु एक्कदरं जुगलं । तेरससु जोगेसु एक्को । एवं जहण्णेण सासणस्स दस पच्चया होंति १० । उक्कस्सेण सत्तारस पच्चया होंति, मिच्छत्तस्सुदयाभावादो १७ । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्सदस-सत्तारसपच्चएहि सासणसम्मादिट्ठी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दो असंजमपच्चया । अणंताणु-बंधिचदुक्कवदिरित्तबारसकसाएसु तिण्णि कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग दो जुगलेसु एक्कं । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सव्वे वि णव होंति ९ । एक्केणिंदिएण छक्काए विराहेदि त्ति सत्त असंजमपच्चया । अणंताणुबंधिविरहिदबारसकसाएसु तिण्णि कसाय-पच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग दो जुगलेसु एक्कयरं जुगलं । दो भय-दुगुंछाओ । दससु जोगेसु एक्को । एवमेदे सोलस पच्चया १६ । एदेहि जहण्णुक्कस्सणवसोलसपच्चएहि सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी च अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । एक्केणिंदिएण एक्कं कायं विराहेदि त्ति दो असंजमपच्चया । अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाणचउक्कविरहिदअट्ठकसाएसु दो कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग दो जुगलेसु एक्कं । णवजोगेसु एक्को । एवमेदे अट्ठ ८ । एक्केणिंदिएण पंचकाए विराहेदि त्ति छ असंजमपच्चया । दो कसायपच्चया । एक्को वेदपच्चओ । हस्स-रदि-अरदि-सोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं । भयदुगुंच्छाओ । णव जोगेसु एक्को । एवमेदे चोद्दस १४ । एदेहि जहण्णुक्कस्सअट्ठचोद्दसपच्चएहि संजदासंजदो अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि । चदुसंजलणेसु एक्को कसायपच्चओ । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स-रदि-अरदि-सोग दोण्हं जुगलाणमेक्कदरं । णवसु जोगेसु एक्को । एवमेदे पंच जहण्णेण पच्चया ५ । एक्को कसाय पच्चओ ।

एक्को वेदपच्चओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगदोण्हं जुगलाणमेक्कदरं। भयदुगुंछाओ। णवसु जोगेसु एक्को। एवमेदे सत्तुक्कस्स पच्चया ७। एवमेदेहि जहण्णुक्कस्सपंच-सत्तपच्चएहि पमत्तसंजदो अप्पमत्तसंजदो अपुव्वकरणो च अप्पिदपयडीओ बंधंति। एक्को संजलणकसाओ। एक्को जोगो। एवमेदे जहण्णेण दो पच्चया २। उक्कस्सेण तिण्णि वेदेण सह ३। एदेहि जहण्णुक्कस्सदो-तिण्णिपच्चएहि अणियट्टी अप्पिदसोलसपयडीओ बंधदि। एक्को लोभकसाओ। एक्को जोगपच्चओ। एवमेदेहि जहण्णेण उक्कस्सेण वि दोहि पच्चएहि सुहुमसांपराइओ अप्पिदपयडीओ बंधदि। उवरि उवसंतकसाओ खीणकसाओ सजोगी च एक्केण चेव जोगेण बंधंति। एत्थ उवसंहारगाहाः—

दस अट्ठारस दसयं सतरह णव सोलसं च दोण्णं तु। अट्ठय चोद्दस पणयं सत्त तिए दु ति दु एयमेयं च॥ २३॥ 'किंगइसंजुत्तो' एदिस्से पुच्छाए चोद्दसजीवसमासपडिबद्धो उत्तरो वुच्चदे। तं जहाः— मिच्छाइट्ठी चदुगदिसंजुत्तं बंधदि। णवरि— उच्चागोदं णिरयतिरिक्खगइं मोत्तूण दुगदिसंजुत्तं बंधदि, जसकित्तिं णिरयगदिं मोत्तूण तिगदिसंजुत्तं बंधदि। सासणो चोद्दसपयडीओ णिरयगदिं मोत्तूण तिगदिसंजुत्तं बंधदि। उच्चागोदं णिरयतिरिक्खगईओ मोत्तूण दुगदिसंजुत्तं बंधदि। जसकित्तिं पुण णिरयगइं मोत्तूण तिगदिजुत्तं बंधदि। सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी च सोलसपयडीओ णिरयगइतिरिक्खगईओ मोत्तूण दुगदिसंजुत्तं बंधदि। संजदासंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण ठिदा त्ति अप्पिदसोलसपयडीओ देवगदिसंजुत्तं बंधंति। उवरिमा अगदिसंजुत्तं बंधंति। 'कदि गदिया सामिणो' एदिस्से पुच्छाए परिहारो वुच्चदेः— मिच्छादिट्ठी चदुगदिया सामिणो। सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठिणो वि चदुगदिया सामिणो। दुगदिसंजदासंजदा सामिणो। उवरिमा मणुसगदिया चेव। अद्धाणं सुत्तसिद्धं। पढम-अपढम-चरिम-अचरिम-समयबंधवोच्छेदपुच्छाविसयपरूवणा वि सुत्तसिद्धा चेव। 'किं सादिओ, किमणादिओ, किं धुवो, किमद्धुवो बंधो' त्ति एदिस्से पुच्छाए उच्चदेः— चोद्दसपयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठिस्स सादिओ, उवसमसेडिम्हि बंधवोच्छेदं कादूण हेट्ठा ओदरिय बंधस्सादिं करिय पडिवण्णमिच्छत्ताणं सादियबंधोवलंभादो। अणादिगो उवसमसेडिमणारूढमिच्छादिट्ठिजीवाणं बंधस्स आदीए अभावादो। धुवो बंधो अभवियमिच्छाइट्ठीणं बंधस्स वोच्छेदाभावादो। अद्धुवो उवसम-खवगसेडिं चडणपाओग्गमिच्छाइट्ठिबंधस्स धुवत्ताभावादो। जसकित्ति-उच्चागोदाणंपि एवं चेव। णवरि अणादि-धुवबंधा णत्थि अजसकित्ति— णीचागोदाणं पडिवक्खाणं संभवादो। सव्वगुणट्ठाणेसु सेसेसु चोद्दसधुवपयडीओ सादि-अणादि-अद्धुवमिदि तिहि वियप्पेहि बज्झंति। धुवभंगो णत्थि तेसिं भवियाणं णियमेण बंधवोच्छेदसंभवादो। जसकित्ति-उच्चागोदाणं पुण बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो चेव। ॥ १० ॥

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोधमाणमायालोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ७ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं च। तेण किं मिच्छाइट्ठी बंधओ ? किं सासणसम्माइट्ठी बंधओ ? किं सम्मामिच्छाइट्ठी बंधओ ? एवं गंतूण किमजोगी किं सिद्धो बंधओ ? किमेदेसिं कम्माणं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि ? किमुदओ ? किं दोवि समं वोच्छिज्जंति ? एदाओ किं सोदएण बज्झंति ? किं परोदएण ? किं सोदयपरोदएण ? किं सांतरं बज्झंति ? किं णिरंतरं बज्झंति ? किं सांतरणिरंतरं वज्झंति ? किं पच्चएहि बज्झंति ? किं पच्चएहि विणा बज्झंति ? किं गइसंजुत्तं बज्झंति ? किमगइसंजुत्तं बज्झंति ? कदिगदिया एदेसिं बंधसामिणो होंति ? कदिगदिया ण होंति ? किं वा बंधद्धाणं ? किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि ? किं पढमसमए ? किमपढम-अचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि ? किमेदासिं सादिओ बंधो ? किमणादिओ ? किं धुवो ? किमद्धुवो बंधो ? त्ति एदाओ पुच्छाओ एत्थ कादव्वाओ। एदासिं पुच्छाणमुत्तरपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

मिच्छादिट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं सामित्तद्धाणपरूवणदुवारेण पुच्छासुत्तुद्दिट्ठसव्वत्थपरूवणादो। सामित्तमद्धाणं च सुत्तादो चेव णव्वदि त्ति ण तेसिमत्थो उच्चदे। किमेदासिं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदे, किमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदे ? एदस्सत्थो वुच्चदेः— थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, सासणसम्माइट्ठिस्स चरिमसमए बंधे फिट्टे संते पच्छा उवरि गंतूण पमत्तसंजदम्मि उदय-वोच्छेदोवलंभादो। अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं फिट्टंति, सासणसम्माइट्ठिचरिमसमए एदेसिं बंधोदयाणं जुगवं वोच्छेददंस-णादो। इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणम्मि बंधे वोच्छिण्णे पच्छा उवरि गंतूण अणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-णीचागोदाणि, सासणम्मि बंधवोच्छेदे जादे पच्छा उवरिं गंतूण संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेदादो, तिरिक्खाणुपुव्वीए असंजदसम्माइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो। एवं मज्झिम-चदुसंठाणाणि, सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि गंतूण सजोगिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं चेव मज्झिमचउसंघडणाणि सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि अप्पमत्त- ॥ ११ ॥
उवसंतकसाएसु कमेण दोण्णं दोण्णमुदयक्खयदंसणादो। एवमप्पसत्थविहायगदीए, सासणम्मि बंधे थक्के संते उवरि सजोगिम्हि उदय-वोच्छेदादो। एवं दुभग-अणादेज्जाणं वत्तव्वं, सासणम्मि बंधे थक्के उवरि असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं दुस्सरस्स वि

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत्तव्वं, सासणम्मि बंधे थक्के सजोगिकेवलिम्हि उदयवोच्छेदादो। 'किं सोदएण, किं परोदएण, किमुभएण बज्झंति' त्ति पुच्छाए उत्तरो उच्चदे। तं जहा:—थीणगिद्धितियमित्थिवेदं तिरिक्खाउअं तिरिक्खगइं चदुसंठाणाणि चदुसंघडणाणि तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्विं उज्जोवं अप्पसत्थविहायगइमणंताणुबंधिचउक्कं दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि च मिच्छादिट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सोदएण वि परोदएण वि बंधंति विरोहाभावादो। 'किं सांतरं, किं णिरंतरं, किं सांतर-णिरंतरं बज्झंति' त्ति एदस्सत्थो वुच्चदे:—थीणगिद्धितियमणंताणुबंधिचउक्कं च णिरंतरं बंधदि धुवबंधित्तादो। इत्थिवेदो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि सांतरं बज्झइ, बंधगद्धाए खीणाए णियमेण पडिवक्खपयडीणं बंधसंभवादो। तिरिक्खाउअं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहि णिरंतरं बज्झइ, अद्धाक्खएण बंधस्स थक्कणाभावादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सांतर-णिरंतरं बज्झंति। होदु सांतरबंधो पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो, ण णिरंतरबंधो तस्स कारणाणुवलंभादो त्ति उत्ते उच्चदे—ण एस दोसो, तेउक्काइय-वाउक्काइयमिच्छाइट्ठीणं सत्तमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठीणं च भवपडिबद्धसंकिलेसेण णिरंतरबंधोवलंभादो। सासणसम्माइट्ठिणो दोण्णं पयडीणमेदासिं कथं णिरंतरबंधया? ण, सत्तमपुढविसासणाणं तिरिक्खगइं मोत्तूणण्णगईणं बंधाभावादो। चदुसंठाण-चदुसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणमित्थिवेदभंगो सांतरबंधित्तं पडि भेदाभावादो। णीचागोदस्स तिरिक्खगदिभंगो तेउ-वाउक्काइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च णीचागोदस्स णिरंतरं बंधुवलंभादो। 'किं पच्चएहि बज्झंति, किं तेहि विणा' एदस्स अत्थो उच्चदे—मिच्छादिट्ठी मिच्छत्तासंजमकसायजोगसण्णिदचदुहि मूलपच्चएहि पणवण्णुत्तरपच्चएहि दसअट्ठारसएगसमयसंभविजहण्णुक्कस्सपच्चएहि य एदाओ पयडीओ बंधदि। सासणसम्माइट्ठी मिच्छत्तं मोत्तूण तीहि मूलपच्चएहि पंचासुत्तरपच्चएहि एगसमयसंभविददससत्तारसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि च एदाओ पयडीओ बंधदि। णवरि तिरिक्खाउअस्स वेउव्वियमिस्सकम्मइयपच्चएहि विणा तेवण्ण ओरालियमिस्सेण च विणा सत्तेताल पच्चया मिच्छाइट्ठि-सासणाणं होंति। गइसंजुत्तपुच्छाए अत्थो उच्चदे:—तं जहा:—थीणगिद्धितियं अणंताणुबंधिचउक्कं च मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं बंधइ। इत्थिवेदं मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं बंधइ। तिरिक्खाउतिरिक्खगइतिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि उज्जोवं मिच्छाइट्ठिसासणसम्माइट्ठी तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। चउसंठाण-चउसंघडणाणि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्खमणुसगइसंजुत्तं बंधंति। अप्पसत्थविहायगइदुभगदुस्सरअणादेज्जणीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी देवगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सासणो देव-णिरयगईहि विणा दुगदिसंजुत्तं बंधदि। 'कदिगदिया सामिणो' त्ति उत्ते—थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कादिपयडीणं बंधस्स चउग्गइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। बंधद्धाणं सासणचरिमसमए बंधवोच्छेदो च सुत्तणिद्दिट्ठो त्ति ण पुणो उच्चदे। 'किमेदासिं पयडीणं सादिओ बंधओ' त्ति पुच्छासंबंधो अत्थो उच्चदे:—तं जहा—थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठिम्हि सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो च। सासणम्हि अणाइधुवेण विणा दुवियप्पो। सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सादिगो अद्धुवो च।

णिद्दापयलाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ९ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ पुव्विल्लपुच्छाओ सव्वाओ पुच्छिदव्वाओ। पुच्छिदसिस्सस्स संदेहविणासणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १० ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं, बंधद्धाणं बंधसामि-असामिणो च अपुव्वकरणद्धाए अपढम-अचरिमसमए बंधवोच्छेदं च भणिदूण सेसत्थे सूचिय अवट्ठाणादो। अपुव्वकरणद्धाए पढमसत्तमभागे णिद्दापयलाणं बंधो थक्कदि त्ति एत्थ वत्तव्वं। कथमेदं णव्वदे ? परमगुरूवदेसादो। 'किमेदेसिं कम्माणं बंधो पुव्वं पच्छा समुदएण वोच्छिज्जदि' त्ति पुच्छाए णिच्छओ कीरदे। एदेसिं बंधो पुव्वं विणस्सदि, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो; अपुव्वकरणद्धाए पढमसत्तमभागे बंधे थक्के संते उवरिं गंतूण खीणकसायस्स दुचरिमसमयम्हि उदयवोच्छेदादो। किं सोदएण परोदएण सोदयपरोदएण बज्झंति' त्ति पुच्छाए उच्चदे:— एदाओ दो वि पयडीओ सोदयपरोदएण बज्झंति, णाणंतरायपंचकस्सेव एदासिं धुवोदयत्ताभावादो। 'किं सांतरं णिरंतरं सांतर-णिरंतरं बज्झंति' त्ति पुच्छाए उच्चदे— एदाओ णिरंतरं बज्झंति, सत्तेतालधुवपयडीसु पादादो। 'किं पच्चएहि बंधदि' त्ति पुच्छाए वुच्चदे:— मिच्छादिट्ठी चउहि मूलपच्चएहि पणवण्णणाणासमयुत्तरपच्चएहि दसअट्ठारसएगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, सासणो मिच्छत्तेण विणा तिहि मूलपच्चएहि पंचासुत्तरपच्चएहि, दस-सत्तारसएगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, सम्मामिच्छाइट्ठी तिहि मूलपच्चएहि तेदालुत्तरपच्चएहि एगसमइयणवसोलसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, असंजदसम्माइट्ठी तिहि मूलपच्चएहि छादालुत्तरपच्चएहि एगसमइयणवसोलसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, संजदासंजदो मिस्सासंजमेण सहिदकसायजोगदोमूलपच्चएहि सत्ततीसुत्तरपच्चएहि एगसमइयअट्ठचोद्दसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, पमत्तसंजदो दोहि मूलपच्चएहि चदुवीसुत्तरपच्चएहि एगसमइयपंचसत्तजहण्णुक्कस्सपच्चएहि, अप्पमत्तसंजदो अपुव्वकरणो च दोहि मूलपच्चएहि बावीसुत्तरपच्चएहि एगसमइयपंचसत्तजहण्णुक्कस्सपच्चएहि बंधंति। गइसंजुत्तबंधपुच्छाए अत्थो— मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी

देवमणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं णिद्दापयलाओ दो वि बंधंति । 'कदि गदिया सामी' एदिस्से पुच्छाए उच्चदे:—मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी चउगइया, दुगदिया संजदासंजदा, उवरिमा मणुस्सगइया सामी । अद्धाणं सुगमं । वोच्छिण्णपदेसो वि सुगमो । 'किं सादिओ' त्ति पुच्छाए उच्चदे—मिच्छाइट्ठिम्हि णिद्दा-पयलाणं बंधो सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो त्ति चदुवियप्पो । सासणादिगुणट्ठाणेसु तिवियप्पो, धुवत्ताभावादो । सेसं सुगमं ।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ॥ ११ ॥

बंधो बंधओ त्ति घेत्तव्वो । एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, सामिपुच्छं णिद्दिसिदूण सेसपुच्छाविसयणिद्देसाकरणादो । तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ णिद्दिसिदव्वाओ । पुच्छिदसिस्ससंसयफुसणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२ ॥

एदं पि सुत्तं देसामासियं, सामित्तमद्धाणं बंधविणासट्ठाणं च भणिदूणण्णेसिमत्थाणमणिद्देसादो । तेण इदरेसिं परूवणा कीरदे । तं जहा— एदस्स बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमए बंधे वोच्छिण्णे संते पच्छा अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदादो । सादावेदणीयं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति सोदएण परोदएण वि बज्झदि, सादासादोदयाणं परावत्तिदंसणादो, सपरोदएहि बंधविरोहाभावादो च । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतरो बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए बंधसंभवादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । जम्हि जम्हि गुणट्ठाणे जेत्तिया जेत्तिया मूलपच्चया णाणासमयुत्तरपच्चया एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया च उत्ता ताणि गुणट्ठाणाणि तेत्तिएहि पच्चएहि सादावेदणीयं बंधंति । मिच्छाइट्ठी णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं । अप्पसत्थाए तिरिक्खगईए सह कथं सादबंधो ? ण, णिरयगइं व अच्चंतियअप्पसत्थाभावादो । एवं सासणो वि । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं बंधंति णिरयतिरिक्खगईहि विणा । उवरिमा देवगइसंजुत्तं । अपुव्वकरणस्स चरिमसत्तमभागप्पहुडि उवरि अगदिसंजुत्तं बंधंति । मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी चदुगदिया, दुगदिसंजदासंजदा सामिणो, सेसा मणुसगईए चेव । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं सुत्तुत्तत्तादो । सव्वेसु गुणट्ठाणेसु सादावेदणीयबंधो सादि-अद्धुवो सादासादाणं परावत्तणसरूवेण बंधादो । ॥ १४ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १३ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ कायव्वाओ। अथवा आसंकियसुत्तमेदमिदि दट्ठव्वं। तण्णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४ ॥

एदं देसामासियं सुत्तं, पुच्छिदत्थाणमेगदेसं च्छिविदूण अवट्ठाणादो। तेणेदेण सूइदत्थाणं अत्थपरूवणा कीरदे। असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो उदओ पच्छा वोच्छिण्णो, पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदे संते पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो। एवमरदि-सोगाणं, पमत्तसंजदम्मि बंधे णट्ठे संते अपुव्वचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो। अथिर-असुहाणं पि एवं चेव वत्तव्वं, पमत्तम्मि बंधे विणट्ठे सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो। अजसकित्तीए पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदए णट्ठे पच्छा पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदादो। असादावेदणीय-अरदि-सोगा सोदय-परोदएहि बज्झंति, उदयस्स धुवत्ताभावादो। एवमजसकित्तीए वि उदयस्स अद्धुवत्तणेण भेदाभावादो। णवरि संजदासंजदप्पहुडि उवरि परोदएणेव बंधो, तत्थ जसकित्तिं मोत्तूण अवराए उदयाभावादो। अथिर-असुहाणं सोदएणेव बंधो धुवोदयत्तादो। एदासिं छण्णं पयडीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि छसु वि गुणट्ठाणेसु सांतरो बंधो। कुदो? एदासिं पडिवक्खपयडीणमेत्थ बंधवोच्छेदाभावादो। णाणावरणादिसोलसपयडीणं जे पच्चया परूविदा एदेसु छसु गुणट्ठाणेसु तेहि चेव पच्चएहि एदाओ छप्पयडीओ बज्झंति। असाद-अरदि-सोगे मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगइं मोत्तूण तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति। एवं अथिर-असुभ-अजसकित्तीणं भेदाभावादो। चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो सामी। दुगइसंजदासंजदा सामी। पमत्तसंजदा मणुसा चेव। बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं। एदाओ छ वि पयडीओ बंधेण सादि-अद्धुवाओ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेत्थ सव्वपुच्छाओ कायव्वाओ। पुच्छिदसिस्सस्स संसयविणासणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं दोण्णं चेव परूवणादो। तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणं कीरदे।-मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं मिच्छत्तभंगो, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधोदयवोच्छेदं पडि एदासिं मिच्छत्तेण सह भेदाभावादो। णवुंसयवेदस्स पुव्वं बंधवोच्छेदो पच्छा उदयस्स, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधे णट्ठे संते पच्छा अणियट्टिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधे णट्ठे संते पच्छा असंजदसम्माइट्ठिम्हि उदयवोच्छेदादो। एवं हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणं पि वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठिम्हि बंधे फिट्टे संते पच्छा जहाकमेण सजोगिकेवलि-अप्पमत्तसंजदेसु उदयवोच्छेदादो। मिच्छत्तस्स सोदएणेव बंधो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाओ परोदएणेव बज्झंति, सोदएण सगबंधस्स विरोहादो। णवुंसयवेद-एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणि सोदय-परोदएहि बज्झंति, उभयथा वि विरोहाभावादो। मिच्छत्तं णिरयाउअं च णिरंतरबंधिणो धुवबंधित्तादो अद्धाखएण बंधविणासाभावादो। अवसेससव्वपयडीओ सांतरं बज्झंति, ताहिं पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो। चदुहि मूलपच्चएहि पंचवंचासणाणासमयउत्तरपच्चएहि दस-अट्ठारसएगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चएहि य मिच्छाइट्ठी एदाओ पयडीओ बंधइ। णवरि वेउव्वियवेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चएहि विणा एगवंचासपच्चएहि णिरयाउअं बंधदि त्ति वत्तव्वं। एवं णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-साहारण-अपज्जत्ताणं वेउव्वियदुगेण विणा तेवण्णा पच्चया। मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णवुंसयवेदं देवगईए विणा तिगइसंजुत्तं, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाओ णिरयगइसंजुत्तं, हुंडसंठाणं देवगइं मोत्तूण तिगइसंजुत्तं, असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-अपज्जत्तणामाओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी। एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं बंधस्स णिरयगइं मोत्तूण तिगइमिच्छाइट्ठी सामी। सेसाणं पयडीणं तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो सादि-अणादि-धुव-अद्धुवभेएण चउव्विहो। सेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो। ॥ १६ ॥

अपच्चक्खाणावरणीयकोधमाणमायालोभ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं को बंधो? को अबंधो ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा— अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, एक्कम्हि असंजदसम्माइट्ठिम्हि दोण्णं विणासुवलंभादो । मणुसगईए पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधे णट्ठे पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं । णवरि सजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कादीणं सव्वेसिं सोदय-परोदएहि बंधो, विरोहाभावादो । णवरि सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं परोदइओ बंधो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कबंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विबंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं सांतरणिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधं लद्धूण अण्णत्थ सांतरबंधुवलंभादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु णिरंतरो, देव-णेरइयअप्पिददोगुणट्ठाणेसु अण्णगइआणुपुव्वीणं बंधाभावादो । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं वत्तव्वं । कुदो ? ओरालियसरीरस्स सव्वदेवणेरइएसु तेउ-वाउकाइएसु च णिरंतरं बंधुवलंभादो, अण्णत्थ सांतरबंधदंसणादो; ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सव्वणेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरं बंधं लद्धूण ईसाणादिहेट्ठिमदेवाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु तिरिक्ख-मणुसेसु च सांतरबंधुवलंभादो, वज्जरिसहसंघडणस्स देवणेरइयसम्मामिच्छाइट्ठिअसंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरं बंधं लद्धूण अण्णत्थ सांतरबंधुवलंभादो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कं चउगुणट्ठाणजीवा णाणावरणपच्चएहि चेव बंधंति । एवं मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पि चदुसु गुणट्ठाणेसु पच्चया परूवेदव्वा । णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिस्स बादालपच्चया वत्तव्वा, ओरालियकायजोगपच्चयाभावादो । असंजदसम्माइट्ठिस्स चोदालपच्चया, ओरालियकायजोग-ओरालियमिस्सकायजोगपच्चयाणमभावादो । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं पि पच्चयपरूवणा मणुसगईए व कायव्वा । अपच्चक्खाणचउक्कं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सेसा दो वि देवमणुसगइसंजुत्तं बंधंति । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वगुणट्ठाणजीवा मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाइं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्खमणुसगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । ॥ १७ ॥
एवं वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणस्स वि वत्तव्वं भेदाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कबंधस्स चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी सामी । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघडणाणं चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी सामी। दुगइसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधणट्ठपदेसो वि सुगमो। अपच्चक्खाणचउक्कबंधो मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसेसु गुणट्ठाणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो। मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो। ओरालियसरीरस्स णिच्चणिगोदेसु सव्वकालं वेउव्विय-आहारसरीरबंधविरहिदेसु धुवबंधो अणादियबंधो च किण्ण लब्भदे ? ण, पडिवक्खपयडिबंधसत्तिसब्भावं पडुच्च अणादिधुवभावापरूवणादो, चउगइणिगोदे मोत्तूण णिच्चणिगोदेहि एत्थ अहियाराभावादो वा। बंधवत्तिं पडुच्च पुण बंधस्स अणादियधुवत्तं ण विरुज्झदे।

पच्चक्खाणावरणीयकोधमाणमायालोभाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगममेदं सुत्तं।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २० ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणमेव परूवणादो। तेणेत्थ अवुत्तत्थाणं परूवणा कीरदे। तं जहाः— एदासिं पयडीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि बंधस्सेव उदयवोच्छेददंसणादो। एदासिं चउण्णं पि बंधो सोदय-परोदएहि, कोधादीणं बंधकाले तस्सेव उदए वि होदव्वमिदि णियमाभावादो। एदासिं चदुण्णं पि णिरंतरो बंधो, सत्तेतालीसधुवबंधपयडीसु पादादो। मिच्छादिट्ठिआदिपंचगुणट्ठाणेसु जे पच्चया परूविदा मूलुत्तरभेएण तेहि पच्चएहि एदाओ बज्झंति त्ति तेसु तेसु गुणट्ठाणेसु ते ते चेव पच्चया वत्तव्वा, बंधस्स पच्चयसमूहकज्जत्तादो। अथवा, एदासिं पयडीणं बंधस्स पच्चक्खाणपयडीए उदयसामण्णं पच्चओ। सेसकसायाणमुदओ जोगो च पच्चओ ण होदि, एत्तो उवरि तेसु संतेसु वि एदासिं बंधाभावादो। ण मिच्छत्ताणंताणुबंधिअपच्चक्खाणावरणाणमुदओ वि एदासिं बंधस्स पच्चओ, तेण विणा वि बंधुवलंभादो। जस्सण्णयवदिरेगेहि जस्सण्णयवदिरेगा होंति तं तस्स कज्जमियरं च कारणं। णचेदं पच्चक्खाणोदयं मुच्चा अण्णत्थात्थि तम्हा पच्चक्खाणोदओ चेव पच्चओ त्ति सिद्धं। मिच्छाइट्ठिम्हि णट्ठबंधसोलसपयडीणं बंधस्स मिच्छत्तोदओ चेव पच्चओ, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। सासणम्हि णट्ठबंधपणुवीसपयडीणं अणंताणुबंधीणं उदओ चेव पच्चओ, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठबंधणवपयडीणं बंधस्स अपच्चक्खाणोदओ कारणं, तेण विणा तासिं बंधाणुवलंभादो। पमत्तसंजदम्मि णट्ठबंधछप्पयडीणं बंधस्स पमादो पच्चओ, तेण विणा तदणुवलंभादो। एवमण्णत्थ वि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाणिय वत्तव्वं। एदाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो णिरयगइं विणा तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी देवगइ-मणुसगइसंजुत्तं, संजदासंजदा देवगइसंजुत्तं बंधंति। एदासिं चउगइ-मिच्छाइट्ठी सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी बंधस्स सामी। संजदासंजदा दुगइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। एदासिं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो, सत्तेदालीसधुवबंधपयडीसु पादादो। उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २१ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२ ॥

'मिच्छादिट्ठिप्पहुडि उवसमा खवा बंधा' एदेण सुत्तावयवेण गुणट्ठाणगयं बंधसामित्तं बंधद्धाणं च परूविदं। 'अणियट्टिबादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि' त्ति एदेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं। तं जहाः— सेसे अंतरकरणे कदे, जा सेसा अणियट्टिअद्धा तम्हि सेसे संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडाणि गंतूणेगखंडावसेसे पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधो ओच्छिण्णो त्ति उत्तं होदि। एदे तिण्णि चेव अत्था एदेण परूविदा त्ति देसामासियसुत्तमेदं। तेणेदस्सियरत्थाणं परूवणा कीरदे।- पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, पुरिसेवद-कोधसंजलणाणं उदए संतक्खएणुवसमेण वा णट्ठे बंधाणुवलंभादो। संसारावत्थाए सोदएण विणा वि बंधो उवलब्भदि त्ति ण सोदयाविणाभावी एदासिं बंधो त्ति उत्ते होदु तथा तत्थ इच्छिज्जमाणत्तादो। एत्थ पुण पडिवक्खपयडिबंधेण विणा बंधविणट्ठट्ठाणे चेव उदयविणासादो एगम्हि काले दोण्णं विणासो ण विरुज्झदे त्ति। एदासिं दोण्णं पयडीणं सोदयपरोदएहि बंधो, सोदएण विणा वि बंधोवलंभादो। कोधसंजलणस्स बंधो णिरंतरो, सत्तेतालीसधुवबंधपयडीणं मज्झे पादादो। पुरिसवेदबंधो सांतरो। कुदो ? मिच्छाइट्ठि-सासणेसु पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो। णिरंतरो वि, पम्म-सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सम्मामिच्छाइट्ठि-आदिउवरिमगुणट्ठाणेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। एदासिं पच्चयपरूवणे कीरमाणे पुध पुध जे पच्चया मूलुत्तरणाणेगसमयभेयभिण्णा ॥ १९ ॥
गुणट्ठाणाणं परूविदा ताणि गुणट्ठाणाणि तेहि पच्चएहि एदाओ पयडीओ बंधंति त्ति पुधपरूवणा णत्थि, भेदाणुवलंभादो। अथवा पुरिसवेदो सगपच्चओ अवगदवेदेसु तब्बंधाणुवलंभादो। कोधसंजलणो संजलणकसायस्स तिव्वाणुभागोदयपच्चओ, उवसमसेडिम्हि कोधचरि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

माणुभागोदयादो अणंतगुणहीणेण ऊणाणुभागोदएण कोधसंजलणस्स बंधाणुवलंभादो । मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा पुरिसवेदं तिगइसंजुत्तं बंधइ । णिरयगईए सह पुरिसवेदो किण्ण बज्झदे ? ण, अच्चंताभावेण पडिसिद्धत्तादो । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी च दुगइसंजुत्तं तेसिं णिरयतिरिक्खगईणं बंधाभावादो । संजदासंजदप्पहुडि उवरिमा देवगइसंजुत्तं, सेसगईणं तत्थ बंधाभावादो । अपुव्वकरणसत्तमभागप्पहुडि उवरिमा अगदिसंजुत्तं बंधंति, तत्थ गइकम्मस्स बंधाभावादो । एवं कोधसंजलणस्स वि वत्तव्वं । णवरि मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं बंधइ, तत्थ णिरयगईए सह बंधविरोहाभावादो । पुरिसवेदबंधस्स चउगइमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सामी । दुगइसंजदासंजदा सामी, देवणिरयगईसु तदभावादो । उवरिमा मणुसगईए सामी अण्णत्थ पमत्तादीणमभावादो । पुरिसवेदबंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादिगो अद्धुवो पडिवक्खपयडीणं बंधुवलंभादो । णियमेण सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि उवरिमेसु बंधविणासदंसणादो । कोधसंजलणस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो धुवबंधित्तादो । उवरिमेसु तिविहो धुवत्ताभावादो ।

माणमायासंजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जाभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २४ ॥

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव०' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गइगएण विणा गुणट्ठाणगयबंधसामित्तं च उत्तं । 'अणियट्टी०' एदेण सुत्तावयवेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं । कोधसंजलणे विणट्ठे जो अवसेसो अणियट्टिअद्धाए संखेज्जदिभागो तम्हि संखेज्जे खंडे कए तत्थ बहुभागे गंतूण एयभागावसेसे माणसंजलणस्स बंधवोच्छेदो । पुणो तम्हि एगखंडे संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडे गंतूण एगखंडावसेसे मायासंजलणबंधवोच्छेदो त्ति । कथमेदं णव्वदे ? 'सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूणेत्ति' विच्छाणिद्देसादो । कसायपाहुडसुत्तेणेदं सुत्तं विरुज्झदि त्ति उत्ते सच्चं विरुज्झइ, किंतु एयंतग्गहो एत्थ ण कायव्वो; इदमेव तं चेव सच्चमिदि सुदकेवलीहि पच्चक्खणाणीहि वा विणा अवहारिज्जमाणे मिच्छत्तप्पसंगादो । कथं सुत्ताणं विरोहो ? ण, सुत्तोवसंहाराणमसयलसुदधारयाइरियपरतंताणं विरोहसंभवदंसणादो । उवसंहाराणं कथं पुण सुत्तत्तं जुज्जदे ? ण, आमियसायरजलस्स अलिंजर-घड-घडी-सरावुदंचणगयस्स वि अमियत्तुवलंभादो । संपहि एदेण साहिदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहाः—एदासिं दोण्णं पयडीणं बंधोदया अक्कमेण वोच्छिज्जंति, उदए

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

विणट्ठे बंधाणुवलंभादो । ण च उदयद्धाक्खएण उदयस्स विणासो एत्थ विवक्खिओ संतोवसमक्खएहि समुप्पण्णुदयाभावेण अहियारादो । एदासिं सोदयपरोदएहि बंधो णिरंतरबंधीणं सांतरुदयाणं सोदएणेव बंधविरोहादो । णिरंतरबंधीओ धुवबंधीहि सह पादादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जे पच्चया मूलुत्तरणाणेगसमयभेयभिण्णा पुव्वं परूविदा तग्गुणविसिट्ठजीवा तेहि चेव पच्चएहि एदाओ पयडीओ बंधंति पच्चयंतराभावादो । अथवा एदासिं संजलणोदयविसेसो चेव पच्चओ तेण विणा बंधाणुवलंभादो । मिच्छादिट्ठी चउगइसंजुत्तं तस्स सव्वगइबंधेहि विरोहाभावादो । सासणो तिगइसंजुत्तं तस्स णिरयगइबंधेण सह विरोहादो । सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी च दुगइसंजुत्तं बंधंति तेसिं णिरय-तिरिक्खगईहि सह विरोहादो । उवरिमा देवगइ-अगइसंजुत्तं वा बंधंति तेसिं सेसगईहि सह विरोहादो । मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी चउगइया, दुगइसंजदासंजदा, सेसा मणुस्सगइया सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुत्तुद्दिट्ठमिदि सुगमं । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

लोभसंजलणस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २६ ॥

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गुणट्ठाणगयसामित्तं च परूविदं । 'अणियट्टिबादर०' एदेण बंधविणट्ठट्ठाणपरूवणा कदा । एदेसिं तिण्णं चेवत्थाणं परूवणा कदा त्ति देसामासियसुत्तमेदं । तणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा:- बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अणियट्टिचरिमसमए बंधे वोच्छिण्णे सुहुमसांपराइयचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो । लोभसंजलणस्स सोदयपरोदएहि बंधो धुवोदयत्ताभावादो । णिरंतरो बंधो धुवबंधित्तादो । पच्चयपरूवणाए माणसंजलणभंगो । गइसंजुत्त-सामित्तद्धाण-बंधवोच्छिण्णट्ठाणपरूवणाओ सुगमाओ । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं तिविहो बंधो, अधुवबंधित्तादो ।

हस्सरदिभयदुगुंछाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८ ॥

एदेण बंधद्धाणं गुणगयबंधसामित्तं बंधविणट्ठट्ठाणं च परूविदं । तेणेदं देसामासियं दट्ठव्वमण्णहा सेसत्थाणमेत्थ संभवाभावादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे । हस्सरदिभयदुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, अपुव्वकरणचरिमसमए चदुण्णं वोच्छेदुवलंभादो । सोदयपरोदएहि बंधो, धुवोदयत्ताभावादो परोदए वि बंधविरोहाभावादो । भयदुगुंछाणं सव्वगुणट्ठाणेसु णिरंतरो बंधो धुवबंधित्तादो । हस्सरदीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एत्थ पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चयपरूवणाए णाणावरणभंगो । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, एदासिं बंधस्स चउगइबंधेण सह विरोहाभावादो । णवरि हस्सरदीओ तिगइसंजुत्तं बंधइ, तब्बंधस्स णिरयगइबंधेण सह विरोहादो । सासणो तिगइसंजुत्तं, तत्थ णिरयगईए बंधाभावादो । सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, एदेसिं णिरयतिरिक्खगईणं बंधाभावादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति, तेसु अण्णगईणं बंधाभावादो । णवरि अपुव्वकरणद्धाए चरिमे सत्तमे भागे वट्टमाणा अगइसंजुत्तं बंधंति त्ति वत्तव्वं । चउगइमिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सामी । दुगइसंजदासंजदा देव-णेरइएसु अणुव्वईणमभावादो । उवरिमा मणुस्सा चेव होदूण एदासिं बंधस्स सामी, अण्णत्थ पमत्तादीणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । भयदुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । उवरिमेसु तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो । हस्सरदीणं बंधो सादि-अद्धुवो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो ।

मणुस्साउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २९ ॥

एदं देसामासियं पुच्छासुत्तं । तेण को बंधो को अबंधो ? किमेदस्स बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, किमुदओ, किं दो वि समं वोच्छिज्जंति ? किं सोदएण, किं परोदएण, किं सोदयपरोदयेण ? किं सांतरं, किं णिरंतरं, किं सांतरणिरंतरं ? किं पच्चएहि, किं तेहि विणा ? किं गइसंजुत्तं, किमगइसंजुत्तं बज्झइ ? एदस्स बंधस्स कदिगदिया सामी असामी वा ? किं बंधद्धाणं ? किं चरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि, किं पढमसमए ? किमपढमअचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि ? किं सादिओ, किमणादिओ ? किं धुवो, किमद्धुवो बंधो ? त्ति एदाओ पुच्छाओ एत्थ कायव्वाओ । पुणो पुच्छिदजणाणुग्गहट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि ।—

॥ २२ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३० ॥

एत्थ बंधद्धाणं गुणट्ठाणाणि अस्सिदूण बंधसामित्तं च उत्तं, तेण इदरत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा:— मणुस्साउअस्स पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठबंधस्स मणुसाउअस्स अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सोदएण परोदएण वि मणुसाउअं बंधंति, अविरोहादो । असंजदसम्मादिट्ठी परोदएणेव, सोदएण सह तत्थ बंधविरोहादो । णिरंतरो बंधो, बज्झमाणभवे पडिवक्खपयडीए बंधेण विणा बंधपरिसमत्तिदंसणादो । बंधविरोहो अंतरमिदि किण्ण घेप्पदे ? ण, पडिवक्खपयडिबंधकदंतरेण एत्थ पओजणादो । मिच्छादिट्ठिस्स मूलुत्तरणाणेगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया णाणावरणम्हि वुत्ता चेव होंति । णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया तेवण्णं होंति । वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । सासणस्स णाणासमयउक्कस्सपच्चया सत्तेदालीस ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । असंजदसम्माइट्ठिस्स मणुसाउअं बंधमाणस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो । एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया णव सोलस, णाणासमयउत्तरपच्चया वादालं, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । तिण्णि वि गुणट्ठाणाणि मणुस्सगइसंजुत्तं बंधंति, तब्बंधस्स अण्णगईहि सह विरोहादो । चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो सामी । दुगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्ख-मणुस्सगदिट्ठिदअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुस्साउबंधेण विरोहादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो असंजदसम्मादिट्ठिस्स अपढम-अचरिमसमए । मणुस्साउअस्स बंधो सादि-अद्धुवो, बंधस्स धुवत्ताभावादो ।

देवाउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा । अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३२ ॥

'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०' एदेण सुत्तावयवेण बंधद्धाणं गुणगयसामित्तं च परूविदं । 'अप्पमत्तसंजदद्धाए' एदेण बंधविणट्ठट्ठाणं परूविदं । तिण्णं चेव परूवणादो देसामासियसुत्तमिणं । तेणेदेण सूइदत्थे भणिस्सामो । तं जहा:— एदस्स पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, देवाउअस्स असंजदसम्मादिट्ठिचरिमसमए वोच्छिण्णुदयस्स अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधवोच्छेदुवलंभादो । परोदए- ॥ २३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णेव बंधो, सोदएणेदस्स तित्थयरस्सेव बंधविरोहादो। णिरंतरो बंधो पडिवक्खपयडिबंधकयंतराभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स देवाउअं बंधंतस्स चत्तारि मूलपच्चया। एगसमइया जहण्णुक्कस्सपच्चया दस-अट्ठारस। णाणासमयउक्कस्स-पच्चया एकवंचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणं तत्थाभावादो। सासणसम्मादिट्ठिस्स पच्चया देवाउअं बंधमाणस्स णाणावरणबंधतुल्ला। णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया छादालं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। असंजदसम्माइट्ठिपच्चयपरूवणाए णाणावरणभंगो। णवरि णाणासमयउक्कस्सपच्चया वादालं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु पच्चया देवाउअस्स णाणावरणतुल्ला। सव्वे देवगइसंजुत्तं, अण्णगइबंधेण देवाउअबंधस्स विरोहादो। तिरिक्ख-मणुसगइ-मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा सामी। उवरिमा मणुस्सा चेव, अण्णत्थ महव्वयाणमणुवलंभादो। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागे गदे देवाउअस्स बंधवोच्छेदो। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु देवाउअस्स बंधो वोच्छिज्जदि त्ति केसु वि सुत्तपोत्थएसु उवलब्भइ। तदो एत्थ उवएसं लद्धूण वत्तव्वं। देवाउअस्स बंधो सादिओ अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥३३॥

सुगमं।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३४ ॥

जेणेदेण सुत्तेण बंधद्धाणं गुणगयसामित्तं बंधविणट्ठट्ठाणं वि य वुत्तं तेणेदं देसामासियं। तदो एदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे। ॥ २४ ॥ देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगणामाणं पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णट्ठोदयाणमेदासिं चउण्णं पयडीणमपुव्वकरणद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गदेसु बंधवोच्छेदुवलंभादो। तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुस्सर-णिमिणणामाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्वकरणम्हि णट्ठबंधाणं एदासिं पयडीणं सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदुवलंभादो। पंचिंदियजादितसबादरपज्जत्तसुभगादेज्जाणं पि एवं चेव। णवरि एदासिमजोगिचरिमसमए उदओ वोच्छिण्णो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगणामाणं परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, परोदएण बज्झमाणएक्कारसपयडीहि सह पादादो। तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिर-सुभ-णिमिणणामाओ सोदएणेव बज्झंति धुवोदयत्तादो। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ, उवरि सोदओ चेव, तत्थ पडिवक्खुदयाभावादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ पडिवक्खुदयसंभवादो। सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ। उवरि परोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो अपज्जत्तकाले परघादुस्सासाणमुदयाभावे वि, विग्गहगदीए उवघाद-पत्तेयसरीराण उदयाभावे वि, मिच्छाइट्ठिम्हि पत्तेयसरीरस्स साहारणसरीरोदए संते वि बंधुवलंभादो। अवसेसाणं सोदओ चेव, अपज्जत्तसाहारणसरीरोदयाणमभावादो। णवरि परघादुस्सासाणं पमत्तम्मि सोदय-परोदओ बंधो। तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सांतरणिरंतरो। कुदो? असंखेज्जवासाउअतिरिक्खमणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो चेव, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं सांतरणिरंतरो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिसु भोगभूमिएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरं, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतरणिरंतरो बंधो। कुदो? सणक्कुमारादिदेवणेरइएसु भोगभूमिएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणादिसु णिरंतरो पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतरणिरंतरो देवणेरइएसु भोगभूमीए च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणादिसु णिरंतरो अपज्जत्तबंधाभावादो। थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तो त्ति सांतरो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खपयडिबंधादो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियदुगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुगाभावादो एक्कवंचास छादालीसपच्चया। सम्मामिच्छाइट्ठिम्मि वादालीसपच्चया वेउव्वियकायजोगाभावादो। असंजदसम्माइट्ठिम्मि चोदालीसपच्चया वेउव्वियदुगाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु णाणावरणपच्चयतुल्ला विसेसकारणाभावादो। जदि अत्थि तो चिंतिय वत्तव्वो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वगुणट्ठाणजीवा देवगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि सह विरोहादो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठी देव-णेरइयगइसंजुत्तं, उवरिमगुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तं बंधंति, सेसगुणट्ठाणाणं णिरयगइबंधेण सह विरोहादो। पंचिंदिय-जादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिणणामाओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति। सम-चउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जणामाओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो दुगइसंजुत्तं णिरयतिरिक्खगईणमभावादो। उवरिमा देवगइसंजुत्तं तत्थ सेसगईणं बंधाभावादो। देवगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगणामाणं बंधस्स तिरिक्ख-मणुसगइ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी। उवरिमा मणुस्सा चेव अण्णत्थ तेसिमभावादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइपमत्तादओ सामी। बंधद्धाणं सुगमं। अपुव्वकरणद्धं सत्त खंडाणि काऊण छ खंडाणि उवरि चडिय सत्तमखंडावसेसे बंधो वोच्छिज्जदि। सुत्ताभावे सत्त चेव खंडाणि कीरंति त्ति कधं णव्वदे? ण, आइरियपरंपरागदुवदेसादो। तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणणामाणं मिच्छादिट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो धुवबंधित्तादो। उवरिम-गुणेसु तिविहो धुवत्ताभावादो। अवसेसाओ पयडीओ सादि-अद्धुवियाओ पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो, परघादुस्सासाणमपज्जत्तसंजुत्तं बंधमाणकाले पडिवक्खबंधपयडीए अभावे वि बंधाभावुवलंभादो।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ३५ ॥

सुगमं।

अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३६ ॥ ॥ २६ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, बंधद्धाणसामित्तविणट्ठट्ठाणाणं चेव परूवणादो। तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे। एदासिमुदओ पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा बंधो, पमत्तसंजदम्मि णट्ठोदयाणमेदासिमपुव्वकरणम्मि बंधवोच्छेदुवलंभादो। परोदएणेव एदाओ बज्झंति,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहारदुगोदयविरहिदअप्पमत्तेसु चेव बंधोवलंभादो। णिरंतरं बज्झंति पडिवक्खपयडीए बंधेण विणा बंधभावादो। पच्चयपरूवणाए मूलुत्तरणाणेगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया णाणावरणस्सेव वत्तव्वा। चदुसंजलण-णवणोकसायजोगा बावीस चेव आहारदुगस्स पच्चया तो सव्वेसु अप्पमत्तापुव्वकरणेसु आहारदुगबंधेण होदव्वं, ण चेवं, तहाणुवलंभादो; तदो अण्णेहि वि पच्चएहि होदव्वमिदि। ण एस दोसो, इच्छिज्जमाणत्तादो। के ते अण्णे पच्चया जेहि आहारदुगस्स बंधो होदि त्ति वुत्ते उच्चदे— तित्थयराइरिय-बहुसुद-पवयणाणुरागो आहारदुगपच्चओ। अप्पमादो वि सप्पमादेसु आहारदुगबंधस्साणुवलंभादो। अपुव्वस्सुवरिमसत्तमभागे किण्ण बंधो? ण, तत्थ तित्थयराइरिय-बहुसुद-पवयणविसयरागजणिदसंसकाराभावादो। देवगइसंजुत्तो आहारदुगबंधो अण्णगईहि सह तब्बंधविरोहादो। मणुसा चेव सामी, अण्णत्थ तित्थयराइरिय-बहुसुदरागस्स संजमसहियस्स अणुवलंभादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं, सुत्तणिद्दिट्ठत्तादो। सादिओ अद्धुवो च बंधो आहारदुगपच्चयस्स सादि-सपज्जवसाणत्तदंसणादो।

तित्थयरणामस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ३७ ॥

सुगमं।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३८ ॥

एदं देसामासियसुत्तं सामित्त-बंधद्धाण-बंधविणट्ठट्ठाणाणं चेव परूवणादो। तेणेदेण सूइदत्थवण्णणं कस्सामो- तित्थयरस्स पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्वकरणछसत्तमभागचरिमसमए णट्ठबंधस्स तित्थयरस्स सजोगिपढमसमए उदयस्सादिं कादूण अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदुवलंभादो। परोदएणेव बंधो तित्थयरकम्मुदयसंभवट्ठाणेसु सजोगि-अजोगिजिणेसु तित्थयरबंधाणुवलंभादो। णिरंतरो बंधो, सगबंधकारणे संते अद्धाक्खएण बंधुवरमाभावादो। असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं बंधंति, तित्थयरबंधस्स णिरय-तिरिक्खगइबंधेहि सह विरोहादो। उवरिमा देवगइसंजुत्तं, मणुसगइट्ठिदजीवाणं तित्थयरबंधस्स देवगइं मोत्तूण अण्णगईहि सह विरोहादो। तिगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगइम्हि तित्थयरस्स बंधाभावादो। मा होदु तत्थ तित्थयरकम्मबंधस्स पारंभो जिणाणमभावादो। किंतु पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआणं पच्छा पडिवण्णसम्मत्तादिगुणेहि तित्थयरकम्म बंधमाणाणं पुणो तिरिक्खेसु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

प्पण्णाणं तित्थयरस्स बंधस्स सामित्तं लब्भदि त्ति वुत्ते, ण, बद्धतिरिक्खमणुस्साउआणं जीवाणं बद्धणिरयदेवाउआणं व तित्थयरकम्मस्स बंधाभावादो। तं पि कुदो ? पारद्धतित्थयरबंधभवादो तदियभवे तित्थयरसंतकम्मियजीवाणं मोक्खगमणणियमादो। णच तिरिक्खमणुस्सेसुप्पण्णमणुससम्माइट्ठीणं देवेसु अणुप्पज्जिय देवणेरइएसुप्पण्णाणं व मणुसेसुप्पत्ती अत्थि जेण तिरिक्खमणुस्सेसुप्पण्णमणुससम्माइट्ठीणं तदियभवे णिव्वुई होज्ज। तम्हा तिगइअसंजदसम्माइट्ठिणो चेव सामिया त्ति सिद्धं। सादिओ अद्धुवो च बंधो बंधकारणाणं सादिसांतत्तदंसणादो। तित्थयरकम्मस्स पच्चयपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति ? ॥ ३९ ॥

कथं तित्थयरस्स णामकम्मावयवस्स गोदसण्णा ? ण, उच्चागोदबंधाविणाभावित्तणेण तित्थयरस्स वि गोदत्तसिद्धीदो। सेसकम्माणं पचए अभणिदूण तित्थयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयपरूवणा कीरदे ? सोलसकम्माणि मिच्छत्तपच्चयाणि मिच्छत्तोदएण विणा एदेसिं बंधाभावादो। पणुवीसकम्माणि अणंताणुबंधिपच्चयाणि तदुदएण विणा तेसिं बंधाणुवलंभादो। दस कम्माणि असंजदपच्चयाणि अपच्चक्खाणावरणोदएण विणा तेसिं बंधाभावादो। पच्चक्खाणावरणचदुक्कं सगसामण्णोदयपच्चयं तेण विणा तब्बंधाणुवलंभादो। छकम्माणि पमादपच्चयाणि पमादेण विणा तेसिं बंधाणुवलंभादो। देवाउअं मज्झिमविसोहिपच्चइयं अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गदे अइविसोहिट्ठाणमपावेदूण मज्झिमविसोहिट्ठाणे चेव देवाउअस्स बंधवोच्छेददंसणादो। आहारदुगं विसिट्ठरागसमण्णिदसंजमपच्चइयं तेण विणा तब्बंधाणुवलंभादो। परभवणिबंधसत्तावीस कम्माणि हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-चदुसंजलणाणि च कसायविसेसपच्चइयाणि अण्णहा एदेसिं भिण्णट्ठाणेसु बंधवोच्छेदाणुववत्तीदो। सोलसकसायाणि सामण्णपच्चइयाणि अणुमेत्तकसाए वि संते तेसिं बंधुवलंभादो। सादावेदणीयं जोगपच्चइयं, सुहुमजोगे वि तस्स बंधुवलंभादो। तेण सव्वकम्माणं पच्चया जुत्तिबलेण णव्वंति त्ति ण भणिदा। एदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स बंधपच्चओ ण णव्वदे–णेदं मिच्छत्तपच्चइयं तत्थ बंधाणुवलंभादो। णासंजमपच्चइयं संजदेसु वि बंधदंसणादो। ण कसायसामण्णपच्चइयं कसाए संते वि बंधवोच्छेददंसणादो, बंधपरिणामाणुवलंभादो वा। ण कसायमंददा कारणं तिव्वकसाएसु णेरइएसु वि बंधदंसणादो। ण तिव्वकसाओ कारणं मंदकसाएसु सव्वट्ठदेवेसु अपुव्वकरणेसु च बंधदंसणादो। ण सम्मत्तं तब्बंधकारणं सम्मादिट्ठिसु वि तित्थयरस्स बंधाणुवलंभादो। ण केवलं दंसणविसुज्झदा कारणं खीणदंसणमोहाणं पि केसिं वि बंधाणुवलंभादो। तदो एदस्स बंधकारणं वत्तव्वमेव। अथवा असंजद-पमत्त-सजोगिसण्णाओ व्व एदं सुत्तमंतदीवयं सव्वकम्माणं पच्चयपरूवणाए त्ति एदं सुत्तमागदं। कदिहि कारणेहि ? किमेक्केण ? किं दोहि ? किं तिहि ? एवं पुच्छा कायव्वा। एवंविहसंसयम्मि ट्ठिदाणं णिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तत्थ इमेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति ॥ ४० ॥

तत्थ मणुसगदीए चेव तित्थयरकम्मस्स बंधपारंभो होदि ण अण्णत्थेत्ति जाणावणट्ठं तत्थेत्ति उत्तं। अण्णगदीसु किण्ण पारंभो होदि त्ति उत्ते ण होदि केवलणाणोवलक्खियजीवदव्वसहकारिकारणस्स तित्थयरणामकम्मबंधपारंभस्स तेण विणा समुप्पत्तिविरोहादो। अथवा तत्थ तित्थयरणामकम्मबंधकारणाणि भणामि त्ति भणिदं होदि। सोलसेत्ति कारणाणं संखाणिद्देसो कदो। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तित्थयरकम्मबंधकारणाणि सोलस चेव होंति। दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे एक्कं पि होदि, दो वि होंति। तदो एत्थ सोलस चेव कारणाणि त्ति णावहारणं कायव्वं। एदस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

दंसणविसुज्झदाए विणयसंपण्णदाए सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए आवासएसु अपरिहीणदाए खणलवपडिबुज्झणदाए लद्धिसंवेगसंपण्णदाए यथाथामेतथातवे साहूणं पासुअपरिचागदाए साहूणं समाहिसंधारणाए साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहंतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणप्पभावणदाए अभिक्खणं अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति ॥ ४१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहाः—दंसणं सम्मद्दंसणं तस्स विसुज्झदा दंसणविसुज्झदा, तीए दंसणविसुज्झदाए जीवा तित्थयरणामगोदं कम्मं बंधंति। तिमूढावोढ-अट्ठमलवदिरित्तसम्मद्दंसणभावो दंसणविसुज्झदा णाम। कथं ताए एक्काए चेव तित्थयरणामकम्मस्स बंधो, सव्वसम्माइट्ठीणं तित्थयरणामकम्मबंधप्पसंगादो त्ति? वुच्चदे—ण तिमूढावोढत्तट्ठमलवदिरेगेहि चेव दंसणविसुज्झदा सुद्धणयाहिप्पाए होदि; किंतु पुव्विल्लगुणेहि सरूवं लद्धूण ट्ठिदसम्मद्दंसणस्स साहूणं पासुअपरिचागे साहूणं समाहिसंधारणे साहूणं वेज्जावच्चजोगे अरहंतभत्तीए बहुसुदभत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणपहावणे अभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तत्तणे पवट्टावणं विसुज्झदा णाम। तीए दंसणविसुज्झदाए एक्काए वि तित्थयरकम्मं बंधंति। अथवा विणयसंपण्णदाए चेव तित्थयरणामकम्मं बंधंति। तं जहाः—विणओ तिविहो णाण-दंसण-चरित्तविणओ त्ति। तत्थ णाणविणओ णाम अभिक्खणाभिक्खणं णाणोवजोगजुत्तदा बहुसुदभत्ती पवयणभत्ती च। दंसणविणओ णाम पवयणेसुवइट्ठसव्वभावसद्दहणं तिमूढादो ओसरणमट्ठमलच्छंडणमरहंतसिद्धभत्ती

खणलवपडिबुज्झणदा लद्धिसंवेगसंपण्णदा च। चरित्तविणओ णाम सीलवदेसु णिरतिचारदा आवासएसु अपरिहीणदा जहाथामे तहा
तवो च। साहूणं पासुगपरिचाओ तेसिं समाहिसंधारणं तेसिं वेज्जावच्चजोगजुत्तदा पवयणवच्छलदा च णाणदंसणचरित्ताणं पि विणओ
तिरयणसमूहस्स साहु-पवयणत्तिववएसादो। तदो विणयसंपण्णदा एका वि होदूण सोलसावयवा। तेणेदीए विणयसंपण्णदाए एक्काए वि
तित्थयरणामकम्मं मणुआ बंधंति। देव-णेरइयाणं कथमेसा संभवदि? ण, तत्थ वि णाण-दंसणविणयाणं संभवदंसणादो। कथं तिस-
मूहकज्जं दोहि चेव सिज्झदे? ण एस दोसो, मट्टिया-जल-सूरणकंदेहिंतो समुप्पज्जमाणसूरणकंदंकुरस्स तकंददुद्दिणेहिंतो चेव समु-
प्पज्जमाणस्सुवलंभादो। दोहि तुरगेहि कड्डिज्जमाणसंदणस्स वलवंतेणेक्केणेव देवेण विज्जाहरेण मणुएण वा कड्डिज्जमाणस्सुवलंभादो वा।
जदि दोहि चेव तित्थयरणामकम्मं बज्झदि तो चरित्तविणओ किमिदि तक्कारणमिदि उच्चदे? ण एस दोसो, णाणदंसणविणयकज्जविरोही
चरणविणओ ण होदि त्ति पदुप्पायणफलत्तादो। अथवा सीलव्वदेसु णिरदिचारदाए चेव तित्थयरणामकम्मं बज्झइ। तं जहाः—हिंसा-
लिय-चोज्ज-बंभ-परिग्गहेहिंतो विरदी वदं णाम। वदपरिरक्खणं सीलं णाम। सुरावाण-मांसभक्खण-कोहमाणमायालोहहस्सरइसोग-
भयदुगुंछित्थिपुरिसणउंसयवेदापरिच्चागो अदिचारो, एदेसिं विणासो णिरदिचारो संपुण्णदा, तस्स भावो णिरदिचारदा। तीए सीलव्वदेसु
णिरदिचारदाए तित्थयरकम्मस्स बंधो होदि। कथमेत्थ सेसपण्णरसण्हं संभवो? ण, सम्मद्दंसणेण खणलवपडिबुज्झण-लद्धिसंवेग-
संपण्णत्त-साहुसमाहिसंधारण-वेज्जावच्चजोगजुत्तत्त-पासुअपरिचाग-अरहंतबहुसुदपवयणभत्ति-पवयणपहावणसुद्धिजुत्तेण विणा सीलव्व-
दाणमणदिचारत्तस्स अणुववत्तीदो। असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मणिज्जरणहेदू वदं णाम। ण च समत्तेण विणा हिंसालियचोज्जबंभपरि-
ग्गहविरइमेत्तेण सा गुणसेडिणिज्जरा होदि, दोहिंतो चेवुप्पज्जमाणकज्जस्स तत्थेक्कादो समुप्पत्तिविरोहादो। होदु णाम एदेसिं संभवो
ण णाणविणयस्स? ण, छदव्वणवपयत्थसमूहतिहुवणविसएण अभिक्खणमभिक्खणमुवजोगविसयमापज्जमाणेण णाणविणएण विणा
सीलव्वदणिबंधणसम्मत्तुप्पत्तीए अणुववत्तीदो। ण तत्थ चरणविणयाभावो वि, जहाथामतवावासयापरिहीणत्तपवयणवच्छलत्तलक्खण-
चरणविणएण विणा सीलव्वदणिरदिचारत्ताणुववत्तीदो। तम्हा तदियमेदं तित्थयरणामकम्मस्स बंधकारणं। अवासएसु अपरिहीणदाए-
समदा-थव-वंदण-पडिक्कमण-पच्चक्खाण-विओसग्गभेएण छावासया होंति। सत्तुमित्त-मणिपाहाण-सुवण्णमट्टियासु रागदेसाभावो
समदा णाम। तीदाणागदवट्टमाणकालविसयपंचपरमेसराणं भेदमकाऊण णमो अरहंताणं णमो जिणाणमिच्चादिणमोक्कारो दव्वट्ठियणि-
बंधणो थवो णाम। उसहाजियसंभवाहिणंदणसुमइपउमप्पहसुपासचंदप्पहपुप्फयंतसीयलसेयंसवासुपुज्जविमलाणंतधम्मसंतिकुंथुअरमल्लि- ॥ ३० ॥
मुणिसुव्वयणमिणेमिपासवड्ढमाणादितित्थयराणं भरहादिकेवलीणं आइरिय-चइत्तालयादीणं भेयं काऊण णमोक्कारो गुणगयभेद-
मलीणो सद्दकलावाउलो गुणाणुसरणसरूवो वा वंदणा णाम। पंचमहव्वएसु चउरासीदिलक्खणगुणगणकलिएसु समुप्पण्णकलंक-

पक्खालणं पडिक्कमणं णाम। महव्वयाणं विणासणमलारोहणकारणाणि जहा ण होसंति तहा करेमि त्ति मणेणालोचिय चउरासीदिलक्खवदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाणं णाम। सरीराहारासुहमणवयणपउत्तीओ ओसारिय ज्झेयम्मि एअग्गेण चित्तणिरोहो विओसग्गो णाम। एदेसिं छण्णमावासयाणं अपरिहीणदा अखंडदा आवासयापरिहीणदा। तीए आवासयापरिहीणदाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स बंधो होदि। ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो ण च दंसणविसुद्धि-विणयसंपत्ति-वदसीलणिरदिचार-खणलवपडिबोह-लद्धिसंवेगसंपत्ति-जहाथामतव-साहुसमाहिसंधारण-वेज्जावच्चजोग-पासुअपरिचागारहंत-बहुसुद-पवयणभत्ति-वच्छलप्पहावणाभिक्खणणाणोवजोगजुत्तदाहि विणा छावासएसु णिरदिचारदा णाम संभवदि। तम्हा एदं तित्थयरणामकम्मबंधस्स चउत्थं कारणं। खणलवपडिउज्झणदाए—खण-लवा णाम कालविसेसा। सम्मद्दंसण-णाण-वद-सीलगुणाणमुज्जालणं कलंकपक्खालणं संधुक्खणं वा पडिउज्झणं णाम, तस्स भावो पडिउज्झणदा। खणलवं पडि पडिउज्झणदा खणलवपडिउज्झणदा। तीए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स बंधो। एत्थ वि पुव्वं व सेसकारणाणमंतब्भावो दरिसेदव्वो। तदो एदं तित्थयरणामकम्मबंधस्स पंचमं कारणं। लद्धिसंवेगसंपण्णदाए—सम्मद्दंसणणाणचरणेसु जीवस्स समागमो लद्धी णाम। हरिसो संतोसो संवेगो णाम। लद्धीए संवेगो लद्धिसंवेगो, तस्स संपण्णदा संपत्ती। तीए तित्थयरणामकम्मस्स एक्काए वि बंधो। कथं लद्धिसंवेगसंपयाए सेसकारणाणं संभवो? ण सेसकारणेहि विणा लद्धिसंवेगस्स संपया जुज्जदे विरोहादो। लद्धिसंवेगो णाम तिरयणदोहलओ, ण सो दंसणविसुज्झदादीहि विणा संपुण्णो होदि, विप्पडिसेहादो हिरण्णसुवण्णादीहि विणा अड्ढोव्व; तदोव। तदो अप्पणो अंतोखित्तसेसकारणा लद्धिसंवेगसंपया छट्ठं कारणं। जहाथामे तहा तवे—वलो वीरियं थामो इदि एयट्ठो। तवो दुविहो बाहिरो अब्भंतरो चेदि। बाहिरो अणसणादिओ, अब्भंतरो विणयादिओ। एसो सव्वो वि तवो बारसविहो। जहाथामे तहा तवे संते तित्थयरणामकम्मं बज्झइ। कुदो? यथाथामतवे सयलसेसतित्थयरकारणाणं संभवादो, जदो जहाथामो णाम ओघबलस्स धीरस्स णाणदंसणबलकलिदस्स होदि। ण च तत्थ दंसणविसुज्झदादीणमभावो तहा तवंतस्स अण्णहाणुववत्तीदो। तदो एदं सत्तमं कारणं। साहूणं पासुअपरिचागदाए—अणंतणाणदंसणवीरियविरइखइयसम्मत्तादीणं साहया साहू णाम। पगदा ओसरिदा असवो जम्हा तं पासुअं। अथवा जं णिरवज्जं तं पासुअं। किं? णाणदंसणचरित्तादि। तस्स परिचागो विसज्जणं तस्स भावो पासुअपरिचागदा। दयाबुद्धीणं साहूणं णाणदंसणचरित्तपरिचागो दाणं पासुअपरिचागदा णाम। ण चेदं कारणं घरत्थेसु संभवदि तत्थ चरित्ताभावादो। तिरयणोवदेसो वि ण घरत्थेसु अत्थि तेसिं दिट्ठिवादादिउवरिमसुदोवदेसणे अहियाराभावादो। तदो एदं कारणं महेसिणं चेव होदि। ण च एत्थ सेसकारणाणमसंभवो। ण च अरहंतादिसु अभत्तिमंते णवपदत्थविसयसद्दहणेणुमुक्के सादिचारसीलव्वदे परिहीणावासए णिरवज्जो णाणदंसणचरित्तपरिचागो संभवदि विरोहादो। तदो एदमट्ठमं कारणं। साहूणं समाहिसंधारण-

दाए—दंसणणाणचरित्तेसु सम्ममवट्ठाणं समाही णाम। सम्मं सोहणं धारणं संधारणं, समाहीए संधारणं समाहिसंधारणं, तस्स भावो समाहिसंधारणदा। ताए तित्थयरणामकम्मं बज्झदि त्ति। केण वि कारणेण पदंतिं समाहिं दट्ठूण सम्मादिट्ठी पवयणवच्छलो पवयणप्पहावओ विणयसंपण्णो सीलवदादिचारवज्जिओ अरहंतादिसु भत्तो संतो जदि धरेदि तं समाहिसंधारणं। कुदो एदमुवलब्भदे? सं-सद्दपउंजणादो। तेण बज्झदि त्ति उत्तं होदि। ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो, तदत्थित्तस्स दरिसिदत्तादो। एवमेदं णवमं कारणं। साहूणं वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए—व्यपृते यत् क्रियते तद्वैयावृत्त्यं। जेण सम्मत्तणाणअरहंतबहुसुदभत्तिपवयणवच्छलादिणा जीवो जुज्जइ वेज्जावच्चे सो वेज्जावच्चजोगो दंसणविसुज्झदादि, तेण जुत्तदा वेज्जावच्चजोगजुत्तदा। ताए एवंविहाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मं बंधइ। एत्थ सेसकारणाणं जहासंभवेण अंतब्भावो वत्तव्वो। एवमेदं दसमं कारणं। अरहंतभत्तीए—खविदघादिकम्मा केवलणाणेण दिट्ठसव्वट्ठा अरहंता णाम। अथवा णिट्ठविदट्ठकम्माणं घाइदघादिकम्माणं च अरहंतेत्ति सण्णा, अरिहणणं पडि दोण्हं भेदाभावादो। तेसु भत्ती अरहंतभत्ती। ताए तित्थयरकम्मं बज्झइ। कथमेत्थ सेसकारणाणं संभवो? उच्चदे—अरहंतवुत्ताणुट्ठाणाणुवत्तणं तदणुट्ठाणपासो वा अरहंतभत्ती णाम। ण च एसा दंसणविसुज्झदादीहि विणा संभवइ विरोहादो। तदो एसा एक्कारसमं कारणं। बहुसुदभत्तीए—बारसंगपारया बहुसुदा णाम, तेसु भत्ती तेहि वक्खाणिदआगमगंथाणुवत्तणं तदणुट्ठाणपासो वा बहुसुदभत्ती। ताए वि तित्थयरणामकम्मं बज्झइ। दंसणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्से असंभवादो। एदं बारसमं कारणं। पवयणभत्तीए—सिद्धंतो बारहंगाणि पवयणं। प्रकृष्टं प्रकृष्टस्य वचनं प्रवचनमिति व्युत्पत्तेः। तम्हि भत्ती तत्थ पदुप्पादिदत्थाणुट्ठाणं। ण च अण्णहा तत्थ भत्ती संभवइ। असंपुण्णे संपुण्णववहारविरोहादो। तीए तित्थयरकम्मं बज्झइ। एत्थ सेसकारणाणमंतब्भावो वत्तव्वो। एवमेदं तेरसमं कारणं। पवयणवच्छलदाए—पवयणं सिद्धंतो बारहंगाइं तत्थ भवा देस-महव्वइणो असंजदसम्माइट्ठिणो च पवयणा। कुदो एत्थ आकारस्स अस्सवणं? 'एए छच्च समाण' त्ति सुत्तेण आदिवुड्ढीए कयअकारत्तादो। तेसु अणुरागो आकंखा ममेदंभावो पवयणवच्छलदा णाम। तीए तित्थयरकम्मं बज्झइ। कुदो? पंचमहव्वदादिआगमत्थविसयस्सुक्कट्ठाणुरागस्स दंसणविसुज्झदादीहि अविणाभावादो। तेणेदं चोद्दसमं कारणं। पवयणप्पहावणदाए—आगमट्ठस्स पवयणमिदि सण्णा। तस्स पहावणं णाम वण्णजणणं तव्वुड्ढिकरणं च। तस्स भावो पवयणप्पहावणदा। तीए तित्थयरकम्मं बज्झइ, उक्कट्ठपवयणप्पहावणस्स दंसणविसुज्झदादीहि अविणाभावादो। तेणेदं पण्णरसमं कारणं। अभिक्खणमभिक्खणं णाणोपजोगजुत्तदाए—अभिक्खणमभिक्खणं णाम बहुवारमिदि भणिदं होदि। णाणोवजोगो त्ति भावसुदं दव्वसुदं वावेक्खदे। तेसु मुहुम्मुहु जुत्तदाए तित्थयरणामकम्मं बज्झइ, दंसणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्से अणुववत्तीदो। एदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामकम्मं बंधंति। अथवा सम्मद्दंसणे संते सेसकारणाणं मज्झे एगदुगादिसंजोगेण बज्झदि त्ति वत्तव्वं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जस्स इणं तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुरमाणुसस्स लोगस्स अच्चणिज्जा वंदणिज्जा णमंसणिज्जा णेदारा धम्मतित्थयरा जिणा केवलिणो हवंति ॥ ४२ ॥

तित्थयरणामगोदकम्मस्सेत्ति एत्थ 'उदओ तेणेत्ति' दोण्णं पदाणमज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा अत्थाणुवलंभादो। जस्स जेसिं जीवाणं इणं एदस्स तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदओ तेण उदएण सदेवासुरमाणुसस्स लोगस्स अच्चणिज्जा त्ति संबंधो कायव्वो। चरु-बलिपुप्फफलगंधधूवदीवादीहि सगभत्तिपयासो अच्चणा णाम। एदाहि सह अइंदधय-कप्परुक्ख-महामह-सव्वदोभद्दादिमहिमाविहाणं पूजा णाम। तुहुं ण्णिट्ठवियट्ठकम्मो केवलणाणेणदिट्ठसव्वट्ठो धम्मुम्मुहसिट्ठगोट्ठीए पुट्ठाभयदाणो सिट्ठपरिवालओ दुट्ठणिग्गहकरो देव त्ति-पसंसा वंदणा णाम। पंचहि मुट्ठीहि जिणिंदचलणेसु णिवदणं णमंसणं। धम्मो णाम सम्मद्दंसणणाणचरित्ताणि। एदेहि संसारसायरं तरंति त्ति एदाणि तित्थं। एदस्स धम्मतित्थस्स कत्तारा जिणा केवलिणो णेदारा च भवंति। एवमोघाणुगमो समत्तो।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु पंचणाणावरण-छदंसणावरण-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगदि-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-सरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ४३ ॥

एदं देसामासियपुच्छासुत्तं, तेणेदेण सूइदसव्वपुच्छाओ एत्थ वत्तव्वाओ। एवं पुच्छिदसिस्सणिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि— ॥ ३३ ॥

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ४४ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, सामित्तद्धाणाणं चेव परूवणादो। तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणं कस्सामो— पंचणाणावरणीय-छदंसणावर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णीय-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भयं-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं एदेसिमेत्थ बंधोदयवोच्छेदो णत्थि, विरोहाभावादो । पुरिसवेद-मणुसगइ-ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणमुदओ एत्थ णत्थि चेव, विरोहादो । तम्हा एत्थ एदासु पयडीसु बंधोदयवोच्छेदाणं पुव्वापुव्वविचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाओ सोदय-परोदएहि बज्झंति, सव्वगुणट्ठाणेसु परावत्तणोदयादो । उवघादं मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएहि बज्झइ, विग्गहगदीए उदयाभावादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीसु सोदएण बज्झइ; तेसिं तत्थ उप्पत्तीए अभावादो । परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणि मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएहि बज्झंति, अपज्जत्तकाले एदेसिमुदयाभावादो । णवरि पत्तेयसरीरस्स उवघादभंगो, विग्गहगदीए चेव उदयाभावादो । सेसेसु दोसु सोदएणेव एदासिं बंधो, तेसिं तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । पुरिसवेद-मणुसगइ-ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं चदुसु गुणट्ठाणेसु परोदएणेव बंधो, णिरएसु एदासिमुदयविरोहादो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, णिरयगइम्हि णिरंतरबंधित्तादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु पडिवक्खपयडीए बंधुवलंभादो । पुरिसवेद-मणुसगइ-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । णवरि मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छादिट्ठिम्हि तित्थयरसंतकम्मियम्मि णिरंतरो वि बंधो लब्भदि । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो, एदासिं पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । एदाओ पयडीओ बंधमाणमिच्छाइट्ठिस्स चत्तारि मूलपच्चया । णाणासमयउत्तरपच्चया एक्कवंचास, ओरालिय ओरालियमिस्स-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो । एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण दस अट्ठारस । सासणस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो । णाणासमयउत्तरपच्चया चउवेत्तालीस, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-

॥ ३४ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण दस सत्तारस। सम्मामिच्छाइट्ठिस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। णाणासमयउत्तरपच्चया चालीस, ओघेसु पच्चएसु ओरालिय-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण णव सोलस। असंजदसम्मादिट्ठिस्स मूलपच्चया तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो। णाणासमयउत्तरपच्चया बाएत्तालीस, ओघपच्चएसु ओरालिय-ओरालियमिस्स-इत्थि-पुरिसपच्चयाणमभावादो। एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया जहाकमेण णव सोलस। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, सेसगईणं बंधाभावादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणि सव्वे मणुसगइसंजुत्तं चेव बंधंति, सेसगईहि सह विरोहादो। एदासिं सव्वासिं पि पयडीणं बंधस्स णेरइया चेव सामी। बंधद्धाणं सुगमं। एदासिं णेरइयाणं गुणट्ठाणाणं चरिमाचरिमट्ठाणेसु बंधवोच्छेदो णत्थि। सव्वपयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अणादि-धुवणेरइयाणमभावादो। अथवा, पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुव-उवघाद-तेजा-कम्मइय-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, उवसमसेडीदो ओयरिय णिरयं पइट्ठम्मि सादि-अद्धुवबंधदंसणादो। सेसगुणट्ठाणेसु धुवं णत्थि, बंधवोच्छेदमकुणमाणसासणादीणमभावादो। सेसपयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो चेव, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ४५ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ४६ ॥

सव्वाणि बंधसामित्तसुत्ताणि देसामासियाणि त्ति दट्ठव्वाणि। तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा— अणंताणुबंधिचउक्कस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणचरिमसमयम्मि एदस्स समं बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणं णिरयगदीए उदओ णत्थि, विरोहादो। तदो एदासिं पुव्वं पच्छा वा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णिकासविरोहादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, सासणम्मि णट्ठबंधाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-अणंताणुबंधिचउक्काणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। णवरि अप्पसत्थविहायगदि-दुस्सराणं सासणसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चेव अत्थि। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-थीणगिद्धितियाणं परोदएणेव बंधो, एत्थ एदेसिमुदयाभावादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो, णेरइएसु एदेसिं पडिवक्खाणं उदयाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो। तिरिक्खाउअस्स णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधेण विणा बंधविरामुवलंभादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-तिरिक्खगइ-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, छसु पुढवीसु सांतरो होदूण सत्तमपुढविम्हि णिरंतरेणेव बंधदंसणादो। जदि पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदूण थक्कमाणबंधा सांतरबंधपयडी वुच्चदि तो उज्जोवस्स पडिवक्खबंधपयडीए अणुज्जोवसरूवाए अभावादो उज्जोवेण णिरंतरबंधिणा होदव्वमथ बंधविणासो अत्थि त्ति जदि सांतरत्तं वुच्चदि तो तित्थयराहारदुगाउआणं पि सांतरत्तं पसज्जदि त्ति? एत्थ परिहारो वुच्चदे— जं वुत्तं पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदूण थक्कमाणबंधा सांतरबंधि त्ति तं सांतरबंधीसु पडिवक्खपयडिबंधाविणाभावं दट्ठूण वुत्तं। परमत्थदो पुण एगसमयं बंधिदूण विदियसमए जिस्से बंधविरामो दिस्सदि सा सांतरबंधपयडी। जिस्से बंधकालो जहण्णो वि अंतोमुहुत्तमेत्तो सा णिरंतरबंधपयडि त्ति घेत्तव्वं। पच्चयपरूवणे कीरमाणे चउठाणियपयडिभंगो। णवरि तिरिक्खाउअस्स मिच्छाइट्ठिम्हि एगुणवंचास पच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। सेसाओ दुट्ठाणपयडीओ दुगइसंजुत्तं बंधंति। सव्वासिं पयडीणं णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे सादि-अद्धुवो। सेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो चेव। ॥ ३६ ॥

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ४७ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए बंधोदयवोच्छेददंसणादो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए णट्ठबंधाणमेदासिं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो। णवरि असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणस्स पुव्वावरबंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधं मोत्तूण उदयाभावादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं सोदओ बंधो। णवरि हुंडसंठाणस्स परोदओ वि, विग्गहगदीए तस्सुदयाभावादो। असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणस्स परोदओ बंधो, तत्थ संघडणस्सुदयाभावादो। मिच्छत्तस्स णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं तिण्णं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया चउट्ठाणियपयडिपच्चएहि समा। एदाओ पयडीओ चत्तारि वि दुगइसंजुत्तं बज्झंति। णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, धुवबंधित्ताभावादो।

मणुस्साउअस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ४९ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५० ॥

एदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो— एत्थ बंधोदयाणं पुव्वावरवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधं मोत्तूण उदयाभावादो। परोदएण बंधंति, णिरयगदीए मणुस्साउअस्स उदयविरोहादो। णिरंतरं बंधंति, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवण्णपच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। सासणस्स चोद्दाल असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया। सेसं सुगमं। मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ५१ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५२ ॥

तित्थयरबंधस्स उदयादो पुव्वं पच्छा वोच्छेदो होदि त्ति सण्णिकासो णत्थि, तित्थयरस्सेत्थुदयाभावादो। तेणेव परोदओ बंधो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया दंसणविसुज्झदा लद्धिसंवेगसंपण्णदा अरहंत-बहुसुद-पवयणभत्तिआदओ । मणुसगदिसंजुत्तं । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । बंधो सादि-अद्धुवो; अद्धुवबंधित्तादो ।

एवं तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयव्वं ॥ ५३ ॥

एदं बंधसामण्णं पडुच्च उत्तं । विसेसे पुण अवलंबिज्जमाणे भेदो अत्थि । तं भणिस्सामो–मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मिच्छाइट्ठिम्हि पढमाए पुढवीए बंधो णत्थि, सांतरो चेव; तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमभावादो । बिदियदंडयम्हि तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो णत्थि, सांतरो चेव, सत्तमपुढविं मुच्चा अण्णत्थ णिरयगदीए एदासिं णिरंतरबंधाभावादो । एसो भेदो पढम-बिदिय-तदियपुढवीसु । बिदिय-तदियपुढवीसु उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चेव बंधो, तत्थ अपज्जत्तकाले असंजदसम्माइट्ठीणं अभावादो । मणुसगइदुगं तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणं णिरंतरं, सेसाणं सांतरं । असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया, वेउव्वियमिस्सकम्मइयपच्चयाणमभावादो । एत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

चउत्थीए पंचमीए छट्टीए पुढवीए एवं चेव णेदव्वं । णवरि विसेसो तित्थयरं णत्थि ॥ ५४ ॥

तित्थयरस्स बंधो किमिदि णत्थि त्ति उत्ते तित्थयरं बंधमाणसम्माइट्ठीणं मिच्छत्तं गंतूण तित्थयरसंतकम्मेण सह बिदिय-तदियपुढवीसु व उप्पज्जमाणाणमभावादो । एदेणेव कारणेण मणुसगइदुगं मिच्छादिट्ठी सांतरं बंधइ । णत्थि अण्णो भेदो ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-[सुहा]सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ५६ ॥

॥ ३९ ॥ एदेण देसामासियसुत्तेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो— एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ तस्स असंभवादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एदेसिं धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेय-सरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो। सेसेसु सोदओ चेव, तेसिमेत्थ अपज्जत्तकाले अभावादो। पुरिसवेद-ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं परोदओ बंधो, एदेसिमुदयस्स एत्थ विरोहादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु एदासिमेगाणेगसमयबंधसंभवादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, एगाणेगसमयबंधसंभवादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बधो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। एदाओ पयडीओ बंधंतमिच्छाइट्ठिस्स मूलपच्चया चत्तारि। णाणासमय-उत्तरपच्चया एक्कवंचास। एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस अट्ठारस। सासणसम्मादिट्ठिस्स मूलपच्चया तिण्णि, णाणासमयउत्तरपच्चया चउवेत्तालीस, एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस सत्तारस। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मूलपच्चया तिण्णि, उत्तरपच्चया चालीस, एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया णव सोलस। एदाओ सव्वपयडीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो च तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति; सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तमुभयत्थ अण्णगईणं बंधाभावादो। णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसगुणट्ठाणेसु धुवबंधो णत्थि, बंधवोच्छेदमकुणमाणसासणादीण- ॥ ३२ ॥
मभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादिअद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ५८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणे चेव दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठिम्हि बंधे वोच्छिण्णे संते पच्छा असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभावादो । अणंताणुबंधिचउक्कस्स सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले एदासिमुदयाभावादो । सासणे सोदएणेव बंधो, तस्सेत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो । थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं परोदएणेव बंधो । कुदो ? विस्ससादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं णिरंतरो बंधो । कुदो ? एत्थ धुवबंधित्तादो । सेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधवोच्छेदुवलंभादो । पच्चया चउट्ठाणपयडिपच्चयसमा । एदाओ सव्वपयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति । णेरइया सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सासणम्मि सादि-अद्धुवो । सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६० ॥

एदस्स वक्खाणं णिरओघएगट्ठाणियवक्खाणतुल्लं । णवरि तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधदि त्ति वत्तव्वं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— एत्थ बंधादो उदओ पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभावादो। एदासिं परोदएणेव बंधो, णिरयगदीए उदयाभावादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया चउट्ठाणियपयडिपच्चयतुल्ला। मणुसगइसंजुत्तं सम्मामिच्छाइट्ठी-असंजदसम्मादिट्ठिणो बंधंति। णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुवबंधो, अद्धुवबंधित्तादो सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणिव्वाणुवगमणे णियमादो वा।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-[थिरा] थिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे— देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-उच्चागोदाणं तिरिक्खेसु उदयाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णिकासविरोहादो। अवसेसपयडीसु वि एस विचारो णत्थि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अत्थ गदीए एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय- चदुदंसणावरणीय- वेउव्विय - तेजा- कम्मइयसरीर- वण्ण - गंध - रस - फास- अगुरुवलहुव- [थिरा-] थिर - सुभासुभ - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । णिद्दा - पयला - सादासाद - अट्ठकसाय- पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - समचउरससंठाण - पसत्थविहायगइ - सुस्सराणं सव्वट्ठाणेसु - सोदय - परोदओ बंधो । णवरि जोणिणीसु पुरिसवेदबंधो परोदओ । उववादबंधो मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीणं सोदय - परोदओ, विग्गहगदीए-उववादस्सुदयाभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि- संजदासंजदाणं सोदओ चेव, तेसिमपज्जत्तकालाभावादो। परघादुस्सास - पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ, एदासिमपज्जत्तकाले उदयाभावादो । सेसदोगुणट्ठाणेसु सोदओ बंधो । णवरि जोणिणीसु असंजदसम्मादिट्ठी एदाओ सोदएणेव बंधदि, तत्थेदस्स अपज्जत्तकालाभावादो। तस - बादर - पज्जत्त - पंचिंदियजादीओ मिच्छाइट्ठी सोदय - परोदएण - बंधइ, पडिवक्खपयडीणं उदयसंभवादो । अवसेसा सोदएणेव, तत्थ पडिवक्खपयडीणमुदयाभावादो । पंचिंदियतिरिक्ख - पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त - पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सोदएणेव सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, एत्थ पडिवक्खपयडीणमुदयाभावादो । णवरि पंचिंदियतिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तस्स सोदय - परोदओ बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए उदयसंभवादो । सुभगादेज्ज - जसकित्तीणं मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - सम्मामिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदयपरोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो । संजदासंजदेसु सोदओ चेव, तत्थ पडिवक्खाणमुदयाभावादो । मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - सम्मामिच्छादिट्ठि- असंजदसम्मादिट्ठीसु अजसकित्तीए बंधो सोदय - परोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदंसणादो । संजदासंजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खपयडीए चेव उदयदंसणादो । देवगदि - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरअंगोवंग - देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी - उच्चागोदाणं परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो । पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - अट्ठकसाय - भय - दुगुंछा - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास- अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सादासाद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुभासुभ- जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि - सासणेसु सांतरो णिरंतरो च बंधो, पम्म - सुक्कलेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो । सेसगुणट्ठाणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदिय - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो, तेउ - पम्म - सुक्कलेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो । सेसुवरिमगुणट्ठाणेसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । समचउरससंठाणस्स बंधो मिच्छाइट्ठि - सासणेसु सांतर - णिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु तेउ - पम्म - सुक्कलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधदंसणादो । उवरिमगुणेसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । परघादुस्सासाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो बंधो, अपज्जत्तसंजुत्तबंधाभावादो तेउ - पम्म - सुक्कलेस्सिएसु संखेज्जवासाउएसु असंखेज्जवासाउएसु च णिरंतर-

बंधदंसणादो। उवरिमगुणेसु णिरंतरो बंधो, तत्थ अपज्जत्तस्स बंधाभावादो। पसत्थविहायगइए मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधदंसणादो। उवरिमगुणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। सुभ-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधदंसणादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। देवगदिदुग-वेउव्वियदुग-उच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो, सुहतिलेस्सियसंखेज्जासंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो बंधो। तिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठीणं मूलपच्चया चत्तारि। उत्तरपच्चया तेवंचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चयाणमभावादो। णवरि देवगइचउक्कस्स एक्कवंचास पच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस अट्ठारस। सासणस्स मूलपच्चया तिण्णि, उत्तरपच्चया अट्ठेत्तालीस। वेउव्वियचउक्कस्स छाएत्तालीस, पुव्विल्लाणं चेवाभावादो। एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया दस सत्तारस। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं मूलोघपच्चया चेव। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियकायजोगो असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सजोगा अवणेदव्वा। संजदासंजदे ओघपच्चया चेव। एवं चउव्विहाणं तिरिक्खाणं पच्चयपरूवणा कदा। णवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पुरिस-णवुंसयपच्चया अवणेदव्वा। असंजदसम्माइट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्ताणं, सासणो णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्ताणं, सेसा देवगइसंजुत्ताणं बंधया। सादावेदणीय-हस्स-रदीओ मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। एवं जसकित्तिं पि बंधंति, विसेसाभावादो। असादावेदणीय-अजसकित्तीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं। पुरिसवेदं मिच्छाइट्ठी सासणो च णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणमेवं चेव वत्तव्वं। देवगदि-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वे देवगइसंजुत्तं बंधंति। [वेउव्वियसरीर-] वेउव्वियसरीर-अंगोवंगाणि मिच्छाइट्ठी देव-णिरयगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं। थिर-सुभाणं सादभंगो। अथिर-असुहाणं असादभंगो। उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। सव्वासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा चेव सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, सेसेसु तिविहो, धुवाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधि-कोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइमणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो? को अबंधो? ॥६५॥

सुगममेदं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६६ ॥

एदेण सुत्तत्थाणं परूवणा कीरदे— थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सर-णीचागोदाणं तिरिक्खगईए उदयवोच्छेदो णत्थि, सासणे बंधवोच्छेदो चेव। णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदादो। अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिट्ठिचरिमसमयम्हि उभयवोच्छेददंसणादो। मणुसाउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं तिरिक्खगईए उदओ चेव णत्थि, विरोहादो। तेणेदासिं बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि। दुभग-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, सासणे वोच्छिण्णबंधाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सोदय-परोदएहि बंधो। णवरि तिरिक्खजोणिणीसु इत्थिवेदस्स सोदएणेव बंधो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो। मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदएणेव बंधो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावादो। तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए विणा अण्णत्थ उदयाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-मणुसगइ-चउसंठाण-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं णिरंतरो बंधो, जहण्णेण वि एगसमयबंधाणुवलंभादो। तिरिक्खगइ-ओरालियदुग-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइयाणं तेउ-वाउकाइय-सत्तमपुढवीणेरइएहिंतो आगंतूण पंचिंदियतिरिक्ख-तप्पज्जत्त-जोणिणीसु उप्पण्णाणं ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सणक्कुमारादिदेव-णेरइएहिंतो तिरिक्खेसुप्पण्णाणं च णिरंतरबंधदंसणादो। णवरि सासणे

सांतरो चेव, तस्स तेउ-वाउकाइएसु अभावादो सत्तमपुढवीदो तग्गुणेण णिग्गमणाभावादो च । ओरालियदुगस्स सांतर-णिरंतरो। एदासिं पच्चया सव्वगुणेसु पंचट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला । णवरि तिरिक्खमणुस्साउआणं मिच्छाइट्ठिम्हि कम्मइयपच्चओ णत्थि । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि । चउव्विहेसु तिरिक्खेसु सासणे ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले तस्साउबंधाभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं बंधओ। इत्थिवेदं णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, मणुसाउ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं, तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि देवगदीए विणा तिगइसंजुत्तं बंधंति । एदासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणादि-धुवाभावादो । सेसपयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ६८ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— मिच्छत्त-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठिं मोत्तूणेदासिं उवरिमेसु उदयाभावादो । णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं बंधवोच्छेदो चेव णोदयस्स, सव्वगुणेसुदयदंसणादो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गापुव्वीणं तिरिक्खगदीए उदयाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि । मिच्छत्तस्स सोदएणेव, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदएणेव, सेसाणं सोदय-परोदएहिं बंधो। णवरि पंचिंदियतिरिक्खतियम्मि एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदएण बंधो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु अपज्जत्तस्स परोदएण बंधो । जोणिणीसु णवुंसयवेदस्स परोदएण बंधो । मिच्छत्तणिरयाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधस्सुवरमाभावादो । सेसपयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तेवण्ण पच्चया । जोणिणीसु एक्कावण्ण पच्चया । णिरयाउअस्स तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु एक्कावण्ण पच्चया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु एगूणवंचास पच्चया । मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं, एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, असंपत्तसेवट्टसंघडणमपज्जत्तं च तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं मिच्छाइट्ठी बंधंति। एदासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स सादिओ अणादिओ धुवो अद्धुवो त्ति चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

अपच्चक्खाणकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ७० ॥

एदेण संगहिदत्थाणं पयासो कीरदे— एदासिं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, दोण्हमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि विणासुवलंभादो । सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्ता । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया तिरिक्खाणं पंचट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठी तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी देवगइसंजुत्तं बंधंति । तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो, सेसगुणेसु तिविहो, धुवाभावादो ।

देवाउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ७२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बंधोदयाणमेत्थ पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि, तिरिक्खगईए देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदएण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधो, बंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो। णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं जहाकमेण एक्कावण्ण-छादाल-बादाल-सत्तत्तीसपच्चया होंति। जोणिणीसु एगूणवंचास-चउवेदालीस-चालीस-पंचतीसपच्चया। सेसं सुगमं। सव्वे देवगइसंजुत्तं बंधंति। तिरिक्खा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। देवाउअस्स बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-[दुभग-]सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ७३ ॥

सुगमं।

सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ७४ ॥

थीणगिद्धितिय-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाणविरहिदपंचसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणविरहिदपंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-परघादुस्सासादावुज्जोव-दोविहायगइ-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोद-इत्थि-पुरिसवेदाणमपज्जत्तएसु उदयाभावादो अवसेसाणं पयडीणमुदयवोच्छेदाभावादो च पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दूभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइय-णीचागोदाणं सोदएणेव बंधो। णिद्दा-पयला-सादासाद-सोलसकसाय-छण्णोकसायाणं सोदय-परोद-

एणेव बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदएण-बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो। तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए चेव उदयादो। अण्णपयडीणं परोदएणेव बंधो; एत्थ एदासिमुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो एगसमएण बंधुवरमाभावादो च। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, तेउक्काइय-वाउक्काइएहिंतो पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरं बंधुवलंभादो, अण्णत्थ सांतरत्तदंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। एत्थ सव्वकम्माणं बादाल पच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-इत्थि-पुरिसोरालिय-मणवचिजोगाणमभावादो। णवरि-तिरिक्ख-मणुस्साउआणमिगिदालीस पच्चया, कम्मइयकायजोगेण सह चोद्दसण्णं पच्चयाणमभावादो। सेसं सुगमं। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणि-तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। कुदो? साभावियादो। अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। सव्वासिं पयडीणं बंधस्स तिरिक्खा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। अवसेसाणं सादिअद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरेत्ति। णवरि विसेसो, बेट्ठाणे अपच्चक्खाणावरणीयं यथा पंचिंदियतिरिक्खभंगो ॥ ७९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—ओघम्मि जासिं पयडीणं जे बंधया परूविदा ते चेव तासिं पयडीणं बंधया एत्थ वि होंति त्ति ओघमिदि उत्तं। सव्वट्ठाणेसु ओघत्ते संपत्ते तण्णिसेहट्ठं बेट्ठाणियपयडीणं अपच्चक्खाणावरणीयस्स च पंचिंदियतिरिक्खभंगो त्ति परूविदं। एदेण देसामासिएण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा—पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं गुणगयबंधसामित्तेण, बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारेण, सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरबंधविचारणाए, बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादि-आदि-विचारेसु वि ओघादो णत्थि भेदो। जत्थत्थि तं परूवेमो—मिच्छाइट्ठिस्स तेवण्ण पच्चया, सासणे अट्ठेत्तालीस,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्मामिच्छादिट्ठिम्हि बाएत्तालीस, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चोदालीस, वेउव्वियदुगाभावादो। मणुसिणीसु एवं चेव। णवरि सव्वगुणट्ठाणेसु पुरिस-णवुंसयवेदा, असंजदसम्माइट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-कम्मइया, अप्पमत्ते आहारदुगं णत्थि। मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं मणुसगइसंजुत्तं च बंधंति। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि-त्ति एदाओ एत्थ बेट्ठाणपयडीओ। ओघबेट्ठाणपयडीहिंतो जेण मणुस्साउ-मणुसदुग-ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणेहि अहियाओ तेण पंचिंदियतिरिक्खबेट्ठाणभंगो त्ति वुत्तं। एत्थ थीणगिद्धितिय-इत्थिवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ। अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणे दोण्णमुच्छेददंसणादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं मणुस्सेसुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि। णीचागोदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, बंधे सासणम्मि णट्ठे संते पच्छा संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेददंसणादो। मणुस्साउ-मणुस्सगईओ सोदएणेव बंधंति। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं परोदएणेव, मणुस्सेसु एदासिमुदयाभावादो। अवसेसाओ पयडीओ सोदय-परोदएण बज्झंति, अद्धुवोदयत्तादो काओ विग्गहगदीए उदयाभावादो का वि तत्थेवुदयादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। मणुस्साउ-तिरिक्खाउआणं पि णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो; सव्वत्थ सांतरस्स एदासिं बंधस्स आणदादिदेवेहिंतो मणुस्सेसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरत्तुवलंभादो। अवसेसाओ सांतरं बज्झंति, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। एदासिं पच्चया दोसु वि गुणट्ठाणेसु तिरिक्खबेट्ठाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कं च मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, इत्थिवेदं दो वि णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं, ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाइट्ठी तिगइसंजुत्तं, सासणो तिरिक्खमणुसगइसंजुत्तं बंधइ त्ति। सव्वासिं पयडीणं बंधस्स मणुसा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादिआदिविचारो वि ओघतुल्लो। णिद्दापयलाणं पुव्वंपच्छाबंधोदयवोच्छेद-सोदयपरोदय-सांतरणिरंतरं बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादिआदिबंधपरिक्खा ओघतुल्ला। पच्चया ॥ ४२ ॥

मणुसगईए परूविदपच्चयतुल्ला। मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठी तिगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति। मणुस्सा सामी। सादावेदणीयपरिक्खा वि मूलोघतुल्ला। णवरि पच्चयभेदो सामिभेदो च णायव्वो। मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सादावेदणीयं णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति। एवं सव्वपदेसु पच्चयसंजुत्तसामित्तभेदो चेव। सो वि सुगमो। अण्णत्थ मूलोघं पेच्छिदूण ण कोत्थि भेदो अत्थि त्ति ण परूविज्जदे। णवरि पंचिंदिय-तस-बादराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ सांतर-णिरंतरो। मणुसपज्जत्तएसु अपज्जत्तबंधो परोदओ। एवं मणुसिणीसु वि वत्तव्वं। णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ बंधो। पुरिस-णवुंसयवेदाणं सव्वत्थ परोदओ। इत्थिवेदस्स सोदओ। खवगसेडीए तित्थयरस्स णत्थि बंधो, इत्थिवेदेण सह खवगसेडिसमारोहणे संभवाभावादो।

मणुसअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ ७६ ॥

एदं बज्झमाणपयडिसंखाए समाणत्तं पेक्खिय ओघभंगो (पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो) त्ति वुत्तं। पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे भेदो उवलब्भदे। तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्तं-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साधारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणि त्ति एदाओ एत्थ बज्झमाणपयडीओ। एत्थ थीणगिद्धितिय-इत्थि-पुरिसवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाणविरहिदपंचसंठाण-असंपत्तसेवट्टवदिरित्तपंचसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उदयाभावादो बंधोदयाणं संतासंताणं सण्णिकासाभावादो पुव्वं पच्छा बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। सेसपयडीणं पि बंधस्सेव एत्थ उदयस्स वोच्छेदाभावादो ण कीरदे। पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। णिद्दा-पयला-सादासाद-वावीसकसाय-ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदएण बंधो, अङ्गु-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वोदयत्तादो, कासिं च विग्गहगदीए उदयाभावादो एक्किस्से विग्गहगदीए चेव उदयत्तादो । अवसिट्ठाओ पयडीओ परोदएणेव बज्झंति । पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तिरिक्ख - मणुस्साउ - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधेण धउव्वियादो । अवसेसाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधस्स विरामदंसणादो । [तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी -] णीचागोदाणं बंधस्स सांतर - णिरंतरत्तं किण्ण उच्चदे ? ण, तेउ - वाउकाइयाणं सत्तमपुढवीणेरइयाणं च मणुसेसुप्पत्तीए अभावादो । तिरिक्खअपज्जत्ताणं व पच्चया परूवेदव्वा । तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदियजादि - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - थावर - सुहुम - साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति । मणुस्साउ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । मणुस्सा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं सादिआदिपरूवणा च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपरूवणाए तुल्ला ।

देवगदीए देवेसु पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - सादासाद - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - मणुसगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरसंठाण - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - वण्ण - गंध - रस - फास - मणुसाणुपुव्वि - अगुरुअलहुव - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगदि - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ७७ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो— मणुसगइ - ओरालियसरीर - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - अजसकित्तीणमुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे । ण सेसाणं पि, बंधस्सेव उदयस्स वोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - पंचिंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुअ - तस - बादर - पज्जत्त - थिराथिर - सुभासुभ - सुभग - आदेज्ज - जसकित्ति - णिमिण - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं सोदएणेव बंधो । णिद्दा - पयला -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। समचउरससंठाण-पत्तेयसरीर-उवघादाणं सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावादो। परघादुस्सास-पसत्थविहायगदि-सुस्सराणं सोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधदंसणादो। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिस्स एदासिं सोदएण बंधो। मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणं परोदएणेव बंधो, तत्थेदेसिमुदयविरोहादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-उस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, देवगदीए बंधविरामाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसअजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधविरामुवलंभादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सांतरो बंधो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुव्वी-ओरालियसरीरअंगोवंग-तसाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। णवरि मणुअदुगस्स सासणम्मि सांतर-णिरंतरो। मिच्छाइट्ठिस्स बावण्ण, सासणस्स सत्तेतालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स तेत्तालीस देवेसु पच्चया; ओघपच्चएसु णवुंसयवेदोरालियदुगाणमभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स एक्केत्तालीस पच्चया, ओघपच्चएसु णवुंसयवेदोरालियकायजोगाणमभावादो। सेसं सुगमं। एदाओ सव्वपयडीओ सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, तत्थ तिरिक्खगईए बंधाभावादो। मणुसगइ-मणुसाणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अविरोहादो। सव्वपयडीणं बंधस्स देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणासो च सुगमो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवव्वियाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वगुणेसु सादि-अद्धुवो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ७९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८० ॥

अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणम्मि उभयाभावदंसणादो। इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणम्मि वोच्छिण्णबंधित्थिवेदस्स असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो। अथवा, देवगदीए बंधो चेव वोच्छिज्जदि णोदओ, तदुदयविरोहिगुणट्ठाणाभावादो। एदमत्थपदमण्णत्थ वि जोजेयव्वं। थीणगिद्धितिय-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं देवेसुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वं पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदा सोदय-परोदएण, अवसेसाओ पयडीओ परोदएणेव बज्झंति। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो। अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। कयावि दो-तिण्णिसमयादिकालपडिबद्धबंधदंसणादो सांतर-णिरंतरबंधो किण्ण उच्चदे? ण, एदासु पयडीसु णिरंतरबंधणियमाभावादो। एदासिं पयडीणं पच्चया देवगइचउट्ठाणपयडिपच्चयतुल्ला। णवरि तिरिक्खाउअस्स पुव्विल्लपच्चएसु वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्खमणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अविरोहादो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणादिधुवत्ताभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ८१ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयमुवलंभिय उवरि तदणुवलंभादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावराणमेत्थुदयाभावादो बंधोदयाणं-पुव्वापुव्ववोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। मिच्छत्तं सोदएण, अण्णाओ पयडीओ परोदएणेव बज्झंति, तहोवलंभादो। मिच्छत्तं णिरंतरं बज्झइ, धुवबंधित्तादो। अवराओ सांतरं बज्झंति, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। एदासिं पच्चया देवचउट्ठाणपयडिपच्चयतुल्ला। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्त-सेवट्टसंघडणाणि तिरिक्खमणुसगइसंजुत्तं, एइंदियजादि-आदाव-थावराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति, साभावियादो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मणुस्साउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८४ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— देवेसु मणुस्साउअस्स उदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वावरवोच्छेदपरिक्खा णत्थि। परोदएण बंधंति, मणुस्साउअस्स देवेसु उदयभावविरोहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं जहाकमेण पंचास पंचेत्तालीस (एक्केत्तालीस) पच्चया, सग-सगोघपच्चएसु ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णउंसयवेदपच्चयाणमभावादो। मणुसगइसंजुत्तं। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधाभावट्ठाणं च सुगमं। सम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किण्ण मरंति ? तत्थाउअस्स बंधाभावादो। मा बंधउ आउअं, पुव्वमण्णगुणट्ठाणम्हि आउअं बंधिय पच्छा सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जिय तेण गुणेणण्णं कालं करेदि ? ण, जेण गुणेणाउबंधो संभवदि तेणेव गुणेण मरदि, ण अण्णगुणेणेत्ति परमगुरूवदेसादो। ण उवसामगेहि अणेयंतो, सम्मत्तगुणेण आउअबंधाविरोहिणा णिस्सरणे विरोहाभावादो। सादि अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ८५ ॥

सुगमं।

असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ८६ ॥

एत्थ बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, उदयाभावादो। तेणेव कारणेण परोदए बज्झइ। णिरंतरो तित्थयरबंधो, एगसमएण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधुवरमाभावादो । दंसणविसुज्झदा-लद्धिसंवेगसंपण्णदा-अरहंताइरिय-बहुसुद-पवयणभत्तीओ तित्थयरकम्मस्स विसेसपच्चया । सेसं सुगमं । मणुसगइसंजुत्तो बंधो । देवा सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एत्थ बंधविणासो णत्थि । सादि-अद्धुवो बंधो, अणादि-धुवभावेण अवट्ठिदकारणाभावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवाणं देवभंगो । णवरि विसेसो तित्थयरं णत्थि ॥ ८७ ॥

एदेण सुत्तेण देसामासिएण 'तित्थयरं णत्थि' त्ति बज्झमाणपयडिभेदो चेव परूविदो पुहसुच्चारणाए । समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीर-पसत्थविहायगदि-सुस्सरणामाओ असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदएणेव बज्झंति । वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया असंजदसम्मादिट्ठिम्हि अवणेदव्वा, भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिएसु सम्मादिट्ठीणमुववादाभावादो । पंचिंदिय-तसणामाओ मिच्छादिट्ठिम्हि सांतरं बज्झइ, एइंदिय-थावरपडिवक्खपयडीणं संभवादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सांतरं बंधंति । ओरालियसरीरअंगोवंगं मिच्छाइट्ठिणो सांतरं बंधंति । एसो भेदो संतो वि ण कहिदो । एवंविधं भेदं संतमकहंतस्स कधं सुत्तभावो ण फिट्टदे ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु एवंविहभावाविरोहादो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाणं देवभंगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो—जधा देवोघम्मि सव्वपयडीओ परूविदाओ तहा एत्थ वि परूवेदव्वाओ । एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थो उच्चदे—पंचिंदिय-तसणामाओ मिच्छाइट्ठी देवोघम्मि सांतर-णिरंतरं बंधंति, सणक्कुमारादिसु एइंदिय-थावरबंधाभावेण णिरंतरबंधोवलंभादो । एत्थ पुण सांतरमेव बंधंति, पडिवक्खपयडिभावं पडुच्च एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइदुगं देवोघम्मि सांतर-णिरंतरं बंधंति, सुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगस्स णिरंतरबंधदंसणादो । एत्थ पुण सांतरं बंधंति, मणुसगइदुगणिरंतरबंधकारणाभावादो । ओरालियसरीरअंगोवंगं देवोघम्मि मिच्छाइट्ठी सांतर-णिरंतरं बंधंति, सणक्कुमारादिसु णिरंतरबंधुवलंभादो । एत्थ पुण सांतरमेव, थावरबंधकाले अंगोवंगस्स बंधाभावादो त्ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाणं पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ८९ ॥

णवरि एत्थ पुरिसवेदस्स सोदएण बंधो, अण्णवेदस्सुदयाभावादो । णवुंसयवेदस्स पढमाए पुढवीए सोदएण बंधो, एत्थ पुण

परोदएण। पच्चएसु णउंसयवेदो इत्थिवेदेण सह अवणेदव्वो। सासणसम्माइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया पक्खिविदव्वा, णेरइयसासणेसु तेसिमभावादो। सदार-सहस्सारदेवेसु मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइदुगं सांतर-णिरंतरं बंधंति, तत्थ-तणसुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगं मोत्तूण तिरिक्खगइदुगस्स बंधाभावादो।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ९० ॥

सुगममेदं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सूइदत्थे भणिस्सामो— मणुसगइ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणमुदयाभावादो सेसपयडीणं उदयवोच्छेदाभावादो च बंधोदयाणं पच्छापच्छोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतरायइयाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सरणामाओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सोदय-परोदएण बंधंति। सम्मामिच्छाइट्ठिणो सोदएणेव बंधंति, तेसिमपज्जत्तकालाभावादो। मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्साणुपुव्वी-अजसकित्तीणं परोदएणेव बंधो, देवेसु एदासिं बंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

ओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सांतरं बंधंति, एगसमएण-बंधविरामुवलंभादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो णिरंतरं बंधंति, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। एदासिं पच्चया देवोघपच्चयतुल्ला। णवरि सव्वत्थ इत्थिवेदपच्चओ अवणेदव्वो। सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईणं बंधाभावादो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ९२ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणम्मि तदुभयवोच्छेददंसणादो। अवसेसाणं बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, तासिमेत्थुदयाभावादो। अणंताणुबंधिचउक्कस्स सोदय-परोदएण-बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। अवसेसाणं पयडीणं परोदएणेव, एत्थ तासिं बंधेणुदयस्स अवट्ठाणविरोहादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधविरामदंसणादो। पच्चयाणं सहस्सारभंगो। सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छादिट्ठिस्स चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ दुविहो, अणादि-धुवाभावत्तादो। सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९५ ॥

॥ ५८ ॥ एदस्स अत्थो वुच्चदे— मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो। अवसेसाणं बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, एत्थेयंतेणेदासिमुदयाभावादो। मिच्छत्तं सोदएण बज्झइ। कुदो? साभावियादो। अवसेसाओ पयडीओ परोदएण। मिच्छत्तं णिरंतरं बज्झइ, धुवबंधित्तादो। अवसेसाओ सांतरमद्धुवबंधित्तादो। पच्चया सहस्सारपच्चयतुल्ला। मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो अद्धुवबंधित्तादो।

मणुस्साउअस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ९६ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्थो— बंधोदयाणं वोच्छेदपरिक्खा एत्थ णत्थि, उदयाभावादो। परोदएण बज्झइ, बंधेणुदयस्स एत्थ अवट्ठाणविरोहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवंचास, सासणस्स चउएत्तालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया। मणुसगइसंजुत्तं। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

तित्थयरणामकम्मस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ९८ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बंधोदयाणं वोच्छेदविचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो। परोदएण बंधो, सव्वत्थ तित्थयरकम्मबंधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो। णिरंतरो बंधो, संखेज्जावलियादिकालेण विणा एगसमएण बंधुवरमाभावादो। एदस्स पच्चया ॥ ५८ ॥
देवोघपच्चयसमा। उत्तरोत्तरपच्चया पुण अरहंताइरिय-बहुसुद-पवयणभत्ति-लद्धिसंवेगसंपत्ति-दंसणविसुद्धि-पवयणप्पहावणादओ। मणुसगइसंजुत्तो बंधो। देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को? बंधो को अबंधो?॥१००॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्स अत्थो परूविज्जदे—मणुसाउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं उदयाभावादो अवसेसाणं च पयडीणमुदयवोच्छेदाभावादो 'बंधादो उदयस्स किं पुव्वं किं वा पच्छा वोच्छेदो होदि' त्ति एत्थ परिक्खा णत्थि। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पुरिसवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधुवलंभादो। समचउरससंठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणं पि सोदय-परोदएण बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधदंसणादो। मणुसाउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-णित्थयराणं परोदएण बंधो, एत्थेदासिमुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-मणुसाउ-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइ-

याणं णिरंतरो बंधो, एदासिमेगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमादो। एत्थ असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बाएत्तालीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियदुगित्थिणवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो। सेसं सुगमं। एदासिं पयडीणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो। देवा सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधविणासो एत्थ णत्थि। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १०२ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, बज्झमाणपयडीणं संखमवेक्खिय अवट्ठिदत्तादो। तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा—एत्थ ताव बज्झमाणपयडिणिद्देसं कस्सामो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ एत्थ बज्झमाणियाओ। एइंदियमस्सिदूण एदासिं परूवणं कस्सामो—इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-अणंतिमपंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-दोविहायगदि-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं उदयाभावादो सेसाणमुदयवोच्छेदाभावादो 'उदयादो बंधो किं पुव्वं वोच्छिज्जदि किं पच्छा वोच्छिज्जदि' त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयदंसणादो। सादासाद-सोलसकसाय-छण्णोकसाय-आदावुज्जोव-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघादाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवलंभादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय-परोदओ,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गहिदसरीरेसु उदयाभावे वि बंधदंसणादो। परघादुस्सासाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, अपज्जत्तद्धाए उदयाभावे वि बंधदंसणादो। अवसेसाणं परोदओ बंधो, एत्थ तासिं सव्वदो उदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिए-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो, सव्वेइंदिएसु सांतरबंधाणमेदासिं तेउ-वाउकाइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरं? एइंदिएसुप्पण्णदेवाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरबंधदंसणादो। एइंदिएसु मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगभेदेण चत्तारि मूलपच्चया। पंच मिच्छत्तपच्चया। कुदो? पंचमिच्छत्तेहि सह णाणामणुस्साणमेइंदिएसुप्पण्णाणं पंचमिच्छत्तुवलंभादो। एगो एइंदियासंजमो, छप्पाणासंजमा, कसाया सोलस, इत्थि-पुरिसवेदेहि विणा णोकसाया सत्त, ओरालियदुग-कम्मइयमिदि तिण्णि जोगा, एदे सव्वे वि अट्ठत्तीस उत्तरपच्चया। णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं कम्मइयपच्चएण विणा सत्तत्तीस पच्चया। एक्कारस अट्ठारस एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-(तीइंदिय?) चउरिंयजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुव्वी-उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइ-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति, दुगईहि विरोहाभावादो। एइंदिया सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो। एवं बादरएइंदियाणं। णवरि बादरं सोदएण बज्झदि। सुहुमस्स परोदओ बंधो। बादरएइंदियपज्जत्ताणं बादरेइंदियभंगो। णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो। बादरएइंदियअपज्जत्ताणं पि बादरएइंदियभंगो। णवरि थीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पज्जत्त-जसकित्तीणं परोदओ बंधो। अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमेइंदिएसु सांतर-णिरंतरो बंधो। एत्थ पुण सांतरो चेव, अपज्जत्तेसु देवाणमुप्पत्तीए अभावादो। ओरालियकायजोगपच्चओ णत्थि। सुहुमएइंदियाणं एइंदियभंगो। णवरि परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुववादाभावादो। बादर-आदावुज्जोव-जसकित्तीणं

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परोदओ बंधो। सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं (सुहुमेइंदियभंगो। णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो। सुहुमेइंदियअपज्जत्ताणं) सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो। णवरि थीणगिद्धितिय - परघादुस्सास - पज्जत्ताणं परोदओ बंधो। अपज्जत्तणामस्स सोदओ। पच्चएसु ओरालियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो। संपधि बीइंदियाणं भणामो— इत्थि - पुरिसवेद - मणुस्साउ - मणुसगइ - एइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि -अणंतिमपंचसंठाण - पंचसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदाव - पसत्थविहायगदि - थावर - सुहुम - साहारणसरीर - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - उच्चागोदाणमुदयाभावादो सेसपयडीणं चोदयवोच्छेदाभावादो बेइंदिएसु पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएहि बज्झमाणपयडीओ बंधमाणेसु 'बंधादो उदओ किं पुव्वं किं वा पच्छा वोच्छिण्णो' त्ति विचारो णत्थि। पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - मिच्छत्त - णवुंसयवेद - तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - बीइंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुअ - तस - बादर - थिराथिर - सुभासुभ - दुभग - अणादेज्ज - णिमिण - णीचागोद - पंचंतरायइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो। णिद्दाणिद्दा - पयलापयला - थीणगिद्धि - णिद्दा - पयला - सादासाद - सोलसकसाय - छण्णोकसाय - पज्जत्तापज्जत्त - जस - अजसकित्तीणं सोदय - परोदओ बंधो, उभयथा वि बंधस्स विरोहाभावादो। ओरालियसरीर - हुंडसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - असंपत्तसेवट्टसंघडण - उवघाद - पत्तेयसरीराणं पि सोदय - परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवलंभादो। तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वीए वि सोदय - परोदओ बंधो, विग्गहगदीदो अण्णत्थ उदयाभावे वि बंधदंसणादो। परघादुस्सासुज्जोव - अप्पसत्थविहायगइ - दुस्सराणं पि सोदय - परोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि बंधदंसणादो, उज्जोवस्स उज्जोवोदयविरहिदाविरहिदेसु बंधुवलंभादो। इत्थि - पुरिस - मणुस्साउ - मणुसगइ - एइंदिय तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - अणंतिमपंचसंठाण - पंचसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदाव - पसत्थविहायगइ - थावर - सुहुम - साहारणसरीर - सुभग - सुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो। पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तिरिक्ख - मणुस्साउ - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुव - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। दोण्णमाउआणं णिरंतरो, एगसमएण वोच्छेदाभावादो। सादासाद - सत्तणोकसाय - मणुसगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - छसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - परघादुस्सास - आदावुज्जोव - दोविहायगइ - तस - थावर - बादर - सुहुम - पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएणेदासिं बंधुवरमदंसणादो। परघादुस्सास - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणमेइंदिएसु व सांतर - णिरंतरो बंधो बीइंदिएसु किण्ण परूविदो? ण, देवाणमेइंदिएसु व विगलिंदिएसु उववादाभावादो। तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - णीचागोदाणं सांतर - णिरंतरो बंधो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइएहिंतो बीइंदिएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालमेदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो। एदासिं मूलपच्चया चत्तारि। पंच मिच्छत्त, दोइंदियासंजमा, छप्पाणासंजमा, सोलस कसाया, सत्त णोकसाया, चत्तारि जोगा, सव्वेदे बीइंदियस्स चालीसुत्तरपच्चया। णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं कम्मइयपच्चएण विणा एगूणचालीस पच्चया। एक्कारस अट्ठारस एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो। मणुस्साउ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो बंधो। सेसाणं पयडीणं तिरिक्ख-मणुस्सगइसंजुत्तो बंधो। कुदो? दोहि गदीहि सह विरोहाभावादो। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। धुवियाणं चउव्विहो बंधो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो। एवं पज्जत्ताणं। णवरि पज्जत्तणामस्स सोदओ, अपज्जत्तणामस्स परोदओ बंधो। एवमपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं। णवरि थीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-पज्जत्त-दुस्सर-जसकित्तीणं परोदओ बंधो। अपज्जत्त-अजसकित्तीणं सोदओ। अपज्जत्ताणमट्ठत्तीस पच्चया, ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो। तीइंदियाणं तीइंदियपज्जत्ताणं तेइंदियअपज्जत्ताणं च बीइंदिय-बीइंदियपज्जत्त-बीइंदियअपज्जत्तभंगो। णवरि घाणिंदिएण सह तेइंदियपज्जत्ताणमेक्केतालीस पच्चया। अपज्जत्ताणमेगूणचालीस, ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो। तीइंदियणामस्स सोदओ बंधो। अवसेसिंदियणामाणं परोदओ। चउरिंदियाणमेवं चेव वत्तव्वं। णवरि चउरिंदियजादिबंधो सोदओ। सेसिंदियजादिबंधो परोदओ। बादालीसुत्तरपच्चया, चक्खिंदियप्पवेसादो। अपज्जत्ताणं चालीस पच्चया, ओरालियकायासच्चमोसवचिजोगाणमभावादो। पंचिंदियअपज्जत्ताणं भणिस्सामो— एत्थ बज्झमाणपयडीओ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि बज्झमाणाओ चेव, ण अण्णाओ। एत्थ एदासिं उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-मिच्छत्त-णवुंसयवेद-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादासाद-सोलसकसाय-छणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सोदय-परोदओ बंधो; उदएण विणा वि, संते वि उदए बंधुवलंभादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडण-उवघाद-पत्तेयसरीराणं सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि अण्णत्थ उदए संते वि बंधदंसणादो। थीणगिद्धितिय-इत्थि-पुरिसवेद-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-थावर-सुहुम-पज्जत्त-साहारणसरीर-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं परोदएण बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो। पंचणाणावरणीय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तिरिक्खाउ - मणुस्साउ - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ एदासिं धुवबंधित्तादो । सादासाद - सत्तणोकसाय - मणुसगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - छसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - परघादुस्सास - आदावुज्जोव - दोविहायगइ - तस - थावर - बादर - सुहुम - पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - दुस्सर - सुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएणेदासिं बंधुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - णीचागोदाणं सांतर - णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, तेउ - वाउकाइएहिंतो पंचिंदियअपज्जत्तएसुप्पण्णाणमंतोमुहुत्तकालमेदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो । पंचिंदियअपज्जत्ताणमेदाओ पयडीओ बंधमाणाणं पंच मिच्छत्ताणि, बारस असंजम, सोलस कसाय, सत्त णोकसाय, दोण्णि जोग त्ति बादालीस पच्चया होंति । तिरिक्ख - मणुस्साउआणं एक्केतालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो । सेसं सुगमं । तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदियजादि - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - थावर - सुहुम - साहारणसरीराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुस्साउ - मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं पयडीणं बंधो तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तो । पंचिंदियअपज्जत्ता सामी । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि । पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुव - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो । सेसाणं सादि - अद्धुवो ।

पंचिंदिय - पंचिंदियपज्जत्तएसु पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - जसकित्ति - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १०३ ॥

एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । तं जहा— किं मिच्छाइट्ठी बंधओ किं सासणो बंधओ किं सम्मामिच्छाइट्ठी बंधओ किमसंजदसम्माइट्ठी बंधओ किं संजदासंजदो किं पमत्तो किमप्पमत्तो किमपुव्वो किमणियट्टी किं सुहुमसांपराइयओ किमुवसंतकसाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिभडारओ बंधओ त्ति एवमेसो एगसंजोगो । संपधि एत्थ दुसंजोगादीहि अक्खसंचारं करिय सोलहसहस्स - तिण्णिसय - तेयासीदि - पण्णभंगा उप्पाएयव्वा । किं पुव्वमेदासिं बंधो वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि समं वोच्छिज्जंति एवमेत्थ तिण्णि भंगा । किं सोदएण बंधो किं परोदएण किं सोदय - परोदएण एत्थ वि तिण्णि भंगा । किं सांतरो बंधो किं णिरंतरो किं सांतर - णिरंतरो त्ति एत्थ वि तिण्णेव भंगा । एदासिं किं मिच्छत्तपच्चओ बंधो किमसंजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं जोगपच्चओ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधो त्ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हभंगा हवंति। एयंत - विवरीय - मूढ - संदेह - अण्णाणमिच्छत्त - चक्खु - सोद - घाण - जिब्भा - फास - मण - पुढवीकाइय - आउकाइय - तेउकाइय - वाउकाइय - वणप्फदिकाइयं - तसकाइयासंजम - सोलसकसाय - णवणोकसाय - पण्णारसजोगपच्चए ठविय चोद्दससदएक्केतालीसकोडाकोडी - पण्णारसलक्ख - अट्ठारहसहस्स - अट्ठसय - सत्तकोडी - अट्ठवंचासलक्ख - वंचवंचाससहस्स - अट्ठसय-एक्कहत्तरिउत्तरपच्चयपण्णभंगा उप्पाएदव्वा१४४१११५१८८०७५८५५८७१ । किं णिरयगइसंजुत्तं बज्झंति किं तिरिक्खगइसंजुत्तं किं मणुस्सगइसंजुत्तं [किं देवगइसंजुत्तं] इदि एत्थ पण्णारस पण्हभंगा उप्पाएदव्वा । अद्धाणभंगपमाणं सुगमं । किमप्पिदगुणट्ठाणस्सादिए मज्झे अंते बंधो वोच्छिज्जदि त्ति एक्केक्कम्हि गुणट्ठाणे तिण्णि तिण्णि भंगा उप्पाएयव्वा । सव्वबंधवोच्छेदपण्हसमासो बाएत्तालीस । किं सादिओ बंधो किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो त्ति एत्थ पण्णारस पण्हभंगा उप्पाएयव्वा ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धि-संजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०४ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - पंचंतराइयाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्हि णट्ठबंधाणमेदासिं खीणकसायचरिमसमयम्हि उदयवोच्छेदुवलंभादो । जसकित्तीए उच्चागोदस्स य पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्मि णट्ठबंधाणं अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदुवलंभादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु अजसकित्तीए वि उदयदंसणादो । उवरि सोदएणेव, पडिवक्खुदयाभावादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति उच्चागोदस्स सोदय - परोदएण बंधो, एदेसु णीचागोदस्स वि उदयदंसणादो । उवरि सोदओ, पडिवक्खुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु वि एगसमएण बंधवोच्छेदाभावादो । जसकित्तीए सांतर-णिरंतरो बंधो, मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एदेसु पडिवक्खपयडिबंधदंसणादो; उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु, संखेज्जवासाउअसुहतिलेस्सिएसु णिरंतरबंधदंसणादो । उवरिमगुणेसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चयाणं मूलोघभंगो । गइसंजुत्तादि उवरि जाणिय वत्तव्वं । ॥ ६५ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो? को अबंधो?॥१०५॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०६ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदेसु जहासंखाए बंधोदयवोच्छेददंसणादो । अणंताणुबंधिचउक्कस्स दो वि समं वोच्छिज्जंति, सासणे तदुभयाभावदंसणादो । इत्थिवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणाणियट्टीसु जहासंखाए बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु तेसिं दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । चउसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासण-सजोगीसु तेसिं दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । एवं चदुसंघडणाणं वत्तव्वं, सासणे फिट्टबंधाणमप्पमत्तुवसंतकसाएसु पढम-बिदियसंघडणदुगोदयवोच्छेददंसणादो । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-दुभग-अणादेज्जाणं वत्तव्वं, सासण-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । एवमप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं वत्तव्वं, सासण-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो । थीणगिद्धितियादीणं सव्वासिं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथा वि विरोहाभावादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइयचरपंचिंदियमिच्छाइट्ठीसु सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । सेसाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पचया ओघपच्चयतुल्ला । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि दो वि तिरिक्खगइसंजुत्तं, इत्थिवेदं णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तं, चउसंठाण-चउसंघडणाणि दो वि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी तिगइसंजुत्तं बंधइ देवगईए विणा, सासणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं । सेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं सासणो तिगइसंजुत्तं । सेसं चिंतिय वत्तव्वं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिद्दा-पयलाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठसुद्धिसंजदेसु उवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरण-संजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—बंधो एदासिं पुव्वं वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्व-खीणकसाएसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चयतुल्ला । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं, सेसा देवगइसंजुत्तं । गइसामित्तद्धाणबंधवोच्छेदट्ठाणाणि सुगमाणि । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो बंधो । सेसेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १०९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११० ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—बंधो पुव्वं पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सजोगिकेवलि-अजोगिकेवलीसु जहाकमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदएण बंधो, सव्वगुणट्ठाणेसु अद्धुवोदयत्तादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चयतुल्ला । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह सादबंधाभावादो । सेसं सव्वमोघतुल्लं ।

॥ ६७ ॥

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १११ ॥

[सुगमं]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११२ ॥

असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, पमत्त-अजोगिकेवलीसु जहाकमेण-बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। एवमरदि-सोगाणं वत्तव्वं, पमत्तापुव्वकरणेसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवं चेव अथिर-असुहाणं वत्तव्वं, पमत्त-सजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, पमत्तसंजद-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, परावत्तणोदयत्तादो। अथिरासुहाणं सव्वत्थ सोदएण बंधो, धुवोदयत्तादो। अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-परोदएण बंधो, एदेसु पडिवक्खोदएण वि बंधुवलंभादो। उवरि परोदएण, जसकित्तीए चेव तत्थोदयदंसणादो। एदासिं छण्हं पयडीणं सांतरो बंधो, दो-तिण्णिसमयादिकालपडिबद्ध-बंधणियमाभावादो। पच्चया सुगमा। एदाओ छप्पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दुगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तं बंधंति। उवरि ओघभंगो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ११३ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११४ ॥

'एदे बंधा' त्ति णिद्देसो अणत्थओ, अवगदत्थपरूवणादो। ण एस दोसो, मेहावज्जियजणाणुग्गहट्ठणिद्देसादो। मिच्छत्त-अपज्जत्ताणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयवोच्छेददंसणादो। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणमेस विचारो णत्थि, पंचिंदिएसु तेसिमुदयाभावादो। णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स वि एसो विचारो णत्थि त्ति वत्तव्वं। णवुंसयवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि-अणियट्टिगुणेसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवं णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीणं वत्तव्वं, मिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवं हुंडसंठाणस्स ॥ ६८ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठि-सजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। एवमसंपत्तसेवट्टसंघडणस्स वि वत्तव्वं, मिच्छाइट्ठि-अप्पमत्तेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। मिच्छत्तस्स सोदएण बंधो, धुवोदयत्तादो। णवुंसयवेद-अपज्जत्ताणं सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो, तत्थ तदुदयाभावादो। हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं सोदय-परोदओ बंधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधदंसणादो सव्वेसिं तदुदयणियमाभावादो वा। णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदओ बंधो, पंचिंदिएसु एदासिमुदयविरोहादो उदएण सह बंधस्स उत्तिविरोहादो। मिच्छत्त-णिरयाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सेसाणं पयडीणं सांतरो, णिरंतरबंधे णियमाभावादो। पच्चया सुगमा। मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं, णउंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, अपज्जत्तासंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्वपयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं। सेसमोघं।

अपच्चक्खाणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ११५॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११६ ॥

मणुस्साणुपुव्वी-अपच्चक्खाणचउक्काणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो। मणुसगईए पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठि-अजोगिकेवलीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणमेवं चेव वत्तव्वं, असंजदसम्मादिट्ठि-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। अपच्चक्खाणचउक्कादीणं सोदय-परोदएण बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्ख-मणुस्सेसु सांतरस्स आणदादिदेवेसु णिरंतरत्तुवलंभादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, एगसमएण तत्थ बंधुवरमाभावादो। वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतरो बंधो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पच्चया सुगमा। उवरि मूलोघभंगो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पच्चक्खाणावरणकोध-माण-माया-लोभाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगमं ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिबादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा बंधा । अणियट्टि-बादरद्धाए सेसे संखेज्जाभागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२० ॥

एदं पि सुगमं ।

माण-माया-संजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १२१ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२२ ॥

सुगमं ।

लोभसंजलणस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १२३ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा। अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२४ ॥

सुगमं।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ १२५ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२६ ॥

एदं पि सुगमं।

मणुस्साउअस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ १२७ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२८ ॥

सुगमं।

देवाउअस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ १२९ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३० ॥

सुगमं।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा । अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, अपुव्वकरणासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्जाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्वकरणाजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । तेजा-कम्मइय-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुस्सर-णिमिणणामाणमेवं चेव वत्तव्वं, अपुव्वकरण-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, उदए संते एदासिं बंधविरोहादो । पंचिंदिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिणाणं सोदएणेव बंधो, धुवोदयत्तादो । परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-आदेज्जाणं सोदय-परोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे पि बंधुवलंभादो, पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमद्धुवोदयत्तदंसणादो, आदेज्जस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति उदयस्स भयणिज्जत्तुवलंभादो, उवरि सव्वत्थ धुवोदयत्तदंसणादो च । समचउरससंठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणमेवं चेव वत्तव्वं, विग्गहगदीए उदयाभावे वि बंधुवलंभादो, समचउरससंठाणोदयस्स भयणिज्जत्तदंसणादो च । एवं सुभग-पज्जत्ताणं पि वत्तव्वं, पंचिंदिएसु पडिवक्खपयडीए उदयदंसणादो । णवरि पंचिंदियपज्जत्तएसु पज्जत्तस्स सोदएणेव बंधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो । एवमेदं मिच्छाइट्ठीणं परूविदं । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणमेवं चेव परूवेदव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदएणेव बंधो । एवं सम्मामिच्छादिट्ठिआदिउवरिमगुणट्ठाणाणं पि वत्तव्वं । णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि सोदएणेव बंधो, तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । तेजा-कम्मइय-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणाणं सव्वगुणट्ठाणेसु णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचिंदियजादीए मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, सणक्कुमारादिदेवेसु णेरइएसु असंखेज्जवासाउअ-सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणादीसु णिरंतरो बंधो, तत्थ एइंदियजादिआदीणं बंधाभावादो। एवं परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि वत्तव्वं, भेदाभावादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो? ण, असंखेज्जवासाउएसु एदासिं णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो, पडिवक्खपयडीए बंधसंभवादो। उवरि णिरंतरो। देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सांतर-णिरंतरो, सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो। पच्चया सुगमा। सेसं ओघभंगो।

आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ १३३ ॥

सुगमं।

अप्पमत्तसंजदा अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३४ ॥

सुगमं।

तित्थयरणामाए को बंधो? को अबंधो? ॥ १३५ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १३६ ॥

एदं पि सुगमं।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १३७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ७४ ॥ एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे—तत्थ ताव पुढविकाइयाणं भण्णमाणे पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग- [दुभग-] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ पुढविकाइएहि बज्झमाणाओ ठवेदव्वा। एत्थ बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, तदुभयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तादो। इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-पंचसंठाण-ओरालियसरीर-अंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ उदयविरोहादो। पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-छणोकसाय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद-पत्तेयसरीर-आदावुज्जोवाणं पि सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावादो अद्धुवोदयत्तादो च। परघादुस्सासाणं पि सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जत्तापज्जत्तद्धासु बंधदंसणादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए सोदय-परोदओ बंधो, सोदयाणुदयविग्गहाविग्गहगदीसु बंधुवलंभादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस्साउ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो धुवबंधित्तादो च। सादासाद-सत्तणोकसाय-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-छसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, तेउ-वाउकाइएहिंतो पुढविकाइएसुप्पण्णाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं पि सांतर-णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो? ण, देवाणं पुढविकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्त-स्संते णिरंतरबंधुवलंभादो। एदेसिं पच्चया एइंदियपच्चएहि समा। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि- ॥ ७४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - थावर - सुहुम - साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति । मणुसाउ - मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - उच्चागोदाणि मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं । तिरिक्खा सामी । बंधद्धाणं सुगमं । एत्थ बंधवोच्छेदो णत्थि । धुवबंधीणं चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि - अद्धुवो । बादरपुढविकाइयाणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि बादरस्स सोदएण बंधो, सुहुमस्स परोदएण । बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । बादरपुढविकाइयअपज्जत्ताणं पि बादरपुढविकाइयभंगो । णवरि पज्जत्त - थीणगिद्धितिय - परघादुस्सास - आदावुज्जोव - जसकित्तीणं परोदओ, अपज्जत्त - अजसकित्तीणं सोदओ बंधो । परघादुस्सास - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, अपज्जत्तएसु देवाणमुववादाभावादो । पच्चया सत्तत्तीस, ओरालियकायजोगपच्चयस्साभावादो । सुहुमपुढविकाइयाणं पुढविकाइयभंगो । णवरि बादर - आदावुज्जोव - जसकित्तीणं परोदओ, सुहुम - अजसकित्तीणं सोदओ बंधो । परघादुस्सास - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुववादाभावादो णिरंतरबंधाभावादो । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ताणमेवं चेव वत्तव्वं । णवरि अपज्जत्तस्स सोदओ, पज्जत्त - थीणगिद्धितिय - परघादुस्सासाणं परोदओ बंधो । सव्वआउकाइयाणं जहापच्चासण्णपुढविकाइयभंगो । णवरि आदावस्स परोदओ बंधो, पुढविकाइए मोत्तूण अण्णत्थ आदावस्सुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - सादासाद - मिच्छत्त - सोलसकसाय - णवणोकसाय - तिरिक्खाउ - मणुस्साउ - तिरिक्खगइ - मणुसगइ - पंचजादि - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - छसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण - वण्णचउक्क - तिरिक्खगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुवलहुवचउक्क - आदावुज्जोव - दोविहायगइ - तस - थावर - बादर - सुहुम - पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - णीचुच्चागोद - पंचंतराइयपयडीओ ठविय वणप्फदिकाइयाणं परूवणा कीरदे— बंधोदयाणं पुव्वापुव्वकालगयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - मिच्छत्त - णउंसयवेद - तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - एइंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुवलहुव - थावर - थिराथिर - सुहासुह - दुभग - अणादेज्ज - णिमिण - णीचागोद - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, अत्थ गईए धुवोदयत्तादो । इत्थि - पुरिसवेद - मणुसाउ - मणुसगइ - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियजादि - पंचसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदाव - दोविहायगइ - तस - सुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं परोदओ बंधो । पंचदंसणावरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - छण्णोकसाय - हुंडसंठाण - ओरालियसरीर - तिरिक्खाणुपुव्वी - उवघाद - परघादुस्सासुज्जोव - बादर - सुहुम - पज्जत्तापज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सोदय - परोदओ बंधो ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचणाणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - तिरिक्ख - मणुसाउ - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वणणचउक्क - अगुरुवलहुव - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो । सादासाद - सत्तणोकसाय - मणुस्सगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय-पंचिंदियजादि - छसंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - छसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - दोविहायगदि - तस - थावर-सुहुम - अपज्जत्त - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो । तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - णीचागोदाणं सांतर - णिरंतरो । कुदो ? तेउ - वाउकाइएहिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो । परघादुस्सास - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं सांतर- णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, देवेहिंतो वणप्फदिकाइएसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो । पच्चया सुगमा । गइसंजुत्तादिउवरिमेइंदियपरूवणाए तुल्ला । एवं बादरवणप्फदिकाइयाणं वत्तव्वं । णवरि बादरस्स सोदओ बंधो, सुहुमस्स परोदओ । बादर - [वणप्फदि -] पज्जत्ताणं बादरवणप्फदिभंगो । णवरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ बंधो । बादरवणप्फदिअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो । तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो । णवरि बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - पंचिंदियाणं सोदय - परोदओ बंधो । णिगोदजीवाणं तेसिं बादर - सुहुम - पज्जत्तापज्जत्ताणं वणप्फदिकाइयभंगो । णवरि पत्तेयसरीरस्स परोदओ सांतरो बंधो । तस - बादर - पज्जत्त - परघादुस्सासाणं बंधो सांतरो । साहारणसरीरस्स सोदय-परोदओ । बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्ताणं पि एवं चेव वत्तव्वं । णवरि साहारणसरीरस्स परोदओ बंधो, पत्तेयसरीरस्स सोदय - परोदओ बंधो ।

तेउकाइय-वाउकाइय-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जाणं सो चेव भंगो । णवरि विसेसो मणुस्साउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदं णत्थि ॥ १३८ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— परघादुस्सास - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं सांतरो बंधो, देवाणं तेउ - वाउकाइएसु उववादाभावादो । तिरक्खगइ - तिरिक्खाणुपुव्वी - णीचागोदाणं णिरंतरो बंधो सोदओ चेव । णवरि तिरिक्खाणुपुव्वीए बंधो सोदय - परोदओ । आदावुज्जोवाणं परोदओ बंधो । होदु णाम वाउकाइएसु आदावुज्जोवाणमुदयाभावो, तत्थ तदणुवलंभादो । ण तेउकाइएसु तदभावो, पच्चक्खेणुवलंभमाणत्तादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे — ण ताव तेउकाइएसु आदावो अत्थि, उण्हप्पहाए तत्थाभावादो । तेउम्हि वि उण्हत्तमुवलंभइ च्चे उवलब्भउ णाम, [ण] तस्स आदाववएसो, किंतु तेजासण्णा; "मूलोण्ण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वती प्रभा तेजः, सर्वांगव्याप्युष्णवती प्रभा आतापः, उष्णरहिता प्रभोद्योतः," इति तिण्हं भेदोवलंभादो। तम्हा ण उज्जोवो वि तत्थत्थि, मूलुण्हुज्जोवस्स तेजववएसादो। एत्तिओ चेव भेदो, ण अण्णत्थ कत्थ वि। णवरि सव्वासिं पयडीणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ताणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ॥ १३९ ॥

एदं देसामासियमप्पणासुत्तं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बंधो। तस-बादराणं सोदओ चेव। एइंदिय-थावर-सुहुम-साहारणादावाणं परोदओ चेव बंधो। अवसेसाणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं उत्तविहाणेण वत्तव्वं।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-कायजोगीसु ओघं णेयव्वं जाव तित्थयरे त्ति ॥ १४० ॥

ओघम्मि उत्तसत्तारसण्हं सुत्ताणमत्थो ससुत्तो एत्थ णिरवयवो वत्तव्वो, भेदाभावादो। णवरि पच्चयगदो भेदो अत्थि तं परूवेमो— मणजोगे णिरुद्धे छाएत्तालीस एक्केत्तालीस सत्ततीस सत्ततीस बत्तीस सत्तारस सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव अट्ठ सत्त छ पंच दोण्णि मिच्छाइट्ठिप्पहुडिसव्वगुणट्ठाणाणं जहाकमेण एदे पच्चया होंति। अण्णो वि विसेसो मणजोगे णिरुद्धे संते अत्थि— चदुजादि-चत्तारि-आणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं परोदएण, उवघाद-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीणं सोदएण बंधो त्ति वत्तव्वं। एवं चेव चदुण्हं मणजोगाणं परूवणा कायव्वा। णवरि एक्कम्हि मणजोगे णिरुद्धे अवसेससव्वजोगा मूलोघुत्तरपच्चएसु अवणेदव्वा। अवसेसा णिरुद्धमणजोगीणं पच्चया होंति। णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि विसेसो। वचिजोगीणमेवं चेव वत्तव्वं, सांतर-णिरंतर-सोदय-परोदय-सामित्त-पच्चयादीहि मणजोगीहिंतो वचिजोगीणं भेदाभावादो। णवरि बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं सोदय-परोदओ बंधो त्ति वत्तव्वं। असच्च-मोसवचिजोगीणं वचिजोगिभंगो। णवरि सव्वगुणाणं उत्तरपच्चएसु असच्च-मोसवचिजोगं मोत्तूण सेससव्वजोगा अवणेदव्वा। सच्च-मोस-सच्चमोसवचिजोगीणं सच्च-मोस-सच्चमोसमणजोगिभंगो विसेसाभावादो। कायजोगीणं पि ओघभंगो चेव। णवरि सव्वगुणट्ठाणाणमोघपच्चएसु मण-वचिजोगट्ठपच्चया अवणेदव्वा। सजोगिपच्चएसु दोदोमण-वचिजोगपच्चया अवणेदव्वा। णत्थि अण्णत्थ विसेसो। ओघम्मि पुव्ववुत्तसत्तारससुत्तेसु चउत्थसुत्तम्मि भेदपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि— ॥ ७७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १४१ ॥

ओघम्मि 'अवसेसा अबंधा' त्ति उत्तं । एत्थ पुण 'अबंधा णत्थि' त्ति वत्तव्वं, जोगप्पणादो । ण च सजोगेसु अजोगा होंति, विप्पडिसेहादो । जदि एत्तियमेत्तो चेव भेदो तो एत्तियस्सेव णिद्देसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, एदस्स सुत्तस्स एदम्मि उद्देसविसेसो अत्थि, थूलबुद्धीणं पि सुहग्गहणट्ठं तथोवदेसादो ।

ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं बंधोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेसो, विसेसकारणाभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदाभावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमसमए मणुसगदीए सह एदासिमुदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदय-सांतर-णिरंतरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकारणाणुवलंभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुग-चदुमण-वचिपच्चएहि विणा मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे च जहाकमेण तेदालीस-अट्ठत्तीसपच्चयदंसणादो, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु चोत्तीसपच्चयदंसणादो, उवरिमगुणट्ठाणपच्चएसु वि ओरालियकायजोगं मोत्तूण सेसजोगपच्चयाणमभावादो । उवरिपरिक्खासु वि णत्थि विसेसो । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा तिरिक्खगइ-मणुसगइमहिट्ठिदा सामित्ति वत्तव्वं । एसो पढमसुत्तट्ठियभेदो । एत्थ उत्तपच्चयगइगयसामित्तभेओ सव्वसुत्तेसु दट्ठव्वो । णवरि बिट्ठाणियपयडीसु तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं बंधो मणुसगईए परोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ त्ति वत्तव्वं । णवरि तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए परोदओ चेव बंधो, ओरालियकायजोगे तिस्से उदयाभावादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खाणुपुव्वीणं मणुसगईए सांतरो बंधो, एत्थ पुण सांतर-णिरंतरो । एवं चेव णीचागोदस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउ-मणुसगईणं मणुसगईए सोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । [ओरालियसरीरंगोवंग-] मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मणुसगईए बंधो, एत्थ पुण सांतरो । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण परोदओ । ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदओ । ओरालियसरीरस्स मणुसगईए सांतर-णिरंतरो, एत्थ वि सांतर-णिरंतरो चेव । एसो बेट्ठाणिसुत्तट्ठियभेदो । एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम- ॥ ७८॥

साहारणाणं मणुसगईए परोदओ बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । अपज्जत्तस्स मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ परोदओ । एसो एगट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो । संपधिय अण्णसुत्तेसु भेदाभावादो ताणि मोत्तूण अट्ठट्ठाणियसुत्तट्ठियभेदो उच्चदे—मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु-उवघाद-परघाद-उस्सास-अपज्जत्ताणं मणुसगईए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण सोदओ चेव । पंचिंदियजादि-तस-बादराणं मणुसगईए सोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । जेणेदं देसामासियमप्पणासुत्तं तेणेदे सव्वविसेसा एत्थुवलब्भंति । अण्णं पि भेदपदंसणट्ठमुवरिमसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ १४३ ॥

ओरालियकायजोगीसु अबंधगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १४४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४५ ॥

परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमेत्थुदयाभावादो बंधोदयाणं पुव्वावरकालसंबंधिवोच्छेदविचारो णत्थि । अवसेसाणं पयडीणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-बारसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगंच्छा-असादावेदणीय-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो । कथमुच्चागोदबंधो सम्मादिट्ठीसु परोदओ ? ण, तिरिक्खेसु पुव्वाउवबंधवसेणुप्पण्णखइयसम्मादिट्ठीसु परोदएणुच्चागोदस्स बंधुवलंभादो । पुरिसवेद-समच-

उरससंठाण-सुभगादेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठि-सासणेसु सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदओ। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदएण बंधो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदएण। परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-अप्पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु परोदएण बंधो। अजसकित्तीए मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएण बंधो, असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदएण। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो। असाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-जसकित्ति-अजसकित्ति-थिराथिर-सुभासुभाणं सांतरो बंधो, तिसु वि गुणट्ठाणेसु एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद-समचउरससंठाण-सुभगादेज्ज-उच्चागोद-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो। पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-परघादुस्सासाणं-मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो? तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पण्णसणक्कुमारादिदेवाणं णेरइयाणं च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो। मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियमिस्सकायजोगवदिरित्तबारसजोगाणमभावादो। सासणस्स अट्ठतीस, असंजदसम्माइट्ठिस्स बत्तीस पच्चया; तेसिं चेव जोगाणमभावादो असंजदसम्मादिट्ठीसु त्थी-णवुंसयवेदेहि सह बारसजोगाभावादो। एदाओ सव्वपयडीओ असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइसंजुत्तं बंधंति। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो उच्चागोदं मणुसगइसंजुत्तं, सेसाओ सव्वपयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देव-णिरयगईओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो किण्ण बंधंति? ण, अपज्जत्तद्धाए तासिं बंधाभावादो। तिरिक्ख-मणुस्सा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सेसेसु तिविहो, धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं सव्वपयडीणं तिसु वि गुणट्ठाणेसु बंधो सादि-अद्धुवो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ १४६ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १४७ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—अणंताणुबंधिचउक्क-त्थीवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधोदया सासणसम्माइट्ठिम्हि समं वोच्छिज्जंति, ण मिच्छाइट्ठिम्हि; अणुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणमेत्थुदयवोच्छेदो णत्थि, उवरि तदुवलंभादो। केवलो एत्थ बंधवोच्छेदो चेव, तद्दंसणादो। थीणगिद्धितिय-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं परोदओ बंधो, अपज्जत्तएसु एदासिमुदयाभावादो। ओरालियसरीरस्स सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो, सासणे सोदओ। अणंताणुबंधिचउक्क-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-चउसंठाण-पंचसंघडण-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-ओरालियसरीराणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीदो तिरिक्खेसुप्पण्णणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठिम्हि सांतरो, तत्थ तेसिमुववादाभावादो। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, आणदादिदेवेसु मणुसेसुप्पण्णेसु दुविहगुणेसु मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, सणक्कुमारादिदेव-णेरइएसु तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्णेसु अंतोमुहुत्तं णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठिम्हि णिरंतरो। मिच्छाइट्ठिम्हि तेदालीस, सासणे अट्ठतीसुत्तरपच्चया। सेसं सुगमं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तं। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो, सेसाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणे दुविहो, अणादि-धुवत्ताभावादो। सेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो।

सादावेदणीयस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ १४८ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १४९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सादावेदणीयस्स बंधादो उदओ पुव्वं पच्छा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, चदुसु गुणट्ठाणेसु तदुभयवोच्छेदाणुवलंभादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-सजोगीसु बंधो सोदय-परोदओ, परावत्तणुदयत्तादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। सजोगीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु जहाकमेण तेदालीस-अट्ठत्तीस-बत्तीसपच्चया। सजोगिम्हि एक्को चेव ओरालियमिस्सकायजोगपच्चओ। सेसं सुगमं। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइसंजुत्तं, सजोगिजिणा अगइसंजुत्तं बंधंति। तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसजोगिजिणा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सादस्स बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ १५० ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १५१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—बंधोदयाणमेत्थ वोच्छेदो णत्थि, उवलंभादो। अथवा, मिच्छत्त-चदुजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमेत्थ बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अवसेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो। आदावस्स एत्थ उदओ णत्थि चेव। मिच्छत्तस्स सोदओ बंधो। आदावस्स परोदओ, अपज्जत्तकाले आदावस्सुदयाभावादो। णउंसयवेद-तिरिक्ख-मणुसाउ-चदुजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं सोदय-परोदओ बंधो। मिच्छत्त-तिरिक्ख-मणुसाउआणं बंधो णिरंतरो। अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खाउ-चदुजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो, मणुसाउअस्स मणुसगइसंजुत्तो, सेसाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। दुगइमिच्छाइट्ठी सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-तित्थयरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १५२ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १५३ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति परिक्खा णत्थि, उदयाभावादो । णवरि तित्थयरस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । एदाओ पंच वि पयडीओ परोदएण बज्झंति, ओरालियमिस्सकायजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो । णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि एदासिं बंधस्स बत्तीसुत्तरपच्चया, ओघपच्चएसु बारस-जोगित्थि-णवुंसयवेदाणमभावादो । सेसं सुगमं । चउण्हं पयडीणं तिरिक्ख-मणुसगइ-असंजदसम्मादिट्ठी सामी । तित्थयरस्स मणुसा चेव, तिरिक्खेसु उप्पण्णाणं तत्थुप्पत्तिपाओग्गसम्माइट्ठीणं तित्थयरस्स बंधाभावादो । गइसंजुत्तत्तमभणिय किमिदि सामित्तं परूविदं ? ण, देवगइसंजुत्तं बज्झंति त्ति अणुत्तसिद्धीदो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

वेउव्वियकायजोगीणं देवगईए भंगो ॥ १५४ ॥

एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे—पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंच्छा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्णचउक्क-मणुसाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ एत्थ चदुसु गुणट्ठाणेसु बंधपाओग्गाओ । एत्थ पुव्वं बंधो उदओ वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्तीणमुदयाभावादो सेसाणं पयडीणमुदयवोच्छेदाभावादो च । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्हि एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो । णवरि सम्मामिच्छाइट्ठिं मोत्तूण अण्णत्थ उस्सा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सस्स सोदय - परोदओ बंधो, सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तस्स अंतोमुहुत्तं गंतूण आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स उस्सासस्सोदयदंसणादो। णिद्दा - पयला - सादासाद - बारसकसाय- सत्तणोकसाय - समचउरससंठाण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - उच्चागोदाणं सोदय - परोदओ बंधो, असुहाणं णेरइएसु उदयदंसणादो। मणुसगइ - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो। पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछा - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघादुस्सास - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद - समचउरससंठाण - वज्जरिसहसंघडण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधसंभवादो। सम्मामिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पंचिंदियजादि-ओरालियसरीरंगोवंग - तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, णेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि - सम्मामिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर - णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। सम्मामिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। मिच्छाइट्ठी एदाओ पयडीओ तेदालीसपच्चएहि, सासणो अट्ठतीसपच्चएहि, सम्मामिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठिणो चोत्तीसपच्चएहि बंधंति, मूलोघपच्चएसु बारसजोगपच्चयाभावादो। सेसं सुगमं। मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - उच्चागोदाणि मिच्छाइट्ठि - सासणसम्माइट्ठि - सम्मामिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं। अवसेससव्वपयडीओ मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देव - णेरइया सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधविणासो णत्थि। पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछा - तेजा - कम्मइय - वण्णचउक्क - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधित्ताभावादो। सेससव्वपयडीओ सव्वत्थ सादि - अद्धुवाओ। थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्क - इत्थिवेद - तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - चउसंठाण - चउसंघडण - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - उज्जोव - अप्पसत्थविहायगइ - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणि बेट्ठाणियपयडीओ। एदासु अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदंसणादो। इत्थिवेद - अप्पसत्थविहायगइ - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अवसेसाणं एसा परिक्खा णत्थि, उदयाभावादो। अणंताणु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधिचउक्क - इत्थिवेद - अप्पसत्थविहायगइ - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणं सोदय - परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि पडिवक्खुदयदंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं परोदओ बंधो, तासिमेत्थुदयविरोहादो। थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्क - तिरिक्खाउआणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - णीचागोदाणं सांतर - णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो ? ण, सत्तमपुढविणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, सेससव्वपयडीओ तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। देव - णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सत्तण्हं धुवपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो, सासणे दुविहो बंधो। मिच्छत्त - णवुंसयवेद - एइंदियजादि - हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडण - आदाव - थावरपयडीओ मिच्छाइट्ठिणा बज्झमाणियाओ। एत्थ मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, उवरिमगुणेसु तदुभयाणुवलंभादो। णवुंसयवेद - हुंडसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु तदुभयाभावदंसणादो। सेसासु एसो विचारो णत्थि, उदयाभावादो। मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुंसयवेद - हुंडसंठाणाणं सोदय - परोदओ, अवसेसाणं परोदओ बंधो। मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो, अवसेसाणं सांतरो। पच्चया सुगमा। णवरि एइंदियजादि - आदाव - थावराणं णवुंसयवेदपच्चओ अवणेदव्वो, णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो। मिच्छत्त - णवुंसयवेद - हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडणाणि तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं, अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं बज्झंति। एइंदियजादि - आदाव - थावराणं बंधस्स देवा सामी, अवसेसाणं बंधस्स देव - णेरइया सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो, अवसेसाणं सादि - अद्धुवो। मणुसाउअस्स बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति णत्थि विचारो, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो। परोदओ बंधो, वेउव्वियकायजोगम्मि मणुसाउअस्स उदयविरोहादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठि - सासणसम्माइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीणं तेदालीस - अट्ठत्तीस - चोत्तीसपच्चया। मणुसगइसंजुत्तं। देव - णेरइया सामी। अद्धाणं मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठि त्ति। बंधविणासो णत्थि। सादि - अद्धुवो बंधो। तित्थयरस्स बंधोदयवोच्छेदसण्णियासो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो। परोदओ बंधो, मणुसगइं मोत्तूणण्णत्थुदयाभावादो। णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा। मणुसगइसंजुत्तं। देव - णेरइया सामी। असंजदसम्मादिट्ठी अद्धाणं। बंधविणासो णत्थि। सादि - अद्धुवो बंधो।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं देवगइभंगो ॥ १५५ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एदस्स देसामासियअप्पणासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा - पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - सादासाद - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - मणुसगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - वण्णचउक्क - मणुस्साणुपुव्वि - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुभासुभ - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - उच्चागोद - पंचंतराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि बज्झमाणियाओ ट्ठविय परूवणा कीरदे— बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, बंधेणुदएणुभएहि वा विरहिदगुणट्ठाणाणमुवरि अणुवलंभादो। पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - पंचिंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुव - उवघाद - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। णिद्दा - पयला - सादासाद - बारसकसाय - छणोकसाय - पुरिसवेदाणं बंधो सोदय - परोदओ, उभयथा वि बंधविरोहाभावादो। समचउरससंठाण - सुभगादेज्ज - जसकित्ति - उच्चागोदाणं बंधो मिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ। सासणे सोदओ, अपज्जत्तद्धाए णेरइएसु सासणाणमभावादो। मणुसगइ - ओरालियसरीर - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - मणुस्साणुपुव्वि - परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - सुस्सराणं परोदओ बंधो, एत्थ एदासिमुदयविरोहादो। अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ। सासणे परोदओ, देवगदीए तिस्से उदयाभावादो। पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछा - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघादुस्सास बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। सादासाद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद - समचउरससंठाण - वज्जरिसहसंघडण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो। पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि - ओरालियसरीरअंगोवंग - तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, सणक्कुमारादिदेवेसु णेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। मणुसगइ - मणुसाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर - णिरंतरो। कधं णिरंतरो? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस पच्चया, ओघपच्चएसु चदुमण - वचि - कायजोगपच्चयाणमभावादो। सासणस्स सत्ततीसुत्तरपच्चया, मिच्छाइट्ठिपच्चएसु पंचमिच्छत्त - णवुंसयवेदाणमभावादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु तेत्तीस पच्चया, मिच्छाइट्ठिपच्चएसु पंचमिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणमभावादो। सेसं सुगमं। मणुसगइ - मणुसाणुपुव्वी - उच्चागोदाणं मणुसगइसंजुत्तो,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो। मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-णेरइया सामी। सासणसम्मादिट्ठिणो देवा चेव सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। बंधेण धुवपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं परूवणा कीरदे—अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति सासणगुणट्ठाणे, ण अण्णत्थ; मिच्छाइट्ठिम्हि तदणुवलंभादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, उवरिमअसंजदसम्मादिट्ठिगुणम्मि बंधेण विणा उदयस्सेव दंसणादो। अवसेसाणमेसो विचारो णत्थि, बंधस्सेकस्सेवुवलंभादो। अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयथावि अविरोहादो। दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय-परोदओ। सासणे परोदओ, णेरइएसु अपज्जत्तद्धाए तदभावादो। सेससोलसपयडीओ परोदएणेव बज्झंति, तासिमेत्थुदयविरोहादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो। कधं णिरंतरो? सत्तमपुढविणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणे सांतरो, अपज्जत्तद्धाए सत्तमपुढविट्ठिय-सासणाणुवलंभादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, अवसेसाओ तिरिक्ख-मणुस्सगइसंजुत्तं बंधंति। मिच्छाइट्ठिदेव-णेरइया, सासणा देवा सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सत्तण्हं धुवबंधपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणे दुविहो, अणादि-धुवाभावादो। सेसाणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावराणं परूवणं कस्सामो—मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, उवरि तदुभयाणुवलंभादो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अवसेसासु एसो विचारो णत्थि, बंधस्सेकस्सेव दंसणादो। मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं सोदय-परोदएण, अवसेसाणं परोदएण बंधो। मिच्छत्तस्स णिरंतरो। अवसेसाणं पयडीणं सांतरो, बंधगद्धागयसंखाणियमाणुवलंभादो। पच्चया सुगमा। णवरि एइंदिय-आदाव-थावराणं णवुंसयवेदपच्चओ णत्थि त्ति दुग्गममेयं संभरेदव्वं। एइंदियजादि-आदाव-थावराणि तिरिक्खगइसंजुत्तं, सेसाओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बज्झंति। एइंदिय-आदाव-थावराणं देवा सामी। सेसाणं देव-णेरइया। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो। सेसाणं सादि-अद्धुवो। तित्थयरस्स बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बंधअइक्कियादो । परोदओ बंधो, सजोगिभडारयं मोत्तूण तित्थयरस्सण्णत्थुदयाभावादो । णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । मणुसगइसंजुत्तो बंधो । देव - णेरइयअसंजदसम्मादिट्ठी सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुओ बंधो । पयडिबंधगयविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो बेट्ठाणियासु तिरिक्खाउअं णत्थि मणुस्साउअं णत्थि ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव - णेरइयाणमपज्जत्तद्धाए आउअबंधविरोहादो ।

आहारकायजोगि - आहारमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - सादासाद - चदुसंजलण - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगंछा - देवाउ - देवगइ - पंचिंदियजादि - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - वेउव्वियसरीरंगोवंग - वण्ण - गंध - रस - फास - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुवलहुव - उवघाद - परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - तित्थयर - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १५७ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो त्ति विचरो णत्थि, एक्कगुणट्ठाणम्मि पुव्वावरभावाभावादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - पुरिसवेद - पंचिंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - वण्णचउक्क - अगुरुअलहुअचउक्क - पसत्थविहायगइ - तसचउक्क - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - णिमिण - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । णिद्दा-पयला - सादासाद - चदुसंजलण - छण्णोकसायाणं सोदय - परोदओ बंधो, उभयथा वि बंधविरोहाभावादो । देवाउ - देवगइ - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरंगोवंग - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - अजसकित्ति - तित्थयराणं परोदओ बंधो, आहारकायजोगीसु एदासिमुदयविरोहादो । पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - चदुसंजलण - पुरिसवेद - भय - दुगुंछा - देवाउ - देवगइ - पंचिंदियजादि - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर -

समचउरससंठाण - वेउव्वियसरीरंगोवंग - वण्णचउक्क - देवगइपाओग्गाणुपुव्वि - अगुरुअलहुअचउक्क - पसत्थविहायगइ - तसचउक्क - सुभग-सुस्सर - आदेज्ज - णिमिण - तित्थयर - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद - हस्स-रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। चदुसंजलण - पुरिस-वेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - आहारकायजोगेहि बारसपच्चएहि एदाओ पयडीओ बज्झंति। सेसं सुगमं। एदासिं बंधो देवगदिसंजुत्तो। मणुसा सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। धुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। अवसेसाणं सादि - अद्धुवो। एवमाहारमिस्सकायजोगीणं पि वत्तव्वं। णवरि परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - दुस्सराणं परोदओ बंधो। पुव्वमोरालियसरीरस्स उदए संते एदासिं संतोदयाणं कथमेत्थ अकारणेण उदयवोच्छेदो होज्ज ? ण, ओरालियसरीरोदएणोदइल्लाणं तदुदयाभावेणेदासिमुदयाभावस्स णाइयत्तादो। पच्चएसु आहारकायजोगमवणेदूण आहारमिस्सकायजोगो पक्खिविदव्वो। एत्तिओ चेव भेदो णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि।

कम्मइयकायजोगीसु पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - असादावेदणीय - बारसकसाय - पुरिस-वेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - मणुसगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - ओरालियसरीरअंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - वण्ण - गंध - रस - फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिणुच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १५९ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—एत्थ बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो त्ति णत्थि विचारो, एत्थ ओरालियदुग - समचउरससंठाण - वज्जरिसहसंघडण - उवघाद - परघादुस्सास - पसत्थविहायगइ - पत्तेयसरीर - सुस्सराणमेयंतेण उदयाभावादो, सेसाणमुदयसंभवादो च। पंचणा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णावरणीय - चउदंसणावरणीय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुवलहुअ - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थतणसव्वगुणट्ठाणेसु णियमेणुदयदंसणादो। णिद्दा - पयला - असादावेदणीय - बारसकसाय - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय-दुगुंछा - पुरिसवेद - सुभगादेज्ज - जसकित्ति - उच्चागोदाणं सोदय - परोदओ बंधो। मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ बंधो, उभयथा वि बंधविरोहाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, मणुस्सअसंजदसम्मादिट्ठीणं मणुवदुगस्स बंधविरोहादो। पंचिंदिय - तस - बादर - पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदय - परोदओ बंधो, पडिवक्खुदयसंभवादो। सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदओ, विगलिंदिएसु एदेसिं दोण्णं गुणट्ठाणाणं अभावादो। ओरालियसरीर - समचउरससंठाण - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - पत्तेयसरीर - सुस्सराणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछा - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास-अगुरुवलहुव - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तादो। असादावेदणीय - हस्स - रदि - अरदि - सोग-थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेद - समचउरससंठाण - वज्जरिसहसंघडण - पसत्थविहायगइ - सुस्सर - सुभगादेज्ज - उच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि - सासणेसु सांतरो बंधो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि - सासणेसु बंधो सांतर - णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, आणदादिदेवेहिंतो विग्गहगदीए मणुसेसुववण्णाणं मणुसगइदुगस्स णिरंतरबंधुवलंभादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो बंधो, विग्गहगदीए मणुवदुगबंधपाओग्गसम्मादिट्ठीणमण्णगइदुगस्स बंधाभावादो। पंचिंदिय - ओरालियसरीरंगोवंग - तस - बादर - पज्जत्त - परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छइट्ठीसु सांतर - णिरंतरो। कथं णिरंतरो? ण, सणक्कुमारादिदेव - णेरइएहिंतो तिरिक्ख - मणुस्सेसुप्पण्णाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। मिच्छाइट्ठीसु तेदालीसुत्तरपच्चया, ओघपच्चएसु कम्मइयकायजोगं मोत्तूण सेसबारसजोगपच्चयाणमभावादो। तत्थ पंचमिच्छत्तेसु अवणिदेसु अट्ठत्तीस सासणसम्मादिट्ठिपच्चया। तत्थ अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदेसु अवणिदेसु तेत्तीस असंजदसम्मादिट्ठिपच्चया होंति। सेसं सुगमं। पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - असादावेदणीय - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - पंचिंदियजादि - तेजा - कम्म-
इयसरीर - समचउरससंठाण - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुवलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त- ॥ ९० ॥
पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी सासणो च तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं, एदेसिमपज्जत्तकाले णिरय - देवगईणं बंधाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठिणो देव - मणुसगइसंजुत्तं बंधंति,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेसिं णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ सव्वे मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, साभावियादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, एदासिमण्णगईहि सह विरोहादो। उच्चागोदं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तमेदेसिमपज्जत्तकाले उच्चागोदाविणाभाविदेवगईए बंधाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, तस्सुभयत्थ बंधसंभवदंसणादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-तिगइसासणसम्माइट्ठि-देवणेरइयअसंजदसम्माइट्ठिणो च सामी। अवसेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो तिगइसासणसम्माइट्ठिणो च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। एदेसिमेत्थ बंधविणासो णत्थि। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १६१ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी-सासणसम्माइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६२ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयाभावदंसणादो। एवमण्णपयडीणं जाणिय वत्तव्वं। थीणगिद्धितिय-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो। अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, एदासिमेत्थ उदयणियमाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो। कधं णिरंतरो ? सत्तमपुढविणेरइएहिंतो तेउ-वाउक्काइएहिंतो च कयविग्गहाणं णिरंतरबंधदंसणादो। सासणसम्माइट्ठिम्हि सांतरो, तत्तो विणिग्गयसासणसम्माइट्ठीणं संभवाभावादो। ॥ ९१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सांतरो बंधो, अणियमेण बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तमवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। चउगइमिच्छाइट्ठी तिगइसासणसम्मादिट्ठिणो च सामी। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ बंधो सादि-अद्धुवो।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १६३ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १६४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधो उदओ वा पुव्वं वोच्छिण्णो किं पच्छा वोच्छिण्णो त्ति एत्थ परिक्खा णत्थि, तदुभयवोच्छेदाभावादो। सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। सजोगिकेवलिम्हि णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो। अण्णत्थ सांतरो। पच्चया सुगमा। णवरि सजोगिकेवलिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति। सजोगिकेवली अगइसंजुत्तं। चउगइमिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो तिगइसासणसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसजोगिकेवलिणो च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। एत्थ बंधवोच्छेदो णत्थि। सादि-अद्धुवो बंधो, परियत्तमाणबंधादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १६५ ॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६६

एत्थ पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एक्कगुणट्ठाणम्मि तदसंभवादो। मिच्छत्तस्स सोदओ बंधो, अण्णहा बंधाणुवलंभादो। णवुंसयवेद-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्तणामाणं बंधो सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयणियमाभावादो। हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणसरीरणामाणं परोदओ बंधो, विग्गहगदीए णियमेणेदासिं उदयाभावादो। मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो। अवसेसाणं पयडीणं सांतरो, अणियमेण एगसमयबंधदंसणादो। पच्चया सुगमा। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडण - अपज्जत्ताणं तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तो, चदुजादि - आदाव - थावर - सुहुम - साहारणाणं तिरिक्खगइ-संजुत्तो बंधो, अण्णगईहि सह एदासिं बंधविरोहादो । मिच्छत्त - णवुंसयवेद - हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी, चउगइउदएण सह एदासिं बंधस्स विरोहाभावादो । एइंदिय - आदाव - थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णिरयगइमिच्छाइट्ठिम्हि तासिं बंधाभावादो । बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - सुहुम - अपज्जत्त - साहारणाणं तिरिक्ख - मणुसगइमिच्छाइट्ठी सामी, देव - णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो । सेसाणं सादि - अद्धुवो ।

देवगइ - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरंगोवंग - देवगइपाओग्गाणुपुव्वि - तित्थयरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १६७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १६८ ॥

किं बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति एत्थ विचारो णत्थि, एक्कम्हि तदसंभवादो । एदासिं पंचण्हं पि परोदओ बंधो, सोदएण सह सगबंधस्स विरोहादो । णिरंतरो बंधो, णियमेणाणेगसमयबंधदंसणादो । विग्गहगदीए दोण्हं समयाणं कथमणेगववएसो ? ण, एगं मोत्तूणुवरिमसव्वसंखाए अणेगसद्दपवुत्तीदो । पच्चया सुगमा । णवरि णवुंसयवेदपच्चओ णत्थि, विग्गहगदीए वट्टमाणणेरइयअसंजद-सम्मादिट्ठीसु वेउव्वियचउक्कस्स बंधाभावादो । तित्थयरस्स पुण ते चेव तेत्तीस पच्चया, तत्थ णवुंसयवेदपच्चयदंसणादो । वेउव्वियचउक्कस्स देवगइसंजुत्तो, तित्थयरस्स देव - मणुसगइसंजुत्तो बंधो । वेउव्वियचउक्कबंधस्स तिरिक्ख - मणुसअसंजदसम्मादिट्ठी सामी । तित्थयरस्स तिगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगइअसंजदसम्मादिट्ठीसु तित्थयरबंधाभावादो । बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं । एदासिं बंधो सादि - अद्धुवो, धुवबंधित्ताभावादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद - पुरिसवेद - णवुंसयवेदएसु पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - सादावेदणीय - चदुसंजलण - पुरिसवेद - जसकित्ति - उच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १७० ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

इत्थिवेदस्स ताव वुच्चदे— एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, पुरिसवेदस्स एयंतेणुदयाभावादो सेसाणं च पयडीणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं च सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। पुरिसवेदस्स परोदओ बंधो, इत्थिवेदे उदिण्णे पुरिसवेदस्सुदयाभावादो। सादावेदणीय-चदुसंजलणाणं सोदय-परोदओ बंधो, उदएण परावत्तणपयडित्तादो। जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-परोदओ, एदेसु पडिवक्खुदयसंभवादो। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति बंधो सोदय-परोदओ, एदेसु णीचागोदुदयसंभवादो। उवरि सोदओ चेव, णीचागोदस्सुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो। सादावेदणीय-जसकित्तीणं मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खत्तादो। पुरिसवेदुच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो? ण, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदुच्चागोदाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। सव्वगुणट्ठाणाणमोघपच्चएसु पुरिस-णवुंसयवेदेसु अवणिदेसु अवसेसा एत्थ एदासिं पच्चया होंति। णवरि पमत्तसंजदेसु आहार-आहारमिस्सकायजोगपच्चया अवणेदव्वा, इत्थिवेदोदइल्लाणं तदसंभवादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगपच्चया अवणेदव्वा, तत्थ असंजदसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकालाभावादो। सेसं सुगमं। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चदुसंजलण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं। सासणसम्माइट्ठी-तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं। उवरिमा देवगइसंजुत्तं अगइसंजुत्तं च बंधंति। सादावेदणीय-पुरिसवेद-जसकित्तीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति। उच्चागोदं सव्वे वि देव-मणुसगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगदीए इत्थिवेदस्सुदयाभावादो। दुगइसंजदासंजदा सामी, देव-णेरइएसु अणुव्वईणमभावादो। उवरि मणुस्सा चेव, अण्णत्थुवरिमगुणाभावादो। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो बंधो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। सेसपयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

वेट्ठाणी ओघं ॥ १७१ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बेट्ठाणि द्विट्ठाणि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु बंधपाओग्गभावेण अवट्ठिदाणि त्ति वुत्तं होदि। तेसिं परूवणा ओघं होदि ओघतुल्लेत्ति जं वुत्तं होदि। एदमप्पणासुत्तं देसामासियं, ओघादो एदम्हि थोवभेदुवलंभादो। तं भण्णमाणसुत्तत्थेण सह सिस्साणुग्गहट्ठं परूवेमो— थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद - तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - चउसंठाण - चउसंघडण - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि - उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणि बेट्ठाणियाणि। एदेसु अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। अण्णपयडीणं सव्वासिं पि पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छेदमुवगओ। कुदो? तधोवलंभादो। थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - चदुसंठाण - चदुसंघडण - तिरिक्खाणुपुव्वि - उज्जोव - अप्पसत्थविहायगइ - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणं बंधो सोदय - परोदओ, उभयथा वि बंधाविरोहादो। इत्थिवेदस्स सोदएणेव बंधो, तदुदयमहिकिच्च परूवणापारंभादो। ओघादो एत्थ विसेसो एसो, तत्थ सोदय - परोदएहि बंधोवदेसादो। थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्क - तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो, सत्तमपुढवीणेरइएहिंतो तेउ - वाउकाइएहिंतो च णिप्फिडिदूणित्थिवेदेसुप्पण्णाणं मुहुत्तस्संतो णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणम्मि सांतरो, तत्तो तेसिमुववादाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सांतरो, अणियमेणेगसमयबंधुवलंभादो। एसा परूवणा ओघादो थोवेण वि ण विरुज्झदि, समाणत्तुवलंभादो। पच्चया ओघपच्चयतुल्ला। णवरि मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीणं जहाकमेण तेवण्णट्ठेत्तालीसुत्तरपच्चया, पुरिस - णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो। तिरिक्खाउअस्स मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु कमेण पंचास पंचेतालीस पच्चया, ओरालिय - वेउव्वियमिस्स - कम्मइयकायजोग - पुरिस - णवुंसय-वेदपच्चयाणमभावादो। तदभावो वि इत्थिवेदोदइल्लाणमपज्जत्तकाले आउअकम्मस्स बंधाभावादो। तिरिक्खाउ - तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि - उज्जोवाणि मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति। अप्पसत्थविहायगदि - दुभग - दुस्सर - अणादेज्ज - णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठिणो तिगइसंजुत्तं बंधंति, देवगईए बंधाभावादो। सासणसम्माइट्ठिणो तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, देवणिरयगदीणं बंधाभावादो। इत्थिवेदं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं बंधंति णिरयगईए सह बंधाभावादो। चउसंठाण-चउसंघडणाणि तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, एदासिं णिरय - देवगईहि सह बंधाभावादो। थीणगिद्धितिय - अणंताणुबंधिचउक्काणि मिच्छाइट्ठिणो चउगइसंजुत्तं, सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं बंधंति, णिरयगईए अभावादो। सव्वासिं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए इत्थिवेदुदयाभावादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं, सुत्तुद्दिट्ठत्तादो। सत्तण्हं धुवबंधपयडीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो बंधो, अणाइ - धुवाभावादो। अवसेसाणं सव्वत्थ सादि - अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दा पयला ओघं ॥ १७२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एदासिं दोण्हं पयडीणं जहा ओघम्मि परूवणा कदा तहा कायव्वा। णवरि पच्चएसु पुरिस-णवुंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा। णवरि असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगा च इत्थिवेदाहियारादो। पमत्तसंजदम्हि पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह आहारदुगं च अवणेदव्वं, अप्पसत्थवेदोदइल्लाणमाहारसरीरस्सुदयाभावादो। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए इत्थिवेदोदइल्लाणमभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो, णत्थि अणत्थ कत्थ वि। तेण दव्वट्ठियणयं पडुच्च ओघमिदि वुत्तं।

असादावेदणीयमोघं ॥ १७३ ॥

असादवेदणीयमिच्चेदेण पयडिणिद्देसो ण कदो, किंतु असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्ति त्ति छप्पयडिघडिओ असाददंडओ असादवेदणीयमिदि णिद्दिट्ठो। जहा सच्चभामा भामा, भीमसेणो सेणो, बलदेवो देवो त्ति। एदासिं छण्णं पयडीणं परूवणा ओघतुल्ला। णवरि एत्थ वि पच्चयविसेसो सामित्तविसेसो च णायव्वो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ १७४ ॥

एक्कम्मि मिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणे जाओ पयडीओ बंधपाओग्गा होदूण चिट्ठंति तासिमेगट्ठाणि त्ति सण्णा। तिस्से एक्कट्ठाणीए परूवणा ओघतुल्ला। तं जहा—मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं बंधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, एदासिमेत्थ णियमेण उदयाभावादो। अवसेसाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, बंधे फिट्टे वि उवरिमगुणट्ठाणेसु एदासिमुदयदंसणादो। मिच्छत्तस्स-सोदओ बंधो। णउंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं परोदओ बंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयविरोहादो। एसो एत्थ ओघादो विसेसो, तत्थ सोदय-परोदएणेदासिं बंधोवदेसादो। हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं सोदय-परोदओ बंधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयस्स विप्पडिसेहाभावादो। मिच्छत्त-णिरयाउआणं णिरंतरो बंधो। अवसेसाणं सांतरो, अणियदेगसमयबंधदंसणादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावराणं तेवण्ण पच्चया, पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणमेगूणवंचास पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालियमिस्स-कम्मइय-वेउव्वियदुग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं एक्कवंचास पच्चया, ओघपच्चएसु वेउव्वियदुग-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । सेसं सुगमं । मिच्छत्तं चउगइसंजुत्तं बंधइ । णउंसयवेद-हुंडसंठाणाणि तिगइसंजुत्तं, देवगईए सह बंधाभावादो । णिरयाउ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीओ णिरयगइसंजुत्तं बंधइ । कुदो ? साभावियादो । अपज्जत्तासंपत्तसेवट्ट-संघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं, णिरय-देवगईहि सह बंधाभावादो । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसंजुत्तं, तत्थ ताणं णियमदंसणादो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियादाव-थावर-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णिरयगईए इत्थिवेदुदयाभावादो । णिरयाउ-णिरयगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अद्धुओ ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७५ ॥

एत्थ वि पुव्वं व परूवेदव्वं । अहवा अपच्चक्खाणावरणीयपहाणो दंडओ अपच्चक्खाणावरणीयमिदि भण्णइ । जहा णिंबंब-कयंब-जंबु-जंवीरवणमिदि । अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणमपच्चक्खाणावरणीयसण्णिदाणं परूवणा ओघतुल्ला । तं जहा— अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चेव तदुभयदंसणादो । मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुव्वं उदओ पच्छा बंधो, सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तव्वोच्छेददंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, तहोवलंभादो । सव्वासिं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सोदय-परोदओ । णवरि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइदुग-ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं परोदओ बंधो, देवेसुदयाभावादो । अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कुदो णिरंतरो ? आणदादिदेवेहिंतो इत्थिवेदमणुस्सेसुप्पण्णाणं अंतोमुहुत्तकालं णिरंतरेण तदुभयबंधदंसणादो । उवरि णिरंतरो, देवसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरबंधुवलंभादो । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं पि वत्तव्वं, सणक्कुमारादिदेवेहिंतो इत्थिवेदेसुप्पण्णाणं णिरंतरबंधुवलंभादो । वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चया चेव । णवरि पुरिस-णवुंसयपच्चया सव्वत्थ अवणेदव्वा । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया च अवणेदव्वा ।
एवं वज्जरिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं । णवरि सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीसु ओरालियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु दुरूवूणोघपच्चया चेव होंति,

पुरिस-णवुंसयवेदपच्चयाणमभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु चालीस पच्चया, पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह ओरालियदुगाभावादो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाभावादो च । सेसं सुगमं । अपच्चक्खाणचउक्कं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, उवरिमा दुगइसंजुत्तं बंधंति । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । अवसेसतिण्णिपयडीओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजुत्तं बंधंति । अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स तिगइचदुगुणट्ठाणजीवा सामी । अवसेसाणं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो देवगइसम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो । अण्णत्थ तिविहो । अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो ।

पच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७६ ॥

एत्थ ओघपरूवणं किंचिविसेणाणुविद्धं संभरिय वत्तव्वं ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघं ॥ १७७ ॥

ओघादो एदेसु सुत्तेसु अवट्ठिदथोवभेयसंदरिसणट्ठं मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं च पुणरवि परूवेमो— हस्स-रइ-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, अपुव्वकरणचरिमसमए दोण्हं वोच्छेदुवलंभादो । सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो सोदय-परोदओ, परोदए वि संते बंधविरोहाभावादो । भय-दुगुंछाणं सव्वगुणट्ठाणेसु णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । हस्स-रदीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो, एत्थ पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, बहुसो परूविदत्तादो । मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं बंधंति । णवरि हस्स-रदीओ तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधविरोहादो । सव्वपयडीओ सासणो तिगइसंजुत्तं बंधइ, तत्थ णिरयगईए बंधाभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तं, तत्थ णिरय-तिरिक्खगईणं बंधाभावादो । उवरिमा देवगइसंजुत्तं, तत्थ सेसगईणं बंधाभावादो । णवरि अपुव्वकरणे चरिमसत्तमभागे अगइसंजुत्तं बंधंति । तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए णिरुद्धित्थिवेदाभावादो । दुगइसंजदासंजदा सामी, देवगईए देसव्वईणमभावादो । उवरिमा मणुस्सा चेव, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । उवरि तिविहो, धुवबंधाभावादो । हस्स-रदीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो । मणुस्साउअस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, असंजदसम्मादिट्ठि-अणियट्टीसु जहाकमेण बंधोदय-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वोच्छेददंसणादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदएण बंधो। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदएणेव। कुदो? साहावियादो। सव्वत्थ बंधो णिरंतरो, जहण्णबंधकालस्स वि अंतोमुहुत्तपमाणुवलंभादो। मिच्छादिट्ठिस्स पंचास, सासणस्स पंचेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयपच्चयाणमभावादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु चालीस पच्चया, ओघपच्चएसु ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो। सेसं सुगमं। सव्वे वि मणुसगइसंजुत्तं चेव बंधंति, अण्णगईहि सह विरोहादो। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। असंजदसम्मादिट्ठिणो देवा चेव सामी, अण्णत्थित्थिवेदोदइल्लाणं सम्मादिट्ठीणं मणुस्साउअस्स बंधाभावादो। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। सव्वत्थ सादि-अद्धुवो बंधो।

देवाउअस्स पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। सव्वगुणट्ठाणेसु परोदएणेव बंधो, सोदयम्हि बंधस्स अच्चंताभावस्स अवट्ठाणादो। णिरंतरो बंधो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवंचास, सासणस्स चउवेतालीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स चालीसुत्तरपच्चया, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदाणमभावादो। उवरि पुरिस-णवुंसयवेदाहारदुवेहि विणा ओघपच्चया चेव वत्तव्वा। सेसं सुगमं। सव्वत्थ देवगइसंजुत्तो बंधो,अण्णगईहि सह बंधविरोहादो। तिरिक्ख-मणुस-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी, अण्णत्थ ट्ठियाणं तब्बंधविरोहादो। उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। कुदो? सुत्ताणुसारिगुरूवदेसादो। सादि-अद्धुवो बंधो।

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणेसु देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अपुव्वासंजदसम्माइट्ठीसु देवगइपाओग्गाणुपुव्वीए अपुव्व-सासणेसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुस्सर-णिमिणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्व-अणियट्टीसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्त-सुभगादेज्जाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं परोदएणेव सव्वत्थ बंधो, सोदएणेदासिं बंधविरोहादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो, एत्थेदासिं धुवोदयत्तदंसणादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वत्थ

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोदय-परोदओ बंधो, उभयहा वि बंधाविरोहादो । उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए केसिंचि अपज्जत्तकाले च उदएण विणा बंधुवलंभादो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु सोदएणेव, अपज्जत्तद्धाए तेसिं गुणाणमभावादो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सुभगादेज्जाणं सोदय-परोदओ बंधो । उवरि सोदओ चेव, साभावियादो । तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरं बंधुवलंभादो । एवं सासणस्स वि वत्तव्वं । णवरि पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो णिरंतरो चेव । सम्मामिच्छाइट्ठिप्पहुडि उवरिमाणं सासणभंगो । णवरि देवगइ-वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-सुभग-सुस्सरादेज्जाणं णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, बहुसो परूविदत्तादो । णवरि देवगइ-वेउव्वियदुगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया पुरिस-णवुंसयवेदेहि सह अवणेदव्वा । सेसं सुगमं । देवगइ-वेउव्वियदुगाणि सव्वत्थ देवगइसंजुत्तं बज्झंति । णवरि वेउव्वियदुगं मिच्छाइट्ठी देव-णिरयगइसंजुत्तं बंधंति । समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जणामाओ मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधाभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं । सेसा देवगइसंजुत्तं बंधंति । अवसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणो तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देवगइ-मणुसगइसंजुत्तमुवरिमा देवगइ-संजुत्तं बंधंति । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा सामी । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ तेसिमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजद-सम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं मिच्छादिट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । अण्णत्थ तिविहो, धुवबंधाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो । आहारसरीर-आहारसरीरं-गोवंगाणं ओघपरूवणमवहारिय वत्तव्वं । तित्थयरस्स वि ओघपरूवणं चेव णादूण वत्तव्वं । णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालिय-मिस्स-कम्मइयकायजोग-पुरिस-णवुंसयवेदा असंजदसम्मादिट्ठिपच्चएसु अवणेदव्वा । अण्णत्थ पुरिस-णवुंसयवेदपच्चया चेव अवणेदव्वा । तित्थयरबंधस्स मणुसा चेव सामी, अण्णत्थित्थिवेदोदइल्लाणं तित्थयरस्स बंधाभावादो । अपुव्वकरणउवसामएसु तित्थयरस्स बंधो, ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्खवएसु; इत्थिवेदोदएण तित्थयरकम्मं बंधमाणाणं खवगसेडिसमारोहणाभावादो। जहा इत्थिवेदोदइल्लाणं सव्वसुत्ताणि परूविदाणि तथा णवुंसयवेदोदइल्लाणं पि वत्तव्वं। णवरि सव्वत्थ इत्थिवेदम्हि भणिदपच्चएसु इत्थिवेदमवणिय णवुंसयवेदो पक्खिविदव्वो। असंजदसम्मादिट्ठिपच्चएसु वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगपच्चया पक्खिविदव्वा, णेरइएसु आउअबंधवसेण सम्मादिट्ठीणमुप्पत्तिदंसणादो। णिरयाउ-णिरयदुग-इत्थिवेदाणं सव्वत्थ पुरिसवेदस्सेव परोदएण बंधो। णवुंसयवेदस्स सोदएण। एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं सोदय-परोदओ बंधो, एदेसु वुत्तट्ठाणेसु एदेसिं पडिवक्खट्ठाणेसु च णवुंसयवेदुदयदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कुदो? तेउ-वाउकइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च दोसु वि गुणट्ठाणेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो। कुदो? आणदादिदेवेहिंतो णवुंसयवेदोदइल्लमणुस्सेसुप्पण्णाणं तित्थयरसंतकम्मेण णेरइएसुप्पण्णमिच्छाइट्ठीणं च णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सणक्कुमारादिदेव-णेरइए अस्सिदूण णिरंतरो बंधो। अण्णत्थ सांतरो वत्तव्वो, असंखेज्जवासाउएसु णवुंसयवेदुदयाभावादो। तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियणवुंसयवेदोदइलतिरिक्ख-मणुस्समिच्छाइट्ठि-सासणे अस्सिदूण देवगइ-वेउव्वियसरीरदुगाणं णिरंतरो बंधो वत्तव्वो। उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो, णिरयगईए अपज्जत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु वि एदासिं बंधुवलंभादो। तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ, थावर-सुहुमापज्जत्त-साहारण-विगलिंदिएसु वि एदासिं बंधुवलंभादो। सव्वपयडीणं बंधस्स णत्थि देवाणं सामित्तं, तत्थ णवुंसयवेदुदयाभावादो। एइंदिय-आदाव-थावराणं तिरिक्खगइ-मणुसगइ-मिच्छाइट्ठी चेव सामी, देवा ण होंति; तेसु णवुंसयवेदुदयाभावादो। अण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो संभालिय वत्तव्वो। जधा इत्थिवेदस्स परूवणा कदा तधा पुरिसवेदस्स वि कायव्वा। णवरि ओघपच्चएसु इत्थि-णवुंसयवेदपच्चया चेव सव्वगुणट्ठाणेसु अवणेदव्वा, सेसासेसपच्चयाणं तत्थ संभवादो। इत्थि-णवुंसयवेदाणं बंधो परोदओ, पुरिसवेदस्स सोदओ। उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो। तित्थयरस्स परूवणा ओघतुल्ला। एवमण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो संभालिय वत्तव्वो।

अवगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ १७८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सुगमं ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १७९ ॥

देसामासियसुत्तमेदं, बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं दोण्णं चेव परूवणादो । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा— एदासिं सोलसण्हं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो । एत्थुवउज्जंती गाहा— आगमचक्खू साहू इंदियचक्खू असेसजीवा जे । देवा य ओहिचक्खू केवलचक्खू जिणा सव्वे ॥ २४ ॥ पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइय-जसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदओ चेव बंधो, एत्थ एदासिं धुवोदयत्तदंसणादो । णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघम्मि परूविदत्तादो । अगइसंजुत्तो बंधो, अवगदवेदेसु चदुण्णं गईणं बंधाभावादो । मणुसा चेव सामी, अण्णत्थ खवगुवसामगाणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदाणं सादि-अद्धुवो अद्धुवबंधित्तादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १८० ॥

सुगमं ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा—पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सजोगिअजोगिचरिमसमयम्मि बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदओ बंधो, परावत्तण्णुदयत्तादो । णिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । पच्चया सुगमं, ओघम्मि परूविदत्तादो । अगइसंजुत्तो बंधो, अवगदवेदेसु गइचउक्कस्स बंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ अवगयवेदाणमभावादो । बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

कोधसंजलणस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १८२ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८३ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, बंधे वोच्छिण्णे संते उदयाणुवलंभादो । सोदय-परोदओ बंधो, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । अगइसंजुत्तो, एत्थ चउगइबंधाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । मणुसा चेव सामी, अण्णत्थेदेसिमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्मि अद्धाणविरोहादो । अथवा अत्थि, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अवगदवेदाणमणियट्टीणं संखेज्जाणमुवलंभादो । अणियट्टिकालं संखेज्जाणि खंडाणि करिय तत्थ बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एगखंडावसेसे कोधसंजलणस्स बंधो वोच्छिण्णो । तिविहो बंधो, धुवबंधित्तादो ।

माण-मायसंजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १८४ ॥

सुगमं ।

अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८५ ॥

एदासिं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, विणट्ठबंधाणमुदयाणुवलंभादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । अवगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अविसिट्ठपच्चयत्तादो । अगइसंजुत्तो, एत्थ चउगइबंधाभावादो । मणुससामिओ, अण्णत्थावगदवेदाभावादो । बंधद्धाणवज्जिओ, दव्वट्ठियणयविसयम्मि सव्वसंगहे अद्धाणाणुववत्तीदो । अथवा अद्धाणसमण्णिओ, अवलंबियपज्जवट्ठियणयत्तादो । कोधबंधवोच्छिण्णट्ठाणादो उवरिमअद्धाणं संखेज्जखंडाणि काऊण बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एयखंडावसेसे माणबंधो वोच्छिज्जदि । पुणो सेसमेयं खंडं संखेज्जाणि खंडाणि करिय तत्थ बहुखंडेसु अइक्कंतेसु एयखंडावसेसे मायबंधो वोच्छिज्जदि । एदं कुदो वगम्मदे ? सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूणेति जिणवयणादो वगम्मदे । तिविहो, धुवत्ताभावादो ।

लोभसंजलणस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १८६ ॥

सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । अणियट्टिबादरद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १८७ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुहुमसांपराइयचरिमसमयम्मि बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । अवगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अविसिट्ठपच्चयत्तादो । अगइसंजुत्तो, चउगइबंधाभावादो । मणुसासामिओ, अण्णत्थ खवगुवसामगाणमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो । किमट्ठमणुवदिट्ठं ? दव्वट्ठियावलंबणादो । तिविहो बंधो धुवबंधित्तादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय- [चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-] चदुसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १८८ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १८९ ॥

एदासिं पयडीणं बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिणो त्ति परिक्खा णत्थि, उदयवोच्छेदाभावादो तिण्हं कसायाणं णियमेण उदयाभावादो च । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-कोहसंजलण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । सादावेदणीयस्स सव्वत्थ सोदय-परोदओ अद्धुवोदयत्तादो । जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति सोदय-परोदओ बंधो । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । तिण्हं संजलणाणं परोदएण बंधो, कोहोदयप्पणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सादावेदणीयस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो बंधो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । एवं जसकित्तीए वत्तव्वं । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कधं णिरंतरो ? असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुहलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । मिच्छाइट्ठिम्हि तेदालीसुत्तरपच्चया, सासणे अट्ठत्तीस, बारसकसायाणमभावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु जहाकमेण चोत्तीस-सत्ततीसपच्चया, णवकसायपच्चयाभावादो । संजदासंजदेसु एक्कत्तीसपच्चया, छक्कसायाभावादो । पमत्तसंजदेसु एक्कवीसपच्चया, कसायतियाभावादो । अप्पमत्त-अपुव्व-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

करणेसु एगूणवीसपच्चया, कसायतियाभावादो। उवरि तेरसआदिं कादूण एगूणादिकमेण पच्चया जाणिय वत्तव्वा। सेसं सुगमं। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-चउसंजलण-पंचंतराइयाणि मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, सासणसम्माइट्ठी तिगइसंजुत्तं, सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं, उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति। सादावेदणीय-जसकित्तीओ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणो तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए सह बंधाभावादो। उवरि णाणावरणभंगो। उच्चागोदं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो देव-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि बंधविरोहादो। उवरिमा देवगइसंजुत्तमणियट्टिणो अगइसंजुत्तं बंधंति। चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। दुगइसंजदासंजदा। अवसेसा मणुसा, अण्णत्थ तेसिमणुवलंभादो। बंधद्धाणं सुगमं। बंधविणासो णत्थि, बंधुवलंभादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। उवरिमगुणेसु तिविहो, धुवत्ताभावादो। अवसेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

बेट्ठाणी ओघं ॥ १९० ॥

थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बेट्ठाणिसण्णा, दोसु गुणट्ठाणेसु चिट्ठंति त्ति उप्पत्तीदो। एदासिं परूवणा ओघतुल्ला, विसेसाभावादो। तं जहा—अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदंसणादो। थीणगिद्धितियस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदेसु कमेण बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीचागोदाणमेवं चेव। णवरि संजदासंजदम्मि उदयवोच्छेदो। एवमित्थिवेदस्स वि। णवरि अणियट्टिम्हि तदुच्छेदो। चउसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराणमेवं चेव। णवरि एत्थ उदयवोच्छेदो णत्थि। चउसंघडणाणमेवं चेव। णवरि अप्पमत्तसंजदेसु बिदिय-तदियसंघडणाणमुदयवोच्छेदो। चउत्थ-पंचमाणं णत्थि उदयवोच्छेदो, उवसंतकसाएसु तदुच्छेददंसणादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-दुभग-अणादेज्जाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अणंताणुबंधिकोधस्स सोदओ बंधो। तिण्हं कसायाणं परोदओ, तेसिमेत्थुदयाभावादो। अवसेसपयडीणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु सांतर-णिरंतरो बंधो, तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढविणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो,

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगसमएण बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसंजुत्तं बंधंति । इत्थिवेदं तिगइसंजुत्तं, णिरयगईए बंधाभावादो । चउसंठाण-चउसंघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधंति, अण्णगईहि बंधाभावादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि तिगइसंजुत्तं बंधंति, देवगईए बंधाभावादो । सासणो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं बंधइ, तस्सण्णगईहि विरोहादो । चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । उवरि सुगमं, बहुसो परूविदत्तादो ।

जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १९१ ॥

बेट्ठाणदंडयं परूविय पच्छा जेणेदं सुत्तं परूविदं तेण णिद्दादंडयमादिं कादूणेति अत्थावत्तिदो अवगम्मदे । णिद्दा-असादेगट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणदंडयाणं परूवणाए ओघभंगो । सो वि चिंतिय एत्थ वत्तव्वो ।

पुरिसवेदे ओघं ॥ १९२ ॥

एसो पुरिसवेदणिद्देसो जेण देसामासियो तेण पुरिसवेददंडय-माण-लोहदंडयाणं गहणं । जहा एदेसिं दंडयाणमोघम्मि परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा । णवरि पच्चयविसेसो जाणिदव्वो ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९३ ॥

हस्स-रदिसुत्तमादिं कादूण जाव तित्थयरसुत्तं ति ताव एदेसिं सुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय परूवेदव्वं ।

माणकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-तिण्णिसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १९४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोधसंजलणमेत्थ एदाहि सह किण्ण परूविदं ? ण, तस्स माणसंजलणबंधादो पुव्वमेव वोच्छिण्णबंधस्स माणादीहि बंधद्धाणं पडि पच्चासत्तीए अभावादो । एदस्स सुत्तस्स परूवणाए कोधभंगो । णवरि माणस्स सोदओ, अण्णेसिं कसायाणं परोदओ बंधो । पच्चएसु माणकसायं मोत्तूण सेसकसाया अवणेदव्वा । सेसं जाणिय वत्तव्वं । ॥ १०६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

बेट्ठाणि जाव पुरिसवेद-कोधसंजलणाणमोघं ॥ १९६ ॥

बेट्ठाणि त्ति वुत्ते बेट्ठाणिय-णिद्दा-साद-असाद-मिच्छत्त-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणदंडया घेत्तव्वा, देसामासियत्तादो । पुरिसवेद-कोधसंजलणे त्ति वुत्ते तस्स एक्कस्सेव सुत्तस्स गहणं कायव्वं । एदेसिं सुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय वत्तव्वं ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९७ ॥

सुगममेदं, बहुसो परूविदत्थत्तादो ।

मायकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय दोण्णिसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेदं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं ।

बेट्ठाणि जाव माणसंजलणे त्ति ओघं ॥ २०० ॥

बेट्ठाणि-णिद्दासादासादेगट्ठाण-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-पुरिस-कोध-माणसुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय परूवेदव्वं ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०१ ॥

सुगममेदं ।

लोभकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २०२ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एदं सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेसं जावतित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०४ ॥

सुगमं ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २०५ ॥

सुगमं ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीदरागछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अत्थो । तं जहा—सादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधाविरोहादो । णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । उवसंत-खीणकसाएसु णव जोगपच्चया । सजोगीसु सत्त । अगइसंजुत्तो बंधो । मणुसा सामी । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २०८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एत्थ उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति विचारो णत्थि, एदासिं पयडीणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, एदासिं बंधोदयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्ख-मणुसाउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-ओरालियसरीर-पंचसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्ख-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ बंधो, दोहि वि पयारेहि बंधविरोहाभावादो । पंचिंदिय-तस-बादर-पज्जत्ताणं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ बंधो । सासणसम्माइट्ठीसु सोदओ चेव, एदासिं पडिवक्खपयडीणं तत्थुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमइयबंधाणुवलंभादो । सादासाद-पंचणोकसाय-पंचसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि एदासिं बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स सांतर-णिरंतरो । कुदो णिरंतरो ? पम्म-सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु पुरिसवेदस्स णिरंतरबंधुवलंभादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सांतर-णिरंतरो बंधो । होदु सांतरो, कुदो णिरंतरो ? ण, सुक्कलेस्सियमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिदेवाणं णिरंतरबंधुवलंभादो । ओरालियसरीरअंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, णेरइएसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो । कथं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियसंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? देव-णेरइएसु असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरं बंधुवलंभादो । सासणसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, तत्थ पडिवक्खपयडिबंधाभावादो परघादुस्सासबंधविरोहिअपज्जत्तस्स बंधाभावादो च । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं पि बंधो सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, तेउ-वाउकाइयमिच्छाइट्ठीसु सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो भेदाभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजुत्तो बंधो। देवाउ-[देवगइ-]देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईहि बंधविरोहादो। णवरि समचउरससंठाणस्स तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठिम्हि देवगइ-णिरयगइसंजुत्तो। सासणे देवगइसंजुत्तो। सादावेदणीय-इत्थि-पुरिस-हस्स-रदि-पसत्थविहायगइ-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं तिगइसंजुत्तो बंधो, णिरयगईए अभावादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो बंधो, देवगईए अभावादो। णवरि सासणे तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईहि विरोहादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-सोलसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइसंजुत्तो बंधो। सासणे तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधस्स तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। अवसेसाणं चउगइया। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तुद्दिट्ठत्तादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणे तिविहो, धुवत्ताभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। एवमेसा मदि-सुदअण्णाणीणं परूवणा कदा। विभंगणाणीणं पि एवं चेव वत्तव्वं, विसेसाभावादो। णवरि उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं सोदओ बंधो, अपज्जत्तकाले विभंगणाणाभावादो। तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ बंधो, थावर-सुहुम-अपज्जत्तएसु विभंगणाणाभावादो। तिण्णमाणुपुव्वीणं बंधो परोदओ, अपज्जत्तकाले विभंगणाणाभावादो। पच्चएसु ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा, विभंगणाणस्स अपज्जत्तकालेण सह विरोहादो। अण्णो वि जइ अत्थि भेदो सो संभालिय वत्तव्वो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २०९ ॥

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमेक्कट्ठाणिसण्णा, एक्कम्हि चेव मिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणे बंधसरूवेण अवट्ठाणादो। ॥ ११० ॥
एदासिं परूवणा ओघतुल्ला। णवरि विभंगणाणीसु एइंदिय-बेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-णिरयाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, एदेसु विभंगणाणीणमभावादो। सेसं सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २१० ॥

एदं सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइयअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २११ ॥

एदासिमुदयादो बंधो पुव्वं वोच्छिण्णो, बंधे वोच्छिण्णे संते वि पच्छा उदयदंसणादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । उवरि सोदओ चेव । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ बंधुवरमाभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति ताव जसकित्तीए बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठीणं देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो । चदुगइअसंजदसम्मादिट्ठी, दुगइसंजदासंजदा सामी । उवरिमा मणुसा चेव । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवत्ताभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

णिद्दा य पयला य ओघं ॥ २१२ ॥

णवरि 'असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि' जाव भणिदव्वं । ओघम्मि 'मिच्छाइट्ठिप्पहुडि' त्ति वुत्तं; एत्थ पुण असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि त्ति वत्तव्वं, सण्णाणस्स हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु अभावादो । एत्तिओ चेव विसेसो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २१३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स बंधो उदयादो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ बंधोदयाणं वोच्छेदाभावादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

 बंधाभावादो। पच्चया सुगमा। असंजदसम्मादिट्ठी देव-मणुसगइसंजुत्तं; उवरिमा देवगइसंजुत्तमगइसंजुत्तं च बंधंति, साहावियादो। चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा सामी। उवरि मणुसा चेव। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तुद्दिट्ठत्तादो। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति। णवरि असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि वि सुगमो तो वि सण्णाणपक्खवाएणाक्खित्तचित्तो दुम्मेहजणाणुग्गहट्ठं च पुणरवि परूवेमि—असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो। उदयवोच्छेदो णत्थि, केवलणाणीसु वि तदुदयदंसणादो। एवमथिरासुहाणं पि वत्तव्वं। अरदि-सोगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, पमत्तापुव्वेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिण्णो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। अथिरा-सुहाणं सोदओ, धुवोदयत्तादो। अजसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ। उवरि परोदओ चेव। एदासिं पयडीणं सव्वासिं पि बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सव्वपयडीणं दुगइसंजुत्तो, उवरिमाणं देवगइ-संजुत्तो बंधो। चउगइअसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधद्धाणं। पमत्तसंजदम्मि बंधवोच्छेदो। एदासिं बंधो सादि-अद्धुवो। अपच्चक्खाणावरणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीओ एक्कम्हि असंजदसम्मादिट्ठिगुणट्ठाणे बज्झंति त्ति एदासिमेत्थ एग-ट्ठाणसण्णा। एत्थ अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिं मोत्तूणुवरि बंधुदया-णुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणमेत्थ खओवसमियणाणमग्गणाए बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि, केवलणाणीसु वि उदयदंसणादो। अपच्चक्खाणावरणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधो परोदओ, सम्मा-दिट्ठीसु एदासिं सोदएण बंधस्स विरोहादो। णिरंतरो बंधो, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियकायजोग-ओरालियमिस्सकायजोग-पच्चया णत्थि, तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं बंधाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। अण्णासिं पयडीणं मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगईहि सह विरोहादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसंजदसम्माइट्ठी सामी। अवसेसाणं पयडीणं देव-णेरइया सामी। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे भूओगुणट्ठाणजणियद्धाणविरोहादो। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो वोच्छिज्जदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो । पच्चक्खाणावरणचउक्कमेत्थ बेट्ठाणियमसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजददोगुणट्ठाणेसु समं चेव बंधुवलंभादो । बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि तदुभयाभावदंसणादो । सोदय-परोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । संजदासंजदेसु देवगइसंजुत्तो । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा सामी । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति बंधद्धाणं । संजदासंजदम्मि बंधो वोच्छिज्जदि । दोसु वि गुणट्ठाणेसु तिविहो बंधो, धुवाभावादो । पुरिसवेद-चउसंजलण-हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं सोदय-परोदओ बंधो । सांतर-णिरंतर-पच्चय-गइसंजोग-सामित्तद्धाण-बंधवियप्पा जाणिय वत्तव्वा । मणुसाउअस्स पुव्वावरकालसंबंधिबंधोदयपरिक्खा सुगमा । परोदओ बंधो, मणुस्साउबंधोदयाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि अक्कमेण वुत्तिविरोहादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । बाएत्तालीस पच्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगइसंजुत्तो बंधो । देव-णेरइया सामी । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणविरोहादो । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो । देवाउअस्स पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो । णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया ओघतुल्ला । देवगइसंजुत्तो बंधो । तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा-मणुससंजदा च सामी, अण्णत्थ बंधाणुवलंभादो । असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति बंधद्धाणं । अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो । देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं वुच्चदे— देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अपुव्वासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अवसेसतेवीसपयडीणं एत्थुदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव; केवलणाणीसु उदयवोच्छेदुवलंभादो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं सव्वगुणट्ठाणेसु परोदओ बंधो, एदासिमुदय-बंधाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुभ-णिमिणाणं सोदओ बंधो । समचउरससंठाण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ बंधो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु सोदओ चेव, तेसिमपज्जत्तद्धाए अभावादो । णवरि समचउरससंठाणस्स सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो । सुभग-आदेज्जाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। थिर-सुभाणमसंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा त्ति सांतरो बंधो। उवरि णिरंतरो। अवसेसाणं पयडीणं सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया असंजदसम्मादिट्ठिम्मि अवणेदव्वा। सेसपयडीणं पच्चया ओघतुल्ला। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो सव्वगुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो असंजदसम्मादिट्ठिम्हि देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा सामी। सेसाणं पयडीणं चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणे त्ति बंधद्धाणं। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। णिमिणस्स तिविहो बंधो, धुवाभावादो। अवसेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो। आहारदुग-तित्थयराणमोघपरूवणमवहारिय भाणिदव्वं।

मणपज्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २१६ ॥

सुगमं।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। सुहुमसांपराइयसंजदद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासिं पयडीणं मदिणाणमग्गणाए पमत्तसंजदप्पहुडिगुणट्ठाणेसु जथा परूवणा कदा तथा परूवेदव्वा। णवरि एत्थ सव्वत्थित्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा, अप्पसत्थवेदोदइल्लाणं मणपज्जवणाणाणुप्पत्तीदो। पमत्तपच्चएसु आहारदुगमवणेदव्वं, मणपज्जवणाणस्स आहारसरीरदुगोदएण सह विरोहादो। पुरिसवेदस्स सोदओ बंधो। एवमण्णो वि विसेसो जदि अत्थि सो संभरिय वत्तव्वो।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २१८ ॥

सुगमं।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्ठउवसमा खवा बंधा। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २१९ ॥

॥ ११४ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एदं पि सुगमं, ओघम्मि वुत्तत्थत्तादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २२० ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममेदं ।

सेसमोघं जाव तित्थयरे त्ति । णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि त्ति भाणिदव्वं ॥ २२२ ॥

एदं पि सुगमं ।

केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २२३ ॥

सुगमं ।

सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि ।

एदे बंधा, अवसेसा बंधा ॥ २२४ ॥

एदस्स बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि; सजोगि-अजोगिचरिमसमएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, पडिवक्खपयडीए बंधाभावादो । सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो त्ति सत्त एदस्स बंधपच्चया । बंधो अगइसंजुत्तो, एत्थ गइबंधेण विरुद्धबंधादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ केवलीणमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एकम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणविरोहादो । सजोगिचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो ।

संजमाणुवादेण संजदेसु मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २२५ ॥

जथा मणपज्जवणाणमग्गणाए परूवणा कदा तथा एत्थ कायव्वा । णवरि पच्चयादिविसेसो जाणिय वत्तव्वो । एत्थ विसेस-पदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २२६ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २२७ ॥

सुगममेदं ।

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय [चउदंसणावरणीय] सादावेदणीय-लोभसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २२८ ॥

सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासिं पयडीणमेत्थ बंधोदयवोच्छेदाभावादो 'उदयादो किं पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो' त्ति विचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-लोभसंजलणाणं-सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-जसकित्तीणं पमत्तसंजदम्मि सांतरो बंधो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, तदभावादो । सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ णिरंतरो, अप्पिदसंजदेसु बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । एदासिं सव्वपयडीणं पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणद्धाए छसत्तभागो त्ति बंधो देवगइसंजुत्तो । उवरि अगइसंजुत्तो, तत्थ गईणं बंधाभावादो । मणुसा एव सामी, अण्णत्थ संजदाभावादो । बंधद्धाणं सुगमं, सुत्तुद्दिट्ठत्तादो । बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरि वि बंधुवलंभादो 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तादो वा । चोद्दसण्हं धुवबंधीणं बंधो तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

सेसं मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

तम्हा जहा मणपज्जवणाणीसु सेसपयडीणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा । को वि विसेसो अत्थि, इत्थिणवुंसयवेदाहारदुग-पच्चयाणं तत्थासंताणमेत्थत्थित्तदंसणादो । णिद्दा-पयलाणं पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णत्थि, सुहुमसांपराइय-जहाक्खाद-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

संजदेसु वि तदुदयदंसणादो। बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। देवगइसंजुत्तो, गत्तंतरस्स बंधाभावादो। मणुसा सामी, अण्णत्थ संजमाभावादो। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति बंधद्धाणं। अपुव्वकरणद्धाए सत्तमभागचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि। कथमेदं णव्वदे? सुत्ताविरुद्धाइरियवयणादो। तिविहो बंधो, धुवाभावादो। एवं चेव पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं। णवरि अद्धाणमणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा त्ति वत्तव्वं। देवगइ-अगइसंजुत्तो। दुविहो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो। कोधसंजलणस्स लोभसंजलणभंगो। णवरि अद्धाणमणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा त्ति। एवं माण-मायासंजलणाणं पि वत्तव्वं। णवरि कोधबंधवोच्छिण्णुवरिमद्धाए संखेज्जाभागे गंतूण माणबंधद्धाणं समप्पदि। सेसद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण मायबंधद्धाणं समप्पदि त्ति वत्तव्वं। हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमए तदभावदंसणादो। बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। हस्स-रदीणं बंधो पमत्तम्मि सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। भय-दुगुंछाणं सव्वत्थ णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो वि, अपुव्वकरणद्धाए चरिमसत्तमभागे गईए बंधाभावादो। मणुसा सामी। पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणो त्ति बंधद्धाणं। अपुव्वकरणचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि। भय-दुगुंछाणं तिविहो बंधो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, तव्विवरीयबंधादो। देवाउअस्स पुव्वावरकालेसु बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, उदयाभावादो। परोदओ बंधो, साभावियादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा। देवगइसंजुत्तो। मणुसा चेव सामी। पमत्त-अप्पमत्तसंजदा बंधद्धाणं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो। संपहि देवगइसहगयाणं सत्तावीसपयडीणं भण्णमाणे पुव्वावरकालेसु बंधोदयवोच्छेदपरिक्खा जाणिय कायव्वा। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो परोदएण, साभावियादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ, संजदेसु पडिवक्खपयडीणं पि उदयदंसणादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो। थिर-सुभाणं पमत्तसंजदम्मि बंधो सांतरो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, तदभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो, एत्थ धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा। सव्वासिं पयडीणं बंधो देवगइसंजुत्तो। मणुसा सामीओ। बंधद्धाणं बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं बंधो तिविहो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो। असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तीणमेगट्ठाणियाणं सांतरबंधीणमोघपच्चयाणं देवगइसंजुत्ताणं मणुससामियाणं बंधद्धाणविरहियाणं पमत्तसंजदम्मि वोच्छिण्णबंधाणं बंधेण सादि-अद्धुवाणं बंधो सोदओ परोदओ सोदय-परोदओ वे त्ति जाणिय परूवेदव्वो। आहारदुग-तित्थयराणं पि जाणिय वत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वि-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३१ ॥

सुगमं

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २३२ ॥

उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिज्जदि त्ति एत्थ विचारो णत्थि, एदासिं बंधवोच्छेदाभावादो उदइल्लाणमुदयवोच्छेदाभावादो च । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियदुग-तित्थयराणं परोदओ बंधो, एदासिं बंधोदयाणमक्कमवुत्तिविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादावेदणीय-चदुसंजलण-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ बंधो, एदासिं पडिवक्खपयडीणं पि उदयदंसणादो । अवसेसाणं पयडीणं सोदओ बंधो, एत्थ एदासिं पयडीणं धुवोदयत्तुवलंभादो । सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुभ-जसकित्तीणं पमत्तसंजदम्मि बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । णवरि इत्थि-णवुंसय-वेदपच्चया णत्थि, अप्पसत्थवेदोदइल्लाणं परिहारसुद्धिसंजमाभावादो । आहारदुगपच्चया वि णत्थि, परिहारसुद्धिसंजमेण आहारदुगो-दयविरोहादो तित्थयरपादमूले ट्ठियाणं गयसंदेहाणं आणाकणिट्ठदासंजमबहुलतादिआहारुट्ठवणकारणविरहिदाणमाहारसरीरोवादाणा-संभवादो वा । देवगइसंजुत्तो बंधो, एत्थण्णगइबंधाभावादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ संजमाभावादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति सुत्तणिद्देसादो । धुवबंधीणं बंधो तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३३ ॥

सुगमं ।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २३४ ॥

असादावेदणीय-अरदि-सोगाणमेत्थ बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि; उवरि तदुदयवोच्छेदुवलंभादो। अथिर-असुभाणं पि एवं चेव वत्तव्वं, पमत्त-सजोगीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासंजद-सम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेददंसणादो। अथिर-असुहाणं सोदओ, अजसकित्तीए परोदओ, सेसाणं बंधो सोदय-परोदओ। सांतरो बंधो, एदासिमेगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। इत्थि-णवुंसयवेदाहारदुगविरहिदोघपच्चया एत्थ वत्तव्वा। देवगइसंजुत्तो बंधो। मणुसा सामी। बंधद्धाणं णत्थि, एगगुणट्ठाणम्हि तदसंभवादो। पमत्तसंजदचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

देवाउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३५ ॥

सुगमं।

पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तसंजदद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २३६ ॥

उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, संजदेसु देवाउअस्स उदयाभावादो। परोदओ बंधो, बंधोदयाणमक्कमवुत्तिविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि आहारदुगित्थिणवुंसयवेदपच्चया णत्थि। देवगइसंजुत्तो, मणुसा सामीओ, अवगयबंधद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण वोच्छिण्णबंधो। सादि-अद्धुवो।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३७ ॥

सुगमं।

अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २३८ ॥

एदासिं देवाउअभंगो। णवरि बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणासंभवादो। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिं पि बंधुवलंभादो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २३९ ॥

सुगमं।

सुहुमसांपराइयउवसमा खवा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४० ॥

एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति ण परिक्खा कीरदे। सादावेदणीयस्स बंधो सोदय-परोदओ, अणुदए वि बंधविरोहाभावादो। णिरंतरो सव्वपयडीणं बंधो, एत्थ गुणट्ठाणेसु बंधुवरमाभावादो। ण एगसमयमच्छिय मुदसुहुमसांपराइएहि वियहिचारो, सुहुमसांपराइयगुणट्ठाणम्मि त्ति विसेसणादो। ओरालियकायजोग-लोभकसाय-चदुमण-वचिजोगा त्ति दस पच्चया। अगइसंजुत्तो बंधो, एत्थ चउगइबंधाभावादो। मणुसा सामी, अण्णत्थ सुहुमसांपराइयाणमभावादो। बंधद्धाणं णत्थि, सुहुमसांपरायप्पहुडि त्ति सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २४१ ॥

सुगमं।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीदरागछदुमत्था सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण [बंधो] वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २४२ ॥

सुगममेदं, केवलणाणमग्गणापरूवणाए समाणत्तादो।

संजदासंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चा-गोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २४३ ॥

सुगमं ।

संजदासंजदा बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुव्वं पच्छा वा बंधो वोच्छिण्णो त्ति एत्थ विचारो णत्थि, बंधवोच्छेदाभावादो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क अगुरुअलहुअचउक्क-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तुवलंभादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति-तित्थयराणं परोदओ बंधो, बंधोदयाणमण्णोण्णविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सरुच्चागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-अट्ठकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछा-देवाउ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्णचउक्क-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-सुभग-सुस्सरादेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सांतरो, एगसमएण बंधुवरमदंसणादो । पच्चया सुगमा, ओघाणुव्वइपच्चएहिंतो भेदाभावादो । सव्वासिं पयडीणं देवगइसंजुत्तो बंधो, अण्णगईणं बंधाभावादो । दुगइदेसव्वइणो सामी, अण्णत्थ तेसिमभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कगुणट्ठाणे तदसंभवादो । अथवा अत्थि, पज्जवट्ठियणयावलंबणादो । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो । धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

असंजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जस - कित्ति - अजसकित्ति - णिमिणुच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २४५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी बंधा । एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २४६ ॥

एत्थोदइल्लाणं बंधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो किं पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुअलहुअ - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवगइ - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरअंगोवंग - देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, बंधोदयाणं परोप्परविरोहादो । णिद्दा - पयला - सादासाद - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - समचउरससंठाण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - उच्चागोदाणं बंधो सोदय - परोदओ उभयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - ओरालियसरीर - ओरालियसरीरअंगोवंग - वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदएण सगबंधस्स तत्थ विरोहदंसणादो । पंचिंदियजादि - तस - बादर - पज्जत्ताणं मिच्छादिट्ठीसु सोदय - परोदओ । उवरि सोदओ चेव, विगलिंदिय - थावर - सुहुमापज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघाद - उस्सास - पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ । सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि सोदओ चेव, अपज्जत्तद्धाए तस्साभावादो । पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछा - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । सादासाद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो । देवगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - वेउव्वियसरीर - वेउव्विय-सरीरअंगोवंग - समचउरससंठाणाणं बंधो मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर - णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, असंखेज्जवासाउअ-तिरिक्ख - मणुसमिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सुहतिलेस्सियसंखेज्जवासाउएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख-पयडीणं बंधाभावादो । पुरिसवेदस्स मिच्छादिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर - णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? पम्म - सुक्कलेस्सियतिरिक्ख - मणुस्सेसु पुरिसवेदस्सेव बंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छा-दिट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतर - णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वक्खबंधादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठीसु सासणसम्मादिट्ठीसु च सांतर-णिरंतरो बंधो। कथं णिरंतरो? ण, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो। वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो। पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सरादेज्जुच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरणिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो। पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइसंजुत्तो। सासणे णिरयगईए विणा तिगइसंजुत्तो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो। सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगईणमभावादो। सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देवगइसंजुत्तो। उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो, अण्णत्थ तस्सुदयाभावादो। चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठी सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो बंधो। सासणादिसु तिविहो, धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

बेट्ठाणी ओघं ॥ २४७ ॥

बेट्ठाणपयडीणं जधा मूलोघम्मि परूवणा कदा तहा कायव्वा, विसेसाभावादो।

एक्कट्ठाणी ओघं ॥ २४८ ॥

सुगममेदं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणुस्साउ-देवाउआणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २४९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २५० ॥

एदंपि सुगमं ।

तित्थयरणामस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २५१ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २५२ ॥

सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीणमोघं णेदव्वं जाव तित्थयरे त्ति ॥ २५३ ॥

तिण्णं जाईणमादाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं चक्खुदंसणीसु परोदयत्तुवलंभादो ओघमिदि ण घडदे ? ण, दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिददेसामासियसुत्तेसु विरोहाभावादो । पयडिबंधद्धाणगयभेदपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २५४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछदुमत्था बंधा । एदे बंधा; अबंधा णत्थि ॥ २५५ ॥

सुगममेदं ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ २५६ ॥

सुगमं ।

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २५७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सियाणमसंजदभंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साए ताव उच्चदे — पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्णचउक्क-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअचउक्क-पसत्थविहायगइ-तसचउक्क-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणि किण्हलेस्सियचउगुणट्ठाणजीवेहि बज्झमाणाणि । तत्थुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खाए असंजदभंगो । पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो । देवगइदुग-वेउव्वियदुगाणं परोदओ, बंधोदयाणं समाणकालउत्तिविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदयबंधाणमेदेसु गुणट्ठाणेसु अक्कमउत्तिविरोहादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ, एत्थ पडिवक्खपयडीणं पि उदयसंभवादो । उवरि सोदओ चेव, विगलिंदिय-थावर-सुहुम-अपज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, छट्टपुढवीपच्छायदाणमपज्जत्तकाले असंजदसम्मादिट्ठीणं परोदएण बंधसंभवादो । सम्मामिच्छाइट्ठीसु सोदओ, एदेसिमपज्जत्तद्धाभावादो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, अद्धुवबंधित्तादो । पुरिसवेद-देवगइदुग-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-समचउरससंठाण-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । उवरि णिरंतरो, णिप्पडिवक्खबंधादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो । कथं णिरंतरो ? ण, आरणच्चुददेवाणं मणुस्सेसुववण्णाणं सुक्कलेस्साविणासेण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

किण्हलेसाए परिणदाणमंतोमुहुत्तकालं णिरंतरबंधुवलंभादो। सुक्कलेस्साए ट्ठिदो पम्म-तेउ-काउ-णीललेस्साओ वोलिय कथमक्कमेण किण्हलेस्सापरिणदो होज्ज? ण, सुक्कलेस्सादो कमेण काउ-णीललेस्सासु परिणमिय पच्छा किण्णलेस्सापज्जाएण परिणमणब्भुवगमादो। ण च मणुसगइबंधगद्धा काउ-णीललेस्साकालादो थोवा, तत्तो तस्स बहुत्तुवलंभादो। अथवा मज्झिमसुक्कलेस्सिओ देवो जहा छिण्णाउओ होदूण जहण्णसुक्काइणा अपरिणमिय असुहतिलेस्साए णिवददि तहा सव्वे देवा मुदयक्खणेण चेव अणियमेण असुहतिलेस्सासु णिवदंति त्ति गहिदे जुज्जदे। अण्णे पुण आइरिया किण्णलेस्साए मणुसगइदुगस्स णिरंतरं बंधं णेच्छंति, मणुसगदिबंधगद्धाए काउलेस्साबंधगद्धाबहुत्तब्भुवगमादो। तं हि कुदो? मुददेवाणं सव्वेसिं पि काउलेस्साए चेव परिणामब्भुवगमादो। उवरि णिरंतरो। ओरालियसरीर-अंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो। कुदो? णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पंचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पच्चयाणमोघभंगो। णवरि असंजदसम्माइट्ठिपच्चएसु वेउव्वियमिस्सपच्चओ अवणेदव्वो। ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि ओरालियकायजोगि-त्थिपुरिसवेदपच्चएहि विणा चालीसपच्चया। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया सव्वगुणट्ठाणपच्चएसु सव्वत्थ अवणेदव्वा। ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि चालीस पच्चया, वेउव्वियमिस्स-ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो। वज्जरिसहसंघडणस्स सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि चालीस पच्चया, ओरालियकायजोगित्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो। असंजदसम्माइट्ठिम्हि चालीस पच्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयकायजोगित्थि-पुरिसवेदपच्चयाणमभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउगइ-संजुत्तो बंधो। सासणे तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइदिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं सव्वगुणट्ठाणेसु बंधो मणुसगइसंजुत्तो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजद-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

सम्माइट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो, अण्णगइबंधाभावादो । देवगइदुगस्स देवगइसंजुत्तो । वेउव्वियदुगस्स मिच्छाइट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगईणमभावादो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देवगइसंजुत्तो, अण्णगइबंधेण संजोगविरोहादो । उच्चागोदस्स सव्वगुणट्ठाणेसु देवगइ-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइय-उच्चागोदाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो, तिगइसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, देवगईए अभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो णिरयगइसम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी, णिरय-देवगईणमभावादो । बंधद्धाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो । धुवबंधीणं मिच्छादिट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो । अद्धुवबंधीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अणादि-धुवाणमभावादो । संपहि दुट्ठाणपयडीणं परूवणा कीरदे—अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, सासणसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयवोच्छेदुवलंभादो । एवं तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए वि वत्तव्वं । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वि तदुदओ अत्थि त्ति चे ण, किण्णलेस्साए णिरुद्धाए तदुदयासंभवादो । अवसेसाणं पयडीणं उदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव । सव्वासिं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो । कुदो ? सत्तमपुढवीट्ठिदमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तेउ-वाउकाइयमिच्छाइट्ठीसु च णिरंतरबंधुवलंभादो । पच्चया सुगमा । णवरि तिरिक्खाउअस्स मिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । सासणसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो चउगइसंजुत्तो । इत्थिवेदस्स तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो । चउसंठाण-चउसंघडणाणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठीसु तिगइसंजुत्तो, देवगईणमभावादो । सासणे दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो, साभावियादो । थीणगिद्धितियादीणं पयडीणं बंधस्स चउग्गइमिच्छाइट्ठि-सासण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मादिट्ठिणो सामी, अविरोहादो। बंधद्धाण बंधविणट्ठट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणाइ-धुवबंधाभावादो। अवसेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। एगट्ठाणपयडीणं परूवणा कीरदे—मिच्छत्तेइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-णिरयाणुपुव्वी-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुभयवोच्छेदुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं उदयवोच्छेदो णत्थि, बंधवोच्छेदो चेव। मिच्छत्तस्स बंधो सोदओ। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उभयहा वि अविरुद्धबंधादो। मिच्छत्तणिरयाउआणं बंधो णिरंतरो। अवसेसाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा। णवरि णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयाणुपुव्वीणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले एदासिं बंधाभावादो। एइंदिय-आदाव-थावराणं वेउव्वियकायजोगपच्चओ अवणेदव्वो। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सपच्चया अवणेदव्वा, देव-णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो। मिच्छत्तस्स चउगइसंजुत्तो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाणाणं तिगइसंजुत्तो, देवगदीए अभावादो। असंपत्तसेवट्टसंघडण-अपज्जत्ताणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो। णिरयाउ-णिरयदुगाणं णिरयगइ-संजुत्तो। अवसेसाणं पयडीणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो। णिरयाउ णिरयदुग-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी। एइंदिय-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो सुगमो। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। मणुसाउअस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ। सव्वत्थ णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया ओघसिद्धा। णवरि मिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया, सासणे वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसवेदपच्चया अवणेदव्वा; असुहतिलेस्सासु मणुसाउअं बंधमाणाणं देवासंजदसम्मादिट्ठीणमणुवलंभादो। ण च देवेसु पज्जत्तएसु असुहतिलेस्साओ अत्थि, भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिएसु अपज्जत्तयदेवेसु चेव तासिमुवलंभादो। ण च देवा णेरइया वा पज्जत्तणामकम्मोदयतिरिक्खमणुसा अपज्जत्तयदा संता आउअं बंधंति, तिरिक्ख-मणुसअपज्जत्ते मोत्तूण अण्णत्थ तब्बंधाणुवलंभादो। मणुसगइसंजुत्तो। तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो णिरयगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, किण्हलेस्साए वट्टमाणसंजदासंजदाणमणुवलंभादो। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो। देवाउअस्स सव्वत्थ बंधो परोदओ, बंधोदएसु उदयबंधाणमच्चंताभावावट्ठाणादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। सव्वेसिं पि वेउव्विय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया सग-सगोघपच्चएहिंतो अवणेदव्वा। देवगइसंजुत्तो। तिरिक्ख-मणुसा चेव सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि बंधुवलंभादो। सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। तित्थयरस्स बंधो परोदओ, बंधे उदयविरोहादो। णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। ओघपच्चएसु वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा। देवगइ-संजुत्तो बंधो किण्णलेस्सियणेरइएसु तित्थयरबंधाभावेण मणुसगइसंजुत्तत्ताभावादो। सामी मणुसा चेव, अण्णत्थासंभवादो। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि असंजदसम्मादिट्ठिट्ठाणे अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिं पि बंधदंसणादो। सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। एवं चेव णीललेस्साए परूवेदव्वं। णवरि तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं सासणसम्माइट्ठिम्हि सांतरो बंधो, सत्तमपुढवीसासणसम्माइट्ठिणो मोत्तूणण्णत्थेदासिं सासणेसु णिरंतरबंधाणुवलंभादो। ण च सत्तमपुढवीणीललेस्सिया सासणसम्माइट्ठिणो अत्थि, तत्थ किण्णलेस्सं मोत्तूणण्णलेस्साभावादो। कथं मिच्छाइट्ठीणं णीललेस्साए णिरंतरो बंधो? ण, तेउ-वाउकाइएसु णीललेस्सिएसु तिरिक्खगइदुग-णीचागोदाणं णिरंतरबंधुवलंभादो। तदियपुढवीए णीललेस्साए वि संभवादो तित्थयरबंधस्स मणुस्सा इव णेरइया वि सामिणो होंति त्ति किण्ण परूविज्जदे? तत्थ हेट्ठिमइंदए णीललेस्सासहिए तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमुववादाभावादो। कुदो? तत्थ तिस्से पुढवीए उक्कस्साउदंसणादो। ण च उक्कस्साउएसु तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइट्ठीणमुववादो अत्थि, तहोवएसाभावादो। तित्थयर-संतकम्मियमिच्छाइट्ठीणं णेरइएसुववज्जमाणाणं सम्माइट्ठीणं व काउलेस्सं मोत्तूण अण्णलेस्साभावादो वा ण णील-किण्हलेस्साए तित्थयर-संतकम्मिया अत्थि। एवं काउलेस्साए वि वत्तव्वं। णवरि तित्थयरस्स मणुसा इव णेरइया वि सामिणो। मणुस-देवगइसंजुत्तो बंधो। ओघ-पच्चएसु एक्को वि पच्चओ णावणेयव्वो, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणं भावादो। ओरालियदुग-मणुसगइदुग-वज्जरिसहसंघ-डणाणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चया णावणेयव्वा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए बंधो पुव्वमुदओ पच्छा वोच्छि-ज्जदि, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। अण्णो वि जइ भेदो अत्थि सो वि चिंतिय वत्तव्वो।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ २५९॥

सुगमं।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगइ-वेउव्वियदुगाणं पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि। अवसेसाणं पयडीणमुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थ बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादावेदणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सव्वगुणट्ठाणेसु सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं बंधो परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो। उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीणं सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदयाभावादो। सेसेसु बंधो सोदओ, तेसिमपज्जत्तद्धाए अभावादो। सुभग-आदेज्ज-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ, पडिवक्खुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-चदुसंजलण-भय-दुगुंछा-देवगइ-वेउव्वियदुग-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघादुस्सास-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, एत्थ-धुवबंधित्तादो। सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुह-जसकित्तीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा त्ति बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पंचिंदियजादि-तसणामाणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्खेसु सणक्कुमारादिदेवेसु च णिरंतरं बंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो। पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सर-सुभगादेज्ज-उच्चागोदाणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरणिरंतरो। कुदो णिरंतरो? तिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरं बंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि देवगइ-वेउव्वियदुगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्स-वेउव्वियदुग-कम्मइयकायजोगपच्चया अवणेयव्वा, देव-णेरइएसु अपज्जत्ततिरिक्ख-मणुसेसु च एदासिं बंधाभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि वेउव्वियकायजोगपच्चओ, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेउव्वियदुगपच्चओ अवणेदव्वो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सव्वपयडीणं पि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुस-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहलेस्साणमभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछा-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुअचउक्क-पसत्थविहायगदि-थिर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-पंचंतराइयाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं बंधाभावादो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो, अण्णगईहि बंधविरोहादो। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो बंधो। सव्वासिं पयडीणं तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरएसु तेउलेस्सादिसुहलेस्साभावादो। दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइसंजदा सामी। णवरि वेउव्वियचउक्कस्स तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

बेट्ठाणी ओघं ॥ २६१ ॥

तं जहा—अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, सासणसम्मादिट्ठिम्हि दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुणो उदओ चेव णत्थि, तेउलेस्साहियारादो। सेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं सोदय-परोदओ। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेसु बंधो सोदय-परोदओ। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्क-तिरिक्खाउआणं बंधो णिरंतरो। सेसाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। सव्वपयडीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु चउवण्णेगूणवंचास पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभावादो। णवरि तिरिक्खाउअस्स ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णवुंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा, पज्जत्तदेवे मोत्तूण अण्णत्थ बंधाभावादो। तिरिक्खगइदुगुज्जोव-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं ओरालियदुग-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा, तिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदासिं पज्जत्तापज्जत्तावत्थासु बंधुवलंभादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाणं बंधो तिरिक्खगइसंजुत्तो। चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोव-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधस्स देवा चेव सामी, सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु एदासिं बंधाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, णिरयगईए सुहतिलेस्साभावादो। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सादि-अद्धुवो।

असादावेदणीयमोघं ॥ २६२ ॥

देसामासियसुत्तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा—अजसकित्तीए पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिरासुहाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो। अथिर-असुहाणं बंधो सोदओ, धुवोदयत्तादो। अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति सोदय-परोदओ। उवरि परोदओ चेव। असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं सोदय-परोदओ, सव्वत्थ अद्धुवोदयत्तादो। सांतरो बंधो, सव्वासिमेदासिमेगसमएण वि सव्वगुणट्ठाणेसु बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। तिगइसंजुत्तो बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइसंजदासंजदा, मणुसगइसंजदा च सामी। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति अद्धाणं। बंधवोच्छेदट्ठाणं सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-एइंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावरणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ २६३ ॥

सुगमं।

मिच्छइट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयाभावादो। मिच्छत्तस्स सोदएण बंधो, उदयाभावे बंधाणुवलंभादो। णउंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एइंदिय-आदाव-थावराणं बंधो परोदओ, एदासिं देवेसु उदयाभावादो। मिच्छत्तबंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। अण्णपयडीणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तत्थ सुहलेस्साए अभावादो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-एइंदिय-आदाव-थावराणं ओरालियदुग-कम्मइय-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा। मिच्छत्तबंधो तिगइसंजुत्तो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं दुगइसंजुत्तो, देवगईए अभावादो। एइंदिय-आदाव-थावराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो। मिच्छत्तबंधस्स तिगइमिच्छाइट्ठिणो सामी। अवसेसाणं पयडीणं देवा चेव सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स बंधो चउव्विहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो अद्धुवबंधित्तादो।

अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ २६५ ॥

एदं देसामासियसुत्तं। तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे—अपच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुभयवोच्छेदुवलंभादो। अवसेसाणं बंधवोच्छेदो चेव। अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ। मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहवइरणारायणसंघडणाणं बंधो परोदओ, सुहलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु एदासिं बंधाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्क-ओरालियसरीराणं बंधो णिरंतरो। बंधो मणुसगइदुगस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो। उवरि णिरंतरो। एवं वज्जरिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सांतरो। उवरि णिरंतरो, एइंदियबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि अपच्चक्खाणचउक्कस्स दोसु गुणट्ठाणेसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं ओरालियदुग-णवुंसयवेदपच्चया तिसु गुणट्ठाणेसु अवणेयव्वा। सम्मामिच्छाइट्ठिम्हि दो चेव अवणेयव्वा, ओरालियमिस्सपच्चयस्स पुव्वमेवाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिगइसंजुत्तो बंधो। उवरि दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। मणुसगइदुगस्स मणुसगइसंजुत्तो। ओरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजुत्तमुवरि मणुसगइसंजुत्तमण्णगइबंधाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। अवसेसाणं पयडीणं देवा सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्मि बंधो चउव्विहो। अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो। सेसाणं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

पच्चक्खाणचउक्कमोघं ॥ २६६ ॥

बंधोदया समं वोच्छिण्णा, संजदासंजदम्मि तेसिं दोण्णमक्कमेण वोच्छेदुवलंभादो। सोदय-परोदओ, दोहि वि पयारेहि बंधा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरोहादो। णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा, अपच्चक्खाणपच्चयतुल्लत्तादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो तिगइसंजुत्तो। सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। तिगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। दुगइसंजदासंजदा सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। उवरिं तिविहो, धुवाभावादो।

मणुस्साउअस्स ओघभंगो ॥ २६७ ॥

तं जहा—बंधो परोदओ, तेउलेस्साए सव्वगुणट्ठाणेसु सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा ओघाविसेसादो। णवरि तिसु वि गुणट्ठाणेसु ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा। मणुसगइसंजुत्तो। देवा चेव सामी। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधद्धाणं। बंधवोच्छेदो सुगमो। बंधो सादि-अद्धुवो।

देवाउअस्स ओघभंगो ॥ २६८ ॥

एदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा—बंधो परोदओ, सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया ओघतुल्ला। णवरि ओघे वि वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेयव्वा। बंधो देवगइसंजुत्तो। तिरिक्ख-मणुससामीओ। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधवोच्छेदो। सादि-अद्धुवो बंधो।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २६९ ॥

सुगममेदं। कुदो ? अप्पमत्तसंजदा चेव बंधआ, उवरि तेउलेस्साए अभावादो।

तित्थयरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? असंजदसम्माइट्ठी जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २७० ॥

सुगमं। णवरि देव-मणुससामिओ बंधो। एवं तेउलेस्साए एसा परूवणा कदा। जहा तेउलेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मलेस्साए वि कायव्वा। णवरि पुरिसवेदस्स जम्हि सांतरो बंधो परूविदो तम्हि सांतर-णिरंतरो त्ति वत्तव्वो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मणुस्सेसु पुरिसवेदं मोत्तूण अण्णवेदस्स बंधाभावादो। जासिं पयडीणं बंधस्स देवा चेव सामी तासिमित्थिवेदपच्चओ अवणेयव्वो, देवेसु पम्मलेस्साए इत्थिवेदाणुवलंभादो। पंचिंदिय-तसपयडीणं बंधो णिरंतरो त्ति वत्तव्वो, तेउलेस्साए एदासिं बंधस्स सांतर-णिरंतरत्तुवलंभादो। ओरालियसरीरअंगोवंगस्स बंधो परोदओ। णिरंतरो, पम्मलेस्साए अंगोवंगेण विणा बंधाभावादो। पम्मलेस्साए पयडिबंधगयभेदपरूवणट्ठमाह—

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदंडओ णेरइयभंगो ॥ २७१ ॥

एइंदिय-आदाव-थावराणं बंधाभावादो। एत्तिओ चेव भेदो, अण्णो णत्थि। जदि अत्थि सो चिंतिय वत्तव्वो।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो ॥ २७२ ॥

एदेण सूइदत्थस्स परूवणा कीरदे— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिजदि, सुहुमसांपराइय-खीणकसाएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। जसकित्ति-उच्चागोदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं। णवरि उदयवोच्छेदो एत्थ णत्थि, अजोगिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति जसकित्तीए सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव बंधो, पडिवक्खुदयाभावादो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदो त्ति उच्चागोदबंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, णीचागोदुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। उवरि णिरंतरो पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु उच्चागोदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिपच्चएसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्खमणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहतिलेस्साणमभावादो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो चेव, अण्णगइबंधाभावादो। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। सासणादिसु तिविहो, धुवबंधाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। एगट्ठाण-बेट्ठाणपयडीओ ठविय उवरिमाओ ताव परूवेमो— णिद्दा-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पयलाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, अपुव्व-खीणकसाएसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवो-दयत्तादो । णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरि देवगइसंजुत्तो । तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं सुगमं । अपुव्व-करणद्धाए संखेज्जदिभागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । असादावेदणीयस्स पुव्वं बंधो वोच्छिण्णो । उदयवोच्छेदो णत्थि । अरदि-सोगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, पमत्तापुव्वेसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो । अथिर-असुभाणं बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कले-स्सिएसु सव्वत्थुदयदंसणादो । अजसकित्तीए पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलं-भादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । अथिर-असुहाणं सोदओ चेव, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति सोदय-परोदओ । उवरि परोदओ चेव, जसकित्तीए णियमेणुदय-दंसणादो । छण्णं पि पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । पच्चया ओघतुल्ला । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मा-दिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु छण्णं पयडीणं बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो । उवरि देवगइसंजुत्तो । तिगइअसंजदा दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । बंधो छण्णं पि सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो । अपच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि दोण्णं वोच्छेदुवलंभादो । सेसाणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाणुवलंभादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स सोदय-परोदएण वि बंधो, अद्धुवोदयत्तादो । अवसेसाणं बंधो परोदओ, सुक्कलेस्साए सव्वगुणट्ठाणेसु सोदएणेदासिं बंधविरोहादो । अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइदुगोरालियदुगाणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । वज्जरिसहसंघडणस्स मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु बंधो सांतरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मा-दिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणमोरालियदुगित्थि-णवुंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा, देवेसु एदासिमभावादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स दुगइसंजुत्तो बंधो । अवसेसाणं मणुसगइसंजुत्तो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिगइ-जीवा सामी । अवसेसाणं पयडीणं देवा सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । अपच्चक्खाणचउक्कस्स मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो । उवरि तिविहो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो । पच्चक्खाणावरणीयस्स बंधोदया समं वोच्छिज्जंति, संजदासंजदम्मि तदुहयवोच्छेददंसणादो । बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु अपज्जत्तकाले सुहलेस्साणमभावादो। असंजदेसु बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो, संजदासंजदेसु देवगइसंजुत्तो। तिगइअसंजदगुणट्ठाणाणि, दुगइसंजदासंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। उवरि तिविहो, धुवाभावादो। पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अणियट्टिम्मि तदुहयवोच्छेददंसणादो। सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधुवलंभादो। कोधसंजलणस्स बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु पुरिसवेदं मोत्तूणण्णवेदाणं बंधाभावादो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। चदुसु असंजदगुणट्ठाणेसु दुगइसंजुत्तो, उवरि देवगइसंजुत्तो बंधो अगइसंजुत्तो वा। तिगइअसंजदगुणट्ठाणाणि दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। अणियट्टिअद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। कोधसंजलणस्स मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। उवरि तिविहो, धुवाभावादो। पुरिसवेदस्स सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। माण-माया-लोहसंजलणाणं कोहसंजलणभंगो। णवरि बंधवोच्छेदपदेसो जाणिय वत्तव्वो। हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, अपुव्वकरणचरिमसमए तदुहयवोच्छेददंसणादो। बंधो सोदय-परोदओ, अद्धुवोदयत्तादो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति हस्स-रदीणं बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। भय-दुगुंछाणं णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुस-देवगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो च। तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। भय-दुगुंछाणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो, धुवबंधित्तादो। उवरि तिविहो, धुवाभावादो। हस्स-रदीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। मणुसाउअस्स बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुवलंभादो। परोदओ बंधो, सुक्कलेस्साए सव्वत्थ सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेदव्वा। मणुसगइसंजुत्तो। देवा सामी। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो त्ति बंधद्धाणं। बंधवोच्छिण्णट्ठाणं सुगमं। सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो। देवाउअस्स पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो। णिरंतरो, अंतोमुहुत्तेण विणा बंधुवरमाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंजदसम्मादिट्ठीसु वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चया अवणेयव्वा। देवगइसंजुत्तो बंधो। मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरिक्ख-मणुसा सामी। उवरि मणुसा चेव। बंधद्धाणं सुगमं। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, अपुव्वासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुवलंभादो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो। पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिणाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ, उभयहा वि बंधाविरोहादो। उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ। अण्णत्थ सोदओ चेव, अपज्जत्तद्धाभावादो। णवरि पमत्तसंजदेसु परघादुस्सासाणं सोदय-परोदओ। सुभगादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिणणामाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधित्तुवलंभादो। समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु-सांतर-णिरंतरो। होदु णाम सुक्कलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु देवगइसंजुत्तं बंधमाणेसु णिरंतरो बंधो, ण सांतरो? ण, देवेसु सुक्कलेस्सिएसु सांतरबंधुवलंभादो। उवरि णिरंतरो पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। थिर-सुभाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो देवगइसंजुत्तो। सेसाणं पयडीणं मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरि देवगइसंजुत्तो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं दुगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। अवसेसाणं पयडीणं बंधस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुव-उवघाद-णिमिणाणं मिच्छाइट्ठिम्हि बंधो चउव्विहो। उवरि तिविहो, धुवबंधित्तादो। सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो बंधो। आहारदुगस्स ओघभंगो। तित्थयरस्स वि ओघभंगो। दुगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइसंजदासंजदप्पहुडिओ च सामी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभंगो ॥ २७३ ॥

ओघादो को एत्थ विसेसो ? ण, ओघम्मि अबंधगाणमुवलंभादो। एत्थ पुण ते णत्थि, अजोगीसु लेस्साभावादो। का लेस्सा णाम ? जीव-कम्माणं संसिलेसणयरी, मिच्छत्तासंजम-कसायजोगा त्ति भणिदं होदि। सेसं जसकित्तिभंगो।

बेट्ठाणि-एक्कट्ठाणीणं णवगेवज्जविमाणवासियदेवाणं भंगा ॥ २७४ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा— थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि बेट्ठाणपयडीओ। एत्थ अणंताणुबंधिचउक्कस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा। सेसाणं पयडीणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो। एदासिं सव्वासिं पयडीणं पि बंधो परोदओ। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमुवलंभादो। पच्चया सुगमा। णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। इत्थिवेद-चउसंठाण-चउसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं ओरालियदुगित्थि-णउंसयवेदपच्चया अवणेयव्वा; सुक्कलेस्साए एदासिं बंधाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं देव-मणुसगइसंजुत्तो। सेसाणं मणुसगइसंजुत्तो, देवगईए सह बंधविरोहादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं तिगइजीवा सामी। सेसाणं पयडीणं बंधस्स देवा सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो बंधो। सासणे दुविहो, अणाइ-धुवाभावादो। सेसाणं पयडीणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणि एगट्ठाणपयडीओ। एत्थ मिच्छत्तस्स बंधोदया समं वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठिम्हि चेव तदुहयदंसणादो। णउंसयवेद-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, तहोवलंभादो। हुंडसंठाणस्स बंधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाभावादो। मिच्छत्तस्स बंधो सोदओ। सेसाणं तिण्णं पि परोदओ। मिच्छत्तस्स णिरंतरो। सेसाणं सांतरो। मिच्छत्तस्स दुगइसंजुत्तो। सेसाणं मणुसगइसंजुत्तो। मिच्छत्तस्स तिगइया सामी। सेसाणं देवा। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। मिच्छत्तस्स चउव्विहो बंधो। सेसाणं सादि-अद्धुवो।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणमोघं ॥ २७५ ॥

णत्थि एत्थ ओघपरूवणादो को वि विसेसो, तेण ओघमिदि जुज्जदे।

अभवसिद्धिएसु पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - सादासाद - मिच्छत्त - सोलसकसाय - णवणोकसाय - चदुआउ - चदुगइ - पंचजादि - ओरालिय - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर - छसंठाण - ओरालिय - वेउव्वियअंगोवंग - छसंघडण - वण्ण - गंध - रस - फास - चत्तारिआणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - आदावुज्जोव - दोविहायगइ - तस - बादर - थावर - सुहुम - पज्जत्त - अपज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - दुभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण - णीचुच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ २७६ ॥

सुगमं

सव्वे एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थपरूवणा कीरदे— एदासु पयडीसु एत्थ ण कासिं पि बंधोदयवोच्छेदो अत्थि, उवलंभमाणाणं वोच्छेदविरोहादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - मिच्छत्त - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्णचउक्क - अगुरुअलहुअ - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो । पंचदंसणावरणीय - सादासाद - सोलसकसाय - णवणोकसाय - तिरिक्ख - मणुस्साउ - तिरिक्ख - मणुसगइ - पंचिंदियजादि - ओरालियसरीर - छसंठाण - ओरालियसरीरंगोवंग - छसंघडण - तिरिक्ख - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - उवघाद - परघाद - उस्सास - आदावुज्जोव - दोविहायगइ - तस - थावर - बादर - सुहुम - पज्जत्त - अपज्जत्त - पत्तेय - साहारणसरीर - सुभग - दूभग - सुस्सर - दुस्सर - आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णीचुच्चागोदाणं सोदय - परोदओ बंधो । देवाउ - णिरयाउ - देवगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वि - णिरयगइ - णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी - वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । पंचणाणावरणीय - णवदंसणावरणीय - मिच्छत्त - सोलसकसाय - भय - दुगुंछा - चत्तारिआउ - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । सादासाद - इत्थि - णउंसयवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - णिरयगइ - एइंदिय - बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदियजादि - पंचसंठाण - छसंघडण - णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - अप्पसत्थविहायगइ - थावर - सुहुम - अपज्जत्त - साहारणसरीर - थिराथिर - सुहासुह - दूभग - दुस्सर - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो। कुदो? पम्म-सुक्कलेस्सिएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं सांतर-णिरंतरो बंधो। कुदो? असंखेज्जवासाउअ-सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो सांतर-णिरंतरो। कुदो? आणदादिदेवेसु णिरंतबंधुवलंभादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो। कुदो? तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीणेरइएसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंगाणं सांतर-णिरंतरो, सणक्कुमारादिदेव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। सव्वकम्माणं पंचवंचास पच्चया। णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणं तेवंचास पच्चया, वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। देव-णिरयाउआणं एक्कवंचास पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणमेक्कवंचास पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं तेवंचास पच्चया, वेउव्वियदुगाभावादो। सादावेदणीय-इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदि-पसत्थविहायगइ-समचउरससंठाण-थिर-सुभ-सुभग-सुस्वर-आदेज्ज-जसकित्तीणं तिगइसंजुत्तो बंधो, णिरयगईए अभावादो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं णिरयगइसंजुत्तो। देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो। मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणं चदुजादि-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं देव-णिरयगइसंजुत्तो। ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-चउसंठाण-छसंघडण-अपज्जत्तणामकम्माणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। हुंडसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो, देवगईए अभावादो। उच्चागोदस्स दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणमभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो चउगइसंजुत्तो। देवाउ-णिरयाउ-देवगइ-णिरयगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं बंधस्स तिरिक्ख-मणुसा सामी। एइंदियजादि-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णेरइयाणमभावादो। अवसेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी, तेसिं तब्बंधविरोहाभावादो। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि गुणट्ठाणे अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ उत्तासेसपयडीणं बंधुवलंभादो। बज्झमाणपयडीसु धुवबंधीणमणादिओ धुवो बंधो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु खइयसम्माइट्ठीसु आभिणिबोहियणाणिभंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिणिबोहियणाणीणं परूवणा कदा तथा णिरवसेसा कायव्वा, विसेसाभावादो। णवरि खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदेसु उच्चागोदस्स सोदओ णिरंतरो बंधो, तिरिक्खेसु खइयसम्माइट्ठीसु संजदासंजदाणमणुवलंभादो। मणुसाउअं बंधमाणाणमित्थिवेदपच्चओ णत्थि, देव-णेरइएसु इत्थिवेदखइयसम्माइट्ठीणमभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो। अण्णो जदि अत्थि सो चिंतिय वत्तव्वो। पयडिबंधगयभेदपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २७९ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बंधा। सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जादि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८० ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो उत्तत्थत्तादो।

वेदयसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - सादावेदणीय - चदुसंजलण - पुरिसवेद - हस्स - रदि - भय - दुगुंछ - देवगदि - पंचिंदियजादि - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - वेउव्वियअंगोवंग - वण्ण - गंध - रस - फास - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिर - सुभ - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - णिमिण - तित्थयरुच्चागोद - पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ॥ २८१ ॥

एत्थ अक्खसंचारं काऊण पण्णारस पण्णभंगा उप्पाएयव्वा। सेसं सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स परूवणा कीरदे—देवगइ - वेउव्वियदुगाणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदओ वोच्छिण्णो पुव्वमेव। बंधवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि बंधुवलंभादो। तित्थयरस्स णत्थि उदयवोच्छेदो, एदेसु उदयाभावादो। बंधवोच्छेदो वि णत्थि, उवलंभमाण-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्तादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधोदयाणं दोण्णं पि वोच्छेदाभावादो उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति ण परीक्खा कीरदे। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुव-तस-बादर-पज्जत्त-थिर-सुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो। णिद्दा-पयला-सादावेदणीय-चउसंजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुंछ-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्सराणं सोदय-परोदओ बंधो, दोहि वि पयारेहि बंधुवलंभादो। देवगइ-वेउव्वियदुग-तित्थयराणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो। उवघाद-परघाद-उस्सास-पत्तेयसरीराणं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, तत्थ अपज्जत्तद्धाए अभावादो। णवरि पमत्तसंजदम्मि परघादुस्सासाणं सोदय-परोदओ। सुभगादेज्जजसकित्तीणमसंजदसम्मादिट्ठिम्हि बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठीसु संजदासंजदेसु बंधो सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-चदुसंजलण-पुरिसवेद भय-दुगुंछ-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्वियसरीरंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादावेदणीय-हस्स-रदि-थिर-सुभ-जसकित्तीणं असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो। सेसाणं पयडीणं असंजदसम्मादिट्ठीसु बंधो दुगइसंजुत्तो। उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो। देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदा मणुससंजदा च सामी। तित्थयरस्स तिगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्खगईए अभावादो। उवरिमा मणुसा चेव, तेसिमण्णत्थाभावादो। सेसाणं पयडीणं चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो णत्थि, 'अबंधा णत्थि' त्ति वयणादो। धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ २८३ ॥

एत्थ पण्णभंगा जाणिय वत्तव्वा।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८४ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे—अरदि-सोग-असादावेदणीय-अथिर-असुभाणं बंधवोच्छेदो चेव। उदयवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि उदय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्सुवलंभादो। अजसकित्तीए पुव्वमुदयस्स पच्छा बंधस्स वोच्छेदो, पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। असादावेदणीय-अरदि-सोगाणं बंधो सोदय-परोदओ, दोहि वि पयारेहि बंधुवलंभादो। अथिर-असुहाणं सोदओ चेव, धुवोदयत्तादो। अजसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिम्हि सोदय-परोदओ। उवरि परोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। एदासिं छण्हं पयडीणं बंधो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पच्चया सुगमा, बहुसो उत्तत्तादो। देव-मणुसगइसंजुत्तो असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उवरि देवगइसंजुत्तो चेव, अण्णगइबंधाभावादो। चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा च सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। सव्वासिं बंधो सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

अपच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोह-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसाणुपुव्वीणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८६ ॥

अपच्चक्खाणावरणचउक्क-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि तदुहयवोच्छेदुवलंभादो। मणुसगइ-मणुसाउ-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधवोच्छेदो चेव, उवरिं पि उदयदंसणादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स बंधो सोदय-परोदओ। सेसाणं परोदओ चेव, सोदएण बंधविरोहादो। दसण्णं पयडीणं बंधो णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स चालीस पच्चया। मणुसाउअस्स बादालीस, ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। सेसाणं चोदालीस, ओरालियदुगाभावादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो। सेसाणं मणुसगइसंजुत्तो, साभावियादो। अपच्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। सेसाणं देव-णेरइया। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छिण्णट्ठाणं सुगमं। अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिविहो बंधो, धुवाभावादो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

पच्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोभाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २८७ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २८८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

एदासिं संजदासंजदम्हि अक्कमेण वोच्छिण्णबंधोदयाणं, सोदय-परोदएहि णिरंतरबंधीणं, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु जहाकमेण छादाल-सत्तत्तीसपच्चयाणं, देव-मणुसगइसंजुत्तबंधाणं, चउगइ-दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदसामियाणं, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदद्धाणाणं, संजदासंजदम्मि वोच्छिण्णबंधाणं, धुवेण विणा तिविहबंधुवगयाणं परूवणा सुगमा।

देवाउअस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २८९ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा बंधा। अप्पमत्तद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९० ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा—पुव्वमुदओ पच्छा बंधो वोच्छिज्जदि, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदयवोच्छेदुवलंभादो। परोदओ, णिरंतरो, असंजदसम्मादिट्ठीसु वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो बादालीसपच्चओ, उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु ओघपच्चओ, देवगइसंजुत्तो, दुगइअसंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-मणुसगइसंजदसामिओ, असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदद्धाणो, अप्पमत्तद्धाए संखेज्जेसु भागेसु पत्तविलओ, सादि-अद्धुवो, देवाउअस्स बंधो त्ति अवगंतव्वो।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २९१ ॥

सुगमं।

अप्पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९२ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २९३ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बंधा। सुहुमसांपराइयउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९४ ॥

पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधवोच्छेदो चेव। उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणकसायादिसु वि एदासिं पयडीणं उदयदंसणादो। तेण उदयवोच्छेदादो बंधवोच्छेदो पुव्वं पच्छा वा होदि त्ति विचारो णत्थि, संतासंताणं सण्णियासविरोहादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो। जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। उच्चागोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदओ। उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं बंधो णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। जसकित्तीए असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधो सांतरो। उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो। पच्चया सुगमा। णवरि असंजदसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ, पमत्तसंजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि। असंजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं पयडीणं बंधो देव-मणुसगइसंजुत्तो। उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु देवगइसंजुत्तो अगइसंजुत्तो वा। चउगइअसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदासंजदा मणुसगइसंजदा सामीओ। बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

णिद्दा-पयलाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ २९५ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा। अपुव्वकरणउवसमद्धाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ २९६ ॥

एदासिं बंधो पुव्वं वोच्छिज्जदि। उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणकसाएसु वि उदयदंसणादो। सोदय-परोदओ बंधो, अद्धुवोदयत्तादो। णिरंतरो, धुवबंधित्तादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु पंचेतालीस पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभावादो। पमत्तसंजदम्हि बावीस पच्चया, आहारदुगाभावादो। सेसगुणट्ठाणेसु ओघपच्चओ, विसेसाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठिम्हि देव-मणुसगइसंजुत्तो, उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो, चउगइअसंजदसम्मादिट्ठि-दुगइसंजदासंजदा-मणुसगइसंजदा सामीओ, अवगयबंधद्धाणो, अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमे भागे गयविणासो, धुवबंधित्तादो तिविहाणो णिद्दा-पयलाणं बंधो। ॥ १४६ ॥

सादावेदणीयस्स को बंधो ? को अबंधो ॥ २९७ ॥

सुगमं।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीयरागछदुमत्था बंधा। एदे बंधा, अबंधा णत्थि ॥ २९८ ॥

बंधवोच्छेदं मोत्तूण उदयवोच्छेदाभावादो, सोदय-परोदयबंधादो, असंजदप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति सांतरं बंधिदूणुवरि णिरंतरबंधित्तादो, ओघपच्चएहिंतो असंजदसम्मादिट्ठि-पमत्तसंजदे मोत्तूण अण्णत्थ समाणपच्चयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठि-पमत्तसंजदेसु ओरालियमिस्साहारदुगाभावादो, असंजदसम्मादिट्ठीसु दुगइसंजुत्तादो उवरि देवगइसंजुत्तबंधादो, चउगइअसंजदसम्मादिट्ठि-दुगइ-संजदासंजद-मणुसगइसंजदसामिबंधादो, बंधेण सादि-अद्धुवत्तादो सुगममेदं।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ २९९ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०० ॥

सुगममेदं, मदिणाणमग्गणाए परूविदत्थत्तादो।

अपच्चक्खाणावरणीयमोहिणाणिभंगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं एत्थ गहणं कायव्वं, देसामासियत्तादो। सेसं सुगमं। णवरि ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो। कथं वेउव्वियमिस्स-कम्मइयाणमुवलंभो? ण, उवसमसम्मत्तेण उवसमसेडिं चडिय कालं काऊण देवेसुप्पण्णाणं तदुवलंभादो।

णवरि आउअं णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुदो? सम्मामिच्छाइट्ठिस्सेव सव्वुवसमसम्माइट्ठीणमाउअस्स बंधाभावादो।

पच्चक्खाणावरणचउक्कस्स को बंधो? को अबंधो? ॥ ३०३ ॥

सुगमं।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा बंधा। एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०४ ॥

एदं पि सुगमं, सुदणाणपरूवणापरूविदत्थत्तादो।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को बंधो? को अबंधो? ॥ ३०५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा । अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०६ ॥

सुगममेदं ।

माण-मायासंजलणाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा । अणियट्टिउवसमद्धाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०८ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो परूविदत्तादो ।

लोभसंजलणस्स को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा बंधा । अणियट्टिउवसमद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१० ॥

एदं पि सुगमं ।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ३११ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमणद्धाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१२ ॥

एदं पि सुगमं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय- तेजा- कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण-वेउव्वियअंगोवंग - वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर - थिर -सुभ- सुभग- सुस्सर - आदेज्ज- णिमिण-तित्थयरणामाणं को बंधो ? को अबंधो ॥ ३१३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१४ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो कयपरूवणादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगाणं को बंधो ? को अबंधो ? ॥ ३१५ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमद्धाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३१६ ॥

एदं पि सुगमं ।

सासणसम्मादिट्ठी मदिअण्णाणिभंगो ॥ ३१७ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय- वेउव्विय- तेजा- कम्मइयसरीर- पंचसंठाण-ओरालिय- वेउव्वियअंगोवंग- पंचसंघडण- वण्ण-गंध- रस-फास- तिरिक्ख- मणुस- देवगइपाओग्गाणुपुव्वी- अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद- उस्सास- उज्जोव - दोविहायगइ- तस - बादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर- थिराथिर- सुहासुह- सुभग - दूभग - सुस्सर - दुस्सर- आदेज्ज - अणादेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ सासणसम्मादिट्ठीहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति ॥ १४९ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचारो णत्थि, एत्थ एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाणुवलंभादो। सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोगित्थिवेद-मज्झिमचउसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-दोविहायगइ-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। पुरिसवेदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। देवगइ-वेउव्वियदुग-समचउरससंठाण-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो। मणुसगइदुगस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो। तिरिक्खगइदुग-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, सत्तमपुढवीणेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। ओरालियसरीरदुगस्स वि सांतर-णिरंतरो बंधो, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं छादालीस पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो। मणुस-तिरिक्खाउआणं सत्तेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। अवसेसाणं पयडीणं पंचास पच्चया, पंचमिच्छत्तपच्चयाणमभावादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो देवगइसंजुत्तो। मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं मणुसगइसंजुत्तो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो। ओरालियसरीर-मज्झिमचउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो, तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगइबंधाभावादो। देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी। सेसाणं पयडीणं बंधस्स सामी चउगइसासणा। बंधद्धाणं बंधवोच्छेदो च णत्थि। छादालीसधुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो। अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - ओरालिय - वेउव्वियअंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण-वण्ण - गंध - रस - फास - मणुसगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिणुच्चागोद - पंचंतराइयपयडीओ सम्मामिच्छाइट्ठीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वोच्छिण्णो त्ति एसो विचारो णत्थि, पयडीणमेत्थ बंधोदयवोच्छेदाणुवलंभादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - पंचिंदियजादि - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा - पयला - सादासाद - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - समचउरससंठाण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - उच्चागोदाणं बंधो सोदय - परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइ - देवगइ - वेउव्वियसरीर - ओरालिय - वेउव्वियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - मणुसगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो । पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - पुरिसवेद - भय - दुगुंछा - मणुसगइ - देवगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - वेउव्विय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - ओरालिय - वेउव्वियअंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - वण्ण - गंध - रस - फास - मणुसगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - णिमिणुच्चागोद - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधदंसणादो । सादासाद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - ओरालियसरीर - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडणाणं बादालीस पच्चया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं पि बादालीस पच्चया, वेउव्वियकायजोगाभावादो । अवसेसाणं तेदालीस पच्चया, पंचमिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्कोरालिय - वेउव्वियमिस्स - कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगइदुगोरालियदुग - वज्जरिसहसंघडणाणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । देवगइ - वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो । सेससव्वपयडीणं देव - मणुसगइसंजुत्तो । मणुसगइदुगोरालियदुग - वज्जरिसहसंघडणाणं देव - णेरइया सामी । देवगइ - वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख - मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं बंधस्स सामी चउगइसम्मामिच्छाइट्ठिणो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ सव्वासिं बंधुवलंभादो । एगूणचालीसपच्चया । धुवबंधिपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि - अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

मिच्छाइट्ठीणमभवसिद्धियभंगो ॥ ३१९ ॥

सुगममेदं सुत्तं, विसेसाभावादो। णवरि धुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो, सादि-सांतर-बंधुवलंभादो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो ॥ ३२० ॥

एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परोदयत्तुवलंभादो पंचिंदियजादि-तस-बादराणं सोदयबंधुवलंभादो णेदं सुत्तं ज़ुज्जदे? ण, देसामासियसुत्तेसु एवंविहभेदाविरोहादो। पयडिबंधद्धाणणिबंधणभेदपदुप्पायणट्ठमाह —

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेदं।

असण्णीसु अभवसिद्धियभंगो ॥ ३२२ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चउआउ-चउगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चउआणुपुव्वी-अगुरुअ-लहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिरा-थिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ असण्णीहि बज्झमाणियाओ। उदयाओ बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थेदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो। पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइय-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगईणं बंधो सोदओ। णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं परोदओ बंधो। पंचदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय-पंचजादि-ओरालियसरीर-छसंठाण-ओरालियसरीरंगोवंग-छसंघडण-तिरिक्खाणुपुव्वी-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-[अणादेज्ज-] जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो। उवघाद-परघाद-उस्सासाणं पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदएण विणा वि बंधुवलंभादो। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो। सादासाद-सत्तणोकसाय-णिरय-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्वियसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरंगोवंग-छसंघडण-णिरय-मणुस-देवाणुपुव्वी-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, तेउ वाउकाइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो। असण्णीसु पणदालीस पच्चया सव्वपयडीणं, वेउव्वियदुग-चउविहमण-तिविहवचिजोग-माणसासंजमाभावादो। णवरि णिरय-देवाउअ-णिरय-देवगइ-णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं तेदालीस पच्चया, ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो। मणुस्स-तिरिक्खाउआणं चोदालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो। सादावेदणीय-इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं बंधो तिगइसंजुत्तो, णिरयगईए अभावादो। णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं णिरयगइसंजुत्तो। मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो। देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो। तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगाणं देव-णिरयगइसंजुत्तो। ओरालियसरीरंगोवंग-मज्झिमचउसंठाण-छसंघडण-अपज्जत्ताणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो। णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो बंधो, देवगईए अभावादो। उच्चागोदस्स दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणं अभावादो। अवसेसाणं पयडीणं बंधो चउगइसंजुत्तो। तिरिक्खा चेव सामी, अण्णत्थासण्णीणमभावादो। बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो। बंधवोच्छेदो वि णत्थि, बंधुवलंभादो। सत्तेतालीसधुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो। सेसाणं सादि-अद्धुवो, पडिवक्खबंधाणुवलंभादो।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओघं ॥ ३२३ ॥

एदस्स सुत्तस्स जधा ओघम्मि परूवणा कदा तथा कायव्वा। णवरि सव्वत्थ कम्मइयपच्चओ अवणेयव्वो। चदुण्णमाणुपुव्वीणं बंधो परोदओ। उवघादस्स सोदओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अणाहारएसु कम्मइयभंगो ॥ ३२४ ॥

पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - असादावेदणीय - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - [अरदि -] सोग - भय - दुगुंछा - मणुसगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय - तेजा - कम्मइयसरीर - समचउरससंठाण - ओरालियअंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - वण्ण - गंध - रस - फास - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी - अगुरुअलहुअ - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिराथिर - सुहासुह - सुभग - सुस्सर - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - णिमिणुच्चागोद - पंचंतराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयपुव्वावरकालसंबंधिबंधवोच्छेदपरीक्खा णत्थि, सव्वासिमेत्थ बंधोदयदंसणादो । पंचणाणावरणीय - चउदंसणावरणीय - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुव - थिराथिर - सुहासुह - णिमिण - पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर - समचउरससंठाण - ओरालियसरीरंगोवंग - वज्जरिसहसंघडण - उवघाद - परघाद - उस्सास - पसत्थविहायगइ - पत्तेयसरीर - सुस्सराणं परोदओ बंधो, सोदएण एत्थ बंधविरोहादो । णिद्दा - पयला - असादावेदणीय - बारसकसाय - पुरिसवेद - हस्स - रदि - अरदि - सोग - भय - दुगुंछा - सुभग - आदेज्ज - जसकित्ति - अजसकित्ति - उच्चागोदाणं सोदय - परोदओ, उभयहा वि बंधविरोहाभावादो । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय - परोदओ । असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ चेव, सोदएण बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि - तस - बादर - पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठीसु बंधो सोदय - परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - बारसकसाय - भय - दुगुंछ - तेजा - कम्मइयसरीर - वण्ण - गंध - रस - फास - अगुरुअलहुअ - उवघाद - णिमिण - पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुवबंधित्तादो । असादावेदणीय - हस्स - रदि - अरदि - सोग - थिराथिर - सुहासुह - जसकित्ति - अजसकित्तीणं सांतरो बंधो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडीणं बंधाभावादो । एवं समचउरससंठाण - वज्जरिसहसंघडण - पसत्थविहायगइ - सुभग - सुस्सर - आदेज्जुच्चागोदाणं पि वत्तव्वं । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो णिरंतरो, आणदादिदेवेसुप्पज्जिय विग्गहगईए वट्टमाणेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदियजादि - ओरालियसरीरंगोवंग - परघादुस्सास - तस - बादर - पज्जत्त - पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर - णिरंतरो, सणक्कुमारादिदेव - णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । विग्गहगदीए कधं णिरंतरदा ? ण, सत्तिं पडुच्च णिरंतरत्तुवदेसादो । सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । एवमोरालियसरीरस्स वि वत्तव्वं । मिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस, सासणस्स अट्ठत्तीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स तेत्तीस पच्चया । मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर -

ओरालियसरीरंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो। एवं वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणस्स वि वत्तव्वं। उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो। सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो, एदेसिमपज्जत्तकाले देव-णिरयगईणं बंधाभावादो। असंजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं बंधाभावादो। मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी सामी, देव-णिरयगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी। एवं वज्जरिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं। सेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिणो सामी। बंधद्धाणं सुगमं। बंधवोच्छेदो च सुगमो। धुवबंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तिविहो। सेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अद्धुवो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं दुट्ठाणपयडीणं वुच्चदे— अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छिण्णा। दुभगाणादेज्ज-णीचागोद-तिरिक्खदुगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि। अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, एत्थुदयविरोहादो। अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइदुग-दुभगाणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो। सेसाणं परोदओ बंधो, एत्थुदयाभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, अणेगसमयबंधसत्तिसंजुत्तत्तादो। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु विग्गहं काऊणुप्पण्णाणं तदो विग्गहगईए गयाणं सत्तमपुढवीदो विग्गहं काऊण णिग्गयाणं च णिरंतरबंधुवलंभादो। सासणम्मि सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमसत्तिदंसणादो। सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सांतरो, साभावियादो। पच्चया सुगमा। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो। चउसंठाण-चउसंघडणाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो। इत्थिवेदस्स दुगइसंजुत्तो, देव-णिरयगईणमभावादो। अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे दुगइसंजुत्तो, देव-णिरयगईणमभावादो। थीणगिद्धितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो। चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी। बंधद्धाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं। धुवबंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि चउव्विहो। सासणे तिविहो, धुवाभावादो। मिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमेगट्ठाणाणं वुच्चदे— उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति [विचारो] मिच्छत्त-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्ताणं णत्थि, अक्कमेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो। णउंसयवेदस्स पुव्वं बंधो

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो । हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडण - आदाव - साहारणसरीराणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि, अभावस्स भावपुरंगमत्तदंसणादो । ण च एदासिं पयडीणं विग्गहगदीए उदओ अत्थि, अणुवलंभादो । मिच्छत्तस्स बंधो सोदएण, णउंसयवेद - चउजादि - थावर - सुहुम - अपज्जत्ताणं सोदय - परोदएण, हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण - आदाव - साहारणाणं परोदएण । मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो । सेसाणं सांतरो, णियमाभावादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत्त - णउंसयवेद - हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडण - अपज्जत्ताणं बंधो तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तो । चउजादि - आदाव - थावर - सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । मिच्छत्त - णवुंसयवेद - हुंडसंठाण - असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी । एइंदिय-आदाव - थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी सामी, णिरयगईए अभावादो । बीइंदिय - तीइंदिय - चउरिंदिय - सुहुम - अपज्जत्त - साहारणाणं तिरिक्ख - मणुसा सामी, देव - णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो । बंधद्धाणं णत्थि, एक्कम्हि अद्धाणविरोहादो । बंधवोच्छेदट्ठाणं सुगमं । मिच्छत्तबंधो चउव्विहो । सेसाणं सादि - अद्धुवो । सादावेदणीयस्स अणाहारीसु बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । सव्वत्थ बंधो सोदय - परोदओ । मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठीसु सांतरो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । सजोगिम्हि णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि सजोगिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव, अण्णेसिमसंभवादो । मिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख - मणुसगइसंजुत्तो । असंजदसम्मादिट्ठीसु देव - मणुसगइसंजुत्तो । सजोगीसु अगइसंजुत्तो । चउगइमिच्छाइट्ठि - सासणसम्मादिट्ठि - असंजदसम्मादिट्ठिणो मणुसगइकेवलिणो च सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि - अद्धुवो बंधो, साभावियादो । देवगइ - वेउव्वियसरीर - वेउव्वियसरीरंगोवंग - देवगइपाओग्गाणुपुव्वी - तित्थयरणामाणमसंजद-सम्मादिट्ठिणो बज्झमाणाणं पयडीणं उच्चदे—एदासिं परोदएण बंधो । कुदो ? साहावियादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमसत्तीए अभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि देवगइचउक्कस्स णउंसयपच्चओ णत्थि । तित्थयरस्स देव - मणुसगइसंजुत्तो । तित्थयरस्स तिरिक्खगईए विणा तिगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो सामी । सेसाणं तिरिक्ख - मणुसा सामी । बंधद्धाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि-अद्धुवो बंधो, अद्धुवबंधित्तादो । एवं बंधसामित्तविचओ समत्तो ।

इति श्री १०८ धरसेनाचार्यवर्योपदिष्टस्य भगवत्पुष्पदन्तभूतबलिप्रणीतस्य षट्खण्डागमस्य श्रीवीरसेनाचार्यविरचितधवलाटीकायां श्री १०८ चारित्रचक्रवर्तिशान्तिसागराचार्यानुमोदितताम्रपत्रोत्कीर्णायां बंधस्वामित्वविचयनामा तृतीयः खण्डः समाप्तः । ॥ १५६ ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri .

प्रकाशक—शहा बालचन्द देवचन्द, बी. ए.,

मंत्री, श्री १०८ चा. च. आचार्य शान्तिसागर दि. जैन जिनवाणी जीर्णोद्धारकसंस्था,

मूलजी जेठा मार्केट, सरविठ्ठलदास गल्ली, मुंबई

विक्रमसंवत् २००६] सन् १९४९ [वीरसंवत् २४७५

मुद्रक—रामचंद्र येसू शेडगे,

निर्णयसागर प्रेस, २६–२८ कोलभाट स्ट्रीट, मुंबई २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi